प्रकाशक—
दरबारीलाल सत्यभक्त
सत्य-समाज-ग्रन्थमाला जुबिली बाग
तारदेव बम्बई

मुद्रक—
र० दि०
न्यू भारत
गिरगाव

प्रस्तावना

चार वर्षसे ऊपरकी बात है एक श्रीमान सज्जनने जैनधर्मके विषयमें मुझसे कुछ प्रश्न पूछे। मैंने उनका उत्तर साम्प्रदायिक दृष्टिसे न देकर एक स्वतन्त्र विचारककी दृष्टिसे दिया। इससे वे बहुत प्रभावित हुए। उनको इसमें कुछ नूतनता, हृदयङ्गमता, सन्तोषप्रदताके दर्शन हुए, इसलिये उन्होंने पूछा कि आप अपने ऐसे सब विचार लिपिबद्ध क्यों नहीं करते? मैंने कहा—मैं अपने विचारोंपर और मनन करना चाहता हूँ। पाँच वर्ष बाद प्रकाशित करनेका विचार है।

'पाँच वर्ष!' उन्होंने खेद-मिश्रित आश्चर्यके स्वरमें कहा—यह तो बहुत लम्बा समय है। इतना समय आप व्यर्थ न खोइये। अपने विचारोंको आप, निश्चित रूप देकर नहीं, विचार्यमाण-रूप देकर प्रकाशित कीजिये। इसपर जो विद्वानोंकी सलाह आवे अथवा विरोध किया जाय उसपर पीछेसे विचार करके आप फिर इसे निश्चित रूप देना।

उनकी यह सलाह मुझे पसन्द आई। कुछ महीने बाद 'जैन धर्मका मर्म' शीर्षक लेख-माला सत्य-सन्देशमें—जो कि उस समय जैनजगत्‌के नामसे निकलता था—लिखना शुरू किया। तीसरा लेखाक निकलते ही विरोधका डिंडिम बजना शुरू हो गया। बड़े बड़े आसन प्रकम्पित हुए। पुराणपंथियोंकी तो बात ही क्या किन्तु जो लोग, सुधारक कहलाते थे, उदारताका दम भरते थे उनको भी वह लेखमाला सहन न हुई। बहिष्कारकी नीतिका विरोध करनेवाले भी बहिष्कारपर उतारू हो गये। परन्तु ऐसे विरोधोंकी मैंने कभी पर्वाह की नहीं, करता नहीं, भविष्यमें करूँगा नहीं। हाँ, जिनने युक्तियोंके नामपर कुछ लिखा उनका उत्तर मैंने अवश्य दिया। इसके लिये 'विरोधी मित्रोंसे' शीर्षक लेखमाला भी चालू की। जो अब भी लिखी जा रही है और जिसमें विरोधी आक्षेपोंका समाधान किया जाता है।

'जैनधर्मका मर्म' जितना मै समझता था उससे कहीं लम्बा हुआ। वह साढ़े तीन वर्ष तक लिखा गया। उस समय भी वह पूर्ण हुआ नहीं, पूर्ण कर दिया गया। जिस समय लेखमाला लिखना शुरू किया था उस समय भी मेरा हृदय निःपक्ष था, परन्तु लेखमालाके लिये विचार-सागरमें जो डुबकियाँ लगाई उनसे रहा-सहा मैल भी धुल गया। अब नामका भी पक्ष उड़ गया। हिन्दू, मुसलमान, जैन, बौद्ध, ईसाई सभी 'अपने' मालूम होने लगे। इसका फल

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

दूसरा अध्याय

तीसरा अध्याय

सत्यं शिवं सुन्दरम्

जैनधर्म-मीमांसा

प्रथम अध्याय

धर्मका स्वरूप

विविधताका रहस्य

धर्म क्या है ? धर्म-संस्था जगतमें क्यों आई ? धर्मोंमें परस्पर भिन्नता क्यों है ? इत्यादि अनेक प्रश्न प्रत्येक विचारशील हृदयमें उठा करते हैं। और जब वह यह देखता है कि धर्मसरीखी पवित्र वस्तुके नामपर खूनकी नदियाँ वही हैं, मनुष्यकी और मनुष्यताकी दिन-दहाडे हत्या हुई है, तब उसका हृदय संतापसे जलने लगता है और कभी कभी उसे धर्मसे घृणा हो जाती है। परन्तु हम धर्मसे घृणा करें, इसीसे धर्म नष्ट न हो जायगा। अगर हम अपने समयकी धर्म-संस्थाओंको नाश करनेका प्रयत्न करें, तो हमारा यह प्रयत्न करीब करीब असफल ही होगा। धर्म किसी न किसी रूपमें जीवित ही रहेगा। मनुष्यके पास जब तक हृदय है और उसमें

अच्छी और बुरी वृत्तियाँ हैं तब तक उसे धर्मकी आवश्यकता रहेगी। इसलिये हमारा काम यही होना चाहिये कि धर्मका संशोधन करें। इसके लिये हमें धर्मका मूलस्वरूप ढूँढकर, जगत्में धर्म क्यों पैदा होते हैं इस बातको समझकर, सब धर्मोंका समन्वय करते हुए धर्मकी मीमांसा करनी चाहिये।

प्रत्येक धर्म इसी बातकी दुहाई देता है कि मैं सबको दुःखोंसे छुड़ाऊँगा। इससे मालूम होता है कि दुःखोंको दूर करनेका जो मार्ग है उसे ही धर्म कहते हैं। यह तत्त्व जिसमें जितना अधिक पाया जायगा वह धर्म उतना ही अच्छा होगा। परन्तु इस तत्त्वका कोई ऐसा एक रूप नहीं है जो सब समय और सब जगहके सब व्यक्तियोंके लिये कल्याणकारी कहा जा सके। इसलिये कोई भी धर्म सार्वत्रिक और सार्वकालिक दृष्टिसे उपयुक्त नहीं हो सकता। अगर उसको उपयुक्त बनाये रखना है, तो समय समयपर उसकी मीमांसा करते हुए उसमें ऐसा परिवर्तन करते रहना चाहिये जिससे धर्म-संस्थाका मूल उद्देश्य सिद्ध हो।

अगर हम प्रत्येक धर्मकी, उदारता और विनयके साथ मीमांसा करें और उसमें समयानुसार परिवर्तन कर लें तो हमें आश्चर्यपूर्वक स्वीकार करना पड़ेगा कि दुनियाके सभी धर्म एक दूसरेसे बिलकुल मिले हुए हैं। इतना ही नहीं बल्कि जिन्हें हम भिन्न भिन्न धर्म समझते हैं वे एक ही धर्मके जुदे जुदे पहलू हैं। धर्मके भीतर जो अविश्वसनीय तत्त्व आ गये हैं वे भोले लोगोंको समझानेके लिये रक्खे गये हैं, धर्मके मर्मका उनके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। उन बातोंमें परिवर्तन करनेसे धर्मकी कुछ भी क्षति नहीं होगी।

जिस प्रकार वर्षाका शुद्ध जल दो तरहका नहीं होता, किन्तु पात्रोंके भेदसे उसमें भेद हो जाता है, उसीप्रकार धर्म दो तरहका नहीं होता, किन्तु पात्रोंके भेदसे या, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावके भेदसे उसमें भेद होता है। द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावका भेद, विरोधका कारण नहीं होता, इतना ही नहीं बल्कि इस प्रकारकी द्विविधताको हम दो धर्म भी नहीं कह सकते। वे एक ही धर्मके अनेक रूप हैं। दुनियामें अनेक धर्म हैं वैदिक,–जैन, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम आदि। परन्तु जिस प्रकार इन धर्मोंके सम्प्रदाय हैं, उस प्रकार अहिंसाधर्म, सत्यधर्म, अक्रोधधर्म, विनयधर्म आदिके सम्प्रदाय नहीं हैं। मैं जैन हूँ, तू बौद्ध है, इस प्रकारके धर्माभिमानसे लोग लड़े हैं, परन्तु मैं अहिंसाधर्मी हूँ, तू सत्यधर्मी है, इस प्रकारके धर्माभिमानसे कोई नही लड़ा। हर एक धर्म अपनेको न्यूनाधिक रूपमें अहिंसा, सत्य आदिका पोषक कहता है। इससे मालूम होता है कि अहिंसा, सत्य आदि असली धर्म हैं और इनमें विरोध नहीं है। विरोध है उसके विविध रूपोंमें अर्थात् सम्प्रदायोंमें। कहनेका तात्पर्य यह है कि धर्म सुखके लिए है और विविध सम्प्रदाय धर्मके लिए हैं। सम्प्रदाय स्वय परिपूर्ण धर्म नहीं हैं–वे अहिंसा आदि धर्मोंके लिए हैं। हमने धर्मके लिए उत्पन्न होनेवाले या उसके एक रूपको बतलानेवाले सम्प्रदायोंको धर्म कहा, इसलिए धर्मोंकी विविधताकी समस्या हमारे सामने खड़ी होती है।

जुदे जुदे धर्मोंमें जो हमें परस्पर विरोध माल्म होता है वह अनेकान्त, स्याद्वाद या सम-भावके न प्राप्त करनेका फल है। मैं यह नहीं कहता कि प्रत्येक धर्मका प्रत्येक सिद्धान्त वैज्ञानिक

इसलिये सत्य है। मनुष्य-प्रकृतिका विचार करके हरएक धर्ममें वैज्ञानिक असत्यको स्थान मिला है। परन्तु वह असत्य भी धर्मके लिए ही लाया गया है अधर्मके लिए नहीं। इस बातको स्पष्ट करनेके लिए एक उदाहरणमाला उपस्थित करनेकी आवश्यकता होगी।

पहिले ईश्वरकर्तृत्वके विषयको लीजिए।

एक सम्प्रदाय कहता है कि जगत्कर्ता ईश्वर है, दूसरा कहता है कि जगत्कर्ता ईश्वर नहीं है। निःसन्देह इन दोनोंमेंसे कोई एक असत्य है। परन्तु इन दोनों बातोंका फल क्या है? ईश्वर-कर्तृत्व वादी कहता है कि अगर तुम पाप करोगे तो ईश्वर तुम्हें दण्ड देगा, नरकमें भेजेगा अगर तुम पुण्य करोगे तो वह खुश होगा तुम्हें सुख देगा, स्वर्गमें भेजेगा। ईश्वर-कर्तृत्वविरोधी जैन कहेगा कि अगर तुम पाप करोगे तो अशुभ कर्मोंका बन्ध होगा; खाये हुए अपथ्य भोजनके समान उसका तुम्हें दुःखमय फल मिलेगा, तुम्हें बुरी गतिमें जाना पड़ेगा। अगर तुम पुण्य करोगे तो तुम्हें शुभ कर्मोंका बन्ध होगा, खाये हुए पथ्य भोजनके समान उससे तुम्हारा हित होगा आदि। एक धर्म लोगोंको ईश्वर-कर्तृत्ववादी बनाकर जो काम कराना चाहता है, दूसरा धर्म लोगोंको ईश्वर-कर्तृत्वका विरोधी बनाकर वही काम कराना चाहता है। यहाँ धर्ममें क्या भिन्नता है? भिन्नता उसके साधनोंमें है। परन्तु भिन्नता होनेसे विरोध होना चाहिये, यह नहीं कहा जा सकता। विरोध वहाँ होता है जहाँ दोनोंका उद्देश्य एक दूसरेका विघातक हो परन्तु यहाँ दोनोंका उद्देश्य एक ही है। इसलिए हम इन्हें विरोधी धर्म नहीं कह सकते। उनमेंसे अगर हम ईश्वर-कर्तृत्ववादको वैज्ञानिक दृष्टिसे

असत्य मान ले, तो भी वह अधर्म नहीं कहा जा सकता। जो भावुक है उनके लिये ईश्वर-कर्तृत्ववाद अधिक उपयोगी है। वे यह सोचते हैं कि ईश्वरके भरोसे सब छोड देनेसे हम निश्चिन्त हो जाते है, हममें कर्तृत्वका अहकार पैदा नहीं होता, पुण्य-पापका विचार रहता है। जो बुद्धिपर अधिक जोर देते हैं, वे तर्कसिद्ध न होनेसे ईश्वरको नहीं मानते। वे सोचते हैं कि ईश्वरको कर्ता न माननेसे हम स्वावलम्बी बनते हैं—हम ईश्वरको प्रसन्न करनेकी कोशिश करनेकी अपेक्षा कर्तव्यको पूर्ण करनेका प्रयत्न करते हैं, हमारे पापोंको कोई माफ करनेवाला नहीं है, इस विचारसे हमें पापसे भय पैदा होता है। जिस धर्मने ईश्वरको माना है, उसने भी इसीलिये माना है कि मनुष्य पाप न करे। जिसने ईश्वरको नहीं माना, उसने भी इसीलिए नहीं माना कि मनुष्य पाप न करे। दोनोंका लक्ष्य एक है और दोनों ही प्राणियोंको सुखी बनाना चाहते हैं, और एक अशमें उन्हे सफलता भी मिली है। इतना ही नहीं, परलोकको न माननेवाले नास्तिकोंने भी परलोकको नहीं माना, उसका कारण सिर्फ यही था कि मनुष्य-समाज सुखी रहे। जब परलोकके नामपर एक वर्ग लूट मचाने लगा और भोले भाले लोग ठगे जाने लगे, विवेकशून्य होकर दु ख सहनेको जब लोग पुण्य समझने लगे, तब नास्तिक धर्म पैदा हुआ। इस प्रकार आस्तिकताकी सीमापर पहुँचे हुए ईश्वर-कर्तृत्ववादी और नास्तिकताकी सीमापर बैठे हुए परलोकाभाववादी, अपने अपने धर्मका प्रचार सिर्फ इसीलिये करते थे कि मनुष्य निष्पाप बने, एक प्राणी दूसरे प्राणीको न सतावे। यह हो सकता है कि इनमेंसे कोई धर्म कम सफल हो कोई अधिक, कोई अल्पकालिक हो

कोई चिरकालिक; परन्तु यह निश्चित है कि अपने अपने देश-काल में सब धर्मोंने मनुष्य-समाजको सुखी बनानेकी ओर समाजके दुःस-मूलक विकारोंको दूर करनेकी चेष्टा की है।

अब हिंसा-अहिंसाके प्रश्नपर विचार कीजिये। जैनधर्म और बौद्धधर्ममें अहिंसापर बहुत जोर दिया गया है। परन्तु जिन धर्मोंने हिंसाका विधान किया है, वे अपने समयमें भी इतने ही अनुचित थे जितने आज हैं—यह नहीं कहा जा सकता। जिस समय यहाँ जङ्गलोंकी बहुलता थी, जङ्गली जानवरोंसे कृषिकी रक्षा असम्भव थी, उस समयपर मनुष्य-समाजकी रक्षाके लिये हिंस्र तथा कृषिविघातक जानवरोंका यज्ञ तथा शिकार आदिसे नाश किया गया यह असम्भव नहीं है। यह बात दूसरी है, कि पीछेसे इस हिंसाकी आवश्यकता न होनेपर भी लोगोंने नामवरीके लिये या व्यसनके लिये ये कार्य किये। आज हजारों वर्षसे यहाँ कृषि-कार्य हो रहा है, इसलिये उस समयके कष्टकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते जब लोगोंको कृषि-रक्षाके लिये या आत्म-रक्षाके लिये इस प्रकार हिंसाके विधान करना पड़े। आज यह हिंसा-विधान कई हजार वर्षोंसे अनावश्यक है इसलिये वर्तमानकालकी दृष्टिसे हमें हक है कि हम उसे अनुचित कहें; और अनुचित और पापमें तो सिर्फ शब्द-मात्रका अन्तर है।

इस तरह यह हिंसाविधायक धर्म भी एक समयके लिए आवश्यक था। किन्तु हमारा सबसे बड़ा पाप तो यह है कि एक समयके लिए जो आवश्यक था वह सब समयके लिए आवश्यक मान लेते हैं। जिस समय कृषि-कार्य अच्छी तरहसे चलने लगा, जङ्गली पशु भी पालतू पशु हो गये, यहाँ तक कि हम उनका दूध तक पीने लगे, इस तरह वे हमारे सहयोगी होकर नागरिक बन गये, उस समय

पर उन मित्रोंकी हत्या करना क्या उचित था? जब हम उनकी हिंसा किये बिना जीवित रह सकते थे, तब क्या हमें उनकी रक्षा न करना चाहिये थी? क्या यह तामसिकता हमारे अधःपतनका कारण न थी? यही सोचकर महात्मा महावीर और महात्मा बुद्धने हिंसाके विरुद्ध क्रान्ति की। एक समय जो उचित था या क्षन्तव्य था, दूसरे समयमें वही अनुचित था, पाप था, इसलिये उसके दूर करनेके लिए जो क्रान्ति हुई वह धर्म कहलाई।

हिंसा-अहिंसाके प्रश्नके साथ गो-वधके प्रश्नको ले लीजिये। निःसन्देह किसी भी निरपराध प्राणीकी हत्या करना बड़ा भारी पाप है और हिन्दुस्थानमें गोवध करना तो बड़ेसे बड़ा पाप है। परन्तु मुसलमान धर्म जब और जहाँ पैदा हुआ वहाँकी दृष्टिसे हमें विचार करना चाहिए। महात्मा मुहम्मदके जमानेमें अरबकी बड़ी दुर्दशा थी। मूर्तियोंके नामपर वहाँ मनुष्य-वध तक होता था। इसको दूर करनेके लिए उनने मूर्तियोंको हटा दिया। "न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी"—न मूर्त्तियाँ होंगी, न उनके नामपर बलि होगा। परन्तु इतनी विशाल क्रान्ति, लोग सह नहीं सकते थे। पात्रताके अनुसार ही सुधार होता है। इसलिए मनुष्य-बलि बन्द हुई और गो-वध आया। हिन्दुस्तानमें गो-वंश कृषिका एक मात्र सहायक होनेसे यहाँ उसका मूल्य अधिक है। इसीलिए गो-माता सरीखे शब्दकी उत्पत्ति यहाँ हुई है। परन्तु अरबमें कृषिके लिए गो-वंशकी आवश्यकता नहीं है—वहाँ ऊँटोंसे खेती होती है। यदि बलि आदिको रोकनेके लिए मुहम्मद साहबने मूर्त्तियाँ हटा दीं, मनुष्य-वध रोकनेके लिए गो-वधका विधान किया, तो 'सर्वनाश उपस्थित होनेपर आधेका

त्याग कर देना चाहिये*' इस नीतिके अनुसार उस कार्यको देखते हुए यह अनुचित कहा नहीं जा सकता। जैनशास्त्रोंमें एक कथा प्रचलित है कि मुनिके उपदेश देनेपर भी जब एक भील किसी तरहका मांस छोड़नेको राजी न हुआ, तो उन्होंने उससे काक-मांसका ही त्याग कराया। इसका यह अर्थ नहीं है कि अन्य मांसोंका विधान कराया गया सिर्फ़ धर्म्यानुष्ठानकी दृष्टिसे यह बात भी उचित समझी गई। इस दृष्टिसे मुहम्मद साहबके समयमें अरबकी स्थितिपर विचार करके इस्लामकी आलोचना करना चाहिये। परन्तु भूल है उनकी, जो मुहम्मद साहबके अनुयायी होकरके भी मुहम्मद साहबकी दृष्टिपर विचार नहीं करना चाहते। सोंधा हुआ संखिया असाधारण बीमारीमें दवाईका काम करता है; परन्तु बीमारीकी परिस्थिति हट जानेपर उसे कोई अपना भोजन बना ले तो बीमार हो जायगा। ऐसी हालतमें हम उस वैद्यको बुरा न कहेंगे जिसने बीमारीके अवसरपर संखिया खिलाया बुरा कहेंगे हम उन्हें जिनने बीमारीके हट जानेपर भी संखियाको सदाके लिए भोजन बना लिया। मुहम्मद साहबके अनुयायी, जो कि भारतवर्षमें रहते हैं अगर मुहम्मद साहबकी दृष्टिसे काम लें तो वे कभी गो-वधका विधान न करें। मनुष्य-वधके युगमें पशु-वधका विधान क्षन्तव्य कहा जा सकता है; परन्तु जिस देशमें वनस्पतिके स्पर्शमें भी घोर हिंसा माननेवाले हों उस देशमें पशु-वधके विधानकी क्या आवश्यकता है? यहाँ तो यह पाप है। अगर हम इस बातको समझें,

---

* सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पंडितः।

तो इस्लामियोंके वर्तमान कार्योंको अनुचित समझते हुए भी इस्लामको सहन कर सकेंगे ।

अब मैं वैदिक धर्मकी एक बात लेता हूँ । वैदिक धर्मकी वर्णाश्रम-व्यवस्था जैनधर्मको मान्य नहीं है । परन्तु यह कहना ठीक नहीं कि वैदिकधर्मका पक्ष असत्य है या जैनधर्मका पक्ष असत्य है । वैदिक-धर्मकी वर्णाश्रम-व्यवस्थाको समझनेके लिये हमें अपनी दृष्टि कई हजार वर्ष पहले ले जाना चाहिये । हम देखते हैं कि उस समय आर्योंको कृषि और सेवाके लिये आदमी नहीं मिलते—सभी आदमी अयोग्य रहते हुए भी पडिताई या सैनिक जीवन बिताना चाहते हैं । आवश्यक क्षेत्रमें आदमी नहीं मिलते, अनावश्यक क्षेत्रमें इतने आदमी भर गये हैं कि बेकारी फैल गई है । हरएक आदमी महीनेमें तीस बार अपनी आजीविका बदलता है । वह किसी भी काममें अनुभव प्राप्त नहीं कर पाता । ऐसी हालतमें वर्ण-व्यवस्थाकी योजना होती है । इससे अनुचित प्रतियोगिता बन्द होकर आजीविका-के क्षेत्रका यथायोग्य विभाग होता है । परन्तु इसके बाद महात्मा महावीरके जमानेमें हम देखते हैं कि वर्णोंने जातियोंका रूप पकड़ लिया है । पशुओंमें जैसे हाथी घोड़ा आदि जातियाँ होती हैं, उसी प्रकार आजीविकाकी सुविधाके लिये किया गया यह सुप्रबन्ध, मनुष्य-जातिके टुकड़े टुकड़े कर रहा है । पारस्परिक सहयोगके लिए की गई वर्णव्यवस्था परस्परमें असहयोग और घृणाका प्रचार कर रही है । सिर्फ आजीविकाके क्षेत्रके लिये किया गया यह विभाग रोटी-बेटी-व्यवहारमें भी आड़े आ रहा है । इसके कारण दुरा-चारी ब्राह्मण सदाचारी शूद्रकी पूजा नहीं करना चाहता, किन्तु

उसे पददलित करना चाहता है। तब वर्ण-व्यवस्थाका विरोध करना परम धर्म हो जाता है, क्योंकि यह व्यवस्था अब दुःखदायी हो जाती है। यही बात आश्रम-व्यवस्था की है। जब जीवनकी जिम्मेदारियोंसे मुँह छुपानेवाले अपने माता-पिताको रोता छोड़कर भागने लगे समाज अनुत्तरदायी युवा-साधुओंसे भर गया तब आश्रम-व्यवस्थाकी आवश्यकता हुई। यह नियम बनाया गया कि हरएक आदमीको पितृ-ऋण चुकाना चाहिये, अर्थात् माता-पिताकी सेवा करना चाहिये और जिस प्रकार माता-पिताने उसे पालन किया है, उसी प्रकार उसे अपनी संतानका पालन करना चाहिये पीछे वानप्रस्थ रहकर संन्यासका अभ्यास करना चाहिये फिर संन्यास लेना चाहिये। अब आप देखें कि यह व्यवस्था संसारकी भलाईके लिये कितनी अच्छी है। परन्तु यदि राजकुमार सिद्धार्थ इसी व्यवस्थासे चिपटे रहते, तो वे महात्मा बुद्ध न बन पाते। उस समय जो महात्मा बुद्धके द्वारा समाज और धर्मका संशोधन हुआ वह न हो पाता। इसलिये महात्मा बुद्धने युवावस्थामें ही गृह-त्याग किया। यह भी संसारके कल्याणके लिये बहुत अच्छा हुआ। परन्तु यदि अपवादोंको राज-मार्ग बना लिया जाय, तो इसी कल्याणके कारण अकल्याण भी हो सकता है। जब महात्मा बुद्धने अपने पुत्र राहुलको भी छोटी उमरमें दीक्षित कर लिया, तब उनके पिता महाराज शुद्धोदनने आकर कहा—

भगवानके प्रव्रजित होनेपर मुझे बहुत दुःख हुआ था वैसे ही नन्दके प्रव्रजित होनेपर भी। राहुलके प्रव्रजित होनेपर अत्यधिक। भन्ते! पुत्र-प्रेम मेरी खाल छेद रहा है, खाल छेदकर चमड़ेको छेद

रहा है, चमडेको छेदकर मासको छेद रहा है, मासको छेदकर नसको छेद रहा है, नसको छेदकर हड्डीको छेद रहा है, हड्डीको छेदकर घायल कर दिया है। अच्छा हो भन्ते! आर्य, मातापिताकी अनुज्ञाके बिना किसीको दीक्षित न करें।"

इसके बाद महात्मा बुद्धने भिक्षुओंको एकत्रित किया और नियम बनाते हुए कहा—

"भिक्षुओ, माता-पिताकी अनुज्ञाके बिना पुत्रको दीक्षित न करना चाहिए, जो करे उसे दुक्कट (दुष्कृत) का दोष है।"

आप देखें कि दीक्षाके मार्गमें यह रुकावट कितनी अच्छी थी! महात्मा महावीरने तो यह रुकावट शुरूसे ही रक्खी। इतना ही नहीं, अपने जीवनमें ही उनने इसका पालन किया। माता-पिताकी अनुज्ञाके विना वे कई वर्ष रुके रहे। आश्रम-व्यवस्था, महात्मा बुद्धका अपवाद तथा इस विषयमें महात्मा महावीरका प्रारम्भसे और महात्मा बुद्धका राहुलको दीक्षित करनेके बादका मध्य मार्ग, ये तीनों अपने अपने देश-कालके लिए उपयोगी रहे हैं। इसलिए इन तीनोंमें कुछ विरोध नहीं कहा जा सकता।

अब थोड़ासा विचार द्वैत और अद्वैतपर भी कीजिए। अद्वैतवादी कहता है कि सब जगत्का मूल तत्त्व एक है, द्वैत भावना करना संसारका कारण है। इस प्रकारका विचार करनेवाला मनुष्य, यह मेरा स्वार्थ, वह दूसरेका स्वार्थ, यह विचार ही नहीं ला सकता। वह तो जगत्के हितमें अपना हित समझेगा। जिस वैयक्तिक स्वार्थके पीछे लोग नाना पाप करते हैं, वह वैयक्तिक स्वार्थ उसकी दृष्टिमें न रहेगा। वह निष्पाप बनेगा। द्वैतवादी कहेगा—मूल तत्त्व दो

है, मैं आत्मा हूँ और मेरे साथ लगा रहनेवाला पर-तत्त्व पुद्गल जुदा है। मैं इस 'पर' के बन्धनमें पड़कर पराधीन हूँ, दुःखी हूँ, मुझे इस बन्धनको तोड़ना चाहिए। यह समझकर वह शरीरकी अपेक्षा आत्माको मुख्यता देता है, शरीरके लिए कोई पाप नहीं करता। इस तरह द्वैत-भावना उसे निर्विकार बननेको प्रोत्साहित करती है।

इस तरहके बहुतसे उदाहरण दिये जा सकते हैं। इन परसे हमें मालूम होगा कि धर्मको प्राप्त करनेके लिए जो सम्प्रदाय बने हैं, वे जब बने थे तब उस द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावके अनुसार किसी उपयोगी—कल्याणकारी—तत्त्वको लेकर बने थे। तभी वे बने हो सके। इसलिए मैं इस बातको कहनेका साहस करता हूँ कि सम्प्रदायोंके मौलिक (असली) रूपोंका धर्मके साथ—कल्याणके साथ—कोई विरोध नहीं है।

हाँ, हर एक सम्प्रदायके सिद्धान्तोंका पीछेसे दुरुपयोग होता है। परन्तु इससे हम उन सम्प्रदायोंको बुरा नहीं कह सकते। दुरुपयोग तो अच्छेसे अच्छे तत्त्वका होता है। अहिंसा सरीखे श्रेष्ठ तत्त्वका दुरुपयोग होकर कायरताका प्रचार हुआ है। दीक्षाके नामपर बालक-विक्रय या बालक-चोरी भी होती है द्वैतके नामपर स्वार्थका ही पोषण हो सकता है, अद्वैतके नामपर सब स्त्रियोंमें अद्वैत भावना रखकर व्यभिचारका पोषण हो सकता है। इसलिए दुरुपयोगको हटाकर हमें हरएक सम्प्रदायके मौलिक रूपपर विचार करना चाहिए और उसी दृष्टिसे उसकी आलोचना करना चाहिए। तब हमें सब सम्प्रदाय अपने अपने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावके अनुसार आवश्यक और उचित मालूम होंगे और अपनी योग्यतानुसार हम उन सभीसे लाभ उठा सकेंगे।

यहाँ यह प्रश्न किया जा सकता है कि अगर इस प्रकार सब धर्मोको अच्छा साबित करनेकी कोशिश की जायगी, तो अच्छे और बुरेका विवेक ही नष्ट हो जायगा, सब लोग वैनयिक मिथ्यादृष्टि हो जायँगे। परन्तु मेरे उपर्युक्त वक्तव्यमें इस प्रश्नका उत्तर है। मेरे उपर्युक्त वक्तव्यमें सर्व-धर्म-समभावका जो विवेचन किया गया है, उसमें सब धर्मोको सर्व-द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावके लिये अच्छा नहीं बताया है, किन्तु यह कहा गया है कि सब धर्मोका अपने अपने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावमें उपयोगी स्थान है। किस द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावमें किस धर्मका कितना उपयोगी स्थान है, इसका निर्णय तो विवेकसे होता है, जब कि वैनयिक मिथ्यादृष्टिके पास विवेक नामकी कोई चीज ही नहीं होती।

यह हो सकता है कि एक धर्म अधिक समयके लिये और अधिक प्राणियोंके लिये उपयोगी हो और दूसरा कम हो, परन्तु इससे कोई भी निरुपयोगी नहीं कहा जा सकता। सबका अपना अपना स्थान है। सुईकी अपेक्षा तलवारकी कीमत ज्याद हो सकती है, परन्तु सुईका काम तलवार नहीं कर सकती, अपने अपने स्थानपर दोनों ही ठीक हैं। दोनोंको अपने अपने समयपर उपयोगी समझना एक बात है और स्वरूपमें अविवेक रखना दूसरी बात है। वैनयिक मिथ्यादृष्टि किसी धर्मकी उपयोगिता नहीं समझता, वह तो अविवेकसे सबको एक समझता है। इसलिये वैनयिक मिथ्यादृष्टिमें और सर्व-धर्म-समभावीमें जमीन आसमानसे भी अधिक अन्तर है।

यहाँ दूसरा प्रश्न यह उठता है कि अहिंसा आदि धर्मोका तत्त्व न्यूनाधिक रूपमें सब धर्मोमें पाया जाता है, परन्तु विश्वकी समस्याको

सुलझानेके लिये सभी धर्म एक दूसरेसे इतना अधिक विरुद्ध कथन करते हैं कि उन सबका समन्वय करना मुश्किल है। कोई द्वैत मानता है, कोई अद्वैत मानता है; कोई ईश्वर मानता है, कोई नहीं मानता। भला इन सब बातोंका कोई मेल कैसे कर सकता है? और जब इनमेंसे किसी एक धर्मकी बात युक्ति आदिसे विरुद्ध सिद्ध होती हो, तब उस धर्मको असत्य समझते हुए भी सत्यके समान उसका आदर कैसे किया जा सकता है?

निःसन्देह यह एक आवश्यक प्रश्न है; परन्तु इसका कारण है धर्मकी मर्यादाका भूल जाना। हमें यह समझ लेना चाहिये कि धर्म, धर्म है, वह दर्शन[1] नहीं है, भौतिक विज्ञान नहीं है, गणित नहीं है, ज्योतिष नहीं है इतिहास नहीं है, भूगोल नहीं है। धर्मशास्त्र इन सबका उपयोग करता है परन्तु ये सब धर्मशास्त्र नहीं हैं। अर्थशास्त्रमें गणितका उपयोग होता है, परन्तु गणित अर्थशास्त्र नहीं कहलाता। काव्यमें व्याकरणका उपयोग होता है, परन्तु व्याकरण काव्य नहीं कहलाता। व्याख्यानके लिये व्याख्यान-भवनका उपयोग होता है परन्तु व्याख्यान-भवन व्याख्यान नहीं कहलाता। इसी प्रकार धर्मके लिये दर्शनका उपयोग होता है, परन्तु दर्शन, धर्म नहीं कहला सकता। धर्म और दर्शन ये जुदे जुदे शास्त्र हैं। धर्मशास्त्रका काम है कि प्राणियोंको सुखी बननेका मार्ग बतलावे; जब कि दर्शनका काम है कि विश्वके रहस्यको प्रकट करे। ये सब शास्त्र धर्मशास्त्रके सहायक हैं। परन्तु आज तो हर एक विषय धर्मशास्त्रमें ठूँस दिया गया है, इसीलिये जैन ज्योतिष, जैन भूगोल, जैन-गणित, जैन-व्याकरण आदि

१ Religion and Philosophy

शब्दोंकी रचना हुई है। कोई जैन-भूगोलका खडन करके यह अभिमान करे कि मैंने जैनधर्मका खडन कर दिया, तो वह भूलता है। किसी भी धर्मका खडन तब कहा जा सकता है जब कि उस धर्मके द्वारा बत-लाया हुआ आचरणीय मार्ग प्राणि-समाजको दु.खदायक साबित कर दिया जाय। दर्शन आदिका काम वस्तुके विषयमें विचार करना या निर्णय करना है, परन्तु धर्मशास्त्रका काम उस निर्णयको सुखोपयोगी बना देना है। धर्मका सुखसे साक्षात् सम्बन्ध है, जब कि दर्शन, ज्योतिष आदिका परम्परासम्बन्ध है। यही कारण है कि किसी अन्य शास्त्रके प्रवर्तककी अपेक्षा धर्मप्रवर्तकका स्थान ऊँचा है। इसलिये दर्शनोंमें परस्पर विरोध होनेसे हमें धर्ममें विरोध न समझना चाहिये।

यहाँ एक तीसरी शका पैदा होती है कि दर्शनको अगर हम धर्मशास्त्रसे जुदा भी कर दें, तो भी धर्मोंमें परस्पर भिन्नता रह जाती है और अगर हम उनमें सम-भाव रखने लगें, तो हमारे लिये यह निर्णय करना कठिन हो जायगा कि हम किस धर्मका पालन करें।

इसके उत्तरमें सक्षेपमें मेरा कहना यही है कि आप किसी भी धर्मका पालन करें, परन्तु इन दो बातोंका खयाल रक्खें—

प्रथम तो यह कि जब कोई धर्म पैदा होता है या नये रूपमें दुनियाँके सामने आता है तब उसके सामने उस समयकी परिस्थिति रहती है, इसलिये उसका रूप उस परिस्थितिके अनुकूल होता है। कालान्तरमें वह परिस्थिति बदल सकती है। सम्भव है आज भी वह परिस्थिति बदली हुई हो। इसलिये परिस्थितिके प्रतिकूल तत्त्वोंको अलग करके हमें अपने धर्मको अर्थात् सम्प्रदायको सच्चा धर्म बना लेना चाहिये।

दूसरी बात यह है कि अपने धर्मका चाहे पुराना रूप हो, चाहे नया अर्थात् सुधरा हुआ रूप हो, वह अमुक परिस्थितिमें अमुक श्रेणीके लिये ही है। अपने धर्मको हमें सम्पूर्ण धर्म नहीं, परन्तु धर्मकी एक अवस्था या धर्मका एक अंश कहना चाहिए। जैनशास्त्रोंकी परिभाषामें अगर मैं धर्मको 'प्रमाण' कहूँ तो जुदे जुदे नामोंसे प्रचलित धर्मोंको अर्थात् सम्प्रदायोंको नय कहूँगा। 'नय' प्रमाणका अंश है न कि पूरा प्रमाण सम्प्रदाय धर्मका अंश है, न कि पूरा धर्म।

किसी धर्मको सच्चा कहना या मिथ्या कहना, यह उसके स्वरूपपर नहीं किन्तु अपेक्षापर निर्भर है। नय, सच्चा नय तभी कहलाता है जब कि वह दूसरे नयका विरोध नहीं करता। दूसरे नयका विरोध करनेवाला नय मिथ्या नय या दुर्नय कहा जाता है।

इसी प्रकार सम्प्रदाय भी वही धर्म कहा जा सकता है, जो दूसरे सम्प्रदायका विरोध नहीं करता। अगर कोई सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदायका विरोध करता है, उसकी शक्तिको गौण ही नहीं करता किन्तु नाश भी करता है, तो वह सम्प्रदाय मिथ्यात्व है, पाखण्ड है। ये सब जुदे जुदे, एक दूसरेके शत्रु बनकर खड़े होंगे, तो पाखण्ड कहलायेंगे और मित्र बनके खड़े होंगे, तो रूप कहलायेंगे, धर्म कहलायेंगे।

धर्मोंकी विविधताका रहस्य समझनेके लिये निम्नलिखित सूत्रोंका स्मरण रखना उपयोगी होगा—

१—धर्म एक ही है और वह सुख-मार्ग है।

२—द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावके अनुसार उसके स्वरूप अनेक हैं।

निरपेक्षा नया मिथ्या सापेक्षा वस्तु तेऽर्थकृत्।

—समन्तभद्र

३—धर्मके अश होनेसे वे स्वरूप भी धर्म कहलाते हैं ।

४—प्रत्येक सम्प्रदाय अगर दूसरे सम्प्रदायको सिर्फ अविवक्षित करता है, उसका विरोध नहीं करता तो वह धर्म है, अन्यथा अधर्म है ।

५—दर्शन, इतिहास, भूगोल आदि धर्मशास्त्र नही हैं ।

६—जिस प्रकार अशसे अशीका ज्ञान किया जाता है उसी प्रकार हम प्रत्येक सम्प्रदाय रूप अशसे धर्मरूप अशीका ज्ञान कर सकते हैं । शर्त यह है कि उसमें अनेकान्त—स्याद्वाद—अर्थात् सर्व-धर्म-सम-भावका तत्त्व होना चाहिये ।

धर्मका उद्देश्य

साधारण लोगोंकी मान्यता यह है कि धर्म परलोकके लिए है । यह बात मानी जा सकती है कि धर्मसे परलोक सुधरता है, परन्तु धर्मोंकी उत्पत्ति लौकिक आवश्यकताका ही फल है । पारलौकिक फल तो उनका आनुषङ्गिक फल है । जैनशास्त्रके अनुसार जिस समय यहाँ भोगभूमि थी अर्थात् युगलियोंका युग था, उस समय यहाँपर कोई भी धर्म नहीं था, जैनधर्म भी नहीं था । इसका कारण यही है कि उस समय मनुष्यको कोई लौकिक कष्ट नहीं था । उस समय साम्यवाद इतने व्यापक रूपमें था कि प्राकृतिक दृष्टिसे भी लोगोंमें कोई विषमता नहीं थी । जैन-शास्त्र कहते हैं कि उस समय स्त्री-पुरुषोंके शरीरकी दृढ़तामें भी विषमता नहीं थी, उस समय कोई राजा या अफसर नहीं था, वैयक्तिक सम्पत्ति नहीं थी, अत्याचार अनाचार आदि नहीं था, स्वामी-सेवकका भेद न था, अकालमृत्यु और बीमारी नहीं थी । जैन-शास्त्र उस

कालको पहिला आरा या सबसे अच्छा काल कहते हैं और कहते हैं कि उस समय कोई धर्म नहीं था। जैनशास्त्रोंके इस वर्णनका ऐतिहासिक मूल्य भले ही कुछ न हो, परन्तु उससे इतना तो मालूम होता है कि जैनधर्मके संस्थापक प्रवर्तक और सञ्चालक जिसे सबसे अच्छा काल कहते हैं, वह काल धर्मरहित था। जैनधर्मके अनुसार जब यह काल नष्ट हो गया, दुःख बढ़े उसके बाद अनेक धर्म पैदा हुए। इससे यह बात सिद्ध होती है कि जब तक समाजमें विषमता पैदा नहीं होती, समाज दुःखी नहीं होता, तब तक कोई धर्म पैदा नहीं होता। धर्मकी उत्पत्ति दुःखको दूर करनेके लिये ही हुई है। गीताके शब्दोंमें भी दुःखको दूर करनेके लिए ईश्वरका या धर्मका अवतार होता है। महात्मा बुद्धने संसारको दुःखसे छुड़ानेके लिए एक धर्मसंस्थाको जन्म दिया। महात्मा ईसा महात्मा मुहम्मद आदि संसारके सभी धर्म-संस्थापकोंने दुःखी समाजके दुःखको दूर करनेके लिए धर्म-संस्थापना की है और अपना जीवन अर्पण किया है। धर्म सुखके लिए है, इस सर्वसम्मत बातको सिद्ध करनेके लिए अधिक प्रमाण देनेकी जरूरत ही नहीं है।

धर्मकी आवश्यकता क्यों हुई, जब हमें यह बात मालूम हो गई, तब धर्म क्या है, इसके समझनेमें विशेष कठिनाई नहीं रह जाती। उस समय धर्मका यह सीधा सादा लक्षण हमारे ध्यानमें आ जाता है कि जिस नीति या मार्गसे दुःख दूर हो सकता है उसे धर्म कहते हैं। इसलिये अगर हम धर्मको समझना चाहते हों, तो हमें जगत्के दुःखों और दुःखोंके दूर करनेके उपायको ध्यान देना चाहिये। इसके बाद धर्मकी मीमांसा करना कठिन नहीं है।

त्रिविध दुःख ।

प्रत्येक प्राणी ससारके विविध दुःखोंसे घबराया हुआ है। उसे सुखकी अपेक्षा दु ख कई गुणा भोगना पड़ता है। इस दु खको हम तीन अगोंमें विभक्त कर सकते हैं—

(१) बाह्य प्रकृति और हमारे शरीरकी रचना ही कुछ ऐसी है कि वह दु खके कारण जुटाती रहती है।

(२) सामग्री कम है, भोगनेवाले ज्याद. हैं, और तृष्णा और भी ज्याद है, इसलिये प्राणियोंमें परस्पर सघर्ष होता है जिससे अनेक तरहके अन्याय और अत्याचार होते हैं। इससे दु ख बढ़ जाते हैं।

(३) मनुष्यको सुखी रहनेकी कलाका ज्ञान नहीं है, इसलिये उसे दु खका अनुभव जितना होना चाहिये उससे अधिक होता है। ईर्ष्या आदिसे वह अनावश्यक दुःखोंकी सृष्टि करता है।

इन तीनों प्रकारके दुखोंको हम क्रमसे प्राकृतिक, परप्राणिकृत और स्वकृत कह सकते हैं।

प्राणियोंका शरीर घृणित है, बहुत ही जल्दी इसमें रोग होते हैं, भोगोंसे यह कमजोर हो जाता है, अपने आप भी शिथिल हो जाता है और अन्तमें इच्छा न रहते हुए भी नष्ट हो जाता है। इधर प्रकृति भी हमारी इच्छाके अनुसार काम नहीं करती। हम चाहते हैं कि हवा चले, परन्तु हवा नहीं चलती। हम चाहते हैं कि ठण्डी हवा चले, तो गरम चलती है। इस प्रकार न तो प्रकृति हमारी इच्छा-ओंकी या हमारे शरीरकी आवश्यकताओंकी गुलाम है, न शरीर हमारी इच्छाओंके अनुसार काम करता है। इन दु खोंसे बचनेके लिये परस्पर सहयोगसे एक दूसरेके दु खोको दूर करना तथा सहनशील

बनना सिखाया जाता है। सहनशीलता और परस्पर प्रेम या इन योगोंसे हम दुःखोंसे बहुत कुछ सुरक्षित रह सकते हैं। कुछ तो दुःखके निमित्त कारण दूर हो जाते हैं और जो कुछ रहते हैं, वे हमारे ऊपर प्रभाव नहीं डाल पाते-अर्थात् हमें दुःखी नहीं बना पाते। प्राकृतिक दुःखोंको दूर करनेका इससे बढ़कर कोई उपाय नहीं है।

परप्राणिकृत दुःखोंको कम करनेके लिये भी धर्मकी आवश्यकता है। जितनी सामग्री है और जितने भोगनेवाले हैं उनकी योग्य व्यवस्था करनेसे परप्राणिकृत दुःख कम किये जा सकते हैं। ' जिस की लाठी उसकी भैंस " के सिद्धान्तके अनुसार बलवान् अगर निर्बलोंको पीड़ा देते रहें, तो कोई भी मनुष्य सुखी न हो सकेगा। छीना-झपटीसे भोग-सामग्रीमें वृद्धि तो हो नहीं सकती, बल्कि कुछ हानि ही होगी और कोई भी प्राणी निराकुलतासे उसका भोग न कर सकेगा। अगर कोई किसीको न सतावे, न धोखा दे, न उसकी चोरी करे तो सभी लोग न्याय-प्राप्त सामग्रीका निराकुलतासे भोग कर सकेंगे। इसलिये सबको संयमसे काम लेनेकी आवश्यकता है।

संयमके दो भेद किये जाते हैं—इन्द्रिय-संयम और प्राणि-संयम। इन्द्रियोंको वशमें करनेको इन्द्रिय-संयम कहते हैं। इन्द्रिय-संयमी मनुष्य अपने जीवन-निर्वाहके लिये कमसे कम सामग्रीका उपभोग करता है, पर बची हुई सामग्री दूसरोंके काम आती है, इससे संघर्ष कम होता है और सुख बढ़ता है। अगर एक मनुष्य अधिक सामग्रीका उपभोग करेगा तो दूसरेको कमी पड़ेगी, इससे दूसरा मनुष्य दुःखी होगा और सपरसे दोनों दुःखी होंगे। एक अच्छे राज्यमें जो कार्य कानूनके बलपर कराया जाता है, धर्म वही कार्य आत्म-शुद्धिके मार्गसे कराना चाहता है।

यद्यपि कानूनके मार्गसे धर्म समता-प्रचारका विरोधी नहीं है, फिर भी उसका जोर आत्म-शुद्धिपर है। क्योंकि कानूनके बलपर जिस समताका प्रचार किया जाता है वह अस्थिर होती है और सिर्फ़ बहिर्ज्वालाओंको दूर कर पाती है। लोगोंकी तृष्णा शान्त नहीं होती, अवसर मिलनेपर वे मनमाना भोग करते हैं। उनमे वह उदार दृष्टि नहीं रहती, जिससे मनुष्य त्यागमें सुखका अनुभव करता है। हाँ, 'कुछ न होनेसे कुछ अच्छा' इस उक्तिके अनुसार जहाँ आत्म-शुद्धिके सयमका यथायोग्य प्रचार न हो सकता हो, वहाँ कानूनसे काम लिया जाय, परन्तु यह कानूनी संयम जब आत्मिक सयमके रूपमें परिणत हो जाय तभी सच्चा सुख प्राप्त होगा। क्योंकि इसमें वे लोग भी सुखी होंगे, जो प्राप्त हुई अधिक सामग्रीका त्याग करेंगे, अथवा अधिक सामग्रीको प्राप्त करनेकी शक्ति रहते हुए भी अधिक सामग्रीको प्राप्त करनेकी चेष्टा न करेंगे। इससे सघर्ष और अशान्ति रुकेगी।

दूसरा सयम प्राणि-सयम है। इसमें दूसरे प्राणियोंको दुःख देनेका निषेध किया गया है। यह सयम तो बिलकुल स्पष्ट रूपमें दुःख-निरोधक है। आजतककी अधिकाश सरकारोंने इसी सयमके एक बहुत स्थूल और सकुचित भागको पालन करानेका काम किया है। पशु-पक्षियोंके विषयमें इस सयमका पालन बहुत कम हुआ है और इन्द्रिय-सयमकी तरफ तो सरकारोंका ध्यान नहींके बराबर गया है। परन्तु आज लोगोंको इन्द्रिय-सयमकी उपयोगिता समझमें आने लगी है। क्योंकि यह बात स्पष्ट हो गई है कि जबतक समर्थ लोग इन्द्रिय-सयमका पालन न करेंगे या उनसे पालन न कराया जायगा, तब तक निर्बलोंको पेटभर भोजन मिलना और प्रकृति-प्रदत्त

स्वाभाविक जीवन बिताना भी कठिन है। भले ही यह कानूनी संयम धार्मिक संयमकी बराबरी न कर सके, परन्तु इससे इतनी बात सिद्ध होती है कि संसारकी सुख-वृद्धि या दु:ख-हानिके लिये संयम अनिवार्य है। सत्कार रूपी इमारतें इसी संयमकी नींवपर खड़ी होती हैं। दया-पानीके समान संयम भी जीवनके लिये आवश्यक है।

इस संयमकी पूर्णता तो पूर्ण आत्म-विकासमें ही हो सकती है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टिसे इस संयमकी पूर्णता-अपूर्णताका विचार करना है। जीवन-निर्वाहके लिये अपने उचित हिस्सेसे अधिक सामग्रीका उपयोग न करना पूर्ण इन्द्रिय-संयम है। जो इससे अधिक सामग्रीका उपभोग करे किन्तु मर्यादा रक्खे, वह अपूर्ण संयमी है। जो मर्यादा न रक्खे वह अविरत या असंयमी है। इसी प्रकार जो मनुष्य जीवनको रखनेके लिये अनिवार्य हिंसासे अधिक हिंसा नहीं करता वह प्राणि-संयमकी दृष्टिसे पूर्ण संयमी है। जैसे श्वास लेनेमें, चलने-फिरनेमें, शौचादिमें हिंसा अनिवार्य है। यद्यपि इन कार्योंमें यत्नाचार करना आवश्यक है, फिर भी कुछ न कुछ द्रव्य-हिंसा अवश्य होगी। यह अनिवार्य है। इस अनिवार्य हिंसासे जो अधिक हिंसा करे, किन्तु मर्यादा रक्खे वह अपूर्णसंयमी है। जो अमर्याद हिंसा करे, वह असंयमी है। इसी प्रकारके और भी उदाहरण दिये जा सकते हैं।

इस चर्चासे यह बात सिद्ध हो जाती है कि धर्ममें बताये हुए ये दोनों संयम, शरीर शोषक जीवन-नाशक, और परलोकमें ही फल देनेवाले नहीं हैं, किन्तु इनसे जीवन और शरीरकी रक्षा है और परलोकके सुखकी अपेक्षा ऐहिक सुखके लिए इनकी आवश्यकता अधिक है। इसलिये संयमका ध्येय दुःख नहीं, सुख है।

पर-सुखमें निज-सुख

यद्यपि सयम, सुखके लिये आवश्यक है यह बात सिद्ध हो जाती है, फिर भी सामाजिक सुखकी वृद्धिका हिसाब कैसे लगाना चाहिये और उसके लिये कौनसी नीति निश्चित करना चाहिये, इस बातपर विचार करना आवश्यक है। यहाँ मैं सुखके विषयमें कुछ नहीं कहता, क्योंकि वह स्वानुभवगम्य है। प्रश्न यह है कि किसका सुख यहाँ लिया जाय। साधारण दृष्टिसे तो यही कहना चाहिये कि प्रत्येक प्राणी अपने सुखके लिये प्रयत्न करता है। दूसरोंके सुखके लिए जो वह प्रयत्न करता है, वह इसीलिये कि दूसरोंका सुख अपने सुखको बढ़ानेमें या सुरक्षित रखनेमें सहायक है। माँ-बाप भी भविष्यकी आशासे सतानसे प्रेम करते हैं। परन्तु अगर इस प्रकारका हिसाब रक्खा जाय कि जिससे हमें सुखकी आशा हो उसे ही हम सुखी करनेकी चेष्टा करें, तो हमें दूसरोंसे बहुत कम सुख मिलेगा और दूसरोंको हमसे बहुत कम सुख मिलेगा। हम रास्तेमें जाते जाते किसी गड्ढेमें गिर गये, उस समय हमें मनुष्य-मात्रसे सुखकी आशा करनी पड़ती है। प्रत्येक मनुष्यके जीवनमें ऐसे सैकड़ों प्रसग आते हैं, जब उसे हरएक मनुष्यसे सहायताकी आवश्यकता होती है। अगर मनुष्य बिलकुल स्वार्थी हो जाय या ऐसे मनुष्योंके ही हितका विचार करे जिससे उसे प्रत्युपकारकी आशा है, तो मनुष्य-जाति शीघ्र ही नष्ट हो जायगी। अनुभवने यह बतलाया है कि केवल त्यागके नामपर ही नहीं बल्कि सुखके लिये मनुष्यको परोपकार करना चाहिये, इसीमें मनुष्यकी

स्वार्थसिद्धि है। इसके लिए एक कल्पना कीजिये कि दो मनुष्य ऐसे हैं जो एक दूसरेको सहायता नहीं पहुँचाते। प्रत्येक आदमी सालमें एक मास बीमार रहता है, इसलिये उनके ग्यारह महीने सुखमें और एक महीना दु:खमें बीतता है। परन्तु दु:ख मनुष्यको इतना असह्य है कि ग्यारह महीनेका सुख एक महीनेके दु:खके आगे कम मालूम होता है। अगर हम ग्यारह महीनेके नीरोगता (सुख) के अंश (डिग्री) ग्यारह सौ कल्पित कर लें, तो एक महीनेके दु:खके (ऐसी बीमारीके कि जिसमें कोई पानी देनेवाला भी नहीं है) अंश हमें २२० मानना पड़ेंगे। इस तरह इनमेंसे प्रत्येक मनुष्यके हिस्सेमें ११० डिग्री सुख और २२० डिग्री दुःख पड़ेगा। इस तरह हिसाब करनेपर प्रत्येकके हिस्सेमें ११० डिग्री दु:ख ही रह जायगा। परन्तु दो ऐसे मनुष्य हैं जो एक दूसरेको पूर्ण सहायता पहुँचाते हैं। इस लिये जब उनमें कोई बीमार पड़ता है तब उसे सिर्फ रोगका ही कष्ट होता है। इन दोनों रोगियोंकी तुलना कीजिये। एक ऐसा है कि उसे न तो कोई पानी देनेवाला है, न औषध देनेवाला है, न उसे कोई खाने देता है। पेशाब आदि मलत्याग वह बिस्तरमें या आस-पास कर लेता है। एक महीनेतक सफाई भी कोई नहीं करता। इस रोगीमें और उस रोगीमें जिसको इन सब कष्टोंका सामना नहीं करना पड़ता, आकाश-पातालका अंतर है। उसका दु:ख अगर २२० डिग्री है, तो इसका सिर्फ २०। इस तरह इनमेंसे प्रत्येकके हिस्सेमें ११० डिग्री सुख और २०० डिग्री दु:ख पड़ा। अगर अपने साथीकी परिचर्या करनेका कष्ट १०० अंश और जोड़ दिया जाय, तो इसका कष्ट १० डिग्री होगा।

इस तरह इन्हें ८०० डिग्री सुखरूपी मुनाफा हुआ जब कि पहिलेको ११०० डिग्री दुःखरूपी नुकसान है। कहनेका तात्पर्य यह है कि परोपकार करनेमें हमें जितना कष्ट उठाना पडता है, उससे असख्य-गुणा कष्ट उसका कम हो जाता है जिसके साथ परोपकार किया जाता है। बच्चेको माँ-बाप पालते हैं इससे माँ-बापको कष्ट होता है जरूर, परन्तु बच्चेका कष्ट जितना कम होता है उससे दसवाँ हिस्सा भी माँ-बापका कष्ट नहीं बढ़ता। ये उदाहरण छोटे क्षेत्रमें हैं परन्तु विश्वभरके लिये इस नीतिसे काम लेनेमें ससारका सुख कई गुणा बढ़ जाता है। अपने अपने स्वार्थकी दृष्टि रखनेसे ससारमें जितनी सुख-सृष्टि हो सकती है, परोपकाररूप सहयोगसे वह सुख-सृष्टि वर्गधाराके समान बढ़ती जाती है। एक मनुष्य अगर एक डिग्री सुख पैदा कर सकता है, तो दो मनुष्य २×२=४ डिग्री सुख पैदा कर सकते हैं। इसी प्रकार तीन मनुष्य ३×३=९, चार मनुष्य ४×४=१६, पाँच मनुष्य ५×५=२५ डिग्री सुख पैदा कर सकते हैं। इसी नियमपर 'एकसे आधे दो से चार' की लोकोक्ति प्रचलित है। अगर स्वार्थियोंका समाज और परोपकारियोंका समाज, ऐसे दो समाज कल्पित किये जायँ, तो दोनों समाजके व्यक्ति सुखके लिये समान प्रयत्न करनेपर भी पहिलेकी अपेक्षा दूसरे समाजके मनुष्य असख्य-गुणे सुखी होंगे। कहनेका तात्पर्य यह है कि यद्यपि मनुष्य अपने ही सुखके लिये प्रयत्न करता है, परन्तु परोपकारी हुए बिना ससारमें इतना सुख ही तैयार नहीं हो सकता जिससे उसे सुखका बहुत और अधिक स्थायी भाग मिले। इसलिये परोपकारको भी स्वार्थ—उच्चतम स्वार्थ—सात्विक स्वार्थ समझना चाहिये। परोपकारका क्षेत्र

संकीर्ण होगा, धर्मका क्षेत्र भी संकीर्ण होगा, पक्षपातीपनको दूर करनेमें यह एक ऐसा उपाय है कि जिसमें किसी कल्पनाकी आवश्यकता नहीं है।

कर्तव्याकर्तव्यका निर्णय करनेके लिए वेदान्तने इसी उपायको स्वीकार किया है। वेदान्तके अनुसार मूलमें सारा जगत् एक है। जिसे इस एकत्वका दर्शन हो जाता है, उसकी दृष्टिमें स्वार्थ और परार्थका भेद ही नहीं रह जाता है। इसमें आपत्ति है तो इतनी ही है कि प्राणियोंके अनुभव जुदे जुदे होनेसे तथा जड़ और चेतनमें सत्ता-सामान्यकी दृष्टिमें समता है, परन्तु वे दोनों एक ही तत्त्व नहीं हो सकते, इसलिए, संसार अनेक द्रव्यात्मक है। अनेकको एक माननेकी यह कल्पना युक्ति-संगत नहीं है, इसलिए एकत्वके ऊपर विश्वास नहीं होता, तब उसको आधार बनाकर कर्तव्याकर्तव्यका निर्णय करना कैसे बन सकता है ? अगर हम यह समझ जायँ कि हमारा स्वार्थ परोपकारके बिना टिक ही नहीं सकता, तो भले ही दूसरे जीवोंमें और पदार्थोंमें हमसे व्यक्तिगत विभिन्नता हो, परन्तु हमें परोपकारको धर्म बनाना पड़ेगा और उसे स्वार्थका अंग मानना पड़ेगा। तात्पर्य यह है कि चाहे सब जड़-चेतन-संसारको एक मानो या जड़ और जीवको पृथक् पृथक्, परन्तु सुखी होनेके लिए परोपकारको स्वार्थके समान, परात्माओंको स्वात्माके समान महत्त्व देना पड़ेगा, परोपकारको हमें एक सामान्य बना लेना पड़ेगा। परोपकारके क्षेत्रमें सिर्फ मनुष्योंका ही नहीं, किन्तु पशु-पक्षी, कीट पतंग तथा स्थावरोंका भी समावेश होगा। जिसने परोपकारको

स्वार्थ समझा, समस्त प्राणि-जगत् जिसने परोपकारका क्षेत्र बनाया, वही निष्पाप और सुखी है।

यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि मनुष्योंके और पशु-पक्षियोंके उपकारको हम अपना कर्तव्य या स्वार्थ समझे, यह ठीक है, परन्तु कीट-पतङ्गोंका विचार क्यों करें ? उनसे हमें क्या लाभ हो सकता है ? हम उनका कितना ही उपकार क्यों न करें, वे उसका बदला हमें कभी नहीं दे सकते। इस प्रश्नके उत्तरमें तीन बातें कही जा सकती है—

(क) कीट-पतङ्गोंमें मनुष्यों या पशु-पक्षियोंके समान बुद्धि भले ही न हो, फिर भी उनमें इतना ज्ञान होता है कि वे सतानेवालेको सतानेकी चेष्टा करें। बिच्छू वगैरह सतानेसे डक मारते हैं। विशेष बुद्धि न होनेसे उपकार-अनुपकारके कार्य वे अच्छी तरह न कर सकें, यह दूसरी बात है, परन्तु उनमे भी ये भावनाएँ होती हैं और यथाशक्ति वे इन्हें कार्य रूपमें परिणत करनेकी चेष्टा भी करते हैं, यहाँ तक कि वृक्ष भी सतुष्ट और असतुष्ट होते हैं।

(ख) अगर हम प्रत्युपकारकी निराशासे उनका खयाल न रक्खें, तो हमारी आत्मा धीरे धीरे इतनी स्वार्थी हो जायगी कि हमारे उपकारका क्षेत्र अत्यन्त सकुचित हो जायगा, और कालान्तरमें यह सकुचितता हमारे स्वार्थकी भी बाधक हो जायगी।

(ग) आत्मा अमर है, इसलिये अगर आज हम मनुष्य हैं तो सदा मनुष्य ही न बने रहेंगे। कभी हमें कीट-पतंग पशु-पक्षी-वृक्ष आदि भी होना पड़ेगा। अगर आज हम प्रत्युपकारकी निराशासे इन्हें सताते हैं, तो जब हमें कीट-पतग वृक्ष आदि होना पडेगा, तो दूसरे लोग भी हमें सतायेंगे। अगर हम इनपर दया रक्खेंगे,

तो हमें भी उस दयाका परिणाम कीट-पतंगके भवमें मिलेगा। मतलब यह है कि हर एक प्राणीको हर जगह जन्म लेना पड़ता है, इसलिये जितनी अधिक जगहमें सुखका विस्तार किया जाय, सुखी जीवन बितानेके लिये उतना ही अधिक क्षेत्र संसारमें तैयार होता है। इसलिये हमें अपने वर्तमान स्वार्थका ही विचार न करना चाहिये, बल्कि त्रैकालिक स्वार्थका विचार करना चाहिये। मान लो कि एक नगरमें सभी लोगोंकी यह आदत है कि वे खिड़कीमें बैठकर सड़कपर थूका करते हैं। इससे पथिकोंको कष्ट होता है। इसपर खिड़कीमें बैठनेवाले यह सोचें कि इसमें हमारा क्या जाता है, तो यह ठीक नहीं। क्योंकि जो अभी मकानके ऊपर बैठा है वह सदा वहीं न बैठा रहेगा, उसे भी कभी पथिक बनना पड़ेगा। उस समय दूसरेका थूक उसके ऊपर गिरेगा। इस दुःखसे बचनेके लिये सबके ऊपर थूकनेकी आदत छोड़नी पड़ेगी। इसलिये विश्वके समस्त जीवोंके विषयमें हमें इसी प्रकारका व्यवहार करना चाहिये। शक्तिशाली अगर निर्बलोंको सताना छोड़ दें, तो जब शक्तिशाली निर्बल होगा, तब उसको इस नीतिका लाभ मिलेगा। इसलिये शक्तिशालीका परोपकार भी कालान्तरमें अपने स्वार्थके लिये हो जाएगा।

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि साधारण प्राणियोंका पतन होता है इसलिए वे परोपकारके झंझटमें पड़ें, परन्तु जो योगी हैं जीवन्मुक्त हैं वे परोपकार क्यों करें? इस प्रश्नके उत्तरमें तीन बातें कहना है—

(१) जीवन्मुक्त भी एक दिन साधारण व्यक्ति होते हैं।

उनके ऊपर भी समाजके द्वारा किये गये उपकारोंका थोडा बहुत बोझ रहता है। उसके बदलेमे वे समाजोद्धार करते हैं। यदि ऐसे लोग समाजोद्धार न करें, तो आगेके लिए उस सस्थाका मार्ग रुद्ध हो जायगा, जिससे लोग जीवन्मुक्त होते हैं। मतलब यह कि कृतघ्नताके परिहारके लिए जीवन्मुक्तोंको भी समाज-सेवा करनी चाहिये।

(२) जीवन्मुक्त हो जानेपर भी मनुष्य, समाजाश्रयका त्याग नहीं करता, इसलिए वह अपनी वर्तमान आवश्यकता-पूर्तिका बदला भी समाज-सेवाके द्वारा चुकाता है।

(३) जीवन्मुक्तमें राग-द्वेष आदि विकार नहीं रहते, परन्तु उनके मन-वचन-काय कुछ न कुछ कार्य करते हैं। इधर जीवन्मुक्तको किसी स्वार्थ सिद्धिकी आवश्यकता नहीं है, इसलिए उसके मन-वचन-काय परोपकारके सिवाय और क्या कर सकते हैं?

इस प्रकार चाहे जीवन्मुक्त हो, चाहे ससारी, सबको सुख-वृद्धिके लिए प्रयत्न करना चाहिये। और यह खयाल रखना चाहिये कि अगर हम दूसरेको सुखी बनानेका प्रयत्न न करेंगे, तो हम सुखी नहीं हो सकते। परप्राणिकृत दु खोंको दूर करनेके लिए हमें इसी उदार नीतिसे काम लेना आवश्यक है।

जगत्कल्याणकी कसौटी

यहाँ तक यह बात सिद्ध हो चुकी है कि जगत्के कल्याणमें हमारा कल्याण है। परन्तु जगत्के कल्याणका निर्णय कैसे किया जाय, यह एक महान् प्रश्न है। यह बात तो सभी लोग समझते हैं कि अहिंसा आदिसे जगत्का कल्याण है, दान आदि शुभ कार्य हैं, परन्तु कभी

कभी युद्ध करना (हिंसा) भी आवश्यक होता है । दानकी अविवेक प्रवृत्तिसे बेकारोंकी संख्या बढ़ने लगती है । कभी कभी दो धर्मोंका पालन असंभव होता है । अगर सत्य बोलते हैं तो हिंसा होती है, अगर हिंसासे बचाते हैं तो झूठ बोलना पड़ता है । इस अवसरपर क्या किया जाय ? कर्तव्याकर्तव्यका निर्णय कैसे किया जाय ?

बहुतसे लोग कर्तव्याकर्तव्यके निर्णयके लिये सदसद्विवेकबुद्धि या अन्तर्नादके अनुसार कार्य करनेकी बात कहते हैं । परन्तु यह आवाज ठीक ठीक रूपमें महापुरुषोंको ही सुनाई देती है । परन्तु ऐसे मनुष्य इने-गिने होते हैं और कर्तव्याकर्तव्यके निर्णय करनेकी जरूरत तो सभीको होती है । दूसरी बात यह है कि अन्तर्नादके नामपर दंभकी सृष्टि होती है । पापीसे पापी—किन्तु बातें बनानेमें चतुर—व्यक्ति भी अन्तर्नादकी दुहाई देकर घोर दुष्कृत्य करते हैं, इसीलिये ऐसी कसौटी बनाना चाहिये जो तर्कपर कसी जा सके ।

दूसरी बात यह है कि अन्तर्नाद आकस्मिक नहीं है । कर्तव्याकर्तव्यके निर्णयके लिये हम जिन सिद्धान्तोंको जीवनमें उतारते हैं, आत्मामें जिनका अनुभव होता रहता है उन्हींके अनुसार हमें अन्तर्नाद सुनाई पड़ता है । जब उसका तात्कालिक कारण समझमें नहीं आता तब वह अन्तर्नाद कहलाता है । सच पूछा जाय तो अन्तर्नाद एक ऐसा भीतरी तर्क है, जिसे हम शब्दोंमें उतारकर दूसरोंको नहीं समझा पाते । इसलिये अन्तर्नाद सुननेके लिये हमें उस सिद्धान्तको जाननेकी आवश्यकता है जिसके अनुसार चलनेपर हमें अन्तर्नाद सुनाई दे सके । इस सिद्धान्तके निर्णय किये बिना हम सदसद्विवेक-बुद्धिसे भी काम नहीं ले सकते ।

बेन्थाम, मिल आदि पाश्चिमात्य विद्वानोंने कर्त्तव्याकर्त्तव्यका निर्णय करनेके लिये "अधिकाश लोगोंका अधिकतम सुख*" का नियम निश्चित किया है । कर्त्तव्याकर्त्तव्य-निर्णयको व्यावहारिक रूप देनेमे इससे अच्छी युक्ति दिखलाई नहीं देती । भारतवर्षके प्रत्येक धर्ममें इस नीतिको स्वीकार किया गया है । परन्तु इस नीतिका जो साधारण अर्थ किया जाता है, उसमें कुछ त्रुटि रह जाती है । इस त्रुटिको लोकमान्य तिलकने इन शब्दोंमें रक्खा है---

" इस आधिभौतिक नीति-तत्त्वमें जो बहुत बडा दोप है वह यही है कि इसमें कर्ताके मनके हेतु या भावका कुछ भी विचार नहीं किया जाता और यदि अन्तस्थ हेतुपर ध्यान दे, तो इस प्रतिज्ञासे विरोध खड़ा हो जाता है कि अधिकाश लोगोंका अधिक सुख ही नीतिमत्ताकी कसौटी है । केवल बाह्य परिणामोंका विचार करनेके लिये उससे बढ़कर दूसरा तत्त्व कहीं नहीं मिलेगा । परन्तु हमारा यह कथन है कि जब नीतिकी दृष्टिसे किसी बातको न्याय्य अथवा अन्याय्य कहना हो, तब केवल बाह्य परिणामोंको देखनेसे काम नहीं चल सकता । पाडवोंकी सात अक्षौहिणियाँ थीं और कौरवोंकी ग्यारह, इसलिये यदि पाडवोंकी हार हुई होती, तो कौरवोंको अधिक सुख हुआ होता । क्या उसी युक्तिवादसे पॉडवोंका पक्ष अन्याय्य कहा जा सकता है ? व्यवहारमें सभी लोग यह समझते हैं कि लाखों दुर्जनोंको सुख होनेकी अपेक्षा एक ही सज्जनको जिससे सुख हो, वही सच्चा सत्कार्य है । "

भावकी प्रधानता सभी धर्मशास्त्रोंमें बहुत अधिक परिमाणमें पाई

* "Greatest good of the greatest number"

जाती है। हिंसा हो जानेपर भी अगर हमारी भावना हिंसा करनेकी न हो, तो हमें हिंसाका दोष नहीं लगता और मार होने पर हिंसा न होनेपर भी हिंसाका दोष लगता है। यह बात अहिंसाके निरूपणमें स्पष्ट की जायगी।

अधिकांश लोगोंके अधिकतम सुखवाली नीति व्यवहारमें अत्यन्त उपयोगी है, इसलिये हम उसका त्याग नहीं कर सकते। और भावना विशुद्धिके बिना आत्म-विकास नहीं हो सकता, न ठीक ठीक निर्णय ही हो सकता है; इसलिये हम भावको गौण स्थान भी नहीं दे सकते। इस समस्याके सुलझानेके लिये अधिकांश प्राणियोंके अधिकतम सुखवाली नीतिमें कुछ संशोधन आवश्यक है, उसके लिये हमें निम्नलिखित सूत्रोंको स्वीकार करना चाहिये—

(क) अधिकतम लोगोंका अधिकतम सुखमें 'लोग' शब्दका अर्थ प्राणी है। धर्मके सामने त्रिकाल त्रिलोककी समस्याएँ हैं, इस लिये इतना व्यापक अर्थ करना उचित है।

(ख) सभी जीवोंका सुख समान नहीं होता। चैतन्यकी मात्रा बढ़नेसे सुखदु:खानुभवकी मात्रा बढ़ती है। द्वीन्द्रियादि जीवोंमें वनस्पतिकी अपेक्षा कई गुणा चैतन्य है। इनसे अधिक पशु-पक्षियोंमें और इनसे अधिक मनुष्योंमें। इनमें भी परस्पर तारतम्य देखना चाहिये। इस नीतिमें केवल संख्याका विचार नहीं करना है, सुखकी मात्राका भी विचार करना है।

(ग) नीतिका निर्णय सार्वत्रिक और सार्वकालिक दृष्टिसे करना चाहिये। दस चोर एक आदमीको लूट लें, इससे दस चोरोंको सुख

और एक ही आदमीको कष्ट होगा, परन्तु इस नीतिको हम अच्छा नहीं कह सकते। क्योंकि चोरी करनेकी नीतिसे एक समय और एक जगह भले ही अधिक सुख हो परन्तु अन्य समयमें और अन्य क्षेत्रोंमें दु खकी वृद्धि बहुत अधिक होगी। जो सर्वत्र और सर्वकालमें अधिकतम प्राणियोंको अधिकतम सुखकारक हो वही नीति ठीक है।

(घ) जो परोपकार परोपकार-बुद्धिसे न किया गया हो वह बहुत ही कम सुखवर्द्धक है। उसका श्रेय कर्त्ताको बहुत कम मिलता है।

एक आदमी यशके लिये परोपकार करता है। यह इस लिये ठीक नहीं है कि जब उसे यशकी आशा न होगी या यशकी चाह न होगी तब वह परोपकार न करेगा। यह सुख-वृद्धिमें बडा भारी बाधक है। उसका ध्येय यश है। इस लिये अगर यशके लिये कभी उसे अनुचित कार्य करनेकी आवश्यकता होगी तो वह अनुचित कार्य भी करेगा। इस प्रकार परोपकारका मूल्य तभी हो सकता है जब वह भावपूर्वक किया गया हो।

(ङ) अशुभ भावसे कोई कार्य किया जाय, और उसका फल शुभ हो जाय, तो वह अशुभ ही कहलायगा, इसी तरह शुभ भावसे कोई कार्य किया जाय किन्तु उसका फल अशुभ हो जाय तो वह शुभ ही कहलायगा। क्योंकि भावना अच्छी होनेपर भी बुरा कार्य होना कादाचित्क है। सामान्य नियम यही है कि उससे शुभ कार्य हो, इस लिये शुभ भावना सुखवर्द्धक है। दूसरी बात यह है कि भावनाके अनुसार अगर अच्छे-बुरेका निर्णय न किया जाय, तो अच्छा काम करना अशक्यप्राय हो जायगा। अच्छी भावनासे डॉक्टर

ऑपरेशन करे और रोगी मर जाय, इसपर डाक्टरको खूनीके समान मृत्यु-दण्ड दिया जाय तो कितने डॉक्टर ऑपरेशन करनेको तैयार होंगे ? इसलिए अधिकतम सुखके लिए भावनाकी प्रधानता देना आवश्यक है ।

इस सबका सार यह है कि सार्वत्रिक और सार्वकालिक अधिकतम प्राणियोंके अधिकतम सुखकी भावनासे जो कर्म किया जाय वह कर्तव्य है और बाकी अकर्तव्य । इस तरह आधिभौतिक और आध्यात्मिकके सम्मिश्रणसे हमें कर्तव्याकर्तव्यके निर्णयकी कसौटी मिल जाती है और अनेक तरहकी शंकाओंका समाधान हो जाता है । जैसे कि—रावणने सीताको चुराया रामने युद्ध करके रावणके वंशका नाश कर दिया । अगर राम युद्ध न करते तो राक्षस-वंशके लाखों मनुष्य मरनेसे बच जाते सिर्फ राम और सीता इन दो व्यक्तियोंको दुःख होता और लाखोंको सुख ।

यद्यपि वर्तमानकी दृष्टिसे यह घटना विपरीत नीतिकी सूचक है परन्तु सार्वत्रिक विचारसे इसका निर्णय हो जाता है । इस घटनाको लक्ष्य करके अगर यह नियम बना लिया जाय कि अगर कोई किसीकी पत्नीको चुरा ले जाय तो उसे उसकी रक्षाके लिये विशेष प्रयत्न न करना चाहिये, तो इसका फल यह होगा कि प्रतिदिन हजारों लाखों स्त्रियोंका सतीत्व नष्ट होने लगेगा । यह दुःख एक बार युद्धमें मर जानेवाले सैनिकोंके दुःखकी अपेक्षा बहुत अधिक होगा । मतलब यह कि अन्यायका प्रतिकार करना एक बार भले ही अधिक प्राणियोंको दुःखद हो परन्तु सदाके लिये वह सुखद है । समाजके भय तथा चिन्ताको रोकनेके कारण उसकी सुखदता और बढ़ जाती है ।

सुखी बननेकी कला

इस नीतिको अगर हम पूर्णरूपसे काममें ला सकें, तो बहुतसे दु:खोंका अन्त आ सकता है, परन्तु पूर्णरूपसे इस नीतिका कार्यान्वित होना अशक्य है तथा अगर इस विषयमें हमें सफलता मिल भी जाय तो भी अन्य प्राकृतिक दु:ख तो बने ही रहेंगे। इन सब दु:खोंको हम थोड़ा बहुत कम कर सकेंगे, परन्तु बहु भाग बचा ही रहेगा। इसलिये हमें सुखी बननेकी कला सीखना चाहिये। अनेक मनुष्य ऐसे देखे जाते हैं कि जिनके पास अन्य मनुष्योंकी अपेक्षा सुख-सामग्री अधिक होती है, फिर भी ईर्ष्या असतोष आदिके कारण वे दु:खी रहते हैं और अनेक मनुष्य जरा-सी विपत्तिमें घबरा जाते हैं, रोते हैं, जब कि अनेक महापुरुष हँसते हँसते मरते हैं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि जो लोग सुखी रहनेकी कला जानते हैं, वे हर हालतमें सुखी रहते हैं और जो इस कलाको नहीं जानते, वे हर हालतमें दुखी रहते हैं। धर्म हमें इसी कलाका शिक्षण देता है। इस शिक्षणकी कुछ बातें ये हैं—

जिस प्रकार हम किसी मकानमें भाड़ेसे रहते हों और वहाँपर हमें कोई विशेष कष्ट दे, हमारा अपमान करे, हमारी सम्पत्तिका अपहरण करे, तो हम उस मकानको छोड देते हैं, हम उस मकानकी पर्वाह नहीं करते। इसी प्रकार अगर हम शरीरकी भी पर्वाह न करें, शारीरिक जीवनसे आत्म-जीवनको महान् समझें, शरीरके लिये आत्माका नहीं किन्तु आत्माके लिये शरीरका बलिदान करना सीखें, मृत्युको गृहपरिवर्तन या वस्त्रपरिवर्तनके समान समझें, तो दु:खपूर्ण घटनाएँ हमें दु:खी न कर सकेंगी या नाममात्रको दुखी कर सकेंगी।

हमें यह निश्चित समझ लेना चाहिये कि हमारा किसीके ऊपर कुछ अधिकार नहीं है। जो जितनी सहायता करे वह उसकी सज्जनता है अगर न करे तो हमें बुरा माननेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

संसारका दुःख और सुख कुछ स्थिर नहीं है। वर्तमान विपत्ति आखिर नष्ट होगी ही। अगर यह इस जीवन-भर स्थिर भी रहे, तो *भी अनन्त कालके सामने यह जीवन इतना छोटा है कि इसकी* तुलना समुद्रके सामने एक कणसे भी नहीं की जा सकती।

नाटकके पात्रोंकी महत्ता उनके पदपर स्थिर नहीं है अर्थात् राजा बनने वाला उत्तम पात्र हो और रङ्क बननेवाला जघन्य पात्र हो यह बात नहीं है किन्तु जिसको जो काम सौंपा गया है वह काम जो अच्छी तरहसे कलाके साथ कर सकता है वही उत्तम पात्र है। इसी प्रकार संसारमें अपने कर्तव्यको पूर्णरूपसे करनेवाला ही उत्तम है। धन प्रमाण यश आदिसे किसीकी उत्तमताका अनु*मान लगाना ठीक नहीं है।*

जिस प्रकार काँटोंसे बचनेके लिये समस्त पृथ्वीतलपर चमड़ा नहीं बिछाया जा सकता किन्तु पैरोंके चारों तरफ चमड़ा लपेटा जाता है, अर्थात् जूता पहने जाते हैं, उसी प्रकार दुःखसे बचनेके लिये हम संसारकी अनिष्ट वस्तुओंका नाश नहीं कर सकते, न उन्हें वश कर सकते हैं किन्तु समताकी भावनासे अपनेको तदनुकूल कर सकते हैं।

इसलिये अगर हम दुःखी न होनेका दृढ़ निश्चय कर लें, तो हमें कोई दुःखी नहीं कर सकता। ये सब तथा इसी तरहकी अन्यान्य

शिक्षाएँ दुख-सुखको हमारे अधीन कर सकती हैं। इस विषयमें रोगीके समान हमें दो बातोंपर विचार करना चाहिये—

रोगी मनुष्यके दो कर्त्तव्य होते हैं। एक रोगकी यथाशक्ति चिकित्सा करना और दूसरे सहनशक्तिसे काम लेना। ये ही दो कार्य दु ख-रोगियोंके लिये हैं—(१) ससारमें सुखकी वृद्धि करना। (२) सुखी माननेका दृढ निश्चय करना, अर्थात् सुखकी कला सीखना।

शंका—मनुष्यको अगर इस प्रकार सुखी रहनेकी कला सिखाई जायगी, तो मनुष्य आलसी और कायर हो जायँगे। उनका सतोप उनकी पराधीनता या गुलामीका कारण हो जायगा जो कि परम्परासे धार्मिक, सामाजिक आदि हर तरहके पतनका कारण होगा।

समाधान—सुखी रहनेकी कला और उसके साधन सतोप, उदासीनता, क्षमा, त्याग आदि गुणोंसे कायरता आदि दुर्गुणोंमें बहुत अन्तर है। हर एक गुणके पीछे गुणाभास लगा रहता है। जैसे अहिंसाके पीछे निर्बलता, क्षमाके पीछे कायरता, विनयके पीछे दीनता, आदि। उन गुणोंसे इन गुणाभासोंमें आकाश-पातालका अन्तर होता है। गुण जितने उपादेय हैं, गुणाभास उतने ही हेय हैं। ये गुण गुणाभास न बन जायँ, इसके लिये ससारमें सुखवृद्धि करनेकी पहिली बात हमें भूल न जाना चाहिये। और यह भी याद रखना चाहिये कि मन-वचन-कायकी क्रिया (योग) सदा होती ही रहती है। जब तक मृत्युका पल प्राप्त न हो जाय तब तक मन, वचन और काय कुछ न कुछ काम करते ही रहते हैं। जब काम होना अनिवार्य है तब सुख वृद्धि या दु ख-हानिका काम होना चाहिये। इसलिये अपनी अपनी नीति और योग्यताके अनुसार प्रत्येक व्यक्तिको

सुखके साधनोंको जुटाना और दु:खके साधनोंको नष्ट करना धर्म करना आवश्यक है। सुखी रहनेकी कलाका यह मतलब नहीं है कि हम दु:खको दूर करनेका उपाय ही न करें परन्तु हम एक दु:खमें दूर करनेके लिए अन्य अनेक दु:खोंको मोल न ले लें, इसके लिये सुखी रहनेकी कला सीखना चाहिए। बीमार होनेपर चिकित्सा करना आवश्यक है परन्तु अगर कोई बीमारीके नामसे घबरा जाए, तो उसकी बीमारी कई गुणी दुःखद हो जायगी और साथ ही वह चिकित्सा भी न कर सकेगा। इसलिये हर हालतमें समभावको स्थिर रखना, यही सुखी रहनेकी कला है। दु:खके आने पर हमें उसका सामना करना चाहिए। सामना करनेके लिये दो बातें आवश्यक है। एक तो दु:खको नष्ट करना और उसकी चोटोंको सहन करना। जो आदमी शत्रुकी चोटोंको नहीं सह सकता, वह शत्रुका नाश भी नहीं कर सकता। उसी प्रकार जो आदमी दु:खकी चोटोंको नहीं सह सकता अर्थात् दु:ख आनेपर सम-भावपर स्थिर नहीं रह सकता, वह दु:खको नहीं जीत सकता।

लड़ाईमें कभी कभी ऐसा होता है कि जहाँ शत्रुका प्रवेश अधिक मात्रामें होता है वहाँसे अपना मोर्चा हटा लेना पड़ता है, जिससे शत्रुके गोले खाली जगहमें पड़कर नष्ट हो जावें। इसी प्रकार कभी कभी ऐसे दु:ख आते हैं जिन्हें दूर करनेमें हमें अपने विनाशका अर्थात् सम-भावके विनाशका खतरा रहता है। तब उन चोटोंको हम शरीरपर पड़ने देते हैं और शरीरका त्याग कर देते हैं, अर्थात् उससे ममत्व हटा लेते हैं। दु:ख शरीरका धर्म नहीं है, किन्तु आत्माका धर्म है इसलिए शारीरिक दु:खसे आत्मा दु:खी नहीं होता।

जो लोग सुखी रहनेकी कलाके नामपर, आध्यात्मिक जीवनके नामपर, सन्तोप आदि गुणोंके नामपर, स्वय गुलामी स्वीकार करते हैं और ससारमें दु'खकी वृद्धि होने देते हैं, वे इन सब गुणोंसे कोसों दूर हैं ।

जैसा कि मैं पहिले कह चुका हूँ दुःखको जीतनेके लिए दो बातें हैं। या तो उसकी चोटको सहते हुए (समभाव रखकर दृढ़तासे आगे बढ़ते हुए) उसे नष्ट कर दो अथवा दु.खकी चोटोंके स्थानको छोड दो। जिन लोगोंमें समताभाव होता है, और जो शरीरमें भी नि संग होते हैं, उनमें कायरता हो नहीं सकती, न वे गुलाम हो सकते हैं और न किसीको गुलाम होते देख सकते हैं। सुखी रहनेकी कला इसलिए नहीं है कि मनुष्य पशुकी तरह दुर्दशामें पड़ा रहे या अपनी सर्वतोमुखी दुर्दशा होने दे। इस कलासे मतलब है उस समभावका, जो घोरसे घोर विपत्तिमें भी निराशा और घबराहट नहीं होने देता, इस कलासे मतलब है उस वीर-रसका, जिससे मनुष्य विपत्तियोंको उसी तरह देखे जिस तरह शिकारी शिकारको देखता है। विपत्तियोंके सामने आत्मसमर्पण कर देना और गुलामी स्वीकार लेना इस कलाकी हत्या करना है।

साधारण अवस्थामें मनुष्य अगर स्वतन्त्रताके लिये या अन्य सुखके लिये प्रयत्न करता है किन्तु बीचमें उसे असफलता माल्म होती है या पराजय हो जाता है, तो घबरा जाता है, साहस छोड़ देता है, परन्तु जिसने सुखी रहनेकी कलाको जाना है वह हार करके भी नहीं हारेगा, नि महाय हो करके भी निराश न होगा। पराजय, निराशा आदि शब्द उसके कोपसे निकल जायँगे। समभाव आदि गुण, अकर्मण्यताके लिये नहीं किन्तु, अनन्तकर्मण्यताके लिये है।

शंका—यदि ऐसा है तो धर्म निवृत्ति या गृह-त्यागका ही मुख्य उपदेश क्यों देता है ?

समाधान—इसके उत्तरमें तीन बातें कही जा सकती हैं—

(क) जगत्कल्याणके लिये और आत्मकल्याणके लिये निवृत्ति आवश्यक है। जो मनुष्य परिमित स्वार्थोंको लिये बैठा रहता है, वह जगत्कल्याणके लिये पूरी शक्ति नहीं लगा सकता। क्योंकि जहाँ सपरिग्रहता है, वहाँ व्यक्तिगत कार्योंका बड़ा भारी बोझ है। निष्परि ग्रहके लिए यह बोझ नहीं है। वह घरमें रहे या वनमें रहे, परन्तु निष्परिग्रह होना चाहिए। निष्परिग्रहताका रूप सदा सर्वत्र एकसा नहीं होता। तथा निवृत्तिका अर्थ अकर्मण्यता नहीं है, किन्तु वैयक्तिक स्वार्थोंके बन्धनसे छूट जाना है।

(ख) बहुतसे मनुष्य ऐसे हैं कि जो अनेक तरहकी तकलीफें बड़ी प्रसन्नतासे सह सकते हैं। परन्तु उन तकलीफोंसे वे दूसरोंकी नजरोंमें गिर जायँगे, इसलिए उनसे बचनेके लिए निरन्तर आकुलित रहते हैं। मान लो मैं प्रसन्नतासे रूखा-सूखा भोजन कर सकता हूँ। परन्तु इससे मैं कंजूस कहलाऊँगा, अथवा मेरे पास अच्छा भोजन करने लायक सम्पत्ति न होगी तो कंगाल कहलाऊँगा—इस अपमानसे बचनेके लिए आवश्यक न होनेपर भी मैं बहुपरिग्रही बनता हूँ। इसके लिए दूसरेकी मिलनेवाली सम्पत्ति मैं हड़प जाता हूँ। इस तरह मेरा मानसिक कष्ट बढ़ता है और दूसरोंके साम्पत्तिक कष्टमें सहायक होता हूँ। परन्तु एक निष्परिग्रही साधु रूखा भोजन करनेमें अपमानित नहीं होता, इसलिये वह दूसरेके भागकी सम्पत्ति नहीं लेता।

इस तरह वह स्वय सुखी होता है और पर-कल्याण भी करता है। परिग्रहीकी अपेक्षा सच्चा निष्परिग्रही बहुत सुखी है।

(ग) पिछले जमानेमें आजकल सरीखे ज्ञान-प्रचारके साधन नही थे इससे, तथा पुस्तकों वगैरहसे उपदेश तो मिलता है परन्तु उसमे सजीवता नहीं होती इससे, उस समय साधु-सस्थाको विशाल बनानेकी आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त उस समय अन्न इतना अधिक था कि विशाल साधु-संस्था भी लोगोंको कोई कष्ट दिये बना निभ सकती थी। फिर इस बातका पूरा खयाल रक्खा जाता था कि कोई मनुष्य कुटुम्बियोंकी इच्छाके विरुद्ध, उत्तरदायित्व छोडकर, तो नहीं भाग रहा है।

शंका—धर्मका उद्देश्य अगर स्व-पर-कल्याण है, तो वह अनावश्यक कष्टोंको निमन्त्रण देनेका विधान क्यों बताता है? बहुत दिनोंतक भूखे रहना, ठण्ड गर्मीके कष्ट सहना, आदिसे न तो दूसरोको सुख मिलता है, न अपनेको सुख मिल सकता है।

समाधान—धर्मने ऐसे तपोको अन्तरग तप नहीं किन्तु बाह्य तप कहा है। और इन बाह्य तपोंका मूल्य तभी स्वीकार किया है, जब ये प्रसन्नतासे और निराकुलतासे किये जावें। सुख जितना ही स्वाधीन होगा उतना ही पूर्ण होगा। इसलिये पराश्रितताका त्याग करनेके लिये और सहनशक्तिको बढानेके लिये इन तपोंकी आवश्यकता है। हममें सहन-शक्ति जितनी अधिक होगी, दुःखके साथ हम उतना ही अधिक लड सकेंगे। यदि सहन-शक्ति आवश्यक है, तो उसका ऊँचासे ऊँचा रिकार्ड किस किस दिशामें कितना हो सकता है, इसका प्रयत्न करना भी आवश्यक है। एक मनुष्य प्रति

शंका—यदि ऐसा है तो धर्म निवृत्ति या गृह-त्यागका ही मुख्य उपदेश क्यों देता है ?

समाधान—इसके उत्तरमें तीन बातें कही जा सकती हैं—

(क) जगत्कल्याणके लिये और आत्मकल्याणके लिये निवृत्ति आवश्यक है । जो मनुष्य परिमित स्वार्थोंको लिये बैठा रहता है, वह जगत्कल्याणके लिये पूरी शक्ति नहीं लगा सकता । क्योंकि जहाँ सपरिग्रहता है वहाँ व्यक्तिगत कार्योंका बड़ा भारी बोझ है । निष्परिग्रहके लिए यह बोझ नहीं है । वह घरमें रहे या वनमें रहे परन्तु निष्परिग्रह होना चाहिए । निष्परिग्रहताका रूप सदा सर्वत्र एकसा नहीं होता । तथा निवृत्तिका अर्थ अकर्मण्यता नहीं है किन्तु वैयक्तिक स्वार्थोंके बन्धनासे छूट जाना है ।

(ख) बहुतसे मनुष्य ऐसे हैं कि जो अनेक तरहकी तकलीफें बड़ी प्रसन्नतासे सह सकते हैं । परन्तु उन तकलीफोंसे वे दूसरोंकी नजरोंमें गिर जायँगे, इसलिए उनसे बचनेके लिए निरन्तर आकुलित रहते हैं । मान लो मैं प्रसन्नतासे रूखा-सूखा भोजन खा सकता हूँ । परन्तु इससे मैं कंजूस कहलाऊँगा, अथवा मेरे पास अच्छा भोजन करने लायक सम्पत्ति न होगी तो कंगाल कहलाऊँगा—इस अपमानसे बचनेके लिए आवश्यक न होनेपर भी मैं बहुपरिग्रही बनता हूँ । इसके लिए दूसरेको मिलनेवाली सम्पत्ति मैं हड़प जाता हूँ । इस तरह मेरा मानसिक कष्ट बढ़ता है और दूसरोंके साम्पत्तिक कष्टमें सहायक होता हूँ । परन्तु एक निष्परिग्रही साधु रूखा भोजन करनेसे अपमानित नहीं होता, इसलिये वह दूसरेके भागकी सम्पत्ति नहीं लेता ।

सार यह है कि धर्म सुखके लिये है। जो सुख बाह्य साधनोंपर ही अवलम्बित है, वह पूर्ण सुख नहीं है। स्वार्थपूर्ण दृष्टि बनानेसे वह मिल नहीं सकता। अपने हिस्सेका बाह्य सुख-भोगका हमें अधिकार है। पूर्ण सुखी बननेके लिये सुखी बननेकी कला जानना चाहिए। गुणभासोंसे बचना चाहिए।

धर्म-मीमांसाका उपाय

धर्मका उद्देश्य और उसकी विविधताका रहस्य समझ लेनेके बाद धर्मकी मीमांसाका कार्य बहुत सरल हो जाता है। धर्म सुखका कारण होनेपर भी दुःखका कारण क्यों हो जाता है, कलह-वर्द्धक क्यों हो जाता है, आदि बातोंको समझनेकी कुंजी हाथमें आ जाती है। जगत्कल्याणकी जो कसौटी बताई गई है, उसको ध्यानमें न रखनेसे, धर्मके नामपर अहंकारकी पूजा करनेसे, कल्याणकारी धर्म अकल्याणकारी बन जाता है। इसलिए धर्मसे लाभ उठानेके लिए हमें निम्नलिखित उपायोंकी योजना करना चाहिये—

१—हम सर्व-धर्म-समभावी बनें। अगर हमारा किसी धर्म-संस्थासे ज्यादा संपर्क है, तो हम भले ही उस संस्थाका अधिक उपयोग करें और आत्मीयता प्रकट करें, परन्तु दूसरी धर्म-संस्थाओंको अपनी धर्म-संस्थाके समान पवित्र मानें। उनसे लाभ उठानेका मौका मिलनेपर उनसे लाभ भी उठावें। ये सभी धर्म-संस्थाएँ मनुष्य-समाजको उन्नत बनानेके लिए थीं। उनकी रीति-नीतिमें अगर अन्तर मालूम होता है, तो उस अन्तरसे उन्हें भला-बुरा न समझें, किन्तु उसको देश-कालका असर समझें। करीब सवा हजार वर्ष पहिले अरबके लोगोंकी उन्नतिके लिए इस्लामने जो नियम बनाये,

घण्टे २०० मीलकी चालसे मोटरकार दौड़ाता है। यदि व्यवहारमें इतनी चालसे मोटरें दौड़ाई जाने लगें, तो प्रतिदिन हजारों मनुष्योंको प्राण देना पड़ें। फिर भी ऐसे रिकार्ड लानेवालोंकी प्रशंसा होती है, क्योंकि इससे मोटरकारकी गतिको उत्तेजना मिलती है। जिस दिशामें हम जाना है उस दिशामें कितना आगे बढ़ा जा सकता है, इसका सक्रिय पाठ दुनियाको पढ़ाना बड़ा भारी काम है। दूसरी बात यह है कि ठण्ड गर्मी भूख प्यास आदिके कष्ट मनुष्यको कभी न कभी सहना पड़ते हैं। उस समय हम अपनेको शान्त रख सकें इसके लिये भी ये तप आवश्यक हैं। जो लोग पूजा कराने के लिये ऐसे तप करते हैं वे तपका फल नहीं पाते तथा जो लोग यह नहीं समझते कि इन तपस्याओंसे सुखकी स्थिरता बढ़ती है तथा प्रकृतिके विरुद्ध लड़नेकी शक्ति आती है, वे लोग भी तपका फल नहीं पाते। इन तपोंको संयम समझनेवाले भी मूर्ख हैं। ये तो सिर्फ संयमका अभ्यास करनेके लिये कसरतके समान हैं।

इससे भी अच्छा तप आत्मशुद्धि और सेवा है, जिसे कि अतरंग तप कहा है। धर्मके किसी एक ही अंगपर जोर देना उस द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावका फल है। इसका यह मतलब नहीं है कि जिस अंगपर बहुत दिनोंतक जोर दिया गया है, या जो रूप बहुत काल तक बना रहा है वही सब कुछ है। दूसरे अंग और दूसरे रूप भी हैं। उनका समयपर उपयोग करना भी आवश्यक है। यदि ऐसा न हो तो धर्म एकान्तधर्म और मिथ्याधर्म हो जाय वह धर्म ही न रहे।

जिससे सब सम्प्रदायोंमे तथा उनके अनुयायिवर्गोंमें आदर और प्रेम बढे और सबके जुदे जुदे सगठनके बदले सबका एक सगठन बने। हिन्दूधर्मका कर्मयोग, जैनधर्मकी अहिंसा और तप, बौद्धधर्मकी दया, ईसाईधर्मकी सेवा, इस्लामका भ्रातृत्व, ये सब चीजें सभीके लिये उपयोगी हैं। अन्य सम्प्रदायोंमें भी अनेक भलाइयाँ मिलेंगीं। इन्हींको मुख्यता देकर अगर हम विचार करें, तो सब धर्मोंसे हमें प्रेम भी होगा, आपसका द्वेष भी नष्ट होगा, तथा सबका एक सगठन भी बन सकेगा। इसके लिये हमें जहाँतक बन सके सभी सम्प्रदायोके धर्मस्थानोंका उपयोग करना चाहिये। अपने सम्प्रदायोंके मदिरोंमें भी अन्य सम्प्रदायोंके महात्माओंके स्मारक रखना चाहिये। सभी सम्प्रदायोंके महात्माओंके स्मारक जहाँ बराबरीसे रह सकें, ऐसे स्थान बनाना चाहिये। इस प्रकार सर्व-धर्म-समभावको व्यावहारिक रूप देने और उसे जीवनमे उतारनेकी पूरी कोशिश करना चाहिये।

४—बहुत-सी ऐसी बाते हैं जो एक समय अच्छी थीं, उपयोगी थीं, क्षन्तव्य थी, इसलिये शास्त्रोंमें या रूढ़िमें स्थान पा गई हैं, परन्तु आज वे उपयोगी नहीं हैं, इसलिये उन्हे हटा देना चाहिये। सिर्फ इसी बातको लेकर कि वे हमारे शास्त्रोंमें लिखी हैं, या पुरानी हैं, उन्हे चालू रखना अन्याय है। जो सर्व-धर्म-समभावी है, वह किसी एक धर्मशास्त्रकी दुहाई देकर किसी अनुचित बातका समर्थन क्यों करेगा? एक सम्प्रदायके शास्त्रमे किसी बातका विधान हो सकता है और दूसरे सम्प्रदायके शास्त्रमे उसका निषेध हो सकता है, तब सर्व-धर्म-समभावीके सामने एक जटिल प्रश्न खड़ा हो जाता है कि वह किसकी बात माने? ऐसी हालतमे उसे यही देखना चाहिये कि कल्याण

यदि वे आज किसी देशके लिए निरुपयोगी हैं, तो इससे इसमको बुरा न समझें। हम इतना ही कहें कि यह नियम आजके लिए उपयोगी नहीं है, इसलिए दूर कर देना चाहिये; परन्तु अपने समयके लिए अच्छा था। इसी उदारतासे हमें वैदिक, जैन, बौद्ध, ईसाई पारसी आदि धर्मोंपर विचार करना चाहिये। हम उनकी आलोचना करें; परन्तु पूर्ण निष्पक्षतासे आलोचना करें। उनमेंसे वैज्ञानिक सत्यको खोज लें, बाकीको वर्तमान कालकी दृष्टिसे निरुपयोगी कहकर छोड़ दें। परन्तु इससे उस धर्मका निरादर न करें। जिस सम्प्रदायको हमने अपना सम्प्रदाय बना रक्खा है, उसकी आलोचना करते समय हमारे हृदयमें जितनी भक्ति रहती है वही भक्ति हम दूसरे सम्प्रदायकी आलोचना करते समय रक्खें। अपने सम्प्रदायके दोषोंपर तो हम नजर ही न डालें और दूसरे सम्प्रदायके दोष ही खोज देखें यह बड़ीसे बड़ी भूल है। इससे हम किसी भी धर्मके अनुयायी नहीं कहला सकते—धर्मका लाभ हमें नहीं मिल सकता।

२—जो कार्य सार्वत्रिक और सार्वकालिक दृष्टिसे अधिकतम प्राणियोंके अधिकतम सुखका कारण है उसे ही धर्म समझें। इसके विरुद्ध कोई भी कार्य क्यों न हो,—भले ही बड़ेसे बड़ा महापुरुष या बड़ेसे बड़ा आगम ग्रंथ उसका समर्थन करता हो; परन्तु उसे हम धार्मिक न समझें। हमारे प्रत्येक कार्यमें यह उद्देश्य जरूर रहे। इस सिद्धान्तको हम अपने जीवनमें उतारनेकी कोशिश करें।

३—उपर्युक्त सिद्धान्तके अनुसार सभी सम्प्रदायोंमें कुछ न कुछ हितकर तत्त्व रहते हैं। हम उन्हींकी मुख्यता देखनेकी कोशिश करें,

जिससे सब सम्प्रदायोंमें तथा उनके अनुयायिवर्गोंमे आदर और प्रेम बढे और सबके जुदे जुदे सगठनके बदले सबका एक सगठन बने । हिन्दूधर्मका कर्मयोग, जैनधर्मकी अहिंसा और तप, बौद्धधर्मकी दया, ईसाईधर्मकी सेवा, इस्लामका भ्रातृत्व, ये सब चीजें सभीके लिये उपयोगी हैं । अन्य सम्प्रदायोंमें भी अनेक भलाइयाँ मिलेंगीं । इन्हींको मुख्यता देकर अगर हम विचार करें, तो सब धर्मोंसे हमें प्रेम भी होगा, आपसका द्वेप भी नष्ट होगा, तथा सबका एक सगठन भी बन सकेगा । इसके लिये हमें जहाँतक बन सके सभी सम्प्रदायोंके धर्मस्थानोका उपयोग करना चाहिये । अपने सम्प्रदायोंके मंदिरोंमें भी अन्य सम्प्रदायोंके महात्माओंके स्मारक रखना चाहिये । सभी सम्प्रदायोंके महात्माओंके स्मारक जहाँ बराबरीसे रह सकें, ऐसे स्थान बनाना चाहिये । इस प्रकार सर्व-धर्म-समभावको व्यावहारिक रूप देने और उसे जीवनमे उतारनेकी पूरी कोशिश करना चाहिये ।

४—बहुत-सी ऐसी बाते हैं जो एक समय अच्छी थीं, उपयोगी थीं, क्षन्तव्य थीं, इसलिये शास्त्रोंमें या रूढिमे स्थान पा गई हैं, परन्तु आज वे उपयोगी नहीं है, इसलिये उन्हें हटा देना चाहिये । सिर्फ इसी बातको लेकर कि वे हमारे शास्त्रोंमे लिखी है, या पुरानी हैं, उन्हे चालू रखना अन्याय है । जो सर्व-धर्म-समभावी है, वह किसी एक धर्मशास्त्रकी दुहाई देकर किसी अनुचित बातका समर्थन क्यों करेगा ? एक सम्प्रदायके शास्त्रमें किसी बातका विधान हो सकता है और दूसरे सम्प्रदायके शास्त्रमें उसका निषेध हो सकता है, तब सर्व-धर्म-समभावीके सामने एक जटिल प्रश्न खड़ा हो जाता है कि वह किसकी बात माने ? ऐसी हालतमें उसे यही देखना चाहिये कि कल्याण

किसमें है ? अगर कोई बात सभी शास्त्रोंमें एकसी मिलती है अथवा उनमें जितने मत हों वे सभी वर्तमानमें हितकारी न हों, तो उन सबको छोड़कर उसे कल्याणकारी बात पकड़ना चाहिये। जैसे वर्तमानमें संकुचित जातीयता, स्त्रियोंके पुनर्विवाहका निषेध, पर्दाकी अधिकता, छूताछूतका अनुचित विचार, भूत-पिशाच आदिकी मान्यता, अविश्वसनीय अतिशय आदि बहुतसे अहितकर तत्त्व आगये हैं, जो कि प्रगतिके नाशक तथा ईर्ष्या और दुरभिमानको बढ़ानेवाले हैं। इन सब कुतत्त्वोंको हटाकर विवेकी बनना चाहिये। एक जैन कहे कि महावीरके जन्म समय इन्द्रादि देवता पूजा करने आये थे बौद्ध कहें कि बुद्धके जन्म समय ब्रह्मा-विष्णु-महेश मौजूद थे, वैष्णव कहे कि रामके जन्मसमय शिव इन्द्र आदि अयोध्याकी गलियोंके चक्कर काटते थे तो ये सब बातें अन्ध विश्वास और मूढ़ताके चिह्न हैं। इनसे विज्ञानकी हत्या होती है समभाव नष्ट होता है ईर्ष्या और दुरभिमान बढ़ता है। हमें धर्मको अधिकसे अधिक विज्ञानसंगत बनाना चाहिये और इसी बुनियादपर धर्म तथा समाजका नव-निर्माण या जीर्णोद्धार करना चाहिये।

५—आज मानव-समाज कई तरहके भेदोंमें बँटा हुआ है। साम्प्रदायिक भेद तो हैं ही, साथ ही और भी अनेक तरहके वर्ग बना लिये गये हैं और इस प्रकार वर्गयुद्ध चालू हो गया है। मनुष्य अपना पेट भरके सन्तुष्ट हो जाता तो गनीमत थी; परन्तु वह इतनेमें सन्तुष्ट नहीं होता वह यह कोशिश करता है कि हमारी जातिके सब मनुष्योंका पेट भरे और हम सब संगठित होकर दूसरोंको लूटें। इसीलिये एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रको पीस डालना चाहता है। जातों-

कि वह स्त्री है। धार्मिक अधिकारोंमे तो विषमताका कोई मतलब नहीं है। फिर भी पुरुषने धार्मिक क्रिया-कांडोंमें नारीके अधिकार छीने हैं। उससे पुरुषको कोई लाभ भी नहीं हुआ। इसलिये यह विषमता भी दूर करनी चाहिये। इस प्रकार सर्वजाति-समभावके समान नर-नारी-समभावकी भी जरूरत है।

इस प्रकार यदि हम सर्व-धर्म-समभाव, सर्व-जाति-समभाव, विवेक या समाज-सुधारकता, निःस्वार्थता आदि गुणोंको लेकर धर्मकी मीमांसा करेंगे, तो सच्चे धर्मको प्राप्त कर सकेंगे। उस धर्मको जीवनमें उतारनेसे हमारा भी कल्याण होगा और जगतका भी कल्याण होगा।

धर्म-मीमांसा और जैनधर्म

यहांतक धर्मके विषयमें जो विवेचन किया गया है उसका सार सभी धर्मोंमे पाया जाता है। अगर हममें सम-भाव आदि गुण हों तो हम किसी भी धर्मका सहारा लेकर सच्चे धर्मकी प्राप्ति कर सकते हैं। जो धर्म जिस समय पैदा होता है अगर उस समयकी परिस्थितिका प्रभाव उसमेंसे निकाल दिया जाय और उस धर्मके तीर्थंकरकी मनोवृत्ति प्रगट हो जाय तो धर्मोंमें विरोध ही न रहे।

परन्तु देश-कालकी परिस्थितिकी छाप धर्मोंके रूपपर रहती है, लोगोंके पास पहुँचानेके लिये उसमें कुछ असत्यका मिश्रण भी हो जाता है तथा देश-कालके बदलनेसे उसकी कई बातें आजके लिये निरुपयोगी भी हो जाती हैं। इसलिये अगर उस धर्मको फिर सुसंस्कृत किया जाय उसके लौकिक रूपको प्रगट करनेकी कोशिश की जाय तभी वह धर्म उपयोगी धर्म बन सकता है।

भेदोंको तोड़ देनेकी जरूरत है। हाँ, जीवनमें मित्र-वर्ग या सम्बन्धी-वर्ग बनानेकी जरूरत होती है, सो जहाँ चाहेसे बनाना चाहिये। अमुक वर्गमेंसे ही चुनाव कर सकें, यह भेद न होना चाहिये। इस प्रकार जब हममें सर्व-जाति-समभाव आ जायगा, तो हममेंसे वर्ग-युद्धके तथा ईर्ष्या और दुरभिमानके बहुतसे कारण नष्ट हो जायँगे तथा हमें प्रगतिके लिये तथा सुविधापूर्वक जीवन बितानेके लिये बहुतसे साधन मिल जायँगे। इसलिये हमें अपने दिलमेंसे जाति-उपजातिका भेद निकाल देना चाहिये जातीय और साम्प्रदायिक विशेषाधिकारोंकी माँग छोड़ देना चाहिये जातिके नामपर रोटी-बेटी-व्यवहारका विरोध न करना चाहिये। इस प्रकार *सर्व-धर्म-समभावके समान सर्व-जाति-समभावी भी बनना चाहिये।*

६—सर्व-जाति-समभावकी तरह नर-नारी-समभाव भी आवश्यक है। *यह सर्व-जाति-समभावका एक अंग है।* नर-नारीकी शारीरिक विषमता है परन्तु वह विषमता ऐसी है जैसी कि एक शरीरके दो अंगोंमें होती है। नर-नारी एक दूसरेके लिये पूरक हैं। इसलिये एक दूसरेको उन्नतिमें एक दूसरेको बाधक नहीं होना चाहिये और जहाँ तक बन सके अधिकारोंमें समानता होना चाहिये। अनेक स्थानोंपर स्त्रीकी अवस्था गुलाम सरीखी है। उसके आर्थिक अधिकार पूरी तरह छिने हुए हैं। फूटी कौड़ीपर भी उसका स्वामित्व नहीं है। यह दुःपरिस्थिति जाना चाहिये। जहाँ तक बन सके, स्त्री-पुरुषमें आर्थिक समताका प्रचार होना चाहिये। अगर विषमता रहे भी तो वह कमसे कम हो। सामाजिक अधिकारोंमें भी विषमता न होना चाहिये। स्त्री सिर्फ इसीलिये किसी कार्यसे वंचित न हो सके

कि वह स्त्री है। धार्मिक अधिकारोंमें तो विपमताका कोई मतलब नहीं है। फिर भी पुरुपने धार्मिक क्रिया-काडोंमें नारीके अधिकार छीने हैं। उससे पुरुषको कोई लाभ भी नहीं हुआ। इसलिये यह विषमता भी दूर करनी चाहिये। इस प्रकार सर्वजाति-समभावके समान नर-नारी-समभावकी भी जरूरत है।

इस प्रकार यदि हम सर्व-धर्म-समभाव, सर्व-जाति-समभाव, विवेक या समाज-सुधारकता, निःस्वार्थता आदि गुणोंको लेकर धर्मकी मीमासा करेंगे, तो सच्चे धर्मको प्राप्त कर सकेंगे। उस धर्मको जीवनमें उतारनेसे हमारा भी कल्याण होगा और जगतका भी कल्याण होगा।

धर्म-मीमांसा और जैनधर्म

यहांतक धर्मके विषयमें जो विवेचन किया गया है उसका सार सभी धर्मोंमें पाया जाता है। अगर हममें सम-भाव आदि गुण हो तो हम किसी भी धर्मका सहारा लेकर सच्चे धर्मकी प्राप्ति कर सकते हैं। जो धर्म जिस समय पैदा होता है अगर उस समयकी परिस्थि-तिका प्रभाव उसमेंसे निकाल दिया जाय और उस धर्मके तीर्थंकरकी मनोवृत्ति प्रगट हो जाय तो धर्मोंमें विरोध ही न रहे।

परन्तु देश-कालकी परिस्थितिकी छाप धर्मोंके रूपपर रहती है, लोगोंके पास पहुँचानेके लिये उसमें कुछ असत्यका मिश्रण भी हो जाता है तथा देश-कालके बदलनेसे उसकी कई बातें आजके लिये निरुपयोगी भी हो जाती हैं। इसलिये अगर उस धर्मको फिर सुसस्कृत किया जाय उसके लौकिक रूपको प्रगट करनेकी कोशिश की जाय तभी वह धर्म उपयोगी धर्म बन सकता है।

अन्य धर्मोंके समान जैनधर्म भी इन तत्वोंसे भरा हुआ है। इसके प्रवर्तकोंकी मनोवृत्ति चिरकाल तक वैज्ञानिक रही है। पुरानी कथाओं और विचारोंको सुधार सुधार करके इस धर्मके विद्वान् उन्हें विश्वसनीय बुद्धिमाह्य और तर्कसंगत बनाते रहे हैं।

जैनधर्मका जो स्याद्वाद है वह तो सर्व-धर्म-सम-भावका ही नामान्तर है। स्याद्वादके द्वारा जैनधर्मने सब धर्मोंका समन्वय किया है। हाँ इसका उपयोग विशेषतः दार्शनिक क्षेत्रमें ही हो पाया है, इसलिये जनसाधारणने इससे लाभ नहीं उठा पाया परन्तु इसके प्रवर्तकका लक्ष्य यही था।

जाति-पाँतिका भेद तथा नर-नारीके अधिकारोंकी विषमता आदि तो मूल जैनधर्ममें है ही नहीं, यह बात उसके साहित्यसे साफ़ समझी जा सकती है। इस प्रकार इस धर्ममें सर्व-धर्म समभाव सर्व-जाति-समभाव विवेक आदि उपयोगी गुणोंने काफ़ी जगह रोकी है। परन्तु पिछले ढाई हजार वर्षमें इसमें भी विकृति आगई है जोकि उपर्युक्त गुणोंके साथ मेल नहीं खाती तथा इस धर्मके मूल उद्देश्यपर कुठाराघात कर रही है, इसलिये अब उसकी अग्नि-शुद्धि करके सत्य जैनधर्मको प्रकाशमें लानेकी जरूरत है।

जैन-साहित्यमें ही इतना मसाला है कि अगर कोई मनुष्य निष्पक्ष और गंभीर दृष्टिसे उसका निरीक्षण करे तो वास्तविक बात छुपी न रहेगी तथा उसे जैनधर्मके वर्तमान रूपकी अपेक्षा एक दूसरे ही दिव्य रूपका दर्शन होगा।

अगर कोई बात जैन-साहित्यमें न मिले परन्तु आज उसकी जरूरत हो, तथा पिछले ढाई हजार वर्षके प्रचलनने कुछ नई चीज हमारे

सामने रक्खी हो तो हमे नि.सकोच होकर उसे अपना लेना चाहिये। यह समझना कि हम अपने पूर्वजोंसे आगे नहीं वढ सकते, भूल है। हम उनके प्रति कृतज्ञता प्रगट करें परन्तु उसके लिये अपने विकास-को ही न रोक लें और परिस्थितिके प्रतिकूल वातोंको न अपनाए रहे।

प्राचीनताकी बीमारी एक बड़ी भारी बीमारी है इसे दूर ही रक्खें। झूठ बोलना, चोरी करना, हिंसा करना, आदि पाप किसी भी धर्मसे पुराने हैं परन्तु इसीलिये वे उपादेय नहीं हैं। हमें सत्य और कल्याण-कारिताका उपासक होना चाहिये न कि प्राचीनता या नवीनताका।

इस प्रकार पूर्ण निष्पक्षताके साथ समभावपूर्वक आगेके पृष्ठोंमें जैनधर्मकी मीमासा की जाती है जिससे उसका मर्म माळूम हो और उससे वास्तविक और पूरा लाभ उठाया जा सके।

दूसरा अध्याय

ऐतिहासिक निरीक्षण

जैनधर्मकी स्थापना

किसी धर्मका ऐतिहासिक निरीक्षण किये बिना उसका रहस्य समझमें नहीं आता। धर्म-संस्थाओंकी स्थापना जन-समाजके कल्याणके लिये और उसकी उन्नतिके लिये हुआ करती है, इसलिये धर्म-संस्थाका निर्माण भी जन-समाजकी परिस्थितिके अनुकूल हुआ करता है। एक ही आदमी दो भिन्न भिन्न देशों और समयोंमें अगर धर्म-संस्थाएँ बनावे तो दोनों ही संस्थाएँ जुदे जुदे ढंगकी होंगीं। इससे समझा जा सकता है कि धर्म-संस्थाओंके नियम अटल-अचल नहीं हैं किन्तु देश-कालकी परिस्थितिके फल हैं। इसलिये देश कालके बदलनेपर उनको बदलनेका कार्य उचित है। इस रहस्यके ज्ञानसे मनुष्यमेंसे धार्मिक कट्टरता कम होती है, दूसरे धर्मोंसे घृणा कम होती है, विचारकता और सुधारकता आती है और इस प्रकार वह धार्मिकता और वैज्ञानिक सत्य, दोनों प्रकारके सत्यके नजदीक पहुँचता है।

धर्मोंके ऐतिहासिक निरीक्षणमें हमें अधिकसे अधिक सामग्री उसी धर्मके साहित्यसे मिलती है। परन्तु उसमेंसे सत्य निकालना बड़ा कठिन होता है। क्योंकि धर्म लोगोंके जीवनका सर्वस्व होता है और उनकी दृष्टिमें उसका स्थान भी सर्वोच्च है। फल यह होता है कि धार्मिक साहित्यमें दूसरे धर्मोंकी निन्दा और अपने धर्मकी अत्यधिक

प्रशंसा भर जाती है। बडे बडे विद्वान् और सत्यपरायण व्यक्ति भी धर्मोन्नतिके लिये असत्य कल्पनाओंका आश्रय लेते हैं। कभी कभी लोक-हितकी दृष्टिसे भी उन्हें ऐसा करना पड़ता है। परन्तु कालान्तरमें असत्यका दुष्फल समाजको भोगना ही पडता है।

ऐतिहासिक निरीक्षणमें धार्मिक साहित्यका उपयोग तो करना चाहिए परन्तु विना विचारे उसे प्रमाण न मानना चाहिये। अगर वह वर्णन स्वाभाविक हो तथा असत्य बोलनेका कोई पर्याप्त कारण न मिलता हो तभी उसे सत्य स्वीकार करना चाहिये।

ऐतिहासिक निरीक्षणमें सबसे पहले प्राचीनताकी बीमारीका सामना करना पडता है। अधिकतर धर्मोंका साहित्य अपने अपने धर्मोंको अनादि या लाखों वर्षका पुराना कहता है। यहाँ तक कि वह मनुष्य-जातिके इतिहाससे भी आगे बढ़ जाता है। सच पूछा जाय तो यह प्राचीनताकी बीमारी है। मनुष्यके स्वभावमें जो स्थिति-पालकता या रूढ़ि-प्रियता रहती है उसीका यह फल है जो कि धार्मिक साहित्यमें भी घुस गया है।

सच पूछा जाय तो प्राचीनकी अपेक्षा नवीन अधिक हितकर होता है। प्राचीनकी अपेक्षा नवीनमें तीन विशेषताएँ होती हैं।

१–नवीन हमारी परिस्थितिके निकट होनेसे प्राचीनकी अपेक्षा हमारी परिस्थितिके अधिक अनुकूल होता है।

२–ज्यों ज्यों समय जाता है त्यों त्यों मूल वस्तु विकृत या परिवर्तित होती जाती है और प्राचीनकी अपेक्षा नवीनमें कम विकार पैदा होते हैं इसलिये नवीनका मौलिक रूप हमारे सामने अधिक स्पष्ट होता है।

२—प्राचीनके कर्ताको जितना अनुभव और साधन-सामग्री मिलती है नवीनके कर्ताको उससे अधिक अनुभव और साधन-सामग्री मिलती है जिसका प्रभाव नवीन वस्तुपर पड़ता है।

इसका यह मतलब नहीं है कि जितना नवीन है सब अच्छा है। तात्पर्य इतना ही है कि प्राचीनकी अपेक्षा नवीनको अच्छा होनेका अधिक अवसर है। हो सकता है कि किसी नवीनमें अधिक अवसरका ठीक ठीक पूरा उपयोग न हुआ हो और किसी प्राचीनमें कम अवसरका भी उचित उपयोग हुआ हो इसलिये कहींपर कोई प्राचीन नवीनकी अपेक्षा अच्छा हो। परन्तु अवसरोंका समान उपयोग किया गया हो तो प्राचीनकी अपेक्षा नवीन अधिक अच्छा है। अगर हमें दो विचारोंमेंसे किसी एकका चुनाव करना हो और उसकी जाँच करनेका और कोई साधन हमारे पास न हो तो प्राचीनकी अपेक्षा नवीनका चुनाव कल्याणकर है। प्राचीनताके मोहने अनेक असत्यताओं और अनर्थोंको जन्म दिया है, इसलिये इस विषयका पक्षपात सर्वथा हेय है।

कहा जा सकता है कि जब प्राचीनता इस प्रकार हेय है तब सभी धर्मोंके आचार्योंने अपने अपने धर्मको प्राचीनतम सिद्ध करनेकी कोशिश क्यों की? इसका कारण है जनताका आक्रमण। सुधारकों और क्रान्तिकारियोंके विरुद्ध जनताका आक्रमण होता ही है। परन्तु उनकी युक्तियोंके आगे जब वह टिक नहीं सकती तब उसका कहना यही होता है कि "आजतक तुम्हारे सुधारके बिना दुनियाका काम कैसे चला? यदि तुम्हारे बताये हुए मार्गसे ही आत्माका कल्याण हो सकता है, तब क्या आजतक कभी किसीका कल्याण हुआ ही नहीं?

प्राचीन कालके सब महापुरुष क्या कल्याणहीन थे ? आज तुम्हीं एक नये सूर्य ऊगे हो ? यदि तुम्हारे धर्मके विना भी आजतक जगत्का काम चला है, लोगोंका कल्याण हुआ है तो हमारा भी होगा। हमें तुम्हारे धर्मकी कोई जरूरत नहीं है।"

इस आक्षेपका युक्तियोंसे अच्छा उत्तर दिया जा सकता है, परन्तु प्राकृत जनको युक्तियोंसे सतोष नहीं होता। वह बुद्धिकी सन्तुष्टि नहीं चाहता किन्तु मनकी सन्तुष्टि चाहता है। भले ही वह कल्पनाओंसे ही क्यों न की जाय। इसलिए धर्म-सस्थापकों और प्रचारकोंको उसी मार्गका अवलम्बन लेना पड़ता है। वे घोषित करते हैं कि हमारा धर्म सृष्टिके या युगके आरम्भसे ही है और प्रत्येक सृष्टिमें—प्रत्येक युगमें उसका आविर्भाव तिरोभाव होता है, इस प्रकार वह अनादि है।

इसकी उपपत्ति बिठलानेके लिये कल्पित इतिहास रचा जाता है। प्राचीन युगके कल्पित अकल्पित जिन व्यक्तियोंने लोगोंके हृदयमें स्थान जमा लिया होता है उन सबको अपने सम्प्रदायका सिद्ध कर लिया जाता है उनके जीवन-चरित्र बदलकर सस्कृत कर लिये जाते हैं। कोई उन्हें अवतार, कोई तीर्थंकर और कोई पैगम्बर बना देता है। इस प्रकार प्राचीन महापुरुषोंको अपना मित्र बनाकर उनके आसनपर अपना स्थान बना लिया जाता है, और इस प्रकार लोगोंको समझा दिया जाता है कि हमारे इस धर्मके विना न कभी जगत्का काम चला है न चलेगा। हमारा यह धर्म नया नहीं है किन्तु प्राचीन धर्मका पुनरुद्धार है। प्राय सभी धर्म-सस्थापकों और प्रवर्तकोंको इसी नीतिसे काम लेना पड़ा है। प्राचीन समयकी परिस्थितिपर विचार करते हुए

यह अपराध क्षन्तव्य है। परन्तु अब जगत् इतना आगे बढ़ गया है कि इस तरी दावका उपयोग आजकल निरर्थक और दुरर्थक है।

हिन्दू धर्ममें अनेक या चौबीस अवतार, जैनियोंमें चौबीस तीर्थंकर, बौद्धोंमें चौबीस बुद्ध, और ईसाई और मुसलमानोंमें अनेक–सैकड़ों हजारों–पैगम्बरोंका वर्णन आता है। इनमें अनेक ऐतिहासिक व्यक्ति होते हैं और अनेक कल्पित। परन्तु उनको जो अपने धर्मका जामा पहिना दिया जाता है वह पूर्ण कल्पित होता है।

धर्मके प्रचारके लिये तथा धर्म-संस्थाको मजबूत करनेके लिये ये उपाय भले ही उपयोगी हुए हों परन्तु इनका ऐतिहासिक मूल्य नहींके बराबर है। यहाँ हम उतनी विवेचिताका जितना वर्णन पाते हैं ऐतिहासिक सत्यताका उतना ही अभाव पाते हैं। इसलिये जब हम ऐतिहासिक दृष्टिसे धर्मोंका अध्ययन करना चाहें तब हमें धर्म-शास्त्रोंका कठोर परीक्षण करना पड़ेगा। श्रद्धालु हृदयको इससे चोट पहुँच सकता है परन्तु हृदयका मवाद निकालनेके लिये यह आवश्यक है।

जो लोग धर्मको उसके संस्थापकसे भी प्राचीन मानते हैं वे धर्म और धर्म-संस्थाके भेदको भूलकर बड़ीसे बड़ी भूल करते हैं। धर्मकी प्राचीनताको धर्म-संस्थाकी प्राचीनता समझना ऐसा ही है जैसे कि पानीकी प्राचीनताको किसी तालाबकी प्राचीनता समझना। धर्म तो एक ऐसा व्यापक तत्त्व है जो आंशिक रूपमें सभी धर्म-संस्थाओंमें रहता है। वह इतिहासातीत है या प्राणि-जगत्का इतिहास ही उसका इतिहास है; जब कि धर्मसंस्था मनुष्यके द्वारा बनाई हुई एक संस्था है जोकि किसी खास देश कालके लोगोंके हितके लिये बनाई गई है। धर्मरूपी वस्तुकी यह एक अवस्था है जिसका आदि भी है और अन्त भी है।

धर्म-संस्थामें धर्मके मौलिक तत्त्व अवश्य रहते हैं। उसके नियमोप-नियम क्रिया-कांड आदि देश-कालके अनुसार बनाये जाते हैं और उनमेंका अधिकांश मसाला प्राचीन धर्म-संस्थाओंमेंसे लिया जाता है। जहाँ तक बनता है पुरानी धर्म-संस्थाओंके खास खास शब्द अपनाये जाते हैं और उनका नया अर्थ किया जाता है जिससे शब्दभीरु जनता बिना किसी हिचकिचाहटके नूतन समयोपयोगी अर्थ ग्रहण कर ले।

असल बात जो यहाँ ध्यानमें रखनेकी है वह यह कि एक धर्म-संस्थामें दो तीर्थंकर नहीं होते। तीर्थंकरका अर्थ है तीर्थको बनानेवाला। तीर्थ धर्मका एक सामयिक रूप है। धर्म अगर पानी है तो धर्म-तीर्थ एक तालाब है। जिनको आज हम धर्म कहते हैं वे एक एक तीर्थ हैं। अगर तीर्थंकर दो हैं तो समझना चाहिये कि तीर्थ भी दो हैं। जैन-धर्म भी एक धर्म-संस्था है, एक धर्म-तीर्थ है, इसलिये उसका कोई तीर्थंकर अवश्य होना चाहिये और एक ही होना चाहिये।

आधुनिक जैनशास्त्रोंके अनुसार जैन तीर्थंकर चौबीस हुए हैं। भोग-भूमि और प्रलयके बीचके प्रत्येक महान् युगमें चौबीस चौबीस तीर्थंकर होते रहते हैं, इस प्रकार जैनधर्म अनादि है।

इस वक्तव्यमें वही मनोवृत्ति काम कर रही है जिसका जिकर मैं ऊपर कर आया हूँ कि धर्म-संस्थाके नेताओंको अपनी धर्म-संस्था अनादि और प्राचीन सिद्ध करना पड़ती है। इसी प्रकार जैन नेता-ओंको भी यही करना पड़ा। साथ ही एक कल्पित इतिहास तथा विश्व-रचनाका रूप दिखलाना पड़ा। इसीके अनुसार तीन तीन

कोसके मनुष्य तथा अर्बों खर्बों तथा असंख्य योजनोंके द्वीप समुद्रोंकी कल्पना करना पड़ी। अर्बों खर्बों तथा असंख्य वर्षोंकी आयुवाले मनुष्योंका कल्पित इतिहास भी लिखना पड़ा। जैनशास्त्रोंके अनुसार इस युगमें जैनधर्मके संस्थापक महात्मा ऋषभदेव थे। उनकी आयु ५९२७०४०००००००० ०० ००० पाँच हजार मकड़ी सत्ताईस शंख-वर्षोंकी थी और शरीर भी एक हजार गज लम्बा था। इसके पहले इससे भी करोड़ों गुणी या असंख्य गुणी आयु और बारह हजार गजका शरीर होता था। इतनी ऊँचाईपर तो हवा इतनी पतली रह जाती है कि उसमें मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। अगर ये सब बातें सूक्ष्मताके साथ लिखी जायँ तो सैकड़ों हास्यास्पद बातें लिखना पड़ेंगी। इन सब वर्णनोंको इतिहासकी आधार-शिला बनाना इतिहासकी मिट्टी-पलीद करना है।

परन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि जिनने ये कल्पनाएँ की थी वे मूर्ख थे, मिथ्यावादी थे या वञ्चक थे। वास्तवमें वे विद्वान्, चतुर, सत्यवादी और लोकहितैषी थे। जब उन्होंने देखा कि इस प्रकारकी बातें सुनाये बिना जनताको सन्तोष नहीं होता और उसके बिना वह धर्ममार्ग—सदाचारको भी स्वीकार नहीं करती, तब उनने जन-हितकी दृष्टिसे यह सब किया। इसलिये हरएक धर्मके साहित्यमें ऐसा वर्णन मिलता है। यह धर्म-संस्थापकोंकी मनोवैज्ञानिक चतुरता है। इसे इतिहास समझ लेना भूल है। आज इसका बिलकुल उपयोग नहीं है, परन्तु कभी था।

इस कथनसे इतनी बात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि जैनधर्मके चौबीस तीर्थंकरोंका वर्णन कल्पित है। इसके अतिरिक्त उसमें

उस बातपर भी विचार करना चाहिये कि किसी धर्ममें क्रमशः दो तीर्थंकर नहीं हो सकते। अगर तीर्थंकर दो होंगे, तो धर्म भी दो हो जायँगे। जो नया तीर्थ बनाता है वही तीर्थंकर कहलाता है, अन्यथा जैन-शास्त्रोंके ही शब्दोंमें तीर्थंकर-बराबर ज्ञानी हो जानेपर भी कोई तीर्थंकर नहीं कहलाता। म० महावीरकी तरह जम्बूस्वामी आदि भी केवली या अर्हत् थे परन्तु वे तीर्थंकर नहीं कहलाये। क्योंकि उन्होंने नयी धर्म-सस्थाका निर्माण नहीं किया था किन्तु म० महावीरद्वारा निर्दिष्ट मार्गका ही अनुकरण किया था। प्रत्येकबुद्ध केवली ऐसे होते हैं कि उन्हें किसी गुरुकी आवश्यकता नहीं होती, फिर भी वे तीर्थंकर नहीं कहलाते, क्योंकि वे किसी धर्म-सस्थाकी स्थापना नहीं करते। जब कोई तीर्थंकर बनता है तो वह नया धर्म बनाता है। इसलिये हम महावीर स्वामीको ही जैन तीर्थंकर कह सकते हैं। उस समय भी और बहुतसे तीर्थंकर—म० बुद्ध वगैरह—थे और पहले भी बहुतसे म० पार्श्वनाथ वगैरह हो गये थे परन्तु वे जैन तीर्थंकर नहीं थे। जिसको आज हम जैनधर्म कहते हैं वह तो म० महावीरके समयसे ही है। इसके पहले और बहुतसे धर्म थे, म० पार्श्वनाथका भी धर्म प्रचलित था, परन्तु वे सब जुदे धर्म थे।

म० महावीरने अगर म० पार्श्वनाथको तीर्थंकर स्वीकार कर लिया था तो इसका यह मतलब नहीं है कि जैनधर्म म० महावीरसे पुराना सिद्ध हो गया। परन्तु इसका सिर्फ इतना मतलब होगा कि म० पार्श्वनाथने भी एक धर्म-सस्था बनाई थी, इसलिये वे तीर्थंकर थे। वह सस्था शिथिल हो गई थी इसलिये उस सस्थाके आश्रित व्यक्ति म० महावीरके झंडेके नीचे आ गये थे। पार्श्व-धर्मका आज कोई साहित्य

मिलता नहीं है इसलिये कह नहीं सकते कि इन दोनों धर्मोंमें क्या अन्तर था। जैन शास्त्रोंमें थोड़ासा वर्णन मिलता है उससे उस अन्तरकी कुछ बातें मालूम होती हैं।

पार्श्व-धर्म और जैन-धर्मके भिन्न मानेका एक विशेष कारण यह था कि म० महावीरके पिता सम्भवतः इसी धर्मके अनुयायी थे। परन्तु उस युगकी समस्याओंको हल करनेमें पार्श्व-धर्मको अपर्याप्त समझकर महावीर स्वामीने नई धर्म-संस्थाकी नींव डाली और उस नये धर्ममें पुराने लोगोंको भी खींच लिया। परन्तु इस प्रकार अनुयायियोंके मिल जानेसे दो धर्म एक धर्म नहीं बन सकते।

दो तीर्थंकर और दो धर्मके नियमको समझनेके लिये पश्चिमके धर्मोंपर भी हमें नजर डाल लेना चाहिये। म० मुहम्मदने अपनेको पैगम्बर कहनेके साथ म० ईसा, म० मूसा आदिको भी पैगम्बर कहा था और कहा था कि उनके धर्मको लोग भूल गये, इस लिये ईश्वर मेरेद्वारा उसका प्रकटीकरण कर रहा है। परन्तु इसीलिये इस्लामका प्रारम्भ म० ईसा, म० मूसा या म० इब्राहीमसे नहीं कहा जा सकता। उसका प्रारम्भ म० मुहम्मद्से ही कहा जाता है जो कि उचित है। इस प्रकार तीर्थंकर कितने भी हो गये हों परन्तु जैन-धर्मका प्रारम्भ म० महावीरसे ही कहा जायगा।

म० महावीरने जिस धर्म-संस्थाको जन्म दिया उसका नाम आज जैनधर्म है परन्तु यह नाम म० महावीरसे पीछेका है। धीरे धीरे जब 'जिन' नाम म० महावीरके लिये रूढ़-सा हो गया तब उनकी संस्थाका नाम भी जैन हो गया। म० महावीरके समयमें तो उनके अनुयायियोंका खास नाम नहीं रखा था। महावीर स्वामी 'निगण्ठ

नातपुत्त ' के नामसे प्रख्यात थे और उनके अनुयायी उनके अनुयायी कहलाते थे, आज कल सरीखा कोई खास नाम नहीं था। जिन, बुद्ध, अर्हत्, आदि नाम साधारण नाम थे जो कि किसी भी श्रमण-सम्प्रदायके श्रेष्ठ महात्माके लिये लगाये जाते थे और निगण्ठ शब्द नग्न महात्माओंके लिये लगाया जाता था। इन शब्दोका उपयोग महावीर, बुद्ध, गोशालक आदिके लिया हुआ है। निगठ शब्दका उपयोग भी महावीर, गोशालक, पूर्ण काश्यप आदिके लिये होता था। मतलब यह कि ये शब्द साम्प्रदायिक नहीं थे किन्तु अमुक गुण या वेपको बतलानेवाले थे। इस लिये इन शब्दोंके मिल जानेसे यह समझना कि अमुक सम्प्रदाय उतना प्राचीन है भूल है। आर्य और ब्रह्म शब्द बहुत प्राचीन हैं परन्तु इसीलिये आर्यसमाज ब्राह्मसमाज आदि संस्थाएँ प्राचीन नहीं कही जा सकतीं। कोई भी धर्म अपने तीर्थंकरसे पुराना नहीं होता। हाँ, उसमें आये हुए सैकड़ों आचार-विचार तथा वेष आदि पुराने होते हैं। इस लिये जैनधर्मको म० महावीरके बराबर पुराना कहना चाहिये, इसके पहलेका नहीं।

म० पार्श्वनाथ अवश्य ही एक ऐतिहासिक महापुरुप थे। उनका धर्म करीब दो-ढाईसौ वर्ष तक चला परन्तु उसमे शिथिलता आ जानेसे उसके अनुयायी जैनधर्ममें मिल गये। इस लिये पार्श्व-धर्म और वीर-धर्म दो धर्मके रूपमें एक साथ न रह सके। इसलिये बहुतसे ऐतिहासिक विद्वान् भी म० पार्श्वनाथके धर्मको भी जैनधर्म ही समझते हैं। परन्तु जब दोनों ही तीर्थंकर थे तब दोनोंके धर्म एक नहीं हो सकते। हाँ, अन्य सम्प्रदायोंकी अपेक्षा उनमें कुछ अधिक समानता हो सकती है।

दुर्भाग्य यह है कि पार्श्व-धर्मका कोई साहित्य उपलब्ध नहीं होता

और वीर-धर्मका साहित्य भी ज्योंका त्यों उपलब्ध नहीं है। केशी-गौतम-संवाद ही एक ऐसी घटना है जिससे इस विषयपर कुछ प्रकाश पड़ता है परन्तु वह भी इतना अविकृत नहीं है कि उससे सब बातोंका ठीक ठीक परिचय मिल सके। उससे सिर्फ म० पार्श्वनाथका अस्तित्व सिद्ध होता है और वीर-धर्मसे वह जुदा धर्म था जिसके अनुयायी विरोध करनेके बाद वीर-धर्ममें आगये थे, यह भी मालूम होता है।

उत्तराध्ययन म० महावीरके कई सौ वर्ष पीछेकी रचना है और अपने समयकी छाप भी उसपर है। उसका केशी-गौतम संवाद एक सत्य-घटनाका उल्लेख करता है अवश्य, फिर भी उसका वह शुद्ध वर्णन नहीं करता। इसलिये उसकी आलोचना करते समय उसे अक्षरशः प्रमाण नहीं माना जा सकता। जिस प्रकार न्यायालयमें साक्षीका वक्तव्य पूर्ण प्रमाण नहीं माना जाता किन्तु उसकी परीक्षा की जाती है, उसी प्रकार यहाँ भी हमें उस अध्ययनका परीक्षण करना पड़ेगा। साक्षीके मुँहसे जब कोई ऐसी बात निकलती है जो उसीके पक्षके विरुद्ध हो, तब उस बातपर विशेष ध्यान दिया जाता है और माना जाता है कि अपने ही पक्षके विरुद्ध बोलना सत्यको न छिपा सकनेका फल है। इसी प्रकार हमें भी यहाँ विचार करना पड़ेगा।

उत्तराध्ययनमें, और उसके केशी-गौतम-संवाद प्रकरणमें भी बहुतसी बातें ऐसी हैं जिनका ऐतिहासिक मूल्य कुछ नहीं है। जैसे चौबीस तीर्थंकरोंका उल्लेख होना, यक्ष किन्नर गन्धर्वोंका सभामें आना, अवधिज्ञान आदि। ये सब बातें तो उत्तराध्ययनके निर्माण कालके वातावरणपर प्रकाश डालती हैं। उत्तराध्ययनकार भी म० महावीरके व्यक्तित्वको पूर्ण और सर्वोत्कृष्ट मानते हैं, जैनधर्मको प्राचीन मानते हैं, म० महावीरको जैनधर्मका संस्थापक नहीं मानते किन्तु

उद्धारक मानते हैं, इतने पर भी अगर उनके मुँहसे कुछ ऐसी बातें निकल गई हैं जो कि किन्हीं दूसरी बातोंपर प्रकाश डालती है तो समझना चाहिये कि यह सब ऐतिहासिक सत्यके अनुरोधसे निकल गई हैं। खैर, अब यहाँ उस सवादका सार दिया जाता है।

केशी-गौतम-संवाद

" पार्श्वनाथ तीर्थङ्करके अनुयायी * केशिकुमार विद्या और चारित्रके पारगामी श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी थे। एक बार वे शिष्य-मण्डलसहित श्रावस्ती नगरीके उद्यानमे पहुँचे। उसी समय म० महावीर भी वहाँ आये हुए थे जिनके शिष्य गौतम बारह अङ्गके धारक थे। एक दूसरेको देखकर दोनोंके शिष्योंको यह चिन्ता हुई कि पार्श्वनाथने चातुर्याम (अहिंसा, सत्य, अचौर्य और अपरिग्रह इस प्रकार चार व्रतवाला) धर्म × क्यों कहा और महावीरने पच-शिक्षित क्यों कहा ? इसी प्रकार पार्श्वनाथने नग्न रहनेका विधान नहीं किया था और महावीरने नग्न रहनेका विधान क्यो किया ? शिष्योंके ये विचार जानकर केशी और गौतमने मिलकर परामर्श कर लेना उचित समझा और गौतम शिष्य-मडली सहित केशिकुमारके पास गये। उस समय और भी गृहस्थ श्रोता वहाँ आ गये। दोनोंमें इस प्रकार वार्तालाप हुआ।

केशि—महाभाग, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ।

---

* म० पार्श्वनाथके पीछे पार्श्व-धर्मके सघ नायक क्रमसे शुभदत्त, हरिदत्त, आर्यसमुद्र, प्रभ और केशिकुमार हुए हैं। म० महावीरके समय केशिकुमार म० पार्श्वनाथके अनुयायियोंके एकमात्र आचार्य थे।

×आचारो वेषधारणादिको बाह्यक्रियाकलाप स एव धर्महेतुत्वाद्धर्म.। —११ टीका।

गौतम—भन्ते, इच्छानुसार पूछिये ।

केशि १—चार प्रकारके चारित्र-रूप धर्मको महावीरने पाँच प्रकारका क्यों बताया ? जब दोनोंका एक ही ध्येय है तब इस अन्तरका कारण क्या है ?

गौतम १—पार्श्वनाथके समयमें लोग सरल प्रकृतिके थे, इसलिये वे चारमें पाँचका अर्थ कर लेते थे । अब कुटिल प्रकृतिके लोग हैं । उनको स्पष्ट समझानेके लिये ब्रह्मचर्यके विधानकी अलग आवश्यकता हुई ।

केशि २—महावीरने दिगम्बर वेष क्यों चलाया ?

गौतम २—जिसको जो उचित है उसने वैसा धर्मोपकरण बतलाया है । दूसरी बात यह है कि लिंग तो लोगोंको यह विश्वास करानेके लिये है कि 'यह साधु है' (इसलिये दिगम्बर लिंग धारण करनेपर भी कोई बाधा नहीं है, क्योंकि यह भी लोक-प्रत्ययका कारण हो सकता है) । तीसरी बात यह है कि संयम-निर्वाहके लिये लिंग है । चौथी बात यह है कि 'मैं साधु हूँ' इस प्रकारकी भावना बनाये रहनेके लिये लिंग है (ये सब काम दिगम्बर लिंगसे भी हो सकते हैं) और वास्तवमें तो ज्ञान-दर्शन-चारित्र ही मोक्षके साधक हैं, लिंग नहीं* ।

---

*केसिं एवं बुवाणं तु गोयमो इणमब्बवी ।
विन्नाणेण समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥ ३२ ॥
पच्चयत्थं च लोगस्स नाणाविहविकप्पणं ।
जत्तत्थं गहणत्थं च लोगे लिंगपओयणं ॥ ३३ ॥
अह भवे पइन्ना उ मुक्ख सब्भूयसाहणा ।
नाणं च दंसणं चेव चरित्तं चेव निच्छए ॥ ३३ ॥

केशि ३—आपके उत्तरोंसे मुझे सन्तोष हुआ। अब यह बताओ कि हजारों शत्रुओंके भीतर रहकर तुमने उन्हें कैसे जीता?

गौतम ३—एक अशुद्धात्मा (अथवा मिथ्यात्व) को जीत लेने पर पाँचों (अशुद्धात्मा और चार कषाय) जीत लिये जाते हैं और इन पाँचोंके जीत लेनेपर दस जीत लिये जाते हैं और दसके जीतनेपर हजारों जीत लिये जाते हैं।

केशि ४—सभी लोग बन्धनोंमें बँधे हुए हैं तब आप इन बन्धनोंसे कैसे छूट गये?

गौतम ४—राग-द्वेष आदिको चारों तरफसे नष्ट करके मैं स्वतन्त्र हो गया हूँ।

केशि ५—हृदयमें एक लता है जिसमें विष फल लगा करते हैं (अर्थात् बुरे बुरे विचार पैदा हुआ करते हैं), आपने वह लता कैसे उखाड़ी?

गौतम ५—तृष्णाको दूर करके मैंने वह लता नष्ट कर दी है।

केशि ६—आत्मामें एक तरहकी ज्वालाएँ उठा करती हैं। तुमने इन्हें कैसे शान्त किया?

गौतम ६—ये कषायरूपी ज्वालाएँ हैं। मैंने महावीरद्वारा बताये गये श्रुत शील और तपरूपी जलसे इन्हें शान्त किया है।

केशि ७—इस दुष्ट घोड़ेको कैसे वश करते हो?

गौतम ७—दुष्ट घोड़ा मन है, उसे धर्म-शिक्षासे वश करता हूँ।

केशि ८—लोकमें बहुतसे कुमार्ग हैं। आप उनसे कैसे बचते हो?

गौतम ८—मुझे कुमार्ग और सुमार्गका ज्ञान है, इसलिये मैं उनसे बचा रहता हूँ।

केशि ९—प्रवाहमें बहते हुए प्राणियोंका आश्रय स्थान कहाँ है?

गौतम ९—पानीमें एक द्वीप है जहाँ प्रवाह नहीं पहुँचता। वह धर्म है।

केशि १०—यह नौका तो इधर उधर जाती है। आप समुद्र पार कैसे करोगे?

गौतम १०—शरीर नौका है जिसमें आस्रव लगे हुए हैं। वह पार न पहुँचायगी, परन्तु आस्रवरहित नौका पार पहुँचायगी।

केशि ११—सब प्राणी अँधेरेमें ठोकर खा रहे हैं। इस अन्धकारको कौन दूर करेगा?

गौतम ११—सूर्यके समान जिनेन्द्र महावीरका उदय हो गया है।

केशि १२—दुःखरहित स्थान कौन है?

गौतम १२—लोकाग्रमें स्थित निर्वाण।

केशि—आपने मेरे सब संशयोंको दूर कर दिया। आपको मैं नमस्कार करता हूँ।

इसके बाद केशिने म० महावीरके धर्मको स्वीकार कर लिया।'

यह सम्वाद बड़े महत्त्वका है। इसके ऊपर जितना ध्यान दिया जाना चाहिये उतना अभी तक नहीं दिया गया है, इससे मालूम होता है कि पार्श्वनाथ और महावीरके अनुयायियोंमें अवश्य ही द्वेष पैदा हुआ होगा। परन्तु पीछेसे पार्श्वनाथ और महावीरके अनुयायियोंमें पृथक् हो जानेका इसका उल्लेख सूत्रोंमें नहीं मिलता, सिर्फ मत-भेद मिलता है।

मतभेदमें मत-संख्या और वेषका विषय ही मुख्य है परन्तु जिनके दस प्रश्न उपेक्षणीय नहीं हैं। केशि और गौतमका सम्वाद गुरु-शिष्यका सम्वाद नहीं था, किन्तु पार्श्वनाथ और महावीरके मत-भेदके

निराकरणका सम्वाद था। केशिकुमार आचार्य थे, महान् श्रुतज्ञानी थे, वे कोई नवदीक्षित नहीं थे कि उन्हें धर्म, मोक्ष, मन, इंद्रिय आदिका सामान्य परिचय भी न हो। इसलिये उनके पिछले दस प्रश्नोंमें भी कोई विशेष बात होना चाहिये। सूत्रोंके विकृत हो जानेसे उस सम्वादके प्रश्नोत्तरोंका ठकि ठीक रूप नहीं मिलता, सिर्फ प्रस्नोत्तरके विश्रयोंपर प्रकाश पड़ता है। पार्श्वापत्योंको इन विषयोंका दृढ़ निश्चय न होगा या आचारकी शिथिलता होगी। म० महावीरने इन सबका निश्चयात्मक निर्णय कर दिया, इससे केशिको अवश्य सन्तुष्ट होना चाहिये। यद्यपि प्रश्नोत्तरोंका ठीक ठीक रूप नहीं मिलता फिर भी उपलब्ध सामग्रीके आधारपर कुछ विचार करना आवश्यक है।

तीसरे प्रश्नसे माळूम होता है कि म० पार्श्वनाथके धर्ममें आत्मिक विकारोंकी या भावाश्रवोंकी संख्या निश्चित नहीं हुई थी और न उनकी प्रबलता-निर्बलताका निर्णय हुआ था। 'आत्मिक विकार हज़ारों हैं' बस ऐसी ही सामान्य मान्यता उस समय होगी। लेकिन म० महावीरने उनकी सख्या निश्चित की—उनमें पहले मिथ्यात्वको, फिर कषायको, फिर इन्द्रियोंको जीतनेका उपदेश दिया। इस तरह एक विधायक कार्यक्रम लोगोंके सामने आया।

चौथा प्रस्न अस्पष्ट है। सम्भवत. उससे यह माळूम होता है कि पार्श्वापत्योंकी निर्ग्रन्थता महावीरके निर्ग्रन्थों बराबर नहीं थी। यह भी सम्भव है कि पार्श्वापत्य लोग एक स्थानमें बहुत दिनोंतक रहते हों—महावीरके समान गाँवमें एक दिन और नगरमें पाँच दिन रहनेका नियम न हो—इसलिये स्थानीय मोह-ममता उनकी बढ़ गई हो। यह

भी सम्भव है कि पार्श्वशिष्योंके समयमें ब्रह्मचर्य स्वतन्त्र व्रत न होनेके कारण इस विषयका शैथिल्य बढ़ गया हो और इस कमजोरीने उनके सांसारिक बन्धनोंको बढ़ा दिया हो। जो कुछ हो परन्तु इस विषयमें भी महावीर स्वामीने कुछ सुधार किया था यह बात सिद्ध होती है।

पाँचवें प्रश्नका रहस्य और भी अधिक अस्पष्ट है। पार्श्वनाथने संयमका फल आत्म शुद्धि ही बतलाया होगा। परन्तु सम्भव है पार्श्वशिष्य लोग संयमका फल ऐहिक सुख स्वर्ग समझते हों और इसलिये तृष्णाके कारण उनके मनमें अनेक बुरे विचार पैदा होते रहते हों।

छठे प्रश्नसे मालूम होता है कि म० महावीरका शास्त्र (श्रुत) अधिक असरकारक, विस्तृत और निःसंदिग्ध था। उसने ब्रह्मचर्य-पर बहुत ज़ोर दिया था और व्रतोंका वर्णनात्मक और आचरणात्मक विस्तार किया था।

सातवें प्रश्नमें मूलका रूप बहुत विकृत हो गया मालूम होता है। इस प्रश्नमें मन-सम्बन्धी मतभेदका निराकरण होना चाहिये। मनके विषयमें तो आज भी बहुत मत-भेद है। दिगम्बर-परम्पराके अनुसार मनका स्थान हृदय है और मन कमलके आकारका है। श्वेताम्बर-परम्पराके अनुसार मनका स्थान सर्वांग है, इसलिये वह शरीराकार है। सम्भव है इनमेंसे कोई एक मत या दिगम्बर मत पार्श्वनाथके समयका हो अथवा असंज्ञियोंके भाव मन होता है इस बातमें कुछ मत-भेद हो। अथवा म० पार्श्वनाथने मनोनिग्रहके ठीक ठीक उपाय न बताये हों और म० महावीरने बताये हों, इसलिए यह प्रश्न किया गया हो।

आठवें प्रश्नसे मालूम होता है कि म० पार्श्वनाथने दूसरे मतोंका

खण्डन नहीं किया था। उनके शास्त्रोंमें दूसरे दर्शनोंका परिचय भी नहीं कराया गया था, जब कि म० महावीरने उस समयके प्रत्येक दर्शनका अपने शिष्योंको परिचय कराया था और उसकी आलोचना भी अपने शिष्योंको समझाई थी। इससे म० महावीरके असाधारण पाण्डित्य या सर्वज्ञताका परिचय मिलता है।

नवम प्रश्नका रूप विकृत हो जानेसे बहुत अस्पष्ट है। सम्भव है उस समय इस शंकाका समाधान न हो पाया हो कि "द्रव्य कर्मसे भाव कर्म, और भाव कर्मसे द्रव्य कर्म तो पैदा होता ही रहता है, फिर इस परम्पराका अन्त कैसे होगा?" इसका उत्तर गौतमने दिया हो तथा धर्मके द्वारा वृक्ष-बीजके समान द्रव्य कर्म और भाव कर्मकी सन्तति कैसे नष्ट हो जाती है यह समझाया हो।

दसवें प्रश्नसे माळूम होता है कि उस समय पार्श्वापत्योंके सामने एक महान् प्रश्न था कि "शरीरसे प्रतिसमय हिंसा होती रहती है, इसलिये हर समय हमें पाप लगता है, तब भला इस पापी शरीरके द्वारा हम मोक्षके द्वारतक कैसे पहुँच सकते हैं?" इसके उत्तरमें गौतमने कहा कि "हमें मिथ्यात्व, अविरति आदि आश्रवोंको रोक देना चाहिये, इससे पाप नहीं बँधेगा। नौका बुरी नहीं है, नौकाके छिद्र बुरे हैं। छिद्र बन्द कर देनेपर हम मोक्षके द्वारतक पहुँच सकते हैं।" जैनधर्मकी अहिंसाको न समझनेवाले आज भी शरीरकी दुहाई देकर अहिंसाको अव्यवहार्य बतलाते हैं। यह प्रश्न उस समय भी जोरपर होगा जिसका ठीक ठीक समाधान पार्श्वापत्य न कर सके होंगे। किन्तु म० महावीरने उसका पूर्ण समाधान किया है, जिसका उल्लेख गौतमने किया होगा।

ग्यारहवें प्रश्नसे मालूम होता है कि केशिकुमार हर तरह निराश हो गये थे। निराशाके तीन कारण मालूम होते हैं —

(क) धर्मशास्त्रकी अनेक बातें अनिश्चित और अस्पष्ट थीं।

(ख) प्रतिवादियोंका सामना करनेमें वे अशक्त थे।

(ग) शिथिलाचार बहुत बढ़ गया था जो कि केशिकुमारको खटकता तो था परन्तु उनका कुछ वश न चलता था।

गौतमने म० महावीरका परिचय देकर इन सब आपत्तियोंके दूर होनेकी बात कहकर दिलासा दी।

बारहवें प्रश्नसे मालूम होता है कि म० पार्श्वनाथके समयमें मोक्षका स्थान अनिश्चित था। मुक्त जीव लोकाग्रमें स्थित हैं यह बात महात्मा महावीरने कही होगी। मुक्त जीवोंके निवासके विषयमें तब बड़ा भारी मत-भेद था। वे कहाँ स्थित हैं, इस विषयका विचार तो था ही परन्तु वे स्थिर हैं कि नहीं यह भी एक प्रश्न था। एक सम्प्रदाय तो मुक्त जीवोंको अनन्तकाल तक अनन्त आकाशमें दौड़ता हुआ (गतिमान) ही मानता है। सम्भव है महात्मा पार्श्वनाथके समयमें यह प्रश्न अधूरा या अछूता ही रह गया हो जिसका म० महावीरने पूर्ण निश्चय किया हो।

अपनी बुद्धिके अनुसार मैंने इन प्रश्नोंकी उपपत्ति बिठलानेकी कोशिश की है। सम्भव है दूसरे ढङ्गसे इनकी उपपत्ति बैठ सके। परन्तु यह बात तो निश्चित है कि ये प्रश्न साधारण नहीं हैं किन्तु पार्श्वनाथ और महावीरके तीर्थका अन्तर दिखलानेवाले हैं।

इस वर्णनमें एक बात और आती है। उत्तराध्ययनमें केशिकुमार को कुमारश्रमण कहा है जब कि गौतमको द्वादशाङ्गवेत्ता (बारसंगविऊ)

हा है। इससे माळूम होता है कि म० पार्श्वनाथका श्रुत अङ्ग-ग्रौंमें विभक्त नहीं था, वह एक ही सग्रह था जो श्रुत शब्दसे कहा जाता था। इससे म० पार्श्वनाथके श्रुतकी संक्षिप्तता या लघुता और म० महावीरके श्रुतकी महत्ता और विस्तीर्णता माळूम होती है।

उत्तराध्ययनका जो अश अभी उपलब्ध है उसे दिगम्बर सम्प्रदाय प्रमाण नहीं मानता, परन्तु उत्तराध्ययन आदि श्रुतको तो प्रमाण मानता है। उपलब्ध साहित्य अधूरा है यह बात ठीक है परन्तु जो उपलब्ध है उसे तो प्रमाण मानना चाहिये। उसमेंसे सिर्फ़ उतना ही अश अमान्य किया जा सकता है जो कि खास दिगम्बर-सम्प्रदायके विरुद्ध बनाया गया माळूम हो। परन्तु केशि-गौतम-सम्वाद दिगम्बरत्वके विरुद्ध बनाया गया है, यह बात माळूम नहीं होती। अगर श्वेताम्बरोंने दिगम्बरत्वके विरोधके लिये केशि-गौतम-सम्वाद बनाया होता तो वे महावीरके दिगम्बरत्वकी बात कभी न करते—सिर्फ चातुर्यामकी बात कहकर सम्वाद पूरा कर देते। इसलिये यह सम्वाद मानना चाहिये। हाँ, यह अवश्य है कि सम्वादके विषयोंका ठीक ठीक वर्णन नहीं मिलता जैसा कि पिछले दस प्रश्नोंके विवरणसे माळूम होता है।

दूसरी बात यह है कि सम्वाद हुआ हो चाहे न हुआ हो परन्तु पार्श्वनाथ और महावीरका मत-भेद दिगम्बर-सप्रदाय भी मानता है।

"बाईस तीर्थंकर सामायिक सयमका उपदेश करते हैं और भगवान् ऋषभ और वीर छेदोपस्थापनाका उपदेश करते हैं।" —मूलाचार ॥ ५३३ ॥*

* बावीस तित्थयरा सामायिय-सजम उवदिसति।
छेदुवठावणिय पुण भयव उसहो य वीरो य ॥—मूलाचार ॥ ५३३ ॥

इससे यह बात मालूम होती है कि म० पार्श्वनाथके समयमें छेदो-पस्थापनाका उपदेश नहीं था किन्तु म० महावीरके समयमें था। श्वेताम्बर-साहित्यके अनुसार तो पार्श्वनाथके समयमें चार व्रत थे परन्तु दिगम्बरोंके अनुसार तो अभेद रूपसे एक ही व्रत रह जाता है। क्योंकि एक यमरूप संयमको सामायिक संयम कहते हैं।

सम्पूर्ण संयमको एक यम बनाकर जो धारण करता है वह सामायिक संयमी जीव है ॥ ४७ ॥ जो पुरानी अवस्थाको छेदकर आत्माको पञ्च-यमरूप व्रतमें स्थापित करता है वह छेदोपस्थापन संयमी जीव है ॥ ४७१ ॥' —गोम्मटसार जीव ×

संस्कृत-टीकामें छेदोपस्थापनाका स्पष्टीकरण और भी अच्छा हुआ है—

जो पहली सावद्यव्यापाररूप पर्यायको दूर करके अपनेको पाँच प्रकारके संयमरूप धर्ममें स्थापित करता है वह छेदोपस्थापन संयमी है। +"

इस उद्धरणसे इतनी बात और स्पष्ट हो जाती है कि सामायिक संयमके बाद कोई दोष लगनेपर प्रायश्चित्त लेनेके बाद संयम अनेक रूप—पाँच रूप—हो जाता है, तबसे उसका नाम छेदोपस्थापना हो जाता है।

× संगहियसयलसंजममेयजममणुत्तरं दुरवगम्मं। जीवो समुव्वहंतो सामाइय-संजमो होदि ॥ ४७० ॥ छेत्तूण य परियायं पोराणं जो ठवेइ अप्पाणं ॥ पंचजमे धम्मे सो छेदोवट्ठावगो जीवो ॥ ४७१ ॥

—गोम्मटसार जीवकाण्ड।

+ प्राक्तन सावद्यव्यापारस्वरूपपर्यायं प्रायश्चित्तैश्छित्वा आत्मानं अहिंसादि पंचप्रकारसंयमरूपधर्मे स्थापयति स छेदोपस्थापनसंयमी स्यात्। —टीका।

यहाँ एक बड़ा भारी प्रश्न यह खड़ा होता है कि क्या बाईस तीर्थंकरोंके समयमें छेदोपस्थापन संयम नहीं था ? उस समय क्या कोई मुनि किसी भी तरहका दोष नहीं लगाता था ? जब कोई भी मुनि कोई दोष लगाता ही नहीं था, तो संघ और आचार्यकी क्या आवश्यकता थी ? प्रायश्चित्त एक तप है। क्या म० महावीरके पहले (बाईस तीर्थंकरोंके समयमें) यह तप नहीं था अर्थात् क्या ग्यारह प्रकारका ही तप था ? विष्णुकुमार आदि मुनियोंके चरित्रसे मालूम होता है कि उस समय प्रायश्चित्त लिया जाता था, और प्रायश्चित्तके बाद संयम छेदोपस्थापन कहलाने लगता है। इससे यह बात साफ मालूम होती है कि म० महावीरके पहले छेदोपस्थापन संयम था। परन्तु किसी कारणसे अहिंसा, सत्य, अचौर्य और अपरिग्रह इन चार यमोंके स्थानमें सामायिक परिहारविशुद्धि आदि चार संयम आ गये हैं। कुछ भी हो परन्तु यह बात दोनों सम्प्रदायोंको स्वीकृत है कि म० पार्श्वनाथके समयमें चार यम थे और म० महावीरके समयमें पाँच हो गये।

केशी-गौतम-संवादके विषयमें कुछ लोगोंने अनेक आक्षेप किये हैं। इस चार यमवाली बातपर भी यह आक्षेप किया जाता है कि बाईस तीर्थंकरोंके समयमें प्रायश्चित्त तो था परन्तु छेदोपस्थापन तो भेदरूप चारित्र है, सो उस समय भेदरूप चारित्र नहीं था।

इस आक्षेपके अनुसार म० पार्श्वनाथके समयमें चारित्रका एक ही भेद था। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ऐसे पाँच भेद नहीं थे। मेरे मतानुसार पाँचका अंतर्भाव चारमें किया जाता है जब कि इस मतके अनुसार एकमें ही किया जाता है। यह म० पार्श्वनाथ और म० महावीरके मत-भेदको और भी बढ़ा देता है तथा यह

सिद्ध करना चाहता है कि म० पार्श्वनाथका धार्मिक साहित्य इतना अविकसित था कि उसमें अहिंसा सत्य आदिका भेद भी अज्ञात था। इससे पार्श्व-धर्म और वीर-धर्मका अन्तर और भी बढ़ जाता है।

छेदोपस्थापनाकी व्याख्यामें जो गोम्मटसारका उद्धरण दिया गया है तथा छेदोपस्थापनाका जो व्युत्पत्त्यर्थ है उससे यही सिद्ध होता है कि संयममें दोष लगानेके बाद उसकी शुद्धि होनेपर संयमका नाम छेदोपस्थापना हो जाता है। इससे म० पार्श्वनाथके समयमें भी छेदोपस्थापनाका अस्तित्व मानना चाहिये। दूसरा आक्षेप यह किया जाता है कि— जितने भी दिगम्बर और श्वेताम्बर आचार्योंने इस शासन-भेदका वर्णन किया है उन्होंने सामायिक और छेदोपस्थापनाके आधारपर ही किया है। केवल एक उत्तराध्ययनकार ही हैं जिन्होंने चार यम और पाँच यमका इसके सम्बन्धमें उल्लेख किया है। इससे यही प्रतीत होता है कि उत्तराध्ययनकारकी यह बात वीर-शासनकी परम्परागत नहीं है।"

श्वेताम्बर-सम्प्रदायके शास्त्रोंका विद्यार्थी ऐसा आक्षेप करनेकी भूल नहीं कर सकता। उत्तराध्ययनकारका यह वक्तव्य वास्तवमें परम्परागत है और यह मूल सूत्रों या अंगोंमें भी पाया जाता है। यहाँ मैं स्थानांगका उद्धरण देता हूँ—" भरत और ऐरावत क्षेत्रमें प्रथम और अन्तके छोड़कर बीचके बाईस अरहंत चातुर्याम धर्मका निरूपण करते हैं। वह यह—सम्पूर्ण हिंसासे विरक्ति, सम्पूर्ण मिथ्यावादसे विरक्ति, सम्पूर्ण अदत्तादानसे विरक्ति, सम्पूर्ण परिग्रहसे विरक्ति। सब महा

१ छेदेन प्रायश्चित्ताचरणेन उपस्थापनं यस्य सः छेदोपस्थापनः इति निरुक्तेः। गो० टीका ४७१।

विदेहोंमें भी अरहत चातुर्यामका निरूपण करते हैं वह यह—सम्पूर्ण हिंसासे विरक्ति . .आदि[1] ।"

" मैथुनका परिग्रहमें अन्तर्भाव होता है क्योंकि अपरिगृहीत योषित्का भोग नहीं किया जाता[2] । "

एक प्रश्न यह भी उठाया जाता है कि " चार व्रतके पाच रूप वर्णन करनेमें सामान्य और विशेपका विशेप अन्तर नहीं है । यह तो तभी बैठता है जब कि एक समय चारित्रका उपदेश सामायिक-रूप माना जाता है और दूसरे समय छेदोपस्थापनारूप । "

प्रश्नकर्ताने यहा मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे विचार नहीं किया । वास्त-वमें सामायिक और छेदोपस्थापनामें सामान्य विशेणात्मक होनेसे अविरोध ही है । क्योंकि सामायिकमें भेद किये विना वर्णन है और छेदोपस्थापनामें भेद करके । सामान्य और विशेषमें विरोध नहीं माना जाता । परन्तु जब विशेष और विशेपमें भेद होता है तो वह लोगोंको खटकता है । जैसे कोई गुणस्थानका सामान्य विवेचन करे और कोई चौदह भेदोंमें विवेचन करे, तो इसमें लोगोंको एतराज कम

१—भरहेरावएसु ण वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्झिमगा बावीस अरिहता भगवता चाउज्जाम धम्म पण्णवेंति । त जहा—सव्वातो पाणाइवायाओ वेरमण, एव मुसावायाओ वेरमण, सव्वातो अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वातो बहिद्धादाणा (परिग्गाहा) ओ वेरमण सव्वेसु ण महाविदेहेसु अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्म पण्णवति, त—सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमण जाव सव्वातो बहिद्धादाणाओ वेरमण । सू. २६६ ।

२—आदीयते इति आदान—परिग्राह्य वस्तु तच्च धर्मोपकरणमपि भवति इत्यत आह—बहिस्तात् धर्मोपकरणात् बहिर्यदिति, इह च मैथुन परिग्रहेऽन्तर्भवति न ह्यपरिगृहीता योषित् भुज्यते ।–टीका २६६ ।

होगा या न होगा। परन्तु कोई चौदहके पहले गुणस्थान बनावे तो एतराज अधिक होगा। इससे सामायिक और छेदोपस्थापनाकी अपेक्षा चार यमें और पाँच यमका भेद मानना ही अधिक संगत है। क्रम-विकासकी दृष्टिसे भी यही उचित है।

एक प्रश्न यह उठाया जाता है। "केशी-गौतम-संवाद श्वेताम्बर ग्रन्थोंमें पाया जाता है परन्तु श्वेताम्बर-ग्रंथ तो विकृत हैं, वे देवर्द्धि गणि क्षमाश्रमणके समयके बने हुए हैं इसलिये उनकी किसी बातपर विश्वास कैसे किया जा सकता है?

इसके उत्तरमें यह बात ध्यानमें रखना चाहिये कि श्वेताम्बर शास्त्र देवर्द्धिगणिके समयमें बने नहीं है किन्तु लिपिबद्ध हुए हैं—उनकी वाचना हुई है। लिखा जाना और रचा जाना इसमें बहुत अन्तर है। दूसरी बात यह है दिगम्बर-साहित्य तो मौलिकताकी दृष्टिसे श्वेताम्बर-सूत्रोंसे भी कम प्रमाण है। क्योंकि ये तो दिगम्बराचार्योंकी स्वतंत्र रचनाएँ हैं और सो भी श्वेताम्बर साहित्यसे प्राचीन नहीं। खैर, इस विषय-पर विशेष विवेचन करनेकी यहाँ जरूरत नहीं है। मेरी दृष्टिमें तो दोनों ही सम्प्रदायोंका साहित्य विकृत है। परन्तु इतिहासकी सामग्री तो हमें उसीसे मिलती है, इसलिये उसी सामग्रीको जाँचकर हमें ऐतिहासिक निर्णय करना है।

केशी-गौतम-संवाद पार्श्वनाथके अस्तित्वका प्रबल प्रमाण है और पार्श्व-धर्म और वीर-धर्मके भेदपर भी कुछ प्रकाश डालता है। इससे अधिक प्रकाश डालनेवाली अभी कोई दूसरी सामग्री उपलब्ध नहीं है। यहाँ इसकी पहली बातोंपर अधिक ध्यान नहीं देना है किन्तु

१—चत्तारो यमा एव नामा निदृतवो। स्थानांग-टीका १६१।

दो बातें समझना है। एक तो श्रमण महात्मा पार्श्वनाथका अस्तित्व और दूसरी उनके धर्मका जुदापन।

इससे सिद्ध होता है कि म० महावीर जैनधर्मके सस्थापक थे। उन्होंने प्राचीन धर्मोंकी बहुतसी बातें लेकर—जैसा कि हरएक धर्म-संस्थापकको करना पड़ता है—तथा अनुभवसे कुछ नये नियम बनाकर--जिनका ठीक ठीक बताना कठिन है—एक नये धर्मकी रचना की, जिसका नाम पीछेसे जैनधर्म हो गया।

कुछ लोग जैन-साहित्यके कुछ नामोंका उल्लेख म० महावीरसे पुराने समयमें पाकर जैनधर्मको उतना ही प्राचीन माननेकी भूल कर बैठते हैं। इसी आधारपर जैनसमाजमें एक तरहके प्रमाण प्रचलित हैं कि "जैन तीर्थङ्करोंके नाम वेदोंमें तथा प्राचीन पुस्तकोंमें पाये जाते हैं।" परन्तु यह कोई प्रबल प्रमाण नहीं है। क्योंकि अभी इतना निर्णय करना बाकी ही है कि जैनधर्मके नाम वेदोंमें आये हैं या वेदोंमें आये हुए उन व्यक्तियोंके नामोंको जैनियोंने अपनाकर उन्हें जैन-पुरुषके रूपमें चित्रित किया है। प्राचीन पुरुषोंको नये साँचेमें ढालकर अपना लेनेका काम सदासे होता आया है। रामचन्द्रजी वैदिक रामायणके अनुसार वैदिक थे, जैन-पुराणके अनुसार जैन, और बौद्ध-जातकके अनुसार बौद्ध। अब अगर बौद्ध कहें कि रामचन्द्रजी बौद्ध थे, इसलिये बौद्धधर्म रामचन्द्रजीके जमानेमें था, तो यह बात मान्य नहीं हो सकती। वेदमें अगर विष्णुका नाम मिले तो वैष्णव-धर्मको वैदिक-युगका नहीं कहा जा सकता। अगर वेदोंमें 'आर्य' शब्द मिलता है, तो वर्तमानका आर्य-समाज वेदोंके समयमें था यह नहीं कहा जा सकता। अगर किसी प्राचीन विवरणमे यह

सिद्ध आय कि अमुक मनुष्यने अमुकको 'नमस्ते' कहकर अभिवादन किया तो 'नमस्ते' द्वारा शिष्टाचार करनेवाले आर्य-समाजको हम उतना प्राचीन न मान लेंगे।

इस विषयमें कुछ लोगोंने कुछ प्रमाण देनेकी चेष्टा की है। उनकी संक्षिप्त आलोचना कर लेना उचित है।

एक प्रमाण है म ऋषभदेवका अस्तित्व। इसके विषयमें जो बातें कहीं जाती हैं उनका उत्तरसहित उल्लेख किया जाता है—

प्रश्न—१—मार्कण्डेयपुराण, कूर्मपुराण अग्निपुराण, वायु महापुराण ब्रह्माण्डपुराण वाराहपुराण लिंगपुराण विष्णुपुराण, स्कन्दपुराणमें ऋषभदेवका वर्णन पाया जाता है। यद्यपि ये पुराण दो हजार वर्षसे पुराने नहीं हैं, फिर भी इनका आधार अति प्राचीन है। यदि कहा जाय कि इनका आधार वैदिक साहित्य है, तो कोई अत्युक्ति नहीं है। पुराणोंमें ऐसी अनेक कथाएँ मिलती हैं जो वेदों और ब्राह्मणोंमें पहलेसे ही मौजूद हैं। पुराण शब्दका उल्लेख भी वेदोंमें है।

उत्तर—इन पुराणोंका रचना-काल दो हजार वर्षसे भी बहुत कम है। कोई कोई तो १२ • वर्षसे पुराने नहीं हैं। इस लिये इनमें ऋषभदेवका उल्लेख मिले इसका कुछ भी मूल्य नहीं है। इनका आधार प्राचीन है, वेदोंकी कथाएँ भी इनमें मिलती हैं, परन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि इनमें अपनी तरफसे कुछ लिखा नहीं है। इन पुराणोंमें ईसाकी चौथी शताब्दी तकके राजाओंके नाम मिलते हैं, जैनियों और बौद्धोंकी (कमसे कम बौद्ध-धर्म वैदिक-युगका नहीं है) निन्दा मिलती है। जब ये परिवर्तित और परिवर्द्धित नवीन

[रच]नाएँ हैं तब इनमें ऋषभदेवका उल्लेख मिलना सिर्फ इसी बातको [सि]द्ध करता है कि इनके रचना-समयमें अर्थात् करीब डेढ़ हजार [वर्ष] पहले ऋषभदेवकी भी मान्यता थी। इससे जैनधर्मकी प्राचीन-[ता]पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वेदोंमें 'पुराण' शब्दका उल्लेख [मि]लता है। इसी लिये आजकलके पुराण वैदिक युगके सिद्ध नहीं [हो]ते। वहाँ आज मनुष्य शब्द मिले तो आजकलका मनुष्य वैदिक युगका न हो जायगा।

दूसरी बात यह है कि इन पुराणोंने जब ऋषभदेवका एक स्वरसे उल्लेख किया तब यही मालूम होता है कि ऋषभदेव नामके कोई प्राचीन ऋषि थे जिनको जैनियोंने रामादिकी तरह अपना पात्र बना लिया। अगर ऋषभदेव जैन-तीर्थंकर होते तो उन्हें जैनियोंके शत्रु क्यों अपनाते? जब वे जैनियोंकी निंदा ही करते हैं तब जो जैनधर्मके संस्थापक हैं उनकी निन्दा न करके अपनानेका कार्य कैसे करते? इससे वे वैदिक पात्र ही सिद्ध होते हैं।

हाँ, यह बात अवश्य है कि वैदिक धर्मोंमें जो स्थान पहले इन्द्रादि देवोंको प्राप्त था और पीछेसे जो स्थान विष्णु आदिको प्राप्त हो गया, वह स्थान ऋषभदेवको नहीं था। इधर जैनियोंने उन्हें अपना आद्य तीर्थंकर माना था, इस लिये जैनियोंमें ऋषभदेवकी मान्यता बढ़ जाय यह बात स्वाभाविक है। परन्तु इससे ऋषभ-देव जैन पुरुष नहीं हो जाते। खैर, पुराणोंके उल्लेख व्यर्थ है।

प्रश्न २—भगवान् ऋषभदेव यदि वैदिक महापुरुष होते तो वैदिक साहित्यमें इनका जीवन वैदिक ढगका मिलना चाहिये था।

इसके अतिरिक्त उनके वैदिक जीवनके चिह्न उनके जैन-जीवनमें भी मिलने चाहिये थे।

उत्तर—ऋषभदेवके जीवनमें ऐसी कौन-सी बात है जो वैदिक साहित्यके तथा अन्य जैनेतर सम्प्रदायोंके पात्रमें न मिलती हो! मस्करी तो आजीवक पूर्णकाश्यप आदि श्रमणोंके अतिरिक्त शुकदेव वगैरह वैदिक पात्रोंमें भी मिलती है। अवधूत परमहंस आदि जैनेतर सम्प्रदाय भी पुराने हैं। वैदिक जीवनके चिह्न जैन जीवनमें न मिलें यह स्वाभाविक है। जब जैनियोंने ऋषभदेवको अपनाया तब उनपर जैनत्वका रंग चढ़ाना ही चाहिये था। उनकी अवधूतताको जैनत्वका रंग देना कठिन नहीं था। राम-कृष्ण आदि गृहस्थ महापुरुषोंको अपनाकर जब जैनत्वका रंग दिया था तब ऋषभदेवको जैनत्वका रंग देना क्या कठिन था? फिर भी एक बात ऐसी है जिससे मालूम होता है कि ऋषभदेव जैन नहीं थे। जैनशास्त्रोंमें वर्णन है कि उनके सिरपर जटाएँ हो गई थीं। जैन मुनियोंके सिरपर जटाएँ होना यह जैन-संस्कृति तथा आचार शास्त्रकी आज्ञाके बिलकुल विरुद्ध है। जैन शास्त्रोंमें जटा रखनेकी निन्दा है। कहा जा सकता है कि बहुत दिन तक ध्यानस्थ रहनेसे जटा बढ़ गई थी। परन्तु यह तो बाहरसे व्यक्तिको बचानेकी कला है। इस प्रकार कोई न कोई बहाना तो बनाना ही पड़ता। परन्तु इससे एक मूल-गुणका भंग होता है। जैनशास्त्रोंके अनुसार कमसे कम दो

---

१ वातोद्धूता जटास्तस्य रेजुराकुलमूर्तयः।
धूमपंक्त्य इव ध्यानवह्निदग्धस्य कर्मणः॥
—पद्मपुराण ३-२८८

मासमें और अधिकसे अधिक चार मासमें केश-लोच करना ही चाहिये। यहाँ इस नियमका भंग करना पड़ा है और यह सब बाहरकी चीजको पहचाननेके लिये है।

भागवतके उल्लेखसे भी यह सिद्ध नहीं होता कि ऋषभदेव जैन थे। उससे यही मालूम होता है कि ऋषभदेव एक अवधूत योगी थे। उन्होंने 'परमहंस धर्म'का प्रचार किया था। वे पागलकी तरह नग्न रहते थे। उनकी लम्बी लम्बी और कुटिल जटाएँ थीं। वे एक ही जगह पड़े पड़े खाते, पीते, टट्टी-पेशाब आदि कर लेते थे और उनका शरीर मलसे लिप्त हो गया था। दक्षिण कर्नाटकमें जाकर उन्होंने अग्नि-प्रवेश करके प्राण त्याग दिये।

ऋषभदेवके इस चरित्रका भागवतमें भूतकालकी कथाके रूपमे वर्णन हुआ है। इसके आगे कहा गया है कि—

१—बिय तिय चउक्कमासे लोचो उक्कस्स-मज्झिम-जहण्णो।
सपडिक्कमणे दिवसे उववासेणेव कायव्वो। मूलाचार १–२९

२—जडान्धमूकबधिरपिशाचोन्मादकवदवधूतवेषोऽभिभाष्यमाणोऽपि जनानां गृहीतमौनव्रतस्तूष्णीं बभूव। भाग० ५–५–२९।

३—भक्तिज्ञानवैराग्यलक्षणं पारमहंस्यधर्ममुपशिक्षमाणः। भा० ५–५–२८।

४—परागावलम्बमानकुटिल-जटिल-कपिश-केशभूरिभारोऽवधूतमलिननिजशरीरेण ग्रहगृहीत इवादृश्यत। भा० ५–५–३१।

५—व्रतमाजगरमास्थितः शयान एवाश्नाति पिबति खादत्यव मेहति हदति स्म चेष्टमान उच्चरितादिग्धोद्देशः। भा ५–५–३२। एवं गोमृगकाकचर्यया व्रजंस्तिष्ठन्नासीनः शयानः काकमृगगोचरितः पिबति खादत्यव-मेहति स्म। भा० ५–५–३४

६—अथ समीरवेगविधूतवेणुविकर्षणजातोग्रदावानलस्तद्वनमालेलिहानः सह तेन ददाह। भा० ५–६–८।

यहाँका राजा अर्हत् ऋषभदेवकी शिक्षाएँ लेकर अपनी बुद्धिसे पाखण्डका प्रचार करेगा।

ऋषभदेवका जैसा चरित्र-चित्रण भागवतकारने किया है वह जैन मुनिसे बहुत कम मिलता है। चूँकि भागवतके समयमें दक्षिणमें जैनधर्मका काफी प्रचार था और ऋषभदेव जैन-तीर्थंकरके रूपमें माने जाते थे इसलिये जैनधर्मकी निंदा करनेके लिये भागवतकारने अर्हत् राजाकी कल्पना करके जैनधर्मको ऋषभदेवके विचारोंका भ्रष्टरूप कह दिया। भारतीय साम्प्रदायिक साहित्यको देखनेसे मालूम होता है कि हर-एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदायकी निन्दा करनेके लिये दूसरे सम्प्रदायोंकी उत्पत्तिका कल्पित इतिहास रच डालता है। इस काममें दूसरे धर्मोंके पात्रोंके नामोंका उपयोग किया जाता है जिससे वह कल्पना सत्यके समान मालूम होने लगे। जैन-साहित्यमें इसी प्रकार शिव कपिल, वसिष्ठ आदिका चित्रण किया गया है। इसी प्रकार दूसरोंने जैनियोंके लिये किया है। ऋषभदेव अवश्य ही जैन नहीं थे परन्तु जब जैनियोंने उन्हें अपना लिया था तब उनकी उपपत्ति बिठलानेके लिये भागवतकारको यह कथा गढ़नी पड़ी। इस प्रकार भागवत तथा अन्य पुराणोंमें ऋषभदेवका उल्लेख जैनधर्मकी प्राचीनता सिद्ध नहीं करता।

प्रश्न २—खंडगिरिके हाथीगुफावाले शिलालेखसे मालूम होता

१—यस्य किलानुचरितमुपाकर्ण्य कोङ्कवेङ्ककुटकानां राजार्हन्नामोपशिक्ष्य कलावधर्म उत्कृष्यमाणे भवितव्येन विमोहितः स्वधर्मपथमकुतोभयम् पहाय कुपथपाखण्डमसमञ्जसं निजमनीषया मन्दः सम्प्रवर्तयिष्यते।

भा ५-६-९।

है कि अग्र-जिनकी मूर्ति नन्दराजके समयमें थी। इस प्रकार महावीरके साठ वर्ष पीछे ऋषभदेवकी मूर्तिका सद्भाव सिद्ध होता है। कुछ विद्वानोंका मत है कि यह मूर्ति कलिंगाधिपतिके यहाँ वंशपरम्परासे आई होगी, क्योंकि इसे 'कलिंग-जिन' कहा है; इससे यह मूर्ति म० महावीरसे भी पुरानी मालूम होती है। महावीरके समयमें और उनके पीछे बासठ वर्ष तक केवलियोंका सद्भाव था, इससे उस समय तो मूर्तिकी जरूरत ही नहीं मालूम होती, इसलिये यह मूर्ति उनके पहलेकी होगी।

उत्तर—इस प्रश्नमें ऐतिहासिक दृष्टिकी पूरी अवहेलना है। शिलालेखवाली बातोंकी अगर अधिक आलोचना न भी की जाय तो भी मूर्तिकी प्राचीनता चौबीस सौ वर्षसे अधिक नहीं रहती। म० महावीरके बाद साठ वर्षमें तीन पीढ़ियाँ बीतती हैं। इनमें मूर्त्तियोंका बन जाना न तो असंभव है, न कठिन, बल्कि स्वाभाविक है। म० महावीरके समयमें ही लाखों श्रावक हो गये थे, इसलिये उनके निर्वाणके बाद उनकी और उनने जिन तीर्थंकरोंकी कहानियाँ कहीं थीं उनकी मूर्त्तियाँ बन जाना स्वाभाविक है। इसके लिये शताब्दियाँ नहीं किन्तु उँगलियोंपर गिने जानेवाले वर्ष ही बहुत हैं। 'कलिंग-जिन' कहनेसे उसकी प्राचीनता नहीं परन्तु क्षेत्रान्तरितता सिद्ध होती है। एक वस्तु जब एक जगहसे दूसरी जगह जाती है तब पुराने क्षेत्रके नामसे उल्लिखित होती है। एक गुजराती जब दक्षिणमें बस जाता है तब गुजराती उसका 'सरनेम' हो जाता है। इसी प्रकार जब कलिंगकी मूर्त्ति नंदके यहाँ पहुँची तब वह 'कलिंग-जिन'के नामसे कही जाने लगी, कलिंगमें पुरानी हो जानेसे वह 'कलिंग-जिन' नहीं बन गई। तीर्थंकरों

और फेषक्रियोंक समयमें मूर्ति अनावश्यक है इसलिये उनके समय मूर्ति नहीं बनाई जा सकती, इस तर्कमें जन-शास्त्रों और ऐतिहासिक सम्प्रदायकी पूरी हत्या की गई है। सिकंदर राजाओंकी ऐसी अनेक मूर्तियाँ मिलती हैं जिन्हें उन राजाओंने अपने जीवनमें बनवाया था। जैन-शास्त्रोंके अनुसार ऋषभदेवके जीवन-कालमें ही भरतने मूर्तियों और मंदिरोंका निर्माण किया था। व्यक्ति तो अमुक समय और जगहके लिये होता है परन्तु मूर्तिको तो हम हर-समय अपने पास रख सकते हैं इसलिये व्यक्तिके जीवनमें उसकी मूर्तियाँ होना अनावश्यक नहीं है। फिर अविद्यमान व्यक्तिकी मूर्ति तो और भी आवश्यक है। इसलिये यह निश्चित रूपमें कहा जा सकता है कि खारवेलके शिला-लेखवाली मूर्ति म महावीरसे पीछेकी है। इससे ऋषभदेवके जैन तीर्थंकर होनेकी मान्यता महावीरसे प्राचीन सिद्ध नहीं हो सकती।

प्रश्न ४—ऋषभदेव यदि काल्पनिक व्यक्ति होते और उनकी कल्पनाका समय महावीरके बादका होता तब तो इनका नाम बुद्धान्तरके बाद आना चाहिये था।

उत्तर—यहाँ यह प्रश्न ही नहीं है कि ऋषभदेव काल्पनिक हैं या अकाल्पनिक। वे ऐतिहासिक व्यक्ति ही क्यों न सिद्ध हो जावें फिर भी वे 'जैन-तीर्थंकर' ये यह बात काल्पनिक ही बनी रहेगी। दूसरी बात यह है कि कल्पनाका समय और कल्पनाके विषयका समय ये दो जुदी जुदी बातें हैं। मैं आज एक लाख वर्ष पहले किसी व्यक्तिकी कल्पना करूँ और उसका चरित्र लिखूँ तो राम-कृष्ण आदिके पहले उसका समय कहा जायगा परन्तु कल्पनाका समय आजका ही होगा।

प्रश्न ५—मथुराके कङ्काली टीलेपर भ० ऋषभदेवकी मूर्तियाँ मिली हैं, जिनका समय ईस्वीसन् १५० है।

उत्तर—जव कलिंग-जिनसे ऋषभ-जिनेन्द्रकी प्राचीनता सिद्ध नहीं होती जिसे भ० महावीरके साठ वर्ष पीछेका कहा गया है तब इन सैकडो वर्ष पीछेकी मूर्तियोंसे क्या सिद्ध होगा ?

प्रश्न ६—मोहन-जो-दड़ोकी खुदाईमें अनेक मोहरे मिली है। इनमे प्लेट न २ की सील न० ३, ४, ५ पर ध्यानावस्थाकी खड्गासन मूर्तियाँ हैं। इनके नीचे बैलका चिह्न है। खड्गासनका वर्णन तो खास तौरसे जैन-शास्त्रोंमें ही मिलता है। यह मूर्ति कुशानकालीन मथुरावाली मूर्तिसे मिलती है। इसका समय पाँच हजार वर्ष पुराना है।

उत्तर—खड्गासन जैनियोंका असाधारण चिह्न नहीं है परन्तु पुराने समयमें अनेक ऐसे जैनेतर सम्प्रदाय थे जिनमें साधु-महात्मा खडे रहकर तपस्या किया करते थे। खडी हुई मूर्तियाँ भी अनेक सम्प्रदायोंकी मिलती है। शिवकी खडी हुई मूर्तियाँ तो एकसे एक सुन्दर पाई जाती है। इसलिये खड्गासनके आधारपर उसे जैन मूर्ति कदापि नहीं कहा जा सकता। परेल (बम्बई) में जो शिवकी मूर्ति है वह बिल्कुल खड्गासन है और उसका चेहरा भी जैन-मूर्तियोंका सा है। मोहन-जो-दड़ोकी खुदाईमें धार्मिक इतिहासपर प्रभाव डालनेवाला ऐसा मसाला नहीं मिला है जिससे वर्तमानके सम्प्रदाय कुछ ठीक निर्णय कर सकें। हाँ, सिर्फ शिवकी प्राचीनता सिद्ध हुई है और यह निर्विवाद सिद्ध हुआ है कि वर्तमान देवताओंमें शिव सबसे प्राचीन है। शिवकी प्राचीनता कल्कालिथिक (Chalcolithic

कालमें भी पहलेकी है। इसलिये जबतक किसी दूसरेकी मूर्ति यह सिद्ध न हो जाय तब तक उसे शिवकी मूर्ति क्यों न कहा जाय? बल्कि साथ शिवका कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसके कहनेकी तो जरूरत ही नहीं है।

प्रकरण आ जानेसे यहाँ मैं इस बातका खुलासा और कर देना चाहता हूँ कि कुछ जैन बन्धु बैल, हाथी घोड़ा, चकवाक आदि पशु-पक्षियोंके चिह्न मिल जानेसे उन्हें जैन-तीर्थंकरोंका स्मारक समझ लेते हैं। यह ठीक है कि जैनियोंने तीर्थंकरोंकी मूर्तियोंको पहिचाननेके लिये मूर्तियोंके नीचे नाम लिखनेकी अपेक्षा पशु-पक्षियोंके चिह्नकी कल्पना की है। परन्तु प्राचीन धर्मोंकी तरह जैनधर्ममें इन पशु-पक्षियोंका कुछ महत्त्व नहीं है जिससे जैन लोग इनकी स्वतन्त्र मूर्तियाँ या चित्र बनाते। इनका उपयोग मूर्तियोंको पहिचाननेके चरण-चिह्नके रूपमें ही हुआ है। इसलिये पशु-पक्षियोंकी मूर्तियोंसे जैन-तीर्थंकरोंका अस्तित्व न समझना चाहिये। दूसरा भ्रम भी कुछ जैन-बन्धुओंको यह है कि वे मोहन-जो-दड़ोमें किसी चीजको पाते ही उसे पाँच हजार वर्ष पुरानी समझ लेते हैं। मोहन-जो-दड़ोमें पाँच हजार वर्षतककी पुरानी चीजें मिली हैं परन्तु सभी चीजें उतनी पुरानी नहीं हैं। मोहन-जो-दड़ोकी खुदाईके सात स्तर हैं। उनमें नीचेसे जो पहला स्तर है उसीमें पाँच हजार वर्षकी पुरानी चीजें हैं। दूसरे तीसरे, चौथे स्तरमें तो माध्यमिक कालकी वस्तुएँ हैं और ऊपरके प्रस्तरोंमें तो दो-दो हजार वर्षसे भी कम पुरानी चीजें हैं। यही कारण है कि मोहन-जो दड़ोमें बाह्य-स्तूप वगैरह भी मिले हैं जो दो हजार वर्षसे पुराने नहीं हैं।

ऊपर जो सीलें बतलाई गई है पहले तो उनकी प्राचीनता निर्विवाद नहीं है, दूसरे वह जैन प्रतिमा हैं इसका भी कोई प्रमाण नहीं है। वे मथुराकी मूर्त्तियोंसे मिलती हैं—पहले तो इसीमें अतिशयोक्ति है। दूसरे इतनेपर भी वे शिवकी या और किसी देवकी मूर्त्ति हो सकती हैं। तीसरे उनका मथुराकी मूर्त्तियोंसे मिलना उनकी अर्वाचीनताका सूचक है। इसलिये मोहन-जो-दड़ोकी खुदाईसे जैनधर्मको महावीरसे पहलेका सिद्ध करना भ्रम है।

हाँ, यहाँ एक बात और याद आती है। वह यह कि श्वेताम्बर शास्त्रोंमें म० महावीरके विहारका विस्तृत वर्णन है। वे विहारमें कहाँ ठहरते थे इसका अनेक स्थानोंपर उल्लेख होता है और उसमें विशेषत यक्ष-मन्दिरोंका ही वर्णन आता है, जैनमन्दिर आदिका कहीं भी उल्लेख नहीं आता। यदि जैनधर्म म० महावीरके पहलेका होता और उस समय जैन-तीर्थकरोंकी मूर्त्तियाँ प्रचलित होतीं तो यह सम्भव ही नहीं था कि महावीर स्वामी यक्ष-मन्दिरोंमें तो ठहरते फिरते किन्तु जैन-मन्दिरोंमें या उनके आसपास न ठहरते। यह सम्भव नहीं है कि श्वेताम्बर शास्त्रकारोने जैन-मन्दिरोंके उल्लेखोंको उड़ा दिया हो, क्योंकि श्वेताम्बरोंको भी जैनधर्मकी प्राचीनता प्रिय है। ऐसी अवस्थामें वे इस विषयके कल्पित प्रमाण बनाते यह तो किसी तरह सम्भव भी था परन्तु उपलब्ध प्रमाणोंका नाश करते यह किसी तरह सम्भव नहीं था। जैनधर्मको म० महावीरसे प्राचीन न माननेका यह भी एक जबर्दस्त प्रमाण है।

जो बात ऋषभदेवके विषयमें है वही बात अरिष्टनेमिके विषयमें भी है। वेदोंमें अरिष्टनेमिका नाम मिलता है। यद्यपि इस शब्दके

कार्यमें विवाद है परन्तु यहाँ अगर यह बात मान भी जाय कि अरिष्ट नेमि नामके कोई महापुरुष हुए हैं तो भी इससे जैनधर्मकी प्राचीनता सिद्ध नहीं होती क्योंकि इससे सिर्फ यही कहा जा सकता है कि ऋषभ, राम, कृष्ण आदिकी तरह यह नाम भी अपना लिया गया है। नेमिनाथका जो चरित्र जैन-शास्त्रोंमें मिलता है वह इतना औपन्यासिक, कल्पनाशून्य तथा कृत्रिमतासे भरा हुआ है कि उसपर किसी प्रकार विश्वास नहीं किया जा सकता। खैर, इस परिशालोचनकी यहाँ आवश्यकता नहीं है। सीधी बात यह है कि कोई ऐसा नाम जो वेदोंमें भी पाया जाता है अगर किसी जैन-पात्रका भी हो, तो यह जैनधर्मकी प्राचीनता सिद्ध नहीं करता है। नेमिनाथ-सम्बन्धी प्रमाण तो ऋषभदेवसम्बन्धी प्रमाणसे भी अधिक निर्बल हैं।

प्राचीनताके विषयमें अनन्त जिन शब्दका भी काफी उल्लेख किया जाता है। यह शब्द उस समय प्रयुक्त हुआ है जब कि म० बुद्ध बुद्धत्व प्राप्त करके धर्मप्रचारके लिये बनारसकी तरफ जा रहे थे। उस समय उपक आजीवकने म० बुद्धसे पूछा कि तुम्हारा गुरु कौन है।

बुद्ध बोले—मैं सबको जीतनेवाला, सबको जाननेवाला स्वयं ज्ञान कर उपदेश करूँगा। मेरा कोई आचार्य नहीं, मेरे समान कोई नहीं, मैं अर्हत् हूँ, शास्ता हूँ, सम्यक् सम्बुद्ध हूँ निर्वाण-प्राप्त हूँ, धर्मचक्र घुमानेके लिये काशीको जा रहा हूँ।

उपक बोला—आयुष्मन्, तुम जैसा दावा करते हो उससे तो तुम अनन्त जिन हो सकते हो।

बुद्ध बोले—मेरे समान प्राणी ही जिन कहलाते हैं। मैंने पापोंको जीता है, इसलिए 'जिन' हूँ।

उपक—अच्छा भाई, होगे तुम 'जिन'।

ऐसा कहकर वह लापर्वाहीसे सिर हिलाकर चला गया।

इस उद्धरणसे साफ मालूम होता है यहाँ 'अनन्त जिन' शब्दका अर्थ कोई व्यक्तिविशेष नहीं है किन्तु पदविशेष है। मैं पहले कह चुका हूँ कि पुराने समयमें जिन, अर्हत्, बुद्ध आदि शब्दोंका उपयोग अत्यन्त पवित्र महात्माओंके लिये हुआ करता था। जैन, बौद्ध, आजीवक, पूर्णकाश्यप आदि सभी अपने अपने सम्प्रदायके महात्माओंके लिये इन शब्दोंका प्रयोग करते थे। यही कारण है कि एक आजीवक साधु भी 'जिन' शब्दकी दुहाई देता है।

'अनन्त जिन' शब्दका अर्थ अगर अनन्तनाथ नामक जैन-तीर्थंकर होता तो एक आजीवक उस नामकी दुहाई कभी न देता। उस समय जैन और आजीवकोंमें भारी द्वेष था। आजीवकोंके 'जिन' मस्करी गोशाल और म० महावीरमें बहुत भयंकर विरोध हुआ था। तब एक आजीवक अगर किसी व्यक्तिविशेषकी दुहाई दे, तो अपने तीर्थंकरकी दुहाई देगा न कि एक जैन-तीर्थंकरकी।

दूसरी बात यह है कि अनन्तनाथ तो चौदहवें तीर्थंकर माने जाते हैं, तब चौबीसवें तीर्थंकरके समयमें चौदहवें तीर्थंकरके नामकी दुहाई देनेका क्या मतलब है? अगर दुहाई देना थी तो महावीरके नामकी देना थी अथवा, म० महावीरके नामकी प्रसिद्धि उस समय अधिक नहीं हो पाई थी तो, म० पार्श्वनाथके नामकी दुहाई देना चाहिये थी। तीर्थंकरोंके जीवनोंमें अनंतनाथके जीवनमें ऐसी कोई विशेषता नहीं है और न उनकी ऐसी विशेष प्रसिद्धि है जिससे यह कहा

जा सके कि क्रम-क्रमसे निकटके तीर्थंकरको छोड़कर उसको अनन्तनाथकी दुहाई देना पड़े।

आज अगर कोई जैन किसी जैन तीर्थंकरके नामकी दुहाई देता है तो वह म० महावीरका नाम लेता है न कि अन्य तीर्थंकरका। अन्य प्राचीन तीर्थंकरका नाम तभी लिया करता है जब कि कोई बात ऐसी कहना हो जो म० महावीरके जीवनमें न पाई जाती हो। यहाँपर महात्मा बुद्धदेवके मुँहसे अपने विषयमें जो उद्गार निकले हैं वे ऐसे नहीं हैं जो अनन्तनाथके पीछेके तीर्थंकरमें न कहे जा सकते हों, तब उसने अनन्तनाथका नाम लिया यह कैसे कहा जा सकता है?

इससे मालूम होता है कि 'अनन्त जिन' शब्द किसी व्यक्तिका नहीं किन्तु पदका निर्देश करता है। इसका अर्थ है—अनन्त शत्रुओंको जीतनेवाला * अनन्तकालतक स्थिर रहनेवाला, अपरिमित महत्तावाला। आत्माके विकारोंको जीतनेवालेको जिन कहते हैं। जिसने अनन्त या सब विकारोंको जीत लिया वह 'अनन्त जिन' कहलाता है। यद्यपि 'अनन्त' और 'सर्व' शब्दके अर्थमें अन्तर है फिर भी दोनों कहीं कहीं पर्यायवाची शब्द बन जाते हैं। जैसे

---

*—यह पाली पाठ निम्नलिखित है— यथा खो त्वं आवुसो पटिजानासि अरहसि अनन्त जिनोति। एक यूरोपियन विद्वानने इसका भावात्मक अनुवाद इस प्रकार किया है—

"Which is, as much as to say brother that you profess to be a saint—an immeasurable conqueror

— Buddhism in Translation by Warren
Page 343.

इससे भी मालूम होता है कि अनन्त जिन शब्द एक विशेषण है।

अनन्तज्ञानी और सर्वज्ञ पर्यायवाची शब्द बन जाते हैं। इसी प्रकार यहाँ 'अनन्त जिन' शब्दका अर्थ पूर्ण 'जिन' है।

यह अर्थ युक्तिसंगत भी है, अबाध भी है और एक आजीवकके मुँहसे निकलने लायक भी है। यहाँपर अनन्तनाथ नामक व्यक्तिका उल्लेख होना किसी तरह भी ठीक नहीं कहा जा सकता।

इससे यह बात भी मालूम होती है कि कहीं पुराने समयमें 'जिन' शब्दका उल्लेख मिल जाय तो उसे जैनधर्मका उल्लेख न समझना चाहिये। 'जिन' शब्दका प्रयोग बौद्ध, आजीवक आदि श्रमण-सम्प्रदायोंमें आमतौरपर प्रचलित था और इस 'जिन' शब्दकी प्राचीनतासे जैनधर्मकी प्राचीनताका कोई सम्बन्ध नहीं है।

अन्तमें मैं इस बातको दुहराता हूँ कि जब म० महावीर एक तीर्थंकर थे तब उनकी धर्म-संस्था एक स्वतन्त्र धर्म-संस्था होना चाहिये और उसके संस्थापक वे ही थे।

जैनधर्म सिर्फ ढाई हजार वर्ष पुराना है, इस बातका उसकी सत्यता-असत्यतासे कोई सम्बन्ध नहीं है। इस धर्म-संस्थाने भारतवर्षका बहुत कल्याण किया है तथा पुराने धर्मोंपर ऐसी छाप मारी है कि उनको पुराने विकारोंको हटाकर नवीन रूप धारण करना पड़ा है। अधिक पुराना होनेसे उसकी सेवाएँ बढ़ नहीं जातीं और नवीन होनेसे उसकी सेवाएँ घट नहीं जातीं।

महात्मा महावीर

किसी धर्मको समझनेके लिये उसके संस्थापकका जीवन-चरित बहुत उपयोगी होता है। बहुत-सी काम, जिनको हम अकाट्य नियम समझते हैं, अमुक परिस्थितिके फल होते हैं। इससे उनके विषयमें हमारा

फासिंदियवज्झं घाणिंदियवज्झं जिब्भिंदियवज्झं इत्थिवेयवज्झं पुरिसवेयवज्झं एवं चउद्दसण्हं भेदेणं जाव पज्जत्तबायरवणस्सइकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पयडीओ वेदेंति ? गोयमा ! एवं चेव चउद्दस कम्मप्पयडीओ वेदेंति । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८४२॥ ३३-१-१॥ कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया प० ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया प०, तं०—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया। अणंतरोववन्नगा णं भंते ! पुढविक्काइया कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सुहुमपुढविक्काइया य बायरपुढविक्काइया य, एवं दुयएणं भेदेणं जाव वणस्सइकाइया । अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पयडीओ प० ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पयडीओ प०, तं०—णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । अणंतरोववन्नगबायरपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पयडीओ प० ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पयडीओ प०, तं०—णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं एवं(चेव) जाव अणंतरोववन्नगबायरवणस्सइकाइयाणंति । अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कइ कम्मप्पयडीओ बंधंति ? गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पयडीओ बंधंति एवं जाव अणंतरोववन्नगबायरवणस्सइकाइयत्ति । अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कइ कम्मप्पयडीओ वेदेंति ? गोयमा ! चउद्दस कम्मप्पयडीओ वेदेंति, तं०—णाणावरणिज्जं तहेव जाव पुरिसवेयवज्झं एवं जाव अणंतरोववन्नगबायरवणस्सइकाइयत्ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ८४३॥ ३३-१-२॥ कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया प० ? गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया प०, तं०—पुढविक्काइया एवं चउक्कओ भेदो जहा ओहि(य)उद्देसए । परंपरोववन्नगअपज्जत्तसुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पयडीओ प० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहि(य)उद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चउद्दस वेदेंति । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८४४॥ ॥ ३३-१-३॥ अणंतरोगाढा जहा अणंतरोववन्नगा ४॥ परंपरोगाढा जहा परंपरोववन्नगा ५॥ अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा ६॥ परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा ७॥ अणंतरपज्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा ८॥ परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा ९॥ चरिमावि जहा परंपरोववन्नगा तहेव १०॥ एवं अचरिमावि ११॥ एवं एए एक्कारस उद्देसगा । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८४५॥ पढमं एगिंदियसयं समत्तं ॥ ३३-१॥ कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया प० ? गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया प०, तं०—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया । कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढविक्काइया कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तं०—सुहुमपुढविक्काइया य बायरपुढविक्काइया य । कण्हलेस्सा णं भंते ! सुहुमपुढविक्काइया कइविहा

ज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति० उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए । ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उव्वट्टंति ? गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वट्टंति, ते णं भंते ! जीवा कहं उव्वट्टंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए एवं तहेव, एवं सो चेव गमओ जाव आयप्पओगेणं उव्वट्टंति नो परप्पओगेणं उव्वट्टंति, रयणप्पभापुढवि-(नेरइए) खुड्डागकडजुम्म० एवं रयणप्पभाएवि एवं जाव अहेसत्तमाएवि, एवं खुड्डाग-तेओगखुड्डागदावरजुम्मखुड्डागकलिओगा नवरं परिमाणं जाणियव्वं, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८४१ ॥ ३२।१ ॥ कण्हलेस्सकडजुम्मनेरइया एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासएवि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा नवरं उव्वट्टंतित्ति अभिलावो भाणियव्वो, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥८४२॥ **बत्तीसइमं उववट्टणासयं समत्तं ॥**

कइविहा णं भंते ! एगिंदिया प० ? गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया प०, तं०-पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया, पुढविकाइया णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तं०-सुहुमपुढविकाइया य बायरपुढविकाइया य, सुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तंजहा-पज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य, बायरपुढविकाइया णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! एवं चेव, एवं आउकाइयावि चउक्कएणं भेदेणं भाणियव्वा एवं जाव वणस्सइकाइया(णं) । अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ प०, तं०-नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं, पज्जत्त-सुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ प०, तंजहा-नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । अपज्जत्तबायरपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? गोयमा ! एवं चेव ८, पज्जत्तबायरपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? एवं चेव ८, एवं एएणं कमेणं जाव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणंति । अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगावि अट्ठविहबंधगावि सत्त बंधमाणा आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधंति अट्ठ बंधमाणा पडिपुन्नाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधंति, पज्जत्तसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ बंधंति ? एवं चेव, एवं सव्वे जाव पज्जत्तबायरवणस्सइकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ बंधंति ? एवं चेव । अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? गोयमा ! चउद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तं०-नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं, सोइंदियवज्झं चक्खि-

मओ कण्हलेस्सभवसिद्धियअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेंति । कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया प० ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धियसुहुमपुढवि-काइया णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प० तं०—सुहुमपुढविकाइया (य बायरपुढविकाइया य) एवं दुयओ भेदो । अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धियसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ प० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणंतरोववन्नगउद्देसओ तहेव जाव वेदेंति, एवं एएणं अभिलावेणं एक्कारसवि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा जहा ओहियसए जाव अचरिमोत्ति ॥ छट्ठं एगिंदियसयं समत्तं ॥ ६ ॥ जहा कण्हलेस्सभवसिद्धिएहिं सयं भणियं एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहिवि सयं भाणियव्वं ॥ सत्तमं एगिंदियसयं समत्तं ॥ ७ ॥ एवं काउलेस्सभवसिद्धिएहिवि सयं ॥ अट्ठमं एगिंदियसयं समत्तं ॥ ८ ॥ कइविहा णं भंते ! अभवसिद्धिया एगिंदिया प० ? गोयमा ! पंचविहा अभवसिद्धिया एगिंदिया प० तं०—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया एवं जहेव भवसिद्धियसयं भणियं नवरं नव उद्देसगा चरिमअचरिमउद्देसगवज्जा सेसं तहेव ॥ नवमं एगिंदियसयं समत्तं ॥ ९ ॥ एवं कण्हलेस्सअभवसिद्धियएगिंदियसयंपि ॥ दसमं एगिंदियसयं समत्तं ॥ १० ॥ नीललेस्सअभवसिद्धियएगिंदिएहिवि सयं ॥ ११ ॥ काउलेस्सअभवसिद्धियसयं एवं चत्तारिवि अभवसिद्धियसयाणि नव २ उद्देसगा भवंति एवं एयाणि बारस एगिंदियसयाणि भवंति ॥ ८४८ ॥ तेत्तीसइमं सयं समत्तं ॥

कइविहा णं भंते ! एगिंदिया प० ? गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया प० तं०—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया एवं एएणं चेव चउक्कएणं भेदेणं भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइया अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरच्छिमिल्ले चरिमंते समोहए समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चच्छिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एगसमइएण वा दुसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ प० तं०—उज्जुआयया सेढी एगओवंका दुहओवंका एगओखहा दुहओखहा चक्कवाला अद्धचक्कवाला ७ उज्जुआययाए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा दुहओवंकाए

प० ? गोयमा ! एव एएण अभिलावेण चउक्कभेदो जहेव ओहिए उद्देसए जाव वणस्सइकाइयत्ति, (अणतरोववन्नग) कण्हलेस्सअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? एव चेव एएण अभिलावेण जहेव ओहि (ओ अणतरोववण्णग) उद्देस(ओ)ए तहेव पन्नत्ताओ तहेव वंधति तहेव वेदेंति । सेव भते ! २ त्ति ॥ कइविहा ण भते ! अणतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पचविहा अणतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया एव एएण अभिलावेण तहेव दुपओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति, अणतरोववन्नगकण्हलेस्ससुहुमपुढविकाइयाण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? एव एएण अभिलावेणं जहा ओहिओ अणतरोववन्नगाण उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति । सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥ कइविहा ण भते ! परपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया प० ? गोयमा ! पचविहा परपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पन्नत्ता, तजहा–पुढविकाइया एव एएण अभिलावेण तहेव चउक्कओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति, परपरोववन्नगकण्हलेस्सअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ परंपरोववन्नगउद्देसओ तहेव जाव वेदेंति, एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिएगिंदियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससएवि भाणियव्वा जाव अचरिमचरिमकण्हलेस्सा एगिंदिया ॥ ८४७ ॥ विइय एगिंदियसयं समत्त ॥ २ ॥ जहा कण्हलेस्सेहिं भणिय एव नीललेस्सेहिवि सय भाणियव्व । सेव भंते ! २ त्ति ॥ तइयं एगिंदियसय समत्तं ॥ ३ ॥ एव काउलेस्सेहिवि सय भाणियव्व नवरं काउलेस्सेत्ति अभिलावो भाणियव्वो ॥ चउत्थ एगिंदियसय समत्त ॥ ४ ॥ कइविहा ण भंते ! भवसिद्धिया एगिंदिया प० ? गोयमा ! पचविहा भवसिद्धिया एगिंदिया प०, त०–पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति । भवसिद्धियअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? एव एएण अभिलावेण जहेव पढमिल्लग एगिंदियसय तहेव भवसिद्धियसयपि भाणियव्व, उद्देसगपरिवाडी तहेव जाव अचरिमोत्ति । सेव भते ! २ त्ति ॥ पचम एगिंदियसय समत्त ॥ ५ ॥ कइविहा ण भते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया प० ? गोयमा ! पचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया प०, त०–पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया, कण्हलेस्सभवसिद्धियपुढविकाइया ण भते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, त०–सुहुमपुढविकाइया य वायरपुढविकाइया य, कण्हलेस्सभवसिद्धियसुहुमपुढविकाइया ण भते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तजहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, एव वायरावि, एव एएण अभिलावेण तहेव चउक्कओ भेदो भाणि-

सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव उववज्जेज्जा। अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए ण भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरच्छिमिल्ले चरिमंते समोहए २ त्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चच्छिमिल्ले चरिमंते पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा? गोयमा! एगसमइएण वा दुसमइएण वा सेस त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव विग्गहेण उववज्जेज्जा, एवं अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइओ पुर(त्थि)च्छिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता पच्चच्छिमिल्ले चरिमंते बायरपुढविकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो, ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु ४, एव आउकाइएसुवि चत्तारि आलावगा सुहुमेहिं अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहिं बायरेहिं अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो ४, एव चेव सुहुमतेउकाइएहिवि अपज्जत्तएहिं १ ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो २, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए ण भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरच्छिमिल्ले चरिमंते समोहए समोहइत्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से ण भंते! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा? सेसं त चेव, एवं पज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववाएयव्वो ४, वाउकाइए(सु) सुहुमबायरेसु जहा आउकाइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो ४, एवं वणस्सइकाइएसुवि २०, पज्जत्तसुहुमपुढविकाइए ण भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एव पज्जत्तसुहुमपुढविकाइओवि पुरच्छिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता एएण चेव कमेण एएसु चेव वी(साए)ससु ठाणेसु उववाएयव्वो जाव बायरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसुवि ४०, एव अपज्जत्तबायरपुढविकाइओवि ६०, एव पज्जत्तबायरपुढविकाइओवि ८०, एव आउकाइओवि चउसुवि गमएसु पुरच्छिमिल्ले चरिमंते समोहए एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो १६०, सुहुमतेउकाइओवि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीससु ठाणेसु उववाएयव्वो, अपज्जत्तबायरतेउकाइए ण भंते! मणुस्सखेत्ते समोहए २ त्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चच्छिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से ण भंते! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा सेस तहेव जाव से तेणट्ठेण० एव पुढविकाइएसु चउव्विहेसुवि उववाएयव्वो, एव आउकाइएसु चउव्विहेसुवि, तेउकाइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एव चेव उववाएयव्वो, अपज्जत्तबायरतेउकाइए ण भंते! मणुस्सखेत्ते समोहए २ त्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए से ण भंते! कइसमइएणं० सेस त चेव, एव पज्जत्तबायरतेउकाइयत्ताएवि उववाएयव्वो, वाउकाइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढविकाइएसु तहेव चउक्कएणं भेदेणं

वाउक्काइएसु चउव्विहेसु वणस्सइकाइएसु चउव्विहेसु उववज्जति तेऽवि एव चेव दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववाएयव्वा, वायरतेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जति ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय-दुसमइयतिसमइयविग्गहा भाणियव्वा सेस जहा रयणप्पभाए तहेव निरवसेस, जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया एव जाव अहेसत्तमाए भाणियव्वा ॥ ८४९ ॥ अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए णं भते ! अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए २ त्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से ण भंते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए ण अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए २ त्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए एगपयरसि अणुसेढीए उववज्जित्तए से ण तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा जे भविए विसेढीए उववज्जित्तए से ण चउसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा, से तेणट्ठेण जाव उववज्जेज्जा, एव पज्जत्तसुहुम-पुढविकाइयत्ताएवि, एव जाव पज्जत्तसुहुमतेउकाइयत्ताए, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए ण भते ! अहोलोग जाव समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तवायरतेउकाइय त्ताए उववज्जित्तए से ण भंते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा, से केणट्ठेण० ? एव खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ प०, त०-उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला, एगओवं-काए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा से तेणट्ठेण०, एवं पज्जत्तएसुवि वायरतेउकाइएसुवि उववाएयव्वो, वाउक्काइयवणस्सइकाइयत्ताए चउक्कएण भेदेण जहा आउक्काइयत्ताए तहेव उववाएयव्वो २०, एव जहा अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयस्स गमओ भणिओ एव पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयस्सवि भाणियव्वो तहेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो ४०, अहोलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए समोहएत्ता एव वायरपुढविकाइयस्सवि अपज्जत्तगस्स पज्जत्तगस्स य भाणियव्व ८०, एव आउ-क्काइयस्स चउव्विहस्सवि भाणियव्वं १६०, सुहुमतेउक्काइयस्स दुविहस्सवि एव चेव २००, अपज्जत्तवायरतेउक्काइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए २ त्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से ण भंते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण

समोहओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो नवरं दुसमइयतिसमइयचउसमइय विग्गहो सेसं तहेव दाहिणिल्ले समोहओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्ठाणे तहेव एगसमइयदुसमइयतिसमइयचउसमइयविग्गहो पुरच्छिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले तहेव दुसमइयतिसमइयचउसमइयविग्गहो पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तहेव पुरच्छिमिल्ले जहा सट्ठाणे दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तहेव उत्तरिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहेव सट्ठाणे उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरच्छिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव नवरं एगसमइओ विग्गहो नत्थि उत्तरिल्ले समोहयाणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि सेसं तहेव जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव ॥ कहिं णं भंते ! बायरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु जहा ठाणपए जाव सुहुमवणस्सइकाइया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्ना प० समणाउसो ! ॥ अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ प० तं०—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं एवं चउक्कएणं भेएणं जहेव एगिंदियसएसु जाव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ॥ अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगावि अट्ठविहबंधगावि जहा एगिंदियसएसु जाव पज्जत्ता बायरवणस्सइकाइया । अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? गोयमा ! चउद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति तंजहा—नाणावरणिज्जं जहा एगिंदियसएसु जाव पुरिसवेयवज्झं एवं जाव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? जहा वक्कंतीए पुढविकाइयाणं उववाओ एगिंदियाणं भंते ! कइ समुग्घाया प० ? गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया प० तंजहा—वेयणासमुग्घाए जाव वेउव्वियसमुग्घाए ॥ एगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठिईया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति तुल्लट्ठिईया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति वेमायट्ठिईया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति वेमायट्ठिईया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठिईया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति अत्थेगइया तुल्लट्ठिईया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति अत्थेगइया वेमायट्ठिईया तुल्लविसेसाहियं कम्मं

पज्जत्तएसु य सुहुमवणस्सइकाइएसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य बारससुवि ठाणेसु एएणं चेव कमेण भाणियव्वो, सुहुमपुढविकाइओ (अ)पज्जत्तओ एव चेव निरवसेसो बारससुवि ठाणेसु उववाएयव्वो २४, एवं एएग गमएण जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव भाणियव्वो ॥ अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए ण भते! लोगस्स पुरच्छिमिल्ले चरिमते समोहए २ त्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइएसु उववज्जित्तए से ण भते! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा? गोयमा! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा, से केणट्ठेणं भते! एव वुच्चइ०? एव खलु गोयमा! मए सत्त सेढीओ पन्नत्ताओ, तजहा—उज्जुआयया जाव अद्धचक्कवाला, एगओवक्काए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा दुहओवक्काए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढी(ए)ओ उववज्जित्तए से ण तिसमइएग विग्गहेण उववज्जेज्जा जे भविए विसे(ढीओ)ढिं उववज्जित्तए से ण चउसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा से तेणट्ठेण गोयमा!०, एव एएण गमएण पुरच्छिमिल्ले चरिमते समोहए दाहिणिल्ले चरिमते उववाएयव्वो जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव, सव्वेसिं दुसमइओ तिसमइओ चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो। अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए णं भते! लोगस्स पुरच्छिमिल्ले चरिमते समोहए २ त्ता जे भविए लोगस्स पच्चच्छिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से ण भते! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा? गोयमा! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा, से केणट्ठेण०? एव जहेव पुरच्छिमिल्ले चरिमते समोहया पुरच्छिमिल्ले चेव चरिमते उववाइया तहेव पुरच्छिमिल्ले चरिमते समोहया पच्चच्छिमिल्ले चरिमते उववाएयव्वा सव्वे, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए णं भते! लोगस्स पुरच्छिमिल्ले चरिमते समोहए २ त्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से ण भंते! एवं जहा पुरच्छिमिल्ले चरिमंते समोहओ दाहिणिल्ले चरिमते उववाइओ तहा पुरच्छिमिल्ले चरिमते समोहओ उत्तरिल्ले चरिमते उववाएयव्वो, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए ण भंते! लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमते समोहए समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चेव चरिमते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं जहा पुरच्छिमिल्ले समोहओ पुरच्छिमिल्ले चेव उववाइओ तहेव दाहिणिल्ले समोहओ दाहिणिल्ले चेव उववाएयव्वो, तहेव निरवसेस जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु चेव पज्जत्तएसु दाहिणिल्ले चरिमते उववाइओ एवं दाहिणिल्ले

दुराग्रह नष्ट हो जाता है। इस प्रकार सस्थापकके जीवन चरित्रसे धर्मके निर्णय करनेमे बड़ी सुविधा होती है।

हाँ दुर्भाग्यसे धर्मसस्थापकोंके जीवन चरित्र शुद्ध रूपमें उपलब्ध नहीं होते। इसका एक कारण तो यही है कि पुराने समयमें लेखन प्रणाली बहुत प्रचलित न होनेसे वह सामग्री नष्ट हो गई है। दूसरा यह कि भक्त लोग धर्म-सस्थापकको मनुष्य नहीं रहने देते किन्तु देव या देवाधिदेव बना देते है और ऐसी अलौकिक कल्पनाएँ करते है कि जिनको सुनकर हँसी आये बिना नहीं रहती। परलोक कैसा है, देवगति कैसी है है कि नहीं, आदि प्रश्न आज तक ज्योंके त्यों खड़े हुए है और उस जमानेमें भी थे परन्तु भक्तोंकी दृष्टिमें देव तो घर घरमें रहते थे और आते थे। इन सब असंगत अविश्वसनीय तथा प्रमाण-विरुद्ध बातोंको दूर करके हमें महापुरुषोंके जीवनका अभ्यास करना चाहिये। इससे सिर्फ सत्यकी ही रक्षा नहीं होती किन्तु उनके पवित्र जीवनसे हम बहुत-सा वास्तविक लाभ उठाते हैं। नरसे नारायण बननेका मार्ग हमें दिखलाई देने लगता है।

म महावीर एक असाधारण महापुरुष थे। उनके त्याग और सेवाकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। परन्तु इससे हम उनके जीवनमें असंभव और असत्य घटनाएँ मिला दें तो हम उनका महत्त्व बढ़ानेकी अपेक्षा कम ही करेंगे। और उनके जीवनको विचारशील जनताके लिये अनुपयोगी और उपेक्षणीय बना देंगे।

म महावीरके कथनानुसार ही जगत्में कोई ईश्वर नहीं है। स्वय म महावीर एक दिन बहुत साधारण प्राणी थे। अनेक जन्मोंमें विकास करते करते वे महावीर हो गये। और जन्मसे तो वे एक

पकरेंति, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगइया तुल्लट्ठिईया जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! एगिंदिया चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा-अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा १, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा २, अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा ३, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा ४। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिईया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति १, तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिईया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति २, तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिईया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ३, तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं वेमायट्ठिईया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ४। से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ॥ सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८५० ॥ ३४-१-१ ॥ कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया प० ? गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया प०, तंजहा-पुढविकाइया दुयाभेदो जहा एगिंदियसएसु जाव बायरवणस्सइकाइया य, कहिं णं भंते ! अणंतरोववन्नगाणं बायरपुढविकाइयाणं ठाणा प० ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु, तं०-रयणप्पभाए जहा ठाणपए जाव दीवेसु समुद्देसु एत्थ णं अणंतरोववन्नगाणं बायरपुढविकाइयाणं ठाणा प०, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइया णं एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोए परियावन्ना प० समणाउसो !, एवं एएणं कमेणं सव्वे एगिंदिया भाणियव्वा, सट्ठा(णेण)णाई सव्वेसिं जहा ठाणपए तेसिं पज्जत्तगाणं बायराणं उववायसमुग्घायसट्ठाणाणि जहा तेसिं चेव अपज्जत्तगाणं, बायराणं सुहुमाणं सव्वेसिं जहा पुढविकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति । अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ एवं जहा एगिंदियसएसु अणंतरोववन्नगउद्देसए तहेव पन्नत्ताओ तहेव बंधंति तहेव वेदेंति जाव अणंतरोववन्नगा बायरवणस्सइकाइया । अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहेव ओहिए उद्देसओ भणिओ तहेव । अणंतरोववन्नगएगिंदियाणं भंते ! कइ समुग्घाया प० ? गोयमा ! दोन्नि समुग्घाया प०, तं०-वेयणासमुग्घाए य कसायसमुग्घाए य । अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठिईया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति पुच्छा तहेव, गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठिईया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति अत्थेगइया तुल्लट्ठिईया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, से केणट्ठेण भंते ! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? गोयमा ! अणंतरोववन्नगा एगिं-

सिया दुविहा प० तं०—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिईया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठिईया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति से तेणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ८५१ ॥ ३४-१-२ ॥ कइविहा णं भंते! परंपरोववन्नगा एगिंदिया प० ? गोयमा! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया प० तं०—पुढविकाइया भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति। परंपरोववन्नगअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरच्छिमिल्ले चरिमंते समोहए २ त्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव पच्चच्छिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ जाव लोयचरिमंतेत्ति। कहि णं भंते! परंपरोववन्नगपज्जत्तबायरपुढविकाइयाणं ठाणा प० ? गोयमा! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठिइत्ति। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ३४-१-३ ॥ एवं सेसावि अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमोत्ति, नवरं अणंतरा अणंतरसरिसा परंपरा परंपरसरिसा चरिमा य अचरिमा य एवं चेव एवं एए एक्कारस उद्देसगा ॥ ८५२ ॥ ३४-१-११ ॥ पढमं एगिंदियसेढीसयं समत्तं ॥ कइविहा णं भंते! कण्हलेस्सा एगिंदिया प० ? गोयमा! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया प० भेदो चउक्कओ जहा कण्हलेस्सएगिंदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति। कण्हलेस्सअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरच्छिमिल्ले एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसओ जाव लोयचरिमंतेत्ति सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु चेव उववाएयव्वो। कहि णं भंते! कण्हलेस्सअपज्जत्तबायरपुढविकाइयाणं ठाणा प० ? गोयमा! एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहि(य)उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति। सेवं भंते! २ त्ति ॥ एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥ ३४-२-११ ॥ बिइयं एगिंदियसेढिसयं समत्तं ॥ एवं नीललेस्सेहिवि तइयं सयं। काउलेस्सेहिवि सयं एवं चेव चउत्थं सयं। भवसिद्धियएगिंदिएहिवि सयं पंचमं समत्तं ॥ कइविहा णं भंते! कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिया प० ? एवं जहेव ओहिउद्देसओ। कइविहा णं भंते! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया प० ? जहेव अणंतरोववन्नगउद्देसओ ओहिओ तहेव ॥ कइविहा णं भंते! परंपरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धिया एगिंदिया प० ? गोयमा! पंचविहा परंपरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिया प० ओहिओ भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति। परंपरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धियअपज्जत्तसुहुमपुढविकाइए णं भंते! इमीसे रयणप्प-

भाए पुढवीए एवं एएण अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिमंतेत्ति, सव्वत्य कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो। कहिन्न भंते! परंपरोववन्नगकण्ह-लेस्सभवसिद्धियपज्जत्तवायरपुढविकाइयाण ठाणा प० एव एएणं अभिलावेण जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिईयत्ति, एव एएणं अभिलावेण कण्हलेस्सभवसिद्धिय-एगिंदिएहिवि तहेव एक्कारसउद्देसगसजुत्त सय, छट्ठ सय समत्त ॥ नीललेस्सभव-सिद्धियएगिंदिएसु सत्तम सय समत्त । एव काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहिवि सयं अट्ठम सय। जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि भणियाणि एव अभवसिद्धिएहिवि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि, नवरं चरिमअचरिमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा, सेस त चेव, एवं एयाइ वारस एगिंदियसेढीसयाइ भाणियव्वाइ। सेव भंते! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८५३ ॥ **एगिंदियसेढीसयाइं समत्ताइं ॥ एगिंदिय-सेढिसयं चउत्तीसइमं समत्तं ॥**

कइ ण भंते! महाजुम्मा पन्नत्ता? गोयमा! सोलस महाजुम्मा प०, त०-कडजुम्मकडजुम्मे १, कडजुम्मतेओगे २, कडजुम्मदावरजुम्मे ३, कडजुम्मकलिओगे ४, तेओगकडजुम्मे ५, तेओगतेओगे ६, तेओगदावरजुम्मे ७, तेओगकलिओगे ८, दावरजुम्मकडजुम्मे ९, दावरजुम्मतेओगे १०, दावरजुम्मदावरजुम्मे ११, दावर-जुम्मकलिओगे १२, कलिओगकडजुम्मे १३, कलिओगतेओगे १४, कलिओगदावर-जुम्मे १५, कलिओगकलिओगे १६। से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ सोलस महाजुम्मा प० त०-कडजुम्मकडजुम्मे जाव कलिओगकलिओगे? गोयमा! जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहार-समया तेऽवि कडजुम्मा सेत्त कडजुम्मकडजुम्मे १, जे ण रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा सेत्त कडजुम्मतेओगे २, जे णं रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा सेत्त कडजुम्मदावरजुम्मे ३, जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए जे ण तस्स रासिस्स अव-हारसमया कडजुम्मा सेत्त कडजुम्मकलिओगे ४, जे ण रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा सेत्त तेओगकडजुम्मे ५, जे ण रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा सेत्त तेओगतेओगे ६, जे ण रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा सेत्त तेओगदावरजुम्मे ७, जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे

कायजोगी, सागारोवउत्ता वा अणागारोवउत्ता वा, तेसि ण भते ! जीवाणं सरीरा कइवण्णा जहा उप्पलुद्देसए सव्वत्थ पुच्छा, गोयमा ! जहा उप्पलुद्देसए ऊसासगा वा नीसासगा वा नो उस्सासनीसासगा वा, आहारगा वा अणाहारगा वा, नो विरया अविरया नो विरयाविरया, सकिरिया नो अकिरिया, सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा, आहारसन्नोवउत्ता वा जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वा, कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा, नो इत्थिवेदगा नो पुरिसवेदगा नपुंसगवेदगा, इत्थिवेद-बंधगा वा पुरिसवेदबंधगा वा नपुंसगवेदबन्धगा वा, नो सन्नी असन्नी, सइंदिया नो अणिंदिया, ते ण भते ! कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण एक्क समयं उक्कोसेण अणत काल अणताओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ वणस्सइकाइयकालो, संवेहो न भण्णइ, आहारो जहा उप्पलुद्देसए नवर निव्वाघाएण छद्दिसिं वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पचदिसिं सेस तहेव, ठिई जहन्नेणं (एक्क समय) अतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइं, समुग्घाया आइल्ला चत्तारि, मारणंतियसमुग्घाएण समोहयावि मरति असमोहयावि मरति, उव्वट्टणा जहा उप्पलुद्देसए, अह भते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता कडजुम्म २-एगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा ? हता गोयमा ! असइं अदुवा अणतखुत्तो, कडजुम्मते-ओगएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव, ते ण भते ! जीवा एगसमए० पुच्छा, गोयमा ! एगूणवीसा वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस जहा कडजुम्मकडजुम्माण जाव अणंतखुत्तो, कडजुम्मदावरजुम्म-एगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव, ते ण भते ! जीवा एगसमएण पुच्छा, गोयमा ! अट्ठारस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति सेस तहेव जाव अणतखुत्तो, कडजुम्मकलिओगएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव परिमाण सत्तरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा सेस तहेव जाव अणतखुत्तो, तेओगकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव परिमाण बारस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति सेस तहेव जाव अणतखुत्तो, तेओगतेओगएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति०? उववाओ तहेव परिमाण पन्नरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा सेस तहेव जाव अणतखुत्तो, एव एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को गमओ नवरं परिमाणे नाणत्त तेओगदावरजुम्मेसु परिमाण चउद्दस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, तेओगकलिओगेसु तेरस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठ वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा

एगपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा सेत्तं तेओगकलिओगे ८ जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्मकडजुम्मे ९ जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्मतेओगे १० जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्मदावरजुम्मे ११ जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्मकलिओगे १२ जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओगकडजुम्मे १३ जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओगतेओगे १४ जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओगदावरजुम्मे १५ जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलिओगा सेत्तं कलिओगकलिओगे १६। से तेणट्ठेणं जाव कलिओगकलिओगे ॥८५७॥ कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति किं णेरइएहिंतो जहा उप्पलुद्देसए तहा उववाओ। ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति? गोयमा! सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, ते णं भंते! जीवा समए समए पुच्छा गोयमा! ते णं अणंता समए समए अवहीरमाणा २ अणंताहिं ओसप्पिणीउस्सप्पिणीहिं अवहीरंति णो चेव णं अवहिरिया सिया उच्चत्तं जहा उप्पलुद्देसए, ते णं भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा? गोयमा! बंधगा नो अबंधगा एवं सव्वेसिं आउयवज्जाणं आउयस्स बंधगा वा अबंधगा वा ते णं भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स वेदगा पुच्छा गोयमा! वेदगा नो अवेदगा एवं सव्वेसिं ते णं भंते! जीवा किं सायावेदगा असायावेदगा पुच्छा गोयमा! सायावेदगा वा असायावेदगा वा एवं ([illegible]) उप्पलुद्देसगपरिवाडी सव्वेसिं कम्माणं उदई नो अणुदई, छण्हं कम्माणं उदीरगा नो अणुदीरगा वेयणिज्जाउयाणं उदीरगा वा अणुदीरगा वा ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा पुच्छा गोयमा! कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा नो सम्मद्दिट्ठी नो सम्मामिच्छादिट्ठी मिच्छादिट्ठी नो णाणी अण्णाणी नियमं दुअण्णाणी तं [illegible]—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य नो मणजोगी नो वइजोगी

कायजोगी, सागारोवउत्ता वा अणागारोवउत्ता वा, तेसि णं भंते! जीवाणं सरीरा कइवण्णा जहा उप्पलुद्देसए सव्वत्थ पुच्छा, गोयमा! जहा उप्पलुद्देसए ऊसासगा वा नीसासगा वा नो उस्सासनीसासगा वा, आहारगा वा अणाहारगा वा, नो विरया अविरया नो विरयाविरया, सकिरिया नो अकिरिया, सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा, आहारसन्नोवउत्ता वा जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता वा, कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा, नो इत्थिवेदगा नो पुरिसवेदगा नपुंसगवेदगा, इत्थिवेद-बंधगा वा पुरिसवेदबंधगा वा नपुंसगवेदबन्धगा वा, नो सन्नी असन्नी, सइंदिया नो अणिंदिया, ते णं भंते! कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ वणस्सइकाइयकालो, संवेहो न भण्णइ, आहारो जहा उप्पलुद्देसए नवरं निव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं सेसं तहेव, ठिई जहन्नेणं (एक्कं समयं) अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं, समुग्घाया आइल्ला चत्तारि, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति, उव्वट्टणा जहा उप्पलुद्देसए, अह भंते! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता कडजुम्म २-एगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा? हंता गोयमा! असइं अदुवा अणंतखुत्तो, कडजुम्मते-ओगएगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? उववाओ तहेव, ते णं भंते! जीवा एगसमए० पुच्छा, गोयमा! एगूणवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं जहा कडजुम्मकडजुम्माणं जाव अणंतखुत्तो, कडजुम्मदावरजुम्म-एगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? उववाओ तहेव, ते णं भंते! जीवा एगसमएणं पुच्छा, गोयमा! अट्ठारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो, कडजुम्मकलिओगएगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? उववाओ तहेव परिमाणं सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो, तेओगकडजुम्मएगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? उववाओ तहेव परिमाणं बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो, तेओगतेओगएगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? उववाओ तहेव परिमाणं पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो, एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को गमओ नवरं परिमाणे नाणत्तं तेओगदावरजुम्मेसु परिमाणं चउद्दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, तेओगकलिओगेसु तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा

अणंता वा उववज्जंति रासीजुम्मतेओयएगिंदिएसु एक्कारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति रासीजुम्मदावरजुम्मेसु दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति रासीजुम्मकलिओगेसु नव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति कलिओगकडजुम्मेसु चत्तारि वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति कलिओगतेओगेसु सत्त वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति कलिओगदावरजुम्मेसु छ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति कलिओगकलिओगएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? उववाओ तहेव परिमाणं पंच वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ८५५ ॥ ३५-१-१ ॥

पढमसमयकडजुम्म २ एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? गोयमा ! तहेव एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बिइओवि भाणियव्वो तहेव सव्वं नवरं इमाणि दस णाणत्ताणि-ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं आउयकम्मस्स णो बंधगा अबंधगा आउयस्स णो उदीरगा अणुदीरगा णो उस्सासगा णो निस्सासगा णो उस्सासनिस्सासगा सत्तविहबंधगा णो अट्ठविहबंधगा। ते णं भंते ! पढमसमयकडजुम्म २-एगिंदियत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! एगं समयं एवं ठिईएवि समुग्घाया आइल्ला दोन्नि समोहया न पुच्छिज्जंति उव्वट्टणा न पुच्छिज्जइ, सेसं तहेव सव्वं निरवसेसं सोलससुवि गमएसु जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८५६ ॥ ३५-१-२ ॥

अपढमसमयकडजुम्म २ एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एसो जहा पढमुद्देसो सोलसहिवि जुम्मेसु तहेव णेयव्वो जाव कलिओग-कलिओगत्ताए जाव अणंतखुत्तो। सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ३५-१-३ ॥

चरिमसमयकडजुम्म २ एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं जहेव पढमसमयउद्देसओ नवरं देवा न उववज्जंति तेउलेस्सा न पुच्छिज्जंति सेसं तहेव। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ३५-१-४ ॥

अचरिमसमयकडजुम्म २ एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा (अ)पढमसमयउद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ! सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ३५-१-५ ॥

पढमपढमसमयकडजुम्म २ एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं। सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ३५-१-६ ॥

पढमअपढमसमयकडजुम्म २ एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव भाणियव्वो। सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ३५-१-७ ॥

पढमचरिमसमयकडजुम्म २ एगिंदिया णं भंते ! कओ

उववज्जति०? जहा चरिमुद्देसओ तहेव निरवसेस । सेव भते ! २ त्ति ॥३५-१-८॥ पढमअचरिमसमयकडजुम्म २ एगिंदिया णं भते ! कओ उववज्जति०? जहा (पढमुद्देसओ) बीओ उद्देसओ तहेव निरवसेस । सेव भते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥३५-१-९॥ चरिम२समयकडजुम्म २ एगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति०? जहा चउत्थो उद्देसओ तहेव । सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥३५-१-१०॥ चरिमअचरिम-समयकडजुम्म२एगिंदिया णं भते ! कओ उववज्जति०? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेस । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ३५-१-११ ॥ एव एएण कमेण एक्कारस उद्देसगा, पढमो तइओ पचमओ य सरिसगमगा सेसा अट्ठ सरिसगमगा, नवरं चउत्थे छट्ठे अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जति तेउलेस्सा नत्थि ॥ ८५७ ॥ पणतीसइमे सए पढम एगिंदियमहाजुम्मसय समत्तं ॥ १ ॥

कण्हलेस्सकडजुम्म २ एगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति०? गोयमा ! उववाओ तहेव एवं जहा ओहियउद्देसए नवरं इम नाणत्त ते ण भते ! जीवा कण्हलेस्सा? हता कण्हलेस्सा, ते ण भते ! कण्हलेस्सकडजुम्म २ एगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा ! जहन्नेण एक्क समय उक्कोसेण अतोमुहुत्तं, एव ठिईएवि, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो, एव सोलसवि जुम्मा भाणियव्वा । सेव भते ! २ त्ति ॥३५-२-१॥ पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्म २ एगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति०? जहा पढम-समयउद्देसओ नवरं ते ण भते ! जीवा कण्हलेस्सा? हता कण्हलेस्सा, सेस तहेव । सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥ ३५-२-२ ॥ एव जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहा कण्हलेस्ससएवि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा, पढमो तइओ पचमो य सरिसगमगा सेसा अट्ठवि सरिसगमगा नवरं चउत्थछट्ठअट्ठमदसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स । सेव भते ! २ त्ति ॥ ३५ इमे सए बिइय एगिंदियमहाजुम्मसय समत्त ॥२॥ एव नीललेस्सेहिवि सय कण्हलेस्ससयसरिस एक्कारस उद्देसगा तहेव । सेव भते ! २ त्ति ॥ तइय एगिंदियमहाजुम्मसय समत्त ॥३॥ एव काउलेस्सेहिवि सय कण्हलेस्ससयसरिसं । सेव भते ! २ त्ति ॥ चउत्थ एगिंदियमहाजुम्मसयं ॥४॥ भवसि-द्धियकडजुम्म २ एगिंदिया णं भते ! कओ उववज्जति०? जहा ओहियसय तहेव नवरं एक्कारससुवि उद्देसएसु, अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता भवसिद्धियकडजुम्म२-एगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सेसं तहेव । सेव भते ! २ त्ति ॥ पचम एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्त ॥ ५ ॥ कण्हलेस्सभवसिद्धियकडजुम्म२-एगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति०? एवं कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहिवि सयं बिइयसयकण्हलेस्ससरिस भाणियव्वं । सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥ छट्ठ

साधारण राजकुमार थे। ब्यालीस वर्षके उनके त्याग और तपने उन्हें एक महान् तीर्थंकर बना दिया। उनका महत्त्व त्याग और तपमें है, बाहिरी वैभवमें नहीं।

जैनधर्मके अनुसार किसी मनुष्यके बाह्य वैभवोंसे उसका महत्त्व नहीं मालूम होता। किसी मनुष्यकी देवता, इन्द्र, राजा आदि पूजा करें, वह सुन्दर हो, शरीरसे बलवान् हो, इत्यादि चिह्न उसके महत्त्वके चिह्न नहीं हैं, क्योंकि इनके बिना भी कोई महात्मा हो सकता है और इनके रहने पर भी किसीमें महात्मापनका एक अंश भी न हो, यह भी हो सकता है। इसलिये बाह्यातिशयरूप भक्त-कल्प्य घटनाओंको महत्त्व देनेकी हमें जरूरत नहीं है। आचार्य समन्तभद्रने इस विषयमें बहुत ही अच्छा कहा है—

"देवताओंका आगमन, आकाशमें चलना आदि विभूतियाँ माया-वियोंमें भी देखी जाती हैं, इसलिये आप हमारे लिये महान् नहीं हो सकता। यदि कहा जाय कि आपके शरीरमेंसे पसीना नहीं निकलता तथा सुगंधित जलकी वृष्टि होती है, ये अतिशय दूसरोंमें नहीं पाये जाते तो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि ये बातें भी देव जातिके प्राणियोंमें पाई जाती हैं जो राग, द्वेष आदि विकारोंसे मलिन हैं[1]।"

१—देवागमनभोयानचामरादिविभूतयः।
मायाविष्वपि दृश्यन्ते नातस्त्वमसि नो महान् ॥ १ ॥
अध्यात्मं बहिरप्येष विग्रहादिमहोदयः।
दिव्यः सत्यो दिवौकस्स्वप्यस्ति रागादिमत्सु सः ॥ २ ॥

—आप्तमीमांसा।

(वा नोमासगा वा) आहारगा य जहा एगिंदियाणं विरया य अविरया य विरयाविरया य सकिरिया नो अकिरिया। ते णं भंते! जीवा किं सत्तविहबंधगा अट्ठविहबंधगा(छ) छव्विहबंधगा एगविहबंधगा? गोयमा! सत्तविहबंधगा वा जाव एगविहबंधगा वा। ते णं भंते! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता नोसन्नोवउत्ता? गोयमा! आहारसन्नोवउत्ता वा जाव नोसन्नोवउत्ता वा सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा कोहकसाई वा जाव लोभकसाई वा अकसाई वा इत्थीवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा अवेदगा वा इत्थीवेदबंधगा वा पुरिसवेदबंधगा वा नपुंसगवेदबंधगा वा अबंधगा वा सन्नी नो असन्नी सइंदिया नो अणिंदिया संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं आहारो तहेव जाव नियमं छद्दिसिं ठिई जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, छ समुग्घाया आइल्लगा मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति उव्वट्टणा जहेव उववाओ न कत्थइ पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति अह भंते! सव्वपाणा जाव अणंतखुत्तो एवं सोलससुवि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणंतखुत्तो नवरं परिमाणं जहा बेइंदियाणं सेसं तहेव। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ४०-१-१ ॥ पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जन्ति? उववाओ परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमोद्देसए ओगाहणा बंधो वेदो वेयणा उदई उदीरगा य जहा बेइंदियाणं पढमसमइयाणं तहेव कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा सेसं जहा बेइंदियाणं पढमसमइयाणं जाव अणंतखुत्तो नवरं इत्थिवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा सन्निणो असन्निणो सेसं तहेव एवं सोलससुवि जुम्मेसु परिमाणं तहेव सव्वं। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ४ -१-२ ॥ एवं एत्थवि एक्कारस उद्देसगा तहेव पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमगा सेसा अट्ठवि सरिसगमगा चउत्थछट्ठअट्ठमदसमेसु नत्थि विसेसो (कोइवि) भाणियव्वो। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ६१ ॥ चत्तालीसइमे सए पढमं सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं ॥ १ ॥

कण्हलेस्सकडजुम्म २ सन्निपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति? तहेव जहा पढमुद्देसओ सन्नीणं नवरं बंधो वेओ उदई उदीरणा लेस्सा बंधगसन्ना कसायवेदबंधगा य एयाणि जहा बेइंदियाणं कण्हलेस्साणं वेदो तिविहो अवेदगा नत्थि संचिट्ठणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं एवं ठिईवि नवरं ठिईए अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं न भण्णंति सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससुवि जुम्मेसु। सेवं भंते! १ त्ति ॥ पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसन्निपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जन्ति? जहा

इणट्ठे समट्ठे, सेस तहेव ओहियसयाणि चत्तारि । सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ छत्तीसइमे सए अट्ठम सय समत्त ॥ ८ ॥ जहा भवसिद्धियसयाणि चत्तारि एव अभवसिद्धियसयाणि चत्तारि भाणियव्वाणि नवरं सम्मत्तनाणाणि (सव्वहा) नत्थि, सेस त चेव, एव एयाणि वारस वेइंदियमहाजुम्मसयाणि भवति । सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥ ८५९ ॥ वेइदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥ १२ ॥ **छत्तीसइम सयं समत्तं** ॥

कडजुम्म२तेइंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एव तेइदिएसुवि वारस सया कायव्वा वेइदियसयसरिसा नवरं ओगाहणा जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेण तिन्नि गाउयाइं, ठिई जहन्नेणं एक्क समय उक्कोसेण एगूणपन्न राइदियाइ सेस तहेव । सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥ ८६० ॥ तेइदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥ १२ ॥ **सत्ततीसइमं सयं समत्तं** ॥

चउरिंदिएहिवि एव चेव वारस सया कायव्वा नवर ओगाहणा जहन्नेणं अगुलस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइ, ठिई जहन्नेणं एक्क समय उक्कोसेणं छम्मासा सेस जहा वेइदियाण । सेव भते ! २ त्ति ॥ ८६१ ॥ चउरिंदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥ १२ ॥ **अट्ठतीसइम सयं समत्तं** ॥

कडजुम्म२असन्निपर्चिदिया ण भते ! कओ उववज्जति०? जहा वेइन्दियाण तहेव असण्णिसुवि वारस सया कायव्वा नवरं ओगाहणा जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेण जोयणसहस्स सचिट्ठणा जहन्नेणं एक्क समयं उक्कोसेण पुव्वकोडिपुहुत्त ठिई जहन्नेण एक्क समय उक्कोसेण पुव्वकोडी सेस जहा वेइंदियाण । सेव भते ! २ त्ति ॥ ८६२ ॥ असण्णिपर्चिदियमहाजुम्मसया समत्ता ॥ १२ ॥ **एगूणयालीसइमं सय समत्तं** ॥ कडजुम्म२सन्निपर्चिदिया ण भंते ! कओ उववज्जन्ति० ? उववाओ चउसुवि गईसु, सखेज्जवासाउयअसखेज्जवासाउयपज्जत्तअपज्जत्तएसु य न कओवि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति, परिमाण अवहारो ओगाहणा य जहा असन्निपर्चिदियाण, वेयणिज्जवज्जाण सत्तण्ह कम्मपगडीण वधगा वा अवधगा वा, वेयणिज्जस्स वधगा नो अवधगा, मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा सेसाण सत्तण्हवि वेदगा नो अवेदगा, सायावेदगा वा असायावेदगा वा, मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा सेसाण सत्तण्हवि उदई नो अणुदई, नामस्स गोयस्स य उदीरगा नो अणुदीरगा सेसाण छण्हवि उदीरगा वा अणुदीरगा वा, कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा, सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा, णाणी वा अन्नाणी वा, मणजोगी(वा) वइजोगी कायजोगी, उवओगो वन्नमाई उस्सासगा

कण्हलेस्सा वा णो सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी णो सम्मामिच्छादिट्ठी णो नाणी अन्नाणी एवं जहा कण्हलेस्ससए णवरं णो विरया अविरया णो विरयाविरया संचिट्ठणा ठिई य जहा ओहियउद्देसए समुग्घाया आइल्लगा पंच उव्वट्टणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जं सव्वपाणा णो इणट्ठे समट्ठे सेसं जहा कण्हलेस्ससए जाव अणंतखुत्तो एवं सोलससुवि जुम्मेसु। सेवं भंते! २ त्ति ॥ पढमसमयअभवसिद्धियकडजुम्म २ सन्निपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति ? जहा सन्नीणं पढमसमयउद्देसए तहेव णवरं सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं णाणं च सव्वत्थ णत्थि सेसं तहेव। सेवं भंते! २ त्ति ॥ एवं एत्थवि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा पढमतइयपंचमा एक्कगमा सेसा अट्ठवि एक्कगमा। सेवं भंते! त्ति ॥ पढमं अभवसिद्धियमहाजुम्मसयं समत्तं ॥ चत्तालीसइमे सए पन्नरसमं सयं समत्तं ॥ १५ ॥ कण्हलेस्सअभवसिद्धियकडजुम्मर सन्निपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति ? जहा एएसिं चेव ओहियसयं तहा कण्हलेस्ससयंपि णवरं ते णं भंते! जीवा कण्हलेस्सा ? हंता कण्हलेस्सा ठिई संचिट्ठणा य जहा कण्हलेस्ससए सेसं तं चेव। सेवं भंते! २ त्ति ॥ बिइयं अभवसिद्धियमहाजुम्मसयं ॥ चत्तालीसइमे सए सोलसमं सयं समत्तं ॥ १६ ॥ एवं छहिवि लेस्साहिं छ सया कायव्वा जहा कण्हलेस्ससयं णवरं संचिट्ठणा ठिई य जहेव ओहियसए तहेव भाणियव्वा णवरं सुक्कलेस्साए उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, ठिई एवं चेव णवरं अंतोमुहुत्तं नत्थि जहन्नगं तहेव सव्वत्थ सम्मत्तनाणाणि नत्थि विरई विरयाविरई अणुत्तरविमाणोववत्ति एयाणि नत्थि सव्वपाणा० णो इणट्ठे समट्ठे। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥ एवं एयाणि सत्त अभवसिद्धियमहाजुम्मसयाणि भवन्ति। सेवं भंते! २ त्ति ॥ एवं एयाणि एक्कवीसं सन्निमहाजुम्मसयाणि। सव्वाणिवि एक्कासीइमहाजुम्मसया समत्ता ॥ ८६४ ॥ चत्तालीसइमं सयं समत्तं ॥

कइ णं भंते! रासीजुम्मा पन्नत्ता ? गोयमा! चत्तारि रासीजुम्मा पन्नत्ता तंजहा—कडजुम्मे जाव कलिओगे। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ चत्तारि रासीजुम्मा पन्नत्ता तंजहा—कडजुम्मे जाव कलिओगे ? गोयमा! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं रासीजुम्मकडजुम्मे एवं जाव जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं रासीजुम्मकलिओगे से तेणट्ठेणं जाव कलिओगे। रासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ? उववाओ जहा वक्कंतीए, ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जन्ति ? गोयमा! चत्तारि वा अट्ठ वा

सन्निपर्चिदियपढमसमयउद्देसए तहेव निरवसेसं नवरं ते ण भंते ! जीवा कण्ह० लेस्सा ? हंता कण्हलेस्सा सेस तहेव, एव सोलसमुवि जुम्मेसु । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ एवं एएवि एक्कारस उद्देसगा कण्हलेस्सासए, पढमतइयपंचमा सरिसगमगा सेसा अट्ठवि एक्क(सरिस)गमगा । सेव भंते ! २ त्ति ॥ विइय सयं समत्त ॥ २ ॥ एव नीललेस्सेसुवि सय, नवरं सचिट्ठणा जहन्नेण एक्कं समय उक्कोसेण दस सागरोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जइभागमब्भहियाइं, एवं ठिईएवि, एव तिसु उद्देसएसु, सेस तहेव । सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥ तइय सयं समत्त ॥ ३ ॥ एव काउलेस्ससयपि, नवरं सचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेण तिन्नि सागरोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जइभागमब्भहियाई, एव ठिईएवि, एव तिसुवि उद्देसएसु, सेस तहेव । सेवं भते ! २ त्ति ॥ चउत्थं सय ॥ ४ ॥ एव तेउलेस्सेसुवि सय, नवरं संचिट्ठणा जहण्णेण एगं समय उक्कोसेण दो सागरोवमाई पलिओवमस्स असखेज्जइभागमब्भहियाइ एव ठिईएवि नवरं नोसन्नोवउत्ता वा, एव तिसुवि(गमएसु) उद्देसएसु सेसं त चेव । सेव भंते ! २ त्ति ॥ पंचम सयं ॥ ५ ॥ जहा तेउलेस्सासय तहा पम्हलेस्सासयपि नवरं सचिट्ठणा जहन्नेण एक्कं समय उक्कोसेण दस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, एव ठिईएवि, नवरं अतोमुहुत्त न भण्णइ सेस तहेव, एव एएसु पंचसु सएसु जहा कण्हलेस्सासए गमओ तहा नेयव्वो जाव अणतखुत्तो । सेव भते ! २ त्ति ॥ छट्ठ सयं समत्त ॥ ६ ॥ सुक्कलेस्ससय जहा ओहियसय नवरं सचिट्ठणा ठिई य जहा कण्हलेस्ससए सेस तहेव जाव अणंतखुत्तो । सेव भते ! २ त्ति ॥ सत्तम सय समत्त ॥ ७ ॥ भवसिद्धियकडजुम्म २ सन्निपचिंदिया ण भते ! कओ उववज्जन्ति० ? जहा पढम सन्निसय तहा णेयव्व भवसिद्धियाभिलावेणं नवर सव्वपाणा० ? णो इणट्ठे समट्ठे, सेस त चेव, सेव भते ! २ त्ति ॥ अट्ठम सयं समत्त ॥ ८ ॥ कण्हलेस्सभवसिद्धियकडजुम्म २ सन्निपंचिंदिया ण भते ! कओ उववज्जन्ति० ? एव एएण अभिलावेण जहा ओहियकण्हलेस्ससयं । सेवं भते ! २ त्ति ॥ नवम सयं ॥ ९ ॥ एव नीललेस्सभवसिद्धिएवि सयं । सेव भंते ! २ त्ति ॥ दसम सयं ॥ १० ॥ एव जहा ओहियाणि सन्निपचिंदियाण सत्त सयाणि भणियाणि एव भवसिद्धिएहिवि सत्त सयाणि कायव्वाणि, नवरं सत्तसुवि सएसु सव्वपाणा जाव णो इणट्ठे समट्ठे, सेस तं चेव । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ भवसिद्धियसया समत्ता ॥ चउद्दसम सय समत्त ॥ १४ ॥ अभवसिद्धियकडजुम्म २ सन्निपचिंदिया णं भते ! कओ उववज्जन्ति० ? उववाओ तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो परिमाण अव(आ)हारो उच्चत्त बधो वेदो वेदण उदओ उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससए कण्हलेस्सा वा जाव

बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, ते णं भंते ! जीवा किं संतरं उववज्जन्ति निरंतरं उववज्जन्ति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जन्ति निरंतरंपि उववज्जंति, संतरं उववज्जमाणा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अंतरं कट्टु उववज्जन्ति, निरंतरं उववज्जमाणा जहन्नेणं दो समया उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अणुसमयं अविरहियं निरंतरं उववज्जन्ति, ते णं भंते ! जीवा जंसमयं कडजुम्मा तंसमयं तेओगा जंसमयं तेओगा तंसमयं कडजुम्मा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जंसमयं कडजुम्मा तंसमयं दावरजुम्मा जंसमयं दावरजुम्मा तंसमयं कडजुम्मा ? नो इणट्ठे समट्ठे, जंसमयं कडजुम्मा तंसमयं कलिओगा जंसमयं कलिओगा तंसमयं कडजुम्मा ? णो इणट्ठे समट्ठे। ते णं भंते ! जीवा कहं उववज्जन्ति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे एवं जहा उववायसए जाव नो परप्पओगेणं उववज्जन्ति। ते णं भंते ! जीवा किं आयजसेणं उववज्जन्ति आयअजसेणं उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्जंति आयअजसेणं उववज्जन्ति, जइ आयअजसेणं उववज्जन्ति किं आयजसं उवजीवंति आयअजसं उवजीवंति ? गोयमा ! नो आयजसं उवजीवंति आयअजसं उवजीवंति, जइ आयअजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा ? गोयमा ! सलेस्सा नो अलेस्सा, जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया नो अकिरिया, जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? णो इणट्ठे समट्ठे। रासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जन्ति० ? जहेव नेरइया तहेव निरवसेसं एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नवरं वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति सेसं तं चेव, मणुस्सावि एवं चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जन्ति आयअजसेणं उववज्जंति, जइ आयअजसेणं उववज्जन्ति किं आयजसं उवजीवंति आयअजसं उवजीवंति ? गोयमा ! आयजसंपि उवजीवंति आयअजसंपि उवजीवंति, जइ आयजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा ? गोयमा ! सलेस्सावि अलेस्सावि, जइ अलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! नो सकिरिया अकिरिया, जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? हंता सिज्झंति जाव अंतं करेन्ति, जइ सलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! सकिरिया नो अकिरिया, जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेन्ति ? गोयमा ! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेन्ति अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव अंतं करेन्ति, जइ आयअजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा ? गोयमा ! सलेस्सा नो अलेस्सा, जइ सलेस्सा

सेवं भंते ! त्ति ॥ ४१।१२ ॥ काउलेस्सेहिवि एव चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा नवरं नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए, सेस त चेव । सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥ ४१।१६ ॥ तेउलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भते ! कओ उववजन्ति० ? एव चेव नवर जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्व, एव एएवि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा । सेव भते ! २ त्ति ॥ ४१।२० ॥ एव पम्हलेस्साएवि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा पचिंदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साणं वेमाणियाण य एएसिं पम्हलेस्सा सेसाण नत्थि । सेव भते ! २ त्ति ॥ ४१।२४ ॥ जहा पम्हलेस्साए एव सुक्कलेस्साएवि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा नवर मणुस्साण गमओ जहा ओहियउद्देसएसु सेस तं चेव, एव एए छसु लेस्सासु चउव्वीस उद्देसगा ओहिया चत्तारि, सव्वेते अट्ठावीस उद्देसगा भवति । सेव भते ! २ त्ति ॥४१।२८॥ भवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववजति० ? जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं एए चत्तारि उद्देसगा । सेव भते ! २ त्ति ॥ ४१।३२ ॥ कण्हलेस्सभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववजति० ? जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवति तहा इमेवि भवसिद्धियकण्हलेस्सेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥ ४१।३६ ॥ एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहिवि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥४१।४०॥ एव काउलेस्सेहिवि चत्तारि उद्देसगा ॥४१।४४॥ तेउलेस्सेहिवि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा ॥ ४१।४८ ॥ पम्हलेस्सेहिवि चत्तारि उद्देसगा ॥ ४१।५२ ॥ सुक्कलेस्सेहिवि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा, एवं एएवि भवसिद्धिएहिवि अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति । सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥ ४१।५६ ॥ अभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जन्ति० ? जहा पढमो उद्देसओ नवरं मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा, सेस तहेव । सेवं भते ! २ त्ति । एवं चउसुवि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा । कण्हलेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव चत्तारि उद्देसगा, एव नीललेस्सअभवसिद्धिएहिवि चत्तारि उद्देसगा एव काउलेस्सेहिवि चत्तारि उद्देसगा एव तेउलेस्सेहिवि चत्तारि उद्देसगा पम्हलेस्सेहिवि चत्तारि उद्देसगा सुक्कलेस्सअभवसिद्धिएहिवि चत्तारि उद्देसगा, एव एएसु अट्ठावीसाएवि अभवसिद्धियउद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेण नेयव्वा । सेव भते ! २ त्ति । एव एएवि अट्ठावीसं उद्देसगा ॥ ४१।८४ ॥ सम्मद्दिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एव जहा पढमो उद्देसओ एव चउसुवि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ कण्हलेस्ससम्मद्दिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ

वीसइम सय दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा, पंचवीसइम दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा, बधिसयाइ अट्ठसयाइ एगेण दिवसेण सेढिसयाइं बारस एगेणं एगिंदियमहाजुम्मसयाइ बारस एगेण एव बेइंदियाण बारस तेइंदियाण बारस चउरिंदियाणं बारम एगेण असन्निपर्चिदियाण बारस सन्निपंचिंदियमहाजुम्मसयाइ एक्कवीस एगदिवसेण उद्दिसिज्जन्ति रासीजुम्मसय एगदिवसेण उद्दिसिज्जइ ॥ **गाहाओ** वियसियअरविंदकरा नासियतिमिरा सुयाहि(वा)या देवी । मज्झपि देउ मेह बुहविबुहणमसिया णिच्च ॥ १ ॥ सुयदेवयाए पणमिमो जीए पसाएण सिक्खिय नाण । अण्णं पवयणदे(विं)वी सतिक्(रिं)री त (इ)नमसामि ॥ २ ॥ सुयदेवया य जक्खो कुंभधरो वंभसति वेरोट्टा । विज्जा य अतहुडी देउ अविग्घ लिहतस्स ॥ ३ ॥ ८६७ ॥

सिरिविवाहपन्नत्ती समत्ता, पंचमं अग समत्तं ॥

आचार्य विद्यानन्दने इस विषयका और भी अधिक स्पष्टीकरण किया है। वे लिखते हैं—

भगवानके समान वे विभूतियाँ मस्करी आदि मायावियोंमें भी देखी जाती हैं इसलिये हे भगवन्! आप हम सरीखे परीक्षा-प्रधानियों (समझपूर्वक जैनधर्मको माननेवालों) के पूज्य नहीं हो सकते। आज्ञा-प्रधानी लोग भले ही इन विभूतियोंसे परमात्माको सिद्ध समझें, परन्तु हम ऐसा नहीं समझ सकते क्योंकि ऐसी विभूतियाँ मायावियोंमें भी देखी जाती हैं। जो लोग ऐसा कहते हैं कि 'भगवान् पूज्य हैं क्योंकि उनके पास देवागम आदि विभूतियाँ हैं' उनका कहना ठीक नहीं है क्योंकि उनका हेतु आगमाश्रय होनेसे असिद्ध हेत्वाभास है। (अर्थात् भगवानकी ये विभूतियाँ प्रत्यक्ष-अनुमान-प्रमाणोंसे सिद्ध नहीं हैं।) जो लोग इन विभूतियोंपर विश्वास करते हैं उनकी दृष्टिमें भी यह हेतु (विभूतिमत्त्व) अनैकान्तिक न होनेसे ठीक नहीं है।"

इससे मालूम होता है कि भक्त लोगोंने जो १४ अतिशय माने हैं उन्हें ये दोनों ही प्रथम श्रेणीके आचार्य बिलकुल साधारण अनावश्यक और असिद्ध मानते हैं। बल्कि जो लोग इन अतिशयोंमें विश्वास करते हैं उन्हें ये आज्ञाप्रधानी कहकर हीनदृष्टि देखते हुए

१—तत्र समस्तैव मायाविष्वपि मस्करिप्रभृतिषु दृश्यन्त इति ततस्तया स्तु-त्यास्माकं परीक्षा-प्रधानानां स्तुत्योऽसि। आज्ञाप्रधाना हि त्रिदशागमादिकं परमे-ष्ठिनः परमात्मचिह्नं प्रतिपद्येरन् नास्मदादयस्तादृशा मायाविष्वपि भावात्। भवेदागमाश्रयं प्रत्ययं भगवान् स्तुत्यो महान् देवागमनभोयानचामरादिविभूति-मत्त्वान्यथानुपपत्तेः इति देवागमाद्यसिद्धत्वात्। तस्य च प्रतिवादिनः प्रमाणत्वेना-सिद्धेः तदागमप्रामाण्यवादिनाम् अपि विपक्षवृत्तितया गमकत्वायोगात्।

—अष्टसहस्री।

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्त-महावीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं

॥ नायाधम्मकहाओ ॥

तेण कालेणं तेणं समएण चपा नाम नयरी होत्था। वण्णओ ॥ १ ॥ तीसे णं चपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए (एत्थ ण) पुण्णभद्दे नामं उज्जाणे होत्था। वण्णओ ॥ २ ॥ तत्थ ण चपाए नयरीए कोणिए नाम राया होत्था। वण्णओ ॥ ३ ॥ तेण कालेण तेणं समएग समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्जसुहम्मे नाम थेरे जाइसपन्ने कुलसपन्ने बलरूवविणयनाणदसणचरित्तलाघवसंपन्ने ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जिइदिए जियनिद्दे जियपरीसहे जीवियासामरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे एवं करणचरण-निग्गहनिच्छयअज्जवमद्दवलाघवखंतिगुत्तिमुत्तिविज्जामतबभ(चेर)वयनयनियमसच्च-सोयनाणदसणचारित्तप्पहाणे उ(ओ)राले घोरे घोरव्वए घोरतवस्सी घोरबभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्तविउलते(य)उलेसे चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारस-एहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे उज्जाणे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडि रूवं उग्गह ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ४ ॥ तए ण चपाए नयरीए परिसा निग्गया। कोणिओ निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। तेण कालेण तेण समएणं अज्ज-सुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अतेवासी अज्जजबू नाम अणगारे कासवगोत्तेग सत्तु-स्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। तए ण से अज्जजबूनामे जायसड्ढे जाय ससए जायकोउहल्ले सजायसड्ढे संजायससए सजायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नससए उप्पन्नकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे समुप्पन्नससए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठाए उट्ठित्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणामेव उवागच्छइ २त्ता अज्जसुहम्मे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ २ त्ता वदइ नमसइ वंदित्ता नमसित्ता अज्जसुहम्मस्स थेरस्स

णयासन्ने णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासमाणे एवं वयासी- जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थयरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिस(वरपुंडरीएणं)वरगंधेणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगुत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं बोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं वियट्टछउमेणं जिणेणं जा(ण)एणं तिण्णेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तियं सासयं ठाणमुवगएणं पंचमस्स अंगस्स अयमट्ठे पन्नत्ते छट्ठस्स णं अंगस्स भंते! णायाधम्मकहाणं के अट्ठे पन्नत्ते? जंबु त्ति अज्जसुहम्मे थेरे अज्जजंबूणामं अणगारं एवं वयासी एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तंजहा- णायाणि य धम्मकहाओ य। जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तंजहा- णायाणि य धम्मकहाओ य पढमस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा- उक्खित्तणाए संघाडे अंडे कुम्मे य सेलगे। तुंबे य रोहिणी मल्ली मायंदी चंदिमाइ य ॥ १ ॥ दावद्दवे उदगणाए मंडुक्के तेयली वि य। नंदीफले अवरकंका आइण्णे सुंसुमाइ य ॥ २ ॥ अवरे य पुंडरीए णामए एगूणवीसमे ॥ ३ ॥ जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा- उक्खित्तणाए जाव पुंडरीए (त्ति) य पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे णामं णयरे होत्था। वण्णओ। गुणसिलए चेइए। वण्णओ। तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए णामं राया होत्था। महया हिमवंत० वण्णओ। तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा णामं देवी होत्था सुकुमालपाणिपाया वण्णओ ॥ ४ ॥ तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए णामं कुमारे होत्था अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे जाव सुरूवे सामदंडभेयउवप्पयाणणीइसुप्पउत्तणयविहिन्नू ईहावूहमग्गणगवेसणअत्थसत्थमइविसारए उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेए सेणियस्स रन्नो बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए सव्वकज्जेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए

विसयाचियारे रज्जधुरचिंतए यावि होत्था । सेणियस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव समु(व)पेक्खमाणे २ विहरइ ॥७॥ तस्स णं सेणियस्स रन्नो धारिणी नामं देवी होत्था जाव सेणियस्स रन्नो इट्ठा जाव विहरइ ॥ ८ ॥ तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि छक्कट्ठगलट्ठमट्ठसंठियखंभुग्गयपवरवरसालभंजियउज्जलमणिकणगरयणथूभियविडंक-जालद्धचंदनिज्जूहंतरकणयालिचंदसालियाविभत्तिकलिए सरसच्छधाऊवलवण्णरइए बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे अब्भिंतरओ पसत्तसुविलिहियचित्तकम्मे नाणाविह-पंचवण्णमणिरयणकोट्टिमतले पउमलयाफुल्लवल्लिवरपुप्फजाइउल्लोयचित्तियतले व(चं)-दणवरकणगकलस(सु)विणिम्मियपडिपुंजियसरसपउमसोहंतदारभाए पयरगलंब-ंतमणिमुत्तदामसुविरइयदारसोहे सुगंधवरकुसुममउयपम्हलसयणोवयारमणहिययनि-व्वुइयरे कप्पूरलवंगमलयचंदणकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतसुरभिमघमघंतग-धुद्धयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए मणिकिरणपणासियंधयारे किं बहुणा । [2] जुइ-गुणेहिं सुरवरविमाणवेल(विय)वरघरए तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणे दुहओ उन्नए मज्झे णयगंभीरे गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए ओयवियखोमदुगुल्लपट्टपडि(च्छण्णे)च्छायणे अत्थरयमलयनवतयकुसत्तलिंबसीहके-सरपच्चुत्थए सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणगरूयबूरनवणीयतूलफासे पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी एगं महं सत्तुस्सेहं रययकूडसन्निहं नहयलंसि सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभा(यंत)यमाणं मुहमइगयं गयं पासित्ता णं पडिबुद्धा । तए णं सा धारिणी देवी अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठा चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया धाराहयकलंबपुप्फगं पिव समूससियरोमकूवा तं सुमिणं ओगिण्हइ २ त्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं मियमहुररिभियगंभीरसस्सि-रीयाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेइ २ त्ता सेणिएणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नाणामणिकणगरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयइ २ त्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि

सालिंगणवट्टिए जाव णियगवयणमइवयंतं गयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा। तं एयस्स णं देवाणुप्पिया! उरालस्स जाव सुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ? ॥ ९ ॥ तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्टतुट्ठ जाव हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुमचंचुमालइयतणू ऊसवि(सि)यरोमकूवे तं सुमिणं ओगिण्हइ २ त्ता ईहं पविसइ २ त्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहणं करेइ २ त्ता धारिणिं देविं ताहिं जाव हिययपल्हायणिज्जाहिं मि(उ)महुररिभियगंभीरसस्सिरीयाहिं वग्गूहिं अणुवूहेमाणी २ एवं वयासी—उराले णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणे दिट्ठे, कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणे दिट्ठे, सिवे धन्ने मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणे दिट्ठे, आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणमंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुमिणे दिट्ठे, अत्थलाभो ते देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए! रज्जलाभो भोगलाभो सोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडिंसयं कुलतिलगं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं कुलणंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव दारगं पयाहिसि। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्णविउलबलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ। तं उराले णं तुमे देवी! सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणकारए णं तुमे देवी! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो २ अणुवूहेइ ॥ १० ॥ तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया! तहमेयं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं असंदिद्धमेयं इच्छियमेयं (देवाणुप्पिया!) पडिच्छियमेयं इच्छियपडिच्छियमेयं सच्चे णं एसमट्ठे जं णं तुब्भे वयह त्ति कट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ २ त्ता सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयंसि सयणिज्जंसि णिसीयइ २ त्ता एवं वयासी मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुमिणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिहि त्ति कट्टु देवयगुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजागरमाणी (२) विहरइ ॥ ११ ॥ तए णं से सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! बाहिरियं उवट्ठाणसालं अज्ज सविसेसं परमरम्मं गंधोदगसित्तसुइय सम्मज्जिओवलित्तं पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्क

तुरुक्कधूवडज्झतमघमघतगंधुद्धुयाभिराम सुगधवरगंधिय गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य करित्ता य कारवित्ता य ए(व)यमाणत्तिय पच्चप्पिणह। तए ण ते कोडुवियपुरिसा सेणिएण रन्ना एव वुत्ता समाणा हट्टतुट्टा जाव पच्चप्पिणति। तए ण से सेणिए राया कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगप्पगासकिंसुयसुयमुहगुजद्ध(राग)वधुजीवगपारावयचलणनयणपरहुयसुरत्तलोयणजासुमणकुसुमजलियजलणतवणिज्जकलसहिंगुलयनिगररूवाइरेगरेहन्तसस्सिरीए दिवा(ग)यरे अहक्कमेण उदिए तस्स दिण(कर)करपरंपरावयारपारद्धमि अधयारे बालायवकुकुमेण खइयव्व जीवलोए लोयणविसयाणुयासविगसतविसददसियमि लोए कमलागरसडबोहए उट्टियमि सूरे सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलते सयणिज्जाओ उट्ठेइ २ त्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अट्टणसाल अणुपविसइ २ त्ता अणेगवायामजोगवग्गणवामद्दणमल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्सते सयपागसहस्सपागेहिं सुगधवरतेल्लमाइएहिं पीणणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं सव्विंदियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भगएहिं अब्भगिए समाणे तेल्लचम्मसि पडिपुण्णपाणिपायसुकुमालकोमलतलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउणेहिं निउणसिप्पोवगएहिं जियपरिस्समेहिं अब्भगणपरिमद्दणुव्वलणकरणगुणनिम्माएहिं अट्ठिसुहाए मससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउव्विहाए स(वा)वाहणाए सवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे नरिंदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता स(मु)म(न्त)त्तजालाभिरामे विचित्तमणिरयणकोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवसि नाणामणिरयणभत्तिचित्तसि ण्हाणपीढसि सुहनिसण्णे सुहोदगेहिं पुप्फोदएहिं गधोदएहिं सुद्धोदएहि य पुणो पुणो कल्लाणगपवरमज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हलसुकुमालगधकासा(ई)यलूहियगे अहयसुमहग्घदूसरयणसुसवुए सरससुरभिगोसीसचदणाणुलित्तगत्ते सुइमालावण्णगविलेवणे आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियहारद्धहारतिसरयपालवपलबमाणकडिसुत्तसुकयसोहे पि(ण)णिद्धगेविज्जे अगुलेज्जगललियग(य)ललियकयाभरणे नाणामणिकडगतुडियथभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुडलुज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए हारोत्थयसुकयरइयवच्छे पालवपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जे मुद्दियापिंगलंगुलीए नाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसठियपसत्थआविद्धवीरवलए, किं बहुणा? कप्परुक्खए चेव सुअलकियविभूसिए नरिंदे सकोरंटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेण (उभओ)चउचामरवालवीइयंगे मगलजयसद्दकयालोए अणेगगणनायगदडनायगराईसरतलवरमाडविय-

कोडुंबियमंतिमहामंतिगणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दनगरनिगमसेट्ठिसेणावइसत्थवाहदूयसंधिवालसद्धिं संपरिवुडे धवलमहामेहनिग्गए विव गहगणदिप्पंतरिक्खतारागणाण मज्झे ससि व्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे। तए णं से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामंते उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थुयाइं सिद्धत्थयकयमंगलोवयाराइं रयावेइ २ त्ता (अप्पणो अदूरसामंते) णाणामणिरयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जरूवं महग्घवरपट्टणुग्गयं सण्हबहुभत्तिसयचित्त(ट्ठा)णं ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं सुखचियवरकणगपवरपेरंतदेसभागं अब्भितरियं जवणियं अंछावेइ २ त्ता अ(च्छ)त्थरयमउयमसूरगउच्छइयं धवलवत्थपच्चत्थुयं विसिट्ठं अंगसुहफासयं सुमउयं धारिणीए देवीए भद्दासणं रयावेइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थपाढए विविहसत्थकुसले सुमिणपाढए सद्दावेह २ त्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति २ त्ता सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति। तए णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया ण्हाया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हरियालियसिद्धत्थयकयमुद्धाणा सएहिं सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति २ त्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स रन्नो भवणव(डें)सगदुवारे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता एगयओ मि(लं)यंति २ त्ता सेणियस्स रन्नो भवणवडिंसगदुवारेणं अणुपविसंति २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति सेणिएणं रन्ना अच्चियवंदियपूइयमाणियसक्कारियसम्माणिया समाणा पत्तेयं २ पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति। तए णं सेणिए राया जवणियंतरियं धारिणिं देविं ठवेइ २ त्ता पुप्फफलपडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुमिणपाढए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! धारिणी देवी अज्ज तंसि तारिसयंसि सयणिज्जंसि जाव महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा तं एयस्स णं देवाणुप्पिया! उरालस्स जाव सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ?। तए णं ते सुमिणपाढगा

सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया तं सुमिणं सम्मं ओगिण्हंति २ त्ता ईहं अणुपविसंति २ त्ता अन्नमन्नेण सद्धिं संचालेंति २ त्ता तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रन्नो पुरओ सुमिणसत्थाइं उच्चारेमाणा (२) एवं वयासी-एवं खलु अम्हं सामी ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा । तत्थ णं सामी ! अरहंतमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा अरहंतंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुमिणाणं इमे चउद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति तंजहा-गयवसहसीहअभिसेयदामससिदिणयरं झयं कुंभं । पउमसरसागरविमाणभवणरयणुच्चय-सिहिं च ॥ १ ॥ वासुदेवमायरो वा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नयरे सत्त महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति । बलदेवमायरो वा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति । मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नयरं एगं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति । इमे य(ण) सामी ! धारिणीए देवीए एगे महासुमिणे दिट्ठे । तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणमंगल्लकारए णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे । अत्थलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! पुत्तलाभो रज्जलाभो, एवं खलु सामी ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाहि(सि)इ । से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्णविउलबलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ अणगारे वा भावियप्पा । तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठि जाव दिट्ठे-त्तिकट्टु भुज्जो २ अणु(वू)वूहेंति । तए णं सेणिए राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए करयल जाव एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव जं णं तुब्भे वयह-त्तिकट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ २ त्ता ते सुमिणपाढए विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ २ त्ता पडिविसज्जेइ । तए णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धारि(णीदेवीं)णिं देविं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा तीसं महासुमिणा जाव एगं महासुमिणं जाव भुज्जो २ अणुवूहेइ । तए णं सा धारिणी देवी सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियया

छत्तेण धरिज्जमाणेणं चदप्पभवइरवेरुलियविमलदडसखकुंददगरयअमयमहियफेण-पुजसन्निगासचउचामरवालवीजियगीओ सेणिएण रन्ना सद्धिं हत्थिखधवरगएण पिट्ठओ (२) समणुगच्छमाणीओ चाउरगिणीए सेणाए महया हयाणीएण गयाणीएणं रहाणीएणं पायत्ताणीएण सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव निग्घोसनाइयरवेण रायगिह नयरं सिंघाडगति(य)गचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु आसित्तसित्तसु(चि)इयसम-ज्जिओवलित्तं जाव सुगधवरगंधिय गधवट्टिभूय अवलोएमाणीओ नागरजणेणं अभिन-दिज्जमाणीओ गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइय सुरम्म वेभारगिरिकडगपाय-मूलं सव्वओ समंता आहिंडेमाणीओ २ दोहल वि(णि)णयति । त जइ ण अहमवि मेहेसु अब्भु(व)ग्गएसु जाव दोहल विणिज्जामि ॥१३॥ तए णं सा धारिणी देवी तंसि डोहलसि अविणिज्जमाणसि असप(ण्ण)त्तदोहला असपुण्णदोहला असमाणियदोहला सुक्का भुक्खा निम्मसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा पमइलदुब्बला किलंता ओमंथियवयण-नयणकमला पडुइयमुही करयलमलियव्व चपगमाला नित्तेया दीणविवण्णवयणा जहो-चियपुप्फगधमल्लालकारहारं अणभिलसमाणी कीडारमणकिरिय च परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणदा भूमिगयदिट्ठीया ओहयमणसकप्पा जाव झिया(य)इ । तए ण तीसे धारिणीए देवीए अगपडियारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणिं देविं ओलुग्ग जाव झियायमाणिं पासति २ त्ता एव वयासी–किन्न तुमे देवाणुप्पिए! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ?, तए ण सा धारिणी देवी ताहिं अगपडियारियाहिं अब्भितरियाहिं दासचेडियाहिं(य) एव वुत्ता समाणी ताओ (दास)–चेडियाओ नो आढाइ नो(य) परियाणाइ अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणीया सचिट्ठइ। तए ण ताओ अगपडियारियाओ अब्भितरियाओ दासचे(डी)डियाओ धारिणिं देविं दोच्चपि तच्चपि एव वयासी–किन्न तुमे देवाणुप्पिए! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ?, तए ण सा धारिणी देवी ताहिं अगपडियारियाहिं अब्भितरियाहिं (य) दासचे(डी)-डियाहिं दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणाइ अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणीया सचिट्ठइ । तए ण ताओ अगपडियारियाओ अब्भित-रियाओ दासचेडियाओ (य)धारिणीए देवीए अणाढाइज्जमाणीओ अपरि(याण)जा णिज्जमाणीओ तहेव सभताओ समाणीओ धारिणीए देवीए अतियाओ पडिनिक्खमति २ त्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति २ त्ता करयलपरिग्गहिय जाव कट्टु जएण विजएण वद्धावेंति २ त्ता एव वयासी–एव खलु सामी! किंपि अज्ज धारिणी देवी ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायइ। तए ण से सेणिए राया तासिं अगपडियारियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म तहेव सभते समाणे सिग्घ तुरिय

पासइ सेणियं जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धारिणिं देविं ओलुग्गं ओलुग्गसरीरं जाव अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ २ त्ता एवं वयासी–किण्णं तु(मे)मं देवाणुप्पिए! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायसि? तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ। तए णं से सेणिए राया धारि(णीं)णिं दे(वीं)विं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–किण्णं तुमं देवाणुप्पिए! ओलुग्गा जाव झियायसि? तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ तुसिणीया संचिट्ठइ। तए णं से सेणिए राया धारिणिं देविं सवहसावियं करेइ २ त्ता एवं वयासी–किं णं तुमं देवाणुप्पिए! अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणयाए ता णं तुमं ममं अयमेयारूवं मणोमाणसियं दुक्खं रहस्सीकरेसि? तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना सवहसाविया समाणी सेणियं रायं एवं वयासी–एवं खलु सामी! मम तस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव वेभारगिरिपायमूलं आहिंडमाणीओ दोहलं विणिंति तं जइ णं अहमवि जाव दोहलं विणिज्जामि। तए णं हं सामी! अयमेयारूवंसि अकालदोहलंसि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि। एएणं अहं कारणेणं सामी! ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि। तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म धारिणिं देविं एवं वयासी मा णं तुमं देवाणुप्पिए! ओलुग्गा जाव झियाहि, अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं तुज्झं अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ–त्तिकट्टु धारिणिं देविं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं बहूहिं आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पा(प)रिणामियाहि य चउव्विहाहिं बुद्धीहिं अणुचिंतेमाणे २ तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा उप्पत्तिं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ ॥ १४ ॥ तयाणंतरं च णं अभए कुमारे ण्हाए सव्वालंकारविभूसिए पायवंदए पहारेत्थ गमणाए। तए णं से अभयकुमारे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सेणियं रायं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासइ २ त्ता अयमेयारूवे अ(ब्भ)ज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–अन्नया(य)ममं सेणिए राया एज्जमाणं पासइ पासित्ता आढाइ परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ आलवइ संलवइ अद्धासणेणं

कहते ह कि 'हम लोग ऐसे नहीं हैं, हम ऐसी बातें नहीं मान सकते' आदि।

यहाँ एक बात और भी ध्यान देनेकी है कि ये दोनो आचार्य देवागम, नभोयान, चामर आदि विभूतियोंको मष्करी आदि जैनेतर धर्मगुरुओमे भी मानते हैं। इसलिये देवागम, नभोयान आदि शब्दोंका कोई ऐसा साधारण अर्थ करना चाहिये जो महावीर और मष्करी आदि सबमें समवित हो। स्वर्गके इन्द्रादि देव महावीरकी भी पूजा करें और मष्करीकी भी पूजा करें, यह तो सम्भव नहीं है और अगर सम्भव हो तो इन्द्रादि देवोंद्वारा पूजे जानेका कोई महत्त्व नहीं रह जाता। इसलिये 'देव' शब्दका अर्थ दिव्यगुणयुक्त मनुष्य या किसी जातिविशेष या देशविशेषके मनुष्य लिया जाय, यही ठीक मालूम होता है।

जैनशास्त्रोंमें पाँच तरहके देवोका उल्लेख मिलता है—भव्यद्रव्य-देव, नरदेव, धर्मदेव, देवाधिदेव, भावदेव। जो मनुष्य मरनेके बाद देवगतिमें पैदा होनेवाले हैं अर्थात् जिनका जीवन इतना अच्छा है कि उनके विषयमे यह कहा जा सकता है कि वे मर करके देव होंगे वे भव्यद्रव्य देव हैं। राजा आदि वैभवकी दृष्टिसे श्रेष्ठ कह-लानेवाले मनुष्य नरदेव हैं। सयममें श्रेष्ठ साधुलोग धर्मदेव हैं। तीर्थंकर देवाधिदेव हैं। देवगतिके जीव भावदेव हैं। इस जगत्में जहाँ देवोंका जिकर आवे वहाँ प्रारम्भके चार भेदोंमेंसे ही कोई भेद लेना उचित है।

१—कतिविधा ण भंते देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! पञ्चविधा देवा पण्णत्ता। त जहा—भवियदव्वदेवा नरदेवा धम्मदेवा देवाहिदेवा भावदेवा य।

—भगवती १२-९-४६१

मज्झ सोहम्मकप्पवासी पुव्वसंगइए देवे महिड्ढिए जाव महासोक्खे । तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स बंभयारिस्स उम्मुक्कमणिसुवण्णस्स ववगयमालावन्नगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अबीयस्स दब्भसंथारोवगयस्स अट्ठमभत्तं प(रि)गिण्हित्ता पुव्वसंगइयं देवं मण(सि)कीकरेमाणस्स विहरित्तए । तए णं पुव्वसंगइए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं(वे) अकाल-मेहेसु दोहलं विणेहिइ। एवं संपेहेइ २ त्ता जेणेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ त्ता दब्भसंथारगं पडिलेहेइ २ त्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणे २ चिट्ठइ। तए णं तस्स अभयकुमारस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे पुव्वसंगइयस्स देवस्स आसणं चलइ। तए णं पुव्वसंगइए सोहम्मकप्पवासी देवे आसणं चलियं पासइ २ त्ता ओहिं पउंजइ। तए णं तस्स पुव्वसंगइयस्स देवस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु मम पुव्वसंगइए जंबुद्दीवे २ भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नयरे पोसहसालाए पोसहिए अभए नामं कुमारे अट्ठमभत्तं परिगिण्हित्ता णं मम मणसीकरेमाणे २ चिट्ठइ। तं सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अंतिए पाउब्भवित्तए। एवं संपेहेइ २ त्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ २ त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ। तंजहा–रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोइरसाणं अंकाणं अंजणाणं रययाणं जायरूवाणं अंजणपुलगाणं फलि-हाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ २ त्ता अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हइ २ त्ता अभयकुमारमणुकंपमाणे देवे पुव्वभवजणियनेहपीइबहुमाणजायसोगे तओ विमा-णवरपुंडरीयाओ रयणुत्तमाओ धरणियलगमणतुरियसंजणियगमणपया(यो)रे वाघुण्णि-यविमलकणगपयरगवडिंसगमउडुक्कडाडोवदंसणि(ज्जो)ज्जे अणेगमणिकणगरयणप-हकरपरिमंडियभत्तिचित्तविणिउत्त(मणुगुण)मणहरुज्जलमहग्घवेसे पेंखोलमाणवरललियकुंडलु-ज्जलियवयणगुणजणियसोम्मरूवे उदिओ विव कोमुदीनिसाए सणिच्छरंगारउज्जल-यमज्झभागत्थे णयणा(दो)रे सारयणे(दो)रे दिव्वोसहिपज्जलुज्जलियदंसणाभिरा(मो)मे उउलच्छिसमत्तजायसोहे पइट्ठगंधुद्धयाभिरामे मेरुरिव नगव(रो)रे विगुव्वियविचित्त-वेसे दीवसमुद्दाणं असंखपरिमाणनामधेज्जाणं मज्झयारेणं वीइवयमा(णो)णे उज्जोयंतो पभाए विमलाए जीवलोगं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स (य तस्स) पासं ओवयइ दिव्वरूवधारी ॥ १९ ॥ तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने दसद्धवण्णाइं सखिं-

उवनिमतेइ मत्थयंसि अग्घाइ । इयाणिं मम सेणिए राया नो आढाउ नो परियाणइ नो सक्कारेइ नो सम्माणेइ नो इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं ओरालाहिं वग्गूहिं आलवइ सलवइ नो अद्धासणेणं उवनिमतेइ नो मत्थयसि अग्घा(य)इ(य) किंपि ओहयमणसकप्पे झियायइ । त भवियव्वं ण एत्थ कारणेण । त सेय खलु(मे) ममं सेणिय राय एयमट्ठ पुच्छित्तए । एवं सपेहेइ २ त्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ २ त्ता एव वयासी-तुब्भे ण ताओ ! अन्नया मम एज्जमाण पासित्ता आढाह परिजाणह जाव मत्थयसि अग्घायह आसणेण उवनिमतेह, इयाणिं ताओ ! तुब्भे मम नो आढाह जाव नो आसणेण उवनिमतेह किंपि ओहयमणसकप्पा जाव झियायह, त भवियव्व ताओ ! एत्थ कारणेण, तओ तुब्भे म(म)म ताओ ! एय कारण अगूहेमाणा असकेमाणा अनिण्हवेमाणा अपच्छाएमाणा जहाभूयमवितहमसदिद्ध एयमट्ठ आइक्खह । तए ण ह तस्स कारणस्स अतगमण गमिस्सामि । तए ण से सेणिए राया अभएणं कुमारेण एवं वुत्ते समाणे अभयकुमारं एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयसि अयमेयारूवे दोहले पाउब्भवित्था-धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेस भाणियव्व जाव विणिंति । तए ण अह पुत्ता ! धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स बहूहिं आएहि य उवाएहिं जाव उप्पत्तिं अविंदमाणे ओहयमणसकप्पे जाव झियायामि तुम आगयपि न याणामि, त एएण कारणेण अह पुत्ता ! ओहयमणसकप्पे जाव झियामि । तए ण से अभए कुमारे सेणियस्स रण्णो अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए सेणिय राय एव वयासी-मा ण तुब्भे ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव झियायह । अह ण तहा करिस्सामि जहा ण मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालदो-हलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ-त्तिकट्टु सेणियं राय ताहिं इट्ठाहिं कताहिं जाव समासासेइ । तए ण सेणिए राया अभएणं कुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव अभय कुमार सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ १५ ॥ तए ण से अभए कुमारे सक्कारिए सम्माणिए पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रण्णो अतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणे निसण्णे । तए णं तस्स अभयकुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-नो खलु सक्का माणुस्सएण उवाएण मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अकालडोहलमणोरहसंपत्तिं करित्तए नन्नत्थ दिव्वेग उवाएण । अत्थि ण

२ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायगिहं नयरं सिंघाडगतिय
चउक्कचच्चर आसित्तसित्त जाव सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य
करेत्ता य कारवेत्ता य मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा
जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता
एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हयगयरहजोहपवरकलियं चाउरंगिणिं
से(ण्णं)णं सन्नाहेह सेयणयं च गंधहत्थिं परिकप्पेह। तेवि तहेव जाव पच्चप्पिणंति।
तए णं से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता
धारिणिं देविं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिए! सगज्जिया जाव पाउससिरी
पाउब्भूया तं णं तुमं देवाणुप्पिए! एयं अकालदोहलं विणेहि। तए णं
सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जेणामेव
मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ २ त्ता अंतो अंतेउ-
रंसि ण्हाया किं ते वरपायपत्तनेउर जाव आगासफलिहसमप्पभं अंसुयं नियत्था
सेयणयं गंधहत्थिं दुरूढा समाणी अमयमहियफेणपुंजसन्निगासाहिं सेयचामरवाल-
वीयणीहिं वीइज्जमाणी २ संपत्थिया। तए णं से सेणिए राया ण्हाए सस्सिरीए
हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामराहिं वीइज्जमाणे
धारिणीदेविं पिट्ठओ अणुगच्छइ। तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना हत्थिखं-
धवरगएणं पिट्ठओ २ समणुगम्ममाणमग्गा हयगयरहजोहकलियाए चाउरंगिणीए
सेणाए सद्धिं संपरिवु(ए)डा महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए सव्वजुईए
जाव दुंदुभिनिग्घोसनाइयरवेणं रायगिहे नयरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चर जाव महा-
पहेसु नागरजणेणं अभिनंदिज्जमा(णा)णी २ जेणामेव वेभारगिरिपव्वए तेणामेव
उवागच्छइ २ त्ता वेभारगिरिकडगतडपायमूले आरामेसु य उज्जाणेसु य काणणेसु य
वणेसु य वणसंडेसु य रुक्खेसु य गुच्छेसु य गुम्मेसु य लयासु य वल्लीसु य कंदरासु
य दरीसु य चुण्ढीसु य दहेसु य कच्छेसु य नईसु य संगमेसु य विवरएसु य
अच्छमाणी य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य
पल्लवाणि य गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घायमाणी य परिभुंजमाणी य परि
भाएमाणी य वेभारगिरिपायमूले दोहलं विणेमाणी सव्वओ समंता आहिंडइ।
तए णं सा धारिणी देवी (तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि सम्माणियदोहला) विणी-
यदोहला संपुण्णदोहला संपन्नदोहला जाया यावि होत्था। तए णं सा धारिणी देवी
सेयणयगंधहत्थिं दुरूढा समाणी सेणिएणं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ २ समणुग-
म्ममाणमग्गा हयगय जाव र(ह)वेणं जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता

खिणियाइ पवरवत्थाइ परिहिए। एको ताव एसो गमो। अन्नोऽवि गमो–ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चडाए सीहाए उद्धुयाए ज(इ)यणाए छेयाए दिव्वाए देवगईए जेणामेव जबुद्दीवे २ भारहे वासे जेणामेव दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नयरे पोसहसालाए अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता अत(रि)लिक्खपडिवन्ने दसद्धवण्णाइ सखिखिणियाई पवरवत्थाइ परिहिए अभय कुमार एव वयासी–अह ण देवाणुप्पिया ! पुव्वसगइए सोहम्मकप्पवासी देवे महड्ढिए ज ण तुमं पोसहसालाए अट्ठमभत्त पगिण्हित्ता ण मम मणसीकरेमाणे चिट्ठसि, त एस ण देवाणुप्पिया ! अह इह हव्वमागए । सदिसाहि ण देवाणुप्पिया ! किं करेमि किं दलामि किं पयच्छामि किं वा ते हियइच्छियं ? । तए ण से अभए कुमारे तं पुव्वसगइय देव अतलिक्खपडिवन्न पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठे पोसह पारेइ २ त्ता करयल जाव अजलिं कट्टु एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालडोहले पाउब्भूए–धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेणं जाव विणिज्जामि । तं ण तुम देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकालडोहल विणेहि । तए ण से देवे अभएण कुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे अभय कुमारं एव वयासी–तुम ण देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुयवीसत्थे अच्छाहि, अह ण तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूव डोहल विणेमित्तिकट्टु अभयस्स कुमारस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता उत्तरपुरच्छिमे ण वेभारपव्वए वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ २ त्ता सखेज्जाइ जोयणाइ दड निस्सरइ जाव दोच्चपि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ २ त्ता खिप्पामेव सगज्जइयं सविज्जुय सफुसिय (त) पचवण्णमेहणिणाओवसोहिय दिव्व पाउससिरिं विउव्वइ २ त्ता जेणेव अभए कुमारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अभय कुमार एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! मए तव पियट्ठयाए सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया, त विणेउ ण देवाणुप्पिया ! तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अयमेयारूव अकाल(मेह)डोहल । तए ण से अभए कुमारे तस्स पुव्वसगइयस्स सोहम्मकप्पवासिस्स देवस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सयाओ भवणाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव अजलिं कट्टु एव वयासी–एव खलु ताओ ! मम पुव्वसगइएण सोहम्मकप्पवासिणा देवेण खिप्पामेव सगज्जियसविज्जुय-(सफुसिय)पचवण्णमेहनिणाओवसोभिया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया । त विणेउ ण मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहल । तए णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ

उवट्ठवमाणमए सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे स(य)एहिं य सहस्सिएहिं य सयसाहस्सिएहिं य जाए(ई)हिं य दाएहिं य भाएहिं य दलयमाणे २ पडिच्छेमाणे २ एवं च णं विहरइ। तए णं तस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जायकम्मं करेंति २ त्ता बिइयदिवसे जागरियं करेंति २ त्ता तइए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति २ त्ता एवामेव निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहदिवसे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति २ त्ता मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणं बलं च बहवे गणणायगदंड-णायग जाव आमंतेंति तओ पच्छा ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया महइमहालयंसि भोयणमंडवंसि तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्तणाइ गणणायग जाव सद्धिं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति जिमिय-भुत्तुत्तरागयावि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्तणाइणियगसयण-संबंधिपरियणं बलं च बहवे गणणायग जाव विउलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्का-रेंति सम्माणेंति स० २ त्ता एवं वयासी–जम्हा णं अम्हं इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए तं होउ णं अम्हं दारए मेहे णामेणं मे(हकुमारे)हे। तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति मेहेइ। तए णं से मेहे कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए तंजहा–खीरधाईए मंडण-धाईए मज्जणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणिवडभिबब्बरिबउसिजोणि(याहिं)पण्हविईसि(णि)थारु(इ)णि(लं)लासियल-उसियदमिलिसिंहलिआरबिपुलिंदिपक्कणिबहलिमुरुंडिसबरिपारसीहिं णाणादेसीहिं विदे-सपरिमंडियाहिं इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं निउण-कुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवालवरिसधरकंचुइज्जमहयरगवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं सा(सं)हरिज्जमाणे अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे परिगिज्जमाणे उवला(ला)लिज्जमाणे रम्मंसि मणिकोट्टिमतलंसि परिमिज्जमाणे २ णिव्वायणिव्वाघायंसि गिरिकंदरमल्लीणेव चंपगपायवे सुहंसुहेणं वड्ढइ। तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं नामकरणं च पजेमणगं च एवं चंकमणगं च चोलोवणयं च महया २ इड्ढीसक्कारसमुदएणं करिंसु। तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं चेव गब्भट्ठमे वासे सोहणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति। तए णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ तंजहा–लेहं गणियं रूवं नट्टं गीयं वाइयं सरगयं पोक्खरगयं समतालं जूयं जणवायं पासयं अट्ठावयं पोरेकव्वं दगमट्टियं अण्णविहिं पाणविहिं वत्थविहिं विलेवणविहिं सयणविहिं

रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता विउलाइ माणुस्सगाइं भोगभोगाइ जाव विहरइ ॥ १७ ॥ तए ण से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता पुव्वसगइय देव सक्कारेइ सम्माणेइ स० २ त्ता पडिविसज्जेइ । तए ण से देवे सगज्जियं पचवण्णमेहोवसोहियं दिव्व पाउससिरिं पडिसाहरइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ १८ ॥ तए ण सा धारिणी देवी तसि अकालदोहलसि विणीयसि सम्माणियडोहला तस्स गब्भस्स अणुकपणट्ठाए जय चिट्ठइ जय आस(य)इ जयं सुवइ आहारं पि य ण आहारेमाणी नाइतित्त नाइकडुय नाइकसाय नाइअबिल नाइमहुर ज तस्स गब्भस्स हिय मिय पत्थय देसे य काले य आहारं आहारेमाणी नाइचित नाइसोग (णाइदेण्ण)नाइमोह नाइभय नाइपरित्तास ववगयचिंतासोयमोहभयपरित्तासा उउभयमाणसुहेहिं भोयणच्छायणगधमल्लालकारेहिं त गब्भ सुहंसुहेण परिवहइ ॥ १९ ॥ तए णं सा धारिणी देवी नवण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइदियाण वीइक्कताण अद्धरत्तकालसमयसि सुकुमालपाणिपाय जाव सव्वंगसुदर(ग) दारग पयाया । तए ण ताओ अगपडियारियाओ धारिणिं देविं नवण्ह मासाण जाव दारग पयाय पासति २ त्ता सिग्घ तुरिय चवल वेइय जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति २ त्ता सेणिय राय जएण विजएण वद्धावेंति २ त्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी नवण्ह मासाण जाव दारग पयाया, त ण अम्हे देवाणुप्पियाण पिय निवेएमो पिय मे भवउ । तए ण से सेणिए राया तासिं अगपडियारियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० ताओ अगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विउलेण य पुप्फगंधमल्लालकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ स० २ त्ता मत्थयधोयाओ करेइ पुत्ताणुपुत्तिय वित्तिं कप्पेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ । तए ण से सेणिए राया (पच्चूसकालसमयसि) कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिह नयरं आसिय जाव परिगीय करेह २ त्ता चारगपरिसोहण करेह २ त्ता माणुम्माणवद्धण करेह २ त्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणति । तए ण से सेणिए राया अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे अब्भिंतर-बाहिरिए उस्सुक्क उक्कर अभडप्पवेस अ(ड)दडिमकुदंडिम अधरिम अधारणिज्ज अणुद्धुयमुइग अमिलायमल्लदाम गणियावरनाडइज्जकलिय अणेगतालायराणुचरिय पमुइयपक्कीलियाभिराम जहारिह ठिइवडिय दसदिवसिय करेह २ त्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह तेवि करेंति (२) तहेव पच्चप्पिणति । तए णं से सेणिए राया बाहिरियाए

ण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं सरिसएहिंतो रायकुलेहिंतो आणि(ण)ल्लियाणं पसाह णट्ठंगअविहवबहुओवयणमंगलसुजंपिएहिं अट्ठहिं रायवरकन्नाहिं सद्धिं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु। तए णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं पीइदाणं दलयंति–अट्ठ हिरण्णकोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडीओ गाहाणुसारेण भा(णि)यव्वं जाव पेच्छणविहिओ अन्नं च विपुलं धणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं । तए णं से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ जाव एगमेगं पेच्छणविहिं दलयइ अन्नं च विउलं धण कणग जाव परिभाएउं दलयइ । तए णं से मेहे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ सद्दफरिसरसरूवगंधविउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥ २४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नगरे गुणसिलए उज्जाणे जाव विहरइ। तए णं (से)रायगिहे नगरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चर महया बहुजणसद्दे वा जाव बहवे उग्गा भोगा जाव रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति इमं च णं मेहे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे रायमग्गं च आलोएमाणे २ एवं च णं विहरइ। तए णं (से)मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे जाव एगदिसाभिमुहे निग्गच्छमाणे पासइ २ त्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–किण्णं भो देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहेइ वा खंदमहे वा एवं रुद्दसिववेसमणनागजक्खभूयनईतलायरुक्खचेइयपव्वयउज्जाणगिरिजत्ताइ वा जओ णं बहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति । तए णं से कंचुइज्जपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स गहियागमणपवित्तीए मेहं कुमारं एवं वयासी–नो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहेइ वा जाव गिरिजत्ताइ वा जं णं एए उग्गा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव रायगिहे नगरे गुणसिलए उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ ॥ २५ ॥ तए णं से मेहे कुमारे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह (तहत्ति) जाव उवणेंति । तए णं से

अज्ज पहेलिय मागहियं गाह गीइय सिलोयं हिरण्णजुत्तिं सुवण्णजुत्तिं चुण्णजुत्तिं आभरणविहिं तरुणीपडिकम्म इत्थिलक्खण पुरिसलक्खणं हयलक्खण गयलक्खण गोणलक्खण कुक्कुडलक्खण छत्तलक्खण दडलक्खणं असिलक्खण मणिलक्खणं का(ग)गिणिलक्खण वत्थुविज्ज खधारमाण नगरमाणं वूह पडिवूह चार पडिचारं चक्कवूह गरुलवूहं सगडवूह जुद्ध निजुद्धं जुद्धाइजुद्ध लट्ठिजुद्धं मुट्ठिजुद्ध वाहुजुद्ध लयाजुद्ध ईसत्थं छरुप्पवाय धणुव्वेय हिरण्णपाग सुवण्णपाग सुत्तखेड वट्टखेड नालियाखेड पत्तच्छेज्जं कड(ग)च्छेज्ज सज्जीव निज्जीव सउणरुय ति ॥ २० ॥ तए ण से कलायरिए मेह कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ वावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ सेहावित्ता सिक्खावित्ता अम्मापिऊण उवणेइ। तए ण मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो त कलायरिय महुरेहिं वयणेहिं विउलेण वत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेंति सम्माणेंति स० २ त्ता विउल जीवियारिह पीइदाण दलयति २ त्ता पडिविसज्जेंति ॥२१॥ तए ण से मेहे कुमारे वावत्तरिकलापडिए नवगसुत्तपडिवोहिए अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए गी(इरई)यरइयगंधव्वनट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही वाहुजोही वाहुप्पमद्दी अलभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था॥२२॥ तए ण तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमारं वावत्तरिकलापडिय जाव वियालचारिं जाय पासति २ त्ता अट्ठ पासायवडिंसए का(क)रेंति अब्भुग्गयमूसियपहसिए विव मणिकणगरयणभत्तिचित्ते वाउद्धुयविजयवेजयतीपडागाछत्ताइच्छत्तकलिए तुगे गगणतलमभिलघमाणसिहरे जालतर रयणपजरुम्मिल्लि(य)एव्व मणिकणगथूभियाए वियसियसयपत्तपुडरीए तिलयरयणद्ध(य)चदच्चिए नानामणिमयदामालकिए अतो वहिं च सण्हे तवणिज्जरुइलवालुयापत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए जाव पडिरूवे। एग च ण मह भवण कारेंति अणेगखभसयसन्निविट्ठ लीलट्ठियसालभजियाग अब्भुग्गयसुकयवइरवेइयातोरणवररइयसालभंजियासुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसठियपसत्थवेरुलियखभनाणामणिकणगरयणखचियउज्जल वहुसमसुविभत्तनिचियरमणिज्जभूमिभाग ईहामिय जाव भत्तिचित्त खभुग्गयवयरवेइयापरिगयाभिराम विज्जाहरजमलजुयलजतजुत्तपिव अच्चीसहस्समालणीय रूवगसहस्सकलिय भिसमाणं भिब्भिसमाण चक्खुल्लोयणलेस सुहफास सस्सिरीयरूव कचणमणिरयणथूभियाग नाणाविहपचवण्णघटापडागपरिमडियग्गसिहरं धवलमि(म)रीचिकवय विणिम्मुयत लाउल्लोइयमहियं जाव गधवट्टिभूय पासाईय दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव ॥ २३ ॥ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमारं सोहणसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तसि सरिसियाण सरि(स)व्वयाण सरि(स)त्तयाण सरिस-

य से धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरो
दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! मए समणस्स भगवओ महा-
वीरस्स अंतिए धम्मे निसंते से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए,
तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। तए णं सा
धारिणी देवी तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुन्नं अमणामं असुयपुव्वं फरुसं गिरं
सोच्चा निसम्म इमेणं एयारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेणं अभिभूया समाणी
सेयागयरोमकूवपगलंतविलीणगाया सोयभरपवेवियंगी नित्तेया दीणविमणवयणा करय-
लमलियव्व कमलमाला तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरा लावन्नसुन्ननिच्छायगयसिरीया
पसिढिलभूसणपडंतखुम्मियसंचुन्नियधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा सूमालविकिन्नकेस-
हत्था मुच्छावसणट्ठचेयगरुई परसुनियत्तव्व चंपगलया निव्वत्तम(हिमव्व) इंदलट्ठी
विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिया। तए णं सा धारिणी
देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गयसीयलजलविमलधाराए
परिसिंचमाणा निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवयतालवेंटवीयणगजणियवाएणं सफुसिएणं
अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी मुत्तावलिसन्निगासपवडंतअंसुधाराहिं सिंच-
माणी पओहरे कलुणविमणदीणा रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलव-
माणी मेहं कुमारं एवं वयासी-तुमं सि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुन्ने
मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए
जीवियउस्सासए हिययाणंदजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण पास-
णयाए, नो खलु जाया! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए, तं भुंजाहि
ताव जाया! विउले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं
कालगएहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जंमि निरावयक्खे समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ॥ २७ ॥ तए
णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वयासी-तहेव
णं तं अ(म्मो!)म्मयाओ! जहेव णं तुम्हे ममं एवं वयह-तुमं सि णं जाया! अम्हं
एगे पुत्ते तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि
एवं खलु अम्मयाओ! माणुस्सए भवे अधुवे अणियए असासए वसणसउवद्दवाभि-
भूए विज्जुलयाचंचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे संझब्भराग-
सरिसे सुविणदंसणोवमे सडणपडणविद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्प-
जहणिज्जे से के णं जाणइ अम्मयाओ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए?

मेहे ण्हाए सव्वालंकारविभूसिए चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे समाणे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरियालसंपरिवुडे रायगिहस्स नयरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणामेव गुणसिलए उज्जाणे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं विज्जाहरचारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ २ त्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ तंजहा—सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडियं उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीकरणेणं। जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पं(अं)-जलि(य)उडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स तीसे य महइमहालियाए (महच्च)परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइ-क्खइ जहा जीवा बज्झंति मुच्चंति जह य संकिलिस्संति, धम्मकहा भाणियव्वा जाव परिसा पडिगया ॥ २६ ॥ तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आया-हिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं एवं पत्तियामि णं रोएमि णं अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते! तहमेयं अवितहमेयं इच्छियमेयं पडिच्छियमेयं भंते! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते! से जहेवं तं तुब्भे वयह जं नवरं देवाणुप्पिया! अम्मा-पियरो आपुच्छामि तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं पव्वइस्सामि। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। तए णं से मेहे कुमारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ २ त्ता महया भडचडगरपहकरेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ २ त्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु अम्मयाओ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तए णं तस्स मेहस्स अम्मा-पियरो एवं वयासी–धन्नोसि तुमं जाया! संपुण्णोसि० कयत्थोसि० कयलक्खणोसि तुमं जाया! जन्नं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि

इसी प्रकार नभोयान शब्दका अर्थ भी इस तरहसे 'चलना' लेना चाहिये जिसमें हिंसा न हो।

आचार्य विद्यानन्द इस बातको माननेके लिये तयार नहीं हैं कि तीर्थंकरका देवागम नभोयान जैसा है वैसा दूसरोंका नहीं है। वे विभूतियाँ वे इनमें और उनमें एक सरीखी मानते हैं। इसलिये उनका कहना है कि—

कोई कोई कहते हैं कि 'जैसी विभूतियाँ तीर्थंकरमें पाई जाती हैं वैसी मायावियोंमें नहीं पाई जातीं' परन्तु यह बात ठीक नहीं है। क्योंकि किस प्रमाणसे यह बात सिद्ध की जायगी कि मायावियोंमें वे विभूतियाँ नहीं पाई जातीं? प्रत्यक्ष और अनुमानसे तो हम इस बातको साबित कर नहीं सकते। रहा आगम, सो आगमकी सत्यतामें प्रमाण क्या है? अगर प्रमाणसे आगमकी सचाई सिद्ध की जाय उससे विभूतियाँ सिद्ध की जायँ और विभूतियोंसे भगवान्‌का महत्त्व सिद्ध किया जाय तो इस परम्परा-परिश्रमसे क्या फायदा है? इससे अच्छा तो यही है कि आगम और विभूतियोंको सिद्ध करनेके झंझटसे बचकर भगवान्‌के महत्त्वको ही सिद्ध किया जाय।"[1]

इस वर्णनसे देवागम आदि शब्दोंका वास्तविक अर्थ, और इस

१—यथोदितविभूतयस्तीर्थकरे भगवति सन्ति तद्वन्नो मायाविष्वपि न सन्ति तस्य महत्त्वमाप्तत्वं इति इति मायाविनामप्यासामभावात् इति कश्चित्, सोऽपि कुतः प्रमाणात्तत्रोक्तं विभूत्यभावविनं प्रतीयात्? न तावत्प्रत्यक्षादनुमानाद्वा तस्य तदविषयत्वात्। नाप्यागमात्तस्यागमात्सप्रतिपत्तिः प्रतिपत्तिप्रसंगात्। प्रमाणतः सिद्धप्रमाण्यादागमात्तत्प्रतिपत्तौ तदा प्रतिपत्तिरेवास्तु परम्पराश्रम-परिहारश्चैवं प्रतिपत्तुः स्यात्।

—अष्टसहस्री।

त इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महा-वीरस्स जाव पव्वइत्तए। तए ण त मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-इमाओ ते जाया! सरिसियाओ सरि(स)त्तयाओ सरि(व)व्वयाओ सरिसलावण्णरूवजोव्वणगु-णोववेयाओ सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणियल्लियाओ भारियाओ, तं भुंजाहि ण जाया! एयाहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि। तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वयासी-तहेव णं अम्मयाओ! जं ण तुब्भे मम एवं वयह-इमाओ ते जाया! सरिसियाओ जाव पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ! माणुस्सगा कामभोगा असुई असासया वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुरुस्सासनीसा(स-वा)सा दुरु(य)वमुत्तपुरीसपूयबहुपडिपुण्णा उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणगवंतपित्तसु-क्कसोणियसंभवा अधुवा अणि(इ)यया असासया सडणपडणविद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च ण अवस्सविप्पजहणिज्जा, से के ण अम्मयाओ! जाण(न्ति)इ के पुव्वि गमणाए के पच्छा गमणाए? तं इच्छामि णं अम्मयाओ! जाव पव्वइत्तए। तए णं त मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-इमे(य) ते जाया! अज्जयपज्जयपिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणिमोत्ति(ए य)यसंखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसाव-एज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परि-भाएउं, तं अणुहोहि ताव (जाव) जाया! विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं, तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जाव पव्वइस्ससि। तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वयासी-तहेव ण अम्मयाओ! ज ण तं वयह-इमे ते जाया! अज्जगपज्जगपिउपज्जयागए जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे जाव पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ! हिरण्णे य सुवण्णे य जाव सावएज्जे अग्गिसा-हिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए अग्गिसामन्ने जाव मच्चुसामन्ने सडणपडणविद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च ण अवस्सविप्पजहणिज्जे, से के ण जाणइ अम्मयाओ! के पुव्वि जाव गमणाए? तं इच्छामि ण जाव पव्वइत्तए। तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाइंति मेहं कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा सन्नवित्तए वा विन्नवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पन्नवणाहिं पन्नवेमाणा एवं वयासी-एस ण जाया! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धि-मग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे अहीव एगंतदि-

दीवे इव एगंतधाराए लोहमया इव जवा चावेयव्वा वालुयाकवले इव निर-स्साए गंगा इव महानई पडिसोयगमणयाए महासमुद्दे इव भुयाहिं दुत्तरे तिक्खं चंक-मियव्वं गरुयं लंबेयव्वं असिधारव्वं (सं)चरियव्वं । नो (य) खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा । तुमं च णं जाया ! सुहसमुचिए णो चेव णं दुहसमुचिए नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइयपित्तियसिंभियसन्निवाइयविविहे रोगायंके उच्चावए गामकंटए बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए । भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि । तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिईहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरं एवं वयासी–तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह–एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि एवं खलु अम्मयाओ ! निग्गंथे पावयणे की(वा)णं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स णो चेव णं धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स एत्थं किं दुक्करं करणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्व-इत्तए ॥ २ ॥ तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं विसया-णुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णव-णाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अका(मए)-मए चेव मेहं कुमारं एवं वयासी–इच्छामो ताव जाया ! एगदिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए । तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ । तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवा-णुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव तेवि तहेव उवट्ठवेंति । तए णं से सेणिए राया बहूहिं गणनायगदंडनायगेहि य जाव संपरिवुडे मेहं कुमारं अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं एवं रुप्पमयाणं कलसाणं सुवण्णरुप्पमयाणं कलसाणं मणिमयाणं कलसाणं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं रुप्पमणिमयाण कलसाणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहीहि य सिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं जाव दुंदुभिनिग्घो-

सणाइयरवेण महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचइ २ त्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी–जय २ नदा ! जय २ भद्दा ! जय नदा ! भद्द ते अजिअ जि(णे)णाहि जिय पालयाहि जियमज्झे वसाहि अजिय जिणेहि सत्तुपक्ख जिय च पालेहि मित्तपक्ख जाव भरहो इव मणुयाणं रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूण गामागरनगर जाव सन्निवेसाणं आहेवच्च जाव विहराहि त्तिकट्टु जयजयसद्द पउजति । तए ण से मेहे राया जाए महया जाव विहरइ । तए ण तस्स मेहस्स रन्नो अम्मापियरो एव वयासी–भण जाया ! किं दलयामो किं पयच्छामो कि वा ते हियइच्छिए सामत्थे(मते) ?, तए णं से मेहे राया अम्मापियरो एव वयासी–इच्छामि ण अम्मयाओ ! कुत्तियावणाओ रयहरण पडिग्ग(हग)ह च (आणिय) उवणेह कासवय च सद्दा(वि उ)वेह । तए ण से सेणिए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइ गहाय दोहि सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरण पडिग्गह च उवणेह सयसहस्सेण कासवय सद्दावेह । तए ण ते कोडुबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइ गहाय कुत्तियावणाओ दोहिं सयसहस्सेहिं रयहरण पडिग्गह च उवणेंति सयसहस्सेण कासवय सद्दावेंति । तए ण से कासवए तेहिं कोडुबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव (हय)हियए ण्हाए सुद्धप्पावेसाइ (मगल्लाइ)वत्थाइ पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सेणिय राय करयलमजलिं कट्टु एवं वयासी–सदिसह ण देवाणुप्पिया ! ज मए करणिज्ज । तए ण से सेणिए राया कासवयं एव वयासी–गच्छाहि ण तुम देवाणुप्पिया ! सुरभिणा गधोदएण निक्के हत्थपाए पक्खालेहि सेयाए चउप्फालाए पोत्तीए मुह बधित्ता मेहस्स कुमारस्स चउरगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि । तए ण से कासवए सेणिएण रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए जाव पडिसुणेइ २ त्ता सुरभिणा गधोदएण हत्थपाए पक्खालेइ २ त्ता सुद्धवत्थेण मुह बधइ २ त्ता परेण जत्तेण मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पइ । तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेण हसलक्खणेण पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ २ त्ता सुरभिणा गधोदएण पक्खालेइ २ त्ता सरसेणं गोसीसचदणेण चच्चाओ दलयइ २ त्ता सेयाए पोत्तीए वधइ २ त्ता रयणसमुग्गयसि पक्खिवइ २ त्ता मजूसाए पक्खिवइ २ त्ता हारवारिधारसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइ असूइ विणिम्मुयमाणी २ रोयमाणी २ कदमाणी २ विलवमाणी २ एव वयासी–एस ण अम्ह मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य अपच्छिमे

दसियंते मणिसयाऽ–तिण्ह उस्सीसमूले ठवेइ। तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मा-पियरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति मेहं कुमारं दोच्चंपि तच्चंपि सेयापीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति २ त्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाइयाए गायाइं लूहेंति २ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति २ त्ता नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं पड(ग)साडगं नियंसेंति २ त्ता हारं पिणद्धेंति २ त्ता अद्धहारं पिणद्धेंति २ त्ता (एगा) एगावलिं (२) मुत्तावलिं (२) कणगावलिं (२) रयणावलिं (२) पालंबं(२) पायपलंबं कडगाइं (२) तुडियाइं (२) केऊराइं (२) अंगयाइं (२) दसमुद्दियाणंतयं कडिसुत्तयं (२) कुंडलाइं चूडामणिं रयणुक्कडं मउडं पिणद्धेंति २ त्ता दिव्वं सुमणदामं पिणद्धेंति २ त्ता दद्दरमलयसुगंधिए गंधे पिणद्धेंति। तए णं तं मेहं कुमारं गंठिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकियविभूसियं करेंति। तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसयसंनिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभ-त्तिचित्तं घंटावलिमहुरमणहरसरं सुभकंतदरिसणिज्जं निउणो(चि)वियमिसिमिसिंतम-णिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं खं(अब्भु)ग्गयवइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहर-जमलजंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं पुरिससहस्स-वाहि(णी)णीं सीयं उवट्ठवेह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्ठतुट्ठ जाव उवट्ठवेंति। तए णं से मेहे कुमारे सीयं दुरूहइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे। तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया अप्पमहग्घाभरणालं-कियसरीरा सीयं दुरूहइ २ त्ता मेहस्स कुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणंसि निसीयइ। तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अंबधाई रयहरणं च पडिग्गहगं च गहाय सीयं दु(रु)हइ २ त्ता मेहस्स कुमारस्स वामे पासे भद्दासणंसि निसीयइ। तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगयगयहसिय-भणियचिट्ठियविलाससंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला आमेलगजमलजुयलवट्टिय-अब्भुन्नयपीणरइयसंठियपओहरा हिमरययकुंदेंदुपगासं सकोरेंटमल्लदामधवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओहारेमाणी २ चिट्ठइ। तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ सीयं दुरूहंति २ त्ता मेहस्स कुमारस्स उभओ पा(सिं)सं नाणामणिकणगरयणमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालाओ संखंककुंदेंदुदगरयअमयमहियफेणपुंजसंनिकासाओ

चामराओ गहाय सलील ओहारेमाणीओ २ चिट्ठंति । तए णं तस्स मेहकुमारस्स एगा तरुणी सिंगारा जाव कुसला सीयं जाव दुरूहइ २ त्ता मेहस्स कुमारस्स पुरओ पुरत्थिमेणं चदप्पभवइरवेरुलियविमलदंड ता(लिं)लियंटं गहाय चिट्ठइ । तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी जाव सुरूवा सीयं दुरूहइ २ त्ता मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणेण सेय रययामय विमलसलिलपुण्ण मत्तगयमहामुहाकिइसमाण भिंगार गहाय चिट्ठइ । तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सहावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयाण सरि(त)याण सरि(स)-व्वयाणं एगाभरणगहियनिज्जोयाण कोडुंबियवरतरुणाण सहस्स सद्दावेह जाव सद्दा-वेंति । तए ण (ते) कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दा-विया समाणा हट्ठा ण्हाया एगाभरणगहियणिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति २ त्ता सेणिय राय एव वयासी-सदिसह ण देवाणुप्पिया ! ज ण अम्हेहिं करणिज्ज । तए णं से सेणिए राया त कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एव वयासी-गच्छह ण (तुब्भे)देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं परिव(हे)-हह । तए ण त कोडुंबियवरतरुणसहस्स सेणिएण रन्ना एव वुत्त सत हट्ठ तुट्ठ तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीय परिवहइ । तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीय दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमगलया तप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया, तजहा-सोत्थिय सिरिवच्छ नंदियावत्त वद्धमाणग भद्दासण कलस मच्छ दप्पण जाव बहवे अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अण-वरय अभिनदता य अभिथुणता य एव वयासी-जय २ नंदा ! जय २ भद्दा ! जय नंदा ! भद्द ते अजि(य)याइं जिणाहि इंदियाइं जिय च पालेहि समणधम्म जियविग्घोऽविय वसाहि त देव ! सिद्धिमज्झे निहणाहि रागदोसमल्ले तवेण धिइ-धणियबद्धकच्छे मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेण उत्तमेण सुक्केण अप्पमत्तो पावय वितिमिरमणुत्तरं केवल नाण गच्छ य मोक्खं परम पय सासय च अयल हंता परीसहच(मु)मूण अभीओ परीसहोवसग्गाण धम्मे ते अविग्घ भवउ-त्तिकट्टु पुणो २ मगलजयसद्द पउजति । तए ण से मेहे कुमारे रायगिहस्स नयरस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव गुणसिलए उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ॥ २९ ॥ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगव महावीरे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेंति २ त्ता वंदति नमसति वं० २ त्ता एव वयासी-एस ण देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्ह एगे

पुत्ते इट्ठे कंते जाव जीवियऊसासए हिययणंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण दरिसणयाए। से जहाणामए उप्पले इ वा पउमे इ वा कुमुदे इ वा पंके जाए जले संवड्ढिए णोवलिप्पइ पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संवुड्ढे णोवलिप्पइ कामरएणं णोवलिप्पइ भोगरएणं एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मण(जर)मरणाणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सभिक्खं। तए णं से समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ। तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ। तए णं (से) तस्स मेहकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छइ २ त्ता हारवारिधारसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुयमाणी २ रोयमाणी २ कंदमाणी २ विलवमाणी २ एवं वयासी–जइयव्वं जाया! घडियव्वं जाया! परक्कमियव्वं जाया! अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएयव्वं अम्हंपि णं ए(मे)सेव मग्गे भवउ–त्तिकट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वं० २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ १२ ॥ तए णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ त्ता जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ णमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी–आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य। से जहाणामए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमइ–एस मे णित्थारिए समाणे पच्छा पुरा (लोए) हियाए सुहाए खे(ख)माए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ–एवामेव ममवि एगे आयाभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे एस मे णित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सइ, तं इच्छामि णं देवाणुप्पि(या)एहिं सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं सेहावियं सिक्खावियं सयमेव आयारगोयरविणयवेणइय-चरणकरणजायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं। तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ सयमेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ एवं देवाणुप्पिया! गंतव्वं चिट्ठियव्वं णिसीयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो

पमाएयव्वं। तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए इम एयारूव धम्मियं उवएस निसम्म सम्म पडिवज्जइ तमाणाए तह गच्छइ तह चिट्ठइ जाव उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमइ ॥ ३१ ॥ ज दिवस च ण मेहे कुमारे मुंडे भवित्ता अ(आ)गाराओ अणगारियं पव्वइए तस्स णं दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयसि समणाण निग्गयाणं अहाराइणियाए सेज्जासंथारएसु विभज्जमाणेसु मेहकुमारस्स दारमूले सेज्जासथारए जाए यावि होत्था। तए णं समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स य पासवणस्स य अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेह कुमारं हत्थेहिं सघट्टेंति एव पाएहिं सीसे पोट्टे कायसि अप्पेगइया ओलर्डेति अप्पेगइया पोलर्डेति अप्पेगइया पायरयरेणुगुडियं करेंति। एव महालिय च ण रयणिं मेहे कुमारे नो सचाएइ खणमवि अ(च्छि)च्छी निमीलित्तए। तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एव खलु अह सेणियस्स रन्नो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए मेहे जाव सवणयाए, त जया ण अह अगारमज्झे वसामि तया ण मम समणा निग्गथा आढायति परिजाणति सक्कारेंति सम्माणेंति अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइ वागरणाइं आइक्खति इट्ठाहिं कताहिं वग्गूहिं आलवेंति सलवेंति, जप्पभिइ च ण अह मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए तप्पभिइ च ण म(म)म समणा नो आढायति जाव नो सलवेंति, अदुत्तरं च ण ममं समणा निग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि वायणाए पुच्छणाए जाव महालिय च ण रत्तिं नो सचाएमि अच्छि निमि(ला)ल्लावेत्तए, तं सेय खलु मज्झ कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलते समण भगव महावीर आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झे वसित्तए–त्तिकट्टु एव सपेहेइ २ त्ता अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए निरयपडिरूविय च ण त रयणिं खवेइ २ त्ता कल्ल पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव तेयसा जलते जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ २ त्ता वंदइ नमसइ व० २ त्ता जाव पज्जुवासइ ॥ ३२ ॥ तए ण मेहाइ समणे भगव महावीरे मेहं कुमार एव वयासी–से नूणं तुम मेहा! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि समणेहिं निग्गंथेहिं वायणाए पुच्छणाए जाव महालिय च ण राइ नो सचाए(मि)सि मुहुत्तमवि अच्छि निमिल्लावेत्तए, तए ण तु(म्मं)ब्भे मेहा! इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–जया ण अह अगारमज्झे वसामि तया णं मम समणा निग्गथा आढायति जाव सलवेंति, जप्पभिइ च ण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि

तालुयअसपुडियतुण्पक्खिसंचेसु ससतेसु गिम्हउम्हउण्हवायखरफरुसचडमारुय सुक्कतणपत्तकयवरवाउलिभमतदि(त्त)त्तसभंतसावयाउलमिगतण्हावद्धचिंधपट्टेसु गिरि-वरेसु सवट्टिएसु तत्यमियपस(व)यसरीसिवेसु अवदालियवयणविवरनिल्लालियग्गजीहे महंततुंबइयपुण्णकण्णे संकुचियथोरपीवरकरे ऊसियनं(लं)गूले पीणाइयविरसरडियसद्देण फोडयंतेव अंबरतलं पायदद्दरएण कंपयंतेव मेइणितलं विणिम्मुयमाणे य सीयारं सव्वओ समंता वल्लिवियाणाइं छिंदमाणे रुक्खसहस्साइं तत्थ सुबहूणि नो(ल्ला)ल्लयंते विणट्ठरट्ठेव्व नरवरिंदे वायाइद्धेव्व पोए मंडलवाएव्व परिब्भमंते अभिक्खणं २ लिंडनियरं पमुंचमाणे २ बहूहिं हत्थीहि य जाव सद्धिं दिसोदिसिं विप्पलाइत्था। तत्थ णं तुमं मेहा! जुण्णे जराजज्जरियदेहे आउरे झंझिए पिवासिए दुब्बले किलंते नट्ठसुइए मूढदिसाए सयाओ जूहाओ विप्पहूणे वणदवजालापरद्धे उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परब्भाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए सव्वओ समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं अप्पोदयं पंकबहुलं अति(त्थि)त्थेणं पाणियपाए (उइण्णो) ओइण्णे। तत्थ णं तुमं मेहा! तीरमइगए पाणियं असंपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसण्णे। तत्थ णं तुमं मेहा! पाणियं पाइस्सामि–त्तिकट्टु हत्थं पसारेसि, से वि य ते हत्थे उदगं न पावइ। तए णं तुमं मेहा! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामि–त्तिकट्टु बलियतराय पंकंसि खुत्ते। तए णं तुमं मेहा! अन्नया कयाइ एगे चिरनिज्जूढे गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ करचरणदंतमुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे तं चेव महद्दहं पाणी(य पाएउ)यपाए समोयरइ। तए णं से कलभए तुमं पासइ २ त्ता तं पुव्ववेरं समरइ २ त्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तुमं तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठओ उच्छुभइ २ त्ता पुव्ववेरं निज्जाएइ २ त्ता हट्ठतुट्ठे पाणियं पियइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं तव मेहा! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भवित्था उज्जला विउला (तिउला) कक्खडा जाव दुरहियासा पित्तजरपरिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरित्था। तए णं तुमं मेहा! तं उज्जलं जाव दुरहियासं सत्तराइंदियं वेयणं वेदेसि सवीसं वाससयं परमाउं पालइत्ता अट्टवसट्टदुहट्टे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे गंगाए महानईए दाहिणे कूले विंझगिरिपायमूले एगेणं मत्तवरगंधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्छिंसि गयकलभए जणिए। तए णं सा गयकलभिया नवण्हं मासाणं वसंतमासम्मि तुमं पयाया। तए णं तुमं मेहा! गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था रत्तुप्पलरत्तसूमालए जासुमणारत्तपारिजत्तय-

विभूतियोंकी असिद्धता, अकिंचित्करता (अनावश्यकता) सिद्ध हो जाती है।

जिस प्रकार घुँघची, मूँगा आदिके वन्य और ग्रामीण आभूषणोंसे किसी सुन्दरीका सौन्दर्य विकृत दीखने लगता है उसी प्रकार अनेक अतिशयोंसे म० महावीरके चरित्रको विकृत कर दिया गया है। हर्षकी बात यही है कि जैन-शास्त्रोंमें अतिशयोंकी निरर्थकता आदिको सिद्ध करनेवाले उल्लेख मिलते हैं—अनेक सुप्रतिष्ठित आचार्य इन भक्ति-कल्प्य घटनाओंकी निःसारताकी घोषणा करते रहे हैं। यद्यपि वे भक्ति-कल्प्य बातोंका बहिष्कार नहीं कर सके, फिर भी जो कुछ वे कर सके वह बहुत था। यदि आजसे डेढ़-दो हजार वर्ष पहले इन अतिशयोंका कुछ मूल्य नहीं था तो इस वैज्ञानिक युगमें तो इनका मूल्य क्या हो सकता है? इसलिये अगर इन अप्रामाणिक और अनावश्यक घटनाओंको अलग करके हम म० महावीरके पवित्र चरित्रपर विचार करें तो हमें अपूर्व सात्विक आनन्द मिलेगा। इन भक्ति-कल्प्य राजस घटनाओंके पढ़नेसे हमें वास्तविक आनन्द नहीं मिलता, बल्कि एक तरहका नशा चढ़ता है। इस नशेमें हम म० महावीरके नामकी पूजा कर सकते हैं किन्तु जैनधर्मकी पूजा नहीं कर सकते।

यदि हम जैनधर्मको वैज्ञानिक धर्मके रूपमें देखना चाहते हैं तो हमें उसके साहित्यमेंसे यह 'अद्भुत रस' निकाल देना चाहिये। म० महावीरके जीवन-चरित्रमेंसे ही क्या, परन्तु जैनधर्मके अन्य अङ्गोंमें भी जो यह 'अद्भुत रस' बढ़ गया है अथवा जो शिष्योंको समझानेके लिये उदाहरणार्थ आया था और आज वैज्ञानिक सत्यके

संसारे परित्तीकए माणुस्साउए निबद्धे। तए णं से वणदवे अड्ढाइज्जाइं राइंदियाइं तं वणं झामेइ २ त्ता निट्ठिए उवरए उवसंते विज्झाए यावि होत्था। तए णं ते बहवे सीहा य जाव चिल्ललगा य तं वणदवं निट्ठियं जाव विज्झायं पासंति २ त्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता सव्वओ समंता विप्पसरित्था। तए णं ते बहवे हत्थी जाव छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता दिसोदिसिं विप्पसरित्था। तए णं तुमं मेहा! जुण्णे जराजज्जरियदेहे सिढिलवलितयापिणद्धगत्ते दुब्बले किलंते जुंजिए पिवासिए अत्थामे अबले अपरक्कमे अचंकमणो वा ठाणुखंडे वेगेण विप्पसरिस्सामि–त्तिकट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहए विव रययगिरिपब्भारे धरणितलंसि सव्वंगेहिं सन्निवइए। तए णं तव मेहा! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दाहवक्कंतीए यावि विहरसि। तए णं तुमं मेहा! तं उज्जलं जाव दुरहियासं तिन्नि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससयं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रायगिहे नयरे सेणियस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए ॥ ११ ॥ तए णं तुमं मेहा! आ(अ)णुपुव्वेणं गब्भवासाओ निक्खंते समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते मम अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए। तं जइ ता(जा)व तुमं मेहा! तिरिक्खजोणियभावमुवगएणं अपडिलद्धसम्मत्तरयणलंभेणं से पाए पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा चेव संधारिए नो चेव णं निक्खित्ते किमंग पुण तुमं मेहा! इयाणिं विपुलकुलसमुब्भवेणं निरुवहयसरीर(दंत)लद्धपंचिंदिएणं एवं उट्ठाणबलवीरियपुरिस(क्का)रपरक्कमसंजुत्तेणं म(म)मं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे समणाणं निग्गंथाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए जाव धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य पायसंघट्टणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि! तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेहिं परिणामेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाईसरणे समुप्पन्ने एयमट्ठं सम्मं अभिसमेइ। तए णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वजाईसरणे दुगुणाणीयसंवेगे आणंदंसुपुण्णमुहे हरिसवसेणं धाराहयकलंबगं पिव समूससियरोमकूवे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी–

महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ त्ता दोच्चंपि मंडलं घाएसि, एवं चरिमवासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निव(इ)यमाणंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ त्ता तच्चंपि मंडलघायं करेसि जं तत्थ तणं वा जाव सुहंसुहेण विहरसि। अह मेहा! तुमं गइंदभावम्मि वट्टमा(णे)णो कमेण नलिणिवणवि(वह)हवणगरे हेमंते कुंदलोद्धउद्धुयतुसारपउरम्मि अइक्कंते अहिणवे गिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमा(णे)णो वणेसु वणकरेणुविविहदिन्नकयपंसुघाओ तुमं उउयकुसुमकयचामरकण्णपूरपरिमंडियाभिरामो मयवससविगसंतकडतडकिलिन्नगंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरिवारिओ उउसमत्तजणियसोहो काले दिणयरकरपयंडे परिसोसियतरुवरसि(रि)हरभीमतरदंसणिज्जे भिंगाररवंतभेरवरवे नाणाविहपत्तकट्ठतणकयवरु(द्ध)द्धुयपइमारुयाइद्धनहयलदुमगणे वाउलि(या)दारुणतरे तण्हावसदोसदूसियभमंतविविहसावयसमाउले भीमदरिसणिज्जे वट्टंते दारुणम्मि गिम्हे मारुयवसपसरपसरियवियंभिएणं अब्भहियभीमभेरवरवप्पगारेणं महुधारापडियसित्तउद्धायमाण(धग)धगधगेंतसद्दु(द्धु)द्धएणं दित्ततरसफुलिंगेणं धूममालाउलेणं सावयसयंतकरणेणं (अब्भहिय)वणदवेणं जालालोवियनिरुद्धधूमंधकारभीओ आयवालोयमहंततुंबइयपुण्णकण्णो आकुंचियथोरपीवरकरो भयवसभयंतदित्तनयणो वेगेणं महामेहोव्व वाय(पव)णोल्लियमहल्लरूवो जे(णेव)णं कओ ते(ण) पुरा दवग्गिभयभीयहियएणं अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोद्देसो दवग्गिसंताणकारणट्ठा (ए) जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए। एक्को ताव एस गमो। तए णं तुमं मेहा! अन्नया कयाई कमेणं पंचसु उऊसु समइक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायवसंघससमुट्ठिएणं जाव संवट्टिएसु मियपसुपक्खिसरीसिवे(सु) दिसोदिसिं विप्पलायमाणेसु तेहिं बहूहिं हत्थीहि य सद्धिं जेणेव (से) मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तत्थ णं अन्ने बहवे सीहा य वग्घा य विगा य दीविया अच्छा य तरच्छा य पारासरा य सरभा य सियाला विराला सुणहा कोला ससा कोकंतिया चित्ता चिल्लला पुव्वपविट्ठा अग्गिभयविद्दुया एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठंति। तए णं तुमं मेहा! जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ त्ता तेहिं बहूहिं सीहेहिं जाव चिल्ललेहि य एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठसि। तए णं तुमं मेहा! पाएणं गत्तं कंडुइस्सामीतिकट्टु पाए उक्खित्ते, तंसि च णं अंतरंसि अन्नेहिं बलवंतेहिं सत्तेहिं पणो(लि)ल्लिज्जमाणे २ ससए अणुप्पविट्ठे। तए णं तुमं मेहा! गायं कंडुइत्ता पुणरवि पायं पडिनि(क्खमि)क्खेविस्सामि-त्तिकट्टु तं ससयं अणुपविट्ठं पाससि २ त्ता पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए से पाए अंतरा चेव संधारिए नो चेव णं निक्खित्ते। तए णं तुमं मेहा! ताए पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए

आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणं। दोच्चं मासं छट्ठंछट्ठेणं। तच्चं मासं अट्ठमंअट्ठमेणं। चउत्थं मासं दसमंदसमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणं। पंचमं मासं दुवालसमंदुवालसमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणं। एवं खलु एएणं अभिलावेणं छट्ठे चोद्दसमं २ सत्तमे सोलसमं २ अट्ठमे अट्ठारसमं २ नवमे वीसइमं २ दसमे बावीसइमं २ एक्कारसमे चउव्वीसइमं २ बारसमे छव्वीसइमं २ तेरसमे अट्ठावीसइमं २ चोद्दसमे तीसइमं २ पन्नर(पंचद)समे बत्तीसइमं २ सोलसमे(मासे) चउत्तीसइमं २ अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए (णं) सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण य अवाउडएण य। तए णं से मेहे अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ अहासुत्तं अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १५ ॥ तए णं से मेहे अणगारे तेणं उरालेणं विपुलेणं सस्सिरीएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं उदग्गेणं उदारएणं उत्तमेणं महाणुभावेणं तवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे लुक्खे निम्मंसे निस्सोणिए किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था जीवंजीवेणं गच्छइ जीवंजीवेणं चिट्ठइ भासं भासित्ता गिला(य)इ भासं भासमाणे गिलायइ भासं भासिस्सामित्ति गिलायइ। से जहानामए इंगालसगडियाइ वा कट्ठसगडियाइ वा पत्तसगडियाइ वा तिलसगडियाइ वा एरंडकट्ठसगडियाइ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठइ एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठइ उवचिए तवेणं अवचिए मंससोणिएणं हुयासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थयरे जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स रत्तिं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं तहेव जाव भासं भासिस्सामित्ति गिलामि तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धा धिई संवेगे तं जाव

अज्जप्पभिई णं भंते ! मम दो अच्छीणि मोत्तूण अवसेसे काए समणाणं निग्गंथाणं निसट्ठे-त्तिकट्टु पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! इयाणिं दोच्चंपि सयमेव पव्वाविय सयमेव मुंडाविय जाव सयमेव आयारगोयरं जायामायावत्तियं धम्ममाइक्ख(ह)न्तु । तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ जाव जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ-एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं एवं चिट्ठियव्वं एवं णिसीयव्वं एवं तुयट्टियव्वं एवं भुंजियव्वं एवं भासियव्वं उट्ठाय २ पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमियव्वं । तए णं से मेहे समणस्स भगवओ महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडि(च्छइ)वज्जइ २ त्ता तह (चिट्ठइ) गच्छइ जाव संजमेणं संजमइ । तए णं से मेहे अणगारे जाए इरियासमिए अणगारवण्णओ भाणियव्वो । तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए तहा(एया)रूवाणं थेराणं सामाइयमाइयाणि एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ २ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलयाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ३४ ॥ तए णं से मेहे अणगारे अन्नया कयाइ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह । तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ सम्मं काएणं फासेत्ता पालित्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह । जहा पढमाए अभिलावो तहा दोच्चाए तच्चाए चउत्थाए पंचमाए छम्मासियाए सत्तमासियाए पढमसत्तरा(य)इंदियाए दोच्चं सत्तराइंदियाए तइयं सत्तराइंदियाए अहोराइंदियाएवि एगराइंदियाएवि । तए णं से मेहे अणगारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह । तए णं से मेहे अणगारे पढमं मासं चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे

दंसणसल्लं पच्चक्खामि सव्वं असणपाणखाइमसाइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतीतिकट्टु एयं पि य णं चरमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि-त्तिकट्टु संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ। तए णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए वेयावडियं करेंति। तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवरिसाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता आलोइयपडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते आणुपुव्वेणं कालगए। तए णं(ते) थेरा भगवंतो मेहं अणगारं आणुपुव्वेणं कालगयं पासेंति २ त्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति २ त्ता मेहस्स आयारभंडगं गेण्हंति २ त्ता विउलाओ पव्वयाओ सणियं २ पच्चोरुहंति २ त्ता जेणामेव गुणसिलए उज्जाणे जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति वं० २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए। से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ २ त्ता सयमेव मेघघणसन्निगासं पुढविसिलं (पट्टयं) पडिलेहेइ २ त्ता भत्तपाणपडियाइक्खिए अणुपुव्वेणं कालगए। एस णं देवाणुप्पिया! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए ॥ १६ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे से णं भंते! मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने? गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा! मम अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ २ त्ता बारस भिक्खुपडिमाओ गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं काएणं फासेत्ता जाव किट्टेत्ता मए अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेइ २ त्ता तहारूवेहिं जाव विउलं पव्वयं दुरूहइ २ त्ता दब्भसंथारगं संथरइ २ त्ता दब्भसंथारोवगए सयमेव पंचमहव्वए उच्चारेइ बारस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता आलोइयपडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरगहगणणक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं

त्ता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धा धिई संवेगे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ ताव(ताव)मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलते (सूरे) समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णायस्स समाणस्स सयमेव पंच महव्वयाइं आ(रु)रुहित्ता गोयमाइए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं २ दुरूहित्ता सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहित्ता संलेहणाझूसणा(ए)झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए। एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ। मे(हे त्ति)हाइ समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वयासी–से नूणं तव मेहा! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं जाव जेणेव अ(इ)हं तेणेव हव्वमागए। से नूणं मेहा! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठ जाव हियए उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ २ त्ता गोयमाइ समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेइ २ त्ता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ २ त्ता सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ त्ता दब्भसंथारगं संथरइ २ त्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं–तिकट्टु वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी–पुव्विं पि(य) णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए मुसावाए अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुन्ने परपरिवाए अरइरई मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए। इयाणिं पि णं अहं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव मिच्छा-

बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहू(इ)इं जोयणकोडीओ बहूइं जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलंतगमहासुक्कसहस्साराणयपाणयारणच्चुए तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्जविमा(ण)णावाससए वीईवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं ते(य)त्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं मेहस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। एस णं भंते! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं अप्पोपालंभनिमित्तं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ ३७ ॥ गाहा—महुरेहिं निउणेहिं वयणेहिं चोययंति आयरिया। सीसे कहिंचि खलिए जह मेहमुणिं महावीरो ॥ १ ॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स णं भंते! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था वण्णओ। [तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था महया वण्णओ] त(त्थ)स्स णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं उज्जाणे होत्था वण्णओ। तस्स णं गुणसिलयस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे (पडिय) जिण्णुज्जाणे यावि होत्था विणट्ठदेवउले परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिवच्छच्छाइए अणेगवालसयसंकणिज्जे यावि होत्था। तस्स णं जिण्णुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे भग्गकूवए यावि होत्था। तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था किण्हे किण्होभासे जाव रम्मे महामेहनिउरंबभूए बहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य (तणेहि य) कुसेहि य खाणुएहि य संछण्णे पलिच्छन्ने अंतो झुसिरे बाहिं गंभीरे अणेगवालसयसंकणिज्जे यावि होत्था ॥ ३८ ॥ तत्थ णं रायगिहे नयरे ध(णे)ण्णे नामं सत्थवाहे अड्ढे दित्ते जाव विउलभत्तपाणे। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगी ससिसोमागारा कंता पियदंसणा सुरूवा करयलपरिमियतिवलियमज्झा कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइ(य)रयणियरपडिपुण्णसोमवयणा सिंगारागारचारुवेसा जाव पडिरूवा वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया

अम्मयाओ जाव सुलद्धे णं माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं जासिं मन्ने नियगकुच्छिसंभूयाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपयंपियाइं थणमू(ल)ला कक्खदेसभागं अभिसरमाणाइं मुद्धयाइं थणयं पि(व)यंति तओ य कोमलकमलोव-मेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे निवेसियाइं देंति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिए। (त) अहं णं अधन्ना अपुण्णा अ[कय]लक्खणा (अकयपुण्णा) एत्तो एगमवि न पत्ता। तं सेयं मम कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते धण्णं सत्थवाहं आपुच्छित्ता धण्णेण सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहु विपुलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता सुबहु पुप्फ(वत्थ)गंधमल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्तनाइनियगसयण-संबंधिपरिजणमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नयरस्स बहिया नागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इंदाणि य खंदाणि य रुद्दाणि य सि(से)वाणि य वेसमणाणि य तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य महरिहं पुप्फच्चणियं करेत्ता जन्नु(जाणु)पायपडियाए एवं वइत्तए-जइ णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं वा दारिगं वा पयायामि तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खय-णिहिं च अणुवड्ढेमि त्तिकट्टु उवाइयं उवाइत्तए। एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते जेणामेव धण्णे सत्थवाहे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं जाव देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिए, तं णं अहं अहन्ना अपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी विपुलं असणं ४ जाव अणुवड्ढेमि उवाइयं क(रे)रित्तए। तए णं धण्णे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी-मम पि य णं (खलु) देवाणुप्पिए! एस चेव मणोरहे-कहं णं तुमं दारगं वा दारियं वा पयाए(ज)जासि (?) भद्दाए सत्थवाहीए एयमट्ठं अणुजाणइ। तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हयहियया विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता सुबहुं पुप्फगंध(वत्थ)मल्लालंकारं गेण्हइ २ त्ता सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ २ त्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहु पुप्फ जाव मल्लालंकारं ठवेइ २ त्ता पुक्खरिणिं ओगाहेइ २ त्ता जलमज्जणं करेइ जल(कीड)किड्डं करेइ २ त्ता ण्हाया उल्लपडसाडिगा जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ २ त्ता पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ २ त्ता तं सुबहु पुप्फ[वत्थ]गंधमल्लं गेण्हइ २ त्ता जेणामेव नागघरए (य) जाव वेसमणघरए य तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता तत्थ णं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ ईसिं पच्चुन्नमइ

इसी प्रकार नभोयान शब्दका अर्थ भी इस तरहसे करना चाहिये जिससे हिंसा न हो।

आचार्य विद्यानन्द इस बातको माननेके लिये तयार नहीं हैं कि जैन-तीर्थंकरका देवागम नभोयान जैसा है वैसा दूसरोंका नहीं है। वे विभूतियाँ वे इनमें और उनमें एक सरीखी मानते हैं। इसलिये उनका कहना है कि—

'कोई कोई कहते हैं कि 'जैसी विभूतियाँ तीर्थंकरमें पाई जाती हैं वैसी मायावियोंमें नहीं पाई जातीं' परन्तु यह बात ठीक नहीं है। क्योंकि किस प्रमाणसे यह बात सिद्ध की जायगी कि मायावियोंमें वे विभूतियाँ नहीं पाई जातीं? प्रत्यक्ष और अनुमानसे तो हम इस बातको साबित कर नहीं सकते। रहा आगम, सो आगमकी सत्यताका प्रमाण क्या है? अगर प्रमाणसे आगमकी सचाई सिद्ध की जाय उससे विभूतियाँ सिद्ध की जावें और विभूतियोंसे भगवान्का महत्त्व सिद्ध किया जाय तो इस परम्परा-परिश्रमसे क्या फायदा है? इससे अच्छा तो यही है कि आगम और विभूतियोंको सिद्ध करनेके झंझटसे बचकर भगवान्के महत्त्वको ही सिद्ध किया जाय।'

इस वर्णनसे देवागम आदि शब्दोंका वास्तविक अर्थ, और इन

१—यथाविधविभूतयस्तीर्थंकरे समापतन्ति तादृश्यो मायाविष्वपि न इत्यस्य महानसाम्यम् अस्ति इति न्यायवचनमप्यविशेषाभावात् इति चेत्, कोऽपि कुत प्रमाणात्प्रत्यक्षेतु विपक्षात्समर्थिन प्रतीयात्? न प्रत्यक्षस्यानुमानादास्य तद्विषयत्वात्। नाप्यागमप्रामाण्यात्प्रत्यक्षविषयत्वा अतिप्रसंगात्। प्रमाणान्तरसिद्धप्रामाण्यादागमात्तत्प्रतिपत्तौ तदा प्रतिपत्तिरस्तु परम्परापरिश्रमपरिहारश्चैव प्रतिपत्तुः स्यात्।

—अष्टसहस्री।

दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जायकम्मं करेंति २ त्ता तहेव जाव विपुलं असण ४ उवक्खडावेंति २ त्ता तहेव मित्तनाइनियग० भोयावेत्ता अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेंति-जम्हा णं अम्हं इमे दारए बहूण नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य उवाइयलद्धे (ण) त होउ ण अम्ह इमे दारए देवदिन्ने नामेण। तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति देवदिन्नेत्ति। तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेंति ॥ ४३ ॥ तए ण से पथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए, देवदिन्नं दार(य)ग कडीए गेण्हइ २ त्ता बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे (अभिरममाणे) अभिरमइ। तए ण सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ देवदिन्न दारयं ण्हाय सव्वालंकारविभूसियं करेइ २ त्ता पथयस्स दासचेडयस्स हत्थयंसि दलयइ। तए ण से पथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्न दारगं कडीए गेण्हइ २ त्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता देवदिन्न दारग एगंते ठावेइ २ त्ता बहूहिं डिंभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि (होत्था) विहरइ। इमं च ण विजए तक्करे रायगिहस्स नयरस्स बहूणि वाराणि य अववाराणि य तहेव जाव आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता देवदिन्न दारग सव्वालंकारविभूसियं पासइ २ त्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने पथ(यं)ग दासचेड पमत्त पासइ २ त्ता दिसालोय करेइ २ त्ता देवदिन्न दारग गेण्हइ २ त्ता कक्खंसि अल्लियावेइ २ त्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ २ त्ता सिग्घ तुरियं चवलं वेइयं रायगिहस्स नगरस्स अवदारेण निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता देवदिन्न दारय जीवियाओ ववरोवेइ २ त्ता आभरणालंकार गेण्हइ २ त्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरी(रग)रं निप्पाण निच्चेट्ठ जी(विय)वविप्पजढं भग्गकूवए पक्खिवइ २ त्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मालुयाकच्छयं अणुप्पविसइ २ त्ता निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवस ख(खि)वेमाणे चिट्ठइ ॥४४॥ तए ण से पथए दासचेडे तओ मुहुत्ततरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता देवदिन्न दारग तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ २ त्ता देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव

निवा(ए)यमाणा २ छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पक्किरमाणा २ महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयंति–एस णं देवाणुप्पिया! विजए नामं तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी बालघायए बालमारए, त नो खलु देवाणुप्पिया! एयस्स केइ राया वा (रायपुत्ते वा) रायमच्चे वा अवरज्झइ (एत्यट्ठे) नन्नत्थ अप्पणो सयाइं कम्माइं अवरज्झंति–त्तिकट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति २ त्ता हडिबंधणं करेंति २ त्ता भत्तपाणनिरोहं करेंति २ त्ता तिसझं कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा २ विहरंति। तए णं से धण्णे सत्थवाहे मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरियणेण सद्धिं रोयमाणे जाव विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स महया इड्ढीसक्कार-समुदएणं नी(नि)हरणं करे(न्ति)इ २ त्ता बहूइं लोइयाइं मय(ग)किच्चाइं करेइ २ त्ता केणइ कालतरेणं अवगयसोए जाए यावि होत्था ॥ ४६ ॥ तए ण से धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइ ल(हु)हुसयंसि रायावराहंसि संपलत्ते जाए यावि होत्था। तए णं ते नगरगुत्तिया धण्ण सत्थवाहं गेण्हंति २ त्ता जेणेव चार(गे)ए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता चारग अणुपवेसंति २ त्ता विजएण तक्करेणं सद्धिं एगयओ हडिबंधणं करेंति। तए णं सा भद्दा भारिया कल्लं जाव जलंते विपुल असणं ४ उवक्खडेइ २ त्ता भोयणपिंडए करेइ २ त्ता भो(भा)यणाइं पक्खिवइ २ त्ता लंछिय-मुद्दियं करेइ २ त्ता एगं च सुरभिवारिपडिपुण्ण दगवारय करेइ २ त्ता पंथय दासचेड सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–गच्छ(ह) णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं विपुल असण ४ गहाय चारगसालाए धण्णस्स सत्थवाहस्स उवणेहि। तए णं से पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे त भोयणपिंड(य)ग त च सुरभिवरवारिपडिपुण्ण दगवारयं गेण्हइ २ त्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता रायगिहं नगर मज्झमज्झेणं जेणेव चारगसाला जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भोयणपि(डि)डयं ठावेइ २ त्ता उल्लंछेइ २ त्ता (भायणाइं) भोयण गेण्हइ २ त्ता भायणाइं धोवेइ २ त्ता हत्थसोय दलयइ २ त्ता धण्णं सत्थवाह तेण विपुलेण असणेण ४ परिवेसेइ। तए ण से विजए तक्करे धण्णं सत्थवाह एव वयासी–तु(म)ब्भे णं देवाणुप्पिया! म(म)म एयाओ विपुलाओ असणाओ ४ संविभाग करेहि। तए णं से धण्णे सत्थवाहे विजय तक्करं एव वयासी–अवियाइं अह विजया! एय विपुल असणं ४ का(या)गाण वा सुणगाणं वा दलएज्जा उक्कुरुडियाए वा ण छड्डेज्जा नो चेव ण तव पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडिणीयस्स पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असणाओ ४ संविभागं करेज्जामि। तए णं से धण्णे सत्थवाहे तं विपुलं असणं ४ आहारेइ २ त्ता त पंथगं पडिविसज्जेइ। तए णं से पंथए दासचे-

वेइं भोयणपिडगं गिण्हइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स तं विउलं असणं ४ आहारियस्स समाणस्स उच्चारपासवणे णं उव्वाहित्था। तए णं से धण्णे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी-एहि ताव विजया! एगंतमवक्कमामो जेणं अहं उच्चारपासवणं परिट्ठवेमि। तए णं से विजए तक्करे धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी-तुब्भं देवाणुप्पिया! विउलं असणं ४ आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा पासवणे वा ममं णं देवाणुप्पिया! इमेहिं बहूहिं कसप्पहारेहि य जाव लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणस्स नत्थि केइ उच्चारे वा पासवणे वा, तं छंदेणं तुमं देवाणुप्पिया! एगंते अवक्कमित्ता उच्चारपासवणं परिट्ठवेहि। तए णं से धण्णे सत्थवाहे विजएणं तक्करेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे मुहुत्तंतरस्स बलियतरागं उच्चारपासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे विजयं तक्करं एवं वयासी-एहि ताव विजया! जाव अवक्कमामो। तए णं से विजए धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी-जइ णं तुमं देवाणुप्पिया! ता(त)ओ विउलाओ असणाओ ४ संविभागं करेहि तओ हं तु(मे)म्हेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमामि। तए णं से धण्णे सत्थवाहे विजयं एवं वयासी-अहं णं तुब्भं ताओ विउलाओ असणाओ ४ संविभागं करिस्सामि। तए णं से विजए धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ। तए णं से विजए धण्णेणं सद्धिं एगंतं अवक(मे)मइ उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ आयंते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाणं उवसंकमित्ताणं विहरइ। तए णं सा भद्दा कल्लं जाव जलंते विउलं असणं ४ जाव परिवेसेइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ताओ विउलाओ असणाओ ४ संविभागं करेइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे पंथयं दासचेडं विसज्जेइ। तए णं से पंथए भोयणपिडगं गहाय चार(रा)गसालाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गि(गे)हे जेणेव भद्दा (भारिया) सत्थवाही तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भद्दं सत्थवाहिणिं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! धण्णे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ताओ विउलाओ असणाओ ४ संविभागं करेइ ॥ ४७ ॥ तए णं सा भद्दा सत्थवाही पंथयस्स दासचेडयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ता रुट्ठा जाव मिसिमिसेमा(मा)णी धण्णस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइं मित्तणाइनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सएण य अत्थसारेणं रायकज्जाओ अप्पाणं मोयावेइ २ त्ता चारगसालाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अलंकारियकम्मं क(का)रावेइ २ त्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता

अह धोयमट्टियं गेण्हइ २ त्ता पोक्खरिणीं ओगाहइ २ त्ता जलमज्जणं करेइ २ त्ता ण्हाए रायगिहं नगरं अणुप्पविसइ २ त्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं (त) धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासित्ता रायगिहे नयरे बहवे नियगसेट्ठिसत्थवाहपभि(त)इओ आढंति परिजाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अब्भुट्ठेंति सरीरकुस(ल)लोदंतं स-पुच्छंति। तए णं से धण्णे [सत्थवाहे] जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ। जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ तंजहा-दासाइ वा पेस्साइ वा भियगाइ वा भाइल्लगाइ वा (से) सा वि य णं धण्णं सत्थवाहं एज्ज(न्त)माणं पासइ २ त्ता पायवडिया(ए) खेमकुसलं पुच्छ(न्ति)इ। जावि य से तत्थ अब्भिंतरिया परिसा भवइ तंजहा-मायाइ वा पियाइ वा भायाइ वा भइणीइ वा सावि य णं धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ २ त्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता कंठाकंठियं अवयासिय बाहप्पमोक्खणं करेइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ। तए णं सा भद्दा धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ २ त्ता नो आढाइ नो परियाणाइ अणाढायमाणी अपरि-याणमाणी तुसिणीया परम्मुही संचिट्ठइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी-किं णं तुब्भं देवाणुप्पिए! न तुट्ठी वा न हरिसे वा नाणंदे वा जं मए सएणं अत्थसारेणं रायकज्जाओ अप्पाणं विमोइए। तए णं सा भद्दा धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी-कहं णं देवाणुप्पिया! मम तुट्ठी वा जाव आणंदे वा भविस्सइ जेणं तुमं मम पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असणाओ ४ संविभागं करेसि। तए णं से धण्णे भद्दं [भारियं] एवं वयासी-नो खलु देवाणुप्पिए! धम्मोत्ति वा तवोत्ति वा कयपडिकइयाइ वा लोगजत्ताइ वा नायएइ वा [स]घाडिएइ वा सहा-एइ वा सुहित्ति वा ताओ विपुलाओ असणाओ ४ संविभागे कए नन्नत्थ सरीरचिंताए। तए णं सा भद्दा धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणी ह(ट्ठतु)ट्ठा जाव आस-णाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता कंठाकंठिं अवयासेइ खेमकुसलं पुच्छइ २ त्ता ण्हाया विपु-लाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ। तए णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहिं बंधेहिं वहेहिं कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ने। से णं तत्थ नेरइए जाए काले कालोभासे जाव वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ। से णं तओ उव्वट्टित्ता अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ। एवामेव जंबू! जे णं अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे विपुलमणि(मु)मोत्तियधणकणगरयणसारेणं लुब्भइ से वि(य) एवं चेव

णं ४८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना कुल-संपन्ना जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा जाव जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए उज्जाणे जाव अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। परिसा निग्गया धम्मो कहिओ। तए णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना इहमागया इह-संपत्ता तं इच्छामि णं थेरे भगवंते वंदामि नमंसामि ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए पायविहार-चारेणं जेणेव गुणसिलए उज्जाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वंदइ नमंसइ। तए णं थेरा धण्णस्स विचित्तं धम्ममाइक्खंति। तए णं से धण्णे सत्थ-वाहे धम्मं सोच्चा एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते! निग्गंथे पावयणे जाव पव्वइए जाव बहूणि वासाणि सामण्णपरियायं पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खाइत्ता मासियाए संले-हणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ २ त्ता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई प०। तत्थ णं धण्णस्सवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई प०। से णं धण्णे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ ॥ ४९ ॥ जहा णं जंबू! धण्णेणं सत्थवाहेणं णो धम्मोत्ति वा जाव विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असणपाण ४ संविभागे कए नन्नत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए एवामेव जंबू! जे णं अम्हं निग्गंथो वा २ जाव पव्वइए समाणे ववगयण्हाण(उम्म)मद्दणपुप्फगंधमल्लालंकारविभूसे इमस्स ओरालियसरीरस्स नो वण्णहेउं वा रूवहेउं वा (बल)विसयहेउं वा [तं विपुलं] असणं ४ आहारमाहारेइ नन्नत्थ णाणदंसणचरित्ताणं वहण(ट्ठ)याए से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं (बहूणं) समणीणं (बहूणं) सावयाण य सावियाण य अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे भवइ। परलोए वि य णं नो (आगच्छइ) बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिय(य)उप्पायणाणि य वसणुप्पा(ड)यणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ अणाईयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ जहा व से धण्णे सत्थवाहे। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स नाय-ज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ ५० ॥ गाहा-सिवसाहणेसु आहारविरहिओ जं न वट्टए देहो। तम्हा धण्णोव्व विजयं साहू तं तेण पोसेज्जा ॥ १ ॥ बीयं अज्झयणं समत्तं ॥

जइ णं भंते! समणेणं २ जाव संपत्तेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स नायाधम्मकहाणं

अयमट्ठे पन्नत्ते तइअस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था वण्णओ। तीसे णं चंपाए. नयरीए वहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए सुभूमिभाए नाम उज्जाणे होत्था स(व्वो)व्वउयपुप्फफलसमिद्धे सुरम्मे नंदणवणे इव सुहसुरभिसीयलच्छायाए समणुवद्धे। तस्स णं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तर(ओ)पुरत्थिमे एगदेसंमि मालुयाकच्छए होत्था वण्णओ। तत्थ णं एगा व(र)णम(यू)ऊरी दो पुट्ठे परियागए पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरी-अंडए पसवइ २ त्ता सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी स(वि)चिट्ठेमाणी विहरइ। तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति तंजहा-जिणदत्तपुत्ते य सागरदत्तपुत्ते य सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया सहदारदरिसी अन्नमन्नमणुर(त्तया)त्ता अन्नमन्नमणुव्व(य)या अन्नमन्नच्छंदाणुवत्तया अन्नमन्नहियइच्छियकारया अन्नमन्नेसु गिहेसु(किच्चाइ) कम्माइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥ ५१ ॥ तए णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कयाई एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निसण्णाणं सन्निविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-जन्नं देवाणुप्पिया ! अम्हं सुहं वा दु(क्खं)हं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ तं णं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा नित्थरियव्वं-तिकट्टु अन्नमन्नमेयारूवं संगारं पडिसुणेंति २ त्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥५२॥ तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया परिवसइ अड्ढा जाव भत्तपाणा चउसट्ठिकलापंडिया चउसट्ठिगणियागुणोववेया अउणत्ती(सं)सविसेसे रममाणी एक्कवीसरइगुणप्पहाणा वत्तीसपुरिसोवयारकुसला नवंगसुत्तपडिवोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा संगयगयहसिय जाव ऊसिय(झ)ज्झया सहस्सलंभा विदिन्नछत्तचामरवाल(वि)वीयणिया कण्णीरहप्पयाया(या) वि होत्था वहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ। तए णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कयाई पु(व्वरत्तावरत्त)व्वावरण्हकालसमयंसि जिमियभुत्तुत्तरागयाणं समाणाणं आयन्ताणं चोक्खाणं परमसुइभूयाणं सुहासणवरगयाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-(तं) सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फगंधवत्थं गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स (उज्जाणस्स) उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणाणं विहरित्तए-त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता कल्लं पाउ(ब्भूए)प्पभायाए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं ४ उवक्ख(डे)डावेह २ त्ता तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फं गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदापुक्खरिणी तेणामेव उवागच्छह २ त्ता नंदाए

पोक्खरिणीए अदूरसामंते थूणामंडवं आहणह २ ता आसियसम्मज्जिओवलित्तं सुगंध जाव कलियं करेह २ ता अ(म्हे)म्हं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह जाव चिट्ठंति। तए णं [ते] सत्थवाहदारगा दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव लहुकरणजुत्तजोइयं समखुरवालिहाणं समलिहियतिक्खग्गसिंगएहिं रययामयघंटसुत्तरज्जुपवरकंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयणघंटियाजालपरिगयं पवरलक्खणोववेयं जु(त्त)त्तामेव पवहणं उवणेह। ते वि तहेव उवणेंति। तए णं ते सत्थवाहदारगा ण्हाया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा पवहणं दुरुहंति २ ता जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति २ ता पवहणाओ पच्चोरुहंति २ ता देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुप्पविसंति। तए णं सा देवदत्ता गणिया [ते] सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ २ ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ २ ता ते सत्थवाहदारए एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! किमिहागमणप्पओयणं? तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्तं गणियं एवं वयासी-इच्छामो णं देवाणुप्पिए! तु(म्हे)म्हेहिं सद्धिं सुभूमिभागस्स (उज्जाणस्स) उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्तए। तए णं सा देवदत्ता तेसिं सत्थवाहदारगाणं एयमट्ठं पडिसुणेइ २ ता ण्हाया किं ते पवर जाव सिरिसमाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव सभा(समा)गया। तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं जाणं दुरुहंति २ ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदापोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति २ ता पवहणाओ पच्चोरुहंति २ ता नंदापोक्खरिणिं ओगाहिंति २ ता जलमज्जणं करेंति जलकिड्डं करेंति ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं पच्चुत्तरंति जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति २ ता थूणामंडवं अणुप्पविसंति २ ता सव्वालंका(रि)रविभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं तं विउलं असणं ४ धूवपुप्फगंधवत्थं आसाएमाणा वि(वी)साएमाणा (परिभाएमाणा) परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा (आयंता) देवदत्ताए सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥ ५३ ॥ तए णं ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिनिक्खमंति २ ता हत्थसंगेल्लीए सुभूमिभागे बहूसु आलिघरएसु य कयलीघरएसु य लयाघरएसु य अच्छणघरएसु य पेच्छणघरएसु य पसाहणघरएसु य मोहणघरएसु य सालघरएसु य जालघरएसु य कुसुमघरएसु य उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥ ५४ ॥ तए णं ते सत्थवाहदारगा जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं सा वणमऊरी ते सत्थवाहदारए

एज्जमाणे पासइ २ त्ता भीया तत्था० महया २ सद्देणं केकारवं विणिम्मुयमाणी २ मालुयाकच्छाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता एगंसि रुक्खडालयंसि ठिचा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छं च अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी २ चिट्ठइ। तए णं ते सत्थवाहदारगा अन्नमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी-जहा णं देवाणुप्पिया! एसा वणमऊरी अम्हे एज्जमा(णा)णे पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महया २ सद्देणं जाव अ(म्हे)म्ह मालुयाकच्छयं च पेच्छमाणी २ चिट्ठइ तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं-त्तिकट्टु मालुयाकच्छयं अंतो अणुप्पविसंति २ त्ता तत्थ णं दो पुट्ठे परियागए जाव पासित्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी-सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे वणमऊरी-अंडए साणं जाइमंताणं कुक्कुडियाणं अंडएसु (अ)पक्खिवावित्तए। तए णं ताओ जाइमं-ताओ कुक्कुडियाओ ए(ता)ए अंडए सए य अंडए सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणीओ संगोवेमाणीओ विहरिस्संति। तए णं अम्हं ए(त्थ)त्थ दो कीलावणगा मऊरपोयगा भविस्संति-त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता सए सए दासचेडए सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! इमे अंडए गहाय सगाणं जाइमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह जाव ते (वि) पक्खिवेंति। तए णं ते सत्थवाहदारगा देवद-त्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स (उज्जाणस्स) उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्ता तमेव जाणं दुरूढा समाणा जेणेव चंपा नयरी जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता देवदत्ताए गिहं अणुप्पविसंति २ त्ता देवदत्ताए गणियाए विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति २ त्ता सक्कारेंति सम्माणेंति स० २ त्ता देवदत्ताए गिहाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता जेणेव सयाइं २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥५५॥ त(ए)त्थ णं जे से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए से णं कल्लं जाव जलंते जेणेव से वणमऊरीअंडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तंसि मऊरीअंडयंसि संकिए कंखिए विइगिच्छसमावन्ने भेयसमावन्ने कलुससमावन्ने किन्नं ममं एत्थ कीलावणए मऊ(री)रपोयए भविस्सइ उदाहु नो भविस्सइ-त्तिकट्टु तं मऊरीअंडयं अभिक्खणं २ उव्वत्तेइ परियत्तेइ आसारेइ संसारेइ चालेइ फंदेइ घट्टेइ खोभेइ अभिक्खणं २ कण्णमूलंसि टिट्टियावेइ। तए णं से वण-मऊरीअंडए अभिक्खणं २ उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे पोच्चडे जाए यावि होत्था। तए णं से सागर-दत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अन्नया कयाइ जेणेव से वणमऊरीअंडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तं मऊरीअंडयं पोच्चडमेव पासइ २ त्ता अहो णं मम (एस) एत्थ कीलावणए मऊ(री)रपोयए न जाए-त्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायइ। एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा २ आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे पंचमहव्वएसु जाव

छज्जीवणिकाएसु निग्गंथे पावयणे संकिए जाव कलुससमावन्ने से णं इह-भवे चेव
बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं साविगाणं हीलणिज्जे निंदणिज्जे
खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य
जाव अणुपरियट्ट(ए)इ ॥१६०॥ तए णं से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मऊरीअंडए तेणेव
उवागच्छइ २ त्ता तंसि मऊरीअंडयंसि निस्संकिए सुव्वत्तए णं मम एत्थ कीलावणए
मऊ(री)पोयए भविस्सइ-त्तिकट्टु तं मऊरीअंडयं अभिक्खणं २ णो उव्वत्तेइ जाव
णो टिट्टियावेइ। तए णं से मऊरीअंडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव अटिट्टियाविज्जमाणे
(तेणं) कालेणं (तेणं) समएणं उब्भिन्ने मऊ(री)पोयए एत्थ जाए। तए णं से
जिणदत्तपुत्ते(तं) मऊरपोययं पासइ २ त्ता हट्टतुट्ठे, मऊरपोसए सद्दावेइ २ त्ता एवं
वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इमं मऊरपोययं बहूहिं मऊरपोसणपा(उ)ग्गेहिं
दव्वेहिं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेह नट्टुल्लगं च सिक्खावेह। तए णं
ते मऊरपोसगा जिणदत्तस्स पुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता तं मऊरपोययं गेण्हंति
२ त्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तं मऊरपोययं जाव नट्टुल्लगं सिक्खा-
वेंति। तए णं से (स)मऊरपोयए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते
लक्खणवंजणगुणोववेए माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णपक्खपेहुणकलावे विचित्तपि-
च्छ(स)यचंदए नीलकंठए नच्चणसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगाइं
नट्टुल्लगसयाइं केकारवसयाणि य करेमाणे विहरइ। तए णं ते मऊरपोसगा तं मऊर-
पोययं उम्मुक्क जाव करेमाणं पासित्ता (२) णं तं मऊरपोययं गेण्हंति २ त्ता जिणदत्तस्स
पुत्तस्स उवणेंति। तए णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मऊरपोययं उम्मुक्क जाव
करेमाणं पासित्ता हट्टतुट्ठे तेसिं विउलं जीवियारिहं पीइदाणं जाव पडिविसज्जेइ। तए णं
से मऊरपोयगे जिणदत्तपुत्तेणं एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए णंगोलाभंगसिरोधरे
सेयावंगे ओयारिय(अवयारि)पइण्णपक्खे उक्खित्तचंदकाइयकलावे केक्काइयसयाणि
विमु(च)माणे नच्चइ। तए णं से जिणदत्तपुत्ते तेणं मऊरपोयएणं चंपाए नयरीए
सिंघाडग जाव पहेसु स(इ)एहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य पणिएहि य
जयं करेमाणे विहरइ। एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा २ पव्वइए
समाणे पंच(सु)महव्वएसु छज्जीवणिकाएसु निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए
निव्वितिगिच्छे से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं जाव वीइवइस्सइ। एवं खलु जंबू!
समणेणं ३ जाव संपत्तेणं णायाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥१६१॥
गाहाओ-जिणवरभासियभावेसु भावसच्चेसु भावओ मइमं। णो कुज्जा संदेहं
संदेहोऽणत्थहेउत्ति ॥ १ ॥ निस्संदेहत्तं पुण गुणहेउं जं तओ तयं कज्जं। एत्थं दो

विपयमे चुप हैं। यहाँ यह वात कह देना आवश्यक है कि दिगम्बर सम्प्रदायके ग्रथोंमे म० महावीरका चरित इतना सक्षिप्त है कि मानो दिगम्बरोंको महावीरके व्यक्तित्वसे विशेप मतलब ही न रहा हो। श्वेताम्बर ग्रथोंमे इस विपयका विस्तृत विवरण है। इसलिये महावीरका जीवन-चरित लिखनेमें श्वेताम्बर साहित्यसे विशेष सामग्री मिलती है। इसका कारण सभवत यह भी हो सकता है कि प्राचीन सूत्र-ग्रथ विकृत हो जानेसे जब दिगम्बरोंने अमान्य ठहरा दिये तब उसमेंकी वहुत-सी सामग्री इनके पास न रही और इस विपयमे साधारण सामग्रीसे ही इन्होने सतोप माना। 'विशेप घटनाओंपर उपेक्षा करनेपर भी जैनधर्मको समझनेमें कुछ भी कठिनाई नहीं है' सभवत यह समझकर विशेष विवरण उनने छोड दिया। यहाँ मैं दोनों सम्प्रदायोंकी घटनाओंको मान लूँगा और उनमेंसे युक्तिशून्य, असभवनीय आदि घटनाओका त्याग कर दूँगा। जो घटना साम्प्रदायिक बुद्धिसे कल्पित मालूम होगी वह छोड़ दी जायगी या उसका विरोध किया जायगा।

'म० महावीरके बड़े भाई नन्दिवर्धन थे' इस मान्यतासे न तो दिगम्बर सम्प्रदायके किसी खास सिद्धान्तका विरोध होता है, न श्वेताम्बर सम्प्रदायके किसी खास सिद्धान्तका समर्थन, इसलिये इस बातको माननेमें कुछ आपत्ति नहीं है। परन्तु म० महावीरका ८२ दिन तक देवानन्दाके गर्भमें रहना, बादमें इन्द्रद्वारा गर्भापहरण होना, यह बात नहीं मानी जा सकती। यहाँ प्रश्न यह होता है कि इस घटनासे श्वेताम्बरत्वकी पुष्टि नहीं होती, न दिगम्बरत्वका खण्डन, तब क्या कारण है कि श्वेताम्बर साहित्यमें इस घटनाको स्थान मिला? यह

कंपेंति खोभेंति णहेहिं आलुंपंति दंतेहिं य अक्खोडेंति नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स आबाहं वा पबाहं वा वाबाहं वा उप्पा(ए)त्तए छविच्छेयं वा क(रे)रित्तए। तए णं ते पावसियालगा (एए) ते कुम्मए दोच्चंपि तच्चंपि सव्वओ समंता उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाएंति करित्तए ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा सणियं २ पच्चोस(क्क)ंति एगंतमवक्कमंति २ त्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति। तत्थ णं एगे कुम्म(गे)ए ते पावसियालए चि(रं)रगए दूरंगए जाणित्ता सणियं २ एगं पायं निच्छुभइ। तए णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं सणियं २ एगं पायं नीणियं पासंति २ त्ता (ताए उक्किट्ठाए गईए) सिग्घं चवलं तुरियं चंडं जइणं वेगियं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहिं आलुंपंति दंतेहिं अक्खोडेंति तओ पच्छा मंसं च सोणियं च आहारेंति २ त्ता तं कुम्मगं सव्वओ समंता उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचा(ए)एंति करेत्तए ताहे दोच्चंपि अवक्कमंति एवं चत्तारि वि पाया जाव सणियं २ गीवं णीणेइ। तए णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं गीवं णीणियं पासंति २ त्ता सिग्घं चवलं ४ नहेहिं दंतेहिं (य) कवालं विहाडेंति २ त्ता तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेंति २ त्ता मंसं च सोणियं च आहारेंति। एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा २ आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे पंच य से इंदिया (इं) अगुत्ता भवंति से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे परलो(गे)ए वि य णं आगच्छइ बहूणं दंडणाणं जाव अणुपरियट्टइ जहा (व) से कुम्मए अगुत्तिंदिए। तए णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चे कुम्मए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तं कुम्मगं सव्वओ समंता उव्वत्तेंति जाव दंतेहिं अक्खुडेंति जाव करित्तए। तए णं ते पावसियालगा दोच्चंपि तच्चंपि जाव नो संचाएंति तस्स कुम्मगस्स किंचि आबाहं वा विबाहं वा जाव छविच्छेयं वा करेत्तए ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। तए णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरगए जाणित्ता सणियं २ गीवं नेणेइ २ त्ता दिसावलोयं करेइ २ त्ता जमगसमगं चत्तारि वि पाए नीणेइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए कुम्मगईए वीईवयमाणे २ जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था। एवामेव समणाउसो! जो अम्हं समणो वा समणी वा पंच (य) से (सइंदियाइं) इंदियाइं गुत्ताइं भवंति जाव जहा(उ) व से कुम्मए गुत्तिंदिए। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि॥ ५४॥ पायाल-मियपय

सिट्ठिया अंडयगाही उदाहरणं ॥ २ ॥ जिणवरभासियभावेसु भावसच्चेसु भावओ मइमं । न करेज संसयं संसओ मिच्छति ॥ नेयगहणत्तणेण नाणावरणोदएण च ॥ ३ ॥ हेऊदाहरणासंभवे य सइ सुट्ठु ज न बुज्झिज्जा । सव्वण्णुमयमवितहं तहावि इइ चिंतए मइमं ॥ ४ ॥ अणुवकयपराणुग्गहपरायणा जं जिणा जगप्पवरा । जियरागदोसमोहा य णण्णहावाइणो तेण ॥ ५ ॥ तइयं नायज्झयणं समत्तं ॥

जइ णं भंते ! समणेणं ३ नायाणं तइयस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते चउत्थस्स णं नायाणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी होत्था वण्णओ । तीसे णं वाणारसीए नयरीए (बहिया) उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गंगाए महानईए मयंगतीरद्दहे नामं दहे होत्था अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजले अच्छविमलसलिलपलिच्छन्ने संछन्नपत्तपुप्फपलासे बहुउप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तकेसरपुप्फोवचिए पासाईए ४ । तत्थ णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य सुंसुमाराण य स(इ)या(ण)णि य (साहस्सियाण) सहस्साणि य सय(साहस्सियाण)सहस्साणि य जूहाइं निब्भयाइं निरुव्विग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाणाइं २ विहरंति । तस्स णं मयंगतीरद्दहस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए होत्था वण्णओ । तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति पावा चंडा रु(रो)द्दा तल्लिच्छा साहसिया लोहियपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिसं गवेसमाणा रत्तिं वियालचारिणो दिया पच्छन्न(न्ना) वि चिट्ठंति । तए णं ताओ मयंगतीरद्दहाओ अन्नया कयाइं सूरियंसि चिरत्थमियंसि लुलियाए संझाए पविरलमाणुसंसि निसंतपडिनिसंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी आहारं गवेसमाणा सणियं २ उत्तरंति तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वओ समंता परिघोलेमाणा २ वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति । त(य)याणंतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी जाव आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छ(या)गाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं परिघोलेमाणा २ वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति । तए णं ते पावसियाला ते कुम्मए पासंति २त्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तए णं ते कुम्मगा (ते) पावसियालए एज्जमाणे पासंति २ त्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया हत्थे य पाए य गीवाए य सएहिं २ काएहिं साहरंति २ त्ता निचला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति । तए णं ते पावसियाल(या)गा जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति २ त्ता ते कुम्मगा सव्वओ समंता उव्वत्तेंति परियत्तेंति आसारेंति संसारेंति चालेंति घट्टेंति

दूइज्जमाणे विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी सो चेव वण्णओ दसधणुस्सेहे नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे अट्ठारसहिं समणसाहस्सीहिं चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा निग्गया धम्मो कहिओ। तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभी(र)रमहुरसद्दं कोमुइयं भेरिं तालेह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तह त्ति जाव पडिसुणेंति २ त्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता जेणेव स(भा)मा सुहम्मा जेणेव कोमुइया भेरी तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तं मेघोघरसि(यं)यगंभीरमहुरसद्दं कोमुइयं भेरिं तालेंति। तओ निद्धमहुरगंभीरपडिसुएणं पिव सारइएणं बलाहएणं (पिव) अणुरसियं भेरीए। तए णं तीसे कोमुइयाए भे(रिया)रीए तालियाए समाणीए बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिन्नाए दुवालसजोयणायामाए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरकंदरदरी(ओ) विवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभवणदेउलपडि(सु)यासयसहस्ससंकुलं(सद्दं) करेमाणे बारव(इं)ईए नय(रिं)रीए सब्भिंतरबाहिरियं सव्वओ समंता(से)से विप्पसरित्था। तए णं बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव कोमुईयाए भेरीए सद्दं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव ण्हाया आविद्धवग्घारियमल्लदामकलावा अहयवत्थचंदणो(क्कि)विन्नगायसरीरा अप्पेगइया हयगया एवं गयरहसीयासंदमाणीगया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंति(यं)ए पाउब्भवित्था। तए णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे जाव अंतियं पाउब्भवमाणे (पासइ) पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउरंगिणिं सेणं सज्जेह विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह। तेवि (तहत्ति) तहेव उवट्ठवेंति जाव पज्जुवासंति ॥५॥ थावच्चापुत्ते वि णिग्गए जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा निसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पायग्गहणं करेइ जहा मेहस्स तहा चेव निवेयणा जाहे नो संचाएइ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य

इंदिआइ कमंता रागदोसनिम्मुक्का । पावंति निव्वुइसुहं कुम्मुव्व मयगदहसोक्ख ॥ १ ॥ अवरे उ अणत्थपरंपरा उ पावेंति पावकम्मवसा । ससारसागरगया गोमाउग्गसियकुम्मोव्व ॥ २ ॥ **चउत्थं नायज्झयणं समत्तं ॥**

जइ णं भंते ! समणेणं ३ जाव संपत्तेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते पंचमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा नवजोयणविच्छिण्णा दुवालसजोयणायामा धणवइमइनि(म्म)म्माया चामीयरपवरपागारा नाणामणिपंचवण्णकविसीसगसोहिया अलयापुरिसंकासा पमुइयपक्कीलिया पच्चक्खं देवलो(य)गभूया । तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए रेवयगे ना(म)म पव्वए होत्था तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगए हंसमि(ग)यमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए अणेगतडकडगवियरउज्झर(य)पवायपब्भारसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहुणसंविचिण्णे निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाणं सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासाईए ४ । तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था सव्वउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए ४ । तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था वण्णओ । तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ । से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसहस्साणं पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं महासेणपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं रुप्पि(णी)णिप्पामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं [रा]ईसरतलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढगिरिसा(य)गरपेरंतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स य बारवईए नयरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरइ ॥ ५९ ॥ त(स्स)त्थ णं बारवईए नयरीए थावच्चा नामं गाहावइणी परिवसइ अड्ढा जाव अपरिभूया । तीसे णं थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं सत्थवाहदारए होत्था सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे । तए णं सा थावच्चा गाहावइणी तं दार(य)गं साइरेगअट्ठवासजा(य)यं जाणित्ता सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेइ जाव भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेइ बत्तीसओ दाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरसरूववण्णगंधे जाव

आघवित्तए वा '४ ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्त(दारग)स्स निक्खमणमणु-मन्नित्था (णवरं निक्खमणाभिसेय पासामो, तए ण से थावच्चापुत्ते तुसिणीए सचिट्ठइ)। तए ण सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता महत्थ महग्घ महरिह रा(य)यारिह पाहुड गेण्हइ २ त्ता मित्त जाव सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवरपडिदुवारदेसभाए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पडिहारदेसिएण मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव वद्धावेइ २ त्ता त महत्थं ४ पाहुड उवणेइ २ त्ता एव वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नाम दारए इट्ठे जाव (से ण)ससारभउव्विग्गे (भीए) इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए। अह ण निक्खमणसक्कार करेमि। इच्छामि ण देवाणुप्पिया! थावच्चा-पुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउडचामराओ य विदिन्नाओ। तए णं कण्हे वासुदेवे थावच्चागाहावइणिं एवं वयासी–अच्छाहि ण तुम देवाणुप्पिए! सुनिव्वु(या)यवी-सत्था। अह णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि। तए ण से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजय हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थावच्चापुत्त एव वयासी–मा ण तु(मे)म देवाणुप्पिया! मुडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि ण देवाणुप्पिया! विउले माणुस्सए कामभो(ए)गे मम बाहुच्छायापरिग्गहिए, केवल देवाणुप्पियस्स (अह) नो सचाएमि वाउकाय उवरिमेणं गच्छमाण निवारित्तए, अन्ने ण देवाणुप्पियस्स ज किंचि(वि) आवाह वा वि(वा)वाहं वा उप्पाएइ त सव्व निवारेमि। तए ण से थावच्चा-पुत्ते कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे कण्ह वासुदेव एव वयासी–जइ ण (तुम)देवाणु प्पिया! मम जीवियतकरण मच्चुं एज्जमाण निवारेसि जरं वा सरीररूवविणा(सि)सणिं सरीरं अइवयमाणिं निवारेसि तए णं अह तव बाहुच्छायापरिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे विहरामि। तए ण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे थावच्चापुत्त एवं वयासी–एए ण देवाणुप्पिया! दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का सुवलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए नन्नत्थ अप्पणो कम्मक्ख-एण। तए ण से थावच्चापुत्ते कण्ह वासुदेवं एवं वयासी–जइ णं एए दुरइक्कमणिज्जा नो खलु सक्का सुवलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए नन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं तं इच्छामि ण देवाणुप्पिया! अन्नाणमिच्छत्तअविरइकसायसचियस्स अत्तणो कम्मक्खय करित्तए। तए ण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–गच्छह ण देवाणुप्पिया! वारवईए नयरीए सिंघाडगति(य)ग जाव पहेसु (य) हत्थिखधवरगया महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा

गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव नीलासोए उज्जाणे तेणेव समोसढे) थावच्चापुत्तस्स समोसरणं। परिसा निग्गया। सुदंसणो वि णिग्ग(ए)ए थावच्चापुत्तं (णामं अणगारं जा) वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी—तुम्हाणं किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?। तए णं [से] थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वयासी—सुदंसणा ! विणयमूले धम्मे पन्नत्ते। से वि य विणए दुविहे पन्नत्ते तंजहा अगारविणए(य) अणगारविणए य। तत्थ णं जे से अगारविणए से णं पंच अणुव्वयाइं सत्त सिक्खावयाइं एक्कारस उवासगपडिमाओ। तत्थ णं जे से अणगारविणए से णं पंच महव्वयाइं तंजहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसणसल्लाओ वेरमणं दसविहे पच्चक्खाणे बारस भिक्खुपडिमाओ इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं आणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपयडीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठा(णे)णा भवंति। तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी—तु(ब्भे)म्हे णं सुदंसणा ! किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ? अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमू(ले)लए धम्मे पन्नत्ते जाव सग्गं गच्छंति। तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी—सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा तए णं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण (चेव) पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ सोही ? नो इणट्ठे समट्ठे। एवामेव सुदंसणा ! तुब्भंपि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही। सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिंपइ २ त्ता पयणं आ(रु)रोहेइ २ त्ता उण्हं गाहेइ २ त्ता तओ पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा से नूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरोहियस्स उण्हं गाहियस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ? हंता भवइ। एवामेव सुदंसणा ! अम्हंपि पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अत्थि सोही जहा(वि) वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही। तत्थ णं (से) सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! धम्मं सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ। तए णं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु सुदंसणेणं सोयधम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने। तं सेयं खलु मम

होत्था उप्पत्तियाए ४ (चउव्विहाए बुद्धीए) उववेया (रज्जधुरचिंतयावि होत्था) रज्जधुरं चिंतयंति। (तए णं) थावच्चापुत्ते (णामं अणगारे सहस्सेणं अणगारेण सद्धिं जेणेव) सेलगपुरे (जेणेव सुभूमिभागे नाम उज्जाणे तेणेव) समोसढे। राया निग्गए (धम्मो कहिओ) धम्मकहा। धम्मं सोच्चा जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइया तहा णं अहं नो संचाएमि पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जा(व)ए अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया य समणोवासया जाया। थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं सोगंधिया नामं नयरी होत्था वण्णओ। नीलासोए उज्जाणे वण्णओ। तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए नामं परिव्वायए होत्था रिउव्वेयज(उ)जुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसट्ठितंतकुसले संखसमए लद्धट्ठे पंच(जा)जमपंचनियमजुत्तं सोयमू(लय)लं दसप्पयारं परिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पन्नवेमाणे (परूवेमाणे) धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए तिदंडकुंडियछत्तछन्ना-(लि)लयअंकुसपवित्तयकेसरिहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ २ त्ता संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं सोगंधियाए नगरीए सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ-एवं खलु सुए परिव्वायए इह(हव्व)मागए जाव विहरइ। परिसा निग्गया। सुदंसणो वि निग्गए। तए णं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स(य) अन्नेसिं च बहूणं संखाणं (धम्मं) परिकहेइ-एवं खलु सुदंसणा! अम्हं सोयमूलए धम्मे पन्नत्ते। से वि य सोए (धम्मे) दुविहे पन्नत्ते तं जहा-दव्वसोए य भावसोए य। दव्वसोए य उदएणं मट्टियाए य। भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य। जं णं अम्हं देवाणुप्पिया! किंचि असुई भवइ तं सव्वं स(ज्जो)ज्जपुढवीए आलि(प्पइ)म्पइ तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ तओ तं असुई सुई भवइ। एवं खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छंति। तए णं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठे सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हइ २ त्ता परिव्वायए विउलेणं असणेणं ४ वत्थ० पडिलाभेमाणे जाव विहरइ। तए णं से सुए परिव्वाय(गवसहाओ)गे सोगंधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं (थावच्चापुत्ते णामं अणगारे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु-

सुदसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए-त्तिकट्टु एव सपेहेइ २ त्ता परिव्वायगसहस्सेण सद्धिं जेणेव सोगधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता परिव्वायगावसहसि भडनिक्खेव करेइ २ त्ता धाउरत्तव त्थ[पवर]परिहिए पविरलपरिव्वायगेणं सद्धिं सपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सोगधियाए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सुदसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव उवागच्छइ। तए ण से सुदसणे त सुय एज्जमाण पासइ २ त्ता नो अब्भुट्ठेइ नो पच्चुग्गच्छइ नो आढाइ नो परियाणाइ नो वदइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अ(ण)णुब्भुट्ठिय पासित्ता एव वयासी-तु(म)ब्भे ण सुदंसणा! अन्नया मम एज्जमाण पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वदसि, इयाणिं सुदसणा! तुम मम एज्जमाण पासित्ता जाव नो वदसि, त कस्स ण तुमे सुदसणा! इमेयारूवे विणयमू(ल)ले धम्मे पडिवन्ने ? । तए ण से सुदसणे सुएण परिव्वाय(ए)गेण एव वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता करयल जाव सुय परिव्वायग एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी थावच्चापुत्ते नाम अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स ण अतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने। तए ण से सुए (परिव्वायए) सुदसण एव वयासी-त गच्छामो ण सुदसणा! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउब्भवामो इमाइ च ण एयारूवाइ अट्ठाइ हेऊइ पसिणाइ कारणाइं वागरणाइ पुच्छामो। त जइ(ण) मे से इमाइ अट्ठाइ जाव वागरइ त(ए)ओ ण (अह) वदामि नमसामि। अह मे से इमाइ अट्ठाइं जाव नो से वागरेइ तओ ण अह एएहिं चेव अट्ठेहिं हेऊहिं निप्पट्ठपसिणवागरण करिस्सामि। तए ण से सुए परिव्वायगसहस्सेण सुदसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थावच्चापुत्त एवं वयासी-जत्ता ते भते! जवणिज्जं ते अव्वाबाह(पि ते) फासु(य)यविहारं(ते)? । तए णं से थावच्चापुत्ते सुएण (परिव्वायगेण) एव वुत्ते समाणे सुय परिव्वायग एव वयासी-सुया! जत्तावि मे जवणिज्जपि मे अव्वाबाहपि मे फासु(य)विहारंपि मे। तए ण (से) सुए थावच्चापुत्त एवं वयासी-किं भते! जत्ता? सुया! ज ण मम नाणदसणचरित्ततवसजममाइएहिं जोएहिं जो(ज)यणा से त जत्ता। से किं त भंते! जवणिज्ज? सुया! जवणिज्जे दुविहे पन्नत्ते तजहा-इदियजवणिज्जे य नोइदियजवणिज्जे य। से किं त इदियजवणिज्ज? सुया! जं ण म(म)मं सोइदियचक्खिदियघाणिंदियजिब्भिदियफासिंदियाइ निरुवहयाइ वसे वट्टति से तं इंदियजवणि(ज्ज)ज्जे। से किं त नोइदियजवणिज्जे? सुया! ज ण कोहमाणमायालोभा खीणा उवसंता नो उदयंति से तं नोइदियजवणिज्जे। से किं तं भते!

सिंहासनपर आ बैठा है, उसका विचार करना पड़ेगा। तभी हम म० महावीरका और जैनधर्मका सच्चे रूपमें समझ सकेंगे। यहाँ मैं म० महावीरके जीवनका परिचय संक्षेपमें दूँगा और उसमेंसे अद्भुत रसको निकाल दूँगा। इसके अतिरिक्त अपनी बुद्धिके अनुसार इन भक्ति-कल्प्य घटनाओंमें वास्तविक सत्य कितना और कैसा है, इसपर भी विचार करूँगा।

म० महावीरके जीवन चरितके विषयमें दिगम्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदायोंकी मान्यतामें अन्तर है। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि जैनधर्मके मर्मको खोजनेवाला इनमेंसे किसी भी सम्प्रदायके साथ पक्षपातका व्यवहार नहीं कर सकता। इसलिये जो घटना जिस सम्प्रदायकी युक्तियुक्त और सम्भव मालूम होगी वही मान ली जायगी। जहाँ युक्तियुक्ततासे भी निर्णय न होगा वहाँ उसकी जाँच शिक्षाप्रद तासे की जायगी। यह नीति म० महावीरके जीवन चरित लिखनेमें ही नहीं किन्तु जैनधर्मकी प्रत्येक विवादग्रस्त बातके निर्णयमें काममें ली जायगी।

म० महावीरका जन्म सिद्धार्थ नरेशके गृहमें हुआ था। सिद्धार्थ नरेश कुण्डलपुरके शासक और गण-राज्यके नेता थे। उस समयके राजघरानोंसे इनका वैवाहिक सम्बन्ध था। ये म० पार्श्वनाथके अनुयायी थे। इनकी माता राजा चेटककी पुत्री थी।

इसके बाद दिगम्बर और श्वेताम्बर परम्पराका महावीर जीवनके विषयमें मत-भेद हो जाता है। श्वेताम्बरोंके अनुसार म० महावीरके बड़े भाई नन्दिवर्धन थे और म० महावीर ८२ दिन एक ब्राह्मणीके गर्भमें रहे थे जब कि दिगम्बर सम्प्रदाय इस

धम्मं निसामित्तए। धम्मकहा भाणियव्वा। तए णं से सुए परिव्वायए थावच्चा-पुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी–इच्छामि णं भंते! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! जाव उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए ति(उ)दंडयं जाव धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ २ त्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ २ त्ता जेणेव थावच्चापुत्ते २ तेणेव उवागच्छइ जाव मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए सामाइयमाइयाइं (एक्कारस अंगाइं) चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ। तए णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगार(स्स) सहस्सं सीसत्ताए वियरइ। तए णं थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ (नयरीओ) नीलासोयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ। तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव पुंडरी(ए)यपव्वए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहइ २ त्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमण (ण)णुवण्णे। तए णं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए जाव केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव प्पहीणे ॥६२॥ तए णं से सुए अन्नया कयाइ जेणेव सेलगपुरे नगरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे (समोसरणं) तेणेव समोसरिए परिसा निग्गया सेलओ निग्गच्छइ धम्मं सोच्चा जं नवरं देवाणुप्पिया! पंथगपामोक्खाइं पंच मंतिसयाइं आपुच्छामि मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि। अहासुहं। तए णं से सेलए राया सेलगपुरं नगरं अणुप्पविसइ २ त्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहास(ण)णे सन्निसण्णे। तए णं से सेलए राया पंथ(य)गपामोक्खे पंच मंतिसए सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुयस्स अंतिए धम्मे निसंते से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, अहं णं देवाणुप्पिया! संसारभ(य)उव्विग्गे जाव पव्वयामि, तुब्भे णं देवाणुप्पिया! किं करेह किं व(से)वसह किं वा (ते) मे हियइच्छिए सामत्थे ? । तए णं ते पंथगपामोक्खा सेलगं रायं एवं वयासी–जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारं जाव पव्वयह अम्हाणं देवाणुप्पिया! (किमण्णे)को अन्ने आधारे वा आलंबे वा अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयामो, जहा णं देवाणुप्पिया! अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा णं पव्वइयाण वि समाणाणं बहुसु जाव चक्खुभूए। तए णं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए एवं वयासी–जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारं जाव पव्वयह तं गच्छह णं देवाणुप्पिया! सएसु २ कुडुंबेसु जे(ट्ठे)ट्ठपुत्ते कुडुंबमज्झे ठावेत्ता

पुरिससहस्सवाहिणी[सी]ओ सीयाओ दुरूढा समाणा मम मंतियं पाउब्भवह(त्ति)। तेवि तहेव पाउब्भवंति। तए णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव अभिसिंचइ जाव रज्जं पसासेमाणे (जाव) विहरइ। तए णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ। तए णं (से) मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव सेलगपुरं नयरं आसिय जाव गंध वट्टिभूयं करेह(य) कारवेह य करे २ त्ता ए(य)माणत्तियं पच्चप्पिणइ। तए णं से मंडुए दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव सेलगस्स रन्नो महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं जहेव मेहस्स तहेव नवरं पउमावई–देवी अग्गकेसे पडिच्छइ सव्वेवि पडिग्गहं गहाय सीयं दुरूहंति अवसेसं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ २ त्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ। तए णं से सुए सेल(ग)स्स अणगारस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरइ। तए णं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ। तए णं से सुए अणगारे अन्नया कयाइ तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पुं(पों)डरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ जाव सिद्धे ॥ ६१ ॥ तए णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाइक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य निच्चं पाणभोयणेहि य पयइसुकुमाल(ग)स्स य सुहोचियस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा कंडु(य)दाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे यावि विहरइ। तए णं से सेलए तेणं रो(या)यायं-केणं सु(सु)क्के जाए यावि होत्था। तए णं [से] सेलए अन्नया कयाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ। परिसा निग्गया मंडुओऽवि निग्गओ सेल(गं)यं अणगारं (जाव) वंदइ जाव पज्जुवासइ। तए णं से मंडुए राया सेलगस्स अणगारस्स सरीर(गं)यं सुक्कं जाव सव्वाबाहं सरोगं पासइ २ त्ता एवं वयासी–अहं णं भंते! तुब्भं अहापव(त्ते)त्तेहिं तिगिच्छिएहिं अहापवत्तेणं ओसहभेस(ज्जे)ज्जभत्तपाणेणं तिगिच्छं आउट्टावेमि। तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह फासु-(यं)एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरह। तए णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रन्नो एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ। तए णं से मंडुए सेलगं वंदइ नमंसइ वं २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं से सेलए कल्लं जाव जलंते सभंडमत्तोवगरणमायाए पंथगपामोक्खेहिं पंचहिं अणगारसएहिं

सद्धिं सेलगपुरमणुप्पविसइ २ त्ता जेणेव मडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता फासुय पीढ जाव विहरइ। तए ण से मंडुए (राया) ति(चि)गिच्छिए सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! सेलगस्स फासुएसणिज्जेण जाव ति(ते)गिच्छ आ(उट्टे)उटेह। तए ण तिगिच्छया मडुएण रन्ना एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सेलगस्स (रायरिसिस्स) अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं तिगिच्छं आउट्टेंति। तए ण तस्स सेलगस्स अहापवत्तेहिं ओसहमेसज्जभत्तपाणेहिं से रोगायंके उवसते जाए यावि होत्था हट्ठे (जाव) बलियसरीरे जाए ववगयरोगायके। तए ण से सेलए तसि रोयातकसि उवसतंसि समाणसि तसि विपुलंसि असणंसि ८ मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्ने ओसन्नविहारी एव पासत्थे २ कुसीले २ पमत्ते २ ससत्ते २ उउवद्धपीढफलगसेज्जासथारए पमत्ते यावि विहरइ नो सचाएइ फासुए-सणिज्ज पीढ पच्चप्पिणित्ता मडुय च राय आपुच्छित्ता वहिया जाव विहरित्तए॥६४॥ तए ण तेसिं पथगवज्जाण पंचण्ह अणगारसयाण अन्नया कयाइ एगयओ सहियाण जाव पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणाण अयमेयारूवे अज्झ त्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्ज जाव पव्वइए विउले (ण) असणे ४ मुच्छिए ४ नो सचाएइ चइउ जाव विहरित्तए। नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाण जाव पमत्ताणं विहरित्तए। त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कल्लं सेलग रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढफलगसेज्जासथार(ग)य पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगार वेयावच्चकरं ठा(ठ)वेत्ता वहिया अब्भुज्जएण जाव विहरित्तए। एव सपेहेंति २ त्ता कल्ल जेणेव सेल(ए)गरायरिसी० आपुच्छित्ता पाडि-हारिय पीढफलग जाव पच्चप्पिणति २ त्ता पथय अणगार वेयावच्चकरं ठावेंति २ त्ता वहिया जाव विहरंति॥६५॥ तए ण से पंथए सेलगस्स सेज्जासथारउच्चारपासवणखेल-सिंघाणमलाओ ओसहमेसज्जभत्तपाणएण अगिलाए विणएण वेयावडियं करेइ। तए णं से सेलए अन्नया कयाइ कत्तियचाउम्मासियसि विउलं असणं ४ आहारमाहारिए पुव्वावरण्हकालसमयसि सुहप्पसुत्ते। तए ण से पथए कत्तियचाउम्मासियसि कय-काउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमण पडिक्कते चाउम्मासिय पडिक्कमि(उ)उकामे सेलग रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु सघट्टेइ। तए ण से सेलए पथएण सीसेणं पाएसु सघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उट्ठेइ २ त्ता एव वयासी–से केस णं भो एस अपत्थियपत्थिए जाव वज्जिए जे णं ममं सुहपसुत्तं पाएसु सघट्टेइ ?, तए ण से पथए सेलएण एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयल जाव कट्टु एव वयासी–अह णं भंते ! पंथए कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कते (चाउम्मासियं

पडिबंधे) आउच्छामि णं आमेमाणे देवाणुप्पिए वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि । तं खामेमि णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! खमन्तु मे अवराहं तुमं च देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो एवं करणयाए—त्तिकट्टु सेलयं अणगारं एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेइ । तए णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओसन्नो जाव उउबद्धपीढ विहरामि । तं नो खलु कप्पइ समणाणं २ पासत्थाणं जाव विहरित्तए । तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जाव जणवयविहारेणं विहरित्तए । एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव विहरइ ॥ ६६ ॥ एवामेव समणाउसो ! जाव निग्गंथो वा २ ओसन्ने जाव संथारए पमत्ते विहरइ से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो । तए णं ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी-[एवं खलु] सेलए रायरिसी पंथएणं बहिया जाव विहरइ । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेलयं [रायरिसिं] उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए । एवं संपेहेंति २ त्ता सेलगं रायरिसिं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥ ६७ ॥ तए णं (ते सेलगपामोक्खा) से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता जेणेव पुंडरीयए पव्वए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा ४ । एवामेव समणाउसो ! जो निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ६८ ॥ गाहा—सिढिलियसंजमकज्जावि होइउं उज्जमंति जइ पच्छा । संवेगाओ तो सेलउव्व आराहया होंति ॥ १ ॥ पंचमं नायज्झयणं समत्तं ॥

जइ णं भंते ! समणेणं १ जाव संपत्तेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते छट्ठस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे (णामं णयरे होत्था तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए णामं राया होत्था तस्स णं रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं गुणसिलए णामं उज्जाणे होत्था तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए उज्जाणे तेणेव समोसढे अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) समोसरणं परिसा णिग्गया (सेणिओ वि णिग्गओ धम्मो कहिओ परिसा पडिगया) । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नाम अणगारे अदूरसामंते जाव ग(झ)ज्झाणोवगए विहरइ। तए ण से इंदभूई जायसड्ढे जाव एवं वयासी–कह णं भंते! जीवा ग(गु)रुयत्त वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति? गोयमा! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कं तुंब निच्छि(ड्ड)ड्डं निरुवहयं दब्भे(हिं)हि य कुसेहि य वेढेइ २ त्ता मट्टियालेवेण लिंपइ २ त्ता उण्हे दलयइ २ त्ता सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ २ त्ता मट्टियालेवेण लिंपइ २ त्ता उण्हे दलयइ २ त्ता सु(सु)क्के समा(ण)णे तच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ २ त्ता मट्टियालेवेण लिंपइ। एवं खलु एएण उवाएण (अंतरा) अंतरा वेढेमाणे अंतरा लिप्प(लिंपे)माणे अंतरा सु(का)क्कवेमाणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिंपइ २ त्ता अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा। से नूणं गोयमा! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं गुरुययाए भारि(य)याए गुरुयभारिययाए उप्पिं सलिलमइवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवइ। एवामेव गोयमा! जीवावि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ समज्जि(णंति)णित्ता तासिं गरुययाए भारिययाए गरुयभारिययाए (एवामेव) कालमासे कालं किच्चा धरणियलमइवइत्ता अहे नरगतलपइट्ठाणा भवंति। एवं खलु गोयमा! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति। अहे णं गोयमा! से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसिं धरणियलाओ उप्पइत्ताणं चिट्ठइ। तयाणंतरं (च णं) दोच्चंपि मट्टियालेवे जाव उप्पइत्ताणं चिट्ठइ। एवं खलु एएणं उवाएणं तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे अहे-धरणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ। एवामेव गोयमा! जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा भवंति। एवं खलु गोयमा! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ६९ ॥ **गाहाउ**–जह मिउलेवालित्तं गरुयं तुंब अहो वयइ एवं। आसव कयकम्मगुरू जीवा वच्चंति अहरगइं ॥ १ ॥ तं चेव तव्विमुक्कं जलोवरिं ठाइ जायलहुभाव। जह तह कम्मविमुक्का लोयग्गपइट्ठिया होंति ॥ २ ॥ **छट्ठं नायज्झयणं समत्तं** ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सत्तमस्स णं भंते! नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था। (तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नाम राया होत्था, तस्स णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए)

समभूमिभागे उज्जाणे (होत्था)। तत्थ णं रायगिहे नयरे ध(ध)ण्णे नामं सत्थवाहे परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए। (तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स) भद्दा (नामं भारिया (होत्था) अहीणपंचिंदियसरीरा जाव सुरूवा। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारगा होत्था तंजहा–धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था तंजहा–उज्झिया भोगवइया रक्खिया रोहिणिया। तए णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं रायगिहे नयरे बहूणं राईसरतलवर जाव पभिईणं सयस्स कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य कारणे(सु य कुडुंबे)सु य मंतेसु य मंतणेसु य गुज्झेसु रहस्सेसु निच्छएसु ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमा(णे)णं आहारे आलंबणे चक्खू मेढी–पमाणभूए सव्वकज्ज(व)द्धावए। तं न नज्ज(इ) णं मए गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेस(त्थंसि)त्थंसि वा विप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंबस्स(कि) के मन्ने आहारे वा आलंबणे वा पडिबंधे वा भविस्सइ। तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्तणाइनियगसयण चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं विपुलेणं असणेणं ४ धूवपुप्फवत्थगंध जाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स (य) पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए पंच २ सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का कि(हं)व सारक्खेइ वा संगोवेइ वा संवड्ढेइ वा। एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव मित्तणाइ चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ २ त्ता विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ तओ पच्छा ण्हाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए (तं) मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विपुलं असणं ४ जाव सक्कारेइ सम्माणेइ स २ त्ता तस्सेव मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स (य) पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ २ त्ता जे(जे)ट्ठं सु(ण्हा)ण्हं उज्झित(या)यं (तं) सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि २ त्ता अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडि(डि)निज्जाएज्जासि–त्तिकट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ २ त्ता पडिविसज्जेइ। तए णं सा उज्झिया धण्णस्स तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए

गेण्हइ २ त्ता एगंतमवक्कमइ एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-ज्जित्था-एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं मम(म)म ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाए(ज)मइ तया णं अहं पल्लंतराओ अन्ने पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि-त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता ते पंच सालिअ-क्खए एगंते एडेइ २ त्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था। एवं भोगवइयाए वि नवरं सा छो(छि)लेइ २ त्ता अणुगिलइ २ त्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था। एवं रक्खिया वि नवरं गेण्हइ २ त्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए०-एवं खलु मम ताओ इमस्स मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी-तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि-त्तिकट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ, तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं-तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ २ त्ता रयणकरंडियाए पक्खि(वे)वइ २ त्ता ऊ(ऊ)-सीसामूले ठावेइ २ त्ता तिसंझं पडिजागरमाणी २ विहरइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे त(स्से)हेव मित्त जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ २ त्ता जाव तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं (त) तिकट्टु सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्ख-माणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए-त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया! एए पंच सालिअक्खए गेण्हह २ त्ता पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह २ त्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह २ त्ता दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयनि(क्ख)हए करेह २ त्ता वाडिपक्खेवं करेह २ त्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा आणुपुव्वेण संवड्ढेह। तए णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणंति (२ त्ता) ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति २ त्ता अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोविंति (विहरंति)। तए णं ते कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति २ त्ता ते पंच सालिअक्खए ववंति २ त्ता दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयनिहए करेंति २ त्ता वाडिपरिक्खेवं करेंति २ त्ता अणुपुव्वेण सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति। तए णं ते साली (अक्खए) अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साला जाया किण्हा किण्होभासा जाव निउरंबभूया पासाईया ४। तए णं ते साली पत्तिया वत्तिया गब्भिया पसू[इ]या आगयगंधा खीराइया बद्धफला पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरियपव्वकंडा जाया यावि होत्था। तए णं ते कोडुंबिया ते साली(ए) पत्तिए जाव सल्लइ(ए)यपत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं नवपज्जणएहिं असि(य)एहिं लुणंति २ त्ता करयलमलिए करेंति २ त्ता

पुणेंति । तत्थ णं चाउप्पायं सु[इ]याणं अखंडाणं अ(फो)डियाणं छ(ड)छडा-
पूयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए । तए णं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु
पक्खिवंति २ त्ता उ(व)लिंपंति २ त्ता लंछियमुद्दिए करेंति २ त्ता कोट्ठागारस्स
एगदेसंसि ठावेंति २ त्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति । तए णं ते कोडुंबिया
दोच्चंमि वासारत्तंसि पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुप-
रिकम्मियं करेंति २ त्ता ते साली ववंति दोच्चंपि (तच्चंपि) उक्खयनिहए जाव लुणेंति
जाव चलणतलमलिए करेंति २ त्ता पुणेंति । तत्थ णं सालीणं बहवे कुडवा जाव
एगदेसंसि ठावेंति २ त्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति । तए णं ते कोडुंबिया
तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि बहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव
लुणेंति २ त्ता संवहंति २ त्ता खलयं करेंति २ त्ता मलेंति जाव बहवे कुंभा जाया ।
तए णं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि प(क्खि)वंति जाव विहरंति । चउत्थे
वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया । तए णं तस्स धण्णस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि
परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-
ज्जित्था—एवं खलु म(म)ए इओ अईए पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्ख-
णट्ठयाए ते पंच २ सालिअक्खया हत्थे दिन्ना तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते
पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए जाव जाणामि(ताव) काए किहं सारक्खिया वा संगोविया
वा संवड्ढिया (जाव त्तिकट्टु) एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते विउलं असणं
४ मित्तणाइनियग चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्त
चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झि(य)यं सद्दावेइ २ त्ता एवं
वयासी—एवं खलु अहं पुत्ता ! इओ अईए पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्त
चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि
जया णं अहं पुत्ता ! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच
सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि-त्तिकट्टु (तं हत्थंसि दलयामि) । से नूणं पुत्ता ! अट्ठे
समट्ठे ? हंता अत्थि । तं णं [तुमं] पुत्ता ! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाए(हि)त्ति ।
तए णं सा उज्झिय (इ) या एयमट्ठं धण्णस्स पडिसुणेइ २ त्ता जेणेव कोट्ठागारे तेणेव
उवागच्छइ २ त्ता पल्लाओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ २ त्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे
तेणेव उवागच्छइ २ त्ता (धण्णं सत्थवाहं) एवं वयासी—एए णं ते पंच सालिअ-
क्खए-त्तिकट्टु धण्णस्स हत्थंसि ते पंच सालिअक्खए दलयइ । तए णं धण्णे उज्झियं
सवहसावियं करेइ २ त्ता एवं वयासी—किं णं पुत्ता ! (एए) ते चेव पंच सालिअ-
क्खए उदाहु अन्ने ? तए णं उज्झिया धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु तुब्भे

ताओ ! इओ अईए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्तनाइ० चउण्ह य जाव विहराहि । तए ण अहं तुब्भ एयमट्ठं पडिसुणेमि २ त्ता ते पंच सालिअक्खए गेण्हामि एगतमवक्कमामि । तए ण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि जाव सकम्मसजुत्ता, त नो खलु ता(ओ)या ! ते चेव पंच सालिअक्खए एए ण अन्ने । तए णं से धण्णे उज्झि[इ]याए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झिइय तस्स मित्तनाइ० चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झिय च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च सपु(समु)च्छियं च सम्मज्जिअ च पाउवदा(इ)इय च ण्हाणोवदा(इं)इय च वाहिरपेसणका(रिं)रिय [च] ठावेइ । एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा २ जाव पव्वइए पंच य से महव्वयाइ उज्झियाइ भवंति से ण इहभवे चेव बहूणं समणाण ४ हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा सा उज्झिया । एव भोगवइयावि नवरं तस्स कुलघरस्स कंडितियं च कोट्टतिय च पीसतिय च एवं रुंधतिय (च) रंधतिय(च) परिवेसतिय च परिभायतिय च अब्भितरिय च पेसणकारिं महाणसिणिं ठावेइ । एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो वा २ पंच य से महव्वयाइ फोडियाइ भवंति से ण इहभवे चेव बहूण समणाण ४ हीलणिज्जे ४ जाव जहा व सा भोगवइया । एव रक्खिइयावि नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मजूस विहाडेइ २ त्ता रयणकरडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ २ त्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पंच सालिअक्खए धण्णस्स हत्थे दलयइ । तए ण से धण्णे (स०) रक्खिइय एवं वयासी-किं ण पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए उदाहु अन्ने (त्ति)? । तए ण रक्खिइया धण्णं (सत्थवाह) एवं वयासी-ते चेव ताया ! एए पंच सालिअक्खया नो अन्ने । कह ण पुत्ता ! ? एव खलु ताओ ! तुब्भे इओ पंचमंमि (संवच्छरे) जाव भवियव्व एत्थ कारणेण-तिकट्टु ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसंझ पडिजागरमाणी यावि विहरामि । तओ एएण कारणेण ताओ ! ते चेव (ते) पंच सालिअक्खए नो अन्ने । तए ण से धण्णे रक्खिइयाए अंति(ए)य एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे तस्स कुलघरस्स हिरण्णस्स य कंसदूसविपुलधण जाव सावएज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेइ । एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महव्वयाइ रक्खियाइ भवंति से ण इहभवे चेव बहूण समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव जहा सा रक्खि[इ]या । रोहि(णि)णीयावि एवं चेव नवरं तुब्भे ताओ ! मम सुबहुयं सगडीसागडं दला(हि)ह जा(जे)ण अह तु(ब्भ)ब्भे ते पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएमि । तए ण से धण्णे (सत्थवाहे) रोहिणिं एवं वयासी-कहं ण तुमं मम

पुत्ता! ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जा(इ)स्सामि?। तए णं सा रोहिणी धण्णं (सत्थवाहं) एवं वयासी-एवं खलु ताओ! इओ तुब्भे पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त जाव बहवे कुंभसया जाया तेणेव कमेणं एवं खलु ताओ! तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सग(ड)सागडेणं निज्जाएमि। तए णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुबहुयं सगडीसागडं दलयइ। तए णं रोहिणी सुबहुं सगडीसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ (२ त्ता) कोट्ठागा(रे)रे विहाडेइ २ त्ता पल्ले उब्भिंदइ २ त्ता सगडीसागडं भरेइ २ त्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ। तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमाइक्खइ ४-धन्ने णं देवाणुप्पिया! धण्णे सत्थवाहे जस्स णं रोहिणीया सुण्हा (जीए ण) पंच सालिअक्खए सगडसागडिएणं निज्जाएइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जा(ए)एए पासइ २ त्ता हट्ठ जाव पडिच्छइ २ त्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर(वग्गस्स)पुरओ रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव वट्टावियं पमाणभूयं ठवेइ। एवामेव समणाउसो! जाव पंच [से] महव्वयाइं संवड्ढियाइं भवंति से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं जाव वीइवइस्सइ जहा व सा रोहिणीया। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ७ ॥ गाहाओ-जह सेट्ठी तह गुरुणो जह णाइजणो तहा समणसंघो। जह बहुया तह भव्वा जह सालिकणा तह वयाइं ॥ १ ॥ जह सा उज्झियनामा उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा। पेसणगारित्तेणं असंखदुक्खक्खणी जाया ॥ २ ॥ तह भव्वो जो कोई संघसमक्खं गुरुविदिण्णाइं। पडिवज्जिउं समुज्झइ महव्वयाइं महामोहा ॥ ३ ॥ सो इह चेव भवंमी जणाण धिक्कारभायणं होइ। परलोए उ दुहत्तो नाणाजोणीसु संचरइ ॥ ४ ॥ जह वा सा भोगवई जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा। पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुहं चेव ॥ ५ ॥ तह जो महव्वयाइं उवभुंजइ जीवियत्ति पालिंतो। आहाराइसु सत्तो चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥ ६ ॥ सो एत्थ जहिच्छाए पावइ आहारमाइ लिंगित्ति। विउसाण नाइपुज्जो परलोयम्मी दुही चेव ॥ ७ ॥ जह वा रक्खियवहुया रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा। परिजणमन्ना जाया भोगसुहाइं च संपत्ता ॥ ८ ॥ तह जो जीवो सम्मं पडिवज्जित्ता महव्वए पंच। पालेइ निरइयारे पमायलेसंपि वज्जेंतो ॥ ९ ॥ सो अप्पहियक्करई इहलोयंमिवि विऊहिं पणयपओ। एगंतसुही जायइ परंमि मोक्खंपि पावेइ ॥ १० ॥ जह रोहिणी उ सुण्हा रोवियसाली जहत्थमभिहाणा।

विषयमें चुप है । यहाँ यह बात कह देना आवश्यक है कि दिगम्बर सम्प्रदायके ग्रथोंमे म० महावीरका चरित इतना संक्षिप्त है कि मानो दिगम्बरोंको महावीरके व्यक्तित्वसे विशेष मतलब ही न रहा हो । श्वेताम्बर ग्रथोंमें इस विषयका विस्तृत विवरण है । इसलिये महावीरका जीवन-चरित लिखनेमें श्वेताम्बर साहित्यसे विशेष सामग्री मिलती है । इसका कारण संभवत यह भी हो सकता है कि प्राचीन सूत्र-ग्रथ विकृत हो जानेसे जब दिगम्बरोंने अमान्य ठहरा दिये तब उसमेंकी बहुत-सी सामग्री इनके पास न रही और इस विषयमें साधा-रण सामग्रीसे ही इन्होंने संतोष माना । 'विशेष घटनाओंपर उपेक्षा करनेपर भी जैनधर्मको समझनेमें कुछ भी कठिनाई नहीं है ' संभवत यह समझकर विशेष विवरण उनने छोड दिया । यहाँ मैं दोनों सम्प्रदायोंकी घटनाओंको मान लूँगा और उनमेंसे युक्तिशून्य, असंभवनीय आदि घटनाओंका त्याग कर दूँगा । जो घटना साम्प्रदायिक बुद्धिसे कल्पित मालूम होगी वह छोड़ दी जायगी या उसका विरोध किया जायगा ।

'म० महावीरके बडे भाई नन्दिवर्धन थे' इस मान्यतासे न तो दिग-म्बर सम्प्रदायके किसी खास सिद्धान्तका विरोध होता है, न श्वेताम्बर सम्प्रदायके किसी खास सिद्धान्तका समर्थन, इसलिये इस बातको माननेमें कुछ आपत्ति नहीं है । परन्तु म० महावीरका ८२ दिन तक देवानन्दाके गर्भमें रहना, बादमें इन्द्रद्वारा गर्भापहरण होना, यह बात नहीं मानी जा सकती । यहाँ प्रश्न यह होता है कि इस घटनासे श्वेताम्बरत्वकी पुष्टि नहीं होती, न दिगम्बरत्वका खण्डन, तब क्या कारण है कि श्वेताम्बर साहित्यमें इस घटनाको स्थान मिला ? यह

वड्ढित्ता सालिकणे पत्ता सव्वस्स सामित्तं ॥ ११ ॥ तह जो भव्वो पाविय वयाइं पालेइ अप्पणा सम्मं । अण्णेसिवि भव्वाण देइ अणेगेसिं हियहेउं ॥ १२ ॥ सो इह संघपहाणो जुगप्पहाणेत्ति लहइ संसद्दं । अप्पपरेसिं कल्लाणकारओ गोयमपहुव्व ॥ १३ ॥ तित्थस्स वुड्ढिकारी अक्खेवणओ कुतित्थियाईण । विउसनरसेवियकमो कमेण सिद्धिंपि पावेइ ॥ १४ ॥ **सत्तमं नायज्झयणं समत्तं ॥**

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते अट्ठमस्स णं भंते ! के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निसढस्स वास-हरपव्वयस्स उत्तरेणं सीओयाए महानईए दाहिणेणं सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुर(च्छि)त्थिमेणं एत्थ णं सलिलावई नामं विजए पन्नत्ते। तत्थ णं सलिलावईविजए वीयसोगा नामं रायहाणी पन्नत्ता नवजोयण-वित्थिण्णा जाव पच्चक्खं देवलोगभूया । तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए (एत्थ णं) इंदकुंभे नामं उज्जाणे (होत्था) । तत्थ णं वीयसोगाए रायहा-णीए बले नामं राया (होत्था) । त(स्सेव)स्स धारिणीपामोक्खं दे(वि)वीसहस्सं ओ(उव)रोहे होत्था । तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा जाव महब्बले (नामं) दारए जाए उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे । तए णं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसि(री)रिपामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्ना-सयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति । पंच पासायसया पंचसओ दाओ जाव विह-रइ । (तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव इंदकुंभे नामं उज्जाणे तेणेव समोसढा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढे परिसा निग्गया बलो वि (राया) निग्गओ धम्मं सोचा निसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेइ जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भत्तेणं (अपाणेणं केवलं पाउणित्ता जाव) सिद्धे । तए णं सा कमलसिरी अन्नया कयाइ (जाव) सीहं सुमिणे (पासित्ताणं पडिबुद्धा) जाव बलभद्दो कुमारो जाओ जुवराया यावि होत्था । तस्स णं महब्बलस्स रन्नो इमे छप्पियबालवयंसगा रायाणो होत्था तंजहा-अयले धरणे पूरणे वसू वेसमणे अभिचंदे सहजा[य]या जाव सं(वड्ढिया ते)हिंयाए नित्थरियव्वे-त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति (सुहंसुहेणं विह-रंति)। तेणं कालेणं तेणं समएणं (ध० थे० जे० इं० उ० ते० स०) इंदकुंभे

उज्जाणे थेरा समोसढा। परिसा निग्गया। (महब्बलोवि राया निग्गओ धम्मो कहिओ) महब्बले णं धम्मं सोच्चा जं नवरं (देवाणुप्पिया!) छप्पियबालवयंसए आपुच्छामि बलभद्दं च कुमारं रज्जे ठावेमि जाव छप्पियबालवयंसए आपुच्छइ। तए णं ते छप्पिय महब्बलं रायं एवं वयासी-जइ णं देवाणुप्पिया! तुब्भे पव्वयह अम्हं के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामो। तए णं से महब्बले राया ते छप्पिय एवं वयासी-जइ णं (देवाणुप्पिया!) तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह तो णं गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जेहिं ठावेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवंति। तए णं से महब्बले राया छप्पियबालवयंसए पाउब्भूए पासइ २ त्ता हट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे (सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बलभद्दस्स कुमारस्स जाव तेणेव उवट्ठवेह जाव अभिसिंचंति तए णं से महब्बले बलभद्दं आपुच्छइ) बलभद्दस्स रज्जाभिसेओ जाव आपुच्छइ। तए णं से महब्बले जाव महया इड्ढीए (प व्व इ ए) पव्वइए एक्कारसअं(गाइं)गवी बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरइ। तए णं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो-कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-जं णं अम्हं देवाणुप्पिया! ए(गं)गे तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ तं णं अम्हेहिं सव्वेहिं (सद्धिं) तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए-त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरंति। तए णं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु-जइ णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति तओ से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। जइ णं ते महब्बलवज्जा [छ] अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति तओ से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। एवं [अह] अट्ठमं तो दसमं अह दसमं तो दुवाल(स)मं। इमेहि य णं वीसाएहि य कारणेहिं आसेवियबहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु तंजहा-अरहंतसिद्धपवयणगुरुथेरबहुस्सुए तवस्सीसु। वच्छल्लया य तेसिं अभिक्ख णाणोवओ(गे)गो य ॥ १ ॥ दंसणविणए आवस्सए य सीलव्वए निरइया(रे)रो। खणलवतव(चि,)च्चियाए वेयावच्चे समाही य ॥ २ ॥ अ( )पुव्वनाणगहणे सुयभत्ती पवयणे प(भा)वणया। एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ (जीवो) सो उ ॥ ३ ॥ तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव एगराइयं (भि क्ख)। तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति तंजहा-चउत्थं करेंति २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेंति २ त्ता

वड्डित्ता सालिकणे पत्ता सव्वस्स सामित्त ॥ ११ ॥ तह जो भव्वो पाविय वयाई पालेइ अप्पणा सम्मं । अण्णेसिवि भव्वाण देइ अणेगेसिं हियहेउ ॥ १२ ॥ सो इह सघपहाणो जुगप्पहाणेत्ति लहइ ससद्द । अप्पपरेसिं कल्लाणकारओ गोयमपहुव्व ॥ १३ ॥ तित्थस्स वुड्ढिकारी अक्खेवणओ कुतित्थियाईण । विउसनरसेवियकमो कमेण सिद्धिपि पावेइ ॥ १४ ॥ **सत्तमं नायज्झयणं समत्तं** ॥

जइ ण भते ! समणेण जाव सपत्तेण सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते अट्ठमस्स ण भते ! के अट्ठे पन्नत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेणं तेग समएण इहेव जवुद्दीवे २ महाविदेहे वासे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण निसढस्स वास-हरपव्वयस्स उत्तरेणं सीओयाए महानदीए दाहिणेण सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेण पचत्थिमलवणसमुद्दस्स पुर(च्छि)त्थिमेण एत्थ ण सलिलावई नाम विजए पन्नत्ते । तत्थ ण सलिलावईविजए वीयसोगा नाम रायहाणी पन्नत्ता नवजोयण-वित्थिण्णा जाव पच्चक्ख देवलोगभूया । तीसे ण वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए (एत्थ ण) इदकुभे नाम उज्जाणे (होत्था) । तत्थ ण वीयसोगाए रायहा-णीए बले नाम राया (होत्था) । त(स्सेव)स्स धारिणीपामोक्ख दे(वि)वीसहस्स ओ(उव)रोहे होत्था । तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ सीह सुमिणे पासित्ताण पडिवुद्धा जाव महब्बले (नाम) दारए जाए उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे । तए ण त महब्बल अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसि(री)रिपामोक्खाण पचण्ह रायवरकन्ना-सयाण एगदिवसेग पाणिं गेण्हावेंति । पच पासायसया पचसओ दाओ जाव विह-रइ । (तेण कालेण तेण समएण धम्मघोसा नाम थेरा पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगाम दूइज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव इंदकुभे नाम उज्जाणे तेणेव समोसढा सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरंति) थेरागमण इदकुभे उज्जाणे समोसढे परिसा निग्गया बलो वि (राया) निग्गओ धम्म सोच्चा निसम्म ज नवरं महब्बल कुमारं रज्जे ठावेइ जाव एक्कारसगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएण भत्तेण (अपाणेण केवलं पाउणित्ता जाव) सिद्धे । तए ण सा कमलसिरी अन्नया कयाइ (जाव) सीह सुमिणे (पासित्ताणं पडिवुद्धा) जाव बलभद्दो कुमारो जाओ जुवराया यावि होत्था । तस्स ण महब्बलस्स रन्नो इमे छप्पियबालवयंसगा रायाणो होत्था तजहा-अयले धरणे पूरणे वसू वेसमणे अभिचदे सहजा[य]या जाव स(वड्ढिया ते)हिबाए नित्थरियव्वे-त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति (सुहसुहेण विह-रंति) । तेण कालेण तेण समएण (ध० थे० जे० इ० उ० ते० स०) इदकुंभे

महब्बल(वेय)वज्जा छप्पि(य) देवा (जयं)ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु रायकुलेसु पत्तेयं २ कुमारत्ताए पच्चायाया(सी) तंजहा–पडिबुद्धी इक्खागराया चंदच्छाए अंगराया संखे कासिराया रुप्पी कुणालाहिवई, अदीणसत्तू कुरुराया जियसत्तू पंचालाहिवई। तए णं से महब्बले देवे तिहिं णाणेहिं समग्गे उच्चट्ठाण(ट्ठि)एसु गहेसु सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु जइएसु सउणेसु पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिंसि मारुयंसि पवायंसि निप्फन्नसस्समेइणीयंसि कालंसि पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुणसुद्धे तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थिपक्खेणं जयंताओ विमाणाओ बत्तीसं सागरोवमट्ठि(ई)इयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रण्णो पभावईए देवीए कुच्छिंसि आहारवक्कंतीए भववक्कंतीए सरीरवक्कंतीए गब्भत्ताए वक्कंते। तं रयणिं च णं चोद्दस महासुमिणा वण्णओ। भत्तारकहणं सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ। तए णं तीसे पभावईए देवीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं जलथलयभासुरप्पभूएणं दसद्धवण्णेणं मल्लेणं अत्थुयपच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसण्णाओ संनिवन्नाओ य विहरंति एगं च महं सि(सी)रिदामगंडं पाडलमल्लियचंप(य)गअसोगपुन्नागनागमरुयगदमणगअणोज्जकोज्ज-य(कोरंटपत्तवर)पउरं परमसुह(फास)दरिसणिज्जं महया गंधद्धणिं मुयंतं अग्घायमाणीओ दोहलं विणेंति। तए णं ती(सी)ए पभावईए देवीए इमं ए(इमे)यारूवं दोहलं पाउब्भूयं पासित्ता अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जलथलय जाव दस-द्धवण्णमल्लं कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभगस्स रण्णो भवणंसि साहरंति एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव (गंधद्धणिं) मुयंतं उवणेंति। तए णं सा पभावई देवी जलथलय जाव मल्लेणं दोहलं विणेइ। तए णं सा पभावई देवी पसत्थदोहला जाव विहरइ। तए णं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाण य राइं(ति)दियाणं जे से हेमंता-णं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्स णं (मग्गसिरसुद्धस्स) एक्कारसीए पुव्व-रत्तावरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं (जोगमुवागएणं) उच्चट्ठाण जाव पमुइयप-क्कीलिएसु जणवएसु आरोयाऽऽरोयं एगूणवीसइमं तित्थयरं पयाया ॥ ७२ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अ(हो)हेलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारी(ओ)महय(री)रियाओ जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं (भाणियव्वं) नवरं मिहिलाए (नयरीए) कुंभ(राय)-गस्स (भवणंसि) पभावईए (देवीए) अभिलाओ संजोएयव्वो जाव नंदीसरव(रे)र

छट्ठं करेंति २ त्ता चउत्थं करेंति २ त्ता अट्ठम करेंति २ त्ता छट्ठ करेंति २ त्ता दसम करेंति २ त्ता अट्ठम करेंति २ त्ता दुवालसम करेंति २ त्ता दसमं करेंति २ त्ता चो(चाउ)द्दसमं करेंति २ त्ता दुवालसमं करेंति २ त्ता सोलसम करेंति २ त्ता चोद्दसमं करेंति २ त्ता अट्ठारसम करेंति २ त्ता सोलसम करेंति २ त्ता वीसइम करेंति २ त्ता अट्ठारसम करेंति २ त्ता वीसइम करेंति २ त्ता सोलसम करेंति २ त्ता अट्ठारसमं करेंति २ त्ता चोद्दसम करेंति २ त्ता सोलसम करेंति २ त्ता दुवालसम करेंति २ त्ता चोद्दसम करेंति २ त्ता दसम करेंति २ त्ता दुवालसमं करेंति २ त्ता अट्ठम करेंति २ त्ता दसम करेंति २ त्ता छट्ठ करेंति २ त्ता अट्ठम करेंति २ त्ता चउत्थ करेंति २ त्ता छट्ठ करेंति २ त्ता चउत्थ करेंति सव्वत्थ सव्वकामगुणिएण पारेंति। एवं खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं सत्तहि य अहोरत्तेहि य अहासु(त्ता)त्त जाव आराहिया भवइ। तयाणंतरं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थ करेंति नवरं विग(इ)यवज्ज पारेंति। एव तच्चा[ए]वि परिवाडी[ए] नवरं पारणए अलेवाडं पारेंति। एव चउत्थावि परिवाडी नवरं पारणए आयंबिलेण पारेंति। तए ण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाग सीहनिक्कीलिय तवोकम्म दोहिं संवच्छरेहिं अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्त जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छति २ त्ता थेरे भगवंते वंदति नमसति वं० २ त्ता एव वयासी—इच्छामो ण भंते! महालयं सीहनिक्कीलिय (तवोकम्मं) तहेव जहा खुड्डाग नवर चोत्तीसइमाओ नियत्त(ए)इ एगाए परिवाडीए कालो एगेण संवच्छरेण छहिं मासेहिं अट्ठार(से)सहि य अहोरत्तेहिं समप्पेइ। सव्वपि सीहनिक्कीलिय छहिं वासेहिं दो(हि य)हिं मासेहिं बारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेइ। तए ण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालय सीहनिक्कीलिय अहासुत्त जाव आरा(हे)हित्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छति २ त्ता थेरे भगवंते वंदति नमसति वं० २ त्ता बहूणि चउत्थ जाव विहरंति। तए ण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेण उ(ओ)रालेण सुक्का भुक्खा जहा खंदओ नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारु(वक्खार)पव्वय [सणिय] दुरूहति जाव दोमासियाए संलेहणाए सवीस भत्तसय (अणसण) चउरासीइं वाससयसहस्साइं सामण्णपरियाग पाउणति २ त्ता चुलसीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउय पालइत्ता जयते विमाणे देवत्ताए उववन्ना ॥ ७१ ॥ तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाणं बत्तीस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं महब्बलवज्जाणं छण्ह देवाण देसूणाइ बत्तीस सागरोवमाइ ठिई। महब्बलस्स देवस्स पडिपुण्णाइ बत्तीसं सागरोवमाइ ठिई(प०)। तए ण ते

तए णं पउमावई पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी ह(ट्ठ)ट्ठ जाव कोडुं-
बियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम कल्लं नागजन्नए
भविस्सइ । तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह २ त्ता एवं वयह–एवं खलु पउमावईए
देवीए कल्लं नागजन्नए भविस्सइ । तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! जलथलय( )दसद्धवन्नं
मल्लं नागघरयंसि साहरह एगं च णं महं सिरिदामगंडं उवणेह । तए णं जलथल-
यदसद्धवन्नेणं मल्लेणं णाणाविहभत्तिसुविरइयं (करेह तंसि भत्तिंसि) हंसमियमऊर-
कोंचसारसचक्कवागमयणसालकोइलकुलोववेयं ईहामिय जाव भत्तिचित्तं महग्घं मह-
रिहं विउलं पुप्फमंडवं विरएह । तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंडं
जाव गंधद्धणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओ(ओ)लंबेह २ त्ता पउमावइं देविं पडिवालेमाणा
२ चिट्ठह । तए णं ते कोडुंबिया जाव चिट्ठंति । तए णं सा पउमावई देवी कल्लं
कोडुंबि(यपुरिसे)ए (सद्दावेइ २ त्ता) एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !
सागेयं नयरं सब्भिंतर बाहिरियं आसियसम्मज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति । तए
णं सा पउमावई (देवी) दोच्चंपि कोडुंबिय जाव खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव
जुत्तामेव (उवट्ठवेह, तए णं ते वि तहेव) उव(ट्ठ)वेंति । तए णं सा पउमावई
अंतो अंतेउरंसि ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया धम्मियं जाणं दुरूढा । तए णं सा
पउमावई नियगपरि(वा)लसंपरिवुडा सागेयं नयरं मज्झंमज्झेणं नि(ज्ज)ाइ २
त्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पो(पु)क्खरणिं ओगा(ह)इ २ त्ता
जलमज्जणं जाव परमसुइभूया उल्लपडसाडगा जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हइ २
त्ता जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तए णं पउमावईए दासचेडीओ
बहूओ पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवक(ड)च्छु(ग)हत्थगयाओ पिट्ठओ समणुग-
च्छंति । तए णं पउमावई सव्विड्ढीए जेणेव नागघ(रे)ए तेणेव उवागच्छइ २
त्ता नागप(डिमं)ए अणुप्पविसइ २ त्ता लोमहत्थयं जाव धूवं डहइ २ त्ता पडिबुद्धिं
(रायं) पडिवालेमाणी २ चिट्ठइ । तए णं पडिबुद्धी(राया) ण्हाए हत्थिखंधवरगए
सकोरंट जाव सेयवरचामर(ाहिं) वि य (महया)हयगयरह(जोह)महयाभडचडगर-
पहकरेहिं सागेयं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव नागघरए तेणेव
उवागच्छइ २ त्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ २ त्ता आलोए पणामं करेइ २ त्ता
पुप्फमंडवं अणुपविसइ २ त्ता पासइ तं एगं महं सिरिदामगंडं । तए णं पडिबुद्धी
तं सिरिदामगंडं सु(इ)चिरं कालं निरिक्खइ २ त्ता तंसि सिरिदामगंडंसि जायविम्हए
सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–तुमं(ण्णं) देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर
जाव सन्निवेसाइं आहिंडसि बहू(णि)ण य रा(इ)ईसर जाव गिहाइं अणुपविससि

दीवे महिमा। तया ण कुंभए राया वहूहिं भवणवईहिं ४ तित्थयर(जम्मणाभिसेय)-जायकम्म जाव नामकरण-जम्हा ण अ(म्हे)म्ह इमीए दारियाए (माउगब्भसि चक्कममाणसि) माऊए मल्लसयणीयंसि डोहले विणीए तं होउ ण नामेणं मल्ली (नामं ठवेइ) जहा महब्बले (नाम) जाव परिवड्ढिया-सा व(द्ध)ड्ढई भगवई दियलोयचुया अणोवमसिरीया। दासीदासपरिवुडा परिकिण्णा पीढमद्देहिं ॥१॥ असियसिरया सुन-यणा विवोट्ठी धवलदंतपंतीया। वरकमलकोमलंगी फुल्लुप्पलगंधनीसासा ॥ २ ॥ ७३ ॥ तए ण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कवालभावा जाव रूवेण [य] जोव्वणेण य लावण्णेण य अईव २ उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया(या)वि होत्था। तए ण सा मल्ली (वि०) देसूणवाससयजाया ते छप्पि(य) रायाणो विउलेण ओहिणा आभोएमाणी २ विहरइ तंजहा-पडिवुद्धिं जाव जियसत्तु पचालाहिवइ। तए ण सा मल्ली(वि०) कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! असोग-वणियाए एग मह मोहणघरं करेह अणेगखभसयसन्निविट्ठ। तस्स ण मोहणघरस्स वहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह। तेसि ण गब्भघरगाण वहुमज्झदेसभाए जालघरय करेह। तस्स णं जालघरयस्स वहुमज्झदेसभाए मणिपेढिय करेह (तेवि तहेव) जाव पच्चप्पिणति। तए ण [सा] मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसिय सरित्तय सरिव्वयं सरिसलावण्णजोव्वणगुणोववेय कणगम(इ)यं मत्थय-च्छिड्ड पउमप्पलपिहाणं पडिम करेइ २ त्ता ज विउल असणं ४ आहारेइ तओ मणुन्नाओ असणाओ ४ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंड गहाय तीसे कण(ग)गामईए मत्थ-यछिड्डाए जाव पडिमाए मत्थयसि पक्खिवमाणी २ विहरइ। तए ण तीसे कणगा-मईए जाव मत्थयछिड्डाए पडिमाए एगमेगसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ (पउमुप्पल-पिहाण पिहेइ) तओ गंधे पाउब्भवइ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए [चेव] ॥ ७४ ॥ तेण कालेण तेण समएण कोसला नाम जणवए (होत्था)। तत्थ ण सागेए नाम नयरे। तस्स ण उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं (मह एगे) महेगे नागघरए होत्था। तत्थ ण सागेए नयरे पडि वुद्धी नाम इक्खा(गु)गराया परिवसइ पउमावई देवी सुवुद्धी अमच्चे सामदड०। तए ण पउमावईए देवीए अन्नया कयाइ नागजन्नए यावि होत्था। तए ण सा पउ मावई नागजन्नमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिवुद्धी० करयल जाव एव वयासी-एव खलु सामी! मम कल्लं नागजन्नए (यावि) भविस्सइ, त इच्छामि ण सामी! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नयं गमित्तए, तुब्भेवि ण सामी! मम नाग-जन्नयंसि समोसरह। तए ण पडिवुद्धी पउमावईए (देवीए) एयमट्ठं पडिसुणेइ।

गंभीराए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सयमेव सायणियं मोयंति २ त्ता पोयवहणं सज्जेंति २ त्ता मज्झिमस्स(य) जाव महरिह(स्स)भंडस्स भरेंति तंदुलाण य समियस्स य तेल्लस्स य घयस्स य गुलस्स य गोरसस्स य उदयस्स य उदयभायणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहणं भरेंति (२ त्ता) सोहणंसि तिहिकरण-नक्खत्तमुहुत्तंसि विउलं असणं ४ उवक्खडावेंति २ त्ता मित्तणाइ आपुच्छंति २ त्ता जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति । तए णं तेसिं अरहन्नय जाव वाणियगाणं परियणो जाव ता(हि)हिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं अभिनंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वयासी-अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणेज्ज ! भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जमाणा २ चिरं जीवह भद्दं च भे पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो-त्तिकट्टु ताहिं सोमाहिं निद्धाहिं दीहाहिं सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं नि(री)रिक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति । तओ समाणिएसु पुप्फबलि-कम्मेसु दिन्नेसु सरसरत्तचंदणदद्दरपंचंगुलितलेसु अणुक्खित्तंसि धूवंसि पूइएसु समुद्द-वाएसु संसारियासु वलयबाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु पडुप्पवाइएसु तूरेसु जइएसु सव्वसउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु महया उक्किट्ठिसीहणाय जाव रवेणं पक्खुभिय-महासमुद्दरवभूयंपिव मेइणिं करेमाणा एगदिसिं जाव वाणियगा ना(वं)वाए दुरूढा । तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु-हं भो ! सव्वेसिमवि अत्थसिद्धी उवट्ठियाइं कल्लाणाइं पडिहयाइं सव्वपावाइं जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयं देसकालो । तओ पुस्समाणएणं व(क्के)क्कमुद(ी)हिए हट्ठतुट्ठे कुच्छिधारकण्णधारगब्भि(ज)संजत्ताणावा-वाणियगा वावारिंसु तं नावं पुण्णुच्छंगं पुण्णमुहिं बंधणेहिंतो मुंचंति । तए णं सा नावा विमुक्कबंधणा पवणबलसमाहया उस्सि(ऊसिय)सिया विततप(क्ख)ा इव गरु-(ड)जुवई गंगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखुब्भमाणी २ उम्मीतरंगमालासहस्साइं समइच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा । तए णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजत्तानावावाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं तंजहा-अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ नच्चंति एगं च णं महं पिसायरूवं पासंति तालजंघं दिवं-गयाहिं बाहाहिं मसिमूसगमहिस-कालगं भरियमेहवण्णं लंबोट्ठं निग्गयग्गदंतं निल्लालियजमलजुयलजीहं आऊसियव-यणगंडदेसं चीणचि(पिढ)पिढनासियं विगयभुग्गभग्गभुमयं खज्जोयगदित्तचक्खुरागं उत्तासणगं विसालवच्छं विसालकुच्छिं पलंबकुच्छिं पहसियपयलियपयडियगत्तं पण-

तं अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे पउमावई(ए)देवीए सिरिदामगंडे ? । तए ण सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वयासी–एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाइ तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिं गए । तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए (विदेहरायवरकन्नाए)संवच्छरपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे । तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए [देवीए] सिरिदामगंडे सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घइ । तए णं पडिबुद्धी(राया) सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! मल्ली २ जस्स णं संवच्छरपडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घइ ? । तए णं सुबुद्धी (अमच्चे) पडिबुद्धिं इक्खागरायं एवं वयासी–(एवं खलु सामी !) मल्ली विदेहरायवरकन्नगा सुपइट्ठियकुम्मुन्नयचारुचरणा वण्णओ । तए णं पडिबुद्धी (राया) सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सिरिदामगंडजणियहासे दूयं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं, तत्थ णं कुंभगस्स रन्नो धूयं पभावईए (देवीए) अ(त्त)त्तियं मल्लिं २ मम भारियत्ताए वरेहि जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका । तए णं से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव पडिसुणेइ २ त्ता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चाउग्घंटं आसरहं पडिकप्पावेइ २ त्ता दुरूढे जाव हयगयमहयाभडचडगरेणं साएयाओ निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव विदेहजणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव, पहारेत्थ गमणाए (१) ॥ ७५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अंगे नामं जणवए होत्था । तत्थ णं चंपा नामं नयरी होत्था । तत्थ णं चंपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था । तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्तानावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव अपरिभूया । तए णं से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था अहिगयजीवाजीवे वण्णओ । तए णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजत्तानावावाणियगाणं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं इमे(ए)यारूवे मिहोकहासमुल्ला(संला)वे समुप्पज्जित्था–सेयं खलु अम्हं गणिमं(च) धरिमं च मेज्जं च प(पा)रिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए–त्तिकट्टु अन्नम(न्न)न्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता गणिमं च ४ गेण्हंति २ त्ता सग(ढि)डीसाग(डि)डयं (च) सज्जेंति २ त्ता गणिमस्स ४ भंडगस्स सगडसागडियं भरेंति २ त्ता सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि विउलं असणं ४ उवक्खडावेंति मित्तनाइ भोयणवेलाए भुंजावेंति जाव आपुच्छंति २ त्ता सगडीसागडियं जोयंति २ त्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति २ त्ता जेणेव

घटना म० महावीरके व्यक्तित्वको बढ़ानेवाली भी नहीं है, इसलिये इस असत्य कल्पनाका कोई दूसरा कारण होना चाहिये।

दो ही कारण समझमें आते हैं। एक तो यह कि म० कृष्णके जीवन चरित्रका म० महावीरके जीवन चरित-लेखकपर प्रभाव पड़ा हो। म० कृष्ण और म० महावीरके जीवन-चरितमें कुछ ऐसी समानताएँ आ गई हैं जो स्वतंत्रतासे सम्बन्ध नहीं रखतीं। जैसे कृष्णका गोवर्धन उठाना और महावीरका मेरुकम्पन, कृष्णद्वारा सर्परूपधारी अघासुरका और अश्वरूपधारी प्रलम्बासुरका वध तथा महावीरद्वारा इन रूपोंको धारण करनेवाले देवोंका पराजय। कृष्णद्वारा कालिय-दमन महावीरद्वारा चण्डकौशिक-वशीकरण, कृष्णद्वारा विषस्तन-पान पूतनावध, महावीरद्वारा अग्नि-उपसर्ग-सहन तथा कठपूतना व्यन्तरीका पराजित होना आदि।

इसी प्रकार यहाँ सम्भव है कि विष्णुके एक अंशका देवकीके गर्भसे रोहिणीके गर्भमें संक्रमण होनेके समान यहाँ भी गर्भापहरण हुआ हो। अथवा दूसरा भी कारण हो सकता है। इस विषयका वर्णन है कि—

'जिस समय देवानन्दाका गर्भ अपहरण कर लिया गया उस समय वह चिल्ला उठी कि मेरा गर्भ किसीने हर लिया।' इस वर्णनसे इतना तो मालूम होता है कि उस समय स्त्री-समाजमें यह मिथ्या मान्यता प्रचलित थी कि स्त्रियोंका गर्भ हरण किया जाता है। देवानन्दाका गर्भ ८२ दिवसमें किसी कारण गिर गया हो और स्त्री-सुलभ उक्त मान्यताके अनुसार यह प्रसिद्धि हो गई हो कि देवानन्दाका गर्भ किसीने हर लिया है उधर त्रिसला देवीके गर्भ-वर्णनसे इस घटनाका सम्बन्ध कुछ ठीक

प्पमाणं अप्फोडंतं अभिवयंत अभिगज्जंत बहुसो २ अट्टहासे विणिम्मुयंत नीलुप्प-लगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय अभिमुहमावयमाणं पासति। तए णं ते अरहन्नगवज्जा संजत्तानावावाणियगा एगं च णं महं तालपिसायं (पासति) पासित्ता तालजंघं दिवगयाहिं बाहाहिं फुट्टसिरं भमरनिगरवरमासरासिमहिसकालग भरियमेहवण्णं सुप्पणहं फालसरिसजीहं लंबोट्ठं धवलवट्टअसिलिट्ठतिक्खथिरपीणकु डिलदाढोवगूढवयणं विकोसियधारासिजुयलसमसरिसतणुयचंचलगलंतरसलोलच-वलफुरुफुरेंतनिल्लालियग्गजीहं अवयच्छियमहल्लविगयबीभच्छलालपगलंतरत्ततालुयं हिंगु(लु)लयसगब्भकंदरबिलं व अंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयणं आऊसिय-अक्खचम्मउइट्टगंडदेसं चीणचि(पिड)मिढवंकभग्गनासं रोसागयधमधमेंतमारुय-निट्ठुरखरफरुसझुसिरं ओभुग्गनासियपुडं घ(धा)डुब्भडरइयभीसणमुहं उद्धमुहक-ण्णसक्कुलियमहंतविगयलोमसखालगलंबतचलियकण्णं पिंगलदिप्पंतलोयणं भिउडित-डि(य)निडालं नरसिरमालपरिणद्धचिंधं विचित्तगोणससुबद्धपरिकरं अवहोलंतपु(प्फु)-प्फयायतसप्पविच्छुयगोधुंदरनउलसरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियागं भोगकूरकण्ह-सप्पधमधमेंतलंबंतकण्णपूरं मज्जारसियाललइयखंधं दित्त(घुघु)घूघूयंतघूयकयकुंतल-सिरं घंटारवेण भीमं भयंकरं कायरजणहिययफोडणं दित्तमट्टहासं विणिम्मुयंतं वसा-रुहिरपूयमंसमलमलिणपोच्चडतणुं उत्तासणयं विसालवच्छं पेच्छंताभिन्ननहमुहनयण-कण्णवरवग्घचित्तकत्तीणि(व)यसणं सरसरुहिरगयचम्मवियययऊसवियबाहुजुयलं ताहि य खरफरुसअसिणिद्धअणिट्ठदित्तअसुभअप्पिय(अमणुन्न)अकंतवग्गूहि य तज्जयंतं पासति तं तालपिसायरूवं एज्जमाणं पासति २ त्ता भीया संजायभया अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा २ बहूणं इंदाण य खंदाण य रुद्दसिववेसमणनागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा २ चिट्ठति। तए णं से अरहन्नए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासइ २ त्ता अभीए अतत्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिन्नमुहरागनयणवण्णे अदीणवि-मणमाणसे पोयवहणस्स एगदेससि वत्थंतेण भूमिं पमज्जइ २ त्ता ठाणं ठाइ २ त्ता करयल(ओ) जाव एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, जइ णं अहं एत्तो उवसग्गाओ मुंचामि तो मे कप्पइ पारित्तए, अह णं एत्तो उवसग्गाओ न मुंचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे-(त्ति)तिकट्टु सागारं भत्तं पच्चक्खाइ। तए णं से पिसायरूवे जेणेव अरहन्न(ए)गे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अरहन्नगं एवं वयासी-हं भो! अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया [!] नो खलु कप्पइ तव सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खा(णे)णपोसहोववासाइं चालित्तए वा एवं

खो(भे)भित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिणमित्तए वा। तं जइ णं तुमं सीलव्वयं जाव न परिच्चयसि तो ते अहं एयं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हामि २ त्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उव्विहामि (२ त्ता) अंतो जलंसि णिच्छोलेमि जा(जे)णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। तए णं से अरहन्नगे समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी-अहं णं देवाणुप्पिया! अरहन्नए नामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्का केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिण(मे)मित्तए वा तुमं णं जा सद्धा तं करेहि-त्तिकट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवण्णे अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ। तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-हं भो अरहन्नगा! जाव (अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए) धम्मज्झाणोवगए विहरइ। तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ २ त्ता बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गिण्हइ २ त्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं एवं वयासी-हं भो अरहन्नगा! अपत्थियपत्थिया! नो खलु कप्पइ तव सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ। तए णं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ चालित्तए वा (ताहे) तहेव (सं)-संते जाव निव्विण्णे तं पोयवहणं सणियं २ उवरिं जलस्स ठवेइ २ त्ता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाह(र)रेइ २ त्ता दिव्वं देवरूवं विउव्वइ २ त्ता अंतलिक्खपडिवन्ने सखिंखि(णि)याइं जाव परिहिए अरहन्नगं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो अरहन्नगा! धन्नोसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया एवं खलु देवाणुप्पिया! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं मज्झगए महया [१] सद्देणं [एवं] आइक्खइ ४-एवं खलु जंबुद्दीवे २ भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्का केणइ देवेण वा (दाणवेण वा) ९ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामित्तए वा। तए णं अहं देवाणुप्पिया! सक्कस्स (देविंदस्स) नो एयमट्ठं सद्दहामि( )। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए—गच्छामि णं [अहं] अरहन्न(ग)स्स अंतियं पाउब्भवामि जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं पियधम्मे नो पियधम्मे दढधम्मे नो दढधम्मे सीलव्वयगुणे किं चालेइ जाव परिच्चयइ नो परिच्चयइ त्तिकट्टु एवं संपेहेमि २ त्ता ओहिं पउंजामि २ त्ता देवाणुप्पियं ओहिणा आभोएमि २ त्ता उत्तरपुरत्थिमं २

उत्तरवेउव्वियं० ताए उक्किट्ठाए(जाव)जेणेव लवणसमुद्दे जेणेव देवाणुप्पिया तेणेव उवागच्छामि २ त्ता देवाणुप्पि(याणं)यं उवसग्गं करेमि नो चेव णं देवाणुप्पिया भीया वा(०), तं जं णं सक्के ३ [एवं] वयइ सच्चे णं एसमट्ठे, त दिट्ठे ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया! खमतु मरहंतु णं देवाणुप्पिया! नाइभुज्जो (२) एवंकरणयाए–त्तिकट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठ विणएणं भुज्जो २ खामेइ (२ त्ता) अरहन्नगस्स [य] दुवे कुडलजुयले दलयइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव(दिसिं)पडिगए ॥ ७६ ॥ तए णं से अरहन्नए निरुवसग्गमितिकट्टु पडिम पारेइ। तए ण ते अरहन्नगपामोक्खा जाव वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएण जेणेव गभीरए पोय(पट्टणे)ट्ठाणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता पोयं लबेंति २ त्ता सगडिसागड सज्जेंति (२ त्ता) तं गणिम [च] ४ सगडि० सकामेंति २ त्ता सगडी० जो(ए)विंति २ त्ता जेणेव मिहिला(०) तेणेव उवागच्छति २ त्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणसि सगडीसागडं मोएंति २ त्ता (मिहिलाए रायहाणीए तं)महत्थ (महग्घ महरिहं) विउल रायारिह पाहुड कुडलजुयल च गेण्हति २ त्ता (मिहिलाए रायहाणीए) अणुप्पविसति २ त्ता जेणेव कुभए(राया) तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल जाव महत्थ दिव्व कुडलजुयल उवणेंति। तए ण कुभए(राया) तेसिं सजत्तगाणं जाव पडिच्छइ २ त्ता मल्लिं २ सद्दावेइ २ त्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए २ पिणद्धेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ। तए ण से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे जाव वाणियगे विपुलेण (अस०) वत्थगंधमल्लालंकारेणं जाव उस्सुक्कं वियरइ २ त्ता रायमग्गमोगाढे(इ)य आवासे वियरइ [२ त्ता] पडिविसज्जेइ। तए ण अरहन्नगसंजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भडववहरण करेंति (२ त्ता) पडिभ(डं)डे गेण्हति २ त्ता सगडी० भरेंति जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता पोयवहणं सज्जेंति २ त्ता भंडं संकामेंति दक्खिणाणु० जेणेव चंपा पोयट्ठाणे तेणेव पोयं लबेंति २ त्ता सगडी० सज्जेंति २ त्ता तं गणिमं ४ सगडी० संकामेंति जाव महत्थं [महग्घं] पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयल गेण्हति २ त्ता जेणेव चदच्छाए अगराया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता त महत्थं जाव उवणेंति। तए णं चंदच्छाए अगराया त दिव्वं महत्थं(च) कुडलजुयल पडिच्छइ २ त्ता ते अरहन्नगपामोक्खे एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! बहूणि गामागर जाव आहिंडह लवणसमुद्द च अभिक्खणं २ पोयवहणेहिं ओगाहेह, तं अत्थियाइं भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे? तए ण ते अरहन्नगपामोक्खा चंदच्छायं अगरायं एव

ण देवाणुप्पिया! मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुप्पविससि, त अत्थियाइ ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए[?]। तए णं से वरिसधरे रुप्पिं करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी–एवं खलु सामी! अहं अन्नया तु(म्मेण)म्भ दोच्चेण मिहिलं गए, तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए २ मज्जणए दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इ(मे)मीए सुबाहु(ए)दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमपि कलं न अ(ग्घे)ग्घइ। तए णं से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंति-(ए)यं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म(सेस तहेव) मज्जणगजणियहासे दूयं सद्दावेइ जाव जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए (३)॥ ७८॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं कासी नाम जणवए होत्था। तत्थ णं वाणारसी नाम नयरी होत्था। तत्थ णं संखे नाम कासीराया होत्था। तए णं तीसे मल्लीए २ अन्नया कयाइ तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था। तए णं से कुंभए राया सुवण्णगारसेणिं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह। तए णं सा सुवण्णगारसेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ २ त्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हइ २ त्ता जेणेव सुवण्णगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सुवण्णगारभिसियासु निवेसेइ २ त्ता बहूहिं आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छ(न्ति)इ तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं घडित्तए नो चेव णं संचाएइ (सं)घडित्तए। तए णं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी–एवं खलु सामी! अज्ज तु(ब्भे)म्हे अम्हे सद्दावेह जाव संधिं संघाडेत्ता ए(य)वमा(ण)णत्तियं पच्चप्पिणह। तए णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो जेणेव सुवण्णगारभिसियाओ जाव नो संचाएमो संघाडित्तए। तए णं अम्हे सामी! एयस्स दिव्वस्स कुंडलस्स अन्नं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो। तए णं से कुंभए राया तीसे सुवण्णगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते ४ तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी–(से के)केस णं तुब्भे कलायाणं भवह (?) जे णं तुब्भे इमस्स [दिव्वस्स] कुंडलजुयलस्स नो संचाएह संधिं संघाडित्तए? ते सुवण्णगारे निव्विसए आणवेइ। तए णं ते सुवण्णगारा कु(भे)भगेणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सभंडमत्तोवगरणमाया(ओ)ए मिहिलाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निक्खमंति २ त्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं मोएंति २ त्ता महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति

वयासी-एवं खलु सामी! अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्तागानावावाणियगा परिवसामो। तए णं अम्हे अन्नया कयाइ गणिमं च ४ तहेव अहीण(म)अइरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो। तए णं से कुंभए मल्लीए २ तं दिव्वं कुंडलजुयलं पिणद्धेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ। तं एस णं सामी! अम्हेहिं कुंभ[ग]रायभवणंसि मल्ली २ अच्छेरए दिट्ठे। तं नो खलु अन्ना काइ तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली २। तए णं चंदच्छाए(ते)अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ सम्माणेइ स० २ त्ता [उस्सुंकं वियरइ] पडिविसज्जेइ। तए णं चंदच्छाए वाणियगजणियहासे दूतं सद्दावेइ जाव जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका। तए णं से दूए हट्ठ जाव पहारेत्थ गमणाए (२) ॥ ७७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नामं जणवए होत्था। तत्थ णं सावत्थी नामं नयरी होत्था। तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नामं राया होत्था। तस्स णं रुप्पिस्स धूया धारिणीए देवीए अत्तया सुबा(हु)हू नामं दारिया होत्था सुकुमाल जाव रूवेण य जोव्वणे(णं)ण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था। तीसे णं सुबाहूए दारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था। तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहूए दारियाए चाउम्मासियमज्जणयं उवट्ठियं जाणइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! सुबाहु(ए)दारियाए कल्लं चाउम्मासियमज्जणए भविस्सइ। तं(कल्लं)तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि(चउक्कंसि)मंडवंसि जलथलयदसद्धवन्नमल्लं साह(रे)रह जाव सिरिदामगं(डं)डं ओलइंति। तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि नानाविहपंचवन्नेहिं तंदुलेहिं नगरं आलिहइ तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टयं रएइ जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थिखंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भडचडगर जाव अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमंडवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ २ त्ता पुप्फमंड(वं)वे अणुप्पविसइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने। तए णं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं दारियं पट्टयंसि दुरुहेंति २ त्ता से(य)यापीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति २ त्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति २ त्ता पिउणो पा(यं)यवंदि(दे)उं उवणेंति। तए णं सुबाहू दारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पायग्गहणं करेइ। तए णं से रुप्पी राया सुबाहुं दारियं अंके निवेसेइ २ त्ता सुबाहु(ए)दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य (जाव विम्हिए) जायविम्हए वरिसधरं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-तुमं

रूवं निव्वत्तित्तए। एव सपेहेइ २ त्ता भूमिभागं सज्जेइ (२ त्ता) मल्लीए २ पायगुट्ठा-णुसारेण जाव निव्वत्तेइ। तए ण सा चित्तगरसेणी चित्तसभ जाव हावभा(वे)व चित्तेइ २ त्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ जाव ए(य)माणत्तिय पच्च-प्पिणइ। तए ण मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सक्कारेइ २(०) विपुल जीवियारिहं पीइदाण द(ले)लयइ २ त्ता पडिविसज्जेइ। तए णं मल्लदिन्न (कुमारे) अन्नया ण्हाए अतेउ-रपरियालसपरिवुडे अम्मधाइए सार्द्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चित्तसभं अणुप्पविसइ २ त्ता हावभावविलास(वि)विब्बोयकलियाइं रूवाइ पासमाणे (२) जेणेव मल्लीए २ तयाणुरू(वे)व निव्वत्तिए तेणेय पहारेत्थ गमणाए। तए णं से मल्लदिन्ने (कुमारे) मल्लीए २ तयाणुरूवं निव्वत्तिय पासइ २ त्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एस ण मल्ली २ तिकट्टु लज्जिए वीडिए वि(अडे)ड्डे सणियं २ पच्चोसक्कइ। तए णं [त] मल्लदिन्न अम्मधाई [सणियं २] पच्चोसक्कत पासित्ता एव वयासी–किन्न तुम पुत्ता! लज्जिए वीडिए विड्डे सणिय २ पच्चोसक्कसि?। तए ण से मल्लदिन्ने अम्मधाइ एव वयासी–जुत्त ण अम्मो! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवय-भूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तिय सभ अणुपविसित्तए?। तए ण अम्म-धाई मल्लदिन्नं कुमार एव वयासी–नो खलु पुत्ता! एस मल्ली, एस ण मल्लीए २ चित्तगरएण तयाणुरूवे निव्वत्तिए। तए णं [से] मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते [४] एव वयासी–केस ण भो (!) [से] चित्त(य)गरए अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जे ण मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवयभूयाए जाव निव्वत्तिए–त्तिकट्टु त चित्तगरं वज्झ आणवेइ। तए ण सा चित्तगर(स)सेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयलपरिग्गहिय जाव वद्धावेत्ता एव वयासी–एव खलु सामी! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्त(क)गरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया–जस्स ण दुपयस्स वा जाव निवत्तेइ, त मा ण सामी! तुब्भे त चित्तगरं वज्झ आणवेह, त तुब्भे ण सामी! तस्स चित्तगरस्स अन्नं तयाणुरूव दड निव्वत्तेह। तए ण से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स सडासग छिंदावेइ २ त्ता निव्वि सय आणवेइ। तए ण से चित्तगरए मल्लदिन्नेण निव्विसए आणत्ते (समाणे) सभड-मत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ नयरीओ निक्खमइ २ त्ता विदेह जणवय मज्झम-ज्झेण जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरे नयरे (जेणेव अदीणसत्तू राया) तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भडनिक्खेव करेइ २ त्ता चित्तफलगं सज्जेइ २ त्ता मल्लीए २ पायगुट्ठाणुसारेण रूवं निव्वत्तेइ २ त्ता कक्खतरंसि छुब्भइ २ त्ता महत्थ जाव पाहुड गेण्हइ २ त्ता हत्थिणाउरं नयरं मज्झमज्झेण जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवा-

२ त्ता वाणारसीए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखे कासीराया तेणेव उवागच्छंति
२ त्ता करयल जाव वद्धावेंति २ त्ता (पाहुडं पुरओ ठावेंति २ त्ता संखरं णं) एवं
वयासी–अम्हे णं सामी! मिहिलाओ (नयरीओ) कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता
समाणा इ(इ)ह हव्वमागया तं इच्छामो णं सामी! तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिया
निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसिउं। तए णं संखे कासीराया ते सुवण्णगारे
एवं वयासी–किं णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता?। तए
णं ते सुवण्णगारा संखं एवं वयासी–एवं खलु सामी! कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभा
वईए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए। तए णं से कुंभए
सुवण्णगारसेणिं सद्दावेइ जाव निव्विसया आणत्ता। तं एएणं कारणेणं सामी! अम्हे
कुंभएणं निव्विसया आणत्ता। तए णं से संखे सुवण्णगारे एवं वयासी–केरिसिया
णं देवाणुप्पिया! कुंभ(ग)स्स [रन्नो] धूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेहराय-
वरकन्ना?। तए णं ते सुवण्णगारा सं(ख)खं रायं एवं वयासी–नो खलु सामी! अन्ना
का(इ)वि तारिसिया देवकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली २। तए णं
से संखे कुंडल(जुयल)जणियहासे दूयं सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए (४)
॥ ७१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं कुरुजणवए होत्था। हत्थिणाउरे नयरे। अदी-
णसत्तू नामं राया होत्था जाव विहरइ। तत्थ णं मिहिलाए [तस्स णं] कुंभगस्स पुत्ते
पभावईए अत्तए मल्लीए अणु[मग्ग]जायए मल्लदि(न्नए)न्ने नामं कुमारे जाव जुवराया
यावि होत्था। तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं
वयासी–गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह अणेग जाव
पच्चप्पिणंति। तए णं से मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–तुब्भे णं
देवाणुप्पिया! चित्तसभं हावभावविलासविब्भोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह जाव पच्च-
प्पिणह। तए णं सा चित्तगरसेणी तहत्ति पडिसुणेइ २ त्ता जेणेव सयाइं गिहाइं
तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तूलियाओ वण्णए य गेण्हइ २ त्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव
(उवागच्छइ २ त्ता) अणुप्पविसइ २ त्ता भूमिभागे विरचइ २ त्ता भूमिं सज्जेइ २
त्ता चित्तसभं हावभाव जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था। तए णं एगस्स चित्त-
गरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया–जस्स णं दुपयस्स वा
चउ(प)प्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणु-
रूवं [रूवं] नि(व्व)वत्तेइ। तए णं से चित्तगार(दार)ए मल्लीए जवणियंतरियाए जालं-
तरेण पायंगुटुं पासइ। तए णं तस्स(णं) चित्तगरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव
समुप्पज्जित्था–सेयं खलु ममं मल्लीए २ पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं जाव गुणोववेयं

एण य मट्टियाए जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो। तए णं मल्ली २ चोक्खं परिव्वा-इय एव वयासी–चोक्खा! से जहानामए के(ई)इ पुरिसे रुहिरकय वत्थं रुहिरे(ण)णं चेव धोवेज्जा अत्थि णं चोक्खा! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण धोव्वमाणस्स का(ई)इ सोही? नो इणट्ठे समट्ठे। एवामेव चोक्खा! तुब्भे ण पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण नत्थि काइ सोही जहा (व) वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहि-रेण चेव धोव्वमाणस्स। तए ण सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए २ एवं वुत्ता समा-(णा)णी संकिया कखिया विइगिच्छिया भेयसमावन्ना जाया(या)वि होत्था मल्लीए नो संचाएइ किंचिवि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसिणीया सचिट्ठइ। तए ण त चोक्ख मल्लीए ?] व(हु)हूओ दासचेडीओ हीलेंति निंदति खिंसति ग(र)रिहंति अप्पेगइया [ओ] हेरुया(ल)लेंति अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति अप्पेगइया त(ज्ज)ज्जेमाणीओ (क० अ०) ता(ले)लेमा(णि)णीओ (क०अ०) निच्छु(भं)हति। तए ण सा चोक्खा मल्लीए २ दासचेडियाहिं हीलिज्जमाणी जाव गरहिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी मल्लीए २ पओसमावज्जइ [२] भिसिय गेण्हइ २ त्ता कन्नतेउराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ २ त्ता परिव्वाइयासपरिवुडा जेणेव पचालजणवए जेणेव कपिल्लपुरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वहूग राईसर जाव परूवेमाणी विहरइ। तए ण से जियसत्तू अन्नया कयाइ अतेउरपरियालसद्धिं सप-रिवुडे एव जाव विहरइ। तए ण सा चोक्खा परिव्वाइयासपरिवुडा जेणेव जिय-सत्तुस्स रन्नो भवणे जेणेव जियसत्तू तेणेव (उवागच्छइ २ त्ता) अणुपविसइ २ त्ता जियसत्तुं जएण विजएण वद्धावेइ। तए ण से जियसत्तू चोक्ख परिव्वाइयं एज्जमाण पासइ २ त्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता चोक्ख (परिव्वाइय) सक्कारेइ २(०) आस-णेण उवनिमतेइ। तए ण सा चोक्खा उदगपरिफोसियाए जाव भिसियाए निविसइ जियसत्तु राय रज्जे य जाव अतेउरे य कुसलोदत पुच्छइ। तए णं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रन्नो दाणधम्म च जाव विहरइ। तए णं से जियसत्तू अप्पगो ओरो-हसि (जाव विम्हिए) जायविम्हए चोक्ख (परिव्वाइय) एव वयासी–तुम ण देवा-णुप्पिया! वहूणि गामागर जाव (अडह) आहिंडसि वहूग य राईसरगिहाइ अणु-प्पविस(सि)हि, त अत्थियाइ ते कस्स(वि)इ रन्नो वा जाव एरिसए ओरोहे दिट्ठ-पुव्वे जारिसए ण इमे म(ह)म ओ(उव)रोहे? । तए ण सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तु (राय) एव (वयासी–)ईसिं अवहसिय करेइ २ त्ता एव वयासी–(एव च) सरिसए ण तुमं देवाणुप्पिया! तस्स अगडदद्दुरस्स। केस ण देवाणुप्पिए! से अग-डदद्दुरे? जियसत्तू! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया, से ण तत्थ जाए तत्थेव वु(ड्ढे)-

पच्चक्खइ २ त्ता तं करयल जाव वद्धावेइ २ त्ता पाहुडं उवणेइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु अम्हं सामी ! मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रण्णो पुत्तेणं पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इ(ह)ं हव्वमागए, तं इच्छामि णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिए जाव परिवसित्तए । तए णं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगरदारयं एवं वयासी–किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मल्लदिन्नेणं निव्विसए आणत्ते ? । तए णं से चित्त(अ)गरदारए अदीणस(त्तु)ं रायं एवं वयासी–एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कया(इ) चित्तगरसेणिं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव मम संडासगं छिंदावेइ २ त्ता निव्विसयं आणवेइ, तं एवं खलु [अहं] सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते । तए णं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वयासी–से केरिसए णं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए त(दा)णुरूवे (रूवे) निव्वत्तिए ? । तए णं से चित्तगरे कक्खंतराओ चित्तफल(गं)यं णीणेइ २ त्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ २ त्ता एवं वयासी–एस णं सामी ! मल्लीए २ तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगारभावपडोयारे निव्वत्तिए, णो खलु सक्का केणइ देवेण वा जाव मल्लीए २ तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तित्तए । तए णं [से] अदीणसत्तू (राया) पडिरूवजणियहासे दूयं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी तहेव जाव पहारेत्थ गम(णा)णाए (५) ॥ ७८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पंचाले जणवए कंपि(पि)ल्लपुरे (नामं) नयरे (होत्था) । जियसत्तू नामं राया पंचालाहिवई । तस्स णं जियसत्तुस्स धारिणीपामोक्खं दे(वि)सीयहस्सं ओरोहे होत्था । तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेय जाव [प]रिनिट्ठिया यावि होत्था । तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभिईणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पन्नवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ । तए णं सा चोक्खा (परिव्वाइया) अन्नया कयाइं तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ (य) ४ गेण्हइ २ त्ता परिव्वाइयावसहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता पविरलपरिव्वाइयासद्धिं संपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे जेणेव कन्नंतेउरे जेणेव मल्ली २ तेणेव उवागच्छइ २ त्ता उदयपरि(फा)फोसियाए दब्भोवरि पच्चुत्थुयाए भिसियाए णि(नि)सीयइ २ त्ता मल्लीए २ पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ । तए णं मल्ली २ चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी–तुब्भे णं चोक्खे ! किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ? । तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्ली २ एवं वयासी–अम्हं णं देवाणुप्पिया ! सोयमूलए धम्मे पन्न(वे)त्ते जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदए-

बैठता है। 'एक बार गर्भस्थ भगवान्ने यह सोचा कि मेरे हलन-चलनसे माताको कष्ट न हो इसलिये वे इस प्रकार निस्तब्ध हो गये कि त्रिसलादेवीको यह सन्देह होने लगा कि मेरा गर्भ किसीने हर तो नहीं लिया अथवा गल तो नहीं गया ? इस आशंकासे कुटुंबी जन भी बहुत दु खी हुए, तब भगवान्ने अंग फरकाया जिससे गर्भका अस्तित्व मालूम हुआ।' गर्भस्थ बालकके सोचनेकी भक्ति-कल्प्य बातको अगर हम अलग कर दें तो इस वर्णनसे इतना तो मालूम होता है कि कुछ समयके लिये त्रिसला देवीका गर्भ गूढ़ हो गया था। त्रिसला देवी और देवानन्दाकी इन घटनाओंको मिलाकर लोकमें यह प्रसिद्धि हो गई हो कि वास्तवमे त्रिसलादेवीके गर्भ था ही नहीं—वह तो देवानन्दाका गर्भ अपहृत होकर त्रिसलाकी कुक्षिमें आ गया है। पीछेसे यह प्रसिद्धि धर्म-ग्रन्थोमें पहुँच कर इन्द्रको बुला लाई हो और इस तरह वह अपने वर्तमान रूपको पहुँची हो।

ब्राह्मणकुलको नीच कुल साबित करनेके लिये यह घटना कल्पित की गई हो, यह बात बिलकुल नहीं जँचती। यह कार्य अन्य अनेक उपायोंसे हो सकता था। उसके लिये ऐसी असभव घटना कल्पित नहीं की जा सकती। हाँ, यह निश्चित है कि किसी कारण गर्भ-हरणकी प्रसिद्धि हो गई और पीछे ग्रन्थकारोंने ब्राह्मणोंकी निन्दा करनेका बहाना ढूँढ़ लिया।

इस घटनाका मूल खोजनेके लिये यह सिर्फ दिङ्निर्देश है। सम्भव है इसका और कोई कारण हो, जिसे आज हम नहीं जानते।

म० महावीरका जन्मोत्सव अच्छी तरह मनाया गया था और वे बाल्यावस्थासे ही बलवान्, निर्भय, साहसी और बुद्धिमान् थे। उनकी

एण य मट्टियाए जाव अविग्घेण सग्ग गच्छामो। तए णं मल्ली २ चोक्खं परिव्वा-इय एव वयासी-चोक्खा! से जहानामए के(ई)इ पुरिसे रुहिरकय वत्थं रुहिरे(ण)ण चेव धोवेज्जा अत्थि ण चोक्खा! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण धोव्वमाणस्स का(ई)इ सोही? नो इणट्ठे समट्ठे। एवामेव चोक्खा! तुब्भे ण पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण नत्थि काइ सोही जहा (व) वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहि-रेण चेव धोव्वमाणस्स। तए ण सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए २ एव वुत्ता समा-(णा)णी सकिया कखिया विइगिच्छिया भेयसमावन्ना जाया(या)वि होत्था मल्लीए नो सचाएइ किंचिवि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसिणीया सचिट्ठइ। तए ण त चोक्खं मल्लीए २] व(हु)हूओ दासचेडीओ हीलेंति निंदति खिंसति ग(र)रिहंति अप्पेगइया [ओ] हेरुया(ल)लेंति अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति अप्पेगइया त(ज्ज)ज्जेमाणीओ (क० अ०) तालेमा(णि)णीओ (क०अ०) निच्छु(भ) हति। तए ण सा चोक्खा मल्लीए २ दासचेडियाहिं हीलिज्जमाणी जाव गरहिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी मल्लीए २ पओसमावज्जइ [२] भिसिय गेण्हइ २ त्ता कन्नतेउराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ २ त्ता परिव्वाइयासपरिवुडा जेणेव पचालजणवए जेणेव कपिल्लपुरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वहूण राईसर जाव परूवेमाणी विहरइ। तए णं से जियसत्तू अन्नया कयाइ अतेउरपरियालसद्धिं सप-रिवुडे एव जाव विहरइ। तए ण सा चोक्खा परिव्वाइयासपरिवुडा जेणेव जिय-सत्तुस्स रन्नो भवणे जेणेव जियसत्तू तेणेव (उवागच्छइ २ त्ता) अणुपविसइ २ त्ता जियसत्तु जएण विजएण वद्धावेइ। तए ण से जियसत्तू चोक्ख परिव्वाइय एज्जमाण पासइ २ त्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता चोक्ख (परिव्वाइय) सक्कारेइ २(०) आस-णेण उवनिमतेइ। तए णं सा चोक्खा उदगपरिफोसियाए जाव भिसियाए निविसइ जियसत्तु राय रज्जे य जाव अतेउरे य कुसलोदत पुच्छइ। तए ण सा चोक्खा जियसत्तुस्स रन्नो दाणधम्म च जाव विहरइ। तए णं से जियसत्तू अप्पणो ओरो-हसि (जाव विम्हिए) जायविम्हए चोक्ख (परिव्वाइय) एव वयासी-तुम ण देवा-णुप्पिया! वहूणि गामागर जाव (अडह) आहिंडसि वहूण य राईसरगिहाइ अणु-प्पविस(सि)हि, त अत्थियाइ ते कस्स(वि)इ रन्नो वा जाव एरिसए ओरोहे दिट्ठ-पुव्वे जारिसए ण इमे म(ह)म ओ(उव)रोहे? । तए ण सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तु (राय) एव (वयासी-)ईसिं अवहसियं करेइ २ त्ता एव वयासी-(एवं च) सरिसए ण तुमं देवाणुप्पिया! तस्स अगडदद्दुरस्स। केस णं देवाणुप्पिए! से अग-डदद्दुरे? जियसत्तू! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया, से ण तत्थ जाए तत्थेव वु(ड्ढे)-

कुंभए(राया)मल्लिं २ णो आढाइ णो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ । तए णं मल्ली २ कुंभगं(रायं)एवं वयासी-तुब्भे णं ताओ! अण्णया ममं एज्जमाणं जाव निवेसेह, किं णं तुब्भं अज्ज ओहय जाव झियायह? । तए णं कुंभए मल्लिं २ एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता! तव कज्जे जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया । ते णं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा । तए णं(ते)जियसत्तू(पु)पामोक्खा तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं जाव चिट्ठंति । तए णं अहं पुत्ता(!)तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि अलभमाणे जाव झियामि । तए णं सा मल्ली २ कुंभ(यं)गं रायं एवं वयासी-मा णं तुब्भे ताओ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह, तुब्भे णं ताओ! तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं २ रह(स्सि)सियं दूयसंपेसे करेह एगमेगं एवं वयह-तव देमि मल्लिं १ त्तिकट्टु संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि निसंत-पडिनिसंतंसि पत्तेयं २ मिहिलं रायहाणिं अणुप्प(वे)वेसेह २ त्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिहेह २ त्ता रोहसज्जे चिट्ठह । तए णं कुंभए(राया)एवं तं चेव जाव पवेसेइ रोहसज्जे चिट्ठइ । तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि(य)रायाणो कल्लं(पाउप्पभा)जाव [जलंते] जालंतरेहिं कणगमयं मत्थयछिड्डं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासंति एस णं मल्ली २ त्तिकट्टु मल्लीए १ रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा जाव अज्झोववन्ना अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा १ चिट्ठंति । तए णं सा मल्ली २ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कण(ग)गपडिमा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तीसे कण पडिमाए मत्थयाओ तं पउमं अवणेइ । तए णं गंधे निद्धा(वा)वेइ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव असुभतराए चेव । तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरि(ज्ज)एहिं आसाइं पिहेंति २ त्ता परम्मुहा चिट्ठंति । तए णं सा मल्ली २ ते जियसत्तुपामोक्खे एव वयासी-किं णं तु(ब्भं)ब्भे देवाणुप्पिया! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह? । तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लिं २ एवं वयंति-एवं खलु देवाणुप्पिए! अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं १ जाव चिट्ठामो । तए णं मल्ली २ ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी-जइ ताव देवाणुप्पिया! इमीसे कणग जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असणाओ ४ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोग्ग(ल)ले परिणामे इमस्स पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सु(क)क्कासवस्स सोणियपूयासवस्स दु(रू)रूवऊसासनीसा-

सामी ! कुंभए मल्लिं २ । साणं २ राईणं एयमट्ठं निवेदिंति । तए णं ते जियसत्तु-पामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा(निसम्म)आसुरुत्ता अन्नमन्नस्स दूयसंपेसणं करेंति (०) एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव निच्छूढा । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया !(अम्हं) कुंभगस्स जत्तं गेण्हित्तए-त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता ण्हाया सन्नद्धा हत्थिखंधवरगया सकोरं(रं)टमल्लदामा जाव सेयवरचामराहिं(०)महया-हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं[तो]२ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति २ त्ता एगयओ मिलायंति(२त्ता) जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तए णं कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव(भो देवाणुप्पिया !) हय जाव सेन्नं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणंति । तए णं कुंभए(राया)ण्हाए सन्नद्धे हत्थि-खंधवरगए जाव सेयवरचाम(राहिं)रए महया (०) मिहिलं(रायहाणिं)मज्झंमज्झेणं नि(ग्गच्छइ)ज्जाइ २ त्ता विदे(हं)हजणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसअंते तेणेव (उवागच्छइ २ त्ता)खंधावारनिवेसं करेइ २ त्ता जियसत्तूपामोक्खा छप्पि य रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ । तए णं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पि(य) रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता कुंभएणं रन्ना सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था । तए णं (ते) जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हयमहिय-पवरवीरघाइय(नि)विवडियचिंध(द्ध)धय(छत्त)पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदि(सिं)-सं पडिसे(हिं)हंति । तए णं से कुंभए (राया)जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हय-महिय जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव अधारणिज्जमितिकट्टु सिग्घं तुरियं जाव वेइयं जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मिहिलं अणुपवि-सइ २ त्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ २ त्ता रोहसज्जे चिट्ठइ । तए णं ते जिय सत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति २ त्ता मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं निरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ताणं चिट्ठंति । तए णं से कुंभए(राया)मिहिलं रायहाणिं रुद्धं जाणित्ता अ(ब्भ)ब्भिंतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं छिद्दाणि य विवराणि य मम्माणि य अलभमाणे बहूहिं आएहिं य उवाएहिं य उप्पत्तियाहि य ४ बुद्धीहिं परिणामेमाणे २ किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ । इमं च णं मल्ली २ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं परि-वुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कुंभगस्स पायग्गहणं करेइ । तए णं

देवाणुप्पिया ! सएहिं २ रज्जेहिं जे(जे)ट्ठपुत्ते रज्जे ठावेह २ त्ता पुरिससहस्स-
वाहिणीओ सीयाओ दुरूहह(दुरूढा समाणा)२ त्ता मम अंतियं पाउब्भवह ।
तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति । तए णं
मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामो(क्खे)क्खा गहाय जेणेव कुंभए (राया) तेणेव
उवागच्छइ २ त्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ । तए णं कुंभए (राया) ते जियसत्तु-
पामोक्खा विउलेणं असणेणं ४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ जाव पडिवि-
सज्जेइ । तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा कुंभएणं रन्ना विसज्जिया समाणा जेणेव
साइं २ रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सगाइं [२] रज्जाइं
उवसंपज्जित्ता[णं] विहरंति । तए णं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामित्ति
मणं पहारेइ ॥ ८१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्कस्स आसणं चलइ । तए णं
सक्के देविंदे देवराया आसणं चलियं पासइ २ त्ता ओहिं पउंजइ त्ता मल्लिं अरहं
ओहिणा आभोएइ त्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु
जंबुद्दीवे २ भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति
मणं पहारेइ । तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं (३) अरहंताणं भगवं-
ताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं द(लि)लइत्तए तंजहा—तिन्नेव य
कोडिसया अट्ठासीइं च हुं(हों)ति कोडीओ । असिइं च सयसहस्सा इंदा दलयंति
अरहाणं ॥ १ ॥ एवं संपेहेइ २ त्ता वेसमणं देवं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—एवं
खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे जाव असीइं च सयसहस्साइं दलइत्तए,
तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे (दीवे) भारहे वासे मिहिलाए कुंभगभवणंसि
इमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहराहि २ त्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि । तए
णं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं( ) एवं वुत्ते (समाणे) ह( )ट्ठे करयल जाव पडि-
सुणेइ २ त्ता जंभए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जंबु-
द्दीवं २ भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया
अट्ठासीइं च कोडीओ अ(सि)सीइं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहरह
२ त्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं जाव सुणेत्ता
उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं वि(इ)उव्वंति २ त्ता
ताए उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे जेणेव मिहिला
रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता कुंभगस्स रन्नो
भवणंसि तिन्नि कोडिसया जाव साहरंति २ त्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति
२ त्ता करयल जाव पच्चप्पिणंति । तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के १ तेणेव

सस्स दुरुयमुत्त(पु)पूइयपुरीसपुण्णस्स सडण जाव धम्मस्स केरिसए[य]परिणामे भविस्सइ ? त मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह । एव खलु देवाणुप्पिया !(तुम्हे)अम्हे इ(माओ,मे तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावईविजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बल पामोक्खा सत्त(वि)पियबालवयसया रायाणो होत्था सहजाया जाव पव्वइया । तए ण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेणं इत्थीनामगोय कम्म निव्वत्तेमि-जइ ण तु(ब्भे)ब्भे चउ(त्थो)त्थ उवसपज्जित्ताणं विहरह त(ए)ओ ण अह छट्ठ उवसपज्जित्ताण विहरामि सेस तहेव सव्वं। तए ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे काल किच्चा जयते विमाणे उववन्ना । तत्थ ण तु(ब्भे)ब्भ देसूणाइ बत्तीसाइ सागरोवमाइ ठिई । तए ण तुब्भे ताओ देवलो(या)गाओ अणतर चय चइत्ता इहेव जबुद्दीवे २ (जाव) साइ २ रज्जाइ उवसपज्जित्ताण विहरह । तए ण अहं(देवाणुप्पिया !)ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया । किं(थ)च तय पम्हुट्ठ ज थ तया भो जयतपवरंमि । वुत्था समयनिवद्ध देवा त सभरह जाइ ॥ १ ॥ तए ण तेसिं जियसत्तुपामोक्खाण छण्ह रा(या)ईण मल्लीए २ अतिए एयमट्ठ सोच्चा २ सुभेण परिणामेण पसत्थेण अज्झवसाणेण लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेणं ईहा(वू)पूह जाव सन्निजाईसरणे समुप्पन्ने एयमट्ठ सम्म अभिसमागच्छति । तए णं मल्ली अरहा जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पन्नजा(इ)ईसरणे जाणित्ता गब्भघराण दाराइ विहा(डावे)डेइ । तए ण(ते) जियसत्तुपामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति । तए ण महब्बलपामोक्खा सत्त पियबालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागया(य्रा)वि होत्था । तए ण मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि(य)रायाणो एव वयासी-एवं खलु अह देवाणुप्पिया ! ससारभ(य)उव्विग्गा जाव पव्वयामि, त तुब्भे णं किं करेह किं ववसह(जाव)किं भे हियसामत्थे ? । तए णं जियसत्तुपामोक्खा(छ० रा०)मल्लिं अरह एव वयासी-जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! ससार जाव पव्वयह अम्हाण देवाणुप्पिया ! के अन्ने आलवणे वा आहारे वा पडिबधे वा ? जह चेव ण देवाणुप्पिया ! तुब्भे अ(म्हे)म्हं इओ तच्चे भवग्गहणे बहूसु कज्जेसु य मेढी पमाण जाव धम्मधुरा होत्था त(हा)ह चेव ण देवाणुप्पिया ! इण्हिपि जाव भविस्सह । अम्हे वि(य)ण देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पिया-(णं)सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो । तए ण मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे एव वयासी-(जं)जइ ण तुब्भे ससार जाव मए सद्धिं पव्वयह त गच्छह णं तुब्भे

अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव एवं वयासी-इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुम्भेहिं अब्भणुण्णाए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करे(रि)ह । तए णं कुंभए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं [कलसाणं] जाव भोमेज्जाणं (ति) अन्नं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया । तए णं सक्के (३) आभिओगिए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं (कलसाणं) जाव अन्नं च तं विउलं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति । तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा । तए णं से सक्के देविंदे देवराया कुंभए य राया मल्लिं अरहं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहं निवेसेइ अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचंति । तए णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च सब्भिंत(रि)रबा(हि)रिं जाव सव्वओ समंता [सं]परिधावंति । तए णं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह ते उवट्ठवेंति । तए णं सक्के (३) आभिओगिए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव अणेगखंभ जाव (मणोरमं) सीयं उवट्ठवेह जाव सावि सीया तं चेव सीयं अणुप्पविट्ठा । तए णं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मणोरमं सीयं अणुपयाहिणीकरेमाणा मणोरमं सीयं दुरूहइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे । तए णं कुंभए (राया) अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह जाव परिवहंति । तए णं सक्के ३ मणोरमाए [सीयाए] दक्खिणिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हइ । ईसाणे उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हइ । चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं अवसेसा देवा जहारिहं मणोरमं सीयं परिवहंति-पुव्विं उक्खित्ता माणु(स्)सेहिं (तो)सा हट्ठरोमकूवेहिं । पच्छा वहंति सीयं असुरिंदसुरिंदना(गिं)दा ॥१॥ चलचवलकुंडलधरा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदा वहंति सीयं जिणिंदस्स ॥२॥ तए णं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं दुरूढस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणु(णुपु)व्वीए एवं निग्गमो जहा जमालिस्स । तए णं मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पेगइया देवा मिहिलं आसिय जाव अब्भिंतरवासविहिगाहा जाव परिधावंति । तए णं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ २त्ता सीयाओ पच्चोरु(रु)हइ आभरणालंकारं पभावई पडिच्छइ ।

उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ । तए ण मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासो त्ति बहूण सणाहाण य अणाहाण य पहियाण य पंथियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणाइं सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलयइ । तए ण (से)कुंभए(राया) मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणससालाओ करेइ । तत्थ ण बहवे मणुया दिन्नभइ-भत्तवेयणा विउल असण ४ उवक्खडेंति (०) जे जहा आगच्छंति तंजहा–पंथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा तस्स य तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विउलं असणं ४ परिभाएमाणा परिवे-सेमाणा विहरंति । तए ण मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइ-क्खइ–एवं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स रन्नो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असणं ४ बहूणं समणाण य जाव परिवेसिज्जइ । वरवरिया घोसिज्जइ किमि-च्छिय दिज्जए बहुविहीय । सुरअसुरदेवदाणवनरिंदमहियाण निक्खमणे ॥ १ ॥ तए णं मल्ली अरहा संवच्छरेण तिन्नि कोडिसया अट्ठासी(तिं)यं च होंति कोडीओ अ(सितिं)सीयं च सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलइत्ता निक्खमामित्ति मणं पहारेइ ॥ ८३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं लोगंतिया देवा बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे सएहिं २ विमाणेहिं सएहिं २ पासायवडिंसएहिं पत्तेय २ चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सद्धिं संपरि-वुडा महयाहयनट्टगीयवाइय जाव रवेणं भुंजमाणा विहरंति तंजहा——सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ १ ॥ तए ण तेसिं लो(यं)गंतियाणं देवाणं पत्तेय २ आसणाइं चलंति तहेव जाव अरहंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं क(रे)रित्तए–त्ति तं गच्छामो णं अम्हे ~ मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करे(मि)मो–त्तिकट्टु एवं संपेहेंति २ त्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभा(य०)गं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति(०) सं(खि)खेज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अंतलिक्खपडिवन्ना सखिंखिणियाइं जाव वत्थाइं पवरपरिहिया करयल जाव ताहिं इट्ठाहिं (जाव) एवं वयासी–बुज्झाहि भगवं(!) लोगनाहा ! पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सइ–त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयंति (०) मल्लिं अरहं वंदंति नमसंति वं० २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भू(आ)या तामेव दिसिं पडिगया । तए णं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव

साहस्सीओ उक्को । समणोवासगा(मल्लिस्स णं अरहओ)णं सावगाणं एगा सयसा- हस्सी चुलसीइं (च) सहस्सा ( ) समणोवासियाणं(मल्लिस्स णं अरहओ)ओ साविया(णं) तिन्नि सयसाहस्सीओ पण्णट्ठिं च सहस्सा ( ) छ(र)सया चोद्दसपुव्वीणं [संपया !] वी(स)सं सया ओहिनाणीणं बत्तीसं सया केवलनाणीणं पणतीसं सया वेउव्वियाणं अट्ठसया मणपज्जवनाणीणं चोद्दससया वाईणं वीसं सया अणुत्तरोववाइयाणं। मल्लिस्स [णं] अरहओ दुविहा अंतगडभूमी होत्था तंजहा-जु(गं)तकरभूमी परियायंतकरभूमी य जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी दुवा[स]परियाए अंतमकासी। मल्ली णं अरहा पणवीसं धणू ( ) उड्ढं उच्चत्तेणं वण्णेणं पियंगु(स)समे समचउरंससंठाणे वज्जरिसहनारायसंघयणे मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सम्मेयसेलसिहरे पाओवगमणमुववन्ने । मल्ली णं अरहा एगं वाससयं अगारवासमज्झे पणपन्नं वाससहस्साइं वाससयऊणाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता पणपन्नं वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चे(चि)त्तसुद्धे तस्स णं चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए नक्खत्तेणं अद्धरत्तकालसमयंसि पंचहिं अज्जियासएहिं अब्भितरियाए परिसाए पंचहिं अणगार- सएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी खीणे वेयणिज्जे आउए ना(मे)गोए सिद्धे। एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए नंदीसरे अट्ठाहियाओ पडिगयाओ। एवं खलु जंबू! समणेणं ३ जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते-त्तिबेमि ॥ ८५ ॥ गाहाउ-उग्गतव- संजमवओ पगिट्ठफलसाहगस्स वि जियस्स। धम्मविसए वि सुहुमा वि होइ माया अणत्थाय ॥ १ ॥ जह मल्लिस्स महाबलभवंमि तित्थयरनामबंधेऽवि। तवविसय- थेवमाया जाया जुवइत्तहेउ त्ति ॥ २ ॥ अट्ठमं मायज्झयणं समत्तं ॥

जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स नायज्झय- णस्स अयमट्ठे पन्नत्ते नवमस्स णं भंते! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। (तीसे णं चंपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था तस्स णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए) पुण्णभद्दे(नामं) उज्जाणे(होत्था)। तत्थ णं मागंदी नामं सत्थवाहे परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स णं भद्दा नामं भारिया होत्था। तीसे णं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था तंजहा-जिणपालिए य जिणर- क्खिए य। तए णं तेसिं मागंदियदारगाणं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारस

तए णं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठिय लोय करेइ। तए णं सक्के ३ मल्लिस्स केसे पडिच्छइ (२त्ता) खीरोदगसमुद्दे साहर(पक्खिव)इ। तए णं मल्ली अरहा नमो(ऽ)त्थु णं सिद्धाण-तिकट्टु सामाइय(च)चारित्त पडिवज्जइ। जं समय च णं मल्ली अरहा चारित्तं पडिवज्जइ त समय च ण देवाण [य] माणुसाण य निग्घोसे तु(रि)डिय(नि)णा(य)ए गीयवाइय-निग्घोसे य सक्क(स्स)वयणसदेसेण निलुक्के यावि होत्था। ज समय च ण मल्ली अरहा सामाइ(यं)यचारित्त पडिवन्ने त समय च ण मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने। मल्ली ण अरहा जे से हेमताण दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स ण पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेण पुव्वण्हकालसमयसि अट्ठमेण भत्तेणं अपाणएण अस्सिणीहिं नक्खत्तेण जोगमुवागएण तिहिं इत्थीसएहिं अब्भितरियाए परिसाए तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धि मुण्डे भवित्ता पव्वइए। मल्लि अरहं इमे अट्ठ ना(रा)यकुमारा अणुपव्वइसु तजहा—नदे य नदिमित्ते सुमित्तबलमित्त-भाणुमित्ते य। अमरवइ अमरसेणे महसेणे चेव अट्ठमए ॥ १॥ तए ण (स) ते भव-णवई ४ मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिम करेंति २ त्ता जेणेव नदीस(रव)रे(०) अट्ठाहिय करेंति जाव पडिगया। तए ण मल्ली अरहा ज चेव दिवस पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पुव्वा(प०)वरण्हकालसमयसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयसि सुहासणवरगयस्स सुहेण परिणामेण(पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं) पसत्थाहिं लेसाहिं (विसुज्झमाणीहिं) तयावरणकम्मरयविकरणकर अपुव्वकरण अणुपविट्ठस्स अणते जाव केवल[वर]नाणदसणे समुप्पन्ने ॥८४॥ तेग कालेण तेण समएणं सव्वदेवाण आ-सणाइं च(ल)लेंति समोसढा सुणेंति अट्ठाहि(य)य म(हिमा)हा० नदीस(रे)र [जाव] जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव (दिसिं) पडिगया। कुंभए वि निग्गच्छइ। तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणी-याओ दुरूढा सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अरहा जाव पज्जुवासति। तए ण मल्ली अरहा तीसे महइमहालियाए कुमगस्स (रण्णो) तेसिं च जियमत्तपामोक्खाण धम्म [परि]कहेइ। परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। कुभए समणोवासए जाए पडिगए पभावई(य समणोवासिया जाया पडिगया) पि। तए ण जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो धम्म सोच्चा आलित्तए ण भंते! जाव पव्वइया [जाव] चोद्दसपुव्विणो अणते केव(ले)ली सिद्धा। तए ण मल्ली अरहा सहसववणाओ [पडि]निक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ। मल्लिस्स ण (अरहओ) भिसग-(किंसुय)पामोक्खा अट्ठावीस गणा अट्ठावीस गणहरा होत्था। मल्लिस्स ण अरहओ [अट्ठ]चत्तालीस समणसाहस्सीओ उक्को०। बधुम(ई)इपामोक्खाओ पणपन्न अज्जिया-

चारा ओगाढा - सव्वत्थ वि य ण लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियं(य)गघर हव्वमागया । त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! दुवालसमपि लवणसमुद्द पोयवहणेण ओगाहित्तए–त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति २ त्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारस वारा त चेव जाव नियं(यं)गघर हव्वमागया, त इच्छामो णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा दुवालम(म)लवणसमुद्द पोयवहणेणं ओगाहित्तए । तए ण ते मागदियदारए अम्मापियरो एव वयासी—इमे (ते) मे जाया ! अज्जग जाव परिभाएत्तए, त अणुहोह ताव जाया ! विपुले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएण निरालंबणेण लवणसमुद्दोत्तारेण [2] एव खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ, त मा ण तुब्भे दुवे पुत्ता ! दुवालसमपि लवण जाव ओगाहेह, मा हु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ । तए ण [ते] मा(ग)कदियदारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी–एव खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारस वारा लवण जाव ओगाहित्तए । तए ण ते मा(गदी)कदियदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएति बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य (आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा) ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणु(जाणि)मन्नित्था । तए ण ते मार्कंदियदारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुन्नाया समाणा गणिम च धरिम च मेज्ज च पारिच्छेज्ज च जहा अरहन्नगस्स जाव लवणसमुद्द बहूइं जो(अ)यणसयाइ ओगाढा ॥ ८६ ॥ तए ण तेसिं मार्कंदियदारगाण अणेगाइ जोयगसयाइ ओगाढाण समाणाण अणेगाइ उप्पाइयसयाइ पाउब्भूयाइ तजहा–अकाले गज्जिय जाव थणियसद्दे कालियवाए तत्थ समुट्ठिए । तए ण सा नावा तेण कालियवाएण आहुणिज्जमाणी २ संचालिज्जमाणी २ सखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहिं अइव(आय)ट्टिज्जमाणी २ कोट्टिमसि करतलाहए विव तिं(तें)दूसए तत्थेव २ ओवयमाणी य उप्पयमाणी य उप्पयमाणी–विव धरणीयलाओ सिद्धविज्जा विज्जाहरकन्नगा ओवयमाणी विव गगणतलाओ भट्ठविज्जा विज्जाहरकन्नगा विपलायमाणी विव महागरुलवेगवित्तासिया भुयगवरकन्नगा धावमाणी विव महाजणरसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी निगुजमाणी विव गुरुजणदिट्ठावराहा सु(य)जणकुलकन्नगा घुम्ममाणी विव वी(ची)-चिपहारसयतालिया गलियलवगा विव गगणतलाओ रोयमाणी विव सलिल[भिन्न]-गठिविप्पइरमाण(घो)थोरंसुवाएहिं नववहू उवरयभत्तुया विलवमाणी विव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी झायमाणी विव कवडच्छोम[ण]पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया नीस(निसा)समाणी विव महाकतारविणिग्गयपरिस्संता

साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य सियकुंदधवलजोण्हो कुसुमियलोद्धवणसंडमंडलतलो। तुसारदगधारपीवरकरो हेमंतउऊससी सया साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! वावीसु य जाव विहरेज्जाह। जइ णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा तं जहा–वसंते य गिम्हे य। तत्थ य सहकारचारुहारो किंसुयकणियारासोगमउडो। ऊसियतिलगब(व)उलायवत्तो वसंतउऊ–नरवई साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य पाडलसिरीससलिलो म(म)ल्लियावासंतियधवलवेलो सीयलसुरभिअनिलमगरचरिओ गिम्हउऊसागरो साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं बहूसु जाव विहरेज्जाह। जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! तत्थ वि उव्विग्गा [वा] उस्सुया [वा उप्पुया वा] भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह ममं पडिवालेमाणा २ चिट्ठेज्जाह। मा णं तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोरविसे महाविसे अइकाय(य)२ महाकाए जहा तेयनिसग्गे मसिमहिस(मू)समुस(ल)कालए नयणविसरोसपुण्णे अंजणपुंजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचलचलंतजीहे धरणियलवेणिभूए उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडवियडफडाडोवकरणदच्छे लोहागर(गाह)धम्ममाणधमधमेंतघोसे अणागलियचंडतिव्वरोसे समु(ही)हिं तुरि(यं)चवलं धमध(मं)तदिट्ठीविसे सप्पे (य) परिवसइ। मा णं तुब्भे सरीर(ग)स्स वावत्ती भविस्सइ। ते मागंदियदारए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ २ त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोह[ण]इ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेउं पयत्ता यावि होत्था ॥ ८ ॥ तए णं ते मागंदियदारगा तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडेंसए सुइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अन्नमन्नं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! रयणदीवदेवया अम्हे एवं वयासी–एवं खलु अहं सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! पुरत्थिमि(ल्ल)ं वणसंडं गमित्तए। अन्नमन्नस्स (एयमट्ठं) पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तत्थ णं वावीसु य जाव आलीघरएसु य जाव विहरंति। तए णं ते मागंदियदारगा तत्थ वि सुइं वा जाव अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति (२ त्ता) तत्थ णं वावीसु य जाव आलीघरएसु य विहरंति। तए णं ते मागंदियदार(गा)गा तत्थ वि सुइं वा जाव अलभमाणा जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता जाव विहरंति। तए णं ते मागंदियदारगा तत्थ वि सुइं वा जाव अलभमाणा अन्नमन्नं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी–एवं खलु अहं देवाणु-

प्पिया ! सक्क(स्स)वयणसंदेसेणं सुट्ठिए(ण)ण लवणाहिवइणा जाव मा ण तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ । त भवियव्वं एत्थ कारणेण । तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसडं गमित्तए-त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । त(ए)ओ णं गधे निद्धाइ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अणिट्ठतराए(चेव) । तए ण ते मागंदियदार(या)गा तेण असुभेण गधेण अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं आसाइ पिहेंति २ त्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव उवागया । तत्थ ण महं एग आ(घा)घयणं पासंति(०) अट्ठियरासिसयसकुल भीमदरिसणिज्ज एग च तत्थ सूलाइ(त)य पुरिसं कलुणाइ कट्ठाइ विस्सराइ कुव्वमाणं पासंति(२ त्ता)भीया जाव सजायभया जेणेव से सूलाइ(य)ए पुरिसे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तं सूलाइयं पुरिस एव वयासी-एस ण देवाणुप्पिया ! कस्स आघयणे तुम च णं के कओ वा इह हव्वमागए केण वा इमेयारूव आव(तिं)य पाविए ? । तए ण से सूलाइए पुरिसे[ते]मागंदियदार(ए)गे एव वयासी-एस ण देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए आघयणे । अह ण देवाणुप्पिया ! जबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ का(गदी)कंदिए आसवाणियए विपुलं पणियभडमायाए पोयवहणेणं लवणसमुद्द ओयाए । तए ण अहं पोयवहणविवत्तीए निव्वुड्डभंडसारे एग फलगखड आसाएमि । तए ण अह उवुज्झमाणे २ रयणदीवतेण सवूढे । तए ण सा रयणदीवदेवया ममं (ओहिणा) पासइ २ त्ता मम गेण्हइ २ त्ता मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ । तए ण सा रयणदीवदेवया अन्नया कयाइ अहालहुसगसि अवराहसि परिकुविया समाणी मम एयारूव आवय पावेइ । त न नज्जइ ण देवाणुप्पिया ! तु(म्ह)ब्भ पि इमेसिं सरीरगाण का मन्ने आवई भविस्सइ (?) । तए ण ते मागंदियदारगा तस्स सूलाइ(य)गस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बलियतरं भीया जाव सजायभया सूलाइय पुरिस एव वयासी-कह ण देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं नित्थरिज्जामो ? । तए ण से सूलाइए पुरिसे ते मागंदियदारगे एव वयासी-एस ण देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खा(य)यणे सेलए नाम आसरूवधारी जक्खे परिवसइ । तए ण से सेलए जक्खे चाउ(चो)द्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया २ सद्देण एवं वदइ-कं तारयामि ? कं पालयामि ? त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्लं वणसडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह २ त्ता जन्नुपायवडिया पजलिउडा विणएण पज्जुवासमाणा विहर(चिट्ठ)ह । जाहे ण से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एवं वएज्जा-कं तारयामि ? क पालयामि ? ताहे

तुब्भे [एवं] वयह-अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि । सेलए (से) भे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं नित्थारेज्जा । अन्नहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मन्ने आवई भविस्सइ ॥ ८९ ॥ तए णं ते मागंदियदारया तस्स सूलइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सिग्घं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति २ त्ता पोक्खरिणिं ओगाहेंति(गाहिं)ति २ त्ता जलमज्जणं करेंति २ त्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति २ त्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता आलोए पणामं करेंति २ त्ता महरिहं पुप्फच्चणियं करेंति २ त्ता जण्णुपायवडिया सुस्सूसमाणा नमंसमाणा पज्जुवासंति । तए णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एवं वयासी-कं तारयामि ? कं पालयामि ?। तए णं ते मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी-अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि । तए णं से सेलए जक्खे ते मागंदियदारए एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं मए सद्धिं लवणसमु(ई)द्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमा(णे)णाणं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया बहूहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गं करेहिइ । तं जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अव(ए)क्खह वा तो भे अहं पिट्ठाओ वि(धु)हुणामि । अह णं तुब्भे रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढाह नो परियाणह नो अवयक्खह तो भे रयणदीवदेवया[ए] हत्थाओ साहत्थिं नित्थारेमि । तए णं ते मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी-जं णं देवाणुप्पिया(!) वइस्संति तस्स णं उववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो। तए णं से सेलए जक्खे उत्तरपु(च्छि)रत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ २ त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरइ दोच्चंपि(तच्चंपि) वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ २ त्ता एगं महं आसरूवं वे(वि)उव्वइ २ त्ता ते मागंदियदारए एवं वयासी-हं भो मागंदियदारया ! आरुह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठंसि । तए णं ते मागंदियदारया हट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति २ त्ता सेलगस्स पि(पि)ट्ठिं दुरूढा । तए णं से सेलए ते मागंदियदारए दुरूढे जाणित्ता सत्त[ट्ठ]तालप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ २ त्ता (य) ताए उक्किट्ठाए तुरियाए[चवलाए चंडाए दिव्वाए] देवयाए दे(दि)व्वाए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव चंपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ ९० ॥ तए णं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टइ जं तत्थ तणं वा जाव एडेइ(२ त्ता)जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता ते मागंदियदारया पासायवडिंसए अपासमाणी

जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ २ त्ता तेसिं मागंदियदारगाणं कत्थइ सुइं वा ३ अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले (पच्चत्थि) एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ (त्ता) ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे २ पासइ २ त्ता आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हइ २ त्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदियदार(गा)या तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी-हं भो मागंदियदारगा अप्पत्थियपत्थिया! किण्णं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा? तं एवमवि गए जइ णं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं, अह णं नावयक्खह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवल जाव एडेमि। तए णं ते मागंदियदारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढंति नो परियाणंति ना(नो अ)वयक्खंति अणाढायमाणा अपरियाणमाणा अणवयक्खमाणा[य]सेलए(ण)णं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयंति। तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदि[यदार]या जाहे नो संचाएइ बहूहिं पडिलोमेहि य उवसग्गेहि य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा (लोभित्तए वा) ताहे महुरे(हि)हिं[य]सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गेउं पवत्ता यावि होत्था-हं भो मागंदियदारगा! जइ णं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिंडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वाइं अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयह। तए णं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभोएइ २ त्ता एवं वयासी-निच्चंपि य णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा ५। निच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे ५। निच्चंपि य णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा ५। निच्चंपि य णं मम जिणरक्खिए इट्ठे ५। जइ णं ममं जिणपालिए रोयमा(णीं)णिं कंदमाणिं सोयमाणिं तिप्पमाणिं विलवमाणिं नावयक्खइ किण्णं तुमं[पि]जिणरक्खिया! ममं रोयमाणिं जाव नावयक्खसि? तए णं—सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा (उ) जिणरक्खियस्स मणं। नाऊ(ण)णं वधनिमित्तं उव(रि)रिं मागंदियदारगा(णं)ण दोण्हंपि ॥ १ ॥ दोसकलिया स(ललि)लियं नाणाविहचुण्णवासमीसियं दिव्वं। घाणमणनिव्वुइकरं सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणी ॥ २ ॥ नाणामणिकणगरयणघंटियखिंखिणिने(उ)उरमेहलभूसणरवेणं। दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेइ सा (स)कलुसा ॥ ३ ॥ होल वसुल गोल नाह दइय पिय रमण कंत सामिय निग्घिण नित्थक्क। थि(छि)ण्ण निक्किव

य कलुणेहि य उवसग्गेहि य जाहे नो संचाएइ चालित्तए वा खोभित्तए वा वि(८)परि-णामित्तए वा ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समा(णा)णी जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दि(स)सिं पडिगया । तए णं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयइ २ त्ता जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं प(पि)ट्ठाओ ओयारेइ २ त्ता एवं वयासी–एस णं देवाणु-प्पिया ! चंपा–नयरी दीसइ–त्तिकट्टु जिणपालियं आपुच्छइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ९३ ॥ तए णं जिणपालिए चंपं अणुपविसइ २ त्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्तिं निवेदेइ । तए णं जिणपालिए अम्मापियरो मित्तनाइ जाव परियणेण सद्धिं रोयमाणाइं बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति २ त्ता कालेणं विगयसोया जाया । तए णं जिणपालियं अन्नया कया(इ)इं सुहासणवरगयं अम्मापियरो एवं वयासी–कहण्णं पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ? । तए णं से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारणं च कालियवायसमुच्छणं[च] पोयवहणविवत्तिं च फलहखंडआसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवया(गिहं)-गेण्हं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवयाअप्पाहणं च सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवयाउवसग्गं च जिणरक्खियविवत्तिं च लवण-समुद्दउत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेइ । तए णं जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥ ९४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे (जाव जेणेव चंपा न(ग)यरी जेणेव पुण्णभद्दे उज्जाणे तेणेव) समोसढे (परिसा णिग्गया कूणिओ वि राया निग्गओ जिणपालिए) जाव धम्मं सोच्चा पव्वइए ए(क्का)गारसंग(विऊ)वी मासिएणं भत्तेणं जाव अत्ताणं झूसेत्ता सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमाइं ठिई प० । ताओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता जेणेव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिइ । एवामेव समणाउसो ! जाव माणुस्सए कामभोगे नो पुणरवि आसाइ से णं जाव वीईवइस्सइ जहा व से जिणपालिए । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥९५॥ **गाहाओ**–जह रयणदीवदेवी तह एत्थ अविरई महापावा । जह लाहत्थी वणिया तह सुहकामा इह जीवा ॥ १ ॥ जह तेहिं भीएहिं दिट्ठो आघायमंडले पुरिसो । संसारदुक्खभीया पासंति तहेव धम्मकहं ॥ २ ॥ जह तेण तेसिं कहिया देवी दुक्खाण कारणं घोरं । तत्तो च्चिय नित्थारो सेलगजक्खाओ

यंभचेरवासेण । एव खलु एएणं कमेण परिवड्ढेमाणे २ जाव पडिपुण्णे वभचेरवासेणं । एव खलु जीवा वड्ढति वा हायंति वा । एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण० दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥९६॥ गाहाओ–
जह चंदो तह साहू राहुवरोहो जहा तह पमाओ । वण्णाई गुणगणो जह तहा खमाई समणधम्मो ॥ १ ॥ पुण्णो वि पइदिण जह हायतो सव्वहा ससी नस्से । तह पुण्णचरित्तोऽवि हु कुसीलससग्गिमाईहिं ॥ २ ॥ जणियपमाओ साहू हायंतो पइदिण खमाईहिं । जायइ नट्ठचरित्तो तत्तो दुक्खाई पावेइ ॥ ३ ॥ हीणगुणो वि हु होउं सुहगुरुजोगाइजणियसवेगो । पुण्णसरूवो जायइ विवड्ढमाणो ससहरोव्व ॥ ४ ॥ **दसमं नायज्झयणं समत्तं** ॥

जइ ण भते ! समणेण० दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते एक्कारसमस्स(०) के अट्ठे पन्नत्ते ? एव खलु जबू ! तेण कालेणं तेणं समएण रायगिहे जाव गोयमे (समणं ३) एव वयासी–कहं ण भंते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति ? गोयमा ! से जहानामए एगसि समुद्दकूलसि दावद्दवा नाम रुक्खा पन्नत्ता किण्ह- जाव निउ(रु)रंवभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति । जया ण दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायति तया णं वहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति । अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा परिसडियपडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा २ चिट्ठंति । एवामेव समणाउसो ! (जे) जो अम्हं निग्गंथो वा २ जाव पव्वइए समाणे वहूणं समणाण ४ सम्म सहइ जाव अहियासेइ वहूण अन्नउत्थियाण वहूण गिहत्थाण नो सम्म सहइ जाव नो अहियासेइ एस णं मए पुरिसे देसविराहए पन्नत्ते समणाउसो ! जया ण सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मदावाया महावाया वायंति तया णं वहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठति । अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति । एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा २ जाव पव्वइए समाणे वहूण अन्नउत्थि(याणं व०)यगिहत्थाण सम्म सहइ वहूण समणाण ४ नो सम्म सहइ एस ण मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते समणाउसो ! जया ण नो दीविच्चगा नो सामुद्दगा ईसिं (पुरेवाया) पच्छावाया जाव महावाया वायति त(ए)या ण सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा(०) । एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे वहूण समणाण ४ वहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाण नो सम्म सहइ एस ण मए पुरिसे सव्वविराहए पन्नत्ते समणाउसो ! जया णं दीविच्चगा वि सामुद्दगा वि ईसिं (पुरेवाया पच्छावाया) जाव

वाएंति तया णं सव्वे दावद्दवा (रुक्खा) पत्तिया जाव चिट्ठंति। एवामेव समणाउसो! जो अम्हं पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं ४ बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं सम्मं सहइ एस णं मए पुरिसे सव्वआराहए पन्नत्ते (समणाउसो!)। एवं खलु गोयमा! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ १७ ॥ गाहाओ–जह दावद्दवतरुवणमेवं साहू जहेव दीविच्चा। वाया तह समणाइयसपक्खवयणाइं दुसहाइं ॥ १ ॥ जह सामुद्दयवाया तहऽन्नतित्थाइकडुयवयणाइं। कुसुमाइसंपया जह सिवमग्गाराहणा तह उ ॥ २ ॥ जह कुसुमाइविणासो सिवमग्गविराहणा तहा नेया। जह दीववाउजोगे बहु इड्ढी ईसि य अणिड्ढी ॥ ३ ॥ तह साहम्मियवयणाण सहमाणाराहणा भवे बहुया। इयराणमसहणे पुण सिवमग्गविराहणा थोवा ॥ ४ ॥ जह जलहिवाउजोगे थेविड्ढी बहुयरा यऽणिड्ढी य। तह परपक्खक्खमणे आराहणमीसि बहु य नरं ॥ ५ ॥ जह उभयवाउविरहे सव्वा तरुसंपया विणट्ठ त्ति। अनिमित्तोभयमच्छररूवे विराहणा तह य ॥ ६ ॥ जह उभयवाउजोगे सव्वसमिड्ढी वणस्स संजाया। तह उभयवयणसहणे सिवमग्गाराहणा वुत्ता ॥ ७ ॥ ता पुण्णसमणधम्माराहणचित्तो सया महासत्तो। सव्वेण वि कीरंतं सहेज्ज सव्वं पि पडिकूलं ॥ ८ ॥ एक्कारसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते बारसमस्स णं ( ) के अट्ठे पन्नत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णा(म)म नयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। जियसत्तू [नामं] राया (होत्था)। (तस्स णं जिय सत्तुस्स रण्णो) धारिणी (नामं) देवी (होत्था अहीण जाव सुरूवा)। (तस्स णं जि र पुत्ते धारिणीए अत्तए) अदीणसत्तू नामं कुमारे जुवराया वि होत्था। सुबुद्धी [नामं] अमच्चे जाव रज्जधुराचिंतए [यावि होत्था जाव] समणोवासए (य)। तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमेणं एगे फरिहोदए यावि होत्था मेयवसारुहिरमंस-सपूय-पडलपोच्चडे मयगकलेवरसंछन्ने अमणुन्ने [णं] वण्णेणं जाव फासेणं से जहानामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मयकुहियविणट्ठकिमिणवावन्नदुरभिगंधे किमिजालाउले संसत्ते असुइविगयबीभच्छदरिसणिज्जे। भवेयारूवे सिया? णो इणट्ठे समट्ठे। एत्तो अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं पन्नत्ते ॥ १८ ॥ तए णं से जियसत्तू राया अन्नया कयाइ ण्हाए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहि(उ)ईसर जाव सत्थ-वाहपभि(इ)ईहिं सद्धिं [भोयणमंडवंसि] भोयणवेलाए सुहासणवरगए विउलं असणं ४ जाव विहरइ जिमियभुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए तंसि विउलंसि असण(ं)सि ४ जाव

इन्द्र अपने अधीन देवोंको इन उत्पातोंमें न रोकते थे। इसी प्रकार भगवान्‌की सेवा करनेवाले देव आपत्तिके समयपर सूरत भी न दिखलाते थे और अनावश्यक समय खूब हाजिरी दिया करते थे। मतलब यह कि जब कोई भक्त ऐसी कल्पनाएँ करने लगता है तब उसे यह चिन्ता नहीं रहती कि ऐसी अविश्वसनीय कल्पनाओंसे घटनाका अस्तित्व भी अविश्वसनीय हो जायगा। उसे तर्क-वितर्कसे कुछ मतलब नहीं रहता। वह तो यह देखता है कि मेरा इष्टदेव बाहिरी बातोंमें भी किसीके इष्टदेवसे कम न रह जाय। सभी सम्प्रदायोंने अपने इष्टदेवका महत्त्व बढ़ानेके लिये बेचारे इन्द्रादि देवोंका इसी तरह प्रयोग किया है, क्योंकि साधारण लोग किसी आत्माकी महत्ता ऐसी ही बातोंमें समझते हैं। परन्तु धर्मका मर्म जाननेवालेके सामने ऐसी घटनाओंका कुछ भी महत्त्व नहीं है। वह उन घटनाओंके प्राकृतिक रूपमें ही वास्तविक महत्त्वके दर्शन करता है।

धर्मके नामपर उस समय जैसा अकाण्ड ताण्डव हो रहा था, निरपराध प्राणियोंकी जैसी हत्या हो रही थी, परलोक, आत्मा आदिके विषयमें जैसी कल्पनाएँ उड़ा करती थीं, समन्वय न होनेसे पारस्परिक विरोध जैसा भयङ्कर रूप धारण कर रहा था, स्त्रियों और शूद्रोंका जैसा अपमान और दमन हो रहा था, सयमकी जिस प्रकार हत्या हो रही थी, लोग चरित्र-बलसे जैसे शून्य हो रहे थे उसे देखकर महावीरका मन बहुत चिन्तित रहता था। यद्यपि महात्मा पार्श्वनाथका धर्म चल रहा था परन्तु उसमें बहुत शिथिलता आ चुकी थी और बहुत-सी त्रुटियाँ भी थीं। इन सबका सुधार करके युगान्तर उपस्थित करनेका विचार महावीरके मनमें सदा

अहो णं तं चेव । तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रन्ना दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी–नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए । एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति तं चेव जाव पओगवीससापरिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पन्नत्ता । तए णं जियसत्तू(राया) सुबुद्धिं (अमच्चं) एवं वयासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं च बहूहि य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि । तए णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था–अहो णं जियसत्तू संते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपन्नत्ते भावे नो उवलभइ । तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रन्नो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूयाणं जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवा(इ)णावेत्तए । एवं संपेहेइ २ त्ता पच्चइएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घड(ए)ए य पडए य(प)गेण्हइ २ त्ता संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि निसंतपडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवाग(ए)च्छइ २ त्ता तं फरिहोदगं गेण्हावेइ २ त्ता नवएसु घडएसु गालावेइ २ त्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ २ त्ता [सज्जखारं पक्खिवावेइ] लंछियमुद्दिए करा(का)वेइ २ त्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ २ त्ता दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेइ २ त्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ २ त्ता सज्ज(ज)खारं पक्खिवावेइ २ त्ता लंछियमुद्दिए करा(का)वेइ २ त्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ २ त्ता तच्चंपि नवएसु घडएसु जाव संवसा-वेइ । एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गा(ग)लावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतरा य (विपरि)वसावेमाणे (२) सत्तसत्त[य]राइंदिया[इं](इं) परिवसावेइ । तए णं से फरिहोदए सत्त(म)मंसि सत्ताहंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्था अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिह(फालिय)वण्णाभे वण्णेणं उववेए ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे । तए णं सुबुद्धी(अमच्चे) जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवा-गच्छइ २ त्ता करयलंसि आसाएइ २ त्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं ४ आसा-यणि(ज्जे)ज्जं जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभा-रणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेइ २ त्ता जियसत्तुस्स रन्नो पाणियघरियं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–तुमं (च) णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं गेण्हाहि २ त्ता जियसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेज्जासि । तए णं से पाणियघरिए सुबुद्धि(ध)स्स एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता तं उदगरयणं गेण्ह(ण्हा)इ २ त्ता जियसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ । तए णं से जियसत्तू राया तं विपुलं असणं ४ आसाएमाणे जाव विहरइ जिमियभुत्तुत्तर(गया)गए वि य णं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरय(णे)णंसि जाय-

जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पभिइए एव वयासी-अहो ण देवाणुप्पिया ! इमे मणुन्ने असण ४ वण्णेण उववेए जाव फासेण उववेए अस्सायणिज्जे वि(स)सायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे विंहणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे। तए ण ते बहवे ईसर जाव पभियओ जियसत्तुं एवं वयासी-तहेव ण सामी ! जण्ण तुब्भे वयह-अहो ण इमे मणुन्ने अस(ण)णे ४ वण्णेण उववेए जाव पल्हायणिज्जे। तए ण जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी-अहो ण सुबुद्धी ! इमे मणुन्ने असणे ४ जाव पल्हायणिज्जे। तए ण सुबुद्धी जियसत्तुस्स [रन्नो] एयमट्ठ नो आढाइ जाव तुसिणीए सचिट्ठइ। [तए ण जियसत्तू सुबुद्धिं दोच्चपि तच्चपि एव वयासी-अहो ण सुबुद्धी ! इमे मणुन्ने तं चेव जाव पल्हायणिज्जे।] तए ण (जियसत्तुणा) से सुबुद्धी [अमच्चे] दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे जियसत्तु राय एव वयासी-नो खलु सामी ! अ(हं)म्हं एयसि मणुन्नसि असणसि ४ केइ विम्हए। एव खलु सामी ! सु(ब्भि)रभिसद्दा वि पो(पु)ग्गला दुरभिसद्दत्ताए परिणमति दुरभिसद्दा वि पोग्गला सुरभिसद्दत्ताए परिणमंति। सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमति दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमति। सुरभिगंधा वि पोग्गला दुरभिगधत्ताए परिणमति दुरभिगधा वि पोग्गला सुरभिगधत्ताए परिणमंति। सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमति। सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमति दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति। पओगवीससा-परिणया वि य ण सामी ! पोग्गला पन्नत्ता। तए ण(से)जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो आढाइ नो परियाणइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तए ण से जियसत्तू अन्नया कयाइ ण्हाए आसखधवरगए महया-भडचडगर(ह)आसवाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोद(ग)यस्स अदूरसामतेण वीईवयइ। तए ण जियसत्तू (राया) तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे सएण उत्तरिज्ज(गे)एण आसग पिहेइ एगत अवक्कमइ (ते) २ त्ता बहवे ईसर जाव पभिइओ एव वयासी-अहो ण देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुन्ने वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव। तए ण ते बहवे राईसर जाव पभियओ एव वयासी-तहेव ण त सामी ! ज ण तुब्भे एव वयह-अहो ण इमे फरिहोदए अमणुन्ने वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव। तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी-अहो ण सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुन्ने वण्णेण ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव। तए ण[से]सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्च दोच्चंपि तच्चपि एव वयासी-

निग्गंथं पावयणं २ जाव से जहेयं तुब्भे वयह । जं इच्छ मि णं तव अंतिए पंचा णुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं (करेह) । तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स (अमच्चस्स) अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ । तए णं जियसत्तू समणोवासए जाए अ(भि)गयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं (थेरा जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे उज्जाणे तमेव स) थेरागमणं । जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ । सुबुद्धी धम्मं सोच्चा जं नवरं जियसत्तुं आपुच्छामि जाव पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! । तए णं (से) सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु सामी ! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते । से(इ)वि य धम्मे इच्छि(य)ए पडिच्छिए २ । तए णं अहं सामी ! संसारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए (स) जाव पव्वइत्तए । तए णं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी–अ(च्छा)हि ताव देवाणुप्पिया ! कइवयाइं वासाइं उरालाइं जाव भुंजमाणा । तओ पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो । तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स रन्नो एयमट्ठं पडिसुणेइ । तए णं तस्स जियसत्तुस्स रन्नो सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं जाव पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालस वासाइं वीइक्कंताइं । तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं । (तए णं) जिय सत्तू धम्मं सोच्चा एवं ज नवरं देवाणुप्पिया ! सुबुद्धिं आमंतेमि जेट्ठपुत्तं रज्जे ठ(ठा)वेमि तए णं तुब्भं [अंतिए] जाव पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! । तए णं जियसत्तू राया जेणेव सए गिहे तमेव उवागच्छइ २ त्ता सुबुद्धिं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु मए थेराणं जाव पव्व(ज्जा)मामि तुमं णं किं करेसि ? । तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी जाव के अन्ने आ(हा)धारे वा जाव प(व्वया)म्यामि । तं जइ णं देवाणुप्पिया ! जाव प(व्वयह)व्वाहि । गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठावेहि २ त्ता सीयं दुरूहित्ताणं ममं अंतिए सीया जाव पाउब्भव(वे)ह । (त ए जाव पाउब्भवइ) तए णं जियसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव अभिसिंचंति जाव पव्वइए । तए णं जियसत्तू एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि परियायं(पाउणित्ता) मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे । तए णं सुबुद्धी एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ ९९ ॥ गाहा–मिच्छत्तमोहियमणा पावपसत्तावि पाणिणो विगुणा । फलिहो दगं व गुणिणो हवंति वरगुरुपसाया ॥ १ ॥ बारसमं णायज्झयणं समत्तं ॥

विम्हए ते वहवे राईसर जाव एव वयासी–अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे । तए ण[ते] वहवे राईसर जाव एव वयासी–तहेव ण सामी ! जण्ण तुब्भे वयह जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे । तए ण जियसत्तू राया पाणियघरियं सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–एस णं तु(ब्भे)मे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसाइए ? । तए णं से पाणियघरिए जियसत्तुं एवं वयासी–एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अतियाओ आसाइए । तए णं जियसत्तू (राया) सुबुद्धिं अमच्च सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–अहो ण सुबुद्धी ! केण कारणेण अह तव अणिट्ठे ५ जेण तुम मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इम उदगरयण न उवट्ठवेसि ? तं एस(तए) ण तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवलद्धे ? । तए ण सुबुद्धी जियसत्तु एवं वयासी–एस णं सामी ! से फरिहोदए । तए ण से जियसत्तू सुबुद्धिं एव वयासी–केण कारणेण सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए ? तए ण सुबुद्धी जियसत्तु एव वयासी–एवं खलु सामी ! तु(म्हे)ब्भे तया मम एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो सद्दहह । तए ण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए०–अहो ण जियसत्त संते जाव भावे नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ । तं सेय खलु म(म)म जियसत्तुस्स रन्नो सताणं जाव सब्भूयाण जिणपन्नत्ताण भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवायणावेत्तए । एव सपेहेमि २ त्ता त चेव जाव पाणियघरियं सद्दावेमि २ त्ता एव वदामि–तुमं ण देवाणुप्पिया ! उदगरयण जियसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेहि । त एएण कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए । तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स(अमच्चस्स)एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठ नो सद्दहइ ३ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरो(य)एमाणे अब्भिंतर(ट्ठा)-ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! अतरावणाओ नव[ए]घडए पडए य गेण्हह जाव उदगस(हा)भारणिज्जेहिं दव्वेहिं सभारेह । तेवि तहेव सभारेंति २ त्ता जियसत्तुस्स उवणेंति । तए ण से जियसत्तू राया त उदगरयण करयलसि आसाएइ आसायणिज्ज जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्च सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–सुबुद्धी ! एए ण तुमे सता तच्चा जाव सब्भूया भावा कओ उवलद्धा ? । तए ण सुबुद्धी जियसत्तु एव वयासी–एए ण सामी ! मए संता जाव भावा जिणवयणाओ उवलद्धा । तए ण जियसत्त सुबुद्धिं एव वयासी–त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तव अतिए जिणवयणं निसा(मे)मित्तए । तए ण सुबुद्धी जियसत्तुस्स विचित्तं केवलिपन्नत्त चाउज्जाम धम्मं परिकहेइ तमाइक्खइ जहा जीवा बज्झति जाव पचाणुव्वयाइं । तए ण जियसत्तू सुबुद्धिस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ० सुबुद्धिं अमच्च एव वयासी–सद्दहामि णं देवाणुप्पिया !

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं बारसमस्स (णा०) अयमट्ठे पण्णत्ते तेरस-मस्स (णं भंते! नाय०) के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे(०)गुणसिलए उज्जाणे (ते० का० ते० स० समणे ३ चउ(द)सहिं समणसाहस्सीहिं जाव सद्धिं पु० च० जाव जे० गु० उ० ते० स० अ० उ० सं० त० अ० भा० विहरइ) समोसरणं परिसा निग्गया। तेणं कालेणं तेणं समएणं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सू(सु)रिया-(भो)भे जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमा(णो)णे विहरइ इमं च णं केवलकप्पं जंबु-द्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे २ जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए जहा सूरियाभे। भंते(त्ति)! त्ति भगवं गोयमे समणं ३ वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-अहो णं भंते! दद्दुरे देवे महिड्ढिए ६। दद्दुरस्स णं भंते! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया? कहिं (अणु)पविट्ठा? गोयमा! सरीरं गया सरीरं अणु-पविट्ठा कूडागारदिट्ठंतो। दद्दुरेणं भंते! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी ३ किण्णा लद्धा जाव अभिसमन्नागया? एवं खलु गोयमा! इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रायगिहे गुणसिलए उज्जाणे सेणिए राया। तत्थ णं रायगिहे नंदे नामं मणियारसेट्ठी परिव-सइ अड्ढे दित्ते०। तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! समोस(ढे)ढ्ढे परिसा निग्गया सेणिए वि (राया) निग्गए। तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए पायचारेणं जाव पज्जुवासइ। नंदे धम्मं सोच्चा समणोवासए जाए। तए णं अहं रायगिहाओ पडिनिक्खंते बहिया जणवयविहारं विहरामि। तए णं से नं(दे)दमणियारसेट्ठी अन्नया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणणुसा-सणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परि-वड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था। तए णं नंदे मणियारसेट्ठी अन्नया [कयाइ] गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ २ त्ता पोसहसालाए जाव विहरइ। तए णं नंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए०-धन्ना णं ते जाव ईसर-पभियओ जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्ख(र)रिणीओ जाव सर-सरपंतियाओ जत्थ णं बहुजणो ण्हाइ य पियइ य पाणियं च संवहइ। तं सेयं खलु म(म)मं कल्लं (पाउ०) सेणियं रायं आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभा(ए)गे वे[भ]भारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइयंसि भूमिभागंसि(जाव) नंदं पोक्खरिणिं खणावेत्तए-त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव पोसहं पारेइ २ त्ता

घोसणं घोसेह २ त्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तेवि तहेव पच्चप्पिणंति। तए णं रायगिहे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुसल-पुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य (कोसगपायहत्थगया य) सिलियाहत्थगया य गुलि-याहत्थगया य ओसहभेसज्जहत्थगया य सएहिं २ गिहेहिंतो निक्खमंति २ त्ता रायगिहं मज्झंमज्झेणं जेणेव णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता णंदस्स मणियारस्स सरी(री)रगं पासंति [२] तेसिं रोयायंकाणं नियाणं पुच्छंति [२ त्ता] णंदस्स मणियारस्स बहूहिं उव्वलणेहि य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहि य अवण्हा[व]णेहि य अणुवासण(णे)-णाहि य व(व)त्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य सिरा(वे)वत्थीहि य तप्पणाहि य पु(ड)पागेहि य छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं उवसामित्तए नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए। तए णं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रो(गा)यायंकाणं एगमवि रोयायंकं उवसामित्तए ताहे संता तंता जाव पडिगया। तए णं णंदे [मणियारे] तेहिं सोलसेहिं रोयायंकेहिं अभि-भूए समाणे णंदा[ए] पु(पो)क्खरिणीए मुच्छिए ४ तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्धपएसिए अट्टदुहट्टवसट्टे कालमासे कालं किच्चा णंदाए पोक्खरिणीए दद्दुरीए कुच्छिंसि दद्दुरत्ताए उववन्ने। तए णं णंदे दद्दुरे गब्भाओ वि(णिम्मु)म्मुक्के समाणे उ(उ)म्मु-क्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणु[ ]पत्ते णंदाए पोक्खरिणीए अभिरममाणे २ विहरइ। तए णं णंदाए पोक्खरिणीए बहुज(णे)णो ण्हायमाणो य पिय(माणो)य पाणियं च संवहमाणो(य)अन्नम(न्नस्स)न्नं एवमाइक्खइ ४-धन्ने णं देवाणुप्पिया! णंदे मणियारे जस्स णं इमेयारूवा णंदा पुक्खरिणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा जस्स णं पुरच्छिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ( )तहेव चत्तारि स(हा)भाओ जाव जम्मजीवियफले। तए णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे निसंतपुव्वे-त्तिकट्टु सुभेणं परिणामेणं जाव जाईसरणे समुप्पन्ने पुव्वजाइं सम्मं समागच्छइ। तए णं तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए०-एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नयरे णंदे नामं मणियारे अड्ढे। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे[स]समोसढे। तए णं [मए] समणस्स ३ अंतिए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खा-वइए जाव पडिवन्ने। तए णं अहं अन्नया कयाइ असाहुदंसणेण य जाव मिच्छत्तं

मह अलंकारियसभं कारेइ अणेगखंभसय जाव पडिरूव । तत्थ णं बहवे अलंकारि-य(पुरिसा)मणुस्सा दिन्नभइभत्त(वेय)णा बहूण समणाण य [माहणाण य सनाहाण य] अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य अलंकारियकम्मं करेमाणा २ विहरंति । तए णं तीए नंदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य पहिया य करोडिया य (कारिया०) त(णा)णहारा पत्तहारा कट्ठहारा अप्पेगइया ण्हायंति अप्पेगइया पाणियं पियंति अप्पेगइया पाणियं संवहंति अप्पेगइया विस-ज्जियसेयजल्लमलपरिस्समनिद्दखुप्पिवासा सुहंसुहेण विहरंति । रायगिह(वि)निग्गओ वि ए(ज)त्थ बहुजणो किं ते जलरमणविविहमज्जणकयलिलया(घ)हरयकुसुमसत्थर-यअणेगसउणगण(रु)कयरिभियसंकुलेसु सुहंसुहेणं अभिरममाणो २ विहरइ । तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पीयमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अन्नमन्नं एवं वयासी–धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्म जीवियफले जस्स णं इमेयारूवा नंदा पोक्खरिणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव सव्वं चउसु वि वणसंडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहु-जणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसण्णो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ । तं धन्ने कयत्थे [कयलक्खणे] कयपुण्णे कया णं लोया(!) सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स । तए णं रायगिहे सिं(स)घाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४–धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरइ । तए णं से नंदे मणियारे बहुजणस्स अंतिए एय-मट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे धाराहयक(ल)यंब(बं)कं पिव समूस(सि)वियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभ(व)वेमाणे विहरइ ॥ १०० ॥ तए णं तस्स नंदस्स मणिया-रसेट्ठिस्स अन्नया कयाइ सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया तंजहा–सासे कासे जरे दाहे कुच्छिसूले भगंदरे । अरिसा अजीरए दि(ट्ठि)ट्ठीमुद्धसूले अ(गा)कारए ॥ १ ॥ अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू दउदरे कोढे ॥ तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव(म०)पहेसु महया [२] सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह–एवं खलु देवाणुप्पिया ! नंदस्स मणियार(सेट्ठि)स्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया तंजहा–सासे जाव कोढे । तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! वि(वे)ज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणुओ वा २ कुसलो वा २ नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं उवसा(मे)मित्तए तस्स णं (दे०।)नंदे मणियारे विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ–त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि

निप्पडिवन्ने। तए णं अहं अन्नया कया(इं)इ गि(म्हे)म्हकालसमयंसि जाव उवसंप- ज्जित्ताणं विहरामि-एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदापुक्खरिणी वणसंडा सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए (पु(पो)क्ख०) दद्दुरत्ताए उववन्ने। तं अहो णं अहं अहन्ने अपुण्णे अकयपुण्णे निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे। तं सेयं खलु मम सयमेव पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं (०) उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। एवं संपेहेइ २ त्ता पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं जाव आरु(हे)हेइ २ त्ता इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ-कप्पइ मे जाव(जी)ज्जीवं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए। छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे नंदाए पोक्खरिणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्द(णो)णालोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए। इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! गुणसिलए समोसढे परिसा निग्गया। तए णं नंदाए पो(पु)क्खरिणीए बहुजणो ण्हा(य०)इ ३ अन्नमन्नं (०) जाव समणे ३ इहेव गुणसि- लए उज्जाणे समोसढे। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! समणं ३ वंदामो जाव पज्जुवा- सामो। एयं (मे) णे इहभवे परभवे य हियाए जाव आ(अ)णुगामियत्ताए भविस्सइ। तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झ- त्थिए० समुप्पज्जित्था-एवं खलु समणे ३ (०) समोसढे। तं गच्छामि णं वंदा- मि (०)। एवं संपेहेइ २ त्ता नंदाओ पुक्खरिणीओ सणियं २ उत्त(र)रेइ (२ त्ता) जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए ५ दद्दुरगईए वीईवयमाणे जेणेव मम अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए। इमं च णं सेणिए राया भिं(भ)भसारे ण्हाए सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सको(रें)रेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमा- णेणं सेयवरचाम(रा)रे० हयगयरह० महया भडचडगर(०)चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ। तए णं से दद्दुरे सेणियस्स रन्नो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्घाइए कए यावि होत्था। तए णं से दद्दुरे अ(ट)थामे अबले अवीरिए अपुरिस(का)कारपरक्कमे अधारणिज्जमि- तिकट्टु एगंतमवक्कमइ (०) करयल(परिग्गहियं तिक्खुत्तो सिरसावत्तं म० अं० कट्टु) जाव एवं वयासी-नमोत्थु णं अ(र)रहंताणं (भगवंताणं) जाव संपत्ताणं। नमोत्थु णं (समणस्स ३) मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउकामस्स। पुव्विंपि य णं मए समणस्स ३ अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए। तं इयाणिंपि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्च- क्खामि जावज्जीवं सव्वं असणं ४ पच्चक्खामि जावज्जीवं जंपि य इमं सरीरं इट्ठं

आया करता था। परन्तु इस कामकी पूरी तैयारी न होनेके कारण तथा माता-पिता आदिके आग्रहके कारण वे शीघ्र ही प्रव्रज्या न ले सके। इस तरह उनकी तीस वर्षकी उमर हो गई। दिगम्बरोंके कथनानुसार उनने विवाह नहीं कराया, श्वेताम्बरोंके कथनानुसार उनका विवाह हुआ और एक पुत्री भी पैदा हुई। तीर्थंकर विवाह करायें या अविवाहित रहें जैनधर्मका इनमेंसे किसी बातसे विरोध नहीं है। इसलिये यहाँ इस बातपर उपेक्षा की जाती है। जब महावीरकी उमर २८ वर्षकी थी तब उनके माता-पिताका देहान्त हो गया। तीस वर्षकी उमरमें उन्होंने गृह-त्याग किया।

मालूम होता है कि उनके पास किसी दिन कुछ पुरुष आये और उन्होंने समाजकी दुर्दशाकी बात कही और कहा कि आप किसी ऐसे तीर्थकी स्थापना कीजिये जिससे इन अत्याचारोंका अन्त हो—समाजकी एक बार कायापलट हो जाय। उनकी प्रार्थनाने काम किया महावीरने इस कार्यके लिये गृह-त्याग किया। महावीरसे प्रार्थना करनेवाले इन लोगोंको जैनशास्त्रोंमें 'लौकान्तिक देव' कहा गया है। पीछेसे इन लौकान्तिक देवोंका स्थान हर-एक जन्म तीर्थंकरके जीवन चरितमें बन गया है। इसी प्रकार दीक्षाके लिये महावीरको जो समारोहके साथ विदाई दी गई थी उसको भक्तोंने इन्द्रके द्वारा किया गया 'तप कल्याणक' मान लिया है।

तीर्थकी रचनाके लिये महावीरको बहुत काम करना था। दुःख रोकें दुःख दूर करनेके पहले, दुःख दूर करनेका उपाय क्या है, वह उपाय व्यवहारमें लाया जा सकता है कि नहीं यदि लाया जा सकता है तो स्वयं उसे व्यवहारमें लाना, लोगोंकी सब शङ्काओंका

कोडुंबियपुरि(से)सा तेयलिपुत्तं एव वयासी–एस ण सामी! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया रूवेण य जाव [उक्किट्ठ]सरीरा। तए णं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितर(ट्ठा)ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कला(द)यस्स २ धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारियं मम भारियत्ताए वरेह। तए ण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा तेयलिणा एव वुत्ता (समाणा) हट्ठ० करयल० तहत्ति जेणेव कलायस्स २ गिहे तेणेव उवागया। तए ण से कलाए मूसियारदार[ए]ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ २ त्ता आसणेणं उवणिमतेइ २ त्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एव वयासी–सदिसतु ण देवाणुप्पिया! किमागमणपओयण (?)। तए ण ते अब्भितरठाणिज्जा (पुरिसा) कलाय २ एव वयासी–अम्हे ण देवाणुप्पिया! तव धूय भद्दाए अत्तयं पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइ ण जाणसि देवाणुप्पिया! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा सजोगो ता दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, (ता) तो भण देवाणुप्पिया! किं दलामो सुक्क (?)। तए ण कलाए २ ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी–एस चेव ण देवाणुप्पिया! मम सु(क्कि)क्क जन्नं तेयलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेण अणुग्गहं करेइ। ते ठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं अस(ण)ेण ४ पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ (०) पडिविसज्जेइ। तए ण [ते पुरिसा] कलायस्स २ गिहाओ पडिनि(क्खम)यत्तति २ त्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति २ त्ता तेयलिपुत्तं एयमट्ठं निवे(य)ईति। तए ण कलाए २ अन्नया कयाइ सोहणंसि तिहि[करण]नक्खत्तमुहुत्तंसि पोट्टिल दारिय ण्हाय सव्वालंकारविभूसिय सीयं (दुरूहइ) दुरू(हि)हेत्ता मित्तणाइसपरिवुडे सया(सा)ओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सव्विड्ढीए [४] तेयलिपुरं [नयर] मज्झंमज्झेणं जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ (०) पोट्टिलं दारिय तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ। तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिल दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ २ त्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरुहइ २ त्ता सेयापी(त)एहिं कलसेहिं अप्पाण मज्जावेइ २ त्ता अग्गिहोमं करेइ २ त्ता पाणिग्गहणं करेइ २ त्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तनाइ जाव परि(ज)यण विउलेण असणपाणखाइमसाइमेण पुप्फ[वत्थ] जाव पडिविसज्जेइ। तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ जाव विहरइ॥ १०२॥

तए णं से कणगरहे (राया) रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अतेउरे य मुच्छिए ४ जाए २ पुत्ते वियगेइ। अप्पेगइयाणं हत्थगुलियाओ छिंदइ

अप्पेयइयाणं हत्थंगुलियाए छिंदइ । एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि कण्ण(ण्ण)सक्कुलीं-(ए)याओ वि नासापुडाइं फालेइ अं(अ)गमंगाइं वियंगेइ । तए णं तीसे पउमावईए देवीए अन्नया [कयाइ] पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पज्जित्था-एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेइ जाव अंगमंगाइं वियंगेइ । तं जइ [णं] अहं दारयं प(या)यामि सेयं खलु म(मे)मं तं दारगं कणगरहस्स रहस्सिय[य]ं चेव सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए-त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ । तं जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं पयायामि तए णं तुमं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि । तए णं से दारए उम्मुक्कबालभावे [जाव] जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ । तए णं से तेयलिपुत्ते पउमावईए एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता पडिगए । तए णं पउमावई (य) देवी पोट्टिला य अमच्ची सममेव गब्भं गेण्ह(न्ति)इ सममेव (गब्भं) परिवहंति (सममेव गब्भं परिवड्ढंति) । तए णं सा पउमावई नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया । जं रयणिं च णं पउमावई (देवी) दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणि(हा)यमावन्नं दारियं पयाया । तए णं सा पउमावई देवी अम्मधाइं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तु(मं)मं अम्मो ! (तेयलि(पुत्त)गिहे) तेयलिपुत्तं रहस्सियं चेव सद्दावे(ह)हि । तए णं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ २ त्ता अंतेउरस्स अव(ग)दारेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! पउमावई देवी सद्दावेइ । तए णं तेयलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा (निसम्म) हट्ठ(तु)ट्ठे अम्मधाईए सद्धिं सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ २ त्ता अंतेउरस्स अवदारेणं रहस्सियं चेव अणु[प]विसइ २ त्ता जेणेव पउमावई (देवी) तेणेव उवागच्छइ (२ त्ता) करयल जाव एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं । तए णं पउमावई तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगेइ । अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारगं पयाया । तं तु(मं)म्मे णं देवाणुप्पिया ! (तं) एवं दारगं गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ-त्तिकट्टु तेयलिपुत्तस्स हत्थे दलयइ । तए णं तेयलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हइ उत्तरिज्जेणं पिहेइ २ त्ता अंतेउरस्स रहस्सियं अवदारेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोट्टिलं एवं वयासी-एवं

खलु देवाणुप्पि(या)ए ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ । अयं च णं दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए । (तेण) तन्नं तुम देवाणुप्पिए ! इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सिययं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य संगोवेहि य संवड्ढेहि य । तए णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ-त्तिकट्टु पोट्टिलाए पासे निक्खिवइ [२] पोट्टिला(ओ)ए पासाओ तं विणिहायमाव-न्नियं दारियं गेण्हइ २ त्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ २ त्ता अंतेउरस्स अवदारेण अणुप्प-विसइ २ त्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ (०) जाव पडिनिग्गए । तए णं तीसे पउमावईए अंगपडियारियाओ पउ-मावइं देविं विणिहायमावन्निय (च) दारियं पयायं पासंति २ त्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु सामी ! पउ-मावई देवी म(इ)एल्लियं दारियं पयाया । तए णं कणगरहे राया तीसे मएल्लियाए दारियाए [महया] नीहरणं करेइ बहू(णि)इ लो(इ)गियाइं मयकिच्चाइं करेइ [२] कालेण विगयसोए जाए । तए णं से तेयलिपुत्ते क(ल्लं)ल्लं कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव चारगसोहणं जाव ठिइपडियं जम्हा णं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउ णं दारए नामेणं कणगज्झए जाव अलंभोगसमत्थे जाए ॥ १०३ ॥ तए णं सा पोट्टिला अन्नया कयाइ तेयलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था नेच्छइ (य) णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगो(त्त)यमवि सवणयाए किंपुण द(दरि)सणं वा परिभोगं वा (?) । तए णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइ पुव्व-रत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए ४ जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं तेयलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया । नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोगं वा ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ । तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासइ २ त्ता एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेहि २ त्ता बहूणं समणमाहण जाव वणीमगाणं देयमाणी य द(दे)वावेमाणी य विहराहि । तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेण [अमच्चेणं] एवं वुत्ता समा(णा)णी हट्ठ० तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता कल्लाक(ल्ल)ल्लिं महाणसंसि विपुलं असणं ४ जाव दवावेमाणी विहरइ ॥ १०४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ इ(ई)रियासमियाओ जाव गुत्तबंभ(या)चारिणीओ बहु-स्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं [चरमाणीओ] जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हंति २ त्ता संजमे(ण)णं तवसा

तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अ(न्न)णंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देव-लो(या)गाओ आगम्म केवलिपन्नत्ते धम्मे बो(हि)हेहि तो हं विसज्जेमि, अह णं तुमं ममं न संबोहेसि तो ते न विसज्जेमि। तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ। तए णं तेयलिपुत्ते विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता मित्तनाइ जाव आमंतेइ (०) जाव सम्माणेइ २ पोट्टिलं ण्हायं स० पुरिससहस्सवा(ह)हिणीयं सीयं दुरूहित्ता मित्तनाइ जाव [सं]परिवुडे सव्वि(ड्ढि)ड्ढीए जाव रवेणं तेयलिपु(रस्स)रं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीयाओ पच्चोरुहइ २ त्ता पोट्टिलं पुरओ-कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पि(ए)या! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५, एस णं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणि-भिक्खं (दलयामि)। अहासुहं मा पडिबंधं (करेह)। तए णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ० उत्तरपुर(च्छिमे)त्थिमं दिसीभा(ए)गं [अवक्कमइ २] सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ त्ता जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-आलित्ते णं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारस अंगाइं बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणस(णाइं)णेणं [छेएत्ता] आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना ॥ १०६ ॥ तए णं से कणगरहे राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था। तए णं [ते] राईसर जाव नीहरणं करेंति २ त्ता अन्नमन्नं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था। अम्हे णं देवाणुप्पिया! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीण-कज्जा। अयं च णं तेयली अमच्चे कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जव(ड्ढा)ड्ढावए यावि होत्था। तं सेयं खलु अम्हं तेय-लिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तए-त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एवं खलु देवा-णुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ, अम्हे (य) णं देवाणुप्पिया! रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो सव्व-(ट्ठा)ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए [होत्था], तं जइ णं देवाणुप्पिया! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे तण्णं तुमं अम्हं दलाहि जण(जा)णं अम्हे

महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो। तए णं तेयलिपुत्ते तेसिं ईसर जाव एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं करेइ २ त्ता तेसिं ईसर जाव उवणेइ २ त्ता एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियं संवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचह। सव्वं च तेसिं उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ। तए णं ते ईसर जाव कणगज्झयं कुमारं महया (२) रायाभिसेएणं अभिसिंचंति। तए णं से कणगज्झए कुमारे राया जाए महयाहिमवंत(मलय) वण्णओ जाव रज्जं पसा(सा)हेमाणे विहरइ। तए णं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–एस णं पुत्ता! तव रज्जे जाव अंतेउरे य तुमं च तेयलिपुत्तस्स [अमच्चस्स] प(हा)भावेणं तं तुमं णं तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परियाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इंतं अब्भुट्ठेहि ठियं पज्जुवासाहि वयंतं पडिसंसाहेहि अद्धासणेणं उवनिमंतेहि भोगं च से अणुवड्ढेहि। तए णं से कणगज्झए पउमावईए (देवीए) तहत्ति [वयणं] पडिसुणेइ जाव भोगं च से [वं]ड्ढेइ॥ १७॥ तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ नो चेव णं से तेयलिपुत्ते संबुज्झइ। तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए०–एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ जाव भोगं च संवड्ढेइ। तए णं से तेय(ली)लिपुत्ते अभिक्खणं २ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ। तं सेयं खलु कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणा(मि)मित्तए–त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ। तए णं तेयलिपुत्ते कल्लं ण्हाए आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं [सद्धिं] संपरिवुडे सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियओ पासंति ते तहेव आढायंति परि(जा)याणंति अब्भुट्ठेंति २ त्ता अंजलिपरिग्गहं करेंति इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आल(वे)वमाणा य संलवमाणा य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति। तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ। तए णं [से] कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ २ त्ता नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ अणाढायमाणे ३ परम्मुहे संचिट्ठइ। तए णं [से] तेयलिपुत्ते कणगज्झयस्स रण्णो अंजलिं करेइ। तए णं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ। तए णं तेयलिपुत्ते कणगज्झयं [रायं] विप्परिणयं जाणित्ता भीए जाव संजायभए एवं वयासी–रुट्ठे

णे मम कणगज्झए राया। हीणे णं मम कणगज्झए राया। अवज्झाए ण कणग॰ज्झए (राया)। तं न नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ-त्तिकट्टु भीए तत्थे (य) जाव सणियं २ पच्चोस(क्कि)क्कइ २ त्ता तमेव आसखंध दुरु(हि)हइ २ त्ता तेय॰लिपुरं मज्झंमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं तेयलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो आढायंति नो परियाणति नो अब्भुट्ठेंति नो अज(लि)लिं॰ इट्ठा(हिं)इ जाव नो सलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ (य मग्गओ य)समणुगच्छंति। तए णं तेयलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवाग॰(च्छइ)ए। जा वि य से तत्थ वाहिरिया परिसा भवइ तजहा-दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सा वि य णं नो आढाइ ३। जा वि य से अब्भितरिया परिसा भवइ तजहा-पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सा वि य ण नो आढाइ ३। तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव (सए) सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयणिज्जंसि निसीयइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ निग्गच्छामि त चेव जाव अब्भितरिया परिसा नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ। तं सेयं खलु मम अप्पाण जीवियाओ ववरोवित्तए-त्तिकट्टु एव सपेहेइ २ त्ता तालउड विसं आसगंसि पक्खिवइ, से (य विसे) नो सकमइ। तए णं से तेयलिपुत्ते [अमच्चे] नीलुप्पल जाव असिं खं(धे)धंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला। तए ण से तेयलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पासग गीवाए बधइ २ त्ता रुक्खं दुरुहइ २ त्ता पा(स)सगं रुक्खे बधइ २ त्ता अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना। तए ण से तेयलिपुत्ते महइमहा(ल)लियं सिलं गीवाए बधइ २ त्ता अत्थाहमतारमपोरि(सि)सीयंसि उदगंसि अप्पाण मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए। तए ण से तेयलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकाय पक्खिवइ २ त्ता अप्पाण मुयइ, तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए। तए णं से तेयलिपुत्ते एवं वयासी-सद्धेयं खलु भो समणा वयति, सद्धेयं खलु भो माहणा वयंति, सद्धेय खलु भो समणा माहणा वयंति, अह एगो असद्धेयं वयामि, एवं खलु अह सह पुत्तेहिं अपुत्ते, को मेद सद्दहिस्सइ? सह मित्तेहिं अमित्ते, को मेद सद्दहिस्सइ? एव अत्थेण दारेणं दासेहिं [पेसेहिं] परिजणेणं। एवं खलु तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं कणगज्झएणं रन्ना अव॰ज्झाएण समाणेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते, से वि य नो (सं)कमइ, को मेयं सद्दहिस्सइ? तेयलिपुत्ते नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, को मेदं सद्दहिस्सइ? तेयलिपु(त्तस्स)त्ते पासग गीवाए ब(धे)धित्ता जाव रज्जू छिन्ना, को मे(दं)य सद्दहिस्सइ? तेयलिपुत्ते महा(सिल)लियं जाव बधित्ता

महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो। तए णं तेयलिपुत्ते तेसिं ईसर जाव एयमट्ठं
पडिसुणेइ २ त्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं करेइ २
त्ता तेसिं ईसर जाव उवणेइ २ त्ता एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स
रण्णो पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए कणगज्झए णामं कुमारे अभिसेयारिहे राय-
लक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियं संवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया २
रायाभिसेएणं अभिसिंचह। सव्वं च तेसिं उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ। तए णं
ते ईसर जाव कणगज्झयं कुमारं महया (२) रायाभिसेएणं अभिसिंचंति। तए णं
से कणगज्झए कुमारे राया जाए महयाहिमवंत(मलय) वण्णओ जाव रज्जं पसा-
(से)हेमाणे विहरइ। तए णं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ २ त्ता
एवं वयासी–एस णं पुत्ता! तव रज्जे जाव अंतेउरे य तुमं च तेयलिपुत्तस्स [अम-
च्चस्स] प(हा)भावेणं तं तुमं णं तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परियाणाहि सक्कारेहि
सम्माणेहि इंतं अब्भुट्ठेहि ठियं पज्जुवासाहि वच्चंतं पडिसंसाहेहि अद्धासणेणं उव-
णिमंतेहि भोगं च से अणुवड्ढेहि। तए णं से कणगज्झए पउमावईए (देवीए)
तहत्ति [वयणं] पडिसुणेइ जाव भोगं च से [वं]ड्ढेइ॥ १७०॥ तए णं से पोट्टिले
देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ नो चेव णं से तेयलि-
पुत्ते संबुज्झइ। तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए०–एवं खलु कण-
गज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ जाव भोगं च संवड्ढेइ। तए णं से तेय(ली)लि-
पुत्ते अभिक्खणं २ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ। तं सेयं खलु कणगज्झयं
तेयलिपुत्ताओ विप्परिणा(मे)मित्तए–त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कणगज्झयं तेयलिपु-
त्ताओ विप्परिणामेइ। तए णं तेयलिपुत्ते कल्लं ण्हाए आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं
[सद्धिं] संपरिवुडे साओ गिहाओ निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव
पहारेत्थ गमणाए। तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव
पभिअओ पासंति ते तहेव आढायंति परि(जा)याणंति अब्भुट्ठेंति २ त्ता अंजलि-
परिग्गहं करेंति इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आल(वे)वमाणा य संलवमाणा य
पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति। तए णं से तेयलिपुत्ते
जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ। तए णं [से] कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्ज-
माणं पासइ २ त्ता नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ अणाढायमाणे ३ परं-
मुहे संचिट्ठइ। तए णं [से] तेयलिपुत्ते कणगज्झयस्स रण्णो अंजलिं करेइ। तए
णं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ। तए णं तेयलि-
पुत्ते कणगज्झयं [एवं] विप्परिणयं जाणित्ता भीए जाव संजायभए एवं वयासी–रुट्ठे

णं मम कणगज्झए राया। हीणे णं मम कणगज्झए राया। अवज्झाए णं कणग-ज्झए (राया)। तं न नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ-त्तिकट्टु भीए तत्थे (य) जाव सणिय २ पच्चोस(क्के)क्कइ २ त्ता तमेव आसखंध दुरू(हे)हइ २ त्ता तेय-लिपुरं मज्झंमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए ण तेयलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो आडायंति नो परियाणति नो अब्भुट्ठेंति नो अज(लि)लिं० इट्ठा(हिं)इ जाव नो सलवति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ (य मग्गओ य)समणुगच्छति। तए णं तेयलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवाग-(च्छइ)ए। जा वि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ तजहा-दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सा वि य णं नो आढाइ ३। जा वि य से अब्भितरिया परिसा भवइ तंजहा-पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सा वि य ण नो आढाइ ३। तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव (सए) सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयणिज्जंसि निसीयइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ निग्गच्छामि त चेव जाव अब्भितरिया परिसा नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ। त सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए-त्तिकट्टु एव सपेहेइ २ त्ता तालउड विसं आसगसि पक्खिवइ, से (य विसे) नो सकमइ। तए ण से तेयलिपुत्ते [अमच्चे] नीलुप्पल जाव असिं खं(धे)धंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला। तए ण से तेयलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पासग गीवाए बंधइ २ त्ता रुक्खं दुरुहइ २ त्ता पा(स)सगं रुक्खे बधइ २ त्ता अप्पाण मुयइ, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना। तए ण से तेयलिपुत्ते महइमहा(ल)लियं सिल गीवाए बधइ २ त्ता अत्याहमतारमपोरि(सि)सीयंसि उदगंसि अप्पाण मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए। तए ण से तेयलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकाय पक्खिवइ २ त्ता अप्पाण मुयइ, तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए। तए णं से तेयलिपुत्ते एवं वयासी-सद्धेयं खलु भो समणा वयति, सद्धेय खलु भो माहणा वयंति, सद्धेयं खलु भो समणा माहणा वयंति, अह एगो असद्धेय वयामि, एव खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते, को मेद सद्दहिस्सइ? सह मित्तेहिं अमित्ते, को मेदं सद्दहिस्सइ? एव अत्थेणं दारेणं दासेहिं [पेसेहिं] परिजणेणं। एवं खलु तेयलिपुत्तेणं अमच्चेण कणगज्झएण रन्ना अव-ज्झाएण समाणेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते, से वि य नो (सं)कमइ, को मेयं सद्दहिस्सइ? तेयलिपुत्ते नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, को मेद सद्दहिस्सइ? तेयलिपु(त्तस्स)त्ते पासग गीवाए बं(धे)धित्ता जाव रज्जू छिन्ना, को मे(दं)यं सद्दहिस्सइ? तेयलिपुत्ते महा(सिल)लियं जाव बधित्ता

कालाइ जाव सव्वंसि अण्णा[णं] मुंडे ताव मि य णं पाडे जाए, जो मम सा-
हिस्सइ ? तेयलिपुत्ते तंसि तलवूरे अस्सी नियजाए, जो मेमं साहिस्सइ ?—जाव
समपरिकम्पे जाव झिया[य]इ । तए णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वइ २ त्ता
तेयलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी—हं भो तेयलिपुत्ता ! पुरओ पवाए
पिट्ठओ हत्थिभयं दुहओ अचक्खुफासे मज्झे सराणि वरिसं(वरिसंति)ति गामे पलित्ते
रण्णे झियाइ रण्णे पलित्ते गामे झियाइ, आउसो (!) तेयलिपुत्ता ! कओ वयामो ? । तए
णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा सरणं उक्कं(ठि)-
ठियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं तिसियस्स पाणं आउरस्स भेसज्जं माइयस्स
रहस्सं अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं तरिउकामस्स पव-
ह(णं)णकिच्चं परं अभिओजिउकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स
एत्तो एगमवि न भवइ । तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी—
सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठं आया(जा)णाहि-त्तिकट्टु दोच्चंपि [तच्चंपि] एवं वयइ
२ त्ता जामेव दि(सं)सिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ १ ८ ॥ तए णं तस्स
तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाइसरणे समुप्पन्ने । तए णं (तस्स) तेयलिपुत्तस्स
अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पन्ने—एवं खलु अहं इहेव जंबुद्दीवे २ महाविदेहे
वासे पोक्खलावईविजए पोंड(डं)रीगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया
होत्था । तए णं (अ)हं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दस-पुव्वाइं ( ) बहूणि
वासाणि सामण्णपरिया(ए)यं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे
(उववन्ने) । तए णं हं ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं [भवक्खएणं ठिइक्खएणं
अणंतरं चयं चइत्ता] इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दार-
गत्ताए पच्चायाए । तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं
विहरित्तए । एवं संपेहेइ २ त्ता सयमेव महव्वयाइं आरुहेइ २ त्ता जेणेव पमय-
वणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि
सुहनिसण्णस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं सय-
मेव अभिसमन्नागयाइं । तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणा-
मेणं जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं
पविट्ठस्स केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ १ ९ ॥ तए णं तेयलिपुरे नयरे अहासं-
निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुं(दुं)हीओ समाहयाओ दसद्धवण्णे
कुसुमे निवाडिए दिव्वे गीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था । तए णं से कणगज्झए
राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वयासी—एवं खलु तेय(लि)लिपुत्ते मए अव-

समाधान करना, लोग उस मार्गमें अच्छी तरह चल सकें इसके लिये नियम बनाना, तथा उन सबको पहले अपने जीवनमें उतारना, अनुभव करना, पीछे दूसरोंसे कहना—यह विशाल कार्यक्षेत्र महावीरके सामने पड़ा था। इसको पार किये बिना वे एक शब्द भी किसीसे नहीं कहना चाहते थे। बारह वर्ष तपस्याके समय उन्होंने अनुभवपूर्वक जो प्रत्येक बातका निर्णय किया वह निर्णय पूर्णताको प्राप्त होनेपर 'केवलज्ञान' कहलाया। पीछेसे उन्होंने यह ज्ञान अपने शिष्योंको भी कराया परन्तु शिष्योंका वह ज्ञान अनुभवमूलक नहीं था किन्तु उनके मुँहसे सुना हुआ था, इसलिये 'श्रुतज्ञान' कहलाया। उनका ज्ञान अनुभवमूलक था इसलिये वह 'प्रत्यक्ष' कहलाया जब कि शिष्योंका श्रुतज्ञान 'परोक्ष' कहलाया। शिष्योंका यह श्रुतज्ञान भी जब तप करते करते (किसी वस्तुका विचार करना भी तप है) अनुभव-मूलक हो जाता था तब वह भी 'केवलज्ञान' कहलाता था।

म० महावीर अपनेको पवित्र और केवलज्ञानी बना लेना चाहते थे। जब तक उन्होंने इस पवित्रता और केवलज्ञानको प्राप्त न कर लिया तबतक किसीको कुछ उपदेश नहीं दिया। इसलिये जैनशास्त्रोंमें यह लिखा हुआ है कि बारह वर्ष तक उन्होंने 'मौन' रक्खा। इसका अर्थ लोगोंने यह समझ लिया कि बारह वर्ष तक किसी तरहकी बातचीत ही नहीं की, परन्तु यह बात नहीं है। 'मौन' रखनेका अर्थ सिर्फ इतना ही है कि उन्होंने धर्म-प्रचारका काम नहीं किया। आज भी किसी विशेष विषयमें न बोलने-वाले मनुष्यसे हम कहते हैं कि तुमने 'मौन' क्यों ले लिया है? भले ही वह अन्य बातें करता हो, परन्तु जिस विषयमे उसे बोलना चाहिये उस विषयमें न बोलनेसे वह 'मौनी' कहलाता है।

जलाइ जाव सएहिंसि अप्पा[णं] मुक्के तत्थ वि य णं थाहे जाए, को मेयं सद्-
हिस्सइ ! तेयलिपुत्ते दलंति तच्चए वासी निग्गए, को मेयं सद्दहिस्सइ !-ओह-
यमणसंकप्पे जाव झिया[य]इ । तए णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वइ २ त्ता
तेयलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी-हं भो तेयलिपुत्ता ! पुरओ पवाए
पिट्ठओ हत्थिभयं दुहओ अचक्खुफासे मज्झे सराणि वरि(वरिसं)ति गामे पलित्ते
रन्ने झियाइ रन्ने पलित्ते गामे झियाइ, आउसो (!) तेयलिपुत्ता ! कओ वयामो ! । तए
णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा सरणं उक्कं(ठि)-
ठियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं तिसियस्स पाणं आउरस्स भेसज्जं माइयस्स
रहस्सं अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं तरिउकामस्स पव-
ह(णं)किच्चं परं अभिओजिउकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स
एत्तो एगमवि न भवइ । तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी-
सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठं आया(णि)हि-त्तिकट्टु दोच्चंपि [तच्चंपि] एवं वयइ
२ त्ता जामेव दि(सिं)सिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ १०४ ॥ तए णं तस्स
तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाईसरणे समुप्पन्ने । तए णं (तस्स) तेयलिपुत्तस्स
अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पन्ने-एवं खलु अहं इहेव जंबुद्दीवे २ महाविदेहे
वासे पोक्खलावईविजए पोंड(री)गिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया
होत्था । तए णं (अ)हं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दस-पुव्वाइं ( ) बहूणि
वासाणि सामण्णपरियाय(ए)णं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे
(उववन्ने) । तए णं हं ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं [भवक्खएणं ठिइक्खएणं
अणंतरं चयं चइत्ता] इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दार-
गत्ताए पच्चायाए । तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं
विहरित्तए । एवं संपेहेइ २ त्ता सयमेव महव्वयाइं आरुहेइ २ त्ता जेणेव पमय-
वणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि
सुहनिसण्णस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं सय-
मेव अभिसमन्नागयाइं । तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणा-
मेणं जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं
पविट्ठस्स केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ १०५ ॥ तए णं तेयलिपुरे नयरे अहास-
न्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुं(दु)हीओ समाहयाओ दसद्धवण्णे
कुसुमे निवाइए दिव्वे गीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था । तए णं से कणगज्झए
राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वयासी-एवं खलु तेय(लि)पुत्ते मए अव-

ज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए तं गच्छामि णं तेयलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि वं० २ त्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेमि । एवं संपेहेइ २ त्ता ण्हाए चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेयलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तेयलिपुत्तं (अणगारं) वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एयमट्ठं च [णं] विणएण भुज्जो २ खामेइ [२] नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ । तए णं से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ । तए णं से कणगज्झए राया तेयलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता समणोवासए जाए जाव अ(हि)भिगयजीवाजीवे । तए णं तेयलिपुत्ते केवली बहूणि वासाणि केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ११० ॥ **गाहा**—जाव न दुक्खं पत्ता माणब्भंसं च पाणिणो पायं । ताव न धम्मं गेण्हंति भावओ तेयलिसुउव्व ॥ १ ॥ **चोद्द(चउद)समं नाय(अ)ज्झयणं समत्तं ॥**

जइ णं भंते ! समणेणं० चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते पन्नरसमस्स णं (०) के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा ना(म)मं नयरी होत्था पुण्णभद्दे उज्जाणे जियसत्तू राया । तत्थ णं चंपाए नयरीए ध(ण)णे नामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए । तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दि(सि)सीभाए अहिच्छत्ता ना(म)मं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा वण्णओ । तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं राया होत्था (महया) वण्णओ । [तए णं] तस्स ध(ण)णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं न(गरं)यरिं वाणिज्जाए गमित्तए । एवं संपेहेइ २ त्ता गणिमं च ४ चउव्विहं भंडं गेण्हइ (०) सगडीसागडं सज्जेइ २ त्ता सगडीसागडं भरेइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहे(सु)सु [एवं वयह—]एवं खलु देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे विपु(ले)लं पणि(य०)यं [आदाय] इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए । तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पं(डु)डरगे वा गोयमे वा गोव(ती)तिए वा (गिहिधम्मे वा) गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइपासंडत्थे वा गिहत्थे वा (तस्स णं) ध(ण)णेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ तस्स णं धणे अच्छत्तगस्स

छत्तगं दलयइ अणुवाहणस्स उवा(ह)णा(उ)ओ दलयइ अकुंडियस्स कुंडियं दल-
यइ अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ अंतरा वि य से
पडियस्स वा भग्गलुग्ग[स्स] साहेज्जं दलयइ सुहंसुहेण य (णं) अहिच्छत्तं संपावे-
त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि [घोसणं] घोसेह २ त्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तए णं
ते कोडुंबियपुरिसा जाव एवं वयासी–हंदि सुणंतु भगवंतो चंपानयरीवत्थव्वा बहवे
चरगा (य) जाव पच्चप्पिणंति । तए णं (से) तेसिं कोडुंबिय(कोडु)पुरिसाणं [अंतिए
एयमट्ठं] सो(सो)च्चा चंपाए नयरीए बहवे चरगा य जाव गिहत्था य धण्णेणं सत्थ-
वाहे तेणेव उवागच्छंति । तए णं धण्णे [सत्थवाहे] तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण
य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव पत्थयणं दलयइ–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया!
चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा चिट्ठह । तए णं [ते] चरगा
य धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति । तए णं धण्णे सत्थवाहे
सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता मित्तणा(ई)इ
आमंतेइ २ त्ता भोयणं भोयावेइ २ त्ता आपुच्छइ २ त्ता सगडीसागडं जोयावेइ २
त्ता चंपा[ओ] नयरीओ निग्गच्छइ ( ) नाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे २ सुहेहिं
वसहिपायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ २
त्ता सगडीसागडं मोयावेइ ( ) सत्थणिवेसं करेइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २
त्ता एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया २ सद्देणं उग्घो-
सेमाणा २ एवं वयह–एवं खलु देवाणुप्पिया! इमीसे आगामियाए छिन्नावायाए
दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए [एत्थ णं] बहवे नंदिफला नामं रुक्खा पण्णत्ता
किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया फलिया हरिया रेरिज्जमाणा सिरीए अईव २ उवसो-
भेमाणा चिट्ठंति मणुण्णा वण्णेणं [४] जाव मणुण्णा फासेणं मणुण्णा छायाए। तं जो णं
देवाणुप्पिया! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद( )तयपत्तपुप्फफलबी-
याणि वा हरियाणि वा आहारेइ छायाए वा वीसमइ तस्स णं आवाए भद्दए भवइ
तओ पच्छा परिणममाणा २ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवें(वि)ति । तं मा णं
देवाणुप्पिया! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ मा णं
से(ऽ)वि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सइ । तुब्भे णं देवाणुप्पिया! अन्नेसिं
रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारे(ह)ह छायासु वीसमह त्ति घोसणं
घोसेह जाव पच्चप्पिणंति । तए णं धण्णे सत्थवाहे सगडीसागडं जोएइ २ त्ता जेणेव
नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थनिवेसं
करेइ २ त्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–तुब्भे णं

ज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए तं गच्छामि णं तेयलिपुत्तं अणगारं वदामि नमंसामि वं० २ त्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेमि । एवं संपेहेइ २ त्ता ण्हाए चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेयलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छेइ २ त्ता तेयलिपुत्त (अणगारं) वंदइ नमंसइ व० २ त्ता एयमट्ठं च [णं] विणएणं भुज्जो २ खामेइ [२] नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ । तए णं से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ । तए ण से कणगज्झए राया तेयलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता समणोवासए जाए जाव अ(हिं)भिगयजीवाजीवे । तए णं तेयलिपुत्ते केवली बहूणि वासाणि केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ ११० ॥ **गाहा**–जाव न दुक्खं पत्ता माणब्भसं च पाणिणो पायं । ताव न धम्मं गेण्हति भावओ तेयलिसुउव्व ॥ १ ॥ **चोद्द(चउद)समं नाय(अ)ज्झयणं समत्तं ॥**

जइ ण भंते ! समणेणं० चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते पन्नरसमस्स णं (०) के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेण कालेणं तेण समएण चंपा ना(मं)म नयरी होत्था पुण्णभद्दे उज्जाणे जियसत्तू राया । तत्थ ण चंपाए नयरीए ध(ण)णे नाम सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए । तीसे ण चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दि(सि)सीभाए अहिच्छत्ता ना(म)मं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा वण्णओ । तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नाम राया होत्था (महया) वण्णओ । [तए णं] तस्स ध(ण)णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं न(गरं)यरिं वाणिज्जाए गमित्तए । एवं संपेहेइ २ त्ता गणिमं च ४ चउव्विहं भंडं गेण्हइ (०) सगडीसागडं सज्जेइ २ त्ता सगडीसागडं भरेइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहे(सुं)सु [एवं वयह—]एवं खलु देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे विपु(ले)लं पणि(य०)यं [आदाय] इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए । त जो ण देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पं(डु)डरंगे वा गोयमे वा गोव(ती)त्तिए वा (गिहिधम्मे वा) गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइपासंडत्थे वा गिहत्थे वा (तस्स णं) ध(ण)णेण सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ तस्स णं धणे अच्छत्तगस्स

देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेससि महया [२] सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एव वयह-एए णं देवाणुप्पिया ! ते नदिफला [रुक्खा] किण्हा जाव मणुन्ना छायाए । त जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कद(०)पुप्फतयापत्तफलाणि जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ । तं मा ण तुब्भे जाव (दूरं दूरेणं परिहर-माणा) वीसमह मा ण अकाले [चेव] जीवियाओ ववरोविस्संति अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमह-त्तिकट्टु घोसणं [जाव] पच्चप्पिणंति । तत्थ ण अत्थेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहति जाव रोयति एयमट्ठं सद्दहमाणा तेसिं नंदिफलाण दूरंदूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति । तेसि णं आवाए नो भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणा २ सु(ह)भरूवत्ताए ५ भुज्जो २ परिणमंति । एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गंथो वा २ जाव पचसु कामगुणेसु नो स(ज्जे)ज्जइ (नो रज्जेइ) से ण इहभवे चेव बहूणं समणाण ४ अच्च-णिज्जे परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ । तत्थ णं (जे से) अप्पेगइया पुरिसा धणस्स एयमट्ठ नो सद्दहंति ३ धणस्स एयमट्ठ असद्दहमाणा ३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तेसिं नदिफलाण मूलाणि य जाव वीसमति तेसि ण आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति । एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा २ पव्वइए पचसु कामगुणेसु सज्जइ जाव अणु-परियट्टिस्सइ जहा व ते पुरिसा । तए ण से धणे सगडीसागड जोयावेइ २ त्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ २ त्ता सगडीसागड मोयावेइ । तए ण से धणे सत्थ-वाहे महत्थ ३ रायारिहं पाहुडं गेण्हइ २ त्ता बहुपुरिसेहिं सद्धिं सपरिवुडे अहि-च्छत्त नय(रं)रिं मज्झमज्झेणं अणुप्पविसइ २ त्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव वद्धावेइ २ त्ता त महत्थं ३ पाहुड उवणेइ । तए ण से कणगकेऊ राया हट्ठतु(ट्ठ०)ट्ठे धणस्स सत्थवाहस्स त महत्थ (३) जाव पडिच्छइ २ त्ता ध(ण)णं सत्थवाह सक्कारेइ सम्माणेइ स० २ त्ता उस्सुक्क वियरइ २ त्ता पडि-विसज्जेइ [२] भंडविणिमयं करेइ २ त्ता पडिभंड गेण्हइ २ त्ता सुहसुहेण जेणेव चपा नयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मित्तनाइअभिसमन्नागए विपुलाइं माणुस्सगाइं जाव विहरइ । तेण कालेणं तेण समएणं थेरागमण ध० धम्म सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुबे ठावेत्ता [जाव] पव्वइए सामा[इयमा]इयाइ एक्कारस अगाइ बहूणि वासाणि जाव मासियाए (स०) जाव अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने (से णं देवे ताओ देव-लोगाओ आउक्ख० चय चइत्ता) महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अतं करेहिइ ।

मिजं असणं ४ पडिग्गाहेत्ता आहारं आहारेंति। तए णं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सुभूमिभा(ग)गाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिलं पडिलेहेइ २ त्ता त(त)ओ सालइयाओ एगं बिंदुगं ग(हे)हाय २ थंडि(लं)लंसि निसिरइ। तए णं तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेणं बहूणि पिपीलियासहस्साणि पाउब्भू० जा जहा य णं पिपीलिया आहारेइ सा [णं] तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ। तए णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए०—जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंमि बिंदु(ग)गंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलि(या)यासहस्साइं ववरोविज्जंति तं जइ णं अहं एयं सालइयं थंडिलंसि सव्वं निसिरामि (तए) णं बहूणं पाणाणं ४ वहकरणं भविस्सइ। तं सेयं खलु मम एयं सालइयं जाव [नेहाव]-गाढं सयमेव आहा(रि)रित्तए मम चेव एएणं सरी(रे)रेणं निज्जाउ-त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता मुहपोत्तियं [२] पडिलेहेइ २ त्ता ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ २ त्ता तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पा(णे)णएणं सव्वं सरी-रको(ट्ठ)ट्ठगंसि पक्खिवइ। तए णं तस्स धम्मरु[इ]स्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा। तए णं से धम्मरु(ई)ई अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमित्तिकट्टु आयारभंडगं एगंते ठ(ठ)वेइ २ त्ता थंडिलं पडिलेहेइ २ त्ता दब्भसंथारगं संथारेइ २ त्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता पुरत्था-भिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं एवं वयासी–नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं [मम] धम्मोवएसगाणं पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जी-वाए जाव परिग्गहे इयाणिं पि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंति(ते)ए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जाव(जी)जीवाए जहा खंदओ जाव चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि–त्तिकट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए। तए णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चि(रं)रगयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! धम्मरुइस्स अणगारस्स मास-[स समणपारणगंसि सालइयस्स जाव [नेहाव]गाढस्स निसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए चिरा[वे]इ, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेह। तए णं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति २ त्ता धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स

नेहकय एगते गो(वे)वित्तए अन्नं सालइय महु(रा)रलाउय जाव नेहावगाढ उव-क्ख(डे)डित्तए। एव सपेहेइ २ त्ता त सालइय जाव गोवेइ [२] अन्न सालइय महुर-लाउय उवक्खडेइ [२] तेसिं माहणाण ण्हायाण सुहासणवरगयाण त विपुल असण ४ परिवेसेइ। तए ण ते माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयता चोक्खा परम-सुइभूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था। तए ण ताओ माहणीओ ण्हायाओ सव्वालकारविभूसियाओ त विपुल असणं ४ आहारेंति २ त्ता जेणेव सयाइ २ गि(गे)-हाइ तेणेव उवागच्छति २ त्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ॥ ११२॥ तेण कालेणं तेणं समएण धम्मघोसा ना(म)मं थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा (नाम) नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता अहापडिरूव जाव विहरंति। परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा पडिगया। तए ण तेसिं धम्मघोसाण थेराण अतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे उ(ओ)राले जाव ते(उ)यलेस्से मासमासेण खम-माणे विहरइ। तए ण से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ २ त्ता बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ २ त्ता तहेव धम्मघोस थेरं आपुच्छइ जाव चपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे। तए ण सा नाग सिरी माहणी धम्मरुइ एज्जमाणं पासइ २ त्ता तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहु-(०)नेहावगाढस्स एड(निसिर)णट्ठयाए हट्ठतुट्ठा [उट्ठाए] उट्ठेइ २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता त सालइयं तित्तकडुय च बहुने(ह)हावगाढं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहसि सव्वमेव नि(सि)स्सिरइ। तए ण से धम्मरुई अणगारे अहा-पज्जत्तमितिकट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता चपाए नयरीए मज्झमज्झेणं पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता [जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छइ २] धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्न-पाण पडि(दसे)लेहेइ २ त्ता अन्नपाण करयलसि पडिदसेइ। तए ण (ते) धम्मघोसा थेरा तस्स सालइयस्स नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ नेहावगाढाओ एग बिंदु(ग)यं गहाय करयलंसि आसा(दे)देंति ति(त्तग)त्त खार कडुय अखज्ज अभोज्जं विसभूय जाणित्ता धम्मरुइ अणगारं एवं वयासी—जइ णं तुम देवाणुप्पिया! एय सालइय जाव नेहावगाढ आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवि-याओ ववरोविज्जसि। त मा णं तुम देवाणुप्पिया! इम सालइय जाव आहारेसि मा ण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। तं गच्छ[ह] ण तुम देवाणुप्पिया! इम सालइय एगतमणावाए अ(चि)चित्ते थंडि(ले)ल्ले परिट्ठवेहि २ त्ता अन्न फासुयं एस-

सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता धम्म-रुइयस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति २ त्ता हा हा [!] अहो! अकज्जमितिकट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति (०) धम्मरुइस्स आयारभंडग गेण्हंति २ त्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति २ त्ता गमणागमणं पडिक्कमंति २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो २ त्ता सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगा-रस्स सव्वं जाव करेमा(णे)णा जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवागच्छामो (०) जाव इहं हव्वमागया, तं कालगए णं भंते! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए। तए णं (ते) धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति २ त्ता समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु अज्जो! मम अंतेवासी धम्मरुई ना(म)मं अण-गारे पगइभद्दए जाव विणीए मासंमासेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं जाव नाग-सिरीए माहणीए गि(हे)ह अणुपवि(ट्ठे)सइ। तए ण सा नागसिरी माहणी जाव निसिरइ। तए ण से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमि(ति)त्तिकट्टु जाव कालं अणव-कखमाणे विहरइ। से ण धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोह(म्म)म्मे जाव सव्वट्ठ-सिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ ण [अत्थेगइयाणं] (अ)जहन्नमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ [ण] धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरो-वमाइं ठिई पन्नत्ता। से ण धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥११३॥ त धिरत्थु ण अज्जो! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुण्णाए जाव निंबोलियाए जाए ण तहारूवे साहू [साहुरूवे] धम्मरुई अणगारे मासक्खमण-पारणगंसि सालइएणं जाव गाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए। तए णं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाण थेराण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चंपाए सिंघाडग (तिग) जाव [पहेसु] बहुजणस्स एवमाइक्खंति [४]-धिरत्थु ण देवाणुप्पिया! नाग-सिरीए (माहणीए) जाव निंबोलियाए जाए ण तहारूवे साहू साहुरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरो(वेइ)विए। तए ण तेसिं समणाण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ-धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए। तए ण ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवा-गच्छंति २ त्ता नागसि(री)रिं माह(णी)णिं एवं वयासी-हं भो नागसिरी! अपत्थियप-त्थिए [!] दुरंतपंतलक्खणे [!] हीणपुण्णचाउद्दसे [!] धिरत्थु ण तव अधन्नाए अपु-

सत्य उपदेश देनके लिये दो बातोंकी आवश्यकता है। एक तो वीतरागताकी, दूसरे सत्यज्ञानकी। कषाय और अज्ञान ये दो ही कारण मिथ्योपदेशके हो सकते हैं। जिसमे कषाय नहीं है अज्ञान नहीं है, वह दुनियाका अकल्याण या वञ्चना नहीं कर सकता। जैनधर्मका सिद्धान्त है कि जब तक आत्मामें कषाय रहती है तब तक उसे सत्यकी प्राप्ति नहीं हो सकती। इसका कारण यह है कि बिना वीतरागताके हम अपने अनुभवोंसे वास्तविक सिद्धान्त निश्चित नहीं कर सकते। एक घटनाका रागीके ऊपर जो प्रभाव पड़ता है, उससे जुदा ही असर वीतरागके ऊपर पड़ता है। वह उसकी वास्तविकताको समझ जाता है—उसके ऊपर व्यापक दृष्टिसे विचार करता है। इसलिये सत्यज्ञान प्राप्त करनेके लिये वीतरागता पूर्ण आवश्यक है। वीतरागता जितनी अधिक होगी ज्ञान उतना ही अधिक पूर्ण और सत्य होगा। जहाँ वीतरागताका अन्त है वहाँ सत्यज्ञानका भी अन्त है। जो वीतरागता (निःकषायता) कठोरसे कठोर उपसर्गोंके आनेपर भी या बड़ेसे बड़े प्रलोभनके मिलनेपर भी चलित नहीं होती वही पूर्ण वीतरागता कहलाती है। उसे ही जैन शास्त्रोंमे यथाख्यात चारित्र'के नामसे कहा गया है। यदि यह वीतरागता क्षणिक नहीं है तो नियमसे केवलज्ञान पैदा कर देती है। जैनशास्त्रोंके अनुसार क्षायिक यथाख्यात' चारित्रके होनेपर केवलज्ञान प्राप्त करनेके लिये विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता। इसका कारण यही है कि पहले जिस तत्त्वका कषाय होनेके कारण पूर्ण सत्यरूपमे अनुभव नहीं होता था, यथाख्यात चारित्रके प्राप्त होनेपर वह होने लगता है। यही केवलज्ञान है।

यंति । तए णं सा सूमालिया दारिया पंचधाईपरिग्गहिया तंजहा–खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा इव चंप(क)गलया नि(०)वा(ए)यनिव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ । तए णं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥ ११५ ॥ तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते ना(म)मं सत्थवाहे अड्ढे(०) । तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया सूमाला इट्ठा (जाव) माणुस्सए कामभो(ए)गे पच्चणुब्भवमाणा विहरइ । तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए सुकुमाले जाव सुरूवे । तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइ सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सागरदत्तस्स सत्थवाह(गिह)स्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ । इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पिं आगासतलगंसि कणग(तें)तिंदूसएण कीलमाणी (२) विहरइ । तए ण से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ २ त्ता सूमालियाए दारियाए रूवे य ३ जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा नामधेज्जं से ? । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा ह० करयल जाव एवं वयासी–एस णं (देवाणुप्पिया !) सागरदत्तस्स २ धूया भद्दाए अत्तया सूमालिया ना(म)मं दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठा । तए णं (से) जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता ण्हाए स० मित्तनाइपरिवुडे चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवाग(च्छइ)ए । तए णं [से] सागरदत्ते २ जिणदत्तं २ एज्जमाणं पासइ २ त्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता आसणेणं उवनिमंतेइ २ त्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी–भण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं (?) । तए णं से जिणदत्ते (सत्थवाहे) सागरदत्तं (सत्थवाहं) एवं वयासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि । जइ ण जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउ णं सूमालिया सागर[दारग]स्स । तए णं देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुंकं [च] सूमालियाए ? । तए णं से सागरदत्ते (तं) २ जिणदत्तं [२] एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया (मम) एगा एगजाया इट्ठा [५] जाव किमंग पुण पासणयाए । तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं । तं जइ णं देवाणुप्पिया ! सागर[ए] दारए मम घरजामाउए भवइ तो णं अहं सागर(स्स)दारगस्स सूमालियं दलयामि । तए णं से जिणदत्ते २ सागरदत्तेण २ एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवाग-

त्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ २ त्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ११७ ॥ तए णं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिवया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसण करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ २ त्ता एवं वयासी-गए [णं] से साग(रे)रए-त्तिकट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ । तए णं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउप्पभा[या]ए दासचे(डिय)डिं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम देवाणुप्पिए ! व(हु)हूवरस्स मुह(सोह)धोवणियं उवणेहि । तए णं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ [२] मुहधोवणियं गेण्हइ २ त्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ (०) सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ २ त्ता एव वयासी-किन्नं तु(म)ब्भे देवाणुप्पि(ए)या ! ओहयणमणसकप्पा जाव झियाहि(सि) ? । तए ण सा सूमालिया दारिया तं दासचे(डी)डियं एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सागरए दारए म(म)म सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ २ त्ता वासघरदुवारं अवगु(ण्ड)णेइ जाव पडिगए। तए णं [हं] तओ (अहं)मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि [२] गए ण से सागरए-त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायामि । तए ण सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरदत्ते [२] तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवे(ए)देइ। तए णं से सागरदत्ते दासचेडीए अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते [४ जाव मिसिमिसेमाणे] जेणेव जिणदत्त[स्स] २ गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जिणदत्तं २ एव वयासी-किन्नं देवाणुप्पिया ! ए(वं)य जुत्त वा पत्त वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिस वा जण्णं सागर[ए] दारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदो(सं)सवडियं पइवय विप्पजहाय इहमाग(ओ)ए [?] बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवा(ल)लंभइ । तए ण जिणदत्ते सागरदत्तस्स [२]एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए (दारए) तेणेव उवागच्छइ २ त्ता साग(रयं)रं दारय एवं वयासी-दुट्ठु ण पुत्ता ! तुमे कय सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमाग(ते)च्छंतेणं, त गच्छह णं तुम पुत्ता ! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे । तए णं से सागरए जिणदत्तं एव वयासी-अवि-याइं अहं ताओ ! गिरिपडण वा तरुपडणं वा मरुप्पवाय वा जलप्प(वेसं)वायं वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडणं वा वि(वे)हाणस वा गिद्ध(पि)पट्ठं वा पव्वज्जं वा विदेसगमण वा अब्भुवग(च्छि)च्छेज्जा(मि) नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं ग(च्छि)च्छेज्जा । तए ण से सागरदत्ते २ कुड्डंतरि[या]ए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ २ त्ता लज्जिए वि(लीपविट्ठे)डीए विड्डे जिणदत्तस्स [२] गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता

सागरदत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ २ त्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमसि निवज्जइ । तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इम एयारूव अगफास पडिसवेदेइ सेस जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता वासघराओ निग्गच्छइ २ त्ता खंडमल्लगं खंडघ(डं)डगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दि(स)सिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं सा सूमालिया जाव गए णं से दमगपुरिसे-त्तिकट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ ॥ ११८ ॥ तए ण सा भद्दा कल्लं पाउप्पभायाए दासचेडिं सद्दावेइ (२ एवं वयासी) जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ। तए णं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वास(ह)घरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सूमालियं दारियं अके निवेसेइ २ त्ता एवं वयासी-अहो ण तुमं पुत्ता ! पुरापोराणाण [कम्माणं] जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि, तं मा णं तुम पुत्ता ! ओहयमणसकप्पा जाव झियाहि, तुम णं पुत्ता ! मम महाणसंसि विपुलं असण ४ जहा पो(पु)ट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि । तए णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठ पडिसुणेइ २ त्ता महाणसंसि विपुल असणं ४ जाव दलमाणी विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएण गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोस(ढ्ढा)ढाओ तहेव सघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिला(भि)मेत्ता एवं वयासी-एवं खलु अज्जाओ ! अह सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा, नेच्छइ णं सागरए [दारए] मम नामं वा जाव परिभोगं वा, जस्स जस्स वि य ण दे(दि)ज्जामि तस्स तस्स वि य णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ एवं जहा पोट्टिला जाव उवलद्धे [णं] जेण अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि । अज्जाओ तहेव भणति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरद(त्त स०)त्तस्स आपुच्छइ जाव गोवालियाण अंति(ए)यं पव्वइया । तए ण सा सूमालिया अज्जा जाया इ(ई)रियासमिया जाव [गुत्त]बंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरइ । तए णं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वदइ नमसइ व० २ त्ता एवं वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपा(ओ)ए बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए। तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एव वयासी-अम्हे णं अ(ज्जे)ज्जो ! समणीओ निग्गंथीओ इ(ई)रियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स [वा] जाव सन्निवेसस्स वा छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए, कप्पइ णं अम्हं अंतो-

सूमालियं दारियं सद्दावेइ २ त्ता अंके निवेसेइ २ त्ता एवं वयासी-किं णं तव पुत्ता! सागरएणं दारएणं (मुक्का)? अहं णं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं तुमं इट्ठा (जाव) मणामा भविस्ससि-त्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं [जाव] वग्गूहिं समासासेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ। तए णं से सागरदत्ते २ अन्नया उप्पिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे रायमग्गं ओलोएमाणे २ चिट्ठइ। तए णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ दंडिखंडनिवसणं खंड(म)ल्लगखंडघडगहत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्गं। तए णं से सागरदत्ते [सत्थवाहे] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असण(पा)णेणं ४ प(लो)भेह ( ) गिहं अणुप्प(वे)सेह २ त्ता खंड(म)ल्लगं खंडघडगं च से एगंते एडेह २ त्ता अलंकारियकम्मं करेह २ त्ता ण्हायं कयबलिकम्मं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह २ त्ता मणुन्नं असणं ४ भोयावेह ( ) मम अंतियं उवणेह। तए णं [ते] कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तं दम(गं)पुरिसं असण(णं)णेणं ४ उवप्पलो(भें)ति २ त्ता सयं गिहं अणुप्पवेसिंति २ त्ता तं खंड(म)ल्लगं खंड(घ)डगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति। तए णं से दम(गे)पुरिसे तं[सि] खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य (एगंते) एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ। तए णं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया २ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी-किं णं देवाणुप्पिया! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसइ?। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी-एस णं सामी! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि (एगंते) य एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ। तए णं से सागरदत्ते २ ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी-मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया! एयस्स दमगस्स तं खंड जाव एडेह पासे [से] ठवेह जहा णं पत्तियं भवइ। ते(वि) तहेव ठावें(ड्ढें)ति (तए णं ते कोडुंबियपुरिसा) २ तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति २ त्ता सयपागसहस्सपागेहिं ते(ल्ले)हिं अ(ब्भं)गेंति अब्भिंगिए समाणे सुरभि[णा] गं(धुव्व)ट्टए(णे)णं गायं उ(व्वट्टें)ति २ त्ता उसिणोद(ग)गेणं गंधोदएणं [ण्हाणेंति] सीओदएणं ण्हावेंति ( ) पम्हलसुकुमालगंधकासा(ई)ए गायाइं लू(हें)ति २ त्ता हंसलक्खणं प(ट्ट)सुयजुयलं परि(हें)ति २ त्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति २ त्ता विउलं असणं ४ भोयावेंति २ त्ता सागरदत्तस्स [समीवे] उवणेंति। तए णं [से] सागरदत्ते [२] सूमालियं दारियं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं क(रि)त्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए द(ल)यामि भद्दियाए भद्दओ भ(वि)ज्जासि। तए णं से दमगपुरिसे

सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमसि निवज्जइ। तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसवेदेइ सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता वासघराओ निग्गच्छइ २ त्ता खंडमल्लगं खंडघ(ड)डगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दि(स)सिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं सा सूमालिया जाव गए णं से दमगपुरिसे-त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ॥ ११८॥ तए णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभायाए दासचेडिं सद्दावेइ (२ एवं वयासी) जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ। तए णं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वास(ह)घरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ २ त्ता एवं वयासी-अहो णं तुमं पुत्ता! पुरापोराणाणं [कम्माणं] जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि, तं मा णं तुमं पुत्ता! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं णं पुत्ता! मम महाणसंसि विपुलं असणं ४ जहा पो(पु)ट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि। तए णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता महाणसंसि विपुलं असणं ४ जाव दलमाणी विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोस(ड्ढा)ढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिला(भि)भेत्ता एवं वयासी-एवं खलु अज्जाओ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा, नेच्छइ णं सागरए [दारए] मम नामं वा जाव परिभोगं वा, जस्स जस्स वि य णं दे(दि)ज्जामि तस्स तस्स वि य णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ! बहुनायाओ एवं जहा पोट्टिला जाव उवलद्धे [णं] जेणं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि। अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरद(त्त स०)त्तस्स आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंति(ए)यं पव्वइया। तए णं सा सूमालिया अज्जा जाया इ(ई)रियासमिया जाव [गुत्त]बंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरइ। तए णं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपा(ओ)ए बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए। तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एवं वयासी-अम्हे णं अ(ज्जे)ज्जो! समणीओ निग्गंथीओ इ(ई)रियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स [वा] जाव सन्निवेसस्स वा छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए, कप्पइ णं अम्हं अंतो-

वसामि तया णं अहं अप्पवसा। जया ण अहं मु(डे)डा भवित्ता पव्वइया तया णं अहं परवसा। पुव्विं च णं मम समणीओ आढायंति इयाणिं नो आ(ढं)ढायंति। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए गोवालियाण अतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्स(गं)यं उवसपज्जित्ताण विहरित्तए-त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं(पा०) गोवालियाणं (अज्जाणं) अतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता पाडिएक्क उवस्सयं उवसंपज्जित्ताण विहरइ। तए णं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ जाव चेएइ तत्थ वि य ण पासत्था पासत्थविहा(री)रिणी ओसन्ना २ कुसीला २ ससत्ता २ बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ [२] अद्धमासियाए सलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइय(अ)पडिक्कंता कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे अन्नयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववन्ना। तत्थेगइयाण देवीणं नव-पलिओवमाइ ठिई पन्नत्ता। तत्थ णं सूमालियाए देवीए नवपलिओवमाइ ठिई पन्नत्ता ॥ १२१ ॥ तेण कालेणं तेण समएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कपिल्लपुरे नाम नयरे होत्था वण्णओ। तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था वण्णओ। तस्स ण चुलणी देवी धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया। तए णं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे पचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दु(प)वयस्स रन्नो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया। तए णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं जाव दारिय पयाया। तए ण तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूव (०) नाम(०)-जम्हा ण एसा दारिया दु(व)पयस्स रन्नो धूया चुलणीए देवीए अत्तया त हो(उ)ऊ णं अम्ह इमीसे दारियाए नाम(विज्जे)धेज्जं दोवई। तए ण तीसे अम्मापियरो इमं एयारूव गो(गु)ण्णं गुणनिप्फन्न नामधेज्ज क(रिं)रेंति दोवई। तए ण सा दोवई दारिया पंचधा(इ)ईपरिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्ली(ण)णा इव चंपगलया निवायनिव्वाघायसि सुहसुहेण परिवड्ढइ। तए ण सा दोवई [देवी] रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था। तए ण त दोवइ रायवरकन्न अन्नया कयाइ अतेउरियाओ ण्हायं सव्वालकारविभूसियं करेंति २ त्ता दुवयस्स रन्नो पायवदि(डं)यं पे(स)सेंति। तए णं सा दोवई २ जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता दुवयस्स रन्नो पायग्गहण करेइ। तए ण से दुवए राया दोवई दारिय अके निवेसेइ २ त्ता दोवईए २ रूवे(ण) य ३ जायविम्हए दोवइं २ एवं वयासी-जस्स ण अह [तुमं] पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि तत्थ णं तुम सुहिया वा दु(क्खि)हिया वा भ(वि)वे-

जामि । तए णं म(मे)म जावज्जीवाए हियय(ग)यमे भविस्सइ । तं णं अहं णं पुत्ता ! अज्जयाए सयंवरं वि(रया)यामि । अज्जयाए णं तुमं दिन्नं सयंवरा । (जं) णं णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्तिकट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ ॥ १२२ ॥ तए णं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं । तत्थ णं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे बलदेवप(मु)मोक्खे पंच महावीरे उग्गसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से पज्जुण्णपा(मु)मोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठिं दु(द्द)दंतसाहस्सीओ वीरसेणप(मु)मोक्खाओ ए(इ)क्कवीसं [राय]वीरपुरिससाहस्सीओ म(ह)हासेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भ(सि)सेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि २ त्ता एवं वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रन्नो धूयाए चुलणीए (देवीए) अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भ(गि)इणीए दोवईए १ सयंवरे भविस्सइ । (तं) तए णं तुब्भे (देवा !) दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह । तए णं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रन्नो एयमट्ठं (विणएणं) पडिसुणेइ २ त्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति । तए णं से दूए ण्हाए जाव अलंकियसरीरे चाउग्घंटं आसरहं दु(दू)रूहइ २ त्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहिया(ऽऽ)उहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ ( ) पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ २ त्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चाउग्घंटं आसरहं ठ(ठ)वेइ २ त्ता रहाओ पच्चोरुहइ २ त्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायचारविहा(रचा)रेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयप(मु)मोक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह । तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ[तुट्ठे] जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ स २ त्ता पडिविसज्जेइ । तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरि(स)से सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाणियं भेरिं तालेहि । तए णं से कोडुंबिय-

यों तो म० महावीरने जबसे घर छोड़ा तभीसे उनमें वीतरागता थी, परन्तु वह सच्ची और स्थिर है कि नही इस बातकी परीक्षा तभी हो सकती थी जब कठोरसे कठोर परीक्षा होनेपर भी वह टिकी रहती। इस प्रकार वीतरागताकी जॉचके लिये तथा उसमे जो कुछ छोटी-मोटी त्रुटि रह गई हो उसे दूर करनेके लिये भगवान्ने कठोरसे कठोर उपसर्गोंको विजय किया, परिषहे सहीं, तपस्याएँ कीं।

इन तपस्याओंसे उन्होंने यह भी जान लिया कि किन किन चिह्नोंसे किसी मनुष्यकी पूर्ण वीतरागताका पता लगाया जा सकता है। इसका फल यह हुआ कि बहुतसे मनुष्योंका, जो वास्तवमे पूर्ण वीतराग और केवली हो जाते थे, गौतम पता भी न लगा पाते थे, किन्तु म० महावीर तुरन्त जान जाते थे कि अमुक मनुष्य केवली हो गया है।

अनेक बार ऐसा हुआ है कि गौतम गणधरके शिष्य 'केवली' हो जाते थे, किन्तु गौतमको इस बातका पता भी न लगता था कि मेरे ये शिष्य केवली हो गये हैं, इसलिये वे अपने केवली शिष्योंको साधारण शिष्योंकी तरह आज्ञा देते थे और उस समय म० महावीर गौतमको यह कहकर रोक देते थे कि—"गौतम, केवलीका अपमान मत करो।" यह सुनकर गौतम पश्चात्ताप करते थे। इससे यह बात साफ माल्म होती है कि म० महावीरने बारह वर्षके तपोमय जीवनमें अपने जीवनके अनुभवसे इस बातका भी निर्णय किया था कि सच्ची और पूर्ण वीतरागता तथा पूर्ण तत्त्वज्ञान प्राप्त होनेपर मनुष्यका जीवन कैसा हो जाता है और उसके चेहरेपर कौनसे सूक्ष्म चिह्न आ जाते हैं। उपसर्गादि-विजयसे मनुष्यकी वीतरागता परी-

रिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता जेणेव सभाए सुह-म्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सामुदाइयं भेरिं महया २ सद्देणं तालेइ। तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महासेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया सव्वालंकार-विभूसिया जहाविभवइड्ढिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया [हयगया] जाव [अप्पेगइया] पाय(विहारचा) चारविहारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडि-कप्पेह हयगय जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे। तए णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपा(मु)मोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव म० छ० ब० सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारव(इ)इं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्ग-च्छइ २ त्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं से दुवए राया दोच्चं [पि] दूयं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छ[ह] णं तुमं देवाणु-प्पिया! हत्थिणाउरं नयरं, तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउ(णीं)णिं कीवं आसत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव [जाव] समोसरह। तए णं से दूए एवं (व०-) जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गम-णाए। एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चं(पा)पं नयरिं, तत्थ णं तुमं कण्हं अंगरायं स(से)ल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं, तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमगं दूयं हत्थिसी(स)सं नय(रं)रिं, तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल (तहेव) जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं, तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं, तत्थ णं तुमं सहदेवं जरा(सिंधु)संधसुयं करयल जाव समोसरह। अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं। तत्थ णं तुमं रुप्पिं भे(भे)सगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह। नवमं दूयं विरा(ड)टं नय(रं)रिं, तत्थ णं तुमं की(कि)यगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूयं अवसेसेसु (य) गामागरनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह। तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर [तहेव] जाव समोसरह। तए णं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स

एवं वई सिरिदामगंडं[ ] किं ते ? पाडलमल्लियचंपग जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धणिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गे(गि)ण्हइ । तए णं सा किड्डाविया (जाव) सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंबसंदंसिए य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसि(सि)ए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापि(य)ऊणं वंससत्तसामत्थगोत्तविक्कंतिकित्तिबहुविहआगमयमाहप्परूवजोव्वणगुणलावण्णकुलसीलजाणिया कित्तणं करेइ । पढमं ताव वण्हिपुंगवाणं दसदसार[वर]वीरपुरि(सा)ण(ते)लोक्कबलवगाणं सत्तुसयसहस्समाणावमद्दगाणं भवसिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं बलवीरियरूवजोव्वणगुणलावण्णकित्तिया कित्तणं करेइ । तओ पु(पो)ण उग्गसेणमाईणं जायवाणं भणइ(य)-सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगंधहत्थीणं जो हु ते [होइ] हियइच्छिओ ॥ तए णं सा दोवई रायवरकन्नगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झंमज्झेणं समइच्छमाणी २ पुव्वकयनियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता ते पंच पंडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढि(ढे)इ करेइ २ त्ता एवं वयासी-एए णं मए पंच पंडवा वरिया । तए णं (तेसिं) ताइं वासुदेवपामोक्खा(णं)इं बहूणि रायसहस्साणि महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा[इं]२ एवं वयंति-सुवरियं खलु भो ! दोव(इ)ईए रायवरकन्नाए (२) तिकट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छंति । तए णं धट्ठज्जु(ण्णे)कुमारे पंच पंडवे दोवइं[च] रायवरक(न्न)गं चाउग्घंटं आसरहं दुरू(रु)हेइ २ त्ता कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं जाव सयं भवणं अणुपविसइ । तए णं दुवए राया पंच-पंडवे दोवइं २ पट्टयं दुरूहेइ २ त्ता सेयापीय[ए]हिं कलसेहिं मज्जावेइ २ त्ता अग्गिहोमं कार(वा)वेइ पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य पाणिग्गहणं करावेइ । तए णं से दुवए राया दोवईए २ इमं एयारूवं पीइदाणं दलय(ती)इ तंजहा-अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव (अट्ठ) पेसणकारीओ दासचेडीओ अन्नं च विपुलं धणकणग जाव दलयइ । तए णं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइं विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंध जाव पडिविसज्जेइ ॥ ११९ ॥ तए णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह । तए णं [ते] वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं २ जाव पहारेत्थ गमणाए । तए णं से पं(डू)डू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणा-

प्पिया ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरं(रे)टं० सेयवरचामर० हयगयरह० महया भडच(र)डगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पत्तेय नामंकेसु आसणेसु निसीयह २ त्ता दोवइं २ पडिवालेमाणा २ चिट्ठह घोसणं घोसेह [२] मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंड(पं)वं आसियसमज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपु(प्फपुंजो)प्फोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं करेह कारवेह करेत्ता कारवेत्ता वासुदेवपा(०)मोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं २ नामंकाइं आसणाइं अत्थुय(सेयव०)पच्चत्थुयाइं रएह २ त्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह (तेवि) जाव पच्चप्पिणंति। तए णं ते वासुदेवपा(०)मोक्खा बहवे रायसहस्सा कल्ल (पाउ०) ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरेंट० सेयवरचामराहिं [महया] हयगय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयव(रे)रामंडवे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अणुप्पविसंति २ त्ता पत्तेय २ नाम(के)कएसु निसीयंति दोवइं २ पडिवालेमाणा चिट्ठति। तए णं से दुवए राया कल्लं ण्हाए सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंट० हयगय० कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २(०) जेणेव सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेवपा(०)मोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तेसिं वासुदेवपा(०)मोक्खाणं करयल जाव वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठइ ॥ १२४ ॥ तए णं सा दोवई २ [कल्ल जाव] जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता [मज्जणघरं अणुपविसइ २ त्ता] ण्हाया सुद्धप्पवेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ। तए णं त दोवई २ अंतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसियं करेंति, किं ते ? वरपायपत्तनेउरा जाव चेडियाचक्कवाल(यह)हयरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ। तए णं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवईए कन्नाए सारत्थं करेइ। तए णं सा दोवई २ कंपिल्लपुरं (नयरं) मज्झंमज्झेणं जेणेव सयंव(र)रामंडवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता रहं ठावेइ रहाओ पच्चोरु(ह)भइ २ त्ता किड्डावियाए लेहियाए (य) सद्धिं सयंवरमंडवं अणुपविसइ करयल [जाव] तेसिं वासुदेवपा(०)मोक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ। तए णं सा दोवई २

उरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारे(ह)हि अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ जाव पडिरूवे । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव कार(करा)वेंति । तए णं से पं(डुए)डू राया पचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हयगयसपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए । तए णं से पंडूराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे कारेह अणेग(खं)थभसय तहेव जाव पच्चप्पिणंति । तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवाग च्छंति । तए णं (से) पंडूराया ते(सिं) वासुदेवपामो(क्खाणं)क्खे [जाव] आग(म-ण)ए जाणित्ता हट्टतुट्ठे ण्हाए जहा दु(प)वए जाव जहारिहं आवासे दलयइ । तए णं ते वासुदेवपा(०)मोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव सया(इ) २ आवासा(ई) तेणेव उवा-गच्छंति (०) तहेव जाव विहरंति । तए णं से पंडूराया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुल असणं ४ तहेव जाव उवणेंति । तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रा(या)यसहस्सा ण्हाया तं विपुलं असणं ४ तहेव जाव विहरंति । तए णं से पडूराया [ते] पंचपंडवे दोवइं च देविं पट्टयं दुरूहेइ२ त्ता सीयापीएहिं कलसेहिं ण्हावे(न्ति)इ२ त्ता कल्लाण(का)करं करेइ २ त्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विपुलेणं अस(ण)णेणं ४ पुप्फवत्थेण सक्कारेइ सम्माणेइ (०) जाव पडिविसज्जेइ । तए ण ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहू(हिं)ई जाव पडिगयाइं ॥ १२६ ॥ तए णं ते पंच पंडवा दोवईए देवीए (सद्धिं अंतो अंते-उरपरियाल) सद्धिं कल्लाकल्लिं वारंवारेणं उ(ओ)रालाइं भोगभोगाइं जाव विहरंति । तए णं से पंडू राया अन्नया कया(ई)इं पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवईए (देवीए) य सद्धिं अंतोगतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ । इमं च णं कच्छुल्लनारए दंसणेणं अइभद्दए विणीए अतो(२)य कलुसहियए मज्झ(त्थो)त्थउवत्थिए य अल्लीणसोमपियदंसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए कालमियचम्मउत्तरासंगरइयव-(त्थे)च्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेह(ल)लावा-गलधरे हत्थकयकच्छभीए पियगंधव्वे धरणिगोयरप्पहाणे संवरणावरणओवय(णउ)-ण्पयणिलेसणीसु य संकामणि(अ)आभिओगपन्नत्तिगमणीथं(भ)भिणीसु य ब(हु)हूसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धनि-सढउम्मुयसारणगयसुमुहदुम्मुहाई(ण)णं जायवाण अद्धुट्ठाण[य]कुमारकोडीणं हियय दइए संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भंडणाभिलासी बहूसु य सम(रेसु)रसयसपराएसु

वयासी-तु(म्भं)मं देवाणुप्पिया ! बहूणि, गामाणि जाव गि(गे)हाइं अणुपविससि, त अत्थि याइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं मम ओरोहे ? । तए ण से कच्छुल्लनारए पउमनाभेणं (रन्ना) एव वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ २ त्ता एवं वयासी-सरिसे णं तुम पउमनाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स । के ण देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे ? एव जहा मल्लिणाए। एव खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे हत्थिणाउरे [नयरे] दुपयस्स रन्नो धूया चुलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पचण्हं पडवाण भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा। दोवईए णं देवीए छिन्नस्सवि पायगुट्ठ(य)स्स अयं तव ओरोहे स(तिमं)यंपि कल न अग्घइ-त्तिकट्टु पउमनाभ आपुच्छइ (०) जाव पडिगए। तए णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म दोवईए देवीए रूवे य ३ मुच्छिए ४ (०) जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं जाव पुव्वसगइय देवं एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे, २, भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव [उक्किट्ठ]सरीरा, त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! दोव(ई)इं देविं इहमा(णि)णीय । तए ण पुव्वसंगइए देवे पउमनाभ एवं वयासी-नो खलु देवाणुप्पिया ! ए(य)वं भूय वा भव्व वा भविस्स वा ज-न्नं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तू(ण)ण अन्नेणं पुरिसेण सद्धिं उ(ओ)रालाइं जाव विहरिस्सइ। तहावि य णं अह तव पियट्ठ(त)याए दोवइं देविं इह हव्वमाणेमि-त्तिकट्टु पउम नाभं आपुच्छइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झमज्झेण जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तेण कालेणं तेण समएण हत्थिणाउरे [नयरे] जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए देवीए सद्धिं उप्पिं आगासत(लं)लगसि सुह[प]पसुत्ते यावि होत्था। तए ण से पुव्वसगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता दोवईए देवीए ओसोवणिय दलयइ २ त्ता दोवइ देविं गिण्हइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अ-वरकका जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पउमनाभस्स भवणसि असोगवणियाए दोवइं देविं ठावेइ २ त्ता ओसोवणिं अवहरइ २ त्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी-एस ण देवाणुप्पिया ! मए हत्थिणाउराओ दोवई देवी इ(ह)ह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ। अओ परं तुमं जाणसि-त्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए । तए ण सा दोवई देवी तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवण असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एव वयासी-नो खलु अम्हं एसे सए भवणे नो खलु एसा अम्हं स(गा)या असोगवणिया। त न नज्जइ णं अहं

कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति । तए णं से पंडू राया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं निवेदेहि। कण्हे णं परं वासुदेवे दोवईए (देवीए) मग्गणगवेसणं करेज्जा अन्नहा न नज्जइ दोवईए देवीए सु(ती)इं वा खु(ती)इं वा पव(त्ती)त्तिं वा उवलभेज्जा। तए णं सा कोंती देवी पंडु(रण्)णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ २ त्ता ण्हाया हत्थिखंधवरगया हत्थिणा(उ)पुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता कुरुजणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुर(ट्ठ)ट्ठाजणवए जेणेव बारवई नयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! जेणेव (बारवई ण०) बारवई नयरिं अणुपविसह २ त्ता कण्हं वासुदेवं करयल[०] एवं वयह-एवं खलु सामी! तुब्भ पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इहं हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखइ । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव करेंति । तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए [एयमट्ठं] सोच्चा निसम्म [हट्ठतुट्ठे] हत्थिखंधवरगए हयगय[०] बारवईए (य) नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ २ त्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ २ त्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरूहइ २ त्ता बारव(तीए)इ नय-(रीए)रिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयं गिहं अणुप्पविसइ । तए णं से कण्हे वासुदेवे कों(ती)तिं देविं ण्हायं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी-संदिसउ णं पिउच्छा! किमागमणपओयणं (?)। तए णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता! हत्थिणाउरे नयरे जुहिट्ठिल्लस्स [रन्नो] आगासत(ले)लए सुह[प]पसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, तं इच्छामि णं पुत्ता! दोवईए देवीए मग्गणगवेसणं कयं। तए णं से कण्हे वासुदेवे कों(तिं)तीपिउच्छिं एवं वयासी-जं नवरं पिउच्छा (!) दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ वा अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवइं [देविं] साहत्थिं उवणेमि-त्तिकट्टु कों(ती)तीपिउ(त्थि)च्छिं सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ। तए णं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया । तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेइ जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा । तए णं से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतोअंते-

स्थित हो जाती है; परन्तु अगर किसीको इस प्रकार परीक्षा देनेका अवसर प्राप्त न हो तो उसका कैवल्य रुक नहीं सकता। इस प्रकार कैवल्य प्राप्त करनेवालोंको भले ही उपसर्गादि विजय प्राप्त करनेका अवसर न मिले परन्तु उनमें सब प्रकारके उपसर्गोंको विजय करनेकी शक्ति अवश्य रहनी चाहिये।

तपस्याकी शक्ति न रखनेपर मनुष्य न तो पूर्ण वीतराग हो सकता है न दुःखोंपर विजय प्राप्त कर सकता है। पहले कहा जा चुका है कि पूर्ण सुखी बननेके लिये हरएक प्रकारके दुःखोंके साथ लड़नेकी पूर्ण शक्ति होना चाहिये। अगर हम दो दिनकी भूखसे टरेंगे किसी प्रकारके कष्टसे घबराएँगे तो हमारे पीछे भय लगा रहेगा। जहाँ भय है वहाँ न तो वीतरागता है, न सुख। यही कारण है कि हम म० महावीरके जीवनमें तपकी महत्ता पाते हैं। यह तप प्रशंसाके लिये नहीं था दुःखी होनेके लिए नहीं था, किन्तु दुःखको विजय करनेके लिये, सुखको पूर्ण और स्थिर बनानेके लिये था।

इस प्रकार म० महावीरने पूर्ण वीतराग और पूर्णज्ञानी (केवलज्ञानी) बननेके लिये बारह वर्ष तक सफल तपस्या की। परन्तु वीतराग और सर्वज्ञ हो जानेसे ही कोई तीर्थङ्कर नहीं हो जाता। इतनेसे वह सिर्फ अर्हन्त बनता है। म० महावीरके शिष्योंमें ऐसे सात सौ 'अर्हन्त' थे परन्तु वे तीर्थङ्कर नहीं थे। अर्हन्तोंमें जो धर्म-संस्थापक अर्हन्त होते हैं वे 'तीर्थङ्कर' कहलाते हैं। वे तत्त्वज्ञ ही नहीं होते—तत्त्वप्रदर्शक भी होते हैं। वे धर्मकी मूर्ति दुनियाके सामने रखते हैं। द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावके अनुसार वे धर्मके नियमोपनियम बनाते हैं, उनका लोगोंसे पालन कराते हैं, सबका संस्थापन और संचालन करते हैं। इन सब

वेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरा(रे)हि जा(जण्)णं अहं-अवरकंकारायहाणिं दोवईए कूवं गच्छामि । तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-किं(ह)णं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमनाभस्स रन्नो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई जाव साहि(संहरि)या तहा चेव दोवई देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणाउरं साहरामि उदाहु पउमनाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ? । तए णं [से] कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि, तुमं णं देवाणुप्पिया ! [मम] लवण-समुद्दे [पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं] अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं मग्गं वियराहि, सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि । तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं होउ [ण] । पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ । तए णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगि(णी)णिं सेणं पडिविसज्जेइ २ त्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ २ त्ता जेणेव अवरकंका रायहाणी जेणेव अवरकंकाए [रायहाणीए] अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता रहं ठा(ठ)वेइ २ त्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अवरकंकारायहाणिं अणुपविसाहि २ त्ता पउमनाभस्स रन्नो वामेणं पाएणं पायपीढं अ[व]क्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एवं व०-ह भो पउमना(हा)भा ! अपत्थियपत्थिया दुरंतपंतलक्खणा हीणपुण्णचाउद्दसा सि(री)रिहिरि(धी)धिइपरिवज्जिया [!] अज्ज न भवसि किन्न तुमं न याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइं देविं इह हव्वमा(ण)णेमा(णे)णं ? तं एयमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवइं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे निग्ग-च्छाहि, एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं [सद्धिं] अप्पछट्ठे दोवई[ए] देवीए कूवं हव्वमागए । तए णं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे (जाव) पडिसुणेइ २ त्ता अवरक(का)कं रायहाणिं अणुपविसइ २ त्ता जेणेव पउमना(हे)भे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी-एस णं सामी ! मम विणयपडिवत्ती इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्ति-त्तिकट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं अ(णु)वक्कमइ २ त्ता कुं(कों)तग्गेणं लेहं पणा-(म)मेइ (०) जाव कूवं हव्वमागए । तए णं से पउमनाभे दारुएणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी-(णो) न अप्पिणामि णं अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं । एस णं अहं सयमेव जुज्झस(ज्जो)-

वासुदेवे धणु परामुसइ वेढो धणुं पूरेइ २ त्ता धणुसद्दं करेइ । तए णं तस्स पउम-नाभस्स दोच्चे बलतिभाए तेण धणुसद्देणं हयमहिय जाव पडिसेहिए । तए ण से पउम-नाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरि-सक्कारपरक्क(म)मे अधारणिज्ज मि त्तिकट्टु सिग्घ तुरिय जेणेव अ वरकका तेणेव उवा-गच्छइ २ त्ता अ वरकं(क)कारायहाणिं अणुपविसइ २ त्ता वा(दा)राइ पिहेइ २ त्ता रोहसज्जे चिट्ठइ । तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अ-वरकका तेणेव उवा-गच्छइ २ त्ता रहं ठावेइ २ त्ता रहाओ पच्चोरुहइ २ त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोह[ण]णइ(०) एगं मह नरसीहरूवं विउव्वइ २ त्ता महया २ सद्देणं पा(द)यदद्द-रिय करेइ । तए ण (से) कण्हेण वासुदेवेण महया २ सद्देण पा-यदद्दरएणं कएण समाणेणं अ-वरकका रायहाणी सभग्गपागारगो(पु)उराट्टालयचरियतोरणपल्हत्थिय-पवरभवणसिरिघरा सर(र)सरस्स धरणियले सन्निवइया । तए ण से पउमनाभे राया अ वरकक रायहाणिं संभग(ग)ग जाव पासित्ता भीए दोवइं देविं सरणं उवेइ । तए ण सा दोवइं देवी पउमनाभं रायं एव वयासी–किन्नं तुम देवाणु-प्पिया ! (न) जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पिय करेमाणे (मम इह हव्वमाणेसि) ? त एवमवि गए गच्छह ण तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए ओ(अव)चूलगवत्थ-नियत्थे अतेउरपरियालसपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइ गहाय ममं पुरओ काउ कण्ह वासुदेव करयल [जाव] पाय(प)वडिए सरण उवेहि, पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा । तए ण से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ २ त्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ २ त्ता करयल जाव एवं वयासी–दिट्ठा ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे । तं खामेमि ण देवा-णुप्पिया ! जाव खमतु ण जाव नाइ भुज्जो २ एवं करणयाए–त्तिकट्टु पंजलि(वु)उडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ । तए णं से कण्हे वासुदेवे पउम-नाभं एव वयासी–ह भो पउम-नाभा ! अ(प)पत्थियपत्थिया ४ कि न्न तुमं (ण) जाणसि मम भगिणिं दोवइं देविं इह हव्वमाणमाणे ? त एवमवि गए नत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि-त्तिकट्टु पउम-नाभं पडिविसज्जेइ (०) दोवइ देविं गे(गि)ण्हइ २ त्ता रह दुरूहेइ २ त्ता जेणेव पच पंड-वा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पचण्हं पडवाणं दोवइ देविं साहत्थिं उवणेइ । तए ण से कण्हे पचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झमज्झेण जेणेव जबुद्दीवे २ जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ १२९ ॥ तेणं कालेण तेणं समएणं धायइ-सडे दीवे पुर-त्थिमद्धे भारहे वासे चपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभद्दे उज्जाणे ।

तत्थ णं चंपाए णयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था (महया हिमवं) वण्णओ। तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे। क(वि)ले वासुदेवे धम्मं सुणेइ। तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ [अंतिए] धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेइ। तए णं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अ(ज्झ)त्थिए [४] समुप्पज्जित्था—किं मन्ने धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पन्ने (?) जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए वियंभइ [?] कविले वासुदे(वे)त्ता म(ह)या(र)ि(व)ए (वंदेइ) मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—से णूणं (ते) कविला वासुदेवा! म(म)ं अंतिए धम्मं निसामेमाणस्स संखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए—किं मन्ने जाव वियंभइ। से नूणं कविला वासुदेवा! अ(यम)ट्ठे समट्ठे? हंता [!] अत्थि। [तं] नो खलु कविला! एवं भूयं वा भ(वइ)ण्णं वा भविस्स(इ)ई वा जन्नं ए(गे)खेत्ते एगजुगे एगसमए [णं] दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जिति वा उप्पज्जिस्संति वा। एवं खलु वासुदेवा! जंबुद्दीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउ(र)राओ नयराओ पंडुस्स रण्णो सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी तव पउम-णाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं अवरकंकं-णयरिं साहरिया। तए णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अवरकंकं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए। तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउम-णाभेणं र(ण्णा) सद्धिं संगामं संगामेमाणस्स अयं संख-सद्दे तव मुहवाया (इव) इट्ठे (कंते) इ(इ)व वियंभइ। तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी—गच्छामि णं अहं भंते! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं [मम] सरिसपुरिसं पासामि। तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया! एवं भूयं वा ३ जन्नं अरहंता वा अरहंतं पासंति चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासंति बलदेवा वा बलदेवं पासंति वासु-देवा वा वासुदेवं पासंति। तहवि य णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वी(इ)वयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासिहिसि। तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता हत्थिखंधं दुरूहइ २ त्ता सिग्घं २ जेणेव वेला(उ)कूले तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणस्स सेयापीया(इं)इं धयग्गाइं पासइ २ त्ता एवं वयइ—एस णं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ त्तिकट्टु पंचजन्नं संखं परामुसइ [२] मुहवायपूरियं करेइ। तए णं से कण्हे वासु-

देवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्दं आय-ण्णेइ २ त्ता पंचयन्नं जाव पूरियं करेइ । तए णं दोवि वासुदेवा संखसद्द(सा)समायारिं करेंति । तए ण से कविले वासुदेवे जेणेव अ-वरकका तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अ-वरककं रायहाणिं सभग्गतोरणं जाव पासइ २ त्ता पउम नाभ एवं वयासी–किन्नं देवाणुप्पिया ! एसा अ-वरकंका सभग्ग जाव सन्निवइया ? । तए णं से पउम-ना-भे कविलं वासुदेव एवं वयासी–एवं खलु सामी ! जंबुद्दीवाओ २ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूय अ-वरकंका जाव सन्नि(वा)वडिया । तए णं से कविले वासुदेवे पउम-ना-भस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा पउम ना(ह)भ एवं वयासी–हं भो पउम-नाभा ! अप-त्थियपत्थिया [५!] किन्नं तुम (न) जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ? आसुरुत्ते जाव पउम-ना-भं निव्विसय आणवेइ पउम-ना-भस्स पुत्तं अ-वरकका[ए] रायहाणीए महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव पडिगए ॥ १३० ॥ तए ण से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वी-ईवयइ (गग उवागए) ते पंच-पंडवे एवं वयासी–गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! ग(गा)ग महा-न(दि)इं उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठियं लवणाहिवइ पासामि । तए णं ते पंच पडवा कण्हेण २ एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छंति २ त्ता एगट्ठियाए नावाए मग्गणगवेसणं करेंति २ त्ता एगट्ठियाए नावाए गं-ग महान-इं उत्तरंति २ त्ता अ-न्नम-न्नं एवं वयति–पहू ण देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे ग-गं महा-न इं वाहाहिं उत्तरित्तए उदाहु नो प(भू)हू उत्तरित्तए–त्तिकट्टु एगट्ठियाओ (नावाओ) णूमेंति २ त्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा २ चिट्ठति । तए ण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइ पासइ २ त्ता जेणेव गगा महा-न(दी)ई तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एगट्ठियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसणं करेइ २ त्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए वाहाए रह सतुरगं ससारहिं गेण्हइ एगाए वाहाए गगं महा-न ई वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयण च वि(च्छि)त्थिण्णं उत्तरिउ पयत्ते यावि होत्था । तए ण से कण्हे वासुदेवे गंगा[ए] महा-न-ईए वहुमज्झदेसभा(गं)ए सपत्ते समाणे सते तते परितंते वद्धसेए जाए यावि होत्था । तए ण [तस्स] कण्हस्स वासुदेवस्स इमे(ए)यारूवे अ-ज्झत्थिए (जाव समुप्पज्जित्था)-अहो णं पन्च पंडवा महाबलवगा जेहिं गगामहा-न ई वा(स)वट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयण च वि-त्थिण्णा वाहाहिं उत्तिण्णा, इच्छतएहिं णं पचहिं पडवेहिं पउम-नाभे (राया) हयमहिय जाव नो पडिसेहिए । तए णं गगा-देवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारूव अ-ज्झत्थियं जाव जाणित्ता थाह वियरइ । तए णं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंतरं समासा(स)सेइ २ त्ता गं गं महा-नदिं वावट्ठिं जाव

दुरूहइ (०) जहा हेट्ठा जाव संदिसतु णं पिउ(त्था)च्छा ! किमागमणपओयण-। तए णं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु तुमे पुत्ता ! पच-पंडवा निव्विसया आणत्ता तुमं च णं दाहिणड्ढभरह[स्स] जाव (वि)दि(सिं)स वा गच्छतु (?)। तए ण से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं एवं वयासी–अपू(ई)यवयणा ण पिउ च्छा ! उत्तमपुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी। त गच्छंतु णं (देवाणु०!) पच पंडवा दाहिणि(ल्ल)ल्लवेयालिं तत्थ पंडुमहुरं निवेसतु मम अदिट्ठसेवगा भवंतु–त्तिकट्टु कोंतिं देविं सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ । तए णं सा कोंती (देवी) जाव पंडुस्स एयमट्ठ निवेएइ। तए णं पडू राया पंच पंडवे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–गच्छह ण तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेयालिं, तत्थ ण तुब्भे पंडुमहुरं निवेसेह। तए णं [ते] पंच-पंडवा पंडुस्स रन्नो जाव तहत्ति पडिसुणेंति २ त्ता सबलवाहणा हयग० हत्थिणाउराओ पडि-निक्खमंति २ त्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छंति २ त्ता पंडुमहुर [नाम] नग(रिं)रं निवे(से)संति (०) । तत्थ[वि] ण ते विपुलभोगसमिइसम-न्नागया यावि होत्था ॥१३२॥ तए ण सा दोवई देवी अन्नया कया(इ)इ आव-न्नसत्ता जाया(या)वि होत्था । तए णं सा दोवई देवी नवण्ह मासाण जाव सुरूवं दारग पयाया सूमालं निव्वत्तबारसाहस्स इम एयारूवं–जम्हा णं अम्हं एस दारए पचण्ह पंडवाणं पुत्ते दोवईए देवीए अत्तए तं हो(उ)ऊ (अम्ह) ण इमस्स दारगस्स नामधेज्ज पंडुसेणे[त्ति]। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं क(रेइ)रेंति पंडुसेणत्ति । बावत्तरिं कलाओ जाव [अल]भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ। (तेण कालेणं तेण समएणं धम्मघोसा) थेरा समोसढा परिसा निग्गया। पंडवा निग्गया धम्म सोच्चा एवं वयासी–जं नवरं देवाणुप्पिया! दोवइं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो । अहासुहं देवाणुप्पिया! । तए णं ते पच-पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता दोवइं देविं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी–एव खलु देवाणुप्पिए! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे निसते जाव पव्वयामो, तुम [ण] देवाणुप्पिए! किं करेसि ? । तए ण सा दोवई (देवी) ते पंच-पंडवे एव वयासी–जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया! ससार-भउव्विग्गा [जाव] पव्वयह मम के अन्ने आलंबे वा जाव भविस्सइ ? अह पि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि । तए ण ते पच-पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए जाव रज्ज पसाहेमाणे विहरइ। तए ण ते पच पंडवा दोवई य देवी अन्नया कया-इ पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति। तए ण से पंडुसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो [!] देवाणुप्पिया!

निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेइ पुरिससहस्सवाहिणीओ सिवियाओ दुरूढेइ जाव पच्चोरुहंति जेणेव थेरा [भगवंतो] तेणेव उवागच्छंति जाव आलित्ते णं जाव समणा जाया चोद्[द]स पुव्वाइं अहिज्जंति २ त्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ ११३ ॥ तए णं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव पव्वइया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सि(णी)भिक्खए दलया ए(इ)क्कारस अंगाइं अहिज्जइ ( ) बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ ॥११४॥ तए णं थेरा भगवंतो अन्नया कया(इं)इ पंडुमहुराओ नयरीओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडि-णिक्खमंति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति। तेणं कालेणं तेणं समएणं अ(रि)रहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४-एवं खलु देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव विहरइ। तए णं (ते) ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्विं जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए। अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति २ त्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति वं० २ त्ता एवं वयासी-इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! । तए णं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति वं० २ त्ता थेराणं अंतियाओ पडि-णिक्खमंति ( ) मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दू(दू)इज्जमाणा जाव जेणेव ह(हत्थि)त्थकप्पे (नयरे) तेणेव उवागच्छंति ( ) हत्थकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति। तए णं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासक्खमणपारणए पढमाए पो(रि)रिसीए सज्झायं करेंति बीयाए एवं जहा गोयमसामी नवरं जुहिट्ठिल्लं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं निसामेंति। एवं खलु देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी उ(उज्जि)ज्जिंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे। तए णं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए (एयमट्ठं) सोच्चा हत्थकप्पाओ पडि-णिक्खमंति २ त्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भत्तपाणं प(च्चु)च्चुवेक्खंति २ त्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति २ त्ता एसणमणेसणं आलोएंति २ त्ता भत्तपाणं पडिदंसेंति २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु

देवाणुप्पिया (!) जाव कालगए। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाण परिट्ठवेत्ता सेत्तुजं पव्वयं सणियं २ दु(दु)रुहित्तए सलेहण(ए)झूसणा[झो]-सियाणं काल अण(वकख)वेक्खमाणाणं विहरित्तए-त्तिकट्टु अन्नम-न्नस्स एयमट्ठं पडि-सुणेंति २ त्ता त पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति २ त्ता जेणेव सेत्तुजे पव्वए तेणेव उवागच्छति २ त्ता सेत्तुज्ज पव्वयं [सणियं २] दुरुहंति (०) जाव काल अणवक-खमाणा विहरंति। तए णं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दस-पुव्वाइं अहि(ज्जित्ता)ज्जति बहूणि वासाणि (सामण्णपरियाग पाउणित्ता) दोमासियाए सलेहणाए अत्ताणं झो(सि)सेत्ता जस्सट्ठाए की(कि)रइ थेरकप्पभावे जिणकप्पभावे जाव तमट्ठमाराहेंति २ त्ता अणते जाव केवलवर-नाणदसणे समुप्प-न्ने जाव सिद्धा ॥ १३५ ॥ तए णं सा दोवई अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ २ त्ता बहूणि वासाणि (सा०) मासि-याए सलेहणाए आलोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना। तत्थ ण अत्थेगइयाणं देवाण दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तत्थ ण दुव(ति)यस्स [वि] देवस्स दस-सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता। से ण भंते ! दुवए देवे ता(त)ओ जाव महाविदेहे वासे जाव अत काहिइ। एव खलु जबू! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सोलसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ १३६ ॥

गाहाउ—सुबहु पि तवकिलेसो नियाणदोसेण दूसिओ सतो। न सिवाय दोवईए जह किल सुकुमालियाजम्मे ॥ १ ॥ अमणुन्नमभत्तीए पत्ते दाण भवे अणत्थाय। जह कडुयतुंबदाण नागसिरिभवम्मि दोवइए ॥ २ ॥ **सोलसमं नायज्झयणं समत्तं** ॥

जइ ण भते ! समणेणं० सोलसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सत्तर-समस्स (०) नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जबू ! तेण कालेण तेणं सम एणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था वण्णओ। तत्थ ण कणगकेऊ नाम राया होत्था वण्णओ। तत्थ ण हत्थिसीसे नयरे बहवे सजुत्ता-नावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव ब(हु)हुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था। तए ण तेसिं सजुत्तानावावाणियगाण अन्नया कयाइ एगयओ (सहियाण) जहा अरहन्नओए जाव लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणस-याइं ओगाढा यावि होत्था। तए णं तेसिं जाव बहूणि उप्पा(ति)यसयाइं जहा माग्क-दियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ स(स)मु(त्थि)च्छिए। तए ण सा नावा तेणं कालियवाएण आ(घोलि)घुणिज्जमाणी २ सचालिज्जमाणी २ संखोहिज्जमाणी २ तत्थेव परिभमइ। तए ण से निज्जामए नट्ठमईए नट्ठसुईए नट्ठसन्ने मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था न जाणइ कयरं (देस वा) दिसं वा विदिस वा पोयवहणे [अ]व-

कार्योंको करते हुए भी वे निर्लिप्त रहते हैं। इस प्रकार तीर्थङ्कर बननेकी तैयारी उन्होंने बारह वर्षकी तपस्याके समय की थी। तपस्या करते समय उनको सैकड़ों प्रकारके अनुभव हुए थे। साधारण लोगोंको जिन अनुभवोंका कुछ भी मूल्य नहीं मालूम होता वे ही अनुभव, महात्मा लोगोंके युगान्तरकारी सुधार-कार्यमें, सहायक होते हैं। तीर्थ-प्रवृत्तिके लिये उन्होंने जो अनेक प्रकारके नियमोपनियम बनाये थे उनके पीछे उनका अनुभव था। महात्मा लोग जिन जिन घटनाओंसे शिक्षा लेकर नियम निर्माण करते हैं उन सबका पता इतिहासमें तो क्या, परन्तु उन महात्माओंके जीवन-समयमें भी नहीं मिलता। यही बात म० महावीरके विषयमें भी है। किन किन घटनाओंने उन्हें किन किन नियमोंको बनानेके लिये प्रेरित किया इसका पता आज नहीं लग सकता। फिर भी कुछ नियमोंके कारण हमें अवश्य मिल जायँगे, और उनसे हम बाकी नियमोंके कारणोंका थोड़ा बहुत अनुमान कर सकेंगे।

बारह वर्षकी तपस्यासे भगवान्को तीन चीजें मिलीं। पूर्ण वीतरागता, पूर्ण ज्ञान और तीर्थङ्करत्व। भक्त लोगोंने म० महावीरको जन्मसे ही तीर्थंकर मान लिया है, परन्तु जैनधर्मके कर्म-सिद्धान्तको जाननेवाला एक बालक भी इस बातको नहीं मान सकता। जन्मके समय किसी भी प्राणीको चतुर्थसे अधिक 'गुणस्थान' नहीं होता और जैन-धर्मके अनुसार तीर्थंकरत्व तेरहवें गुणस्थानमें होता है। यह वह समय है जब तपस्या करनेके बाद मनुष्य पूर्ण वीतरागता और पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इसलिये महावीर तपस्याके बाद ४२ वर्षकी उमरमें तीर्थङ्कर बने थे। कर्म-सिद्धान्तका इतना स्पष्ट विवेचन होनेपर

गकेऊ (राया) तेणेव उवागच्छंति २ त्ता जाव उवणेंति। तए णं से कणगकेऊ तेसिं संजुत्ता(णावा)वाणियगाणं तं महत्थ जाव पडिच्छइ [२] ते संजुत्ता-वाणियगा एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया! गामागर जाव आहिंडह लवणसमुदं च अभिक्खणं २ पोयवहणेण ओगा(ह)हेह, तं अत्थि-या(इं)इ [त्थ] केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ? । तए णं ते संजुत्ता-वाणियगा कणगकेउ (रायं) एवं वयासी-एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव कालि(य)यं-दीवंतेणं संछूढा। तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसे, किं ते ? हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति। तए णं सामी! अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे। तए ण से कणगकेऊ तेसिं संजु(त्तगा)त्ताणं अंतिए एयमट्ठ सोच्चा ते संजुत्तए एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! मम कोडुं-बियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह। तए ण ते संजुत्तावाणियगा कणगकेउं-एवं वयासी-एवं सामि-त्ति(कट्टु) आणाए विणएणं वयण पडिसुणेंति। तए णं [से] कणगकेऊ-कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! संजुत्तएहिं [नावावाणियएहिं] सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह। तेवि पडिसुणेंति। तए णं ते कोडुंबि(य०)या सगडीसागडं सज्जेंति २ त्ता तत्थ ण बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भभाण य छब्भा-मरीण य विचित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूण सो(तिं)यदियपाउग्गाण दव्वाणं सग-डीसागडं भरेंति २ त्ता बहूण किण्हाण य जाव सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य ४ गंथिमाण य ४ जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागडं भरेंति २ त्ता बहूण कोट्ठपुडाण य केयइपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २ त्ता बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तर० अन्नेसिं च जिब्भिंदिय-पाउग्गाण दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २ त्ता [अन्नेसिं च] बहूणं कोय(वया)वाण य कंबलाण य पा(वरणा)वाराण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिलाव-ट्टाण [य] जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाण दव्वाण जाव भरेंति २ त्ता सगडीसागडं जो(ए)यंति २ त्ता जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति (०) सगडीसागड मो(ए)यंति २ त्ता पोयवहणं सज्जेंति २ त्ता तेसिं उक्किट्ठाण सद्दफ-रिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूण पोयवहणपाउग्गाण पोयवहण भरेंति २ त्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति २ त्ता पोयवहण

थणजहणवयणकरचरणनयणगव्वियविलासियगईसु। रूवेसु जे न रत्ता वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १२ ॥ अगरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १३ ॥ तित्तकडुयं कसायंबमहुरं[च]बहुखज्जपेज्जलेज्झेसु। आसा(ए जे)यंमि न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १४ ॥ उउभयमाणसुहेसु य सविभवहिययमणनिव्वुइकरेसु। फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥ सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उ(व)गएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥ १६ ॥ रूवेसु य भद्(य)पावएसु चक्खुविसयं उवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥ १७ ॥ गंधेसु य भद्दयपावएसु घाणविस(यं उ)वगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥ १८ ॥ रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भविसयमुवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥ १९ ॥ फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसयमुवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥ २० ॥ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ ११८ ॥ गाहाओ—जह सो कालियदीवो अणुवमसोक्खो तहेव जइधम्मो। जह आसा तह साहू वणियव्वऽणुकूलकारिजणा ॥ १ ॥ जह सद्दाइअगिद्धा पत्ता नो पासबंधणं आसा। तह विसएसु अगिद्धा वज्झंति न कम्मणा साहू ॥ २ ॥ जह सच्छंदविहारो आसाणं तह य इह वरमुणीणं। जरमरणाइविवज्जिय संपत्ताणंदनिव्वाणं ॥ ३ ॥ जह सद्दाइसु गिद्धा बद्धा आसा तहेव विसयरया। पावेंति कम्मबंधं परमासुहकारणं घोरं ॥ ४ ॥ जह ते कालियदीवा णीया अन्नत्थ दुहगणं पत्ता। तह धम्मपरिब्भट्ठा अधम्मपत्ता इहं जीवा ॥ ५ ॥ पावेंति कम्मनरवइवसया संसारवाहयालीए। आसप्पमद्दएहि व नेरइयाईहिं दुक्खाइं ॥ ६ ॥ सत्तरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

जइ णं भंते! समणेणं सत्तरसमस्स (नायज्झयणस्स) अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था वण्णओ। तत्थ णं ध( )णे नामं सत्थवाहे (परिवसइ) होत्था भद्दा भारिया। तस्स णं ध(ण्ण)स्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था तंजहा—धणे धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए। तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजा(ती)या सुंसुमा नामं दारिया होत्था सूमालपाणिपाया। तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं दासचेडे होत्था अहीणपंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था। तए णं से दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुंसुमं दारियं

२ त्ता पोयवहणं लंबेंति २ त्ता ते आसे उत्तारेंति २ त्ता जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल जाव वद्धावेंति (०) ते आसे उवणेंति। तए ण से कणगकेऊ (राया) तेसिं संजुत्तावाणियगाण उस्सुक्क वियइ २ त्ता सक्कारेइ समाणेइ स० २ त्ता पडिविसज्जेइ। तए ण से कणगकेऊ-कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता सक्कारेइ संमाणेइ स० २ त्ता पडिविसज्जेइ। तए णं से कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–तुब्भे ण देवाणुप्पिया! मम आसे विणएह। तए ण ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति २ त्ता ते आसे वहूहिं मुहवंधेहि य कण्णवधेहि य नासावधेहि य वालवधेहि य खुरवधेहि य कडगवधेहि य खलिणवधेहि य अहिला(णे)णवधेहि य पडियाणेहि य अकणाहि य (वेलप्पहारेहि य) वि(चि)त्तप्पहारेहि य लयप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति (०) कणगकेउस्स रण्णो उवणेंति। तए णं से कणगकेऊ ते आसमद्दए सक्कारेइ २ (०) पडिविसज्जेइ। तए ण ते आसा वहूहिं मुहवधेहि य जाव छि(व०)वापहारेहि य वहूणि सारीरमाणसा(णि)ई दुक्खाइ पावेंति। एवामेव समणाउसो! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु सज्ज(न्ति)इ रज्ज इ गिज्झ-इ मुज्झ-इ अज्झोववज्ज इ से णं इहलोए चेव वहूण समणा(ण य)ण [वहूण समणीण] जाव साविया(ण य)णं हीलणिज्जे जाव अणुपरिय(ट्टिस्स)ट्टइ। [गाहा]—कलरिभियमहुरततीतलतालवंसककउहाभिरामेसु। सद्देसु रज्जमाणा रम(ती)ति सोइंदियवसट्टा॥ १॥ सोइंदियदुद्दतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। दीविगरुयमसहतो वहवध तित्तिरो पत्तो॥ २॥ थणजहणवयणकरचरण-नयणगव्वियविलासियग(ती)एसु। रूवेसु रज्जमाणा रमति चक्खिदियवसट्टा॥ ३॥ चक्खिदियदुद्दतत्तणस्स अह एत्तिओ ह(भ)वइ दोसो। ज जलणमि जलंते पडइ पयगो अवुद्धीओ॥ ४॥ अ(गु)गरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु रज्जमाणा रमति घाणिंदियवसट्टा॥ ५॥ घाणिंदियदुद्दतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। ज ओसहिगंधेणं विलाओ निद्धावई उरगो॥ ६॥ तित्तकडुयं कसाय(व) [अविरं] महुरं वहुखज्जपेज्जलेज्झेसु। आसायंमि उ गिद्धा रमंति जिब्भिदियवसट्टा॥ ७॥ जिब्भिदियदुद्दतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं गललग्गुक्खित्तो फुरइ थलवि(र)रेल्लिओ मच्छो॥ ८॥ उउभयमाणसुहे(सु)हि य सविभवहियमणनिव्वुइकरे(सु)हिं। फासेसु रज्जमाणा रमति फासिंदियवसट्टा॥ ९॥ फासिंदियदुद्दतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। ज खणइ मत्थय कुंजरस्स लोहकुसो तिक्खो॥ १०॥ कलरिभियमहुरतंतीतलतालवसककउहाभिरामेसु। सद्देसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए॥ ११॥

७० सुत्ता०

दारियाण य पिंडिमेगयाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावयारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं च बहूणं छिन्नभिन्न(ब)बाहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था। तए णं से विजए (तक्करे) चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नयरघाएहि य गो(ग्)गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकोट्टेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे २ विद्धंसेमाणे २ णित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ। तए णं से चिलाए दासचेडे(डे)ए रायगिहे (नयरे) बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चो(रा)राभिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य ध(णि)णिएहि य जू(इ)यकरेहि य परब्भवमाणे २ रायगिहाओ नय(रा)राओ निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव सीहगु(हा)हा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ २ त्ता विजयं चोरसेणावइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिल(ट्ठि)ग्गाहे जाए यावि होत्था। जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुंपि (यु) कूवियबलं हयमहिय जाव पडिसेहेइ [१] पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ। तए णं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्करं बहु(इ)ओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ। तए णं से विजए चोरसेणावई अन्नया क(इ)याइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था। तए णं ताइं पंच-चोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति २ त्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करे(इं)न्ति २ त्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था। तए णं ताइं पंच चोरसयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते। अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए-त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता चिलायं (तीए) सीहगुहाए [चोरपल्लीए] चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति। तए णं से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ। तए णं से चिलाए चोरसेणावई चोर-णायगे जाव कुडंगे यावि होत्था। से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स [नयरस्स] दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥ १४ ॥ तए णं से चिलाए चोरसेणावई अन्नया कयाइ विउलं असणं ४ [उवक्खडावेइ] उवक्खडावेत्ता ते पंच चोरसए आमंतेइ तओ पच्छा ण्हाए कयबलि-

कडीए गिण्हइ २ त्ता बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं अभिरममाणे २ विहरइ । तए ण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूण दारयाण य ६ अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ एवं वट्टए आडोलियाओ तिंदू(तेंदु)सए पोत्तुल्लए साटोल्लए, अप्पेगइयाण आभरणमल्लालकारं अवहरइ अप्पेगइ(या)ए आउ(स)सइ एव अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइ-ए तालेइ । तए ण ते बहवे दारगा य ६ रोयमाणा य ५ साण साण अम्मापिऊण निवेदेंति । तए ण तेसिं बहूण दारगाण य ६ अम्मापियरो जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ त्ता ध(ण)ण २ बहूहिं खि(खे)ज्ज(णा)णियाहि य रुंटणाहि य उ(व)पालभणाहि य खिज्जमाणा य रुंटमाणा य उ(व)वाल(भे)भमाणा य धणस्स [२] एयमट्ठं निवेदेंति । तए ण [से] धणे २ चिलाय दासचेड एयमट्ठ भुज्जो भुज्जो निवारे(न्ति)इ नो चेव ण चिलाए दासचेडे उवरमइ । तए ण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूण दारगाण य ६ अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ । तए ण ते बहवे दारगा य ६ रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं निवेदेंति । तए णं ते आसुरुत्ता ५ जेणेव धणे २ तेणेव उवागच्छंति २ त्ता बहूहिं खिज्जणाहि (य) जाव एयमट्ठ निवे-(दिं)दंति । तए ण से धणे २ बहूण दारगाण ६ अम्मापिऊणं अतिए एयमट्ठ सोचा आसुरुत्ते चिलाय दासचेड उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ उद्धसइ नि(ब्भच्छे) ब्भिछइ निच्छोडेइ तज्जेइ उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ साओ गिहाओ निच्छुभइ ॥ १३९ ॥ तए ण से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिंघाड(ए)ग जाव पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघ(रे)रएसु य पाणघरएसु य सुहंसुहेण परिवड्ढइ । तए ण से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसगी (मस०) जूयप्पसगी वे(सा)सप्पसगी परदारप्पसगी जाए यावि होत्था । तए ण रायगिहस्स न-यरस्स अदूरसामते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नाम चोरपल्ली होत्था विसमगिरिकडगको(डं)लवसंनिविट्ठा वसीकलंकपागारपरिक्खित्ता छिन्नसेलविसमप्पवायफरिहोवगूढा एगदुवारा अणेगखडी विदितजण-निग्गम[प]पवेसा अब्भितरपाणिया सुदुल्लभजलपेरंता सुबहुस्सवि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था । तत्थ णं सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए नाम चोरसेणावई परिवसइ अहम्मिए जाव अ(ध)हम्मकेऊ समुट्ठिए बहुनगर निग्गयजसे सूरे [२] दढप्पहारी साह(सी)सिए सद्दवेही । से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण आहेवच्च जाव विहरइ । तए ण से विजए तक्करे (चोर)सेणावई बहूण चोराण य पार-

मंडवसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विपुलं असणं ४ सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसन्नं च आसाएमाणे ४ विहरइ जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विपुलेण धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ स० २ त्ता एव वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! रायगिहे नयरे धणे नाम सत्थवाहे अड्ढे[०], तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुसुमा नामं दारिया (यावि) होत्था अहीणा जाव सुरूवा, तं गच्छामो ण देवाणुप्पिया! धणस्स सत्थवाहस्स गिह विलुंपामो, तुब्भ विपुले धणकणग जाव सिलप्पवाले मम सुसुमा दारिया। तए णं ते पंच चोरसया चिलायस्स (०) पडिसुणेंति। तए णं से चिलाए चोरसेणावई तेहिं पचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहइ [२] पच्चावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं स नद्ध जाव गहियाउहपहरणा माइयगोमुहि(एहिं)फलएहिं नि(क)क्किट्ठाहिं असिलट्ठीहिं असगएहिं तोणेहिं स(जी)जीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दीहाहिं ओसारियाहिं उरुघटियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया २ उक्किट्ठसीह नाय(चोरकलकलरवं) जाव समुद्दरवभूय [पिव] करेमाणा सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमंति २ त्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता रायगिहस्स अदूरसामंते एग मह गहणं अणुप्पविसंति २ त्ता दिवस खवेमाणा चिट्ठंति। तए ण से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयसि निसंतपडिनिसतसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहिएहिं फलएहिं जाव मूइ(आ)याहिं उरुघटियाहिं जेणेव रायगिहे [नयरे] पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ (०) उदग(व)वत्थिं परामुसइ (०) आयंते चोक्खे परमसुइभूए तालुग्घाडणिविज्ज आवाहेइ २ त्ता रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएण अच्छोडेइ २ त्ता कवाड विहाडेइ २ त्ता रायगिह अणुप्पविसइ २ त्ता महया २ सद्देण उग्घोसेमाणे २ एव वयासी–एव खलु अह देवाणुप्पिया! चिलाए नामं चोरसेणावई पचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इ( )ह हव्वमागए धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे। त (जो) जे णं नवियाए माउयाए दुद्ध पाउकामे से ण नि(ग)गच्छउत्तिकट्टु जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धणस्स गिहं विहाडेइ। तए ण से धणे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाण पासइ २ त्ता भीए तत्थे ४ पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगत अवक्कमइ। तए ण से चिलाए चोरसेणावई धणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ २ त्ता सुबहु धणकण(ग)गं जाव सावएज्जं सुसुमं च दारिय गेण्हइ २ त्ता रायगिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ १४१ ॥ तए णं से धणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सुबहुं धणकणग सुंसुम च दारियं

आहारेत्तए। तए णं अम्हे तेणं आहारेणं अव(ए)क्खा समाणा रायगिहं संपाउ स्सामो। तए णं से धण-पुत्ता धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडि सेंति। तए णं धणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ २ त्ता सरगं करेइ २ त्ता सरएणं अरणिं महेइ २ त्ता अग्गिं पाडेइ २ त्ता अग्गिं संधुक्खेइ २ दारुयाइं पक्खिवइ २ त्ता अग्गिं पज्जालेइ २ त्ता सुंसुमाए दारियाए मंसं च (परत्ता) सोणियं च आहारे(न्ति)इ। तेणं आहारेणं अव क्खा समाणा रा गिहं नय(रिं)रं संपत्ता मित्त-ना(इ)इ-अभिसमन्नागया अभिसमन्नागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जाया(वि होत्था)। तए णं से धणे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं [मयकिच्चाइं] जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ १३१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे। (ते) तए णं धणे सत्थवाहे सपु(संप)त्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए एक्कारसंगवी मासिया संलेहणाए सोहम्मे उववन्(ण्णो)ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। जहा वि य णं जंबू! धणेणं सत्थवाहेणं नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए दारियाए मंससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्स(सं)विप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेइ नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए से णं इह-भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविगाणं अच्चणिज्जे जाव वीई-वइस्सइ। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स (नायज्झयणस्स) अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ १३२ ॥ गाहाओ—जह सो चिला-इपुत्तो सुंसुमगिद्धो अकज्जपडिबद्धो। धणपारद्धो पत्तो महाडविं वसणसयकलियं ॥ १ ॥ तह जीवो विसयसुहे लुद्धो काऊण पावकिरियाओ। कम्मवसेणं पावइ भवा-डवीए महादुक्खं ॥ २ ॥ धणसेट्ठी-विव गुरुणो पुत्ता इव साहवो भवो अडवी। सुयमंसमिवाहारो रायगिहं इह सिवं नेयं ॥ ३ ॥ जह अडवि-नयर-नित्थरणपावणत्थं तएहिं सुयमंसं। भुत्तं तहेह साहू गुरूण आणाए आहारं ॥ ४ ॥ भवलंघणसिवपावण-हेउं भुंजं(भुज)ति न उण गेहीए। वण्णबलरूवहेउं च भावियप्पा महासत्ता ॥ ५ ॥ अट्ठारसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

जइ णं भंते! समणेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एगूणवीस-इमस्स ( ) के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे

गिण्हित्तए। से ण तओ पडिनियत्तइ २ त्ता जेणेव सा सुंसुमा बालि(दारि)या चिलाएणं जीवियाओव वरोवि(ल्लि)या (तेण)तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सुंसुम दारिय चिलाएणं जीवियाओ ववरोविय पासइ २ त्ता परसुनिय(न्तेव)त्तेव्व चंपगपायवे[०]। तए णं से धणे सत्थवाहे (पचहिं पु०) अप्पछट्ठे आसत्थे कूवमाणे कदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देणं कु(ह)हुकु हु(सु)स्स परुन्ने सुचि(रं)रकाल वा(वा)ह[प्प]मोक्खं करेइ। तए णं से धणे [सत्थवाहे] पचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे आ गामियाए सव्वओ समता परिधाडेमा(णा)णे तण्हाए छुहाए य प(रि)रब्भ(रद्ध)ते समाणे तीसे आगामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गणगवेसण करे(न्ति)इ २ त्ता सते तते परितते निव्वि-ण्णे [समाणे] तीसे आगामियाए (अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणे नो चेव ण उदग आसादेति तए ण) उदग अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा जीवियाओ ववरो(एल्लि)विया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जेट्ठ पुत्त धणे (स०) सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–एवं खलु पुत्ता! सुसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे आगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा नो चेव ण उदग आसादेमो। तए ण उदग अणासाएमाणा नो सचाएमो रायगिहं सपावित्तए। तण्ण तुब्भे मम देवाणुप्पिया! जीवियाओ ववरोवेह [मम] मस च सोणिय च आहारेह (०) तेण आहारेण अव(हिट्ठा)थद्धा समाणा तओ पच्छा इम आगामिय अडविं नित्थरिहिह रायगिह च सपावि(हि)हह मित्त-नाइ(य)० अभिसमागच्छिहह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह। तए णं से जे(ट्ठ)ट्ठे पुत्ते धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धणं २ एव वयासी–तुब्भे ण ताओ! अम्ह पिया गु(रू)रुजण(या)य-देवयभूया ठावका पइ(ट्ठा)ट्ठवका सरक्खगा सगोवगा। त कहण्ण अम्हे ताओ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भं णं मंस च सोणिय च आहारेमो? त तुब्भे ण ताओ! मम जीवियाओ ववरोवेह मसं च सोणिय च आहारेह आगामियं अडविं नित्थर[ह]ह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव (पुण्णस्स) आभागी भविस्सह। तए ण धणं सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी–मा ण ताओ! अम्हे जेट्ठ भायरं गु(रु)रुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे ण ताओ! मम्मं जीवियाओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह। एव जाव पचमे पुत्ते। तए ण से धणे सत्थवाहे पचपुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता ते पच पुत्ते एवं वयासी–मा ण अम्हे पुत्ता! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो। एस ण सुंसुमाए दारियाए सरी(रए)रे निप्पाणे जाव जीवविप्पजढे। त सेय खलु पुत्ता! अम्हं सुसुमाए दारियाए मस च सोणिय च

भी लोगोंने भक्तिके वश जन्मसे ही महावीरको तीर्थंकर मान लिया और अनेक तरहके अलौकिक तथा अविश्वसनीय अतिशयोंसे उनके जीवनके स्वाभाविक सौन्दर्यको मामीण बना डाला।

मैं पहले ही कह चुका है कि *जिस प्रकारके अतिशयोंसे भक्त लोग* खुश हुआ करते हैं उनसे किसी भी महात्माका महत्व नहीं बढ़ता। विश्वके उद्धारके लिये 'महात्मा'की आवश्यकता है, 'महर्द्धिक'की नहीं। अलौकिक घटनाओंसे भरा हुआ पढ़के तो अविश्वसनीय होता है। अगर किसीने विश्वास भी किया तो वह उसके नामपर सिर झुका सकता है, परन्तु उसका अनुकरण नहीं कर सकता। जो हमारे लिये अनुकरणीय नहीं है उसकी पूजा निरर्थक है।

इन अलौकिक और अविश्वसनीय घटनाओंको दूर करके भी म महावीरके जीवनमें हम इतनी महत्ता देखते हैं कि हमारा मस्तक विनयसे झुक जाता है।

बारह वर्षका तप।

यह बारह वर्षका समय म० महावीरके जीवनका बहुत महत्त्वपूर्ण समय है। भक्त लोगोंकी मान्यताके अनुसार तो तीर्थंकरोंका मार्ग नियत रहता है। उनको सिर्फ उसपर चलनेका काम ही बाकी रहता है परन्तु बात ऐसी नहीं है। यह बात किसी साधारण सुधारकके विषयमें ही कही जा सकती है। तीर्थंकरको तो मार्गपर चलनेके साथ मार्ग खोजना पड़ता है और मार्ग बनाना पड़ता है। आज हम जैन-मुनिकी चर्या जैसी समझते हैं बाद म० महावीरने भी कैवल्य प्राप्त होनेके बाद जैसे नियमोपनियम बनाये थे वे सब उनको पहलेसे ही मालूम नहीं थे। परन्तु उनको जैसे जैसे

दीवे पुव्वविदेहे सीयाए महानईए उत्तरिल्ले कूले नीलवतस्स दाहिणेणं उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसडस्स प(च्छि)च्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ ण पुक्खलावई नाम विजए पन्नत्ते। तत्थ णं पुंडरिगिणी नाम रायहाणी पन्नत्ता नवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलो(य)गभूया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा। तीसे ण पुडरिगिणीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए नलिणिवणे नाम उज्जाणे होत्था (वण्णओ)। तत्थ ण पुडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था। तस्स ण पउमावई नाम देवी होत्था। तस्स णं महापउमस्स रन्नो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था तं जहा— पुडरीए य कडरीए य सुकुमालपाणिपाया[०]। पुडरीए जुवराया। तेण कालेण तेणं समएण (धम्मघोसा थेरा पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं स० पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा जाव ण० उज्जाणे तेणेव स०) थेरागमणं महापउमे राया निग्गए धम्मं सोच्चा पु(पों)डरीय रज्जे ठवेत्ता पव्वइए पुंडरीए राया जाए कंडरीए जुवराया। महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ। तए ण थेरा वहिया जणवयविहारं विहरंति। तए ण से महापउमे वहूणि वासाणि जाव सिद्धे ॥ १४४ ॥ तए णं थेरा अन्नया कयाइ पुणरवि पुडरिगिणीए रायहाणीए नलिणवणे उज्जाणे समोसढा। पुन्डरीए राया निग्गए। कंडरीए महाजणसद्द सोच्चा जहा म(ह०)हाबलो जाव पज्जुवासइ। थेरा धम्म परिकर्हेति पुडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए। तए ण कडरीए उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता जाव से जहेय तुब्भे वयह ज नवर पुडरीय राय आपुच्छामि तए णं जाव पव्वयामि। अहासुह देवाणुप्पिया!। तए ण से कडरीए जाव थेरे वदइ नमसइ वं० २ त्ता [थेराण] अतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता तमेव चाउ[ग्]घट आसरह दुरूहइ जाव पच्चोरुहइ जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छइ (०) करयल जाव पुडरीय [राय] एव वयासी–एव खलु (देवा० !) मए थेराणं अंतिए (जाव) धम्मे निसंते से धम्मे अभिरुइए। तए णं (देवा० !) जाव पव्वइत्तए। तए ण से पुडरीए कडरीयं एव वयासी—मा ण तुम भाउ(देवाणुप्पि)या! इ(दा)याणिं मुडे जाव पव्वयाहि, अह ण तुम म(हया २)हारायाभिसेएणं अभिसिं(चया)चामि। तए ण से कडरीए पुडरीयस्स रन्नो एयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीए सचिट्ठइ। तए णं पुडरीए राया कडरीय दोच्चपि तच्चपि एव वयासी जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। तए ण पुडरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएइ वहूहिं आघवणा(हिं)हि य पन्नवणाहि य ४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठ अणुमन्निस्था जाव निक्खमणाभिसेएण अभिसिंचइ जाव थेराण सीसभिक्ख दलयइ पव्वइए अणगारे जाए एक्कारसंगवी। तए णं थेरा

भगवंतो अन्नया कयाइ पुंड(रि)गिणीओ नयरीओ नलि(णी)वणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति ॥ १४५ ॥ तए णं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए यावि विहरइ । तए णं थेरा अन्नया कयाइ(इं) जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छ(इ)न्ति २ त्ता नलि(णि)वणे समोसढा । पुंडरीए निग्गए धम्मं सुणेइ । तए णं पुंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कंडरीयं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं(गं) पासइ २ त्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-अहण्णं भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तिगि(च्छं)च्छं आ(उट्ट)ट्टामि तं तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह । तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स पडिसुणेंति ( ) जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरंति । तए णं पुंडरीए (राया) जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए । तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयं रायं [आ]पुच्छंति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति । तए णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुन्नंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने णो संचाएइ पुंडरीयं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं (जणवयविहारं) जाव विहरित्तए तत्थेव ओसन्ने जाए । तए णं से पुंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहि(णं)पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले जे णं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं च [वि]छ(ड्ड)इत्ता विगोवइत्ता जाव पव्वइए, अहण्णं अहन्ने [अपुन्ने] अकयपुन्ने रज्जे [य] जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए, तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले । तए णं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं नो आढाइ जाव संचिट्ठइ । तए णं से कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अ(व)सवसे लज्जाए गारवेण य पुंडरीयं (रायं) आपुच्छइ २ त्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ । तए णं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं कं(किं)चि कालं उग्गंउग्गेणं विह(रत्ता)रित्ता तओ पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तणनिव्वि(ण्)ण्णे समणत्तणनिब्भ(च्छि)च्छिए समणगुणमुक्कजोगी थेराणं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ २ त्ता जेणेव पुंडरिगिणी

नयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता असोगवणियाए असोगवर-पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगसि निसीयइ २ त्ता ओहयमणसकप्पे जाव झियाय-माणे सचिट्ठइ। तए ण तस्स पोंडरीयस्स अव(अम्म)धाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कंडरीयं अणगार असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला(व)-पट्टगसि ओहयमणसकप्पं जाव झियायमाणं पासइ २ त्ता जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पु डरीय रायं एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! तव पि(उ)य-भाउए कडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला पट्टे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ। तए ण [से] पुंडरीए अम्मधा(इ)ईए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म तहेव सभते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता अतेउरपरियालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कडरीय तिक्खुत्तो (०) एव वयासी-धन्नेसि णं तुम देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए, अहं णं अधन्ने [३] जाव [अ]पव्वइत्तए, त धन्नेसि ण तुमं देवाणु-प्पिया! जाव जीवियफले। तए ण कडरीए पुडरीएणं एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सचिट्ठइ दोच्चंपि तच्चपि जाव चिट्ठइ। तए ण पुडरीए कंडरीयं एव वयासी-अट्ठो भते! भोगेहिं? हता [!] अट्ठो। तए ण से पुण्डरीए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसे-(अ)य उवट्ठवेह जाव रायाभिसेएण अभिसिंचइ॥ १४६॥ तए ण [से] पुडरीए सयमेव पचमुट्ठियं लोय करेइ सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ २ त्ता कडरी-यस्स सतिय आयारभंड(य)ग गेण्हइ २ त्ता इम एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ-कप्पइ मे थेरे वदित्ता नमसित्ता थेराण अतिए चाउज्जाम धम्म उवसपज्जित्ताण तओ पच्छा आहारं आहारित्तए-त्तिकट्टु इमं (च) एयारूव अभिग्गह अभिगि(ण्हे)-ण्हित्ताण पुण्ड रिगिणी(ए)ओ पडिनिक्खमइ २ त्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे [जेणेव] थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥ १४७॥ तए ण तस्स कंडरीयस्स रन्नो त पणीय पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स अइजाग(रि)-रएण य अइभोयणप्पसंगेण य से आहारे नो सम्म परिण(मइ)ए। तए ण तस्स कडरीयस्स रन्नो तसि आहारंसि अपरिणममाणसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि सरी(रं)रगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्ज-रपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ। तए ण से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अव-सवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववन्ने। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभो(गे)ए आसा-

(इए)एइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा व से कंडरीए राया ॥१४८॥ तए णं से पुंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ २ त्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ छट्ठ[क्ख]मणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ २ त्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ २ त्ता अहापज्जत्तमित्तिकट्टु पडि-णिय(त)त्तेइ जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ २ त्ता थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए ४ बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणं ४ सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ। तए णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ। तए णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए विहरइ। तए णं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल जाव एवं वयासी—नमोत्थु णं अ(रि)हंताणं [भगवंताणं] जाव संपत्ताणं। नमोत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं। पुव्विं पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले (णं) पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने। तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ णो रज्जइ जाव णो विप्पडिघायमावज्जइ से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं साव(या)णं बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे–त्तिकट्टु परलोए वि य णं णो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ता(ड)णाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं जाव वीईवइस्सइ जहा व से पुंडरीए अणगारे। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आ(इ)गरेणं तित्थयरेणं [सयंसंबुद्धेणं] जाव सिद्धिगइ-नामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइ-नामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि। तस्स णं सुयक्खंधस्स एगूणवीसं अज्झयणाणि ए(ग)सरगाणि एगूणवीसाए दिवसेसु समप्पंति ॥१४९॥ गाहाओ—वाससहस्सं पि जई काऊणं संजमं सुविउलं पि। अंते किलिट्ठभावो न विसुज्झइ कंडरीउव्व ॥१॥ अप्पेण वि कालेणं केइ जहा-

गहियसीलगामण्णा । साहिंति निव्वयकज्जं पुंडरीयमहारिसिव्व जहा ॥ २ ॥
एगूणवीसइमं अज्झयणं समत्तं ॥ नायाधम्मकहाणं पढमो सुय-क्खंधो समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था वण्णओ । तस्स णं रायगिहस्स [नयरस्स] बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तत्थ ण गुण(सी)सिलए नामं उज्जाणे होत्था वण्णओ । तेण कालेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मा नामं थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चो(चउ)द्दसपुव्वी चउनाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणु-पुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दू(दु)इज्जमाणा सुहंसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुण-सिलए उज्जाणे जाव संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दि(स)सिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया । तेणं कालेणं तेण समएणं अज्जसुहम्मस्स (अणगारस्स) अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेण (३) जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढम[स्स] सुयक्खंधस्स ना(यज्झ)याण अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं० के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं० धम्मकहाण दस वग्गा पन्नत्ता तंजहा—चमरस्स अग्गमहिसीण पढमे वग्गे, बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीण बीए वग्गे, असु-रिंदवज्जियाण दाहिणिल्लाण इंदाणं अग्गमहिसीण त(इ)इए वग्गे, उत्तरिल्लाणं असु-रिंदवज्जियाण भवणवासिइंदाणं अग्गमहिसीण चउत्थे वग्गे, दाहिणिल्लाण वाणम-तराण इंदाण अग्गमहिसीण पंचमे वग्गे, उत्तरिल्लाण वाणमंतराणं इंदाण अग्ग-महिसीण छट्ठे वग्गे, चंदस्स अग्गमहिसीण सत्तमे वग्गे, सूरस्स अग्गमहिसीण अट्ठमे वग्गे, सक्कस्स अग्गमहिसीणं नवमे वग्गे, ईसाणस्स [य] अग्गमहिसीण दसमे वग्गे । जइ णं भंते ! समणेण० धम्मकहाण दस वग्गा पन्नत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं० के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं० पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पन्नत्ता तंजहा—काली राई रयणी विज्जू मेहा । जइ णं भंते ! समणेणं० पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पन्नत्ता पढमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण० के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे गुण-सिलए उज्जाणे सेणिए राया चे(ल)ल्लणा देवी सामी समोस-(रिए)ढे परिसा निग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ । तेण कालेणं तेण समएणं काली (नाम) देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालव-डेंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहिं

सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्ने(हिं)हि य व(हुएहिं य)हूहिं कालवडिंसगभवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं २ विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ ए(त)त्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं ओगि(उग्गि)ण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा जाव (हय)-हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता पाउयाओ ओमुयइ २ त्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ २ त्ता वामं जाणुं अंचेइ २ त्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ ( ) ईसिं पच्चुन्नमइ २ त्ता कड(ग)गतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ २ त्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी—नमो त्थु णं अरहंताणं (भगवंताणं) जाव संपत्ताणं। नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहग(ए)-या पासउ मे समणे ३ तत्थगए इहगयं—त्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसन्ना। तए णं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था [अज्झत्थिए]—सेयं खलु मे समणं ३ वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तए–त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता आभिओगि(ए)या दे(वे)वा सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे ३ एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेह २ त्ता जाव पच्चप्पिणह। तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति। नवरं जोयणसहस्सवित्थिण्णं जाणं सेसं तहेव। तहेव नामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया। भंते त्ति भगवं गोयमे समणं ३ वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी—का(लि)लीए णं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया? कूडागारसालादिट्ठंतो। अहो णं भंते! काली देवी महिड्ढिया [१]। कालीए णं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किं वा अभिसमन्नागया? एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे आमलकप्पा णामं नयरी होत्था वण्णओ। अंबसालवणे चेइए। जियसत्तू राया। तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावई होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी नामं भारिया होत्था सुकुमाल(पाणिपाया) जाव सुरूवा। तस्स णं काल(ग)स्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली नामं दारिया होत्था वड्ढा वड्ढकुमारी

जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी निव्वि-ण्णवरा वरपरिवज्जिया वि होत्या। तेणं कालेण तेण समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी नवरं नवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे जाव अवसालवणे समोसढे। परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ। तए ण सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल जाव एव वयासी–एव खलु अम्मयाओ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, त इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स [ण] अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवदिया गमित्तए। अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबध करेहि। तए ण सा का(लिया)ली दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया सुद्धप्(प)पावेसाइ मगलाइ वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडि-निक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धम्मिय जाणपवरं दुरूढा। तए ण सा काली दारिया धम्मियं जाण[प्]पवरं एव जहा दोवई (जाव) तहा पज्जुवासइ। तए ण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहा(ल)लियाए परिसाए धम्म कहेइ। तए णं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिक्खुत्तो वदइ नमसइ व० २ त्ता एव वयासी–सद्दहामि णं भते! निग्गथ पावयण जाव से जहेय तुब्भे वयह ज नवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि तए ण अह देवाणुप्पियाणं अतिए जाव पव्वयामि। अहासुह देवाणुप्पिए!। तए ण सा काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एव वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वदइ नमसइ व० २ त्ता तमेव धम्मिय जाणप्पवरं दु-रूहइ २ त्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतियाओ अवसालवणाओ उज्जाणाओ पडि निक्खमइ २ त्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता आमलकप्प नयरिं मज्झमज्झेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धम्मिय जाण प-पवरं ठवेइ २ त्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ २ त्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल[परिग्गहिय] जाव एव वयासी–एव खलु अम्मयाओ! मए पासस्स अरहओ अतिए धम्मे निसंते, से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तए ण अह अम्मयाओ! ससारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाण इच्छामि ण तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अतिए मुंडा भवित्ता आ-गा-

उव्विग्गा इच्छामि णं देवाणुप्पिया तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेह। तए णं से काले गाहावई विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता मित्त-णाइ नियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ २ त्ता तओ पच्छा ण्हाए विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारे(ता)इ सम्माणे इ [२] तस्सेव मित्त-णाइ-नियगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरओ कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ २ त्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ २ त्ता पुरिससहस्सवाहि(णीयं)णि सीयं दु-रूहेइ २ त्ता मित्त-णाइ-नियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवु(डा)डे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता छत्ताईए तित्थगराइ(स)ए पासइ २ त्ता सीयं ठवेइ २ त्ता [कालियं दारियं सीयाओ पच्चोरुहइ। तए णं तं] कालियं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छ(इ)न्ति २ त्ता वंद-न्ति नमंस-न्ति वं २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता जाव किमंग पुण पासणयाए। एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता (णं) जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं (करेह)। तए णं [सा] काली कुमारी पासं अरहं वंदइ नमंसइ वं २ त्ता उत्तरपुर-त्थिमं दि-सीभागं अवक्कमइ २ त्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ २ त्ता सयमेव लोयं करेइ २ त्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ वं २ त्ता एवं वयासी-आलित्ते णं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव सयमेव पव्वा(वि)उं। तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए का(लिं)लिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ। तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं कुमारिं सयमेव पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं सा काली अज्जा जाया इरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी। तए णं (सा) काली अज्जा पुप्फचूला[ए] अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ। तए णं सा काली अज्जा अन्नया कया(इ)इ सरीरबाउसिया जाया(या)वि होत्था अभिक्खणं २ हत्थे धो(व)वेइ पाए धोवेइ सीसं धोवेइ मुहं धोवेइ थणंतरा(इं)णि धोवेइ कक्खंतराणि धोवेइ गुज्झंतरा(इं)णि धोवेइ जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तं पुव्वामेव अब्भु(क्खे)क्खित्ता तओ पच्छा आसयइ वा सयइ वा। तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी-नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिए! समणीणं निग्गंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए,

तुमं च णं देवाणुप्पिए! सरीरबाउसिया जाया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव आसयाहि वा सयाहि वा, तं तुमं देवाणुप्पिए! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि। तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ। तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं २ हीलेंति निंदंति खिं(स)सेंति गरहंति अवमन्नंति अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति। तए णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जया णं अहं अ(आ)गारवासमज्झे वसित्था तया णं अहं सयंवसा। जप्पभिइं च णं अहं मुं(डे)डा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडि(क्कि)क्कयं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए-त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते पाडि(ए)क्कं उवस्सयं गे(गि)ण्हइ तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ जाव आसयइ वा सयइ वा। तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी० ओसन्ना ओसन्नविहारी० कुसीला कुसीलविहारी० अहाछंदा अहाछंदविहारी० संसत्ता संसत्तविहारी० बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अ(त्ता)प्पाणं झूसेइ २ त्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखे(ज्जाइ)ज्जभागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदे(वी)वित्ताए उववन्ना। तए णं सा काली देवी अहुणोववन्ना समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए। तए णं सा काली देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव अन्नेसिं च बहूणं कालवडेंसगभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरइ। एवं खलु गोयमा! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया। कालीए णं भंते! देवीए केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। काली णं भंते! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उ(व)वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ [जाव अंतं काहिइ]। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढम[स्स] वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि॥ १५०॥ (**धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्तं**)॥

जइ णं भंते! समणेणं० धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स

अनुभव होता गया वैसे वैसे वे नियम बनाते गये और उनका पालन करते गये। इन बारह वर्षके अनुभवोंका सार म० महावीरने जगत्को सुनाया और उस सुपथपर लोगोंको चलाया।

मार्गशीर्ष कृष्णा १० को दीक्षा लेनेके बाद म० महावीरने अपने पास सिर्फ एक वस्त्र रक्खा था। राजकुमार होनेसे वह वस्त्र बहुत मूल्यवान् था। एक गरीब ब्राह्मणने उनको राजपुत्र समझकर भिक्षा माँगी। उन्होंने कहा—'अब तो मैं त्यागी हो चुका हूँ, इसलिये तुम्हें क्या दे सकता हूँ, फिर भी मेरे पास जो वस्त्र है इसका आधा भाग तुम ले लो।' ब्राह्मण वस्त्र लेकर एक वस्त्र सुधारनेवालेके पास गया। उसने कहा—'तुम वह आधा वस्त्र और ले आओ तो इसका बहुत मूल्य मिलेगा।' वह ब्राह्मण महात्मा महावीरके पीछे पीछे फिरने लगा। एक बार वह वस्त्र रास्तेके किसी काँटेदार वृक्षसे फँसकर गिर पड़ा और उसे उस ब्राह्मणने उठा लिया। भगवान्ने भी ब्राह्मणको वस्त्रके लिये अपने पीछे आता देखकर तथा वस्त्रको एक झंझट समझकर उसका त्याग कर दिया। फिर उन्होंने जीवन-भर वस्त्र धारण नहीं किया। आज तो उनकी मूर्ति केवल वस्त्रोंसे ही नहीं किन्तु सोने, चाँदी, हीरे आदिके आभूषणोंसे भी सजाई जाती है! यह कैसी विडम्बना है![1]

एक बार कूर्मार ग्रामके बाहर महात्मा महावीर कायोत्सर्ग-स्थित थे। वहाँ एक ग्वाला आया, और अपने बैल वहाँपर छोड़कर ग्राममें गाय दुहनेके लिये चला गया। ग्वालाके चले जानेसे बैल इधर-उधर चरते

१—यह घटना दिगम्बर-साहित्यमें नहीं है। सम्भव है किसी और कारणसे उन्होंने कपड़ा छोड़ा हो, या प्रारम्भसे ही वे नग्न रहे हों।

भंते ! अज्झयणस्स समणेणं० के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुण सिलए उज्जाणे सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं अ(इ)ला देवी धर(णी)णाए रायहाणीए अ लाव(ड)डेंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि, एवं कालीगमएणं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया। पुव्वभवपुच्छा। वाणारसीए नयरीए काममहावणे उज्जाणे अ ले गाहावई अ लसिरी भारिया इला दारिया सेसं जहा कालीए नवरं धरण(स्स)अग्ग महिसित्ताए उववाओ, साइरे(ग)ग अद्धपलिओव(म)म ठिई सेसं तहेव। एव खलु निक्खेवओ पढमज्झयणस्स। एवं क(मा सते)मसोतरा सोयामणी इंदा घ(णा)णया विज्जुया वि। सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ (एव)। एए छ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा, एवं जाव घोसस्स वि एए चेव छ अज्झयणा। एवमेते दाहिणिल्लाण इंदाणं चउप्पन्नं अज्झयणा भवंति सव्वाओ वि वाणारसीए काममहावणे उज्जाणे। तइयवग्गस्स निक्खेव(ओ)गो ॥ १५३ ॥ चउत्थस्स उक्खेव गो। एवं खलु जंबू ! समणेणं० धम्मकहाण चउत्थवग्गस्स चउप्पन्नं अज्झयणा पन्नत्ता तंजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउप्पन्नइमे अज्झयणे। पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेव गो। एवं खलु जंबू ! तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ। तेण कालेण तेण समएणं रूया देवी रू(भू)याणंदा राय हाणी रूयगव(डिं)डेंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे उज्जाणे रूयगगाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया सेसं तहेव नवरं भूयाण(द)दा अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवम ठिई। निक्खेवओ। एवं खलु सुरूया वि रूयंसा वि रूयगावई वि रूयकंता वि रूयप्पभा वि। एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स। निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ १५४ ॥ पंचमवग्गस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू ! जाव बत्तीसं अज्झयणा पन्नत्ता तंजहा—कमला कमलप्पभा चेव, उप्पला य सुदंसणा। रूववई बहुरूवा, सुरूवा सुभगा वि य ॥ १ ॥ पुण्णा बहुपुत्तिया चेव, उत्तमा भारिया वि य। पउमा वसुमई चेव, कणगा कणगप्पभा ॥ २ ॥ वडेंसा के(उ)उमई चेव, वइरसेणा रइप्पिया। रोहिणी नवमिया चेव, हिरी पुप्फवई(ति) वि य ॥ ३ ॥ भुयगा भुयगवई चेव, महाकच्छा(ऽ)परा(फुडा)इ(य)या। सुघोसा विमला चेव, सुस्सरा य सरस्सई ॥ ४ ॥ उक्खेवओ पढमज्झयणस्स। एवं खलु जंबू ! तेण कालेणं तेण समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ। तेणं कालेण तेणं समएण कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव

सा(गेयनयरे)एए दो जणीओ पढमे पियरो विजया मायराओ सव्वाओ वि पासस्स अंति(ए)य पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्त पलिओवमाइं महाविदेहे वासे अंतं काहिंति । नवमो वग्गो समत्तो ॥ १५९ ॥ दसमस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पन्नत्ता तंजहा—कण्हा य कण्हराई रामा तह रामरक्खिया वसू-या । वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चेव ईसाणे ॥ १ ॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेण समएण रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ । तेण कालेणं तेण समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए एव अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं ना(णे)यव्वा नवरं पुव्वभ-वो वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो-जणीओ सावत्थी(ए)नयरीए दो-जणीओ कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सि(णी)णियत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिई नवपलिओवमाई महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति सव्वदुक्खाण अंतं काहिंति । एवं खलु जंबू ! निक्खेव गो दसमवग्गस्स । दसमो वग्गो समत्तो ॥ १६० ॥ एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेणं तित्थगरेण सयसंबुद्धेण पुरिसोत्तमेणं [पुरिससीहेणं] जाव सपत्तेण धम्मकहाणं अयमट्ठे पन्नत्ते । धम्मकहा सुयक्खंधो समत्तो । दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥ १६१ ॥ बीओ सुयक्खंधो समत्तो ॥ **नायाधम्मकहाओ समत्ताओ** ॥

सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इ(सु)ट्ठे सद्द जाव पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ। तस्स णं वाणियगामस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं कोल्लाए नामं सन्निवेसे होत्था, रिद्धत्थिमिय जाव पासादीए (४)। तत्थ णं कोल्लाए सन्निवेसे आणन्दस्स गाहावइस्स बहुए मित्तनाइनियगसयणसम्बन्धिपरिजणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए। परिसा निग्गया। कूणिए राया जहा तहा जियसत्तू निग्गच्छइ (१ त्ता) जाव पज्जुवासइ। तए णं से आणन्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे 'एवं खलु समणे जाव विहरइ, तं महप्फलं [जाव] गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि' एवं सम्पेहेइ, सम्पेहित्ता ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सको(रे)ण्टमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव दू(इ)पलासे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वन्दइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे आणन्दस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव धम्मकहा। परिसा पडिगया राया य ग(ए)ओ ॥ ३ ॥ तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी–'सद्दहामि णं भन्ते! निग्गन्थं पावयणं पत्तियामि णं भन्ते! निग्गन्थं पावयणं रोएमि णं भन्ते! निग्गन्थं पावयणं एवमेयं भन्ते! तहमेयं भन्ते! अवितहमेयं भन्ते! इच्छियमेयं भन्ते! पडिच्छियमेयं भन्ते! इच्छियपडिच्छियमेयं भन्ते! से जहेयं तुब्भे वयह त्तिकट्टु, जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे राईसरतलवरमाडम्बियकोडुम्बियसेट्ठि[सेणावइ]सत्थवाहप्पभि(इ)ओ मुण्डे(डा) भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहं तहा संचाएमि मुण्डे जाव पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबन्धं करे(हि)ह ॥ ४ ॥ तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए तप्पढमयाए थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइ, 'जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करे(इ)मि न कारवे(इ)मि मणसा वयसा कायसा' १। तयाणन्तरं च णं थूलगं मुसावायं पच्चक्खाइ, 'जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा' २। तयाणन्तरं च णं थूलगं अ(दत्ता)दिन्नादाणं पच्चक्खाइ, 'जावज्जीवाए दुविहं

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं

उवासगदसाओ

तेण कालेणं तेण समएणं चम्पा नाम नयरी होत्था । वण्णओ । पुण्णभद्दे उज्जाणे । वण्णओ ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेण समएण अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव जम्बू पज्जुवासमाणे एव वयासी—जइ ण भन्ते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सम्पत्तेणं छट्ठस्स अङ्गस्स नायाधम्मकहाण अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स ण भन्ते ! अगस्स उवासगदसाणं समणेण जाव सम्पत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जम्बू ! समणेण जाव सम्पत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा—आणन्दे १, कामदेवे य २, गाहावइचुलणीपिया ३, सुरादेवे ४, चुल्लसयए ५, गाहावइकुण्डकोलिए ६, सद्दालपुत्ते ७, महासयए ८, नन्दिणीपिया ९, सालिहीपिया १० ॥ २ ॥ जइ ण भन्ते ! समणेणं जाव सम्पत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! समणेण जाव सम्पत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एव खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेण समएण वाणियगामे नामं नयरे होत्था । वण्णओ । तस्स [णं] वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुर(त्थि)च्छिमे दिसीभाए दूइपलासए नाम उज्जाणे [होत्था] । तत्थ ण वाणियगामे नयरे जियसत्तू राया (होत्था) । वण्णओ । तत्थ णं वाणियगामे आणन्दे नाम गाहावई परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए । तस्स णं आणन्दस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वु(व)ड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था । से णं आणन्दे गाहावई बहूणं राईसर जाव सत्थवाहाण बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य मन्तेसु य कुडुम्बेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे (य) पडिपुच्छणिज्जे, सयस्सवि य ण कुडुम्बस्स मेढी पमाण आहारे आलम्बण चक्खू, मे(ढी)ढिभूए जाव सव्वकज्ज व(ड्ढा)ड्ढावए यावि होत्था । तस्स ण आणन्दस्स गाहावइस्स सि(वा)वनन्दा नामं भारिया होत्था, अहीण जाव सुरूवा आणन्दस्स गाहावइस्स इट्ठा आणन्देणं गाहा-

तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा' ३ । तयाणन्तर च णं सदारसन्तो(सी)सिए परिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एक्काए सिवनन्दाए भारियाए, अवसेस सव्वं मेहुणविहिं पच्चक्खा(इ)मि मणसा वयसा कायसा' ४ । तयाणन्तर च णं इच्छाविहिपरिमाणं करेमाणे हिरण्णसुवण्णविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ चउहिं हिरण्णकोडीहिं निहाणपउत्ताहिं, चउहिं वु-ड्ढिपउत्ताहिं, चउहिं पवित्थर-पउत्ताहिं, अवसेस सव्वं हिरण्णसुवण्णविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च णं चउप्पयविहिपरिमाण करेइ, 'नन्नत्थ चउहिं वएहिं दसगोसाहस्सिएण वएण, अवसेसं सव्व चउप्पयविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च णं खेत्तवत्थु-विहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ पञ्चहिं हलसएहिं नियत्तणसइएण हलेण, अवसेसं सव्वं खेत्तवत्थुविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तर च ण सगडविहिपरिमाण करेइ, 'नन्नत्थ पञ्चहिं सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं, पञ्चहिं सगडसएहिं संवाहणिएहिं, अवसेसं सव्व सगडविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च ण वाहणविहिपरिमाण करेइ, 'नन्नत्थ चउहिं वाहणेहिं दिसायत्तिएहिं, चउहिं वाहणेहिं सवाहणिएहिं, अव-सेस सव्व वाहणविहिं पच्चक्खामि ३' ५ । तयाणन्तर च णं उवभोगपरिभोगविहिं पच्चक्खाएमाणे उल्लणियाविहिपरिमाण करेइ, 'नन्नत्थ एगाए गन्धकासाईए, अवसेस सव्वं उल्लणियाविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तर च ण दन्तवणविहि-परिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगेणं अल्ललट्ठीमहुएणं, अवसेस दन्तवणविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तर च ण फलविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगेणं खीरामलएण, अवसेस फलविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च णं अब्भङ्गणविहिपरिमाण करेइ, 'नन्नत्थ सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं, अवसेस अब्भङ्गणविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च ण उव्वट्ट(ण)णाविहिपरिमाण करेइ, 'नन्नत्थ एगेण सुरहिणा गन्धट्टएण, अवसेस उव्वट्टणाविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च ण मज्जणविहि-परिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ अट्ठहिं उ(ट्टि)ट्टिएहिं उदगस्स घडएहिं, अवसेस मज्जणविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च णं वत्थविहिपरिमाण करेइ, 'नन्नत्थ एगेणं खोमजुयलेणं, अवसेसं वत्थविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च ण विलेवणविहि परिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ अ(ग)गुरुकुङ्कुमचन्दणमादिएहिं, अवसेस विलेवणविहिं पच्च-क्खामि ३' । तयाणन्तरं च णं पुप्फविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगेण सुद्धपउमेणं मालइकुसुमदामेण वा, अवसेस पुप्फविहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च णं आभ-रणविहिपरिमाण करेइ, 'नन्नत्थ मट्ठक[ण्]णेजएहिं नाममुद्दाए य, अवसेस आभरण-विहिं पच्चक्खामि ३' । तयाणन्तरं च णं धूवणविहिपरिमाण करेइ, 'नन्नत्थ अगरुतु

पंचप्पओगे ११ ॥ ६ ॥ तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'नो खलु मे भन्ते! कप्पइ अज्जप्पभिइं अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थियदेवयाणि वा वन्दित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गु(रु)निग्गहेणं वित्तिकन्तारेणं । कप्पइ मे समणे निग्गन्थे फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकम्बलपायपुंछणेणं पीढफलग(ग)सिज्जासंथारएणं ओसहभेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठाइं आदियइ, आदित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ, वंदित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाणियगामे नयरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिवनन्दं भारियं एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिए! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मे निसन्ते, सेऽवि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिए! समणं भगवं महावीरं वन्दाहि जाव पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि' ॥ ७ ॥ तए णं सा सिवनन्दा भारिया आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'खिप्पामेव लहुकरण जाव पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरे सिवनन्दाए तीसे य महइ जाव धम्मं कहेइ । तए णं सा सिवनन्दा समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दि(सिं) पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ ८ ॥ 'भन्ते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'पहू णं भन्ते! आणन्दे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डे जाव पव्वइत्तए?' नो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा! आणन्दे णं समणोवासए बहूइं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणिहिइ, पाउणित्ता जाव सोहम्मे कप्पे अरुणे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिइ । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता । तत्थ णं आणन्दस्स[उ]वि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई

कामभोगतिव्वाभिलासे ४। तयाणन्तरं च णं इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-खेत्तवत्थुपमाणाइक्कमे, हिरण्ण-सुवण्णपमाणाइक्कमे, दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे, धणधन्नपमाणाइक्कमे, कुवियपमा-णाइक्कमे ५। तयाणन्तरं च णं दिसि(व)वयस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे, अहोदिसिपमाणाइक्कमे, तिरियदिसि-पमाणाइक्कमे, खेत्तवुड्ढी, सइअन्तरद्धा ६। तयाणन्तरं च णं उवभोग-परिभोगे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-भोयणओ य कम्मओ य। तत्थ णं भोयणओ [य] समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-सचित्ताहारे, सचित्तपडिबद्धाहारे, अप्पउलिओसहिभक्खणया, दुप्पउलिओसहि-भक्खणया, तुच्छोसहिभक्खणया। कम्मओ णं समणोवासएणं पण्णरस कम्मा-दाणाइं जाणियव्वाइं न समायरियव्वाइं, तंजहा-इङ्गालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दन्तवाणिज्जे, लक्(खा)वाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, जन्तपीलणकम्मे, निल्लञ्छणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलावसोसणया, असईजणपोसणया ७। तयाणन्तरं च णं अणट्ठादण्डवेर-मणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-कन्दप्पे, कुक्कु[इ]ए, मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवभोगपरिभोगाइरित्ते ८। तयाणन्तरं च णं सामाइयस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइअकरणया, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया ९। तयाणन्तरं च णं देसावगासियस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाए, रूवाणुवाए, बहिया पोग्गल-पक्खेवे १०। तयाणन्तरं च णं पोसहोववासस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियसिज्जासंथारे, अप्प-मज्जियदुप्पमज्जियसिज्जासंथारे, अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमी, अप्प-मज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमी, पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ११। तयाणन्तरं च णं अहासंविभागस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-सचित्तनिक्खेवणया, सचित्त(पे)पिहणया, कालाइक्कमे, प(रो)रववदेसे, मच्छरिया १२। तयाणन्तरं च णं अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूस-णाराहणाए पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-इहलोगासंसप्प-ओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगा-

चरते जंगलमें चले गये । ग्वालाने लौटकर महात्मासे पूछा कि बैल कहाँ है ? परन्तु वे ध्यानस्थ थे कुछ न बोले । इसलिये उसने समझा कि इस मुनिको कुछ नहीं मालूम । वह इधर-उधर बैल ढूँढने लगा । सारी रात्रि बैल खोजता रहा । अन्तमें निराश होकर प्रातःकालके पहले ही वह वहाँ आया जहाँ महात्मा ध्यानस्थ थे । बैल भर-पेट घास चरकर वहाँ आ बैठे थे । ग्वालाने वहाँ आकर बैलोंको देखा तो उसने समझा कि इस मुनिने मेरे बैलोंको कहीं छुपा लिया था और अगर मैं थोड़ी देर यहाँ न आता तो प्रातःकाल होने पर यह जरूर मेरे बैलोंको ले जाता । यह सोचकर वह महात्माको गाली देने लगा और मारनेके लिये दौड़ा । इतनेमें वहाँ एक भला आदमी (शास्त्रोंके शब्दोंमें इन्द्र) आया । उसने ग्वालाको डाँटकर कहा कि अरे मूर्ख, ये तो महातपस्वी हैं, इनने राज्य छोड़ दिया है, ये तेरे बैलोंका क्या करेंगे ?" तब वह ग्वाला शान्त हो गया । आगन्तुकने विनयसे कहा कि आज्ञा हो तो मैं आपकी सेवामें रहूँ । महात्माने कहा—"जो दूसरोंकी सेवाके भरोसे रहेगा वह न तो जगत्का कल्याण कर सकता है न अपना कल्याण कर सकता है ।" तब वह आदमी चला गया ।

दीक्षाके बाद उन्होंने बेला (दो दिनका उपवास) किया और उसका पारणा एक बहुल नामके ब्राह्मणके घरपर किया । उस समय तक उनने भोजनके नियम नहीं बनाये थे । वे जिसके घरमें भोजन करते थे उसीके पात्रोंका उपयोग करते थे ।

दीक्षाके चार मास बाद महात्मा महावीर मोराक नामके ग्रामके पास आये । वहाँ तापसोंके एक सम्प्रदाय (दुइज्जतक) का आश्रम

पण्णत्ता। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ बहिया जाव विहरइ। तए ण से आणन्दे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ। तए ण सा सिवनन्दा भारिया समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ॥ ९॥ तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वय-गुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चउ(चो)द्दस संवच्छराइ वइक्कन्ताइ, पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्ता वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिन्तिए पत्थिए मणोगए सङ्कप्पे समुप्पज्जित्था-'एवं खलु अहं वाणियगामे नयरे बहूणं राईसर जाव सयस्सवि य णं कुडुम्बस्स जाव आधारे, तं एएणं वि(व)क्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरित्तए, तं सेयं खलु ममं कल्लं जाव जलन्ते विउलं असणं० जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठवेत्ता तं मित्त जाव जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सन्निवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरित्तए' एवं सम्पेहेइ, संपेहित्ता कल्लं विउल[०] तहेव जिमियभुत्तुत्तरागए तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ[०] ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'एवं खलु पुत्ता! अहं वाणियगामे बहूण राईसर[०] जहा चिन्तियं जाव विहरित्तए, तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुम्बस्स आलम्बणं ४ ठवेत्ता जाव विहरित्तए'। तए णं जेट्ठपुत्ते आणन्दस्स समणोवास(ग)-यस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ। तए ण से आणन्दे समणोवासए तस्सेव मित्त जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठवेइ, ठवेत्ता एवं वयासी-'मा णं देवाणु-प्पिया! तुब्भे अज्जप्पभिइ केइ मम बहूसु कज्जेसु जाव आपुच्छउ वा पडिपुच्छउ वा, मम अट्ठाए असणं वा ४ उवक्खडेउ [वा] उवकरेउ वा। तए ण से आणन्दे समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्तनाइं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणि-क्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्ग-च्छित्ता जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे जेणेव नायकुले जेणेव पोसहसाला तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारयं संथरइ, दब्भसंथारयं दुरूहइ, दुरूहित्ता पोसहसालाए पोसहिए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ॥ १०॥ तए ण से आणन्दे समणोवासए उवासगपडि-

एवं वयासी-'इच्छामि णं भन्ते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए छट्ठक्खमण(स्स)पारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमु(दा)दाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए'। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह । तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसम्भन्ते जुगन्तरपरिलोयणाए दिट्ठीए पुरओ ई(इ)रियं सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइं घरसमु दाणस्स भिक्खायरियाए अडइ। तए णं से भगव गोयमे वाणियगामे नयरे जहा पण्णत्तीए तहा जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाण सम्मं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहित्ता वाणियगामाओ पडिणिग्गच्छइ पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सन्निवेसस्स अदूरसामन्तेणं व(वी)ईवयमाणे बहुजणसद्द निसामेइ । बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४-'एव खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तेवासी आणन्दे नाम समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम जाव अणवकखमाणे विहरइ'। तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अन्तिए ए(य)यमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४-'तं गच्छामि णं आणन्दं समणोवासयं पासामि' एव सम्पेहेइ, सपेहित्ता जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे जेणेव आणन्दे समणोवासए जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ । तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठ[तुट्ठ] जाव हियए भ(ग)यव गोयम वन्दइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'एव खलु भन्ते ! अह इमेणं उरालेणं जाव धमणिसन्तए जाए, (नो) न सचाएमि देवाणुप्पियस्स अन्तियं पाउब्भवित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाए अभिवन्दित्तए, तुब्भे णं भन्ते ! इच्छाकारेणं अणभिओएण इओ चेव एह, जा णं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेण पाएसु वन्दामि नमंसामि' । तए णं से भगवं गोयमे जेणेव आणन्दे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ ॥ १२ ॥ तए ण से आणन्दे समणोवासए भगवओ गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेण पाएसु वन्दइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी-'अत्थि ण भन्ते ! गिहिणो गि(हि)हमज्झावसन्तस्स ओहिनाणे (ण) समुप्पज्जइ ?' हन्ता अत्थि । जइ णं भन्ते ! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, एवं खलु भन्ते ! ममवि गिहिणो गिहिमज्झावसन्तस्स ओहिनाणे समुप्पन्ने-पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पञ्च जोयणसयाइ जाव लोलुयच्चुयं नरयं जाणामि पासामि । तए णं से भगव गोयमे आणन्द समणोवासय एव वयासी-'अत्थि ण आणन्दा ! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, नो चेव णं एमहालए, तं ण तुमं आणन्दा ! एयस्स ठाणस्स

आलोएहि जाव तवोकम्मं पडिवज्जाहि'। तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं गोयमं एवं वयासी-'अत्थि णं भन्ते! जिणवयणे सन्ताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ?' णो इणट्ठे समट्ठे। 'जइ णं भन्ते! जिणवयणे सन्ताणं जाव भावाणं णो आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं णो पडिवज्जिज्जइ तं णं भन्ते! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह जाव पडिवज्जह'। तए णं से भगवं गोयमे आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए विइगिच्छासमावन्ने आणन्दस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामन्ते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी- एवं खलु भन्ते! अहं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव तए णं अहं संकिए ३ आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमामि पडिणिक्खमित्ता जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए, तं णं भन्ते! किं आणन्देणं समणोवासएणं तस्स ठाणस्स आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं उदाहु मए?' 'गोयमा' इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी 'गोयमा! तुमं चेव णं तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, आणन्दं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेहि'। तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तह'त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव पडिवज्जइ, आणन्दं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेइ। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ १४ ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए बहूहिं सीलव्वएहिं जाव अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं अरुणे विमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं आणन्दस्सवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। आणन्दे णं भन्ते! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणन्तरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ १५ ॥ निक्खेवो ॥ सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

जइ णं भन्ते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भन्ते! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे उज्जाणे। जियसत्तू राया। कामदेवे गाहावई। भद्दा भारिया। छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ(हि०)वुड्ढिपउत्ताओ, छ-पवित्थरपउत्ताओ। छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं। (तेणं का० तेणं स० भगवं म०) समोसरणं। जहा आणन्दो तहा निग्गओ, तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ। सा चेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं मित्तनाई (आपुच्छइ) आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जहा आणन्दो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ १६ ॥ तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे मायी मिच्छ-द्दिट्ठी अन्तियं पाउब्भूए। तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ। तस्स णं देवस्स पिसायरूवस्स इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते–सीसं से गोकिलञ्जसंठाण-संठियं, सालिभसेल्लसरिसा से केसा कविलतेएणं दिप्पमाणा, महल्लउट्टियाकभल्लसंठा-णसंठियं निडालं, मुगुंसपुंछं व तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ विगय(बी)बीभ(त्थ)-च्छदंसणाओ, सीसघडिविणिग्गयाइं अच्छीणि विगयबीभच्छदंसणाइं, कण्णा जह सुप्पकत्तरं चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा, उरब्भपुडसन्निभा से नासा, झुसिरा जम-लचुल्लीसंठाणसंठिया दो[ऽ]वि तस्स नासापुडया, घोडयपुंछं व तस्स मंसूइं कविलक-विलाइं विगयबीभच्छदंसणाइं, उट्ठा उ(ट्ठ)ट्टस्स चेव लम्बा, फालसरिसा से दन्ता, जिब्भा जे(ह)हा सुप्पकत्तरं चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा, हलकु(डा)द्दालसंठिया से हणुया, गल्लकडिल्लं च तस्स खड्डं फुट्टं कविलं फरुसं महल्लं, मुइङ्गाकारोवमे से खन्धे, पुरवरकवाडोवमे से वच्छे, कोट्ठियासंठाणसंठिया दो वि तस्स बाहा, निसापाहाणसं-ठाणसंठिया दो वि तस्स अग्गहत्था, निसालोढसंठाणसंठियाओ हत्थेसु अंगुलीओ, सिप्पिपुडग(संठाण)संठिया से नक्खा, ण्(ह)हावियपसेवओ व्व उरंसि लम्बन्ति दो-ऽवि तस्स थणया, पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं, पाणकलन्दसरिसा से नाही, सिक्कगसंठाणसंठि(या)ए से नेत्ते, किण्णपुड(संडवसण)संठाणसंठिया दो-ऽवि तस्स वसणा, जमलकोट्ठियासंठाणसंठिया दो ऽ वि तस्स ऊरू, अज्जुणगुट्ठं व तस्स जाणूइं कुडिलकुडिलाइं विगयबीभच्छदंसणाइं, जंघाओ क(क्क)क्खडीओ लोमेहिं उवचि-याओ, अहरीसंठाणसंठिया दो-ऽ वि तस्स पाया, अहरीलोढसंठाणसंठियाओ पाएसु अंगुलीओ, सिप्पिपुड(सं०)संठिया से नक्खा, लडहमडहजाणुए विगयभग्गभुग्ग-

(मघुरे)सुमए मसयाणिमयवयपलिय(रे)रनिग्गसिकयवणीहे उरगकयसालिगमाए मूस(ग)
मालापरिणद्धसुकयचिंधे नउलकयकण्णपूरे सप्पकयवेगच्छे अप्फोडंते अभिगज्जंते
भीममुक्कट्टहासे नाणाविहपंचवण्णेहिं लोमेहिं उवचिए एगं महं नीलुप्पलगवलगुलिय-
अयसिकुसुमप्पगासं असिं खुरधारं गहाय जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणो-
वासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसु(र)रुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमि-
सीयमाणे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–'हं भो कामदेवा! समणोवासया! अप्प-
त्थियपत्थिया दुरंतपंतलक्खणा हीणपुण्णचाउद्दसिया सिरिहिरिधिइकित्तिपरिवज्जिया
धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकंखिया पुण्णकंखिया
सग्गकंखिया मोक्खकंखिया धम्मपिवासिया पुण्णपिवासिया सग्गपिवासिया मोक्ख-
पिवासिया नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया! जं सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-
णाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए
वा परि(च्चि)इत्तए वा तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं जाव पोसहोववासाइं न छ(ड्डे)-
सि न भंजेसि तो ते अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल[ ] जाव असिणा खंडाखंडिं करेमि,
जहा णं तुमं देवाणुप्पिया! अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि'।
तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए
अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असम्भन्ते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए
विहरइ ॥ १७ ॥ तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव
धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि कामदेवं (समणोवासयं)
एवं वयासी–'हं भो कामदेवा! समणोवासया! अपत्थियपत्थिया जइ णं तुमं अज्ज
जाव ववरोविज्जसि'। तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि
एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ। तए णं से देवे पिसायरूवे
कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते (५) तिव-
लियं भिउडिं निडाले साहट्टु कामदेवं समणोवासयं नीलुप्पल जाव असिणा खंडा-
खंडिं करेइ। तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं सम्मं
सहइ जाव अहियासेइ ॥ १ ॥ तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं
अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं
निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे संते
तंते परितंते सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिनिक्ख-
मइ, पडिनिक्खमित्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं हत्थि-
रूवं विउव्वइ, सत्तंगपइट्ठियं सम्मं संठियं सुजायं पुरओ उदग्गं पिट्ठओ वराहं अया-

कुच्छिं अलम्बकुच्छिं पलम्बलम्बोदराधरकरं अब्भुग्गयमउलमल्लियाविमलधवलदन्तं कञ्चणकोसीपविट्ठदन्तं आणामियचावललियसंवेल्लियग्गसोण्डं कु(म्मिव)म्मपडिपुण्ण-चलणं वीसइनक्खं अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छं मत्तं मेहमिव गुलगुलेन्तं मणपवणजइणवेगं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवा-सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–'हं भो कामदेवा! समणोवासया! तहेव भणइ जाव न भञ्जेसि, तो ते अज्ज अहं सोण्डाए गिण्हामि, गिण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणित्ता उड्ढं वेहासं उव्वि-हामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि'। तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं-पि तच्चं-पि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–'हं भो कामदेवा! तहेव जाव सो ऽ वि विहरइ। तए णं से देवे हत्थि-रूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, पासित्ता आसु(र)रुत्ते ४ कामदेवं समणोवासयं सोण्डाए गिण्(ह)हेइ, गिण्हित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्वि-हित्ता तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाए-(पदे)सु लोलेइ। तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ ॥१९॥ तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ जाव सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ, (तं) उग्गविसं चण्डविसं घोरविसं (दिट्ठिविसं) महाकायं म(सि)सीमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अञ्जणपुञ्जनिगरप्पगासं रत्तच्छं लोहियलोयणं जमलजुयलचञ्चलजीहं धरणीयलवे-(णी)णिभूयं उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्कसवियड(फु)फडाडोवकरणदच्छं लोहागरध-म्ममाणधमधमेन्तघोसं अणागलियतिव्वचण्डरोसं सप्परूवं वि(वे)उ(व्वे)वइ, २ त्ता जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–'हं भो कामदेवा! समणोवासया! जाव न भ(ञ्ज)-ञ्जेसि तो ते अ(ज्ज)ज्जेव अहं सरसरस्स कायं दु(रू)रुहामि, २ त्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढेत्ता तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि'। तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ, सो-ऽ वि

वासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे 'एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, त सेय खलु मम समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता तओ पडिणियत्तस्स पोसहं पारित्तए'त्ति कट्टु एवं सम्पेहेइ, सपेहित्ता सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं जाव मणुस्स-वग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता चम्पं नगरिं मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे उज्जाणे जहा सखो जाव पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य जाव धम्मकहा समत्ता ॥ २२ ॥ कामदेवा ! इ समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—से नूणं कामदेवा ! तुब्भं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तिए पाउब्भूए, तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं विउव्वइ, विउ-व्वित्ता आसुरुत्ते ४ एगं महं नीलुप्पल—जाव असिं गहाय तुमं एवं वयासी—हं भो कामदेवा ! जाव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तं तुमं तेण देवेण एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरसि, एव वण्णगरहिया तिण्णि-वि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ। से नूणं कामदेवा ! अट्ठे समट्ठे ? हन्ता, अत्थि । 'अज्जो ! इ समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निग्गन्थे य निग्गन्थीओ य आमन्तेत्ता एवं वयासी—जइ ताव अज्जो ! समणोवासगा गिहिणो गि(हि)हमज्झावसन्ता दिव्वमा-णु(स)सतिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहन्ति जाव अहियासेन्ति, सक्का—पुणा(इ)इं अज्जो ! समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्ग गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं दिव्वमाणुसति-रिक्खजोणिए सम्मं सहित्तए जाव अहियासित्तए। तओ ते बहवे समणा निग्गन्था य निग्गन्थीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स त(हि)हत्ति एयमट्ठं विणएण पडिसु-णन्ति । तए णं से कामदेवे समणोवासए ह० जाव समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ, अट्ठमादियइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नम-सित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ चम्पाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरइ ॥ २३ ॥ तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उव-सम्पज्जित्ताणं विहरइ, तए णं से कामदेवे समणोवासए बहूहिं [सीलव्वएहिं] जाव भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता एक्कारस उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्म-वडिंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, (तत्थणं) काम-

था। तापसोंका आचार्य म० महावीरके पिता सिद्धार्थ नरेशका मित्र था। म० महावीर गृहस्थावस्थासे ही उसे पहिचानते थे। तापसके वयोवृद्ध होनेके कारण महावीरने उसका हाथ जोडकर विनय किया। कुलपतिने वहाँ ठहरनेके लिये आग्रह किया और वे एक रात्रि वहाँ रहे। जाते समय कुलपतिने उनसे कहा कि यह स्थान बिलकुल एकान्त है, इसलिये चौमासा व्यतीत करनेके लिये आप यहीं आजाओ तो बहुत अच्छा हो। म० महावीरने यह बात स्वीकार की।

वर्षाऋतु प्रारम्भ होनेके पहले ही म० महावीर आश्रममें आ गये। कुलपति महावीरको भतीजेके समान समझता था। उसने वर्षा-कालमें रहनेके लिये एक घासकी झोपड़ी बनवा दी थी। वे उसमे ठहरे। उस समय वर्षा न होनेसे नवीन घास पैदा न हुआ था, इसलिये ग्रामकी गाये झोपड़ेकी घास खाने लगीं। तापसोंने तो गायोंको डडे मारकर भगा दिया, परन्तु महावीरने कुछ भी न किया और गायोंने उनका झोपड़ा चर लिया। तापस लोग मन-ही-मन विचारने लगे—"हम लोग तो अपनी झोपड़ियोंकी रक्षा करते हैं किन्तु यह मुनि तो अपनी झोपड़ीकी जरा भी पर्वाह नहीं करता। यह कैसा परोपकारी है। क्या करें, यह कुलपतिका प्यारा है इसलिये डरके मारे हम कठोर वचन भी नहीं कह सकते।" अन्तमें जाकर उन्होंने कुलपतिसे शिकायत की और महावीरको अकृतज्ञ, भोंदू, आलसी आदि कहा। यह भी कहा कि—"अगर वह मुनि होनेके कारण अपने झोपड़ीकी रक्षा नहीं करता तो क्या हम लोग मुनि नहीं हैं?" कुलपतिने देखा कि शिष्योंका कहना है तो सत्य, इसलिये उसने आकर प्रेमपूर्वक म० महावीरको उलहना दिया—

(तए णं) अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि। तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं-पि तच्चं-पि एवं वयासी-हं भो चुलणीपिया समणोवासया! तहेव जाव गायं आयंचइ। तए णं अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि। एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आयंचइ, अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि। तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं-पि एवं वयासी-हं भो चुलणीपिया समणोवासया! अपत्थिय-पत्थिया जाव न भंजसि तो ते अज्ज जा इमा (तव) माया (भ) द्द[ ] जाव ववरोविज्जसि। तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि। तए णं से पुरिसे दोच्चं-पि तच्चं-पि ममं एवं वयासी-हं भो चुलणीपिया समणोवासया! अज्ज जाव ववरोविज्जसि। तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं-पि तच्चं-पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इ(मय)मेयारूवे अज्झत्थिए ५-अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आयंचइ, तु(जो)म्हे-ऽवि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाइए, से-ऽवि य आगासे उप्पइए, मए-ऽवि य खंभे आसाइए, महया महया सद्देणं कोलाहले कए ॥ १८ ॥ तए णं सा भद्दा सत्थवाही चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी-नो खलु के(इ)णं पुरिसे तव जाव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस(ण) णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे, तं णं तुमं इ(दा)णिं भग्गव्वए भग्गनियमे भग्गपोस(होववासे) विहरसि तं णं तुमं पुत्ता! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि। तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मगाए भद्दाए सत्थवाहीए तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव पडिवज्जइ ॥ १९ ॥ तए णं से चुलणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ता-णं विहरइ, पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं जहा आणंदो जाव ए(इ)क्कारस-ऽवि। तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं उरालेणं जहा कामदेवो जाव सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववन्न(णो)ो। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई (जाव) पण्णत्ता। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५ ॥ २ ॥ ॥ निक्खेवो (तहेव) ॥ सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं तइयं अज्झयणं समत्तं ॥

उक्खेवओ चउत्थस्स अज्झयणस्स। एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया। सुरादेवे गाहावई,

पिय समणोवासयं एव वयासी–ह भो चुलणीपिया ! समणोवासया ! अपत्थिय-प(त्थि)त्थया [!] जाव न भञ्जसि तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, जहा जेट्ठं पुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ। एवं तच्च पि कणीयस जाव अहियासेइ ॥ २७ ॥ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव पासइ, पासित्ता चउत्थं-पि चुलणीपिय समणोवासयं एव वयासी–"ह भो चुलणीपिया ! समणोवासया ! अपत्थियपत्थ० ४ जइ ण तुम जाव न भञ्जसि तओ अह अज्ज जा इमा तव माया भद्दा सत्थवा(हिणी)ही देवय-गुरुजणणी दुक्करदुक्करकारिया त ते साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आयञ्चामि जहा ण तुमं अट्टदुहट्टव सट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि"। तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेण एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासय अभीय जाव विहरमाण पासइ, पासित्ता चुलणीपियं समणोवासय दोच्चं पि तच्च-पि एव वयासी–हं भो चुलणीपिया ! समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि। तए ण तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेणं देवेण दोच्च-पि तच्च-पि एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५–अहो ण इमे पुरिसे अणा-रिए (अणारियबुद्धी) अणारि(याइं पावाइ)यकम्माइं समायरइ, जेण म(म)मं जेट्ठ पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता जहा कय तहा चिन्तेइ जाव गाय आयञ्चइ, जेण म-मं मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ जाव सोणिएण य आयञ्चइ, जेण ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव आयञ्चइ, जा-ऽ-वि य ण इमा मम माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी दुक्करदुक्करकारिया तं-पि य ण इच्छइ सा(सया)ओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घा(इ)एत्तए, त सेयं खलु मम एयं पुरिस गिण्हित्तए त्तिकट्टु उ(ट्ठा)द्धाइए, से-ऽ वि य आगासे उप्प-इए, तेण च खम्भे आसाइए, महया महया सद्देण कोलाहले कए, तए ण सा भद्दा सत्थवा-ही तं कोलाहलसद्द सोच्चा निसम्म जेणेव चुलणीपिया समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुलणीपिय समणोवासयं एवं वयासी–किण्णं पुत्ता ! तुम महया महया सद्देणं कोलाहले कए ? तए ण से चुलणीपिया समणोवासए अम्मय भद्दं सत्थवाहिं एव वयासी–एव खलु अम्मो ! न जा(या)णामि, केवि पुरिसे आसु-रुत्ते ५ एग मह नीलुप्पल–जाव असिं गहाय ममं एव वयासी–ह भो चुलणी-पि० समणोवासया ! अपत्थियपत्थया ४ वज्जिया जइ ण तुमं जाव ववरोविज्जसि।

अट्टे (जाव अपरिभूए)। छ हिरण्णकोडीओ जाव छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं। धन्ना भारिया। सामी समोसढे। जहा आणन्दो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं। जहा कामदेवो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता-णं विहरइ ॥ ३१ ॥ तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था। से देवे एगं महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो सुरादे० समणोवासया! अपत्थियपत्थया ४ जइ णं तुमं सी(लव्वया)लाइं जाव न भञ्जसि तो ते जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पञ्च (मंस)सोल्लए करेमि, (० त्ता) आ(या)-दाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आ(-ञ्च)-यामि, जहा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। एवं मज्झि(म)मयं, कणीयसं, एक्केक्के पञ्च सोल्लया, तहेव करेइ, जहा चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पञ्च सोल्लया। तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं चउत्थं-पि एवं वयासी-हं भो सुरा-देवा! समणोवासया! अपत्थियपत्थया ४ जाव न परिच्चय(भंज)सि (त)तो (अहं) ते अज्ज (तव) सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायङ्के पक्खिव(वे)ामि, तं-जहा-सासे, कासे जाव को(ढए)ढे, जन्हा णं तुमं अट्टदुहट्ट[०] जाव ववरोविज्जसि। तए णं से सुरादेवे समणोवासए जाव विहरइ। एवं देवो दोच्चं-पि तच्चं-पि भणइ जाव ववरोविज्जसि ॥ ३२ ॥ तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं-पि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४ (समु०)-अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, जे-ऽ-वि य इमे सोलस रोगायङ्का ते-ऽ-वि य इच्छइ मम सरीरगंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु मम एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्तिकट्टु उद्धाइए। से-ऽ वि य आगासे उप्पइए, तेण य खम्भे आसाइए, महया महया सद्देणं कोलाहले कए ॥ ३३ ॥ तए णं सा धन्ना भारिया कोलाह(लसद्द)लं सोच्चा निसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-किण्णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं महया महया सद्दे(ण)णं कोलाहले कए? तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नं भारियं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! के(इ)-ऽ वि पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया। धन्ना-ऽ-वि पडि-भणइ-जाव कणीयसं, नो खलु देवाणुप्पिया! तुब्भं के-ऽ-वि पुरिसे सरीरंसि जमग-समगं सोलस रोगायङ्के पक्खिवइ, एस णं के-वि पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ, सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भणइ। एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्(म)मे कप्पे अरुणकन्ते विमाणे उववन्ने। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई, महा-

कोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए जाव कलु(स)स समावन्ने नो संचाएइ कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि पा(प)मोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दगं च उत्तरिज्जं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। तए णं से कुंड-कोलिए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे ह(हट्ठे) जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ। धम्मकहा॥ ४१॥ 'कुंडकोलिया' इ समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी-से नूणं कुंडकोलिया! कल्लं तुम(मं)स पुव्वा-वरण्हकालसमयंसि असोगवणियाए एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था। तए णं से देवे नाममुद्दं च तहेव जाव पडिगए। से नूणं कुंडकोलिया! अट्ठे समट्ठे? हन्ता अत्थि। तं धन्ने सि णं तुमं कुंडकोलिया! जहा कामदेवो। 'अज्जो' इ समणे भगवं महावीरे समणे निग्गन्थे य निग्गन्थीओ य आमन्तित्ता एवं वयासी-जइ ताव अज्जो! गिहिणो गि-हम(म)ज्झावसन्ता णं अन्नउत्थिए अट्ठेहि य हेऊहि य पसि-णेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणे करेन्ति, सक्का पुणाइं अज्जो! समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्गं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अन्नउत्थिया अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठपसि(णा)वागरणा करित्तए। तए णं समणा निग्गन्था य निग्गन्थीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडि-सुणेन्ति। तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमं-सइ, वंदित्ता नमंसित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठमादियइ, २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ॥ ४२॥ तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील[ ]जाव भावेमाणस्स चो[द्द]स संवच्छराइं व(वि)इक्कन्ताइं, पन्नरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं (पुत्ते) ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ। एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अन्तं काहिइ॥ ४३॥ निक्खेवो॥ सत्त-मस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं छट्ठं अज्झयणं समत्तं॥

सत्तमस्स उक्खेवो। पोलासपु(र)रे नामं नयरे। सहस्सम्बव(णे)णे उज्जाणे। जिय-सत्तू राया। तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुम्भकारे आजीविओवासए परिवसइ, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते य अयमाउसो! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठेत्ति (एवं) आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तस्स णं सद्दालपुत्तस्स

भारिया । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ वुड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ, छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । सामी समोसढे । जहा कामदेवो तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ । (से) स(व्वे)चेव वत्तव्वया जाव पडिलामेमाणे विहरइ ॥ ३८ ॥ तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नाममुद्दग च उत्तरिज्जगं च पुढ(वी)विसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ ॥ ३९ ॥ तए ण तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अन्तिय पाउब्भवित्था । तए णं से देवे नाममु(द्दग)द्द च उत्तरि(य)ज्जं च पुढ-विसिलापट्टयाओ गे(गि)ण्हइ, २ त्ता सखिंखिणिं[०] अन्तलिक्खपडिवन्ने कुण्डकोलिय समणोवासय एव वयासी–ह भो कुण्डकोलि०समणोवासया ! सुन्दरी णं देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती, नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वी(वि)रिए इ वा पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा, नियया सव्वभावा, मंगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती, अत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा, अणियया सव्वभावा ॥ ४० ॥ तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए त देवं एव वयासी–जइ ण देवा–! सुन्दरी गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती–नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती–अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियया सव्वभावा, तुमे णं देवा–! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे, किणा पत्ते, किणा अभिसमन्नागए, किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेण, उदाहु अणुट्ठाणेणं अकम्मेण जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेण ? तए ण से देवे कुण्डकोलियं समणोवासय एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमेयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ अणुट्ठाणेण जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेण लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए त देव एवं वयासी–जइ णं देवा–! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, ते किं न देवा ? अह णं देवा–! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ उट्ठाणेण जाव परक्कमेण लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, तो ज वदसि–सुन्दरी ण गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती, नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती–अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियया सव्वभावा, तं ते मिच्छा । तए णं से देवे कुण्ड-

आजीविओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता, एक्का वुड्ढिपउत्ता, एक्का पवित्थरपउत्ता, ए(गे)क्के वए दसगोसाहस्सिएण वएण। तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवास(य)गस्स अग्गिमित्ता नामं भारिया होत्था। तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स वहिया पञ्च कुम्भकारावणसया होत्था। तत्थ ण वहवे पुरिसा दिण्णभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं वहवे करए य वारए य पिहडए य घडए य अद्धघडए य कलसए य अलिञ्जरए य जम्बूलए य उट्टियाओ य करेन्ति। अन्ने य से वहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं तेहिं वहूहिं करएहि य जाव उट्टिया(हिं)हि य रायमग्गसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरन्ति ॥ ४४ ॥ तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स अन्तिय धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता ण विहरइ। तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था। तए ण से देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने सखिखिणियाइ जाव परिहिए सद्दालपुत्त आजीविओवासय एवं वयासी–एहिइ ण देवाणुप्पिया! कल्ल इ(ह)ह महामाहणे उप्पन्नणाणदसणधरे तीयपडुप्पन्नमणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कवहियमहियपूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे वन्दणिज्जे (पूयणिज्जे) सक्कारणिज्जे समाणणिज्जे कल्लाण मङ्गल देवय चेइय जाव पज्जुवासणिज्जे त(चो)च्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते, तं ण तुम वन्देज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिए–णं पीढफलगसिज्जासथारिएणं उवनिमन्तेज्जाहि, दोच्च-पि तच्च-पि एव वयइ वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए ॥ ४५ ॥ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेण देवेणं एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने–'एव खलु मर्म धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मङ्खलिपुत्ते, से णं महामाहणे उप्पन्नणाणदसणधरे जाव तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते, से ण कल्ल इह हव्वमागच्छिस्सइ। तए ण तं अहं वन्दिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि, पाडिहारिएण जाव उवनिमन्तिस्सामि' ॥ ४६ ॥ तए ण कल्ल जाव जलन्ते समणे भगव महावीरे जाव समोस(ढे)रिए। परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ। तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे 'एव खलु समणे भगव महावीरे जाव विहरइ, त गच्छामि ण समणं भगव महावीरं, वन्दामि जाव पज्जुवासामि' एव सम्पेहेइ, संपेहित्ता ण्हाए सुद्धप्पावेसाइ जाव अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ गिहाओ पडिणि-(गच्छ)क्खमइ, २ त्ता पोलासपुरं नयरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता

'भन्ते ! अणुट्ठाणेण जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं(कज्जति), नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, नियया सव्वभावा' ॥ ४९ ॥ तए ण समणे भगव महावीरे सद्दाल-पुत्त आजीविओवासय एवं वयासी-'सद्दालपुत्ता ! जइ ण तुब्भं केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लय वा कोलालभण्ड अवहरे(ज)ज्जा वा वि(क्खरि-)क्खिरेज्जा वा भिन्दे-ज्जा वा अच्छिदे-ज्जा वा परि(ठ)ट्ठवे ज्जा वा, अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउ(उरा)लाइ भोगभोगाइ भुञ्जमाणे विहरे(-वा)ज्जा, तस्स ण तुम पुरिसस्स किं दण्ड [नि]वत्तेज्जासि ?' भन्ते ! अह णं त पुरिसं आओसे-ज्जा वा हणे ज्जा वा बं(वधि)धेज्जा वा महे-ज्जा वा तज्जे-ज्जा वा ताले-ज्जा वा निच्छोडे-ज्जा वा निब्(भ)भच्छे-ज्जा वा अकाले चेव जीवि-याओ ववरो(वि)वे(-वा)ज्जा। सद्दालपुत्ता ! नो खलु तुब्(भ)भ केइ पुरिसे वा(त)याहयं वा पक्केल्लय वा कोलालभण्डं अवह(रे)रइ वा जाव परिट्ठवेइ वा, अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाई भोगभोगाइ भुञ्जमाणे विहरइ, नो वा तुम त पुरिस आओसेज्जसि वा ह(णे)णिज्जसि वा जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरो-वेज्जसि, जइ(ण)नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा नि(ति)यया सव्वभावा। अ(ह)ह ण तुब्भं के(ई)इ पुरिसे वायाहय जाव परिट्ठवेइ वा, अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ, तुम वा त पुरिस आओसेसि वा जाव ववरो(-ज)वेसि, तो ज वदासि नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा तं ते मिच्छा। एत्थ णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए सम्बुद्धे ॥ ५० ॥ तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समण भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वन्दित्ता नमंसित्ता एव वयासी-'इच्छामि ण भन्ते ! तुब्भ अन्ति(य)ए धम्म निसा-मेत्तए'। तए णं समणे भगव महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य जाव धम्म परिकहेइ। तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणस्स भग-वओ महावीरस्स अन्तिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणदो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ। नवरं एगा हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता, एगा हिरण्ण-कोडी वुड्ढिपउत्ता, एगा हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ता, ए(ग)गे वए दसगोसाहस्सिएणं वएण, जाव समण भगव महावीरं वन्दइ नमसइ, वन्दित्ता नमसित्ता जेणेव पोलासपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोलासपुर नयरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव अग्गिमित्ता भारिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अग्गिमित्तं भारिय एव वयासी-'एव खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगव महावीरे जाव समोस-ढे, त गच्छाहि णं तुमं समणं भगवं महावीरं, वन्(द)दाहि जाव पज्जु-वा(स)साहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइय सत्तसिक्खावइयं दुवालसविह गिहिधम्म पडिव ज्जाहि' ॥ ५१ ॥ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया

" बस, इस झोंपड़ेकी रक्षा क्यों न की ? तुम्हारे पिताने तो यावज्जीवन सब आश्रमोंकी रक्षा की है * । दुष्टोंको दंड देना तो तुम्हारा धर्म होना चाहिये । पक्षी भी अपने घोंसलेकी रक्षा करते हैं । तुम तो क्षत्रिय हो, तुमने आश्रमकी रक्षा क्यों न की ? तुम्हारे पिताकी मित्रताके कारण मैं मुलाहिजा कर रहा हूँ । आगेसे तुम्हें अपने कर्तव्यमें आलस न करना चाहिये । " म० महावीरने इन सब बातोंका कुछ भी उत्तर न दिया । उन्होंने सोचा कि अगर मैं यहाँ रहूँगा तो इन लोगोंको सदा क्लेश होगा, इसलिये मेरा यहाँ रहना उचित नहीं है । वर्षाऋतुके पन्द्रह दिन निकल गये थे, फिर भी उन्होंने दूसरी जगह चला जाना उचित समझा और उसी समय पाँच नियम बनाये—

(१) जहाँ रहनेसे क्लेश हो वहाँ न रहना ।

(२) जहाँ रहना, वहाँ कायोत्सर्ग करके रहना ।

(३) जहाँ तक हो सके मौन धारण करना ।

(४) भोजनके लिये पात्रका उपयोग न करना, अर्थात् हाथमें आहार लेना ।

(५) गृहस्थका विनय नहीं करना ।

---

* सिद्धार्थ नरेश भ० पार्श्वनाथके अनुयायी थे, फिर भी उदार थे । सिद्धार्थकी तापस कुलपतिसे मित्रता होना, महावीरका तापस कुलपतिको नमस्कार करना और सिद्धार्थ नरेशका तापसाश्रमोंकी रक्षा करना और करते हैं । चौमासेमें महावीरका तापसाश्रममें ठहरनेके लिये जाना इस बातको सिद्ध करता है कि सिद्धार्थ नरेश तापस-भक्त भी होंगे । इस प्रकार प्राचीन युगके उदार राजाओंके समान वे सभी धर्मोंको मानते होंगे और उनका विशेष सम्बन्ध इस कुलपतिसे होगा ।

(चइ)त्ता समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं पडिवन्ने, तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठिं गेण्हावित्तए' त्ति-कट्टु एवं सम्पेहेइ, सपेहित्ता आजीवियसङ्घसम्परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे जेणेव आजीवियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आजीवियसभाए भण्ड-(ग)निक्खेवं करेइ, करेत्ता कइवएहिं आजीविएहिं सद्धिं जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छइ। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ, नो परिजा(णा)णइ, अणाढा[य]माणे अपरिजाणमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ५५ ॥ तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तेण समणोवासएण अणाढाइज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढफलगसिज्जासंथारट्ठयाए समणस्स भगवओ महावीरस्स गुणकित्तणं करे(ति)माणे सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी-'आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महामाहणे?' तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी-'के णं देवाणुप्पिया! महामाहणे?' तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी-'समणे भगवं महावीरे महामाहणे' 'से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वु(उ)च्चइ-समणे भगवं महावीरे महामाहणे?' 'एवं खलु सद्दालपुत्ता! समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव महियपूइए जाव तच्चकम्मसम्पयासंपउत्ते, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चइ-समणे भगवं महावीरे महामाहणे' 'आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महागोवे?' 'के णं देवाणुप्पिया! महागोवे?' 'समणे भगवं महावीरे महागोवे' 'से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया! जाव महागोवे?' 'एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे न(त)स्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे धम्ममएणं दण्डेणं सा(सं)रक्खमाणे संगोवेमाणे निव्वाणमहावा(डे)डं साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता! एवं वुच्चइ-समणे भगवं महावीरे महागोवे' 'आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महासत्थवाहे?' 'के णं देवाणुप्पिया! महासत्थवाहे?' सद्दालपुत्ता! समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे' 'से केणट्ठेणं (देवाणु० महासत्थवाहे)?' 'एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे (उम्मग्गपडिवण्णे) धम्ममएणं पन्थेणं सारक्खमाणे निव्वाणमहापट्ट(णंसि)णाभिमुहे साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता! एवं वुच्चइ-समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे' 'आगए णं देवाणुप्पिया! इहं म(ह)हाधम्मकही?' 'के णं देवाणुप्पिया! महाधम्मकही?' 'समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही' 'से केणट्ठेणं समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही?' 'एवं

ण्हि त्ता-णं विहरइ। तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जाहे नो सचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य (परूवणेहि य) निग्गन्थाओ पावयणाओ (स)चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सन्ते तन्ते परितन्ते पोलासपुराओ नगराओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥ ५८॥ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील-जाव भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छरा व(वी)इक्कन्ता, पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता-णं विहरइ। तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स (अतिए) पुव्वरत्तावरत्तका(लसमयंसि)ले एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था। तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल-जाव असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासय एवं वयासी—जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्ग करेइ, नवरं एक्केक्के पुत्ते नव (२) मंससोल्लए करेइ जाव कणीयसं घाएइ, घाइत्ता जाव आयञ्चइ। तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासय अभीयं जाव पा(से)सित्ता चउत्थं-पि सद्दालपुत्त समणोवासय एवं वयासी—'ह भो सद्दालपुत्ता! समणोवासया! अपत्थियपत्थया जाव न भजसि तओ ते जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्म(वि)विइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदु(ह)क्खसहाइया तं ते साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आयञ्चामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट[०] जाव ववरोविज्जसि'। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेणं एव वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय दोच्चं-पि तच्च-पि एवं वयासी—'हं भो सद्दालपुत्ता! समणोवासया! तं चेव भणइ। तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स तेण देवेण दोच्चं-पि तच्च पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयं अज्झत्थिए ४ समुप्प(ज्जित्था)न्ने। एवं जहा चुलणीपिया तहेव चिन्तेइ—'जेणं ममं जेट्ठं पुत्त, जेण ममं मज्झिमयं पुत्तं, जेणं मम कणीयस पुत्तं जाव आयञ्चइ, जा-ऽ-वि य ण मम इमा अग्गिमित्ता भारिया समसुहदु-क्खसहाइया तं-पि य इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, त सेयं खलु ममं एय पुरिस गिण्हित्तए' त्ति-कट्टु उद्धाइए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं भाणियव्वं, नवरं अग्गिमित्ता भारिया कोलाहल सु(णे)णित्ता भणइ, सेस जहा चुलणिपियावत्तव्वया, नवरं अरुणभूए विमाणे उव(वाओ)वन्ने, जाव महाविदे(ह)हे वासे सिज्झि-

समणोवासएण सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणी विहरइ । तए ण सा रेवई गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु मुच्छिया जाव अज्झोववन्ना बहुविहेहिं मंसेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च मज्जं च सीधुं च पसन्नं च आसाएमाणी ४ विहरइ ॥ ६२ ॥ तए णं रायगिहे नयरे अन्नया कयाइ अमा(रि)घाए घुट्ठे यावि होत्या । तए ण सा रेवई गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु मुच्छिया ४ कोलघरिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'तुब्भे (णं) देवाणुप्पिया ! म(म)म कोलघरिएहिंतो (गो)वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे दुवे गोणपोयए उद्दवेह, उद्दवेत्ता मम्मं उवणेह । तए ण (ते) कोल-घरिया पुरिसा रेव-ईए गाहावइणीए 'तह'त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसु(णे)णन्ति, पडिसुणेत्ता रेवईए गाहावइणीए कोलघरिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे दुवे गोणपोयए वहेन्ति, वहेत्ता (तं) रेवईए गाहावइणीए उवणेन्ति । तए ण सा रेवई गाहावइणी तेहिं गोणमंसेहिं सोल्लेहि य ४ सुरं च ६ आसाएमाणी ४ विहरइ ॥ ६३ ॥ तए ण तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-जाव भावेमाणस्स चो(चउ)द्दस संवच्छरा वइक्कन्ता । एवं तहेव जे(ट्ठ)ट्ठ पुत्त ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता-ण विहरइ । तए णं सा रेवई गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्मायजणणाइं सिङ्गारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी २ महासययं समणोवासयं एवं वयासी–'हं भो महासय(गा)या ! समणोवासया ! धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकङ्खिया ४ धम्मपिवासिया ४ किण्(किं)ण तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा [?] जण्णं तुमं मए सद्धिं उरालाइं जाव भुञ्जमाणे नो विहरसि(?)' । तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ । तए ण सा रेवई गाहावइणी महासययं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–'हं भो ! (म० स०) तं चेव भणइ, सो-ऽ वि तहेव जाव अणाढायमाणे अपरियाणमाणे विहरइ । तए ण सा रेव-ई गाहावइणी महासयएण समणोवासएण अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दि-सिं पाउब्भूया तामेव दि-सिं पडिगया ॥ ६४ ॥ तए णं से महासयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता-णं विहरइ । पढमं अहासुत्तं जाव एक्का-रस-ऽ-वि । तए ण से महासयए समणोवासए तेणं उरालेण, जाव किसे धम-णिसन्तए जाए । तए ण तस्स महासययस्स समणोवासयस्स अन्नया कया(इ)इं

पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स (इमेयारूवे) अयं अज्झत्थिए ४-
'एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं जहा आणन्दो तहेव अपच्छिममारणन्तियसंलेहणा-
(ए झो)झूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ। तए णं
तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स सुभेणं अज्झवसाणेणं(परिणामे)णं जाव खओव-
समेणं ओहिनाणे समुप्पन्ने। पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयण(स)हा(स्स)सियं खे(त्तं)
जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं वासहरपव्वयं
जाणइ पासइ, अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउ(च्चो)रासी[इ]-
वाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ ॥ ५५ ॥ तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्नया कयाइ
मत्ता जाव उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए समणो-
वासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासययं तहेव भणइ, जाव दोच्चं-पि
तच्चं-पि एवं वयासी-'हं भो तहेव। तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए
गाहावइणीए दोच्चं-पि तच्चं-पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ४ ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता
ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी-'हं भो रेव(इ)ई!
अपत्थियपत्थिए ४ एवं खलु तुमं अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभि-
भूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रय-
णप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासी(इ)वाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए
उववज्जिहिसि'। तए णं सा रेवई गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं एवं
वुत्ता समाणी (भीया) एवं वयासी-'रुट्ठे णं ममं महासयए समणोवासए, हीणे णं
ममं महासयए समणोवासए, अवज्झाया णं अहं महासयएणं समणोवासएणं, न
नज्जइ णं अहं केणवि कुमारेणं मारिज्जिस्सामि'त्ति-कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा
संजायभया सणियं २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता ओहय[ ]जाव झियाइ। तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्तो सत्तरत्तस्स
अलसएणं वाहिणा अभिभूया अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्प-
भाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीइवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए
उववन्ना ॥ ५६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे, समोसरणं,
जाव परिसा पडिगया। 'गोयमा'-इ समणे भगवं महावीरे एवं वयासी-'एवं
खलु गोयमा! इहेव रायगिहे नयरे ममं अन्तेवासी महासयए नामं समणोवासए
पोसहसालाए अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाए झूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए
कालं अणवकंखमाणे विहरइ। तए णं तस्स महासयगस्स रेवई गाहावइणी मत्ता
जाव विक(ड्ढ)ड्ढमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता मोहुम्माय[ ]जाव एवं वयासी-तहेव जाव दोच्चं-पि तच्चं-पि एवं वयासी

ए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एव वुत्ते
माणे आसुरुत्ते ४ ओहिं पउजइ, पउजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवइ
ाहावइणिं एव वयासी–जाव 'उववज्जिहिसि'। नो खलु कप्पइ गोयमा! समणो-
ासगस्स अपच्छिम[०]जाव झूसियसरीरस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं
च्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकन्तेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं
ागरणेहिं वागरित्तए, त गच्छ(ह)ग देवाणुप्पिया! तुमं महासयय समणोवासय
एवं वयाहि–नो खलु देवाणुप्पिया! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम–जाव
भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं जाव वागरित्तए। तुमे य ण देवाणुप्पिया!
रेवई गाहावइणी सतेहिं ४ अणिट्ठेहिं ५ वागरणेहिं वागरिया, त णं तुम एयस्स
ठाणस्स आलोएहि जाव जहारिहं च पायच्छित्त पडिवज्जाहि'। तए ण से भगव
गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तह'त्ति एयमट्ठ विणएण पडिसुणेइ,
पडिसुणेत्ता तओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता रायगिहं न(ग)यरं मज्झंमज्झेण
अणुप्पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव महासयगस्स समणोवासयस्स गिहे जेणेव
महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ। तए ण से महासयए (समणोवासए)
भगव गोयम एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ(ट्ठे) जाव हियए भगव गोयम वन्दइ
नमसइ। तए ण से भगव गोयमे महासयय समणोवासय एव वयासी–'एवं खलु
देवाणुप्पिया! समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ–नो
खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! समणोवासगस्स अपच्छिम जाव वागरित्तए, तुमे णं
देवाणुप्पिया! रेवई गाहावइणी सन्तेहिं जाव वागरि(या)आ, त ण तुम देवाणु-
प्पिया! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि'। तए ण से महासयए
समणोवासए भग(वं)वओ गोयमस्स 'तह'त्ति एयमट्ठ विणएण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता
तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव अहारिह च पायच्छित्त पडिवज्जइ। तए ण से
भगव गोयमे महासयगस्स समणोवासयस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमइ, पडि-
निक्खमित्ता रायगिह नगरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे
भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं वंदइ
नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सजमे(ण)ण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। तए ण
समणे भगव महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडि-
निक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥ ६७॥ तए ण से महासयए समणो-
वासए बहूहिं सील जाव भावेत्ता वीस वासाइं समणोवास-यपरिया(ग)य पाउणित्ता
एक्कारस उवासगपडिमाओ सम्मं काए-ण फासित्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाणं
झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे

कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणवडिंसए विमाणे देवत्ताए उववन्ने। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ ६८ ॥ निक्खेवो ॥ सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥

नवमस्स उक्खेवो। एवं खलु जम(बु)बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी। कोट्ठ(य)ए उज्जाणे। जियसत्तू राया। तत्थ णं सावत्थीए नयरीए नंदिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे। चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वुड्ढिपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं। अस्सिणी भारिया। सामी समोसढे। जहा आणन्दो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ। सामी बहिया (विहारं) विहरइ। तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए जाए जाव विहरइ। तए णं तस्स नंदिणीपियस्स समणोवासयस्स बहूहिं सीलव्वयगुण[ ] जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वइक्कन्ताइं। तहेव जेट्ठं पुत्तं ठवेइ, धम्मपण्णत्तिं वीसं वासाइं परियागं नाणत्तं अरुणगवे विमाणे उववाओ। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ ६९ ॥ निक्खेवो ॥ सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं नवमं अज्झयणं समत्तं ॥

दसमस्स उक्खेवो। एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी। कोट्ठए उज्जाणे। जियसत्तू राया। तत्थ णं सावत्थीए नयरीए सालिहीपिया नामं गाहावई परिवसइ। अड्ढे दित्ते। चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडीओ वुड्ढिपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ। चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं। फग्गुणी भारिया। सामी समोसढे। जहा आणन्दो त(ह)हेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, जहा कामदेवो तहा जेट्ठं पुत्तं ठवे(इ)त्ता पोसहसालाए समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ। नवरं निरुवसग्गाओ एक्कारस-वि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ। एवं कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववन्ने। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ ७० ॥ नि( )॥ सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दसमं अज्झयणं समत्तं ॥

दसण्ह-वि पण्णरसमे संवच्छरे वट्टमाणाणं चिन्ता। दसण्ह-वि वीसं वासाइं समणोवासयपरियाओ। एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ ७१ ॥ उवासगदसाओ समत्ताओ। उवासगदसाणं सत्तमस्स अंगस्स एगो सुयक्खन्धो दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जन्ति तओ सुयक्खन्धो समुद्दिसिज्जइ अणुण्णविज्जइ दोसु दिवसेसु, अंगं तहेव ॥

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं

अंतगडदसाओ

[पढमो वग्गो]

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं न(ग)यरी (हो० व० तत्थ णं चं० न० उ० दि० ए०) पुण्णभद्दे (णा०) उज्जाणे (हो०) वण्णओ, (ती० च० न० को० ना० ए० हो० म० हि० व०) तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मे (थे० जाव पं० अ० स० सं० पु० च० गा० सु० वि० जे० च० न० जे० पु० उ० ते०) समोसरि(ते)ए परिसा निग्ग(ता)या जाव पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू जाव पज्जुवास(माणे)इ, एवं व(दासि)यासी-ज-(ति)इ णं भंते ! समणेणं (भ० म०) आ(इग)दिकरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स णं भंते ! अंगस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पण्णत्ता, जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं०-'गोयम-समुद्द-सागर-गंभीरे चेव होइ थिमिए य । अयले कंपिल्ले खलु अक्खोभ पसेण(ती)इ(वण्ही)विण्हू ॥ १ ॥' जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता (तं० गो० जाव वि०) पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई-नामं नयरी होत्था, दुवालसजोयणायामा नवजो(अ)यणवित्थिण्णा धणवइम-इणिम्माया चामीकरपागारा नाणामणिपंचवण्णकविसीसग(परि)मंडिया सुरम्मा अल-कापुरिसंकासा पमुदियपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासा(दी)दिया ४, तीसे णं

चौथे नियमसे मालूम होता है कि इसके पहले वे पात्रमें भोजन लेते थे जैसा कि दिगम्बर सम्प्रदायमें ग्यारहवीं प्रतिमाधारी (क्षुल्लक) लिया करते हैं। पीछेसे पात्रमें भोजन लेना बन्द किया और हाथमें ही भोजन लेने लगे। दिगम्बर सम्प्रदायके मुनि इसी प्रकार आहार लेते हैं। परन्तु इस प्रकारके आहारसे उद्दिष्ट-त्यागका पालन कठिन हो जाता है। महावीर तो उग्र तपस्वी थे इसलिये वे इसका पालन कर सके, परन्तु जब संघ-रचना हो गई तब इसका पालन करना कठिन ही था। इसलिये अनेक पुष्पोंसे भ्रमरके समान अनेक गृहोंसे भिक्षा लेनेका नियम बनाया गया, जो कि आज श्वेताम्बर सम्प्रदायमें प्रचलित है। आहार लेनेकी ये दोनों प्रथायें म० महावीरके समयकी ही मालूम होती हैं।

इनमेंसे कुछ नियम ऐसे हैं जो महात्माने अपनी साधकावस्थाके लिये ही बनाये थे, पीछेसे संघके लिये अनुकूल समझकर समस्त संघके लिये बना दिये गये। और कुछ नियम ऐसे भी थे जो संघके लिये अनिवार्य नहीं समझे गये। दूसरा नियम इसी तरहका है। इस तरह जैनधर्मके वर्तमान ढाँचेके बीज हमें म० महावीरके जीवनमें मिलते हैं, यद्यपि सभी बीजोंका मिलना मुश्किल है।

तापसाश्रमसे निकलकर म० महावीर अस्थिक* ग्राम पहुँचे। वहाँके

*इस गाँवका दूसरा नाम वर्द्धमान बताया जाता है। काठियावाड़में बढ़वाण नामका शहर है, जहाँ शूलपाणि यक्षका मंदिर भी है, परन्तु इसका और अस्थिक ग्रामका कोई सम्बन्ध नहीं जान पड़ता। जिस तापसाश्रममें म० महावीरने चौमासा करनेका विचार किया था वह मगधमें ही था। किसी निराकुल स्थानकी खोजमें चौमासेमें भगवान काठियावाड़ तक जायँ यह असम्भव है। मगधसे काठियावाड़ तक जानेमें तो चौमासा ही व्यतीत हो जाता। चौमासेके बाद

खलु जंबू ! समणेण जाव संपत्तेण अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढम[स्स]व-ग्ग[स्स]पढम[स्स]अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एवं जहा गोयमो तहा सेसा वण्ही पिया धारिणी माया समुद्दे सागरे गंभीरे थिमिए अयले कंपिल्ले अक्खोभे पसेणई वि(ण्हुए)ह्न एए एगगमा, पढमो वग्गो दस अज्झयणा पण्णत्ता ॥ २ ॥

[दोच्चो वग्गो]

जइ दोच्चस्स वग्गस्स[०] उक्खेवओ, तेणं कालेणं तेणं समएणं बा-रवईए नय-रीए वण्ही पिया धारिणी माया—अक्खोभसागरे खलु समुद्दहिमवंत-अ(य)चलनामे य। धरणे य पूरणे-वि य अभिचंदे चेव अट्ठमए ॥ १ ॥ जहा पढ(मो)मे वग्(गो)गे तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा, गुणरय(ण)णं तवोकम्मं, सोलस-वासाइं परियाओ, सेत्तुंजे मासियाए संलेहणाए (जाव) सि(द्धे)द्धी (०) ॥ ३ ॥

[तच्चो वग्गो]

जइ तच्चस्स[०] उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! (स० जाव सं० अ० अ०) तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं०—अणीयसे(ण) अणंतसेणे [अजियसे-णे] अणिहय(वि)रि(उ)ऊ देव(जसे)सेणे सत्तुसेणे सारणे गए सुमुहे दुम्मुहे कूवए दारुए अणादिट्ठी। जइ णं भंते ! समणेण जाव संपत्तेण (०) तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अज्झयणा प० (त० अ० जाव अ०) तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढम-अज्झयणस्स अंतगडदसाणं (०) के अट्ठे प०? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नामं न(य)गरे होत्था (रि०) वण्णओ, तस्स णं भद्दि-लपुरस्स (न०) उत्तरपुर(त्थि)च्छिमे दिसीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था वण्णओ, जियसत्तू राया, तत्थ णं भद्दिलपुरे न-यरे नागे नामं गाहावई होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था सू(सु-कु)माला जाव सुरूवा, तस्स णं नागस्स गाहावइस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीय(ज)से-नामं कुमारे होत्था सूमाले जाव सुरूवे पंचधाइपरिक्खित्ते तं०—खीर-धाई[०] जहा दढपइण्णे जाव गिरि० सुहंसुहेणं परिवड्ढइ, तए णं तं अ(णि)णीयसं कुमारं सा(इ)तिरेगअट्ठवासजायं अम्मापियरो कलायरिय[०] जाव[०] भोगसमत्थे जाए यावि होत्था, तए णं तं अणीयसं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जा(णे)णित्ता अम्मा-पियरो सरि[सियाणं] जाव बत्तीसाए इब्भवरकण्णगाणं एगदिवसे पाणिं गेण्हावेंति, तए णं से नागे गाहावई अणीयसस्स कुमारस्स इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ तं०—बत्तीसं हिरण्णकोडीओ[०] जहा म(हब्)हाबलस्स जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्ट० विहरइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठ[णेमी] जाव समोसढे सिरि-

अ(ज्झ)त्थिए एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं तं चेव जाव निग्ग-च्छसि २ त्ता जेणेव ममं अंतियं हव्वमागया से नूणं देवई! अ(ट्ठे)ट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि। एवं खलु देवाणुप्पिए! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे। तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था। सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव ने(नि)मित्तिएणं वागरिया—एस णं दारिया निंदू भविस्सइ। तए णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाणसुस्सूसए हरिणेगमेसी देवे आराहिए यावि होत्था। तए णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपण(ट्ठा)ट्ठाए सुलसं गाहावइणिं तुमं च (णं) दो वि समउउयाओ करेइ, तए णं तुब्भे दो वि सममेव गब्भे गिण्हह सममेव गब्भे परिवहह सममेव दारए पयायह, तए णं सा सुलसा गाहावइणी विणिहायमावन्ने दारए पया(इ)यइ, तए णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए अणुकंपणट्ठाए विणिहायमावन्नए दारए करयलसंपुडेणं गेण्हइ २ त्ता तव अंतियं साहरइ (२) तं समयं च णं तुमं पि नवण्हं मासाणं सुकुमालदारए पसवसि जे वि (य) य णं देवाणुप्पिए! तव पुत्ते ते वि य तव अंतियाओ करयलसंपुडेणं गेण्हइ २ त्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरइ, तं तव चेव णं देव(इ)ई! एए पुत्ता णो चेव सुलसाए गाहावइणीए, तए णं सा देवई देवी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियया अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ [२ त्ता] ते छप्पि अणगारे वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता आगयपण्(ह)हया पप्फुयलोयणा कंचुयपरिक्खित्तया दरियवलयबाहा धाराहयकलंबपुप्फगं पिव समूससियरोमकूवा ते छप्पि अणगारे अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी २ सुचिरं निरिक्खइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता जेणेव अ(रि)रहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहि(णं)णपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता तमेव धम्मियं जाणं दु(रु)रूहइ २ त्ता जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवा-गच्छइ २ त्ता बारवइं नयरिं अणुप्पविसइ २ त्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ २ त्ता जेणेव सए वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयंसि सयणि-ज्जंसि निसीयइ, तए णं तीसे देवईए देवीए अयं अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने—एवं खलु अहं सरिसए जाव नलकुब्बरसमाणे सत्त पुत्ते पयाया नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणए समणुब्भूए, एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छइ, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जासिं मन्ने णियगकुच्छि

त्ता सत्तट्ठ-पयाइ (अ० २ त्ता) तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता जेणेव भत्तघ(रे)रए तेणेव उवाग(च्छइ २ त्ता)या सीहकेसराणं मोयगाण थालं भरेइ (०) ते अणगारे पडिलाभेइ (०) वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता पडिविसज्जेइ, त(दा)याणतरं च णं दोच्चे संघाडए बारवईए (न०) उच्च[०] जाव विसज्जेइ, तयाणतरं च णं तच्चे संघाडए बारवईए नयरीए उच्च जाव पडिलाभेइ २ त्ता एवं वयासी-किण्ण देवाणुप्पिया! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए (दु०) नवजोयण० पच्चक्खदेवलोगभूयाए समणा निग्गंथा उच्च-जाव अडमाणा भत्तपाणं नो लभंति (?) जण्णं ताइं चेव कुलाइं भत्तपाणाए भुज्जो २ अणुप्पविसंति ?, तए णं ते अणगारा देवइं देविं एवं वयासी-नो खलु देवा०! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए जाव देवलोगभूयाए समणा निग्गंथा उच्च-जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति नो [ज] चेव णं ताइं ताइं कुलाइं दोच्चं-पि तच्चं पि भत्तपाणाए अणुपविसंति, एवं खलु देवाणुप्पि०! अम्हे भद्दिलपुरे नयरे नागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए अत्तया छ भायरो सहोदरा सरिसया[०] जाव नलकुब्बरसमाणा अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा-संसारभउव्विग्गा भीया जम्म-(ण)मरणाणं मुंडा जाव पव्वइया, तए णं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वइया तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठणेमिं वंदामो नमंसामो वं० २ त्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हामो-इच्छामो णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जाव अहासुहं०, तए णं अम्हे अरहओ (अ०) अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरामो, तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसिए जाव अडमाणा तव गेहं अणुप्पविट्ठा, तं नो खलु देवाणुप्पिए! ते चेव णं अम्हे, अम्हे णं अण्णे-देवइं देविं एवं वदंति २ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया, (तए णं) तीसे देवईए (देवीए) अयमेयारूवे अ(ब्भ)ज्झत्थिए ४ समुप्पण्णे, एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेण कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिया तुमण्णं देवाणुप्पिए! अट्ठ पुत्ते पयाइस्ससि सरिसए जाव नलकुब्बरसमाणे नो चेव णं भरहे वासे अण्णाओ अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्संति तं णं मिच्छा, इमं णं पच्चक्खमेव दिस्सइ भरहे वासे अण्णाओ-वि अम्मयाओ (खलु) एरिसे जाव पुत्ते पयायाओ, तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठणेमिं वंदामि (न० वं०) २ त्ता इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामीतिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसा सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी लहुकरणप्पवरं[०] जाव उवट्ठवेंति, जहा देवाणंदा जाव पज्जुवासइ,-ते अरहा अरिट्ठणेमी देवइं देविं एवं वयासी-से नूणं तव देवई! इमे छ अणगारे पासेत्ता अयमेयारूवे

सभूययाइं थणदुद्धलुद्धयाइ महुरसमुल्लावयाइ ममण(प)जपियाइं थणमूलकक्खदेस-भाग अभिसरमाणाइ मुद्धयाइ पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं (गेण्हंति) गिण्हि-ऊण उच्छगि णिवेसियाइ देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो २ मजुलप्पभणिए अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो ए(क)क्कतरमपि न पत्ता, ओहय० जाव झियायइ। इम च णं कण्हे वासुदेवे ण्हाए सव्वालकारविभूसिए देवईए देवीए पायवदए हव्वमागच्छइ, तए णं से कण्हे वासुदेवे देवइ देविं० पासइ २ त्ता देवईए देवीए पायग्गहण करेइ २ त्ता देवई देवीं एव वयासी–अण्णया णं अम्मो! तुब्भे ममं पासेत्ता हट्ठ जाव भवह, किण्ण अम्मो! अज्ज तुब्भे ओहय[०] जाव झियायह?, तए ण सा देवई देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी–एव खलु अह पुत्ता! सरिसए जाव समाणे सत्त-पुत्ते पयाया नो चेव णं मए एगस्स-वि बालत्तणे अणुब्भूए तुम-पि(य)णं पुत्ता! मम छण्ह २ मासाण मम अंतियं पादवदए हव्वमागच्छसि त धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव झियामि, तए ण से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं एवं वयासी–मा णं तुब्भे अम्मो! ओहय-जाव झियायह अहण्ण तहा घ(त्ति)इस्सामि जहा णं ममं सहोदरे कणीयसे भाउए भविस्सतीतिकट्टु देवइ देविं ताहिं इट्ठाहिं (क० जाव) वग्गूहिं समासासेइ (२) तओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जहा अभओ नवर हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हइ जाव अजलिं कट्टु एव वयासी–इच्छामि णं देवाणुप्पिया! सहोदरं कणीयस भाउय विदिण्ण, तए णं से हरिणेगमेसी (देवे) कण्ह वासुदेव एवं वयासी–होहिइ ण देवाणुप्पिया! तव देवलोयचुए सहोदरे कणीयसे भाउए से ण उम्मुक्क[०] जाव अणुप्पत्ते अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिय मुंडे जाव पव्वइस्सइ, कण्ह वासुदेव दोच्च पि तच्चं-पि एव वदइ २ त्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए, तए ण से कण्हे वासुदेवे पोसहसालाओ पडिणि० जेणेव देवई देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता देवईए देवीए पायग्गहण करेइ २ त्ता एव वयासी–होहिइ ण अम्मो! म(मं)म सहोदरे कणीयसे (भाउ-ए)त्तिकट्टु देवइ देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ २ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। तए ण सा देवई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगसि जाव सीहं सुमिणे पासेत्ता पडिबुद्धा जाव पाढया हट्ठ(तु०)हियया (तं ग० सु०) परिवहइ, तए णं सा देवई देवी नवण्ह मासाण जासु(म)मिणारत्तयबुजीवयलक्खारससरसपारिजातकतरुणदिवायरसमप्पभं सव्वणयणकत सुकुमालं जाव सुरूव गयतालुयसमाण दारय पयाया जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव जम्हा ण अम्ह इमे दारए गयतालुसमाणे त होउ ण अम्ह एयस्स दारगस्स नामधेज्जे गयसुकुमाले (२), तए

रस्स तं उज्जलं जाव अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थज्झवसाणेणं त(दा)वरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणु[प]विट्ठस्स अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने तओ पच्छा सिद्धे जाव प्पहीणे। तत्थ णं अहासंनिहिएहिं देवेहिं सम्मं आराहियंतिकट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए चेलुक्खेवे कए दिव्वे य गीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था। तए णं से कण्हे वासुदेवे कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते ण्हाए सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सको(र)रेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धु(व्व)व्वमाणीहिं महया भडचडगरपहकरवंदपरिक्खित्ते बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणे ए(गं)कं पुरिसं पासइ जुण्णं जराजज्जरियदेहं जाव (किलंतं) महइमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय बहियारत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं पासइ, तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिखंधवरगए चेव एगं इट्टगं गेण्हइ २ त्ता बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसेइ, तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाए इट्टगाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं से महालए इट्टगस्स रासी बहिया रत्थापहाओ अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए, तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागए २ त्ता जाव वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी—कहिं णं भंते! से ममं सहोदरे कणीयसे भाया गयसुकुमाले अणगारे (?) जा(ज)णं अहं वंदामि नमंसामि [?], तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—साहिए णं कण्हा! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे, तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी—कहण्णं (भंते!) गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे? तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा! गयसुकुमाले णं (अणगारे णं) ममं कल्लं पुव्वावरण्हकालसमयंसि वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी—इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ २ त्ता आसुरुत्ते ५ जाव सिद्धे, तं एवं खलु कण्हा! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे, तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी—(केस) से णं भंते! से पुरिसे अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए (?) जेणं ममं सहोय(द)रे कणीय(स)से भाय(र)रे गयसुकुमाल(लं)े अणगा(र)रे अकाले चेव

मिस्स अतिए जाव पव्वइत्तए, तए ण त गयसुकुमाल कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो सचाए० बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए ताहे अकामाइ चेव एव वयासी–त इच्छामो ण ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए निक्खमण जहा महावलस्स जाव तमाणाए तहा[०]तहा जाव सजमइ, से गयसुकुमाले अणगारे जाए ई(इ)रिया(०) जाव[०]गुत्तबंभयारी, तए ण से गयसुकुमा(रे)ले(अ०) ज चेव दिवस पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अरह अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण० वदइ नमसइ व० २ त्ता एव वयासी–इच्छामि ण भते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे महाकालसि सुसाणसि एगराइयं महापडिम उवसपज्जित्ता ण विह(रे)रित्तए, अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिवध करेह, तए ण से गयसुकुमाले अणगारे अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाए समाणे अरह अरिट्ठणेमिं वदइ नमसइ व० २ त्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अति० सह–सववणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवागए २ त्ता थडिल्ल पडिलेहेइ २ त्ता (उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ २ त्ता) ई(सिं)सिपब्भारगएण काएण जाव दो-वि पाए साहट्टु एगराइ महापडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ, इम च ण सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्ठाए वा-रवईओ नयरीओ वहिया पुव्वणिग्गए समिहाओ य दब्भे य कुसे य पत्तामोड च गेण्हइ २ त्ता तओ पडिणियत्तइ २ त्ता महाकालस्स सुसाणस्स अदूर-सामतेण वीईवयमाणे (२) सझाकालसमयसि पविरलमणुस्ससि गयसुकुमाल अणगारं पासइ २ त्ता त वेरं सरइ २ त्ता आसुरुत्ते ५ एव वयासी–एस ण भो! से गय(सू)सुकुमाले कुमारे अ(प)पत्थिय जाव परिवज्जिए, जे ण मम धूय सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोम दारिय अदिट्ठदोसपइय कालवत्तिणिं विप्पजहेत्ता मुडे जाव पव्वइए, त सेय खलु मम गयसुकुमालस्स कुमारस्स वेरनिज्जायण करेत्तए, एव सपेहेइ २ त्ता दिसापडिलेहण करेइ २ त्ता सरसं मट्टिय गेण्हइ २ त्ता जेणेवं गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता ग(ज)य सुकुमालस्स कुमा(अणगा)रस्स मत्थए मट्टियाए पालिं वधइ २ त्ता जलतीओ चियगाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे ख(य)इरंगारे कहल्लेण गेण्हइ २ त्ता गय-सुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ २ त्ता भीए ५ तओ खिप्पामेव अवक्कमइ २ त्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए, तए ण (से) तस्स ग-य-सुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, तए ण से गय-सुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसा-वि अप्पदुस्समाणे त उज्जल जाव अहियासेइ, तए ण तस्स गय-सुकुमालस्स अणगा-

जीवियाओ ववरोविए [?], तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–मा (णं) कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स पदोसमावज्जाहि, एवं खलु कण्हा ! तेण पुरिसेण गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे, कहण्णं भंते ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स णं सा(हे)हिज्जे दिण्णे ?, तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–से नूणं कण्हा ! ममं तुमं पायवंदए हव्वमागच्छमाणे बारवईए नयरीए (एगं) पुरिसं पाससि जाव अणु-प्पविसिए, जहा णं कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिण्णे एवमेव कण्हा ! तेण पुरिसेण गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभवसयसहस्ससंचियं कम्मं उदीरेमाणेण बहुकम्मणिज्जरत्थं साहिज्जे दिण्णे, तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं एवं वयासी–से णं भंते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे ?, तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–जे णं कण्हा ! तुमं बारवईए नयरीए अणुपविसमाणं पासेत्ता ठियए चेव ठिइभेएणं कालं करिस्सइ तण्णं तुमं जा(णे)णिज्जासि एस णं से पुरिसे, तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता जेणेव आभिसे(ये)यं हत्थिरय(णे)णं तेणेव उवागच्छइ २ त्ता हत्थिं दु-रूहइ २ त्ता जेणेव बारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, (तए णं) तस्स सोमिलमाहणस्स कल्लं जाव जलंते अयमेयारूवे अ-ज्झत्थिए ४ समुप्पण्णे–एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं पायवंदए निग्गए तं नायमेयं अरहया विण्णायमेयं अरहया सुयमेयं अरहया सि(द्ध)ट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स, तं न नज्जइ णं कण्हे वासुदेवे ममं केणवि कुमारेण मारिस्सइत्तिकट्टु भीए ४ सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, कण्हस्स वासुदेवस्स बा-रवइं नयरिं अणु-प्पविसमाणस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसिं हव्वमागए, तए णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीए ४ ठि(ए य)यए चेव ठिइभेयं कालं करेइ धरणि(त्त)तलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति सण्णिवडिए, तए णं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासइ २ त्ता एवं वयासी–एस णं (भो) देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अ पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जे(ण)णं ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए[ति]त्तिकट्टु सोमिलं माहणं पाणेहिं कड्ढावेइ २ त्ता तं भूमिं पाणिएणं अब्भोक्खावेइ २ त्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए सयं गिहं अणु-प्पविट्ठे, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ ६ ॥ नवमस्स (उ) उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए जहा पढमए जाव विहरइ, तत्थ णं बारवईए–बलदेवे नामं राया होत्था वण्णओ, तस्स

लोगोंसे जगह माँगी। लोगोंने कहा—"यहाँ एक यक्ष रहता है वह किसीको रहने नहीं देता। जो रहता है उसे मार डालता है। आपको रहना है तो आप अमुक जगह रह सकते हैं। परन्तु यक्षके यहाँ रहना तो किसी तरह ठीक नहीं।" परन्तु वे यहीं रहे। रात्रिमें म० महावीरको यक्षने अनेक प्रकारके कष्ट दिये। परन्तु वे न तो घबराये, न चिल्लाये, न उसपर क्रोध किया। इस बातका यक्षके ऊपर इतना असर हुआ कि वह पानी पानी हो गया और महात्मा महावीरके चरणोंपर गिरकर अपनी दुष्प्रवृत्तिका पश्चात्ताप करने लगा। महात्माने उसको उपदेश दिया— 'तू आत्माको पहिचान। अपने समान तू किसी प्राणीको कष्ट न दे। किये हुए पापोंकी निन्दा कर। क्योंकि किये हुए पापका फल करोड़ों गुणा मिलता है।' म० इस ग्राममें चार मास रहे। फिर कभी इस ग्राममें यक्षका उपद्रव नहीं हुआ। जब महात्मा यहाँसे जाने लगे तब यक्षने म० महावीरसे माफी माँगी और पश्चात्ताप प्रकट किया।

पुराने ज़मानेमें यक्ष आदिके नामसे लोग बहुत डरते थे। लोगोंकी इस कमजोरीका उपयोग अनेक लोग किया करते थे। कभी कभी ऐसा होता था कि किसी ग्रामके सब आदमी किसी एक व्यक्तिको बहुत तंग करते थे और जब वह सब तरहसे तंग हो जाता था या

हम म० महावीरको फिर मैराक गाँवमें देखते हैं। इसलिये काठियावाड़ तक जाना और भी असम्भव हो जाता है। मालूम होता है कि अस्थिक ग्रामके बड़की घटनाको चमत्कारपूर्ण बनाने के लिये अस्थिक ग्रामका दूसरा नाम वर्धमान बना दिया गया है। सम्भव है अस्थिक ग्रामके वर्धमान नाम भी इसी कारण प्रचलित कर दिया गया हो।

अट्ठे प० ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेण समएण बारवई-नगरी-जहा पढमे जाव कण्हे वासुदेवे आहेवच्च जाव विहरइ, तस्स ण कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई ना(म)म देवी हो(हु)त्था वण्णओ, तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे जाव विहरइ, कण्हे वासुदेवे निग्गए जाव पज्जुवासइ, तए ण सा पउमाव(इ)ई देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा (समाणी) हट्ठ० जहा देवई जाव पज्जुवासइ, तए णं अ-रहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए (दे०) य धम्मकहा परिसा पडिगया, तए ण कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमिं वदइ नमसइ व० २ त्ता एव वयासी-इमीसे ण भते ! बारवईए न गरीए-नवजोयण[०] जाव देवलोगभूयाए किमूलाए विणासे भविस्सइ ? कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु कण्हा ! इमीसे बा-रवईए नयरीए-नवजोयण-जाव[०] भूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ, (तए ण) कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए ए(यमट्ठ)य सोच्चा निसम्म (अ०) एय अब्भत्थिए ४-धण्णा ण ते जालिमयालि(उ०)पुरिससेण-वारिसेणपज्जुण्णसवअणिरुद्धदढणेमिसच्चणेमिप्पभियओ कुमारा जे ण (च्चिा) चइत्ता हिरण्ण जाव परिभा(ए)इत्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिय मुडा जाव पव्वइया, अहण्ण अधण्णे अकयपुण्णे रज्जे य जाव अतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए ४ नो सचाएमि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स जाव पव्वइत्तए, कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठ-णेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी-से नूण कण्हा ! तव अयम-ब्भत्थिए ४-धण्णा ण ते जाव पव्वइत्तए, से नूण कण्हा ! अ(यम)ट्ठे समट्ठे ? हता अत्थि, त नो खलु कण्हा ! त एव भू(य)त वा भव्व वा भविस्सइ वा जण्ण वासुदेवा चइत्ता हिरण्ण जाव पव्व-इस्सति, से के-ण [अ]ट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ-न ए(व)य भूय वा जाव पव्व-इस्सति ? कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु कण्हा ! सव्वे-वि य ण वासुदेवा पुव्वभवे नि-दाणगडा, से ए(ए)तेणट्ठेणं कण्हा ! एव वुच्चइ-न एय भूयं० पव्वइस्संति, तए ण से कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमिं एव वयासी-अह ण भते ! इ(ओ)तो कालमासे काल किच्चा कहिं गमिस्सामि (?) कहिं उववज्जिस्सामि ?, तए ण अ-रहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु कण्हा ! बारवईए नयरीए सुरग्गिदीवायण(कुमार)कोवनि(द)दड्ढाए अम्मापिइनियगविप्पहूणे रामे(ण)ण बल-देवे-ण सर्द्धि दाहिणवेयालिं अभिमुहे जो(जु)हिट्ठिल्लपामोक्खाणं पंचण्ह पडवाण पंडुरायपुत्ताण पास पडुमहुरं सपत्थिए कोसववणकाणणे नग्गोहवरपायवस्स अ(धे)हे पुढविसिलापट्टए पीयवत्थपच्छाइयसरीरे ज(र)राकुमारेण तिक्खेणं कोदडविप्पमुक्केणं इसुणा वामे पा(ये)दे विद्धे समाणे कालमासे काल किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए

णं बलदेवस्स रण्णो धारिणी-नामं देवी होत्था वण्णओ। तए णं सा धारिणी सीहं सुमिणे जहा गोयमे नवरं सुमुहे नामं कुमारे पण्णासं कण्णाओ पण्णासओ दाओ चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ वीसं वासाइं परियाओ सेसं तं चेव (जाव) सेत्तुंजे सिद्धे निक्खेवओ। एवं दुम्मुहे-वि कूव(दार)ए-वि तिण्णिवि बलदेवधारिणीसुया दारुए-वि एवं चेव, नवरं वा(व)सुदेवधारिणीसुए। एवं अणा(धि)द्दिट्ठी-वि वासुदेवधारिणीसुए, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ ७ ॥

[चउत्थो वग्गो]

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं (-णं) तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते चउत्थस्स (णं भं व ग्ग स्स जाव सं) के अट्ठे पण्णत्ते! एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स (णं) दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं०-जालिमयालिउवया(लि)ली पुरिससेणे य वारिसेणे य। पज्जुण्णसंबअनिरुद्धे सच्चनेमी य दढनेमी (य) ॥ १ ॥ जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं (भं) अज्झयणस्स (स०-जाव सं) के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं बा-रवई (बा) नयरी (हो), जहा पढमे कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरइ, तत्थ णं बारवईए नयरीए वसुदेवे राया [तस्स णं वसुदेवस्स रण्णो] धारिणी [नामं देवी होत्था] वण्णओ जहा गोयमो नवरं जालिकुमारे पण्णासओ दाओ बारसंगी सोलस-वासा परियाओ सेसं जहा गोयमस्स जाव सेत्तुंजे सिद्धे। एवं मयाली-वी उवयाली-वी पुरिससेणे य वारिसेणे य। एवं पज्जुण्णे-वि-त्ति नवरं कण्हे पिया रुप्पिणी माया। एवं संबे-वि नवरं जंबवई माया। एवं अनिरुद्धे-वि, नवरं पज्जुण्णे पिया वेदब्भी माया। एवं सच्चनेमी, नवरं समुद्दविजए पिया सिवा माया (एवं) दढनेमी-वि सव्वे एगगमा चउत्थ(स्स) वग्गस्स निक्खेवओ ॥ ८ ॥

[पंचमो वग्गो]

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पंचमस्स (णं भं) वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं -पउमावई य गोरी गंधारी लक्खणा सुसीमा य। जंबव(ई)सच्चभामा रुप्पिणिमूलसिरि(री)मूलदत्ता-वि ॥ १ ॥ जइ णं भंते! [समणेणं जाव संपत्तेणं] पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा प पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स-के

अट्ठे प० ? एवं खलु जंबू! तेण कालेण तेण समएणं बारवई-नगरी-जहा पढमे जाव कण्हे वासुदेवे आहेवच्च जाव विहरइ, तस्स ण कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई ना(म)म देवी हो(हु)त्था वण्णओ, तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे जाव विहरइ, कण्हे वासुदेवे निग्गए जाव पज्जुवासइ, तए ण सा पउमाव(इ)ई देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा (समाणी) हट्ठ० जहा देवई जाव पज्जुवासइ, तए णं अ-रहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए (दे०) य धम्मकहा परिसा पडिगया, तए ण कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमिं वदइ नमसइ व० २ त्ता एव वयासी–इमीसे ण भते! बारवईए न-गरीए-नवजोयण[०] जाव देवलोगभूयाए किंमूलाए विणासे भविस्सइ ? कण्हाइ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी–एवं खलु कण्हा! इमीसे बा-रवईए नयरीए-नवजोयण-जाव[०] भूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ, (तए ण) कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए ए(यमट्ठ)य सोच्चा निगम्म (अ०) एय अब्भत्थिए ४–धण्णा ण ते जालिमयालि(उ०)पुरिससेण-वारिसेणपज्जुण्णसवअणिरुद्धदढणेमिसच्चणेमिप्पभियओ कुमारा जे णं (चिच्चा) चइत्ता हिरण्ण जाव परिभा(ए)इत्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिय मुडा जाव पव्वइया, अहण्ण अधण्णे अकयपुण्णे रज्जे य जाव अतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए ४ नो सचाएमि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स जाव पव्वइत्तए, कण्हाइ! अरहा अरिट्ठ-णेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी–से नूणं कण्हा! तव अयम-ब्भत्थिए ४–धण्णा ण ते जाव पव्वइत्तए, से नूणं कण्हा! अ(यम)ट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि, त नो खलु कण्हा! त एव भू(य)त वा भव्व वा भविस्सइ वा जण्ण वासुदेवा चइत्ता हिरण्ण जाव पव्व-इस्सति, से के–ण [अ]ट्ठेण भते! एव वुचइ–न ए(व)य भूय वा जाव पव्व-इस्संति ? कण्हाइ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेव एव वयासी–एव खलु कण्हा! सव्वे-वि य ण वासुदेवा पुव्वभवे नि-दाणगडा, से ए(ए)तेणट्ठेणं कण्हा! एव वुच्चइ–न एय भूयं० पव्वइस्संति, तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं एव वयासी–अह ण भते! इ(ओ)तो कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि (?) कहिं उववज्जिस्सामि ?, तए ण अ रहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी–एव खलु कण्हा! बारवईए नयरीए सुरग्गिदीवायण(कुमार)कोवनि(द्द)दड्ढाए अम्मापिइनियगविप्पहूणे रामे(ण)ण बल-देवे-ण सद्धिं दाहिणवेयालिं अभिमुहे जो(जु)हिट्ठिल्लपामोक्खाण पचण्ह पडवाण पडुरायपुत्ताण पास पडुमहुरं सपत्थिए कोसववणकाणणे नग्गोहवरपायवस्स अ(धे)हे पुढविसिलापट्टए पीयवत्थपच्छाइयसरीरे ज(र)राकुमारेण तिक्खेण कोदडविप्पमुक्केण इसुणा वामे पा(ये)दे विद्धे समाणे कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए

पुढवीए उज्जलिए नरए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि । तए णं कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओहय-जाव झियाइ, कण्हाइ! अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहय-जाव झियाहि, एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया! तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जं(बु)दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए पुं(पुण्डे)सु जणवएसु सयदुवारे बारसमे अममे नामं अरहा भविस्ससि । तत्थ तुमं बहूइं वासाइं केवलपरियायं पाउणेत्ता सिज्झिहिसि ५, तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ अप्फोडेइ २ त्ता वग्ग २ त्ता तिवइं छिंदइ २ त्ता सीहनायं करेइ २ त्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ २ त्ता तमेव आ(अ)भिसेक्कं ह(त्थिर)त्थिं दु-रूहइ २ त्ता जेणेव बारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए अभिसेयहत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ ( ) जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवईए नयरीए सिंघाडग[ ] जाव उग्घोसेमाणा एवं वयह–एवं खलु देवाणुप्पिया! बारवईए नयरीए नव-जोयण-जाव-भूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ, तं जो णं देवाणुप्पिया! इच्छइ बा-रवईए नयरीए राया वा जुवराया वा ईसरे तलवरे माडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठी वा देवी वा कुमारो वा कुमारी वा अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइत्तए तं णं कण्हे वासुदेवे विसज्जेइ, पच्छाउर-स्स-वि य से अहापवित्तं वित्तिं अणुजाणइ महया इ(ड्ढी)सक्कारसमुदएण य से निक्खमणं करेइ, दोच्चं पि तच्चं-पि घोसणयं घोसेह २ त्ता मम ए(यमाणत्ति)यं पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबिय जाव पच्चप्पिणंति । तए णं सा पउमावई-देवी अरहओ-अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[ ] जाव हियया अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ णं २ त्ता एवं वयासी–सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पा(व)यणं से जहेयं तुब्भे वयह जं नवरं देवाणुप्पिया! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि तए णं अहं देवा अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि अहासुहं देवाणुप्पि ! मा पडि-बंधं करे(हि)ह, तए णं सा पउमावई देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ २ त्ता जेणेव बा-रवई-नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धम्मियाओ जाणाओ पच्चोरु(म)हइ २ त्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयल अंजलिं कट्टु (कण्हं वा) एवं वयासी–इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया

समाणी अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए मुडा जाव पव्व०, अहासुहं०, तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुविए (पु०) सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव (भो दे०) पउमावईए (०) महत्थ निक्खमणाभिसेय उवट्ठवेह २ त्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तए ण ते जाव पच्चप्पिणति, तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावइ देविं पट्टय[सि] दु-रूहेइ (०) अट्ठसएण सोवण्णकलस जाव महाणिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ २ त्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ २ त्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सि(वि)विय दुरू(हावे)हेइ २ त्ता वारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव रेवयए पव्वए जेणेव सहसववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीय ठवेइ (०) पउमावई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ २ त्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अरह अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ २ त्ता वंदइ नमसइ वं० २ त्ता एव वयासी–एस ण भते! मम अग्गमहिसी पउमावई नाम देवी इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणा(मा अ)भिरामा जाव किमग पुण पासणयाए? तण्ण अह देवाणुप्पिया! सिस्सि(णी)णिभिक्ख दलयामि पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं, अहासुहं०, तए ण सा पउमावई (०) उत्तरपुर-च्छि(मे)म दिसीभा(गे)ग अवक्कमइ २ त्ता सयमेव आभरणालकार ओमुयइ २ त्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोयं करेइ २ त्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अरह अरिट्ठणेमिं वदइ नमसइ व० २ त्ता एव वयासी–आलित्ते जाव धम्ममाइक्खि(त)उ, तए ण अरहा अरिट्ठणेमी पउमावइ देविं सयमेव पव्वावेइ २ त्ता सयमेव मुडावेइ सयमेव जक्खिणीए अज्जाए सिस्सिणिं दलयइ, तए ण सा जक्खिणी अज्जा पउमावइ देविं स(य)यमेव पव्वा० जाव सजमियव्व, तए ण सा पउमावई जाव सजमइ, तए ण सा पउमावई अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवभयारिणी, तए ण सा पउमावई अज्जा जक्खिणीए अज्जाए अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, वहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं० अप्पाण भावेमा(णी)णा विहरइ, तए ण सा पउमावई अज्जा वहुपडिपुण्णाइ वीस वासाइ सामण्णपरियाग [पाउणइ] पाउणित्ता मासियाए सलेह-णाए अप्पाण झू(झो)सेइ २ त्ता सट्ठिं भत्ताइं अणस(णेण)णा-ए छेदेइ २ त्ता जस्सट्ठाए कीरइ जिणकप्पभावे थेरकप्पभावे जाव तमट्ठ आराहेइ चरिमुस्सासेहिं सिद्धा ५ ॥ ९ ॥ (उ० य अ०) तेण कालेण तेण समएण वारवई (ण०) रेवयए उज्जाणे नदणवणे तत्थ ण वारवईए नयरीए कण्हे वासुदेवे० तस्स ण कण्ह[स्स]वासुदेवस्स गोरी देवी वण्णओ अरहा (अ०) समोसढे कण्हे णिग्गए गोरी

जहा पउमावई तहा निग्गया धम्मकहा परिसा पडिगया कण्हे-वि तए णं सा गोरी जहा पउमावई तहा निक्खंता जाव सिद्धा ५। एवं गं(गं)धारी। लक्खणा। सुसीमा। जंबवई। सच्चभामा। रुप्पिणी। अट्ठ-वि पउमावई[ई]सरिसाओ अट्ठ अज्झयणा ॥ १ ॥ (ज) तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई[ए]नयरीए रेवयए (प) नंदणवणे (उ) कण्हे तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पु(त्त)त्ते जंबवईए देवीए अत्तए संबे नामं कुमारे होत्था अहीण तस्स णं संबस्स कुमारस्स मूलसिरी-नामं भारिया होत्था वण्णओ अरह समोसढे कण्हे निग्गए मूलसिरी-वि निग्गया जहा पउमावई णं नवरं देवाणुप्पिया! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि जाव सिद्धा। एवं मूलदत्ता-वि। पंचमो वग्गो ॥ ११ ॥

[छट्ठो वग्गो]

जइ (णं भं) छट्ठ(म)स्स उक्खेवओ नवरं सोलस अज्झयणा प(ण्ण)त्ता तं-म(मं)काई किंक(म)मे चेव मोग्गरपाणी य कासवे। खेमए धिइ(ह)रे चेव केलासे हरिचंदणे ॥ १ ॥ वारत्तसुदंसणपुण्णभद्दसुमणभद्दसुपइट्ठे मेहे। अइमुत्ते अ(य) अलक्खे अज्झयणाणं [त] तु सोलसयं ॥ २ ॥ जइ सोलस अज्झयणा प[ ] पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए उज्जाणे सेणिए राया (तत्थ णं) म-काई-नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे गुणसिलए जाव विहरइ परिसा निग्गया तए णं से म-काई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे जहा पण्णत्तीए गंगदत्ते तहेव इमो(ऽ)वि जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए निक्खंते जाव अणगारे जाए ईरियासमिए तए णं से म-काई अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ सेसं जहा खंदयस्स गुणरयणं तवोकम्मं सोलसवासाइं परियाओ तहेव वि(पु)ले सिद्धे। (दो च) किंकमे-वि एवं चेव जाव वि-उले सिद्धे ॥ १२ ॥ (त च प उ णं) तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे (न) गुणसिलए उज्जाणे सेणिए राया चेल्लणा-देवी[वण्णओ], तत्थ णं रायगिहे-अज्जुणए नामं मालागारे परिवसइ, अड्ढे[ ] जाव अपरिभूए, तस्स णं अज्जुणयस्स मालागारस्स बंधुमई-नामं भारिया होत्था सूमा तस्स णं अज्जुणयस्स मालागारस्स रायगिहस्स नयरस्स बहिया एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था कि(क)ण्हे जाव नि(कु)रुंबभूए दसद्धवण्णकुसुमकुसुमिए पासाईए ४ तस्स णं पुप्फारामस्स अदूरसामंते तत्थ णं अज्जुणयस्स माला(गा)रस्स अज्जय-

पज्जयपिइपज्जयागए अणेगकुलपुरिसपरंपरागए मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खा-यथणे होत्था, तत्थ ण मोग्गरपाणिस्स पडिमा एग मह पलसहस्सणिप्फण्ण अयोमय मोग्गर गहाय चिट्ठइ, तए ण से अज्जुणए मालागारे बालप्पभिइ चेव मोग्गरपाणिजक्ख(स्स)भत्ते यावि होत्था, कल्लाकल्लिं प(च्छि)त्थि(या)यपिडगाइ गेण्हइ २ त्ता रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवा-गच्छइ २ त्ता पुप्फुच्चय करेइ २ त्ता अग्गाइ वराइ पुप्फाइ गहाइ २ त्ता जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मो(मु)ग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिह पुप्फच्चणय करेइ २ त्ता जण्णुपाय(व)पडिए पणाम करेइ, तओ पच्छा रायमग्गसि वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ, तत्थ णं रायगिहे नयरे ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ अड्डा[०] जाव अपरिभू(या)ता जकयसुकया यावि होत्था, तए ण रायगिहे नयरे अण्णया कयाइ पमो(ए)दे घुट्ठे यावि होत्था, तए ण से अज्जुणए मालागारे कल्ल पभूयत(राए)रेहिं पुप्फेहिं कज्जमितिकट्टु पच्चूसकालसमयसि बधु मईए भारियाए सद्धिं पत्थियपिडग्गाइ गेण्हइ २ त्ता सयाओ गिहाओ पडि-णिक्खमइ २ त्ता रायगिह नगरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव पुप्फा-रामे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता बधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चय करेइ, तए ण तीसे ललियाए गोट्ठीए छ गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया अभिरममाणा चिट्ठति, तए णं से अज्जुणए माला गारे बधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चय करेइ (०) अग्गाइ वराइ पुप्फाइं गहाय जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, तए ण-छ गोट्ठिल्ला पुरिसा अज्जुणयं मालागारं बधुमईए भारियाए सद्धिं एज्जमाण पासति २ त्ता अण्णमण्ण एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे बधु-मईए भारियाए सद्धिं इह हव्वमागच्छइ त सेय खलु देवाणुप्पिया! अम्ह अज्जुणय मालागारं अव(उ)ओडयबधणय करेत्ता बधुमईए भारियाए सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणाण विहरित्तए-त्तिकट्टु एयमट्ठ अण्णमण्णस्स पडि-सुणेंति २ त्ता कवाडतरेसु निलुक्कति निच्चला निप्फंदा तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठति, तए ण से अज्जुणए मालागारे बधुम(ईए)इभारियाए सद्धिं जेणेव मोग्गर-पाणिजक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ (०) आलोए पणाम करेइ (०) महरिह पुप्फ च्चणं करेइ (०) जण्णुपायपडिए पणामं करेइ, तए ण-छ गो(ट्ठे)ट्ठिल्ला पुरिसा दव-दवस्स कवाडतरेहिंतो निग्गच्छति २ त्ता अज्जुणय मालागारं गेण्हति २ त्ता अवओड(ग)यबधण करेंति (०) बधुमईए मालागारीए सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइं

तव सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ, तुब्भेण्णं इच्छाए चेव समणं भगवं महावीरं वंदाहि नमंसाहि, तए णं सुदंसणे सेट्ठी अम्मापि(तरो)यरं एवं वयासी–किण्ण(तुब्भं) अहं अम्मयाओ! समणं भगवं महावीरं इहमागयं इह-पत्तं इह समोसढं इहगए चेव वंदिस्सामि(न०)?, तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे (स०) भगवं महावीरं वं(दा० जाव प०)दए, तए णं सुदंसं(ण)णं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे नो संचा(यं)एंति बहूहिं आघवणाहिं ४ जाव पन्नवेत्तए ताहे एवं वयासी–अहासुहं०, तए णं से सुदंसणे अम्मापिईहिं अब्भणुण्णाए समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता पायविहारचारेणं रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलए उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव प(हा)हारेत्थ गमणाए, तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं (२) पासइ २ त्ता आसुरुत्ते ५ तं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे २ जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासइ २ त्ता अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असंभंते वत्(थए)थंतेणं भूमिं पमज्जइ २ त्ता करयल० एवं वयासी–नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थु णं समणस्स जाव संपाविउकामस्स, पुव्विं (च) पि णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए थूलए मुसावाए थूलए अदिण्णादाणे सदारसंतोसे कए जावज्जीवाए इच्छापरिमाणे कए जावज्जीवाए, तं इदाणिं-पि णं तस्सेव अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए (०) मुसावायं (०) अदत्तादाणं (०) मेहुणं (०) परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं-पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जइ णं एत्तो उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पेइ पारेत्तए अह णो एत्तो उवसग्गाओ (न) मुच्चिस्सामि तओ मे तहा पच्चक्खाए चेवत्तिकट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जइ। तए णं से मोग्गरपा-णी जक्खे तं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे २ जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवाग(च्छ०)ए नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए, तए णं से मोग्गरपाणी-जक्खे सुदंसणं समणोवासयं सव्वओ समंताओ परिघोलेमाणे २ जाहे नो [चेव णं] संचाएइ सुद

सणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए ताहे सुदंसणस्स समणोवासगस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए दिट्ठीए सुचिरं निरिक्खइ २ ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पज(हा)इ २ त्ता तं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं गहाय जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, तए णं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं विप्प(मु)मुक्के समाणे धसत्ति धरणियलंसि सव्वंगेहिं (सं)निवडिए, तए णं से सुदंसणे समणोवासए निरुवसग्गमितिकट्टु पडिमं पारेइ, तए णं से अज्जुणए मालागारे त(त्त)ओ मुहुत्तंतरेणं आसत्थे समाणे उट्ठेइ २ त्ता सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! के कहिं वा संपत्थिया? तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अहं सुदंसणे नामं समणोवासए अभिगयजीवाजीवे गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदए संपत्थिए, तए णं से अज्जुणए मालागारे सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी—तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! अहमवि तुमए सद्धिं समणं भगवं महावीरं वं(दि)त्तए जाव पज्जुवा(सि)त्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह, तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासइ, तए णं [से] समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स समणोवासगस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य धम्मकहा सुदंसणे पडिगए। तए णं से अज्जुणए [मालागारे] समणस्स भगवओ महावीरस्स अंति(ए)ए धम्मं सोच्चा [निसम्म] हट्ठ० सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि, अहासुहं० तए णं से अज्जुणए मालागारे उत्तर सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ [करित्ता] जाव अणगारे जाए जाव विहरइ, तए णं से अज्जुणए अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं उ(ओ)गिण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए-त्तिकट्टु अयमेयारूवं अभिग्गहं ओगेण्हइ २ त्ता जावज्जीवाए जाव विहरइ, तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढ(म)माए पोरिसीए सज्झायं करेइ जहा गोयमसामी जाव अड(विहर)इ, तए णं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नयरे उच्च[ ] जाव अडमाणं बहवे इ(त्थिया)त्थीओ य पुरिसा य

उसका सर्वस्व लुट जाता था तब वह चुपचाप भयङ्कर वेष बनाकर रात्रिमे लोगोंको डराने लगता था। लोग उसे यक्ष, भूत आदि मान लेते थे। इसलिये उसकी आवाज सुनते ही लोग भागते थे और कमजोर हृदयवाले तो घबराकर मर भी जाते थे। कभी कभी भूत बननेवाला व्यक्ति ही उसे मार डालता था। इस तरह उसका स्थायी आतक जम जाता था। ऐसे भूतोंके लिये लोग कभी कभी पूजा भी चढाते थे। यह यक्ष भी ऐसा ही सताया हुआ मनुष्य मालूम होता है। ये यक्ष—भूतवेषधारी मनुष्य—किसी न किसी रूपमे कोई ऐसी कथा प्रचलित कर देते थे जिससे ग्रामके लोग अपनेको अपराधी और वेषधारीको भूत समझने लगें। इस यक्षने भी इसी प्रकार एक बैलकी कथा प्रचलित कर दी थी। म० महावीरकी सहनशीलताका उसके ऊपर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उसने अपना यक्षपन छोड़ दिया।

यक्षोपद्रवके बाद म० को निद्रा आ गई और निद्रामें उन्होने दश स्वप्न देखे। जब वे सोकर उठे तब मन्दिरका पुजारी इन्द्रशर्मा और एक उत्पल नामका निमित्त-ज्ञानी तथा गॉवके लोग आये। महात्माको जीवित देखकर उन्हें बडा आश्चर्य और प्रसन्नता हुई। उत्पलने उनके स्वप्नोंका फल कहा परन्तु एक स्वप्नका फल वह न बता पाया। महात्माने कहा कि दो मालाओंका फल यह है कि मैं दो प्रकारका (गृहस्थका और मुनिका) धर्म कहूँगा। इससे मालूम होता है कि गृहस्थ और मुनिके सघ बनानेका निश्चय उन्होंने उस समय तक कर लिया था। म० महावीर सघ-सगठनके प्रारम्भसे हिमायती रहे हैं और उन्होंने गृहस्थोंको उपेक्षाकी दृष्टिसे नहीं देखा।

दीक्षा-कालके एक वर्ष बाद महात्मा महावीर फिर मोराक ग्रामके

डहरा य महल्ला य जुवाणा य एव वयासी-इमे-ण मे पिता-मा(र)रिए [माता मारि-या] भाया० भगिणी० भज्जा० पु(त्त)त्ते० धूया० सुण्हा० इमेण मे अण्ण-यरे सयणसवधिपरियणे मारिएत्तिकट्टु अप्पेगइया अक्कोसति अप्पेगइया हीलति निंदति खिंसति गरिहति तज्जेंति तालेंति, तए ण से अज्जुणए अणगारे तेहिं वहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महल्लेहि य जुवाणएहि य आ-तो--सिज्जमाणे जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसा-वि अपउस्समाणे सम्म सहइ सम्म खमइ तितिक्खइ अहियासेइ सम्म सहमाणे० रायगिहे नयरे उच्चणीय-मज्झिमकुलाइ अडमाणे जइ भत्त ल-हइ तो पाण न लभइ जइ पाणं तो भत्त न लभइ, तए ण से अज्जुणए (अ०) अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसा(इं)दी अपरितंतजोगी अडइ २ त्ता रायगिहाओ न-गराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव गुणसिलए उज्जाणे जेणेव समणे भगव महावीरे जहा गोयमसामी जाव पडिदसेइ २ त्ता समणेण भगवया महावीरेण अ०भणुण्णाए अमुच्छिए ४ विलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण तमाहार आहारेइ, तए ण समणे भगव महावीरे अन्नया (क०) राय० पडिणिक्खमइ २ त्ता वहिं जण० विहरइ, तए ण से अज्जुणए अणगारे तेण ओ(उ)रालेण (वि०) पयत्तेण पग्गहिएण महाणुभागेण तवो-कम्मेण अप्पाण भावेमाणे वहुपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियाग पाउणइ,[पाउ णित्ता] अद्धमासियाए सलेहणाए अप्पाण झू[झु]सेइ [२ त्ता] तीस भत्ताइं अणसणाए छेदेइ २ त्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव सिद्धे ३ ॥ १३ ॥ (उ० च० अ० ए० ख० ज०) तेण कालेण तेण समएण रायगिहे न-गरे गुणसिलए उज्जाणे (तत्थ णं) सेणिए राया कासवे नाम गाहावई परिवसइ जहा म-काई, सोलस वासा परियाओ विपुले सिद्धे ४। एव खेमए-ऽ-वि गाहावई, नवरं का(ग)यद्दी नयरी सोलस वासा परियाओ विपुले पव्वए सिद्धे ५। एव धिइहरे-वि गाहावई का(म)यदीए नयरीए सोलस वासा परियाओ (जाव) विपुले सिद्धे ६। एव केलासे-वि गाहा-वई नवरं सागेए नयरे वारस-वासाइ परियाओ विपुले सिद्धे ७, एव हरि-चदणे-वि गाहावई साएए वारस-वासा परियाओ विपुले सिद्धे ८। एव वारत्तए-वि गाहावई नवरं रायगिहे न-गरे वारस-वासा परियाओ विपुले सिद्धे ९। एव सुदसणे-वि गाहावई नवरं वाणिय[ग]गामे नयरे दूइपलासए उज्जाणे पंच-वासा परियाओ विपुले सिद्धे १०। एव पुण्णभद्दे-वि गाहावई वाणिय-गामे नयरे पच-वासा परियाओ विपुले सिद्धे ११। एव सुमणभद्दे-वि गाहावई सावत्थीए नयरीए वहुवा(स-सा)साइ परि० सिद्धे १२। एव सुपइट्ठे-वि गाहावई सावत्थीए नयरीए

मज्झे(ण) निग्गच्छइ जहा कूणिए जाव पज्जुवासइ धम्मकहा तए णं से अलक्खे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जहा उदायणे तहा निक्खंते नवरं जेट्ठपुत्तं रज्जे अहिसिंचइ एक्कारस अंगाइं बहू वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे १६ । एवं जंबू ! समणेणं जाव छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ १५ ॥

[सत्तमो वग्गो]

जइ णं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ[ ] जाव तेरस अज्झयणा पण्णत्ता तं०—'नंदा तह नंद(मती)वई नं(दो)दुत्तर नं(द)दिसेणिया चेव । म(रुया)रुय सुमरुय महमरुय मरु(दे)देवा य अट्ठमा ॥ १ ॥ भद्दा य सुभद्दा य सुजाया सुमणा(इया)ई य । भूयदि(ता)न्ना य बो(द्ध)धव्वा सेणिय भज्जा(ण)णं नामाइं ॥ २ ॥' जइ णं भंते ! तेरस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं के अट्ठे पण्णत्ते ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए उज्जाणे सेणिए राया (व) तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था वण्णओ सामी समोसढे परिसा निग्गया तए णं सा नंदा-देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा (स जाव ठ) कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता जाणं जहा पउमावई जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता वीसं वासाइं परियाओ जाव सिद्धा । एवं तेरस-वि देवीओ नंदागमेण नेयव्वाओ (णि) ॥ सत्तमो वग्गो समत्तो ॥ १६ ॥

[अट्ठमो वग्गो]

जइ णं भंते ! अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ-जाव दस अज्झयणा पण्णत्ता तं०—काली सुकाली महाकाली कण्हा सुकण्हा महाकण्हा । वीरकण्हा य बोद्धव्वा रामकण्हा तहेव य ॥ १ ॥ पिउसेणकण्हा नवमी दसमी महासेणकण्हा य । जइ दस अज्झयणा[ ] पढमस्स (णं भं) अज्झयणस्स (स जाव सं) के अट्ठे पण्णत्ते ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था पुण्णभद्दे उज्जाणे तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए राया वण्णओ तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था वण्णओ जहा नंदा जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ, तए णं सा काली (अज्जा) अन्नया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया २ त्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा रयणावलिं तवं उवसंपज्जित्ताणं विहरेत्तए, अहासुहं तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुन्नाया

तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदए, अहासुहं०, तए णं से अइमुत्ते कुमारे भग(व)वया गोयमेणं सद्धिं जेणेव समणे (भ०) महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ जाव पज्जुवासइ, तए णं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए जाव पडिदंसेइ २ त्ता संजमेणं तव० विहरइ, तए णं समणे भगवं महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स तीसे य धम्मकहा, तए णं से अइमुत्ते (कु०) समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ० जं नवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं [करेह], तए णं से अइमुत्ते [कुमारे] जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागए जाव पव्वइत्तए, अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी–बाले-सि जा(ता)व तुमं पुत्ता! असंबुद्धे-सि० किं णं तुमं जा(णा)णसि धम्मं?, तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी–एवं खलु (अहं) अम्मयाओ! जं चेव जाणामि तं चेव न जा(या)णामि जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि, तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी–कहं णं तुमं पुत्ता! जं चेव जाणसि जाव तं चेव जाणसि?, तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी–जाणामि अहं अम्मयाओ! जहा जाएणं अवस्समरियव्वं न जाणामि अहं अम्मयाओ! काहे वा कहिं वा कहं वा केच्चिरेण वा?, न जाणामि-अम्मयाओ! केहिं कम्माययणेहिं जीवा नेरइयतिरिक्खजोणिमणुस्सदेवेसु उववज्जंति, जाणामि णं अम्मयाओ! जहा सएहिं कम्माययणेहिं जीवा नेरइय[०] जाव उववज्जंति, एवं खलु अहं अम्मयाओ! जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि, इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए, तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघव० तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रा(ज)यसिरिं पासित्तए, तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ अभिसेओ जहा महाबलस्स निक्खमणं जाव सामाइयमाइयाइं अहिज्जइ बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं गुणरयणं जाव विपुले सिद्धे १५। (उ० सो० अ० ए० ख० ज०) तेणं कालेणं तेणं समएणं वा(वा)णारसीए नयरीए काममहावणे उज्जाणे, तत्थ णं वाणारसी(इ)ए अलक्खे नामं राया होत्था, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे जाव विहरइ परिसा निग्गया, तए णं [से] अलक्खे राया इमीसे कहाए

समा-णा रयणावलिं (त०) उवसंपज्जित्ता-णं विहरइ तं०-चउत्थं करेइ चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेइ छट्ठं करेत्ता सव्व-कामगुणियं पारेइ २ अट्ठमं करेइ २ सव्वकाम० २ अट्ठ छट्ठाइं करेइ २ सव्वकाम० २ चउत्थं करेइ २ सव्वकाम० २ छट्ठं करेइ २ सव्वकाम० २ अट्ठमं करेइ २ सव्वकाम० २ दसमं करेइ २ सव्वकाम० २ दुवालसमं करेइ २ सव्वकाम० २ चोद्दसम० २ सव्व० २ सोलसम० २ सव्व० २ अट्ठारसमं० २ सव्व० २ वीसइम० २ सव्व० २ बावीसइम० २ सव्व० २ चउवीसइमं० २ सव्व० २ छव्वीसइम० २ सव्व० २ अट्ठावीसइम० २ सव्व० २ तीसइमं० २ सव्व० २ बत्तीसइम० २ सव्व० २ चोत्तीसइम० २ सव्व० २ चोत्तीसं छट्ठाइं करेइ २ सव्व० २ चोत्ती(सइम)सं करेइ २ सव्व० २ बत्ती-स० २ सव्व० २ तीस० २ सव्व० २ अट्ठावी-स० २ सव्व० २ छव्वी-स० २ सव्व० २ चउवी-स० २ सव्व० २ बावी-स० २ सव्व० २ वी-स० २ सव्व० २ अट्ठार(सम)स० २ सव्व० २ सोलसम० २ सव्व० २ चोद्दसम० २ सव्व० २ बारसमं० २ सव्व० २ दसम० २ सव्व० २ अट्ठम० २ सव्व० २ छट्ठ० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ अट्ठ छट्ठाइं करेइ २ सव्व० २ अट्ठमं करेइ २ सव्व० २ छट्ठं करेइ २ सव्व० २ चउत्थ० २ सव्व० एवं खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ, तयाणंतरं च णं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ २ विगइवज्जं पारेइ २ छट्ठं करेइ २ विगइवज्जं पारेइ (०) एवं जहा पढमाए-वि नवरं सव्वपारणए विगइ-वज्जं पारेइ जाव आराहिया भवइ, तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ चउत्थं करेत्ता अलेवाडं पारेइ सेसं तहेव, एवं चउत्था परिवाडी नवरं सव्वपारणए आयंबिलं पारेइ सेसं [तहेव] तं चेव,-'पढमंमि सव्वकामं पार-णयं बिइयए विगइवज्जं । तइयंमि अलेवाडं आयंबि(लमो)लं चउत्थंमि ॥ १ ॥' तए णं सा काली अज्जा रयणावली-तवोकम्मं पंचहिं संवच्छरेहिं दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवा० २ त्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता बहूहिं चउत्थ[०] जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ, तए णं सा काली अज्जा तेणं उ(ओ)रालेणं जाव धमणिसंतया जाया यावि होत्था से जहा इंगाल० जाव सुहुयहुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अ-तीव

२ सव्व० २ सोलसमं० २ सव्व० २-दुवालसं० २ सव्व० २ चोद्द-सं० २ सव्व० २ दसम० २ सव्व० २-दुवालस० २ सव्व० २ अट्ठमं० २ सव्व० २ दसमं० २ सव्व० २ छट्ठ० २ सव्व० २ अट्ठम० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ छट्ठ० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्वकामगुणियं पारेइ-तहेव चत्तारि परिवाडीओ, एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्त य दिवसा, चउण्ह दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव सिद्धा ॥ १९ ॥ एवं कण्हा-वि नवरं महालय सीहणिक्कीलिय तवोकम्म जहेव खुड्डाग नवरं चोत्तीसइम जाव नेयव्व तहेव ऊसारेयव्व, एक्काए वरिसं छम्मासा अट्ठारस य दिवसा, चउण्हं छव्वरिसा दो मासा बारस य अहोरत्ता, सेस जहा कालीए जाव सिद्धा ॥ २० ॥ एव सुकण्हा-वि नवरं सत्तसत्तमिय भिक्खुपडिमं उवसपज्जित्ताण विहरइ, पढमे सत्तए एक्केक्क भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ एक्केक्क पाणयस्स, दोच्चे सत्तए दो दो भोयणस्स दो दो पाणयस्स पडिगाहेइ, तच्चे सत्तए तिण्णि० चउत्थे० पचमे० छ० सत्तमे सत्तए सत्त दत्तीओ भोयणस्स पडि(ग)गाहेइ सत्त पाण-यस्स, एव खलु एय सत्तसत्तमिय भिक्खुपडिम एगूणपण्णाए रा(इ)तिंदिएहिं एगेण य छण्णउएणं भिक्खासएणं अहासुत्ता जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचदणा अज्जा तेणेव उवागया [२ त्ता] अज्जचदण अज्ज वदइ नमसइ व० २ त्ता एव वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरेत्तए, अहासुह०, तए ण सा सुकण्हा अज्जा अज्जचदणाए अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ, पढमे अट्ठए एक्केक्क भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्क पाण(ग)यस्स जाव अट्ठमे अट्ठए अट्टट्ठ भोयणस्स (दत्तिं) पडिगाहेइ अट्ठ पाण यस्स, एवं खलु एय अट्ठट्ठमिय भिक्खुपडिम चउसट्ठीए रा-तिंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासु(त्त)त्ता जाव नवनवमिय भिक्खुपडिमं उवसपज्जित्ता-णं विह-रइ, पढमे नवए एक्केक्क भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ (य) एक्केक्क पाणयस्स जाव नवमे नवए नव नव द० भो० पडि०-नव २ पाणयस्स, एव खलु नवनव-मिय भिक्खुपडिम एकासी-ईराइदिएहिं चउहिं पचोत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहा-सुत्ता जाव दसदसमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ, पढमे दसए एक्केक्क भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ-एक्केक्क पाणयस्स जाव दसमे दसए दस २ भोयणस्स द(त्ति)त्ती[ओ] पडि-गाहेइ दस २ पाण[य]स्स०, एव खलु एय दसदसमिय भिक्खुपडिमं एक्केण राइंदियसएण अद्धछट्ठेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्त जाव

करेइ २ तिण्णि आयंबिलाइं करेइ २ चउत्थं १ चत्तारि १ चउत्थं १ पंच २ चउत्थं १ छ १ चउत्थं २ एवं एक्कोत्तरियाए वड्ढीए आयंबिलाइं वड्ढंति चउत्थंतरियाइं जाव आयंबिलसयं करेइ २ चउत्थं करेइ, तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं चोद्दसहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसहि य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवा० २ त्ता (अ० व०) वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउ(त्थेहिं)त्थ जाव भावेमाणी विहरइ, तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा तेणं उ-रालेणं जाव उवसोभेमाणी चिट्ठइ, तए णं तीसे म(हा)सेणकण्हाए अज्जाए अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाले चिंता जहा खंदयस्स जाव अज्जचंदणं(-अ)ज्जं पुच्छइ जाव संलेहणा[ ] कालं अणवकंखमाणी विहरइ, तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं सत्तरस वासाइं परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव तमट्ठं आराहेइ [आराहित्ता] चरिमउस्सासनीसासेहिं सिद्धा बुद्धा [ ]। अट्ठ य वासा आ(दी)ई एक्कोत्त(रि)याए जाव सत्तरस। एसो खलु परियाओ सेणियभज्जा-णं नायव्वो ॥ १ ॥ एवं खलु जं(बू)! समणेणं (भगवया महावीरेणं आ-इगरेणं) जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते ( ) ॥ अंगं स(सं)मत्तं ॥ २६ ॥ अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयक्खंधो अट्ठ-वग्गा अट्ठसु चेव दिवसेसु उ(दि[स्स])ज्जंति तत्थ पढमबिइय-वग्गे दस दस उद्देसगा तइयवग्गे तेरस उद्देसगा चउत्थपंचमवग्गे दस दस उद्देस(गा)गा छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा सेसं जहा नायाधम्मकहाणं ॥ २७ ॥

दुवाल० २ सव्व० २ चोद्द-सं० २ सव्व० २ सोलसमं० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ छट्ठं० २ सव्व० २ अट्ठम० २ सव्व० २ दसमं० २ सव्व० (स० ल०) एक्केक्काए लयाए अट्ठ मासा पंच य दिवसा चउण्हं दो वासा अट्ठ मासा वीस दिवसा सेस तहेव जाव सिद्धा ॥ २३ ॥ एवं रामकण्हा वि नवरं भद्दोत्तरपडिमं उवसपज्जित्ताणं विहरइ तं०—दुवालसमं करेइ २ सव्व० २ चोद्दसम० २ सव्व० २ सोलसमं० २ सव्व० २ अट्ठारसमं० २ सव्व० २ वीसइमं० २ सव्व० २ सोलसम० २ सव्व० २ अट्ठारसमं० २ सव्व० २ वीसइमं० २ सव्व० २ दुवालसमं० २ सव्व० २ चोद्दसमं० २ सव्व० २ वीसइमं० २ सव्व० २ दुवाल-सं० २ सव्व० २ चोद्दसम० २ सव्व० २ सोलसमं० २ सव्व० २ अट्ठार-समं० २ सव्व० २ चोद्दसम० २ सव्व० २ सोलसमं० २ सव्व० २ अट्ठारसमं० २ सव्व० २ वीसइम० २ सव्व० २ दुवालसम० २ सव्व० २ अट्ठारसमं० २ सव्व० २ वीसइमं० २ सव्व० २ दुवालसमं० २ सव्व० २ चोद्दसमं० २ सव्व० २ सोलसमं० २ सव्व० एक्काए कालो छम्मासा वीस य दिवसा, चउण्ह कालो दो वरिसा दो मासा वीस य दिवसा, सेसं तहेव जहा काली जाव सिद्धा ॥ २४ ॥ एव पिउसेणकण्हा-वि नवरं मुत्तावलीतवोकम्म उवसपज्जित्ताणं विहरइ, तं०—चउत्थं करेइ २ सव्व० २ छट्ठं० २ सव्व० २ चउत्थ० २ सव्व० २ अट्ठमं० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ दसमं० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ दुवाल० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ चोद्दसम० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ सोलसमं० २ सव्व० २ चउत्थ० २ सव्व० २ अट्ठार-समं० २ सव्व० २ चउत्थ० २ सव्व० २ वीसइम० २ सव्व० २ चउत्थ० २ सव्व० २ बावीसइम० २ सव्व० २ चउत्थ० २ सव्व० २ चउवीसइमं० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ छव्वीसइमं० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ अट्ठावीसं० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ तीसइम० २ सव्व० २ चउत्थं० २ सव्व० २ बत्तीसइमं० २ सव्व० २ चउत्थ० २ सव्व० २ चोत्तीसइम०[सव्व०] (२ त्ता च० २ त्ता स० २ त्ता व० २ त्ता) एवं तहेव ओसारेइ जाव (चउत्थ करेइ) चउत्थं क(रे-इ)रित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, एक्काए कालो एक्कारस मासा पणरस य दिवसा चउण्ह तिण्णि वरिसा दस य मासा सेस जाव सिद्धा ॥ २५ ॥ एव महासेणकण्हा-वि, नवरं आयंबिलवड्ढमाण तवोकम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ, तं०—आयंबिलं करेइ २ चउत्थं करेइ २ बे आयंबिलाइं करेइ २ चउत्थं

पास आय । यहाँ एक ऐसी घटना हुई जो महात्माके जीवनमें थोड़ी-सी साधारणता ला देती है । दिगम्बर सम्प्रदायमें तो ऐसी घटनाओंका उल्लेख ही नहीं है, श्वेताम्बर सम्प्रदायमें है परन्तु वहाँ इसका एक बचाव किया गया है कि इस घटनामें महावीरका हाथ जरा भी नहीं है । उनके शरीरमें सिद्धार्थ देव प्रविष्ट होकर ऐसे सब काम करता था । कहनेकी आवश्यकता नहीं कि इस बचावमें कुछ भी दम नहीं है । असली बात तो यह है कि हम महावीरको जन्मसे ही भगवान् मान बैठे हैं । इसलिये उनके द्वारा जब कोई साधारण मनुष्योचित घटना होती है तब हम उसका बेढंगा बचाव करने लगते हैं । अगर हम यह समझ लें कि वे जन्मसे मनुष्य ही थे, पूर्ण महात्मा तो वे ब्यालीस वर्षकी अवस्थामें हुए हैं तो इस बीचमें अगर उनसे कोई ऐसी घटना हो जाय जो उनके व्यक्तित्वपर न फबती हो तो उसमें आश्चर्यकी बात नहीं है । आखिर उनकी यह साधक अवस्था ही तो थी, इसलिये हमें ऐसी घटनाओंको किसी व्यन्तर वगैरहके नाम मढ़नेकी आवश्यकता नहीं है । महावीर चरित्रमें सिद्धार्थ व्यन्तर अनेक बार आया है जिससे वह बहुत विकृत हो गया है । सिद्धार्थके आवरणको अलग करके हम महावीर चरित्रको ठीक रूपमें देख सकेंगे ।

म० महावीरकी यह घटना ज्योतिष विद्यासे सम्बन्ध रखती है । उस जमानेमें धर्म-ज्ञानके साथ ज्योतिष विद्या या अष्टांग निमित्त-ज्ञानका भी बड़ा महत्त्व था । निमित्त-ज्ञानकी विद्या उस समय बहुत तरक्की पर थी । लोगोंके चेहरे परसे उनके मनकी बातें बता देना अथवा लोगोंके मनके ऊपर प्रभाव डालकर उनसे सच्ची और छुपी

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं

अणुत्तरोववाइयदसाओ

[पढमो वग्गो]

तेण कालेण तेण समएण रायगिहे (णा०) [नयरे] (हो० से० ना० रा० हो० चे० दे० गु० उ० व० ते० का० ते० स० रा० न०) अज्जसुहम्म(णा० थे०)स्स समोस(रिए)रण परिसा निग्गया जाव जंबू (जाव) पज्जुवासइ० एव वयासी—जइ ण भते ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्स ण भंते ! अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?, (तेण०) तए ण से सुहम्मे अणगारे जं(बू)बुं अणगारं एव वयासी—एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण नवमस्स अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण तिण्णि वग्गा पण्णत्ता,-जइ ण भते ! समणेण जाव सपत्तेण नवमस्स अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण (ति०) तओ वग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेणं जाव सपत्तेण (के) कइ अज्झयणा पण्णत्ता ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइयदसाण पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, त०-(गा०-)जालिमयालिउव(मा-जा-लि)याली पुरिससेणे य वारिसेणे य दीहदंते य लट्ठदंते य वे(वि)हल्ले वेहा[य]से अभए इ य कुमारे ॥ जइ ण भंते ! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भते ! अज्झयणस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे रिद्धत्थिमियसमिद्धे गुणसिलए उज्जाणे सेणिए राया धा(र)रिणी-देवी सी(ह)हो सुमि(ण)णे (पा० प० जाव) जाली-कुमा(रेजाए)रो जहा मेहो (जाव) अट्ठट्ठओ दाओ जाव उप्पिं पासाय० विहरइ, (ते० का० ते० स० स० भ० म० जाव) सामी समोसढे सेणिओ निग्गओ जहा मेहो तहा जाली-वि निग्गओ तहेव निक्खतो जहा मेहो, एक्कारस अगाई अहिज्जइ, गुणरयण तवोकम्म [जहा खंदयस्स] एवं जा चेव खद(य)ग[स्स] वत्तव्वया सा चेव चिंतणा आपुच्छणा थेरेहिं सद्धिं वि(पु)उल तहेव दु(रु)रुहइ, नवरं सोलस वासाइं सामण्णपरियाग

अनुरोध

कोई भी सम्प्रदाय जब स्थापित होता है तब वह समाजकी किसी न किसी भलाईके लिए होता है। मानव-जीवनकी समस्याएँ सब समय और सब जगह एक-सी नहीं होतीं इसलिये उनकी चिकित्सारूप धर्म भी एकसे नहीं होते। अपने अपने देश-कालके लिये सब ठीक हैं। सभी सत्यके एक एक अङ्ग या रूप हैं। उनमें विरोध समझना भूल है। अगर हम इस प्रकारकी उदारता और सचाईके साथ प्रत्येक धर्मकी मीमांसा करें तो हम भगवान् सत्यकी सेवाके साथ भगवती अहिंसाकी भी सेवा कर सकेंगे, साम्प्रदायिक कलह तथा द्वेष-वासनाको नष्ट करके शान्तिलाभ कर सकेंगे।

दूसरे धर्मकी आलोचना हम जिस कठोरताके साथ करते हैं और उस समय युक्ति तथा निःपक्षपातकी जितनी दुहाई देते हैं उतनी अगर अपने धर्मकी आलोचनाके समय की जाय तो भी साम्प्रदायिकताके मदका भूत उतर जाय।

इस प्रकार सम्प्रदायिक निःपक्षता आनेपर आप जीवनके लिये उपयोगी तत्त्व सभी धर्मोंसे ग्रहण कर सकते हैं। साधारण रूपसे तो उपयोगी तत्त्व सभीको अपने अपने धर्ममें मिल सकते हैं परन्तु परिस्थितिके अनुसार विशेष विवेचन अगर अन्यत्र मिल रहा हो तो वहाँसे लेनेमें हिचकनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। जो तत्त्व अपने लिये हितकारी है वह कहींसे मिले, उसे ग्रहण करनेमें लज्जित होने या अपनेको अपमानित समझनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

इस अवस्थामें पहुँचनेपर आप देखेंगे कि सर्व-धर्म-समभाव, सर्व-जाति-समभाव, समाजसुधारकता, विवेक आदि गुण आपमें आगये हैं। मनुष्यके लिये इन गुणोंकी सदा आवश्यकता है। इनको व्यवहार्य-रूप देनेमें अवश्य ही कठिनाइयाँ हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी होनेसे समाजके विरुद्ध चलकर इन सिद्धान्तोंको अमलमें लानेसे हिचकता है, इसी लिये सत्य-समाजकी स्थापना की गई है। आप हिन्दू, मुसलमान, जैन, बौद्ध, ईसाई, पारसी, आर्यसमाजी, सिक्ख आदि किसी भी सम्प्रदायमें रहिये, परन्तु अपने हृदयको उदार और निःपक्ष बनाइये, समाजसुधारके बड़ेसे बड़े कामके लिये तैयार रहिये। बस,

इसलिए आप सत्यसमाजके सदस्य बन सकेंगे। सत्य-समाजकी नियमावली पढ़िये, धर्ममीमांसा प्रथम भाग (मूल्य ।)) पढ़कर सत्य-समाजकी विशेष बातें समझिये, 'सत्यसंदेश' के ग्राहक बनकर अनेक तरहकी सर्वांग-विचारधाराओंका रसास्वादन कीजिये।

हमारा सामाजिक जीवन इतना विकृत हो गया है कि यहाँ क्रान्तिकी आव-श्यकता है। उसके लिये संगठित होकर आगे बढ़िये।

दरबारीलाल सत्यभक्त

पुस्तक मिलनेके पते—

१ हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय
हीराबाग गिरगाँव बम्बई

२ बाबू फतेहचंदजी सेठी प्रकाशक 'सत्यसंदेश'
लाखनकोठरी मोहल्ला अजमेर

३ प्रकाशक

४ सत्यसमाजकी शाखायें

लेकर गाँवके बाहर चले आये। सबको देखकर उन्होंने कहा—क्या तुम लोग मेरा अतिशय देखने आये हो? तब महावीरने उनको भी बहुत-सी बातें बतलाई। लोग उनके पास अब प्रति दिन आने लगे।

एक दिन लोगोंने उसी अच्छन्दककी बात छेड़ी। म० महावीरने कहा—यह बेचारा कुछ नहीं जानता, यह तो पेटके लिये धंधा करता है। लोगोने यह बात अच्छन्दकसे कही। वह अनेक वाक्-जालियोंसे महात्माको परास्त करने आया परन्तु जीत न सका। बल्कि उसकी चोरीकी बात महावीरने प्रकट कर दी। एक बात रह गई थी सो महावीरने लोगोंसे कहा कि उसे इसकी स्त्रीसे पूछो। उस दिन उसने अपनी स्त्रीको खूब मारा था। इससे उसने अपने पतिकी व्यभिचार-कथा लोगोंसे कह दी। अब बेचारे अच्छन्दकको रोटियाँ मिलना मुश्किल हो गया। इसलिये वह एकान्तमें आकर महावीरसे बोला कि आप यहाँसे चले जाओ तो अच्छा है, नहीं तो मैं भूखों मर जाऊँगा। क्योंकि जब तक आप यहाँ हैं तब तक मुझे कोई न पूछेगा। म० महावीरने पहले नियम लिया था कि क्लेशाकर स्थानमें नहीं रहना, इसलिये वे यहाँसे चले गये।

इस घटनासे यह बात मालूम होती है कि महात्मा महावीर निमित्त-ज्ञानका उपयोग ऐसे लोगोंके हाथसे नहीं होने देना चाहते थे जो दुराचारी या स्वार्थी हैं। इसके लिये उन्होंने जरा कठोरतासे भी काम लिया, जोकि उनके स्वभावके विरुद्ध था। साधकावस्थामें ऐसी बातोंका हो जाना स्वाभाविक है।

यहाँसे विहार करते हुए वे श्वेताम्बी नगरीकी तरफ चले। मार्गमें

हुई बातें प्रकट करा लेना तथा प्रकृतिके सूक्ष्म निरीक्षणद्वारा प्राकृतिक घटनाओंका पता लगा लेना आदि महत्त्वपूर्ण समझा जाता था। म० महावीर स्वभावसे ही इस विद्यामें अत्यन्त निपुण थे। परन्तु विशेषता यही थी कि इस विद्याका उपयोग उन्होंने कभी ऐहिक कार्यके लिये नहीं किया। जो लोग ऐहिक स्वार्थके लिये इस विद्याका या इस विद्याके नामका उपयोग करते थे उनके वे विरोधी थे। ऐसे लोगोंकी अक्ल ठिकाने लानेके लिये वे कभी कभी प्रयत्न भी करते थे जैसा कि उन्होंने इस बार मोराक ग्राममें किया।

इस ग्राममें एक अच्छन्दक नामक आदमी रहता था जो चोर और व्यभिचारी था। वह ज्योतिष विद्यासे अपनी आजीविका चलाया करता था। म० महावीरको यह बात अच्छी न लगी इसलिये उन्होंने उसकी अक्ल ठिकाने लानेका विचार किया।

ग्रामके बाहर जब वे एक बागमें स्थिर थे उस समय वहाँसे एक ग्वाला निकला। म० महावीरने ग्वालाको बुलाकर कहा—तू अपने बैलोंकी रक्षाके लिये जा रहा है और रास्तेमें तुझे एक सर्प मिला था। तूने सौवीरसहित कगकूरका भोजन किया है। आज तू स्वप्नमें रोया है। जिसने मनुष्य-प्रकृति और मनुष्याकृतिका गहरा अभ्यास किया हो उसके लिए ऐसी बाते जानना कठिन नहीं है। ग्वाला यह सुनकर चकित हो गया। बातचीत करनेसे निमित्त-ज्ञानके लिये और भी मसाला मिल गया। तब उन्होंने और भी बातें बताईं। ग्वालाका आश्चर्य और बढ़ गया। वह शीघ्र ही गाँवमें गया और लोगोंसे बोला कि गाँवके बाहर एक त्रिकालवेत्ता महापुरुष आये हैं। उसने अपना सब हाल कहा। यह सुनकर गाँवके लोग पूजाकी सामग्री

पृष्णा मार भी वहाँ पहुँचा और गणमालको लेकर भागा। उसने पुर पूरा कर लगा फुफकारा, परन्तु जब उसको निर्भय ही पाया तो उसका बड़ा बड़ा लगा कुछ भय भी हुआ। वह भागकर आया और उनके पास फण मार कर भागा। इस प्रकार कई बार वह दौड़ दौड़ कर आया और फण मारकर तथा काटकर भागा, परन्तु उसके विषका कोई प्रभाव उनके ऊपर नहीं हुआ। इसके दो कारण हो सकते हैं—

१—सर्पोंके विषके विषयमें यह है कि तीव्र मनोबल-वालोंके ऊपर उसका असर नहीं पड़ता। आज भी मांत्रिक लोग मनोबलके आधारसे सर्पोंके विषको निष्फल कर देते हैं और मृतप्राय मनुष्योंको जीवित कर देते हैं। इसलिये म० महावीर सरीखे दृढ़-मनस्वी व्यक्तिपर उसके विषका असर न होना स्वाभाविक है।

२—सर्प हरएक बार इतनी जल्दी फण मारकर भागता था कि उसके काटने पर भी उसका विष भगवानके शरीरके खून तक न पहुँच पाता था।

इन दो कारणोंमेंसे कोई कारण होगा जिससे सर्पका विष असर न कर सका। अथवा जैसे कि पहले कहा जा चुका है कि यह घटना भी श्रीकृष्णके जीवनकी घटनाके रूपमें रची गई हो। खैर, इतना करनेपर भी जब म० महावीरके ऊपर कुछ असर न पड़ा, न म० महावीरने सर्पके ऊपर कुछ आक्रमण किया तब सर्पको बड़ा आश्चर्य हुआ और वह स्थिर दृष्टिसे उनकी तरफ देखने लगा। तब महात्माने कहा—चण्डकौशिक, कुछ समझ। आत्माको मत भूल।

म० महावीरके इन शब्दोंको सर्पने समझा या नहीं, यह कौन कह सकता है? परन्तु इन शब्दोंको बोलते समय उनके मुखपर

ग्वाल-बालकोंने कहा कि यह मार्ग है तो सीधा परन्तु आगे ताप-साश्रमके पास एक सर्प रहता है, उसके डरसे कोई इस मार्गसे नहीं जाता इसलिये आप भी इस मार्गसे न जाओ। परन्तु म० महा-वीरको ऐसे ऐसे उपद्रवोको जीतनेमें मजा आता था। मृत्युका भय तो उन्हें छू भी नहीं गया था। उनके खयालसे जो ऐसे उपसर्गोंसे डरता है, मृत्यु जिसके लिये खेल नहीं है वह दुनियाको अभय कैसे बना सकता है। इसके अतिरिक्त वे यह भी मानते थे कि प्रत्येक मनुष्य ही नहीं किन्तु प्रत्येक प्राणीके अन्तस्तलमें शुभ-वृत्ति छुपी रहती है। अशुभ-वृत्तियाँ जब निष्फल हो जाती हैं तब वे शुभवृ-त्तियाँ प्रकट हो जाती हैं। क्रूर प्राणियोंके लिये भी यही नियम है। अगर अपना हृदय पवित्र हो, निर्भय हो, तो ऐसे क्रूर प्राणी भी शान्त हो जाते हैं। इसलिये उन्होंने सर्पका उद्धार करना भी अपना कर्त्तव्य समझा।

इस सर्पको लोग चण्डकौशिक कहते थे। इसका कारण यह है कि इसी वनमें जो तापसाश्रम था उसके अधिपतिका नाम चण्डकौ-शिक था। वह अत्यन्त क्रूर और लोभी था। उसके बागका कोई पत्ता भी तोडता तो वह उसे मारनेको तैयार हो जाता था। इसी प्रकार मारनेके प्रयत्नमें वह एक दिन गड्ढेमें गिर पड़ा और चोट खाकर मर गया। उसकी मृत्युके कई दिन बाद उसी वनमें यह भयङ्कर सर्प प्रकट हुआ, इसलिये लोगोंने यही मान लिया कि चण्ड-कौशिक तापस ही मरकर यह सर्प हुआ है और तबसे सर्पका नाम भी चण्डकौशिक विख्यात हो गया।

म० महावीर उसी वनमें एक जगह ध्यानस्थ हो गये। घूमता

कहना सत्य निकलता था । इसलिये गोशालकने यह सिद्धान्त निश्चित कर लिया कि जो कुछ होना है वह तो होता ही है, मनुष्यका किया कुछ नहीं हो सकता और वे घोर दैववादी बन गये । जब उन्होंने आजीवक सम्प्रदायकी स्थापनाकी तब उनका यह विचार आजीवक सम्प्रदायका मुख्य सिद्धान्त बन गया ।

म० महावीरकी सूक्ष्म निरीक्षण-शक्तिने उन्हें भविष्यवेत्ता बना दिया था । इसका एक उदाहरण देखिये ।

एक बार कुछ ग्वाले मिट्टीकी हण्डीमें खीर पका रहे थे । गोशालकने महावीरसे कहा—चलिये, हम इस खीरका भोजन करें । म० महावीरने देखा कि बनानेवाले मूर्ख हैं उन्होंने हण्डीमें इतने अधिक चावल डाल दिये हैं कि पकनेपर वे हण्डीमें न समेंगे । जब वे बाहर निकलेंगे तो जरूर ये ग्वाले उसका मुँह बन्द करेंगे, इसलिये मिट्टीकी हण्डी फूट जायगी । यह सोचकर उन्होंने गोशालकसे कहा कि वहाँ क्यों जाते हो यह खीर बनेगी ही नहीं । गोशालकने जाकर ग्वालोंसे कहा कि तुम्हारी हण्डी फूट जायगी और खीर न पकेगी । ग्वालोंने भयसे हण्डीको चारों तरफसे बाँध दिया परन्तु वह हण्डी फूट गई । ऐसी ऐसी घटनाओंने गोशालकको घोर दैववादी बना दिया ।

गोशालकके विषयमें जैनशास्त्रोंमें बहुत अधिक लिखा है, परन्तु वह बुरी तरह पल्लवित किया गया है । अनेक जगह निन्दा करनेके लिये बहुत अतिशयोक्तिसे काम लिया गया है । परन्तु उसमें सार इतना ही है कि—

(१) कैवल्य प्राप्त होनेके पहले ही म० महावीरको गोशालकने गुरु बना लिया था ।

जो अनन्त वात्सल्यके चिह्न थे उनको उसने जरूर समझा। आज भी हम किसी पशुपर जब कुछ भाव प्रकट करना चाहते हैं तब अपनी भाषाके शब्दोंका प्रयोग करते हैं। वह पशु हमारी भाषा भले ही न समझे, परन्तु हमारी मुख-मुद्राको जरूर समझता है। उस मुख-मुद्राके बननेमें शब्दोंका बोलना बहुत सहायता पहुँचाता है। इसलिये हम पशुके साथ भी बोलते हैं। वे भी बोले और सर्पके ऊपर उनके शब्दोंका आशातीत प्रभाव पड़ा। इसके बाद उस सर्पने कभी किसीको तंग नहीं किया और निराहार रहकर 'सल्लेखना'पूर्वक मर गया। इसमें सन्देह नहीं कि निर्भयतामें महावीरसे बढ़कर महात्मा मिलना मुश्किल है।

एक बार म० महावीर गंगा किनारे आये और नदी पार करनेके लिये नौकामें बैठे। जब नौका बीचमें पहुँची तो बहुत हवा चली। नौकाके अन्य यात्रियोंने जीवनकी आशा छोड़ दी। परन्तु भाग्यवश नौका डूबते डूबते बच गई। थोड़ी देर बाद हवा बन्द हो गई और सब लोग सकुशल पार हो गये। जैन शास्त्रोंमें यह घटना भी देवकृत बना दी गई है।

विहार करते हुए म० महावीर राजगृही नगरीमें पहुँचे और एक कपड़े बुननेवालेके यहाँ ठहरे। इसी समय आजीवक सम्प्रदायके संस्थापक मक्खरी गोशालक भी म० महावीरके पास रहे। छः वर्ष तक इन दोनोंका सम्बन्ध रहा। मैं पहले कह चुका हूँ कि म० महावीर पक्के निमित्त-ज्ञानी थे। उन्हें प्राकृतिक और कृत्रिम घटनाओंके कार्य-कारणभावका और ज्ञाप्य-ज्ञापक भावका अच्छा अनुभव था, इसलिये वे बहुत-सी बातें पहले ही बता देते थे। उनका

-ताके शीघ्र ही कोप-भाजन हो जाते थे। उनका विरोध उचित होता था तो भी अवसरके कारण निष्फल या दुष्फल हो जाता था। जब कि म० महावीरमें वाक्-संयम बहुत था। वे बहुत कम बोलते थे और लोगोंके कार्यमें बहुत कम हस्तक्षेप करते थे। अप्रिय घटनाओंको सहन करनेकी उनमें बहुत बड़ी क्षमता थी।

आये हुए कष्टोंको शान्ततासे सहन करनेमें म० महावीर अद्वितीय थे। मैं प्रथम अध्यायमें कह चुका हूँ कि दुःखोंको विजय करनेके लिये उनको सहनेकी आवश्यकता है। म० महावीर इस सिद्धान्तकी चरम सीमापर पहुँचे थे। यहाँ यह बात ध्यानमें रखना चाहिये कि दुःख भोगनेमेंसे दुःख सहना बिलकुल जुदी बात है। दुःख भोगनेवाले दुःखसे घबराते हैं इसलिये वे दुःखपर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। म० महावीर तो दुःखोंको आनन्दसे सहते थे और यह अनुभव करते थे कि जितना कष्ट सहा जायगा आत्मा उतना ही हलका होगा और सुख उतना ही अटल होगा। कहा जा सकता है कि इससे दुनियाँका क्या भला है। परन्तु अगर जरा विचार किया जाय तो ऐसी घटनाओंकी उपयोगिता मालूम होने लगेगी। अधिकसे अधिक कष्ट सहनेसे दुःखका प्रभाव नष्ट हो जाता है तथा दूसरे लोगोंको विपत्तिके समयमें बहुत मनोबल मिलता है। यही कारण है कि म० कभी कभी अनावश्यक कष्ट भी सहते थे।

एक बार म० महावीर मार्गके किनारे कायोत्सर्गसे खड़े थे। वहाँपर एक व्यापारी ठहरा। रात्रिमें ठंडसे बचनेके लिये उसने अग्नि जलाई परन्तु जाते समय बुझाई नहीं। अग्नि जलते जलते म० महावीरके पास

(२) म० महावीरकी भविष्यज्ञताने उन्हे निमित्तवादी बना दिया।

(३) म० महावीरसे उनने आचार-शास्त्र और मन्त्र-शास्त्रकी शिक्षा पाई थी।

(४) म० महावीरकी उदासीनता गोशालकको पसन्द नहीं थी।

(५) पीछेसे उनमें मत-भेद हो गया और गोशालकने आजीवक सम्प्रदायकी नींव डाली जो अपने बाह्यरूपमें जैनधर्मसे मिलता-जुलता था। म० महावीरने अपने धर्मका प्रचार उससे भी छः वर्ष बाद किया।

एक बार गोशालकको म० पार्श्वनाथकी परम्पराके कुछ मुनि मिले। उनके सामने गोशालकने महावीरकी प्रशंसा की और उन मुनियोंकी निन्दा की। उन मुनियोंने कहा—तेरा गुरु भी तेरे ही समान होगा, क्यो कि वह अपने ही आप गुरु बना हुआ मालूम होता है। मुनियोंके इस वक्तव्यसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उन लोगोंको यह नहीं मालूम था कि कोई तीर्थङ्कर पैदा होनेवाला है। म० महावीरका उन्होंने नाम भी नहीं सुना था। यदि गर्भ-जन्मके कल्याणकोंका वर्णन सत्य होता और उस समय जैनधर्म प्रचलित होता तो क्या जैन मुनि भी जैन-तीर्थंकरके विषयमें कुछ न जानते? क्या म० महावीर इतने अपरिचित रह सकते थे?

म० महावीर और गोशालककी प्रकृतिमें एक बड़ा भारी भेद था। म० महावीर किसीसे कुछ बात कहनेके पहले अवसर देखते थे। परन्तु गोशालक, परिणामकी पर्वाह किये बिना, जो मनमें आता था सो कह डालते थे। बुराईकी बुराई करनेमें कभी कभी गोशालक मात्रासे अधिक काम कर जाते थे। यही कारण है, कि कभी कभी गोशालक दूसरे देवोंकी मूर्तिका अपमान कर जाते थे, इसलिये जन-

मायाग धारण करके ठहरे । रात्रिमें एक तापसी आई और ठंडे जलमें स्नान करके वृक्षपर चढ़ गई । उसकी जटाओंसे पानीकी बूँदें टपक टपककर म० महावीरके ऊपर पड़ने लगीं । माघकी रात्रि थी और म० महावीर नग्न थे इसलिये वे ठंडी बूँदें गजब ढा रही थीं, परन्तु म० महावीर सब सह गये । सुबह जब वह जाने लगी तो महात्माको भीगा देखकर उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ वह क्षमा माँगकर चली गई । मालूम होता है कि तापसीको किसी मन्त्र-सिद्धिके लिये यह क्रिया करनी पड़ी थी । परन्तु जैन लेखकोंने उस तापसीको एक व्यन्तरी देवी बना दिया है । क्योंकि शायद ऐसे ऊटपटाँग कामके लिये देवताओंको ही फुरसत हो सकती थी । तापसीके देवी बनानेका दूसरा कारण यह भी है कि माघकी रात्रिमें ठंडे पानीसे स्नान करनेका काम भी एक व्यन्तरीके ही योग्य समझा गया । एक तापसी भी उतनी ठंड सहे जितनी म० महावीरने सही थी, यह बात भक्त-हृदयको रुचिकर नहीं हो सकती ।

एक बार म० महावीर कूर्म ग्राम आये । यहाँ गोशालकका एक तापसके साथ झगड़ा हो गया । गोशालकने जब तंग किया तो उसने तेजोलेश्या (एक तरहका मंत्र या तंत्र मालूम होता है कि जिसके कारण शरीरका पित्त कुपित हो जाता था तथा दाह होने लगता था और अंतमें मनुष्य मर जाता था) का प्रयोग किया, परन्तु म० महावीरने उससे विरुद्ध गुणवाली शीत-लेश्यासे गोशालककी रक्षा की । गोशालकके आग्रह करने पर म० महावीरने गोशालकको लेश्या सिद्ध करनेकी विधि बतला दी । इसके बाद पार्श्वनाथकी परम्पराके कुछ मुनियोंसे गोशालकने ज्योतिष विद्या

तक आई परन्तु वे वहाँसे न हटे। अग्नि-तापसे पैर काले पड़ गये परन्तु वे वहाँ खड़े ही रहे। कष्टसे टरना म० महावीर जानते ही न थे।

एकवार जगलके रक्षक चोरोंकी खोजमें फिर रहे थे। म० महावीरसे उन्होंने पूछताछ की परन्तु इन्होने कुछ उत्तर न दिया। फलत: वे गिरफ्तार कर लिये गये। पीछे दूसरे शैल-पालकने पहिचाना और क्षमा माँगकर छोड़ दिया।

यद्यपि म० महावीरने ऐसे अनेक कष्ट सहे परन्तु इतनेसे उन्हे सन्तोष न हुआ। वे और भी क्रूर मनुष्योंके परिचयमें आना चाहते थे और उनकी प्रकृतिका अभ्यास करना चाहते थे। इसलिये वे अनार्य देशमे गये। भारतवर्षके कई प्रदेश उस समय अनार्य समझे जाते थे। लाट देश भी उस समय अनार्य समझा जाता था। इस देशमें म० महावीरने मार-पीट, गाली-गलौज आदिके बहुत कष्ट सहे। इसके बाद वे फिर आर्य-देशमें लौट आये।

एक बार म० महावीर विशाला नगरीमें आये और एक लुहारकी शालामें, उसके कुटुम्बियोंकी आज्ञा लेकर, ठहरे। लुहार बीमार था। सुबह जब वह उठा तो एक नग्न साधुको देखकर अपशकुन मानने लगा और गुस्सामें आकर लोहेका घन उठाकर मारने दौड़ा। परन्तु कमजोरीके कारण घन हाथसे छूट पड़ा और वह उसीके ऊपर गिरा। शास्त्रमें लिखा है कि इन्द्रने अपनी शक्तिसे उसीके हाथसे उसीके सिरपर घन पटकवा दिया था। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि इन्द्र महाराजकी वहाँ जरा भी जरूरत नहीं थी।

एक दिन म० महावीर शालिशीर्ष गाँवके बाहर एक बागमें प्रति-

यद्यपि छद्मस्थ अवस्थामें म० महावीरने धर्म-प्रचारका काम नहीं किया था, फिर भी आवश्यकता होनेपर वे ऐसी बातोंका जिकर करते थे जिनके निर्णय करनेका काम बाकी नहीं रहा था। एक बार चम्पा नगरीमें वे स्वातिदत्त नामक ब्राह्मणकी यज्ञशालामें ठहरे। वहाँ दो आदमी (शास्त्रोंके शब्दोंमें यक्ष) उनकी वन्दनाको प्रतिदिन आते थे। उन्हें देखकर उस ब्राह्मणको विचार हुआ कि क्या ये तपस्वी ज्ञानी भी हैं जो ये आदमी इनकी पूजा करने आते हैं। इसलिये एक दिन उसने म० महावीरके साथ आत्माके विषयमें चर्चा की और पूछा कि आत्मा कैसा है, कहाँ है आदि। म० महावीरने सन्तोषजनक उत्तर दिया।

एक बार एक ग्रामके बाहर वे कायोत्सर्गसे ध्यानस्थ थे। वहाँ एक ग्वाला आया और बैलोंको छोड़कर कहीं चला गया। लौटकर आकर देखा तो वहाँ बैल नहीं थे। उसने महात्मासे पूछा परन्तु वे ध्यानस्थ थे, इसलिये कुछ न बोले। ग्वालाको गुस्सा आ गया। वह बोला—तू मेरी बातका जवाब क्यों नहीं देता? क्या तुझे सुन नहीं पड़ता? फिर ये बड़े बड़े छिद्र किसलिये हैं? जब वे कुछ न बोले तो उसने कानोंके छिद्रोंमें पतली और पैनी लकड़ियाँ ठोक दीं। इतना ही नहीं, किन्तु कोई इन लकड़ियोंको निकाल न दे इसलिये छिद्रोंसे बाहर निकला हुआ लकड़ियोंका भाग उसने काट डाला। इस विकट दशामें भी महात्मा घूमते रहे, और घूमते घूमते अपापा नगरीमें पहुँचे। वहाँ सिद्धार्थ नामक वैश्यके यहाँ भोजनार्थ पधारे। उस समय कान-की वेदनाके कारण उनका मुख कुछ फीका हो रहा था। उस वैश्यका एक खरक नामका वैद्य मित्र था। सौभाग्यवश वह उस समय

(अष्टाङ्ग निमित्त-विद्या) भी सीख ली । इसके बाद गोशालकने म० महावीरका साथ छोड दिया और आजीवक सम्प्रदायकी स्थापनाका काम शुरू किया ।

जैन शास्त्रोंमें गोशालकके विषयमें जो कुछ लिखा है वह कहाँतक सत्य है कहा नहीं जा सकता, फिर भी उसमें थोड़ा बहुत सत्यका अंश अवश्य मालूम होता है ।

एक बार म० महावीर दृढभूमि गये । यहाँ म्लेच्छोंकी बहुत बस्ती थी । इस जगह म० महावीरने बहुत कष्ट सहे । एक दिन इतनी धूल उड़ी कि उनके कान नाक आदिके छिद्र धूलसे भर गये । एक दिन कीड़ियोंने बहुत काटा । यहाँ उन्हें मच्छरोंका भी कष्ट सहना पड़ा । अन्य अनेक प्रकारके कीड़ोंने भी बहुत तंग किया । बन्दर आदिके उपद्रवोंको भी सहा । एक बार एक आदमीने उनके सिरपर चक्र रख दिया जिससे उन्हें घुटनेके बल हो जाना पड़ा । (शास्त्रोंमें लिखा गया कि भगवान घुटने तक पृथ्वीमें धँस गये ।) यहाँपर कुछ स्त्रियोंने इन्हें अनेक प्रकारसे लुभानेकी भी चेष्टा की थी । ये उपसर्ग लगातार हुए इसलिये जैनशास्त्रोंमें इन्हें सगम-देवकृत उपसर्ग माना है । प्राकृतिक उपद्रवोंको देवकृत बता देनेका उन दिनों एक रिवाज-सा पड़ गया था । यहाँ म० महावीरको आहार भी नहीं मिलता था । एक दिन एक ग्वालिनके यहाँ ही आहार मिला था ।

मेढक गाँवमें एक ग्वाला बालोंकी रस्सी लेकर मारने आया, परन्तु किसी भले आदमीने उसे रोककर डाँटा जिससे वह रह गया । शास्त्रोंमें इस रोकनेवालेको भी इन्द्र मान लिया गया है ।

उस अनार्य नरेशको क्षमा कर दिया। सम्भव है, उस समय म० महावीरने उस आर्य नरेशको कुछ समझाया हो परन्तु शास्त्रोंमें इस समझानेका उल्लेख नहीं मिलता।

इस घटनाको शास्त्रोंमें बड़ा विचित्ररूप दिया गया है। अनार्य राजाको असुरेन्द्र और आर्य राजाको देवेन्द्र नाम दिया गया है— जैसा कि पहले भी होता रहा है। देवोंकी अकाल-मृत्यु नहीं होती इस सिद्धान्तके कारण दिगम्बरोंको देवेन्द्र और असुरेन्द्रकी इस लड़ाईका रूपक पसन्द नहीं आया, इसलिये उन्होंने इस लड़ाईको नहीं माना है किन्तु इसके बदलेमें सिर्फ इतना स्वीकार किया है कि देवेन्द्र और असुरेन्द्रमें परस्पर ईर्षा रहती है। इस तरह या तो साधारण दो राजाओंकी लड़ाई सुरासुर-संग्रामके रूपमें परिणत कर दी गई है, अथवा वैदिक सम्प्रदायके सुरासुर-युद्धकी नकल करनेके लिये यह कल्पना की गई है। इसका उद्देश्य सिर्फ इतना ही है कि म० महावीरको सुरासुरपूजित बतलाया जाय और वैदिक सम्प्रदायकी तरह जैनसम्प्रदायमें भी सुरासुर-संग्रामका कुछ उल्लेख हो जाय। भक्तिकी दृष्टिसे ऐसी कल्पनाओंका होना न तो आश्चर्यजनक है न विशेष अनुचित।

म० महावीरके इस तपस्या-कालमें और भी अनेक छोटी-मोटी घटनाएँ हुई होंगी और हुई हैं। दिगम्बर सम्प्रदायमें सात्यकि नामक रुद्र (*रुद्र—भयङ्कर आकृति या प्रकृतिका आदमी*) के द्वारा उपसर्ग होनेकी बातका उल्लेख है। बहुतसी घटनाएँ छूटी हैं। कुछ घटनाएँ पुनरुक्त सरीखी हैं या अनावश्यक होनेसे छोड़ दी गई हैं। फिर भी उपर्युक्त घटनाओंसे यह बात अच्छी तरह सिद्ध हो जाती

वैद्यके घरपर था। उसने उनके फीके मुखसे अनुमान किया कि इन्हें कोई न कोई घोर वेदना होना चाहिये। उसने शरीरकी जाँच की और कानमे दो लकड़ियाँ देखीं। दोनों इसका उपाय करनेके लिये विचार करने लगे। इतनेमे महात्मा वहाँसे चल दिये और एक बागमें ठहरे। वे दोनों वहाँ भी पहुँचे। वैद्यने म० महावीरको तेलकी कुंडीमें बिठलाया और पगचम्पी करनेवाले मनुष्यसे खूब चम्पी करवाई जिससे शरीर कुछ शिथिल हो जाय। (यह सब उस चिकित्साका एक अग था।) पीछे एक साथ वे लकड़ियाँ खींचीं। लकड़ियाँ माँसमें चुभ गई थीं, इसलिये उनको निकालते समय इतनी अधिक वेदना हुई कि म० महावीर सरीखे दृढ-हृदय मनुष्यके मुखसे भी चीख निकल पड़ी।

एक बार म० महावीर सुसुमार नगरमें ध्यानस्थ थे। उस समय एक असुर राजा (उस समय आर्य लोग आर्येतर लोगोंको असुर आदि कहा करते थे।) किसी देव राजा (आर्य राजा) से युद्ध करनेके लिये जा रहा था। उस समय आर्य-सभ्यताने अनार्य सभ्यतापर पूर्ण प्रभाव डाल दिया था। अनार्य लोगोंपर आर्य मुनियोंका बहुत प्रभाव पड़ गया था, इसलिये शुभ शकुनके रूपमें उसने म० महावीरकी वन्दना की। परन्तु लड़ाईमें वह हारकर भागा। आर्य नरेशने उसका पीछा किया। जब उसे कोई उपाय न सूझा तो वह भागता भागता म० महावीरके शरणमें आ गया और रक्षाके लिये प्रार्थना करने लगा। इतनेमें वह आर्य राजा भी वहीं आ पहुँचा। एक अनार्य नरेशको आर्य मुनिकी शरणमें आया देखकर आर्य नरेशको बहुत प्रसन्नता हुई। उसने इसको आर्यताकी विजय समझकर

था। फिर भी प्रत्येक मनुष्यको किसी न किसी तरह लोक-सेवा अवश्य करना चाहिये इसलिये उनने विचार किया कि जब तक जीवन है तब तक मन-वचन-काय कुछ न कुछ काम तो करेंगे ही तब उनसे विश्वकल्याणका ही काम क्यों न किया जाय? इसलिए जिस अवस्थाको वे स्वयं प्राप्त हुए थे, दूसरोंको भी वही अवस्था प्राप्त करानेके लिये उनने संघ-रचनाका विचार किया और इसके लिये वे धर्मप्रचारक बने।

पिछ्ले बारह वर्षोंमें हजारों भद्र जीवोंने उनके दर्शन प्राप्त किये थे, परन्तु उनको आश्चर्य होता था कि ये तपस्वी किसीको कुछ उपदेश क्यों नहीं देते? परन्तु लोगोंको आशा थी कि ये महर्षि कभी न कभी उपदेश देंगे। इसलिए जब उनने उपदेश देनेका विचार किया तब बहुतसे श्रोता एकत्रित हो गये। परन्तु ये सब ग्रामीण श्रोता भक्तिके कारण उपदेश सुननेको एकत्रित हुए थे, समझनेके लिए नहीं। इसलिए उनका पहिला व्याख्यान निरर्थक हो गया। श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इस बातको एक आश्चर्यमें गिना है; दिगम्बर सम्प्रदायमें इस घटनाका उल्लेख ही नहीं है।

पहिले व्याख्यानकी निष्फलतासे उनने विचार किया कि पहिले कुछ विद्वानोंको अपना तत्त्व समझाना चाहिए। उन विद्वानोंसे धर्मप्रचारमें बहुत सुविधा होगी। उनने जिन विद्वानोंको अपना तत्त्व समझाया वे उनके मुख्य शिष्य अर्थात् गणधर हुए। इसपरसे यह प्रसिद्धि हो गई कि तीर्थंकर बिना गणधरोंके व्याख्यान ही नहीं देते। इस प्रकार यह नियम सभी तीर्थंकरोंके लिये लगा दिया गया।

विद्वानोंको शिष्य बनानेके विचारसे वे अपापा नगरीमें आये।

है कि म० महावीर किस स्वभावके और कैसे वीर थे, धर्मके उद्धार-के लिये इस बारह वर्षके अवसरमें उन्होंने किस तरह क्या क्या सामग्री एकत्रित की, वे नरसे नारायण कैसे वनें। जो जन्मसे ही म० महा-वीरको नारायण मान लेते हैं और देवताओंके रूपकोंसे उनके महत्त्व-को वढ़ाते है वे भक्तिके द्वारा पुण्यका सचय कर सकते हैं परन्तु सम्यक्त्व प्राप्त नहीं कर सकते, वल्कि दूसरोंको भी सम्यक्त्वसे वचित रखते हैं।

म० महावीरका जीवन इतना महान् है कि उसे अलकृत करनेके लिये देवताओंकी जरा भी आवश्यकता नहीं है। नकली रत्नोंको डॉक लगाकर चमकाया जाता है, असली हीरे तो विना डॉकके ही चमकते हैं और उनकी परीक्षा तो डॉक लगाकर हो ही नहीं सकती। दुनियाके वाजारमें अगर जैनधर्मको और महावीरके व्यक्तित्वको रखना हो तो आगे-पीछेके सब आवरण अलग कर देना चाहिये। तभी जैनधर्म एक वैज्ञानिक धर्म कहा जा सकता है और इस वैज्ञानिक युगमें उसका प्रचार हो सकता है।

कैवल्य और धर्मप्रचार

गणधर

वारह वर्षतक घोर तपश्चरण और पूर्ण मनन करनेके बाद म० महा-वीर पूर्ण समभावी और मर्मज्ञ हो गये। अब ससारकी कोई वस्तु उन्हें दु खी नहीं कर सकती थी। जिस अज्ञानताके कारण प्राणी दु खी होता है वह अज्ञानता उनकी नष्ट हो गई थी। आत्माको स्वतत्र और सुखी बनानेका जो सच्चा मार्ग है, वह उन्हें प्रत्यक्ष झलकने लगा था। वे कृत-कृत्य हो गये थे—उनका कोई स्वार्थ वाकी न था

था। फिर भी प्रत्येक मनुष्यको किसी न किसी तरह लोक-सेवा अवश्य करना चाहिये इसलिये उनने विचार किया कि जब तक जीवन है तब तक मन-वचन-काय कुछ न कुछ काम तो करेंगे ही तब उनसे विश्वकल्याणका ही काम क्यों न लिया जाय? इसलिए जिस अवस्थाको वे स्वयं प्राप्त हुए थे, दूसरोंको भी वही अवस्था प्राप्त करानेके लिए उनने सम-रचनाका विचार किया और इसके लिये वे धर्मप्रचारक बने।

पिछले बारह वर्षोंमें हजारों नर नारियोंने उनके दर्शन प्राप्त किये थे, परन्तु उनको आश्चर्य होता था कि ये तपस्वी किसीको कुछ उपदेश क्यों नहीं देते। परन्तु लोगोंको आशा थी कि ये महर्षि कभी न कभी उपदेश देंगे। इसलिए जब उनने उपदेश देनेका विचार किया तब बहुतसे श्रोता एकत्रित हो गये। परन्तु ये सब ग्रामीण श्रोता भक्तिके कारण उपदेश सुननेको एकत्रित हुए थे, समझनेके लिए नहीं। इसलिए उनका पहिला व्याख्यान निरर्थक हो गया। श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इस बातको एक आश्चर्यमें गिना है; दिगम्बर सम्प्रदायमें इस घटनाका उल्लेख ही नहीं है।

पहिले व्याख्यानकी निष्फलतासे उनने विचार किया कि पहिले कुछ विद्वानोंको अपना तत्त्व समझाना चाहिए। उन विद्वानोंसे धर्मप्रचारमें बहुत सुविधा होगी। उनने जिन विद्वानोंको अपना तत्त्व समझाया वे उनके मुख्य शिष्य अर्थात् गणधर हुए। इसपरसे यह प्रसिद्धि हो गई कि तीर्थंकर बिना गणधरोंके व्याख्यान ही नहीं देते। इस प्रकार यह नियम सभी तीर्थंकरोंके लिये लगा दिया गया।

विद्वानोंको शिष्य बनानेके विचारसे वे अपापा नगरीमें आये।

यहाँ सोमिल नामके एक श्रीमन्त ब्राह्मणने वडे भारी यज्ञका आयोजन किया था जिसमें देशके सैकड़ों वडे वडे विद्वान् अपने अपने शिष्य-परिवार सहित आये थे। वह जमाना यज्ञोंका था। यज्ञके नामपर लाखों पशु स्वाहा कर दिये जाते थे। इस समय क्रियाकाण्डके आगे ज्ञानकाण्डका कुछ मूल्य नहीं था। क्रियाकाण्डियोंकी सब जगह तूती वोलती थी। परन्तु इस ज्ञानशून्य क्रियाकाण्डकी निःसत्त्वता कुछ विद्वानोंके हृदयमें खटकती भी थी। उन्हें क्रियाकाण्डमें विश्वास नहीं रहा था इसलिये उनके मनमें अनेक सशयोंने घर कर लिया था। इन सशयी विद्वानोंमेंसे ग्यारह विद्वान् म० महावीरके शिष्य हुए।

जब म० महावीर अपापा नगरीमें पहुँचे तब भी उनके पास बहुत भीड़ हुई। नगरीके वहुतसे लोग उनके पास पहुँचे। इन्द्रभूति गौतमने यह देखकर पूछताछ की—'लोग हमारे पास न आकर महावीरके पास क्यों जाते हैं?' इस विचारसे कुछ तो उन्हें रज हुआ और, शुष्क यज्ञकाण्डोंसे उनका मन भीतर भीतर ही घवरा रहा था इसलिए, कुछ जिज्ञासा भी हुई। सोचा, देखूँ तो क्या मामला है? इन्द्रभूति वहाँ पहुँचे। म० महावीरने शब्दोंसे उनका स्वागत किया। दोनोंमें वात-चीत होने लगी। वातचीतमें म० महावीर सरीखे चतुर पुरुषसे यह वात छुपी न रह सकी कि इन्द्रभूतिको आत्मामें ही विश्वास नहीं है। बात यह है कि शुष्क क्रियाकाण्डोंसे उनकी निःसारता तो मालूम होती ही थी परन्तु जिस परलोकके नामपर यह क्रियाकाण्ड चल रहा था उस परलोकके ऊपर ही अश्रद्धा पैदा हो गई थी। परलोकके नामपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार और दम्भोंने नास्तिकवादके प्रचारमें वहुत सहायता की है।

इन्द्रभूतिके संशयको म० महावीरने अपनी प्रबल युक्तियोंसे और अनुभवसे बिल्कुल दूर कर दिया। उनके अनुभवपूर्ण गम्भीर ज्ञान, उनकी वक्तृत्वशक्ति, उनके अटूट विश्वास और निष्पाचारित्रका इन्द्रभूतिके ऊपर इतना प्रभाव पड़ा कि वे घर न लौटकर वहीं के वहीं उनके शिष्य हो गये। इन्द्रभूतिके समान अन्य दस विद्वान् भी उनके शिष्य हो गये। इन विद्वानोंके पास जो शिष्य परिवार था उसने भी अपने गुरुओंका अनुकरण किया। इन विद्वानोंका संक्षिप्त परिचय निम्न लिखित है—

नाम	ग्राम	पिता	माता	संशय का विषय—
(१) इन्द्रभूति (२) अग्निभूति (३) वायुभूति	गोबर	वसुभूति	पृथ्वी	आत्मा है कि नहीं ? कर्म है कि नहीं ? क्या जीव शरीरसे भिन्न है ?
(४) व्यक्त (५) सुधर्मा	कोल्लाक	धनुर्मित्र धम्मिल	वारुणी भद्रिला	जगत् शून्य है या कुछ है भी ? जीव जैसा इस भवमें वैसा परभवमें ?
(६) मण्डिक (७) मौर्यपुत्र	मौर्य	धनदेव मौर्य	विजयादेवी	बंध मोक्ष कुछ है कि नहीं ? देव गति है कि नहीं ?
(८) अकम्पित	मिथिलापुरी	देव	जयन्ती	नरक कुछ है कि नहीं ? या यों ही डरानेके लिये मान लिया गया है ?
(९) अचल-भ्राता	कोशल	वसु	नन्दा	पुण्य पाप है कि नहीं ?
(१)मेतार्य	तुंगिक	दत्त	वरुणा	परलोक है कि नहीं ? आत्मा पञ्चभूतात्मक तो नहीं है ?
(११) प्रभास	राजगृह	बल	अतिभद्रा	मोक्ष है कि नहीं ?

यहाँ ध्यान देनेकी एक बात यह है कि मण्डिक और मौर्यपुत्रकी माता एक है और पिता दो हैं। जिस समय मण्डिक शैशव अवस्थामें

थे उस समय उनके पिता धनदेवका देहान्त हो गया। धनदेवकी मौसीके लड़के मौर्य थे। जब विजयादेवी विधवा हो गई तो उनका पुनर्विवाह मौर्यके साथ कर दिया गया। इस विवाहसे मौर्यपुत्र सरीखा पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ। हम देखते हैं कि सोमिल ब्राह्मणके यज्ञमें ये सभी विद्वान् उपस्थित थे जिनमें विधवा-पुत्र ये मौर्यपुत्र भी थे। इससे मालूम होता है कि विधवाविवाहसे उस समय कुलीनतामें बाधा नहीं समझी जाती थी। हिन्दुओंके तो बहुतसे ऋषि इसी तरह पैदा हुए हैं। कौटलीय अर्थशास्त्रमें जो विधवाविवाहके कानून दिये गये हैं उनसे मालूम होता है कि उस समय चारों ही वर्णोंमें विधवाविवाहका आम रिवाज था। जैन शास्त्रोंमें इन सभी गणधरोंको महाकुलीन माना गया है।

दूसरी बात जो हमारा ध्यान आकर्षित करती है वह मौर्यपुत्रका संदेह है। शास्त्रोंमें तो लिखा है कि उस समय गाँव-गाँवमें देवता लोग डेरा जमाये पड़े थे। यज्ञोंमें देवता आते थे, गाँवके लोगोंको तंग करनेके लिये देवता तैयार रहते थे, महावीरपर छोटे छोटे उपसर्ग करनेके लिये भी देवता आये थे, उनका सभामण्डप देवताओं-ने ही बनाया था, यहाँ तक कि वहाँ हजारों लाखों देवता बैठे थे। यज्ञमण्डपमें जब देवता न आये तब इन्द्रभूतिको बड़ा आश्चर्य हुआ था। अगर शास्त्रोंकी ये बातें ज्योंकी त्यों मान ली जायँ तो देवता लोग उस समय बरसाती मेंढकोंसे भी अधिक सुलभ हो जाते हैं। ऐसी अवस्थामें क्या मौर्यपुत्रको यह संदेह हो सकता था कि 'देवगति है कि नहीं'। यदि समवशरणमें देव और देवियोंका जमघट लगा था और अपापा नगरीका खाली मैदान यदि क्षणभरमें रत्ननिर्मित

समवशरणके रूपमें परिणत हो गया था तो क्या यह सब मार्य-पुत्र नहीं देख सकते थे ? क्या ये सब देवगतिके अस्तित्वके प्रबल प्रमाण नहीं थे ? अकेले मौर्यपुत्र ही क्या सभी गणधरोंके संदेह परलोकसे सम्बन्ध रखते हैं। निष्पक्ष विद्वानोंके लिए परलोकके स्वरूपकी समस्या जैसी आज जटिल है वैसी उस समय भी थी। यदि उस समय देव आते होते तो अन्तरमन्तरका नाम भी सुनाई न देता। देवगति तो परलोककी जीती-जागती मूर्ति है। परंतु इतिहासके प्रारम्भसे अभीतक परलोक न माननेवाले, आत्मा न माननेवाले, दर्शन प्रचलित रहे हैं। स्वय म० बुद्धने परलोकके विषयमें एक प्रकारसे मौन रक्खा था। सभी आस्तिक शास्त्रोंमें परलोक सिद्ध करनेके लिए एडीसे चोटी तक पसीना बहाया गया है। अगर देवता इस तरह आते होते तो इतना परिश्रम क्यों करना पड़ता ? क्या यह सम्भव था कि स्वर्गके देवता किसीके पास आवें फिर भी परलोकके सुखके लिए लोग दूसरे धर्मोंका सहारा लेनेका साहस करें ? सभी धर्मोंके शास्त्रोंमें देवोंका जैसा वर्णन आता है यदि उसका शतांश भी सत्य होता तो धार्मिक वाद-विवादोंका कभीका अन्त हो गया होता पुण्य पापकी समस्या हल हो गई होती। अब हम देखते हैं कि हर-एक युगमें बड़े बड़े विद्वानोंके सामने भी परलोककी समस्या खड़ी रही है तब यह कैसे कहा जा सकता है कि किसी युगमें परलोकके प्राणी, देव लोग, यहाँ आते थे ? वे हमारे महात्माओंकी पूजा करते थे तथा अन्य मनुष्योंसे मिलते-जुलते थे ? शास्त्रोंके वर्णनोंको अगर कोई ज़रा भी ध्यानसे पढ़ेगा तो उसे मालूम हो जायगा कि हर-एक सम्प्रदायमें देवताओंसे सम्बन्ध रखनेवाला सारा वर्णन मनःकल्पित है अथवा किसी विशेष प्रकारके

थे उस समय उनके पिता धनदेवका देहान्त हो गया। धनदेवकी मौसीके लड़के मोर्य थे। जब विजयादेवी विधवा हो गई तो उनका पुनर्विवाह मौर्यके साथ कर दिया गया। इस विवाहसे मौर्यपुत्र सरीखा पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ। हम देखते हैं कि सोमिल ब्राह्मणके यज्ञमें ये सभी विद्वान् उपस्थित थे जिनमें विधवा-पुत्र ये मौर्यपुत्र भी थे। इससे मालूम होता है कि विधवाविवाहसे उस समय कुलीनतामें वाधा नहीं समझी जाती थी। हिन्दुओंके तो बहुतसे ऋषि इसी तरह पैदा हुए हैं। कौटलीय अर्थशास्त्रमें जो विधवाविवाहके कानून दिये गये हैं उनसे मालूम होता है कि उस समय चारों ही वर्णोंमें विधवाविवाहका आम रिवाज था। जैन शास्त्रोंमें इन सभी गणधरोंको महाकुलीन माना गया है।

दूसरी बात जो हमारा ध्यान आकर्षित करती है वह मौर्यपुत्रका संदेह है। शास्त्रोंमें तो लिखा है कि उस समय गाँव-गाँवमें देवता लोग डेरा जमाये पड़े थे। यज्ञोंमें देवता आते थे, गाँवके लोगोंको तंग करनेके लिये देवता तैयार रहते थे, महावीरपर छोटे छोटे उपसर्ग करनेके लिये भी देवता आये थे, उनका सभामण्डप देवताओं-ने ही बनाया था, यहाँ तक कि वहाँ हजारों लाखों देवता बैठे थे। यज्ञमण्डपमें जब देवता न आये तब इन्द्रभूतिको बड़ा आश्चर्य हुआ था। अगर शास्त्रोंकी ये बातें ज्योंकी त्यों मान ली जायँ तो देवता लोग उस समय बरसाती मेंढकोंसे भी अधिक सुलभ हो जाते हैं। ऐसी अवस्थामें क्या मौर्यपुत्रको यह संदेह हो सकता था कि ' देवगति है कि नहीं '। यदि समवशरणमें देव और देवियोंका जमघट लगा था और अपापा नगरीका खाली मैदान यदि क्षणभरमें रत्ननिर्मित

कठिन ही नहीं दुर्लभ समझी जाती थीं । गुरुत्वाकर्षणके सिद्धान्तको आज एक मामूली विद्यार्थी भी समझता है परन्तु न्यूटन * के पहिले उसे बड़े बड़े विद्वान् भी नहीं समझते थे । इसलिए क्या यह कहा जा सकता है कि जिस बातको एक विद्यार्थी भी जानता है उसे कह कर न्यूटनने क्या बहादुरी की ? आजके विद्यार्थी और प्रोफेसरके इस ज्ञानका स्रोत कहाँसे आया है इस बातका जब हम विचार करेंगे तब हमें न्यूटनका महत्त्व मालूम हो जायगा । आज जैनधर्मकी जिन बातोंका ज्ञान हमें बहुत सरल मालूम होता है वह कुछ हमारी मौलिक उपज नहीं है—पोथियोंका ज्ञान है । परन्तु उनका स्रोत तो हमें महावीर-गौतम संवाद या गौतम केशी-सम्वादमें मिलेगा । अगर हमें बाप-दादोंकी जायदादमेंसे एक लाख रुपया मिल जाय तो हम समझेंगे कि लाख रुपया प्राप्त करना क्या चीज है ? परन्तु हमारे जिस पूर्वपुरुषने जन्म-भर पसीना बहाकर वह धन पैदा किया था वह एक-एक पैसेका मूल्य जानता था । इसी तरह आज हम भले ही कहें कि 'परलोककी बात तो एक बच्चा भी जानता है, कर्म-शत्रुओंको कैसे जीता जा सकता है—यह बच्चों कैसा सवाल है । ऐसा पूछनेवालेकी विद्वत्तामें बट्टा लगता है । 'बन्धनोंसे कैसे छूटा जा सकता है—यह तो पाठशालाका विद्यार्थी भी जानता है आदि' । परन्तु पहिले पहिले जिस महात्माने अपने अनुभवसे इस बातका निर्णय किया वह उसके एक एक शब्द का मूल्य जानता था । उस समय वह आचार्योंको भी दुर्लभ था ।

* यूरोपमें सबसे पहिले न्यूटनने इस सिद्धान्तका पता लगाया था । भारतमें चौथी शताब्दीके ग्रन्थोंमें भी इस सिद्धान्तका उल्लेख मिलता है ।

मनुष्योंको देव मान लिया गया है। जैनधर्म तो देवागमन आदिको जरा भी महत्त्व नहीं देता, यह बात मैं पहिले लिख चुका हूँ। हाँ, भक्तोंका हृदय तो सभी जगह एक सरीखा रहता है इसलिए जैनधर्ममें भी ऐसे वर्णन आये हैं।

परन्तु ऐसी घटनाओंको धर्ममे स्थान देनेसे इन घटनाओंके समान वह धर्म भी अविश्वसनीय हो जाता है। और जब हम इन घटनाओंको भगवान महावीरके मुँहसे कहला देते हैं तब तो जैनधर्मके ऊपर बडा अत्याचार करते हैं, उसकी वैज्ञानिकताको मिटा देना चाहते हैं। देवगति आदिके विषयमें मैं आगे लिखूँगा, जहाँ इन सब बातोंका समन्वय हो जायगा।

कहा जा सकता है कि 'ये लोग इतने बड़े विद्वान् थे फिर उनको इतनी जरा-जरा-सी बातें भी क्यों नहीं मालूम थीं ?' केशी-गौतम सवादको पढ़ करके भी कोई कोई ऐसी शका करेंगे 'कि ऐसी छोटी छोटी शकाएँ इतने बड़े बड़े विद्वानोंको कैसे हो सकती हैं ? इसलिए क्यों न इन सब बातोंको मिथ्या मान लिया जाय ? ऐसी छोटी छोटी बातोंका उत्तर तो आज एक प्रवेशिकाका विद्यार्थी भी दे सकता है'। इस आक्षेपका उत्तर चार तरहसे दिया जा सकता है।

(१) प्रवेशिका और तीर्थके विषय जुदे जुदे नहीं होते, परन्तु प्रश्नकी गम्भीरतामें महत्त्व होता है। प्रमाणका लक्षण प्रवेशिकाके विद्यार्थीको भी पढाया जाता है और तीर्थके विद्यार्थीको भी पढाया जाता है परन्तु दोनोंमें अन्तर है। मैट्रिकके विषय एम० ए० में भी पढाये जाते हैं परन्तु दोनोंमें महान अन्तर है।

(२) आज जिन बातोंको हम सरल समझते हैं एक दिन वे

मनको परमाणु बराबर मानकर उसे सर्व शरीरमें चलता-फिरता मानते हैं। एक कट्टर साम्प्रदायिक मनुष्यके लिये इस विषयमें कुछ भी विचारनेकी या पूछनेकी बात नहीं हो सकती परन्तु निःपक्ष और समर्थ विद्वानोंके लिये तो आज भी यह जरा-सी बात जीवन-भर विचारनेके लिये काफ़ी है। इससे हम समझ जायँगे कि गौतमादि विद्वानोंके और केशीजीके प्रश्न कितने महत्त्वपूर्ण थे, और जितने महत्त्वपूर्ण थे उससे भी अधिक उनके लिये आवश्यक थे। साधारण दृष्टिके मनुष्योंको जिस प्रश्नका कुछ महत्त्व नहीं मालूम होता या जिसमें वे अपने आमक झारमय निषय नहीं समझते; बड़े बड़े विद्वानोंके लिये वे प्रश्न बड़े महत्त्वके होते हैं और उनका समाधान उनके जीवनको परिवर्तित कर देता है। हेतुके सच्चे लक्षणने एक समर्थ दार्शनिक (विद्यानन्द) को जैन बना दिया—यद्यपि जैन विद्यार्थीको यह कोई दुर्लभ ज्ञान नहीं है। यही कारण है कि जब म० महावीरने गौतमादि विद्वानोंके संदेहोंको दूर कर दिया तो वे तुरन्त उनके शिष्य हो गये और जैनधर्मके प्रचारमें लग गये।

(४) बहुतसे प्रश्न निर्णयकी दृष्टिसे महत्त्वके नहीं होते परन्तु व्यवहारमें लानेकी दृष्टिसे महत्त्वके होते हैं। जैसे कोई पूछे कि 'क्रोधको कैसे जीतें' तो उत्तर होगा 'क्षमासे'। उत्तर बिलकुल ठीक है, एक साधारण विद्यार्थी भी सौमेंसे सौ नम्बर प्राप्त कर सकता है, परन्तु जब इसे कार्यरूपमें परिणत करनेका प्रश्न आता है तब लाखमें निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मनुष्य फेल हो जाते हैं और इन फेल होनेवालोंमें बड़े बड़े विद्वानोंकी और मुनियोंकी संख्या कम नहीं होती। इसलिये जब हम किसीको इस विषयमें पास

आज भले ही वह सुलभ हो गया है परन्तु वह उन्हींकी कृपासे सुलभ हुआ है जिनको कि बच्चा कहा जाता है। आज जिन बातोंको हम मामूली समझते हैं, सौ-पचास वर्ष पहिले अनेक वैज्ञानिकोंको उनकी कल्पना भी नहीं थी। क्या इसीलिये हम उनसे बड़े वैज्ञानिक हो गये। ऐसे बीसों उदाहरण दिये जा सकते हैं जिनसे मालूम होगा कि जो आज विद्यार्थियोंके लिये भी साधारण है वह एक दिन विद्वानोंके लिये भी असाधारण था।

(३) कुछ प्रश्न ऐसे हैं जो हजारों वर्षसे करीब करीब ज्योंकेत्यों बने हुए हैं और कब तक बने रहेंगे इसके विषयमें अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। जिसको जितनेमें संतोष हो जाता है वह उतनेको ही पूर्ण समाधान मान लेता है लेकिन पूर्ण समाधान बाकी रहता है। एक परलोकके ही प्रश्नको लीजिये। भक्त लोग और विद्यार्थी तो हर एक प्रश्नके विषयमें निःशंक होते हैं परन्तु विद्वानोंके सामने यह समस्या आज भी खड़ी है। बड़े बडे विद्वानोंको परलोककी बात समझमें नहीं आती। इसका यह अर्थ नहीं है कि उनकी अक्ल उस विद्यार्थीसे भी कम है। दार्शनिक क्षेत्रमें और भी ऐसे प्रश्न हैं। एक मन-ही-का प्रश्न ले लीजिये। दिगम्बर सम्प्रदाय मनका स्थान हृदय मानता है और कमलाकार कहता है, श्वेताम्बर सम्प्रदाय सर्वाङ्गव्यापी मानता है, आधुनिक विद्वान् मस्तिष्कमें मानते हैं। वैशेषिक लोग

१ हिदि होदिहु दव्वमण वियसियअट्ठच्छदारविंद वा। गोम्मटसार जी०—४४३

२ मनसः शरीरव्यापिन.।—रत्नाकरावतारिका ५—२
तत्राद्य द्रव्यमन.।—स्वकायपरिमाणम्।—तत्त्वार्थ सिद्धसेनगणी टीका २—१७

चतुर्विध संघ

म० महावीर की संघव्यवस्था एक अद्भुत वस्तु है। उनने प्रारम्भसे ही चार संघ बनाये थे—मुनि आर्यिका, श्रावक और श्राविका। चारों संघोंका स्वतन्त्र और दृढ़ संगठन था और उनके नेता भी जुदे जुदे थे। इस संघ-व्यवस्थाने ही आज जैनधर्मको भारतमें जीवित रक्खा है। वैदिक धर्मके प्रहारमें बौद्धधर्म उड़ गया और जैनधर्म बच गया। इसका मुख्य श्रेय चातुर्विध संघ-व्यवस्थाको है। इस विषयमें हम देखते हैं कि महात्मा महावीरने प्रारम्भसे ही स्त्री और पुरुषोंकी समान कदर की है। उस जमानेमें स्त्रियोंको शास्त्र पढ़नेका भी अधिकार नहीं था। ऐसे समयमें म० महावीरने महिलाओंको सिर्फ शास्त्र पढ़नेका ही अधिकार नहीं दिया किन्तु पुरुषोंके समान स्त्रियोंको उनने पूर्ण अधिकार—मोक्ष जाने तकका अधिकार—दिया। उनका संघ स्थापित किया जिसका प्रमुखपद एक महिला (चन्दना) को दिया। यही कारण है कि जैनधर्ममें स्त्री-पुरुषोंके सब जगह समान हक हैं। इस समानताका असर राजधर्ममें भी इतना पड़ा है कि जैनधर्मके अनुसार पुरुषकी सम्पत्तिका उत्तराधिकार उसकी पत्नीको दिया गया है न कि पुत्रको। स्त्री-पुरुषोंकी इस तरह समानताका प्रतिपादन करना म० महावीर सरीखे समदृष्टिके ही योग्य है।

श्रावक और श्राविका संघकी रचना करके उनने स्त्री-पुरुषकी समानताका समर्थन तो किया ही, साथ ही श्रावकों और मुनियोंको भी परस्पर सहायक बना दिया। श्रावकोंकी मुनियोंके ऊपर देखरेख रहनेसे तथा उनका संघमें पर्याप्त स्थान होनेसे मुनि लोग स्वच्छन्द

होते देखते हैं तो, यह जानते हुए भी कि क्रोध क्षमासे वश किया जाता है, उससे पूछते हैं कि भाई ! तुम क्रोधको किस तरह वश कर लेते हो? यह प्रश्न न तो असगत है, न पूछनेवालेकी मूर्खताका द्योतक है। अगर कोई किसी महात्मासे पूछे कि 'आप इतने बड़े आदमी कैसे बन गये' तो वे उत्तर देंगे कि त्याग और सेवासे, इस बातको एक विद्यार्थी भी जानता है, फिर भी उस महात्माके सामने बड़े बड़े विद्वानोंके द्वारा भी यह प्रश्न पूछने लायक ही रहेगा। क्योंकि इस प्रश्नोत्तरके अन्तस्तलमें विद्यार्थी-सरीखी तोतारटौनी नहीं है किन्तु पूछनेवाले और उत्तर देनेवालेके जीवन-भरका अनुभव है। जब केशीजीने गौतम स्वामीसे पूछा कि 'सभी लोग बन्धनोंमें फँसे हुए हैं आप कैसे छूट आये' तब गौतम स्वामीने उत्तर दिया कि 'रागद्वेषको नष्ट करके'। इस प्रश्नोत्तरमें कोई जान नहीं माल्म होती—विद्यार्थी भी इसका यही उत्तर देगा। परन्तु पूछनेवालेके शब्दोंके भीतर पार्श्वापत्योंकी सारी कमजोरियोंका रेखाचित्र है और उत्तरदाताके शब्दोंमें उन कमजोरियोंको दूर करनेके या न आने देनेके जो उपाय म० महावीरने बताये हैं वे हैं। इस लिये प्रत्येक प्रश्नोत्तरके अन्तस्तलको देखकर उसके महत्त्वको समझना चाहिये। प्रश्नके बाह्यरूपसे उसके महत्त्वका माप करना ऐसा ही है जैसे किसी मनुष्यका महत्त्व उसके शरीरके मांसकी कीमतके अनुसार ठहराना।

इन चारों बातोंपर विचार करनेसे माल्म हो जायगा कि गौतमादि विद्वानोंके सन्देह या केशी-गौतम सवाद न तो असगत है न महत्त्वशून्य है। जैनधर्मके प्रचारमें और उसके रहस्यकी खोजमे ये बड़े कामकी चीजें हैं।

सकता था। श्रावकोंकी अनुमतिके विरुद्ध कोई साधु किसीको दीक्षित नहीं कर सकता था। अगर किसी साधुसे किसी श्रावकका अपराध होता था तो उस साधुको श्रावकसे माफी माँगनी पड़ती थी। एक बार म० महावीरके मुख्य शिष्य इन्द्रभूति गौतमको आनन्द श्रावकसे माफी माँगनी पड़ी थी। और माफी माँगनेके लिये म० महावीरने गौतमको आनन्दके घरपर भेजा था। मतलब यह कि म० महावीरका श्रावक संघ साधुओंकी दृष्टिमें मिट्टीका पुतला नहीं था। उसका स्थान साधु-संघके समान ही महत्त्वपूर्ण था। साधु महात्मा होते हैं इसलिये श्रावक उनका सन्मान अवश्य करते थे किन्तु व्यवस्था और न्यायके विषयमें दोनोंका मूल्य बराबर था। श्रावक सत्यासे विरुद्ध होकरके किसी साधुको कुछ भी करनेका अधिकार न था।

श्रावक-संघका यह स्थान पीछे भी रहा है। श्रावकोंने साधुओंको चरित्रहीन होनेपर पदभ्रष्ट किया है, आचार्योंको पदसे उतारा है, दुराचारियोंका वेष तक छीन लिया है।—ये घटनाएँ शुरूसे लेकर आजतक होती रही हैं। सैकड़ों वर्षोंतक साधुओंके बिना श्रावक संघने अपने धार्मिक जीवनको सुरक्षित रक्खा है।

महावीरने साध्वी-रूपमें ही स्त्रियोंके व्यक्तित्वका विकास नहीं किया, किन्तु श्राविकारूपमें भी किया। साध्वियाँ कौटुम्बिक बंधनसे छूट जाती हैं इसलिये उनके व्यक्तित्वका मूल्य होना उतना कठिन नहीं था जितना कि श्राविकाओंका था। आज इस सुधरे जमानेमें भी स्त्रियोंका प्रतिनिधित्व पुरुष ही कर रहे हैं। स्त्रियाँ अपना सुख-दुःख न अपने मुखसे कहें इससे अनेक धर्मभगिनियोंको अपना सम्यक्

न होने पाये। फल यह हुआ कि अनेक आक्रमण आनेपर भी साधु-संस्था टिकी रही। इधर श्रावकोंके ऊपर साधुओंकी देखरेख रहनेसे श्रावक सघ भी टिका रहा। इस तरह एकपर एक ग्यारहकी तरह इनका बल कई गुणा हो गया।

म० महावीरके समयमें चौदह हजार (१४,०००) मुनि थे, छत्तीस हजार (३६,०००) आर्यिकाएँ थीं, एक लाख उनहत्तर हजार (१,६९,०००) श्रावक थे और तीन लाख अट्ठारह हजार (३,१८,०००) श्राविकाएँ थीं। मुनियोंका नेतृत्व गणधरोंके हाथमें था, आर्यिकाओंका नेतृत्व चन्दना, श्रावकोंका नेतृत्व शख और शतक, तथा श्राविकाओंका नेतृत्व सुलसा और रेवतीके हाथमें था। श्रावक और श्राविकाओंकी यह गणना भी इस बातको साबित करती है कि उस समय श्रावक और श्राविकाओंपर जरा भी उपेक्षा नहीं रक्खी जाती थी। इतना ही नहीं, जब किसी श्रावकमें म० महावीर कोई अच्छी बात—कर्तव्यतत्परता, दृढ़ता आदि—देखते थे तो सर्व सघके सामने उसकी प्रशसा करते थे और मुनियोंसे भी उस श्रावकका अनुकरण करनेकी बात कहते थे। इससे मालूम होता है कि म० महावीरने श्रावक सघको कैसा महत्त्व दिया था और कैसा सुव्यवस्थित बनाया था। चतुर्विध सघके इस वर्णनसे म० महावीरके प्रबन्धकौशलपर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता।

साधुसघ जैसे अपनी मर्यादाके भीतर स्वतन्त्र था उसी तरह श्रावक सघ अपनी मर्यादाके भीतर स्वतन्त्र था। किन्तु जिन कार्योंका असर सघके बाहर होता था अथवा सघकी मर्यादाका जिनसे भग होता था उनके विषयमें एक सघ दूसरे सघके कार्यमें हस्तक्षेप कर

कि उनका संघ चिरस्थायी हुआ। और आज भी उसने अपना असर थोड़ा बहुत कायम रक्खा है।

इस प्रकार चार संघोंकी स्थापना और उनका संगठन म० महावीरकी अद्भुत कुशलता और लोकहितैषिताका परिचय देता है।

त्रिपदी

चतुर्विध संघकी स्थापना होनेके बाद म० महावीरने अपने मुख्य शिष्योंको त्रिपदी सुनाई, अर्थात् उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यका उपदेश दिया। वस्तु प्रतिसमय पैदा होती है, नष्ट होती है और स्थिर भी रहती है, इससे नित्यवाद, क्षणिकवाद आदिका समन्वय किया। इसे सुनकर उनके शिष्योंने द्वादशांगकी रचना की। इससे इतना तो मालूम होता है कि म० महावीरके शिष्योंने उनके उपदेशोंको पल्लवित किया है। यद्यपि यह काम एक दिनमें नहीं हुआ था, इसे वर्षों लगे थे फिर भी यह निश्चित है कि ये उपदेश पल्लवित हुए हैं।

उनका उपदेश कुछ एक बातको लेकर न होता था। व्याख्यानमें वे कथा कहानी भी कहते थे, अन्य अनेक प्रकारके दृष्टान्तोंसे समझाते थे। उनके व्याख्यान तत्त्व-निर्णय और आचार सम्बन्धी होते थे और हर एक बातमें त्रिपदी या स्याद्वादका ख्याल रक्खा जाता था। अपने वक्तव्यको स्पष्ट करनेके लिये वे जो दृष्टान्तादि देते थे वे उनके शिष्योंद्वारा स्वतन्त्र अङ्ग बन गये। जो दृष्टान्त विषयको स्पष्ट करनेके लिए या आचारमें दृढ़ बनानेके लिये दिये जाते थे वे पीछे भौगोलिक और ऐतिहासिक रूपमें परिणत हो गये। यहाँ हमें इतनी बात ध्यानमें रख लेना चाहिये कि भूगोल (लोक-रचना) पुराण आदिके विषयमें जो सामग्री आज हमें जैन शास्त्रोंमें मिलती है

अपमान मालूम होता है। धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रमें स्त्रियोंकी आवाज ही नहीं है। कुछ वर्ष पहिले तो सुधारक-सभाएँ भी स्त्रियोंकी आवाजसे शून्य रहतीं थीं। खैर, स्त्रियोंको हमने कितना कुचला है—यह तो एक लम्बा पुराण है परन्तु म० महावीरने स्त्रियोंको स्वतन्त्र कर दिया था। इसलिये वे साध्वी-सघ स्थापित करके ही सन्तुष्ट न हुए किन्तु श्राविकाओंका सघ भी बनाया। और उसकी प्रमुखाएँ भी रेवती और सुलसा सरीखीं श्राविकाएँ ही रहीं।

सघ-रचना तो किसी तरह की जा सकती है परन्तु उसके ऊपर देख-रेख रखना मुश्किल होता है। म० महावीर चारों सघोंके ऊपर अपनी दृष्टि रखते थे। उनकी गिनतीका हिसाब तक रक्खा जाता था। साथ ही इस वातपर भी दृष्टि रक्खी जाती थी कि कोई किसीपर अत्याचार आदि न कर पावे। अत्याचारके विरोधके लिये म० महावीर स्वय सन्नद्ध रहते थे।

जव रानी मृगावतीके ऊपर चण्डप्रद्योतने आक्रमण किया और उसके साथ जवर्दस्ती शादी करना चाही तो रानीने तो किसी तरह आम-रक्षा की ही। किन्तु दोनोंके झगडेको सदाके लिये दूर करनेके लिये, दोनोंको निर्वैर बनानेके लिये और अत्याचार रोकनेके लिए म० महावीर स्वय कोशाम्बी पधारे और उन्होंने दोनोंके झगड़ेको शान्त कर दिया। इतना ही नहीं किन्तु एक वार श्रेणिक राजा जव अपनी पत्नी चेलनादेवीपर क्रुद्ध हो गया तव म० महावीरने श्रेणिकको अपराधी वताया और श्रेणिकने पश्चात्ताप किया। मतलव यह कि म० महावीरने श्रावक और श्राविका-सघ कायम करके उनमें ऐसी सुव्यवस्था रक्खी

कुछ दोनोंमें जुदे जुदे हैं। और कुछ ऐसे हैं जिनका उल्लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायमें हुआ है, परन्तु दिगम्बर सम्प्रदायमें नहीं हुआ किन्तु दिगम्बर सम्प्रदायको उनके माननेमें विरोध नहीं है।

म० महावीरके चौंतीस अतिशय माने जाते हैं। वे तीन भागोंमें विभक्त हैं—सहजातिशय (जन्मके अतिशय) कर्मक्षयजातिशय (केवलज्ञानके अतिशय) और देवकृत अतिशय। दिगम्बर सम्प्रदायके अनुसार सहजातिशय दश हैं और श्वेताम्बर-सम्प्रदायके अनुसार चार हैं।

सहजातिशय

श्वेताम्बर मान्यता—

१—दुग्धके समान श्वेत रुधिर। २—पसीना-रहित शरीर। सुन्दर रूपवाला शरीर। सुगन्धित शरीर। मलरहित शरीर। रोगरहित शरीर। ३—आहार तथा नीहार चर्मचक्षुसे न दीखे। ४—श्वासोच्छ्वासमें कमल जैसी सुगन्ध हो।

दिगम्बर मान्यता—

१—दुग्धके समान श्वेत रुधिर। २—पसीना रहित शरीर। ३—सुन्दर रूपवाला शरीर। ४—सुगन्धित शरीर। ५—मल-रहित शरीर। ६—सुलक्षणता। ७—अनन्त बल। ८—प्रियहित-वादित्व। ९—समचतुरस्र संस्थान। १०—वज्रर्षभ नाराच संहनन।

दोनों सम्प्रदायोंमें पहिला अतिशय समान है। दूसरेसे पाँचवें नम्बर तकके चार अतिशय श्वेताम्बरोंके दूसरे अतिशयमें शामिल हो जाते हैं। अब दिगम्बरोंके पाँच अतिशय और श्वेताम्बरोंके दो अतिशय रह जाते हैं।

प्राय॰ वह सब विषयको स्पष्ट करनेके लिये और लोगोंके ऊपर प्रभाव डालनेके लिये थी। उसका आशय सत्य था। त्रिपदीके ऊपर द्वादशाग रचनाकी वात मेरे इस वक्तव्यकी पुष्टि करती है।

अतिशयादि

म० महावीरके जीवनको बहुतसे अतिशयोंने ढॉक रक्खा है। कुछ अतिशय ऐसे हैं जो उनकी असाधारणताके सूचक हैं। कुछ ऐसे हैं कि अतिशयोक्तिके कारण उनका रूप बदल गया है। और कुछ ऐसे हैं जो बिलकुल भक्तिकल्प्य हैं। मैं पहिले कह चुका हूँ कि भक्त लोगोंके द्वारा ऐसी कल्पना होना स्वाभाविक है। वर्तमानकालमें भी महात्मा गॉंधीके विषयमें यदि अनेक अतिशयोंकी कहानियाँ प्रचलित हो सकती हैं तो ढाई हजार वर्ष पहिले यदि म० महावीर सरीखे लोकोत्तर व्यक्तिके विषयमें कुछ अतिशयोंकी कल्पना हुई तो इसमें आश्चर्यकी क्या वात है? इसलिये इन अतिशयोंके नामपर चिढ़नेकी जरा भा जरूरत नहीं है, किन्तु नि.पक्ष होकर उसकी मीमासा करनेकी जरूरत है जिससे हम उनके वास्तविक महत्त्वको समझ सकें। इस समय भक्तिकल्प्य अतिशयोंको साथमें लगाये रहनेसे वास्तविक अतिशय भी उसी श्रेणीमें चले जाते हैं और सभी भक्ति-कल्प्य कहलाने लगते हैं। इसलिये आवश्यकता है कि इनका विश्लेषण कर दिया जाय और वास्तविक अतिशयोंको एक तरफ करके वाकीको अलग कर दिया जाय। ऐसा करके हम म० महावीरके वास्तविक महत्त्वको स्वय भी समझेंगे और दुनियाँके सामने भी रख सकेंगे।

अतिशयोंके विषयमें भी दिगम्बर और श्वेताम्बरोंमें मतभेद है। कुछ अतिशय तो ऐसे हैं जिन्हें दोनों सम्प्रदायवाले मानते हैं और

संहननके विषयमें है। यह शरीरकी मजबूतीका उत्कृष्ट भेद है। यह भी बहुतसे मनुष्य-तिर्यंचोंके पाया जाता है।

श्वेताम्बरोंने जो तीसरा अतिशय माना है उसे दिगम्बर नहीं मानते। उनके मतसे भगवानके नीहार नहीं होता है। 'मलरहित शरीर' नामक पाँचवें अतिशयका उनने यही अर्थ किया है। यह अतिशय अत्युत्कट भक्ति और लोगोंके भोलेपनका परिणाम है। बाल्यावस्थामें—जब कि मैं पद्मपुराणका खूब स्वाध्याय करता था और संसारका सारा लौकिक और पारलौकिक ज्ञान उसीमें समझता था—मेरी यह मान्यता थी कि संतान उत्पन्न करनेके लिये संभोग करना अनिवार्य नहीं है। मेरी इस मान्यताके दो कारण थे। एक तो यह कि मैं राम और सीताजीको इतना पवित्र समझता था कि मैं यह माननेको अद्यापि तैयार न था कि दोनों संभोग करते होंगे फिर भी पद्मपुराणमें यह लिखा था कि सीताके दो पुत्र हुए थे। इसलिये मेरी यह मान्यता हो गई थी कि बिना संभोगके भी संतान हो सकती है। दूसरा कारण यह था कि पद्मपुराणमें राम-सीता-संभोगका कहीं स्पष्ट शब्दोंमें उल्लेख नहीं था। इसलिये भी मेरी यह मान्यता थी। एक मित्रने जिसे मैं अपनी अपेक्षा मूर्ख और संसारी समझता था मुझे मेरी गलती बतलाई तो मैं उससे शास्त्रार्थ करने लगा अर्थात् झगड़ने लगा। करीब-चौदह वर्षकी उमर तक मेरी यही मान्यता थी। मेरे गाँवमें एक युवक भाईजी तो ऐसे थे जो विवाह और गौनाके बाद तक इसी मान्यतापर दृढ़ थे। मेरा यह भोलापन अनेक अतिशयोंके मूलकी खोजमें उपमान प्रमाणका काम कर सकता है। अधिक भक्तिका ऐसा ही परिणाम होता है। अरहन्त सरीखे

छट्ठे अतिशय (सुलक्षणता) को श्वेताम्बरोंने इसलिये नहीं माना कि ज्योतिषके लक्षण (चिन्ह) सभीके शरीरमें थोड़े-बहुत पाये जाते हैं इसलिये वह अतिशयरूपमें नहीं गिना जा सकता। परन्तु ज्योतिषके उस युगमें ज्योतिष-सम्बन्धी विशेषता बतलाना जरूरी समझकर दिगम्बरोंने उसे अतिशय कहा है। परन्तु वास्तवमें इस अतिशयमें कुछ महत्त्व नहीं है।

सातवें अनन्तबलको दिगम्बरोंने जन्मकृत अतिशय माना, यह जरा आश्चर्यकी बात है। क्योंकि अरहतके ४६ गुणोंमें अनन्त-बलकी गणना अनन्तचतुष्टयमें की गई है। एक ही गुणको दो जगह गिनाना कहाँ तक उचित कहा जा सकता है तथा जन्मसे ही किसी बालकमें अनन्तबल हो यह भक्त हृदयकी ही सम्पत्ति हो सकती है। इसलिये इसे जन्मका अतिशय नहीं माना जा सकता।

प्रियहितवादित्व भी जन्मका अतिशय नहीं हो सकता क्योंकि पैदा होते समय बच्चा बोलता नहीं है। बच्चोंका रोना, हँसना, तुत-लाना आदि सभी कुछ प्यारा लगता है इसलिये यह अतिशय माना जाय तो यह सभव तो हो सकता है, परन्तु इसमें कोई अतिशयता नहीं रह जाती। इस अतिशयको तो केवलज्ञानका ही अतिशय कहा जा सकता है, क्योंकि केवलज्ञानके होनेपर ही वे ससारको प्रिय और हितकारी उपदेश देते हैं।

'समचतुरस्रसंस्थान' शरीरका एक सुडौल आकार है। यद्यपि यह हरएक आदमीके तो नहीं होता फिर भी बहुतसे स्त्री-पुरुषोंके होता है। इसे किसी तरह अतिशय तो कह सकते हैं, परन्तु यह तीर्थङ्करके अतिशयोंमें गिनाने लायक नहीं है। यही बात वज्रर्षभनाराच-

कि अरहन्त अवस्थामें उनके ये कार्य एकान्तमें होते थे जिसे सर्वसाधारण नहीं देख सकते थे। हाँ उनके शिष्य देखते होंगे।

श्वेताम्बर सम्प्रदायका चौथा अतिशय श्वासोच्छ्वास कमल जैसी सुगन्धका होना है। ऐसा अतिशय तो प्रत्येक काव्यके नायक-नायिकामें माना जाता है, फिर महावीर तो एक तीर्थंकर थे अगर जैन लेखकोंने अतिशयके नामपर ऐसा वर्णन किया तो वे क्षन्तव्य ही नहीं सर्वथा वन्दनीय हैं।

श्वेताम्बरोंके दूसरे अतिशयमें रोगरहित शरीर भी एक अतिशय है। यह भी भक्तिकल्प्य है। जो आगामी तीर्थङ्कर होनेवाला है उसे जन्मभर कभी बीमार न होना चाहिये यह बात भक्तके सिवाय और कौन कह सकता है! आश्चर्यकी बात यह है कि दिगम्बर सम्प्रदायमें यह अतिशय नहीं माना गया है यद्यपि दिगम्बर लोग अरहन्तको बीमार नहीं मानते। श्वेताम्बर सम्प्रदायके अनुसार इतना तो माना जाता है कि म० महावीर गोशालककी तेजोलेश्यासे कई महीने बीमार रहे थे। दिगम्बर सम्प्रदायने इस अतिशयको नहीं माना फिर भी वे इस अतिशयको मलरहित शरीरमें अन्तर्गत किये बिना नहीं रह सकते। श्वेताम्बरोंने इस अतिशयको माना परन्तु म० महावीरकी बीमारी इस अतिशयका स्पष्ट विरोध है। अन्य अतिशयोंके विषयमें जो कुछ मैंने कहा है वही इस अतिशयके विषयमें कहा जा सकता है।

जो अतिशय दोनों सम्प्रदायोंमें समान हैं, वे भी इसीलिये माने गये हैं कि अरहन्त देवोंके भी देव हैं इस लिये उनका शरीर देवोंके शरीरसे कम पवित्र नहीं मानना चाहिये। भक्तिकी दृष्टिसे यह अनुचित नहीं कहा जा सकता परन्तु इसमें वास्तविक सत्य

लोकोत्तर पुरुष टट्टी जाएँ या पेशाब करें यह कल्पना भक्तोंको पसन्द नहीं आई। उधर अङ्गपूर्वों और अङ्गबाह्योंमें ऐसी घटनाओंका उल्लेख—अनावश्यक होनेसे—न मिला। फल यह हुआ कि यह अतिशय मान लिया गया। श्वेताम्बरोंको भी भक्तिके कारण इस अतिशयकी आवश्यकता तो मालूम हुई, परन्तु उसमें उन्होंने जरा सुधार कर लिया। इसलिये उनने यह कहा कि तीर्थंकरका नीहार दिखलाई नहीं देता, परन्तु यह अतिशय भी भक्तिकल्प्यके सिवाय कुछ नहीं है।

आहारका दिखलाई न देना भी सहजातिशय नहीं कहा जा सकता। क्योंकि दीक्षाके बाद म० महावीरको जिन जिन लोगोंने आहार दिया है और पाणिपात्रमें दिया है, क्या उन्हें दीखता नहीं होगा कि वे आहार कर रहे हैं? हाँ, केवलज्ञान होनेके बाद यह बात कही जा सकती है। दिगम्बर सम्प्रदायमें ऐसा अतिशय केवलज्ञानका ही माना है। परन्तु उनके मतानुसार अरहत आहार ही नहीं करते। नीहारके विषयमें जो बात मैं ऊपर लिख चुका हूँ वही यहाँ आहारके विषयमें भी कही जा सकती है। दूसरी बात यह है कि जब अरहन्तको बिलकुल देव साबित करनेकी आवश्यकता हुई तब उनके आहार-नीहार न माननेकी मान्यता भी प्रचलित हुई। भक्त हृदय जिसे देवोंका देव मानता है उसके विषयमें वह ऐसी कल्पना करे इसमें आश्चर्य नहीं है। जब सामान्य देवोंके आहार-नीहार नहीं माना जाता तब देवोंके देवके कैसे होगा इस भोली मान्यताके अनुसार दिगम्बरोंने आहार-नीहार नहीं माना और श्वेताम्बरोंने उसे चर्मचक्षुसे अदृश्य मानकर सन्तोष किया। परन्तु ये दोनों बातें भक्तिकल्प्य हैं। हाँ, अदृश्य माननेके पक्षमें इतना कहा जा सकता है

कि अरहन्त अवस्थामें उनके ये कार्य एकान्तमें होते थे जिसे सर्वसाधारण नहीं देख सकते थे। हाँ उनके शिष्य देखते होंगे।

श्वेताम्बर सम्प्रदायका चौथा अतिशय श्वासोच्छ्वासमें कमल जैसी सुगन्धका होना है। ऐसा अतिशय तो प्रत्येक काव्यके नायक-नायिकामें माना जाता है, फिर महावीर तो एक तीर्थंकर थे अगर जैन लेखकोंने अतिशयके नामपर ऐसा वर्णन किया तो वे क्षन्तव्य ही नहीं सर्वथा क्षन्तव्य हैं।

श्वेताम्बरोंके दूसरे अतिशयमें रोगरहित शरीर भी एक अतिशय है। यह भी मतिकल्प्य है। जो आदमी तीर्थङ्कर होनेवाला है उसे जन्मभर कभी बीमार न होना चाहिये यह बात भक्तके सिवाय और कौन कह सकता है? आश्चर्यकी बात यह है कि दिगम्बर सम्प्रदायमें यह अतिशय नहीं माना गया है यद्यपि दिगम्बर लोग अरहन्तको बीमार नहीं मानते। श्वेताम्बर सम्प्रदायके अनुसार इतना तो माना जाता है कि म० महावीर गोशालककी तेजोलेश्यासे कई महीने बीमार रहे थे। दिगम्बर सम्प्रदायने इस अतिशयको नहीं माना फिर भी वे इस अतिशयको मलरहित शरीरमें अन्तर्गत किये बिना नहीं रह सकते। श्वेताम्बरोंने इस अतिशयको माना परन्तु म० महावीरकी बीमारी इस अतिशयका स्पष्ट विरोध है। अन्य अतिशयोंके विषयमें जो कुछ मैंने कहा है वही इस अतिशयके विषयमें कहा जा सकता है।

जो अतिशय दोनों सम्प्रदायोंमें समान हैं, वे भी इसीलिये माने गये हैं कि अरहन्त देवोंके भी देव हैं इस लिये उनका शरीर देवोंके शरीरसे कम पवित्र नहीं मानना चाहिये। भक्तिकी दृष्टिसे यह अनुचित नहीं कहा जा सकता परन्तु इसमें वास्तविक सत्य

कुछ भी नहीं है। शरीरके पवित्र होनेसे या अपवित्र होनेसे किसी आत्माका महत्त्व या अमहत्त्व नहीं है। सुन्दरी स्त्रियाँ भी दुराचारिणी देखी जाती हैं, अच्छे शरीरवाले मनुष्य भी पापी देखे जाते हैं और असुन्दर तथा रुग्ण मनुष्य भी सदाचारी महात्मा होते हैं। जैन-धर्मने तो हुण्डक संस्थानी तथा कुबड़े मनुष्योंको भी केवली माना है। (तेरहवें गुणस्थानमें न्यग्रोधपरिमंडल आदि अशुभ संस्थानोंका तथा अन्य अनेक अशुभ प्रकृतियोंका उदय रहता है) जब कुरूप रुग्ण आदि मनुष्य केवली तक हो जाते हैं तब किसीका महत्त्व बतलानेके लिये उसके शरीरको सर्वगुणसम्पन्न बतलाना अनावश्यक ही है। शरीरकी पवित्रता तो एकेन्द्रिय वृक्षोंमें भी पाई जाती है। जिस कमलकी भगवानको उपमा दी जाती है वह बेचारा स्वयं एकेन्द्रिय है। इसलिये शारीरिक अतिशयोंका कुछ भी महत्त्व नहीं है। ऐसी अनावश्यक वस्तुके लिये म० महावीरके व्यक्तित्वको अस्वाभाविक और असंभव कोटिमें डालनेकी जरूरत नहीं है। म० महावीरके शरीरमें कुछ न कुछ असाधारणता अवश्य थी इसीसे वे इतने उपसर्गोंको सह सके, परन्तु इसके लिये इतनी असम्भव कल्पनाओंकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि शारीरिक महत्त्वके कम होनेसे आत्मिक महत्त्वको कम मानना जैनधर्मके विरुद्ध है। अगर म० महावीरमें उपर्युक्त सहजातिशय न हो तो उनके तीर्थङ्करत्वमें जरा भी बाधा नहीं आती। जैनधर्म शरीरका धर्म नहीं, आत्माका धर्म है।

कर्मक्षयजातिशय।

जो अतिशय घातिक कर्मोंके क्षयसे मिलते हैं वे कर्मक्षयजातिशय कहलाते हैं। परन्तु इनमेंसे बहुतसे अतिशय सामान्यकेवलियोंके नहीं

पाये जाते इसलिये इन्हें तीर्थङ्करत्वातिशय ही कहना चाहिये। इन अतिशयोंके विषयमें भी दोनों सम्प्रदायोंमें मतभेद है।

दिगम्बरमान्यता	श्वेताम्बरमान्यता
१—सौ योजन सुभिक्ष।	१—दुर्भिक्ष न पड़े।
२—गगन-गमन।	२—समवशरणमें देव मनुष्य और तिर्यंचोंकी कोड़ाकोड़ी समा जाय।
३—प्राणिवधाभाव।	३—वैर न हो, वैर चला जाय।
४—कवलाहार न होना।	४—पचीस योजन दूर तक चारों तरफ रोग न हो, हो तो चला जाय।
५—उपसर्ग न होना।	५—स्वचक्र परचक्र का भय न हो।
६—चार मुख दिखना।	६—मरी न फैले।
७—सर्वविद्याप्रभुत्व।	७—अतिवृष्टि न हो।
८—प्रतिबिम्ब-रहितता।	८—अनावृष्टि न हो।
९—पलकोंकी स्थिरता।	९—भगवानकी वाणी मनुष्य तिर्यंच और देव अपनी अपनी भाषामें समझें।
१०—नख, केश न बढ़ना।	१०—भगवानकी वाणी एक योजन तक एक समान फैले।
	११—सूर्यसे बारहगुणा तेजवाला भामंडल प्रभुके पीछे मस्तकके पास हो।

पहिला, तीसरा और पाँचवाँ अतिशय दोनों सम्प्रदायोंमें करीब करीब समान है। पहिले अतिशयके विषयमें यह कहना सुसंगत होगा कि जहाँ दुर्भिक्ष होता है वहाँ अरहतका विहार नहीं होता;

अगर विहार होता है तो उनके भक्त श्रावक, अन्नादि लेजाकर दुर्भिक्षका दु:ख दूर करते हैं। इसलिये इसे कर्मक्षयजातिशयके स्थानमें देवकृतातिशय कहना चाहिये। तीसरा अतिशय साधारण दृष्टिसे ठीक है। ऐसे महात्माओंके पास लोग अपना वैर भूलजायँ और प्राणियोंका वध न किया जाय, यह बिलकुल स्वाभाविक है। मालूम होता है कि म० महावीर जहाँ गये होंगे वहाँके कसाइयोंने उस दिन जीववध करना छोड दिया होगा, या वहाँके शासकोंकी तरफसे ऐसी आज्ञा निकली होगी। जैनमुनि आज कल भी ऐसा कराते हैं। पाँचवाँ अतिशय भी स्वाभाविक है। उनका बाह्य प्रभाव और शान्तमुद्रा देखकर राजाओंके भी मस्तक नत होजाते थे। पुराने समयमें साधुवर्गका योंही बड़े बड़े सम्राटोंके ऊपर पूर्ण प्रभाव रहता था। बड़े बड़े सम्राटोंका एक अकिञ्चन साधुके चरणोंपर झुक पड़ना भारतीय सभ्यताका एक अग है। उस जमानेमें यह अग पूर्ण विकसित अवस्थामें था। ऐसे युगमें म० महावीर सरीखे लोकोत्तर तपस्वी साधुके समक्ष स्वचक्र परचक्रका भय कैसे हो सकता था?

फिर भी अतिशयोंके विषयमें यह बात ध्यानमें रखना चाहिये कि ये कुछ प्रकृतिके अकाट्य नियम नहीं हैं। थोड़े बहुत अपवाद इन अतिशयोंके मिल ही जाते हैं। जैसे गोशालकके द्वारा किया गया उपद्रव। कुछ अतिशय तो ऐसे हैं कि एकाधवार हुए हैं और सदाके लिये मानलिये गये हैं। उदाहरणार्थ-आगे देवकृत अतिशयोंमें गन्धोदककी वृष्टि नामका अतिशय है। म० महावीरके आने पर कभी किसी नरेशने सुगन्धित जलका छिड़काव कराया होगा जोकि सदाके लिये

अतिशय मान लिया गया। यह बात पुराने जमानेमें ही हुई हो सो बात नहीं है। आज भी ऐसा होता है। अगर किसी महात्माके दर्शनोंके लिये कभी कोई राजा जाता है तो साधारण लोग यही कहते हैं कि उस महात्माका क्या कहना! उस की सेवामें बड़े बड़े राजा बने रहते हैं। महावीर जीवनमें अनेक बार जो घटनाएँ हुईं वे अगर सदाके लिये अतिशय मानली गईं तो इसमें कौन आश्चर्य है? परन्तु जो लोग ठीक ठीक वस्तुस्थितिको जानना चाहते हैं उन्हें इतनी बात ध्यानमें रखना चाहिये ये घटनाएँ सत्य तो हैं परन्तु कादाचित्क हैं तथा वे महावीर जीवनके ही अतिशय कहे जासकते हैं, न कि हरएक तीर्थंकरके। तीर्थंकरका जीवनचरित्र किसी मशीनके द्वारा तैयार नहीं किया जाता जो कि सबका एक सरीखा जीवन बनता जावे। महावीर जीवनमें जो अतिशय पाये जाते थे वे पार्श्वनाथ जीवनमें हो भी सकते और नहीं भी होसकते। इसी तरह म० पार्श्वनाथके अतिशय म० महावीरके जीवनमें होभी सकते और नहीं भी होसकते। सभी तीर्थंकरोंके एकसे अतिशय मानकरके हम तीर्थंकरके जीवनको बनावटी और अविश्वसनीय बना देते हैं।

कर्मक्षयजातिशयोंमें उपर्युक्त तीन अतिशय तो समान हैं। बाकी के अतिशयोंपर संक्षिप्त आलोचनाकी जाती है। दिगम्बर सम्प्रदायने दूसरा अतिशय गगन गमन माना है, परन्तु अगर म० महावीर गगन गमन करते हों तो पैरोंके नीचे कमल निकलेका जो देवकृत अतिशय ६ वह निरर्थक पड़ जाता है। यह अतिशय कैसे कल्पित हुआ इसका ठीक ठीक कारण नहीं मालूम होता। अभी तो सिर्फ

यही कहा जा सकता है कि म० महावीरमें दिव्यता वतलानेके लिये भक्तों द्वारा यह कल्पना की गई है। इस कल्पनाका दूसरा कारण भी कहा जा सकता है। श्वेताम्बरोंके महावीर चरित्रमें महावीर वात करते हैं, किसीको कहीं भेजते हैं, किसीको बुलाते हैं, किसीके अनुरोधसे कहीं जाते हैं। दिगम्बरोके महावीर चरित्रमे ऐसी वाते नहीं पाई जातीं। आजकल भी दिगम्बरोंकी यही मान्यता है कि अगर भगवान ऐसा करें तो उनमें इच्छा सावित हो जायगी जो कि मोहका परिणाम है। इसलिये दिगम्बर सम्प्रदायके अनुसार तीर्थंकरके कार्य यत्रवत् होते हैं। इसलिये उनका गमन भी यत्रवत् होना चाहिये। ऐसा गमन तो आकाश गमन ही हो सकता है, क्योंकि ज़मीन पर चलनेमे तो पैरोंके उठाने रखनेमें इच्छा होगी। इसलिये जहाँके भव्योंका पुण्य आकर्षण करता है वहीं पर तीर्थंकर आपसे आप पहुँच जाते हैं। निर्मोहताकी इस सूक्ष्म किन्तु अस्वाभाविक परिभापाने ऐसे ऐसे अतिशयोकी कल्पना करनेके लिये भक्तोंके हृदयको वाध्य किया है।

कवलाहारके विपयमें कह चुका हूँ। दिव्यता साबित करनेके लिये इसकी कल्पना हुई है। दूसरा कारण निर्मोहताकी सूक्ष्म किन्तु अस्वाभाविक परिभाषा है। केवलज्ञान पैदा हो जानेसे तीर्थंकरको जीवनभर भूख नहीं लगती यह मान्यता भी भक्तिका फल है। तीर्थंकर कवलाहार नहीं करते इस बातको साबित करनेके लिये दिगम्बरोंने अनेक युक्तियाँ दी हैं जैसे—" अरहत तो केवली हैं, वे अशुचि वस्तुओंको देखते हुए कैसे भोजन करेंगे?" सर्वज्ञताके स्वरूपमें जो भ्रम पैदा हुआ है उसने इसी प्रकारके अन्य अनेक भ्रम पैदा

किये हैं। सर्वज्ञताका यह अर्थ नहीं है कि वह एक साथ सब वस्तुओं पर नजर रक्खे। अगर ऐसी बात होती तो भी भोजनमें कोई बाधा नहीं थी, क्योंकि जिसके रति, अरति, जुगुप्सा (घृणा ग्लानि) आदि भाव ही नहीं हैं उसे इन बातोंके देखनेसे अन्तराय नहीं आता। दूसरी बात यह कही जाती है कि अगर अरहन्तके आहार माना जायगा तो भूखका कष्ट भी मानना पड़ेगा जिससे अनन्त सुखमें बाधा आ जायगी। इसके उत्तरमें सीधी बात यही कही जा सकती है कि अरहन्तमें अनन्तसुख साबित करनेके लिये एक असम्भव कल्पना नहीं की जा सकती। अगर सुखमें बाधा आती है तो इसे स्वीकार कर लेना चाहिये कि अर्हतका सुख, संसारके समस्त प्राणियोंसे अधिक होने पर भी वह पूर्ण नहीं है। यदि असातावेदनीयका उदय सुखमें बाधा डाल सकता है तो यह क्या बात है कि हम अरहतके असातावेदनीयका उदय तो मानें, क्षुधा परीषह भी स्वीकार करें परन्तु सुखमें न्यूनता न स्वीकार करें। अगर मोहनीय कर्म न होनेसे असातावेदनीयका उदय और क्षुधा परीषह दुःख नहीं दे सकती तो क्षुधाके होनेपर अनन्त सुखमें बाधा पहुँचती है, यह मानना अनुचित है। अनन्त सुखमें बाधा पहुँचे या न पहुँचे—प्राकृतिक नियमोंको इसकी पर्वाह नहीं है—परन्तु यह बात निश्चित है कि अरहतको भूख लगती है और इस बातको दिगम्बर सम्प्रदाय भी स्वीकार करता है। दिगम्बर सम्प्रदाय जब अर्हतके असाता वेदनीय और उसका फल क्षुधा परिषह स्वीकार करता है तब यह तो सिद्ध हुआ कि अर्हतको भूख है। भूखा रहकर कोई मनुष्य कहाँ जीवित रहे यह बात असम्भव है। आज हमारे पास ऐसी कोई भी युक्ति

यही कहा जा सकता है कि म० महावीरमें दिव्यता बतलानेके लिये भक्तों द्वारा यह कल्पना की गई है। इस कल्पनाका दूसरा कारण भी कहा जा सकता है। श्वेताम्बरोंके महावीर चरित्रमें महावीर बात करते हैं, किसीको कहीं भेजते हैं, किसीको बुलाते हैं, किसीके अनुरोधसे कहीं जाते हैं। दिगम्बरोंके महावीर चरित्रमे ऐसी बातें नहीं पाई जातीं। आजकल भी दिगम्बरोंकी यही मान्यता है कि अगर भगवान ऐसा करें तो उनमें इच्छा साबित हो जायगी जो कि मोहका परिणाम है। इसलिये दिगम्बर सम्प्रदायके अनुसार तीर्थंकरके कार्य यन्त्रवत् होते हैं। इसलिये उनका गमन भी यन्त्रवत् होना चाहिये। ऐसा गमन तो आकाश गमन ही हो सकता है, क्योंकि जमीन पर चलनेमें तो पैरोंके उठाने रखनेमें इच्छा होगी। इसलिये जहाँके भव्योंका पुण्य आकर्षण करता है वहीं पर तीर्थंकर आपसे आप पहुँच जाते हैं। निर्मोहताकी इस सूक्ष्म किन्तु अस्वाभाविक परिभाषाने ऐसे ऐसे अतिशयोंकी कल्पना करनेके लिये भक्तोंके हृदयको बाध्य किया है।

कवलाहारके विषयमें कह चुका हूँ। दिव्यता साबित करनेके लिये इसकी कल्पना हुई है। दूसरा कारण निर्मोहताकी सूक्ष्म किन्तु अस्वाभाविक परिभाषा है। केवलज्ञान पैदा हो जानेसे तीर्थंकरको जीवनभर भूख नहीं लगती यह मान्यता भी भक्तिका फल है। तीर्थंकर कवलाहार नहीं करते इस बातको साबित करनेके लिये दिगम्बरोंने अनेक युक्तियाँ दी हैं जैसे—" अरहत तो केवली हैं, वे अशुचि वस्तुओंको देखते हुए कैसे भोजन करेंगे ? " सर्वज्ञताके स्वरूपमें जो भ्रम पैदा हुआ है उसने इसी प्रकारके अन्य अनेक भ्रम पैदा

चार मुख दीखनेका अतिशय भी मक्किकल्प्य है । सम्भव है म० महावीरको जैन ब्रह्माका रूप देनेके लिये यह कल्पना की गई हो । इस मक्किकल्प्य अतिशयके लिये पीछेसे वैज्ञानिकता भी खूब बघारी गई है । कल्पना यह की जाती है कि केवलज्ञानके बाद तीर्थंकरका शरीर स्फटिकसे भी अधिक निर्मल हो जाता है । इसलिये पारदर्शक होनेके कारण पीछेसे अगला भाग भी दिखाई देता है । यद्यपि यह पारदर्शकता भी कल्पित ही है फिर भी अगर इसे सत्य मान लिया जाय तो भी यह बात ठीक नहीं बैठती क्योंकि भगवानकी पीठमें पार दर्शकता हो और अगले भागमें न हो यह नहीं कहा जा सकता, इसलिये नेत्रोंकी किरणें (वर्तमानके वैज्ञानिकोंके अनुसार पदार्थकी किरणें) पृष्ठभागके समान अग्रभागको भी पार कर जायँगी । फल यह होगा कि भगवान तो न दिखेंगे किन्तु उनके आगेकी कोई दूसरी चीज अशोकवृक्ष आदि दीखने लगेगा, जिस प्रकार स्फटिककी मूर्तिके पीछे जपाकुसुम वगैरह लगा देनेसे स्फटिकके बदले जपाकुसुम की ललाई दिखाई देने लगती है । इस अतिशयके लिये वैज्ञानिकताका सहारा लेना भूल है ।

श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इस ढंगका एक देवकृत अतिशय माना जाता है कि जिससे लोगोंको मालूम हो कि तीर्थंकर चार मुखसे उपदेश देते हैं जिसका खुलासा यों किया जाता है कि पूर्व दिशामें तीर्थंकर बैठे और बाकी तीन दिशाओंमें तीन प्रतिबिम्ब व्यन्तर देव स्थापें ।

इस अतिशयपर विचार करके निम्नलिखित बातोंमेंसे कोई एक कही जा सकती है —

नहीं है जिससे हम निःपक्ष विद्वान्के सामने केवलीके कवलाहारका निषेध सिद्ध कर सकें। केवलीके आहारके विषयमें श्वेताम्बर लोग भी अतिशयके इच्छुक हैं इसीलिये उनने उसे अदृश्य माना है। अगर केवली कवलाहार न करते तो इस अतिशयको माननेमें श्वेताम्बर कभी आनाकानी न करते। वे तो आहारको अदृश्य माननेके झगड़ेसे बच जाते। एक बात और है। दिगम्बर लोग सिर्फ कवलाहारका निषेध करते हैं, वे आहार-मात्रका निषेध नहीं करते। औदारिक शरीरके लिये आहारकी आवश्यकता तो उनने भी स्वीकार की है। इसलिये यहाँ विचार उठता है कि वह कौनसा आहार है और किस द्वारसे किया जाता है। जिस शरीरके लिये जिस आहारकी आवश्यकता है और वह आहार जिस द्वारसे मिलता है उसमें इकदम इतना विचित्र परिवर्तन कैसे हो सकता है? नई वर्गणाएँ भले ही शुभ और सूक्ष्म हों परन्तु पुरानी वर्गणाएँ तो जीवनके अन्त तक बदली नहीं जा सकतीं। इस विषयपर जितना ही विचार किया जायगा उतनी ही उसकी अवैज्ञानिकता सिद्ध होती जायगी। इसलिये केवली भोजन ही नहीं करते उनका भोजन करना अदृश्य है, ये अतिशय भक्तिकल्प्य ही हैं।

हाँ, अगर भोजन न करनेकी कल्पना दोनों सम्प्रदायोंमें होती तो इतना अनुमान किया जा सकता था कि शायद उनने कवलाहार छोड़ दिया हो और सिर्फ दुग्धपानाद्याहार रक्खा हो? क्योंकि यदि सर्वथा भोजनका त्याग अभीष्ट होता तो कवलाहार-त्यागकी जगह चतुराहार-त्याग बताया जाता, क्योंकि पूर्ण भोजन-त्यागके लिये चतुराहार-त्याग शब्दका उपयोग अधिक उचित है। कुछ भी हो, यह बात निश्चित है कि दोनों ही सम्प्रदायोंमें यह अतिशय भक्तिकल्प्य ही है।

नहीं मिचती, आहार-नीहार नहीं होता, दाढ़ी-मूंछ नहीं होती, रोग नहीं होता, शरीरमें खून नहीं होता, वे आकाशमें चलते हैं। तुम्हारे देवमें ये सब बातें कहाँ हैं? इसलिये वे तो मनुष्य हैं, तुम उन्हें देव क्यों कहते हो? साधारण लोग आत्माके महत्त्वको नहीं समझते—वे दिव्य गुणोंमें देवत्वका दर्शन नहीं करते, इसलिये उनके लिये बाह्य देवत्वकी आवश्यकता हुई। इसीलिये तीर्थंकरके अतिशयोंमें देवोंके बाहिरी चिन्ह भी लगे गये हैं। जैनधर्म ऐसे देवत्वकी पर्वाह नहीं करता। उसके अनुसार तो देव वही है जो पूर्ण सत्यज्ञानी है, पूर्ण वीतराग है और पूर्ण हितोपदेशी अर्थात् जगत्कल्याणकर्ता है।

श्वेताम्बरोंमें जो पचीस योजन तक रोग न होने, मरी न फैलने अतिवृष्टि-अनावृष्टि न होनेके अतिशय कहे जाते हैं वे भी मक्ति-कल्प्य हैं और उनका कारण वही है जो ऊपर कहा गया है।

समवशरणमें देव-मनुष्य-तिर्यंचोंकी कोड़ाकोड़ी समानेकी जो बात लिखी है उसका मतलब यह है कि तीर्थंकरका सभामण्डप इतना विशाल बनाया जाता था कि उसमें बैठनेवालोंको कमी स्थानकी कमी न हो। दोनों सम्प्रदायवाले समवशरणका विस्तार एक योजन बताते हैं। एक योजनका परिमाण उस समयमें क्या माना जाता था या उस समय योजन कितने तरहका चलता था यह अभी अनिश्चित है परन्तु इससे स्थानकी विशालता अवश्य मालूम होती है। यही कारण है कि समवशरण नगरमें नहीं बनाया जाता था किन्तु नगरके बाहर किसी बड़े उपवनमें या पर्वतपर बनाया जाता था।

तीर्थंकरकी वाणी एक योजन तक एक समान फैले और सब लोग अपनी अपनी भाषामें समझें—श्वेताम्बर सम्प्रदायमें यह कर्म-

१—व्याख्यानके समय तीर्थंकर चारों तरफ देखते हैं जिससे चारों दिशाओंके दर्शकोंको उनका मुँह दिखलाई दे ।

२—व्याख्यान मंडपमें उनके सामने तथा आजूबाजू बड़े बड़े दर्पण लगाये जाते थे जिसमें सामने न बैठनेवालोंको भी उनका मुख (दर्पणमे) दिखलाई देता था ।

३—उनके भक्त श्रीमान् लोग उनकी तीन मूर्तियाँ या तीन चित्रपट अन्य तीन दिशाओंमें स्थापित करते थे ।

सर्वविद्याप्रभुत्व नामका अतिशय ठीक है । अगर केवलज्ञानका अर्थ त्रिकालकी समस्त पर्यायोंका युगपत्प्रत्यक्ष किया जाय तो यह अतिशय बिलकुल निकम्मा होजाता है । किसी करोड़पति आदमीसे यह कहना कि इसके पास एक पैसा है, उसका अपमान करना है । इसी प्रकार केवलज्ञानके वर्तमान लक्षणके आगे सर्वविद्याप्रभुत्वकी बात है । सर्वविद्याप्रभुत्व विशेषणसे माल्रम होता है कि सर्वज्ञत्वका अर्थ सर्वविद्यासर्वज्ञत्व था । वास्तवमें यही महान् अतिशय है ।

प्रतिबिम्बरहितता, पलकोंकी स्थिरता, नखकेशोंका न बढ़ना, ये तीनों अतिशय तो अरहतमें देवोंकी बाह्य विशेषताएँ बतलानेके लिये कल्पित किये गये हैं क्योंकि अरहंत तो देवोंके देव हैं । जैनधर्ममें ईश्वरका अलग अस्तित्व नहीं है । उनके लिये तो तीर्थंकर ही ईश्वर हैं, देव हैं, महात्मा हैं, परमात्मा हैं । उनमें अगर सामान्य देवोंकी विशेषता न हो तो भक्तोंको अवश्य ही असन्तोष रहे । साथ ही दूसरे लोगोंके सामने अरहतदेवको देव कहनेमें उन्हें सङ्कोच हो । साधारण श्रेणीके लोगोंमें ऐसी चर्चा होती होगी कि तुम्हारे देव, कैसे देव हैं ? देवोंके शरीरकी तो छाया नहीं पड़ती, पलकें

का सूर्य तो उसकी एक किरणके बराबर है । सूर्यमें हजार किरणें मानी जाती हैं इसलिये यह हजार सूर्यके बराबर हुआ । इन सब अतिशयोक्तियोंको दूर करके सिर्फ इतना कहा जा सकता है कि किसी भक्त कारीगरने एक चमकदार प्रभामण्डल म० महावीरके बैठनेके आसनमें इस प्रकार लगवाया होगा जिससे वह उनके सिरके चारों तरफ दिखाई देता होगा, जैसा कि आजकल भी मन्दिरोंमें मूर्तियोंके पीछे लगाया जाता है ।

सिरमेंसे जो स्वभावतः किरणें निकलती हैं उन्हें श्वेताम्बरोंने एक अतिशय माना और दिगम्बरोंने उसे नहीं माना क्योंकि वे किरणें आँखोंसे नहीं दीखतीं ।

देवकृत अतिशय

देवकृतातिशयका अर्थ है भक्तोंके द्वारा किये गये अतिशय । इस विषयमें भी दोनों सम्प्रदायोंमें मतभेद है ।

दिगम्बर मान्यता	श्वेताम्बर मान्यता
१—अर्धमागधी भाषा ।	१—चौबीस चमर ।
२—पारस्परिक मित्रता ।	२—पादपीठसहित सिंहासन ।
३—सब ऋतुओंके फलफूल उत्पन्न हों ।	३—सब ऋतुएँ अनुकूल रहें ।
४—दर्पणसदृशभूमि ।	४—तीन छत्र ।
५—सब लोग प्रसन्न(संतुष्ट) हों ।	५—रत्नमय धर्मध्वज ।
६—वायु अनुकूल बहे ।	६—एक योजनतक अनुकूल वायु हो ।
७—गन्धोदककी वृष्टि ।	७—सुगंधित जलवृष्टि ।
८—चरणोंके नीचे कमल रचना ।	८—सुवर्ण कमल ऊपर चलें ।

क्षयजातिशय माना गया है जब कि दिगम्बर सम्प्रदायमें इसी ढगका अतिशय देवकृत माना गया है। वास्तवमें यह अतिशय देवकृत अर्थात् तीर्थंकरके भक्तोंके द्वारा किया गया अतिशय मानना चाहिये।

मस्तकके पास सूर्यसे बारह गुणें तेजवाला भामण्डल हो। यह एक प्रसिद्ध बात है कि महात्मा पुरुषोंके सिरके चारों तरफ एक तेजोमण्डल होता है। कोई कोई वैज्ञानिक भी इस बातको स्वीकार करते हैं। इसलिये म० महावीरके चारों ओर भामण्डल होना उचित ही है। दिगम्बर सम्प्रदायने इसे प्रतिहार्योंमें माना है। श्वेताम्बर सम्प्रदायने दो भामण्डल माने हैं। एक तो यही सूर्यसे बारह गुणें तेजवाला और दूसरा अष्टप्रतिहार्योंमें उल्लिखित। दूसरा भामण्डल देवकृत है। जो भामण्डल सूर्यसे बारह गुणें तेजवाला हो उसकी तरफ लोग दृष्टि कैसे कर सकते हैं? इसलिये उसके तेजको हरण करनेवाला यह देवकृत भामण्डल माना गया है। प्रभामण्डलको सूर्यसे बारहगुणा कहनेका मतलब यह माळूम होता है कि प्रलयकालमें सूर्य जब अत्यधिकतेजस्वी होता है तब उसका तेज वर्तमान तेजसे बारह गुणा हो जाता है। इससे अधिक तेजका कहीं उल्लेख नहीं मिलता। तीर्थंकरको सबसे अधिक तेजस्वी बतलानेके लिये यह उपमा दी गई है।

दिगम्बर सम्प्रदायमें कहीं कहीं इस भामण्डलको सूर्यसे हजार गुणा * कहा है। यह भी कवित्व है। पहिले इसके वर्णनमें यह कहा गया होगा कि यह भामण्डल सूर्योंका भी सूर्य है, आकाश-

---

* आकस्मिकमिव युगपद्दिवसकरसहस्रमपगतव्यवधानम्।
भामण्डलमविभावितरात्रिंदिवभेदमतितरामाभाति। —दशभक्ति॥

निर्मल होना)। इसके अतिरिक्त इस पाठमें १० वाँ अतिशय भी नहीं है और 'जय जय शब्द होनेका' नया अतिशय बना लिया गया है। दर्शन प्राभृत टीकामें अनुकूल वायु बहनेका अर्थ 'वायुका पीछेसे आना' है और दूसरे पाठमें मन्द सुगन्ध पवनका चलना' है। इसके अतिरिक्त दशभक्तिका तीसरा*पाठ भी है जिसमें कुछ अतिशय प्रथम पाठके और कुछ दूसरे पाठके हैं। दूसरे अतिशय के विषयमें प्रथम तृतीय पाठमें विशेषता यह है कि सब लोग मागध और प्रीतिकर देवकी कृपासे मागधी भाषामें बातचीत करते हैं।

म० महावीरकी भाषाके विषयमें अनेक प्रामाणिक और अप्रामाणिक मान्यताएँ प्रचलित हैं। एक मान्यता यह है कि उनकी वाणी सर्वांगसे खिरती है परन्तु इसमें कुछ दम नहीं है। अरहंत भी मनुष्य हैं और वे मुखसे बोलते हैं। बोलते समय उनके ओंठ कैसे चलते हैं गौर उनके दाँत कैसे चमकते हैं इत्यादि वर्णन शास्त्रोंमें अनेक जगह आता है। इसलिये भाषाका प्रश्न ही विचारणीय है। भाषाके विषयमें निम्नलिखित मत मुझे मिले हैं —

१—सामान्य मान्यता यह है कि म० महावीरकी भाषा आधी मागधी है और आधी महाराष्ट्री आदि। इसका नाम अर्ध मागधी है।

२—अरहंतकी भाषा सार्वार्धमागधीया है। 'सर्वेभ्यो हिता सार्वा सा चासौ अर्धमागधीया अर्धं मगधदेशभाषात्मकं अर्धं च सर्व भाषात्मकं... तथा परिणतया भाषया सकलजनानां भाषणसामर्थ्य-संभवात् (दशभक्तिटीका) अर्थात् उनकी भाषा ऐसी अर्धमागधी थी जिसे सब समझ सकें।

९—भूमि कण्टकरहित हो।	९—कटक अधोमुख हो जाय।
१०—अठारह तरहका धान्य पैदा हो।	१०—मणि, सुवर्ण और चाँदीके तीन कोट हों।
११—दिशा और आकाश निर्मल हो।	११—चार मुखसे उपदेश देते हैं यों दिखलाई दें।
१२—आगे आगे धर्मचक्र चले।	१२—आकाशमें धर्मचक्र हो।
१३—अष्ट मगल द्रव्योंका साथ रहना।	१३—शरीरसे बारह गुणा ऊँचा अशोक वृक्ष।
१४-इन्द्रकी आज्ञासे सब देवोंको निमन्त्रण दिया जाय।	१४—सर्व वृक्ष झुककर प्रणाम करें।
	१५—आकाश-दुदुभि बजे।
	१६—मयूर आदि पक्षी प्रदक्षिणा करें।
	१७—पुष्प-वृष्टि।
	१८—नखकेश नहीं बढ़े।
	१९—कमसे कम एक करोड़ देव पास रहें।

दिगम्बर सम्प्रदायमें देवकृत अतिशयके अनेक पाठ × हैं। दूसरे० पाठमें १४ वाँ अतिशय नहीं है और ग्यारहवें अतिशयके दो अतिशय बना दिये गये है (दिशाका निर्मल होना और आकाशका

× उपर्युक्त पाठ दर्शनप्राभृतकी टीकामेंसे लिया गया है।

० आजकल पाठशालाओंमें यही पाठ पढ़ाया जाता है।

द्वादशांगका विच्छेद और जोअवशिष्टांश आ श्वेताम्बरोंमें प्रचलित है उसकी भाषा अर्धमागधी कही जाती है। कोई कोई उसे आर्ष प्राकृत कहते हैं और कोई उसे महाराष्ट्री प्राकृत कहते हैं। वास्तवमें उस प्राकृतपर महाराष्ट्री प्राकृतका इतना अधिक प्रभाव पड़ा है कि उसे महाराष्ट्री प्राकृत कहा जा सकता है। इसका कारण यह मालूम होता है कि एक दिन समस्त भारतवर्षमें महाराष्ट्री प्राकृतका बोलबाला था। परन्तु वह शुद्ध महाराष्ट्री नहीं है उसमें मागधीकी भी विशेषता पाई जाती है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रयोग ऐसे हैं जो सीधे संस्कृतसे आये हैं और जिनका प्राकृतमें प्रयोग नहीं होता। परन्तु वे मेरे खयालसे पालीके प्रयोग हैं। पाली प्रयोगोंसे मिलान करनेपर यह बात बहुत-कुछ ठीक बैठती है।

दिगम्बर शास्त्रोंकी प्राकृत प्रायः शौरसेनी है। यद्यपि मूलाचार वगैरहमें महाराष्ट्री पद्य भी मिलते हैं परन्तु इसका कारण यह है कि ऐसा प्राचीन साहित्य श्वेताम्बर-दिगम्बरोंका मिलता-जुलता है। ऐसी सैकड़ों गाथाएँ हैं जो श्वेताम्बर-दिगम्बर ग्रंथोंमें एक-सी हैं। ये सब प्राचीन गाथाएँ हैं जिन्हें दोनों सम्प्रदायोंने अपना लिया है। ऐसा मालूम होता है कि म० महावीरकी भाषा थी तो मागधी परन्तु उसमें महाराष्ट्री पाली आदिका खूब मिश्रण हुआ था। पीछेसे वह साहित्य उच्चारणभेदसे कुछ परिवर्तित होता रहा। ऊपर जो मैंने जो उदाहरण दिये हैं उनमेंसे प्रथम द्वितीय और चतुर्थसे यही बात साबित होती है। जिस प्रकार आज हिन्दी और उर्दूको मिलाकर हिन्दुस्थानीके एक नये रूपपर ज़ोर दिया जाता है जिसे हिन्दू और मुसल्मान दोनों समझ सकें उसी प्रकार उस समय सर्वसाधारणक

३—समवशरणभूमौ भगवद्भाषया व्याप्त, परतो मगधदेवैस्तद्भाषाया अध मागधभाषया सस्कृतभापया च प्रवर्त्यते । अर्थात् समवशरणके बाहर मागधदेव (मगधके दुभाषिया) आधी मागधी और आधी सस्कृतमें उसका विस्तार करते हैं । (दशभक्तिटीका)

४—अर्द्ध भगवद्भापया मगधदेशभापात्मक अर्द्ध च सर्वभापात्मक । अर्थात् आधी मागधी और आधी सर्व भाषा । (दर्शनप्राभृत टीका)

५—सयोगकेवलिदिव्यध्वने'कथ सत्यानुभयवाग्योगत्वमिति चेन्न, तदुत्पत्तावनक्षरात्मकत्वेन श्रोतृश्रोत्रप्रदेशप्राप्तिसमयपर्यंतमनुभयभाषात्वसिद्धे' । तदनतर च श्रोतृजनाभिप्रेतार्थेषु सशयादिनिराकरणेन सम्यग्ज्ञानजनकत्वेन सत्यवाग्योगत्वसिद्धेश्च । अर्थात् अरहतकी दिव्यध्वनि अनक्षरात्मक होनेसे अनुभय ह परन्तु श्रोतालोगोंके कानमे पहुँच कर सम्यग्ज्ञान पैदा करती है इसलिये सत्यरूप है । (गोम्मटसार जीवकाड टीका २२७)

इससे मालूम होता है कि अरहत भगवानकी वाणी मूलमें अनक्षरात्मक है अर्थात् किसी भाषारूप नहीं है, पीछे सर्व भाषात्मक हो जाती है ।

६—मगध और शूरसेनके बीचकी भाषा अर्धमागधी* कहलाती है ।

---

* ये सब पाठ-भेद भी इस बातके सूचक हैं कि ज्यों ज्यों समय जाता है त्यों त्यों शास्त्रोंकी बातें कुछकी कुछ होती जाती हैं । वर्तमानके शास्त्रोंको शुद्ध जिनवाणी समझना भूल है । वे सिर्फ शुद्ध जैनधर्मके खोजकी सामग्री हैं ।

नेमें अपमान समझते थे, सारा काम संस्कृतमें होता था उस युगमें म० महावीर सरीखे असाधारण विद्वानका प्राकृत भाषामें व्याख्यान देना अतिशय ही था। सर्वसाधारणके हृदयपर इस बातका जितना प्रभाव पड़ा होगा उतना अन्य अनेक अतिशयोंका न पड़ा होगा। आप्तके जो तीन विशेषण हैं उनमेंसे तीसरे विशेषण (हितोपदेशकत्व) के साथ इसका बहुत सम्बन्ध है इसलिये इसे मुख्य अतिशयोंमें मानना चाहिये।

दूसरा अतिशय 'पारस्परिक मित्रता'का है। इसका अगर साधारण अर्थ किया जाय तो यह देवकृत अतिशय नहीं कहा जा सकता। इसलिये दिगम्बर लेखकोंने इसका अर्थ किया है—सब लोग मागधी बोलें। उपर्युक्त विवेचनसे मालूम होता है कि म० महावीरने अर्धमागधीका अपने विहार-क्षेत्रमें खूब प्रचार कर दिया था। इससे यह बात मालूम होती है कि सर्वसाधारणकी एक भाषा बनानेके लिये उनने प्रयत्न किया था और उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली थी। एक-दूसरेकी भाषा समझनेसे मित्रता बढ़ती है इसलिये इस अतिशयका दूसरा नाम 'पारस्परिक मित्रता' हो गया।

तीसरा, छठा दसवाँ और ग्यारहवाँ अतिशय कादाचित्क प्राकृतिक घटनाओंका मक्तियुक्त वर्णन है। आज भी हम देखते हैं कि जब हमारे यहाँ कोई महापुरुष आता है तो हम प्राकृतिक घटनाओंको उसके प्रभावका फल बतलाने लगते हैं। अगर पानी बरसने लगता है तो कहते हैं कि गर्मी ज्यादः पड़ती थी इसलिये पानी बरसने लगा। अगर रुक जाता है तो कहते हैं कि पानी बरसनेसे लोग मींगते थे इसलिये रुक गया यदि बादल आ जाते हैं तो कहते हैं

प्राकृत भाषापर ज़ोर दिया गया था। फिर भी बहुतसे लोगोंको म० महावीरकी भाषामें संदेह रह जाता होगा इसलिये दुभाषिया लोग उनके वक्तव्यका अनुवाद करते जाते होंगे। अथवा कभी एकाधवार बहुत भीड़ होने पर तथा अनेक प्रान्तोंके लोग एकत्रित होनेपर दुभाषियोंसे काम लिया गया होगा। माल्म होता है कि यह काम मागधोंसे लिया गया था। मागध शब्दका अर्थ भाट, चारण या नकीब है। इन्हीं मागधोंको पीछेसे मागध देव कहने लगे। किसी विशेष काम करनेवालोंको देव कहना उस जमानेमें रिवाज था। तीसरे उद्धरणसे दुभाषियोंके सद्भावकी पुष्टि होती है। पाँचवें उद्धरणसे भी यही ध्वनि निकलती है। जब तक समझमें नहीं आई तब तक अनक्षरात्मक कहलाई, जब दुभाषिया मागधोंने उसे अनेक भाषाओंमें अनुवादित कर दिया तब वह सर्वभाषात्मक कहलाने लगी। छठे मतके विषयमें मैंने अभी पूरा विचार तो नहीं किया है परन्तु अभी वह जँचता नहीं है, क्योंकि मगध और शूरसेन के बीचमें अगर कोई अर्धमागध नामका देश होता तो वहाँकी भाषा अर्धमागधी कहलाती। परन्तु अर्धमागध नामका देश कहीं पढनेमें नहीं आया।

उपर्युक्त उद्धरणसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि म० महावीरने भाषाके रूपमें कुछ ऐसा परिवर्तन किया था जिसे सब लोग समझ सकें तथा दुभाषियोंका भी प्रबन्ध किया गया था। ये दोनों ही प्रबन्ध ज्ञानको सर्वसाधारणकी सम्पत्ति बना देनेके लिये थे। इसीलिये यह अतिशय कहलाया। जिस युगमें प्राकृत-भाषा स्त्रियों तथा अपढ़ोंकी भाषा कहलाती थी, पढ़े लिखे आदमी प्राकृतमें बात कर-

और पधारते थे उस नगरका राजा नगरमें ढौंडी (डिंडिम) पिटवा कर या और किसी प्रकारसे नगरनिवासियोंको इस बात की सूचना देता था तथा दर्शनोंके लिये अनुरोध भी करता था।

श्वेताम्बर सम्प्रदायमें जो देवकृत अतिशय हैं उनमें प्रातिहार्योंके नाम भी आये हैं। दोनोंमें अतर यह मालूम होता है कि समवशरणकी रचना न होनेपर भी जो साधारण चिह्नके तौरपर रहते थे वे प्रातिहार्य कहलाते थे और जब समवशरणकी रचना होती थी और जब वे ही चिह्न कुछ अधिक मात्रा में होते थे तो अतिशय कहलाने लगते थे। जैसे अतिशयोंमें चौबीस चमर हैं जब कि प्रातिहार्योंमें आठ। प्रातिहार्यमें साधारण अशोक वृक्ष है परन्तु अतिशयोंमें घटा पताका आदि बड़े मङ्गल द्रव्योंसे शोभित है। अतिशयोंका जो विवेचन हो चुका है उससे श्वेताम्बराभिमत देवकृत अतिशयोंका विवेचन हो जाता है। जिस अतिशयके विषयमें कुछ विशेष रूपमें कहना है वह यहाँ कहा जाता है।

दशवें अतिशयसे मालूम होता है कि म० महावीरके व्याख्यान के स्थानको किसी श्रीमन्तने या राजाने तीन तरहकी कपड़ेकी दीवालोंसे घेरा होगा। पहिलीमें अनेक तरहके बेल-बूटे होंगे, दूसरीका रग पीला होगा और तीसरी बिलकुल सफेद होगी।

चौदहवें अतिशयसे मालूम होता है कि उनके स्वागतमें नगर निवासियोंने वृक्षोंमें भी वन्दनवार आदि लटकाई होंगी। पीछेसे कवियोंने वन्दनवार लटकती देखकर कल्पना की होगी कि मानो वृक्ष झुक कर प्रणाम करते हैं।

आकाशमें दुंदुभि बजनेका अर्थ यह है कि समवशरणके द्वार पर ऊँचे स्थानपर बाजे बजते थे। आजकल भी हाथी-द्वारके ऊपर

छाया हो गई, यदि हट जाते है तो कहते हैं आकाश और दिशाएँ निर्मल हो गई। आज भी लोग इस प्रकारकी कल्पना किया करते हैं, फिर उस जमानेकी तो बात ही क्या कहना।

चौथे, सातवें और नवमे अतिशयसे मालूम होता है कि उनके आनेपर भक्त लोगोंने जमीन साफ कराई होगी और धूल न उड़े इसके लिये पानी छिड़काया होगा। आज भी किसी नगरमान्य व्यक्तिके स्वागतमे ऐसा कार्य किया जाता है।

पाँचवें अतिशयसे मालूम होता है कि उनका व्यवहार लोगोंके साथमें इतना अच्छा था कि सब लोग संतुष्ट हो जाते थे। उनके व्यवहारमें रूक्षता और लापर्वाही नहीं थी।

आठवें अतिशयसे मालूम होता है कि कभी किसी भक्त नरेशने उनके आनेपर सड़कपर सुनहरी रंगके कमलचित्र बनवाये थे। अथवा व्याख्यान-मंडप (समवशरण) में स्वागत करते समय उनके पैरोंके नीचे ऐसा कपड़ा विछवाया होगा जिसमें सुनहरी रंगके कमलचित्र बने होंगे। यह प्रथा आज भी अनेक प्रान्तोंमें पाई जाती * है।

जिस प्रकार राजाओंकी सवारीके आगे अनेक तरहके निशान चलते हैं मालूम होता है कि भक्त लोग म० महावीरके विहारके समय चक्र और अष्ट मंगल-द्रव्य (छत्र, चमर, दर्पण, भृंगार, मंजीरा, कलश, ध्वजा, सुप्रीतिका) लेकर चलते थे।

चौदहवें अतिशयसे मालूम होता है कि जिस नगरमें म० महा-

---

* मेरे प्रान्तमें इसे 'पाँवड़े डालना' कहते हैं। बारातका स्वागत करते समय बीचमें एक लम्बा कपड़ा बिछाया जाता है जिसपरसे निकलकर भेंट की जाती है।

आठ प्रातिहार्य

प्रातिहार्योंके नाम दोनों ही सम्प्रदायोंमे एक सरीखे हैं। उनके नाम ये हैं।

(१) अशोक वृक्ष—म० महावीरके शरीरसे बारह गुणा ऊँचा। म० महावीर विहारमें प्राय उपवनोंमें ठहरते थे। उनका आसन अशोक वृक्षके नीचे शिलापट्टपर होता था।

(२) सुरपुष्प-वृष्टि—भक्तोंके द्वारा पुष्प बरसाये जाते थे।

(३) दिव्यध्वनि—म० महावीरकी वाणीको मालकोस राग, वीणा बाँसुरी आदिके स्वरसे देवता (बाजा बजानेवाले लोग) पूरते हैं। इससे मालूम होता है कि म० महावीर उपदेशमें कभी कभी अच्छे स्वरमें कविता पढ़ा करते थे और भक्त लोग संगीतका मिश्रण करके उसे सुश्राव्य बनाते थे।

(४) चामर—भक्तोंके द्वारा कभी कभी चमर ढुराये जाते थे।

(५) आसन—सुन्दर सिंहासन।

(६) भामण्डल—इस विषयमें पहिले कहा जा चुका है।

(७) दुंदुभि—एक तरह के बाजे।

(८) छत्र—भक्तों के द्वारा की गई छत्ररचना॥

मूलातिशय

ऊपर जो अतिशय आदि बताये गये हैं वह सब मूलातिशयोंका विस्तार है जो कि कल्पित अकल्पित घटनाओंके सम्मिश्रणसे भक्त लोगोंने किया है। वास्तवमें म० महावीरके मूल अतिशय चार हैं—

वाजे वजानेवालोंके स्थान पाये जाते हैं और कहीं कहीं इतने ऊँचे बैठकर वाजा वजानेका रिवाज है। सफरमें वाजे ऊँटोपर रखकर वजाये जाते थे। जहाँ मनुष्यसे अधिक ऊँचाई हुई कि आकाशकी ऊँचाईसे तुलना होने लगी।

अठारहवें अतिशयको दिगम्बर सम्प्रदायने कर्मक्षयजातिशय माना है परन्तु इसे देवकृत अतिशय कहना ही उपयुक्त माळूम होता है। क्योंकि घातियाकर्मके क्षय हो जानेसे शरीर अपने स्वभावको छोड दे यह वात सिर्फ श्रद्धागम्य है। इसलिये केवलज्ञान होनेपर भी नख, केश तो बढ़ते होंगे परन्तु भक्त लोग शीघ्र काट देते होंगे और बालोंका क्षौर कर्म अथवा लोंच कर देते होंगे। साधक अवस्थामे नियमोंका कड़ाईसे पालन करना पड़ता है परन्तु जीवन-मुक्त अवस्थामें तो उस अपायके कारण ही नहीं रहते जिनसे वचनेके लिये उन नियमोंका पालन करना पड़ता था। इसलिये जो कार्य एक मुनिके लिये निषिद्ध है, वह एक अरहतको वर्ज्य नहीं भी हो सकता है।

उन्नीसवें अतिशयसे मालूम होता है कि किसी परिमित सख्यामें उनके भक्त साथ बने रहते ही होंगे।

ये जो अतिशय बताये हैं उनमेंसे बहुतसे अतिशय ऐसे हैं जो कभी कभी होते थे और जो सदाके लिये मान लिये गये। म० महावीरके आने पर कभी किसी नगरमें सडकोंपर पानी छिड़का गया तो यह अतिशय सदाके लिये मान लिया गया। इसी प्रकार चमर आदिके अतिशय हैं। एक कादाचित्क घटनाको सार्वकालिक रूप देनेका आज भी रिवाज़ है।

मुझे लक्ष्य करके भगवान बोल रहे हैं। ८—पुष्ट अर्थ वाला। ९—पूर्वापरविरोध-रहित। १०—महापुरुषोचित। ११—सन्देह-रहित १२—दूषण-रहित अर्थवाला। १३—कठिन विषयको सरल करनेवाला १४—जहाँ जो शोभाप्रद हो वहाँ वैसा बोलना १५—षड् द्रव्य नव तत्त्वको पुष्ट करनेवाला। १६—प्रयोजन-सहित। १७—पद-रचना-सहित। १८—पटुता-सहित। १९—मधुर। २०—मर्मवेधक न हो। २१—धर्मार्थ प्रतिबद्ध। २२—सत्य अर्थवाला। २३—परनिंदा-आत्म-प्रशंसा-रहित। २४—व्याकरण-शुद्ध। २५—आश्चर्यजनक। २६—जिसे सुनकर यह मालूम हो कि वक्ता सर्वगुणसम्पन्न है। २७—धैर्ययुक्त। २८—विलम्ब रहित। २९—भ्रम-रहित। ३०—सब अपनी भाषामें समझें ऐसा। ३१—शिष्ट बुद्धि उत्पन्न करनेवाला। ३२—पदके अर्थको अनेक रूप विशेष आरोपण करनेवाला। ३३—साहसिकपनसे कहा गया। ३४—पुनरुक्तदोषरहित। ३५—सुननेवालेको खेद न उत्पन्न करने वाला।

वर्णनको छोड़कर ये चारों अतिशय ही वास्तवमें अतिशय हैं। पहिले जो अतिशयादि बताए गये हैं उनमें कुछ तो कल्पित हैं और कुछ रूपान्तरित हो गये हैं। गम्भीर और निष्पक्ष दृष्टिसे अगर विचार किया जाय तो हमें म० महावीरके जीवनके विषयमें निम्न लिखित बातें मालूम होंगी।

(१) उनका शरीर सुन्दर और सुडौल था।

(२) वे कठोर परिश्रमसे थकते नहीं थे और न जोशमें आकर उत्तेजनापूर्वक कोई काम करते थे जिससे बहुत पसीना आ जाय।

१—अपायापगमातिशय—ससारके प्राणी अज्ञानादिसे अपना नाश (अपाय) कर रहे हैं उस अपायको म० महावीरने दूर किया अर्थात् पतनके मार्गसे स्वय भी बचे और दूसरोंको भी बचाया। तीर्थंकरका सबसे बड़ा और सत्य अतिशय हो सकता है तो यही हो सकता है।

२—ज्ञानातिशय—आत्माको स्वतत्र और सुखी बनानेका पूर्ण सत्य ज्ञान उनको था।

३—पूजातिशय—बड़े बड़े आदमी भी उनकी पूजा करते थे।

४—वचनातिशय—उनकी व्याख्यानशैली बहुत रोचक थी और उनका उपदेश सबको हितकारी था। मालूम होता है कि पुराने समयमें वचनके ३५ गुण माने जाते थे, और जिसके वचनकी प्रशसा करना पड़ती थी उसके पीछे ये गुण विशेषण रूपमें कहे जाते थे। श्वेताम्बर साहित्यमें नगर, देश, राजा, रानी, उपवन, चैत्य, शरीर और उसके अगोपाग आदि सबके वर्णन मिलते हैं। जहाँ किसीका उल्लेख हुआ कि उक्त वर्णन उसके साथ लगा दिया गया। इसी तरह वचनातिशयके साथ हुआ है अन्यथा सत्यता और हितकरताकी दृष्टिसे जो वचन सर्वोत्तम है वह कलाकी दृष्टिसे भी सर्वोत्तम होना चाहिये यह नियम नहीं है। वचनातिशय हितकरतामें है, कलापूर्णतामें नहीं। फिर भी जैन शास्त्रोंमें अरहत-वचन के ३५ गुण माने गये हैं:—

१—सब जगह समझा जा सके। २—योजन तक (बहुत दूर तक) सुनाई दे सके। ३—प्रौढ ४—मेघके समान गभीर। ५—स्पष्ट शब्दवाला ६—सतोषप्रद। ७—हर-एक मनुष्य ऐसा समझे कि

(१४) उनके विहारमें आगे आगे धर्मचक्रका निशान और उसके पीछे अष्ट-मंगल-द्रव्य लेकर लोग चलते थे। यह सब मक्तोंकी भक्तिका फल था।

(१५) उनके साथ एक जनसमूह प्रायः रहा ही करता था।

इन पन्द्रह कलमोंमें अतिशयोंका निष्कर्ष दिया गया है। इनके पढ़नेसे म० महावीरका बाहिरी चित्र हमारी आँखोंके सामने घूमने लगता है। परन्तु यह याद रखना चाहिये कि ये अतिशय वास्तविक अतिशय नहीं हैं। वास्तविक अतिशय तो चार मूलातिशय हैं जो पहिले बताए जा चुके हैं अथवा पूर्ण सत्य-ज्ञान, पूर्ण वीतरागता और पूर्ण हितोपदेशता ही उनके सच्चे अतिशय हैं।

महावीर-निर्वाण।

महावीर-जीवनके ऊपर इस प्रकार निष्पक्ष वैज्ञानिक दृष्टि डालनेसे हम म० महावीरके वास्तविक महत्त्वको समझ लेते हैं तथा इससे जैन धर्मके वास्तविक रूपको समझनेमें, विवादग्रस्त विषयोंके निर्णय करनेमें और साम्प्रदायिकताको नष्ट करनेमें बड़ी मदद मिलती है।

मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि म० महावीरके समयमें जैन धर्मका जो रूप था यदि वही रूप फिर खोज लिया जाय, करीब ढाई हजार वर्षोंमें जो विकार जम गया है वह हटा दिया जाय, तो जैनधर्म विज्ञानके आगे टिकने लायक और समाज-सुधारकी सभी समस्याओंको हल करनेवाला बन सकता है। फिर भी अगर उसमें कुछ त्रुटि मालूम हो तो हमें उसको पूर्ण करनेका अधिकार है। अन्तरंग रूपमें तो परिवर्तन होना नहीं है, परिवर्तन होना है बाह्य-रूपमें सो बाह्यरूपमें परिवर्तन होनेसे जैनधर्मकी कोई भी क्षति

(३) उनका आहार इतना अल्प और नियमित था कि उन्हें शारीरिक विकारोंके कारण वीमारीका शिकार नहीं होना पड़ा ।

(४) उनका शरीर बहुत दृढ़ और सहनशील था ।

(५) जहाँ उनका विहार होता था वहाँ कोई पशु आदिकी हत्या न करता था ।

(६) वे उपद्रवों, कलहों और अन्यायोंको दूर करा देते थे ।

(७) उनको उस समयके सभी दर्शनोंका पूर्ण ज्ञान था और उनने उचित शब्दोंमें उनकी आलोचना भी की थी ।

(८) उनका व्याख्यान प्राय. ऐसे विशाल स्थानमें होता था जहाँ लोगोंको बैठनेमें तकलीफ न हो ।

(९) व्याख्यान सरल भाषामें दिया जाता था और उसका भी अनेक भाषाओंमें अनुवाद कराया जाता था ।

(१०) कभी कभी और कहीं कहीं लोग उनका स्वागत महाराजों-सरीखा करते थे । उनके वैठनेके स्थानको छत्र-चमर, भामण्डल आदिसे सजाते थे ।

(११) जहाँ उनका विहार होता था वहाँके श्रावक खूब दान करते थे जिससे अतिवृष्टि, वीमारी आदिके कष्ट दूर हो जाते थे ।

(१२) कभी कभी उनके आगमनपर ग्रामवासी लोग जमीन साफ कराते थे, पानी छिड़काते थे, सड़कपर कमलोंके चित्र बनाते थे, वृक्षोंको तोरणोंसे सजाते थे, वाजे वजवाते थे, पुष्प वरसाते थे । तथा और भी अनेक काम करते थे ।

(१३) कहीं कहीं उनके आगमनपर राजा लोग नागरिकोंको दर्शनोंका निमन्त्रण देते थे ।

देवोंका वर्णन भक्तिजन्य है तब उनके द्वारा बनाये गये मायामय शरीरका वर्णन भी मायामय है। 'देवोंका शरीर मरनेपर उड़ जाता है तब देवोंके देवका शरीर भी उड़ जाना चाहिये' इस विचारसे यह कल्पना की गई है। परन्तु यह अस्वाभाविक तो है ही, साथ ही अनावश्यक भी है। यदि केवलज्ञानके होनेसे शरीरमें इतनी विशुद्धि आ जाती है कि वह कर्पूरकी तरह उड़ जाता है तो अन्य केवलियोंका शरीर भी उड़ना चाहिये, परन्तु अन्य केवलियोंका शरीर निर्वाणके बाद उड़ नहीं जाता इसके अनेक उल्लेख मिलते हैं।

आराधना-कथाकोष'में संजयन्त मुनिकी एक कथा है। एक विद्युदंष्ट्र विद्याधरसे इन्हें मरवा डाला था। उपसर्गके समय इन्हें केवलज्ञान पैदा हुआ और इनने मुक्तिधाम किया। निर्वाणोत्सवके समय इनका छोटा भाई जयन्त भी आया। उसे अपने भाईकी (संजयन्त केवलीकी) मृत देहको देखकर क्रोध आ गया। उसने विद्युदंष्ट्रको पकड़ लिया आदि। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि संजयन्त केवलीकी मृत देह उड़ नहीं गई थी। इसी प्रकारका एक उल्लेख पद्मपुराणमें भी है। वहाँ निर्वाण हो जानेके बाद उनके शरीरकी पूजा देवोंने की है+। इससे यह बात स्पष्ट है कि केवलज्ञानके होनेसे शरीरका उड़ जाना दिगम्बर सम्प्रदायको भी मान्य नहीं है। यह कल्पना तो है ही परन्तु पीछेकी है यह बात

+ततो मेघरथस्यास्य शुक्लध्यानसमाधिना। उत्पन्नं केवलज्ञानं देवासुरनमस्कृतं॥
आगत्य च सुरेन्द्रेण प्रमोदेन सुरासुराः। चतुर्विधार्चनं तस्य दिव्यपुष्पादिभिः कृताः॥
प. पु. ११ वाँ पर्व ९५-९६

नहीं है। म० महावीरके जीवनसे हमें ऐसे परिवर्तनोंकी आवश्यकताका अनुभव होता है। म० महावीरका जीवन-चरित अनेक समस्याओंको हल करनेवाला है।

कैवल्य प्राप्त करनेके बाद करीब तीस वर्ष तक म० महावीर जीवित रहे और प्राणियोकी नैतिक उन्नतिके लिये उनने बहुत काम किया। २४६२ वर्ष पूर्व पावामें उनका निर्वाण हुआ। अनेक राजाओंने और श्रावक-श्राविकाओंने मिलकर उनका दाहसंस्कार किया। मुनिलोग भी इस समारम्भमें शामिल हुए थे। अनेक प्रकारके चन्दनोंसे चिता तैयार की गई थी और जब अस्थियाँ रह गईं तब बुझा दी गई थी। अस्थियोंको राजाओंने बाँट लिया था। शास्त्रोंमें इस उत्सवको देवकृत बना दिया गया है। अग्नि लगाने वालोंको अग्निकुमारदेव, वायु चलानेवालोंको वायुकुमारदेव, पानीसे चिता बुझानेवालोंको मेघकुमारदेव, अस्थियाँ ले जानेवालोंको इन्द्र कहा गया है जो कि उस समयकी प्रथाके अनुसार ठीक है।

कुछ लोगोंकी (खासकर दिगम्बरोंकी) ऐसी मान्यता है कि निर्वाण होनेके बाद केवलीका शरीर बिजली या कर्पूरकी तरह उड़ जाता है, सिर्फ नख और केश रह जाते हैं तब इन्द्र मायामय शरीर बनाता है और उसका दाहसंस्कार करता* है। परन्तु जब

---

*तनुपरमाणू दामिनिवत् सब खिर गये। रहे सेस नखकेस रूप जे परिणये॥
तब हरिप्रमुख चतुरविध सुरगण सुमसच्यौ। मायामइ नखकेसरहित जिनतनु रच्यौ॥
रचि अगर चन्दनप्रमुखपरिमलद्रव्य जिनजयकारियौ।
पदपतित अग्निकुमार मुकुटानल सुविधि संस्कारियौ॥
—जिनेन्द्रपंचकल्याणक]

स्वभावोऽयं जिनादीनां शरीर-परमाणवं।
मुंचति स्कंधतामन्ते क्षणात्क्षणरुचामिव॥ हरिवंश पु० ६५-१३

अधिकांश मुनि भी दिगम्बर वेशमें ही रहते थे परन्तु वस्त्रधारीका एकदम निषेध नहीं हो गया था। थोड़े बहुत मुनि वस्त्र भी धारण करते थे। आर्यिकाएँ तो अवश्य ही वस्त्र धारण करती थीं और मोक्षका मार्ग तो दोनोंको समान रूपसे खुला था, इसलिये वस्त्रत्यागपर बहुत अधिक जोर नहीं दिया जा सकता था। फिर भी उनके शिष्य दिगम्बरत्वका अनुकरण जरूर करते थे और म० महावीरके पीछे तो प्रायः सभी दिगम्बरवेषी हो गये होंगे। परन्तु मुनियोंमें एक दल ऐसा भी था जो दिगम्बरत्वको अच्छा समझता हुआ भी उसपर इतना जोर देना उचित नहीं समझता था। एक दल म० महावीरके बाह्य तपका भी पूरा अनुकरण करना चाहता था और दूसरा उसको उचित समझता हुआ भी अनिवार्य नहीं मानता था। परन्तु म० महावीरकी दृष्टिमें अन्तर न था। वे दोनोंको समान समझते थे। अर्थात् सबको मुनि मानते थे। मुनियोंके दस भेदोंमें कोई विशेष तपस्वी होते हैं, कोई अध्ययनप्रिय होते हैं और कोई साधारण होते हैं परन्तु मुनि सभी कहलाते हैं। इसी तरह उस समय भी मुनि सभी कहलाते थे।

म० महावीर के ६२ वर्ष पीछे तक यह मतभेद रुचिभेदके ही रूपमें रहा। इन्द्रभूति गौतम, सुधर्मास्वामी और जम्बूस्वामी तक संघभेदका कोई चिह्न नजर नहीं आता। बाहरमें संघभेद भले ही न हुआ हो परन्तु एक ही संघके भीतर दलबन्दी अवश्य मालूम होती है। क्योंकि जम्बूस्वामीके बाद दिगम्बर और श्वेताम्बरोंकी आचार्यपरम्परा जुदी पड़ जाती है। दिगम्बरोंके कथनानुसार जम्बूस्वामीके पीछे जो पाँच श्रुतकेवली (पूर्ण शास्त्रोंके ज्ञाता) हुए

भी निश्चित होती है। म० महावीरके शरीरका अग्निसंस्कार किया गया इससे उनके गौरवमें कुछ भी बट्टा नहीं लगता। इसलिये हमें इस अवैज्ञानिक कल्पनाका त्याग कर देना चाहिये।

दिगम्बर-श्वेताम्बर।

यह बात असम्भवसम है कि किसी लोकोत्तर महात्माके विरोधी न हों। म० महावीरके विरोधी भी बहुत थे। परन्तु जो विरोधी अन्त तक विरोधी रहे वे जैनसंघसे बाहिर ही समझे गये। इसीलिये गोशालक, जमालि आदि जैनसंघसे बाहिर रहे। परन्तु पीछे यह बात नहीं हो सकती थी। पीछे जिन लोगोंमें मतभेद हुआ वे म० महावीरको बराबर मानते रहे और अपनेको म० महावीरके सच्चे अनुयायी कहते रहे। इसलिये पीछेके मतभेद जैनधर्ममें विविध सम्प्रदायोंके कारण हुए।

जैनधर्ममें सम्प्रदाय अनेक हुए हैं परन्तु मुख्य सम्प्रदाय दो हैं— दिगम्बर और श्वेताम्बर। ये दोनों सम्प्रदाय कब और कैसे हुए इसका प्रामाणिक इतिहास लुप्त है। दिगम्बर सम्प्रदायने श्वेताम्बर सम्प्रदायकी उत्पत्तिकी एक कथा बना ली है और श्वेताम्बर सम्प्रदायने दिगम्बर सम्प्रदायकी एक कथा बना ली है। दोनों ही द्वेषमूलक और अप्रामाणिक हैं।

मेरे खयालसे ये दोनों सम्प्रदाय किसी एक घटनाके परिणाम नहीं हैं किन्तु बहुत दिनोंके मतभेदके परिणाम हैं। सम्भवतः वह मतभेद म० महावीरके समयमें भी होगा। यह बात तो निश्चित है कि म० महावीर दिगम्बर वेशमें रहते थे। इसलिये उनके संघके

कर लेना चाहिये । म० महावीरने जब जिनकल्प और स्थविरकल्प दोनों ही बताये हैं तब यह क्या बात है कि जिनकल्पपर ही इतना अधिक जोर दिया जाता है ! आज वह जमाना कहाँ है कि जिन-कल्पका पालन हो सके ! जिनकल्प तो म० महावीरके साथ ही गया । हम तो स्पष्ट घोषणा कर देना चाहिये कि जिनकल्प तो 'व्युच्छिन्न' हो गया है । जिनकल्पके बिना मोक्ष रुकता नहीं है और केवल दिगम्बरत्वसे ही जिनकल्पका पालन नहीं होता । "

इन विचारोंका फल यह हुआ कि उत्तरप्रान्तवालोंमें जो दिगम्बर वेषमें रहते थे उनने भी उस वेषका त्याग कर दिया और नरम नीतिका पोषक संगठित संघ बन गया । इस दलके नेता स्थूलि-भद्र थे ।

यहाँ यह सब बात कहना आवश्यक है कि नरम नीतिका पोषक यह दल न तो भ्रष्ट था न शिथिलाचारी था । उग्रदल और नरमदलके दृष्टिबिन्दुमें ही अन्तर था । उग्रदलवाले यह सोचते थे कि अगर ' हम महावीरके जीवनका पूरा अनुकरण न करेंगे तो धीरे धीरे इतना शिथिलाचार बढ़ जायगा कि कुछ समय बाद मुनि और श्रावकोंमें कुछ अन्तर ही न रहेगा । जब हम बाह्य नियमोंका कठोरतासे पालन करेंगे तब थोड़ी-बहुत आत्मशुद्धि भी रह जायगी । अगर हम बाहरसे बिलकुल ढीले हो गये तो भीतरसे कुछ भी न रहेंगे । ' इसके विपरीत नरमदलवाले यह सोचते थे कि ' बाहिरी बातोंपर अधिक जोर देनेसे भीतरी बातोंको लोग भूलने लगते हैं—वे लोक-सेवाके कामके नहीं रहते । साथ ही ज्ञानोपार्जनपर भी उपेक्षा करने लगते हैं । उग्रनीतिसे धर्मप्रचार और धर्म-प्रभावनामें भी

उनके नाम हैं–विष्णु, नन्दी, अपराजित, गोवर्धन और भद्रबाहु *, जब कि श्वेताम्बरोंके कथनानुसार जम्बूस्वामी के पीछे प्रभव, शय्यभव, यशोभद्र, आर्यसभूतविजय और भद्रबाहु श्रुतकेवली हुए हैं। भद्रबाहु-को दोनों सघ श्रुतकेवली मानते हैं इससे यह तो मालूम होता है कि भद्रबाहुके समय तक सघभेद नहीं हुआ था। बीच के चार नामोंमें जो मतभेद है उसका कारण यह मालूम होता है कि जो जिस दलके विचारोंका पोषक था उसीका नाम उस दलने श्रुतकेवलियों-में रखा, और विरोधी विचारवालोंको छोड़ दिया। इन चारोंके पीछे जो भद्रबाहु श्रुतकेवली हुए वे बहुत प्रभावशाली थे। पूर्ण जैन-श्रुतके ये अतिम आचार्य थे। ये आचारमें उग्र तपस्वी थे तथा दिगम्बर वेषमें रहते थे इसलिये दिगम्बरत्वके पोषक इन्हें मानते थे। साथ ही ये विचारमें इतने उदार थे कि सवस्त्रवेषपोषकोंको ये हीनदृष्टिसे न देखते थे। इस तरह दोनों दलवाले इन्हें अपना ही समझते थे। भद्रबाहुके बाद दोनों दलोंको सन्तुष्ट रख सकनेवाला कोई न मिला। इधर कारणवश दोनों दलके लोग एक दूसरेसे दूर भी हो गये। उग्र विचारवाले दक्षिण चले गये और नरम विचार-वाले उत्तरमें ही रहे। इस घटनाने एक-दूसरेकी मुख-लज्जाका अकुश भी हटा दिया। उत्तरवालोंने सोचा कि " उग्रविचारवाले बात-बातमें रोक-टोक किया करते हैं और द्रव्यक्षेत्रकालभावका विचार ही नहीं करते इसीलिये हमें स्पष्ट रूपमें मध्यम मार्ग स्वीकार

* जम्बूनामा मुक्तिं प्रापयदासौ तथैव विष्णुमुनिः। पूर्वाङ्गभेदभिन्नाशेषश्रुत-पारगो जात ।एवमनुबद्धसकलश्रुतसागर पारगामिनोऽभासन्। नन्द्यपराजितगोव-र्द्धनाह्वया भद्रबाहुश्च ॥ नीतिसार।

रहनेसे इनके विरोधी भाव कुछ और बढ़े, तीसरे उत्तर-ग्रन्थकारोंने जिनकल्पके विच्छेदकी घोषणा करके स्थविर-कल्पको ही आशीर्वाद देकर अपने विचारोंमें कट्टरता प्राप्त कर ली थी। अब ये दिगम्बरोंको पहलेके समान अधिक तपस्वी भी माननेको तैयार न थे।

इन सब कारणोंने मिलकर दोनों संघोंको पूर्ण विभक्त कर दिया। फिर भी यह भेद इतना अधिक न हुआ कि ये दो सम्प्रदाय हो जाते। विक्रमकी दूसरी शताब्दीमें ये दोनों संघ दो सम्प्रदायके रूपमें प्रकट हुए। श्वेताम्बरोंके कथनानुसार इस समय दिगम्बर सम्प्रदाय उत्पन्न हुआ, और दिगम्बरोंके कथनानुसार इस समय श्वेताम्बर सम्प्रदाय पैदा हुआ। मेरे विचारसे उस समय ये दोनों सम्प्रदाय उत्पन्न हुए क्योंकि ये दोनों ही एक वृक्षकी दो शाखाएँ हैं। जिन बातोंमें इनमें मतभेद है उनमें अनेकान्त-दृष्टिको दूर कर दिया गया है और एकान्तको अपनाया गया है।

दोनों सम्प्रदाय इस बातको स्वीकार करते हैं कि उस समय प्राचीन श्रुत लुप्त हो गया था—थोड़े थोड़े भग्न अंश बच रहे थे। मेरे खयालसे यह द्रव्यश्रुतका लोप था। भावश्रुत तो द्रव्यश्रुतकी अपेक्षा अधिक बचा था। हाँ, कई कारणोंसे द्रव्यश्रुतका रक्षण आवश्यक था। द्रव्यश्रुत जिस प्रकार लुप्त हो रहा था अगर उसी प्रकार लुप्त होता जाता तो इसका फल बहुत बुरा होता। इसलिये वीर संवत ९८० में देवर्द्धिगणीकी अध्यक्षतामें वल्लभीपुरमें (गुजरातमें) श्वेताम्बर संघकी एक बैठक हुई। उसमें जितना श्रुत उस समय उपलब्ध था उसका लिपिबद्ध संग्रह किया गया। श्वेताम्बरोंमें आज उसी श्रुतका प्रचार है। इसमें संदेह नहीं कि

वाधा आती है। नग्न रहकर हम राजसभाओंमें कैसे जा सकते हैं? जनताका समागम भी हमें पर्याप्त रूपमें नहीं मिल सकता। उस अवस्थामें तो हमें विलकुल वनवासी रहना पड़ेगा इसलिये हम जन-सेवा बहुत कम कर सकेंगे।'

यह भी सम्भव है कि बौद्ध साधुओंके धर्मप्रचारका भी असर पड़ा हो, और जैनमुनियोंको यह आवश्यकता माळूम हुई हो कि जगलमें पड़े रहनेसे शासनकी उन्नति और लोककल्याण न होगा। इसलिये मध्यम-वेषको धारण करके समाज-सेवामें भाग लेना चाहिये। कुछ भी हो परन्तु यह निश्चित है कि ये दोनों सम्प्रदाय दृष्टिविन्दुके अन्तरके ही परिणाम थे—नरम-दलकी आचारभ्रष्टताके परिणाम नहीं थे। यदि ऐसा होता तो स्थूलिभद्र सरीखे कामजयी + चरित्रवान् विद्वान् नेता इस दलको न मिलते।

सघके इस प्रकार अनेक भागोंमें बट जानेसे तथा लापर्वाही आदि अनेक कारणोंसे श्रुत लुप्त हो चला था इसलिए उत्तर-प्रान्तवालोंने पटनामें सघकी वैठक की, और जितना वन सका प्राचीन श्रुतका सग्रह किया। इससे उनको दो लाभ थे। पहिला तो यही कि श्रुतकी (शास्त्रकी) रक्षा हो, दूसरा यह कि दक्षिण प्रान्तवालोंको यह वतलाया जाय कि हम लोग शास्त्राज्ञाके वाहर नहीं हैं।

जव दक्षिणवाले उत्तरको लौटे तो उनने इनका अधिक विरोध किया। एक तो ये पहिलेसे ही विरोध करते थे, दूसरे दक्षिण-प्रान्तमें

+ भूतो न कोऽपि न भविष्यति भूतलेऽस्मिन् श्रीस्थूलिभद्रसदृशो मुनिपुङ्गवेषु।
येनैष रागभुवनेऽपि जितो हि काम पण्याङ्गनावरगृहे वसता निकामम्॥
खरतरगच्छसूरिपरम्परा-प्रशस्ति।

अथवा उसीका संग्रह करते। इससे उपर्युक्त कारणोंमेंसे प्रथम कारण ही जोरदार मालूम होता है।

दिगम्बर-सम्प्रदायने श्रुतका संग्रह न करके बहुत हानि उठाई है क्योंकि प्राचीन श्रुतका कोई नाम-निशान न होनेसे जिस किसी दिगम्बरका बनाया हुआ ग्रन्थ महावीरकी वाणी कहलाता है। अमुक आचार्यकी रचना शास्त्र है और अमुक आचार्यकी रचना शास्त्र नहीं है इस विषयमें कोई जोरदार हेतु नहीं दिया जाता। श्वेताम्बर सम्प्रदायमें यह सुविधा है कि कोई कितना ही बड़ा आचार्य क्यों न हो हम उसकी रचनाको श्रुत माननेके लिए बाध्य नहीं हैं; किन्तु दिगम्बरोंमें यह सुविधा नहीं है। वहाँ तो आचार्योंकी रचना ही श्रुत है। किसकी रचनासे किसकी रचनाका माप किया जाय इसका कोई साधन नहीं है। अगर कोई संग्रह होता तो उसको कसौटी बनाकर हम सब शास्त्रोंकी जाँच कर सकते थे। जो उसमें न मिलता उसे उस आचार्यके मत्थे मढ़ते आवककके समान महावीरके मत्थे न मढ़ते। और! जो हो गया सो हो गया। अब हमारा कर्तव्य है कि दोनों सम्प्रदायोंके ग्रन्थोंको अर्ध-प्रामाणिक स्वीकार कर लें और उनमेंसे जो जो बात परीक्षामें खरी उतरती जाय उसे छोड़कर बाकीको प्रमाण मान लें। दोनों ही सम्प्रदायोंके ग्रन्थोंमें सत्य और असत्यका मिश्रण हो गया है। इसके अतिरिक्त दोनोंके साहित्यमें ऐसी त्रुटियाँ भी हैं जिनकी पूर्ति एक-दूसरेके साहित्यसे हो सकती है। उदाहरणार्थ कुन्दकुन्दके ग्रन्थोंसे आध्यात्मिकताकी पूर्ति हो सकती है और श्वेताम्बर साहित्यसे अछूतोद्धार, स्त्री-पुरुष-समानाधिकार, विधवाविवाह आदि समाज-सुधारक साहित्यका निर्माण किया जा सकता है।

यह श्रुत अधूरा है तथा भाषा और भावकी दृष्टिसे थोड़ा बहुत विकृत भी है और उसमें पीछेकी बातें भी मिल गई हैं तथा बौद्ध साहित्यका भी उसपर प्रभाव पड़ा है। फिर भी वह बहुत कामकी चीज़ है। अगर यह सग्रह न होता तो आज तक पद्रह सौ वर्षमें जो विकार पैदा होता वह भी शास्त्रके नामपर प्रचालित हो जाता।

यह आश्चर्य है कि दिगम्बर-सम्प्रदायने इस प्रकारका संग्रह नहीं किया, बल्कि वे नवीन रचना ही करते आये हैं। इसके ठीक ठीक कारण समझमें नहीं आते परन्तु निम्नलिखित कारण यहाँ कहे जा सकते हैं—

१—दिगम्बर सम्प्रदाय चरित्रके नियमोंका कड़ाईसे पालन करना चाहता था, जब कि प्राचीन श्रुतमें कठिन और शिथिल सभी तरहके नियमोंका उल्लेख था। इसलिये दिगम्बरोंने प्राचीन श्रुतकी रक्षा करने की अपेक्षा नये श्रुतकी रचना करना ही उचित समझा।

२—प्राचीन श्रुत विकृत हो जानेके कारण कुछ असम्बद्ध था तथा प्राचीन होनेके कारण कुछ असुदर भी था इसलिये उनने उस-पर उपेक्षा की। भग्नावशेषकी मरम्मत करनेकी अपेक्षा उसी सामग्रीसे इनने नई इमारत खड़ी करना अच्छा समझा।

इनमेंसे पहिला कारण ही अधिक जोरदार मालूम होता है। अन्यथा यह बात नहीं हो सकती कि दिगम्बर लोग प्राचीन श्रुतका थोड़ा-बहुत भी सग्रह नहीं कर सकते। यदि दिगम्बरोंके मतानुसार श्वेताम्बरोंने प्राचीन श्रुतमें बहुत-सी मिलावट कर दी थी तो दिग-म्बरोंको चाहिये था कि उस मिलावटको दूर करके जो कुछ श्रुत

किया होगा और यह तो निश्चित है कि उन लोगोंकी मशा जैन-शासनको पवित्र और प्रभावशाली बनाये रखनेकी थी। इस तरह उनकी भावना भले ही पवित्र हो परन्तु साम्प्रदायिकता अच्छी नहीं थी। और आज तो उससे कुछ काम नहीं है। पवित्र जैनधर्मको हम तभी समझ सकते हैं जब हम साम्प्रदायिकताका त्याग कर दें।

जैनधर्ममें यों तो अनेक सम्प्रदाय हैं परन्तु दिगम्बर-श्वेताम्बर ये दोनों सम्प्रदाय ही मुख्य हैं। इनके समन्वय हो जानेसे साम्प्रदायिकताका बहुत-कुछ विनाश शीघ्र हो सकता है।

मतभेद और उपसम्प्रदाय

जैनधर्मके उपर्युक्त दो सम्प्रदाय ही हुए हों सो बात नहीं है। म० महावीरके समयसे आज तक छोटे छोटे मतभेदोंको लेकर अनेक उपसम्प्रदाय हुए हैं। आवश्यकतावश लोगोंने कुछ परिवर्तन करना चाहा और प्राचीन परम्पराने उसका विरोध किया इससे उपसम्प्रदाय बनते गये। समन्वय-दृष्टि एक तरहसे नष्ट ही हो गई थी इसलिये मतभेदोंने सम्प्रदायभेदोंका रूप पकड़ लिया। यहाँ मैं कतिपय मतभेदों और उपसम्प्रदायोंका परिचय दूँगा जिससे मालूम होगा कि जैनधर्ममें समय-समयपर लोगोंको परिवर्तनकी आवश्यकता मालूम हुई है। हमें उन मतभेदों और उपसम्प्रदायोंसे न तो राग करना चाहिए, न द्वेष करना चाहिए, किन्तु उन्हें असली जैनधर्मकी खोजकी सामग्री बना लेना चाहिये। ये उपसम्प्रदाय अनुदारता और मोहेमत्तताके परिणाम हैं। आज तो वे उपेक्षणीय ही हैं।

यद्यपि इन विषयोंकी सामान्य सामग्री दोनोंमें है तथा मौलिक तत्त्वोंमें कुछ भेद नही है, फिर भी अगर हम एक-दूसरेके ग्रन्थोंको आदरकी दृष्टिसे देखने लगें और अपने अपने गीत न गाते रहें तो हम अनेकान्त दृष्टिको प्राप्त करके पूर्ण जैनत्वको प्राप्त कर सकेंगे।

साम्प्रदायिकताका साहित्यके ऊपर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। इस साम्प्रदायिकताने ही श्वेताम्बर-साहित्यमें जिनकल्पविच्छेद आदि विचारोंका प्रवेश कराया और इसीने दिगम्बर-साहित्यमें स्त्रीमुक्ति-निषेध आदिका विधान किया।

दिगम्बरोंने नग्नत्वपर जोर देकर मुनिधर्मको कलुषित न होने देनेके लिये बहुत कुछ प्रयत्न किया, परन्तु उसका निर्वाह न हो पाया। श्वेताम्बराम यतियोंकी सृष्टि हुई तो इस सम्प्रदायमें भट्टारक गुरुओंकी सृष्टि हो गई। स्त्रीमुक्तिनिषेधकी बातोंने भी दिगम्बरत्वकी रक्षा न कर पायी। आज तो स्त्रीमुक्ति-निषेध आदि भी मतभेदके विषय बन गये हैं जब कि ये बातें तो दिगम्बरत्व और श्वेताम्बरत्व सम्बन्धी मतभेदके फल हैं। दिगम्बरत्वकी रक्षाके लिये स्त्रीमुक्तिका निषेध करना पड़ा, स्त्रीमुक्तिके निषेधके कारण बहुत-सा कथा-साहित्य भी परिवर्तित हो गया। सबसे बुरी बात तो यह हुई कि जिस जैन-धर्मने स्त्रियोंको मनुष्योचित सभी अधिकार दिये थे वे इस छोटेसे मतभेदके कारण छिन गये और म० महावीरके धर्ममें भी वही बीमारी आ गई जिस बीमारीको दूर करनेके लिये म० महावीरने जैन-धर्मका प्रचार किया था। परन्तु यह प्रसन्नताकी बात है कि बीमारी-का निदान और चिकित्सा अज्ञात नहीं है। जिन लोगोंने इन सम्प्रदायोंकी नींव डाली उनने अपनी समझके अनुसार अच्छा ही

रताकी और अनुभवकी आवश्यकता थी वह जमालिमें नहीं थी तब जमालिका म० महावीर कबतक कैसे मान लेते?

खैर! इन सब कारणोंसे या प्रचारके बहानेसे जमालिने अपने साधु-साध्वियोंके साथ प्रवास किया। घूमते हुए श्रावस्तीके तिन्दुक उद्यानके कोष्ठक चैत्यमें ठहरे। वहाँ जमालि बीमार हुए। उस समय इनने मुनियोंसे कहा कि पथारी शय्या बिछा दो। मुनि शय्या तैयार करने लगे। इतनेमें जमालिने फिर पूछा—क्या शय्या तयार हो गई? उस समय कुछ काम बाकी था परन्तु बोलचालके रिवाजके अनुसार मुनियोंने कह दिया कि हो गई'। जमालि तुरन्त लेटनेको आये परन्तु कुछ काम बाकी था, इसलिये क्रुद्ध होकर बोले कि जो काम हो रहा है उसे 'हो गया है' क्यों बोले। मुनियोंने कहा क्रियमाणको भी कृत कहा जाता है ऐसा महावीर वचन है। जमालिको और भी क्रोध आ गया और उनने कहा कि यह ठीक नहीं है। बस इसीपर मतभेद हो गया। कुछ मुनि इसीसे बिगड़कर म० महावीरके पास लौट गये। 'क्रियमाणको कृत कहा जा सकता है और क्रियमाणको कृत नहीं कहा जा सकता' इस प्रकार म० महावीर और जमालिके दो मत बन गये।

इसमें सन्देह नहीं कि जिस अवसरपर साधुओंने क्रियमाणको कृत कहा था उस अवसरपर वैसा नहीं कहना चाहिये था। उन्हें जानना चाहिये था कि बीमार आदमी शय्याके पास आकर खड़ा नहीं रह सकता। इसलिये काम पूरा होनेपर ही 'हो गया' कहना चाहिये था। किसी भी नय-वाक्यका प्रयोग करते समय परिस्थितिका ख्याल रखना चाहिये। दूसरी भूल जमालिकी है। अगर रिवाजके अनुसार मुनियोंने

निह्नव—जैन शास्त्रोंमें अनेक निह्नवोंका वर्णन आता है। 'निह्न-व'का अर्थ किसी वस्तुका लोप करना, छुपा देना आदि है। जैन धर्मकी प्रचलित मान्यताओंमें जिन लोगोंने कुछ सदेह उपस्थित किया या दूसरा मत चलाया उन्हें निह्नव कहते हैं। तदनुसार श्वेताम्बरोंने दिगम्बरोंको निह्नव कह दिया है जब कि दिगम्बरोंने श्वेताम्बरोंको जैनाभास कहा है। जैसे छोटे छोटे मत-भेदोंपर इन्हें निह्नव कहा गया है उन्हें देखकर आश्चर्य होता है। अधिकाश प्रश्न तो बिलकुल दार्शनिक हैं और उनका धर्मपर या बाह्याचारके ऊपर भी कुछ प्रभाव नहीं पड़ता। निह्नव होनेके और भी कई कारण हैं।

जमालि—निह्नवोंमें सबसे पहिले जमालिका नाम लिया गया है। ये एक राजकुमार थे म० महावीरकी पुत्री सुदर्शनाके साथ इनका विवाह हुआ था। और जब म० महावीरने तीर्थ-रचना की तब पति-पत्नी म० महावीरके शिष्य हो गये। जमालिके पास भी पाच सौ शिष्य साधु थे और सुदर्शनाके पास एक हजार शिष्या साध्वियाँ थीं। परन्तु ऐसा मालूम होता है कि जमालि म० महावीरसे असन्तुष्टसे रहते थे और इसमें इन्हींका अपराध था।

म० महावीर तो नि पक्ष थे। न उन्हें कुल-जातिका विचार था न नातेदारी का। परन्तु जमालि अपनेको म० महावीरका जमाई समझकर अपनेको अपनी योग्यतासे कुछ अधिक समझते थे। और म० महावीरसे यहाँतक कह बैठते थे कि जैसे आप अन्य अनेक मुनियोंको अर्हत् या केवली कहते हो वैसे ही मुझे भी कहो। परन्तु केवली कहलानेके लिये जिस वीतरागताकी, समभावकी, गम्भी-

निमन्त्रण किया और भिक्षामें अच्छे अच्छे भोज्य पदार्थोंका ज़रा-ज़रासा अंतिम कण भिक्षामें दिया। जब इनने पूछा तो उसने कहा कि आपके सिद्धान्तके अनुसार तो अंतिम अंशमें पूर्ण वस्तु रहती है इस लिये लड्डूका अंतिम कण ही पूरा लड्डू कहलाया। बस तिष्यगुप्तकी अपनी भूल समझमें आ गई और वे अपने गुरुके पास लौट गये।

अव्यक्त दृष्टि—वीर निर्वाणके २१४ वर्ष बाद श्वेतम्बिका नगरीमें आर्याषाढ़भूति नामक आचार्यका रात्रिमें देहान्त हो गया। जैन शास्त्रोंमें लिखा है कि वे सौधर्म स्वर्गके नलिनीगुल्म विमानमें पैदा हुए परन्तु वे अपनी पूर्व मृतदेहमें प्रविष्ट होकर आचार्य की तरह बात करने लगे और थोड़ी देर बाद शरीर छोड़ते समय कह गये कि मैं तो आचार्य नहीं हूँ किन्तु देव हुआ है। इससे उनके कुछ शिष्य अव्यक्तवादी हो गये। कोई साधु साधु है या देव, यह नहीं जाना जा सकता इसलिये किसीको साधु समझकर वन्दना न करना चाहिये। इसलिये उन्होंने पारस्परिक शिष्टाचार ही छोड़ दिया। अन्तमें वे संघबाह्य किये गये। वे राजगृह पहुँचे वहाँके राजा बलभद्रने उनको समझानेके लिये एक तरीका निकलवाया। उसने सेवकोंको आज्ञा दी कि उनको पकड़कर मार डाला जाय। उन मुनियोंने राजासे कहा कि "तुम एक जैन श्रावक हो और जैन मुनियोंके साथ ऐसा व्यवहार करते हो"। राजाने कहा—आप लोग तो अव्यक्तवादी हैं इसलिये न तो आप यह जान सकते हैं कि मैं श्रावक हूँ और न मैं यह जानता हूँ कि आप लोग साधु हैं। इसपर उन मुनियोंने अव्यक्तवाद छोड़ दिया।

इस घटनाका प्रारम्भिक अंश कल्पित है। आचार्यका अमुक

क्रियमाणको कृत कह दिया तो इसमे जमालिको चिढ़ना न चाहिये था, न दुराग्रह धारण करना चाहिये था परन्तु सच वात तो यह है कि जमालिको पहलेसेही कुछ चिढसी थी मौका पाकर वह अभी उठी।

म० महावीरकी पुत्री सुदर्शनाको मुनियोंका विचार पसन्द नहीं आया इसलिये उनने भी जमालिका पक्ष लिया परन्तु पीछे ढक नामक एक श्रावकने उन्हे उनकी भूल वताई। भूल मालूम होनेपर उनने जमालिका पक्ष छोड़ दिया और फिर म० महावीरकी शिष्या होगई। फिर कोई जमालिका अनुयायी न रहा।

म० महावीरको कैवल्योत्पत्तिके चौदह वर्ष वाद, अर्थात् महावीर-निर्वाणके १६ वर्ष पहिले, जमालिने यह विरोध किया था।

तिष्यगुप्त—इसके दो वर्ष वाद ऋषभपुर अर्थात् राजगृह नगरके गुणशिलक चैत्यमें आचार्य वसुके शिष्य तिष्यगुप्तने आत्माके विषयमें एक नया वाद खडा किया। आत्मप्रवादपूर्वका अध्यापन करते समय इन्हें शंका हुई कि जीवका एक प्रदेश भी जीव नहीं हैं, दो प्रदेश भी जीव नहीं है, एक प्रदेश भी कम रहे तव तक जीव नहीं है, इससे मालूम होता है कि कोई अंतिम प्रदेश ही ऐसा है जिसे जीव कह सकते हैं। वाकीके प्रदेशोंको जीव नहीं कह सकते। गुरुने वहुत समझाया कि जैसा अन्तिम प्रदेश जीव है उसी प्रकार अन्य प्रदेश भी। प्रदेशोंमें कोई अन्तर नहीं है। परन्तु तिष्यगुप्तको वात समझमें न आई। वस! इनका वहिष्कार कर दिया गया। ये भी आमलकल्पा नगरीके आम्रवनमें चले गये। वहाँ मित्रश्री श्रावकको इनकी निह्नवताका पता लगा। उसने इन्हें

लिये तड़फड़ाते हैं अन्तमें मर जाते* हैं। बेहोशीमें मृतकताका भ्रम हो जानेसे ऐसी घटनाएँ सब जगह हुआ करती हैं। साधारण मनुष्य लोग इसे भूतावेश मान लेते हैं। मध्यकालमें जैन मुनियों तकको यह डर रहता था कि मृतक शरीरमें कहीं भूत न घुस जावें। 'भगवती आराधना' में* आराधक मुनिके मृतक संस्कारके वर्णनमें लिखा है 'मुनिके मृतक शरीरके पैरके अँगूठेको बाँधना चाहिये और छेदना चाहिये। यदि ऐसा न किया जायगा तो कोई देवता उस मुर्दे शरीरमें प्रवेश कर जायगा, इससे मुर्दा उठकर क्रीड़ा करेगा और बाधा देगा'।

इससे यह बात मालूम होती है कि यह अन्धविश्वास बड़े बड़े मुनियोंके हृदयमें भी प्रवेश कर गया था। इसी अन्धविश्वासने आषाढ़भूतिके शिष्योंको धोखा दिया। आचार्य आषाढ़भूति जब उपर्युक्त कथनानुसार मृतककी तरह बेहोश हो गये तो उनके शिष्योंने उन्हें मुर्दा ही समझा। पीछे जब वे होशमें आये तो शिष्योंने समझा कि ये बेहोश ही हुए थे परन्तु कुछ समय बाद वे फिर मर गये इससे शिष्योंको आश्चर्य हुआ। शिष्योंने निश्चय किया कि आचार्य तो पहिले ही मरकर देव हुए थे परन्तु उन्होंने मृतक शरीरमें प्रवेश किया था और फिर वह देव मृतक शरीरको छोड़कर चला

---

* बहुत दिन हुए मैंने सरस्वती में 'जीवित समाधि' शीर्षक एक लेख पढ़ा था जिसमें ऐसी बहुत-सी घटनाओंका उल्लेख था।

* गीदच्चा करचरणा मडगमणस्थणा महाबंधा। बंधंति य छिंदति य करचरणंगुट्ठयपदेसे। १९७३। जदि वा एस ण कीरेज विधी तो तत्थ देवदा कोई। आदाय तं कलेवरमुट्ठिज्ज रमिज्ज बाधिज्ज। १९७४। —भगवती आराधना।

विमानमें पैदा होना और मृत शरीरमें प्रविष्ट होना इन बातोंका ऐतिहासिक तथा दार्शनिक दृष्टिसे कुछ भी मूल्य नहीं है। इतना ही नहीं वल्कि जैन सिद्धान्तसे भी यह एक तरहसे मेल नहीं खाता। वीर निर्वाणके २१४ वर्ष वाद जैन शास्त्रोंके अनुसार भी न तो यहाँ कोई केवली था और न अवधि ज्ञानी आदि। तव यह वात किसने वतलाई कि आचार्य मरकर अमुक स्वर्गके अमुक विमानमे देव हुए हैं। इसलिये देवकी वातका कुछ मूल्य नहीं है। फिर भी इस घटनाका कुछ मूलरूप तो होना ही चाहिये। जिसका परिवर्तित रूप इस प्रकार वना और एक निह्नवकी सख्या वढी। सम्भव है उसका निम्नलिखित रूप हो—

कभी कभी ऐसा होता है कि कोई आदमी मरनेके पहले मृतवत् मूर्च्छित हो जाता है। उसकी नाड़ी और हृदयकी गति भी रुक जाती है। लोग समझते हैं कि वह मर गया किन्तु वह मूर्च्छित होता है। थोड़ी देर वाद वह होशमें आता है तो लोग समझते ह कि मरा हुआ आदमी जीवित हो गया। परन्तु यह होश थोड़ी देरके लिये आया करता है, अन्तमें वह विलकुल मर जाता है। ऐसी घटनाएँ अनेक बार हुआ करती हैं। एक बार इन्दौरमें मेरे सामने एक ऐसी ही घटना हुई थी। एक चूड़ीवाला चूड़ी पहिनाते पहिनाते मर गया (वेहोश हो गया)। उसके घरवाले उस मुर्देको ले गये, पुलिसकी जाँच भी हो गई, परन्तु पीछेसे वह जी गया (होशमें आ गया)। उसने सवसे वातचीत की और फिर मर गया। जिन लोगोंके यहाँ मुर्देको पेटीमें वन्द करके गाड़ देनेकी प्रथा है उनके यहाँ कभी कभी जीवित समाधि हो जाती है। वे पेटीमें जी उठते हैं, और निकलनेके

पानी बहुत ठंडा मालूम हो रहा था। तब इनके मनमें विचार आया कि शास्त्रमें तो एक साथ दो क्रियाओंके अनुभवका विरोध किया है और मैं तो एक ही साथ शीतलता और उष्णताका संवेदन कर रहा हूँ। इसलिये आगमका कथन अनुभव-विरुद्ध है।

गुरुने समझाया—मन बहुत तीव्र गतिवाला है, शीत और उष्णका उपयोग क्रमसे होनेपर भी तुम्हें एक साथ मालूम होता है। शीतका उपयोग एक समयमें एक ही तरफ लग सकता है। बहु बहुविध आदि पदार्थोंको ग्रहण करते समय अनेक पदार्थोंका ग्रहण तो होता है परन्तु उपयोग एक ही रहता है। इसी प्रकार शीत और उष्ण दोनोंका ग्रहण एक साथ तो हो सकेगा परन्तु उन दोनोंके दो उपयोग न हो सकेंगे। अनेकको ग्रहण करनेपर भी एक उपयोग होनेका कारण यह है कि उस समय वे अनेक पदार्थ सामान्य रूपसे एक बनकर विषय बनते हैं। जिस प्रकार सेनाके ज्ञानमें अगर एक ही उपयोग हो तो सेनाके ज्ञानमें ये घोड़े, ये हाथी ये पदाति, इस प्रकारका जुदा जुदा विशेषरूप ज्ञान नहीं होता। विशेषरूप ज्ञानके लिये अनेक उपयोगोंकी आवश्यकता है। परन्तु ये अनेक उपयोग एक साथ नहीं हो सकते। एक उपयोग एक समयमें अनेक पदार्थोंको जानेगा तो सामान्य रूपमें ही जानेगा विशेषरूपमें नहीं। इसीलिये एक ही समयमें जब शीतलता और उष्णताका ज्ञान होगा तब वह शीत और उष्ण इन विषयताओंको छोड़कर होगा। उस समय सामान्य वेदनाका अनुभव होगा, न कि शीतता और उष्णताका। सामान्य और विशेषका ग्रहण करनेवाला ज्ञान एक साथ कभी नहीं हो सकता। सामान्य ज्ञान पहिले होगा ४

गया है। इसलिये अब इसका पता लगाना मुश्किल है कि अमुक मुनि, देव है या मुनि है। जिन मुनियोंको हम देखते हैं सम्भव है वे मरचुके हों और देव होकर फिर अपने शरीरमें प्रवेश करके काम कर रहे हो। इस प्रकार आषाढभूतिके पुनरुज्जीवन और देवागमनके अन्धविश्वासने इस प्रकारके अव्यक्तवादको जन्म दिया। इस विचारके कारण सघने इनको अलग कर दिया। गनीमत हुई कि इन लोगोंकी बुद्धि ठिकाने आ गई इसलिये एक नया सम्प्रदाय खडा न हो पाया।

अश्वमित्र—वीर निर्वाणके २२० वर्ष वाद अश्वमित्रने, जो कि महागिरि सूरिके प्रशिष्य और कौण्डिन्यके शिष्य थे, यह वाद निकाला कि 'जीव तो प्रति-समय नष्ट होता है तव पुण्य-पापका फल कौन भोगेगा'। अन्य मुनियोंने उनके इस क्षणिकवादका खण्डन किया परन्तु जब ये न समझे तव इनका वहिष्कार कर दिया। ये कुछ साथियोंके साथ मिथिलासे निकलकर काम्पिल्यपुर अर्थात् राजगृह आगये। वहाँ कुछ श्रावकोंने इन्हें मारनेका विचार किया। इनने कहा "जैन श्रावक होकर तुम जैन मुनियोंको मारते हो"। श्रावकोंने कहा कि 'आपके सिद्धान्तके अनुसार तो जैनमुनि नष्ट हो गये'। तव इनकी समझमे अपनी भूल आई। और ये पहलेके समान मुनि हो गये।

गग—वीर निर्वाणके २२८ वर्ष बाद 'द्वैक्रियवाद'की उत्पत्ति हुई। महागिरिके प्रशिष्य और धनगुप्तके शिष्य गङ्ग थे। एक वार ये नदी पार कर रहे थे। सिर बिलकुल खुला हुआ था इसलिये सूर्यके तापसे सिरमें वहुत गर्मी मालूम हो रही थी। इधर पैरोंमें नदीका

इतनेपर भी गंग न माने। तब शास्त्रमें लिखा है कि मणिनागने आकर धमकाया कि अगर तू न मानेगा तो मैं मार डालूँगा। इसलिये गंगने अपनी भूल स्वीकार कर ली।

भूल स्वीकार करानेके इस ढंगकी प्रशंसा नहीं की जा सकती परन्तु इसमें संदेह नहीं कि गंगके पक्षमें विचार-गाम्भीर्य नहीं है। गंगके गुरुने जैनदर्शनके समर्थनके लिये जो युक्तियाँ दी हैं वे वास्तवमें अकाट्य हैं। परन्तु यहाँ एक आश्चर्य अवश्य होता है कि जब दो विशेषोंका ज्ञान एक साथ नहीं हो सकता, उसके लिये क्रमसे दो उपयोगोंकी आवश्यकता है। तब जैनलोग केवलज्ञानकी वर्तमान परिभाषा क्यों मानते हैं? जब दो विशेषताओंका भी युगपत् ज्ञान नहीं होता तब क्या यह सम्भव है कि सब द्रव्योंकी अनन्त-कालकी अनन्त विशेषताओंका कोई एक साथ प्रत्यक्ष कर ले? वास्तवमें केवलज्ञानकी वर्तमान मान्यता जैनदर्शनके ही विरुद्ध जाती है। इसमें अन्य अनेक बाधाएँ तो हैं ही जो ज्ञानके प्रकरणमें लिखी जाँयगी।

गंगकी शंकाका समाधान तो बहुत अच्छा हुआ परन्तु उसीके अनुसार केवलज्ञानकी परिभाषा सुधार लेनेकी आवश्यकता है।

रोहगुप्त—वीर निर्वाणके ५४४ वर्ष बाद रोहगुप्तने यह मतभेद प्रगट किया कि जीव और अजीवके अतिरिक्त नोजीवराशि और है। पूछ आदि नोजीव हैं। यह विचार युक्तिके आगे टिक नहीं सकता क्योंकि इससे आत्मा मूलद्रव्य न रहेगा। इस प्रकार तीनके बदले एक ही राशि रह जायगी।

गोष्ठामाहिल—वीर निर्वाणके ५८४ वर्ष बाद गोष्ठामाहिलने

और विशेष ज्ञान पछि होता है। सामान्यका ज्ञान एक ही वस्तुका ज्ञान है किन्तु सामान्य अनेकाधार होनेसे अनेकका ग्रहण होनेपर सामान्य ग्रहण होता है परन्तु विशेषका स्वरूप ऐसा नही है। वह अनेकाधार नहीं है इसलिये एक समयमें अनेक विशेषोंका ग्रहण नहीं हो सकता।

१—तरतमजोगेणाय गुरुणामिहिओ तुम न लक्खेसि।
समयाइसुहुमयाओ मणोऽतिचल सुहुमयाओ य ॥२४२८॥
बहुबहुविहाइगहणे णणु उवओगबहुया सुएऽभिहिआ।
तमणेगग्गहण चिय उवओगाणेगया नत्थि ॥२४३८॥
समयमणेगग्गहण जइ सीओसिणदुगम्मि को दोसो?
केण व भणिय दोसो उवओगदुगे वियारोऽय ॥२४३९॥
समयमणेग्गहणे एगाणेगोवओगभेओ को।
सामण्णमेगजोगो खधावारोवओगोव्व ॥२४४०॥
खधारोऽय सामण्णमेत्तमेगोवओगया समय।
पइवत्थुविभागो पुण जो सोऽणेगोवओगत्ति ॥२४४१॥
तेच्चिय न सति समयं सामण्णाणेगगहणमविरुद्ध।
एगमणेग पि तय तम्हा सामण्णभावेण ॥२४४२॥
उसिणेय सीयेय न विभागो नोवओगदुगमित्थ।
होज्जसम दुगगहण सामण्ण वेयणा मेत्ति ॥२४४३॥
ज सामण्णविसेसा विलक्खणा तन्निबधण ज च।
नाण ज च विभिन्ना सुदूरओवग्गहाऽवाया ॥२४४४॥
ज च विसेसन्नाण सामन्नन्नाणपुव्वयमवस्स।
तो सामण्णविसेसन्नाणाइ नेकसमयम्मि ॥२४४५॥
होज्ज न विलक्खणाइ समय सामण्णभेयनाणाइ।
नहुयाण को विरोहो समयम्मि विसेसनाणाण ॥२४४६॥
लक्खणभेयाउच्चिय सामण्ण च जमणेकविसय ति।
तमघेत्तु न विसेसन्नाणाइ तेण समयम्मि ॥२४४७॥
तो सामन्नगहणाणतरमीहियमवेइ तब्भेय।
इय सामन्नविसेसावेक्खो जावतिमो भेओ ॥२४४८॥
—विशेषावश्यक

जानेपर संयमका पालन नहीं हो सकता तथा मरनेके बाद कहीं भी जाओ प्रारम्भमें तो जीव असंयमी ही रहता है। ऐसी हालतमें इस लिए व्रत लेनेका कोई अर्थ नहीं है। इस स्थानपर भी गोष्ठामाहिलकी विचारधारा अव्यावहारिक तथा शब्दाडम्बर-मात्र है।

द्राविड़संघ—ऊपर जो मतभेद बतलाये गये हैं वे मतभेद श्वेताम्बर सम्प्रदायमें हुए हैं; यद्यपि मतभेदोंके विषय साम्प्रदायिक नहीं हैं। द्राविड़ आदि संघ दिगम्बर सम्प्रदायमें हुए हैं। दर्शनसारके अनुसार द्राविड़संघके संस्थापक वज्रनन्दि कहे जाते हैं और इनका समय वि० सं० ५२६ है। देवसेनने इस संघके मतका परिचय निम्नलिखित रूपमें दिया है —

'बीजमें जीव नहीं है, मुनियोंको खड़े होकर भोजन करनेकी आवश्यकता नहीं है, कोई वस्तु प्रासुक नहीं है, वह सावद्य नहीं मानता, गृह कल्पित नहीं मानता। कछार, खेत, वसतिका वाणिज्य कराके मुनियोंका जीवन-निर्वाह करना बुरा नहीं है और न ठंडे पानीसे स्नान करना बुरा है'।

ये सब मतभेद विचारणीय हैं। बीजमें जीव माननेकी बात जँचती नहीं है। इसका कोई विशेष कारण भी नहीं मालूम होता। सिर्फ एक साधारण कारण है कि बीजसे सजीव शरीर पैदा होता है इसलिये उसे भी सजीव मानना चाहिये। परन्तु यह कारण पर्याप्त नहीं है क्योंकि सचित्त योनिके समान जैनदर्शनमें अचित्त योनि भी मानी गई है। राजवार्तिककारने 'गर्भजा मिश्रयोनयः' इस वार्तिकके भाष्यमें यहाँतक लिखा है कि 'मातुरुदरे शुक्रशोणितमचित्तं' माताके उदरमें शुक्र और शोणित अचित्त हैं। अगर इस अचित्त

दो बातोंमें मतभेद प्रगट किया। पहिला तो यह कि आत्मा कर्मके साथ बँधता नहीं है किन्तु स्पर्श-मात्र करता है। सयोगमें दोनों चीजें जुदीं जुदीं रहती हैं जब कि बधमें एक हो जाती हैं। सयोग तो मूर्तिक-अमूर्तिकका हो सकता है परन्तु बधके लिये स्निग्धता आदिकी आवश्यकता होती है। इसलिये यह सदेह होना स्वाभाविक है कि अमूर्तिक जीवके साथ मूर्तिक कर्मपुद्गलोंका बध कैसे हो सकता है? यद्यपि बधकी बात समझमे नहीं आती परन्तु सयोग मान लेनेपर भी समस्या हल नहीं होती। क्योंकि सयोग मान लेनेपर कर्म आत्माका अनुसरण न करेगा। इसलिये परलोक आदिकी व्यवस्था ही बिगड़ जायगी। अथवा सयोगके सामने भी बंध सरीखा प्रश्न खड़ा हो जायगा। सच बात तो यह है कि आत्माके स्वरूपकी समस्याही बड़ी जटिल है इसलिये सयोगका और बधका जटिल प्रश्न सामने खडा है। हाँ, यह निश्चित है कि आत्मा और कर्मको जुदा जुदा द्रव्य मान लेनेपर जब उनका सम्बन्ध मानना है तब यह कार्य सयोगसे पूरा नहीं हो सकता। इस जगह बध मानना ही उचित है।

गोष्ठामाहिलकी दूसरी आपत्ति यह थी कि व्रत, नियम आदि जीवनभरके लिये नहीं लेना चाहिये किन्तु सदाके लिये लेना चाहिये। क्योंकि जीवनभरके लिये व्रत लेनेका अर्थ यह है कि जीवनके बाद हम उनका पालन नहीं करना चाहते। मरनेके बाद विषयभोग भोगनेकी हमें लालसा है।

परन्तु जैनियोंका कहना यह है कि मरनेके बाद व्रतका पालन करना न करना हमारे वशकी बात नहीं है। देवगति आदिमें चले

सचित्ताचित्तकी चर्चामें भी महत्त्व नहीं है। हाँ, मुनियोंकी आर्यिकाकी बात अवश्य चिंतनीय है। यह बात अनुचित भले ही हो परन्तु उस समयके द्रव्यक्षेत्रकालभावको जाने बिना हम उसकी अनुचितताका माप नहीं कर सकते। आजकल भी मुनियोंको चर्खा कातना चाहिए तथा ऐसा ही निरवद्य व्यापार करना चाहिये इस तरहकी आवाज उठ रही है और यह अनुचित नहीं है। चरणानुयोगके नियम सदाके लिये एकसे नहीं बन सकते।

यापनीय (गोप्य) संघ—यह संघ दिगम्बरोंके आचारका और श्वेताम्बरोंके सिद्धान्तका माननेवाला था। इस संघके मुनि दिगम्बर मुनियोंके समान ही रहते थे किन्तु स्त्री-मुक्ति और केवलीका कवलाहार मानते थे। यह एक मध्यस्थ संघ मालूम होता है जो दिगम्बर-श्वेताम्बरोंकी अच्छी अच्छी बातें स्वीकार करता था।

काष्ठा और माथुर संघ—ये भी दिगम्बर संघ हैं। दिगम्बरोंके मूलसंघसे इनमें भेद यह है कि मूलसंघमें मुनिके लिये मयूरपिच्छका विधान है जब कि यह संघ बालोंकी पिच्छी रखता है। माथुर-संघ काष्ठासंघकी शाखा है। इस संघमें किसी भी तरहकी पिच्छी रखनेका विधान नहीं है। यह समयका दुर्भाग्य है कि जो धर्म अनेकान्त सरीखे समन्वयवादकी भित्तिपर खड़ा था वह इन छोटी छोटी बातोंका भी समन्वय न कर सका। काष्ठासंघको गोपुच्छक और माथुर संघको निःपिच्छक संघ भी कहते हैं। काष्ठासंघकी उत्पत्तिका समय दर्शन-सारके अनुसार वि० सं० ७५३ है और माथुर संघका ९५३।

मूर्त्तिपूजक-अमूर्त्तिपूजक—जैनधर्ममें मूर्त्तिपूजा कबसे चली इसका इतिहास कुछ है। फिर भी यह अर्वाचीन भी नहीं है।

रज-वीर्यसे मनुष्य सरीखा प्राणी पैदा हो सकता है तो अचित्त बीजसे वृक्षादि क्यों नहीं पैदा हो सकते ? ऐसा नियम बनाना असम्भव है कि अचित्त वस्तु कभी सचित्त नहीं बन सकती। इस तरह बीज सचित्त सिद्ध नहीं होता। हाँ, मुनियोंको बीजभक्षण नहीं करना चाहिये इस नियमका कारण मालूम होता है। जैन मुनियोंके उदर-निर्वाहके नियम इतने अच्छे हैं कि उससे समाजको कुछ क्षति नहीं उठाना पड़ती या कमसे कम क्षति उठाना पड़ती है। बीज अन्य अनेक फलोंको पैदा करनेवाला है। एक बीजके भक्षणसे अन्य अनेक फलोंकी उत्पत्ति रुकती है, इस तरह बीज-भक्षणमें एक तरहका 'अल्पफल बहुविघात' है अर्थात् पेट तो भरता है थोड़ा और वस्तुका विघात होता है बहुत। मुनियोंको चाहिये कि वे समाजकी इस तरह हानि न करें। इस उद्देशसे बीजभक्षणका निषेध किया गया होगा। *

खड़े आहार लेनेकी बात कुछ महत्वपूर्ण नहीं है। हाँ दिगम्बर मुनियोंको इस प्रथाकी आवश्यकता थी। दिगम्बर मुनि पात्रमें भोजन नहीं लेते इसलिये यदि बैठ करके हाथमें भोजन लिया जाय तो उच्छिष्ट अन्न पैरों या जघाओंपर गिरेगा इस लिये अङ्गप्रक्षालन करना पड़ेगा। इस अगप्रक्षालनमें लोग स्नानका आनद न लेने लगें इस-लिये खड़े आहार लेनेका विधान बनाया गया। परन्तु यह कोई इतना महत्त्वपूर्ण कारण नहीं है कि द्राविड़संघकी निंदा की जाय।

* बीएसु णत्थि जीवो उब्भसण णत्थि फासुग णत्थि। सावज्ज ण हु मण्णइ ण गणइ गिहकप्पिय अट्ठ॥ कच्छ खेत्त वसहिं वाणिज्ज कारिऊण जीवतो। ण्हतो सीयलनीरे पाव पउर स सजेदि॥ २७॥

प्रय-पूजाका प्रचार हुआ। यतियोंके दोनों (श्वेताम्बर-दिगम्बर) सम्प्रदायोंमें मूर्तिविरोधी उपसम्प्रदाय खड़ा हुआ। श्वेताम्बरोंमें स्थानकवासी सम्प्रदाय हुआ और दिगम्बरोंमें तारनपथ। स्थानकवासी सम्प्रदायने अच्छी उन्नति की। आज यह सम्प्रदाय जनसंख्या तथा धनबल आदिमें मूर्तिपूजक श्वेताम्बरोंके बराबर है। दिगम्बर सम्प्रदायका तारन पन्थ इतनी उन्नति न कर पाया। इस सम्प्रदायने मूर्तिको हटाकर मूर्तिके स्थानपर शास्त्र बिठलाया। एक तरहकी मूर्तिपूजा हट गई और दूसरी तरहकी मूर्तिपूजा चल पड़ी या रह गई।

तेरहपन्थ-बीसपन्थ—दिगम्बरोंमें और भी एक तरहसे सम्प्रदाय भेद हुआ। धर्म-प्रभावना और धर्मरक्षाके लिये जिन जिन कार्योंकी आवश्यकता थी वे सब कार्य वनवासी दिगम्बर साधु नहीं कर सकते थे। इसकी पूर्तिके लिये शाही ठाठबाटवाले भट्टारक गुरुओंकी उत्पत्ति हुई। जो दिगम्बर सम्प्रदाय एक लँगोटी रखनेसे भी गुरुत्वका नाश समझता था उसी दिगम्बर सम्प्रदायने राजसी ठाटसे रहनेवाले भट्टारकोंको भी गुरु माना। बीसपन्थ सम्प्रदायने भट्टारकोंको गुरु माना। तेरहपन्थ सम्प्रदायने नहीं माना—यही इन दोनोंका भेद है।

स्थानकवासी सम्प्रदायमें भीखमजीने जिस तेरहपन्थकी स्थापना की थी उसमें और दिगम्बरोंके तेरहपन्थमें कोई सम्बन्ध नहीं है। भट्टारकोंके समान मूर्तिपूजक श्वेताम्बर सम्प्रदायमें भी यतियोंकी सृष्टि हुई। इस प्रकार बहुतसे गण गच्छ आदि जैन धर्ममें पैदा हुए।

उपर्युक्त सभी सम्प्रदाय अपनेको महावीरका पूर्ण अनुयायी मानते हैं, परन्तु एक निष्पक्ष पाठक तो इनमेंसे किसीको भी महा-

तीर्थंकरकी मृत्युके बाद ही वह चल पड़ी है। मूर्ति और मूर्तिगृहका जो चैत्य और चैत्यालय नाम है वह इस बातका सूचक है कि मूर्ति चितापरका स्मारक है।

मूर्तिपूजाका विधान म० महावीरने नहीं किया हो इसलिये मूर्तिपूजा अनुचित नहीं कही जा सकती। कोई महात्मा अपने स्वागतकी बात नहीं कहता तो उसका स्वागत करना पाप नहीं कहा जा सकता। सच पूछो तो यह सम्प्रदायका प्रश्न ही नहीं है, किन्तु योग्यताका प्रश्न है। जिनका आत्मा विकसित है उन्हें मूर्ति-पूजाकी जरूरत नहीं है, और जिनका आत्मा विकसित नहीं है, उन्हे मूर्तिपूजा सहारा दे सकती है।

अपने अपने पक्षको खींचनेके लिये दोनों सम्प्रदाय मिथ्या-युक्तिका सहारा लेते हैं। मूर्तिपूजक लोग उसे जैनधर्मके प्रारम्भसे सिद्ध करनेकी चेष्टा करते हैं और मूर्तिविरोधी लोग 'मूर्तिपूजा अरहतकी कही हुई नहीं है' इसलिये अनुचित बताते हैं। मूर्तिपूजकोंको समझना चाहिये कि साधारण लोगोंको मूर्ति आवश्यक होनेसे वह उपादेय अवश्य है किन्तु इसीलिये वह जिनोक्त नहीं कही जा सकती और मूर्तिविरोधियोंको समझना चाहिये कि मूर्तिपूजा जिनोक्त नहीं है इसीलिये वह अनुचित नहीं कही जा सकती। इन दोनों विचारोंपर कक्षाएँ बनाना चाहिये न कि सम्प्रदाय।

मूर्तिपूजाका विरोध मुसलमानोंके आक्रमणोंका फल है। उस समय मूर्तिको हटा देनेसे धर्मायतन सुरक्षित रह सकता था और देवका अपमान नहीं होता था तथा अप्रभावनासे भी पिण्ड छूटता था। सिक्ख सम्प्रदायमें इसीलिये मूर्तिपूजाको स्थान न मिला। वहाँ

यापनीय सम्प्रदाय वर्तमानके दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्प्रदायोंसे जुदा नहीं कहा जा सकता।

हर-एक सत्यान्वेषी मनुष्यको 'जो मेरा वह सत्य' इस वासनाका त्याग करके 'जो सत्य वह मेरा' यह भावना पैदा करना चाहिये। सत्य अगर गुप्त है तो उसे खोजना चाहिये। उसके बदलेमें मुख्य असत्यकी पूजा न करना चाहिये। बहुतसे भाई मुख्य असत्यमें ही सन्तुष्ट हैं इसलिये वे सत्यकी खोजके लिये प्रयत्न नहीं करना चाहते। इतना ही नहीं किन्तु अगर कोई ऐसा प्रयत्न करे तो उसे बुरा समझते हैं। इस ऐतिहासिक विवेचनसे उन्हें मालूम होगा कि सत्यकी खोजके लिये बहुत गुंजायश है, उसकी बहुत आवश्यकता है और पिछले दूर्ध हजार वर्षमें इसके लिये अनेकबार असफल और अपूर्ण प्रयत्न भी हुआ है। उसे पूर्ण और सफल बनाना अपना कर्तव्य है।

वीरका पूर्ण अनुयायी न मानेगा। हाँ, इन सबके वक्तव्यमें सत्यका चुनाव करेगा।

इस अध्यायमें ऐतिहासिक दृष्टिसे संक्षिप्त विवेचन किया गया है क्योंकि यह अध्याय जैन इतिहासका परिचय करानेके लिये नहीं लिखा गया है किन्तु ऐतिहासिक निरीक्षणसे जैनधर्मको समझनेके लिये लिखा गया है।

जो लोग यह समझते हैं कि म० महावीरके समयमें जो जैनधर्म था वह अभी भी है, उसमें परिवर्तन नहीं हुआ है, न उसमें सुधारकी जरूरत है, उन्हें इस ऐतिहासिक विवेचनसे माळूम हो जायगा कि प्राचीनकालसे ही यहाँ सुधारकी आवाज उठती आ रही है और जैनधर्मको इतनी ठोकरें खानी पडी हैं कि वह विकृत हुए विना नहीं रह सकता था। इसलिये साम्प्रदायिक व्यामोहको तिलाञ्जलि दिये विना हम जैनधर्मके वास्तविक रूपको नहीं समझ सकते।

लोग अपने ही सम्प्रदायको मूल सम्प्रदाय मान बैठते हैं उन्हें इस गलतीका त्याग करना चाहिये। यह भी न सोचना चाहिये कि जो सम्प्रदाय नष्ट हो गये हैं वे मिथ्या थे और हम सच्चे हैं। कभी कभी ऐसा होता है कि अधिक सत्य सम्प्रदाय नष्ट हो जाता है और अल्पसत्य सम्प्रदाय जीवित रह जाता है। उदाहरणार्थ यापनीय सम्प्रदायका नाम लिया जा सकता है। वर्तमानके दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्प्रदायोंकी अपेक्षा यापनीय सम्प्रदायमें सत्यांश कुछ अधिक था। दिगम्बर सम्प्रदायने महावीरके चारित्रपर जोर दिया, श्वेताम्बरोंने महावीरके शास्त्र (ज्ञान) पर जोर दिया जब कि यापनीयने दोनोंपर जोर दिया। फिर भी यापनीय सम्प्रदाय नष्ट हो गया। परन्तु इसालिये

सम्यग्दर्शनका स्वरूप

प्रश्न—सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानमें क्या अन्तर है ?

उत्तर—ज्ञानसे दर्शनको अलग बतलाना अशक्य है। इसलिये जैन लेखकोंने सम्यक्त्वको केवलज्ञानगोचर[1] और निर्विकल्प[2] कह दिया है। सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानकी उत्पत्ति भी एक साथ मानी जाती है। इन दोनों कारणोंसे किसी किसीने सम्यग्दर्शनको सम्यग्ज्ञानमें शामिल करके 'ज्ञान और क्रियासे मोक्ष होता है'[3] इतना ही कहा है। इसलिये सम्यग्दर्शनको किसी एक शब्दसे कह देना अशक्य है। हाँ अनेक तरहसे उसके चिह्नोंका या कार्योंका वर्णन करके उसकी तरफ इशारा किया जा सकता है।

जैनधर्मका कहना है कि किसी प्राणीका ज्ञान कितना ही विशाल और सत्य क्यों न हो परन्तु अगर उसको सम्यग्दर्शन प्राप्त न हो तो उसके ज्ञानको सम्यग्ज्ञान नहीं कह सकते और अगर उसे सम्यग्दर्शन प्राप्त हो जाय तो उसका ज्ञान असत्य और अल्प भी हो तो भी वह सम्यग्ज्ञान कहलायगा। इससे हम सम्यग्दर्शनके स्वरूपका निर्णय कर सकते हैं कि सम्यग्दर्शन एक ऐसी दृष्टि है जो थोड़ेसे, और बाह्य दृष्टिसे असत्यरूप, ज्ञानका भी उपयोग वास्तविक सुखके या कल्याणपथके निर्णय करनेमें कराती है और ज्ञानको सार्थक कर देती है।

---

१ सम्यक्त्वं वस्तुतः सूक्ष्मं केवलज्ञानगोचरं। —पञ्चाध्यायी।
२ अस्त्यात्मनो गुणः कश्चित्सम्यक्त्वं निर्विकल्पकम्। —पञ्चाध्यायी।
३ णाणकिरियाहिं मोक्खो —विशेषावश्यक।

तीसरा अध्याय

कल्याणपथ अर्थात् मोक्षमार्ग

प्रथम अध्यायमें आत्मकल्याण या सुखके विषयमें कहा जा चुका है। यहाँ यह बतलाना है कि उस सुखमार्ग—मोक्षमार्ग—कल्याणपथके कितने अवयव हैं। स्मरण रखना चाहिये कि यहाँ मार्गके भेद नहीं किन्तु मार्गके अंग या अवयवोंका कथन करना है। किसी भी कार्यमें सफलता प्राप्त करनेके लिये तीन बातोंकी आवश्यकता होती है। श्रद्धा, ज्ञान और क्रिया। इसीको जैन शास्त्रोंमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र कहा है। इन तीनोंका सामान्य विवेचन करके प्रथम अंग-सम्यग्दर्शनका विशेष विवेचन किया जायगा।

श्रद्धाका अर्थ विवेकपूर्वक दृढ़ विश्वास है। जानना ज्ञान है और तदनुसार आचरण करना चारित्र है। प्रत्येक विपत्तिसे छूटनेके लिये इन तीनोंकी आवश्यकता है। जिस प्रकार कोई बीमार आदमी बीमारीसे छूटना चाहता है तो उसे इस बातका दृढ़ विश्वास अवश्य होना चाहिये कि मुझे बीमारी है और बीमारीसे छूटा जा सकता है। इसके बाद निदान और चिकित्साका ज्ञान होना चाहिये। इसके बाद आचरण होना चाहिये। तब बीमारी दूर होगी। इन तीनोंमेंसे एककी भी कमी होगी तो वह नीरोग न हो पायगा। सुखके लिये भी इन तीनों बातोंकी आवश्यकता होती है।

आदमी बहुत होशियार है उसने बड़े बड़े लोगोंको धोखा दिया है और इस तरह वह लाखों रुपये पैदा करके चैनसे जीवन बिता रहा है।' यह ज्ञान सत्य होकरके भी असत्यज्ञान है क्योंकि इसका निष्कर्ष असत्य है।

असत्यासत्य—जो वस्तुस्थितिकी दृष्टिसे असत्य हो और निष्कर्षकी दृष्टिसे भी असत्य हो उसे असत्यासत्य कहते हैं। जैसे—'अगर तुम अमुक देवीको पशुबलि न चढ़ाओगे तो वह तुम्हारे वंशका नाश कर देगी।' इसमें देवीका अस्तित्व और उसके द्वारा वंश-नाश ये दोनों बातें वस्तुस्थितिकी दृष्टिसे असत्य हैं और इसके द्वारा पशुबलिको जो उत्तेजना दी गई है वह निष्कर्षकी दृष्टिसे असत्य है। इस तरह यह दोनों तरहसे असत्य है।

इन चार भेदोंमेंसे प्रथम भेद लौकिक और धार्मिक दोनों दृष्टियोंसे सत्य है और चतुर्थ भेद असत्य है। परन्तु दूसरे-तीसरे भेदोंमें लौकिक और धार्मिक दृष्टिसे अन्तर है। धार्मिक दृष्टिसे दूसरा भेद सत्य है और तीसरा असत्य है जब कि लौकिक दृष्टिसे दूसरा असत्य है और तीसरा सत्य है। जिस दृष्टिके सद्भावसे लौकिक मिथ्याज्ञान भी सम्यग्ज्ञान हो जाता है और जिसके अभावसे लौकिक सम्यग्ज्ञान भी मिथ्याज्ञान हो जाता है वही दृष्टि सम्यग्दर्शन है। ज्ञानका काम वस्तुका ठीक ठीक जान लेना है किन्तु ज्ञानके द्वारा जानी हुई वस्तुमें जिस दृष्टिसे कर्तव्याकर्तव्य या हेयोपादेयका विवेक होता है उसे सम्यग्दर्शन कहते हैं। इस तरह ज्ञान पहिले होता है, विवेक पीछे होता है। इससे इन दोनोंका (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञानका) अन्तर मालूम हो सकता है।

प्रश्न—ज्ञान सच्चा हो करके भी मिथ्याज्ञान कहलाता है और मिथ्या होकरके भी सम्यग्ज्ञान कहलाता है, इसका क्या मतलब है ?

उत्तर—सत्य-असत्य की दृष्टिसे हम ज्ञानको चार भागोंमें विभक्त कर सकते हैं (१) सत्यसत्य×, (२) असत्यसत्य, (३) सत्यासत्य, (४) असत्यासत्य।

सत्यसत्य—उस ज्ञानको कहते हैं जो वस्तुस्थितिकी दृष्टिसे भी सत्य है और उससे जो निष्कर्ष निकाला जाता है वह भी सत्य है। जैसे अमुक दूकानदार सत्यवादी है इसलिये उसकी दूकान खूब चलती है। यहाँ सत्यज्ञानसे जो निष्कर्ष निकाला गया है वह सत्य अर्थात् कल्याणकारी है इसलिये यह ज्ञान सत्यसत्य कहलाया।

असत्यसत्य—वस्तुस्थितिकी दृष्टिसे जो ज्ञान असत्य है किन्तु निष्कर्षकी दृष्टिसे सत्य है उसे असत्यसत्य कहते हैं। जैसे—'अगर तुम किसीके भी विना जाने एकान्तमें पाप करना चाहते हो तो यह असम्भव है क्योकि ईश्वर सब जगह देखता है, वह तुम्हारे पापका समुचित दंड देगा।' इस जगह वस्तुस्थिति असत्य है क्योंकि ऐसा कोई सर्वदर्शी ईश्वर ही नहीं हैं जो पाप-पुण्यका फल देता हो। किन्तु उसका निष्कर्ष सत्य अर्थात् कल्याण-कारी है इसलिये असत्य होकरके भी यह सत्य कहलाया।

सत्यासत्य—वस्तुस्थितिकी दृष्टिसे जो ज्ञान सत्य हैं किन्तु निष्कर्षकी दृष्टिसे असत्य है उसे सत्यासत्य कहते हैं। जैसे—'अमुक

× वचनयोगके प्रकरणमें जो सत्यादि शब्दोंकी परिभाषा की जाती है वह यहाँ ग्रहण नहीं की गई है। ये परिभाषाएँ एक तरहसे नयी हैं।

पहिली प्रकारकी बातोंका निश्चय कुछ अधिक है। क्योंकि अगर उससे कोई कहे कि सीताजी अग्निकुंडमें कूद पड़ी फिर भी न जलीं तो वह ऐसे अवसरपर अग्निकी दाहकताके विश्वासको शिथिल कर देगा और सीताजीके न जलनेकी बातको मान लेगा; परन्तु अगर कोई कहे कि वह आदमी इतना चालाक है कि उसके पापको ईश्वर भी नहीं जान पाता तो इस बातमें वह ईश्वरका अपमान समझेगा और भक्तिके आवेगमें लड़नेको भी तैयार हो जायगा। अगर उसे कोई प्रबल प्रमाणोंसे सिद्ध कर दे कि ऐसा ईश्वर हो नहीं सकता तो भी वह उन प्रमाणोंपर विश्वास न करेगा और ईश्वरपर दृढ़ विश्वास रक्खेगा। इससे मालूम होता है कि अग्निकी उष्णताकी अपेक्षा उसे ईश्वरपर अधिक विश्वास है। परन्तु क्या उसका यह विश्वास सच्चा है! वह इस डरसे कि मैं मर न जाऊँ विष नहीं खाता, इस डरसे कि मैं जल न जाऊँ अग्निका स्पर्श नहीं करता। इस तरह इन बातोंका तो वह पूरा ख्याल रखता है परन्तु 'मुझे हिंसा न करना चाहिये—ईश्वर देखता है—झूठ न बोलना चाहिये, चोरी न करना चाहिये, व्यभिचार न करना चाहिये, क्योंकि ईश्वर देखता है वह दंड देगा, इस बातका वह शतांश भी ध्यान नहीं रखता! यदि उसे ईश्वरका पक्का विश्वास होता तो जितना वह अग्नि और विषसे बचता है उससे भी अधिक पापसे बचता। इससे मालूम होता है कि ज्ञान हो जाना एक बात है और श्रद्धा हो जाना दूसरी बात। श्रद्धाके बिना ज्ञानका कुछ मूल्य नहीं है। इसलिये हम श्रद्धाको सम्यग्दर्शन कह सकते हैं।

प्रश्न—श्रद्धा तो एक तरहका अन्ध-विश्वास है जिसमें संकुचि

प्रश्न—यदि ज्ञान पहिले होता है और हेयोपादेय-विवेक पीछे होता है तो यह क्यो कहा जाता है कि सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान एक साथ ही पैदा होते हैं ।

उत्तर—ज्ञान तो पहिले ही होता है परन्तु सम्यग्ज्ञान पहिले नहा होता । हेयोपादेयका विवेक हो जानेपर ही ज्ञान सम्यग्ज्ञान कहलाता है । जिस समय सम्यग्दर्शन या हेयोपादेयका विवेक हुआ उसी समय ज्ञान, सम्यग्ज्ञान हुआ इसलिये सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान साथ ही कहलाये ।

श्रद्धा शब्दसे भी सम्यग्दर्शनका परिचय दिया जाता है । जो जो वुराइयाँ दु खकी कारण हैं और उन वुराइयोंका कारण जो द्रव्य है उससे अपनेको अलग अनुभव करना, अपने शुद्ध रूपकी उपादेयता और पररूप या अपने अशुद्ध रूपकी हेयतापर पक्का विश्वास करना सम्यग्दर्शन कहा जाता है ।

वहुतसे लोग ऐसे हैं जिन्हें पदार्थज्ञान तो वहुत होता है परन्तु भीतरसे उसपर पक्की श्रद्धा नहीं होती—वनावटी होती है । फल यह होता है कि उस सत्यज्ञानका भी उस आत्मापर असर नहीं होता या होता है तो वुरा असर होता है ।

जैसे किसीको जन्मसे यही सिखाया गया है कि प्रत्येक प्राणीके अच्छे-वुरे कामोंको परमात्मा देखता है और किये हुए पापका फल जरूर भोगना पडता है । इस वातका उसे पक्का ज्ञान होता है । दूसरी तरफ उसे यह भी सिखाया जाता है कि विष खानेसे आदमी मर जाता है, अग्निसे शरीर जलता है । इन दोनों प्रकारकी वातोंका उसे पूर्ण विश्वास है । वल्कि दूसरी प्रकारकी वातोंकी अपेक्षा उसे

उत्तर—श्रद्धाके लिये विवेककी आवश्यकता तो इसलिये है कि विवेकके बिना श्रद्धा पैदा हो नहीं सकती। अथवा विवेकके बिना जो कुछ पैदा होता है उसे श्रद्धा नहीं कहते। इस तरह श्रद्धा विवेककी पुत्री ठहरती है। पुत्री होनेके लिये पिता अनिवार्य है। अथवा हम विवेक और श्रद्धाको एक ही वस्तुके दो अवयव कह सकते हैं। पूर्वार्ध विवेक है और उत्तरार्ध श्रद्धा। अथवा मार्गको विवेक कह सकते हैं और प्राप्य स्थलको श्रद्धा कह सकते हैं। सच पूछा जाय तो श्रद्धाके लिये ही विवेककी आवश्यकता है। जिस प्रकार दूकानमें सम्पत्तिका उपार्जन किया जाता है किन्तु उसका रक्षण तथा भोग घरमें किया जाता है उसी प्रकार विवेकके द्वारा हम वस्तुका निर्णय करते हैं परन्तु उस निर्णयके अनुसार बननेके लिये श्रद्धाकी आवश्यकता है। अगर हम श्रद्धाको छोड़कर विवेकसे ही काम लेते रहें तो हमारी अवस्था उस व्यापारीके सरीखी हो जायगी जो घरके बाहर रहकर नयी नयी सम्पत्ति तो पैदा करता है किन्तु कमाई हुई सम्पत्तिका भोग और रक्षण बिलकुल नहीं करता। आविष्कार करनेवाले वैज्ञानिक लोग भी बड़े श्रद्धालु होते हैं। जिस वस्तुको वे अपने विवेकसे निश्चित कर लेते हैं उसीको आधार बनाकर वे बड़े बड़े नये आविष्कार करते हैं। अगर उन्हें अपने निर्णीत सिद्धान्तोंपर श्रद्धा न हो तो वे आगे न बढ़ सकें। किसी सद्विचारकी स्थिरता या दृढ़ताका नाम श्रद्धा है। सद्विचारका किसी विज्ञान या विवेकसे विरोध नहीं हो सकता।

प्रश्न—जो लोग जैनधर्मके ऊपर विश्वास रखते हैं और उसके

तता है, विज्ञान और विवेकसे शत्रुता है। इसलिये श्रद्धाका सम्यग्दर्शनसे कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता। यदि हो, तो सम्यग्दर्शन धर्मका अंग नहीं हो सकता। यदि ऐसे सम्यग्दर्शनको धर्मका अङ्ग माना जायगा तो धर्म एक तरहकी शराब हो जायगा। धर्ममें श्रद्धाको स्थान देनेसे धर्मके नामपर संसारमें घोर हिंसा हुई है, मनुष्य दलबन्दियोंमें फँसकर परस्पर शत्रु बन गया है तथा विज्ञान या नयी खोजोंका विरोधी बन गया है।

उत्तर—धर्मके नामपर जो अनर्थ हुए हैं वे धर्म, सम्यग्दर्शन या श्रद्धाने नहीं किये हैं, परन्तु वे सब अन्धविश्वासके फल हैं। अन्धविश्वास और श्रद्धामें जमीन-आसमानका अन्तर है। जिस प्रकार हीरा और कोयला एक ही तत्त्वके बने होनेपर भी दोनोंमें बड़ा अन्तर है, दूध और खूनमें एक ही तत्त्व होनेपर भी दोनोंमें बडा अन्तर है, उसी प्रकार एक-सी मनोवृत्तिपर अवलम्बित श्रद्धा और अन्धविश्वासमें भी अन्तर है। श्रद्धा और अन्धविश्वासमें इतनी ही समानता है कि दोनोंमें स्थिरता है परन्तु एककी स्थिरता दिव्य है जब कि दूसरेकी नारकीय है। श्रद्धामें विवेक है, अन्धविश्वासमें विवेकशून्यता है।

प्रश्न—श्रद्धाको अन्धविश्वास कहो चाहे न कहो परन्तु वह विश्वास तो है ही, और विश्वास तो अन्धा ही होता है। विवेकमें परीक्षा है, विश्वासमें परीक्षा कहाँ है? परीक्षा करनेसे तो विश्वास या श्रद्धाका नाश हो जाता है। श्रद्धा और विवेकका एक जगह रहना ही मुश्किल है. फिर श्रद्धाके लिये विवेककी अनिवार्य आवश्यकता तो दूर है।

स्पष्टता नहीं रह जाती है। तब तो एक नास्तिक भी सम्यग्दृष्टि हो सकेगा।

उत्तर—नास्तिकता, आस्तिकता आदि पांडित्यरूपी रंगमंचके परे हैं। सम्यग्दर्शनका ऐसी नास्तिकता-आस्तिकतासे कुछ सम्बन्ध नहीं है। कोई कितना ही नास्तिक क्यों न हो, फिर भी उसकी यह भावना तो रहती है कि मैं सुखी बनूं। इस वाक्यमें जो 'मैं' है वही आत्मा है। इस आत्माको नास्तिक भी मानता है और आस्तिक भी मानता है। सच बात तो यह है कि जो सुखी रहनेकी कलामें या सुखमार्गमें विश्वास नहीं करता वही नास्तिक है, वही मिथ्यादृष्टि है।

शास्त्रोंमें जो आत्मा और शरीरको पृथक् अनुभव करनेकी बात लिखी है उसका अर्थ है स्व-पर-भेद-विज्ञान। जब तक हम स्व-पर-भेद-विज्ञानको प्राप्त नहीं कर लेते तबतक हम पूर्ण सुखमार्गको प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि सुखी होनेके जो दो उपाय प्रथम अध्यायमें बताये गये हैं उनमें सुखी रहनेकी कला सीखना मुख्य है। इस कलामें निपुणता तभी प्राप्त हो सकती है जब हम अपनेको शरीरसे और अन्य बाह्य परिस्थितियोंसे अलग अनुभव करें।

सुखी रहनेकी कला एक मानसिक कला है। वह भावनाके ऊपर अवलंबित है। नाटकका पात्र रंगमंचके ऊपर राजा बनकर आता है युद्ध करता है, पराजित होता है, उसका राज्य छिन जाता है वह दुःखी होता है आदि। इन सब क्रियाओंको करते समय क्या वह भीतरसे दुःखी होता है? क्या उसका दुःख उस राजाके समान है जिसका राज्य छिन गया है? परन्तु क्या नाटकका पात्र दुःखप्रदर्शनमें उस राजासे कुछ कम है? नहीं, बल्कि

विरुद्ध एक अक्षर भी सुनना नहीं चाहते, उन्हें आप श्रद्धालु कहेंगे या अन्धविश्वासी ?

उत्तर—जो लोग जैनधर्मके ऊपर इसलिये विश्वास रखते हैं कि वे उसे कुलपरम्परासे अपनी चीज समझते हैं वे अन्धविश्वासी हैं क्योंकि इसके भीतर अभिमान है, विवेक नहीं। जो अपने विश्वासके विरुद्ध एक अक्षर भी सुनना नहीं चाहते वे और भी अधिक अन्धविश्वासी हैं, क्योंकि जिस बातपर वे विश्वास करते हैं उसे वे कमजोर समझते हैं। इसीलिये वे विरुद्ध बात सुन नहीं सकते—फिर भी उसपर विश्वास करते हैं। इन दोनों विचारोंके लोग जैनधर्मसे इतना ही लाभ उठा सकते हैं कि उनके बाहिरी आचरणमें कुछ सुधार हो जाय परन्तु वे सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकते। सम्यग्दर्शनके विना कभी कभी बाह्याचरणकी शुद्धि भी अभिमान और द्वेषको पैदा करके बहुत अधःपतन करती है। इसलिये सम्यग्दर्शनकी अत्यन्त आवश्यकता बतलाई गई है। अन्धविश्वासी लोग दुनियाँके लिये भयङ्कर जीव हैं, जब कि श्रद्धालु जगत्का मित्र है।

प्रश्न—श्रद्धाका स्वरूप और उसकी आवश्यकता समझमें आ गई; परन्तु किस बातकी श्रद्धा की जाय ?

उत्तर—हमारा लक्ष्य सुख है इसलिये सुखके मार्गपर श्रद्धा करना चाहिये। प्रथम अध्यायमें सुखका मार्ग बताया गया है, उसपर विश्वास करना चाहिये।

प्रश्न—शास्त्रोंमें लिखा है कि आत्माको शरीरसे पृथक् अनुभव करना या शुद्धात्माका अनुभव करना सम्यग्दर्शन है। यदि सुखके मार्गका श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है तो आत्मानुभवकी कोई आव-

स्वदेश और स्वजातिकी भावना इस जीवनसे सम्बन्ध रखती है। परन्तु यह जीवन आत्माके महान् जीवनका एक छोटा-सा अंश है। आत्माके महान् जीवनमें तो सारा जगत् कुटुम्ब है, स्वजाति है, स्वदेश है। इस तरह स्वदेश-स्वजाति-कुटुम्बकी भावना उसकी बहुत विशाल है। मान लो कि मेरे सौ मित्र हैं। मैं उनसे एकसा प्रेम करता हूँ। अब उनमेंसे एक मित्र मेरे घर आया। मैंने उसका विशेष शिष्टाचार किया। इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं बाकी निन्यानवे मित्रोंसे प्रेम नहीं करता अथवा गहमागत मित्रसे सबकी प्रेम कर रहा हूँ। बात यह है कि मैं प्रेम तो सभी मित्रोंसे समान करता हूँ परन्तु जो मित्र निकट सम्बन्धमें आ जाते हैं उनसे विशेष व्यवहार करना पड़ता है। इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि जीव जगत्के सभी जीवोंसे मैत्री भाव रखता है किन्तु जो जीव निकट-सम्बन्धमें आ जाता है उसके साथ विशिष्ट शिष्टाचार करता है। व्यवहारमें जिन्हें कुटुम्बी, सम्बन्धी आदि कहते हैं वे निकट-सम्बन्धमें आये हुए मित्र हैं। यदि उनके स्थानपर कोई दूसरे जीव हों तो वह उनसे भी स्नेह करेगा। इस तरह उसका स्नेह न तो बनावटी है, न मोहरूप है। धोखा देना तो उसे कहते हैं कि बाहरसे प्रेम हो भीतरसे द्वेष हो; अवसरके ऊपर जिसमें कर्तव्यच्युति हो। मैं किसी व्यक्तिसे प्रेमका व्यवहार करूँ और उसके ऊपर विपत्ति आवे तो उसका साथ छोड़ दूँ तो उसे धोखा कहेंगे। सम्यग्दृष्टि ऐसा नहीं करता। वह अवसर आनेपर भी अपने कर्तव्यका पालन करता है। मतलब यह है कि सम्यग्दृष्टि व्यवहारको छोड़ नहीं देता किन्तु व्यवहारको व्यवहार समझकर करता है। मिथ्यादृष्टि जिस कार्यको मोहके वशमें होकर करता है

नाटकका पात्र दुःखप्रदर्शनमें उस राजासे बाजी मार ले जायगा। नाटकका पात्र दुःखप्रदर्शन इसलिये नहीं करता कि उसे दुःख है बल्कि इसलिये करता है कि उसे दुःखका प्रदर्शन करना चाहिये। अथवा यों कहना चाहिये कि वह राज्य छिन जानेसे दुःख प्रदर्शन नही करता किन्तु वेतनके वशमें होकर करता है। सम्यग्दृष्टि जीवकी भावना भी नाटकके पात्रके समान होती है। वह धनी होकरके भी अपनेको धनी नहीं समझता, गरीब हो करके भी गरीब नहीं समझता। इसी प्रकार हरएक प्रकारके दुःख-सुखमें वह अपनेको दुःखी-सुखी नहीं समझता। वह दुःखित्व और सुखित्वका जो प्रदर्शन करता है वह इसलिये करता है कि उस समय उसे ऐसा प्रदर्शन करना चाहिये।

जीवनके विषयमें जिसकी भावनाएँ इतनी उच्च हो गई हैं वह सुखी रहनेकी कलामें पूर्ण निष्णात हो गया है।

प्रश्न—यदि सम्यग्दृष्टि जीव इसी प्रकार व्यवहार करता है तो उसका जीवन एक विडम्बना है। जिन लोगोंसे उसे प्रेम नहीं है उनसे बनावटी प्रेमका व्यवहार करना उन्हें धोखा देना है। क्या इस प्रकारके नकली जीवनसे उसे घबराहट नहीं होती?

उत्तर—सम्यग्दृष्टि जीव प्रेमका त्यागी नहीं होता वह तो विश्व-प्रेमी होता है। जो जीव परसुखमें निजसुखका अनुभव करता है उसे प्रेमहीन नहीं कह सकते। वह सिर्फ़ मोहरहित होता है। उसका प्रेम परिमित व्यक्तियोंमें कैद नहीं रहता। परिमित व्यक्तियोंमें जो उसे प्रेमका प्रदर्शन करना पड़ता है वह कर्तव्य समझकर करता है। उनसे वह मोहित नहीं हो जाता। स्वकुटुम्ब,

है। यह वृत्ति मनोवृत्तिसे भी भीतरकी चीज है। उसे आत्म-वृत्ति कहना चाहिये। आत्मा मनसे परे है। यह न समझिये कि दर्शकोंमें ही यह बात देखी जाती है। नाटकके सभी खिलाडी आँखोंमें कर्पूर लगाकर नहीं रोते। जो कच्चे खिलाड़ी हैं वे ही ऐसा करते हैं। जो पक्के खिलाडी हैं वे तो रोनेकी जगहपर सचमुच रोते हैं हँसनेकी जगहपर सचमुच हँसते हैं। रोने-हँसनेका काम उनका मुख ही नहीं करता, मन भी करता है। किन्तु मनके भी भीतर एक वृत्ति है जो इसे नाटक समझती है; जो न हँसती है, न रोती है। उस वृत्तिको हम अनुभव करते हैं, समझते हैं, पर ठीक ठीक कह नहीं पाते। सम्यग्दृष्टि पक्का खिलाड़ी होता है इस-लिये वह सब कार्य इतने अच्छे ढंगसे करता है कि किसीको उसके व्यवहारमें रूखापन या उदासीनता नहीं मालूम होती। वह भीतरसे उदासीन है, कर्तव्यसे उदासीन नहीं। जो सम्यग्दृष्टि नहीं हैं किन्तु सम्यग्दृष्टि बननेका ढोंग करते हैं उनके व्यवहारमें नीरसता, रूखापन उपेक्षा आदि दोष होते हैं क्योंकि वे कच्चे खिलाड़ी हैं। जो सम्यग्दृष्टि हैं वे खेलको खेल समझकर अच्छी तरह खेलते हैं। वे जीतमें भी सुखी हैं और हारमें भी सुखी हैं। जो सामान्य मिथ्यादृष्टि हैं वे खेलको जीवन समझकर खेलते हैं। वे जीत-हारमें भीतरसे सुखी-दुःखी होते हैं। परन्तु जो मिथ्यादृष्टि होकर अपनेको सम्यग्दृष्टि कहलानेका ढोंग करते हैं वे हँसनेकी जगह रोते हुए हँसते हैं जिससे कोई यह समझे कि ये खेलको खेल समझते हैं। परन्तु वास्तवमें वे खेलको खेल नहीं समझते। इसीलिए उन्हें बनावटी ढंगसे काम लेना पड़ता है। रूखापन ऐसे ही लोगोंमें पाया जाता है, सम्यग्दृष्टियोंमें नहीं।

सम्यग्दृष्टि उसीको कर्तव्य समझकर करता है। मोही आदमी तो धोखा दे सकता है किन्तु कर्तव्यशील आदमी धोखा नहीं दे सकता। क्योंकि मोही व्यक्ति तो अविवेकी और स्वार्थी होता है, अविवेकके कारण या स्वार्थमें धक्का लगनेके कारण वह अवसरपर कर्तव्यका भी त्याग करता है और अकर्तव्यको भी अपनाता है जब कि सम्यग्दृष्टि अपने कर्तव्यको नहीं छोड़ सकता। इसलिये प्रेमके क्षेत्रमें भी मिथ्यादृष्टिकी अपेक्षा सम्यग्दृष्टि अधिक विश्वसनीय है।

प्रश्न—सम्यग्दृष्टि कर्तव्यच्युत भले ही न होता हो, परन्तु उसके व्यवहारमें एक प्रकारकी नीरसता या उपेक्षादृष्टि अवश्य रहेगी जिससे लोगोंको असंतोष हो। उसका रूखा व्यवहार विश्वप्रेम, वात्सल्य आदि गुणोंका विघातक ही सिद्ध होगा।

उत्तर—अगर हम किसी नाट्यशालामें जाते हैं तो नाट्यशालाको या नाटक कंपनीको अपनी नहीं समझने लगते फिर भी नाटक तो दिलचस्पीसे देखते हैं। अगर नाट्यशालामें आग लग जाय तो हमें सिर्फ इतना ही दुःख होगा कि खेलका मजा बिगड़ गया। नाट्यशालाके मालिक-सरीखा ऐसा दुःख न होगा कि मैं लुट गया। सम्यग्दृष्टि होनेसे किसीकी सहृदयता नष्ट नहीं हो जाती। सिर्फ उसका मोह नष्ट होता है। सम्यग्दृष्टिके लिये नाटकके पात्रका उदाहरण दिया है। सच्चा खिलाड़ी नाटकको नाटक समझते हुए भी इस बातको भुला देता है कि यह नाटक है। अनेक दर्शक नाटकमें किसी पात्रको दुःखी होते देखकर रोने लगते हैं। क्या वे यह नहीं समझते कि यह नाटक है? फिर रोते क्यों हैं? इससे मालूम होता है कि प्राणीके भीतर एक ऐसी वृत्ति है जिसे हम शब्दोंसे कहनेमें असफल रहते

भी असफल हो जायगा। जब तक जीवन है तब तक कोई इस रंग-मंचसे भाग नहीं सकता। सब उसका कर्तव्य यही है कि वह कायरता न बताये और वीरतासे कर्तव्यका पालन करे। हाँ, वह योग्यता बढ़ाकर निम्न श्रेणीके खेल छोड़कर उच्च श्रेणीके खेल ले सकता है।

प्रश्न—यदि सम्यग्दृष्टि जीवनको नाटक समझता है उसमें लिप्त नहीं होता, जगत्को अपना कुटुम्ब समझता है, तो वह स्वदेशकी पराधीनताको नष्ट कैसे करेगा? वह अन्यायी और अत्याचारियोंके विनाशके लिये भी कैसे प्रयत्न करेगा? क्यों कि उसके लिये तो जैसे स्वदेशी लोग वैसे विदेशी लोग। इस तरह सम्यग्दर्शन राष्ट्र या समाजके लिये बिलकुल निरर्थक है।

उत्तर—सम्यग्दृष्टि जीव स्वदेश और परदेशकी भावनासे काम नहीं करता किन्तु अन्याय और अत्याचारके विरुद्ध खड़ा होता है। अगर विदेशी अन्यायी है तो वह हर तरह उसका विरोध करेगा। उसकी देशभक्ति अन्यायके पक्षमें खड़ी नहीं होती और न अन्यायके विरोधके लिये वह किसीसे पीछे रहता है। हाँ उसकी एक कोशिश यह होती है कि अत्याचारीके अत्याचारको दूर करनेकी कोशिश की जाय और अत्याचारीको अनत्याचारी बनाया जाय। परन्तु जब यह कार्य सम्भव नहीं दिखलाई देता तब वह अत्याचारको दूर करनेके लिये अत्याचारीका भी विरोध करता है। जिस दिन संसारमें देशभक्ति और जातिभक्तिका स्थान न्यायभक्ति ले लेगी उसी दिन संसार चैनकी नींद सो सकेगा। देशभक्ति कमजोर अवस्थामें न्याय रक्षणके काममें आती है और बलवान हो जानेपर न्याय-भक्षणके

प्रश्न—इन तीन प्रकारके प्राणियोंसे अतिरिक्त एक चौथी श्रेणी भी है, जो इस नाटकको या ससारको छोड़ कर चल देते हैं, मुनि हो जाते हैं, जीवन्मुक्त हो जाते हैं उन्हें आप किस श्रेणीमें रक्खेंगे ? क्या वे सम्यग्दृष्टि नहीं हैं ? यदि हैं तो वे खेल समझकर जीवनका खेल क्यों नहीं खेलते ? कायरतासे ससारके उत्तरदायित्वको छोड़कर क्यों भाग जाते हैं ?

उत्तर—जो कायरतासे उत्तरदायित्व छोड़ कर मुनि होते हैं वे न तो मुनि हैं न सम्यग्दृष्टि। सम्यग्दृष्टि जीव उत्तरदायित्वका त्याग नहीं करते। वे मुनि होते हैं परन्तु मुनिजीवनका अर्थ अकर्मण्यता नहीं है, न जीवनके नाटकको छोड़ देना है। वे भी नाटक ही खेल रहे हैं। सिर्फ उनने पार्ट बदल दिया है। नाटकमें कौन पात्र किस लायक है इसका विचार तो करना ही पड़ता है। कई पार्ट ऐसे होते हैं जिन्हें हरएक नहीं कर सकता, जिनमें शारीरिक हलन-चलनकी अपेक्षा सूक्ष्म क्रियाओंकी अधिक आवश्यकता होती है। अविरत सम्यग्दृष्टिका पार्ट सरल है और निम्न श्रेणीका है। मुनिका पार्ट ज़रा उच्च श्रेणीका है। परन्तु दोनों ही नाटक हैं। मुनि तो मुनि, जीवन्मुक्त अरहत भी नाटक खेल रहे हैं। जब तक जीव इस शरीरमें है तब तक वह ससारका नाटक खेल रहा है इसमें सन्देह नहीं। यह बात दूसरी है कि उसके पार्टोंमें श्रेणी-भेद हो। इस तरह अविरत सम्यग्दृष्टिसे लेकर अरहन्त-अवस्था तक सभी जीव एक तरहसे कर्मयोगी हैं।

हरएक प्राणी कर्तव्यका पालन नाटक समझकर करे। नाटकका पात्र अगर नाटकको नाटक समझकर छोड़ दे तो उसका अनाटकीय जीवन

नोंको उसे पूरा पालना चाहिये। परन्तु स्वार्थके कारण मनुष्य उन नियमोंका भंग करता है। वह सोचता है कि अगर मैं जीवनभर दुःखी रहा तो दूसरोंके कल्याणसे पैदा होनेवाला सुख मुझे क्या मिलेगा ? उसके इस भ्रमको मिटानेके लिये आत्माकी नित्यताका निश्चय बहुत उपयोगी होता है। वह मानता है कि वर्तमान जीवनसरीखे असंख्य जीवन आत्माके अनन्त जीवनके सामने कोई गिनतीमें नहीं हैं इसलिये इस जीवनका बलिदान करके भी प्रथम अध्यायमें वर्णित सुखके उपायोंका पालन किया जाय तो हम टोटेमें न रहेंगे।

भविष्य-जीवनकी आशा हमें इस बातका सन्तोष देती है कि इस जन्मके कार्योंका फल हमें आगेके जन्ममें मिल सकेगा इसलिये हमें अपना कर्तव्य करना चाहिये। कर्तव्य निष्फल न जायगा। अगर इस जन्ममें उसका फल न मिला तो आगेके जन्ममें मिलेगा। भविष्य-जीवनकी आशा मृत्युके भयको दूर कर देती है और जिसने मृत्युके भयको जीत लिया वह कर्तव्यमार्गमें पीछे नहीं हटता।

आत्माकी नित्यतासे हम परको स्वकीय समझने लगते हैं इसलिये हमारी राग-द्वेषकी वासनाएँ कम हो जाती हैं। हम जगत्के कल्याणमें वृद्धि करने लगते हैं और हानि करना छोड़ देते हैं। विश्व-प्रेमकी भावना खूब बढ़ती है। उस समय हमारे विचार इस प्रकारके होने लगते हैं—

आज मैं भारतीय हूँ, मरनेके बाद यूरोपीय हो सकता हूँ, फिर यूरोपीयोंसे द्वेष क्यों करूँ ? अथवा आज मैं अंग्रेज हूँ, मरनेके बाद भारतीय हो सकता हूँ, फिर भारतको गुलामीमें जकड़कर क्यों

काममें आती है। परन्तु न्यायभक्ति जगत्का कल्याण ही करती है। साधारण लोग जिस कामको देशाभिमान, जात्यभिमान आदिके द्वारा करते हैं वही काम सम्यग्दृष्टि जीव न्यायभक्तिके द्वारा करता है। पहिली वस्तु (देशाभिमान आदि) कभी कभी उपादेय है जब कि दूसरी (न्याय भक्ति) सदा उपादेय है।

इस प्रकार सम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यादृष्टिकी अपेक्षा जगत्में सुखोपार्जन अधिक करता है। साथ ही सुखी बननेकी कलाके कारण दुःखसे बचा रहता है। प्रथम अध्यायमें ये दोनों ही कारण सुखी बननेके बतलाये ह जिनको सम्यग्दृष्टि ही अच्छी तरहसे प्राप्त कर सकता हे। इसके लिये स्व-पर-विवेक बहुत सहायक होता है क्योंकि जीवनको नाटक समझना, शरीरको जुदा समझना आदि भावनाएँ उसे पूर्ण कर्तव्यतत्पर बनाती हैं। इस भावनाके पहिले उसे शारीरिक स्वार्थ कर्तव्यमार्गसे विमुख कर दिया कर देते थे। अब उसे कोई बाहरी वस्तु कर्तव्यमार्गसे विमुख नहीं कर सकती है इसलिये स्वपर-विवेक या भेदविज्ञान सम्यग्दर्शनका चिह्न कहा जाता है।

इस विवेचनसे सम्यग्दर्शनके स्वरूपका कुछ कुछ भान होने लगेगा। फिर भी सम्यग्दर्शन अनिर्वचनीय है। इसलिये इस विषयमें कुछ और कहा जाता है जिससे कुछ और भी स्पष्टता हो।

जीवनको नाटक समझनेसे जिस प्रकार कर्तव्यतत्परता आती है अथवा मनुष्य सुखी रहनेकी कलामें निष्णात होता है उसी तरह आत्माको नित्य और इस जीवनको अनित्य या अपूर्ण समझनेसे सुखी रहनेकी कला आती है। पहले अध्यायमें यह कहा जा चुका है कि जगत्कल्याणमें आत्मकल्याण है। इसलिये जगत-कल्याणके साथ-

उत्तर—आत्माके विषयमें अनेक बातें कही जा सकती हैं जिनमेंसे कुछ बातें यहाँ दी जाती हैं—

(क) अनुभव सब प्रमाणोंमें श्रेष्ठ प्रमाण है। शरीरमें सुख-दुःखका अनुभव नहीं होता। मैं सुखी हूँ, मैं दुःखी हूँ इत्यादि अनुभव शरीरसे अलग होता है। इसलिये आत्मा शरीरसे भिन्न है।

(ख) दो वस्तुओंका भेद उनके गुण-धर्मके भेदसे ही सिद्ध होता है। आजकल वैज्ञानिक लोग बानवे (९२) तत्त्व (Elements) मानते हैं। एक तत्त्व दूसरे रूपमें परिवर्तित नहीं हो सकता। एक तत्त्वसे दूसरे तत्त्वका भेद उसके पृथक् गुण-धर्मसे ही मालूम होता है। इन तत्त्वोंमें ऐसा कौन-सा तत्त्व है जिसमें चैतन्य पाया जाता हो? अगर कोई ऐसा तत्त्व नहीं है तो आत्माको उन सबसे एक भिन्न पदार्थ मानना पड़ेगा।

प्रश्न—यद्यपि किसी एक तत्त्वमें चैतन्य नहीं है फिर भी अनेक तत्त्वोंके सम्मिश्रणसे चैतन्य पैदा होता है जैसे कि शराबकी एक-एक वस्तुमें मादकता नहीं होती किन्तु उन सबके मिश्रणसे मादकता पैदा हो जाती है।

उत्तर—मादकता कोई नयी वस्तु नहीं है। प्रत्येक खाद्य पदार्थमें वह मादकता पाई जाती है। रोटी वगैरहमें भी मादकता होती है। इसी कारण भोजनसे निद्रा, आलस्य आदि उत्पन्न होते हैं। जिन वस्तुओंसे शराब बनती है उनमें भी मादकता है। उनके मिश्रणसे वह अधिक प्रकट होती है। वास्तवमें यह कोई नयी जातिकी शक्ति नहीं है जो पैदा होती हो। इतना ही नहीं किन्तु मादकता कोई स्वतन्त्र शक्ति ही नहीं है। जितनी वस्तुएँ हम खाते-पीते हैं उनका रंग, रस स्पर्श

रक्खूँ ? आज मैं हिन्दू हूँ, मरकर मुसलमान होना पड़ा तो आज मुसलमानोंका द्वेष क्यों करूँ ? अथवा आज मैं मुसलमान हूँ, मरकर हिन्दू होना पड़ा तो हिन्दुओंसे झगड़ा मोल क्यों लूँ ? आज मैं पुरुष हूँ, कल (मृत्युके बाद) अगर स्त्री होना पड़ा तो स्त्रियोंकी स्वतन्त्रता क्यों छीनूँ ? अथवा आज मैं विधुर हूँ, मरकर विधवा होना पड़ा तो विधुरोंके अधिकार विधवाओंको भी क्यों न प्राप्त करने दूँ ? आज मैं मनुष्य हूँ, कल अगर पशु होना पडा तो उन्हें वृथा क्यों सताऊँ ? आज मैं ब्राह्मण हूँ कल शूद्र होना पड़ा तो शूद्रोंको पददलित क्यों करूँ ? आज राजा हूँ, कल प्रजा होना पडा तो अत्याचार क्यों करूँ ? आज जमीनदार हूँ, कल कृषक होना पड़ा तो उन्हें क्यों सताऊँ ?

इस तरहकी भावनाओंसे वर्गीय तथा वैयक्तिक अत्याचारोंका नाश होता है। वह सोचता है कि दुनियाँमें दूसरे वर्गोंके साथ मैं जितनी भलाई करूँगा वह सब मेरे काम आयगी। इसलिये दूसरेके साथ भलाई करना दूसरेके ऊपर अहसान नहीं है किन्तु भविष्यमें अपनी रक्षाका उपाय है। इस तरह जगत्की भलाई और अपनी भलाई एक हो जाती है। यह दृढ निश्चय आत्माको नित्य माननेका फल है। इसलिये सम्यग्दृष्टि आत्माको नित्य मानता है।

प्रश्न—सम्यग्दृष्टि जीव अप्रामाणिक बातोंपर विश्वास नहीं करता इसलिये जब तक आत्मा एक नित्यवस्तु सिद्ध न हो जाय तब तक वह आत्मापर विश्वास कैसे करेगा ? परलोकका कोई निश्चित रूप भी तो सिद्ध नहीं है, जिससे परलोककी आशा की जाय।

पुद्गल (Matter) के अणुओंका बन्धन शिथिल होता है इसलिये वे दूर दूर होते हैं अर्थात् स्थूल पदार्थ फैलता है। पानी वाष्पीय तरल पदार्थ होनेसे जल्दी और ज्यादः फैलता है। अगर वाष्पको रोकनेकी कोशिश की जायगी तो वह धक्का देगी। धक्का सामनेसे रोकनेवालेमें गति पैदा होगी। इस तरह गर्मीसे गति पैदा होगी। एञ्जिनोंमें भी इसी प्रकार गति पैदा होती है। यहाँ उष्णता और गतिमें कार्यकारणभाव है। इन दोको छोड़कर एञ्जिनमें और क्या है! और ये दोनोंही गुण अणुओंमें पाये जाते हैं। अब कौन कह सकता है कि एञ्जिनमें कोई नया गुण पैदा हुआ है! कहनेका मतलब यह है कि चाहे मदिराका उदाहरण लो चाहे किसी यन्त्रका उसमें हमें कोई ऐसा नया गुण न मिलेगा जो अणुओंमें न पाया जाता हो। अगर कोई नया गुण मिल भी जावे तो हमें उसकी स्थिति उस अणुपिंडमें नहीं किन्तु अणुमें मानना चाहिये। विज्ञानका यह सिद्धान्त है कि शक्ति (Energy) न तो नयी पैदा होती है न उसका विनाश होता है। इसलिये मदिरामें या किसी यन्त्रमें कोई नयी शक्ति नहीं मानी जा सकती—वह शक्तियोंका रूपान्तर-मात्र है।

अब हम यह देखना चाहिये कि चैतन्य किस शक्तिका रूपान्तर है। पुद्गल (Matter) में जितने गुण उपलब्ध होते हैं उनमें कोई भी गुण ऐसा नहीं है जिसका रूपान्तर चैतन्य कहा जा सके। स्मरण रखना चाहिये कि एक गुणका रूपान्तर कभी दूसरे गुणरूप नहीं होता। काले रंगका नीला रंग हो जायगा परन्तु रंगका रंग ही होगा, रस (स्वाद) नहीं। इसी प्रकार रसका रूपान्तर रस, गन्धका रूपान्तर गन्ध स्पर्शका रूपान्तर स्पर्श, आकारका रूपान्तर आकार

आदिका कुछ न कुछ प्रभाव हमारे शरीरपर पड़ता है। रगके प्रभावको क्या आप रगसे जुदा गुण मानेंगे? इसी प्रकार रसका प्रभाव क्या रससे जुदा गुण है? यदि नहीं तो खाद्य पदार्थके रग, रस, गन्ध स्पर्श आदिका प्रभाव इन गुणोसे जुदा नहीं है। यही प्रभाव मादकता है। जब यह थोडी मात्रामें होता है तब हम इसका वेदन नहीं करते। जब जरा अधिक होता है तब इसे निद्रा, तन्द्रा, आलस्य आदि शब्दोंसे कहते हैं। जब वह इससे भी अधिक होता है तब मादकता कहलाता है। इससे माल्रूम हुआ कि मादकता कोई गुण नहीं है, किन्तु रस, स्पर्शादि भौतिक गुणोंका शरीरके ऊपर पड़नेवाला प्रभाव है। हम दुनियामें सैकडों कार्य चित्र-विचित्र देखते ह परन्तु वे सब रूप, रस, गन्ध आदि गुणोंके परिणमन मात्र हैं। किसी जगह नये गुणकी कल्पना हम तभी कर सकते हैं जब कि उसमें माने गये गुणोंसे वह कार्य न हो सकता हो। मादक वस्तुमें अभिमत मादकता आनेपर कोई ऐसी विशेषता पैदा नहीं होती जो उसके पूर्व गुणोंका परिणमन न कहा जा सके।

सच बात तो यह है कि स्कन्ध [अणुपिंड] में कोई ऐसी शक्ति नहीं पैदा हो सकती जो अणुओं (Atoms) में न पाई जाती हो। उदाहरणके लिये हम एक रेलके एञ्जिनको लेते हैं। वह सैकडों डब्बोंको खींचनेकी शक्ति रखता है। अकेले, लोहेमें या अग्निमें या पानीमें इतनी शक्ति नहीं है, इसलिये एञ्जिनमें यह नयी शक्ति कहलाई। अब हमें देखना चाहिये की यह नयी शक्ति क्या है? कैसे पैदा हुई है? अणुओंकी अपेक्षा क्या एञ्जिनमें नया गुण पैदा हुआ है? विचारनेसे माल्रूम होता है कि नहीं। अग्निमें गरमी है, गरमीके निमित्तसे प्रत्येक

उत्तर—कार्य प्रत्येक कारणका रूपान्तर नहीं होता किन्तु सिर्फ उपादान* कारणका रूपान्तर होता है। घड़ा बनानेके लिये मिट्टी और कुम्हार दोनोंकी आवश्यकता है किन्तु घड़ा सिर्फ मिट्टीका रूपान्तर है न कि कुम्हारका। इसी प्रकार स्नायुओंकी क्रियासे मस्तिष्कमें कम्पन होता है; मस्तिष्कके कम्पनसे चैतन्य पैदा होता है। जब कि चैतन्य कम्पन रूप नहीं है तब कम्पन उसके लिये निमित्त कारण हुआ, इसलिये चैतन्य (जानना) उससे अलग वस्तु ही रहा।

प्रश्न—जब स्नायुओंकी प्रक्रियासे हमें चैतन्य या वेदन उत्पन्न होता हुआ दिखलाई देता है तब हम एक नयी वस्तु (गुण) की कल्पना क्यों करें?

उत्तर—प्रत्येक कार्यके लिये दो तरहके कारणोंकी आवश्यकता होती है—एक निमित्त और दूसरा उपादान +। इनमेंसे किसी एकके बिना कार्य पैदा नहीं हो सकता। जो मिट्टी इस समय घड़ा बन रही है वह इस समयसे पहिले घटरूप क्यों न हुई? इसके उत्तरमें हमें कहना पड़ेगा कि उसके लिये अन्य कारण नहीं मिले थे। जिन अन्य कारणोंके मिलनेसे मिट्टी घड़ा बन सकी वे ही घड़ेके निमित्त कारण हैं। यदि निमित्त कारणके बिना कार्य होता तो अमुक

---

* वस्तु शब्दका अर्थ यहाँ पुद्गल (Matter) नहीं है किन्तु अस्तित्ववाला कोई भी पदार्थ किया जा सकता है। इसका अर्थ thing something any substance आदि करना चाहिये।

+ जो कारण स्वयं कार्यरूप परिणत होता है उसे उपादान कारण कहते हैं जैसे घड़ेके लिये मिट्टी उपादान-कारण है। जो कारण कार्यरूप परिणत नहीं होता उसे निमित्त-कारण कहते हैं जैसे घड़ेके लिये कुम्हार, चाक आदि। आवश्यक दोनों हैं।

आदि होंगे। रसका, गन्धका, स्पर्शका, रूपका, आकारका रूपान्तर ज्ञान नहीं हो सकता। इसलिये मानना चाहिये कि चैतन्य या ज्ञान एक नया गुण है—वह किसी अन्य (रूपादि) गुणका रूपान्तर नहीं है, इसलिये वह पैदा नहीं हो सकता, नष्ट नहीं हो सकता क्योंकि शक्तिका उत्पाद और विनाश नहीं होता।

प्रश्न—जब हमारे शरीरको किसी एक चीजकी ठोकर लगती है तब त्वचाके पासके स्नायुओंमें कम्पन होता है शरीरके हरएक भागके स्नायुओंका सम्बन्ध मस्तिष्कके साथ है। इसलिये त्वचाके पासके प्रत्येक कम्पनका प्रभाव मस्तिष्कपर पड़ता है जिससे हमें वेदन होता है। मस्तिष्कके ऊपर पड़नेवाला यह प्रभाव ही चैतन्य है। इसलिये यह अलग गुण नहीं माना जा सकता।

उत्तर—स्नायुओंकी प्रक्रिया ठीक है परन्तु इससे चैतन्यका पृथक् अस्तित्व नष्ट नहीं होता। स्नायुओंसे मस्तिष्कमे कम्पन हो सकता है, उसके आकारमें सूक्ष्म परिवर्तन हो सकता है, परन्तु आकारका सूक्ष्म परिवर्तन या कम्पन चैतन्य नहीं है। यदि कम्पनका नाम चैतन्य हो तब तो सभी पदार्थ चैतन्यशाली कहलायँगे। कम्पनसे चैतन्य हुआ यह एक बात है और कम्पन चैतन्य है यह दूसरी बात है। स्नायुओंकी प्रक्रियासे—कम्पनसे—चैतन्य पैदा हुआ कहा जा सकता है किन्तु कम्पनको हम चैतन्य नहीं कह सकते। कम्पन और चैतन्यमें कार्यकारणभाव कहा जा सकता है परन्तु वे दोनों अभिन्न नहीं कहे जा सकते।

प्रश्न—कार्य और कारणमें बिलकुल अभेद भले ही न माना जाय किन्तु कारणका रूपान्तर ही कार्य होता है इसलिये चैतन्य आदि कार्यको कम्पन आदि कारणोंका ही रूपान्तर कहना चाहिये।

यह है कि निमित्तके साथ कार्यका अविनाभाव× सम्बन्ध सिद्ध हो जानेसे उपादानका अभाव नहीं कहा जा सकता। उपादान अगर अदृश्य हो तो भी उसे मानना पड़ता है।

हमें जो वेदन या अनुभव होता है उसका निमित्त कारण मस्तिष्क है क्योंकि मस्तिष्कके मेटरमें जितने रूप, रस, गंध, स्पर्श आकार आदि गुणधर्म हैं उनमेंसे चैतन्य किसीका भी विकार नहीं है क्योंकि चैतन्य किसी रंग, स्वाद आदिका नाम नहीं है। स्नायु-मस्तिष्कसे हम वेदन या अनुभवके निमित्त कारणोंका परिज्ञान कर सकते हैं किन्तु उपादान कारणका हमें पता नहीं लग सकता। लेकिन यह नहीं कह सकते कि वहाँ कोई उपादान कारण नहीं है, उपादान कारण है तो परन्तु वह अदृश्य है। अदृश्य होनेसे उसका अभाव नहीं माना जा सकता।

अनेक पदार्थ ऐसे हैं कि जिनके विषयमें हम ठीक ठीक कुछ नहीं जानते फिर भी उनके कार्यका अनुभव करते हैं। उदाहरणार्थ विद्युत्। विद्युत् क्या है इसका वैज्ञानिक जगत् कुछ भी उत्तर नहीं दे पाया है फिर भी विद्युत्के कार्य प्रकाश, गति आदिका हमें परिज्ञान होता है और उससे हम काम भी लेते हैं। इसी प्रकार सुख, दुःख, संवेदन या अन्य-पदार्थ-परिज्ञानका उपादान आत्मा क्या है, इसके विषयमें हम कुछ न कह सकें फिर भी वह एक जुदा पदार्थ है यह हमें मानना पड़ता है। जब कि चैतन्य मस्तिष्कके गुणका रूपान्तर नहीं है (भले ही मस्तिष्कके गुण उसमें निमित्त होते हों) तो वह अन्य किसीका रूपान्तर है यह मानना पड़ता है। जिसका रूपान्तर है

× एकके होनेपर दूसरेका होना और न होनेपर न होना इस नियमको अविनाभाव कहते हैं।

समयपर उसकी उत्पत्ति ही नहीं हो सकती थी। वह अनादि हो जाता।

उपादान कारण भी कार्यके लिये आवश्यक है। मिट्टी न हो तो कुम्हार कितना ही प्रयत्न करे वह विना किसी उपादान (Matter) के घड़ा नहीं बना सकता। उपादान कारण न माना जाय तो असत्-से सत् होने लगेगा परन्तु हम अनुभवसे जानते है कि जो वस्तु नहीं है वह पैदा नहीं हो सकती। आधुनिक विज्ञानका भी यह मूल सिद्धान्त है। इस तरह कार्य छोटा हो या बडा उसके लिए निमित्त और उपादान इन दोनों कारणोंकी आवश्यकता होती है।

कभी कभी निमित्त कारण अदृश्य रहता है परन्तु अदृश्य होनेसे उसका अभाव नहीं माना जाता। उदाहरणार्थ हम किसी अधपके आम या केलाको लाकर एक स्थानपर रख देते है, दो-तीन दिनमें वह विना किसी प्रयत्नके आपसे आप पक जाता है। यहाँ स्पष्ट रूपमें हमें पकनेका निमित्त कारण नहीं मालूम होता, फिर भी अगर कुछ निमित्त नहीं है तो वह दो-तीन दिन बाद क्यों पका? पहिले क्यों न पक गया? इससे मालूम होता है कि दो-तीन दिनमें उसे बाहरकी कुछ सहायता जरूर मिली है, और वह वातावरणकी गर्मी आदि है। इसी प्रकार कभी कभी उपादान कारण भी अदृश्य होता है। उदाहरणार्थ शीतऋतुकी रात्रिमें शीतका निमित्त पाकर वनस्पतिपर ओस पड़ जाती है। उन बिन्दुओंका उपादान पानी हमें दिखाई नहीं देता फिर भी हम कल्पना करते हैं कि वायुमण्डलमें फैले सूक्ष्म जलकणोंसे ये ओसके बिन्दु बने हैं। उपादान अदृश्य होनेसे उपादानका अभाव नहीं कहा जा सकता। कहनेका मतलब

कि इनका सबसे छोटा टुकड़ा भी होगा। वही परमाणु है। कोई गुण नया नहीं पैदा होता इसलिये स्कन्धों (परमाणु-पिण्ड) में जितने गुण पाये जाते हैं उतने हम परमाणुओंमें भी मानते हैं। मतलब यह है कि स्कन्धोंमें हम जितने गुण साबित कर सकते हैं उससे एक गुण भी अधिक परमाणुमें नहीं कह सकते। जब परमाणु अदृश्य है तब किसी गुणको उसमें पहिले स्कन्धोंमें ही साबित करना चाहिये परमाणुके गुणोंसे हम स्कन्धमें गुण साबित नहीं कर सकते किन्तु स्कन्धके गुणोंसे परमाणुमें गुण साबित किये जाते हैं। साधारण स्कन्धोंमें चैतन्य सिद्ध नहीं होता इसलिये परमाणुओंमें चैतन्य कैसे माना जा सकता है? जिन स्कन्धों (शरीर मस्तिष्क आदि) में चैतन्य मालूम होता है उनके विषयमें तो यही विवाद हो रहा है कि यह चैतन्य उन स्कन्धोंका है अथवा उनसे विभिन्न किसी दूसरे द्रव्यका? मस्तिष्कमें चैतन्य तभी साबित हो सकता है जब परमाणुओंमें चैतन्य साबित हो जाय और परमाणुओंमें चैतन्य तभी साबित हो सकता है जब कि मस्तिष्क आदिमें साबित हो जाय। जब तक यह अन्योन्याश्रयदोष दूर न हो जाय तब तक 'गुणके भेदसे गुणीमें भेद होता है' इस नियमके अनुसार चैतन्य-वाले पदार्थको एक भिन्न द्रव्य ही मानना पड़ेगा।

प्रश्न—यदि दूसरे स्कन्धोंमें चैतन्य न होनेसे आप परमाणुमें चैतन्य न मानेंगे और परमाणुमें चैतन्य सिद्ध न होनेसे मस्तिष्क आदिमें चैतन्य न मानेंगे और इस तरह एक नये द्रव्यकी सिद्धि करेंगे तो मशीनोंमें भी एक नये द्रव्यकी कल्पना करना पड़ेगी, क्योंकि एक यन्त्र (मशीन) से जो काम होता है वह यन्त्रेतर

वही आत्मा है। वह हमारे लिये अदृश्य या अवक्तव्य भले ही हो परन्तु विद्युत्की तरह अनुमेय अवश्य है। दो पदार्थोंके संघर्षण या सम्मिश्रणसे विद्युत् पैदा होती है परन्तु हम संघर्षण और सम्मिश्रणको विद्युत् नहीं कह सकते। संघर्षण और सम्मिश्रण तो सिर्फ उसका निमित्त-कारण है। इसी प्रकार स्नायु, मस्तिष्क आदि-की क्रियाको हम चैतन्य नहीं कह सकते, वह तो सिर्फ उसका निमित्त कारण है।

प्रश्न——रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, आकार, गति आदिका विकार चैतन्य नहीं है, वह पृथक् गुण है, यह बात ठीक है। परन्तु जिस प्रकार पुद्गलमे रूपादि गुण हैं उसी प्रकार उसमें एक चैतन्य गुण भी मान लिया जाय तो क्या आपत्ति है? पुद्गलका प्रत्येक परमाणु चेतन है किन्तु जिस प्रकार परमाणु सूक्ष्म होनेसे उसके रूपादि गुण अदृश्य रहते हैं उसी प्रकार परमाणुमें रहनेवाले चैतन्यकी मात्रा भी इतनी अल्प होती है कि हमें मालूम नहीं होती। किन्तु जब वे परमाणु मस्तिष्क आदिके रूपमें बहुतसे एकत्रित हो जाते हैं तब उनका चैतन्य विशाल रूपमें मालूम होने लगता है। इस प्रकार चैतन्य एक अलग गुण होनेपर भी वह पुद्गलसे भिन्न आत्म-द्रव्यको सिद्ध नहीं कर सकता।

उत्तर——गुणके भेदसे ही गुणीमे भेद होता है। इसलिये जब तक पुद्गल परमाणुओंमें चैतन्य साबित न हो जाय तब तक चैतन्य-वाला द्रव्य एक नया द्रव्य ही मानना पड़ेगा। परमाणुको हम किसी भी इन्द्रियसे ग्रहण नहीं कर सकते। जो पिण्ड इन्द्रियोंसे ग्रहण होते हैं उनके टुकडे होते हम देखते है इसलिये हम अनुमान करते हैं

यदि रूप, रस आदिके समान परमाणुओंमें चैतन्य माना जायगा तो सर्व शरीरव्यापी एक अनुभव न होगा। बहुतसे परमाणु मिल करके एक पिंडरूप भले ही हो जावें परन्तु एक परमाणुका रूप दूसरे परमाणुका नहीं बन सकता, न सब परमाणुओंका रूप एक बन सकता है। प्रत्येक परमाणुके गुण जुदे जुदे हैं और वे सर्वदा जुदे ही रहते हैं। ऐसी अवस्थामें शरीरके प्रत्येक अवयवका या परमाणुका चैतन्य जुदा जुदा होगा। किन्तु क्रोध, मान, माया, लोभ, हर्ष, शोक, सुख, दु:ख आदि आत्माकी जितनी वृत्तियाँ हैं वे शरीरके प्रत्येक परमाणुकी जुदी जुदी नहीं है—सर्व शरीरमें एक ही वृत्ति होती है। इसलिये सिद्ध होता है कि ये वृत्तियाँ परमाणुओंकी नहीं है किन्तु सर्व शरीरमें व्यापक किसी अन्य वस्तुकी है, जो कि सर्व शरीरमें व्यापक और अखण्ड है।

प्रश्न—सर्व शरीरमें जो चैतन्यका अनुभव मालूम होता है वह भ्रम है। चैतन्यका अनुभव तो सिर्फ मस्तिष्कमें होता है। किन्तु मस्तिष्कसे सम्बन्ध रखनेवाला नाड़ीजाल सब शरीरमें फैला हुआ है इसलिये सब शरीरमें चैतन्य मालूम होता है।

उत्तर—मस्तिष्क भी एक परमाणुका बना हुआ नहीं है। वह भी अगणित परमाणुओंका पिंड है इसलिये मस्तिष्कका भी एक चैतन्य नहीं कहा जा सकता। किन्तु मस्तिष्कमें जितने परमाणु हैं एक समयमें, उतने ही क्रोध मान आदि भाव होंगे। परन्तु ऐसा नहीं होता, इसलिये अन्तमें आकर सबमें व्यापक एक अखण्ड तत्त्व मानना पड़ता है।

प्रश्न—अनेक परमाणु मिलकर जब बँध जाते हैं तब उनके गुण

स्कधसे नहीं होता, इसलिये यन्त्रके गुण परमाणुमें नहीं माने जा सकते। जो गुण परमाणुमें नहीं हैं वे परमाणुओंसे बने हुए स्कध (यन्त्र) में कहाँसे आ जायँगे ? इसलिये हर-एक मशीनमें एक नया द्रव्य मानना पड़ेगा।

उत्तर—पहिले सिद्ध किया जा चुका है कि यत्रके जितने काम हैं वे किसी नये गुणको सिद्ध नही करते, वे सब (गुण) परमाणुमें भी पाये जाते हैं। परमाणुको तो हम देख नहीं सकते इस लिये यही कहना चाहिये कि वे गुण अन्य स्कधोंमें भी पाये जाते है। यन्त्रका काम गति, प्रकाश आदि है। वे सब गुण अन्य स्कधोंमें भी पाये जाते हैं। यह वात दूसरी है कि वे यन्त्रमें कुछ अधिक रूपमें पाये जायँ और साधारण स्कधमें साधारण रूपमे। परन्तु वे पाये दोनोंमें जायँगे। इसलिये मशीनमें हमें किसी नये द्रव्यके माननेकी आवश्यकता नही है। मस्तिष्क आदिमें जो चैतन्य वतलाया जाता है उसे हम उसका गुण तभी कह सकते हैं जव वह अन्य स्कधोंमें भी साबित हो सके, भले ही वह थोड़े रूपमें हो। अन्य स्कंधोंमें चैतन्य साबित होनेसे परमाणुओंमें भी चैतन्य माना जायगा जिसका विकसित रूप मस्तिष्क आदिमें मिलेगा।

लोहेके दो टुकड़ोंके घर्षणसे अगर विद्युत् पैदा होती है तो हम विद्युत्को लोहा नहीं कह सकते या पानीके घर्षणसे पैदा होती है तो हम विद्युत्को पानी नहीं कह सकते हैं। उसी प्रकार स्नायु-प्रक्रियासे पैदा (अभिव्यक्त) होनेवाला चैतन्य स्नायु या मस्तिष्क-रूप नहीं माना जा सकता। इसका कारण ऊपर अच्छी तरह दिखा दिया गया है; फिर भी कुछ वक्तव्य शेष है।

मणुन्नेणं पीइकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ, इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं
जीवा सुहदीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति ॥१७०॥ तओ गुत्तीओ पन्नत्ताओ तं० मणगुत्ती
वयगुत्ती कायगुत्ती संजयमणुस्साणं तओ गुत्तीओ प० तं० मण वय काय। तओ
अगुत्तीओ प० तं० मणअगुत्ती वयअगुत्ती कायअगुत्ती एवं नेरइयाणं जाव
थणियकुमाराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं असंजयमणुस्साणं वाणमंतराणं जोइ-
सियाणं वेमाणियाणं। तओ दंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे कायदंडे नेरइयाणं
तओ दंडा प० मणदंडे जाव कायदंडे विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥१७१॥
तिविहा गरिहा प० तं० मणसावेगे गरहइ, वयसावेगे गरहइ, कायसावेगे गरहइ,
पावाणं कम्माणं अकरणयाए। अहवा गरहा तिविहा प० तं० दीहंपेगे अद्धं गरहइ,
रहस्संपेगे अद्धं गरहइ, कायंपेगे पडिसाहरइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए, तिविहे
पच्चक्खाणे प० तं० मणसावेगे पच्चक्खाइ, वयसावेगे पच्चक्खाइ, कायसावेगे पच-
क्खाइ, एवं जहा गरहा तहा पच्चक्खाणेवि दो आलावगा भाणियव्वा ॥ १७२ ॥
तओ रुक्खा प० तं० पत्तोवए, पुप्फोवए, फलोवए, एवामेव तओ पुरिसजाया
प० तं० पत्तोवा रुक्खसमाणे पुप्फोवा रुक्खसमाणे फलोवा रुक्खसमाणे।
तओ पुरिसजाया प० तं० नामपुरिसे ठवणपुरिसे दव्वपुरिसे तओ पुरिसजाया
प० तं० नाणपुरिसे दंसणपुरिसे चरित्तपुरिसे तओ पुरिसजाया प० तं० वेदपुरिसे
चिंधपुरिसे अभिलावपुरिसे ॥ १७३ ॥ तिविहा पुरिसा प० तं० उत्तमपुरिसा
मज्झिमपुरिसा जहन्नपुरिसा उत्तमपुरिसा तिविहा प० तं० धम्मपुरिसा भोग-
पुरिसा कम्मपुरिसा धम्मपुरिसा अरिहंता भोगपुरिसा चक्कवट्टी कम्मपुरिसा
वासुदेवा मज्झिमपुरिसा तिविहा—उग्गा भोगा राइन्ना जहन्नपुरिसा तिविहा,
प० तं० दासा भयगा भाइल्लगा ॥ १७४ ॥ तिविहा मच्छा प० तं० अंडया
पोयया संमुच्छिमा अंडया मच्छा तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा नपुंसगा
पोयया मच्छा तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा नपुंसगा ॥ १७५ ॥ तिविहा
पक्खी प० तं० अंडया पोयया संमुच्छिमा अंडया पक्खी तिविहा प० तं० इत्थी
पुरिसा नपुंसगा पोयया पक्खी तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा, नपुंसगा एवमे-
एणं अभिलावेणं उरपरिसप्पावि भाणियव्वा भुयपरिसप्पावि एवं चेव
॥ १७६ ॥ तिविहाओ इत्थीओ पन्नत्ताओ तं० तिरिक्खजोणित्थीओ मणुस्सित्थीओ
देवित्थीओ तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ प० तं० जलयरीओ थलयरीओ
खहयरीओ मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ तं० कम्मभूमियाओ अकम्म-
भूमियाओ अंतरदीवियाओ ॥ १७७ ॥ तिविहा पुरिसा तिरिक्खजोणियपुरिसा

एक-रूप मालूम होते हैं । जैसे मिश्रीकी एक डलीका स्वाद एक मालूम होता है, यद्यपि डलीके प्रत्येक परमाणुका स्वाद जुदा जुदा है । इसी प्रकार मस्तिष्कके या शरीरके प्रत्येक परमाणुका चैतन्य तो जुदा जुदा है किन्तु सब परमाणुओंके पारस्परिक बन्धके कारण वह एक-रूप मालूम होता है ।

उत्तर—स्कंधोंमें गुणोंका प्रतिभास एक रूप होने लगता है यह बात मिथ्या है । एक ही स्कंधमें अनेक रंग, रस आदि पाये जाते हैं । एक ही आम किसी अंशमें हरा और किसी अंशमें पीला होता है; ऊपर मीठा और गुठलीके पास खट्टा होता है । जिन स्कंधोंमें हमें अंश-अंशमें विशेषता नहीं मालूम होती है वहाँ भी सदृशता होती है, एकता नहीं । मिश्रीकी डलीका एक अंश दूसरे अंशके समान है, एक नहीं । मस्तिष्कके परमाणु अगर एक सरीखे हो गये हैं तो उनका चैतन्य एक-सरीखा होगा, एक नहीं । परन्तु एक सरीखा भी हम तब कहें जब वहाँ बहुतसे चैतन्य हों । समानता बहुतमें होती है, एकमें नहीं । खैर, इस विषयमें एक और महत्त्वपूर्ण बात कही जा सकती है ।

दूसरे पदार्थके ज्ञानमें हमें अनेकमें एकका भ्रम हो सकता है, क्योंकि दूसरे पदार्थका ज्ञान हमें इन्द्रियोंके द्वारा करना पडता है और इन्द्रियोंकी तराजू इतनी स्थूल है कि प्रत्येक परमाणु-की तौल उसमें नहीं हो सकती । परन्तु स्वानुभवमें यह बात नहीं है । स्वानुभव चैतन्यका निर्विवाद स्वरूप है । जहाँ चैतन्य अभिव्यक्त होता है वहाँपर, वस्तुका ज्ञान हो चाहे न हो परन्तु, अपना ज्ञान (अनुभव) तो होता ही है । इसलिये मस्तिष्क या शरीरके प्रत्येक

जाव तं चेव । एवमासज्जाई चएज्जा सीहणायं करेज्जा चेलुक्खेवं करेज्जा । तिहिं ठाणेहिं देवाणं रुक्खा चलेज्जा तं अरिहंतेहिं जायमाणेहिं, जाव तं चेव । तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छेज्जा तं अरिहंतेहिं जायमाणेहिं अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरिहंताणं णाणुप्पायमहिमासु ॥ १८३ ॥ तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो तंजहा–अम्मापिउणो भट्टिस्स धम्मायरियस्स संपाओवि य णं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेत्ता सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडिंसियाए परिवहेज्जा तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ । अहे णं से तं अम्मापियरं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुप्पडियारं भवइ । समणाउसो केइ महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमिइसमन्नागए या वि विहरेज्जा तए णं से महच्चे अन्नया कयाई दरिद्दी हूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अंतियं हव्वमागच्छेज्जा तए णं से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्समवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पडियारं भवइ, अहे णं से तं भट्टिं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियारं भवइ । केइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, तए णं से देवे तं धम्मायरियं दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खं देसं साहरेज्जा कंताराओ वा निक्कंतारं करेज्जा दीहकालिएणं वा रोगायंकेणं अभिभूयं समाणं विमोएज्जा, तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवइ, अहे णं से तं धम्मायरियं केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भट्ठं समाणं भुज्जोवि केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता जाव ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुप्पडियारं भवइ ॥ १८४ ॥ तिहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं वीईवएज्जा, तंजहा–अणियाणयाए, दिट्ठिसंपन्नयाए, जोगवाहियाए ॥ १८५ ॥ तिविहा ओसप्पिणी प० तं० उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना एवं छप्पिसमाओ भाणियव्वाओ जाव दुसमदुसमा, तिविहा उस्सप्पिणी प० तं० उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना एवं छप्पिसमाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसुसमा ॥ १८६ ॥ तिहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा तं० आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा विउव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा ठाणाओ ठाणं संकामिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा ॥ १८७ ॥ तिविहा उवही प० तं० कम्मोवही

मणुस्सपुरिसा, देवपुरिसा, तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा प० तं० जलयरा, थलयरा, खहयरा, मणुस्सपुरिसा तिविहा प० तं० कम्मभूमिया, अकम्मभूमिया अंतरदीवया ॥१७८॥ तिविहा णपुंसगा, णेरइयणपुंसगा, तिरिक्खजोणियणपुंसगा मणुस्सणपुंसगा, तिरिक्खजोणियणपुंसगा तिविहा—जलयरा थलयरा खहयरा ॥ १७९ ॥ मणुस्सणपुंसगा तिविहा प० तं० कम्मभूमिया अकम्मभूमिया अंतरदीवगा, तिविहा तिरिक्खजोणिया, इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥ १८० ॥ णेरइयाणं तओ लेस्साओ प० तं० कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा, असुरकुमाराणं तओ लेस्साओ संकिलिट्ठाओ प० तं० कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा एवं जाव थणियकुमाराणं । एवं पुढविकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाणं वि तेउवाउबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं वि तओ लेस्सा जहा णेरइयाणं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेस्साओ संकिलिट्ठाओ प० तं० कण्हनीलकाउलेस्सा, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेस्साओ असंकिलिट्ठाओ प० तं० तेउपम्हसुक्कलेस्सा एवं मणुस्साणवि वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं, वेमाणियाणं तओ लेस्साओ प० तं० तेउपम्हसुक्कलेस्सा ॥ १८१ ॥ तिहिं ठाणेहिं तारारूवे चलेज्जा तं० विकुव्वमाणे वा परियारेमाणे वा, ठाणाओ वा ठाणं संकममाणे तारारूवे चलेज्जा । तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुयारं करेज्जा तं० विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा तहारूवस्स समणस्स वा णिग्गंथस्स वा इड्ढिं जुइं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुयारं करेज्जा, तिहिं ठाणेहिं देवे थणियसद्दं करेज्जा तं० विउव्वमाणे एवं जहा विज्जुयारं तहेव थणियसद्दंपि ॥ १८२ ॥ तिहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया तंजहा—अरिहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरिहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे । तिहिं ठाणेहिं लोगुज्जोए सिया तं० अरिहंतेहिं जायमाणेहिं अरिहंतेसु पव्वयमाणेसु, अरिहंताणं णाणुप्पायमहिमासु । तिहिं ठाणेहिं देवंधयारे सिया तं० अरिहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरिहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे । तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोए सिया तं० अरिहंतेहिं जायमाणेहिं, अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरिहंताणं णाणुप्पायमहिमासु । तिहिं ठाणेहिं देवसंनिवाए सिया तं० अरिहंतेहिं जायमाणेहिं अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरिहंताणं णाणुप्पायमहिमासु । एवं देवुक्कलिया, देवकहकहए, तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति तं० अरिहंतेहिं जायमाणेहिं अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरिहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, एवं सामाणिया, तायत्तीसगा लोगपाला देवा अग्गमहिसीओ देवीओ परिसोववण्णगा देवा, अणियाहिवई देवा, आयरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति, तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठेज्जा तं० अरिहंतेहिं जायमाणेहिं

उड्ढं उच्चत्तेणं तिन्निपलिओवमाइं परमाउं पालइत्ता एवं इमीसे ओसप्पिणीए आय-
मेस्साए उस्सप्पिणीए। जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुराउ मणुया तिन्नि गाउयाइं उड्ढं
उच्चत्तेणं य तिन्निपलिओवमाइं परमाउं पालंति। एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थि-
मद्धे ॥ १५४ ॥ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणिउस्सप्पिणीए
तओ वंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा तं० अरिहंतवंसे चक्कवट्टि-
वंसे दसारवंसे। एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे। जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु
वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणिउस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति
वा उप्पज्जिस्संति वा तं० अरिहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेववासुदेवा। एवं जाव
पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे। तओ अहाउयं पालंति तं० अरिहंता चक्कवट्टी बलदेव-
वासुदेवा। तओ मज्झिममाउयं पालंति तं० अरिहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा
॥ १५५ ॥ बायरतेउक्काइयाणं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं ठिई प० बायरवाउक्का-
इयाणं उक्कोसेणं तिन्निवाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता ॥ १५६ ॥ अह भंते सालीणं वीहीणं
गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं एएसिं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं
मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहियाणं केवइयं कालं जोणी
संचिट्ठइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्निसंवच्छराइं तेण परं जोणी
पमिलायइ पविद्धंसइ विद्धंसइ तेण परं बीए अबीए भवइ तेण परं जोणीवोच्छेदे
प० ॥ १५७ ॥ दोच्चाए णं सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरो-
वमाइं ठिई प० तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं तिन्निसागरोव-
माइं ठिई प० । पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्निनिरयावाससयसहस्सा प०
तिसु णं पुढवीसु नेरइया उसिणवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति तं० पढमाए दोच्चाए
तच्चाए ॥ १५८ ॥ तओ लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं प० तं० अप्पइट्ठाणे नरए
जंबुद्दीवे दीवे सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे। तओ लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं प०
तं० सीमंतए णं नरए समयक्खेत्ते ईसिपब्भारापुढवी ॥ १५९ ॥ तओ समुद्दा पयईए
उदगरसेणं प० तं० कालोदे पुक्खरोदे सयंभुरमणे तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभा-
इण्णा प० तं० लवणे कालोदे सयंभुरमणे ॥ १ ॥ तओ लोगे निस्सीला निव्वया
निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए
पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववज्जंति तं० रायाणो मंडलिया जे य महा-
रंभा कोडुंबी। तओ लोए सुसीला सुव्वया सगुणा सम्मेरा सपच्चक्खाणपोसहोव-
वासा कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति
तं० रायाणो परिचत्तकामभोगा सेणावई पसत्थारो ॥ १ १ ॥ बंभलोयलंतएसु णं

सरीरोवही बाहिरभंडमत्तोवही, एवं असुरकुमाराणं भाणियव्वं, एवं एगिंदियनेरइय-वज्जं जाव वेमाणियाणं। अहवा तिविहा उवही प० तं० सचित्ता अचित्ता मीसिया। एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं, तिविहे परिग्गहे प० तं० कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरभंडमत्तपरिग्गहे, एवं असुरकुमाराणं, एवं एगिंदियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं, अहवा तिविहे परिग्गहे प० तं० सचित्ते अचित्ते मीसए एवं णेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥ १८८ ॥ तिविहे पणिहाणे प० तं० मणप-णिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे एवं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं। तिविहे सुप्प-णिहाणे प० तं० मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे, संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे प० तं० मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे, तिविहे दुप्पणिहाणे प० तं० मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे, एवं पंचिंदि-याणं जाव वेमाणियाणं ॥ १८९ ॥ तिविहा जोणी पण्णत्ता तंजहा—सीआ उसिणा सीओसिणा। एवमेगिंदियाणं विगलिंदियाणं तेउकाइयवज्जाणं समुच्छिमपंचिंदियति-रिक्खजोणियाणं समुच्छिममणुस्साणं य, तिविहा जोणी प० तं० सचित्ता अचित्ता मीसिया एवमेगिंदियाणं विगलिंदियाणं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं समु-च्छिममणुस्साणं य। तिविहा जोणी प० तं० संवुडा, वियडा संवुडवियडा। तिविहा जोणी प० तं० कुम्मुन्नया संखावत्ता वंसीवत्तिया, कुम्मुन्नयाणं जोणी उत्तमपुरिस-माऊणं, कुम्मुन्नयाएणं जोणीए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति तं० अरिहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा, संखावत्ता जोणी इत्थीरयणस्स संखावत्ताएणं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति नो चेव णं णिप्पज्जंति। वंसीपत्तियाणं जोणी पिहुज्जणस्स वंसीवत्तियाएणं जोणीए बहवे पिहुज्जणे गब्भं वक्क-मंति ॥ १९० ॥ तिविहा तणवणस्सइकाइया प० तं० संखेज्जजीविया असंखेज्जजी-विया अणंतजीविया ॥ १९१ ॥ जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे तओ तित्था प० तं० मागहे वरदामे पभासे एवं एरवएवि। जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहवासे एगमेगे चक्क-वट्टिविजए तओ तित्था प० तं० मागहे वरदामे पभासे। एवं धायइखंडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि पुक्खरवदीवड्ढपुरच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि ॥ १९२ ॥ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिन्निसागरो-वमकोडाकोडीओ कालो होत्था। एवं ओसप्पिणीए णवरं प० आगमेस्साए उस्स-प्पिणीए भविस्सइ। एवं धायइखंडे पुरच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि। एवं पुक्खरव-रदीवड्ढपुरत्थिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि कालो भाणियव्वो ॥ १९३ ॥ जंबुद्दीवे दीवे भरहेर-वएसु वासेसु तीयाए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया तिन्नि गाउआइं

कप्पेसु विमाणा तिवन्ना पन्नत्ता तं० किण्हा नीला लोहिया। आणयपाणयारणच्चुएसु ण कप्पेसु देवाण भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेण तिन्नि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेण प० ॥ २०२ ॥ तओ पन्नत्तीओ कालेण अहिज्जन्ति त० चदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती दीवसागर-पन्नत्ती ॥ २०३ ॥ **तइयट्ठाणस्स पढमोद्देसो समत्तो ॥**

तिविहे लोगे पन्नत्ते त० णामलोगे ठवणलोगे दव्वलोगे, तिविहे लोगे प० त० णाणलोगे दसणलोगे चरित्तलोगे, तिविहे लोगे प० त० उड्ढलोगे अहोलोगे तिरिय-लोगे ॥ २०४ ॥ चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णताओ तं० समिया चडा जाया अब्भितरिया समिया मज्झमिया चडा बाहिरया जाया, चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सामाणियाण देवाण तओ परिसाओ पण्णत्ताओ त० समिया जहेव चमरस्स। एव तायत्तीसगाणवि लोगपालाणं तुवा तुडिया पव्वा एव अग्गमहिसीण वि। वलिस्स वि एव चेव जाव अग्गमहिसीण। धरणस्स य सामाणियतायत्तीसगाण च समिया चडा जाया, लोगपालाण अग्ग-महिसीण ईसा तुडिया दढरहा, जहा धरणस्स तहा सेसाण भवणवासीण, काल-स्सण पिसाइदस्स पिसायरन्नो तओ परिसाओ पन्नत्ताओ, त० ईसा तुडिया दढरहा, एव सामाणियअग्गमहिसीण वि एव जाव गीयरइ गीयजसाण चदस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो तओ परिसाओ, तुवा तुडिया पव्वा, एव सामाणियअग्गमहिसीण, एव सूरस्स वि, सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो तओ परिसाओ पन्नत्ताओ तं० समिया चडा जाया, एवं जहा चमरस्स जाव अग्गमहिसीण, एव जाव अच्चुयस्स लोगपालाण ॥ २०५ ॥ तओ जामा प० त० पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे, तिहिं जामेहिं आया केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए त० पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे, एवं जाव केवलनाण उप्पाडेज्जा पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे। तओ वया प० त० पढमे वए मज्झिमे वए पच्छिमे वए, तिहिं वएहिं आया केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए त० पढमे वए मज्झिमे वए पच्छिमे वए, एसो चेव गमो णेयव्वो, जाव केवलनाणति ॥ २०६ ॥ तिविहा बोही प० त० णाणबोही दसणबोही चरित्तबोही, तिविहा बुद्धा प० त० णाणबुद्धा दसणबुद्धा चारित्तबुद्धा, एव मोहे मूढा ॥ २०७ ॥ तिविहा पव्वज्जा प० तं० इह-लोगपडिवद्धा, परलोगपडिवद्धा, दुहओ पडिवद्धा, तिविहा पव्वज्जा प० त० पुरओ-पडिवद्धा, मग्गओपडिवद्धा, उभओपडिवद्धा, तिविहा पव्वज्जा प० त० तुयावइत्ता पुयावइत्ता वुयावइत्ता, तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता त० उवायपव्वज्जा अक्खाय-पव्वज्जा सगारपव्वज्जा ॥ २०८ ॥ तओ णियठा णोसण्णोवउत्ता प० तं० पुलाए

अपज्जत्तगा नोपज्जत्तगानोअपज्जत्तगा । एव सम्मदिट्ठिपरित्तपज्जत्तगसुहुमसण्णि-भविया य ॥ २१४ ॥ तिविहा लोगट्ठिई प० त० आगासपइट्ठिए वाए, वायपइट्ठिए उदही उदहीपइट्ठिया पुढवी । तओ दिसाओ प० तं० उड्ढा अहा तिरिया, तिहिं दिसाहिं जीवाण गई पवत्तइ त० उड्ढाए अहाए तिरियाए, एवं आगइ वक्कंती आहारे वुड्ढी णिवुड्ढी गइपरियाए समुग्घाए कालसंजोगे दसणाभिगमे णाणाभिगमे जीवाभि-गमे । तिहिं दिसाहिं जीवाण अजीवाभिगमे प० त० उड्ढाए अहाए तिरियाए, एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण । एवं मणुस्साणवि ॥ २१५ ॥ तिविहा तसा प० तं० तेउकाइया, वाउकाइया उराला तसा पाणा, तिविहा थावरा प० त० पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइकाइया ॥ २१६ ॥ तओ अच्छेज्जा प० तं० समए पएसे परमाणू, एवमभेज्जा अडज्झा अगिज्झा अणड्ढा अमज्झा अपएसा । तओ अवि-भाइमा प० त० समए पएसे परमाणू ॥ २१७ ॥ अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाई समणे णिग्गथे आमतित्ता एवं वयासी । किं भया पाणा समणाउसो ? गोयमाई समणा णिग्गथा समण भगव महावीरं उवसकमति, उवसंकमित्ता वदति नमसति वदित्ता नमसित्ता एव वयासी णो खलु वयं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं जाणामो वा पासामो वा त जइण देवाणुप्पिया ! एयमट्ठ नो गिलायंति परिकहेत्तए तमि-च्छामो ण देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठ जाणित्तए, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाई समणे णिग्गथे आमतित्ता एवं वयासी, दुक्ख भया पाणा समणाउसो, से ण भते दुक्खे केण कडे ? जीवेण कडे पमाएण, से ण भंते दुक्खे कह वेइज्जति ? अप्पमाएण ॥ २१८ ॥ अण्णउत्थिया णं भते एवमाइक्खन्ति, एव भासेन्ति एव परूवेन्ति कहण्ण समणाणं निग्गथाण किरिया कज्जइ तत्थ जासा कडा कज्जइ णो त पुच्छंति, तत्थ जासा कडा नो कज्जइ णो त पुच्छंति, तत्थ जासा अकडा नो कज्जइ णो त पुच्छंति, तत्थ जासा अकडा कज्जइ त पुच्छति, से एव वत्तव्व सिया अकिच्च दुक्ख अफुसं दुक्ख अकज्जमाणकडं दुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयति त्ति वत्तव्व जे ते एवमाहंसु ते मिच्छा, अह पुण एवमाइक्खामि, एव भासामि, एव पन्नवेमि, एव परूवेमि, किच्च दुक्ख फुस दुक्ख कज्जमाण कडं दुक्ख कट्टु २ पाणा भूया जीवा सत्ता वेयण वेयति त्ति वत्तव्व सिया ॥ २१९ ॥

तइयट्ठाणस्स बीओद्देसो समत्तो ॥

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा णो पडिक्कमेज्जा, णो णिंदिज्जा णो गर-हेज्जा णो विउट्टेज्जा णो विसोहेज्जा णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा णो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जिज्जा तं० अकरिंसु वाहं करेमि वाहं करिस्सामि वाहं ॥ २२० ॥

हए अदीए अहो णं मए समणोमपरिकिलेसे परजोगपरमुहेणं मिउअजुविसएणं जो णीडे सामन्नपरियाए अणुपालिए । अहो णं मए इहियरससायगरुएणं भोगामिसगिद्धेणं नो विसुद्धे चरित्ते फासिए इच्चेएहिं ॥ ११२ ॥ तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ, तं- विमाणाभरणाइं णिप्पभाइं पासित्ता, कप्परुक्खगं मिलायमाणं पासित्ता अप्पणो तेयलेस्सं परिहायमाणिं जाणित्ता इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा तं -अहो णं मए इमाओ एयारूवाओ दिव्वाओ देविड्ढीओ दिव्वाओ देवजुईओ दिव्वाओ देवाणुभावाओ पत्ताओ लद्धाओ अभिसमन्नागयाओ चइयव्वं भविस्सइ । अहो णं मए माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसंसिट्ठं तप्पढमयाए आहारो आहारेयव्वो भविस्सइ । अहो णं मए कलमलजंबालाए असुईए उव्वेयणियाए भीमाए गब्भवसहीए वसियव्वं भविस्सइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं ॥ ११३ ॥ तिसंठिया विमाणा प तं वट्टा तंसा चउरंसा । तत्थ णं जे ते वट्टविमाणा ते णं पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया सव्वओ समंता पागारपरिक्खित्ता एगदुवारा प । तत्थ णं जे ते तंसविमाणा ते सिंघाडगसंठाणसंठिया दुहओ पागारपरिक्खित्ता एगओ वेइया परिक्खित्ता तिदुवारा प । तत्थ णं जे ते चउरंसविमाणा ते णं अक्खाडगसंठाणसंठिया सव्वओ समंता वेइया परिक्खित्ता चउदुवारा प । तिपइट्ठिया विमाणा प तं घणोदहिपइट्ठिया घणवायपइट्ठिया, उवासंतरपइट्ठिया । तिविहा विमाणा प तं अवट्ठिया वेउव्विया परिजाणिया ॥ ११४ ॥ तिविहा नेरइया प तं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी । एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं । तओ दुग्गईओ पन्नत्ताओ तं नेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणियदुग्गई मणुयदुग्गई । तओ सुगईओ प तं सिद्धिसोग्गई देवसोग्गई मणुस्ससोग्गई । तओ दुग्गया प तं नेरइयदुग्गया तिरिक्खजोणियदुग्गया मणुस्सदुग्गया तओ सुगया प तं सिद्धसुगया देवसुगया मणुस्ससुगया ॥ ११५ ॥ चउत्थभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए तं उस्सेइमे संसेइमे चाउलधोवणे । छट्ठभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तंजहा-तिलोदए तुसोदए जवोदए, अट्ठमभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए तंजहा-आयामए सोवीरए सुद्धवियडे ॥ ११६ ॥ तिविहे उवहडे प तं फलिओवहडे सुद्धोवहडे संसट्ठोवहडे तिविहे ओग्गहिए प तं जं च ओगिण्हइ जं च साहरइ जं च आसगंसि पक्खिवइ ॥ ११७ ॥ तिविहा ओमोयरिया प तं उवगरणोमोयरिया भत्तपाणोमोयरिया, भावोमोयरिया, उवगरणोमोयरिया तिविहा प० तं एगे वत्थे, एगे पाये चियत्तोवहि-

संति, चयंति उववज्जंति अणुलोमवाऊ समुट्ठिय उदगपोग्गल परिणय वासिउकामं त देस साहरति अब्भवद्दलग च ण समुट्ठिय परिणय वासिउकाम णो वाउकाओ विहुणेति, इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया ॥ २२९ ॥ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए त० अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने से ण माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ णो परियाणाइ णो अट्ठ बधइ णो णियाण पगरेइ, णो ठिइप्पकप्पं पकरेइ, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने तस्स ण माणुस्सए पेम्मे वोच्छिन्ने दिव्वे सकते भवइ, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने तस्स णमेव भवइ इयण्हिं न गच्छं मुहुत्तं गच्छं तेणं कालेणमप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा सजुत्ता भवति इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुस्स लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव ण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए। तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुस्सलोग हव्वमागच्छित्तए सचाएइ हव्वमागच्छित्तए त० अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे तस्स ण एव भवइ अत्थि ण मम माणुस्सए भवे आयरिएइ वा, उवज्झाएइ वा पवत्तेइ वा थेरेइ वा, गणीइ वा गणहरेइ वा गणावच्छेएइ वा जेसिं पभावेण मए इमा एया रूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए त गच्छामि ण ते भगवते वदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय जाव पज्जुवासामि अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने तस्स ण एव भवइ, एसण माणुस्सए भवे णाणीइ वा, तवस्सीइ वा, अइदुक्कर-दुक्करकारगे त गच्छामि णं भगवंत वदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि अहुणोव-वण्णे देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स ण एव भवइ अत्थि ण मम माणुस्सए भवे मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा त गच्छामि णं तेसिमतिय पाउब्भवामि, पासतु ता मे इम एयारूव दिव्व देविड्ढिं, दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए सचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ २३० ॥ तओ ठाणाइ देवे पीहेज्जा त० माणुस्सग भवं, आरिए खेत्ते जम्मं, सुकुलपच्चायाइ ॥ २३१ ॥ तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा त० अहो णं मए सते बले सते वीरिए सते पुरिसक्कार-परक्कमे खेमसि सुभिक्खसि आयरियउवज्झाएहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं णो बहुए

साइज्जणया ॥ २३८ ॥ तओ ठाणा णिग्गंथाणं वा णिग्गंथीणं वा अहियाए असुहाए अक्खमाए अणिस्सेयसाए अणाणुगामियत्ताए भवन्ति, तं० कूअणया, कक्करणया अवज्झाणया, तओ ठाणा णिग्गंथाणं वा णिग्गंथीणं वा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भवन्ति, त० अकूअणया अकक्करणया अणवज्झाणया ॥ २३९ ॥ तओ सल्ला प० तं० मायासल्ले णियाणसल्ले मिच्छादंसणसल्ले ॥ २४० ॥ तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संखित्तविउलतेउलेस्से भवइ त० आयावणयाए खंतिखमाए अपाणगेणं तवोकम्मेणं ॥ २४१ ॥ तिमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए तओ पाणगस्स, एगराइयं भिक्खुपडिमं सम्ममणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेयसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति तं० उम्मायं वा लभेज्जा, दीहकालियं वा रोयातंकं पाउणेज्जा, केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । एगराइयं णं भिक्खुपडिमं सम्ममणुपालेमाणस्स अणगारस्स तओ ठाणा हियाए सुभाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भवंति त० ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा मणपज्जवणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा ॥ २४२ ॥ जंबुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ प० त० भरहे, एरवए, महाविदेहे । एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे जाव पुक्खर-वर-दीवड्ढ-पचत्थिमद्धे ॥ २४३ ॥ तिविहे दंसणे सम्मदंसणे, मिच्छादंसणे, सम्ममिच्छादंसणे, तिविहा रुई प० तं० सम्मरुई, मिच्छरुई, सम्ममिच्छरुई, तिविहे पओगे प० त० सम्मप्पओगे, मिच्छप्पओगे, सम्ममिच्छप्पओगे ॥ २४४ ॥ तिविहे ववसाए प० त० धम्मिए ववसाए अहम्मिए ववसाए, धम्मियाधम्मिए ववसाए, अहवा तिविहे ववसाए, प० त० पच्चक्खे, पच्चइए, आणुगामिए, अहवा तिविहे ववसाए प० त० इहलोइए, परलोइए, इहलोइयपरलोइए, इहलोइए ववसाए तिविहे प० तं० लोइए वेइए सामइए, लोइए ववसाए तिविहे प० त० अत्थे धम्मे कामे, वेइए ववसाए तिविहे प० त० रिउव्वेए जजुव्वेए सामवेए, सामइए ववसाए तिविहे प० तं० णाणे दंसणे चरित्ते ॥ २४५ ॥ तिविहा अत्थजोणी प० त० सामे दंडे भेए ॥ २४६ ॥ तिविहा पोग्गला प० त० पओगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ॥ २४७ ॥ तिपइट्ठिया णरगा प० तं० पुढवीपइट्ठिया आगासपइट्ठिया आयपइट्ठिया, णेगमसंगहववहाराणं पुढवीपइट्ठिया, उज्जुसुयस्स आगासपइट्ठिया तिण्हं सद्दणयाणं आयपइट्ठिया ॥ २४८ ॥ तिविहे मिच्छत्ते प० तं० अकिरिया अविणए अण्णाणे, अकिरिया तिविहा प० त० पओगकिरिया, समुदाणकिरिया अन्नाणकिरिया, पओगकिरिया तिविहा प०

उराला पोग्गला निवतेज्जा तएणं ते उराला पोग्गला निवयमाणा देसं पुढवीए चालेज्जा । महोरए वा महिड्ढिए जाव महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उम्मज्जणिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीए चालेज्जा । नागसुवन्नाण वा संगामंसि वट्टमाणंसि देसं पुढवीए चलेज्जा एएहिं तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा तं— अहे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए गुप्पेज्जा तएणं से घणवाए गुविए समाणे घणोदहिमेएज्जा तएणं से घणोदही एइए समाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा । देवे वा महिड्ढिए जाव महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा इड्ढिं जुइं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा । देवासुरसंगामंसि वा वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा इच्चेएहिं तिहिं ॥ २६१ ॥ तिविहा देवकिव्विसिया प० तं— तिपलिओवमट्ठिईया तिसागरोवमट्ठिईया तेरससागरोवमट्ठिईया । कहि णं भंते तिपलिओवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति ? उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति । कहि णं भंते तिसागरोवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति ? उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं हेट्ठिं सणंकुमारमाहिंदे कप्पेसु एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति । कहि णं भंते तेरससागरोवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति ? उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठिं लंतगे कप्पे एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति ॥ २६२ ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवाणं तिपलिओवमाइं ठिई प० —सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरपरिसाए देवीणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई प० । ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवीणं तिपलिओवमाइं ठिई प० ॥ २६३ ॥ तिविहे पायच्छित्ते प० तं— नाणपायच्छित्ते दंसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते । तओ अणुग्घाइमा प० तं— हत्थकम्मं करेमाणे मेहुणं सेवेमाणे राईभोयणं भुंजमाणे । तओ पारंचिया प० तं— दुट्ठे पारंचिए, पमत्ते पारंचिए, अन्नमन्नं करेमाणे पारंचिए, तओ अणवट्ठप्पा प० तं— साहम्मियाणं तेण्णं करेमाणे अन्नधम्मियाणं तेण्णं करेमाणे हत्थातालं दलयमाणे तओ नो कप्पंति पव्वावेत्तए, पंडए, वाइए, कीवे एवं मुंडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावित्तए, संभुंजित्तए, संवासित्तए ॥ २६४ ॥ तओ अवायणिज्जा प० तं— अविणीए, विगईपडिबद्धे, अविओसवियपाहुडे । तओ कप्पंति वाइत्तए तं— विणीए अविगईपडिबद्धे विओसवियपाहुडे ॥ २६५ ॥ तओ दुसन्नप्पा प० तं— दुट्ठे मूढे वुग्गाहिए, तओ सुसन्नप्पा प० तं— अदुट्ठे अमूढे अवुग्गाहिए ॥ २६६ ॥ तओ

॥ २५७ ॥ तिविहा आराहणा प० त० णाणाराहणा, दसणाराहणा, चरित्ताराहणा, णाणाराहणा तिविहा प० त० उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना, एव दसणाराहणावि, चरित्ताराहणावि, तिविहे सकिलेसे प० त० णाणसकिलेसे, दसणसकिलेसे, चरित्त-संकिलेसे, एव असकिलेसेवि, एव अइक्कमे वि, वइक्कमे वि, अइयारे वि, अणायारे वि, तिण्हमइक्कमाण आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहिज्जा जाव पडिवज्जिज्जा, त० णाणाइक्कमस्स, दसणाइक्कमस्स, चरित्ताइक्कमस्स, एव वइक्कमाण, अइयाराण, अणायाराण ॥ २५८ ॥ तिविहे पायच्छित्ते प० त० आलोयणारिहे, पडिक्कमणा-रिहे, तदुभयारिहे ॥ २५९ ॥ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण तओ अकम्मभूमीओ प० त० हेमवए हरिवासे देवकुरा, जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्व-यस्स उत्तरेण तओ अकम्मभूमीओ प० त० उत्तरकुरा, रम्मगवासे, एरन्नवए, जंबुद्दीवे दीवे मदरपव्वयस्स दाहिणेणं तओ वासा प० त० भरहे, हेमवए, हरि-वासे, जंबूमंदरस्स उत्तरेण तओ वासा प० त० रम्मगवासे, हेरन्नवए, एरवए, जबूमदरस्स दाहिणेणं तओ वासहरपव्वया प० त० चुल्लहिमवते, महाहिमवंते, णिसढे, जबूमदरस्स उत्तरेण तओ वासहरपव्वया प० त० णीलवते, रुप्पी, सिहरी, जबूमदरस्स दाहिणेण तओ महादहा प० त० पउमद्दहे, महापउमद्दहे, तिगिच्छिद्दहे, तत्थ ण तओ देवयाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिईयाओ परि-वसति तं० सिरी, हिरी, धिई । एव उत्तरेण वि, णवरं केसरिद्दहे, महापोंडरीयद्दहे, पोंडरीयद्दहे, देवयाओ कित्ती, बुद्धी, लच्छी, जबूमदरस्स दाहिणेण चुल्लहिमवताओ वासहरपव्वयाओ पउमदहाओ महादहाओ तओ महाणईओ पवहति तं० गगा सिन्धू रोहियसा। जबूमदरस्स उत्तरेण सिहरीओ वासहरपव्वयाओ पोंडरीयद्दहाओ महद्दहाओ तओ महाणदीओ पवहति त० सुवन्नकूला रत्ता रत्तवई । जंबूमदरस्स पुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेण तओ अतरणईओ प० त० गाहावई, दहवई, पंकवई, जबूमंदरस्स पुरत्थिमेण सीयाए महाणईए दाहिणेणं तओ अंत-रणईओ प० त० तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला, जंबूमदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओदाए महाणईए दाहिणेण तओ अतरणईओ प० त० खीरोदा, सीहसोया, अतोवाहिणी, जबूमदरस्स पच्चत्थिमेण सीओदाए महाणईए उत्तरेण तओ अतरण-ईओ प० त० उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गभीरमालिणी, एव धायईसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि अकम्मभूमीओ आढवेत्ता जाव अंतरणईओत्ति, णिरवसेसं भाणि-यव्व, जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे तहेव णिरवसेस भाणियव्वं ॥ २६० ॥ तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा तजहा—अहेणमिमीसे रयणप्पभाए पुढवीए

मडलियपव्वया प० त० माणुसुत्तरे कुंडलवरे रुयगवरे, तओ महइमहालया प० तं० जंबुद्दीवे दीवे मंदरे मंदरेसु, सयंभुरमणसमुद्दे समुद्देसु, बंभलोए कप्पे कप्पेसु ॥ २६७ ॥ तिविहा कप्पठिई प० तं० सामाइयकप्पठिई छेदोवट्ठावणियकप्पठिई निव्विसमाणकप्पठिई, अहवा तिविहा कप्पठिई प० तं० णिविट्ठकप्पठिई, जिणकप्पठिई, थेरकप्पठिई ॥ २६८ ॥ णेरइयाणं तओ सरीरगा प० त० वेउव्विए, तेयए, कम्मए, असुरकुमाराणं तओ सरीरगा, एव चेय सव्वेसिं देवाण, पुढवीकाइयाण तओ सरीरगा प० तं० ओरालिए, तेयए, कम्मए, एवं वाउकाइयवज्जाण जाव चउरिंदियाण ॥ २६९ ॥ गुरु पडुच्च तओ पडिणीया प० त० आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए, गइ पडुच्च तओ पडिणीया प० त० इहलोयपडिणीए, परलोयपडिणीए, दुहओलोयपडिणीए । समूहं पडुच्च तओ पडिणीया प० त० कुलपडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए, अणुकंप पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए, भावं पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० णाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए, सुय पडुच्च तओ पडिणीया प० त० सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए ॥ २७० ॥ तओ पितियंगा प० त० अट्ठी, अट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे । तओ माउयंगा प० त० मंसे, सोणिए, मत्थुलिंगे ॥ २७१ ॥ तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ त० कया णं अहं अप्पं वा बहुं वा सुयं अहिज्जिस्सामि, कया णं अहं एकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सामि, कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि । एवं समणसा सवयसा सकायसा, पागडेमाणे निग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ २७२ ॥ तिहिं ठाणेहिं समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ त० कयाणमहमप्पं वा, बहुअं वा परिग्गहं परिच्चइस्सामि, कयाणमहं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि, कयाणमपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि, एवं समणसा सवयसा सकायसा जागरमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ २७३ ॥ तिविहे पोग्गलपडिघाए प० त० परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलं पप्प पडिहण्णिज्जा, लुक्खत्ताए वा पडिहण्णिज्जा, लोगंते वा पडिहण्णिज्जा ॥ २७४ ॥ तिविहे चक्खू प० त० एगचक्खू, बिचक्खू, तिचक्खू, छउमत्थेणं मणुस्से एगचक्खू, देवे बिचक्खू, तहारूवे समणे वा णिग्गंथे वा उप्पन्नणाणदंसणधरे से णं तिचक्खुत्ति वत्तव्वं सिया ॥ २७५ ॥ तिविहे अभि-

रोएइ, त परीसहा अभिजुजिय अभिजुजिय अभिभवंति, नो से परीसहे अभि-जुजिय अभिजुजिय अभिभवइ, से णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंचहिं महव्वएहिं सकिए जाव कलुसमावण्णे, पचमहव्वयाइ णो सद्दहइ जाव नो से परीसहे अभिजुजिय २ अभिभवइ, से ण मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं जाव अभिभवइ, तओ ठाणा ववसिअस्स हियाए जाव आणुगामियत्ताए भवति त० से ण मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए णिग्गथे पावयणे णिस्सकिए णिक्कखिए जाव णो कलुससमावण्णे णिग्गथ पावयण सद्दहइ पत्तियइ रोएइ से परीसहे अभिजुजिय २ अभिभवइ, णो तं परीसहा अभिजुजिय २ अभिभवति, सेण मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचहिं महव्वएहिं णिस्सकिए णिक्कखिए जाव, परीसहे अभिजुजिय २ अभिभवइ, णो त परीसहा अभिजुजिय २ अभिभवंति, से णं जाव छहिं जीव-निकाएहिं णिस्सकिए जाव परीसहे अभिजुजिय २ अभिभवइ णो त परीसहा अभिजुजिय २ अभिभवति ॥ २८५ ॥ एगमेगाण पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता तजहा–घणोदहिवलएण, घणवायवलएण, तणुवायवलएण ॥ २८६ ॥ णेरइयाण उक्कोसेणं तिसमइएण विग्गहेण उववज्जति एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाण ॥ २८७ ॥ खीणमोहस्सण अरहओ तओ कम्मसा जुगव खिज्जति तं० णाणावरणिज्ज, दसणावरणिज्ज, अतराइय ॥ २८८ ॥ अभीइणक्खत्ते तितारे प० एव सवणे अस्सिणी भरणी मगसिरे पूसे जेट्ठा ॥ २८९ ॥ धम्माओ णं अरहाओ सती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भाग पलिओवमऊणएहिं वीइक्कतेहिं समुप्पन्ने । समणस्स ण भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगतकडभूमी, मल्लीण अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवेत्ता जाव पव्वइए, एव पासेवि, समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिन्निसया चोद्दसपुव्वीण अजिणाणं जिणसकासाण सव्वक्खर-सन्निवाईणं जिण इव अवितहवागरमाणाण उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसपया होत्था, तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था त० सती कुथू अरो ॥ २९० ॥ तओ गेविज्ज-विमाणपत्थडा प० त० हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे, हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे प० त० हिट्ठिम-हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे, हिट्ठिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे हिट्ठिमउवरिम-गेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे, तिविहे प० त० मज्झिमहिट्ठिम-गेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिमउवरिमगेविज्ज-विमाणपत्थडे, उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे प० त० उवरिमहिट्ठिमगेविज्ज-

इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, अहुणोववन्ने नेरइए निरयलोगंसि निरयपालेहिं भुज्जो भुज्जो अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, अहुणोववन्ने नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छेज्जा णो चेव णं संचाएइ, हव्वमागच्छित्तए, एवं निरयाउयंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव णो संचाएइ हव्वमागच्छित्तए इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने नेरइए जाव णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ १ ६ ॥ कप्पंति णिग्गंथीणं चत्तारि संघाडीओ धारित्तए वा परिहरित्तए वा तं एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ एगं चउहत्थवित्थारं ॥ १ ७ ॥ चत्तारि झाणा प तं अट्टे झाणे रोद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे अट्टे झाणे चउव्विहे प तं अमणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमन्नागए यावि भवइ, मणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसतिसमन्नागए यावि भवइ, आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमन्नागए यावि भवइ, परिजुसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसतिसमन्नागए यावि भवइ, अट्टस्स झाणस्स चत्तारि लक्खणा प तं कंदणया सोयणया तिप्पणया परिदेवणया रोद्दे झाणे चउव्विहे प तं हिंसाणुबंधि मोसाणुबंधि तेणाणुबंधि सारक्खणाणुबंधि । रोद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा प तं ओसन्नदोसे बहुलदोसे अन्नाणदोसे आमरणंतदोसे । धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे प तं आणाविजए, अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए । धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा प तं आणारुई, णिसग्गरुई, सुत्तरुई, ओगाढरुई । धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा प तं वायणा, पडिपुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा । धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ प तं एगाणुप्पेहा अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा । सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे प तं पुहुत्तवियक्के सवियारी एगत्तवियक्के अवियारी सुहुमकिरिए अणियट्टी समुच्छिन्नकिरिए अप्पडिवाई । सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा प तं अव्वहे असम्मोहे विवेगे विउस्सग्गे सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा प तं खंती मुत्ती मद्दवे अज्जवे सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ प तं अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा ॥ १ ८ ॥ चउव्विहा देवाण ठिई प तं देवे णाममेगे देवसिणाए णाममेगे देवपुरोहिए णाममेगे देवपज्जलणे णाममेगे ॥ १ ९ ॥ चउव्विहे संवासे प तं देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा देवे णाममेगे छवीए सद्धिं संवासं

णाममेगे उन्नए रूवे, तहेव चउभंगो, एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० उन्नए णाम ४। चत्तारि पुरिसजाया प० त० उन्नए णाममेगे उन्नए मणे, उन्न० एवं सकप्पे-पन्ने-दिट्ठी-सीलाचारे-ववहारे-परक्कमे-एगे पुरिसजाए पडिवक्खो णत्थि ॥ २९५ ॥ चत्तारि रुक्खा प० त० उज्जूणाममेगे उज्जू, उज्जूणाममेगे वंके, चउभंगो। एवमेव चत्तारि पुरिसजाया, प० त० उज्जूणाममेगे उज्जू ४ एवं जहा उन्नयपणएहिं गमो तहा उज्जुवंकेहिं वि भाणियव्वो, जाव परक्कमे ॥ २९६ ॥ पडिमापडिवन्नस्स णं अणगारस्स कप्पंति **चत्तारि भासाओ** भासित्तए तं० जायणी पुच्छणी अणुन्नवणी पुट्ठस्स वागरणी । **चत्तारिभासजाया** प० त० सच्चमेगं भासजायं, बीयं मोसं तइयं सच्चमोसं चउत्थं असच्चमोसं ॥ २९७ ॥ चत्तारि वत्था प० त० सुद्धे णाममेगे सुद्धे, सुद्धे णाममेगे असुद्धे, असुद्धे णाममेगे सुद्धे, असुद्धे णाममेगे असुद्धे। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० सुद्धे णाममेगे सुद्धे चउभंगो। एवं परिणयरूवे वत्था सपडिवक्खा ॥ २९८ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० त० सुद्धे णाममेगे सुद्धमणे चउभंगो, एवं सकप्पे जाव परक्कमे ॥ २९९ ॥ चत्तारि **सुया** प० त० अइजाए, अणुजाए, अवजाए, कुलिंगाले ॥ ३०० ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० त० सच्चे णाममेगे सच्चे, सच्चे णाममेगे असच्चे (४) एवं परिणए जाव परक्कमे ॥ ३०१ ॥ चत्तारि वत्था प० तं० सुई णाममेगे सुई, सुई णाममेगे असुई, चउभंगो, एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० सुई णाममेगे सुई, चउभंगो। एवं जहेव सुद्धेण वत्थेण भणियं, तहेव सुइणावि जाव परक्कमे ॥ ३०२ ॥ चत्तारि कोरवा प० त० अंवपलवकोरवे, **तालपलंबकोरवे**, वल्लिपलवकोरवे, मिंढविसाणकोरवे, एवमेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० अंवपलवकोरवसमाणे, **तालपलवको वसमाणे**, वल्लिपलवकोरवसमाणे, मिंढविसाणकोरवसमाणे ॥ ३०३ ॥ चत्तारि **घुणा** प० त० तयक्खाए, छल्लिक्खाए, कट्ठक्खाए, सारक्खाए, एवमेव चत्तारि भिक्खायरा प० तं० तयक्खायसमाणे, जाव सारक्खायसमाणे, तयक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स सारक्खायसमाणे तवे प० सारक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे पन्नत्ते, छल्लिक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स कट्ठक्खायसमाणे तवे प० कट्ठक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स छल्लिक्खायसमाणे तवे प० ॥ ३०४ ॥ चउव्विहा तणवणस्सइकाइया प० त० अग्गवीया मूलवीया पोरबीया खंधबीया ॥ ३०५ ॥ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगंसि समुब्भूयं वेयणं वेयमाणे

गच्छेज्जा, छवीणाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवीणाममेगे छवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा ॥३१०॥ चत्तारि कसाया प०त० कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, चउप्पइट्ठिए कोहे प० तं० आयपइट्ठिए, परपइट्ठिए, तदुभयपइट्ठिए, अपइट्ठिए, एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव लोभे वेमाणियाणं, चउहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्ती सिया तं० खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव लोहे वेमाणियाणं, चउव्विहे कोहे प० तं० अणंताणुबंधिकोहे, अपच्चक्खाणकोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव लोभे वेमाणियाणं, चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, आभोगनिव्वत्तिए, अणाभोगनिव्वत्तिए, उवसंते, अणुवसंते, एवं नेरइयाणं, जाव वेमाणियाणं, एवं जाव लोभे, जाव वेमाणियाणं ॥ ३११ ॥ जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु तं० कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं, एवं जाव वेमाणियाणं, एवं चिणंति एस दंडओ। एवं चिणिस्संति एस दंडओ, एवमेएणं तिन्नि दंडगा, एवं उवचिणिंसु, उवचिणंति, उवचिणिस्संति, बंधिंसु ३। उदीरिंसु ३। वेदेंसु ३। णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्संति, जाव वेमाणियाणमेवमेक्किक्के पदे तिन्नि २ दंडगा भाणियव्वा, जाव निज्जरिस्संति ॥ ३१२ ॥ चत्तारि पडिमाओ प० तं० समाहिपडिमा, उवहाणपडिमा, विवेगपडिमा, विउस्सग्गपडिमा, चत्तारि पडिमाओ प० तं० भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओभद्दा, चत्तारि पडिमाओ प० तं० खुड्डियामोयपडिमा, महल्लियामोयपडिमा, जवमज्झा, वइरमज्झा ॥ ३१३ ॥ चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया प० तं० धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, चत्तारि अत्थिकाया अरूविकाया प० तं० धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए ॥ ३१४॥ चत्तारि फला प०त० आमेणाममेगे आममहुरे, आमेणाममेगे पक्कमहुरे, पक्केणाममेगे आममहुरे, पक्केणाममेगे पक्कमहुरे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आमेणाममेगे आममहुरफलसमाणे (४) ॥ ३१५ ॥ चउव्विहे सच्चे प० तं० काउज्जुयया, भासुज्जुयया, भावुज्जुयया, अविसंवायणाजोगे, चउव्विहे मोसे प० तं०—कायअणुज्जुयया, भासअणुज्जुयया, भावअणुज्जुयया, विसंवादणाजोगे ॥ ३१६ ॥ चउव्विहे पणिहाणे प० तं० मणपणिहाणे, वइपणिहाणे, कायपणिहाणे, उवगरणपणिहाणे। एवं नेरइयाणं पंचिंदियाणं जाव वेमाणियाणं, चउव्विहे सुप्पणिहाणे प० तं० मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरणसुप्पणिहाणे, एवं संजयमणुस्साणवि, चउव्विहे दुप्पणिहाणे प० तं० मणदुप्पणिहाणे जाव उवगरण

रन्नो मज्झिमपरिसाए देवीण चत्तारि पलिओवमाइं ठिई प० ॥ ३२३ ॥ चउव्विहे **संसारे** दव्वससारे खेत्तससारे कालससारे भावससारे ॥ ३२४ ॥ चउव्विहे **दिट्ठिवाए** प० त० परिकम्म सुत्ताइ पुव्वगए अणुजोगे ॥ ३२५ ॥ चउव्विहे **पायच्छित्ते**, णाणपायच्छित्ते दसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते वियत्तकिच्चपाय-च्छित्ते, चउव्विहे पायच्छित्ते, पडिसेवणापायच्छित्ते सजोयणापायच्छित्ते, आरोवणापा-यच्छित्ते, पलिउचणापायच्छित्ते ॥३२६॥ चउव्विहे **कले** पमाणकाले अहाउयणि-व्वत्तिकाले मरणकाले अद्धाकाले ॥ ३२७ ॥ चउव्विहे पोग्गलपरिणामे, वण्णपरि णामे गंधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे ॥ ३२८ ॥ भरहेरवएसु ण वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्झिमगा वावीस अरहता भगवंता चाउज्जाम धम्म पन्नविंति त० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, एव मुसावायाओ, अदिन्नादाणाओ, सव्वाओ वहिद्धादाणाओ वेरमणं । सव्वेसु ण महाविदेहेसु अरहंता भगवता चाउज्जामं धम्मं पन्नवयंति त० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण जाव सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण ॥३२९॥ चत्तारि **दुग्गईओ** प० त० णेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणियदुग्गई, मणुस्सदुग्गई, देवदुग्गई, चत्तारि **सोग्गई** प० त० सिद्धसोग्गई, देवसोग्गई, मणुयसोग्गई, सुकुले पच्चायाई, चत्तारि दुग्गया प० त० णेरइयदु० जाव देवदुग्गया, चत्तारि सुगया प० त० सिद्धसुगया जाव सुकुलपच्चायाया ॥ ३३० ॥ पढमसमय-जिणस्स ण चत्तारि कम्मंसा खीणा भवति त० णाणावरणिज्ज, दरिसणावरणिज्ज, मोहणिज्ज, अतराइय । उप्पन्नणाणदसणधरे ण अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मसे वेदेति त० वेयणिज्ज आउयं णामं गोयं । पढमसमयसिद्धस्स ण चत्तारि कम्मंसा जुगव खिज्जंति तं० वेयणिज्ज आउय णाम गोय ॥ ३३१ ॥ चउहिं ठाणेहिं **हासु-प्पत्ती सिया** त० पासेत्ता भासेत्ता सुणेत्ता सभरेत्ता ॥ ३३२ ॥ चउव्विहे अतरे प० त० कट्ठतरे पम्हतरे लोहतरे पत्थरंतरे । एवामेव इत्थीए वा पुरिसस्स वा, चउव्विहे अतरे प० तं० कट्ठतरसमाणे, पम्हतरसमाणे, लोहतरसमाणे, पत्थरं-तरसमाणे ॥ ३३३ ॥ चत्तारि भयगा प० त० दिवसभयए जत्ताभयए उच्चत्तभयए कव्वालभयए ॥ ३३४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सपागडपडिसेवी णाममेगे णो पच्छण्णपडिसेवी, पच्छण्णपडिसेवी णाममेगे णो सपागडपडिसेवी, एगे सपागड-पडिसेवीवि पच्छण्णपडिसेवीवि, एगे णो सपागडपडिसेवी णो पच्छण्णपडिसेवी ॥ ३३५ ॥ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० त० कणगा कणगलया चित्तगुत्ता वसुधरा, एवं जमस्स वरु-णस्स वेसमणस्स, वलिस्स ण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो, सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० मित्तगा सुभद्दा विज्जुया असणी, एव जमस्स वेस-

अगुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा गुत्तदुवारा, अगुत्ता णाममेगा अगुत्तदुवारा, एवामेव चत्तारित्थीओ प० त० गुत्ता णाममेगा गुत्तिंदिया, गुत्ता णाममेगा अगुत्तिंदिया ४। ॥ ३३८ ॥ चउव्विहा ओगाहणा प० त० दव्वोगाहणा खेत्तोगाहणा कालोगाहणा भावोगाहणा ॥ ३३९ ॥ चत्तारि पण्णत्तीओ अगबाहिरियाओ प० त० चदपण्णत्ती सूरपण्णत्ती जबुद्दीवपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती ॥ ३४० ॥

चउट्ठाणस्स पढमोद्देसो समत्तो ॥

चत्तारि पडिसलीणा प० त० कोहपडिसलीणे माणपडिसंलीणे मायापडिसलीणे लोभपडिसंलीणे, चत्तारि अपडिसंलीणा प० त० कोहअपडिसलीणे जाव लोभअपडिसलीणे। चत्तारि पडिसलीणा प० त० मणपडिसलीणे, वइपडिसलीणे, कायपडिसलीणे, इंदियपडिसलीणे, चत्तारि अपडिसलीणा प० त० मणअपडिसलीणे जाव इदिय० ॥ ३४१ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० त० दीणे णाममेगे दीणे, दीणे णाममेगे अदीणे, अदीणे णाममेगे दीणे, अदीणे णाममेगे अदीणे। चत्तारि पुरिसजाया प० त० दीणे णाममेगे दीणपरिणए, दीणे णाममेगे अदीणपरिणए, अदीणे णाममेगे दीणपरिणए, अदीणे णाममेगे अदीणपरिणए, चत्तारि पुरिसजाया प० त० दीणे णाममेगे दीणरूवे ४। एव दीणमणे दीणसकप्पे दीणपण्णे दीणदिट्ठी दीणसीलायारे दीणववहारे ४। चत्तारि पुरिसजाया प० त० दीणे णाममेगे दीणपरक्कमे, दीणे णाममेगे अदीणपरक्कमे ४। एव सव्वेसिं चउभगो भाणियव्वो। चत्तारि पुरिसजाया प० त० दीणे णाममेगे दीणवित्ती ४। एव दीणजाई दीणभासी दीणोभासी, चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता प० त० दीणे णाममेगे दीणसेवी ४। एव दीणे णाममेगे दीणपरियाए ४ एव दीणे णाममेगे दीणपरियाले ४। सव्वत्थ चउभगो ॥३४२॥ चत्तारि पुरिसजाया प० त० अज्जे णाममेगे अज्जे ४। चत्तारि पुरिसजाया प० त० अज्जे णाममेगे अज्जपरिणए ४। एव अज्जरूवे ४। अज्जमणे ४। अज्जसकप्पे ४। अज्जपण्णे ४। अज्जदिट्ठी ४। अज्जसीलायारे ४। अज्जववहारे ४। अज्ज परक्कमे ४। अज्जवित्ती ४। अज्जजाई ४। अज्जभासी ४। अज्ज ओभासी ४। अज्जसेवी ४। एवं अज्जपरियाए ४। अज्जपरियाले ४। एव सत्तरस आलावगा, जहा दीणेण भणिया तहा अज्जेणवि भाणियव्वा। चत्तारि पुरिसजाया प० त० अज्जे णाममेगे अज्जभावे, अज्जे णाममेगे अणज्जभावे, अणज्जे णाममेगे अज्जभावे, अणज्जे णाममेगे अणज्जभावे ॥ ३४३ ॥ चत्तारि उसभा प० त० जाइसंपन्ने कुलसपन्ने बलसपन्ने रूवसपण्णे, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने कुलसपन्ने बलसपन्ने रूवसपन्ने, चत्तारि उसभा प० त० जाइसंपन्ने णाममेगे णो कुलसंपन्ने, कुलसपन्ने णाममेगे णो

गवेसइत्ता भवइ, इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव नो समुप्पज्जेज्जा चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अइसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा तं० इत्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं नो कहेत्ता भवइ, विवेगेण विउस्सग्गेणं सम्ममप्पाणं भावेत्ता भवइ, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरइत्ता भवइ, फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसइत्ता भवइ, इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा जाव समुप्पज्जेज्जा ॥ १५३ ॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करेत्तए तं० आसाढपाडिवए इंदमहपाडिवए कत्तियपाडिवए सुगिम्हपाडिवए, नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए तं० पढमाए पच्छिमाए मज्झण्हे अड्ढरत्ते । कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए तं० पुव्वण्हे अवरण्हे पओसे पच्चूसे ॥ १५४ ॥ चउव्विहा लोगट्ठिई प० तं० आगासपइट्ठिए वाए, वायपइट्ठिए उदही उदहिपइट्ठिया पुढवी पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा ॥ १५५ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० तहे नाममेगे नोतहे नाममेगे सोवत्थी नाममेगे पहाणे नाममेगे ॥ १५६ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आयंतकरे नाममेगे नो परंतकरे, परंतकरे नाममेगे नो आयंतकरे, एगे आयंतकरेवि परंतकरेवि एगे नो आयंतकरे नो परंतकरे, चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आयंतमे नाममेगे नो परंतमे परंतमे नाममेगे नो आयंतमे ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आयंदमे नाममेगे नो परंदमे परंदमे नाममेगे नो आयंदमे एगे आयंदमेवि परंदमेवि एगे नो आयंदमे नो परंदमे ॥ १५७ ॥ चउव्विहा गरहा प० तं० उवसंपज्जामित्ति एगा गरहा वितिगिच्छामित्ति एगा गरहा जं किंचिमिच्छामित्ति एगा गरहा एवंपि पन्नत्ते एगा गरहा ॥ १५८ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० अप्पणो नाममेगे अलमंथू भवइ नो परस्स परस्स नाममेगे अलमंथू भवइ नो अप्पणो एगे अप्पणोवि अलमंथू भवइ परस्सवि एगे नो अप्पणो अलमंथू भवइ नो परस्स ॥ १५९ ॥ चत्तारि मग्गा प० तं० उज्जू नाममेगे उज्जू उज्जू नाममेगे वंके, वंके नाममेगे उज्जू वंके नाममेगे वंके । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उज्जू नाममेगे उज्जू ४ । चत्तारि मग्गा प० तं० खेमे नाममेगे खेमे खेमे नाममेगे अखेमे ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० खेमे नाममेगे खेमे ४ । चत्तारि मग्गा प० तं० खेमे नाममेगे खेमरूवे खेमे नाममेगे अखेमरूवे ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० खेमे नाममेगे खेमरूवे ४ ॥ १६० ॥ चत्तारि संबुक्का प० तं० वामे नाममेगे वामावत्ते, वामे नाममेगे दाहिणावत्ते

कालम्मि (५) ॥ ३४९ ॥ **चत्तारि विकहाओ** प० त० इत्थिकहा भत्तकहा देसकहा रायकहा। **इत्थिकहा चउव्विहा** प० त० इत्थीण जाइकहा, इत्थीण कुलकहा, इत्थीण रूवकहा, इत्थीणं नेवत्थकहा, **भत्तकहा** चउव्विहा प० त० भत्तस्स आवावकहा, भत्तस्स निव्वावकहा, भत्तस्स आरंभकहा, भत्तस्स णिट्ठाण-कहा। **देसकहा** चउव्विहा प० त० देसविहिकहा, देसविकप्पकहा, देसच्छंदकहा, देसनेवत्थकहा, **रायकहा** चउव्विहा प० त० रण्णो अइयाणकहा रण्णो निज्जाण-कहा, रण्णो बलवाहणकहा, रण्णो कोसकोट्ठागारकहा ॥३५०॥ चउव्विहा **धम्म-कहा** प० त० अक्खेवणी विक्खेवणी संवेगणी णिव्वेगणी। **अक्खेवणी कहा** चउव्विहा प० त० आयारऽक्खेवणी ववहारऽक्खेवणी पण्णत्तिऽक्खेवणी दिट्ठि-वायअक्खेवणी। **विक्खेवणी कहा** चउव्विहा प० त० ससमय कहेइ, ससमय कहेत्ता परसमय कहेइ, परसमय कहेत्ता ससमय ठावित्ता भवइ, सम्मावायं कहेइ, सम्मावाय कहेत्ता मिच्छावाय कहेइ, मिच्छावाय कहेत्ता सम्मावायं ठावइत्ता भवइ। **संवेगणी कहा** चउव्विहा प० त० इहलोगसवेगणी परलोग-सवेगणी आयसरीरसवेगणी परसरीरसवेगणी। **णिव्वेगणी कहा** चउव्विहा प० त० इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवति, इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवति, परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफल-विवागसजुत्ता भवति। परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसजुत्ता भवति। इहलोगे सुचिण्णाकम्मा इहलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति, इहलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसजुत्ता भवति, एव चउभगो तहेव ॥ ३५१ ॥ चत्तारि पुरि-सजाया प० त० किसे णाममेगे किसे, किसे णाममेगे दढे, दढे णाममेगे किसे, दढे णाममेगे दढे। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० किसे णाममेगे किससरीरे, किसे णाम-मेगे दढसरीरे, दढे णाममेगे किससरीरे, दढे णाममेगे दढसरीरे। चत्तारि पुरिस-जाया प० त० किससरीरस्स णाममेगस्स णाणदसणे समुप्पज्जइ णो दढसरीरस्स, दढसरीरस्स णाममेगस्स णाणदसणे समुप्पज्जइ णो किससरीरस्स, एगस्स किससरी-रस्स वि णाणदसणे समुप्पज्जइ दढसरीरस्स वि, एगस्स णो किससरीरस्स णाणदसणे समुप्पज्जइ णो दढसरीरस्स ॥ ३५२ ॥ चउहिं ठाणेहिं णिग्गथाण वा, णिग्गथीण वा अस्सिं समयसि अइसेसे णाणदसणे समुप्पज्जिउकामेवि णो समुप्पज्जेज्जा तं० अभि-क्खण अभिक्खण इत्थिकहं भत्तकह देसकह रायकह कहेत्ता भवइ, विवेगेण विउ-सग्गेण णो सम्ममप्पाण भावेत्ता भवइ, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि णो धम्मजाग-रियं जागरित्ता भवइ, फासुयस्स एसणिज्जस्स उञ्छस्स सामुदाणियस्स णो सम्मं

सलयाथंभसमाणे। सेलथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ, एवं जाव तिणिसलयाथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ ॥ ११७ ॥ चत्तारि वत्था प० तं० किमिरागरत्ते कद्दमरागरत्ते खंजणरागरत्ते हलिद्दरागरत्ते एवामेव चउव्विहे लोभे प० तं० किमिरागरत्तवत्थसमाणे कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे खंजणरागरत्तवत्थसमाणे हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे किमिरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ, तहेव जाव हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ ॥ ११८ ॥ चउव्विहे संसारे प० तं० णेरइयसंसारे जाव देवसंसारे चउव्विहे आउए प० तं० णेरइयआउए जाव देवाउए, चउव्विहे भवे प० तं० णेरइयभवे जाव देवभवे ॥ ११९ ॥ चउव्विहे आहारे प० तं० असणे पाणे खाइमे साइमे। चउव्विहे आहारे प० तं० उवक्खरसंपन्ने उवक्खडसंपन्ने सभावसंपन्ने, परिजुसियसंपन्ने ॥ १२० ॥ चउव्विहे बंधे प० तं० पगइबंधे ठिइबंधे अणुभावबंधे पएसबंधे चउव्विहे उवक्कमे प० तं० बंधणोवक्कमे उदीरणोवक्कमे उवसमणोवक्कमे विप्परिणामणोवक्कमे बंधणोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइबंधणोवक्कमे ठिइबंधणोवक्कमे अणुभावबंधणोवक्कमे पएसबंधणोवक्कमे उदीरणोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइउदीरणोवक्कमे ठिइउदीरणोवक्कमे अणुभावउदीरणोवक्कमे पएसउदीरणोवक्कमे उवसामणोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइउवसामणोवक्कमे ठिइअणुभावपएसउवसामणोवक्कमे। विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइठिइअणुभावपएसविप्परिणामणोवक्कमे। चउव्विहे अप्पाबहुए प० तं० पगइअप्पाबहुए ठिइअणुभावपएसअप्पाबहुए, चउव्विहे संकमे प० तं० पगइसंकमे ठिइअणुभावपएससंकमे। चउव्विहे णिधत्ते प० तं० पगइणिधत्ते ठिइअणुभावपएसणिधत्ते। चउव्विहे णिकायए प० तं० पगइणिकायए, ठिइणिकायए, अणुभावणिकायए, पएसणिकायए ॥ १२१ ॥ चत्तारि एक्का प० तं० दविए एक्कए माउएक्कए पज्जवएक्कए संगहएक्कए, चत्तारि कई प० तं० दवियकई माउयकई पज्जवकई संगहकई, चत्तारि सव्वा प० तं० णामसव्वए ठवणसव्वए आएससव्वए निरवसेससव्वए ॥ १२२ ॥ माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउद्दिसिं चत्तारि कूडा प० तं० रयणे रयणुच्चए सव्वरयणे रयणसंचए ॥ १२३ ॥ जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु वासेसु तीयाए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो होत्था, जंबुद्दीवे २ भरहेरवएसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो होत्था। जंबुद्दीवे दीवे जाव आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए

दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वामे णाममेगे वामावत्ते ४। चत्तारि धूमसिहाओ प० तं० वामा णाममेगा वामावत्ता ४। एवामेव चत्तारित्थियाओ प० तं० वामा णाममेगा वामावत्ता ४। चत्तारि अग्गिसिहाओ प० तं० वामा णाममेगा वामावत्ता ४। एवामेव चत्तारित्थियाओ प० तं० वामा णाममेगा वामावत्ता ४। चत्तारि वायमंडलिया, वामा णाममेगा वामावत्ता ४। एवामेव चत्तारित्थियाओ प० तं० वामा णाममेगा वामावत्ता ४। चत्तारि वणखडा प० तं० वामे णाममेगे वामावत्ते ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वामे णाममेगे वामावत्ते ४॥ ३६१॥ चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं आलवमाणे वा संलवमाणे वा णाइक्कमइ, तं० पथं पुच्छमाणे वा पथं देसमाणे वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दलयमाणे वा, दलावेमाणे वा ॥३६२॥ तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० तमेइ वा, तमुक्काएइ वा, अंधयारेइ वा, महंधयारेइ वा, तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० लोगंधयारेइ वा, लोगतमसेइ वा, देवंधयारेइ वा, देवतमसेइ वा, तमुक्कायस्स णं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० वायफलिहेइ वा, वायफलिहखोभेइ वा, देवरण्णेइ वा, देववूहेइ वा, तमुक्काए णं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठइ तं० सोहम्मीसाणं सणंकुमारमाहिंदं ॥ ३६३ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० संपागडपडिसेवी णाममेगे, पच्छण्णपडिसेवी णाममेगे, पडुप्पण्णणंदी णाममेगे, णिस्सरणणंदी णाममेगे ॥ ३६४ ॥ चत्तारि सेणाओ प० तं० जइत्ता णाममेगा णो पराजिणित्ता, पराजिणित्ता णाममेगा णो जइत्ता, एगा जइत्ता वि पराजिणित्तावि, एगा णो जइत्ता णो पराजिणित्ता । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जइत्ता णाममेगे णो पराजिणित्ता ४। चत्तारि सेणाओ प० तं० जइत्ता णाममेगा जयइ, जइत्ता णाममेगा पराजिणइ, पराजिणित्ता णाममेगा जयइ, पराजिणित्ता णाममेगा पराजिणइ, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जइत्ता णाममेगे जयइ ॥ ३६५॥ चत्तारि केअणा प० तं० वंसीमूलकेअणए, मेंढविसाणकेअणए, गोमुत्तिकेअणए, अवलेहणियकेअणए। एवामेव चउव्विहा माया प० तं० वंसीमूलकेअणासमाणा जाव अवलेहणियाकेअणासमाणा, वंसीमूलकेअणासमाणं मायं अणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ, मेंढविसाणकेअणासमाणं मायमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ, गोमुत्तिअं जाव कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ, अवलेहणिया जाव देवेसु उववज्जइ ॥ ३६६ ॥ चत्तारि थंभा प० तं० सेलथंभे अट्ठिथंभे दारुथंभे, तिणिसलयाथंभे, एवामेव चउव्विहे माणे प० तं० सेलथंभसमाणे जाव तिणि-

ओभासिया वेसाणिया णंगोलिया। तेसि णं दीवाणं चउसु वि दिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० हयकण्णदीवे गयकण्णदीवे गोकण्णदीवे सक्कुलिकण्णदीवे, तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति तं० हयकण्णा गयकण्णा गोकण्णा सक्कुलिकण्णा। तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं पंच पंच जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० आयंसमुहदीवे मेंढमुहदीवे अओमुहदीवे गोमुहदीवे। तत्थ णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा। तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं छ छ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० आसमुहदीवे हत्थिमुहदीवे सीहमुहदीवे वग्घमुहदीवे तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं सत्तसत्तजोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० आसकण्णदीवे हत्थिकण्णदीवे अकण्णदीवे कण्णपाउरणदीवे। तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा। तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्ठ अट्ठजोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० उक्कामुहदीवे मेहमुहदीवे विज्जुमुहदीवे विज्जुदंतदीवे तेसु णं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा। तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं नव नव जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० घणदंतदीवे लट्ठदंतदीवे गूढदंतदीवे सुद्धदंतदीवे, तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति तं० घणदंता लट्ठदंता गूढदंता सुद्धदंता। जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० एगूरुयदीवे सेसं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव सुद्धदंता ॥ १७४ ॥ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थणं महइमहालया महालिंजरसंठाणसंठिया चत्तारि महापायाला प० तं० वलयामुहे केउए जूवए ईसरे तत्थणं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसंति तं० काले महाकाले वेलंबे पभंजणे ॥ १७५ ॥ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं बायालीसं २ जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं चउण्हं वेलंधरनागराईणं चत्तारि आवासपव्वया प० तं० गोथूभे उदगभासे संखे दगसीमे तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव परिवसंति तं० गोथूभे सिवए जाव मणोसिलए। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं बायालीसं २ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थणं चउण्हं अणुवेलंधरनागराईणं चत्तारि आवासपव्वया प० तं० कक्कोडए विज्जुप्पभे

चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो भविस्सइ, जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ प० तं० हेमवए एरण्णवए हरिवासे रम्मगवासे, चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वया प० तं० सद्दावई वियडावई गंधावई मालवंतपरियाए। तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमठिइया परिवसंति तं० साई पभासे अरुणे पउमे, जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहेवासे चउव्विहे प० तं० पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा, सव्वेवि ण णिसढणीलवंतवासहरपव्वया चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण, चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेण प०। जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण सीआए महाणईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया प० तं० चित्तकूडे पम्हकूडे णलिणकूडे एगसेले, जंबूमदरपुरत्थिमेण सीआए महाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया प० तं० तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे, जंबूमदरस्स पच्चत्थिमेण सीओआए महाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया प० तं० अंकावई पम्हावई आसीविसे सुहावहे। जंबूमदरस्स पच्चत्थिमेण सीओआए महाणईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया प० तं० चंदपव्वए सूरपव्वए देवपव्वए णागपव्वए, जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया प० तं० सोमणसे विज्जुप्पभे गंधमायणे मालवंते, जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे जहण्णपए चत्तारि अरिहंता, चत्तारि चक्कवट्टी, चत्तारि बलदेवा, चत्तारि वासुदेवा, उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए चत्तारि वणा प० तं० भद्दसालवणे, णंदणवणे, सोमणसवणे, पंडगवणे, जंबूमंदरपव्वयपंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ प० तं० पंडुकंबलसिला, अतिपंडुकंबलसिला, रत्तकंबलसिला, अइरत्तकंबलसिला, मंदरचूलिया णं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता, एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेवि कालं आइं करित्ता जाव मंदरचूलियत्ति। एवं जाव पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति, जंबूदीवगआवस्सगं तु कालाओ चूलिया जाव धायइसंडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे। जंबूदीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दारा प० तं० विजये वेजयंते जयंते अपराजिए, ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं प० तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमठिइया परिवसंति तं० विजए वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ ३७४ ॥ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० एगरुयदीवे आभासियदीवे वेसाणियदीवे णंगोलियदीवे, तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति, एगरुया

सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्समुव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लगसंठाणसंठिया दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्चतेवीसजोयणसए परिक्खेवेणं सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । सेसं जहेव अंजणगपव्वयाणं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अंजणगे उत्तरेपासे । तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरिणीओ प० तं० भद्दा विसाला कुमुदा पोंडरीगिणी । सेसं तं चेव जाव दहिमुहगपव्वया जाव वणसंडा । तत्थ णं जे से पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पोक्खरणीओ पण्णत्ताओ तं० णंदिसेणा अमोहा गोथूभा सुदंसणा सेसं तं चेव तहेव दहिमुहगपव्वया तहेव जाव वणसंडा । तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पोक्खरणीओ प० तं० विजया वेजयंती जयंती अपराजिया तहेव दहिमुहगपव्वया तहेव जाव वणसंडा । णंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभाए चउसु विदिसासु चत्तारि रतिकरगपव्वया प० तं० उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वए दाहिणपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वए दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए, ते णं रतिकरगपव्वया दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसगाउयसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा झल्लरिसंठाणसंठिया दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्चतेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । तत्थ णं जे से उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिमीसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं० णंदुत्तरा णंदा उत्तरकुरा देवकुरा । कण्हाए कण्हराईए रामाए रामरक्खियाए, तत्थ णं जे से दाहिणपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ प० तं० समणा सोमणसा अच्चिमाली मणोरमा । पउमाए सिवाए सईए अंजूए । तत्थ णं जे से दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ प० तं० भूता भूतवडिंसा गोथूभा सुदंसणा । अमलाए अच्छराए णवमियाए रोहिणीए । तत्थ णं जे से उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिमीसाणस्स चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ प० तं० रयणा रयणोच्चया सव्वरयणा रयणसंचया । वसूए वसुगुत्ताए वसुमित्ताए वसुंधराए ॥ १८१ ॥ चउव्विहे सच्चे प० तं० णामसच्चे ठवणसच्चे दव्वसच्चे भावसच्चे ॥ १८१ ॥ आजी-

केलासे अरुणप्पभे। तत्थ णं चत्तारि महिड्डिया जाव पलिओवमठिईया देवा परिव-सति त० कक्कोडए कद्दमए केलासे अरुणप्पभे ॥३७७॥ लवणे ण समुद्दे चत्तारि चदा पभासिंसु वा पभासंति वा पभासिस्सति वा, चत्तारि सूरिया तविंसु वा तवति वा तवि-स्सति वा, चत्तारि कत्तियाओ जाव चत्तारि भरणीओ, चत्तारि अग्गी जाव चत्तारि जमा, चत्तारि अगारया जाव चत्तारि भावकेऊ ॥ ३७८ ॥ लवणस्स णं समुद्दस्स चत्तारि दारा प० त० विजए वेजयते जयते अपराजिए, ते ण दारा ण चत्तारि जोयणाइ विक्खंभेणं तावइय चेव पवेसेग पण्णत्ता, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठिइया परिवसति विजए जाव अपराजिए ॥३७९॥ धायइसडे ण दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण प० ॥ ३८० ॥ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स वहिया चत्तारि भरहाइ चत्तारि एरवयाइ, एव जहा सद्दुद्देसए तहेव णिरव-सेस भाणियव्व, जाव चत्तारि मदरा चत्तारि मंदरचूलियाओ ॥ ३८१ ॥ णदीस-रवरस्स ण दीवस्स चक्कवालविक्खभस्स बहुमज्झदेसभाए चउद्दिसिं चत्तारि अजणगपव्वया प० त० पुरच्छिमिल्ले अजणगपव्वए दाहिणिल्ले अजणगपव्वए, पच्चत्थिमिल्ले अजणगपव्वए उत्तरिल्ले अजणगपव्वए, ते ण अजणगपव्वया चउरासीइ-जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण एग जोयणसहस्स उव्वेहेण मूले दसजोयणसहस्साइ विक्खभेग तदणतर च ण मायाए मायाए परिहाएमाणा परिहाएमाणा उवरिमेग जोयणसहस्स विक्खभेण प० मूले एक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्चतेवीसे जोयणसए परिक्खेवेण उवरिं तिण्णि २ जोयणसहस्साइ एग च छावट्ठ जोयणसय परिक्खेवेणं मूले विच्छिण्णा मज्झे सखित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छसठाणसठिया सव्वअजण-मया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसिण अजणगपव्वयाण चउद्दिसिं चत्तारि २ ण-दाओ पुक्खरणीओ प० तासिण पोक्खरणीण पत्तेय पत्तेय चउद्दिसिं चत्तारि वण-खडा प० त० पुरच्छिमेण दाहिणेण पच्चत्थिमेण उत्तरेण, पुव्वेण असोगवण दाहिणओ होति सत्तवण्णवण, अवरेण चंपगवण, अववण उत्तरे पासे ॥ १ ॥ तत्थ ण जे से पुरच्छिमिल्ले अजणगपव्वए तस्स ण चउद्दिसिं चत्तारि णंदापोक्खर-णीओ पण्णत्ताओ त० णंदा णदुत्तरा आणदा णदिवद्धणा, तासिण पोक्खरणीण पत्तेयं पत्तेय चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा प० तेसिणं तिसोवाणपडिरूवगाण पुरओ चत्तारि तोरणा प० पुरच्छिमेग दाहिणेग पच्चत्थिमेणं उत्तरेण, तासिण पोक्खर-णीण पत्तेय पत्तेय चउद्दिसिं चत्तारि वणखडा प० त० पुरओ दाहिणओ पच्चत्थिमेणं उत्तरेण, पुव्वेण असोगवण जाव अववण उत्तरे पासे। तासिण पुक्खरणीण बहु-मज्झदेसभाए चत्तारि दहिमुहगपव्वया प० ते ण दहिमुहगपव्वया चउसट्ठिं जोयण-

वा परिट्ठवेइ तत्थ वि य से एगे आसासे प०, जत्थ वि य णं णागकुमारावासंसि वा सुवण्णकुमारावासंसि वा वासं उवेइ तत्थ वि य से एगे आसासे प०, जत्थ वि य णं आवकहाए चिट्ठइ जाव आसासे प०। एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा प० तं० जत्थ वि य णं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जइ तत्थ वि य से एगे आसासे प०, जत्थ वि य णं सामाइयं देसावगासियं सम्ममणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे प०, जत्थ वि य णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे प०, जत्थ वि य णं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरइ तत्थ वि य से एगे आसासे प० ॥ ३१० ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उदिओदिए णाममेगे उदियत्थमिए णाममेगे अत्थमिओदिए णाममेगे अत्थमियत्थमिए णाममेगे। भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी णं उदिओदिए, बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी उदियत्थमिए, हरिएसबले णं अणगारे अत्थमिओदिए, काले णं सोयरिए अत्थमियत्थमिए ॥ ३११ ॥ चत्तारि जुम्मा प० तं० कडजुम्मे तेओए दावरजुम्मे कलिओए, णेरइयाणं चत्तारि जुम्मा प० तं० कडजुम्मे जाव कलिओए, एवमसुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं एवं पुढविकाइयाणं आउतेउवाउवणस्सइबेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतरजोइसियाणं वेमाणियाणं सव्वेसिं जहा णेरइयाणं ॥ ३१२ ॥ चत्तारि सूरा प० तं० खंतिसूरे तवसूरे दाणसूरे जुद्धसूरे, खंतिसूरा अरिहंता तवसूरा अणगारा, दाणसूरे वेसमणे जुद्धसूरे वासुदेवे ॥ ३१३ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उच्चे णाममेगे उच्चच्छंदे उच्चे णाममेगे णीयच्छंदे णीए णाममेगे उच्चच्छंदे णीए णाममेगे णीयच्छंदे ॥ ३१४ ॥ असुरकुमाराणं चत्तारि लेसा प० तं० कण्हलेसा णीललेसा काउलेसा तेउलेसा एवं जाव थणियकुमाराणं एवं पुढविकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं सव्वेसिं जहा असुरकुमाराणं ॥ ३१५ ॥ चत्तारि जाणा प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते जुत्ते णाममेगे अजुत्ते अजुत्ते णाममेगे जुत्ते अजुत्ते णाममेगे अजुत्ते, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४। चत्तारि जाणा प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणए जुत्ते णाममेगे अजुत्तपरिणए ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्तपरिणए ४। चत्तारि जाणा प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्तरूवे ४। चत्तारि जाणा प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया

वियाण चउव्विहे तवे प० त० उग्गतवे घोरतवे रसनिज्जूहणया जिब्भिंदियपडि-सलीणया ॥ ३८४ ॥ चउव्विहे संजमे प० त० मणसंजमे वइसंजमे कायसंजमे उवगरणसंजमे । चउव्विहे चियाए प० त० मणचियाए वइचियाए कायचियाए उवगरणचियाए, चउव्विहा अकिंचणया प० त० मणअकिंचणया वइअकिंचणया कायअकिंचणया उवगरणअकिंचणया ॥ ३८५ ॥ **चउत्थट्ठाणस्स बीओ-द्देसो समत्तो ॥**

चत्तारि राईओ प० त० पव्वयराई पुढविराई वालुयराई उदगराई । एवामेव चउव्विहे कोहे प० त० पव्वयराइसमाणे पुढविराइसमाणे वालुयराइसमाणे उदग-राइसमाणे । पव्वयराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ, पुढविराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ, वालु-यराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ, उदगराइसमाणं कोहमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ, चत्तारि उदगा प० त० कद्दमोदए खंजणोदए वालुओदए सेलोदए, एवामेव चउव्विहे भावे प० त० कद्दमोदगसमाणे खंजणोदगसमाणे वालुओदगसमाणे सेलोदगसमाणे । कद्दमोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ एवं जाव सेलोदगसमाणं भावमणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ ॥ ३८६ ॥ चत्तारि पक्खी प० त० रुयसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने, रूवसंपन्ने णाममेगे णो रुयसंपन्ने, एगे रुयसंपन्ने वि रूवसंपन्ने वि, एगे णो रुयसंपण्णे णो रूवसंपन्ने, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० रुयसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने ४ ॥ ३८७ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० त० पत्तियं करेमित्ति एगे पत्तियं करेइ, पत्तियं करेमित्ति एगे अपत्तियं करेइ, अपत्तियं करेमित्ति एगे पत्तियं करेइ, अपत्तियं करेमित्ति एगे अपत्तियं करेइ, चत्तारि पुरिसजाया प० तं० अप्पणो णाममेगे पत्तियं करेइ णो परस्स, परस्स णाममेगे पत्तियं करेइ णो अप्पणो ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० त० पत्तियं पवेसामित्ति एगे पत्तियं पवेसेइ, पत्तियं पवेसामित्ति एगे अपत्तियं पवेसेइ, अपत्तियं पवेसामित्ति एगे पत्तियं पवेसेइ, अप-त्तियं पवेसामित्ति एगे अपत्तियं पवेसेइ, चत्तारि पुरिसजाया प० त० अप्पणो णाम-मेगे पत्तियं पवेसेइ णो परस्स ४ ॥ ३८८ ॥ चत्तारि रुक्खा प० त० पत्तोवए पुप्फोवए फलोवए छायोवए, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० पत्तो वा रुक्ख-समाणे पुप्फो वा रुक्खसमाणे फलो वा रुक्खसमाणे छायो वा रुक्खसमाणे ॥ ३८९ ॥ भारं णं वहमाणस्स चत्तारि आसासा प० त० जत्थ णं अंसाओ अंसं साहरइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते, जत्थ वि य णं उच्चारं वा पासवणं

करेइ णाममेगे वेयावच्चं णो पडिच्छइ पडिच्छइ णाममेगे वेयावच्चं णो करेइ ४। ॥ ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० अट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे माणकरे णाममेगे णो अट्ठकरे, एगे अट्ठकरेवि माणकरेवि एगे णो अट्ठकरे णो माणकरे, चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गणट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे ४ च० पु० जा० प० तं० गणसंगहकरे णाममेगे णो माणकरे ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गणसोभकरे णाममेगे णो माणकरे ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गणसोहिकरे णाममेगे णो माणकरे ४ ॥ ४ १ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० रूवं णाममेगे जहइ णो धम्मं धम्मं णाममेगे जहइ णो रूवं एगे रूवंपि जहइ धम्मंपि जहइ, एगे णो रूवं जहइ णो धम्मं चत्तारि पुरिसजाया प० तं० धम्मं णाममेगे जहइ णो गणसंठिइं ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० पियधम्मे णाममेगे णो दढधम्मे दढधम्मे णाममेगे णो पियधम्मे एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि एगे णो पियधम्मे णो दढधम्मे ॥ ४ २ ॥ चत्तारि आयरिया प० तं० पव्वावणायरिए णाममेगे णो उवट्ठावणायरिए उवट्ठावणायरिए णाममेगे णो पव्वावणायरिए, एगे पव्वावणायरिएवि उवट्ठावणायरिएवि एगे णो पव्वावणायरिए णो उवट्ठावणायरिए, चत्तारि आयरिया प० तं० उद्देसणायरिए णाममेगे णो वायणायरिए ४ धम्मायरिए सम्मतपओ णामम्मो ॥ ४ ३ ॥ चत्तारि अंतेवासी प० तं० पव्वावणंतेवासी णाममेगे णो उवट्ठावणंतेवासी ४ धम्म धम्मंतेवासी चत्तारि अंतेवासी प० तं० उद्देसणंतेवासी णाममेगे णो वायणंतेवासी ४ ॥ ४ ४ ॥ चत्तारि णिग्गंथा प० तं० राइणिए समणे णिग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ, राइणिए समणे णिग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवइ, ओमराइणिए समणे णिग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ, ओमराइणिए समणे णिग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवइ, चत्तारि णिग्गंथीओ प० तं० राइणिया समणी णिग्गंथी ४ एवं चेव, चत्तारि समणोवासगा प० तं० राइणिए समणोवासए महाकम्मे ४ तहेव चत्तारि समणोवासियाओ प० तं० राइणिया समणोवासिया महाकम्मा तहेव चत्तारि गमा ॥ ४ ५ ॥ चत्तारि समणोवासगा प० तं० अम्मापिइसमाणे भाइसमाणे मित्तसमाणे सवत्तिसमाणे। चत्तारि समणोवासगा प० तं० अद्दागसमाणे पडागसमाणे खाणुसमाणे खरकंटयसमाणे ॥ ४ ६ ॥ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स समणोवासगाणं सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलिओवमाइं ठिई प० ॥ ४ ७ ॥ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु

प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्तसोभे ४। चत्तारि जुग्गा प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४। एवं जहा जाणेण चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेणवि पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया जाव सोभेत्ति, चत्तारि सारही प० तं० जोआवइत्ता णाममेगे णो विजोयावइत्ता, विजोयावइत्ता णाममेगे णो जोयावइत्ता, एगे जोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि, एगे णो जोयावइत्ता णो विजोयावइत्ता, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया, चत्तारि हया प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४। एवं जुत्तपरिणए जुत्तरूवे जुत्तसोभे सव्वेसिं पडिवक्खो पुरिसजाया। चत्तारि गया प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४। एवं जहा हयाणं तहा गयाणवि भाणियव्वं। पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया, चत्तारि जुग्गारिया प० तं० पंथजाई णाममेगे णो उप्पहजाई उप्पहजाई णाममेगे णो पंथजाई एगे पंथजाई वि उप्पहजाई वि एगे णो पंथजाई णो उप्पहजाई। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया ४॥ ३९६॥ चत्तारि पुप्फा प० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णो गंधसंपन्ने गंधसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने एगे रूवसंपन्नेवि गंधसंपन्नेवि एगे णो रूवसंपन्ने णो गंधसंपन्ने। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णो सीलसंपन्ने ४॥ ३९७॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णो कुलसंपन्ने कुलसंपन्ने णाममेगे णो जाइसंपन्ने ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णो बलसंपन्ने बलसंपन्ने णाममेगे णो जाइसंपन्ने ४। एवं जाईए रूवेण य चत्तारि आलावगा, एवं जाईए सुएण य ४। एवं जाईए सीलेण ४ एवं जाईए चरित्तेण ४। एवं कुलेण बलेण ४। कुलेण रूवेण ४। कुलेण सुएण ४। कुलेण सीलेण ४। कुलेण चरित्तेण ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० बलसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने ४। एवं बलेण सुएण ४। एवं बलेण सीलेण ४। एवं बलेण चरित्तेण ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णो सुयसंपन्ने ४। एवं रूवेण सीलेण ४। रूवेण चरित्तेण ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सुयसंपन्ने णाममेगे णो सीलसंपन्ने ४। एवं सुएण चरित्तेण य ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सीलसंपन्ने णाममेगे णो चरित्तसंपन्ने ४। एए इक्कवीसं भंगा भाणियव्वा॥ ३९८॥ चत्तारि फला प० तं० आमलगमहुरे मुद्दियामहुरे खीरमहुरे खंडमहुरे, एवामेव चत्तारि आयरिया प० तं० आमलगमहुरफलसमाणे जाव खंडमहुरफलसमाणे॥ ३९९॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आयवेयावच्चकरे णाममेगे णो परवेयावच्चकरे ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं०

इच्छेज्जा माणुसं लोग हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए तं० अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने से णं माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ णो परियाणाइ णो अट्ठं बंधइ णो णियाणं पगरेइ, णो ठिइप्पगप्पं पगरेइ, अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्स णं माणुस्सए पेमे वोच्छिण्णे दिव्वे पेमे संकंते भवइ, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्स णं एवं भवइ, इयण्हिं गच्छं मुहुत्तेणं गच्छं तेण कालेणमप्पाउआ मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, अहुणोव-वन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्स णं माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ, उड्ढं पि य णं माणुस्सए गंधे जाव चत्तारिपंचजोयणसयाइं हव्वमागच्छइ ४ इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ ४०८ ॥ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए संचा-एइ हव्वमागच्छित्तए तं० अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमु-च्छिए जाव अणज्झोववण्णे तस्स णं एवं भवइ अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरिएइ वा उवज्झाएइ वा पवत्तीइ वा थेरेइ वा गणीइ वा गणहरेइ वा गणा-वच्छेएइ वा जेसिं पभावेण मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुई लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि, अहु-णोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववण्णे तस्स णं एवं भवइ एस णं माणुस्सए भवे णाणीइ वा तवस्सीइ वा अइदुक्करदुक्करकारए तं गच्छामि णं भगवन्तं वंदामि जाव पज्जुवासामि, अहुणोववन्ने देवे जाव अणज्झोववण्णे तस्स णं एवं भवइ अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भवामि पासंतु ता मे इममेयारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं, अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवइ अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मित्तेइ वा सुहीइ वा सहीइ वा सहाएइ वा संगइए वा तेसिं च णं अम्हे अण्णमण्णस्स संगारे पडिसुए भवइ, जो मे पुव्विं चयइ से संबोहियव्वे इच्चे-एहिं जाव संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ ४०९ ॥ चउहिं ठाणेहिं लोगंधगारे सिया तं० अरिहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं, अरिहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे जायतेए वोच्छिज्जमाणे, चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोए सिया तं० अरिहंतेहिं जायमाणेहिं, अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं, अरिहंताणं णाणुप्पायमहिमासु, अरिहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु, एवं देवंधगारे देवुज्जोए देवसन्निवाए देवुक्कलिया देवकहकहए,

पुरिसजाया प० तं० एगेणं नाममेगे वड्ढइ एगेणं हायइ, एगेणं नाममेगे वड्ढइ दोहिं हायइ, दोहिं नाममेगे वड्ढइ एगेणं हायइ, दोहिं नाममेगे वड्ढइ दोहिं हायइ ॥ ४१८ ॥ चत्तारि पकंथगा प० तं० आइण्णे नाममेगे आइण्णे आइण्णे नाममेगे खलुंके खलुंके नाममेगे आइण्णे खलुंके नाममेगे खलुंके एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आइण्णे नाममेगे आइण्णे चउभंगो । चत्तारि पकंथगा प० तं० आइण्णे नाममेगे आइण्णत्ताए विहरइ, आइण्णे नाममेगे खलुंकत्ताए विहरइ ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आइण्णे नाममेगे आइण्णत्ताए विहरइ, चउभंगो । चत्तारि पकंथगा प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे नो कुलसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे चउभंगो । चत्तारि पकंथगा प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे नो बलसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे नो बलसंपन्ने ४ । चत्तारि पकंथगा प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे नो रूवसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे नो रूवसंपन्ने ४ । चत्तारि पकंथगा प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे नो जयसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने ४ । एवं कुलसंपन्नेण य बलसंपन्नेण य ४ । कुलसंपन्नेण य रूवसंपन्नेण य ४ । कुलसंपन्नेण य जयसंपन्नेण य ४ । एवं बलसंपन्नेण य रूवसंपन्नेण य ४ । बलसंपन्नेण य जयसंपन्नेण य ४ । सव्वत्थ पुरिसजाया पडिवक्खो चत्तारि पकंथगा प० तं० रूवसंपन्ने नाममेगे नो जयसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस० ॥ ४१९ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सीहत्ताए नाममेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरइ, सीहत्ताए नाममेगे निक्खंते सियालत्ताए विहरइ, सियालत्ताए नाममेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरइ, सियालत्ताए नाममेगे निक्खंते सियालत्ताए विहरइ ॥ ४२० ॥ चत्तारि लोगे समा प० तं० अपइट्ठाणे नरए, जंबुद्दीवे दीवे पालए जाणविमाणे सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे चत्तारि लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं प० तं० सीमंतए नरए समयक्खेत्ते उडुविमाणे ईसिप्पब्भारा पुढवी ॥ ४२१ ॥ उड्ढलोए णं चत्तारि बिसरीरा प० तं० पुढविकाइया आउवणस्सइकाइया उराला तसा पाणा अहेलोगे णं चत्तारि बिसरीरा प० तं० एवं चेव एवं तिरियलोए वि ४ ॥ ४२२ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते ॥ ४२३ ॥ चत्तारि सेज्जपडिमाओ प० चत्तारि वत्थपडिमाओ प० चत्तारि पायपडिमाओ प० चत्तारि ठाणपडिमाओ प० ॥ ४२४ ॥ चत्तारि सरीरगा जीवफुडा प० तं० वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए, चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा प० तं० ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए ॥ ४२५ ॥ चउहिं अत्थिकाएहिं लोगे फुडे प० तं० धम्म-

अहावरा चउत्था सुहसेज्जा, से ण मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए तस्स णमेवं भवइ जइ ताव अरिहंता भगवंता हट्ठा आरोग्गा वलिया कल्लसरीरा अन्नयराइं ओरालाइं कल्लाणाइं विउलाइं पयत्ताइं पग्गहियाइं महाणुभागाइं कम्मक्खयकारणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति किमंगपुण अहं अब्भोवगमिओवक्कमियं वेयणं णो सम्मं सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि मम च ण अब्भोवगमिओवक्कमियं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासेमाणस्स किमण्णे कज्जइ? एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जइ मम च ण अब्भोवगमिओ जाव सम्मं सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स किमण्णे कज्जइ? एगंतसो मे णिज्जरा कज्जइ, चउत्था सुहसेज्जा ॥ ४१२ ॥ चत्तारि अवायणिज्जा प० तं० अविणीए, विगईपडिवद्धे, अविओसवियपाहुडे, मायी, चत्तारि वायणिज्जा प० तं० विणीए, अविगईपडिवद्धे, विओसवियपाहुडे, अमायी ॥ ४१३ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आयभरे णाममेगे णो परंभरे, परंभरे णाममेगे णो आयभरे, एगे आयभरेवि परंभरेवि, एगे णो आयभरे णो परंभरे ॥ ४१४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुग्गए, दुग्गए णाममेगे सुग्गए, सुग्गए णाममेगे दुग्गए, सुग्गए णाममेगे सुग्गए, चत्तारि पुरिसजाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुव्वए, दुग्गए णाममेगे सुव्वए, सुग्गए णाममेगे दुव्वए, सुग्गए णाममेगे सुव्वए, चत्तारि पुरिसजाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुप्पडियाणंदे, दुग्गए णाममेगे सुप्पडियाणंदे ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुग्गइगामी, दुग्गए णाममेगे सुगइगामी ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुग्गईं गए, दुग्गए णाममेगे सुगइं गए ॥ ४१५ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० तमे णाममेगे तमे, तमे णाममेगे जोई, जोई णाममेगे तमे, जोई णाममेगे जोई, चत्तारि पुरिसजाया प० तं० तमे णाममेगे तमवले, तमे णाममेगे जोईवले, जोई णाममेगे तमवले, जोई णाममेगे जोईवले, चत्तारि पुरिसजाया प० तं० तमे नाममेगे तमवलपलज्जणे, तमे नाममेगे जोईवलपलज्जणे, ४ ॥ ४१६ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० परिण्णायकम्मे णाममेगे णो परिण्णायसण्णे, परिण्णायसण्णे णाममेगे णो परिण्णायकम्मे, एगे परिण्णायकम्मेवि परिण्णायसण्णेवि, एगे णो परिण्णायकम्मे णो परिण्णायसण्णे, चत्तारि पुरिसजाया प० तं० परिण्णायकम्मे णाममेगे णो परिण्णायगिहावासे, परिण्णायगिहावासे णाममेगे णो परिण्णायकम्मे ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० परिण्णायसण्णे णाममेगे णो परिण्णायगिहावासे परिण्णायगिहावासे णाममेगे णो परिण्णायसण्णे ४ ॥ ४१७ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० इहत्थे णाममेगे णो परत्थे परत्थे णाममेगे णो इहत्थे ४ । चत्तारि

विसपरिणयं विसट्टमाणिं करेत्तए विसए से विसट्टयाए णो चेव णं संपत्तीए करिं-
सु वा करेंति वा करिस्संति वा मंडुक्कजाइआसीविसस्स पुच्छा पभू णं मंडुक्कजाइआ-
सीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं तं चेव जाव करिस्संति
उरगजाइआसीविसस्स पुच्छा पभू णं उरगजाइआसीविसे जंबुद्दीवपमाणमेत्तं
बोंदिं विसेणं सेसं तं चेव जाव करिस्संति वा। मणुस्सजाइआसीविसपुच्छा पभू णं
मणुस्सजाइआसीविसे समयखेत्तपमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं
करेत्तए विसए से विसट्टयाए णो चेव णं जाव करिस्संति वा ॥ ४१५ ॥ चउव्विहा
वाही प० तं० वाइए पित्तिए सिंभिए सन्निवाइए, चउव्विहा तिगिच्छा प० तं०
विज्जो ओसहाइं आउरे परियारए, चत्तारि तिगिच्छगा प० तं० आयतिगिच्छए
णाममेगे णो परतिगिच्छए परतिगिच्छए णाममेगे णो आयतिगिच्छए जाव चउ-
भंगो ॥ ४१६ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वणकरे णाममेगे णो वणपरिमासी
वणपरिमासी णाममेगे णो वणकरे, एगे वणकरेवि वणपरिमासीवि एगे णो वणकरे
णो वणपरिमासी चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वणकरे णाममेगे णो वणसारक्खी ४।
चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वणकरे णाममेगे णो वणसरोही ४ ॥ ४१७ ॥ चत्तारि
वणा प० तं० अंतो सल्ले णाममेगे णो बाहिंसल्ले ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया
प० तं० अंतो सल्ले णाममेगे णो बाहिंसल्ले ४। चत्तारि वणा प० तं० अंतो दुट्ठे
णाममेगे णो बाहिंदुट्ठे, बाहिंदुट्ठे णाममेगे णो अंतो दुट्ठे ४। एवामेव चत्तारि
पुरिसजाया प० तं० अंतो दुट्ठे णाममेगे णो बाहिंदुट्ठे ४ ॥ ४१८ ॥ चत्तारि पुरिस-
जाया प० तं० सेयंसे णाममेगे सेयंसे सेयंसे णाममेगे पावंसे पावंसे णाममेगे सेयंसे
पावंसे णाममेगे पावंसे। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्ति सालि-
सए सेयंसे णाममेगे पावंसेत्ति सालिसए ४। चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सेयंसेत्ति
णाममेगे सेयंसेत्ति मन्नइ, सेयंसेत्ति णाममेगे पावंसेत्ति मन्नइ ४। चत्तारि पुरिसजाया
प० तं० सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्ति सालिसए मन्नइ सेयंसे णाममेगे पावंसेत्ति सालिसए
मन्नइ ४ ॥ ४१९ ॥ चत्तारि पु० प० तं० आघवइत्ता णाममेगे णो परिभावइत्ता
परिभावइत्ता णाममेगे णो आघवइत्ता ४। चत्तारि पु० प० तं० आघवइत्ता णाम-
मेगे णो उंछजीविसंपन्ने उंछजीविसंपन्ने णाममेगे णो आघवइत्ता ४ ॥ ४२० ॥
चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा प० तं० पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए
॥ ४२१ ॥ चत्तारि वाइसमोसरणा प० तं० किरियावाई अकिरियावाई अन्नाणियवाई
वेणइयवाई, णेरइयाणं चत्तारि वाइसमोसरणा प० तं० किरियावाई जाव वेणइया-
वाई, एवमसुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणि-

त्थिकाएण अधम्मत्थिकाएण जीवत्थिकाएणं पोग्गलत्थिकाएण । चउहिं वायरकाएहिं उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे प०त०पुढविकाइएहिं आउकाइएहिं वाउवणस्सइकाइएहिं । चत्तारि पएसग्गेण तुल्ला प०त० धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए लोगागासे एगजीवे । चउण्हमेगसरीर नो सुपस्स भवइ तं० पुढविआउतेउवणस्सइकाइयाणं ॥ ४२६ ॥ चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति त० सोइंदियत्थे घाणिंदियत्थे जिब्भिंदियत्थे फासिंदियत्थे ॥४२७॥ चउहिं ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य णो सचाएन्ति वहिया लोगतागमणयाए त० गइअभावेण निरुवग्गहयाए लुक्खत्ताए लोगाणुभावेण ॥ ४२८ ॥ चउव्विहे णाए प० त० आहरणे आहरणतद्देसे आहरणतद्दोसे उवन्नासोवणए । आहरणे चउव्विहे प० त० अवाए उवाए ठवणाकम्मे पडुप्पन्नविणासी । आहरणतद्देसे चउव्विहे प० तं० अणुसिट्ठी उवालंभे पुच्छा णिस्सावयणे । आहरणतद्दोसे चउव्विहे प० त० अधम्मजुत्ते पडिलोमे अतोवणीए दुरुवणीए । उवण्णासोवणए चउव्विहे प० त० तव्वत्थुए तदन्नवत्थुए पडिणिभे हेऊ ॥ ४२९ ॥ चउव्विहे हेऊ प० तं० जावए थावए वंसए लूसए, अहवा हेऊ चउव्विहे प० त० पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे अहवा हेऊ चउव्विहे प० अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ अत्थित्त णत्थि सो हेऊ णत्थित्तं अत्थि सो हेऊ णत्थित्त णत्थि सो हेऊ ॥४३०॥ चउव्विहे सखाणे प० त० पडिकम्मं ववहारे रज्जू रासी ॥ ४३१ ॥ अहोलोगे ण चत्तारि अधयार करेंति त० णरगा णेरइया पावाइं कम्माइं असुभा पोग्गला, तिरियलोगे णं चत्तारि उज्जोयं करेंति तं० चदा सूरा मणी जोई, उड्ढलोगे णं चत्तारि उज्जोय करेंति त० देवा देवीओ विमाणा आभरणा ॥ ४३२ ॥ चउट्ठास्स तइओद्देसो समत्तो ॥

चत्तारि पसप्पगा प० त० अणुप्पन्नाण भोगाणं उप्पाएत्ता एगे पसप्पए, ...ुप्पन्नाण भोगाण अविप्पओगेण एगे पसप्पए, अणुप्पण्णाण सोक्खाण उप्पाइत्ता ...गे पसप्पए पुव्वुप्पण्णाण सोक्खाण अविप्पओगेण एगे पसप्पए ॥ ४३३ ॥ ...रइयाण चउविहे आहारे प० त० इगालोवमे मुम्मुरोवमे सीयले हिमसीयले, ...तिरिक्खजोणियाण चउव्विहे आहारे प० त० कंकोवमे विलोवमे पाणमसोवमे ...त्तमसोवमे । मणुस्साण चउव्विहे आहारे, असणे पाणे खाइमे साइमे । देवाण चउव्विहे आहारे प० त० वण्णमंते गधमंते रसमंते फासमंते ॥ ४३४ ॥ चत्तारि जाइआसीविसा प० त० विच्छुयजाइआसीविसे मडुक्कजाइआसीविसे उरगजाइआसीविसे मणुस्सजाइआसीविसे । विच्छुयजाइआसीविसस्स णं भंते केवइए विसए प० ? पभूण विच्छुयजाइआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्त बोंदिं विसेणं

मज्झचारी एवामेव चत्तारि भिक्खागा प तं अणुसोयचारी पडिसोयचारी अंत-
चारी मज्झचारी ॥ ४४६ ॥ चत्तारि गोला प तं मधुसित्थगोले जउगोले
दारुगोले मट्टियागोले, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प तं मधुसित्थगोलसमाणे ४।
चत्तारि गोला प तं अयगोले तउगोले तंबगोले सीसगोले एवामेव चत्तारि पु०
प तं अयगोलसमाणे जाव सीसगोलसमाणे ४। चत्तारि गोला प तं
हिरण्णगोले सुवण्णगोले रयणगोले वयरगोले एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प तं
हिरण्णगोलसमाणे जाव वयरगोलसमाणे ॥ ४४७ ॥ चत्तारि पत्ता प तं असि-
पत्ते करपत्ते खुरपत्ते कलंबचीरियापत्ते एवामेव चत्तारि पु प तं असिपत्त-
समाणे जाव कलंबचीरियापत्तसमाणे ॥ ४४८ ॥ चत्तारि कडा प तं सुंबकडे
विदलकडे चम्मकडे कंबलकडे एवामेव चत्तारि पु प तं सुंबकडसमाणे जाव
कंबलकडसमाणे ॥ ४४९ ॥ चउव्विहा चउप्पया प तं एगखुरा दुखुरा गंडीपदा
सणप्फया। चउव्विहा पक्खी प तं चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी वियय-
पक्खी। चउव्विहा खुड्डपाणा प तं बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया संमुच्छिम-
पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ॥ ४५ ॥ चत्तारि पक्खी प तं णिवइत्ता णाममेगे
णो परिवइत्ता परिवइत्ता णाममेगे णो णिवइत्ता एगे णिवइत्तावि परिवइत्तावि एगे णो
णिवइत्ता णो परिवइत्ता एवामेव चत्तारि भिक्खागा प तं णिवइत्ता णाममेगे णो
परिवइत्ता ४ ॥४५१॥ चत्तारि पुरिसजाया प तं णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठे णिक्कट्ठे
णाममेगे अणिक्कट्ठे ४। चत्तारि पुरिसजाया प तं णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा
णिक्कट्ठे णाममेगे अणिक्कट्ठप्पा ४। चत्तारि पु प तं बुहे णाममेगे बुहे बुहे
णाममेगे अबुहे ४। चत्तारि पुरिसजाया प तं बुहे णाममेगे बुहहियए ४।
चत्तारि पुरिसजाया प तं आयाणुकंपए णाममेगे णो पराणुकंपए ४ ॥ ४५२ ॥
चउव्विहे संवासे प तं दिव्वे आसुरे रक्खसे माणुसे चउव्विहे संवासे प तं
देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ देवे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं
गच्छइ असुरे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ असुरे णाममेगे असुरीए
सद्धिं संवासं गच्छइ, चउव्विहे संवासे प तं देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं
गच्छइ, देवे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ, रक्खसे णाममेगे ४।
चउव्विहे संवासे प तं देवे णाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ, देवे णाममेगे
मणुस्सीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ ४। चउव्विहे संवासे प तं असुरे णाममेगे
असुरीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ, असुरे णाममेगे रक्खसीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ ४
चउव्विहे संवासे प तं असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ, असुरे

याण ॥ ४४२ ॥ चत्तारि मेहा प० त० गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गज्जित्ता, एगे गज्जित्तावि वासित्तावि, एगे णो गज्जित्ता णो वासित्ता, एवामेव चत्तारि पु० प० तं० गज्जित्ता णाममेगे णो वासित्ता ४। चत्तारि मेहा प० त० गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ता णाममेगे णो गज्जित्ता ४ । एवामेव चत्तारि पु० प० तं० गज्जित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४। चत्तारि मेहा प० तं० वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४ । एवामेव चत्तारि पु० प० त० वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४ । चत्तारि मेहा प० तं० कालवासी णाममेगे णो अकालवासी, अकालवासी णाममेगे णो कालवासी ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० कालवासी णाममेगे णो अकालवासी ४ । चत्तारि मेहा प० तं० खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी ४ । एवामेव चत्तारि पु० प० त० खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी ४। चत्तारि मेहा प० तं० जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता ४ । एवामेव चत्तारि अम्मापियरो प० त० जणइत्ता णाममेगे णो णिम्मवइत्ता ४। चत्तारि मेहा प० तं० देसवासी णाममेगे णो सव्ववासी ४। एवामेव चत्तारि रायाणो प० तं० देसाहिवई णाममेगे णो सव्वाहिवई ४ । चत्तारि मेहा प० तं० पुक्खलसंवट्टए पज्जुण्णे जीमूए जिम्हे । पोक्खलसंवट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेइ, पज्जुण्णे णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससयाइं भावेइ, जीमूए णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं भावेइ, जिम्हे णं महामेहे बहुवासेहिं एगं वासं भावेइ वा ण भावेइ वा ॥ ४४३ ॥ चत्तारि करंडगा प० तं० सोवागकरंडए वेसियाकरंडए गाहावइकरंडए रायकरंडए, एवामेव चत्तारि आयरिया प०त० सोवागकरंडगसमाणे, वेसियाकरंडगसमाणे, गाहावइकरंडगसमाणे, रायकरंडगसमाणे ॥ ४४४ ॥ चत्तारि रुक्खा प० तं० साले णाममेगे सालपरियाए साले णाममेगे एरंडपरियाए ४। एवामेव चत्तारि आयरिया प० त० साले णाममेगे सालपरियाए साले णाममेगे एरंडपरियाए एरंडे णाममेगे० ४ । चत्तारि रुक्खा प० तं० साले णाममेगे सालपरिवारे ४ । एवामेव चत्तारि आयरिया प० तं० साले णाममेगे सालपरिवारे ४। **गाहा** सालदुममज्झगारे जह साले णाम होइ दुमराया, इय सुंदरआयरिए सुंदरसीसे मुणेयव्वे (१) एरंडमज्झगारे जह साले णाम होइ दुमराया, इय सुंदरआयरिए मंगुलसीसे मुणेयव्वे (२) सालदुममज्झयारे एरंडे णाम होइ दुमराया, इय मंगुलआयरिए सुंदरसीसे मुणेयव्वे (३) एरंडमज्झयारे, एरंडे णाम होइ दुमराया, इय मंगुलआयरिए मंगुलसीसे मुणेयव्वे (४) ॥४४५॥ चत्तारि मच्छा प० त० अणुसोयचारी पडिसोयचारी, अंतचारी

गंभीरोदए, एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए उत्ताणे णाममेगे गंभीरहियए ४ चत्तारि उदगा प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी ४। चत्तारि उदही प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदही उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदही ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए ४। चत्तारि उदही प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोभासी ४ ॥३५०॥ चत्तारि तरगा प० तं० समुद्दं तरामिति एगे समुद्दं तरइ, समुद्दं तरामिति एगे गोप्पयं तरइ, गोप्पयं तरामिति एगे ४। चत्तारि तरगा प० तं० समुद्दं तरित्ता णाममेगे समुद्दे विसीयइ, समुद्दं तरित्ता णाममेगे गोप्पए विसीयइ ४ ॥ ३५१ ॥ चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णे पुण्णे णाममेगे तुच्छे तुच्छे णाममेगे पुण्णे तुच्छे णाममेगे तुच्छे एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णे ४। चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी पुण्णे णाममेगे तुच्छोभासी ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी ४। चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णरूवे पुण्णे णाममेगे तुच्छरूवे ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णरूवे ४। चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णेवि एगे पियट्ठे, पुण्णेवि एगे अवदले तुच्छेवि एगे पियट्ठे तुच्छेवि एगे अवदले एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० पुण्णेवि एगे पियट्ठे ४। तहेव चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णेवि एगे विस्संदइ, पुण्णेवि एगे णो विस्संदइ, तुच्छेवि एगे विस्संदइ, तुच्छेवि एगे णो विस्संदइ। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० पुण्णेवि एगे विस्संदइ ४ तहेव। चत्तारि कुंभा प० तं० भिण्णे जज्जरिए परिस्साई अपरिस्साई। एवामेव चउव्विहे चरित्ते प० तं० भिण्णे जाव अपरिस्साई। चत्तारि कुंभा प० तं० महुकुंभे णाममेगे महुप्पिहाणे महुकुंभे णाममेगे विसपिहाणे विसकुंभे णाममेगे महुप्पिहाणे विसकुंभे णाममेगे विसपिहाणे ४ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया ४। हियमपावमकलुसं जीहा वि य महुरभासिणी णिच्चं जंमि पुरिसंमि विज्जइ से महुकुंभे महुपिहाणे (१) हियमपावमकलुसं, जीहा वि य कडुयभासिणी णिच्चं, जंमि पुरिसंमि विज्जइ, से महुकुंभे विसपिहाणे (२) जं हिययं कलुसमयं जीहा वि य महुरभासिणी णिच्चं जंमि पुरिसंमि विज्जइ, से विसकुंभे महुपिहाणे (३) जं हिययं कलुसमयं जीहा वि य कडुयभासिणी णिच्चं जंमि पुरिसंमि विज्जइ, से विसकुंभे विसपिहाणे (४) ॥ ३५२ ॥ चउ-

णाममेगे मणुस्सीए सद्धिं संवास गच्छइ ४। चउब्विहे संवासे प० तं० रक्खसे णाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवास गच्छइ, रक्खसे णाममेगे माणुस्सीए सद्धिं संवास गच्छइ ४ ॥ ४५३ ॥ चउव्विहे **अवद्धंसे** प० त० आसुरे आभियोगे संमोहे देवकिब्बिसे, चउहिं ठाणेहिं जीवा आसुरत्ताए कम्मं पकरेंति त० कोहसीलयाए पाहुडसीलयाए संसत्ततवोकम्मेण निमित्ताजीवयाए, चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगत्ताए कम्मं पगरेंति त० अत्तुक्कोसेणं परपरिवाएण भूइकम्मेण कोउयकरणेणं। चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताए कम्मं पगरेंति तं० उम्मग्गदेसणाए मग्गतराएण कामासंसपओगेणं भिज्झानियाणकरणेण। चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिब्विसियाए कम्मं पगरेंति त० अरिहंताण अवण्ण वयमाणे अरिहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्ण वयमाणे, आयरियउवज्झायाणमवण्ण वयमाणे चाउवण्णस्स संघस्स अवण्ण वयमाणे ॥ ४५४ ॥ **चउव्विहा पव्वज्जा** प० त० इहलोगपडिवद्धा परलोगपडिवद्धा दुहओ लोगपडिवद्धा अप्पडिवद्धा, चउव्विहा **पव्वज्जा** प० त० पुरओपडिवद्धा मग्गओपडिवद्धा दुहओपडिवद्धा अप्पडिवद्धा, चउव्विहा **पव्वज्जा** प० तं० ओवायपव्वज्जा अक्खायपव्वज्जा संगारपव्वज्जा विहगगइपव्वज्जा चउव्विहा **पव्वज्जा** प० त० तुयावइत्ता पुयावइत्ता मोयावइत्ता परिपूयावइत्ता, चउव्विहा **पव्वज्जा** प० तं० णडखइया भडखइया सीहखइया सीयालक्खइया, चउव्विहा किसी प० त० वाविया परिवाविया णिंदिया परिणिंदिया एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा प० तं० वाविया परिवाविया णिंदिया परिणिंदिया, चउव्विहा पव्वज्जा प० त० धण्णपुंजियसमाणा धण्णविरल्लियसमाणा धण्णविक्खित्तसमाणा धण्णसंकट्टियसमाणा ॥ ४५५ ॥ **चत्तारि सण्णाओ** पण्णत्ताओ त० आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा **चउहिं ठाणेहिं आहारसण्णा समुप्पज्जइ** त० ओमकोट्ठयाए छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मईए तदट्ठोवओगेणं, चउहिं ठाणेहिं **भयसण्णा** समुप्पज्जइ त० हीणसत्तयाए भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मईए तदट्ठोवओगेणं, चउहिं ठाणेहिं मेहुणसण्णा समुप्पज्जइ तं० चियमंससोणिययाए मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण मईए तदट्ठोवओगेण, चउहिं ठाणेहिं परिग्गहसण्णा समुप्पज्जइ त० अविमुत्तयाए लोभवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएण मईए तदट्ठोवओगेण ॥ ४५६ ॥ **चउव्विहा कामा** सिंगारा कलुणा बीभच्छा रोद्दा, **सिंगारा** कामा देवाणं, **कलुणा** कामा मणुयाणं, **बीभच्छा** कामा तिरिक्खजोणियाण, **रोद्दा** कामा णेरइयाणं ॥ ४५७ ॥ **चत्तारि उदगा** प० त० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदए उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदए गभीरे णाममेगे उत्ताणोदए गंभीरे णाममेगे

सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, फासामयाओ दुक्खाओ असंजोगेत्ता भवइ,
तेइंदिया णं जीवा समारंभमाणस्स चउव्विहे असंजमे कज्जइ।४६८ जिब्भामयाओ
सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवइ फासामयाओ
सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ फासामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवइ ॥ ४६९ ॥ सम्म-
दिट्ठियाणं णेरइयाणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ तं० आरंभिया परिग्गहिया माया-
वत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया सम्मदिट्ठियाणमसुरकुमाराणं चत्तारि किरियाओ प० एवं
चेव। एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं।४७० ॥ चउहिं ठाणेहिं संते गुणे नासेज्जा
तं० कोहेणं पडिनिवेसेणं अकयण्णुयाए, मिच्छत्ताभिनिवेसेणं। चउहिं ठाणेहिं संते
गुणे दीवेज्जा तं० अब्भासवत्तियं परछंदाणुवत्तियं कज्जहेउं कयपडिकइए वा।
णेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया तं० कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं एवं
जाव वेमाणियाणं णेरइयाणं चउट्ठाणनिव्वत्तिए सरीरे तं० कोहनिव्वत्तिए जाव
लोभनिव्वत्तिए, एवं जाव वेमाणियाणं। चत्तारि धम्मदारा प० तं० खंती मुत्ती
अज्जवे मद्दवे ॥ ४७१ ॥ चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पगरेंति तं०
महारंभयाए, महापरिग्गहयाए पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं चउहिं ठाणेहिं जीवा
तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति तं० माइल्लयाए नियडिल्लयाए अलियवयणेणं
कूडतुलकूडमाणेणं चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पगरेंति तं० पगइभद्दयाए
पगइविणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरियाए। चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए
कम्मं पगरेंति तं० सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं बालतवोकम्मेणं अकामनिज्जराए
॥४७२॥ चउव्विहे वज्जे प० तं० तते वितते घणे झुसिरे, चउव्विहे नट्टे प० तं० अंचिए
रिभिए आरभडे भिसोले चउव्विहे गेये प० तं० उक्खित्तए पत्तए मंदए रोविंदए,
चउव्विहे मल्ले प० तं० गंथिमे वेढिमे पूरिमे संघाइमे चउव्विहे अलंकारे प० तं०
केसालंकारे वत्थालंकारे मल्लालंकारे आभरणालंकारे चउव्विहे अभिणए प० तं०
दिट्ठंतिए पाडंसुए सामंतोवाणिवाइए लोगमज्झावसिए ॥ ४७३ ॥ सणंकुमारमाहिंदेसु णं
कप्पेसु विमाणा चउवण्णा प० तं० णीला लोहिया हालिद्दा सुक्किला। महासुक्कस-
हस्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ उड्ढं
उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥ ४७४ ॥ चत्तारि दगगब्भा प० तं० उस्सा महिया सीया
उसिणा चत्तारि दगगब्भा प० तं० हेमगा अब्भसंथडा सीओसिणा पंचरूविया
माहे उ हेमगा गब्भा फग्गुणे अब्भसंथडा सीओसिणा उ चित्ते वइसाहे
पंचरूविया (१) चत्तारि माणुस्सीगब्भा प० तं० इत्थित्ताए पुरिसत्ताए
णपुंसगत्ताए बिंबत्ताए अप्पं सुक्कं बहुं ओयं इत्थी तत्थ पजायइ, अप्पं ओयं

व्विहा उवसग्गा प० तं० दिव्वा माणुसा तिरिक्खजोणिया आयसंचेयणिज्जा । **दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा** प० तं० हासा पओसा वीमंसा पुढोवेमाया, **माणुस्सा उवसग्गा चउव्विहा** प० तं० हासा पाओसा वीमंसा कुसील-पडिसेवणया, **तिरिक्खजोणिया उवसग्गा** चउव्विहा प० तं० भया पदोसा आहारहेउ अवच्चलेणसारक्खणया, **आयसंचेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा** प० तं० घट्टणया पवडणया थंभणया लेसणया ॥ ४६१ ॥ **चउव्विहे कम्मे** प० तं० सुभे णामं एगे सुभे, सुभे णाममेगे असुभे, असुभे० ४ । चउव्विहे कम्मे प० तं० सुभे णाममेगे सुभविवागे, सुभे णाममेगे असुभविवागे, असुभे णाममेगे सुभविवागे, असुभे णाममेगे असुभविवागे । **चउव्विहे कम्मे** प० तं० पगडीकम्मे, ठिइकम्मे, अणुभावकम्मे पदेसकम्मे ॥ ४६२ ॥ **चउव्विहे संघे** प० तं० समणा समणीओ सावगा साविगाओ ॥ ४६३ ॥ **चउव्विहा बुद्धी** प० तं० उप्पत्तिया वेणइया कम्मिया, पारिणामिया, **चउव्विहा मई** प० तं० उग्गहमई ईहामई अवायमई धारणामई **अहवा चउव्विहा मई**, अरंजरोदगसमाणा, वियरोदग-समाणा सरोदगसमाणा सागरोदगसमाणा ॥ ४६४ ॥ चउव्विहा **संसारसमा-वण्णगा** जीवा प० तं० णेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा, चउव्विहा सव्व-जीवा प० तं० मणजोगी वइजोगी कायजोगी अजोगी, अहवा चउव्विहा सव्वजीवा प० तं० इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा णपुंसकवेयगा अवेयगा, अहवा चउव्विहा सव्व-जीवा प० तं० चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी, अहवा चउ-व्विहा सव्वजीवा प० तं० संजया असंजया संजयासंजया णोसंजयाणोअसंजया ॥ ४६५ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प०तं० मित्ते णाममेगे मित्ते, मित्ते णाममेगे अमित्ते, अमित्ते णाममेगे मित्ते, अमित्ते णाममेगे अमित्ते, चत्तारि पुरिसजाया प० तं० मित्ते णाममेगे मित्तरूवे चउभंगो ॥ ४६६ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० मुत्ते णाममेगे मुत्ते मुत्ते णाममेगे अमुत्ते ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० मुत्ते णाममेगे मुत्तरूवे ४ ॥ ४६७ ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउगइया चउआगइया प० तं० पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणा णेरइएहिंतो वा, तिरिक्ख-जोणिएहिंतो वा, मणुस्सेहिंतो वा, देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से पंचिंदियति-रिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्तं विप्पजहमाणे णेरइयत्ताए वा जाव देवत्ताए वा उवागच्छेज्जा, मणुस्सा चउगइया चउआगइया एवं चेव मणुस्सावि ॥ ४६८ ॥ बेइंदिया णं जीवा असमारंभमाणस्स चउव्विहे संजमे कज्जइ तं० जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवइ, फासामयाओ

मेहुणाओ वेरमणं (सदारसंतोसे) इच्छापरिमाणे ॥ ४८४ ॥ पंच वण्णा प० तं० किण्हा नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किल्ला पंचरसा प० तं० तित्ता कडुया कसाया अंबिला महुरा पंचकामगुणा प० तं० सद्दा रूवा गंधा रसा फासा पंचहिं ठाणेहिं जीवा सज्जंति तं० सद्देहिं जाव फासेहिं, एवं रज्जंति मुच्छंति गिज्झंति अज्झोववज्जंति पंचहिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जंति तं० सद्देहिं जाव फासेहिं, पंच ठाणा अपरिण्णाया जीवाणं अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति तं० सद्दा जाव फासा पंचठाणा सुपरिण्णाया जीवाणं हियाए सुभाए जाव आणुगामियत्ताए भवंति तं० सद्दा जाव फासा पंच ठाणा अपरिण्णाया जीवाणं दुग्गइगमणाए भवंति तं० सद्दा जाव फासा पंचठाणा परिण्णाया जीवाणं सुगइगमणाए भवंति तं० सद्दा जाव फासा ॥ ४८५ ॥ पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छंति तं० पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं पंचहिं ठाणेहिं जीवा सोगइं गच्छंति तं० पाणाइवायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं ॥ ४८६ ॥ पंच पडिमाओ प० तं० भद्दा सुभद्दा महाभद्दा सव्वओभद्दा भद्दुत्तरपडिमा ॥ ४८७ ॥ पंच थावरकाया प० तं० इंदे थावरकाए बंभे थावरकाए सिप्पे थावरकाए संमई थावरकाए पायावच्चे थावरकाए, पंच थावरकायाहिवई प० तं० इंदे थावरकायाहिवई, जाव पायावच्चे थावरकायाहिवई ॥ ४८८ ॥ पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि तप्पढमयाए खंभाएज्जा तं० अप्पभूयं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा कुंथुरासिभूयं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा महइमहालयं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा, देवं वा महिड्ढियं जाव महेसक्खं पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा पुरेसु वा पोराणाइं महइमहालयाइं महानिहाणाइं पहीणसामियाइं पहीणसेउयाइं पहीणगुत्तागाराइं उच्छिन्नसामियाइं उच्छिन्नसेउयाइं उच्छिन्नगुत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागरणगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंबाहसंनिवेसेसु सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु नगरनिद्धमणेसु सुसाणसुन्नागारगिरिकंदरसंतिसेलोवट्ठाणभवणगिहेसु संनिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए खंभाएज्जा ॥ ४८९ ॥ पंचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए नो खंभाएज्जा तं० अप्पभूयं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए नो खंभाएज्जा सेसं तहेव जाव भवणगिहेसु संनिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए नो खंभाएज्जा, सेसं तहेव इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव नो खंभाएज्जा ॥ ४९० ॥ नेरइयाणं सरीरगा पंचवण्णा

बहु सुक्के पुरिसो तत्थ पजायइ (१) दोण्हं पि रत्तसुक्काणं, तुल्लभावे नपुंसओ; इत्थीओतसमाओगे, बिंबं तत्थ पजायइ (२) ॥ ४७५ ॥ उप्पायपुव्वस्स ण चत्तारि चूलियावत्थू प०, चउव्विहे कव्वे प० गज्जे पज्जे कत्थे गेए ॥४७६॥ णेरइयाण चत्तारि समुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए एव वाउकाइयाणवि ॥ ४७७ ॥ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीगं अजिणाण जिणसकासाणं सव्वक्खरसनिवाईण जिणो इवं अवितहवागरमाणाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसपया होत्था, समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईण सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ४७८ ॥ हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचदसंठाणसठिया प० त० सोहम्मे ईसाणे सणकुमारे माहिंदे, मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पडिपुण्णचदसठाणसठिया प० त० बंभलोगे लतए महासुक्के सहस्सारे, उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसठाणसंठिया प० त० आणए पाणए आरणे अच्चुए ॥ ४७९ ॥ चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा प० तं० लवणोदए वरुणोदए खीरोदए घओदए, चत्तारि आवत्ता प० तं० खरावत्ते उन्नयावत्ते गूढावत्ते आमिसावत्ते, एवामेव चत्तारि कसाया प०त० खरावत्तसमाणे कोहे उन्नयावत्तसमाणे माणे, गूढावत्तसमाणा माया, आमिसावत्तसमाणे लोभे। खरावत्तसमाण कोहमणुपविट्ठे जीवे काल करेइ णेरइएसु उववज्जइ, उन्नयावत्तसमाण माणं एव चेव गूढावत्तसमाणं मायमेवं चेव आमिसावत्तसमाण लोभं अणुपविट्ठे जीवे काल करेइ णेरइएसु उववज्जइ ॥ ४८० ॥ अणुराहा णक्खत्ते चउतारे प० पुव्वासाढे एव चेव। उत्तरासाढे एव चेव ॥ ४८१ ॥ जीवा णं चउट्ठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्सति वा त० णेरइयणिव्वत्तिए तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिए मणुस्सणिव्वत्तिए देवणिव्वत्तिए। एवं उवचिणिंसु वा उवचिणति वा उवचिणिस्संति वा एव चिणउवचिणबंधउदीरवेय तह णिज्जरा चेव ॥ ४८२ ॥ चउप्पएसिया खंधा अणंता प० चउप्पएसोगाढा पोग्गला अणता प० चउसमयठिईया पोग्गला अणता प० चउगुणकालगा पोग्गला अणता जाव चउगुणलुक्खा पोग्गला अणता प० ॥ ४८३ ॥ **चउट्ठाणस्स चउत्थोद्देसो समत्तो ॥ चउट्ठाणं समत्तं ॥**

पंचमट्ठाणं

पचमहव्वया प० त० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण, **पचाणुव्वया** प० तं० थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमण, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, थूलाओ

किं मे परो करिस्सति । पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहम्मियं पारंचियं करेमाणे णातिक्कमइ तं०-सकुले वसइ कुलस्स भेयाए अब्भुट्ठेत्ता भवइ, गणे वसइ गणस्स भेयाए अब्भुट्ठेत्ता भवइ हिंसप्पेही छिद्दप्पेही अभिक्खणं अभिक्खणं पसिणायतणाइं पउंजित्ता भवइ, आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंचवुग्गहट्ठाणा प० तं० आयरियउवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए णं गणंसि आहारायणियाए किइकम्मं नो सम्मं पउंजित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए णं गणंसि जे सुयपज्जवजाए धारेन्ति ते काले २ नो सम्ममणुप्पवाएत्ता भवइ, आयरियउवज्झाए णं गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं नो सम्ममब्भुट्ठेत्ता भवइ, आयरियउवज्झाए णं गणंसि अणापुच्छियचारी यावि भवइ, नो आपुच्छियचारी आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि पंच अवुग्गहट्ठाणा प तं० आयरियउवज्झाए णं गणंसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवइ एवमहारायणियाए सम्मं किइकम्मं पउंजित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए णं गणंसि जे सुयपज्जवजाए धारेन्ति ते काले २ सम्ममणुपवाइत्ता एवं गिलाणसेहवेयावच्चं सम्मं अब्भुट्ठित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए णं गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवइ, नो अणापुच्छियचारी ॥५९७॥ पंच निसिज्जाओ प तं० उक्कुडुया गोदोहिया समपायपुया पलियंका अद्धपलियंका॥५९८॥ पंच अज्जवट्ठाणा प तं० साहुअज्जवं साहुमद्दवं साहुलाघवं साहुखंती साहुमुत्ती ॥५९९॥ पंच विहा जोइसिया प तं० चंदा सूरा गहा नक्खत्ता ताराओ ॥ ६०० ॥ पंच विहा देवा प तं० भवियदव्वदेवा नरदेवा धम्मदेवा देवातिदेवा भावदेवा ॥ ६०१ ॥ पंचविहा परियारणा प तं० कायपरियारणा फासपरियारणा रूवपरियारणा सद्दपरियारणा मणपरियारणा ॥ ६०२ ॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच अग्गमहिसीओ प तं० काली राई रयणी विज्जू मेहा बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो पंच अग्गमहिसीओ प तं० सुंभा निसुंभा रंभा निरंभा मयणा ॥ ६०३ ॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए पीढाणिए कुंजराणिए महिसाणिए रहाणिए, दुमे पायत्ताणियाहिवई सोदामे आसराया पीढाणियाहिवई कुंथू हत्थिराया कुंजराणियाहिवई लोहियक्खे महिसाणियाहिवई किन्नरे रहाणियाहिवई, बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई प तं० पायत्ताणिए जाव रहाणिए, महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई महासोदामे आसराया पीढाणियाहिवई मालंकारे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई महालोहियक्खे महिसाणियाहिवई किंपुरिसे रहाणियाहिवई, धरणिंदस्स णं नागिंदस्स नागकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया

पंचरसा प० तं० किण्हा जाव सुक्किला तित्ता जाव मधुरा, एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥ ४९१ ॥ पंच सरीरगा प० तं० ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए, ओरालियसरीरे पंचवण्णे पंचरसे प० तं० किण्हे जाव सुक्किले, तित्ते जाव महुरे, एवं जाव कम्मगसरीरे, सव्वे वि णं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवण्णा पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा ॥ ४९२ ॥ पंचहिं ठाणेहिं पुरिमपच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवइ तं० दुआइक्खं दुविभज्जं दुपस्सं दुतितिक्खं दुरणुचरं। पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणं सुगमं भवइ तं० सुआइक्खं सुविभज्जं सुपस्सं सुतितिक्खं सुरणुचरं ॥ ४९३ ॥ पंचठाणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं णिच्चं वण्णियाइं णिच्चं कित्तियाइं णिच्चं बुइयाइं णिच्चं पसत्थाइं णिच्चमब्भणुण्णायाइं भवंति तं० खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे, पंचठाणाइं समणाणं जाव अब्भणुण्णायाइं भवंति तं० सच्चे संजमे तवे चियाए बंभचेरवासे ॥ ४९४ ॥ पंचठाणाइं समणाणं जाव अब्भणुण्णायाइं भवंति तं० उक्खित्तचरए णिक्खित्तचरए अंतचरए पंतचरए लूहचरए, पंचठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं भवंति तं० अन्नायचरए अन्नवेलचरए मोणचरए संसट्ठकप्पिए तज्जायसंसट्ठकप्पिए, पंचठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं भवंति तं० उवनिहिए सुद्धेसणिए संखादत्तिए दिट्ठलाभिए पुट्ठलाभिए, पंचठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं भवंति तं० आयंबिलिए निव्वियए पुरिमड्ढिए परिमियपिंडवाइए भिन्नपिंडवाइए, पंचठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं भवंति तं० अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लूहाहारे, पंचठाणाइं जाव भवंति तं० अरसजीवी विरसजीवी अंतजीवी पंतजीवी लूहजीवी, पंचठाणाइं जाव भवंति तंजहा–ठाणाइए उक्कुडुआसणिए पडिमट्ठाई वीरासणिए णेसज्जिए, पंचठाणाइं जाव भवंति तं० दंडायइए लगंडसाई आयावए अवाउडए अकंडुयए ॥ ४९५ ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तं० अगिलाए आयरियवेयावच्चं करेमाणे एवं उवज्झायवेयावच्चं थेरवेयावच्चं तवस्सिवेयावच्चं गिलाणवेयावच्चं करेमाणे, पंचहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तं० अगिलाए सेहवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए कुलवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए गणवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए संघवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए साहम्मियवेयावच्चं करेमाणे ॥ ४९६ ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहम्मियं संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे णाइक्कमइ तं० सकिरियट्ठाणं पडिसेवित्ता भवति पडिसेवित्ता णो आलोएइ आलोएत्ता णो पट्ठवेइ पट्ठवेत्ता णो णिव्विसइ जाई इमाइं थेराणं ठिइप्पकप्पाइं भवंति ताइं अइयंचिय २ पडिसेवेइ से हंद हं पडिसेवामि

पुरिसे अक्कोसइ वा जाव अवहरइ वा ममं च णं सम्मं असहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासेमाणस्स किं मन्ने कज्जइ? एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जइ ममं च णं सम्मं सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स किं मन्ने कज्जइ? एगंतसो मे णिज्जरा कज्जइ इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिन्ने परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा ॥ ५०८ ॥ पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा तं० खित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा तहेव जाव अवहरइ वा दित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरइ वा जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरइ वा ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ने भवइ तेण मे एस पुरिसे जाव अवहरइ वा ममं च णं सम्मं सहमाणं खममाणं तितिक्खमाणं अहियासेमाणं पासित्ता बहवे अन्ने छउमत्था समणा निग्गंथा उदिन्ने परिसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति जाव अहियासिस्संति इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा ॥ ५०९ ॥ पंच हेऊ प० तं० हेउं न जाणइ हेउं न पासइ हेउं न बुज्झइ हेउं नाभिगच्छइ हेउं अन्नाणमरणं मरइ, पंच हेऊ प० तं० हेउणा न जाणइ जाव हेउणा अन्नाणमरणं मरइ, पंच हेऊ प० तं० हेउं जाणइ जाव हेउं छउमत्थमरणं मरइ, पंच हेऊ प० तं० हेउणा जाणइ जाव हेउणा छउमत्थमरणं मरइ, पंच अहेऊ प० तं० अहेउं न जाणइ जाव अहेउं छउमत्थमरणं मरइ, पंच अहेऊ प० तं० अहेउणा न जाणइ जाव अहेउणा छउमत्थमरणं मरइ, पंच अहेऊ प० तं० अहेउं जाणइ जाव अहेउं केवलिमरणं मरइ, पंच अहेऊ प० तं० अहेउणा जाणइ जाव अहेउणा केवलिमरणं मरइ ॥ ५१० ॥ केवलिस्स णं पंच अणुत्तरा प० तं० अणुत्तरे नाणे अणुत्तरे दंसणे अणुत्तरे चरित्ते अणुत्तरे तवे अणुत्तरे वीरिए ॥ ५११ ॥ पउमप्पहे णं अरहा पंच चित्ते होत्था तं० चित्ताहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते चित्ताहिं जाए चित्ताहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने चित्ताहिं परिनिव्वुए। पुप्फदंते णं अरहा पंच मूले होत्था मूलेणं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते एवं चेव एएणं अभिलावेणं इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ ॥ पउमप्पहस्स चित्ता मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स। पुव्वाइं आसाढा सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवया (१) रेवइया अणंतजिणो पूसो धम्मस्स संतिणो भरणी कुंथुस्स कत्तियाओ अरस्स तह रेवईओ य (२) मुणिसुव्वयस्स सवणो आसिणि नमिणो य नेमिणो चित्ता पासस्स विसाहाओ पंच य हत्थुत्तरे वीरे (३) सेसं जहा आयारे ॥ ५१२ ॥ पंचमट्ठाणस्स पढमोद्देसो समत्तो ॥

पंच संगामिया अणियाहिवई प० त० पायत्ताणिए जाव रहाणिए भद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई जसोधरे आसराया पीढाणियाहिवई सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई नीलकंठे महिसाणियाहिवई आणंदे रहाणियाहिवई । भूयाणंदस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई प० त० पायत्ताणिए जाव रहाणिए, दक्खे पायत्ताणियाहिवई सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई सेयकंठे महिसाणियाहिवई णंदुत्तरे रहाणियाहिवई वेणुदेवस्स णं सुवण्णिंदस्स सुवन्नकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई प० त० पायत्ताणिए एवं जहा धरणस्स तहा वेणुदेवस्स वि । वेणुदालियस्स य जहा भूयाणंदस्स, जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाण जाव घोसस्स जहा भूयाणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाण जाव महाघोसस्स, सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई प०तं० पायत्ताणिए जाव उसभाणिए हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई वाऊ आसराया पीढाणियाहिवई एरावणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई दामड्ढी उसभाणियाहिवई माढरे रहाणियाहिवई ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो पंच संगामिया अणिया जाव पायत्ताणिए पीढाणिए कुंजराणिए उसभाणिए रहाणिए, लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवई पुप्फदंते हत्थिराया कुंजराणियाहिवई महादामड्ढी उसभाणियाहिवई महामाढरे रहाणियाहिवई जहा सक्कस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव आरणस्स जहा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाण जाव अच्चुयस्स । सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरपरिसाए देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिई प० ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरपरिसाए देवीण पंच पलिओवमाइं ठिई प०॥५०४॥ पंचविहा **पडिहा** प० तं० गइपडिहा ठिइपडिहा बंधणपडिहा भोगपडिहा बलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमपडिहा ॥ ५०५ ॥ पंचविहे **आजीवे** प० तं० जाइआजीवे कुलाजीवे कम्माजीवे सिप्पाजीवे लिंगाजीवे ॥ ५०६ ॥ पंच **रायककुहा** प० तं० खग्गं छत्तं उप्फेसं उवाहणाओ वालवीयणी ॥ ५०७ ॥ पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे णं उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा तं० उदिन्नकम्मे खलु अयं पुरिसे उम्मत्तगभूए तेण मे एस पुरिसे अक्कोसए वा अवहसइ वा णिच्छोडेइ वा णिब्भच्छेइ वा बंधइ वा रुंभइ वा छविच्छेयं करेइ वा पमारं वा णेइ उद्दवेइ वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणमच्छिंदइ वा विच्छिंदइ वा भिंदइ वा अवहरइ वा जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा तहेव जाव अवहरइ वा ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ने भवइ तेण मे एस

नो कप्पइ निग्गथाणं वा, निग्गथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वियजियाओ पच महण्णवाओ महाणईओ अतो मासस्स दुक्खुत्तो वा, तिक्खुत्तो वा, उत्तरित्तए वा सतरित्तए वा त० गगा जउणा सरऊ एरावई मही, पचहिं ठाणेहिं कप्पइ त० भयसि वा, दुब्भिक्खंसि वा, पव्वहेज्ज व ण कोई उदयोघंसि वा एज्जमाणसि, महता वा अणारिएहिं, णो कप्पइ णिग्गंथाणं वा णिग्गथीण वा पढमपाउससि गामाणुगाम दूइज्जित्तए, पचहिं ठाणेहिं कप्पइ त० भयसि वा दुब्भिक्खसि वा जाव महता वा अणारिएहिं, वासावास पज्जोसवियाणं णो कप्पइ णिग्गथाण वा निग्गथीण वा गामाणुगाम दूइज्जित्तए, पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ त० णाणट्ठयाए दसणट्ठयाए चरित्तट्ठयाए आयरियउवज्झाया वा से वीसुंभेज्जा आयरियउवज्झायाण वा वहिया वेयावच्चं करणयाए ॥ ५१३ ॥ पच **अणुग्घाइमा** प० त० हत्थकम्म करेमाणे मेहुण पडिसेवेमाणे राइभोयण भुजमाणे सागारियपिंड भुजमाणे रायपिंड भुजमाणे, पचहिं ठाणेहि समणे निग्गथे रायतेउरमणुपविसमाणे नाइक्कमइ त० णगरं सिया सव्वओ समता गुत्ते गुत्तदुवारे वहवे समणा निग्गथा णो सचाएन्ति भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा तेसिं विण्णवणट्ठयाए रायतेउरमणुपविसेज्जा पाडिहारिय वा पीढफलगसेज्जासथारग पच्चप्पिणमाणे रायतेउरमणुपविसेज्जा हयस्स वा गयस्स वा दुट्ठस्स आगच्छमाणस्स भीए रायतेउरमणुपविसेज्जा परो वा ण सहसा वा वलसा वा वाहाए गहाय रायतेउरमणुपविसेज्जा वहिया व ण आरामगय वा उज्जाणगय वा रायतेउरजणो सव्वओ समता सपरिक्खिवित्ता ण निविसेज्जा इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं समणे निग्गथे जाव णाइक्कमइ ॥ ५१४ ॥ पचहिं ठाणेहिं **इत्थी पुरिसेण सद्धिं असंवसमाणी वि** गब्भ धरेज्जा त० इत्थी दुव्वियडा दुन्निसन्ना सुक्कपोग्गले अहिट्ठेज्जा, सुक्कपोग्गलससिट्ठे वा से वत्थे अतो जोणीए अणुपविसेज्जा सय वा सा सुक्कपोग्गले अणुपविसेज्जा परो वा से सुक्कपोग्गले अणुपविसेज्जा सीओदगवियडेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गले अणुपविसेज्जा, इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं जाव धरेज्जा, पंचहिं ठाणेहिं **इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि गब्भ नो धरेज्जा** त० अप्पत्तजोव्वणा अइक्कतजोव्वणा जाइवझा गेलन्नपुट्ठा दोमणसिया इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि गब्भ नो धरेज्जा, पचहिं ठाणेहिं **इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा** त० निच्चोउआ अणोउआ वावन्नसोया वाविद्धसोया अणंगपडिसेविणी इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं सवसमाणी वि गब्भ नो धरेज्जा, पचहिं ठाणेहिं **इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा** त० उदुसि णो णिगाम

णत्थि ॥ ५१७ ॥ **पंच विहा परिण्णा** प० तं० उवहिपरिण्णा उवस्सयपरिण्णा कसायपरिण्णा जोगपरिण्णा भत्तपाणपरिण्णा ॥ ५१८ ॥ पंच विहे **ववहारे** प० तं० आगमे सुए आणा धारणा जीए, जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा, णो से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुए सिया सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा णो से तत्थ सुए सिया एवं जाव जहा से तत्थ जीए सिया जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, आगमेणं जाव जीएणं जहा २ से तत्थ आगमे जाव जीए तहा २ ववहारं पट्ठवेज्जा से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा णिग्गंथा ? इच्चेयं पंच विहं ववहारं जया जया जहिं जहिं तया तया तहिं तहिं अणिस्सिओवस्सियं सम्मं ववहरमाणे समणे णिग्गंथे आणाए आराहए भवइ ॥ ५१९ ॥ **संजयमणुस्साणं सुत्ताणं पंच जागरा** प० तं० सद्दा जाव फासा संजयमणुस्साणं जागराणं पंच सुत्ता प० तं० सद्दा जाव फासा असंजयमणुस्साणं सुत्ताणं वा जागराणं वा पंच जागरा प० तं० सद्दा जाव फासा ॥ ५२० ॥ पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं आइज्जंति तं० पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं । पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं वमंति तं० पाणाइवायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं । पंचमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति पंच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए पंच पाणगस्स ॥ ५२१ ॥ पंच विहे **उवघाए** प० तं० उग्गमोवघाए उप्पायणोवघाए एसणोवघाए परिकम्मोवघाए परिहरणोवघाए **पंचविहा विसोही** प० तं० उग्गमविसोही उप्पायणविसोही एसणाविसोही परिकम्मविसोही परिहरणविसोही, **पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोहियत्ताए कम्मं पगरेंति** तं० अरिहंताणमवण्णं वदमाणे अरिहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वदमाणे आयरियउवज्झायाणमवण्णं वदमाणे चाउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वदमाणे विविक्कतवबंभचेराणं देवाणं अवण्णं वदमाणे, पंचहिं ठाणेहिं जीवा **सुलभबोहियत्ताए** कम्मं पगरेंति, अरिहंताणं वण्णं वदमाणे, जाव विविक्कतवबंभचेराणं देवाणं वण्णं वदमाणे ॥ ५२२ ॥ पंच **पडिसंलीणा** प० तं० सोइंदियपडिसंलीणे जाव फासिंदियपडिसंलीणे, **पंच अपडिसंलीणा** प० तं० सोइंदियअपडिसंलीणे जाव फासिंदियअपडिसंलीणे, **पंच विहे संवरे** प० तं०– सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे **पंचविहे असंवरे** प० तं० सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदियअसंवरे ॥ ५२३ ॥ **पंच विहे संजमे** प० तं० सामाइयसंजमे छेदोवट्ठावणियसंजमे परिहारविसुद्धियसंजमे सुहुमसंपरायसंजमे अहक्खायचारित्तसंजमे, एगिंदिया णं जीवा असमारंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ तं० पुढविकाइयसंजमे जाव वणस्सइकाइयसंजमे, एगिंदिया णं जीवा समारंभमाणस्स पंचविहे असंजमे

कज्जइ तं० पुढविकाइयसंजमे जाव वणस्सइकाइयसंजमे पंचिंदिया णं जीवा
असमारंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ तं० सोइंदियसंजमे जाव फासिंदियसंजमे
पंचिंदिया णं जीवा समारंभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ तं० सोइंदियअसंजमे जाव
फासिंदियअसंजमे सव्वपाणभूयजीवसत्ता णं असमारंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ
तं० एगिंदियसंजमे जाव पंचिंदियसंजमे सव्वपाणभूयजीवसत्ता णं समारंभमाणस्स
पंचविहे असंजमे कज्जइ तं० एगिंदियअसंजमे जाव पंचिंदियअसंजमे ॥ ५२४ ॥ पंच-
विहा तणवणस्सइकाइया प० तं० अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया
बीयरुहा ॥ ५२५ ॥ पंचविहे आयारे प० तं० णाणायारे दंसणायारे चरित्ता-
यारे तवायारे वीरियायारे, पंचविहे आयारपकप्पे प० तं० मासिए उग्घाइए
मासिए अणुग्घाइए चउमासिए उग्घाइए चउमासिए अणुग्घाइए आरोवणा
आरोवणा पंचविहा प० तं० पट्ठविया ठविया कसिणा अकसिणा हाडहडा
॥ ५२६ ॥ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमे णं सीयाए महाणईए उत्तरेणं
पंचवक्खारपव्वया प० तं० मालवंते चित्तकूडे पम्हकूडे णलिणकूडे एगसेले जंबू-
मंदरस्स पुरओ सीयाए महाणईए दाहिणेणं पंचवक्खारपव्वया प० तं० तिकूडे
वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे सोमणसे जंबूमंदरपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं सीओयाए
महाणईए दाहिणेणं पंचवक्खारपव्वया प० तं० विज्जुप्पभे अंकावई पम्हावई
आसीविसे सुहावहे, जंबूमंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणईए उत्तरेणं पंच
वक्खारपव्वया प० तं० चंदपव्वए सूरपव्वए णागपव्वए देवपव्वए गंधमायणे
जंबूमंदरस्स दाहिणेणं देवकुराए कुराए पंचमहद्दहा प० तं० णिसहदहे देवकुरुदहे
सूरदहे सुलसदहे विज्जुप्पभदहे, जंबूमंदरउत्तरेणं उत्तरकुराए कुराए पंचमहद्दहा प०
तं० णीलवंतदहे उत्तरकुरुदहे चंददहे एरावणदहे मालवंतदहे, सव्वेवि णं वक्खारप-
व्वया सीयासीओयाओ महाणईओ मंदरं वा पव्वयंतेणं पंचजोयणसयाइं उड्ढं
उच्चत्तेणं पंचगाउसयाइं उव्वेहेणं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स
सीयाए महाणईए उत्तरेणं पंचवक्खारपव्वया प० तं० मालवंते एवं
जहा जाव पोक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे वक्खारा दहा य वक्खारपव्व-
यउच्चत्तं समयक्खेत्ते णं पंच भरहाइं पंच एरवयाइं एवं जहा चउट्ठाणे
बीयउद्देसे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव पंच मंदरा पंचमंदरचूलियाओ णवरं
उसुयारा नत्थि ॥ ५२७ ॥ उसभे णं अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं
होत्था भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था बाहुबली णं
अणगारे एवं चेव। बंभी णं अज्जा एवं चेव एवं सुंदरीवि पंचहिं ठाणेहिं सुत्ते वि-

वुज्झेज्जा तं० सद्देण फासेण भोयणपरिणामेण णिद्दक्खएणं सुविणदसणेणं, पंचहिं ठाणेहिं **समणे णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णाइक्कमइ** त० णिग्गथिं च ण अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खीजाइए वा ओहाएज्जा तत्थ णिग्गथे णिग्गथिं गिण्हमाणे वा अवलबमाणे वा णाइक्कमइ णिग्गथे णिग्गथिं दुग्गसि वा विसमसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलबमाणे वा णाइक्कमइ णिग्गंथे णिग्गथिं सेयसि वा पकसि वा पणगसि वा उदगसि वा उक्कस्समाणिं वा उवुज्झमाणिं वा गिण्हमाणे वा अवलबमाणे वा णाइक्कमइ णिग्गथे णिग्गंथिं णाव आरुहमाणे वा ओरुहमाणे वा णाइक्कमइ खित्तइत्त दित्तइत्त जक्खाइट्ठ उम्मायपत्त उवसग्गपत्त साहिगरण सपायच्छित्त जाव भत्तपाणपडियाइक्खियं अट्ठजाय वा निग्गथे णिग्गथिं गिण्हमाणे वा अवलबमाणे वा णाइक्कमइ ॥ ५२८ ॥ आयरियउवज्झायस्स णं गणसि **पंच अतिसेसा** प० त० आयरियउवज्झाए अतोउवस्सयस्स पाए निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णाइक्कमइ आयरियउवज्झाए अतो उवस्सयस्स उच्चारपासवण विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा णाइक्कमइ आयरियउवज्झाए पभू इच्छा वेयावडिय करेज्जा इच्छा णो करेज्जा आयरियउवज्झाए अतो उवस्सयस्स एगराइ वा दुराइ वा एगागी वसमाणे णाइक्कमइ। आयरियउवज्झाए वाहिं उवस्सयस्स एगराइ वा दुराइ वा वसमाणे णाइक्कमइ। पचहिं ठाणेहिं आयरियउवज्झायस्स गणावक्कमणे प० त० आयरियउवज्झाए गणसि आणं वा धारण वा नो सम्म पउजित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए गणसि अहारायणियाए किइकम्म वेणइय नो सम्मं पउजित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए गणसि जे सुयपज्जवजाए धारिंति ते काले णो सम्ममणुपवादेत्ता भवइ, आयरियउवज्झाए गणसि सगणियाए वा परगणियाए वा निग्गंथीए वहिल्लेसे भवइ, मित्ते णाइगणे वा से गणाओ अवक्कमेज्जा तेसिं सगहोवग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे पण्णत्ते। **पंच विहा इड्ढिमंता मणुस्सा** प० त० अरहता चक्कवट्टी वलदेवा वासुदेवा भावियप्पाणो अणगारा ॥ ५२९ ॥ **पंचमट्ठाणस्स विइओ उद्देसो समत्तो** ॥

पंच अत्थिकाया प० त० धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए धम्मत्थिकाए अवन्ने अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे से समासओ पंचविहे प० त० दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ दव्वओ ण धम्मत्थिकाए एगं दव्व खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते कालओ ण कयाइ णासी न कयाइ न भवइ न कयाइ न भवि[illegible] भुविं भवइ य भविस्सइ य धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए [illegible] अवन्ने

जयिणे जाएत्ते अयमट्टे गुणओ गमणगुणे य (१) अधम्मत्थिकाए अवण्णे एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे (२) आगासत्थिकाए अवण्णे एवं चेव नवरं खेत्तओ लोगा-लोगप्पमाणमित्ते गुणओ अवगाहणागुणे सेसं तं चेव (३) जीवत्थिकाए णं अवण्णे एवं चेव नवरं दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं, अरूवी जीवे सासए, गुणओ उवओगगुणे सेसं तं चेव (४) पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए अवट्ठिए जाव दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते कालओ न कयाइ नासी जाव णिच्चे भावओ वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते गुणओ गहणगुणे ॥ ५१ ॥ पंच गईओ प० तं० निरयगई तिरियगई मणुयगई देवगई सिद्धिगई। पंच इंदियत्था प० तं० सोइं-दियत्थे जाव फासिंदियत्थे पंच मुंडा प० तं० –सोइंदियमुंडे जाव फासिंदियमुंडे अहवा पंच मुंडा प० तं० कोहमुंडे माणमुंडे मायामुंडे लोभमुंडे सिरमुंडे ॥ ५११ ॥ अहे लोगे णं पंच बायरा प० तं० पुढविकाइया आउ वाउ वणस्सइ-काइया उराला तसा पाणा ॥ उड्ढलोगे णं पंच बायरा एए चेव तिरियलोगे णं पंच बायरा प० तं० एगिंदिया जाव पंचिंदिया। पंच विहा बायरतेउकाइया प० तं० इंगाले जाले मुम्मुरे अच्ची अलाए, बायरवाउकाइया पंचविहा प० तं० पाईण-वाए पडीणवाए उदीणवाए दाहिणवाए विदिसिवाए पंचविहा अचित्ता वाउ-काइया प० तं० अक्कंते धंते पीलिए सरीराणुगए संमुच्छिमे ॥ ५१२ ॥ पंच नियंठा प० तं० पुलाए बउसे कुसीले नियंठे सिणाए। पुलाए पंच विहे प० तं० नाणपुलाए दंसणपुलाए चरित्तपुलाए लिंगपुलाए अहासुहुमपुलाए नामं पंचमे। बउसे पंचविहे प० तं० आभोगबउसे अणाभोगबउसे संवुडबउसे असंवुडबउसे अहासुहुमबउसे नामं पंचमे । कुसीले पंचविहे प० तं० नाणकुसीले दंसण-कुसीले चरित्तकुसीले लिंगकुसीले अहासुहुमकुसीले नामं पंचमे। नियंठे पंचविहे प० तं० पढमसमयनियंठे अपढमसमयनियंठे चरिमसमयनियंठे अचरिमसमयनियंठे अहासुहुमनियंठे नामं पंचमे। सिणाए पंच विहे प० तं० अच्छवी असबले अक-म्मंसे संसुद्धनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली अपरिस्सावी ॥ ५१३ ॥ कप्पइ निग्गंथाणं वा निग्गंथीणं वा पंच वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा तं० जंगिए भंगिए साणए पोत्तिए तिरीडपट्टए नामं पंचमए। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पंच रयहरणाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा तंजहा–उण्णिए उट्टिए साणए पच्च-पिच्चिए मुंजापिच्चिए नामं पंचमे ॥ ५१४ ॥ धम्मं चरमाणस्स पंच निस्सा ठाणा प० तं० छक्काए गणे राया गिहवई सरीरं । पंच निही प० तं०

वुज्झेज्जा त० सद्देण फासेणं भोयणपरिणामेण णिद्दक्खएणं सुविणदंसणेण, पंचहिं ठाणेहिं **समणे णिग्गंथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णाइक्कमइ** त० णिग्गर्थिं च ण अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खीजाइए वा ओहाएज्जा तत्थ णिग्गथे णिग्गथिं गिण्हमाणे वा अवलवमाणे वा णाइक्कमइ णिग्गथे णिग्गंथिं दुग्गसि वा विसमसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा णाइक्कमइ णिग्गथे णिग्गर्थिं सेयसि वा पकसि वा पणगसि वा उदगसि वा उक्कस्समाणिं वा उवुज्झमाणिं वा गिण्हमाणे वा अवलचमाणे वा णाइक्कमइ णिग्गथे णिग्गथिं णाव आरुहमाणे वा ओरुहमाणे वा णाइक्कमइ खित्तइत्त दित्तइत्त जक्खाइट्ठं उम्मायपत्त उवसग्गपत्त साहिगरण सपायच्छित्त जाव भत्तपाणपडियाइक्खिय अट्ठजाय वा निग्गथे णिग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलवमाणे वा णाइक्कमइ ॥ ५२८ ॥ आयरियउवज्झायस्स ण गणसि **पंच अतिसेसा** प० त० आयरियउवज्झाए अतोउवस्सयस्स पाए निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णाइक्कमइ आयरियउवज्झाए अतो उवस्सयस्स उच्चारपासवण विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा णाइक्कमइ आयरियउवज्झाए पभू इच्छा वेयावडिय करेज्जा इच्छा णो करेज्जा आयरियउवज्झाए अतो उवस्सयस्स एगराइ वा दुराइ वा एगागी वसमाणे णाइक्कमइ। आयरियउवज्झाए वाहिं उवस्सयस्स एगराइ वा दुराइ वा वसमाणे णाइक्कमइ। पचहिं ठाणेहिं आयरियउवज्झायस्स गणावक्कमणे प० त० आयरियउवज्झाए गणसि आणं वा धारण वा नो सम्म पउजित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए गणसि अहारायणियाए किइकम्म वेणइयं नो सम्म पउजित्ता भवइ, आयरियउवज्झाए गणसि जे सुयपज्जवजाए धारिंति ते काले णो सम्ममणुपवादेत्ता भवइ, आयरियउवज्झाए गणसि सगणियाए वा परगणियाए वा निग्गथीए वहिल्लेसे भवइ, मित्ते णाइगणे वा से गणाओ अवक्कमेज्जा तेसिं सगहोवग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे पण्णत्ते। **पंच विहा इड्ढिमंता मणुस्सा** प० त० अरहता चक्कवट्टी वलदेवा वासुदेवा भावियप्पाणो अणगारा ॥ ५२९ ॥ **पंचमट्ठाणस्स विइओ उद्देसो समत्तो** ॥

पच अत्थिकाया प० त० धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए धम्मत्थिकाए अवन्ने अगधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे से समासओ पचविहे प० त० दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ दव्वओ ण धम्मत्थिकाए एग दव्व खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते कालओ ण कयाइ णासी न कयाइ न भवइ न कयाइ न भविस्सइत्ति भुविं भवइ य भविस्सइ य धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ... ने अवन्ने

जोएंति समयं उऊ परिणमंति; णच्चुण्हं णाइसीओ बहूदओ होइ णक्खत्ते (१)
ससिसगलपुण्णमासी जोएइ विसमचारिणक्खत्ते कडुओ बहूदओ वा तमाहु संवच्छरं
चंदं (२) विसमं पवालिणो परिणमंति, अणुऊसु देंति पुप्फफलं, वासं च सम्मं वासइ
तमाहु संवच्छरं कम्मं (३) पुढविदगाणं तु रसं पुप्फफलाणं तु देइ आइच्चो;
अप्पेण वि वासेणं सम्मं निप्फज्जए सस्सं (४) आइच्चतेयतविया खणलवदिवसा
उऊ परिणमंति; पूरिंति रेणुथलयाइं, तमाहु अभिवड्ढियं जाण ५ (५३९) पंच
विहे जीवस्स णिज्जाणमग्गे प० तं० पाएहिं ऊरूहिं उरेणं सिरेणं सव्वंगेहिं
पाएहिं णिज्जाणमाणे णिरयगामी भवइ ऊरूहिं णिज्जाणमाणे तिरियगामी भवइ
उरेणं णिज्जाणमाणे मणुयगामी भवइ सिरेणं णिज्जाणमाणे देवगामी भवइ सव्वंगेहिं
णिज्जाणमाणे सिद्धिगइपज्जवसाणे पण्णत्ते पंचविहे छेयणे प० तं० उप्पायछेयणे
वियच्छेयणे बंधच्छेयणे पएसच्छेयणे दोधारच्छेयणे पंचविहे आणंतरिए
प० तं० उप्पायाणंतरिए वियाणंतरिए पएसाणंतरिए समयाणंतरिए सामण्णाणंतरिए।
पंचविहे अणंते प० तं० णामाणंतए ठवणाणंतए दव्वाणंतए गणणाणंतए पए-
साणंतए, अहवा पंचविहे अणंतए प० तं० एगओऽणंतए दुहओऽणंतए देस
वित्थाराणंतए सव्ववित्थाराणंतए सासयाणंतए ॥ ५४० ॥ पंचविहे णाणे प० तं०
आभिणिबोहियणाणे सुयणाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे पंचविहे
णाणावरणिज्जे कम्मे प० तं० आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे जाव केवलणाणा-
वरणिज्जे, पंचविहे सज्झाए प० तं० वायणा पुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा
पंचविहे पच्चक्खाणे प० तं० सद्दहणसुद्धे विणयसुद्धे अणुभासणासुद्धे अणुपालणा-
सुद्धे भावसुद्धे पंचविहे पडिक्कमणे प० तं० आसवदारपडिक्कमणे मिच्छत्तपडि-
क्कमणे कसायपडिक्कमणे जोगपडिक्कमणे भावपडिक्कमणे पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं
वाएज्जा तं० संगहट्ठयाए उवग्गहट्ठयाए णिज्जरट्ठयाए सुत्ते वा मे पज्जवयाए भवि-
स्सइ सुत्तस्स वा अवोच्छित्तिणयट्ठयाए पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं सिक्खेज्जा तं०
णाणट्ठयाए दंसणट्ठयाए चरित्तट्ठयाए वुग्गहविमोयणट्ठयाए अहत्थे वा भावे जाणि-
स्सामीतिकट्टु, सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचवण्णा प० तं० किण्हा जाव
सुक्किल्ला (१) सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प०
(२) बंभलोगलंतएसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पंचरयणीओ
उड्ढं उच्चत्तेणं प० (३) णेरइया णं पंचवण्णे पंचरसे पोग्गले बंधेसु वा बंधंति वा
बंधिस्संति वा तं० किण्हे जाव सुक्किल्ले, तित्ते जाव महुरे, एवं जाव वेमाणिया
॥ ५४१ ॥ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं गंगामहाणइं पंचमहाणईओ

पुत्तणिही मित्तणिही सिप्पणिही धणणिही धन्नणिही **पंचविहे सोए** प० त० पुढविसोए आउसोए तेउसोए मतसोए बभसोए, **पंचठाणाइं छउमत्थे सव्व-भावेणं ण जाणइ ण पासइ** त० धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थि-कायं जीवं असरीरपडिवद्धं परमाणुपोग्गल, एयाणि चेव उप्पण्णणाणदसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ पासइ धम्मत्थिकाय जाव परमाणुपोग्गल । अहे लोगे ण पंच अणुत्तरा महइमहालया महाणिरया प० त० काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे, उड्ढलोगे ण पंच अणुत्तरा महइमहालया **महाविमाणा** प० त० विजये वेजयते जयते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे ॥ ५३५ ॥ **पंच पुरिस-जाया** प० तं० हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते उदयणसत्ते **पंच मच्छा** प० त० अणुसोयचारी पडिसोयचारी अतचारी मज्झचारी सव्वचारी, एवामेव पच भिक्खागा प० तं० अणुसोयचारी जाव सव्वसोयचारी **पंच वणीमगा** प० त० अतिहिवणीमए किवणवणीमए माहणवणीमए साणवणीमए समणवणीमए । **पंचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवइ** त० अप्पा पडिलेहा लाघविए पसत्थे रूवेवेसा-सिए तवे अणुण्णाए विउले इंदियनिग्गहे **पंच उक्कला** प० तं० दंडुक्कले रज्जुक्कले तेणुक्कले देसुक्कले सव्वुक्कले **पंच समिईओ** प० त० इरियासमिई भासा जाव पारिठावणियासमिई ॥ ५३६ ॥ **पंचविहा संसारसमावन्नगा** जीवा प० त० एगिंदिया जाव पर्चिदिया, एगिंदिया पचगइया पंचागइया प० त० एगिंदिए एगिं-दिएसु उववज्जमाणे एगिंदिएहिंतो वा जाव पर्चिदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा से चेव णं से एगिंदिए एगिंदियत्तं विप्पजहमाणे एगिंदियत्ताए वा जाव पर्चिदियत्ताए वा गच्छेज्जा, वेइंदिया पचगइया पचागइया एव चेव, एव जाव पंर्चिदिया पचगइया पंचागइया प० तं० पर्चिदिया जाव गच्छेज्जा ॥ ५३७ ॥ **पंचविहा सव्वजीवा** प० त० कोहकसाई जाव लोभकसाई अकसाई, अहवा पचविहा सव्वजीवा प० त० नेरइया जाव देवा सिद्धा, अह भते ! कलमसूरतिलमुग्गमासणिप्फावकुलत्थआलि-सदगसईणपलिमथगाण एएसि ण धन्नाण कुट्ठाउत्ताण जहा सालीण जाव केवइस काल जोणी संचिट्ठइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पच सवच्छराई, तेण परं जोणी पमिलायइ जाव तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते ॥ ५३८ ॥ **पंच संवच्छरा** प० त० णक्खत्तसवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसवच्छरे लक्खणसंव-च्छरे सणिचरसवच्छरे, **जुगसंवच्छरे पंचविहे** प० त० चंदे चदे अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिए चेव, **पमाणसंवच्छरे पंचविहे** प० त० णक्खत्ते चंदे उऊ आइच्चे अभिवड्ढिए **लक्खणसंवच्छरे पंचविहे** प० त० समग नक्खत्ता जोगं

परमाणुपोग्गलं वा छिंदित्तए वा भिंदित्तए वा अगणिकाएणं वा समोदहित्तए, बहिया वा लोगंता गमणयाए ॥ ५४७ ॥ छज्जीवनिकाया प तं पुढविकाइया जाव तसकाइया ॥ ५४८ ॥ छ तारग्गहा प तं सुक्के बुहे, बहस्सई, अंगारए, सणिच्छरे, केऊ ॥ ५४९ ॥ छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा प तं पुढविकाइया जाव तसकाइया ॥ ५५० ॥ पुढविकाइया छगइया छआगइया प तं पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा जाव तसकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा, से चेव णं से पुढविकाइए पुढविकायत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा जाव तसकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा, आउकाइयावि छगइया छआगइया एवं चेव जाव तसकाइया ॥ ५५१ ॥ छव्विहा सव्वजीवा प तं आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी अन्नाणी ॥ ५५२ ॥ अहवा छव्विहा सव्वजीवा प तं एगिंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया ॥ ५५३ ॥ अहवा छव्विहा सव्वजीवा प तं ओरालियसरीरी वेउव्वियसरीरी आहारगसरीरी तेयगसरीरी कम्मगसरीरी असरीरी ॥ ५५४ ॥ छव्विहा तणवणस्सइकाइया प तं अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा संमुच्छिमा ॥ ५५५ ॥ छट्ठाणाइं सव्वजीवाणं णो सुलभाइं भवंति तं माणुस्सए भवे आरिए खित्ते जम्मं सुकुले पच्चायाती केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स सवणया सुयस्स वा सद्दहणया सद्दहियस्स वा पत्तियस्स वा रोइयस्स वा सम्मं काएणं फासणया ॥ ५५६ ॥ छ इंदियत्था प तं सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे नोइंदियत्थे ॥ ५५७ ॥ छव्विहे संवरे प तं सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे नोइंदियसंवरे ॥ ५५८ ॥ छव्विहे असंवरे प तं सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदियअसंवरे, नोइंदियअसंवरे ॥ ५५९ ॥ छव्विहे साए प तं सोइंदियसाए जाव नोइंदियसाए ॥ ५६० ॥ छव्विहे असाए प तं सोइंदियअसाए, जाव नोइंदियअसाए ॥ ५६१ ॥ छव्विहे पायच्छित्ते प तं आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे, तवारिहे ॥ ५६२ ॥ छव्विहा मणुस्सा प तं जंबूदीवगा धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धगा धायइसंडदीवपच्चत्थिमद्धगा पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धगा पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धगा अंतरदीवगा अहवा छव्विहा मणुस्सा प तं संमुच्छिममणुस्सा कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा गब्भवक्कंतियमणुस्सा कम्मभूमिया अकम्मभूमिया अंतरदीवगा ॥ ५६३ ॥ छव्विहा इड्ढिमंता मणुस्सा प तं अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा ॥ ५६४ ॥ छव्विहा अणिड्ढिमंता मणुस्सा प तं हेमवंतगा हेरण्णवंतगा हरिवंसगा रम्मगवंसगा कुरु-

समप्पेंति तं० जउणा सरऊ आवी कोसी मही (१) जंबूमंदरस्स दाहिणेणं सिंधु-
हाणई पंचमहाणईओ समप्पेंति तं० सतद्दू विभासा वितत्था एरावती चंद्रभागा (२)
जंबूमंदरस्स उत्तरेणं रत्तामहानई पंचमहाणईओ समप्पेंति तं० किण्हा महाकिण्हा
नीला महानीला महातीरा (३) जंबूमंदरस्स उत्तरेणं रत्तावई महाणई पंचमहा-
णईओ समप्पेंति तं० इंदा इंदसेणा सुसेणा वारिसेणा महाभोगा (४) ॥ ५४२ ॥
पंच तित्थयरा कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडा जाव पव्वइया तं०
वासुपुज्जे मल्ली अरिट्ठनेमी पासे वीरे। चमरचंचाए णं रायहाणीए पंच सभा
प० तं० सुहम्मासभा उववायसभा अभिसेयसभा अलंकारियसभा ववसायसभा,
एगमेगे णं इंदट्ठाणे णं पंच सभाओ प० तं० सुहम्मासभा जाव ववसायसभा। पंच
णक्खत्ता पंच तारा प० तं० धणिट्ठा रोहिणी पुणव्वसू हत्थो विसाहा, जीवा णं
पंचट्ठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा तं०
एगिंदियनिव्वत्तिए जाव पंचिंदियनिव्वत्तिए एवं चिण उवचिण बंध उदीर वेद तह
णिज्जरा चेव, पंचपएसिया खंधा अणंता प० पंचपएसोगाढा पोग्गला अणंता प०
जाव पंच गुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ ५४३ ॥ पंचमट्ठाणस्स तइओ
उद्देसो समत्तो, पंचमट्ठाणं समत्त ॥

छट्ठट्ठाणं

छहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ गणं धारित्तए तं० सड्ढी पुरिसजाए, सच्चे
पुरिसजाए, मेहावी पुरिसजाए, बहुस्सुए पुरिसजाए, सत्तिमं, अप्पाहिगरणे, छहिं
ठाणेहिं निग्गंथे निग्गंथिं गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा णाइक्कमइ, तं० खित्तचित्तं,
दित्तचित्तं, जक्खाइट्ठं, उम्मायपत्तं, उवसग्गपत्तं, साहिगरणं ॥ ५४४ ॥ छहिं
ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीओ य साहम्मियं कालगयं समायरमाणा णाइक्कमन्ति तं०
अंतोहिंतो वा बाहिं णीणेमाणा, बाहिंहिंतो वा निब्बाहिं णीणेमाणा, उवेहमाणा वा,
उवासमाणा वा, अणुन्नवेमाणा वा, तुसिणीए वा संपव्वयमाणा ॥ ५४५ ॥ छ
ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेणं ण जाणइ ण पासइ तं० धम्मत्थिकायमधम्मत्थि-
कायमागासं जीवमसरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं सद्दं एयाणि चेव उप्पन्ननाणदंस-
णधरे अरहा जिणे जाव सव्वभावेणं जाणइ पासइ धम्मत्थिकायं जाव सद्दं ॥ ५४६ ॥
छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाणं णत्थि इड्ढीति वा जुत्तीति वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा
पुरिसक्कार जाव परक्कमेति वा तं० जीवं वा अजीवं करणयाए, अजीवं वा जीवं करणयाए,
एगसमएणं वा दो भासाओ भासित्तए, सयं कडं वा कम्मं वेएमि वा मा वा वेएमि,

वासिणो अतरदीवगा ॥ ५६५ ॥ छव्विहा ओसप्पिणी प० तं० सुसमसुसमा जाव दुसमदुसमा, छव्विहा उस्सप्पिणी प० त० दुसमदुसमा जाव सुसमसुसमा ॥५६६॥ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया छच्च धणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं हुत्था, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालयित्था ॥५६७॥ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए एवं चेव ॥५६८॥ जंबू० भरहेरवए आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए एव चेव, जाव छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउ पालइस्सति ॥ ५६९ ॥ जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया छधणुस्सहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेणं प० छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउ पालेंति ॥ ५७० ॥ एव धायइसडदीवपुरच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा ॥ ५७१ ॥ छव्विहे सघयणे प०त० वइरोसभणारायसघयणे, उसभणारायसघयणे, नारायसघयणे, अद्धनारायसंघयणे, कीलियासघयणे, छेवट्ठसघयणे ॥ ५७२ ॥ छव्विहे सठाणे प०त० समचउरंसे, णग्गोहपरिमडले, साई, खुज्जे, वामणे, हुंडे ॥ ५७३ ॥ छट्ठाणा अणत्तवओ अहियाए असुभाए जाव अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं० परियाए परियाले सुए तवे लाभे पूयासक्कारे ॥ ५७४ ॥ छट्ठाणा अत्तवतो हियाए जाव आणुगामियत्ताए भवति तं० परियाए परियाले जाव पूयासक्कारे ॥ ५७५ ॥ छव्विहा जाइआरिया मणुस्सा प० त० अवठ्ठा य कलदा य वेदेहा वेदिगाइया, हरिता चुंचुणा चेव छप्पेया इब्भजाइओ ॥ ५७६ ॥ छव्विहा कुलारिया मणुस्सा प० त० उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा णाया कोरवा ॥ ५७७ ॥ छव्विहा लोगट्ठिई प० त० आगासपइट्ठिए वाए वायपइट्ठिए उदही उदहिपइट्ठिया पुढवी पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा अजीवा जीवपइट्ठिया जीवा कम्मपइट्ठिया ॥ ५७८ ॥ छद्दिसाओ प० त० पाईणा पडीणा दाहिणा उईणा उड्ढा अहा ॥ ५७९ ॥ छहिं दिसाहिं जीवाण गई पवत्तइ त० पाईणाए जाव अहाए एवमागई वक्कंती आहारे वुड्ढी निवुड्ढी विगुव्वणा गइपरियाए समुग्घाए कालसजोगे दसणाभिगमे णाणाभिगमे जीवाभिगमे अजीवाभिगमे एव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि मणुस्साणवि ॥ ५८० ॥ छहिं ठाणेहिं समणे णिग्गथे आहारमाहारेमाणे णाइक्कमइ त० वेयणवेयावच्चे इरियट्ठाए य सजमट्ठाए, तह पाणवत्तियाए छट्ठ पुण धम्मचिंताए, छहिं ठाणेहिं समणे णिग्गथे आहारं वोच्छिदमाणे णाइक्कमइ तं० आतंके उवसग्गे तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीए पाणिदया तवहेउं सरीरवुच्छेयणट्ठाए ॥ ५८१ ॥ छहिं ठाणेहिं आया उम्माय पाउणेज्जा त० अरहताणमवण्ण वदमाणे, अरहंतपन्नत्तस्स

जंबुद्दीवे दीवे छ महद्दहा प० तं० पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिंछद्दहे केसरिद्दहे महापोंडरीयद्दहे पुंडरीयद्दहे ॥ ११८ ॥ तत्थ णं छ देवयाओ महिड्डियाओ जाव पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति तं० सिरी हिरी धिई कित्ती बुद्धी लच्छी ॥ ११९ ॥ जंबूमंदरदाहिणेणं छ महानईओ प० तं० गंगा सिंधू रोहिया रोहियंसा हरी हरिकंता ॥ १२० ॥ जंबूमंदरस्स उत्तरे णं छ महानईओ प० तं० नरकंता नारिकंता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवई ॥ १२१ ॥ जंबूमंदरपुरच्छिमे णं सीयाए महानईए उभयकूले छ अंतरनईओ प० तं० गाहावई दहवई पंकवई तत्तजला मत्तजला उम्मत्तजला ॥ १२२ ॥ जंबूमंदरपच्चत्थिमे णं सीओयाए महानईए उभयकूले छ अंतरनईओ प० तं० खीरोदा सीहसोया अंतोवाहिणी उम्मिमालिणी फेणमालिणी गंभीरमालिणी ॥ १२३ ॥ धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेणं छ अकम्मभूमीओ प० तं० हेमवए एवं जहा जंबुद्दीवे २ तहा नई जाव अंतरनईओ जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे भाणियव्वं ॥ १२४ ॥ छ उऊ प० तं० पाउसे वरिसारत्ते सरए हेमंते वसंते गिम्हे ॥ १२५ ॥ छ ओमरत्ता प० तं० तइए पव्वे सत्तमे पव्वे एक्कारसमे पव्वे पन्नरसमे पव्वे एगूणवीसइमे पव्वे तेवीसइमे पव्वे ॥ १२६ ॥ छ अइरत्ता प० तं० चउत्थे पव्वे अट्ठमे पव्वे दुवालसमे पव्वे सोलसमे पव्वे वीसइमे पव्वे चउवीसइमे पव्वे ॥ १२७ ॥ आभिणिबोहियणाणस्स णं छव्विहे अत्थोग्गहे प० तं० सोइंदियत्थोग्गहे जाव नोइंदियत्थोग्गहे ॥ १२८ ॥ छव्विहे ओहिनाणे प० तं० आणुगामिए अणाणुगामिए वड्ढमाणए हीयमाणए पडिवाई अपडिवाई ॥ १२९ ॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाइं छ अवयणाइं वइत्तए तं० अलियवयणे हीलियवयणे खिंसियवयणे फरुसवयणे गारत्थियवयणे विउसवितं वा पुणो उदीरित्तए ॥ १३० ॥ छ कप्पस्स पत्थारा प० तं० पाणाइवायस्स वायं वयमाणे मुसावायस्स वायं वयमाणे अदिन्नादाणस्स वायं वयमाणे अविरइवायं वयमाणे अपुरिसवायं वयमाणे दासवायं वयमाणे इच्चेए छ कप्पस्स पत्थारे पत्थरेत्ता सम्मम-पडिपूरेमाणे तट्ठाणपत्ते ॥ १३१ ॥ छ कप्पस्स पलिमंथू प० तं० कोक्कुइए संजमस्स पलिमंथू मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू चक्खुलोलुए इरियावहियाए पलिमंथू तिंतिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू इच्छालोभिए मुत्तिमग्गस्स पलिमंथू भिज्जानि-याणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू सव्वत्थ भगवया अनियाणया पसत्था ॥ १३२ ॥ छव्विहा कप्पट्ठिई प० तं० सामाइयकप्पट्ठिई छेओवट्ठावणियकप्पट्ठिई निव्विसमाण-कप्पट्ठिई निव्विट्ठकप्पट्ठिई जिणकप्पट्ठिई थेरकप्पट्ठिई ॥ १३३ ॥ समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे जाव पव्वइए ॥ १३४ ॥ समणस्स णं

छव्विहा खुद्दा पाणा प० तं० बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया समुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणिया तेउकाइया वाउकाइया ॥ ५९८ ॥ छव्विहा गोयरचरिया प० तं० पेडा अद्धपेडा गोमुत्तिया पतंगवीहिया संवुक्कवट्टा गंतुपच्चागया ॥ ५९९ ॥ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणमिमीसे रयणप्पभाए पुढवीए छ अवक्कंतमहानिरया प० तं० लोले लोलुए उद्दड्ढे निद्दड्ढे जरए पज्जरए ॥ ६०० ॥ चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए छ अवक्कंता महानिरया प० तं० आरे वारे मारे रोरे रोरुए खाडखडे ॥ ६०१ ॥ बंभलोए ण कप्पे छ विमाणपत्थडा प० तं० अरए विरए नीरए निम्मले वितिमिरे विसुद्धे ॥ ६०२ ॥ चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छ णक्खत्ता पुव्वभागा समखेत्ता तीसइमुहुत्ता प० तं० पुव्वाभद्दवया कत्तिया महा पुव्वाफग्गुणी मूलो पुव्वासाढा ॥ ६०३ ॥ चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छ णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पन्नरसमुहुत्ता प० तं० सयभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साई जेट्ठा ॥ ६०४ ॥ चंदस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छ णक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसमुहुत्ता प० तं० रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा उत्तराभद्दवया ॥ ६०५ ॥ अभिचंदे ण कुलकरे छ धणुसयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था ॥६०६॥ भरहे ण राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसयसहस्साइ महाराया हुत्था ॥६०७॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणियस्स छस्सया वाईण सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाण सपया होत्था ॥६०८॥ वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे जाव पव्वइए ॥६०९॥ चंदप्पभे ण अरहा छम्मासे छउमत्थे होत्था ॥६१०॥ तेइंदियाण जीवाणं असमारभमाणस्स छव्विहे संजमे कज्जइ तं० घाणामाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवति घाणामएण दुक्खेण असंजोगेत्ता भवइ जिब्भामाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ एवं चेव फासामाओ वि ॥ ६११ ॥ तेइंदियाणं जीवाण समारभमाणस्स छव्विहे असंजमे कज्जइ तं० घाणामाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ घाणामएण दुक्खेण संजोगेत्ता भवइ जाव फासमएण दुक्खेण संजोगेत्ता भवइ ॥ ६१२ ॥ जंबुद्दीवे दीवे छ अकम्मभूमीओ प० तं० हेमवए हेरण्णवए हरिवासे रम्मगवासे देवकुरा उत्तरकुरा ॥ ६१३ ॥ जंबुद्दीवे दीवे छव्वासा प० तं० भरहे एरवए हेमवए हेरण्णवए हरिवासे रम्मगवासे ॥ ६१४ ॥ जंबुद्दीवे दीवे छव्वासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी ॥ ६१५ ॥ जंबूमंदरदाहिणे णं छ कूडा प० तं० चुल्लहिमवंतकूडे वेसमणकूडे महाहिमवंतकूडे वेरुलियकूडे निसढकूडे रुयगकूडे ॥ ६१६ ॥ जंबूमंदरउत्तरेण छक्कूडा प० तं० नीलवंतकूडे उवदंसणकूडे रुप्पिकूडे मणिकंचणकूडे सिहरिकूडे तिगिंच्छकूडे ॥६१७॥

सत्तमट्ठाणं

सत्तविहे गणावक्कमणे प० तं० सव्वधम्मा रोएमि एगइया रोएमि एगइया णो रोएमि सव्वधम्मा वितिगिच्छामि एगइया वितिगिच्छामि एगइया णो वितिगिच्छामि सव्वधम्मा जुहुणामि एगइया जुहुणामि एगइया णो जुहुणामि इच्छामि णं भंते ! एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ॥ ५५८ ॥ सत्तविहे विभंगणाणे प० तं० एगदिसिलोगाभिगमे पंचदिसिलोगाभिगमे किरियावरणे जीवे मुदग्गे जीवे अमुदग्गे जीवे रूवी जीवे सव्वमिणं जीवा, तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं वा जाव सोहम्मे कप्पे तस्स णमेवं भवइ अत्थि णं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने एगदिसिं लोगाभिगमे संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु पंचदिसिं लोगाभिगमे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु पढमे विभंगणाणे, अहावरे दोच्चे विभंगणाणे जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा उड्ढं जाव सोहम्मे कप्पे तस्स णं एवं भवइ अत्थि णं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने पंचदिसिं लोगाभिगमे संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु एगदिसिं लोगाभिगमे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु दोच्चे विभंगणाणे। अहावरे तच्चे विभंगणाणे जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ पाणे अइवाएमाणे मुसं वयमाणे अदिन्नमाइयमाणे मेहुणं पडिसेवमाणे परिग्गहं परिगिण्हमाणे राइभोयणं भुंजमाणे वा पावं च णं कम्मं कीरमाणं णो पासइ तस्स णमेवं भवइ अत्थि णं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने किरियावरणे जीवे संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु णो किरियावरणे जीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु तच्चे विभंगणाणे। अहावरे चउत्थे विभंगणाणे जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा जाव समुप्पज्जइ से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता पुढेगत्तं णाणत्तं फुसिय फुरित्ता फुट्टित्ता विउव्वित्ता णं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए तस्स णमेवं भवइ अत्थि णं मम अइसेसे णाणदंसणसमुप्पन्ने मुदग्गे जीवे संतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु अमुदग्गे जीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु चउत्थे विभंगणाणे, अहावरे पंचमे विभंगणाणे जया णं तहारूवस्स समणस्स जाव समुप्पज्जइ, से णं तेणं

भगवओ महावीरस्स छट्ठेण भत्तेण अपाणएणं अणते अणुत्तरे जाव समुप्पण्णे ॥ ६३५ ॥ समणे भगव महावीरे छट्ठेण भत्तेणं अपाणएण सिद्धे जाव सव्वदुक्ख-प्पहीणे ॥ ६३६ ॥ सणंकुमारमाहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्च-त्तेग प० ॥ ६३७ ॥ सणकुमारमाहिंदेसु ण कप्पेसु देवाण भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेण छ रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता ॥ ६३८ ॥ छव्विहे भोयणपरिणामे प० त० मणुन्ने रसिए पीणणिज्जे विंहणिज्जे [मयणणिज्जे दीवणिज्जे] दप्पणिज्जे ॥ ६३९ ॥ छव्विहे विसपरिणामे प० त० डक्के भुत्ते-निवइए मसाणुसारी सोणि-याणुसारी अट्ठिमिंजाणुसारी ॥६४०॥ छव्विहे पट्ठे प० त० ससयपट्ठे वुग्गहपट्ठे अणु-जोगी अणुलोमे तहणाणे अतहणाणे ॥ ६४१ ॥ चमरच्चचा ण रायहाणी उक्कोसेण छम्मासा विरहिया उववाएण ॥ ६४२ ॥ एगमेगे ण इंदट्ठाणे उक्कोसेणं छम्मासा विरहिए उववाएणं ॥ ६४३ ॥ अहेसत्तमा ण पुढवी उक्कोसेण छम्मासा विरहिया उववाएण ॥ ६४४ ॥ सिद्धिगई ण उक्कोसेण छम्मासा विरहिया उववाएण ॥ ६४५ ॥ छव्विहे आउयबधे प० तं० जाइणामनिधत्ताउए गइणामणिधत्ताउए ठिइणामणिध-त्ताउए ओगाहणाणामणिधत्ताउए पएसणामणिधत्ताउए अणुभावणामणिधत्ताउए ॥ ६४६ ॥ णेरइयाण छव्विहे आउयबंधे प० त० जाइणामणिधत्ताउए जाव अणुभावणामणिधत्ताउए एव जाव वेमाणियाण ॥ ६४७ ॥ णेरइया णियमा छम्मा-सावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति, एवामेव असुरकुमारावि जाव थणियकुमारा, असखेज्जवासाउया सन्निपर्चिदियतिरिक्खजोणिया णियम छम्मासावसेसाउया पर-भवियाउय पगरेंति, असखेज्जवासाउया सन्निमणुस्सा णियम जाव पगरेंति, वाण-मतरा जोइसवासिया वेमाणिया जहा णेरइया ॥ ६४८ ॥ छव्विहे भावे प० त० ओदइए उवसमिए खइए खयोवसमिए पारिणामिए संनिवाइए ॥ ६४९ ॥ छव्विहे पडिक्कमणे प० त० उच्चारपडिक्कमणे पासवणपडिक्कमणे इत्तरिए आवकहिए जंकिंचि-मिच्छा सोमणंतिए ॥ ६५० ॥ कत्तियाणक्खत्ते छतारे प० ॥ ६५१ ॥ असिलेसा-णक्खत्ते छत्तारे प० ॥ ६५२ ॥ जीवा णं छट्ठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणति वा चिणिस्सति वा तं० पुढविकाइयनिव्वत्तिए जाव तसकायनि-व्वत्तिए एव चिण उवचिण बध उदीर वेय तह णिज्जरा चेव ॥६५३॥ छप्पएसिया णं खधा अणता प० ॥६५४॥ छप्पएसोगाढा पोग्गला अणता प० ॥६५५॥ छसमय-ठिईया पोग्गला अणता प० ॥ ६५६ ॥ छगुणकालगा पोग्गला जाव छगुणलुक्खा पोग्गला अणता पण्णत्ता ॥ ६५७ ॥ **छट्ठाणं छट्ठमज्झयणं समत्तं** ॥

भवइ ॥ ५५२ ॥ सत्त सिंधुसामाओ प० ॥ ५५३ ॥ सत्तपाडिसामाओ प० ॥ ५५४ ॥ सत्त उप्पइपडिमाओ प० ॥ ५५५ ॥ सत्त सत्तिक्का प० ॥ ५५६ ॥ सत्त महज्झ-यणा प० ॥ ५५७ ॥ सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा एगूणपन्नाए राइंदिएहिं एगेण य छण्णउएणं भिक्खासएणं अहासुत्तं (अहा अत्थं) जाव आराहिया यावि भवइ ॥ ५५८ ॥ अहे लोग णं सत्त पुढवीओ प० सत्त घणोदहीओ प० सत्त घणवाया प० सत्त तणुवाया प० सत्त उवासंतरा प० एएसु णं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया एएसु णं सत्तसु तणुवाएसु सत्त घणवाया पइट्ठिया एएसु णं सत्तसु घणवाए-सु सत्त घणोदही पइट्ठिया एएसु णं सत्तसु घणोदहीसु पिंडलगपिहुलसंठाणसंठि-याओ सत्त पुढवीओ प० तं० पढमा जाव सत्तमा एयासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त नामधेज्जा प० तं० घम्मा वंसा सेला अंजणा रिट्ठा मघा माघवई, एयासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त गोत्ता प० तं० रयणप्पभा सक्करप्पभा वालुयप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमा तमतमा ॥ ५५९ ॥ सत्तविहा बायरवाउकाइया प० तं० पाईणवाए पडीण-वाए दाहिणवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए विदिसिवाए ॥ ५६० ॥ सत्त संठाणा प० तं० दीहे रहस्से वट्टे तंसे चउरंसे पिहुले परिमंडले ॥ ५६१ ॥ सत्त भयट्ठाणा प० तं० इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए वेयणभए मरणभए असिलोगभए ॥ ५६२ ॥ सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा तं० पाणे अइवाएत्ता भवइ मुसं वइत्ता भवइ अदिन्नमाइत्ता भवइ सद्दफरिसरसरूवगंधे आसाएत्ता भवइ पूयासक्कारमणुवूहेत्ता भवइ इमं सावज्जंति पन्नवेत्ता पडिसेवेत्ता भवइ णो जहावाई तहाकारी यावि भवइ ॥ ५६३ ॥ सत्तहिं ठाणेहिं केवली जाणेज्जा तं० णो पाणे अइवाएत्ता भवइ जाव जहावाई तहाकारी यावि भवइ ॥ ५६४ ॥ सत्त मूलगोत्ता प० तं० कासवा गोयमा वच्छा कोच्छा कोसिया मंडवा वासिट्ठा। जे कासवा ते सत्तविहा प० तं० ते कासवा ते संडिल्ला ते गोला ते वाला ते मुंजइणो ते पव्व-पेच्छइणो ते वरिसकण्हा, जे गोयमा ते सत्त विहा प० तं० ते गोयमा ते गग्गा ते भारद्दा ते अंगिरसा ते सक्कराभा ते भक्खराभा ते उदत्ताभा, जे वच्छा ते सत्त विहा प० तं० ते वच्छा ते अग्गेया ते मित्तिया ते सामलिणो ते सेलयया ते अट्ठिसेणा ते वीयकण्हा, जे कोच्छा ते सत्तविहा प० तं० ते कोच्छा ते मोग्गलायणा ते पिंगलायणा ते कोडीणा ते मंडलिणो ते हारिया ते सोमया, जे कोसिया ते सत्त विहा प० तं० ते कोसिया ते कच्चायणा ते सालंकायणा ते गोलिकायणा ते पक्खि-कायणा ते अग्गिच्चा ते लोहिच्चा, जे मंडवा ते सत्तविहा प० तं० ते मंडवा ते अरिट्ठा ते समुया ते तेला ते एलावच्चा ते कंडिल्ला ते खारायणा, जे वासिट्ठा ते

विभंगणाणेण समुप्पन्नेण देवामेव पासइ बाहिरब्भितरए पोग्गलए अपरियाइत्ता पुढेगत्तं णाणत्त जाव विउव्वित्ता ण चिट्ठित्तए तस्स णमेवं भवइ अत्थि जाव समुप्पन्ने अमुदग्गे जीवे, सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु मुदग्गे जीवे, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, **पंचमे विभंगणाणे**। अहावरे **छट्ठे विभंगणाणे**, जया ण तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा जाव समुप्पज्जति, से ण तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता वा, अपरियाइत्ता वा पुढेगत्त णाणत्त फुसेत्ता जाव विकुव्वित्ता चिट्ठित्तए तस्स णमेव भवइ, अत्थि ण मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने रूवी जीवे सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु अरूवी जीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु **छट्ठे विभंगणाणे**। अहावरे **सत्तमे विभंगणाणे** जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ, से ण तेण विभंगणाणेण समुप्पन्नेण पासइ सुहुमेण वाउकाएण फुड पोग्गलकाय एयत वेयत चलत खुब्भंत फंदत घट्टत उदीरेंत त त भाव परिणमत तस्स णमेव भवइ अत्थि ण मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे, सव्वमिण जीवा सतेगइया समणा वा माहणा वा एवमाहंसु जीवा चेव अजीवा चेव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु तस्स णमिमे चत्तारि जीवनिकाया णो सम्ममुवगया भवति तजहा पुढविकाइया आऊ तेऊ वाउकाइया, इच्चेएहिं चउहिं जीवनिकाएहिं मिच्छादंड पवत्तेइ, सत्तमे विभंगणाणे ॥ ६५९ ॥ सत्तविहे जोणिसंगहे प० त० अंडया पोयया जराउया रसया संसेयया संमुच्छिमा उब्भिया, अंडगा सत्तगइया सत्तागइया प० त० अंडगे अंडगेसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा पोयएहिंतो वा जाव उब्भिएहिंतो वा उववज्जेज्जा से चेव णं से अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडयत्ताए वा पोययत्ताए वा जाव उब्भियत्ताए वा गच्छेज्जा, पोयया सत्तगइया सत्तागइया, एवं चेव, सत्तण्हवि गइरागई भाणियव्वा जाव उब्भियत्ति ॥ ६६० ॥ आयरियउवज्झायस्स ण गणसि सत्तसंगहठाणा प० त० आयरियउवज्झाए गणसि आणं वा धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवइ, एव जहा पंचठाणे जाव आयरियउवज्झाए गणसि आपुच्छियचारी यावि भवइ, नो अणापुच्छियचारी यावि भवइ आयरियउवज्झाए गणसि अणुप्पन्नाइं उवगरणाइं सम्मं उप्पाइत्ता भवइ, आयरियउवज्झाए गणसि पुव्वुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मं सारक्खेत्ता संगोवइत्ता भवइ नो असम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवइ ॥ ६६१ ॥ आयरियउवज्झायस्स ण गणंसि सत्त असंगहठाणा प० तं० आयरियउवज्झाए गणसि आणं वा धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवइ, एव जाव उवगरणाणं नो सम्मं सारक्खेत्ता संगोवेत्ता

आरभंता समुव्वहंता य मज्झयारंमि; अवसाणे य झवेंतो तिन्नि य गेयस्स आगारा (११) छद्दोसे अट्ठगुणे तिन्नि य वित्ताइं दो य भणिईओ जाणाहिति सो गाहिइ सुसिक्खिओ रंगमज्झम्मि (१२) भीयं दुयं रहस्सं गायंतो मा य गाहि उत्तालं काकस्सरमणुनासं च होंति गेयस्स छद्दोसा (१३) पुण्णं रत्तं च अलंकियं च वत्तं तहा अविघुट्ठं महुरं समं सुकुमारं अट्ठ गुणा होंति गेयस्स (१४) उरकंठ-सिरपसत्थं च गेज्जंते मउयरिभियपदबद्धं समतालपडुक्खेवं सत्तस्सरसीभरं गीयं (१५) निद्दोसं सारवंतं च हेउजुत्तमलंकियं उवणीयं सोवयारं च मियं महुरमेव य (१६) सममद्धसमं चेव सव्वत्थ विसमं च जं तिन्नि वित्तप्पयाराइं चउत्थं नोवलब्भइ (१७) सक्कया पायया चेव दुहा भणिईओ आहिया; सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसिभासिया (१८) केसी गायइ महुरं केसी गायइ खरं च रुक्खं च केसी गायइ चउरं केसि विलंबं दुयं केसी (१९) विस्सरं पुण केरिसी ? सामा गायइ महुरं काली गायइ खरं च रुक्खं च गोरी गायइ चउरं काण विलंबं दुयं अंधा (२०) विस्सरं पुण पिंगला तंतिसमं तालसमं पायसमं लयसमं गहसमं च नीससिऊससिय-समं संचारसमा सरा सत्त (२१) सत्त सरा य तओ गामा मुच्छणा एगवीसई ताणा एगूणपण्णासा समत्तं सरमंडलं (२२) सरमंडलं समत्तं ॥ ५७७ ॥

सत्तविहे कायकिलेसे प० तं० ठाणाइए उक्कुडुयासणिए पडिमट्ठाई वीरासणिए नेसज्जिए दंडायए लगंडसाई ॥ ५७८ ॥ जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा प० तं० भरहे एरवए हेमवए हेरण्णवए हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे ॥ ५७९ ॥ जंबुद्दीवे २ सत्त वासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे ॥ ५८० ॥ जंबुद्दीवे २ सत्त महानईओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं० गंगा रोहिया हिरी सीया नरकंता सुवण्णकूला रत्ता ॥ ५८१ ॥ जंबुद्दीवे २ सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं० सिंधू रोहियंसा हरिकंता सीओदा नारिकंता रुप्पकूला रत्तवई ॥ ५८२ ॥ धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त वासा प० तं० भरहे जाव महाविदेहे धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त वासहर-पव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते जाव मंदरे धायइसंडदीवपुरत्थिमद्धे णं सत्त महानईओ पुरत्थाभिमुहीओ कालोयसमुद्दं समप्पेंति तं० गंगा जाव रत्ता धायइसंडदीवपुरत्थि-मद्धे णं सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं० सिंधू जाव रत्तवई, धायइसंडदीवे पच्चत्थिमद्धे णं सत्त वासा एवं चेव नवरं पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोयं सेसं तं चेव ॥ ५८३ ॥ पुक्खरवर-दीवड्ढपुरत्थिमद्धे णं सत्त वासा तहेव नवरं पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समुद्दं

सत्तविहा प० तं० ते वासिट्ठा ते उजायणा ते जारेकण्हा ते वग्घावच्चा ते कोडिन्ना ते सण्णी ते पारासरा ॥ ६७५ ॥ सत्त मूलणया प० त० नेगमे संगहे ववहारे उज्जुसुए सद्दे समभिरूढे एवंभूते ॥ ६७६ ॥ सत्त सरा प० त० सज्जे रिसभे गंधारे मज्झिमे पंचमे सरे, धेवते चेव णिसादे सरा सत्त वियाहिया (१) एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा प० तं० सज्जं तु अग्गजिब्भाए उरेण रिसभं सरं, कण्ठुग्गएण गंधारं मज्झजिब्भाएँ मज्झिमं (२) णासाए पंचमं बूया दंतोट्ठेण य धेवयं, मुद्धाणेण य णेसायं सरठाणा वियाहिया (३) सत्त सरा जीवनिस्सिया प० तं० सज्जं रवइ मयूरो कुक्कुडो रिसहं सरं, हंसो णदइ गंधारं मज्झिमं तु गवेलगा (४) अह कुसुमसंभवे काले कोइला पंचमं सरं, छट्ठं च सारसा कोंचा णिसायं सत्तमं गया (५) सत्तसरा अजीवनिस्सिया प० त० सज्जं रवइ मुइंगो गोमुही रिसभं सरं, संखो णदइ गंधारं मज्झिमं पुण झल्लरी (६) चउचलणपइट्ठाणा गोहिया पंचमं सरं, आडंबरो य रेवइयं महाभेरी य सत्तमं (७) एएसि णं सत्त सराणं सत्त सरलक्खणा प० त० सज्जेण लभइ वित्तिं कयं च ण विणस्सइ, गावो मित्ता य पुत्ता य णारीणं चेव वल्लभो (८) रिसभेण उ एसज्जं, सेणावच्चं धणाणि य, वत्थगंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य (९) गंधारे गीयजुत्तिण्णा वज्जवित्ती कलाहिया, भवंति कइणो पन्ना जे अन्ने सत्थपारगा (१०) मज्झिमसरसंपन्ना भवंति सुहजीविणो, खायती पीयती देती, मज्झिमं सरमस्सिओ (११) पंचमसरसंपन्ना भवंति पुढवीपई, सूरा संगहकत्तारो अणेगगणणायगा (१२) धेवयसरसंपन्ना भवंति कलहप्पिया, साउणिता वग्गुरिया सोयरिया मच्छबंधा य (१३) चंडाला मुट्ठिया सेया, जे अन्ने पावकम्मिणो, गोघातगा य जे चोरा, णिसायं सरमस्सिता (१४) एएसि णं सत्तण्हं सराणं तओ गामा प० त० सज्जगामे मज्झिमगामे गंधारगामे, सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ प० त० मग्गी कोरव्वीया हरी य रययणी य सारकंता य, छट्ठी य सारसी णाम सुद्धसज्जा य सत्तमा (१५) मज्झिमगामस्स णं सत्तमुच्छणाओ प० त० उत्तरमंदा रयणी उत्तरा उत्तरासमा, आसोकंता य सोवीरा, अभीरू हवइ सत्तमा (१६) गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ प० त० णंदी य खुड्डिमा पूरिमा य चउत्थी य सुद्धगंधारा, उत्तरगंधारा वि य पंचमिया हवइ मुच्छा उ (१७) सुट्ठुत्तरमायामा सा छट्ठी णियमसो उ णायव्वा अह उत्तरायया कोडीमायसा सत्तमी मुच्छा (१८) सत्त सराओ कओ संभवंति गेयस्स का भवइ जोणी ? कइ समया उस्सासा कइ वा गेयस्स आगारा ? (१९) सत्त सरा णाभीओ भवंति, गीयं च रुन्नजोणीयं, पादसमा ऊसासा तिन्नि य गेयस्स आगारा (२०) आइमिउ

आरभंता समुप्पइंता य मज्झयारंमि; अवसाणे उज्झिंता तिण्णि य गेयस्स आगारा (११) छद्दोसे अट्ठगुणे तिण्णि य वित्ताइं दो य भणिईओ जाणाहिति सो गाहिइ सुसिक्खिओ रंगमज्झम्मि (१२) भीयं दुयं रहस्सं गायंतो मा य गाहि उत्तालं काकस्सरमणुनासं च होंति गेयस्स छद्दोसा (१३) पुण्णं रत्तं च अलंकियं च वत्तं तहा अविघुट्ठं, महुरं समं सुललियं अट्ठ गुणा होंति गेयस्स (१४) उरकंठसिरपसत्थं च गेज्जंते मउयरिभियपदबद्धं; समतालपडुक्खेवं सत्तस्सरसीहरं गीयं (१५) निद्दोसं सारवंतं च हेउजुत्तमलंकियं उवणीयं सोवयारं च मियं महुरमेव य (१६) सममद्धसमं चेव सव्वत्थ विसमं च जं तिण्णि वित्तप्पयाराइं चउत्थं नोवलब्भइ (१७) सक्कया पागया चेव दुहा भणिईओ आहिया; सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसिभासिया (१८) केसी गायइ महुरं केसी गायइ खरं च रुक्खं च केसी गायइ चउरं केसि विलंबं दुतं केसी (१९) विस्सरं पुण केरिसी ? सामा गायइ महुरं काली गायइ खरं च रुक्खं च गोरी गायइ चउरं, काण विलंबं दुतं अंधा (२०) विस्सरं पुण पिंगला तंतिसमं तालसमं पादसमं लयसमं गहसमं च नीससिऊससियसमं संचारसमा सरा सत्त (२१) सत्त सरा य तओ गामा मुच्छणा एगवीसई ताणा एगूणपन्नासा समत्तं सरमंडलं (२२) सरमंडलं समत्तं ॥ ५७७ ॥

सत्तविहे कायकिलेसे प० तं० ठाणाइए उक्कुडुयासणिए पडिमट्ठाई वीरासणिए णेसज्जिए दंडायए लगंडसाई ॥ ५७८ ॥ जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा प० तं० भरहे एरवए हेमवए हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे ॥ ५७९ ॥ जंबुद्दीवे २ सत्त वासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे ॥ ५८० ॥ जंबुद्दीवे २ सत्त महानईओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं० गंगा रोहिया हिरी सीया णरकंता सुवण्णकूला रत्ता ॥ ५८१ ॥ जंबुद्दीवे २ सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं० सिंधू रोहियंसा हरिकंता सीओदा णारिकंता रुप्पकूला रत्तवई ॥ ५८२ ॥ धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासा प० तं० भरहे जाव महाविदेहे, धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते जाव मंदरे, धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त महानईओ पुरत्थाभिमुहीओ कालोयसमुद्दं समप्पेंति तं० गंगा जाव रत्ता, धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं० सिंधू जाव रत्तवई, धायइसंडदीवे पच्चत्थिमद्धे णं सत्त वासा एवं चेव नवरं पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं सेसं तं चेव ॥ ५८३ ॥ पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासा तहेव नवरं पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समुद्दं

समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोद समुद्द समप्पेंति सेस त चेव एवं पच्चत्थिमद्धेवि णवरं पुरत्थाभिमुहीओ कालोद समुदं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समप्पेंति, सव्वत्थ वासा वासहरपव्वया णईओ य भाणियव्वाणि ॥ ६८४ ॥ जंबुद्दीवे २ भारहे वासेऽतीयाए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, तंजहा–मित्तदामे सुदामे य सुपासे य सयपभे, विमलघोसे सुघोसे य महाघोसे य सत्तमे ॥ ६८५ ॥ जंबुद्दीवे २ भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था त० पढमित्थ विमलवाहण चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे, तत्तो य पसेणइ पुण मरुदेवे चेव नाभी य (१) एएसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारियाओ हुत्था, त० चंदजसा चंदकंता सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य, सिरिकंता मरुदेवी, कुलकरइत्थीण नामाइं (२) ॥ ६८६ ॥ जंबुद्दीवे २ भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा भविस्संति त० मित्तवाहण सुभोमे य सुप्पभे य सयपभे, दत्ते सुहुमे [सुहे सुरूवे] सुबंधू य आगमेस्सिण होक्खइ ॥६८७॥ विमलवाहणे णं कुलगरे सत्तविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छिंसु त० मत्तंगया य भिंगा चित्तंगा चेव होंति चित्तरसा, मणियंगा य अणियणा सत्तमगा कप्परुक्खा य (१) ॥ ६८८ ॥ सत्तविहा दंडनीई प० त० हक्कारे मक्कारे धिक्कारे परिभासे मंडलबंधे चारए छविच्छेदे ॥ ६८९ ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णं सत्त एगिंदियरयणा प० त० चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे दंडरयणे असिरयणे मणिरयणे काकणिरयणे ॥ ६९० ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिंदियरयणा प० त० सेणावइरयणे गाहावइरयणे वड्ढतिरयणे पुरोहियरयणे इत्थिरयणे आसरयणे हत्थिरयणे ॥ ६९१ ॥ सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढ दुस्सम जाणेज्जा, त० अकाले वरिसइ काले ण वरिसइ असाधू पुज्जति साधू ण पुज्जति गुरुहिं जणो मिच्छ पडिवन्नो मणोदुहया वइदुहया ॥६९२॥ सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढ सुसम जाणेज्जा त० अकाले ण वरिसइ काले वरिसइ असाधू ण पुज्जन्ति साधू पुज्जन्ति गुरुहिं जणो सम्मं पडिवन्नो मणोसुहया वइसुहया ॥६९३॥ सत्तविहा संसारसमावन्नगा जीवा प० त० नेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणिओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ ॥ ६९४ ॥ सत्तविहे आउभेदे प० त० अज्झवसाणनिमित्ते, आहारे, वेयणा, पराघाए, फासे, आणापाणू, सत्तविह भिज्जए आउ ॥ ६९५ ॥ सत्तविहा सव्वजीवा प० त० पुढविकाइया आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइ० तसकाइया अकाइया, अहवा सत्तविहा सव्वजीवा प० त० कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा अलेसा ॥ ६९६ ॥ बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्त धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं सत्त य वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे-

सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्नो ॥ ५६७ ॥ मल्ली णं अरहा अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तं० मल्ली विदेहरायवरकन्नगा पडिबुद्धी इक्खागराया चंदच्छाए अंगराया रुप्पी कुणालाहिवई, संखे कासीराया अदीणसत्तू कुरुराया जियसत्तू पंचालराया ॥ ५६८ ॥ सत्तविहे दंसणे प० तं० सम्मदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छदंसणे चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे ॥ ५६९ ॥ छउमत्थवीयरागे णं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेएइ, तं० नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं, वेयणिज्जं आउयं नामं गोयमंतराइयं ॥ ५७० ॥ सत्त ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं० धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं सद्दं, गंधं ॥ ५७१ ॥ एयाणि चेव उप्पन्ननाणे जाव जाणइ पासइ, तं० धम्मत्थिकायं जाव गंधं ॥ ५७२ ॥ समणे भगवं महावीरे वइरोसभनाराय-संघयणे समचउरंससंठाणसंठिए सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ५७३ ॥ सत्त विकहाओ प० तं० इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा, मिउकालुणिया दंसणभेयणी चरित्तभेयणी ॥ ५७४ ॥ आयरियउवज्झायस्स णं गणंसि सत्त अइसेसा प० तं० आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स पाए निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा णाइक्कमइ एवं जहा पंचट्ठाणे जाव बाहिं उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे णाइक्कमइ उवगरणाइसेसे भत्तपाणाइसेसे ॥ ५७५ ॥ सत्तविहे संजमे प० तं० पुढविकाइयसंजमे जाव तसकाइयसंजमे अजीवकायसंजमे ॥ ५७६ ॥ सत्त विहे असंजमे प० तं० पुढविकाइयअसंजमे जाव तसकाइयअसंजमे अजीवकाय-असंजमे ॥ ५७७ ॥ सत्तविहे आरंभे प० तं० पुढविकाइयआरंभे जाव अजीवकाय-आरंभे एवमणारंभेवि एवं सारंभेवि एवमसारंभेवि एवं समारंभेवि एवमसमारंभेवि जाव अजीवकायअसमारंभे ॥ ५७८ ॥ अह भंते ! अयसिकुसुंभकोद्दवकंगुरालग (वरट्ट-कोदूसग) सणसरिसवमूलबीयाणं एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं जाव पिहियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्त संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायइ जाव जोणीवोच्छेदे प० ॥ ५७९ ॥ बायरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं ठिई प० ॥ ५८० ॥ तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ५८१ ॥ चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ५८२ ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो सत्त अग्गमहिसीओ प० ॥ ५८३ ॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो सत्त अग्ग

समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोद समुद्द समप्पेंति सेस त चेव एवं पच्चत्थिमद्धेवि णवरं पुरत्थाभिमुहीओ कालोद समुद्दं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समप्पेंति, सव्वत्थ वासा वासहरपव्वया णईओ य भाणियव्वाणि ॥ ६८४ ॥ जवुद्दीवे २ भारहे वासेऽतीयाए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, तजहा–मित्तदामे सुदामे य सुपासे य सयंपभे, विमलघोसे सुघोसे य महाघोसे य सत्तमे ॥ ६८५ ॥ जवुद्दीवे २ भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था तं० पढमित्थ विमलवाहण चक्खुम जसम चउत्थमभिचदे, तत्तो य पसेणइ पुण मरुदेवे चेव नाभी य (१) एएसि णं सत्तण्ह कुलगराण सत्त भारियाओ हुत्था, तं० चदजसा चदकता सुरूव पडिरूव चक्खुकता य, सिरिकंता मरुदेवी, कुलकरइत्थीण नामाइ (२) ॥ ६८६ ॥ जवुद्दीवे २ भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा भविस्सति त० मित्तवाहण सुभोमे य सुप्पभे य सयपभे, दत्ते सुहुमे [सुहे सुरूवे] सुवधू य आगमेस्सिण होक्खइ ॥६८७॥ विमलवाहणे णं कुलगरे सत्तविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छिसु त० मत्तगया य भिंगा चित्तगा चेव होंति चित्तरसा, मणियगा य अणियणा सत्तमगा कप्परुक्खा य (१) ॥ ६८८ ॥ सत्तविहा दडनीई प० त० हक्कारे मक्कारे धिक्कारे परिभासे मडलवधे चारए छविच्छेदे ॥ ६८९ ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरतचक्कवट्टिस्स ण सत्त एगिंदियरयणा प० त० चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे दंडरयणे असिरयणे मणिरयणे काकणिरयणे ॥ ६९० ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पचिंदियरयणा प० त० सेणावइरयणे गाहावइरयणे वड्ढतिरयणे पुरोहियरयणे इत्थिरयणे आसरयणे हत्थिरयणे ॥ ६९१ ॥ सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढ दुस्सम जाणेज्जा, तं० अकाले वरिसइ काले ण वरिसइ असाधू पुज्जति साधू ण पुज्जति गुरुहिं जणो मिच्छ पडिवन्नो मणोदुहया वइदुहया ॥६९२॥ सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढ सुसम जाणेज्जा त० अकाले ण वरिसइ काले वरिसइ असाधू ण पुज्जन्ति साधू पुज्जन्ति गुरुहिं जणो सम्मं पडिवन्नो मणोसुहया वइसुहया ॥६९३॥ सत्तविहा ससारसमावन्नगा जीवा प० तं० नेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणिओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ ॥ ६९४ ॥ सत्तविहे आउभेदे प० तं० अज्झवसाणनिमित्ते, आहारे, वेयणा, पराघाए, फासे, आणापाणू, सत्तविहं भिज्जए आउ ॥ ६९५ ॥ सत्तविहा सव्वजीवा प० त० पुढविकाइया आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइ० तसकाइया अकाइया, अहवा सत्तविहा सव्वजीवा प० त० कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा अलेसा ॥ ६९६ ॥ वंभदत्ते ण राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्त धणूइ उड्ढं उच्चत्तेण सत्त य वाससयाइं परमाउ पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे

जाव घोसमहाघोसाणं णेयव्वं सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई जाव माढरे रहाणियाहिवई सेए णट्टाणियाहिवई तुंबुरू गंधव्वाणियाहिवई ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवइणो प० तं० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई जाव महासेए णट्टाणियाहिवई रए गंधव्वाणियाहिवई सेसं जहा पंचट्ठाणे एवं जाव अच्चुयस्स वि णेयव्वं ॥ ७१०-७११ ॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स सत्त कच्छाओ प० तं० पढमा कच्छा जाव सत्तमा कच्छा चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठि देवसहस्सा प० जावइया पढमा कच्छा तब्बिगुणा दोच्चा कच्छा तब्बिगुणा तच्चा कच्छा एवं जाव जावइया छट्ठा कच्छा तब्बिगुणा सत्तमा कच्छा एवं बलिस्स वि णवरं महद्दुमे सट्ठिदेवसाहस्सिओ सेसं तं चेव धरणस्स एवं चेव णवरं अट्ठावीसं देवसहस्सा सेसं तं चेव जहा धरणस्स एवं जाव महाघोसस्स णवरं पायत्ताणियाहिवई अन्ने ते पुव्वभणिता ॥ ७१२ ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो हरिणेगमेसिस्स सत्त कच्छाओ प० तं० पढमा कच्छा एवं जहा चमरस्स तहा जाव अच्चुयस्स णाणत्तं पायत्ताणियाहिवईणं ते पुव्वभणिया देवपरिमाणमिमं सक्कस्स चउरासीइं देवसहस्सा ईसाणस्स असीइं देवसहस्साइं देवा इमाए गाहाए अणुगंतव्वा 'चउरासीइ असीइ बावत्तरि सत्तरी य सट्ठीया; पन्ना चत्तालीसा तीसा वीसा दससहस्सा' (१) जाव अच्चुयस्स लहुपरक्कमस्स दसदेवसहस्सा जाव जावइया छट्ठा कच्छा तब्बिगुणा सत्तमा कच्छा ॥ ७१३ ॥ सत्तविहे वयणविकप्पे प० तं० आलावे अणालावे उल्लावे अणुल्लावे, संलावे, पलावे, विप्पलावे ॥ ७१४ ॥ सत्तविहे विणए प० तं० णाणविणए, दंसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥ ७१५ ॥ पसत्थमणविणए सत्तविहे प० तं० अपावए असावज्जे अकिरिए निरुवक्केसे अणण्हयकरे अच्छविकरे अभूयाभिसंकणे ॥ ७१६ ॥ अपसत्थमणविणए सत्तविहे प० तं० पावए सावज्जे सकिरिए सउवक्केसे अण्हयकरे छविकरे भूयाभिसंकणे ॥ ७१७ ॥ पसत्थवइविणए सत्तविहे प० तं० अपावए असावज्जे जाव अभूयाभिसंकणे ॥ ७१८ ॥ अपसत्थवइविणए सत्तविहे प० तं० पावए जाव भूयाभिसंकणे ॥ ७१९ ॥ पसत्थकायविणए सत्तविहे प० तं० आउत्तं गमणं आउत्तं ठाणं आउत्तं निसीयणं आउत्तं तुयट्टणं आउत्तं उल्लंघणं आउत्तं पल्लंघणं आउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया ॥ ७२० ॥ अपसत्थकायविणए सत्तविहे प० तं०

महिसीओ प० ॥ ७१४ ॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ प० ॥ ७१५ ॥ ईसाणस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरपरिसाए देवाण सत्त पलिओवमाइ ठिई प० ॥ ७१६ ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरपरिसाए देवाण सत्त पलिओवमाइं ठिई प० ॥ ७१७ ॥ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीण देवीण सत्त पलिओवमाइ ठिई प० ॥ ७१८ ॥ सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण देवीणं उक्कोसेण सत्त पलिओवमाइ ठिई प० ॥७१९॥ सारस्सयमाइच्चाण सत्त देवा सत्त देवसया प० ॥ ७२० ॥ गद्दतोयतुसियाण देवाणं सत्त देवा सत्त देवसहस्सा प० ॥ ७२१ ॥ सणकुमारे कप्पे उक्कोसेण देवाणं सत्त सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ७२२ ॥ माहिंदे कप्पे उक्कोसेणं देवाण साइरेगाइं सत्तसागरोवमाइ ठिई प० ॥ ७२३ ॥ बंभलोए कप्पे जहन्नेण देवाण सत्त सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ७२४ ॥ बंभलोयलंतएसु ण कप्पेसु विमाणा सत्त जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण प० ॥७२५॥ भवणवासीणं देवाण भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेण सत्त रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेण प०, एव वाणमंतराणं एव जोइसियाण सोहम्मीसाणेसु ण कप्पेसु देवाण भवधारणिज्जगा सरीरा सत्त रयणीओ उड्ढ उच्चत्तेणं प० ॥ ७२६ ॥ णंदीसरवरस्स ण दीवस्स अंतो सत्त दीवा प० त० जंबुद्दीवे २ धायइसंडे दीवे पोक्खरवरे वरुणवरे खीरवरे घयवरे खोयवरे ॥ ७२७ ॥ णंदीसरवरस्स ण दीवस्स अंतो सत्त समुद्दा प० त० लवणे कालोए पुक्खरोदे वरुणोए खीरोदे घओदे खोओए ॥ ७२८ ॥ सत्त सेढीओ प० त० उज्जुआयया एगओवंका दुहओवंका एगओखुहा दुहओखुहा चक्कवाला अद्धचक्कवाला ॥ ७२९ ॥ चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई प० त० पायत्ताणिए पीढाणिए कुंजराणिए महिसाणिए रहाणिए नट्टाणिए गंधव्वाणिए दुमे पायत्ताणियाहिवई एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किन्नरे रहाणियाहिवई रिट्ठे णट्टाणियाहिवई गीयरई गंधव्वाणियाहिवई बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई प० त० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई जाव किंपुरिसे रहाणियाहिवई महारिट्ठे णट्टाणियाहिवई गीयजसे गंधव्वाणियाहिवई, धरणस्स णं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई प० त० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए रुद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई जाव आणंदे रहाणियाहिवई नंदणे णट्टाणियाहिवई तेतली गंधव्वाणियाहिवई भूयाणंदस्स सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई प० त० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए दक्खे पायत्ताणियाहिवई जाव णंदुत्तरे रहाणियाहिवई रई णट्टाणियाहिवई माणसे गंधव्वाणियाहिवई एवं

अट्ठमट्ठाणं

अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विह-
रित्तए तं० सड्ढी पुरिसजाए सच्चे पुरिसजाए मेहावी पुरिसजाए बहुस्सुए पुरिसजाए
सत्तिमं अप्पाहिगरणे धिइमं वीरियसंपन्ने ॥ ५९५ ॥ अट्ठविहे जोणिसंगहे प० तं०
अंडया पोयया जाव उब्भिया उववाइया अंडया अट्ठगइया अट्ठागइया प० तं०
अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा जाव उववाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा
से चेव णं से अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताए वा पोयगत्ताए वा जाव
उववाइयत्ताए वा गच्छेज्जा एवं पोयगावि जराउयावि सेसाणं गइरागई नत्थि
॥ ५९६ ॥ जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा
तं० णाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं वेयणिज्जं मोहणिज्जं आउयं णामं गोयं अंतरा-
इयं णेरइया णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा ३ एवं चेव एवं निरंतरं जाव
वेमाणियाणं २४ जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिंसु वा ३ एवं चेव एवं चिण
उवचिण बंध उदीर वेय तह णिज्जरा चेव एए छ चउवीसा दंडगा भाणियव्वा
॥ ५९७ ॥ अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा नो पडिक्कमेज्जा जाव नो
पडिवज्जेज्जा तं० करिंसु वाऽहं करेमि वाऽहं करिस्सामि वाऽहं अकित्ती वा मे
सिया अवण्णे वा मे सिया अवणए वा मे सिया कित्ती वा मे परिहाइस्सइ जसे
वा मे परिहाइस्सइ, अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा
तं० माइस्स णं अस्सिं लोए गरहिए भवइ उववाए गरहिए भवइ आयाई गरहिया
भवइ एगमवि माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स
आराहणा एगमवि माई मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा अत्थि तस्स
आराहणा बहुओवि माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा नत्थि
तस्स आराहणा बहुओवि माई मायं कट्टु आलोएज्जा जाव अत्थि तस्स आराहणा
आयरियउवज्झायस्स वा मे अइसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा से य मममालोएज्जा
माई णं एसे माई णं मायं कट्टु से जहा णामए अयागरेइ वा तंबागरेइ वा तउ-
यागरेइ वा सीसागरेइ वा रुप्पागरेइ वा सुवण्णागरेइ वा तिलागणीइ वा तुसागणीइ
वा बुसागणीइ वा णलागणीइ वा दलागणीइ वा सोंडियालिंछाणि वा भंडियालिं-
छाणि वा गोलियालिंछाणि वा कुंभारावाएइ वा कवेल्लुयावाएइ वा इट्टावाएइ
वा जंतवाडचुल्लीइ वा लोहारंबरिसाणि वा तत्ताणि समजोइभूयाणि किंसुयफुल्लस-
माणाणि उक्कासहस्साइं विणिम्मुयमाणाइं २ जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं इंगालस-
हस्साइं पविक्खिरमाणाइं अंतो २ झियायंति एवामेव माई मायं कट्टु अंतो २ झिया-

अणाउत्त गमणं, जाव अणाउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया ॥ ७४१ ॥ लोगोवयार-विणए सत्तविहे प० त० अब्भासवत्तियं परच्छंदाणुवत्तियं कज्जहेउं कयपडिकिइया अत्तगवेसणया देसकालण्णुया सव्वत्थेसु यापडिलोमया ॥ ७४२ ॥ सत्त समुग्घाया प० त० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेजससमुग्घाए आहारगसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए, मणुस्साणं सत्त समुग्घाया प० एवं चेव ॥ ७४३ ॥ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवयणनि-ण्हगा प० तं० बहुरया जीवपएसिया अवत्तिया सामुच्छेइया दोकिरिया तेरासिया अवद्धिया, एएसि णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्तऽधम्मायरिया होत्था त० जमाली तीसगुत्ते आसाढे आसमित्ते गंगे छलुए गोट्ठामाहिल्ले, एएसि णं सत्तण्हं पवयणनि-ण्हगाणं सत्त उप्पत्तिनगरा होत्था त० सावत्थी उसभपुरं सेयविया मिहिलमुल्ल-गातीरं पुरिमतरंजि दसपुर णिण्हगउप्पत्तिनगराइं ॥ ७४४ ॥ सायावेयणिज्जस्स कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे प० त० मणुन्ना सद्दा मणुण्णा रूवा जाव मणुन्ना फासा मणोसुहया वइसुहया ॥ ७४५ ॥ असायावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविहे अणु-भावे प० त० अमणुन्ना सद्दा जाव वइदुहया ॥ ७४६ ॥ महाणक्खत्ते सत्ततारे प० ॥ ७४७ ॥ अभिईयाइया सत्तनक्खत्ता पुव्वदारिया प० त० अभिई सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया रेवई, अस्सिणियाइया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया प० त० अस्सिणी भरिणी कत्तिया रोहिणी मिगसिरे अद्दा पुणव्वसू, पुस्साइया णं सत्त णक्खत्ता अवरदारिया प० त० पुस्सो असिलेसा मघा पुव्वाफ-ग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता, साइयाइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया प० त० साई विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वाआसाढा उत्तरासाढा ॥ ७४८ ॥ जंबुद्दीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वए सत्त कूडा प० त० सिद्धे सोमणसे तह बोधव्वे मंगलावईकूडे, देवकुरु विमल कंचण विसिट्ठकूडे य बोद्धव्वे ॥ ७४९ ॥ जंबुद्दीवे दीवे गंधमायणे वक्खारपव्वए सत्त कूडा प० त० सिद्धे य गंधमायण बोद्धव्वे गंधिलावईकूडे उत्तरकुरुफलिहे लोहियक्ख आणंदणे चेव ॥ ७५० ॥ बिइंदि-याणं सत्त जाइकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्सा प० ॥ ७५१ ॥ जीवा णं सत्त-ट्ठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा त० नेरइयनिव्वत्तिए जाव देवनिव्वत्तिए एवं चिण जाव णिज्जरा चेव ॥ ७५२ ॥ सत्तपएसिया खंधा अणंता प० ॥ ७५३ ॥ सत्त पएसोगाढा पोग्गला जाव सत्त-गुणलुक्खा पोग्गला अणंता प० ॥ ७५४ ॥ **सत्तमट्ठाणं समत्तं, सत्तम-मज्झयणं समत्तं ॥**

सुरूवे सुवण्णे सुगंधे सुरसे सुफासे इट्ठे कंते जाव मणामे अहीणस्सरे जाव मणाम-स्सरे आदेज्जवयणे पच्चायाए जाऽवि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ साऽवि य णं आढाइ जाव अब्भुट्ठेति। भासउ ॥ ५९८ ॥ अट्ठविहे संवरे प० तं० सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे मणसंवरे वइसंवरे कायसंवरे, अट्ठविहे असंवरे प० तं० सोइंदियअसंवरे जाव कायअसंवरे ॥ ५९९ ॥ अट्ठ फासा प० तं० कक्खडे मउए गरुए लहुए सीए उसिणे णिद्धे लुक्खे ॥ ६० ॥ अट्ठविहा लोगट्ठिई प० तं० आगासपइट्ठिए वाए वायपइट्ठिए उदही एवं जाव छट्ठाणे जाव जीवा कम्मपइट्ठिया अजीवा जीवसंगहीया जीवा कम्मसंगहीया ॥६०१॥ अट्ठविहा गणिसंपया प० तं० आयारसंपया सुयसंपया सरीरसंपया वयणसंपया वायणासंपया मइसंपया पओगसंपया संगहपरिण्णाणाम अट्ठमा ॥ ६०२ ॥ एगमेगे णं महानिही अट्ठचक्कवालपइट्ठाणे अट्ठट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ६०३ ॥ अट्ठ समिईओ प० तं० इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिई मणसमिई वइसमिई कायसमिई ॥ ६०४ ॥ अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ आलोयणं पडिच्छित्तए तं० आयारवं आहारवं ववहारवं ओवीलए पकुव्वए अपरिस्साई णिज्जावए अवायदंसी ॥ ६०५ ॥ अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ अत्तदोसमालोइत्तए तं० जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने विणयसंपन्ने णाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने खंते दंते ॥६०६॥ अट्ठविहे पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे तवारिहे छेयारिहे मूलारिहे ॥ ६०७ ॥ अट्ठ मयट्ठाणा प० तं० जाइमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए ॥ ६०८ ॥ अट्ठ अकिरियावाई प० तं० एगावाई अणेगावाई मितवाई निम्मितवाई सायवाई समुच्छेयवाई णियावाई ण संति परलोगवाई ॥ ६०९ ॥ अट्ठविहे महानिमित्ते प० तं० भोमे उप्पाए सुविणे अंतलिक्खे अंगे सरे लक्खणे वंजणे ॥ ६१० ॥ अट्ठविहा वयणविभत्ती प० तं० निद्देसे पढमा होइ बिइया उवएसणे; तइया करणंमि कया चउत्थी संपयावणे (१) पंचमी य अवायाणे छट्ठी सस्सामिवायणे; सत्तमी सण्णिहाणत्थे अट्ठमी आमंतणी भवे (२) तत्थ पढमा विभत्ती निद्देसे सो इमो अहं वत्ति १-बिइया उण उवएसे भण कुण व इमं व तं वत्ति (३) तइया करणंमि कया णीयं च कयं च तेण व मए वा; हंदि णमो साहाए हवइ चउत्थी पयाणंमि (४) अवणे गिण्हसु तत्तो इओत्ति वा पंचमी अवायाणे; छट्ठी तस्स इमस्स व गयस्स वा सामिसंबंधे (५) हवइ पुण सत्तमी तं इमंमि आहारकाल-

यइ अड्डवि य णं अण्णे केइ वदति तं पि य णं माई जाणइ अहमेसे अभिसंकिज्जामि माई णं मायं कट्टु अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति तंजहा नो महिड्डिएसु जाव नो दूरंगइएसु नो चिरट्ठिई-एसु से णं तत्थ देवे भवइ णो महिड्डिए जाव णो चिरट्ठिईए जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ सावि य णं णो आढाइ णो परिजाणाइ णो महारिहे-णमासणेण उवनिमंतेइ भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठंति मा बहु देवे! भासउ से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएण भव-क्खएण ठिइक्खएणं अणतरं चयं चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति तं० अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा किवणकुलाणि वा तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ से णं तत्थ पुमे भवइ दुरूवे दुवण्णे दुग्गंधे दुरसे दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिए अम-णुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठसरे अकंतसरे अपियस्सरे अमणुण्ण-स्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणपच्चायाए जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ सावि य णं णो आढाइ णो परिजाणाइ णो महारिहेण आसणेणं उव-णिमंतेइ भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अवुत्ता चेव अब्भु-ट्ठेंति मा बहु अज्जउत्तो! भासउ माई णं मायं कट्टु आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं० महिड्डिएसु जाव चिरट्ठिईएसु से णं तत्थ देवे भवइ महिड्डिए जाव चिरट्ठिईए हारविराइयवच्छे कडगतुडियथंभियभुए अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउली कल्लाणगपवरवत्थपरिहिए कल्लाणगपवर-गंधमल्लाणुलेवणधरे भासुरबोंदी पलंबवणमालधरे दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गंधेणं दिव्वेणं रसेण दिव्वेणं फासेण दिव्वेण संघाएण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्डीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोएमाणे पभासेमाणे महयाऽहयणट्टगीयवाइयतंती-तलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ, सावि य णं आढाइ परिजाणाइ महारिहेण आसणेणं उवनिमंतेइ भासंपि य से भासमाणस्स जाव चत्तारि पंच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति बहुं देवे! भासउ से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ जाव चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, इड्डाइं जाव बहु-जणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ, से णं तत्थ पुमे भवइ

भावे य, आमंतणी भवे अट्ठमी उ जह हे जुवाणत्ति (६) ॥ ७७१ ॥ अट्ठ ठाणाई छउमत्थे ण सव्वभावेणं ण जाणइ ण पासइ तं० धम्मत्थिकायं जाव गंधं वायं, एयाणि चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली जाणइ पासइ जाव गंधं वायं ॥ ७७२ ॥ अट्ठविहे आउवेए प० तं० कुमारभिच्चे, कायतिगिच्छा, सालाई, सल्लहत्ता, जंगोली, भूयवेज्जा, खारतंते, रसायणे ॥ ७७३ ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठग्गमहिसीओ प० तं० पउमा सिवा सई अंजू अमला अच्छरा णवमिया रोहिणी ॥ ७७४ ॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठग्गमहिसीओ प० तं० कण्हा कण्हराई सामा सामरक्खिया वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा ॥ ७७५ ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अट्ठग्गमहिसीओ प० ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अट्ठग्गमहिसीओ प० ॥ ७७६-७७७ ॥ अट्ठ महग्गहा प० तं० चंदे सूरे सुक्के बुहे बहस्सई अंगारए सणिंचरे केऊ ॥७७८॥ अट्ठविहा तणवणस्सइकाइया प० तं० मूले कंदे खंधे तया साले पवाले पत्ते पुप्फे ॥ ७७९ ॥ चउरिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविहे संजमे कज्जइ तं० चक्खुमाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ चक्खुमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ एवं जाव फासामाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ ॥ ७८० ॥ चउरिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स अट्ठविहे असंजमे कज्जइ तं० चक्खुमाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ चक्खुमएणं दुक्खेणं संजोएत्ता भवइ एवं जाव फासामाओ सोक्खाओ० ॥ ७८१ ॥ अट्ठ सुहुमा प० तं० पाणसुहुमे पणगसुहुमे बीयसुहुमे हरियसुहुमे पुप्फसुहुमे अंडसुहुमे लेणसुहुमे सिणेहसुहुमे ॥ ७८२ ॥ भरहस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठपुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं तं०-आइच्चजसे महाजसे अइबले महाबले तेयवीरिए कित्तवीरिए दंडवीरिए जलवीरिए ॥ ७८३ ॥ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था तं० सुभे अज्जघोसे वसिट्ठे बंभयारी सोमे सिरिधरे वीरिए भद्दजसे ॥ ७८४ ॥ अट्ठविहे दंसणे प० तं० सम्मद्दंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छदंसणे चक्खुदंसणे जाव केवलदंसणे सुविणदंसणे ॥ ७८५ ॥ अट्ठविहे अद्धोवमिए प० तं० पलिओवमे सागरोवमे उस्सप्पिणी ओसप्पिणी पोग्गलपरियट्टे तीतद्धा अणागयद्धा सव्वद्धा ॥ ७८६ ॥ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स जाव अट्ठमाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी दुवासपरियाए अंतमकासी ॥ ७८७ ॥ समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठ रायाणो मुंडे भवेत्ता अगाराओ अणगारियं पव्वाविया तं० वीरंगय वीरजसे संजयए णिज्जए य रायरिसी, सेयसिवे उदायणे (तह संखे

अब्भंतरपुक्खरद्धे ण अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण प० एवं बाहिरपुक्खरद्धेवि ॥ ७९९ ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठ सोवन्निए काकिणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए अधिकरणिसंठिए प० ॥ ८०० ॥ मागधस्स णं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइ निधत्ते प० ॥ ८०१ ॥ जंबू णं सुदसणा अट्ठ जोयणाइ उड्ढं उच्चत्तेण बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइ विक्खंभेण साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइ सव्वग्गेण प० ॥ ८०२ ॥ कूडसामली ण अट्ठ जोयणाइ एवं चेव ॥ ८०३ ॥ तिमिसगुहा णमट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण ॥ ८०४ ॥ खडप्पवायगुहा णं अट्ठ जोयणाइ उड्ढं उच्चत्तेण एवं चेव ॥ ८०५ ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेण सीताए महानईए उभओ कूले अट्ठ वक्खारपव्वया प० तं० चित्तकूडे पम्हकूडे नलिणकूडे एगसेले तिकूडे वेसमणकूडे अजणे मायजणे ॥ ८०६ ॥ जंबूमदरपच्चच्छिमेण सीओयाए महाणईए उभओकूले अट्ठ वक्खारपव्वया प० त० अकावई पम्हावई आसीविसे सुहावहे चदपव्वए सूरपव्वए णागपव्वए देवपव्वए ॥ ८०७ ॥ जंबूमदरपुरच्छिमेण सीआए महाणईए उत्तरेण अट्ठ चक्कवट्टिविजया प० त० कच्छे सुकच्छे महाकच्छे कच्छगावई आवत्ते जाव पुक्खलावई ॥ ८०८ ॥ जंबूमदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए दाहिणेणमट्ठ चक्कवट्टिविजया प० त० वच्छे सुवच्छे जाव मंगलावई ॥ ८०९ ॥ जंबूमदरपच्चच्छिमेणं सीओयाए महाणईए दाहिणेण अट्ठ चक्कवट्टिविजया प० त० पम्हे जाव सलिलावई ॥ ८१० ॥ जंबूमदरपचत्थिमेण सीओयाए महाणईए उत्तरेण अट्ठ चक्कवट्टिविजया प० त० वप्पे सुवप्पे जाव गंधिलावई ॥ ८११ ॥ जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीताए महाणईए उत्तरेणमट्ठ रायहाणीओ प० त० खेमा खेमपुरी चेव जाव पुंडरीगिणी ॥ ८१२ ॥ जंबूमदरपुरच्छिमेण सीताए महाणईए दाहिणेणमट्ठ रायहाणीओ प० त० सुसीमा कुंडला चेव जाव रयणसंचया ॥ ८१३ ॥ जंबूमदरपच्चच्छिमेण सीओआए महाणईए दाहिणेण अट्ठ रायहाणीओ प० त० आसपुरा जाव वीतसोगा ॥८१४॥ जंबूमदरस्स पचच्छिमेण सीओआए महाणईए उत्तरेण अट्ठ रायहाणीओ प० त० विजया वेजयंती जाव अउज्झा ॥ ८१५ ॥ जंबूमदरस्स पुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेण उक्कोसपए अट्ठ अरिहंता अट्ठ चक्कवट्टी अट्ठ बलदेवा अट्ठ वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्सति वा ॥ ८१६ ॥ जंबूमदरपुरच्छिमेण सीयाए महाणईए दाहिणेण उक्कोसपए एव चेव ॥ ८१७ ॥ जंबूमदरपच्चत्थिमेण सीओयाए महाणईए दाहिणेण उक्कोसपए एव चेव ॥ ८१८ ॥ एव उत्तरेणवि जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीआए महाणईए उत्तरेण अट्ठ दीहवेयड्ढा अट्ठ तिमिसगुहाओ

तं ईसीइ वा ईसिपब्भाराइ वा तणूइ वा तणुतणूइ वा सिद्धीति वा सिद्धालएइ
वा मुत्तीइ वा मुत्तालएइ वा ॥ ६८३ ॥ अट्ठहिं ठाणेहिं सम्मं संघडियव्वं जइयव्वं
परक्कमियव्वं अस्सिं च णं अट्ठे नो पमाएयव्वं भवइ, असुयाणं धम्माणं सम्मं सुण-
णयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, सुयाणं धम्माणं ओगिण्हणयाए उवधारणयाए अब्भुट्ठेयव्वं
भवइ, पावाणं कम्माणं संजमेणमकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, पोराणाणं कम्माणं
तवसा विगिंचणयाए विसोहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, असंगिहीयपरियणस्स संगि-
ण्हणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, सेहं आयारगोयरगहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, गिला-
णस्स अगिलाए वेयावच्चकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, साहम्मियाणमहिगरणंसि
उप्पन्नंसि तत्थ अणिस्सिओवस्सिओ अपक्खग्गाही मज्झत्थभावभूए कह णु साह-
म्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमंतुमा उवसामणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ
॥ ६८४ ॥ महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं
प० ॥ ६८५ ॥ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठसया वाईणं सदेवमणुयासुराए
परिसाए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ६८६ ॥ अट्ठसामइए
केवलिसमुग्घाए प० तं० पढमे समए दंडं करेइ बीए समए कवाडं करेइ तइए
समए मंथं करेइ चउत्थे समए लोगं पूरेइ पंचमे समए लोगं पडिसाहरइ छट्ठे
समए मंथं पडिसाहरइ सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ अट्ठमे समए दंडं पडि
साहरइ ॥ ६८७ ॥ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववाइ-
याणं गइकल्लाणाणं जाव आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था
॥ ६८८ ॥ अट्ठविहा वाणमंतरा देवा प० तं०—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा
किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा ॥ ६८९ ॥ एएसि णं अट्ठण्हं वाणमंतरदेवाणं
अट्ठ चेइयरुक्खा प० तं०—कलंबो उ पिसायाणं वडो जक्खाण चेइयं । तुलसी भूयाणं
भवे रक्खसाणं च कंडओ (१) असोओ किन्नराणं च किंपुरिसाण य चंपओ ।
नागरुक्खो भुयंगाणं गंधव्वाण य तेंदुओ (२) ॥ ६९० ॥ इमीसे रयणप्पभाए
पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसए उड्ढंबाहाए सूरविमाणे
चारं चरइ ॥ ६९१ ॥ अट्ठ नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति तं०
कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा जेट्ठा ॥ ६९२ ॥
जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स दारा अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० —सव्वेसिंपि दीवसमु-
द्दाणं दारा अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ६९३ ॥ पुरिसवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स
जहन्नेणं अट्ठसंवच्छराइं बंधठिई प० ॥ ६९४ ॥ जसोकित्तीनामए णं कम्मस्स
जहन्नेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिई प० ॥ ६९५ ॥ उच्चगोयस्स णं कम्मस्स एवं चेव

सुप्पइन्ना सुप्पबुद्धा जसोहरा, लच्छिवई सेसवई चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥ ८२९ ॥ जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूडा प० तं० सोत्थिए य अमोहे य हिमवं मंदरे तहा, रुअगे रुयगुत्तमे चंदे अट्ठमे य सुदंसणे (१) तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिईयाओ परिवसंति तं०— इलादेवी सुरादेवी पुढवी पउमावई, एगनासा नवमिया सीया भद्दा य अट्ठमा ॥ ८३० ॥ जंबूमंदरउत्तररुअगवरे पव्वए अट्ठकूडा प० तं० रयणे रयणुच्चए या सव्वरयणे रयणसंचए चेव, विजये य वेजयंते य जयंते अपराजिए (१) तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिईयाओ परिवसंति तं०—अलंबुसा मितकेसी पोंडरी गीतवारुणी, आसा य सव्वगा चेव सिरी हिरी चेव उत्तरओ ॥ ८३१ ॥ अट्ठ अहेलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ प० तं० भोगंकरा भोगवई सुभोगा भोगमालिणी, सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा (१) अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ प० तं०— मेघंकरा मेघवई सुमेघा मेघमालिणी, तोयधारा विचित्ता य पुप्फमाला अणिंदिता २ ॥ ८३२ ॥ अट्ठ कप्पा तिरियमिस्सोववन्नगा प० तं० सोहम्मे जाव सहस्सारे ॥ ८३३ ॥ एएसु णं अट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इंदा प० तं० सक्के जाव सहस्सारे ॥ ८३४ ॥ एएसि णं अट्ठण्हं इंदाणं अट्ठ परियाणिया विमाणा प० तं० पालए पुप्फए सोमणसे सिरिवच्छे णंदावत्ते कामकमे पीइमणे विमले ॥ ८३५ ॥ अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा णं चउसट्ठीए राइदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता जाव अणुपालियावि भवइ ॥ ८३६ ॥ अट्ठविहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं० पढमसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया एवं जाव अपढमसमयदेवा ॥८३७॥ अट्ठविहा सव्वजीवा प०तं० नेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ सिद्धा ॥ ८३८ ॥ अहवा अट्ठविहा सव्वजीवा प० तं० आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगनाणी ॥ ८३९ ॥ अट्ठविहे संजमे प० तं० पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे, अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे, पढमसमयबादरसंजमे, अपढमसमयबादरसंजमे, पढमसमयउवसंतकसायवीयरायसंजमे, अपढमसमयउवसंतकसायवीयरायसंजमे, पढमसमयखीणकसायवीयरायसंजमे, अपढमसमयखीणकसायवीयरायसंजमे ॥ ८४० ॥ अट्ठ पुढवीओ प० तं० रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ईसिपब्भारा ॥ ८४१ ॥ ईसिप्पब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं प० ॥ ८४२ ॥ ईसिपब्भाराए णं पुढवीए अट्ठ नामधेज्जा प०

तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा सिद्धा ॥ ८७० ॥ अहवा णवविहा सव्वजीवा प० तं० पढमसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया जाव अपढमसमयदेवा सिद्धा ॥ ८७१ ॥ णवविहा सव्वजीवोगाहणा प० तं० पुढविकाइयओगाहणा आउ० जाव वणस्सइकाइयओगाहणा बेइंदियओगाहणा तेइंदियओगाहणा चउरिंदियओगाहणा पंचिंदियओगाहणा ॥ ८७२ ॥ जीवा णं णवहिं ठाणेहिं संसारं वत्तिंसु वा वत्तंति वा वत्तिस्संति वा तं० पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताए ॥ ८७३ ॥ णवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया तं० अच्चासणाए अहियासणाए अइणिद्दाए अइजागरिएणं उच्चारनिरोहेणं पासवणनिरोहेणं अद्धाणगमणेणं भोयणपडिकूलयाए इंदियत्थविकोवणयाए ॥ ८७४ ॥ णवविहे दरिसणावरणिज्जे कम्मे प० तं० –निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीणगिद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे ॥ ८७५ ॥ अभीई णं णक्खत्ते साइरेगे णवमुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएइ ॥ ८७६ ॥ अभिईयाइया णं णव णक्खत्ता णं चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति तं० अभिई सवणो धणिट्ठा जाव भरणी ॥ ८७७ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ णव जोयणसयाइं उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ ॥ ८७८ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे णवजोयणिया मच्छा पविसिंसु वा पविसंति वा पविसिस्संति वा ॥ ८७९ ॥ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव बलदेववासुदेवपियरो होत्था तं० पयावई य बंभे य रोद्दे सोमे सिवेइ या महसीहे अग्गिसीहे दसरहे णवमे य वसुदेवे (१) इत्तो आढत्तं जहा समवाए निरवसेसं जाव एगा से गब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेणं ॥ ८८० ॥ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए णव बलदेववासुदेवपियरो भविस्संति णव बलदेववासुदेवमायरो भविस्संति, एवं जहा समवाए निरवसेसं जाव महाभीमसेणे य सुग्गीवे य अपच्छिमे; एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं सव्वेवि चक्कजोही हम्मेहंती सचक्केहिं ॥ ८८१ ॥ एगमेगे णं महानिही णवणव जोयणाइं विक्खंभेणं प० एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णव महानिहओ प० तं० "नेसप्पे पंडुयए पिंगलए सव्वरयण महापउमे काले य महाकाले माणवग महानिही संखे (१) नेसप्पंमि निवेसा गामागरनगरपट्टणाणं च दोणमुहमडंबाणं खंधाराणं गिहाणं च (२) गणियस्स य बीयाणं माणुम्माणस्स जं पमाणं च धन्नस्स य बीयाणं उप्पत्ती पंडुए भणिया (३) सव्वा आभरणविही पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं आसाण य हत्थीण य पिंगलगनिहिम्मि सा भणिया (४) रयणाइं सव्वरयणे चोद्दस पवराइं चक्कवट्टिस्स उप्पज्जंति एगिंदियाइं पंचिंदि-

॥ ८५६ ॥ तेइंदियाणमट्ठ जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा प० ॥ ८५७ ॥ जीवा ण अट्ठठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा चिणति वा चिणिस्संति वा त०-पढमसमयनेरइयनिव्वत्तिए जाव अपढमसमयदेवनिव्वत्तिए एवं चिण उवचिण जाव णिज्जरा चेव ॥ ८५८ ॥ अट्ठपएसिया खधा अणता प० ॥ ८५९ ॥ अट्ठ पएसोगाढा पोग्गला अणता प० ॥ ८६० ॥ जाव अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणता प० ॥ ८६१ ॥ **अट्ठमं ठाणं समत्तं ॥**

नवमट्ठाणं

नवहिं ठाणेहिं समणे णिग्गथे सभोइयं विसभोइय करेमाणे णाइक्कमइ तं०-आयरियपडिणीय उवज्झायपडिणीय थेरपडिणीय कुल० गण० सघ० नाण० दसण० चरित्तपडिणीयं ॥ ८६२ ॥ नव बभचेरा प० तं० सत्थपरिन्ना लोगविजओ जाव उवहाणसुय महापरिण्णा ॥ ८६३ ॥ नव बभचेरगुत्तीओ प० त० विवित्ताइं सयणासणाइ सेवित्ता भवइ णो इत्थिसंसत्ताइं नो पसुसंसत्ताइ नो पडगसंसत्ताइ १ नो इत्थीण कह कहेत्ता २ नो इत्थिठाणाइं सेवित्ता भवइ ३ नो इत्थीणमिंदियाइं मणोहराइ मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ४ नो पणीयरसभोई ५ नो पाणभोयणस्स अइमत्त आहारए सया भवइ ६ नो पुव्वरय पुव्वकीलिय समरेत्ता भवइ ७ णो सद्दाणुवाई णो रूवाणुवाई णो सिलोगाणुवाई ८ णो सायसोक्खपडिवद्धे यावि भवइ ९ ॥ ८६४ ॥ नव बभचेरअगुत्तीओ प० त० नो विवित्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता भवइ इत्थीससत्ताइ पसुससत्ताइं पंडगससत्ताइ इत्थीणं कहं कहेत्ता भवइ इत्थीण ठाणाइ सेवित्ता भवइ इत्थीण इंदियाइ जाव निज्झाइत्ता भवइ पणीयरसभोई पाणभोयणस्स अइमायमाहारए सया भवइ पुव्वरय पुव्वकीलिय सरित्ता भवइ सद्दाणुवाई रूवाणुवाई सिलोगाणुवाई जाव सायासुक्खपडिवद्धे यावि भवइ ॥ ८६५ ॥ अभिणंदणाओ ण अरहओ सुमई अरहा नवहिं सागरोवमकोडिसयसहस्सेहिं विइक्कतेहिं समुप्पन्ने ॥ ८६६ ॥ नव सब्भावपयत्था प० त० जीवा अजीवा पुण्ण पावो आसवो सवरो णिज्जरा बधो मोक्खो ॥ ८६७ ॥ णवविहा ससारसमावन्नगा जीवा प० त० पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया बेइंदिया जाव पचिंदियत्ति ॥ ८६८ ॥ पुढवीकाइया नवगइया नव आगइया प० त० पुढवीकाइए पुढवीकाइएसु उववज्जमाणे पुढवीकाइएहिंतो वा जाव पचिंदिएहिंतो वा उववजेज्जा, से चेव णं से पुढवीकाइए पुढवीकायत्त विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा, एव आउकाइयावि जाव पचिंदियत्ति ॥ ८६९ ॥ नवविहा सव्वजीवा प० तं० एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया नेरइया पचिंदियति-

॥ ६९५-६ ॥ नव गेविज्जविमाणपत्थडा प० तं० हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे हेट्ठिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिमहेट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे उवरिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे ॥ ६९७ ॥ एएसि णं नवण्हं गेविज्जविमाणपत्थडाणं नव नामधिज्जा प० तं० भद्दे सुभद्दे सुजाए सोमणसे पियदरिसणे सुदंसणे अमोहे य सुप्पबुद्धे जसोधरे ॥ ६९८ ॥ नवविहे आउपरिणामे प० तं० गइपरिणामे गइबंधणपरिणामे ठिइपरिणामे ठिइबंधणपरिणामे उड्ढंगारवपरिणामे अहेगारवपरिणामे तिरियंगारवपरिणामे दीहंगारवपरिणामे रहस्संगारवपरिणामे ॥ ६९९ ॥ नवनवमिया णं भिक्खुपडिमा एगासीए राइंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता जाव आराहिया यावि भवइ ॥ ७०० ॥ नवविहे पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे जाव मूलारिहे अणवट्ठप्पारिहे ॥ ७०१ ॥ जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे दीहवेयड्ढे नव कूडा प० तं० सिद्धे भरहे खंडग माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा भरहे वेसमणे या भरहे कूडाण णामाइं ॥ ७०२ ॥ जंबूमंदरदाहिणेणं निसहे वासहरपव्वए नव कूडा प० तं० सिद्धे निसहे हरिवास विदेह हरि धिइ य सीओया अवरविदेहे रुयगे निसहे कूडाण नामाणि ॥ ७०३ ॥ जंबूमंदरपव्वए णंदणवणे नव कूडा प० तं० णंदणे मंदरे चेव निसहे हेमवए रयय रुयए य सागरचित्ते वइरे बलकूडे चेव बोद्धव्वे ॥ ७०४ ॥ जंबूमालवंतवक्खारपव्वए नव कूडा प० तं० सिद्धे य मालवंते उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयए, सीया तह पुण्णभद्दे हरिस्सहकूडे य बोद्धव्वे ॥ ७०५ ॥ जंबू कच्छे दीहवेयड्ढे नव कूडा प० तं० सिद्धे कच्छे खंडग माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा कच्छे वेसमणे या कच्छे कूडाण नामाइं ॥ ७०६ ॥ जंबू सुकच्छे दीहवेयड्ढे नव कूडा प० तं० सिद्धे सुकच्छे खंडग माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा, सुकच्छे वेसमणे या सुकच्छि कूडाण नामाइं ॥ ७०७ ॥ एवं जाव पोक्खलावइम्मि दीहवेयड्ढे एवं वच्छे दीहवेयड्ढे एवं जाव मंगलावइम्मि दीहवेयड्ढे ॥ ७०८ ॥ जंबू विज्जुप्पभे वक्खारपव्वए नव कूडा प० तं० -सिद्धे य विज्जुणामे देवकुरा पम्ह कणग सोवत्थी सीओयाए सयजले हरिकूडे चेव बोद्धव्वे ॥ ७०९ ॥ जंबू पम्हे दीहवेयड्ढे नव कूडा प० तं० -सिद्धे पम्हे खंडग माणी वेयड्ढ एवं चेव जाव सलिलावइम्मि दीहवेयड्ढे एवं वप्पे दीहवेयड्ढे एवं जाव गंधिलावइम्मि दीहवेयड्ढे नव कूडा प० तं० -सिद्धे गंधिल खंडग माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा, गंधिलावइ वेसमण कूडाणं होंति नामाइं (१) एवं सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु

चाउ य (५) वत्थाण य उप्पत्ती णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं, रंगाण य धोयाण य सव्वा एसा महापउमे (६) काले कालण्णाणं भव्वपुराणं च तिसुवि वंसेसु सिप्पसयं कम्माणि य, तिन्नि पयाए हियकराइं (७) लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकालि आगराणं च, रुप्पस्स सुवण्णस्स य मणिमोत्तिसिलप्पवालाणं (८) जोहाण य उप्पत्ती आवरणाण य पहरणाण य, सव्वा य जुद्धनीती माणवए दंडनीती य (९) नट्टविही नाडगविही, कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती, संखे महानिहिंमी, तुडियंगाण य सव्वेसिं (१०) चक्कट्ठपइट्ठाणा अट्ठुस्सेहा य नव य विक्खंभे, बारसदीहा मंजूससंठिया, जण्हवीइ मुहे (११) वेरुलियमणिकवाडा कणगमया विविहरयणपडिपुण्णा, ससिसूरचक्कलक्खण अणुसमवयणोववत्ती य (१२) पलिओवमट्ठिईया णिहिसरिणामा य तेसु खलु देवा, जेसिं ते आवासा अक्किज्जा आहिवच्चा वा (१३) एए ते नवनिहओ पभूयधणरयणसंचयसमिद्धा जे वसमुवगच्छंती सव्वेसिं चक्कवट्टीणं" (१४) ॥ ८८२ ॥ नव विगईओ प० तं० खीरं दहिं णवणीयं सप्पिं तेलं गुलो महुं मज्जं मंसं ॥ ८८३ ॥ नवसोयपरिस्सवा बोंदी प० तं० दो सोत्ता दो णेत्ता दो घाणा मुहं पोसे पाऊ ॥ ८८४ ॥ णवविहे पुन्ने प० तं० अन्नपुन्ने पाणपुन्ने वत्थपुन्ने लेणपुन्ने सयणपुन्ने मणपुन्ने वइपुन्ने कायपुन्ने नमोक्कारपुन्ने ॥ ८८५ ॥ णव पावस्सायतणा प० तं० पाणाइवाए मुसावाए जाव परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे ॥ ८८६ ॥ नवविहे पावसुयपसंगे प० तं० उप्पाए निमित्ते मंते आइक्खिए तिगिच्छिए, कला आवरणे अन्नाणे मिच्छापावयणेति य ॥ ८८७ ॥ णव णेउणिया वत्थू प० तं० संखाणे निमित्ते काइए पोराणे पारिहत्थिए परपंडिए वाइए भूइकम्मे तिगिच्छिए ॥ ८८८ ॥ समणस्स णं भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स नव गणा होत्था तं० गोदासगणे उत्तरबलिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवाइयगणे विस्सवाइयगणे कामड्ढियगणे माणवगणे कोडियगणे ॥ ८८९ ॥ समणेणं भगवया महावीरेण समणाणं णिग्गंथाणं णवकोडिपरिसुद्धे भिक्खे प० तं० ण हणइ ण हणावेइ हणंतं णाणुजाणइ ण पयइ ण पयावेइ पयंतं णाणुजाणइ ण किणइ ण किणावेइ किणंतं णाणुजाणइ ॥ ८९० ॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारन्नो णव अग्गमहिसीओ प० ॥ ८९१ ॥ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अग्गमहिसीणं णवपलिओवमाइं ठिई प० ॥ ८९२ ॥ ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं णव पलिओवमाइं ठिई प० ॥ ८९३ ॥ नव देवनिकाया प० तं० "सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य" ॥ ८९४ ॥ अव्वाबाहाणं देवाणं नव देवा नव देवसया प० एवं अग्गिच्चावि एवं रिट्ठावि

दो कूडा सरिसणामगा सेसा ते चेव ॥ ९१० ॥ जंबूमंदरउत्तरेणं णीलवंते वासहर-पव्वए णव कूडा प० तं० सिद्धे णीलवन्त विदेहे सीया कित्ती य नारिकन्ता य, अवरविदेहे रम्मगकूडे उवदसणे चेव ॥ ९११ ॥ जंबूमंदरउत्तरेणं एरवए दीहवेयड्ढे नव कूडा प० तं० सिद्धे रयणे खंडग माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा, एरवए वेसमणे एरवए कूडणामाइं ॥ ९१२ ॥ पासे णं अरहा पुरिसादाणिए वज्जरिसहणारायसंघयणे समचउरससंठाणसंठिए नव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ९१३ ॥ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि णवहिं जीवेहिं तित्थगरणामगोत्ते कम्मे णिव्वत्तिए तं० सेणिएणं सुपासेणं उदाइणा पोट्टिलेणं अणगारेणं दढाउणा संखेणं सयएणं सुलसाए सावियाए रेवईए ॥ ९१४ ॥ एस णं अज्जो ! कण्हे वासुदेवे, रामे बलदेवे, उदए पेढालपुत्ते, पुट्टिले, सयये गाहावई, दारुए नियंठे, सच्चई नियंठीपुत्ते, सावियबुद्धे अंबडे परिव्वायए, अज्जाविणं सुपासा पासावच्चिज्जा, आगमेस्साए उस्सप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पन्नवइत्ता सिज्झिहिंति जाव अंतं काहिंति ॥ ९१५ ॥ एस णं अज्जो ! सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए नरए चउरासीइवाससहस्सट्ठिइंयंसि निरयंसि णेरइयत्ताए उववज्जिहिति से णं तत्थ णेरइए भविस्सइ काले कालोभासे जाव परमकिण्हे वन्नेणं से णं तत्थ वेयणं वेदिहिती उज्जलं जाव दुरहियासं से णं तओ नरयाओ उव्वट्टेत्ता आगमेस्साए उस्सप्पिणीए इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे णयरे संमुइस्स कुलगरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिइ तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुन्नपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजण० जाव सुरूवं दारगं पयाहिती जं रयणिं च णं से दारए पयाहिती तं रयणिं च णं सयदुवारे णयरे सब्भंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वइक्कंते जाव बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधिज्जं काहिंति जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नयरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वुट्ठे तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापउमे तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिंति महापउमेत्ति, तए णं महापउमं दारगं अम्मापियरो साइरेगं अट्ठवासजायगं जाणित्ता महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिंति से णं तत्थ राया भविस्सइ महया हिमवंतमहंतमलयमंदररायवन्नओ जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरिस्सइ तए णं तस्स

अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवे मद्दवे लाघवे खंती मुत्ती गुत्ती सच्च संजम तवगुणसुचरियसोवचियफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति, तए णं से भगवं अरहा जिणे भविस्सइ केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ, तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुयासुरलोगं अभिसमिच्चा समणाणं णिग्गंथाणं पंच महव्वयाइं सभावणाइं छच्च जीवनिकायधम्मं देसेमाणे विहरिस्सइ से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं एगे आरंभठाणे पण्णत्ते एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं एगं आरंभट्ठाणं पण्णवेहिति, से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं दुविहे बंधणे प० तं० पेज्जबंधणे, दोसबंधणे, एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं दुविहं बंधणं पन्नवेहिती तं० पेज्जबंधणं च दोसबंधणं च से जहानामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं तओ दंडा प० तं० मणदंडे ३ एवामेव महापउमेवि समणाणं णिग्गंथाणं तओ दंडे पण्णवेहिति तं० मणोदंडं ३ से जहानामए एएणं अभिलावेणं चत्तारि कसाया प० तं० कोहकसाए ४ पंच कामगुणे प० तं० सद्दे ५ छज्जीवनिकाया प० तं० पुढविकाइया जाव तसकाइया एवामेव जाव तसकाइया से जहाणामए एएणं अभिलावेणं सत्त भयट्ठाणा प० तं० एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं सत्त भयट्ठाणा पन्नवेहिति, एवमट्ठ मयट्ठाणे, णव बंभचेरगुत्तीओ दसविहे समणधम्मे एवं जाव तेत्तीसमासायणाउत्ति से जहानामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं **थेरकप्पे जिणकप्पे** मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणे अच्छत्तए अणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे जाव लद्धावलद्धवित्तीओ प० एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं **थेरकप्पं जिणकप्पं** जाव लद्धावलद्धवित्ती पण्णवेहिती, से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं आहाकम्मिएइ वा उद्देसिएइ वा मीसजाएइ वा अज्झोयरएइ वा पूइए कीए पामिच्चे अच्छेज्जे अणिसट्ठे अभिहडेइ वा कंतारभत्तेइ वा दुब्भिक्खभत्तेइ वा गिलाणभत्ते वद्दलियाभत्तेइ वा पाहुणभत्तेइ वा मूलभोयणेइ वा कंद० फल० बीय० हरियभोयणेइ वा पडिसिद्धे एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं०

काइयनिवत्तिए जाव पंचिंदियनिवत्तिए एव चिण उवचिण जाव णिज्जरा चेव ॥ ९२७ ॥ णव पएसिया खधा अणता प० ॥ ९२८ ॥ णव पएसोगाढा पोग्गला अणता प० ॥ ९२९ ॥ जाव णव गुणलुक्खा पोग्गला अणता प० ॥ ९३० ॥

नवमं ठाणं नवममज्झयणं समत्तं ॥

दसमट्ठाणं

दसविहा लोगट्ठिई प० त० जण्ण जीवा उद्दाइत्ता २ तत्थेव २ भुज्जो २ पच्चायति, एव एगा लोगट्ठिई प० १ जण्ण जीवाण सया समिय पावे कम्मे कज्जइ एवं एगा लोगट्ठिई प० २ जण्ण जीवा सया समियं मोहणिज्जे पावे कम्मे कज्जइ एव एगा लोगट्ठिई प० ३ ण एव भूयं वा भव्व वा भविस्सइ वा ज जीवा अजीवा भविस्सति अजीवा वा जीवा भविस्सति एवं एगा लोगट्ठिई प० ४ ण एव भूयं ३ ज तसा पाणा वोच्छिज्जिस्सति थावरा पाणा वोच्छिज्जिस्सति तसा पाणा भविस्सति वा एव पि एगा लोगट्ठिई प० ५ ण एव भूय वा ३ ज लोगे अलोगे भविस्सइ अलोगे वा लोगे भविस्सइ एव एगा लोगट्ठिई प० ६ ण एव भूय वा ३ ज लोए अलोए पविस्सइ अलोए वा लोए पविस्सइ एव एगा लोगट्ठिई प० ७ जाव ताव लोगे ताव ताव जीवा जाव ताव जीवा ताव ताव लोए एवं एगा लोगट्ठिई प० ८ जाव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइपरियाए ताव ताव लोए जाव ताव लोए ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइपरियाए एव एगा लोगट्ठिई प० ९ सव्वेसु वि ण लोगतेसु अवद्ध-पासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताए कज्जति जेण जीवा य पोग्गला य नो सचायति वहिया लोगता गमणयाए एव एगा लोगट्ठिई पण्णत्ता ॥ ९३१ ॥ दसविहे सद्दे प० त० नीहारि पिंडिमे लुक्खे भिन्ने जज्जरिए इय, दीहे रहस्से पुहत्ते य, काकणी खिंखिणिस्सरे ॥ ९३२ ॥ दस इदियत्थातीता प० त० देसेण वि एगे सद्दाइ सुणिंसु सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणिंसु देसेण वि एगे रुवाइ पासिंसु सव्वेण वि एगे रुवाइं पासिंसु एव गधाइ रसाइ फासाइ जाव सव्वेण वि एगे फासाइ पडिसवेदेंसु ॥ ९३३ ॥ दस इदियत्था पडुप्पन्ना प० तं०–देसेण वि एगे सद्दाइ सुणेंति, सव्वेण वि एगे सद्दाइ सुणेंति, एव जाव फासाइ, दस इदियत्था अणागया प० त०–देसेण वि एगे सद्दाइ सुणिस्संति सव्वेण वि एगे सद्दाइ सुणिस्संति एव जाव सव्वेण वि एगे फासाइ पडिसवेदेस्संति ॥ ९३४ ॥ दसहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा त०–आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा, परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा, उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा, निस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा, वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा, णिज्जरिज्जमाणे वा

उव्वेहेणं य मूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं बहुमज्झदेसभाए एगपएसियाए सेढीए दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं य उवरिं मुहमूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं य तेसि णं महापायालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समा दस जोयणाइं बाहल्लेणं य ॥ ५६२ ॥ धायइसंडगा णं मंदरा दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणितले देसूणाइं दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं य ॥ ५६३ ॥ पुक्खरवरदीवड्ढगा णं मंदरा दस जोयण एवं चेव ॥ ५६४ ॥ सव्वेवि णं वट्टवेयड्ढपव्वया दसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लगसंठाणसंठिया दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं य ॥ ५६५ ॥ जंबुद्दीवे दीवे दस खेत्ता य तं— भरहे एरवए हेमवए हेरण्णवए हरिवस्से रम्मयवस्से पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा ॥ ५६६ ॥ माणुसुत्तरे णं पव्वए मूले दस बावीसे जोयणसए विक्खंभेणं य ॥ ५६७ ॥ सव्वेवि णं अंजणगपव्वया दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं य ॥ ५६८ ॥ सव्वेवि णं दहिमुहपव्वया दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लगसंठाणसंठिया दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं य ॥ ५६९ ॥ सव्वेवि णं रइकरगपव्वया दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा झल्लरिसंठाणसंठिया दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं य ॥ ५७० ॥ रुयगवरे णं पव्वए दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं य एवं कुंडलवरेवि ॥ ५७१ ॥ दसविहे दवियाणुओगे य तं— दवियाणुओगे माउयाणुओगे एगट्ठियाणुओगे करणाणुओगे अप्पियणप्पिए भावियाभाविए बाहिराबाहिरे सासयासासए तहणाणे अतहणाणे ॥ ५७२ ॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिच्छिकूडे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं य ॥ ५७३ ॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो सोमप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं य ॥ ५७४ ॥ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो जमप्पभे उप्पायपव्वए एवं चेव एवं वरुणस्सवि एवं वेसमणस्स वि ॥ ५७५ ॥ बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं य ॥ ५७६ ॥ बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सोमस्स एवं चेव जहा चमरस्स लोगपालाणं तं चेव बलिस्स वि ॥ ५७७ ॥ धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो धरणप्पभे उप्पायपव्वए

उक्कावाए दिसिदाघे गज्जिए विज्जु निग्घाए जूवए जक्खालित्ते धूमिया महिया
रयउग्घाए ॥ ९४९ ॥ दसविहे ओरालिए असज्झाइए प० त०-अट्ठि मंसं सोणिए
असुइसामंते सुसाणसामंते चंदोवराए सूरोवराए पडणे रायवुग्गहे उवस्सयस्स
अंतो ओरालिए सरीरगे ॥ ९५० ॥ पंचिंदियाणं जीवाणं असमारभमाणस्स दस-
विहे संजमे कज्जइ त०-सोयामयाओ सुक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, सोयामएणं
दुक्खेण असंजोएत्ता भवइ, एवं जाव फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ, एवं
असंजमोवि भाणियव्वो ॥ ९५१ ॥ दससुहुमा प० त०-पाणसुहुमे, पणगसुहुमे
जाव सिणेहसुहुमे, गणियसुहुमे, भंगसुहुमे ॥ ९५२ ॥ जंबूमंदरदाहिणेणं गंगासिंधु-
महाणईओ दस महाणईओ समप्पेंति त० जउणा, सरऊ, आवी, कोसी, मही, सिंधू,
विवच्छा, विभासा, एरावई, चंदभागा ॥ ९५३ ॥ जंबूमंदरउत्तरेणं रत्तारत्तवईओ
महाणईओ दस महाणईओ समप्पेंति त०-किण्हा, महाकिण्हा, नीला, महानीला,
तीरा, महातीरा, इंदा जाव महाभोगा ॥ ९५४ ॥ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दस
रायहाणीओ प० त० चंपा, महुरा, वाणारसी य, सावत्थी, तह य साएयं, हत्थि-
णाउर, कंपिल्लं, मिहिला, कोसंबि, रायगिहं ॥ ९५५ ॥ एयासु णं दससु रायहाणीसु
दस रायाणो मुंडा भवेत्ता जाव पव्वइया, त०-भरहे, सगरो, मघवं, सणंकुमारो,
संती, कुंथू, अरे, महापउमे, हरिसेणो, जयणामे ॥ ९५६ ॥ जंबूमंदरपव्वए दस
जोयणसयाइं उव्वेहेण धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेण उवरिं दसजोय-
णसयाइं विक्खंभेण दसदसाइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० ॥ ९५७ ॥ जंबुद्दीवे
दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहे-
ट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु एत्थ णं अट्ठ पएसिए रुयगे प० जओ णं इमाओ दस दिसाओ
पवहंति त० पुरच्छिमा, पुरच्छिमदाहिणा, दाहिणा, दाहिणपच्चत्थिमा, पच्चत्थिमा,
पच्चत्थिमुत्तरा, उत्तरा, उत्तरपुरच्छिमा, उड्ढा, अहो ॥ ९५८ ॥ एएसि णं दसण्ह दिसाणं
दस णामधिज्जा, प० त०-इंदा अग्गेइ जमा नेरई वारुणी य वायव्वा, सोमा ईसा-
णावि य विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥ ९५९ ॥ लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयण-
सहस्साइं गोतित्थविरहिए खेत्ते प० ॥ ९६० ॥ लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयण-
सहस्साइं उदगमाले पन्नत्ते ॥ ९६१ ॥ सव्वेवि णं महापायाला दसदसाइं जोयण-
सहस्साइं उव्वेहेण प० मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेण प० बहुमज्झदेसभागे
एगपएसियाए सेढीए दसदसाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेण प० उवरिं मुहमूले दस
जोयणसहस्साइं विक्खंभेण प० तेसिं णं महापायालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्व-
त्थसमा दस जोयणसयाइं बाहल्लेण प० सव्वेवि णं खुद्दा पायाला दस जोयणसयाइं

प्पहीणे ॥९९५॥ नमी णं अरहा दस वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे ॥९९६॥ पुरिससीहे णं वासुदेवे दसवाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववन्ने ॥९९७॥ नेमी णं अरहा दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे ॥९९८॥ कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववन्ने ॥९९९॥ दसविहा भवणवासी देवा पं० तं०—असुरकुमारा जाव थणियकुमारा ॥१०००॥ एएसि णं दसविहाणं भवणवासीणं देवाणं दस रुक्खा पं० तं०—आसत्थ सत्तिवन्ने सामलि उंबर सिरीस दहिवन्ने वंजुल पलास वप्पे तए य कणियाररुक्खे ॥१००१॥ दसविहे सोक्खे पं० तं०—आरोग्ग दीहमाउं अड्ढेज्जं काम भोग संतोसे; अत्थि सुहभोग णिक्खम्ममेव तत्तो अणाबाहे ॥१००२॥ दसविहे उवघाए पं० तं०—उग्गमोवघाए उप्पायणोवघाए जहा पंचमे ठाणे जाव परिहरणोवघाए णाणोवघाए दंसणोवघाए चरित्तोवघाए अचियत्तोवघाए सारक्खणोवघाए ॥१००३॥ दसविहा विसोही पं० तं०—उग्गमविसोही उप्पायणविसोही जाव सारक्खणविसोही ॥१००४॥ दसविहे संकिलेसे पं० तं०—उवहिसंकिलेसे उवस्सयसंकिलेसे कसायसंकिलेसे भत्त-पाणसंकिलेसे मणसंकिलेसे वइसंकिलेसे कायसंकिलेसे णाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्तसंकिलेसे ॥१००५॥ दसविहे असंकिलेसे पं० तं० उवहिअसंकिलेसे जाव चरित्तअसंकिलेसे ॥१००६॥ दसविहे बले पं० तं०—सोइंदियबले जाव फासिंदियबले णाणबले दंसणबले चरित्तबले तवबले वीरियबले ॥१००७॥ दसविहे सच्चे पं० तं०—जणवय सम्मय ठवणा णामे रूवे पडुच्चसच्चे य, ववहार भाव जोगे दसमे ओवम्मसच्चे य ॥१००८॥ दसविहे मोसे पं० तं०—कोहे माणे माया लोभे पिज्जे तहेव दोसे य हास भए अक्खाइय उवघायनिस्सिए दसमे ॥१००९॥ दसविहे सच्चामोसे पं० तं० उप्पन्नमीसए विगयमीसए उप्पन्नविगयमीसए जीवमीसए अजीवमीसए जीवाजीवमीसए अणंतमीसए परित्तमीसए अद्धामीसए अद्धद्धामीसए ॥१०१०॥ दिट्ठिवायस्स णं दस नामधेज्जा पं० तं० दिट्ठिवाए वा हेउवाए वा भूयवाए वा तच्चावाए वा सम्मावाए वा धम्मावाए वा भासाविजए वा पुव्वगए वा अणुजोगगए वा सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहे वा ॥१०११॥ दसविहे सत्थे पं० तं०—सत्थमग्गी विसं लोणं सिणेहो खारं अंबिलं दुप्पउत्तो मणो वाया काओ भावो य अविरई ॥१०१२॥ दसविहे दोसे पं० तं०—तज्जायदोसे मइभंगदोसे पसत्थारदोसे परिहरणदोसे सलक्खण कारण हेउदोसे संकमणं निग्गह वत्थुदोसे

दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं ॥ ९७८ ॥ धरणस्स नागकुमारिंदस्स णं नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो महाकालप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं एवं चेव, एवं जाव सखवालस्स, एवं भूयाणंदस्स वि, एवं लोगपालाणंपि से जहा धरणस्स, एवं जाव थणियकुमाराणं सलोगपालाणं भाणियव्वं, सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसणामगा ॥९७९॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसगाउयसहस्साइं उव्वेहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ ९८० ॥ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो जहा सक्कस्स तहा सव्वेसिं लोगपालाणं सव्वेसिं च इंदाणं जाव अच्चुयत्ति, सव्वेसिं पमाणमेगं ॥ ९८१ ॥ बायरवणस्सइकाइयाणं उक्कोसेणं दस जोयणसयाइं सरीरोगाहणा प० ॥ ९८२ ॥ जलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं दस जोयणसयाइं सरीरोगाहणा प० उरपरिसप्पथलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं एवं चेव ॥ ९८३ ॥ संभवाओ णं अरहाओ अभिनंदणे अरहा दसहिं सागरोवमकोडिसयसहस्सेहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पन्ने ॥९८४॥ दसविहे अणंतए प० तं० णामाणंतए ठवणाणंतए दव्वाणंतए गणणाणंतए पएसाणंतए एगओणंतए दुहओणंतए देसवित्थाराणंतए सव्ववित्थाराणंतए सासयाणंतए ॥ ९८५ ॥ उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू प० ॥ ९८६ ॥ अत्थिणत्थिप्पवायपुव्वस्स णं दस मूलवत्थू प० ॥९८७॥ दसविहा पडिसेवणा प० तं०–दप्प पमाय णाभोगे आउरे आवईसु य, संकिए सहसक्कारे भय प्पओसा य वीमंसा ॥९८८॥ दस आलोयणा दोसा प० तं० आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता जंदिट्ठं बायरं च सुहुमं वा, छण्णं सद्दाउलगं बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥ ९८९ ॥ दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ अत्तदोसमालोइत्तए तं०–जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने एवं जहा अट्ठट्ठाणे जाव खंते दंते अमाई अपच्छाणुतावी ॥ ९९० ॥ दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ आलोयणं पडिच्छित्तए तं०–आयारवं अवहारवं जाव अवायदंसी पियधम्मे दढधम्मे ॥ ९९१ ॥ दसविहे पायच्छित्ते प० तं०–आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे पारंचियारिहे ॥ ९९२ ॥ दसविहे मिच्छत्ते प० तं०–अधम्मे धम्मसण्णा धम्मे अधम्मसण्णा उम्मग्गे मग्गसण्णा मग्गे उम्मग्गसण्णा अजीवेसु जीवसण्णा जीवेसु अजीवसण्णा असाहुसु साहुसण्णा साहुसु असाहुसण्णा अमुत्तेसु मुत्तसण्णा मुत्तेसु अमुत्तसण्णा ॥ ९९३ ॥ चंदप्पभे णं अरहा दस पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ९९४ ॥ धम्मे णं अरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव-

महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ २ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्त-
विचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे ससमयपरसमइयं चित्त-
विचित्तं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेइ पन्नवेइ परूवेइ दंसेइ निदंसेइ उवदंसेइ
तं० आयारं जाव दिट्ठिवायं ३ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं
सव्वरयणामं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पन्नवेइ, तं०—
अगारधम्मं च अणगारधम्मं च ४ जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं
गोवग्गं सुमिणे जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउवण्णाइण्णे
संघे तं०—समणा समणीओ सावया सावियाओ ५ जण्णं समणे भगवं महावीरे
एगं महं पउमसरं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पन्न-
वेइ, तं० भवणवासी वाणमंतरा जोइसवासी वेमाणवासी ६ जण्णं समणे भगवं
महावीरे एगं महं उम्मीवीयी जाव पडिबुद्धे तं णं समणेणं भगवया महावीरेणं
अणाईए अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंतसंसारकंतारे तिण्णे ७ जण्णं समणे भगवं
महावीरे एगं महं दिणयरं जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स
अणंते अणुत्तरे जाव समुप्पन्ने ८ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं हरिवे-
रुलिय जाव पडिबुद्धे तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सदेवमणुयासुरे लोगे
उराला कित्तिवण्णसद्दसिलोगा परिगुव्वंति इति खलु समणे भगवं महावीरे इइ ९
जण्णं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरिं जाव पडिबुद्धे तं
णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवलिपन्नत्तं धम्मं
आघवेइ पन्नवेइ जाव उवदंसेइ १० ॥ १ ११ ॥ दसविहे सरागसम्मदंसणे प०
तं०—निसग्गुवएसरुई आणरुई सुत्तबीयरुइमेव अभिगम वित्थाररुई किरिया संखेव
धम्मरुई ॥ १ ११ ॥ दससन्नाओ प० तं०—आहारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना
परिग्गहसन्ना कोहसन्ना माणसन्ना मायासन्ना लोहसन्ना लोगसन्ना ओहसन्ना
नेरइयाणं दस सन्नाओ एवं चेव एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं २४ ॥ १ २४ ॥
नेरइया णं दसविहं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति तं० सीयं उसिणं खुहं पिवासं कंडुं
परज्झं जरं दाहं भयं सोगं ॥ १ २५ ॥ दस ठाणाइं छउमत्थे णं सव्वभावेणं न
जाणइ न पासइ तं०—धम्मत्थिकायं जाव वायं अयं जिणे भविस्सइ वा ण वा भवि-
स्सइ अयं सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सइ वा न वा करिस्सइ एयाणि चेव उप्पन्ननाण-
दंसणधरे अरहा जाणइ पासइ जाव अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सइ वा न वा करेस्सइ
॥ १ २६ ॥ दस दसाओ प० तं०—कम्मविवागदसाओ उवासगदसाओ, अंतगड-
दसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, आयारदसाओ पण्हावागरणदसाओ बंधदसाओ,

॥१०१३॥ दसविहे विसेसे प० त०-वत्थु तज्जायदोसे य दोसे एगट्ठिएइ य, कारणे य पडुप्पण्णे दोसे निच्चे हि अट्ठमे, अत्तणा उवणीए य विसेसेति य ते दस.. ॥१०१४॥ दसविहे सुद्धावायाणुओगे प० त०-चकारे मकारे पिंकारे सेयकारे सायकारे एगत्ते पुहुत्ते सजूहे संकामिए भिन्ने ॥ १०१५ ॥ दसविहे दाणे प० त० अणुकंपा संगहे चेव भये कालुणिएइ य, लज्जाए गारवेणं च, अहम्मे पुण सत्तमे ॥ धम्मे य अट्ठमे वुत्ते काहीइ य कयति य ॥ १०१६ ॥ दसविहा गई प० तं०-निरयगई, निरयविग्गहगई, तिरियगई, तिरियविग्गहगई, एवं जाव सिद्धिगई, सिद्धि-विग्गहगई ॥ १०१७॥ दसमुंडा प० त०-सोइंदियमुंडे जाव फासिंदियमुंडे, कोह-मुंडे जाव लोभमुंडे दसमे सिरमुंडे ॥ १०१८ ॥ दसविहे सखाणे प० त०-परि-कम्म ववहारो रज्जू रासी कलासवन्ने य, जावतावइ वग्गो घणो य तह वग्गवग्गो वि, कप्पो य ॥ १०१९ ॥ दसविहे पच्चक्खाणे प० त०-अणागयमइक्कंतं कोडी-सहिय नियटिय चेव, सागारमणागार, परिमाणकड, निरवसेसं, सकेयं चेव अद्धाए, पच्चक्खाण दसविहं तु ॥ १०२० ॥ दसविहा सामायारी प० त०-इच्छा मिच्छा तहक्कारो आवस्सिया निसीहिया, आपुच्छणा य पडिपुच्छा छंदणा य निमं-तणा, उवसपया य काले सामायारी भवे दसविहा उ ॥ १०२१ ॥ समणे भगव महावीरे छउमत्थकालियाए अतिमराइयंसि इमे दस महासुमिणे पासित्ता णं पडि-बुद्धे तं०-एग च ण महाघोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजिय पासित्ता णं पडिबुद्धे १ एग च ण मह सुक्किलपक्खग पुसकोइलग सुमिणे पासित्ता णं पडि-बुद्धे २ एग च ण मह चित्तविचित्तपक्खगं पुसकोइलग सुविणे पासित्ता णं पडि-बुद्धे ३ एग च ण मह दामदुग सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ४ एगं च णं महं सेय गोवग्गं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ५ एग च ण मह पउ-मसरं सव्वओ समता कुसुमिय सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ६ एगं च णं महा-सागरं उम्मीवीचीसहस्सकलिय भुयाहिं तिन्न सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ७ एग च ण मह दिणयरं तेयसा जलत सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ८ एगं च णं महं हरिवेरुलियवन्नाभेण निययेणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वय सव्वओ समता आवेढियं परि-वेढियं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ९ एगं च णं महं मंदरे पव्वए मंदरचूलियाओ उवरिं सीहासणवरगयमत्ताण सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे १० जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसाय सुमिणे पराजियं पासित्ता णं पडि-बुद्धे तण्णं समणेणं भगवया महावीरेण मोहणिज्जे कम्मे मूलाओ उग्घाइए १ जण्णं समणे भगव महावीरे एगं महं सुक्किलपक्खगं जाव पडिबुद्धे तं णं समणे भगवं

दोगिद्धिदसाओ, दीहदसाओ, संखेवियदसाओ ॥ १०२७ ॥ कम्मविवागदसाण दस अज्झयणा प० तं०–मियापुत्ते य गोत्तासे अंडे सगडेइ यावरे, माहणे णंदिसेणे य सोरियत्ति उदुंबरे १ सहसुद्दाहे आमलए कुमारे लेच्छई इइ २ ॥१०२८॥ उवासगदसाण दस अज्झयणा प० तं०–आणंदे कामदेवे अ गाहावइ चूलणीपिया, सुरादेवे चुल्लसयए गाहावइ कुंडकोलिए (१) सद्दालपुत्ते महासयए णंदिणीपिया सालइयापिआ ॥ १०२९ ॥ अंतगडदसाण दस अज्झयणा प० तं०–णमि मातंगे सोमिले रामगुत्ते सुदंसणे चेव, जमाली य भगाली य किंकमे पल्लएइ य (१) फाले अंबडपुत्ते य एमेए दस आहिआ ॥१०३०॥ अणुत्तरोववाइयदसाण दस अज्झयणा प० तं०–इसिदासे य धण्णे य सुणक्खत्ते य काइए, सट्ठाणे सालिभद्दे य आणंदे तेयली इय (१) दसण्णभद्दे अइमुत्ते एमेए दस आहिआ ॥ १०३१ ॥ आयारदसाण दस अज्झयणा प० तं० वीसं असमाहिट्ठाणा एगवीसं सबला तेत्तीसं आसायणाओ अट्ठविहा गणिसंपया दस चित्तसमाहिट्ठाणा एगारसउवासगपडिमाओ बारस भिक्खुपडिमाओ पज्जोसवणाकप्पो तीसं मोहणिज्जट्ठाणा आजाइट्ठाणं ॥ १०३२ ॥ पण्हावागरणदसाण दस अज्झयणा प० तं० उवमा संखा इसिभासियाइं आयरियभासियाइं महावीरभासियाइं खोमगपसिणाइं कोमलपसिणाइं अद्दागपसिणाइं अंगुट्ठपसिणाइं बाहुपसिणाइं ॥ १०३३ ॥ बंधदसाण दस अज्झयणा प० तं०–बंधे य मोक्खे य देवद्धि दसारमंडलेवि य, आयरियविप्पडिवत्ती उवज्झायविप्पडिवत्ती भावणा विमुत्ती सासो कम्मे ॥ १०३४ ॥ दोगेहिदसाण दस अज्झयणा प० तं० वाए विवाए उववाए सुक्खित्ते कसिणे बायालीसं सुमिणे तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा हारे रामे गुत्ते एमेए दस आहिआ ॥ १०३५ ॥ दीहदसाण दस अज्झयणा प० तं० चंदे सूरए सुक्के य सिरिदेवी पभावई दीवसमुद्दोववत्ती बहुपुत्ती मंदरेइ य थेरे संभूयविजए थेरे पम्ह ऊसासनीसासे ॥ १०३६ ॥ संखेवियदसाण दस अज्झयणा प० तं० खुड्डियाविमाणपविभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिया वग्गचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेलंधरोववाए वेसमणोववाए ॥ १०३७ ॥ दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणीए दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणीए ॥ १०३८ ॥ दसविहा नेरइया प० तं०–अणंतरोववन्ना परंपरोववन्ना अणंतरावगाढा परंपरावगाढा अणंतराहारगा परंपराहारगा अणंतरपज्जत्ता परंपरपज्जत्ता चरिमा अचरिमा एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥ १०३९ ॥ चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्सा प० ॥ १०४० ॥ रयणप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं दसवाससहस्साइं

ठिई प ॥ १०४१ ॥ चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं णेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिई प ॥ १०४२ ॥ पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिई प ॥ १०४३ ॥ असुरकुमाराणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई प ॥ १०४४ ॥ एवं जाव थणियकुमाराणं बायरवणस्सइकाइयाणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ठिई प ॥ १०४५ ॥ वाणमंतराणं देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई प ॥ १०४६ ॥ बंभलोए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई प ॥ १०४७ ॥ लंतए कप्पे देवाणं जहन्नेणं दस सागरोवमाइं ठिई प ॥ १०४८ ॥ दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दत्ताए कम्मं पगरेंति तं०—अणिदाणयाए दिट्ठिसंपन्नयाए, जोगवाहियत्ताए, खंतिखमणयाए, जिइंदियत्ताए, अमाइल्लयाए, अपासत्थयाए, सुसामण्णयाए, पवयणवच्छल्लयाए, पवयणउब्भावणयाए ॥ १०४९ ॥ दसविहे आसंसप्पओगे प तं०—इहलोगासंसप्पओगे परलोगासंसप्पओगे दुहओलोगासंसप्पओगे जीवियासंसप्पओगे मरणासंसप्पओगे कामासंसप्पओगे, भोगासंसप्पओगे लाभासंसप्पओगे पूयासंसप्पओगे सक्कारासंसप्पओगे ॥ १०५० ॥ दसविहे धम्मे प तं —गामधम्मे नगरधम्मे, रट्ठधम्मे पासंडधम्मे कुलधम्मे गणधम्मे संघधम्मे सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्थिकायधम्मे ॥ १०५१ ॥ दस थेरा प तं गामथेरा, नगरथेरा रट्ठथेरा, पसत्थारथेरा कुलथेरा गणथेरा संघथेरा जाइथेरा सुयथेरा परियायथेरा ॥ १०५२ ॥ दस पुत्ता प तं०—अत्तए खेत्तए दिन्नए विन्नए उरसे मोहरे सोंडीरे संवुड्ढे उववाइए धम्मंतेवासी ॥ १०५३ ॥ केवलिस्स णं दस अणुत्तरा प तं अणुत्तरे णाणे अणुत्तरे दंसणे अणुत्तरे चरित्ते अणुत्तरे तवे अणुत्तरे वीरिए अणुत्तरा खंती अणुत्तरा मुत्ती अणुत्तरे अज्जवे अणुत्तरे मद्दवे अणुत्तरे लाघवे ॥ १०५४ ॥ समयखेत्ते णं दस कुराओ प तं०—पंच देवकुराओ पंच उत्तरकुराओ तत्थ णं दस महइमहालया महादुमा प तं०—जंबू सुदंसणा धायइरुक्खे महाधायइरुक्खे पउमरुक्खे महापउमरुक्खे पंच कूडसामलीओ तत्थ णं दस देवा महिड्ढिया जाव परिवसंति तं अणाढिए जंबुद्दीवाहिवई सुदंसणे पियदंसणे पोंडरीए महापोंडरीए पंच गरुला वेणुदेवा ॥ १०५५ ॥ दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा तं०—अकाले वरिसइ काले न वरिसइ असाहू पुज्जंति साहू न पुज्जंति गुरुसु जणो मिच्छं पडिवन्नो अमणुन्ना सद्दा जाव फासा ॥ १०५६ ॥ दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा तं०—अकाले न वरिसइ तं चेव विवरीयं जाव मणुन्ना फासा ॥ १०५७ ॥ सुसमसुसमाए णं समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति तं०—मत्तंगया य भिंगा तुडियंगा दीव

जोइ चित्तगा, चित्तरसा मणियगा गेहागारा अणियणा य ॥ १०५८ ॥ जंबू-दीवे २ भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा होत्था तं०-सयज्जले सयाऊ य अणतसेणे य अमितसेणे य, तक्सेणे भीमसेणे महाभीमसेणे य सत्तमे (१) दढरहे दसरहे सयरहे ॥ १०५९ ॥ जंबुद्दीवे २ भारहे वासे आगमीसाए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्सति त०-सीमकरे सीमधरे खेमकरे खेमधरे विमलवाहणे समुई पडिसुए दढधणू दसधणू सयधणू ॥ १०६० ॥ जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स पुरच्छिमेण सीयाए महानईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया प० त०-मालवते चित्तकूडे विचित्तकूडे बभकूडे जाव सोमणसे ॥ १०६१ ॥ जंबूमद-रपच्चत्थिमे ण सीओआए महाणईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया प० त०-विज्जुप्पभे जाव गंधमायणे एव धायइसडपुरच्छिमद्धेवि वक्खारा भाणियव्वा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ॥ १०६२ ॥ दसकप्पा इदाहिट्ठिया प० त० सोहम्मे जाव सहस्सारे पाणए अच्चुए एएसु ण दससु कप्पेसु दस इदा प० त०-सक्के ईसाणे जाव अच्चुए एएसु णं दसण्हं इदाण दस परिजाणियविमाणा प० त०-पालए पुप्फए जाव विमलवरे सव्वओभद्दे ॥ १०६३ ॥ दस दसमिया ण भिक्खुपडिमा णं एगेण राइदियसएण अद्धछट्ठेहिं य भिक्खासएहिं अहासुत्ता जाव आराहियावि भवइ ॥ १०६४ ॥ दसविहा ससारसमावन्नगा जीवा प० त०-पढमसमयएगिंदिया अपढमसमयएगिंदिया एव जाव अपढमसमयपचिंदिया ॥ १०६५ ॥ दसविहा सव्वजीवा प० त०-पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया बेइदिया जाव पचिंदिया अणिंदिया ॥ १०६६ ॥ अहवा दसविहा सव्वजीवा प० त० पढमसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया जाव अपढमसमयदेवा पढमसमयसिद्धा अपढमसमयसिद्धा ॥ १०६७ ॥ वाससयाउयस्स णं पुरिसस्स दस दसाओ प० त०-बाला किड्डा य मदा य बला पन्ना य हायणी, पवचा पब्भारा य मुमुही सायणी तहा ॥ १०६८ ॥ दसविहा तणवणस्सइकाइया प० त०-मूले कदे जाव पुप्फे फले बीए ॥ १०६९ ॥ सव्वओवि णं विज्जाहरसेढीओ दसदसजोयणाइ विक्खभेणं प० ॥ १०७० ॥ सव्वओवि ण आभिओगसेढीओ दस दस जोयणाइ विक्खभेण प० ॥ १०७१ ॥ गेविज्जगविमाणाण दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण प० ॥ १०७२ ॥ दसहिं ठाणेहिं सह तेयसा भासं कुज्जा, तं० केइ तहारूव समण वा माहण वा अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे परिकुविए तस्स तेय निसिरेज्जा से त परितावेइ, से तं परितावित्ता तामेव सह तेयसा भास कुज्जा, केइ तहारूव समण वा माहण वा अच्चा-साएज्जा से य अच्चासाइए समाणे देवे, परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा से तं परि-

जोइ चित्तगा, चित्तरसा मणियगा गेहागारा अणियणा य ॥ १०५८ ॥ जंबूद्दीवे २ भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा होत्था तं०-सयज्जले सयाऊ य अणंतसेणे य अमितसेणे य, तक्कसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे य सत्तमे (१) दढरहे दसरहे सयरहे ॥ १०५९ ॥ जंबुद्दीवे २ भारहे वासे आगमीसाए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति तं०-सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे विमलवाहणे संमुई पडिसुए दढधणू दसधणू सयधणू ॥ १०६० ॥ जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया प० तं०-मालवंते चित्तकूडे विचित्तकूडे बंभकूडे जाव सोमणसे ॥ १०६१ ॥ जंबूमंदरपच्चत्थिमे णं सीओआए महाणईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया प० तं०-विज्जुप्पभे जाव गंधमायणे एवं धायइसंडपुरच्छिमद्धेवि वक्खारा भाणियव्वा जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ॥ १०६२ ॥ दसकप्पा इंदाहिट्ठिया प० तं० सोहम्मे जाव सहस्सारे पाणए अच्चुए एएसु णं दससु कप्पेसु दस इंदा प० तं०-सक्के ईसाणे जाव अच्चुए एएसु णं दसण्हं इंदाणं दस परिजाणियविमाणा प० तं०-पालए पुप्फए जाव विमलवरे सव्वओभद्दे ॥ १०६३ ॥ दस दसमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगेणं राइंदियसएणं अद्धछट्ठेहिं य भिक्खासएहिं अहासुत्ता जाव आराहियावि भवइ ॥ १०६४ ॥ दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं०-पढमसमयएगिंदिया अपढमसमयएगिंदिया एवं जाव अपढमसमयपंचिंदिया ॥ १०६५ ॥ दसविहा सव्वजीवा प० तं०-पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया बेइंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया ॥ १०६६ ॥ अहवा दसविहा सव्वजीवा प० तं० पढमसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया जाव अपढमसमयदेवा पढमसमयसिद्धा अपढमसमयसिद्धा ॥ १०६७ ॥ वाससयाउयस्स णं पुरिसस्स दस दसाओ प० तं०-बाला किड्डा य मंदा य बला पन्ना य हायणी, पवंचा पब्भारा य मुम्मुही सायणी तहा ॥ १०६८ ॥ दसविहा तणवणस्सइकाइया प० तं०-मूले कंदे जाव पुप्फे फले बीए ॥ १०६९ ॥ सव्वओवि णं विज्जाहरसेढीओ दसदसजोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ १०७० ॥ सव्वओवि णं आभिओगसेढीओ दस दस जोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ १०७१ ॥ गेविज्जगविमाणाणं दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १०७२ ॥ दसहिं ठाणेहिं सह तेयसा भासं कुज्जा, तं० केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा से तं परितावेइ, से तं परितावित्ता तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा, केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए समाणे देवे, परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा से तं परि-

जीवा जे दोहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ८ ॥ तओ दंडा पण्णत्ता तं जहा-मणदंडे वइदंडे कायदंडे। तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती। तओ सल्ला पण्णत्ता तं जहा-मायासल्ले णं, नियाणसल्ले णं मिच्छादंसणसल्ले णं। तओ गारवा पण्णत्ता तं जहा-इड्ढीगारवे णं रसगारवे णं सायागारवे णं। तओ विराहणा पण्णत्ता तं जहा-णाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा। मिगसिरनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। पुस्सनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। जेट्ठानक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। अभीइनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। सवणनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। अस्सिणिनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। भरणीनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ॥ ९ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। दोच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। असंखिज्जवासाउयसन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। असंखिज्जवासाउयसन्निगब्भवक्कंतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा आभंकरं पभंकरं आभंकरपभंकरं चंदं चंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवण्णं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिंगं चंदसिट्ठं चंदकूडं चंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ १० ॥ ते णं देवा तिण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं तिहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ११ ॥ चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा-कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए। चत्तारि झाणा पण्णत्ता तं जहा-अट्टज्झाणे रुद्दज्झाणे धम्मज्झाणे सुक्कज्झाणे। चत्तारि विगहाओ प   तं जहा-इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा। चत्तारि सण्णा पण्णत्ता, तं जहा-आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा। चउव्विहे बंधे पण्णत्ते तं जहा-पगइबंधे ठिइबंधे अणुभावबंधे पएसबंधे। चउगाउए जोयणे पण्णत्ते ॥ १२ ॥ अणुराहानक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते। पुव्वासाढानक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते। उत्तरासाढानक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते ॥ १३ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थे-

देवाण उक्कोसेण एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता । जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेण एगं पलिओवमं वासमयसहस्समब्भहियं ठिई पन्नत्ता । सोहम्मे कप्पे देवाणं जहण्णेण एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता । सोहम्मे कप्पे देवाणं अत्थेगइआणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता । ईसाणे कप्पे देवाण जहण्णेणं सातिरेगं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता । ईसाणे कप्पे देवाण अत्थेगइयाण एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता । जे देवा सागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि णं देवाण उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता । ते णं देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाण एगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ । अत्थेगइया भवसिद्धिया जे जीवा ते एगेणं भवग्गहणेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ५ ॥ दो दण्डा पन्नत्ता, तं जहा–अट्ठादण्डे चेव, अणट्ठादण्डे चेव । दुवे रासी पन्नत्ता, तं जहा–जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव । दुविहे बंधणे पन्नत्ते, तं जहा–रागबंधणे चेव, दोसबंधणे चेव । पुव्वाफग्गुणी नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते । उत्तराफग्गुणी नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते । पुव्वाभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते । उत्तराभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते ॥ ६ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता । दुच्चाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण दोपलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता । असुरकुमारिंदवज्जियाण भोमिज्जाणं देवाण उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता । असंखिज्जवासाउयसण्णिपंचेंदियतिरिक्खजोणिआणं अत्थेगइयाण दोपलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता । असंखिज्जवासाउयगब्भवक्कंतियसण्णिपंचिंदियमाणुस्साण अत्थेगइयाण दोपलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता । सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाण देवाण दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता । ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाण देवाण दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता । सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाण उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेण साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । सणंकुमारे कप्पे देवाण जहण्णेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । माहिंदे कप्पे देवाण जहण्णेण साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । जे देवा सुभं सुभकंतं सुभवण्णं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाण उक्कोसेण दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ ७ ॥ ते णं देवा दोण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं दोहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । अत्थेगइया भवसिद्धिया

गइयाण नेरइयाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पन्नत्ता। तच्चाए ण पुढवीए अत्थेगइ-याणं नेरइयाण चत्तारि सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता। असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइ-याणं चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पन्नत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पन्नत्ता। सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं चत्तारि सागरोवमाई ठिई पन्नत्ता। जे देवा किट्ठिं सुकिट्ठिं किट्ठियावत्त किट्ठिप्पभे किट्ठिजुत्त किट्ठिवण्णं किट्ठिलेस किट्ठिज्झय किट्ठिसिंग किट्ठिसिट्ठ किट्ठिकूड किट्ठुत्तर-वडिंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाई ठिई पन्नत्ता ॥ १४ ॥ ते ण देवा चउण्हऽद्धमासाण आणमंति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा। तेसिं देवाण चउहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति जाव सव्वदु-क्खाण अतं करिस्संति ॥ १५ ॥ पच किरिया पन्नत्ता, तं जहा–काइया अहिगर-णिया पाउसिया पारितावणिया पाणाइवायकिरिया। पंचमहव्वया पन्नत्ता, त जहा–सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदत्ता-दाणाओ वेरमण, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण। पंच कामगुणा पन्नत्ता, त जहा–सद्दा रूवा रसा गधा फासा। पच आसवदारा पन्नत्ता, त जहा–मिच्छत्त अविरई पमाया कसाया जोगा। पच सवरदारा पन्नत्ता, तं जहा–सम्मत्त विरई अप्पमत्तया अकसाया अजोगया। पच निज्जरट्ठाणा पन्नत्ता, त जहा–पाणाइवायाओ वेरमण, मुसावायाओ वेरमण, अदिन्नादाणाओ वेरमण, मेहुणाओ वेरमण, परिग्गहाओ वेरमण। पच समिईओ पन्नत्ताओ, तं जहा–इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघा-णजल्लपारिट्ठावणियासमिई। पच अत्थिकाया पन्नत्ता, त जहा–धम्मत्थिकाए अध-म्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ॥ १६ ॥ रोहिणी नक्खत्ते पचतारे पन्नत्ते। पुणव्वसुनक्खत्ते पचतारे पन्नत्ते। हत्थनक्खत्ते पचतारे पन्नत्ते। विसाहानक्खत्ते पचतारे पन्नत्ते। धणिट्ठानक्खत्ते पचतारे पन्नत्ते ॥ १७ ॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पच पलिओवमाई ठिई पन्नत्ता। तच्चाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पंचसागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता। असुरकु-माराण देवाण अत्थेगइयाणं पचपलिओवमाइ ठिई पन्नत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंचपलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाग पच सागरोवमाई ठिई पन्नत्ता। जे देवा वाय सुवायं वायावत्त वायप्पभं वायकत वायवण्ण वायलेस वायज्झय वायसिंग वायसिट्ठ वायकूड वाउत्त-

परिसाडइत्ता, अज्जेव समए इमं परिसाडइत्ता, तओ पच्छा सरीरत्थे भवइ। पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तं जहा—सुभे य सुभघोसे य, वसिट्ठे बंभयारि य। सोमे सिरिधरे चेव, वीरभद्दे जसे इय ॥ १ ॥ अट्ठ नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति, तं जहा—कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू, महा चित्ता विसाहा अणुराहा जेट्ठा ॥ २८ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई प०। चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई प०। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई प०। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई प०। बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई प०। जे देवा अच्चिं अच्चिमालिं वइरोयणं पभंकरं चंदाभं सूराभं सुपइट्ठाभं अग्गिच्चाभं रिट्ठाभं अरुणाभं अणुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई प० ॥ २९ ॥ ते णं देवा अट्ठण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं अट्ठहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जाव अंतं करिस्संति ॥ ३० ॥ नव बंभचेरगुत्तीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—नो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ, नो इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ, नो इत्थीणं गणाइं सेवित्ता भवइ, नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ, नो पणीयरसभोई, नो पाणभोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता, नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं समरइत्ता भवइ, नो सद्दाणुवाई नो रूवाणुवाई नो गंधाणुवाई नो रसाणुवाई नो फासाणुवाई नो सिलोगाणुवाई, नो सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवइ। नव बंभचेरअगुत्तीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणं सिज्जासणाणं सेवणया जाव सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवइ। नव बंभचेरा पन्नत्ता, तं जहा—सत्थपरिन्ना लोगविजओ सीओसणिज्जं सम्मत्तं। आवंति धुत्त विमोहा [य] उवहाणसुयं महपरिन्ना। पासे णं अरहा पुरिसादाणीए नव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३१ ॥ अभीई नक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएइ। अभीइयाइया णं नव नक्खत्ता चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, तं जहा—अभीई सवणो जाव भरणी। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नव जोयणसए उड्ढं अबाहाए उवरिं तारारूवे चारं चरइ ॥ ३२ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे नवजोयणिया मच्छा पविसिंसु वा ३। विजयस्स णं दारस्स एगमेगाए बाहाए नव

समणे भगवं महावीरे सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था । इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वया पन्नत्ता तं जहा-चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे । इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पन्नत्ता, तं जहा-भरहे हेमवए हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरण्णवए एरवए । खीणमोहेणं भगवया मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेए(ज्ज)इ ॥ २४ ॥ महानक्खत्ते सत्ततारे पन्नत्ते । कत्तिआइआ सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिआ प० (अभियाइया सत्त नक्खत्ता) महाइआ सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिआ प० । अणुराहाइआ सत्त नक्खत्ता अवरदारिआ प० । धणिट्ठाइआ सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिआ प० ॥ २५ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई प० । तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई प० । चउत्थीए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई प०। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई प० । सणंकुमारे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई प० । माहिंदे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिई प० । बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त साहिया सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा समं समप्पभं महापभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणंकुमारवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई प० ॥ २६ ॥ ते णं देवा सत्तण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं सत्तहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे णं सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ २७ ॥ अट्ठ मयट्ठाणा पन्नत्ता, तं जहा-जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए । अट्ठ पवयणमायाओ प० तं जहा-इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिई मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती । वाणमंतराणं देवाणं रुक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता । जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० । कूडसामली णं गरुलावासे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता । जंबुद्दीवस्स णं जगई अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता । अट्ठसामइए केवलिसमुग्घाए पन्नत्ते तं जहा-पढमे समए दंडं करेइ, बीए समए कवाडं करेइ, तइए समए मंथं करेइ, चउत्थे समए मंथंतराइं पूरेइ, पंचमे समए मंथंतराइं पडिसाहरइ, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाडं

[illegible] दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । दस नक्खत्ता नाणवुड्डिकरा प तं जहा-"मिगसिर अद्दा पुस्सो तिण्णि य पुव्वा य मूलमस्सेसा । हत्थो चित्तो य तहा दस वुड्डिकराइं नाणस्स" अकम्मभूमियाणं मणुयाणं दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया प तं जहा- 'मत्तंगया य भिंगा, तुडियंगा दीव जोइ चित्तंगा । चित्तरसा मणियंगा गेहागारा अणिगिणा य ॥ १ ॥" १९ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई प । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई प । चउत्थीए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्साइं प । चउत्थीए पुढवीए नेरइयाणं अत्थेगइयाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई प । पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं दस सागरोवमाइं ठिई प । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई प । असुरिंदवज्जाणं भोमिज्जाणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई प । बायरवणस्सइकाइयाणं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ठिई प । वाणमंतराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई प । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दस पलिओवमाइं ठिई प । बंभलोए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई प । लंतए कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दस सागरोवमाइं ठिई प । जे देवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई प ॥ २० ॥ ते णं देवा दसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ २१ ॥ एक्कारस उवासगपडिमाओ प तं जहा-दंसणसावए, कयव्वयकम्मे, सामाइयकडे, पोसहोववासनिरए, दिया बंभयारी रत्तिं परिमाणकडे, दिया वि राओ वि बंभयारी असिणाई वियडभोई मोलिकडे, सचित्तपरिण्णाए, आरंभपरिण्णाए, पेसपरिण्णाए, उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाए, समणभूए यावि भवइ समणाउसो । लोगंताओ एक्कारसएहिं एक्कारेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसंते पण्णत्ते । जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे चारं चरइ । समणस्स णं भग-

नव भोमा पन्नत्ता। वाणमंतराणं देवाणं सभाओ सुहम्माओ नव जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता। दंसणावरणिज्जस्स णं कम्मस्स नव उत्तरपगडीओ प०, तं जहा–निद्दा पयला निद्दानिद्दा पयलापयला थीणद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे ॥ ३३ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई प०। चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव सागरोवमाइं ठिई प०। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई प०। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं नव पलिओवमाइं ठिई प०। बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई प०। जे देवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिट्ठं पम्हकूडं पम्हुत्तरवडिंसगं सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जपभं सुज्जकंतं सुज्जवण्णं सुज्जलेसं सुज्जज्झयं सुज्जसिंगं सुज्जसिट्ठं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिंसगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं रुइल्लकंतं रुइल्लवण्णं रुइल्ललेसं रुइल्लज्झयं रुइल्लसिंगं रुइल्लसिट्ठं रुइल्लकूडं रुइल्लुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ३४ ॥ ते णं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं नवहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३५ ॥ दसविहे समणधम्मे पन्नत्ते, तं जहा–खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे सच्चे संजमे तवे चियाए बंभचेरवासे। दस चित्तसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तं जहा-धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जिज्जा सव्वं धम्मं जाणित्तए, सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा अहातच्चं सुमिणं पासित्तए, सण्णिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा पुव्वभवे सुमरित्तए, देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए, ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोगं जाणित्तए, ओहिदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोगं पासित्तए, मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा जाव मणोगए भावे जाणित्तए, केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोगं जाणित्तए, केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोयं पासित्तए, केवलिमरणं वा मरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए। मंदरे णं पव्वए मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प०। अरिहा णं अरिट्ठनेमी दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। रामे णं

चओ महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था, त जहा-इंदभूई अग्गिभूई वायुभूई विअत्ते सोहम्मे मडिए मोरियपुत्ते अकपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे। मूले नक्खत्ते एक्कारसतारे पन्नत्ते। हेट्ठिमगेविज्जयाण देवाण एक्कारसमुत्तर गेविज्जविमाणसत भवइ त्ति मक्खायं। मदरे णं पव्वए धरणितलाओ सिहरतले एक्कारसभागपरिहीणे उच्चत्तेण प०॥ ३९॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण एक्कारस पलिओवमाइ ठिई प०। पचमीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं एक्कारस सागरोवमाइ ठिई प०। असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाण एक्कारस पलिओवमाई ठिई प०। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण एक्कारस पलिओवमाई ठिई प०। लतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई प०। जे देवा बभ सुबंभ बभावत्त बभप्पभ बभकत बभवण्ण बभलेस बभज्झय बभसिंग बभसिट्ठ बभकूड बभुत्तरवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण (उक्कोसेण) एक्कारस सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ४० ॥ ते ण देवा एक्कारसण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा। तेसि ण देवाण एक्कारसण्ह वाससहस्साण आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे एक्कारसहिं भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥ ४१ ॥ बारस भिक्खुपडिमाओ पन्नत्ताओ, त जहा-मासिआ भिक्खुपडिमा, दोमासिआ भिक्खुपडिमा, तिमासिआ भिक्खुपडिमा, चउमासिआ भिक्खुपडिमा, पचमासिआ भिक्खुपडिमा, छमासिआ भिक्खुपडिमा, सत्तमासिआ भिक्खुपडिमा, पढमा सत्तराइदिआ भिक्खुपडिमा, दोच्चा सत्तराइदिआ भिक्खुपडिमा, तच्चा सत्तराइदिआ भिक्खुपडिमा, अहोराइआ भिक्खुपडिमा, एगराइआ भिक्खुपडिमा। दुवालसविहे सभोगे प० त जहा-"उवहीसुअभत्तपाणे, अजलीपग्गहे त्ति य। दायणे य निकाए अ अब्भुट्ठाणेति आवरे। कितिकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणे इअ। समोसरणं सनिसिज्जा य, कहाए अ पबधणे"। दुवालसावत्ते कितिकम्मे पन्नत्ते, त जहा-"दुओणय जहाजाय, कितिकम्म बारसावय। चउसिर तिगुत्त च, दुपवेस एगनिक्खमण"। विजया णं रायहाणी दुवालस जोयणसयसहस्साइ आयामविक्खभेण प०। रामे ण बलदेवे दुवालस वाससयाइ सव्वाउय पालित्ता देवत्त गए। मदरस्स ण पव्वयस्स चूलिआ मूले दुवालस जोयणाइ विक्खभेण प०। जबूदीवस्स णं दीवस्स वेइआ मूले दुवालस जोयणाइ विक्खभेणं प०। सव्वजहण्णिया राई दुवालसमुहुत्तिआ प०। एवं दिवसोऽवि नायव्वो। सव्वट्ठसिद्धस्स णं महाविमाणस्स उवरिल्लाओ चूलिअग्गाओ

हरिकंता सीया सीओदा णरकंता णारिकंता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवई ॥ ४८ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई प० । पंचमीए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई प० । लंतए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई प० । महासुक्के कप्पे देवाणं जहण्णेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा सिरिकंतं सिरिमहियं सिरिसोमनसं लंतयं काविट्ठं महिंदं महिंदकंतं महिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ४९ ॥ ते णं देवा चउद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं चउद्दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ५० ॥

पन्नरस परमाहम्मिया पन्नत्ता, तं जहा—अंबे अंबरिसी चेव सामे सबले त्ति यावरे । रुद्दोवरुद्दकाले य महाकाले त्ति यावरे ॥ १ ॥ असिपत्ते धणु कुंभे वालुए वेयरणी ति य । खरस्सरे महाघोसे एते पन्नरसाहिया ॥ २ ॥ णमी णं अरहा पन्नरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । धुवराहू णं बहुलपक्खस्स पडिवए पन्नरसभागं पन्नरस भागेणं चंदस्स लेसं आवरेत्ताणं चिट्ठति तं जहा—पढमाए पढमं भागं बीयाए दुभागं तइयाए तिभागं चउत्थीए चउभागं पंचमीए पंचभागं छट्ठीए छभागं सत्तमीए सत्तभागं अट्ठमीए अट्ठभागं नवमीए नवभागं दसमीए दसभागं एक्कारसीए एक्कारसभागं बारसीए बारसभागं तेरसीए तेरसभागं चउद्दसीए चउद्दसभागं पन्नरसेसु पन्नरसभागं । तं चेव सुक्कपक्खस्स य उवदंसेमाणे २ चिट्ठति तं जहा—पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसभागं । छ णक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता पन्नत्ता, तं जहा—सतभिसय भरणि अद्दा असलेसा साई तहा जेट्ठा । एते छन्नक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता ॥ १ ॥ चेत्तासोएसु णं मासेसु पन्नरसमुहुत्तो दिवसो भवति एवं चेत्तासोएसु णं मासेसु पन्नरसमुहुत्ता राई भवति । विज्जाअणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पन्नरस वत्थू पन्नत्ता । मणूसाणं पन्नरसविहे पओगे प० तं जहा—सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चमोसमणपओगे असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चमोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालियसरीरकायपओगे ओरालियमीससरीरकायपओगे वेउव्वियसरीरकायपओगे वेउव्वियमीससरीरकायपओगे

आहारयसरीरकायपओगे आहारयमीससरीरकायप्पओगे कम्मयसरीरकायपओगे ॥ ५१ ॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआण नेरइआण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई प० । पचमीए पुढवीए अत्थेगइआण नेरइयाण पण्णरस सागरोवमाइ ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआण देवाण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई प० । महासुक्के कप्पे अत्थेगइआणं देवाण पण्णरस सागरोवमाइ ठिई प० । जे देवा णद सुणद णदावत्त णदप्पभ णदकंत णदवण्ण णदलेस णदज्झय णदसिंग णदसिट्ठ णदकूड णदुत्तरवडिंसग विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाणं उक्कोसेण पण्णरस सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ५२ ॥ ते ण देवा पण्णरसण्ह अद्धमासाणं आणमति वा पाणमति वा उस्ससति वा नीससंति वा । तेसि ण देवाणं पण्णरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । सतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे पन्नरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमतं करिस्सति ॥ ५३ ॥ सोलस य गाहा सोलसगा पन्नत्ता, त जहा—समए वेयालिए उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिण्णा निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे आहातहिए गंथे जमईए गाहासोलसमे सोलसगे । सोलस कसाया पन्नत्ता, त जहा—अणताणुबंधी कोहे, अणंताणुबधी माणे, अणताणुबधी माया, अणताणुबधी लोभे, अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाणकसाए माणे, अपच्चक्खाणकसाए माया, अपच्चक्खाणकसाए लोभे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, पच्चक्खाणावरणे माणे, पच्चक्खाणावरणा माया, पच्चक्खाणावरणे लोभे, सजलणे कोहे, सजलणे माणे, सजलणे माया, सजलणे लोभे । मदरस्स ण पव्वयस्स सोलस नामधेया पन्नत्ता, त जहा—मदर मेरु मणोरम, सुदसण सयपभे य गिरिराया । रयणुच्चय पियदसण, मज्झे लोगस्स नाभी य ॥ १ ॥ अत्थे अ सूरिआवत्ते, सूरिआवरणे त्ति अ । उत्तरे अ दिसाई अ, वडिंसे इअ सोलसमे ॥२॥ पासस्स ण अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसंपदा होत्था । आयप्पवायस्स ण पुव्वस्स णं सोलस वत्थू पन्नत्ता । चमरबलीणं ऊवारियालेणे सोलस जोयणसहस्साइ आयामविक्खभेण प० । लवणे ण समुद्दे सोलस जोयणसहस्साइ उस्सेहपरिवुड्ढीए पन्नत्ते ॥ ५४ ॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सोलस पलिओवमाइं ठिई प० । पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सोलस सागरोवमाइ ठिई प० । असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण सोलस पलिओवमाइ ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-

आयंसलिवी माहेसरीलिवी दामिलिवी बोलिंदिलिवी । अत्थिनत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू प० । धूमप्पभाए णं पुढवीए अट्ठारसुत्तरं जोयणसयसहस्सं बाहल्लेणं प० । पोसासाढेसु णं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ सइ उक्कोसेणं अट्ठारस मुहुत्ता राती भवइ ॥ ६० ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस(पलिओवमाइं ठिई प० । छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस)सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई प० । सहस्सारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई प० । आणते कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिट्ठं सालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीयं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं(उक्कोसेणं)अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६१ ॥ ते णं देवा णं अट्ठारसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं अट्ठारसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया (जीवा)जे अट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ६२ ॥ एगूणवीसं णायज्झयणा पण्णत्ता तं जहा–उक्खित्तणाए संघाडे अंडे कुम्मे य सेलए । तुंबे य रोहिणी मल्ली मागंदी चंदिमाति य ॥ १ ॥ दावद्दवे उदगणाए, मंडुक्के तेयली इय । नंदिफले अवरकंका आइण्णे सुंसमा इय ॥ २ ॥ अवरे य पोंडरीए, णाए एगूणवीसमे । जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उक्कोसेणं एगूणवीसं जोयणसयाइं उड्ढमहो तवंति । सुक्के णं महग्गहे अवरेणं उदिए समाणे एगूणवीसं णक्खत्ताइं समं चारं चरित्ता अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ । जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स कलाओ एगूणवीसं छेयणाओ पण्णत्ता । एगूणवीसं तित्थयरा अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइया ॥ ६३ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । आणयकप्पे[अत्थेगइयाणं] देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । पाणए कप्पे[अत्थेगइयाणं]

भोगतराय उवभोगंतराय वीरिअअतराय ॥ ५७ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआण नेरइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। पचमीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई प०। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण जहण्णेण सत्तरस सागरोवमाइं ठिई प०। असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण सत्तरस पलिओवमाइ ठिई प०। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआण देवाण सत्तरस पलिओवमाइ ठिई प०। महासुक्के कप्पे देवाण उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई प०। सहस्सारे कप्पे देवाण जहण्णेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई प०। जे देवा सामाणं सुसामाण महासामाण पउम महापउमं कुमुदं महाकुमुद नलिण महानलिण पोंडरीअ महापोंडरीअ सुक्क महासुक्क सीहं सीहकंतं सीहवीअ भाविअ विमाण देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाण उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ५८ ॥ ते ण देवा सत्तरसहिं अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा उस्ससति वा नीससति वा। तेसि ण देवाण सत्तरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सतेगइया भवसिद्धिआ जीवा जे सत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥ ५९ ॥ अट्ठारसविहे वभे पन्नत्ते, त जहा–ओरालिए कामभोगे णेव सय मणेण सेवइ, नो वि अन्न मणेण सेवावेइ, मणेण सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ ओरालिए कामभोगे णेव सय वायाए सेवइ, नो वि अण्ण वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंत पि अण्ण न समणुजाणाइ, ओरालिए कामभोगे णेव सय काएण सेवइ, नो वि यऽण्ण काएण सेवावेइ, काएण सेवत पि अण्ण न ममणुजाणाइ, दिव्वे कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ, णो वि अण्ण मणेण सेवावेइ, मणेण सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ, दिव्वे कामभोगे णेव सय वायाए सेवइ, णो वि अण्ण वायाए सेवावेइ, वायाए सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ, दिव्वे कामभोगे णेव सय काएण सेवइ, णो वि अण्ण काएणं सेवावेइ, काएण सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ। अरहतो ण अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसपया होत्था। समणेण भगवया महावीरेण समणाण णिग्गथाण सखुड्डयविअत्ताण अट्ठारस ठाणा पन्नत्ता, त जहा–वयछक्कं कायछक्क, अकप्पो गिहिभायणं, पलियंक निसिज्जा य, सिणाणं सोभवज्जण ॥ १ ॥ आयारस्स ण भगवतो सचूलिआगस्स अट्ठारस पयसहस्साइ पयग्गेण पन्नत्ताइं। बभीए ण लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पन्नत्ते, त०–बमी जवणी लियादोसा ऊरिया खरोट्टिया खरसाविया पहाराइआ उच्चत्तरिआ अक्खरपुट्ठि(त्थि)या भोगवयता वेणतिया णिण्हइया अकलिवि गणिअलिवी गधव्वलिवी[भूयलिवि]

देवाण जहण्णेण एगूणवीस सागरोवमाइ ठिई प० । जे देवा आणत पाणत णतं विणत घण सुसिर इद इदोकत इदुत्तरवडिंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण उक्कोसेण एगूणवीस सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ६४ ॥ ते णं देवा एगूणवीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा उस्ससति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाण एगूणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । सतेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे एगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण अत करिस्सति ॥ ६५ ॥ वीस असमाहिठाणा पन्नत्ता, त जहा– दवदवचारि यावि भवइ, अपमज्जियचारि यावि भवइ, दुप्पमज्जियचारि आवि भवइ, अतिरित्तसेज्जासणिए, रातिणिअपरिभासी, थेरोवघाइए, भूओवघाइए, सजलणे कोहणे, पिट्ठिमसिए, अभिक्खण अभिक्खण ओहारइत्ता भवइ, णवाण अधिकरणाण अणुप्पण्णाण उप्पाएत्ता भवइ, पोराणाण अधिकरणाणं खामिअविउसविआण पुणोदीरेत्ता भवइ, ससरक्खपाणिपाए, अकालसज्झायकारए यावि भवइ, कलहकरे, सद्दकरे, झझकरे, सूरप्पमाणभोई, एसणाऽममिते यावि भवइ। मुणिसुव्वए ण अरहा वीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था । सव्वेऽविअ ण घणोदही वीस जोयणसहस्साइ वाहल्लेण पन्नत्ता । पाणयस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वीस सामाणिअसाहस्सीओ पन्नत्ताओ । णपुसयवेयणिज्जस्स ण कम्मस्स वीस सागरोवमकोडाकोडीओ वधओ वधठिई प० । पच्चक्खाणस्स ण पुव्वस्स वीसं वत्थू । उस्सप्पिणिओसप्पिणिमडले वीस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो पन्नत्तो ॥ ६६ ॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण वीस पलिओवमाइ ठिई प० । छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण वीस सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाणं वीस पलिओवमाइ ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण वीस पलिओवमाइं ठिई प० । पाणते कप्पे देवाण उक्कोसेण वीस सागरोवमाइ ठिई प० । आरणे कप्पे देवाण जहण्णेण वीस सागरोवमाइ ठिई प० । जे देवा साय विसाय सुविसाय, सिद्धत्थ उप्पल भित्तिल तिगिच्छ दिसासोवत्थिय पलव रुइल पुप्फं सुपुप्फ पुप्फावत्तं पुप्फपभ पुप्फकत पुप्फवण्ण पुप्फलेस पुप्फज्झय पुप्फसिंगं पुप्फसिद्ध पुप्फुत्तरवडिंसगं विमाण देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण उक्कोसेण वीस सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ६७ ॥ ते ण देवा वीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमंति वा उस्ससति वा नीससति वा । तेसि ण देवाण वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति

सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ७४ ॥ ते णं देवा बावीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं बावीसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे बावीसं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ७५ ॥ तेवीसं सूयगडज्झयणा पण्णत्ता तं जहा-समए, वेतालिए, उवसग्गपरिण्णा, थीपरिण्णा, नरयविभत्ती, महावीरथुई, कुसीलपरिभासिए, वीरिए, धम्मे, समाही, मग्गे, समोसरणे, आहत्तहिए, गंथे, जमईए, गाहा, पुंडरीए, किरियाठाणा, आहारपरिण्णा, [अ]पच्चक्खाणकिरिया, अणगारसुयं, अद्दइज्जं, णालंदइज्जं । जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे णं ओसप्पिणीए तेवीसाए जिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे । जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे णं ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था, तं जहा-अजित संभव अभिनंदण सुमई जाव पासो वद्धमाणो य, उसभे णं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था । जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे मंडलियरायाणो होत्था, तं जहा-अजित संभव अभिनंदण जाव पासो वद्धमाणो य, उसभे णं अरहा कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्था ॥ ७६ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । हेट्ठिममज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ७७ ॥ ते णं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं (मासेहिं) आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ७८ ॥ चउव्वीसं देवाहिदेवा प० तं जहा-उसभमजियसंभवमभिनंदणसुमइपउमप्पहसुपासचंदप्पहसुविहिसीयलसिज्जंसवासुपुज्जविमलअणंतधम्मसंतिकुंथुअरमल्लीमुणिसुव्वयनमिनेमीपासवद्धमाणा । चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ चउव्वीसं चउव्वीसे जोयणसहस्साइं णव बत्तीसे जोयणसए एगं अट्ठतीसइभागं जोयणस्स किंचि विसेसाहियाओ आयामेणं प० । चउव्वीसं देवट्ठाणा सइंदया प० सेसा अहमिंदा अनिंदा अपुरोहिया ।

याण देवाण एक्कवीस पलिओवमाइं ठिई प० । आरणे कप्पे देवाण उक्कोसेणं एक्कवीस सागरोवमाइ ठिई प० । अच्चते कप्पे देवाणं जहण्णेण एक्कवीस सागरोवमाइ ठिई प० । जे देवा सिरिवच्छ सिरिदामकड मल्ल किट्ट चावोण्णत अरण्णवडिंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण उक्कोसेण एक्कवीस सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ७१ ॥ ते ण देवा एक्कवीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा उस्ससति वा नीससति वा । तेसि ण देवाणं एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंत करिस्सति ॥ ७२ ॥ बावीस परीसहा प० त जहा–दिगिंछापरीसहे, पिवासापरीसहे, सीतपरीसहे, उसिणपरीसहे, दसमसगपरीसहे, अचेलपरीसहे, अरइपरीसहे, इत्थीपरीसहे, चरिआपरीसहे, निसीहिआपरीसहे, सिज्जापरीसहे, अक्कोसपरीसहे, वहपरीसहे, जायणापरीसहे, अलाभपरीसहे, रोगपरीसहे, तणफासपरीसहे, जल्लपरीसहे, सक्कारपुरक्कारपरीसहे, पण्णापरीसहे, अण्णाणपरीसहे, दसणपरीसहे । दिट्ठिवायस्स णं बावीस सुत्ताइ छिन्नछेयणइयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीस सुत्ताइ अछिन्नछेयणइयाइ आजीवियसुत्तपरिवाडीए । बावीस सुत्ताइ तिकणइयाइ तेरासियसुत्तपरिवाडीए । बावीसं सुत्ताइ चउक्कणइयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए । बावीसविहे पोग्गलपरिणामे पन्नत्ते, त जहा–कालवण्णपरिणामे, नीलवण्णपरिणामे, लोहियवण्णपरिणामे, हालिद्दवण्णपरिणामे, सुक्किलवण्णपरिणामे, सुब्भिगधपरिणामे, दुब्भिगंधपरिणामे, तित्तरसपरिणामे, कडुयरसपरिणामे, कसायरसपरिणामे, अबिलरसपरिणामे, महुररसपरिणामे, कक्खडफासपरिणामे, मउयफासपरिणामे, गुरुफासपरिणामे, लहुफासपरिणामे, सीतफासपरिणामे, उसिणफासपरिणामे, णिद्धफासपरिणामे, लुक्खफासपरिणामे, अगुरुलहुफासपरिणामे, गुरुलहुफासपरिणामे ॥ ७३ ॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण बावीस पलिओवमाइ ठिई प० । छट्ठीए पुढवीए (नेरइयाण) उक्कोसेण बावीस सागरोवमाइ ठिई प० । अहेसत्तमाए पुढवीए [अत्थेगइयाण] नेरइयाण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ ठिई प० । असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण बावीस पलिओवमाइ ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं बावीसं पलिओवमाइ ठिई प० । अच्चुते कप्पे देवाण (उक्कोसेण) बावीस सागरोवमाइ ठिई प० । हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगाण देवाण जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइ ठिई प० । जे देवा महियं विसूहियं विमल पभास वणमालं अच्चुतवडिंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण उक्कोसेण बावीसं साग-

सरीरनामं कम्मगसरीरनामं हुंडगसंठाणनामं ओरालियसरीरंगोवंगनामं छेवट्ठसंघयणनामं वण्णनामं गंधनामं रसनामं फासनामं तिरियाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघायनामं तसनामं बायरनामं अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनामं असुभनामं दुभगनामं अणादेज्जनामं अजसोकित्तिनामं निम्माणनामं । गंगासिंधूओ णं महाणईओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेणं दुहओ घडमुहपवित्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं पवातेण पडंति । रत्तारत्तवईओ णं महाणईओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेणं मकर (मुह) पवित्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं पवातेण पडंति । लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणवीसं वत्थू प० ॥ ८२ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणे णं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ८३ ॥ ते णं देवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ८४ ॥ छव्वीसं दसकप्पववहाराणं उद्देसणकाला पण्णत्ता, तं जहा-दस दसाणं छ कप्पस्स दस ववहारस्स । अभवसिद्धियाणं जीवाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तं जहा-मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलस कसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हासं अरति रति भयं सोगं दुगुंछा ॥ ८५ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणे णं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई प० । मज्झिममज्झिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ८६ ॥ ते णं देवा छव्वीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं छव्वीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया

उत्तरायणगते ण सूरिए चउवीसगुलिए पोरिसीछाय णिव्वराइत्ता णं णिअट्टति ।
गगासिंधूओ ण महाणदीओ पवाहे सातिरेगेण चउवीस कोसे वित्थारेण प० ।
रत्तारत्तवतीओ ण महाणदीओ पवाहे सातिरेगे चउवीस कोसे वित्थारेण प० ॥७९॥
इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चउवीस पलिओवमाइ ठिई
प०। अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चउवीस सागरोवमाइ ठिई
प० । असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण चउवीस पलिओवमाइ ठिई प० ।
सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चउवीस पलिओवमाइ ठिई प० ।
हेट्ठिमउवरिमगेविज्जाण देवाण जहण्णेण चउवीस सागरोवमाइ ठिई प० । जे देवा
हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण उक्कोसेण चउवीस
सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ८० ॥ ते ण देवा चउवीसाए अद्धमासाण आणमति
वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा। तेसि ण देवाण चउवीसाए वाससह-
स्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । सतेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे चउवीसाए भवग्गह-
णेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंत
करिस्सति ॥ ८१ ॥ पुरिमपच्छिमगाण तित्थगराणं पचजामस्स पणवीस भाव-
णाओ प० त जहा–इरियासमिई, मणगुत्ती, वयगुत्ती, आलोयभायणभोयण,
आदाणभडमत्तनिक्खेवणासमिई, अणुवीतिभासणया, कोहविवेगे, लोभविवेगे, भयवि-
वेगे, हासविवेगे, उग्गहअणुण्णवणया, उग्गहसीमजाणणया, सयमेव उग्गहं अणु-
गिण्हणया, साहम्मियउग्गह अणुण्णविय परिभुजणया, साहारणभत्तपाण अणुण्णविय
पडिभुजणया, इत्थीपसुपंडगससत्तगसयणासणवज्जणया, इत्थीकहविवज्जणया, इत्थीण
ईदियाणमालोयणवज्जणया, पुव्वरयपुव्वकीलिआणं अणणुसरणया, पणीताहारविवज्ज-
णया, सोइदियरागोवरई, चक्खिदियरागोवरई, घाणिंदियरागोवरई, जिब्भिदिय-
रागोवरई, फासिंदियरागोवरई । मल्ली ण अरहा पणवीस धणु उड्ढ उच्चत्तेणं होत्था ।
सव्वे वि दीहवेयड्ढपव्वया पणवीस जोयणाणि उड्ढ उच्चत्तेण पन्नत्ता पणवीस पणवीसं
गाउआणि उव्विद्धेण प० । दोच्चाए ण पुढवीए पणवीस णिरयावाससयसहस्सा
पन्नत्ता । आयारस्स ण भगवओ सचूलिआयस्स पणवीस अज्झयणा पन्नत्ता, तं
जहा–सत्थपरिण्णा लोगविजओ सीओसणीअ सम्मत्तं । आवति धुय विमोह उव-
हाणसुय महपरिण्णा । पिंडेसण सिज्जिरिआ भासज्झयणा य वत्थ पाएसा । उग्गह-
पडिमा सत्तिक्कसत्तया भावण विमुत्ती । निसीहज्झयणं पणवीसइम । मिच्छादिट्ठि-
विगलिंदिए ण अपज्जत्तए ण सकिलिट्ठपरिणामे णामस्स कम्मस्स पणवीस उत्तरपय-
डीओ णिबधति–तिरियगतिनाम विगलिंदियजातिनाम ओरालियसरीरणाम तेअग-

अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता तं जहा-सम्मत्तवेयणिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलस कसाया णव णोकसाया। आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसइविहे प० तं० सोइंदियअत्थावग्गहे, चक्खिंदियअत्थावग्गहे, घाणिंदियअत्थावग्गहे, जिब्भिंदियअत्थावग्गहे, फासिंदियअत्थावग्गहे, णोइंदियअत्थावग्गहे, सोइंदियवंजणोग्गहे, घाणिंदियवंजणोग्गहे, जिब्भिंदियवंजणोग्गहे, फासिंदियवंजणोग्गहे, सोइंदियईहा चक्खिंदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा फासिंदियईहा णोइंदियईहा सोइंदियावाए, चक्खिंदियावाए, घाणिंदियावाए, जिब्भिंदियावाए, फासिंदियावाए, णोइंदियावाए, सोइंदियधारणा चक्खिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा, फासिंदियधारणा, णोइंदियधारणा। ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा प०। जीवे णं देवगइम्मि बंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीसं उत्तरपगडीओ णिबंधति, तं जहा-देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनामं तेयगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं समचउरंससंठाणनामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वण्णनामं गंधनामं रसनामं फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघायनामं पराघायनामं उस्सासनामं पसत्थविहायोगइनामं तसनामं बायरनामं पज्जत्तनामं पत्तेयसरीरनामं, थिराथिराणं सुभासुभाणं (सुभगनामं सूसरनामं) आएज्जाणाएज्जाणं दोण्हं अण्णयरं एगं नामं णिबंधइ जसोकित्तिनामं निम्माणनामं। एवं चेव नेरइया वि णवरं अप्पसत्थविहायोगइनामं हुंडसंठाणनामं अथिरनामं दुब्भगनामं असुभनामं दुस्सरनामं अणादिज्जनामं अजसोकित्तीनामं निम्माणनामं ॥ २८ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई प०। अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई प०। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई प०। उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई प०। जे देवा मज्झिमउवरिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ २८ ॥ ते णं देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ २८ ॥ एगूणतीसइविहे पावसुयपसंगे

जीवा जे छव्वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइ-स्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ८७ ॥ सत्तावीसं अणगारगुणा पन्नत्ता, तं जहा-पाणाइवायाओ वेरमणं, मुसावायाओ वेरमणं, अदिन्नादाणाओ वेरमणं, मेहु-णाओ वेरमणं, परिग्गहाओ वेरमणं, सोइंदियनिग्गहे, चक्खिंदियनिग्गहे, घाणिं-दियनिग्गहे, जिब्भिंदियनिग्गहे, फासिंदियनिग्गहे, कोहविवेगे, माणविवेगे, मायावि-वेगे, लोभविवेगे, भावसच्चे, करणसच्चे, जोगसच्चे, खमा, विरागया, मणसमाहरणया, वयसमाहरणया, कायसमाहरणया, णाणसंपण्णया, दंसणसंपण्णया, चरित्तसंपण्णया, वेयणअहियासणया, मारणंतियअहियासणया । जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावी-साए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति । एगमेगे णं णक्खत्तमासे सत्तावीसाहिं राइंदियाहिं राइंदियग्गेणं पन्नत्ते । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं पन्नत्ता । वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीओ संतकम्मंसा पन्नत्ता । सावणसुद्धसत्तमीसु णं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ता णं दिवसखेत्तं नियट्टेमाणे रयणिखेत्तं अभिणिवट्टमाणे चारं चरइ ॥ ८८ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलि-ओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई प० । मज्झिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा मज्झिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ८९ ॥ ते णं देवा सत्तावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीस-संति वा । तेसि णं देवाणं सत्तावीसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चि-स्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ९० ॥ अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे पन्नत्ते, तं जहा-मासिआ आरोवणा, सपंचराईमासिया आरोवणा, सदसराइमासिया आरोवणा, (सपण्णरसराइमासिआ आरोवणा, सवीसइराइमासिआ आरोवणा, सपंचवीसराइमासिआ आरोवणा) एवं चेव दोमासिआ आरोवणा, सपंचराईदोमासिआ आरोवणा, एवं तिमासिआ आरोवणा, चउमासिआ आरोवणा, उवघाइया आरोवणा, अणुवघाइया आरोवणा, कसिणा आरोवणा, अकसिणा आरोवणा, एतावता आयारपकप्पे एताव ताव आयरिअव्वे । भवसिद्धियाणं जीवाणं

अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता तं जहा-सम्मत्तवेयणिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलस कसाया णव णोकसाया । आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसइविहे प० तं० सोइंदियअत्थावग्गहे, चक्खिंदियअत्थावग्गहे, घाणिंदियअत्थावग्गहे, जिब्भिंदियअत्थावग्गहे, फासिंदियअत्थावग्गहे, णोइंदियअत्थावग्गहे, सोइंदियवंजणोग्गहे, घाणिंदियवंजणोग्गहे, जिब्भिंदियवंजणोग्गहे, फासिंदियवंजणोग्गहे, सोइंदियईहा चक्खिंदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा फासिंदियईहा णोइंदियईहा सोइंदियावाए, चक्खिंदियावाए, घाणिंदियावाए, जिब्भिंदियावाए, फासिंदियावाए, णोइंदियावाए, सोइंदियधारणा चक्खिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा फासिंदियधारणा णोइंदियधारणा । ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा प० । जीवे णं देवगइम्मि बंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीसं उत्तरपयडीओ निबंधति, तं जहा-देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनामं तेयगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं समचउरंससंठाणनामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वण्णनामं गंधनामं रसनामं फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघायनामं पराघायनामं उस्सासनामं पसत्थविहायोगइनामं तसनामं, बायरनामं पज्जत्तनामं, पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणं सुभासुभाणं (सुभगनामं सुस्सरनामं) आएज्जाणाएज्जाणं दोण्हं अन्नयरं एगं नामं निबंधइ जसोकित्तिनामं निम्माणनामं । एवं चेव नेरइया वि णाणत्तं अप्पसत्थविहायोगइनामं हुंडयसंठाणनामं अथिरनामं, दुब्भगनामं असुभनामं दुस्सरनामं अणादिज्जनामं अजसोकित्तीनामं निम्माणनामं ॥ ९१ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई प० । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा मज्झिमउवरिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ९२ ॥ ते णं देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ९३ ॥ एगूणतीसइविहे पावसुयपसंगे

ण प० तं० भोमे, उप्पाए, सुमिणे, अंतरिक्खे, अंगे, सरे, वंजणे, लक्खणे, भोमे तिविहे प० तं० सुत्ते वित्ती वत्तिए, एवं एक्केक्के तिविहं, विकहाणुजोगे, विज्जाणुजोगे, मंताणुजोगे, जोगाणुजोगे, अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे । आसाढे णं मासे एगूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेण पन्नत्ताइं । (एवं चेव) भद्दवए णं मासे । कत्तिए णं मासे । पोसे णं मासे । फग्गुणे णं मासे । वइसाहे णं मासे । चंददिणे णं एगूणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेण प० । जीवे णं पसत्थऽज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मदिट्ठी तित्थकरनामसहिआओ णामस्स णियमा एगूणतीसं उत्तरपगडीओ निबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ ॥ ९४ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । उवरिममज्झिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ९५ ॥ ते णं देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं एगूणतीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एगूणतीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ९६ ॥ तीसं मोहणीयठाणा प० तं० जे यावि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिआ । उदएण कम्मा मारेई, महामोहं पकुव्वइ ॥ १-१ ॥ सीसावेढेण जे केई, आवेढेइ अभिक्खणं । तिव्वासुभसमायारे, महामोहं पकुव्वइ ॥ २-२ ॥ पाणिणा संपिहित्ता णं, सोयमावरिय पाणिणं । अंतोनदंतं मारेई, महामोहं पकुव्वइ ॥ ३-३ ॥ जायतेयं समारब्भ, बहुं ओरुंभिया जणं, अंतोधूमेण मारेई(ज्जा), महामोहं पकुव्वइ ॥ ४-४ ॥ सिस्सम्मि जे पहणइ, उत्तमंगम्मि चेयसा । विभज्ज मत्थयं फाले, महामोहं पकुव्वइ ॥ ५-५ ॥ पुणो पुणो पणिधिए, हरित्ता उवहसे जणं । फलेण अदुवा दंडेण, महामोहं पकुव्वइ ॥ ६-६ ॥ गूढायारी निगूहिज्जा, मायं मायाए छायए । असच्चवाई णिण्हाई, महामोहं पकुव्वइ ॥ ७-७ ॥ धंसेइ जो अभूएणं, अकम्मं अत्तकम्मुणा । अदुवा तुमं कासित्ति, महामोहं पकुव्वइ ॥ ८-८ ॥ जाणमाणो परिसओ, सच्चामोसाणि भासइ । अक्खीणझंझे पुरिसे, महामोहं पकुव्वइ ॥ ९-९ ॥ अणायगस्स नयवं, दारे तस्सेव धंसिया । विउलं विक्खोभइत्ता

णं किच्चा णं पडियाहिरे ॥ १० ॥ उवगयंतं पि झंपित्ता पडिलोमाहिं वग्गुहिं । भोगभोगे वियारेइ, महामोहं पकुव्वइ ॥ ११-१० ॥ अकुमारभूए जे केई, कुमारभूए त्ति हं वए । इत्थीहिं गिद्धे वसए, महामोहं पकुव्वइ ॥ १२-११ ॥ अबंभयारी जे केई, बंभयारी त्ति हं वए । गद्दहेव्व गवां मज्झे विस्सरं नयई नदं ॥ १३ ॥ अप्पणो अहिए बाले मायामोसं बहुं भसे । इत्थीविसयगेहीए, महामोहं पकुव्वइ ॥ १४-१२ ॥ जं निस्सिए उव्वहइ, जससाहिगमेण वा । तस्स लुब्भइ वित्तम्मि महामोहं पकुव्वइ ॥ १५-१३ ॥ ईसरेण अदुवा गामेणं अणिस्सरे ईसरीकए । तस्स संपग्गहियस्स सिरी अतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेण आविट्ठे, कलुसाविलचेयसे । जे अंतरायं चेएइ, महामोहं पकुव्वइ ॥ १७-१४ ॥ सप्पी जहा अंडउडं भत्तारं जो विहिंसइ । सेणावइं पसत्थारं, महामोहं पकुव्वइ ॥ १८-१५ ॥ जे नायगं च रट्ठस्स नेयारं निगमस्स वा । सेट्ठिं बहुरवं हंता महामोहं पकुव्वइ ॥ १९-१६ ॥ बहुजणस्स णेयारं, दीवं ताणं च पाणिणं । एयारिसं नरं हंता महामोहं पकुव्वइ ॥ २०-१७ ॥ उवट्ठियं पडिविरयं संजयं सुतवस्सियं । वुक्कम्म धम्माओ भंसेइ, महामोहं पकुव्वइ ॥ २१-१८ ॥ तहेवाणंतणाणीणं जिणाणं वरदंसिणं । तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वइ ॥ २२-१९ ॥ नेयाउयस्स मग्गस्स दुट्ठे अवयरई बहुं । तं तिप्पयंतो भावेइ, महामोहं पकुव्वइ ॥ २३-२० ॥ आयरियउवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए । ते चेव खिंसई बाले महामोहं पकुव्वइ ॥ २४-२१ ॥ आयरियउवज्झायाणं सम्मं नो पडितप्पइ । अप्पडिपूयए थद्धे, महामोहं पकुव्वइ ॥ २५-२२ ॥ अबहुस्सुए य जे केई, सुएणं पविकत्थई । सज्झायवायं वयइ, महामोहं पकुव्वइ ॥ २६-२३ ॥ अतवस्सीए य जे केई, तवेण पविकत्थइ । सव्वलोयपरे तेणे महामोहं पकुव्वइ ॥ २७-२४ ॥ साहारणट्ठा जे केई, गिलाणम्मि उवट्ठिए । पभू ण कुणई किच्चं मज्झं पि से न कुव्वइ ॥ २८ ॥ सढे नियडीपण्णाणे कलुसाउलचेयसे । अप्पणो य अबोहीय महामोहं पकुव्वइ ॥ २९-२५ ॥ जे कहाहिगरणाइं, संपउंजे पुणो पुणो । सव्वतित्थाण भेयाणं महामोहं पकुव्वइ ॥ ३०-२६ ॥ जे य आहम्मिए जोए, संपउंजे पुणो पुणो । सहाहेउं सहीहेउं महामोहं पकुव्वइ ॥ ३१-२७ ॥ जे य माणुस्सए भोए, अदुवा पारलोइए । तेऽतिप्पयंतो आसयइ, महामोहं पकुव्वइ ॥ ३२-२८ ॥ इड्ढी जुई जसो वण्णो देवाणं बलवीरियं । तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वइ ॥ ३३-२९ ॥ अपस्समाणो पस्सामि देवे जक्खे य गुज्झगे । अन्नाणी जिणपूयट्ठी महामोहं पकुव्वइ ॥ ३४-३० ॥ ३० ॥ थेरे णं

ण प० तं० भोमे, उप्पाए, सुमिणे, अतरिक्खे, अगे, सरे, वजणे, लक्खणे, भोमे तिविहे प० तं० सुत्ते वित्ती वत्तिए, एव एक्केक्क तिविह, विकहाणुजोगे, विज्जाणुजोगे, मताणुजोगे, जोगाणुजोगे, अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे । आसाढे ण मासे एगूणतीसराइदिआइ राइदियग्गेण पन्नत्ताइ । (एव चेव) भद्दवए ण मासे । कत्तिए ण मासे । पोसे ण मासे । फग्गुणे ण मासे । वइसाहे ण मासे । चददिणे ण एगूणतीस मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेण प० । जीवे णं पसत्थऽज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मदिट्ठी तित्थकरनामसहिआओ णामस्स णियमा एगूणतीस उत्तरपगडीओ निवधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ ॥ ९४ ॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं एगूणतीस पलिओवमाइ ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एगूणतीस सागरोवमाइ ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाण एगूणतीस पलिओवमाइ ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण एगूणतीस पलिओवमाई ठिई प० । उवरिममज्झिमगेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण एगूणतीस सागरोवमाइ ठिई प० । जे देवा उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण उक्कोसेण एगूणतीसं सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ९५ ॥ ते ण देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससति वा । तेसि ण देवाण एगूणतीस वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एगूणतीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ९६ ॥ तीस मोहणीयठाणा प० त० जे यावि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिआ । उदएण कम्मा मारेई, महामोह पकुव्वइ ॥ १-१ ॥ सीसावेढेण जे केई, आवेढेइ अभिक्खण । तिव्वासुभसमायारे, महामोह पकुव्वइ ॥ २-२ ॥ पाणिणा सपिहित्ता ण, सोयमावरिय पाणिण । अतोनदत मारेई, महामोह पकुव्वइ ॥ ३-३ ॥ जायतेय समारब्भ, वहु ओरुंभिया जण, अतोधूमेण मारेई(ज्जा), महामोह पकुव्वइ ॥ ४-४ ॥ सिस्सम्मि जे पहणइ, उत्तमगम्मि चेयसा । विभज्ज मत्थय फाले, महामोह पकुव्वइ ॥ ५-५ ॥ पुणो पुणो पणिधिए, हरित्ता उवहसे जण । फलेण अदुवा दंडेण, महामोह पकुव्वइ ॥ ६-६ ॥ गूढायारी निगूहिज्जा, माय मायाए छायए । असच्चवाई णिण्हाई, महामोह पकुव्वइ ॥ ७-७ ॥ धसेइ जो अभूएण, अकम्म अत्तकम्मुणा । अदुवा तुम कासित्ति, महामोह पकुव्वइ ॥ ८-८ ॥ जाणमाणो परिसओ, सच्चामोसाणि भासइ । अक्खीणझझे पुरिसे, महामोह पकुव्वइ ॥ ९-९ ॥ अणायगस्स नयव, दारे तस्सेव धसिया । विउलं विक्खोभइत्ता

सव्वबाहिरियं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि य एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए सट्ठिभागे जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ। अभिवड्ढिए णं मासे एक्कतीसं सातिरेगाइं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं पन्नत्ते। आइच्चे णं मासे एक्कतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइंदियग्गेणं पन्नत्ते ॥ १ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । विजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं देवाणं जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ २ ॥ ते णं देवा एक्कतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा । तेसि णं देवाणं एक्कतीसं(स)वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कतीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३ ॥ बत्तीसं जोगसंगहा प० तं जहा—आलोयण निरवलावे आवईसु दढधम्मया । अणिस्सिओवहाणे य सिक्खा निप्पडिकम्मया ॥ १ ॥ अन्नायया अलोभे य तितिक्खा अज्जवे सुई । सम्मदिट्ठी समाही य आयारे विणओवए ॥ २ ॥ धिईमई य संवेगे पणिही सुविहि संवरे । अत्तदोसोवसंहारे सव्वकामविरत्तया ॥ ३ ॥ पच्चक्खाणे विउस्सग्गे अप्पमादे लवालवे । झाणसंवरजोगे य उदए मारणंतिए ॥ ४ ॥ संगाणं च परिण्णाया पायच्छित्तकरणे वि य । आराहणा य मरणंते बत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ १ ॥ बत्तीसं देविंदा प० तं जहा—चमरे बली धरणे भूयाणंदे जाव घोसे महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे जाव पाणए अच्चुए । कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीसहिया बत्तीसं जिणसया होत्था । सोहम्मे कप्पे बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा प० । रेवइनक्खत्ते बत्तीसइतारे पन्नत्ते । बत्तीसइविहे नट्टे पन्नत्ते ॥ २ ॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० । जे देवा विजयवेजयंतजयंतअपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसि णं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० ।

मडियपुत्ते तीस वासाइं सामण्णपरियाय पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्प-हीणे । एगमेगे ण अहोरत्ते तीसमुहुत्ते मुहुत्तग्गेण पन्नत्ते । एएसि णं तीसाए मुहुत्ताण तीस नामधेज्जा प०, त जहा–रोद्दे, सत्ते, मित्ते, वाऊ, सुपीए, अभिचंदे, माहिंदे, पलवे, वंभे, सच्चे, आणदे, विजए, विस्ससेणे, पायावच्चे, उवसमे, ईसाणे, तट्ठे, भाविअप्पा, वेसमणे, वरुणे, सतरिसभे, गधव्वे, अग्गिवेसायणे, आतवे, आवत्ते, तट्ठवे, भूमहे, रिसभे, सव्वट्ठसिद्धे, रक्खसे । अरे ण अरहा तीस धणु(णू)इ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था । सहस्सारस्स णं देविंदस्स देवरन्नो तीस सामाणियसाहस्सीओ प० । पासे ण अरहा तीस वासाइ अगारवासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए । समणे भगव महावीरे तीस वासाइ अगारवासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए । रयणप्पभाए णं पुढवीए तीस निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ९८ ॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तीस पलिओवमाइ ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तीस सागरोवमाइ ठिई प० । असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण तीस पलिओवमाइ ठिई प० । सोहम्मी-साणेसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण तीस पलिओवमाइ ठिई प० । उवरिमउवरिम-गेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण तीस सागरोवमाइ ठिई प० । जे देवा उवरिममज्झिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाणं उक्कोसेण तीस सागरोवमाइ ठिई प० ॥ ९९ ॥ ते ण देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा उस्ससति वा नीससति वा । तेसि ण देवाण तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समु-प्पज्जइ । सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥ १०० ॥ एकतीस सिद्धाइगुणा पन्नत्ता, तं जहा–खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे, खीणे सुय-णाणावरणे, खीणे ओहिणाणावरणे, खीणे मणपज्जवणाणावरणे, खीणे केवलणाणा-वरणे, खीणे चक्खुदंसणावरणे, खीणे अचक्खुदसणावरणे, खीणे ओहिदसणावरणे, खीणे केवलदसणावरणे, खीणे निद्दा, खीणे णिद्दाणिद्दा, खीणे पयला, खीणे पयला-पयला, खीणे थीणद्धी, खीणे सायावेयणिज्जे, खीणे असायावेयणिज्जे, खीणे दसण-मोहणिज्जे, खीणे चरित्तमोहणिज्जे, खीणे नेरइआउए, खीणे तिरिआउए, खीणे मणु-स्साउए, खीणे देवाउए, खीणे उच्चागोए, खीणे निचागोए, खीणे सुभणामे, खीणे असुभणामे, खीणे दाणतराए, खीणे लाभतराए, खीणे भोगतराए, खीणे उवभोग-तराए, खीणे वीरिअतराए ॥ १०१ ॥ मदरे ण पव्वए धरणितले एकतीस जोयण सहस्साइ छच्चेव तेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणा परिक्खेवेण पन्नत्ता । जया णं सूरिए

ते णं देवा वत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा। तेसि ण देवाण वत्तीसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे वत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति वुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥ १०७ ॥ तेत्तीस आसायणाओ पन्नत्ताओ, त जहा–सेहे राइणियस्स आसन्न गता भवइ आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स पुरओ गता भवइ आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स सपक्खं गता भवइ आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स आसन्न ठिच्चा भवइ आसायणा सेहस्स, जाव सेहे राइणियस्स आलवमाणस्स तत्थगए चेव पडिसुणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स। चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचचाए रायहाणीए एक्कमेक्कवाराए तेत्तीस तेत्तीस भोमा प०। महाविदेहे ण वासे तेत्तीस जोयणसहस्साइ साइरेगाइ विक्खंभेण प०। जया ण सूरिए वाहिराणतर तच्च मडल उवसकमित्ता णं चारं चरइ तया ण इह गयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ॥ १०८ ॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई प०। अहे सत्तमाए पुढवीए कालमहाकालरोरुयमहारोरुएसु नेरइयाण उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई प०। अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाण अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई प०। असुरकुमाराण अत्थेगइयाण देवाण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई प०। सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाण देवाण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई प०। विजयवेजयतजयतअपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई प०। जे देवा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववण्णा तेसि ण देवाण अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई प० ॥ १०९ ॥ ते णं देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा उस्ससति वा निस्ससति वा। तेसि ण देवाण तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेत्तीसं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति वुज्झिस्सति मुच्चिस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ॥ ११० ॥ चोत्तीस जिणाइसेसा प० तं जहा–अवट्ठिए केसमंसुरोमनहे, निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी, गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए, पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे, पच्छन्ने आहारनीहारे अदिस्से मसचक्खुणा, आगासगय चक्क, आगासगय छत्त, आगासगयाओ सेयवरचामराओ, आगासफालियामय सपायपीढ सीहासण, आगासगओ कुडमीसहस्सपरिमण्डिआभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ, जत्थ जत्थ वि य णं अरहता भगवंतो चिट्ठंति वा निसीयति वा तत्थ तत्थ वि य णं तक्खणादेव संछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघंटो

जीवविभत्ती य। चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो सभा सुहम्मा छत्तीस जोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेणं होत्था। समणस्स ण भगवओ महावीरस्स छत्तीस अज्जाण साहस्सीओ होत्था। चेत्तासोएसु ण मासेसु सइ छत्तीसगुलिय सूरिए पोरिसिछाय निव्वत्तइ॥११४॥ कुंथुस्स णं अरहओ सत्ततीस गणा सत्ततीस गणहरा होत्था। हेमवयहेरण्ण-वयाओ ण जीवाओ सत्ततीस जोयणसहस्साइ छच्च चउसत्तरे जोयणसए सोलस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचि विसेसूणाओ आयामेण पन्नत्ताओ। सव्वासु ण विजयवेजयतजयतअपराजिआसु रायहाणीसु पागारा सत्ततीस सत्ततीस जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण प०। खुड्डियाए ण विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे सत्ततीस उद्देसणकाला प०। कत्तियबहुलसत्तमीए ण सूरिए सत्ततीसगुलियं पोरिसिछाय निव्वत्तइत्ता णं चार चरइ॥११५॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीस अज्जिआसाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासपया होत्था। हेमवयएरण्णवईयाण जीवाण धणुपिट्ठे अट्ठतीस जोयणसहस्साइ सत्त य चत्ताले जोयणसए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचि विसेसूणा परिक्खेवेण पन्नत्ता। अत्थस्स ण पव्वयरण्णो बितिए कंडे अट्ठतीस जोयण-सहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था। खुड्डियाए ण विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे अट्ठ-तीस उद्देसणकाला प०॥ ११६॥ नमिस्स ण अरहओ एगूणचत्तालीस आहोहिय-सया होत्था। समयखेत्ते एगूणचत्तालीस कुलपव्वया प०, त जहा–तीस वासहरा, पच मदरा, चत्तारि उसुकारा। दोच्चचउत्थपचमछट्ठसत्तमासु णं पचसु पुढवीसु एगू-णचत्तालीस निरयावाससयसहस्सा प०। नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासि णं चउण्ह कम्मपगडीण एगूणचत्तालीस उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ॥ ११७॥ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीस अज्जियासाहस्सीओ होत्था। मंद-रचूलियाण चत्तालीस जोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता। सती अरहा चत्तालीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था। भूयाणदस्स ण नागकुमारस्स नागरन्नो चत्तालीस भवणावा-ससयसहस्सा प०। खुड्डियाए ण विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे चत्तालीस उद्देसण-काला प०। फग्गुणपुण्णिमासिणीए ण सूरिए चत्तालीसगुलिय पोरिसीछाय निव्वट्टइत्ता णं चारं चरइ। एवं कत्तियाए वि पुण्णिमाए। महासुक्के कप्पे चत्तालीस विमाणा-वाससहस्सा प०॥ ११८॥ नमिस्स णं अरहओ एगचत्तालीस अज्जियासाहस्सीओ होत्था। चउसु पुढवीसु एक्कचत्तालीस निरयावाससयसहस्सा प०, त जहा–रयण-प्पभाए पंकप्पभाए तमाए तमतमाए। महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे एकचत्तालीस उद्देसणकाला प०॥ ११९॥ समणे भगव महावीरे बायालीस वासाइ साहियाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। जंबुद्दीवस्स णं

तिण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे।
गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापा-
यालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं बावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ।
एवं दगभासस्स णं केउगस्स संखस्स जूयस्स दगसीमस्स ईसरस्स । नाणावर-
णिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतेसि णं तिण्हं कम्मपयडीणं बावन्नं उत्तरपयडीओ
पन्नत्ताओ । सोहम्मसणंकुमारमाहिंदेसु तिसु कप्पेसु बावन्नं विमाणावाससयसहस्सा प
० ॥ ११० ॥ देवकुरुउत्तरकुराओ णं जीवाओ तेवन्नं तेवन्नं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं
आयामेणं पन्नत्ताओ । महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवन्नं तेवन्नं
जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स आया-
मेणं पन्नत्ताओ । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छरपरि-
याया पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना । संमुच्छिम-
उरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्सा ठिई प० ॥ १११ ॥ भरहेरवएसु णं
वासेसु एगमेगाए उस्सप्पिणीए ओसप्पिणीए चउवन्नं चउवन्नं उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु
वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा तं जहा–चउवीसं तित्थकरा बारस चक्कवट्टी
नव बलदेवा नव वासुदेवा । अरहा णं अरिट्ठनेमी चउवन्नं राइंदियाइं छउमत्थ-
परियायं पाउणित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी । समणे भगवं
महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्नाइं वागरणाइं वागरित्था । अणंतस्स णं
अरहओ चउप्पन्नं गणहरा होत्था ॥ ११२ ॥ मल्लिस्स णं अरहओ [मल्ली णं अरहा]
पणपन्नं वाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे । मंदरस्स णं
पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं
पणपन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० । एवं चउद्दिसिं पि विजयवेजयंतजयंत-
अपराजियं ति । समणे भगवं महावीरे अंतिमराइयंसि पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाण-
फलविवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जाव
प्पहीणे । पढमबिइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्नं निरयावाससयसहस्सा प० । दंसणा-
वरणिज्जनामाउयाणं तिण्हं कम्मपयडीणं पणपन्नं उत्तरपयडीओ प० ॥ ११३ ॥
जंबुद्दीवे णं दीवे छप्पन्नं नक्खत्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति
वा । विमलस्स णं अरहओ छप्पन्नं गणा छप्पन्नं गणहरा होत्था ॥ ११४ ॥ तिण्हं
गणिपिडगाणं आयारचूलियावज्जाणं सत्तावन्नं अज्झयणा प० तं जहा–आयारे
सूयगडे ठाणे । गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ वलया-
मुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए

चंदेण सद्धिं जोगं जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा–तिन्नेव उत्तराइं, पुणव्वसू, रोहिणी विसाहा य । एए छ नक्खत्ता, पणयालमुहुत्तसजोगा ॥ महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पचमे वग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ १२३ ॥ दिट्ठिवायस्स णं छायालीसं माउयापया प० । बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा प० । पभंजणस्स णं वाउकुमारिंदस्स छायालीसं भवणावाससयसहस्सा प० ॥ १२४ ॥ जया णं सूरिए सव्वब्भिंतरमंडलं उवसकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ । थेरे णं अग्गिभूई सत्तचालीसं वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥ १२५ ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा प० । धम्मस्स णं अरहओ अडयालीसं गणा अडयालीसं गणहरा होत्था । सूरमंडले णं अडयालीसं एकसट्ठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं प० ॥ १२६ ॥ सत्तसत्तमियाए णं भिक्खुपडिमाए एगूणपन्नाए राइदिएहिं छन्नउइभिक्खासएणं अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ । देवकुरुउत्तरकुरुएसु णं मणुया एगूणपन्ना राइदिएहिं संपन्नजोव्वणा भवंति । तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपन्ना राइंदिया ठिई प० ॥ १२७ ॥ मुणिसुव्वयस्स णं अरहओ पंचासं अज्जियासाहस्सीओ होत्था । अणंते णं अरहा पन्नासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । पुरिसुत्तमे णं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सव्वे वि णं दीहवेयड्ढा मूले पन्नासं पन्नासं जोयणाणि विक्खंभेणं प० । लंतए कप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० । सव्वाओ णं तिमिस्सगुहाखंडगप्पवायगुहाओ पन्नासं पन्नासं जोयणाइं आयामेणं प० । सव्वे वि णं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ १२८ ॥ नवण्हं बंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला प० । चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररन्नो सभा सुधम्मा एकावन्नखंभसयसंनिविट्ठा प० । एवं चेव बलिस्स वि । सुप्पभे णं बलदेवे एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । दंसणावरणनामाणं दोण्हं कम्माणं एकावन्नं उत्तरकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ॥ १२९ ॥ मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स बावन्नं नामधेज्जा प०, तं जहा–कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अखमा, संजलणे, कलहे, चंडिक्के, भंडणे, विवाए, माणे, मदे, दप्पे, थंभे, अत्तुक्कोसे, गव्वे, परपरिवाए, अक्कोसे, अवक्कोसे (परिभवे), उन्नए, उन्नामे, माया, उवही, नियडी, वलए, गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए, दंभे, कूडे, जिम्हे, किब्बिसे, अणायरणया, गूहणया, वंचणया, पलिकुंचणया, सातिजोगे, लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा, गेही,

अतरे प० । एव दगभासस्स केउयस्स य संखस्स य जूयस्स य दगसीमस्स ईस-
रस्स य । मल्लिस्स ण अरहओ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्था । महाहिमवंत-
रुप्पीण वासहरपव्वयाणं जीवाण धणुपिट्ठं सत्तावन्नं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं
दोन्नि य तेणउए जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं प०
॥ १३५ ॥ पढमदोच्चपचमासु तिसु पुढवीसु अट्ठावन्नं निरयावाससयसहस्सा प० ।
नाणावरणिज्जस्स वेयणियआउयनामअतराइयस्स एएसि णं पंचण्हं कम्मपगडीणं
अट्ठावन्नं उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ । गोथुभस्स ण आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ
चरमताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस ण अट्ठावन्नं जोयण-
सहस्साइ अबाहाए अतरे प० । एवं चउद्दिसि पि नेयव्वं ॥ १३६ ॥ चंदस्स णं
संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठिं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० । संभवे णं अरहा
एगूणसट्ठि पुव्वसयसहस्साइ अगारमज्झे वसित्ता मुंडे जाव पव्वइए । मल्लिस्स णं
अरहओ एगूणसट्ठि ओहिनाणिसया होत्था ॥ १३७ ॥ एगमेगे णं मंडले सूरिए सट्ठिए
सट्ठिए मुहुत्तेहिं संघाइए । लवणस्स ण समुद्दस्स सट्ठि नागसाहस्सीओ अग्गोदयं
धारंति । विमले ण अरहा सट्ठिं धणूइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स
सट्ठि सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ । बभस्स ण देविंदस्स देवरन्नो सट्ठि सामाणि-
यसाहस्सीओ पन्नत्ताओ । सोहम्मीसाणेसु दोसु कप्पेसु सट्ठि विमाणावाससयसहस्सा
प० ॥ १३८ ॥ पचसवच्छरियस्स ण जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स एगसट्ठि उउ-
मासा प० । मदरस्स ण पव्वयस्स पढमे कंडे एगसट्ठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं
प० । चदमडले ण एगसट्ठिविभागविभाइए समंसे प० । एव सूरस्स वि ॥ १३९ ॥
पचसवच्छरिए ण जुगे बासट्ठि पुन्निमाओ बावट्ठि अमावसाओ पन्नत्ताओ । वासुपुज्जस्स
ण अरहओ बासट्ठि गणा बासट्ठि गणहरा होत्था । सुक्कपक्खस्स ण चंदे बासट्ठि भागे
दिवसे दिवसे परिवड्ढइ, ते चेव बहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ । सोहम्मीसा-
णेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बासट्ठि बासट्ठि विमाणा
प० । सव्वे वेमाणियाण बासट्ठि विमाणपत्थडा पत्थडग्गेण प० ॥ १४० ॥ उसभे
ण अरहा कोसलिए तेसट्ठि पुव्वसयसहस्साइ महारायमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता
अगाराओ अणगारियं पव्वइए । हरिवासरम्मयवासेसु मणुस्सा तेसट्ठिए राइंदिएहिं
संपत्तजोव्वणा भवंति । निसढे ण पव्वए तेसट्ठि सूरोदया प० । एवं नीलवंते वि
॥ १४१ ॥ अट्ठट्ठमिया ण भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं
भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव भवइ । चउसट्ठि असुरकुमारावाससयसहस्सा प० ।
चमरस्स णं रन्नो चउसट्ठि सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ । सव्वे वि दधिमुहाग

माहिंदस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरिं सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ॥ १४८ ॥ चउत्थस्स ण चदसवच्छरस्स हेमंताण एक्कसत्तरीए राइदिएहिं वीइक्कतेहिं सव्व-वाहिराओ मडलाओ सूरिए आउट्टिं करेइ। वीरियप्पवायस्स ण पुव्वस्स एक्कसत्तरिं पाहुडा प०। अजिते ण अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइ अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए। एव सगरो वि राया चाउरंतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्व जाव पव्वइए त्ति ॥ १४९ ॥ वावत्तरिं सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा प०। लवणस्स समुद्दस्स वावत्तरिं नागसाहस्सीओ वाहिरिय वेल धारति। समणे भगव महावीरे वावत्तरिं वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। थेरे ण अयलभाया वावत्तरिं वासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। अब्भिंतरपुक्खरद्धे ण वावत्तरिं चदा पभासिंसु वा पभासति वा पभासिस्सति वा, वावत्तरिं सूरिया तविंसु वा तवति वा तविस्सति वा। एगमेगस्स ण रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वावत्तरिंपुर-वरसाहस्सीओ पन्नत्ताओ। वावत्तरिं कलाओ प० त जहा—लेहं, गणियं, रूवं, नट्टं, गीयं, वाइयं, सरगयं, पुक्खरगयं, समतालं, जूयं, जणवायं, पोक्खच्चं, अट्ठावयं, दगमट्टियं, अन्नविहीं, पाणविहीं, वत्थविहीं, सयणविहीं, अज्जं, पहेलियं, मागहियं, गाहं, सिलोगं, गधजुत्तिं, मधुसित्थं, आभरणविहीं, तरुणीपडिकम्मं, इत्थीलक्खणं, पुरिसलक्खणं, हयलक्खणं, गयलक्खणं, गोणलक्खणं, कुक्कुडलक्खणं, मिंढयल-क्खणं, चक्कलक्खणं, छत्तलक्खणं, दडलक्खणं, असिलक्खणं, मणिलक्खणं, कागणिलक्खणं, चम्मलक्खणं, चंदलक्खणं, सूरचरियं, राहुचरियं, गहचरियं, सोभागकरं, दोभागकरं, विज्जागयं, मतगयं, रहस्सगयं, सभासं, चारं, पडिचारं, वूहं, पडिवूहं, खधावारमाणं, नगरमाणं, वत्थुमाणं, खधावारनिवेसं, वत्थुनिवेसं, नगरनिवेसं, ईसत्थं, छरुप्पवायं, आससिक्खं, हत्थिसिक्खं, धणुव्वेयं, हिरण्णपागं सुवन्नपागं मणिपागं धातुपागं, वाहुजुद्धं दंडजुद्धं मुट्ठिजुद्धं लट्ठिजुद्धं जुद्धं निजुद्धं जुद्धाइजुद्धं, सुत्तखेडं नालियाखेडं वट्टखेडं धम्मखेडं चम्मखेडं, पत्तच्छेज्जं कडग-च्छेज्जं, सजीवं निज्जीवं, सउणरुयं। समुच्छिमखहयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण उक्कोसेण वावत्तरिं वाससहस्साइ ठिई प० ॥ १५० ॥ हरिवासरम्मयवासयाओ णं जीवाओ तेवत्तरिं तेवत्तरिं जोयणसहस्साइ नव य एगुत्तरे जोयणसए सत्तरस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभाग च आयामेण प०। विजए ण वलदेवे तेव-त्तरिं वाससयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे ॥ १५१ ॥ थेरे णं अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरिं वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। निस-हाओ ण वासहरपव्वयाओ तिगिच्छिओ ण दहाओ सीतोयामहानदीओ चोवत्तरिं

सत्ताणउई च पयरसया तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खायं ॥ १६२ ॥ आयारस्स णं भगवओ सचूलियायस्स पंचासीइं उद्देसणकाला प० । धायइसंडस्स णं मंदरा पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० । रुयए णं मंडलियपव्वए पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० । नंदणवणस्स णं हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं पंचासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ १६३ ॥ सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइं गणा छलसीइं गणहरा होत्था । सुपासस्स णं अरहओ छलसीइं वाइसया होत्था । दोच्चाए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं छलसीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ १६४ ॥ मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० । मंदरस्स णं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० । एवं मंदरस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ संखस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० । एवं चेव मंदरस्स उत्तरिल्लाओ चरमंताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० । छण्हं कम्मपगडीणं आइमउवरिल्लवज्जाणं सत्तासीइं उत्तरपयडीओ पण्णत्ताओ । महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० । एवं रुप्पिकूडस्स वि ॥ १६५ ॥ एगमेगस्स णं चंदिमसूरियस्स अट्ठासीइं अट्ठासीइं महग्गहा परिवारो प० । दिट्ठिवायस्स णं अट्ठासीइं सुत्ताइं पण्णत्ताइं, तं जहा—उज्जुसुयं परिणयापरिणयं एवं अट्ठासीइं सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए । मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० । एवं चउसु वि दिसासु नेयव्वं । बाहिराओ उत्तराओ णं कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे चोयालीसइमे मंडलगते अट्ठासीइ एगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चारं चरइ । दक्खिणकट्ठाओ णं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे चोयालीसइमे मंडलगते अट्ठासीई एगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ ॥ १६६ ॥ उसभे णं अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए तइयाए सुसमदूसमाए (समाए) पच्छिमे भागे एगूणनउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जाव सव्व-

पडिमा एक्कासीइ राइंदिएहिं चउहि य पचुत्तरेहिं (भिक्खासएहिं) अहासुत्त जाव आराहिया। कुंथुस्स णं अरहओ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था। विवाहपन्नत्तीए एकासीतिं महाजुम्मसया प०॥ १५९॥ जम्बुद्दीवे दीवे बासीय मंडलसयं जं सूरिए दुक्खुत्तो सक्कमित्ता ण चारं चरइ, त जहा-निक्खममाणे य पविसमाणे य। समणे भगवं महावीरे बासीए राइंदिएहिं वीइक्कतेहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए। महाहिमवतस्स ण वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस ण बासीइ जोयणसयाइ अबाहाए अंतरे प०। एवं रुप्पिस्स वि॥१६०॥ समणे भगवं महावीरे बासीइ राइंदिएहिं वीइक्कतेहिं तेयासीइमे राइंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिए। सीयलस्स णं अरहओ तेसीई गणा तेसीई गणहरा होत्था। थेरे णं मंडियपुत्ते तेसीइ वासाइ सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। उसभे ण अरहा कोसलिए तेसीई पुव्वसयसहस्साइ अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता ण जाव पव्वइए। भरहे ण राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइ पुव्वसयसहस्साइ अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी॥ १६१॥ चउरासीइ निरयावाससयसहस्सा प०। उसभे ण अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइ सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। एवं भरहो बाहुबली बंभी सुंदरी। सिज्जंसे ण अरहा चउरासीइ वाससयसहस्साइ सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। तिविट्ठे ण वासुदेवे चउरासीइ वाससयसहस्साइ सव्वाउयं पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्नो। सक्कस्स ण देविंदस्स देवरन्नो चउरासीइ सामाणियसाहस्सीओ पन्नत्ताओ। सव्वे वि ण बाहिरया मंदरा चउरासीइ चउरासीइ जोयणसहस्साइ उड्ढं उच्चत्तेण प०। सव्वे वि ण अंजणगपव्वया चउरासीइ चउरासीइ जोयणसहस्साइ उड्ढं उच्चत्तेणं प०। हरिवासरम्मयवासियाण जीवाण धणुपिट्ठा चउरासीइं जोयणसहस्साइ सोलस जोयणाइ चत्तारि य भागा जोयणस्स परिक्खेवेण प०। पंकबहुलस्स ण कंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ हेट्ठिल्ले चरमंते एस ण चोरासीइ जोयणसयसहस्साइ अबाहाए अंतरे प०। विवाहपन्नत्तीए ण भगवतीए चउरासीइ पयसहस्सा पदग्गेण प०। चोरासीइ नागकुमारावाससयसहस्सा प०। चोरासीइ पइन्नगसहस्साइ पन्नत्ताइ। चोरासीइ जोणिप्पमुहसयसहस्सा प०। पुव्वाइयाण सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सट्ठाणट्ठाणंतराणं चोरासीए गुणकारे प०। उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइ गणा चउरासीइ गणहरा होत्था, उसभस्स ण अरहओ कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चउरासीइ समणसाहस्सीओ होत्था। सव्वे वि चउरासीइ विमाणावाससयसहस्सा

मज्झे चरमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं सत्ता-णउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते। एवं चउद्दिसिं पि। अट्ठण्हं कम्म-पगडीणं सत्ताणउइ उत्तरपगडीओ पन्नत्ताओ। हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसू-णाइं सत्ताणउइ वाससयाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं जाव पव्वइए ॥ १७५ ॥ नंदणवणस्स णं उवरिल्लाओ चरमंताओ पंडगवणस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते। मेरुस्स णं पव्वयस्स पच्-च्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथूभस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प । एवं चउद्दिसिं पि। दाहिणभर-हस्स णं धणुपिट्ठे अट्ठाणउइ जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पन्नत्ते। उत्तराओ णं कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ। दक्खिणाओ णं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूण-पन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एगसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ। रेवईपढमजेट्ठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइ ताराओ तारग्गेणं पन्नत्ताओ ॥ १७६ ॥ मंदरे णं पव्वए नवनउइ जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ते। नंदणवणस्स णं पुरच्छि-मिल्लाओ चरमंताओ पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं नवनउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते। एवं दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ उत्तरिल्ले चरमंते एस णं नवनउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते। उत्तरे पढमे सूरियमंडले नवनउइ जोयण-सहस्साइं साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते। दोच्चे सूरियमंडले नवनउइ जोयण-सहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते। तइए सूरियमंडले नवनउइ जोयण-सहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ वाणमंतरभोमेज्जविहाराणं उवरिमंते एस णं नवनउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते ॥ १७७ ॥ दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेणं राइंदियसतेणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव आरा-हिया वि भवइ। सयभिसया नक्खत्ते एक्कसयतारे पन्नत्ते। सुविही पुप्फदंते णं अरहा एगं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। पासे णं अरहा पुरिसादाणीए एगं वास-सयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। एवं थेरे वि अज्जसुहम्मे। सव्वे वि णं दीहवेयड्ढपव्वया एगमेगं गाउयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प । सव्वे वि णं चुल्लहिम-वंतसिहरिवासहरपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प एगमेगं गाउयसयं

दुक्खप्पहीणे । समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थाए दूसमसुसमाए समाए पच्छिमे भागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । हरिसेणे ण राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइं वाससयाइं महाराया होत्था । संतिस्स ण अरहओ एगूणनउइं अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ॥ १६७ ॥ सीयले णं अरहा नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । अजियस्स णं अरहओ नउइं गणा नउइं गणहरा होत्था । एवं संतिस्स वि । सयंभुस्स ण वासुदेवस्स णउइं वासाइं विजए होत्था । सव्वेसि णं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधियकण्डस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं नउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ १६८ ॥ एक्काणउइं परवेयावच्चकम्मपडिमाओ पण्णत्ताओ । कालोए ण समुद्दे एक्काणउइं जोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं प० । कुंथुस्स णं अरहओ एकाणउइं आहोहियसया होत्था । आउयगोयवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं एकाणउइं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ॥ १६९ ॥ बाणउइं पडिमाओ पण्णत्ताओ । थेरे ण इंदभूती बाणउइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे । मंदरस्स ण पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाओ गोथूभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं बाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० । एवं चउण्ह वि आवासपव्वयाणं ॥ १७० ॥ चंदप्पहस्स ण अरहओ तेणउइं गणा तेणउइं गणहरा होत्था । संतिस्स ण अरहओ तेणउइं चउद्दसपुव्विसया होत्था । तेणउइमंडलगते ण सूरिए अतिवट्टमाणे वा निवट्टमाणे वा समं अहोरत्तं विसमं करेइ ॥ १७१ ॥ निसहनीलवंतियाओ ण जीवाओ चउणउइं जोयणसहस्साइं एगं छप्पण्णं जोयणसयं दोन्नि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स आयामेण प० । अजियस्स ण अरहओ चउणउइ ओहिनाणिसया होत्था ॥ १७२ ॥ सुपासस्स णं अरहओ पंचाणउइ गणा पंचाणउइ गणहरा होत्था । जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चरमंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइं पंचाणउइं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता चत्तारि महापायालकलसा प० तं जहा–वलयामुहे केऊए जूयए ईसरे । लवणसमुद्दस्स उभओ पासं पि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाओ उव्वेहुस्सेहपरिहाणीए प० । कुंथू ण अरहा पंचाणउइ वाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे । थेरे णं मोरियपुत्ते पंचाणउइ वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे ॥ १७३ ॥ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छण्णउइं छण्णउइं गामकोडीओ होत्था । वाउकुमाराणं छण्णउइ भवणावाससयसहस्सा प० । ववहारिए ण दंडे छण्णउइ अंगुलाइं अंगुलमाणेणं । एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसले वि हु । अब्भितरओ आइमुहुत्ते छण्णउइअंगुलछाए प० ॥ १७४ ॥ मंदरस्स ण पव्वयस्स पच्चच्छिमि-

उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० । सव्वे वि णं वक्खारपव्वयकूडा हरिहरिस्सहकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० । सव्वे वि णं नंदणकूडा बलकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १८६ ॥ सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० । चुल्लहिमवंतकूडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एस णं छ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते । एवं सिहरीकूडस्स वि । पासस्स णं अरहओ छ सया वाईणं सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था । अभिचंदे णं कुलगरे छ धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥ १८७ ॥ बंभलंतएसु कप्पेसु विमाणा सत्त सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त जिणसया होत्था । समणस्स भगवओ महावीरस्स सत्त वेउव्वियसया होत्था । अरिट्ठनेमी णं अरहा सत्त वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे । महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरमंताओ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एस णं सत्त जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते । एवं रुप्पिकूडस्स वि ॥ १८८ ॥ महासुक्कसहस्सारेसु दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए पढमे कंडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमंतरभोमेज्जविहारा प० । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठहिं जोयणसएहिं सूरिए चारं चरइ । अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सयाइं वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ १८९ ॥ आणयपाणयआरणअच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नव नव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० । निसढकूडस्स णं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ निसढस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले एस णं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पन्नत्ते । एवं नीलवंतकूडस्स वि । विमलवाहणे णं कुलगरे णं नव धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । इमीसे णं रयणप्पभाए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिं जोयणसएहिं सव्वुवरिमे तारारूवे चारं चरइ । निसढस्स णं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ सिहरतलाओ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए पढमस्स कंडस्स बहुमज्झदे-

उव्वेहेणं प० । सव्वे वि णं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खंभेणं प० ॥१७८॥ चंदप्पभे णं अरहा दियड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं प० । एवं अच्चुए वि ॥ १७९ ॥ सुपासे णं अरहा दो धणुसया उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सव्वे वि णं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दो दो गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० । जंबुद्दीवे णं दीवे दो कंचणपव्वयसया प० ॥ १८० ॥ पउमप्पभे णं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १८१ ॥ सुमई णं अरहा तिण्णि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । अरिट्ठनेमी णं अरहा तिण्णि वाससयाइं कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए । वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिण्णि तिण्णि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० । समणस्स भगवओ महावीरस्स तिन्नि सयाणि चोद्दसपुव्वीणं होत्था । पंचधणुसइयस्स णं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरेगाणि तिण्णि धणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा प० ॥१८२॥ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धुट्ठसयाइं चोद्दसपुव्वीणं सपया होत्था । अभिनंदणे णं अरहा अद्धुट्ठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ १८३ ॥ संभवे णं अरहा चत्तारि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सव्वे वि णं णिसढनीलवंता वासहरपव्वया चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० । सव्वे वि णं वक्खार-पव्वया णिसढनीलवंतवासहरपव्वयए णं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पन्नत्ते । आणयपाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाणसया प० । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईणं सदेव-मणुयासुरंसि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ १८४ ॥ अजिए णं अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सगरे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ १८५ ॥ सव्वे वि णं वक्खारपव्वया सीआसीओआओ महानईओ मंदरपव्वयंतेणं पंच पंच जोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० । सव्वे वि णं वासहरकूडा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था, मूले पंच पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० । उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । सोमणसगंधमादण-विज्जुप्पभमालवंताणं वक्खारपव्वयाणं मंदरपव्वयंतेणं पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं

सभाए एस ण नव जोयणसयाइ अवाहाए अतरे पन्नत्ते। एवं नीलवतस्स वि ॥ १९० ॥ सव्वे वि ण गेवेज्जविमाणे दस दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पन्नत्ते। सव्वे वि ण जमगपव्वया दस दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण प०, दस दस गाउयसयाइ उव्वेहेण प०, मूले दस दस जोयणसयाइ आयामविक्खभेण प०। एव चित्तविचित्तकूडा वि भाणियव्वा। सव्वे वि ण वट्टवेयड्ढपव्वया दस दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण प०, दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेण प० मूले दस दस जोयणसयाइं विक्खंभेण प०, सव्वत्थ समा पल्लगसठाणसठिया प०। सव्वे वि ण हरिहरिस्सहकूडा वक्खारकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण प०, मूले दस दस जोयणसयाइ विक्खभेण प०। एव बलकूडा वि नदणकूडवज्जा। अरहा वि अरिट्ठनेमी दस वाससयाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। पासस्स ण अरहओ दस सयाइ जिणाण होत्था। पासस्स ण अरहओ दस अतेवासीसयाइ कालगयाइ जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइ। पउमद्दहपुडरीयद्दहा य दस दस जोयणसयाइ आयामेण प० ॥ १९१ ॥ अणुत्तरोववाइयाण देवाण विमाणा एक्कारस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण प०। पासस्स ण अरहओ इक्कारस सयाइ वेउव्वियाण होत्था ॥१९२॥ महापउममहापुडरीयदहाण दो दो जोयणसहस्साइं आयामेणं प०॥१९३॥ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए वइरकडस्स उवरिल्लाओ चरमताओ लोहियक्खकडस्स हेट्ठिल्ले चरमते एस ण तिन्नि जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे प० ॥१९४॥ तिगिच्छिकेसरिदहाण चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ आयामेण पन्नत्ताइं ॥ १९५ ॥ धरणितले मंदरस्स णं पव्वयस्स वहुमज्झदेसभाए रुयगनाभीओ चउदिसिं पच पच जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे मदरपव्वए पन्नत्ते ॥ १९६ ॥ सहस्सारे ण कप्पे छ विमाणावाससहस्सा प० ॥ १९७ ॥ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ पुलगस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरमते एस ण सत्त जोयणसहस्साइं अवाहाए अतरे पन्नत्ते ॥ १९८ ॥ हरिवासरम्मयाण वासा अट्ठ जोयणसहस्साइं साइरेगाइ वित्थरेण प० ॥ १९९ ॥ दाहिणड्ढभरहस्स ण जीवा पाईणपडीणायया दुहओ समुद्द पुट्ठा नव जोयणसहस्साइ आयामेण प०। अजियस्स णं अरहओ साइरेगाइ नव ओहिनाणसहस्साइं होत्था, मदरे णं पव्वए धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेण पन्नत्ते, जंबूद्दीवे ण दीवे एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खंभेण प०, लवणे ण समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण प० ॥ २०० ॥ पासस्स ण अरहओ तिन्नि सयसाहस्सीओ सत्तावीस च सहस्साइ उक्कोसिया सावियासंपया होत्था ॥ २०१ ॥ धाय-

ससमयपरसमया सूइज्जंति जाव लोगालोगा सूइज्जंति । समवाए णं एगाइयाणं एगट्ठाणं एगुत्तरियपरिवुड्ढीए, दुवालसंगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ ठाणगसयस्स बारसविहवित्थरस्स सुयनाणस्स जगजीवहियस्स भगवओ समासेणं समोयारे आहिज्जइ । तत्थ य नाणाविहप्पगारा जीवाजीवा य वण्णिया वित्थरेण अवरे वि य बहुविहा विसेसा नरगतिरियमणुयसुरगणाणं आहारुस्सासलेसाआवाससंखआययप्पमाणउववायचवणओगाहणोहिवेयणविहाणउवओगजोगइंदियकसाय विविहा य जीवजोणी विक्खंभुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसा य मंदराईणं महीधराणं कुलगरतित्थगरगणहराणं सम्मत्तभरहाहिवाण चक्कीणं चेव चक्कहरहलहराण य वासाण य निगमा य समाए । एए अन्ने य एवमाइ एत्थ वित्थरेणं अत्था समासिज्जंति । समवायस्स णं परित्ता वायणा जाव से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे एगे अज्झयणे एगे सुयक्खंधे एगे उद्देसणकाले एगे समुद्देसणकाले एगे चउयाले पयसयसहस्से पयग्गेणं पन्नत्ते । संखेज्जाणि अक्खराणि जाव चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति । से त्तं समवाए ॥ २१४ ॥ से किं तं वियाहे ? वियाहेणं ससमया वियाहिज्जंति परसमया वियाहिज्जंति ससमयपरसमया वियाहिज्जंति, जीवा वियाहिज्जंति अजीवा वियाहिज्जंति जीवाजीवा वियाहिज्जंति लोगे वियाहिज्जइ अलोगे वियाहिज्जइ लोगालोगे वियाहिज्जइ । वियाहेणं नाणाविहसुरनरिंदरायरिसिविविहसंसइयपुच्छियाणं जिणेणं वित्थरेण भासियाणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जवपएसपरिणामजहत्थिभावअणुगमनिक्खेवणयप्पमाणसुनिउणोवक्कमविविहप्पगारपागडपयंसियाणं लोगालोगपयासियाणं संसारसमुद्दरुंदउत्तरणसमत्थाणं सुरवइसंपूजियाणं भवियजणपयहिययाभिनंदियाणं तमरयविद्धंसणाणं सुदिट्ठदीवभूयईहामइबुद्धिवद्धणाणं छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणाओ सुयत्थबहुविहप्पगारा सीसहियत्था य गुणहत्था । वियाहस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे एगे सुयक्खंधे एगे साइरेगे अज्झयणसए दस उद्देसगसहस्साइं दस समुद्देसगसहस्साइं छत्तीसं वागरणसहस्साइं चउरासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं प । संखेज्जाइं अक्खराइं अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा निबद्धा निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवं आया से एवं नाया से एवं विन्नाया एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति । से त्तं वियाहे ॥ से किं तं णायाधम्मकहाओ ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडा रायाणो अम्मापियरो

सूइज्जति, लोगालोगो सूइज्जति । सूअगडे णं जीवाजीवपुण्णपावासवसंवरनिज्जरण-बंधमोक्खावसाणा पयत्था सूइज्जति । समणाण अचिरकालपव्वइयाण कुसमयमोह-मोहमइमोहियाण संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाण पावकरमलिनमइगुणविसोह-णत्थं असीअस्स किरियावाइयसयस्स चउरासीए अकिरियवाईणं सत्तट्ठीए अण्णा-णियवाईण बत्तीसाए वेणइयवाईणं तिण्ह तेवट्ठीण अण्णदिट्ठियसयाण वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जति णाणदिट्ठंतवयणणिस्सारं सुट्ठु दरिसयंता विविहवित्थराणुगमपरम-सब्भावगुणविसिट्ठा मोक्खपहोयारगा उदारा अण्णाणतमंधकारदुग्गेसु दीवभूआ सोवाणा चेव सिद्धिसुगइगिहुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था । सुयगडस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए दोच्चे अंगे दो सुयक्खंधा तेवीसं अज्झयणा तेत्तीसं उद्देसणकाला तेत्तीसं समुद्देसणकाला छत्तीसं पदसहस्साइं पय-ग्गेणं पन्नत्ताइं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जंति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति । से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति । सेत्तं सूअगडे ॥ २१२ ॥ से किं तं ठाणे? ठाणे णं ससमया ठाविज्जति, परसमया ठाविज्जंति, ससमयपरसमया ठाविज्जति, जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जति, जीवाजीवा ठाविज्जति, लोगा ठाविज्जंति, अलोगा ठाविज्जति, लोगालोगा ठाविज्जति, ठाणेणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जवपयत्थाणं—सेला सलिला य समुद्दा, सूरभवणविमाणआगरणदीओ । णिहिओ पुरिसज्जाया, सरा य गोत्ता य जोइसचाला ॥ १ ॥ एक्कविहवत्तव्वयं दुविहं जाव दसविहवत्तव्वयं, जीवाण पोग्गलाण य लोगट्ठाइं च णं परूवणया आघविज्जति । ठाणस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झ-यणा, एक्कवीसं उद्देसणकाला, (एक्कवीसं समुद्देसणकाला), बावत्तरिं पयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ताइं । संखेज्जा अक्खरा, (अणंता गमा) अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघवि-ज्जंति पण्णविज्जति परूविज्जति (दंसिज्जति) निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति । से त्तं ठाणे ॥ २१३ ॥ से किं तं समवाए? समवाए णं ससमया सूइज्जंति, परसमया सूइज्जति,

मोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइअइड्डीविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायायाइं पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति जाव नायाधम्मकहासु णं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे संजमपइण्णपालणधिइमइववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरभरभग्गयणिस्सहयणिसिट्ठाणं घोरपरीसहपराजियाणं सहपारद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छआसावसदोसमुच्छियाणं विराहियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्खदुग्गइभवविविहपरंपरापवंचा। धीराण य जियपरिसहकसायसेण्णधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनिस्सल्लसुद्धसिद्धालयमग्गमभिमुहाणं सुरभवणविमाणसुक्खाइं अणोवमाइं भुत्तूण चिरं च भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततो य कालक्कमचुयाणं जह य पुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया। चलियाण य सदेवमाणुस्सधीरकरणकारणानि बोधणअणुसासणाणि गुणदोसदरिसणाणि दिट्ठंते पच्चये य सोऊण लोगमुणिणो जहट्ठियसासणम्मि जरमरणनासणकरे आराहिअसंजमा य सुरलोगपडिनियत्ता ओवेंति जह सासयं सिवं सव्वदुक्खमोक्खं। एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण य। णायाधम्मकहासु णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगहणीओ। से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे दो सुअक्खंधा एगूणवीसं अज्झयणा, ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—चरिता य कप्पिया य, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइं, एवमेव सपुव्वावरेण अद्धुट्ठाओ अक्खाइयाकोडीओ भवंतीति मक्खायाओ, एगूणतीसं उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ता, संखेज्जा अक्खरा जाव चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति। से त्तं णायाधम्मकहाओ ॥ २१५ ॥ से किं तं उवासगदसाओ? उवासगदसासु णं उवासयाणं णगराइं उज्जाणाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइयइड्डिविसेसा उवासयाणं सीलव्वयवेरमणगुणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणयाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणा पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभा अंतकिरियाओ आघविज्जंति। उवासगदसासु णं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसा वित्थरधम्मसवणाणि बोहिलाभअभिगमसम्मत्तविसुद्धया

पन्नत्ते, तं जहा–दुहविवागे चेव सुहविवागे चेव । तत्थ णं दस दुहविवागाणि दस सुहविवागाणि । से किं तं दुहविवागाणि ? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं वणसंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ नगरगमणाइं संसारपबंधे दुहपरंपराओ य आघविज्जंति । से तं दुहविवागाणि । से किं तं सुहविवागाइं ? सुहविवागेसु सुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं वणसंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइयइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पडिमाओ संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाया पुण बोहिलाहा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । दुहविवागेसु णं पाणाइवायअलियवयणचोरिक्ककरणपरदारमेहुणससंगयाए महतिव्वकसायइंदियप्पमायपावप्पओयअसुहज्झवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागा निरयगतितिरिक्खजोणिबहुविहवसणसयपरंपरापबद्धाणं मणुयत्ते वि आगयाणं जहा पावकम्मसेसेण पावगा होंति फलविवागा वहवसणविणासनासाकण्णोट्ठंगुट्ठकरचरणनहच्छेयणजिब्भच्छेयणअंजणकडग्गिदाहगयचलणमलणफालणउल्लंबणसूललयालउडलट्ठिभंजणतउसीसगतत्ततेल्लकलकलअहिसिंचणकुंभिपागकंपणथिरबंधणवेहवज्झकत्तणपतिभयकरकरपल्लीवणादिदारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि । बहुविविहपरंपराणुबद्धा ण मुच्चंति पावकम्मवल्लीए, अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो तवेण धिइधणियबद्धकच्छेण सोहणं तस्स वावि हुज्जा । एत्तो य सुहविवागेसु णं सीलसंजमणियमगुणतवोवहाणेसु साहुसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पओयतिकालमइविसुद्धभत्तपाणाइं पययमणसा हियसुहनीसेसतिव्वपरिणामनिच्छियमई पयच्छिऊणं पओगसुद्धाइं जह य निव्वत्तेंति उ बोहिलाभं जह य परित्तीकरेंति नरनरयतिरियसुरगमणविपुलपरियट्टअरतिभयविसायसोगमिच्छत्तसेलसंकडं अण्णाणतमंधकारचिक्खिल्लसुदुत्तारं जरमरणजोणिसंखुभियचक्कवालं सोलसकसायसावयपयंडचंडं अणाइयं अणवदग्गं संसारसागरमिणं । जह य निबंधंति आउयं सुरगणेसु जह य अणुभवंति सुरगणविमाणसोक्खाणि अणोवमाणि ततो य कालंतरे चुयाणं इहेव नरलोगमागयाणं आउवपु(व)ण्णरूवजातिकुलजम्मआरोग्गबुद्धिमेहाविसेसा मित्तजणसयणधणधण्णविभवसमिद्धिसारसमुदयविसेसा बहुविहकामभोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाणं सुभाणं चेव कम्माणं भासिया बहुविहा विवागा विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण संवेगकारणत्था अण्णे वि य एवमाइया बहुविहा वित्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जंति । विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगहणीओ ।

जिणातिसेसा य बहुविसेसा जिणसीसाण चेव समणगणपवरगंधहत्थीण थिरजसाणं परिसहसेण्णरिउबलपमद्दणाण तवदित्तचरित्तणाणसम्मत्तसारविविहप्पगारवित्थरपसत्थगुणसंजुयाण अणगारमहरिसीण अणगारगुणाण वण्णओ उत्तमवरतवविसिट्ठणाणजोगजुत्ताण जह य जगहियं भगवओ जारिसा इड्ढिविसेसा देवासुरमाणुसाणं परिसाण पाउब्भावा य जिणसमीव जह य उवासति जिणवरं जह य परिकहति धम्मं लोगगुरू अमरनरसुरगणाण सोऊण य तस्स भासिय अवसेसकम्मविसयविरत्ता नरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुरालं संजम तव चावि बहुविहप्पगारं जह बहूणि वासाणि अणुचरित्ता आराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहियभासिया जिणवराण हिययेणमणुण्णेत्ता जे य जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता लद्धूण य समाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्तमा जह अणुत्तरेसु पावंति जह अणुत्तरं तत्थ विसयसोक्खं तओ य चुआ कमेण काहिंति संजया जहा य अंतकिरियं एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थरेण । अणुत्तरोववाइयदसासु ण परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ संगहणीओ । से ण अंगट्ठयाए नवमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा तिन्नि वग्गा दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइ पयग्गेण प० । संखेज्जाणि अक्खराणि जाव एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जति । से त्त अणुत्तरोववाइयदसाओ ॥ २१८ ॥ से किं त पण्हावागरणाणि ? पण्हावागरणेसु ण अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तर अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं विज्जाइसया नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जति । पण्हावागरणदसासु ण ससमयपरसमयपण्णवयपत्तेअबुद्धविविहत्थभासाभासियाण अइसयगुणउवसमणाणप्पगारआयरियभासियाण वित्थरेण वीरमहेसीहिं विविहवित्थरभासियाण च जगहियाण अद्दागंगुट्ठबाहुअसिमणिखोमआइच्चमाइयाण विविहमहापसिणविज्जामणपसिणविज्जादेवयपयोगपहाणगुणप्पगासियाण सब्भूयदुगुणप्पभावनरगणमइविम्हयकराण अईसयमईयकालसमयदमसमतित्थकरुत्तमस्स ठिइकरणकारणाण दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नुसम्मअस्स अबुहजणविबोहणकरस्स पच्चक्खयपच्चयकराण पण्हाण विविहगुणमहत्था जिणवरप्पणीया आघविज्जति । पण्हावागरणेसु ण परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे एगे सुयक्खंधे पणयालीस उद्देसणकाला पणयालीस समुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पन्नत्ता । संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा जाव चरणकरणपरूवणया आघविज्जति । से त्तं पण्हावागरणाइं ॥ २१९ ॥ से किं त विवागसुयं ? विवागसुए ण सुक्कडदुक्कडाण कम्माण फलविवागे आघविज्जति से समासओ दुविहे

से णं अंगट्ठयाए एगारसमे अंगे वीसं अज्झयणा वीसं उद्देसणकाला वीसं समुद्देसणकाला। संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ता। संखेज्जाणि अक्खराणि अणंता गमा अणंता पज्जवा जाव एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जइ। से त्तं विवागसुए ॥ २२० ॥ से किं तं दिट्ठिवाए ? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणया आघविज्जति। से समासओ पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा-परिकम्मं, सुत्ताई, पुव्वगयं, अणुओगो, चूलिया। से किं तं परिकम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पन्नत्ते, तं जहा-सिद्धसेणियापरिकम्मे, मणुस्ससेणियापरिकम्मे, पुट्ठसेणियापरिकम्मे, ओगाहणसेणियापरिकम्मे, उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे, विप्पजहसेणियापरिकम्मे, चुआचुअसेणियापरिकम्मे। से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पन्नत्ते, तं जहा-माउयापयाणि, एगट्ठियपयाणि, पाढोट्ठपयाणि, आगासपयाणि, केउभूयं, रासिबद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूयं, पडिग्गहो, संसारपडिग्गहो, नंदावत्तं, सिद्धबद्धं, से त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे। से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पन्नत्ते, तं जहा-ताइं चेव माउयापयाणि जाव नंदावत्तं मणुस्सबद्धं, से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे। अवसेसा परिकम्माइं पुट्ठाइयाइं एक्कारसविहाइं पन्नत्ताइं। इच्चेयाइं सत्त परिकम्माइं, छ ससमइयाइं सत्त आजीवियाइं, छ चउक्कणइयाइं सत्त तेरासियाइं, एवामेव सपुव्वावरेणं सत्त परिकम्माइं तेसीति भवतीति मक्खायाइं, से त्तं परिकम्माइं ॥ २२१ ॥ से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं अट्ठासीति भवतीति मक्खायाइं, तं जहा-उज्जुगं परिणयापरिणयं बहुभंगियं विप्पच्चइयं [विन(ज)यचरियं] अणंतरं परंपरं समाणं संजूहं [मासाणं] संभिन्नं अहाच्चयं [अहव्वायं नन्दीए] सोवत्थि(वत्तं) यं णंदावत्तं बहुलं पुट्ठापुट्ठं वियावत्तं एवंभूयं दुआवत्तं वत्तमाणपयं समभिरूढं सव्वओभद्दं पणामं [पस्सासं नन्दीए] दुपडिग्गहं इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णछेअणइआइं ससमयसुत्तपरिवाडीए इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं अछिन्नछेअणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीति सुत्ताइं भवतीति मक्खायाइं, से त्तं सुत्ताइं ॥२२२॥ से किं तं पुव्वगयं ? पुव्वगयं चउद्दसविहं पन्नत्तं, तं जहा-उप्पायपुव्वं, अग्गेणीयं, वीरियं, अत्थिणत्थिप्पवायं, नाणप्पवायं, सच्चप्पवायं, आयप्पवायं, कम्मप्पवायं, पच्चक्खाणप्पवायं, विज्जाणुप्पवायं, अवंझं, पाणाऊ, किरियाविसालं, लोगबिंदुसारं। उप्पायपुव्वस्स णं दसवत्थू पन्नत्ता, चत्तारि चूलियावत्थू पन्नत्ता। अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दसवत्थू प०, बारस चूलियावत्थू प०। वीरियप्पवायस्स णं पुव्वस्स

णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसत्तरि जोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खाया। ते णं निरयावासा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा जाव असुभा निरया असुभाओ निरएसु वेयणाओ एवं सत्त वि भाणियव्वाओ जं जासु जुज्जइ-आसीयं बत्तीसं अट्ठावीसं तहेव वीसं च । अट्ठारस सोलसगं अट्ठुत्तरमेव बाहल्लं ॥ १ ॥ तीसा य पन्नवीसा पन्नरस दसेव सयसहस्साइं । तिन्नेगं पंचूणं पंचेव अणुत्तरा नरगा ॥ २ ॥ चउसट्ठी असुराणं चउरासीइं च होइ नागाणं । बावत्तरि सुवण्णाण वाउकुमाराण छन्नउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं । छण्हं पि जुयलयाणं छावत्तरिमो य सयसहस्सा(स्सा) ॥ ४ ॥ बत्तीसट्ठावीसा बारस अट्ठ चउरो य सयसहस्सा । पन्ना चत्तालीसा छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥ ५ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिन्नि । सत्त विमाणसयाइं चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए । सयमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोच्चाए णं पुढवीए तच्चाए णं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए छट्ठीए पुढवीए सत्तमीए पुढवीए गाहाहिं भाणियव्वा । सत्तमाए पुढवीए पुच्छा । गोयमा ! सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्साइं बाहल्लाए उवरिं अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता हेट्ठा वि अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं वज्जित्ता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु एत्थ णं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंच अणुत्तरा महइमहालया महानिरया प० तं जहा-काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे नामं पंचमे । ते णं निरया वट्टे य तंसा य अहे खुरप्पसंठाणसंठिया जाव असुभा नरगा असुभाओ नरएसु वेयणाओ ॥ २१८ ॥ केवइया णं भंते ! असुरकुमारावासा प० ? गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरि जोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा प० । ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पोक्खरकण्णियासंठाणसंठिया उक्किण्णंतरविउलगंभीरखायफलिहा अट्टालयचरियदारगोउरकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतमुसलमुसुंढिसयग्घिपरिवारिया अउज्झा अडयालकोट्ठरइया अडयालकयवणमाला लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समि-

पाहुडा सखेज्जा पाहुडपाहुडा संखेज्जाओ पाहुडियाओ सखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पन्नत्ता, सखेज्जा अक्खरा अणता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जंति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जंति उवदसिज्जति, एव णाया एव विण्णाया एव चरणकरणपरूवणया आघविज्जति, से त्तं दिट्ठिवाए, से त्त दुवालसगे गणिपिडगे ॥ २२६ ॥ इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अतीतकाले अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतससारकंतारं अणुपरियट्टिंसु, इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरतससारकतारं अणुपरियट्टंति, इच्चेइय दुवालसग गणिपिडगं अणागए काले अणता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरतससारकतारं अणुपरियट्टिस्सति, इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अतीतकाले अणता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतससारकतार वीईवईसु, एव पडुप्पण्णेऽवि, एवं अणागएऽवि । दुवालसगे ण गणिपिडगे ण कयावि णत्थि, ण कयाइ णासी, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च भवति य भविस्सति य (अयले) धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे, से जहा णामए पच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसि, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, (अयला) धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा, एवामेव दुवालसगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसि, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च भवति य भविस्सइ य, (अयले) धुवे जाव अवट्ठिए णिच्चे । एत्थ ण दुवालसगे गणिपिडगे अणता भावा अणता अभावा अणंता हेऊ अणता अहेऊ अणता कारणा अणता अकारणा अणता जीवा अणता अजीवा अणता भवसिद्धिया अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा अणता असिद्धा आघविज्जति पण्णविज्जंति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति । एव दुवालसग गणिपिडग इति ॥ २२७ ॥ दुवे रासी प० त जहा–जीवरासी अजीवरासी य । अजीवरासी दुविहा प० त जहा–रूवी अजीवरासी अरूवी अजीवरासी य । से किं त अरूवी अजीवरासी ? अरूवी अजीवरासी दसविहा प० त जहा–धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए । रूवी अजीवरासी अणेगविहा प० । जाव से किं त अणुत्तरोववाइआ ? अणुत्तरोववाइआ पचविहा प० त जहा–विजयवेजयंतजयतअपराजितसव्वट्ठसिद्धिआ, से त्तं अणुत्तरोववाइआ, से त्तं पंचिंदियससारसमावण्णजीवरासी । दुविहा णेरइया प० त जहा–पज्जत्ता य अपज्जत्ता य, एव दडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिय त्ति । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए केवइय खेत्त ओगाहेत्ता केवइया णिरयावासा प० ?, गोयमा ! इमीसे

रीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरुवा पडिरुवा, एव जं जस्स कमती तं तस्स ज ज गाहाहिं भणिय तह चेव वण्णओ ॥ २२९ ॥ केवइया ण भते ! पुढविकाइयावासा प० गोयमा ! असखेज्जा पुढवीकाइयावासा प० एव जाव मणुस्स त्ति । केवइया ण भते ! वाणमतरावासा प० गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कडस्स जोयणसहस्सवाहल्लस्स उवरिं एग जोयणसय ओगाहेत्ता हेट्ठा चेग जोयणसय वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ ण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा पन्नत्ता, ते ण भोमेज्जा नगरा वाहिं वट्टा अतो चउरसा, एव जहा भवणवासीण तहेव णेयव्वा, णवरं पडागमालाउला सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरुवा पडिरुवा ॥ २३० ॥ केवइया ण भते ! जोइसियाण विमाणावासा पन्नत्ता ? गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउयाइ जोयणसयाइ उड्ढ उप्पइत्ता एत्थ ण दसुत्तरजोयणसयवाहल्ले तिरिय जोइसविसए जोइसियाण देवाण असखेज्जा जोइसियविमाणावासा पन्नत्ता, ते ण जोइसियविमाणावासा अब्भुग्गयमूसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयतीपडागछत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहतसिहरा जालंतररयणपजरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयपत्तपुडरीयतिलयरयणद्धचदचित्ता अतो वाहिं च सण्हा तवणिज्जवालुआपत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा ॥ २३१ ॥ केवइया ण भते ! वेमाणियावासा पन्नत्ता ? गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढ चदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारुवाण वीइवइत्ता वहूणि जोयणाणि वहूणि जोयणसयाणि वहूणि जोयणसहस्साणि वहूणि जोयणसयसहस्साणि वहुइओ जोयणकोडीओ वहुइओ जोयणकोडाकोडीओ असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर वीइवइत्ता एत्थ ण विमाणियाण देवाण सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदवभलतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुएसु गेवेज्जगमणुत्तरेसु य चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइ च सहस्सा तेवीस च विमाणा भवतीति मक्खाया, ते ण विमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णिप्पका णिक्कडच्छाया सप्पभा समरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरुवा पडिरुवा । सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावासा प० ? गोयमा ! वत्तीस विमाणावाससयसहस्सा प०, एवं ईसाणाइसु अट्ठावीस वारस अट्ठ चत्तारि एयाइ सयसहस्साइ पण्णास चत्तालीस छ एयाइ सहस्साइ आणए पाणए चत्तारि आरणच्चुए तिन्नि एयाणि सयाणि, एवं गाहाहिं भाणियव्व ॥ २३२ ॥

नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० । अपज्जत्तगाणं नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए एवं जाव विजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं बत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । सव्वट्ठे अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ २११ ॥ कइ णं भंते सरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा प० तं जहा-ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए । ओरालियसरीरे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते तं जहा-एगिंदियओरालियसरीरे जाव गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरे य । ओरालियसरीरस्स णं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलअसंखेज्जइभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं एवं जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियपमाणं तहा निरवसेसं एवं जाव मणुस्से त्ति उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं । कइविहे णं भंते ! वेउव्वियसरीरे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते-एगिंदियवेउव्वियसरीरे य पंचिंदियवेउव्वियसरीरे य एवं जाव सणंकुमारे आढत्तं जाव अणुत्तराणं भवधारणिज्जा जाव तेसिं रयणी रयणी परिहायइ । आहारगसरीरे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! एगागारे प० । जइ एगागारे प० किं मणुस्सआहारगसरीरे अमणुस्सआहारगसरीरे ? गोयमा ! मणुस्सआहारगसरीरे नो अमणुस्सआहारगसरीरे एवं जइ मणुस्सआहारगसरीरे किं गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे संमुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे ? गोयमा ! गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे नो संमुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे । जइ गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे किं कम्मभूमिया अकम्मभूमिया ? गोयमा ! कम्मभूमिया नो अकम्मभूमिया । जइ कम्मभूमिया किं संखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय नो असंखेज्जवासाउय । जइ संखेज्जवासाउय किं पज्जत्तय अपज्जत्तय ? गोयमा ! पज्जत्तय नो अपज्जत्तय । जइ पज्जत्तय किं सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी सम्मामिच्छद्दिट्ठी ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी-नो मिच्छद्दिट्ठी-नो सम्मामिच्छद्दिट्ठी । जइ सम्मद्दिट्ठी किं संजय असंजय संजयासंजय ? गोयमा ! संजय नो असंजय नो संजयासंजय । जइ संजय किं पमत्तसंजय अपमत्तसंजय ? गोयमा ! पमत्तसंजय नो अपमत्तसंजय । जइ पमत्तसंजय किं इड्ढिपत्त अणिड्ढिपत्त ? गोयमा ! इड्ढिपत्त नो अणिड्ढिपत्त

वयणा विभाणियव्वा आहारयसरीरे समचउरससंठाणसंठिए। आहारयसरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा ! जहन्नेण देसूणा रयणी उक्कोसेणं पडि-पुण्णा रयणी। तेआसरीरे ण भंते ! कतिविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते-एगिंदियतेयसरीरे वितिचउपच० एव जाव गेवेज्जस्स ण भते ! देवस्स णं मार-णंतियसमुग्घाएण समोहयस्स समाणस्स के महालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खभवाहल्लेण आयामेण जहन्नेणं अहे जाव विज्जाहरसेढीओ उक्कोसेणं जाव अहोलोइयग्गामाओ, उड्ढ जाव सयाइं विमाणाइ, तिरिय जाव मणुस्सखेत्त, एव जाव अणुत्तरोववाइया। एव कम्मयसरीर भाणियव्वं ॥ २३४ ॥ भेय विसयसठाणे, अब्भितर वाहिरे य देसोही। ओहिस्स वुड्ढिहाणी, पडिवाई चेव अपडिवाई ॥ १ ॥ २३५ ॥ कइविहे ण भते ! ओही प० ? गोयमा ! दुविहा प०-भवपच्चइए य खओवसमिए य, एव सव्व ओहिपदं भाणियव्वं ॥ २३६ ॥ सीया य दव्व सारीर साता तह वेयणा भवे दुक्खा। अब्भुवगमुवक्कमिया णीयाए चेव अणियाए ॥ १ ॥ नेरइया ण भते ! किं सीत वेयण वेयति उसिण वेयणं वेयति सीतोसिण वेयण वेयति ? गोयमा ! नेरइया० एव चेव वेयणापदं भाणियव्वं ॥ २३७ ॥ कइ ण भते ! लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! छ लेसाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-किण्हा नीला काऊ तेऊ पम्हा सुक्का, एव लेसापय भाणियव्व ॥ २३८ ॥ अणतरा य आहारे, आहाराभोगणा इय। पोग्गला नेव जाणति, अज्झवसाणे य सम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइया ण भते ! अणतराहारा तओ निव्वत्तणया तओ परियाइय-णया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया ? हता गोयमा ! एव आहारपद भाणियव्व ॥ २३९ ॥ कइविहे ण भते ! आउगवंधे प० ? गोयमा ! छव्विहे आउगवधे प०, तं जहा-जाइनामनिहत्ताउए गतिनाम-निहत्ताउए ठिइनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए ओगा-हणानामनिहत्ताउए। नेरइयाण भते ! कइविहे आउगवंधे प० ? गोयमा ! छव्विहे प०, त जहा-जातिनामनिहत्ताउए गइनामनिहत्ताउए ठिइनामनिहत्ताउए पएस-नामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए ओगाहणानामनिहत्ताउए। एव जाव वेमा-णियाण ॥ २४० ॥ निरयगई ण भंते ! केवइय कालं विरहिया उववाएणं प० ? गोयमा ! जहन्नेण एक्क समय उक्कोसेण वारस मुहुत्ते, एव तिरियगई मणुस्सगई देवगई। सिद्धिगई ण भते ! केवइय काल विरहिया सिज्झणयाए प० ? गोयमा ! जहन्नेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासे, एव सिद्धिवज्जा उव्वट्टणा। इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइय काल विरहिया उववाएणं ? एवं उववायदडओ

मालियव्वो उम्मासुणाइक्कमो य । नेरइया णं भंते ! जातिनामनिहत्ताउयं कति
आगरिसेहिं पगरेंति ? गोयमा ! सिय १ सिय २ सिय ३ सिय ४ सिय ५ सिय ६
सिय ७ सिय अट्ठहिं, नो चेव णं नवहिं । एवं सेसाण वि आउगाणि जाव
वेमाणिय त्ति ॥ २४१ ॥ कइविहे णं भंते ! संघयणे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे
संघयणे पन्नत्ते तं जहा–वइरोसभनारायसंघयणे रिसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे
अद्धनारायसंघयणे कीलियासंघयणे छेवट्ठसंघयणे । नेरइया णं भंते ! किंसंघयणी ?
गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी णेव अट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू जे पोग्गला
अणिट्ठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुभा अमणुण्णा अमणामा अमणाभिरामा ते
तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति । असुरकुमाराणं भंते ! किंसंघयणा प० ? गोयमा !
छण्हं संघयणाणं असंघयणी णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू जे पोग्गला इट्ठा कंता
पिया मणुण्णा मणामा मणाभिरामा ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति एवं जाव
थणियकुमाराणं । पुढवीकाइया णं भंते ! किंसंघयणी प० ? गोयमा ! छेवट्ठसंघयणी
प० एवं जाव संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिय त्ति । गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघ-
यणी संमुच्छिममणुस्सा छेवट्ठसंघयणी गब्भवक्कंतियमणुस्सा छव्विहे संघयणे प० ।
जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरजोइसियवेमाणिया य ॥ २४२ ॥ कइविहे णं
भंते ! संठाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे संठाणे पन्नत्ते, तं जहा–समचउरंसे १
णिग्गोहपरिमंडले २ साइए ३ वामणे ४ खुज्जे ५ हुंडे ६ । णेरइया णं भंते !
किंसंठाणी प० ? गोयमा ! हुंडसंठाणी प० । असुरकुमारा णं भंते ! किंसंठाणी
प० ? गोयमा ! समचउरंससंठाणसंठिया प० एवं जाव थणियकुमारा । पुढवी
मसूरसंठाणा प० आऊ थिबुगसंठाणा प० तेऊ सूइकलावसंठाणा प० वाऊ
पडागासंठाणा प० वणस्सई नाणासंठाणसंठिया प० बेइंदियतेइंदियचउरिंदिय-
संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खा हुंडसंठाणा प० गब्भवक्कंतिया छव्विहसंठाणा प०
संमुच्छिममणुस्सा हुंडसंठाणसंठिया प० गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहा
संठाणा प० । जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरजोइसियवेमाणिया वि ॥ २४३ ॥
कइविहे णं भंते ! वेए पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे वेए प० तं जहा–इत्थीवेए पुरि-
सवेए नपुंसवेए । नेरइया णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया प० ?
गोयमा ! णो इत्थीवेए णो पुंवेए णपुंसगवेया प० । असुरकुमारा णं भंते ! किं
इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया ? गोयमा ! इत्थीवेया पुरिसवेया णो णपुंसगवेया
जाव थणियकुमारा पुढवी आऊ तेऊ वाऊ वणस्सई बितिचउरिंदियसंमुच्छिमपं-
चिंदियतिरिक्खसंमुच्छिममणुस्सा णपुंसगवेया गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदियतिरिया

वयणा विभाणियव्वा आहारयसरीरे समचउरंससंठाणसंठिए। आहारयसरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा! जहन्नेण देसूणा रयणी उक्कोसेणं पडि-पुण्णा रयणी। तेआसरीरे ण भंते! कतिविहे प० ? गोयमा! पंचविहे पन्नत्ते-एगिंदियतेयसरीरे बितितिचउपंच० एवं जाव गेवेज्जस्स ण भंते! देवस्स णं मार-णंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स समाणस्स के महालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेण अहे जाव विज्जाहरसेढीओ उक्कोसेण जाव अहोलोइयग्गामाओ, उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइ, तिरियं जाव मणुस्सखेत्तं, एवं जाव अणुत्तरोववाइया। एवं कम्मयसरीरं भाणियव्वं ॥ २३४ ॥ भेय विसयसंठाणे, अब्भिंतर बाहिरे य देसोही। ओहिस्स वुड्ढिहाणी, पडिवाई चेव अपडिवाई ॥ १ ॥ २३५ ॥ कइविहे ण भंते! ओही प० ? गोयमा! दुविहा प०-भवपच्चइए य खओवसमिए य, एवं सव्वं ओहिपदं भाणियव्वं ॥ २३६ ॥ सीया य दव्व सारीर साता तह वेयणा भवे दुक्खा। अब्भुवगमुवक्कमिया णीयाए चेव अणियाए ॥ १ ॥ नेरइया ण भंते! किं सीतं वेयणं वेयंति उसिणं वेयणं वेयंति सीतोसिणं वेयणं वेयंति ? गोयमा! नेरइया० एवं चेव वेयणापदं भाणियव्वं ॥ २३७ ॥ कइ ण भंते! लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा! छ लेसाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-किण्हा नीला काऊ तेऊ पम्हा सुक्का, एवं लेसापयं भाणियव्वं ॥ २३८ ॥ अणंतरा य आहारे, आहाराभोगणा इय। पोग्गला नेव जाणंति, अज्झवसाणे य सम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइया ण भंते! अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया तओ परियाइय-णया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया ? हंता गोयमा! एवं आहारपदं भाणियव्वं ॥ २३९ ॥ कइविहे ण भंते! आउगबंधे प० ? गोयमा! छव्विहे आउगबंधे प०, तं जहा-जाइनामनिहत्ताउए गतिनाम-निहत्ताउए ठिइनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए ओगा-हणानामनिहत्ताउए। नेरइयाण भंते! कइविहे आउगबंधे प० ? गोयमा! छव्विहे प०, तं जहा-जातिनामनिहत्ताउए गइनामनिहत्ताउए ठिइनामनिहत्ताउए पएस-नामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए ओगाहणानामनिहत्ताउए। एवं जाव वेमा-णियाणं ॥ २४० ॥ निरयगई णं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं प० ? गोयमा! जहन्नेण एक्कं समयं उक्कोसेण बारस मुहुत्ते, एवं तिरियगई मणुस्सगई देवगई। सिद्धिगई ण भंते! केवइयं कालं विरहिया सिज्झणयाए प० ? गोयमा! जहन्नेण एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे, एवं सिद्धिवज्जा उव्वट्टणा। इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं कालं विरहिया उववाएणं ? एवं उववायदंडओ

जोइम्मे । ओसप्पिणीए एए तित्थयराणं उ पुव्वभवा ॥ १४ ॥ २४९ ॥ एएसि णं चउव्वीसाए तित्थयराणं चउव्वीसं सीयाओ होत्था तं जहा–सीया सुदंसणा सुप्पभा य सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य । विजया य वेजयंती जयंती अपराजिया चेव ॥ १५ ॥ अरुणप्पभ चंदप्पभ सूरप्पह अग्गि सुप्पभा चेव । विमला य पंचवण्णा सागरदत्ता य नायदत्ता य ॥ १६ ॥ अभयकर निव्वुइकरा मणोरमा तह मणोहरा चेव । देवकुरुउत्तरकुरा विसाल चंदप्पभा सीया ॥ १७ ॥ एयाओ सीयाओ सव्वेसिं चेव जिणवरिंदाणं । सव्वजगवच्छलाणं सव्वोउयसुभाए छायाए ॥ १८ ॥ पुव्विं ओक्खित्ता माणुसेहिं साहट्ठ(ह)रोमकूवेहिं । पच्छा वहंति सीयं असुरिंदसुरिंदनागरिंदा ॥ १९ ॥ चलचवलकुंडलधरा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । सुरअसुरवंदियाणं वहंति सीयं जिणिंदाणं ॥ २० ॥ पुरओ वहंति देवा नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि । पच्चत्थिमेण असुरा गरुला पुण उत्तरे पासे ॥ २१ ॥ उसभो य विणीयाए बारवईए अरिट्ठवरनेमी । अवसेसा तित्थयरा निक्खंता जम्मभूमीसु ॥ २२ ॥ सव्वे वि एगदूसेण [निग्गया जिणवरा चउव्वीसं । न य नाम अन्नलिंगे न य गिहिलिंगे कुलिंगे व ॥ २३ ॥] एक्को भगवं वीरो [पासो मल्ली य तिहिं तिहिं सएहिं । भगवं पि वासुपुज्जो छहिं पुरिससएहिं निक्खंतो ॥ २४ ॥] उग्गाणं भोगाणं रायण्णाणं [च खत्तियाणं च । चउहिं सहस्सेहिं उसभो सेसा उ सहस्सपरिवारा ॥ २५ ॥] सुमइत्थ निच्चभत्तेण[निग्गओ वासुपुज्ज चोत्थेणं । पासो मल्ली य अट्ठमेण सेसा उ छट्ठेणं ॥ २६ ॥] एएसि णं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पढमभिक्खादायारो होत्था तं जहा–सिज्जंस बंभदत्ते सुरिंददत्ते य इंददत्ते य । पउमे य सोमदेवे माहिंदे तह सोमदत्ते य । पुस्से पुणव्वसू पुण्णनंद सुनंदे जये य विजये य । तत्तो य धम्मसीहे सुमित्त तह वग्गसीहे य ॥ २७ ॥ अपराजिय विस्ससेणे वीसइमे होइ उसभसेणे य । दिण्णे वरदत्ते धन्ने बहुले य आणुपुव्वीए ॥ २८ ॥ एए विसुद्धलेसा जिणवरभत्तीइ पंजलिउडा उ । तं कालं तं समयं पडिलाभेंती जिणवरिंदे ॥ २९ ॥ संवच्छरेण भिक्खा लद्धा उसभेण लोगनाहेण । सेसेहिं बीयदिवसे लद्धाओ पढमभिक्खाओ ॥ ३० ॥ उसभस्स पढमभिक्खा खोयरसो आसि लोगनाहस्स । सेसाणं परमन्नं अमियरसरसोवमं आसि ॥ ३१ ॥ सव्वेसिं पि जिणाणं जहियं लद्धाउ पढमभिक्खाउ । तहियं वसुधाराओ सरीरमेत्तीओ वुट्ठाओ ॥ ३२ ॥ २५ ॥ एएसि चउव्वीसाए तित्थयराणं चउव्वीसं चेइयरुक्खा [चेइयरुक्खा जेसि अहे केवलाइं उप्पन्नाइं ति] होत्था तं जहा–नग्गोह सत्तिवण्णे साले पियए पियंगु छत्ताहे । सिरिसे य नागरुक्खे माली य पिलंखुरुक्खे य ॥ ३३ ॥

य निवेया, जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोइसियवेमाणिया वि ॥ २४४ ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं कप्पस्स समोसरणं णेयव्वं, जाव गणहरा सावच्चा निरवच्चा वोच्छिण्णा ॥ २४५ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीआए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, तं जहा-मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे। विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ॥ १ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीयाए ओसप्पिणीए दस कुलगरा होत्था, तं जहा-सयजले सयाऊ य, अजियसेणे अणंतसेणे य। कज्जसेणे भीमसेणे, महाभीमसेणे य सत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए सत्त कुलगरा होत्था, तं जहा-पढमेत्थ विमलवाहण [चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे। तत्तो य पसेणइए मरुदेवे चेव नाभी य ॥ ३ ॥] एतेसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारिया होत्था, तं जहा-चंदजसा चंदकंता [सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य। सिरिकंता मरुदेवी कुलगरपत्तीण णामाइं ॥ ४ ॥] २४६ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे णं ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरो होत्था, तं जहा-णाभी य जियसत्तू य[जियारी संवरे इय। मेहे धरे पइट्ठे य महसेणे य खत्तिए ॥ ५ ॥ सुग्गीवे दढरहे विण्हू वसुपुज्जे य खत्तिए। कयवम्मा सीहसेणे भाणू विस्ससेणे इय ॥ ६ ॥ सूरे सुदंसणे कुंभे, सुमित्तविजए समुद्दविजए य। राया य आससेणे य सिद्धत्थेच्चिय खत्तिए ॥ ७ ॥] उदितोदियकुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहि उववेया। तित्थप्पवत्तयाणं एए पियरो जिणवराणं ॥ ८ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं मायरो होत्था, तं जहा-मरुदेवी विजया सेणा [सिद्धत्था मंगला सुसीमा य। पुहवी लक्खणा रामा नंदा विण्हू जया सामा ॥ ९ ॥ सुजसा सुव्वय अइरा सिरिया देवी पभावई पउमा। वप्पा सिवा य वामा तिसला देवी य जिणमाया ॥ १० ॥] २४७ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तं जहा-उसभ अजिय संभव अभिनंदण सुमइ पउमप्पह सुपास चंदप्पभ सुविहि=पुप्फदंत सीयल सिज्जंस वासुपुज्ज विमल अणंत धम्म संति कुंथु अर मल्लि मुणिसुव्वय णमि णेमि पास वद्धमाणो य ॥ २४८ ॥ एएसि चउवीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था, तं जहा-पढमेत्थ वइरणाभे विमले तह विमलवाहणे चेव। तत्तो य धम्मसीहे सुमित्त तह धम्ममित्ते य ॥ ११ ॥ सुंदरबाहु तह दीहबाहु जुगबाहू लट्ठबाहू य। दिण्णे य इंददत्ते सुंदर माहिंदरे चेव ॥ १२ ॥ सीहरहे मेहरहे रुप्पी अ सुदंसणे य बोद्धव्वे। तत्तो य नंदणे खलु सीहगिरी चेव वीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तु संखे सुदंसणे नंदणे य

तिंदुग पाडल जंबू आसत्थे खलु तहेव दहिवण्णे । णदीरुक्खे तिलए अवयरुक्खे असोगे य ॥ ३४ ॥ चपय वउले य तहा वेडसरुक्खे य धायईरुक्खे । साले य वद्धमाणस्स चेइयरुक्खा जिणवराणं ॥ ३५ ॥ बत्तीस धणुयाइं चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स । णिच्चोउगो असोगो ओच्छण्णो सालरुक्खेणं ॥ ३६ ॥ तिण्णे व गाउआइं चेइयरुक्खो जिणस्स उसमस्स । सेसाण पुण रुक्खा सरीरओ वारसगुणा उ ॥ ३७ ॥ सच्छत्ता सपडागा सवेइया तोरणेहिं उववेया । सुरअसुरगरुलमहिया चेइयरुक्खा जिणवराण ॥ ३८ ॥ २५१ ॥ एएसिं चउवीसाए तित्थगराण चउव्वीस पढमसीसा होत्था, त जहा-पढमेत्थ उसमसेणे बीइए पुण होइ सीहसेणे य । चारू य वज्जणाभे चमरे तह सुव्वय विदब्भे ॥ ३९ ॥ दिण्णे य वराहे पुण आणंदे गोथुभे सुहम्मे य । मदर जसे अरिट्ठे चक्काह सयंभु कुंभे य ॥ ४० ॥ इंदे कुंभे य सुभे वरदत्ते दिण्ण इदभूई य । उदितोदितकुलवंसा विसुद्धवसा गुणेहि उववेया । तित्थप्पवत्तयाणं पढमा सिस्सा जिणवराण ॥ ४१ ॥ २५२ ॥ एएसि ण चउवीसाए तित्थगराण चउवीसं पढमसिस्सिणी होत्था, त जहा-बंभी य फग्गु सामा अजिया कासवीरई सोमा । सुमणा वारुणि सुलसा धारणि धरणी य धरणिधरा ॥ ४२ ॥ पउमा सिवासुयी तह अजुया भावियप्पा य रक्खी य । वधुवती पुप्फवती अज्जा अमिला य अहिया य ॥ ४३ ॥ जक्खिणी पुप्फचूला य चदणऽज्जा य आहियाउ । उदितोदितकुलवंसा विसुद्धवसा गुणेहिं उववेया । तित्थप्पवत्तयाण पढमा सिस्सी जिणवराण ॥ ४४ ॥ २५३ ॥ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए वारह चक्कवट्टिपियरो होत्था, त जहा-उसमे सुमित्ते विजए समुद्दविजए य आससेणे य । विस्ससेणे य सूरे सुदसणे कत्तवीरिए चेव ॥ ४५ ॥ पउमुत्तरे महाहरी विजए राया तहेव य । बंभे वारसमे उत्ते पिउनामा चक्कवट्टीण ॥ ४६ ॥ २५४ ॥ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए वारस चक्कवट्टिमायरो होत्था, तं जहा-सुमगला जसवती भद्दा सहदेवी अइरा सिरिदेवी । तारा जाला (जाला तारा) मेरा वप्पा चुल्लणि अपच्छिमा ॥ २५५ ॥ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी होत्था, त जहा-भरहो सगरो मघव [सणकुमारो य रायसद्दूलो । सती कुंथू य अरो हवइ सुभूमो य कोरव्वो ॥ ४७ ॥ नवमो य महापउमो हरिसेणो चेव रायसद्दूलो । जयनामो य नरवई, वारसमो बंभदत्तो य ॥ ४८ ॥] एएसिं वारसण्हं चक्कवट्टीण वारस इत्थिरयणा होत्था, त जहा-पढमा होइ सुभद्दा भद्द सुणदा जया य विजया य । किण्हसिरी सूरसिरी पउमसिरी वसुंधरा देवी ॥ ४९ ॥ लच्छिमई कुरुमई इत्थिरयणाण नामाइं ॥ २५६ ॥ जंबुद्दीवे ण दीवे

केवली । आगमिस्सेण होक्खंति धम्मतित्थस्स देसगा ॥ ७६ ॥ १६७ ॥ एएसि णं चउव्वीसाए तित्थगराणं पुव्वभविया चउव्वीसं नामधेज्जा भविस्संति, तं जहा-सेणिय सुपास उदए पोट्टिल अणगार तह दढाऊ य । कत्तिय संखे य तहा नंद सुनंदे य सतए य ॥ ७७ ॥ बोद्धव्वा देवई य सच्चइ तह वासुदेव बलदेवे । रोहिणि सुलसा चेव तत्तो खलु रेवई चेव ॥ ७८ ॥ तत्तो हवइ सयाली बोद्धव्वे खलु तहा भयाली य । दीवायणे य कण्हे तत्तो खलु णारए चेव ॥ ७९ ॥ अंबड दारुमडे य साईबुद्धे य होइ बोद्धव्वे । भावीतित्थगराणं णामाइं पुव्वभवियाइं ॥ ८० ॥ १६८ ॥ एएसि णं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पियरो भविस्संति चउव्वीसं मायरो भविस्संति चउव्वीसं पढमसीसा भविस्संति चउव्वीसं पढमसिस्सणीओ भविस्संति चउव्वीसं पढमभिक्खादायगा भविस्संति चउव्वीसं चेइयरुक्खा भविस्संति ॥ १६९ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए बारस चक्कवट्टिणो भविस्संति तं जहा-भरहे य दीहदंते गूढदंते य सुद्धदंते य । सिरिउत्ते सिरिभूई सिरिसोमे य सत्तमे ॥ ८१ ॥ पउमे य महापउमे विमलवाहणे विउलवाहणे चेव । रिट्ठे बारसमे वुत्ते आगमिस्सा भरहाहिवा ॥ ८२ ॥ एएसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस पियरो भविस्संति बारस मायरो भविस्संति बारस इत्थीरयणा भविस्संति ॥ १७० ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नव बलदेववासुदेवपियरो भविस्संति नव वासुदेवमायरो भविस्संति नव बलदेवमायरो भविस्संति नव दसारमंडला भविस्संति तं जहा-उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी एवं सो चेव वण्णओ भाणियव्वो जाव नीलगपीतगवसणा दुवे दुवे रामकेसवा भायरो भविस्संति तं जहा-नंदे य नंदमित्ते दीहबाहू तहा महाबाहू । अइबले महाबले बलभद्दे य सत्तमे ॥ ८३ ॥ दुविट्ठू य तिविट्ठू य आगमिस्साण विण्हुणो । जयंते विजये भद्दे सुप्पभे य सुदंसणे । आणंदे नंदणे पउमे संकरिसणे य अपच्छिमे ॥ ८४ ॥ १७१ ॥ एएसि णं नवण्हं बलदेववासुदेवाणं पुव्वभविया नव नामधेज्जा भविस्संति नव धम्मायरिया भविस्संति नव नियाणभूमीओ भविस्संति नव नियाणकारणा भविस्संति नव पडिसत्तू भविस्संति तं जहा-तिलए य लोहजंघे वइरजंघे य केसरी पहराए । अपराइए य भीमे महाभीमे य सुग्गीवे ॥ ८५ ॥ एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं । सव्वे वि चक्कजोही हम्मिहिंति सचक्केहिं ॥ ८६ ॥ १७२ ॥ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं तित्थगरा भविस्संति, तं जहा-सुमंगले य सिद्धत्थे णिव्वाणे य महाजसे । धम्मज्झए य अरहा, आग-

वासुदेवाण पुव्वभविया नव धम्मायरिया होत्था, त जहा–सभूय सुभद्द सुदमणे य सेयंस कण्ह गगदत्ते अ । सागरसमुद्दनामे दुमसेणे य णवमए ॥ ५७ ॥ एए धम्मायरिया कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण । पुव्वभवे एआसिं जत्थ नियाणाइ कासी य ॥ ५८ ॥ २६० ॥ एएसिं नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे नव नियाणभूमिओ होत्था, त जहा–महुरा य० हत्थिणाउर च ॥ ५९ ॥ २६१ ॥ एएसि ण नवण्हं वासुदेवाणं नव नियाणकारणा होत्था, त जहा–गावी जुवे जाव माउआ ॥ ६० ॥ २६२ ॥ एएसिं नवण्ह वासुदेवाण नव पडिसत्तू होत्था, तं जहा–अस्सग्गीवे जाव जरासधे ॥ ६१ ॥ एए खलु पडिसत्तू जाव सचक्केहिं ॥ ६२ ॥ एक्को य सत्तमीए पच य छट्ठीए पचमी एक्को । एक्को य चउत्थीए कण्हो पुण तच्चपुढवीए ॥ ६३ ॥ अणिदाणकडा रामा [सव्वे वि य केसवा नियाणकडा । उड्ढगामी रामा केसव सव्वे अहोगामी ॥ ६४ ॥] अट्ठतकडा रामा एगो पुण वंभलोयकप्पम्मि । एक्का से गब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेण ॥ ६५ ॥ २६३ ॥ जवुद्दीवे ण दीवे एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीस तित्थयरा होत्था, तं जहा–चदाणण सुचद अग्गीसेणं च नंदिसेण च । इसिदिण्ण वइ(व)हारिं वदिमो सोमचद च ॥६६॥ वदामि जुत्तिसेणं अजियसेण तहेव सिवसेग । वुद्ध च देवसम्म सयय निक्खित्तसत्थ च ॥ ६७ ॥ असजल जिणवसह वदे य अणतय अमियणाणिं । उवसत च धुयरय वदे खलु गुत्तिसेण च ॥ ६८ ॥ अतिपास च सुपास देवेसरवदियं च मरुदेव । निव्वाणगयं च ध(व)रं खीणदुह सामकोट्ठ च ॥६९॥ जियरागमग्गिसेण वदे खीणरायमग्गिउत्तं च । वोक्कसियपिज्जदोस वारिसेण गय सिद्धिं ॥ ७० ॥ २६४ ॥ जवुद्दीवे ण दीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए भारहे वासे सत्त कुलगरा भविस्सति, तं जहा–मियवाहणे सुभूमे य सुप्पमे य सयपभे । दत्ते सुहुमे सुवंधू य आगमिस्साण होक्खति ॥ ७१ ॥ ॥ २६५ ॥ जवुद्दीवे ण दीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे दस कुलगरा भविस्सति, त जहा–विमलवाहणे सीमकरे सीमधरे खेमकरे खेमधरे दढधणू दसधणू सयधणू पडिसुई सुमइ त्ति ॥ २६६ ॥ जवुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीस तित्थगरा भविस्संति, त जहा–महापउमे सूरदेवे, सुपासे य सयपभे । सव्वाणुभूई अरहा, देवस्सुए य होक्खई ॥ ७२ ॥ उदए पेढालपुत्ते य, पोट्टिले सत(त्त)कित्ति य । मुणिसुव्वए य अरहा, सव्वभावविऊ जिणे ॥ ७३ ॥ अममे णिक्कसाए य, निप्पुलाए य निम्ममे । चित्तउत्ते समाही य, आगमिस्सेण होक्खई ॥ ७४ ॥ सवरे (जसोहरे) अणियट्टी य, विजए विमलेति य । देवोववाए अरहा, अणंतविजए इय ॥ ७५ ॥ एए वुत्ता चउव्वीस, भरहे वासम्मि

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

भगवई-विवाहपण्णत्ती

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ १ ॥ णमो बंभीमस्स लिवीअस्स ॥ २ ॥ णमो सुयस्स ॥ ३ ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णामं णयरे होत्था वण्णओ तस्स णं रायगिहस्स णगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणसिलए णामं उज्जाणे होत्था, सेणिए राया चिल्लणा देवी ॥ ४ ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थीए लोगुत्तमे लोगणाहे लोगप्पदीवे लोगपज्जोयगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए [जीवदए] धम्मदेसए धम्मसारहीए धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरणाणदंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहए मुत्ते मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपाविउकामे जाव समोसरणं ॥ ५ ॥ परिसा णिग्गया धम्मो कहिओ परिसा पडिगया ॥ ६ ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमसगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहणारायसंघयणे कणगपुलगणिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से चोद्दसपुव्वी चउणाणोवगए सव्वक्खरसण्णिवाई समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ७ ॥ तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठाए उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ णमंसइ २ त्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी–से णूणं भंते ! चलमाणे चलिए १ उदीरिज्जमाणे उदीरिए २ वेइज्जमाणे वेइए ३, पहिज्जमाणे पहीणे

---

१ रायगिह चलण दुक्खे कंखपओसे य पगइ पुढवीओ जावंते नेरइए बाले गुरुए य चलणाओ ॥ १ ॥

मिस्साण होक्खई ॥ ८७ ॥ विरिचदे पुप्फकेऊ, महाचदे य केवली । सुयसायरे य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ॥ ८८ ॥ सिद्धत्थे पुण्णघोसे य, महाघोसे य केवली । सच्चसेणे य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ॥ ८९ ॥ सूरसेणे य अरहा, महासेणे य केवली । सव्वाणदे य अरहा, देवउत्ते य होक्खई ॥ ९० ॥ सुपासे सुव्वए अरहा, अरहे य सुकोसले । अरहा अणतविजए, आगमिस्साण होक्खई ॥ ९१ ॥ विमले उत्तरे अरहा, अरहा य महावले । देवाणदे य अरहा, आगमिस्साण होक्खई ॥ ९२ ॥ एए वुत्ता चउव्वीस, एरवयमि केवली । आगमिस्साण होक्खति, धम्मतित्थस्स देसगा ॥ ९३ ॥ २७३ ॥ वारस चक्कवट्टिणो भविस्सति, वारस चक्कवट्टिपियरो भविस्सति, वारस चक्कवट्टिमायरो भविस्सति, वारस इत्थी-रयणा भविस्सति ॥ नव वलदेववासुदेवपियरो भविस्सति, णव वासुदेवमायरो भविस्सति, णव वलदेवमायरो भविस्सति, णव दसारमडला भविस्सति, तं जहा-उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा जाव दुवे दुवे रामकेसवा भायरो भविस्सति, णव पडिसत्तू भविस्सति, नव पुव्वभवणामधेज्जा, नव धम्मायरिया, णव णियाणभूमीओ, णव णियाणकारणा, आयाए एरवए आगमिस्साए भाणियव्वा । एव दोसु वि आगमिस्साए भाणियव्वा ॥ २७४ ॥ इच्चेय एवमाहिज्जति, त जहा-कुलगरवसेइ य एव तित्थगरवसेइ य चक्कवट्टिवसेइ य दसारवसेइ य गणधरवसेइ य इसिवसेइ य जइवसेइ य मुणिवसेइ य । सुएइ वा सुअगेइ वा सुयसमासेइ वा सुय-खधेइ वा समवाएइ वा सखेइ वा सम्मत्तमगमक्खाय अज्झयण ति वेमि ॥२७५॥

समवायं चउत्थमंगं समत्तं ॥

प्पज्जइ, सेसं तहेव जाव अणंतभागं आसायंति बेइंदियाणं भंते! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति णो सव्वे आहारेंति? गोयमा! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पन्नत्ते तंजहा-लोमाहारे पक्खेवाहारे य जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिं पोग्गलाणं असंखिज्जइभागं आहारेंति अणेगाइं च णं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमागच्छंति एएसि णं भंते! पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कयरे कयरे अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा पुग्गला अणासाइज्जमाणा अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा बेइंदियाणं भंते! जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति ते णं तेसिं पुग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति? गोयमा! जिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति बेइंदियाणं भंते! पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया तहेव जाव चलियं कम्मं निज्जरंति। तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्तं ठिईए जाव णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमागच्छंति एएसि णं भंते! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाणं ३ पुच्छा गोयमा! सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा तेइंदियाणं घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियवेमायाए भुज्जो २ परिणमंति, चउरिंदियाणं चक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ठिई भणिऊणं ऊसासो वेमायाए, आहारो अणाभोगनिव्वत्तिए अणुसमयं अविरहिओ आभोगनिव्वत्तिओ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तस्स उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति। एवं मणुस्साणवि नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स सोइंदियवेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति सेसं जहा चउरिंदियाणं तहेव जाव निज्जरेंति। वाणमंतराणं ठिईए णाणत्तं परिणमंति अवसेसं जहा णागकुमाराणं एवं जोइसियाणवि नवरं उस्सासो जहन्नेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स आहारो जहन्नेणं दिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेणवि दिवसपुहुत्तस्स सेसं तहेव। वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वा ओहिया ऊसासो जहन्नेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहन्नेणं दिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं सेसं चलियाइयं तहेव जाव निज्जरेंति ॥ १५ ॥ जीवा णं भंते! किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा? गोयमा! अत्थेगइया जीवा आयारंभावि परारंभावि तदुभयारंभावि नो अणारंभा अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा

४, छिज्जमाणे छिन्ने ५, भिज्जमाणे भिन्ने ६, दड्ढ (डज्झ) माणे दड्ढे ७, मिज्जमाणे मए ८, निज्जरिज्जमाणे निज्जिन्ने ९, हता गोयमा! चलमाणे चलिए जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे ॥ एए ण भंते! नव पया किं एगट्ठा णाणाघोसा नाणावजणा उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा?, गोयमा! चलमाणे चलिए १ उदीरिज्जमाणे उदीरिए २ वेइज्जमाणे वेइए ३ पहिज्जमाणे पहीणे ४ ते एए ण चत्तारि पया एगट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा उप्पन्नपक्खस्स, छिज्जमाणे छिन्ने भिज्जमाणे भिन्ने दड्ढ-(डज्झ)-माणे दड्ढे मिज्जमाणे मडे निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे एए ण पच पया णाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा विगयपक्खस्स ॥ ८ ॥ नेरइयाण भंते! केवइकाल ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेण दस वाससहस्साइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई प० १। नेरइयाण भंते! केवइकालस्स आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा णीससति वा?, जहा ऊसासपए २। नेरइया ण भंते आहारट्ठी?, जहा पन्नवणाए पढमए आहारुद्देसए तहा भाणियव्व ३। ठिइ उस्सासाहारे कि वाऽऽहारेंति ३६ सव्वओ वावि ३७। कतिभाग? ३८ सव्वाणि व ३९ कीस व भुज्जो परिणमति? ४० ॥ १ ॥ ९ ॥ नेरइयाण भंते! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया १? आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया २?, अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा पोग्गला परिणया ३?, अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला परिणया ४?, गोयमा! नेरइयाण पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया १, आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया परिणमति य २, अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा पोग्गला नो परिणया परिणमिस्सति ३, अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला नो परिणता णो परिणमिस्सति ४ ॥ १० ॥ नेरइयाण भंते! पुव्वाहारिया पोग्गला चिया पुच्छा, जहा परिणया तहा चियावि, एव चिया उवचिया उदीरिया वेइया निज्जिन्ना, गाहा— परिणय चिया उवचिय उदीरिया वेइया य निज्जिन्ना। एक्केक्कमि पदमि(मी) चउव्विहा पोग्गला होंति ॥ १ ॥ ११ ॥ नेरइयाण भंते! कइविहा पोग्गला भिज्जति?, गोयमा! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जति, तंजहा—अणू चेव वायरा चेव १। नेरइयाण भंते! कतिविहा पोग्गला चिज्जति?, गोयमा! आहारदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहा पोग्गला चिज्जति, तजहा—अणू चेव वायरा चेव २। एवं उवचिज्जति ३। नेर० क० पो० उदीरेंति?, गोयमा! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहे पोग्गले उदीरेंति, तजहा—अणू चेव वायरा चेव, सेसावि एवं चेव भाणियव्वा, एव वेदेंति ५ निज्जरेंति ६ उयट्टिंसु ७ उव्वट्टेंति ८ उव्वट्टिस्संति ९ सकामिंसु १० सकामेंति ११ सकामिस्संति १२ निहत्तिंसु १३ निहत्तेंति १४ निह-

नो परारंभा नो तदुभयारंभा अणारंभा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अत्थेगइया जीवा आयारंभावि ? एवं पडिउच्चारेयव्वं, गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-संसारसमावन्नगा य असंसारसमावन्नगा य, तत्थ णं जे ते असंसारसमावन्नगा ते णं सिद्धा, सिद्धा णं नो आयारंभा जाव अणारम्भा, तत्थ णं जे ते संसारसमावन्नगा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-संजया य असंजया य, तत्थ णं जे ते संजया ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-पमत्तसंजया य अप्पमत्तसंजया य, तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया ते णं नो आयारंभा नो परारंभा जाव अणारंभा, तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया ते सुहं जोगं पडुच्च नो आयारंभा नो परारंभा जाव अणारंभा, असुभं जोगं पडुच्च आयारंभावि जाव नो अणारंभा, तत्थ णं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभावि जाव नो अणारंभा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-अत्थेगइया जीवा जाव अणारंभा ॥ नेरइयाणं भंते ! किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ?, गोयमा ! नेरइया आयारंभावि जाव नो अणारंभा, से केणट्ठेणं भन्ते एवं वुच्चइ ?, गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव नो अणारंभा, एवं जाव असुरकुमाराणवि जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, मणुस्सा जहा जीवा, नवरं सिद्धविरहिया भाणियव्वा, वाणमंतरा जाव वेमाणिया जहा नेरइया । सलेस्सा जहा ओहिया, कण्हलेसस्स नीललेसस्स काउलेसस्स जहा ओहिया जीवा, नवरं पमत्तअप्पमत्ता न भाणियव्वा, तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा, नवरं सिद्धा न भाणियव्वा ॥ १६ ॥ इहभविए भंते ! नाणे परभविए नाणे तदुभयभविए नाणे ?, गोयमा ! इहभविएवि नाणे परभविएवि नाणे तदुभयभविएवि णाणे । दंसणपि एवमेव । इहभविए भंते ! चरित्ते परभविए चरित्ते तदुभयभविए चरित्ते ?, गोयमा ! इहभविए चरित्ते नो परभविए चरित्ते नो तदुभयभविए चरित्ते । एवं तवे संजमे ॥ १७ ॥ असंवुडे णं भंते ! अणगारे किं सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ?, गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं जाव नो अंतं करेइ ?, गोयमा ! असंवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ सिय नो बंधइ अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टइ, से एएणट्ठेणं गोयमा ! असंवुडे अणगारे णो सिज्झइ ५ । संवुडे णं भंते ! अणगारे सिज्झइ ५ ?, हंता सिज्झइ जाव अंतं

सव्वे समकिरिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं ? गोयमा ! णेरइया तिविहा प० तंजहा—सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी तेसि णं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा—आरंभिया १ परि० २ माया ३ अपच्च० ४ तत्थ णं जे ते मिच्छादिट्ठी तेसि णं पंच किरियाओ कज्जंति—आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया एवं सम्मामिच्छादिट्ठीणंपि से तेणट्ठेणं गोयमा ! ॥ णेरइया णं भंते ! सव्वे समाउया सव्वे समोववन्नगा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं ? गोयमा ! णेरइया चउव्विहा प० तंजहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा १ अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा २ अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा ३ अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा ४ से तेणट्ठेणं गोयमा ! ॥ असुरकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा जहा णेरइया तहा भाणियव्वा णवरं कम्मवण्णलेस्साओ परिवन्नेयव्वाओ पुव्वोववन्नगा महाकम्मतरागा अविसुद्धवण्णतरागा अविसुद्धलेसतरागा पच्छोववन्नगा पसत्था सेसं तहेव एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविक्काइयाणं आहारकम्मवण्णलेस्सा जहा णेरइयाणं ॥ पुढविक्काइया णं भंते ! सव्वे समवेयणा ? हंता समवेयणा, से केणट्ठेणं भंते ! समवेयणा ? गोयमा ! पुढविक्काइया सव्वे असण्णी असण्णिभूया अणिदाए वेयणं वेदेंति से तेणट्ठेणं ॥ पुढविक्काइया णं भंते ! सव्वे समकिरिया ? हंता समकिरिया से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढविक्काइया सव्वे माई मिच्छादिट्ठी ताणं णियइयाओ पंच किरियाओ कज्जंति तंजहा—आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया से तेणट्ठेणं समाउया समोववन्नगा जहा णेरइया तहा भाणियव्वा जहा पुढविक्काइया तहा जाव चउरिंदिया । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा णेरइया णाणत्तं किरियासु, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! सव्वे समकिरिया ? गो० णो इ० से केणट्ठेणं ? गो० पंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा प० तंजहा—सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा प० तंजहा—असंजया य संजयासंजया य तत्थ णं जे ते संजयासंजया तेसिणं तिण्णि किरियाओ कज्जंति, तंजहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया असंजयाणं चत्तारि मिच्छादिट्ठीणं पंच सम्मामिच्छादिट्ठीणं पंच मणुस्सा जहा णेरइया णाणत्तं जे महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति आहच्च आहारेंति जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए आहारेंति अभिक्खणं आहारेंति सेसं जहा णेरइयाणं जाव वेयणा । मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समकिरिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं ? गोयमा ! मणुस्सा तिविहा प० तंजहा—सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी तत्थ णं

अणुदिन्नं नो वेएइ, से तेणट्ठेण एवं वुच्चइ-अत्थेगइयं वेएइ अत्थेगतियं नो वेएइ, एवं चउव्वीसदंडएणं जाव वेमाणिए ॥ जीवा णं भंते ! सयंकडं दुक्खं वेएन्ति ?, गोयमा ! अत्थेगइयं वेयन्ति अत्थेगइयं णो वेयन्ति, से केणट्ठेणं ?, गोयमा ! उदिन्नं वेयन्ति नो अणुदिन्नं वेयन्ति, से तेणट्ठेणं, एवं जाव वेमाणिया ॥ जीवे णं भंते ! सयकडं आउयं वेएइ ? गोयमा ! अत्थेगइयं वेएइ अत्थेगइयं नो वेएइ जहा दुक्खेणं दो दंडगा तहा आउएणवि दो दंडगा एगत्तपुहुत्तिया, एगत्तेणं जाव वेमाणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ २० ॥ नेरइया णं भंते ! सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासनीसासा ?, गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ नेरइया नो सव्वे समाहारा नो सव्वे समसरीरा नो सव्वे समुस्सासनिस्सासा ?, गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-महासरीरा य अप्पसरीरा य, तत्थ णं जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति बहुतराए पोग्गले परिणामेंति बहुतराए पोग्गले उस्ससंति बहुतराए पोग्गले नीससंति अभिक्खणं आहारेंति अभिक्खणं परिणामेंति अभिक्खणं ऊससंति अभिक्खणं नी०, तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पुग्गले आहारेंति अप्पतराए पुग्गले परिणामेंति अप्पतराए पोग्गले उस्ससंति अप्पतराए पोग्गले नीससंति आहच्च आहारेंति आहच्च परिणामेंति आहच्च उस्ससंति आहच्च नीससंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-नेरइया नो सव्वे समाहारा जाव नो सव्वे समुस्सासनिस्सासा ॥ नेरइया णं भंते ! सव्वे समकम्मा ?, गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं ?, गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य, तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं महाकम्मतरागा, से तेणट्ठेणं गोयमा !० ॥ नेरइया णं भंते ! सव्वे समवन्ना ?, गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं तहेव ? गोयमा ! जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवन्नतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धवन्नतरागा तहेव से तेणट्ठेणं एवं०॥ नेरइया णं भंते ! सव्वे समलेस्सा ?, गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं जाव नो सव्वे समलेस्सा ?, गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य, तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धलेस्सतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धलेस्सतरागा, से तेणट्ठेणं० ॥ नेरइया णं भंते ! सव्वे समवेयणा ?, गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं ?, गोयमा ! नेरइया दु

सन्निभूया य असन्निभूया य,

जे ते असन्निभूया ते णं अ

मणुस्सदेवाण य जहा नेरइयाणं ॥ एयस्स णं भंते ! नेरइयस्स संसारसंचिट्ठणकालस्स जाव देवसंसारसंचिट्ठणकालस्स जाव विसेसाहिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे देवसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे तिरिक्खजोणिए अणंतगुणे ॥ २३ ॥ जीवे णं भंते ! अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइया करेज्जा अत्थेगइया नो करेज्जा अंतकिरियापयं नेयव्वं ॥ २४ ॥ अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाणं १ अविराहियसंजमाणं २ विराहियसंजमाणं ३ अविराहियसंजमासंजमाणं ४ विराहियसंजमासंजमाणं ५ असण्णीणं ६ तावसाणं ७ कंदप्पियाणं चरगपरिव्वायगाणं ९ किब्बिसियाणं १० तेरिच्छियाणं ११ आजीवियाणं १२ आभिओगियाणं १३ सलिंगीणं दंसणवावन्नगाणं १४ एएसि णं देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाए पण्णत्ते ? गोयमा ! असंजयभवियदव्वदेवाणं जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं उवरिमगेविज्जएसु १ अविराहियसंजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे विमाणे २ विराहियसंजमाणं जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ३ अविराहियसंजमासंजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे ४ विराहियसंजमासंजमाणं जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं जोइसिएसु ५, असण्णीणं जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वाणमंतरेसु ६, अवसेसा सव्वे जह० भवणवा० उक्कोसगं वोच्छामि—तावसाणं जोइसिएसु, कंदप्पियाणं सोहम्मे चरगपरिव्वायगाणं बंभलोए कप्पे किब्बिसियाणं लंतगे कप्पे तेरिच्छियाणं सहस्सारे कप्पे आजीवियाणं अच्चुए कप्पे आभिओगियाणं अच्चुए कप्पे सलिंगीणं दंसणवावन्नगाणं उवरिमगेविज्जएसु १४ ॥ २५ ॥ कइविहे णं भंते ! असण्णिआउए पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे असण्णिआउए पण्णत्ते, तंजहा—नेरइयअसण्णिआउए तिरिक्ख० मणुस्स० देव० । असण्णी णं भंते ! जीवे किं नेरइयाउयं पकरेइ तिरि० मणु० देवाउयं पकरेइ ? हंता गोयमा ! नेरइयाउयंपि पकरेइ तिरि० मणु० देवाउयंपि पकरेइ, नेरइयाउयं पकरेमाणे जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेति तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ, मणुस्साउएवि एवं चेव, देवाउयं जहा नेरइया ॥ एयस्स णं भंते ! नेरइयअसण्णिआउयस्स तिरि० मणु० देवअसण्णिआउयस्स कयरे कयरे जाव विसेसाहिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे देवअसण्णिआउए, मणुस्स० असंखेज्जगुणे तिरिय० असंखेज्जगुणे नेरइए असंखेज्जगुणे । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ २६ ॥ बिइओ उद्देसओ समत्तो ॥

जीवाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ? हंता कडे ॥ से भंते ! किं देसेणं

जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा प०, तंजहा-संजया अस्संजया संजयासंजया य, तत्थ णं जे ते संजया ते दुविहा प०, तंजहा-सरागसंजया य वीयरागसंजया य, तत्थ णं जे ते वीयरागसंजया ते णं अकिरिया, तत्थ णं जे ते सरागसंजया ते दुविहा प०, तंजहा-पमत्तसंजया य अपमत्तसंजया य, तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया तेसिणं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ, तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया तेसिणं दो किरियाओ कज्जंति, तं०-आरंभिया य मायावत्तिया य, तत्थ णं जे ते संजयासंजया तेसिं णं आइल्लाओ तिन्नि किरियाओ कज्जंति, तंजहा-आरंभिया १ परिग्गहिया २ मायावत्तिया ३, अस्संजयाणं चत्तारि किरियाओ कज्जंति-आर० १ परि० २ मायावत्तिया ३ अप्प-च० ४, मिच्छादिट्ठीणं पंच-आरंभि० १ परि० २ माया० ३ अप्पच० ४ मिच्छा-दंसण० ५, सम्मामिच्छदिट्ठीणं पंच ५। वाणमंतरजोतिसवेमाणिया जहा असुरकु-मारा, नवरं वेयणाए नाणत्तं-मायिमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य अप्पवेदणतरा अमायि-सम्मदिट्ठीउववन्नगा य महावेयणतरागा भाणियव्वा, जोतिसवेमाणिया॥ सलेस्सा णं भंते! नेरइया सव्वे समाहारगा?, ओहियाणं सलेस्साणं सुक्कलेस्साणं, एएसि णं तिण्हं एक्को गमो, कण्हलेस्साणं नीललेस्साणंपि एक्को गमो नवरं वेदणाए मायिमि-च्छादिट्ठीउववन्नगा य अमायिसम्मदिट्ठीउवव० भाणियव्वा। मणुस्सा किरियासु सरागवीयरागपमत्तापमत्ता ण भाणियव्वा। काउलेसाएवि एसेव गमो, नवरं नेरइए जहा ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा, तेउलेस्सा पम्हलेस्सा जस्स अत्थि जहा ओहिओ दंडओ तहा भाणियव्वा नवरं मणुस्सा सरागा वीयरागा य न भाणियव्वा, गाहा-दुक्खाउए उदिन्ने आहारे कम्मवन्नलेस्सा य। समवेयणसमकिरिया समाउए चेव बोद्धव्वा॥१॥२१॥ कइ णं भंते! लेस्साओ पन्नत्ताओ?, गोयमा! छल्लेसाओ पन्नत्ता, तंजहा-लेसाणं बीयओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव इड्ढी॥ २२॥ जीवस्स णं भंते! तीतद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे संसारसंचिट्ठणकाले पण्णत्ते?, गोयमा! चउव्विहे संसा-रसंचिट्ठणकाले पण्णत्ते, तंजहा-णेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले तिरिक्ख० मणुस्स० देवसं-सारसंचिट्ठणकाले य पण्णत्ते॥ नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?, गोयमा! तिविहे पण्णत्ते, तंजहा-सुन्नकाले असुन्नकाले मिस्सकाले॥ तिरिक्खजोणि-यसंसार पुच्छा, गोयमा! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-असुन्नकाले य मिस्सकाले य, मणु-स्साण य देवाण य जहा नेरइयाणं॥ एयस्स णं भंते! नेरइयसंसारसंचिट्ठणका-लस्स सुन्नकालस्स असुन्नकालस्स मीसकालस्स य कयरे२हिंतो अप्पा वा बहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा?, गोयमा! सव्व० असुन्नकाले मिस्सकाले अणंतगुणे सुन्न-काले अणंतगुणे॥ तिरि० जो० भंते! सव्व० असुन्नकाले मिस्सकाले अणंतगुणे,

जोगनिमित्ते य ॥ से णं भंते ! पमाए किंपवहे ? गोयमा ! जोगप्पवहे । से णं भंते ! जोए किंपवहे ? गोयमा ! वीरियप्पवहे । से णं भंते ! वीरिए किंपवहे ? गोयमा ! सरीरप्पवहे । से णं भंते ! सरीरे किंपवहे ? गोयमा ! जीवप्पवहे । एवं सति अत्थि उट्ठाणे ति वा कम्मे ति वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा ॥ १४ ॥ से णूणं भंते ! अप्पणा चेव उदीरेइ अप्पणा चेव गरहइ अप्पणा चेव संवरइ ? हंता ! गोयमा ! अप्पणा चेव तं चेव उच्चारियव्वं ३ ॥ जं णं भंते ! अप्पणा चेव उदीरेइ अप्पणा चेव गरहेइ अप्पणा चेव संवरेइ तं किं उदिण्णं उदीरेइ १ अणुदिण्णं उदीरेइ २ अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ ३ उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ४ ? गोयमा ! नो उदिण्णं उदीरेइ १ नो अणुदिण्णं उदीरेइ २ अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ ३ नो उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ४ ॥ जं तं भंते ! अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ तं किं उट्ठाणेणं कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ ? गोयमा ! तं उट्ठाणेणवि कम्मेणवि बलेणवि वीरिएणवि पुरिसक्कारपरक्कमेणवि अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेइ, णो तं अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कार० अणुदिण्णं उदी० भ० क० उदी० एवं सति अत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा ॥ से णूणं भंते ! अप्पणा चेव उवसामेइ अप्पणा चेव गरहइ अप्पणा चेव संवरइ ? हंता गोयमा ! एत्थ वि तहेव भाणियव्वं नवरं अणुदिण्णं उवसामेइ सेसा पडिसेहेयव्वा तिण्णि ॥ जं णं भंते ! अणुदिण्णं उवसामेइ तं किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं वा ? से णूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ ? एत्थवि सच्चेव परिवाडी नवरं उदिण्णं वेएइ नो अणुदिण्णं वेएइ, एवं जाव पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा । से णूणं भंते ! अप्पणा चेव निज्जरेति अप्पणा चेव गरहइ, एत्थवि सच्चेव परिवाडी नवरं उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेइ एवं जाव परिक्कमेइ वा ॥ १५ ॥ नेरइयाणं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेएन्ति ? हंता ! जहा ओहिया जीवा तहा नेरइया जाव थणियकुमारा ॥ पुढविक्काइयाणं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेएंति ? हंता वेएंति कहण्णं भंते ! पुढविक्काइया कंखामोहणिज्जं कम्मं वेएंति ? गोयमा ! तेसि णं जीवाणं णो एवं तक्का इ वा सण्णा इ वा पण्णा इ वा मणे इ वा वइ त्ति वा—अम्हे णं कंखामोहणिज्जं कम्मं वेएमो वेएंति पुण ते । से णूणं भंते ! तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं सेसं तं चेव जाव पुरिसक्कारपरिक्कमेइ वा ।

देसे कडे ? १ देसेणं सव्वे कडे ? २ सव्वेणं देसे कडे ? ३ सव्वेण सव्वे कडे ? ४, गोयमा ! नो देसेण देसे कडे १ नो देसेण सव्वे कडे २ नो सव्वेणं देसे कडे ३ सव्वेणं सव्वे कडे ४ ॥ नेरइया ण भंते ! कखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?, हंता कडे, जाव सव्वेणं सव्वे कडे ४। एव जाव वेमाणियाण दंडओ भाणियव्वो ॥ २७ ॥ जीवा णं भंते ! कखामोहणिज्ज कम्म करिंसु ?, हंता करिंसु। तं भंते ! किं देसेण देस करिंसु ?, एएण अभिलावेणं दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाण, एवं करेंति एत्थवि दडओ जाव वेमाणियाण, एवं करेस्सति, एत्थवि दडओ जाव वेमाणियाण ॥ एव चिए चिणिंसु चिणति चिणिस्सति, उवचिए उवचिणिंसु उवचिणति उवचिणिस्सति, उदीरेंसु उदीरेंति उदीरिस्सति, वेदिंसु वेदति वेदिस्सति, निज्जरेंसु निज्जरेंति निज्जरिस्सति, गाहा–कडचिया उवचिया उदीरिया वेदिया य निज्जिन्ना। आदितिए चउभेदा तियभेदा पच्छिमा तिन्नि ॥ १ ॥ २८ ॥ जीवा ण भंते ! कखामोहणिज्ज कम्म वेदेंति ?, हता वेदेंति। कहन्न भंते ! जीवा कखामोहणिज्ज कम्म वेदेंति ?, गोयमा ! तेहिं तेहिं कारणेहिं संकिया कखिया वितिगिच्छिया भेदसमावन्ना कलुससमावन्ना, एव खलु जीवा कखामोहणिज्ज कम्मं वेदेंति ॥ २९ ॥ से नूण भंते ! तमेव सच्च णीसक ज जिणेहिं पवेइयं ?, हता गोयमा ! तमेव सच्च णीसक जं जिणेहिं पवेदित ॥ ३० ॥ से नूण भंते ! एव मण धारेमाणे एव पकरेमाणे एव चिट्ठेमाणे एव सवरेमाणे आणाए आराहए भवति ?, हता गोयमा ! एव मण धारेमाणे जाव भवइ ॥ ३१ ॥ से नूण भंते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ?, हता गोयमा ! जाव परिणमइ ॥ जण्ण भंते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ त किं पयोगसा वीससा ?, गोयमा ! पयोगसावि तं वीससावि त, जहा ते भंते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ? जहा ते नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ तहा ते अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ?, हता गोयमा ! जहा मे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ तहा मे नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, जहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ तहा मे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ॥ से णूण भंते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज जहा परिणमइ दो आलावगा तहा ते इह गमणिज्जेणवि दो आलावगा भाणियव्वा जाव जहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ॥३२॥ जहा ते भंते ! एत्थ गमणिज्जं तहा ते इह गमणिज्ज जहा ते इहं गमणिज्ज तहा ते एत्थं गमणिज्ज ?, हंता ! गोयमा !, जहा मे एत्थ गमणिज्ज जाव तहा मे एत्थ (इहं) गमणिज्ज ॥३३॥ जीवाण भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं बधंति ?, हता ! बधंति। कह णं भंते ! जीवा कंखामोहणिज्जं कम्म बंधंति ?, गोयमा ! पमा-

तत्थ णं जं तं पएसकम्मं तं नियमा वेएइ, तत्थ णं जं तं अणुभागकम्मं तं अत्थे-
गइयं वेएइ अत्थेगइयं नो वेएइ। णायमेयं अरहया सुयमेयं अरहया विन्नायमेयं
अरहया इमं कम्मं अयं जीवे अज्झोवगमियाए वेयणाए वेइस्सइ इमं कम्मं अयं
जीवे उवक्कमियाए वेयणाए वेइस्सइ, अहाकम्मं अहानिकरणं जहा जहा तं भग-
वया दिट्ठं तहा तहा तं विप्परिणमिस्सतीति से तेणट्ठेणं गोयमा! नेरइयस्स वा
४ जाव मोक्खो ॥ ४४ ॥ एस णं भंते! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं भुवीति
वत्तव्वं सिया? हंता गोयमा! एस णं पोग्गले अतीतमणंतं सासयं समयं भुवीति
वत्तव्वं सिया। एस णं भंते! पोग्गले पडुप्पन्नसासयं समयं भवतीति वत्तव्वं
सिया? हंता गोयमा! तं चेव उच्चारेयव्वं। एस णं भंते! पोग्गले अणागयमणंतं
सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया? हंता गोयमा! तं चेव उच्चारेयव्वं।
एवं खंधेणवि तिन्नि आलावगा एवं जीवेणवि तिन्नि आलावगा भाणियव्वा ॥४५॥
छउमत्थे णं भंते! मणूसे अतीतमणंतं सासयं समयं भुवीति केवलेणं संजमेणं केवलेणं
संवरेणं केवलेणं बंभचेरवासेणं केवलाहिं पवयणमाईहिं सिज्झिंसु बुज्झिंसु जाव सव्व-
दुक्खाणमंतं करिंसु? गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ तं चेव
जाव अंतं करेंसु? गोयमा! जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाण-
मंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा सव्वे ते उप्पन्ननाणदंसणधरा अरहा जिणे
केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाण-
मंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव सव्वदुक्खाण-
मंतं करेंसु। पडुप्पन्नेवि एवं चेव नवरं सिज्झंति भाणियव्वं, अणागएवि एवं चेव,
नवरं सिज्झिस्संति भाणियव्वं, जहा छउमत्थो तहा आहोहिओवि तहा परमाहोहि-
ओऽवि तिन्नि तिन्नि आलावगा भाणियव्वा। केवली णं भंते! मणूसे तीतमणंतं
सासयं समयं जाव अंतं करेंसु? हंता सिज्झिंसु जाव अंतं करेंसु, एते तिन्नि आला-
वगा भाणियव्वा छउमत्थस्स जहा नवरं सिज्झिंसु सिज्झंति सिज्झिस्संति। से नूणं
भंते! तीतमणंतं सासयं समयं पडुप्पन्नं वा सासयं समयं अणागयमणंतं वा सासयं
समयं जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा करेंति वा
करिस्संति वा सव्वे ते उप्पन्ननाणदंसणधरा अरहा जिणे केवली भवित्ता तओ पच्छा
सिज्झंति जाव अंतं करेस्संति वा? हंता गोयमा! तीतमणंतं सासयं समयं जाव
अंतं करेस्संति वा। से नूणं भंते! उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली अलम-
त्थुत्ति वत्तव्वं सिया? हंता गोयमा! उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली अलम-
त्थुत्ति वत्तव्वं सिया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४६॥ चउत्थो उद्देसो समत्तो॥

एवं जाव चउरिंदियाण पचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा ओहिया जीवा ॥ ३६ ॥ अत्थि ण भते ! समणावि निग्गथा कखामोहणिज्ज कम्मं वेएन्ति ?, हता अत्थि, कहन्न भंते ! समणा निग्गथा कखामोहणिज कम्म वेएन्ति ?, गोयमा तेहिं २ नाणतरेहिं दसणतरेहिं चरित्ततरेहिं लिंगतरेहिं पवयणतरेहिं पावयणतरेहिं कप्पतरेहिं मग्गतरेहिं मततरेहिं भगतरेहिं णयतरेहिं नियमतरेहिं पमाणतरेहिं संकिया कखिया वितिगिच्छिया भेयसमावन्ना कलुससमावन्ना, एव खलु समणा निग्गथा कखामोहणिज कम्म वेइति, से नूण भते ! तमेव सच्चं नीसक ज जिणेहिं पवेइय, हता गोयमा ! तमेव सच्च नीसक, जाव पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा सेव भंते ! सेव भंते ! ॥ ३७ ॥ **पढमसए ततिओ उद्देसओ समत्तो ॥**

कति ण भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, कम्मप्पगडीए पढमो उद्देसो नेयव्वो जाव अणुभागो सम्मत्तो । गाहा—कइ पयडी कह बधइ कइहि व ठाणेहि बधई पयडी । कइ वेदेइ य पयडी अणुभागो कइविहो कस्स ? ॥ १ ॥ ३८ ॥ जीवे ण भते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेणं उदिन्नेण उवट्ठाएज्जा ? हता उवट्ठाएज्जा । से भंते ! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा नो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा किं बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?, गोयमा ! बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा णो पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा णो बालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । जीवे ण भते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेणं उदिन्नेणं अवक्कमेज्जा ? हता अवक्कमेज्जा, से भंते ! जाव बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ३?, गोयमा ! बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा नो पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, सिय बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । जहा उदिन्नेण दो आलावगा तहा उवसतेणवि दो आलावगा भाणियव्वा, नवरं उवट्ठाएज्जा पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा बालपडियवीरियत्ताए ॥ से भंते ! किं आयाए अवक्कमइ ? अणायाए अवक्कमइ ? गोयमा ! आयाए अवक्कमइ णो अणायाए अवक्कमइ, मोहणिज्जं कम्मं वेएमाणे से कहमेय भंते ! एव ? गोयमा ! पुव्विं से एय एवं रोयइ इयाणिं से एय एवं नो रोयइ एवं खलु एवं ॥३९॥ से नूण भते ! नेरइयस्स वा तिरिक्खजोणियस्स वा मणूसस्स वा देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे नत्थि तस्स अवेइत्ता मोक्खो ?, हंता गोयमा ! नेरइयस्स वा तिरिक्ख० मणु० देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे नत्थि तस्स अवेइत्ता मोक्खो । से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चति—नेरइयस्स वा जाव मोक्खो, एवं खलु मए गोयमा ! दुविहे कम्मे पण्णत्ते, तजहा—पएसकम्मे य अणुभागकम्मे य,

एवं सत्तावीसं भंगा णेयव्वा ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि समयाहियाए जहन्नठिईए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ?, गोयमा ! कोहोवउत्ते य माणोवउत्ते य मायोवउत्ते य लोभोवउत्ते य कोहोवउत्ता य माणोवउत्ता य मायोवउत्ता य लोभोवउत्ता य अहवा कोहोवउत्ते य माणोवउत्ते य अहवा कोहोवउत्ते य माणोवउत्ता य एवं असीति भंगा नेयव्वा एवं जाव संखिज्जसमयाहिया ठिई असंखेज्जसमयाहियाए ठिईए तप्पाउग्गुक्कोसियाए ठिईए सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा ॥ ४४ ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ओगाहणाठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा ओगाहणाठाणा पन्नत्ता तंजहा—जहन्निया ओगाहणा अंगुलस्स असंखेज्जइभागं जहन्निया ओगाहणा एगपदेसाहिया जहन्निया ओगाहणा, दुप्पएसाहिया जहन्निया ओगाहणा जाव असंखिज्जपएसाहिया जहन्निया ओगाहणा तप्पाउग्गुक्कोसिया ओगाहणा ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहन्नियाए ओगाहणाए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? असीइभंगा भाणियव्वा जाव संखिज्जपएसाहिया जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जपएसाहियाए जहन्नियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं तप्पाउग्गुक्कोसियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं नेरइयाणं दोसुवि सत्तावीसं भंगा ॥ इमीसे णं भंते ! रयण जाव एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं कइ सरीरया पन्नत्ता ? गोयमा ! तिन्नि सरीरया पन्नत्ता तंजहा—वेउव्विए तेयए कम्मए ॥ इमीसे णं भंते ! जाव वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा एएणं गमएणं तिन्नि सरीरा भाणियव्वा ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए जाव नेरइयाणं सरीरया किंसंघयणी पन्नत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी नेवट्ठी नेव छिरा नेव ण्हारूणि जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुहा अमणुन्ना अमणामा, एतेसिं सरीरसंघायत्ताए परिणमंति ॥ इमीसे णं भंते ! जाव छण्हं संघयणाणं असंघयणे वट्टमाणाणं नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभा जाव सरीरया किंसंठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तंजहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पन्नत्ता, तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया तेवि हुंडसंठिया पन्नत्ता। इमीसे णं जाव हुंडसंठाणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं कति लेस्साओ पन्नत्ता ? गोयमा !

कति णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ?, गोयमा ! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-रयणप्पभा जाव तमतमा ॥ इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कति निरयावाससयसहस्सा प० ?, गोयमा ! तीस निरयावाससयसहस्सा प०, गाहा—तीसा य पन्नवीसा पन्नरस दसेव या सयसहस्सा । तिन्नेगं पंचूण पचेव अणुत्तरा निरया ॥ १ ॥ केवइया णं भंते ? असुरकुमारावाससयसहस्सा प० ?, एव—चउसट्ठी असुराण चउरासीई य होइ नागाण । वावत्तरिं सुवन्नाण वाउकुमाराण छन्नउई ॥ १ ॥ दीवदिसाउदहीण विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीण । छण्हपि जुयलयाण छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥ २ ॥ केवइया ण भंते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सा प० ?, गोयमा ! असखेज्जा पुढविक्काइयावाससयसहस्सा प०, गोयमा ! जाव असखिज्जा जोतिसियविमाणावाससयसहस्सा प० । सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावाससयसहस्सा प० ?, गोयमा ! बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा प०, एव-बत्तीसट्ठावीसा वारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा । पन्ना चत्तालीसा छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिन्नि । सत्त विमाणसयाइ चउसुवि एएसु कप्पेसु ॥ २ ॥ एक्कारसुत्तर हेट्ठिमेसु सत्तुत्तर सय च मज्झिमए । सयमेग उवरिमए पचेव अणुत्तरविमाणा ॥ ३ ॥ ४३ ॥ पुढवि ट्ठिति ओगाहण-सरीरसघयणमेव सठाणे । लेस्सा दिट्ठी णाणे जोगुवओगे य दस ठाणा ॥ १ ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि नेरइयाण केवइया ठितिठाणा प० ?, गोयमा ! असखेज्जा ठितिठाणा प०, तजहा—जहन्निया ठिती समयाहिया जहन्निया ठिई दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया जहन्निया ठिई तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिती ॥ इमीसे ण भंते रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि जहन्नियाए ठितीए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ?, गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा कोहोवउत्ता १, अहवा कोहोवउत्ता य माणोवउत्ते य २, अहवा कोहोवउत्ता य माणोवउत्ता य ३, अहवा कोहोवउत्ता य मायोवउत्ते य ४, अहवा कोहोवउत्ता य मायोवउत्ता य ५, अहवा कोहोवउत्ता य लोभोवउत्ते य ६, अहवा कोहोवउत्ता य लोभोवउत्ता य ७ । अहवा कोहोवउत्ता य माणोवउत्ते य मायोवउत्ते य १, कोहोवउत्ता य माणोवउत्ते य मायोवउत्ता य २, कोहोवउत्ता य माणोवउत्ता य मायोवउत्ते य ३, कोहोवउत्ता य माणोवउत्ता य मायोवउत्ता य ४ एव कोहमाणलोभेणवि चउ ४, एव कोहमायालोभेणवि चउ ४ एवं १२, पच्छा माणेण मायाए लोभेण य कोहो भइयव्वो, ते कोह अमुंचता ८,

एगा काउलेस्सा पण्णत्ता । इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए जाव काउलेस्साए वट्ट-माणा सत्तावीस भगा ॥ ४५ ॥ इमीसे ण जाव किं सम्मादिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मा-मिच्छादिट्ठी ?, तिन्निवि । इमीसे ण जाव सम्मदसणे वट्टमाणा नेरइया सत्तावीसं भगा, एव मिच्छादसणेवि, सम्मामिच्छादसणे असीति भगा ॥ इमीसे णं भते ! जाव किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि, तिन्नि नाणाइ नियमा, तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए । इमीसे ण भते ! जाव आभिणिबोहियनाणे वट्टमाणा सत्तावीस भगा, एव तिन्नि नाणाइ तिन्नि अन्नाणाइ भाणियव्वाइं ॥ इमीसे ण जाव किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी, ? तिन्निवि । इमीसे ण जाव मणजोए वट्टमाणा कोहोवउत्ता ?, सत्तावीस भगा । एव वइजोए एव कायजोए ॥ इमीसे ण जाव नेर-इया किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ?, गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारो-वउत्तावि । इमीसे ण जाव सागारोवओगे वट्टमाणा किं कोहोवउत्ता ?, सत्तावीस भगा । एव अणागारोवउत्तावि सत्तावीस भगा ॥ एव सत्तवि पुढवीओ नेयव्वाओ, णाणत्त लेसासु गाहा—काऊ य दोसु तइयाए मीसिया नीलिया चउत्थीए । पच-मियाए मीसा कण्हा तत्तो परमकण्हा ॥ १ ॥ ४६ ॥ चउसट्ठीए ण भते ! असुर-कुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगसि असुरकुमारावाससि असुरकुमाराणं केवइया ठिइ-ठाणा प० ?, गोयमा ! असखेज्जा ठितिठाणा प०, जहन्निया ठिई जहा नेरइया तहा, नवर पडिलोमा भगा भाणियव्वा—सव्वेवि ताव होज्ज लोभोवउत्ता, अहवा लोभोवउत्ता य मायोवउत्ते य, अहवा लोभोवउत्ता य मायोवउत्ता य, एएण गमेणं नेयव्व जाव थणियकुमाराण, नवर णाणत्त जाणियव्व ॥ ४७ ॥ असखेज्जेसु णं भते ! पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयाणं केवतिया ठितिठाणा प० ?, गोयमा ! असखेज्जा ठितिठाणा प०, तंजहा—जहन्निया ठिई जाव तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिई । असखेज्जेसु ण भते ! पुढविकाइयावाससयसह-स्सेसु एगमेगसि पुढविकाइयावाससि जहन्नियाए ठितीए वट्टमाणा पुढविकाइया किं कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ?, गोयमा ! कोहोवउत्तावि माणो-वउत्तावि मायोवउत्तावि लोभोवउत्तावि, एव पुढविकाइयाणं सव्वेसुवि ठाणेसु अभ-गय, नवरं तेउलेस्साए असीति भगा, एवं आउक्काइयावि, तेउक्काइयवाउक्काइयाणं सव्वेसुवि ठाणेसु अभगय ॥ वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया ॥ ४८ ॥ बेइंदिय-तेइंदियचउरिंदियाण जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं असीइभंगा तेहिं ठाणेहिं असीइं चेव, नवरं अब्भहिया सम्मत्ते आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे य, एएहिं असीइभंगा, जेहिं ठाणेहिं नेरइयाण सत्तावीस भगा तेसु ठाणेसु सव्वेसु अभगय ॥ पंचिंदिय-

कज्जइ, जा य कडा जा य कज्जइ जा य कज्जिस्सइ सव्वा सा आणुपुव्विं कडा नो अणाणुपुव्वि कडत्ति वत्तव्व सिया । अत्थि ण भते ! नेरइयाण पाणाइवायकिरिया कज्जइ ?, हता अत्थि । सा भते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ जाव नियमा छद्दिसिं कज्जइ, सा भते ! किं कडा कज्जइ अकडा कज्जइ ?, तं चेव जाव नो अणाणुपुव्वि कडत्ति वत्तव्व सिया, जहा नेरइया तहा एगिंदियवज्जा भाणियव्वा, जाव वेमाणिया, एगिंदिया जहा जीवा तहा भाणियव्वा, जहा पाणाइवाए तहा मुसावाए तहा अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे जाव मिच्छादसणसल्ले, एव एए अट्ठारस, चउवीस दडगा भाणियव्वा, सेव भते ! सेवं भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव जाव विहरति ॥ ५२ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी रोहे नाम अणगारे पगइभद्दए पगइमउए पगइविणीए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे भद्दए विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए ण से रोहे नाम अणगारे जायसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासी–पुव्वि भते ! लोए पच्छा अलोए पुव्वि अलोए पच्छा लोए ?, रोहा ! लोए य अलोए य पुव्विपेते पच्छापेते दोवि एए सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! । पुव्विं भते ! जीवा पच्छा अजीवा पुव्वि अजीवा पच्छा जीवा ?, जहेव लोए य अलोए य तहेव जीवा य अजीवा य, एव भवसिद्धिया य अभवसिद्धिया य सिद्धी असिद्धी सिद्धा असिद्धा, पुव्वि भंते ! अडए पच्छा कुक्कुडी पुव्वि कुक्कुडी पच्छा अडए ?, रोहा ! से ण अडए कओ ?, भयव ! कुक्कुडीओ, सा णं कुक्कुडी कओ ?, भते ! अडयाओ, एवामेव रोहा ! से य अडए सा य कुक्कुडी, पुव्विपेते पच्छापेते दुवेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! । पुव्वि भते ! लोयते पच्छा अलोयते पुव्वि अलोयते पच्छा लोयते ?, रोहा ! लोयते य अलोयते य जाव अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! । पुव्वि भंते ! लोयते पच्छा सत्तमे उवासतरे पुच्छा, रोहा ! लोयते य सत्तमे उवासतरे पुव्विपि दोवि एते जाव अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! । एव लोयते य सत्तमे य तणुवाए, एव घणवाए घणोदही सत्तमा पुढवी, एव लोयंते एक्केक्केण संजोएयव्वे इमेहिं ठाणेहिं–तजहा–ओवासवायघणउदहि पुढवी दीवा य सागरा वासा । नेरइयाई अत्थिय समया कम्माइ लेस्साओ ॥ १ ॥ दिट्ठी दसण णाणा सन्न सरीग य जोग उवओगे । दव्वपएसा पज्जव अद्धा किं पुव्वि लोयते ? ॥ २ ॥ पुव्वि भंते ! लोयते पच्छा सव्वद्धा ? । जहा लोयतेण सजोइया सव्वे ठाणा एते एव अलोयंतेणवि सजोएयव्वा सव्वे । पुव्वि भते !

जाव मणुस्साणं वा ॥ ६ ॥ जीवे णं भंते गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ सिय अणिंदिए वक्कमइ, से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ, से तेणट्ठेणं । जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सिय ससरीरी व० सिय असरीरी वक्कमइ, से केणट्ठेणं ? गोयमा ! ओरालियवेउव्वियआहारयाइं पडुच्च असरीरी व० तेयाकम्माइं प० सस० से तेणट्ठेणं गोयमा ! । जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे तप्पढमयाए किमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसंसिट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारमाहारेइ । जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे किमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारमाहारेइ तदेक्कदेसेणं ओयमाहारेइ । जीवस्स णं भंते ! गब्भगयस्स समाणस्स अत्थि उच्चारेइ वा पासवणेइ वा खेलेइ वा सिंघाणेइ वा वंतेइ वा पित्तेइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे जमाहारेइ तं चिणाइ तं सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमंसुरोमनहत्ताए, से तेणट्ठेणं । जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे पभू मुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ सव्वओ परिणामेइ सव्वओ उस्ससइ सव्वओ निस्ससइ अभिक्खणं आहारेइ अभिक्खणं परिणामेइ अभिक्खणं उस्ससइ अभिक्खणं निस्ससइ आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ आहच्च उस्ससइ आहच्च नीससइ । माउजीवरसहरणी पुत्तजीवरसहरणी माउजीवपडिबद्धा पुत्तजीवं फुडा तम्हा आहारेइ तम्हा परिणामेइ, अवरावि य णं पुत्तजीवपडिबद्धा माउजीवफुडा तम्हा चिणाइ तम्हा उवचिणाइ से तेणट्ठेणं जाव नो पभू मुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए । कइ णं भंते ! माइअंगा प० ? गोयमा ! तओ माइअंगा प० तंजहा—मंसे सोणिए मत्थुलुंगे । कइ णं भंते ! पिइअंगा प० ? गोयमा ! तओ पिइअंगा प० तंजहा—अट्ठि अट्ठिमिंजा केसमंसुरोमनहे । अम्मापिइए णं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावन्ने भवइ एवतियं कालं संचिट्ठइ, अहे णं समए समए वोक्कसिज्जमाणे २ चरमकालसमयंसि वोच्छिन्ने भवइ ॥ ६१ ॥ जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा से केणट्ठेणं ? गोयमा ! से णं सन्नी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणीयं आगयं सोच्चा निसम्म पएसे

उववज्जइ सव्वेण देस उववज्जइ सव्वेण सव्वं उववज्जइ ?, गोयमा ! नो देसेण देस उववज्जइ नो देसेण सव्व उववज्जइ नो सव्वेण देस उववज्जइ सव्वेणं सव्वं उववज्जइ, जहा नेरइए एवं जाव वेमाणिए ॥ १ ॥ ५७ ॥ नेरइए ण भंते ! नेरइए उववज्जमाणे कि देसेण देस आहारेइ १ देसेण सव्वं आहारेइ २ सव्वेण देसं आहारेइ ३ सव्वेणं सव्वं आहारेइ ? ४, गोयमा ! नो देसेणं देस आहारेइ नो देसेण सव्व आहारेइ सव्वेण वा देसं आहारेइ सव्वेण वा सव्व आहारेइ, एव जाव वेमाणिए २ । नेरइए ण भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेण देस उववट्टइ ? जहा उववज्जमाणे तहेव उववट्टमाणेऽवि दडगो भाणियव्वो ३ । नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उववट्टमाणे किं देसेण देस आहारेइ तहेव जाव सव्वेण वा देस आहारेइ ?, सव्वेण वा सव्वं आ० १, एव जाव वेमाणिए ४ । नेरइ० भंते ! नेर० उववन्ने किं देसेणं देस उववन्ने, एसोऽवि तहेव जाव सव्वेण सव्व उववन्ने ?, जहा उववज्जमाणे उववट्टमाणे य चत्तारि दडगा तहा उववन्नेणं उव्वट्टेणवि चत्तारि दडगा भाणियव्वा, सव्वेणं सव्व उववन्ने सव्वेण वा देस आहारेइ सव्वेण वा सव्व आहारेइ, एएण अभिलावेणं उववन्नेवि उव्वट्टणेवि नेयव्व ८ ॥ नेरइए ण भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं अद्धेण अद्ध उववज्जइ ? १ अद्धेण सव्व उववज्जइ ? २ सव्वेण अद्धं उववज्जइ ? ३ सव्वेण सव्व उववज्जइ० ? ४, जहा पढमिल्लेणं अट्ठ दंडगा तहा अद्धेणवि अट्ठ दडगा भाणियव्वा, नवरं जहिं देसेण देस उववज्जइ तहिं अद्धेण अद्ध उववज्जइ इति भाणियव्वं, एव णाणत्त, एते सव्वेवि सोलसदडगा भाणियव्वा ॥ ५८ ॥ जीवे ण भंते ! किं विग्गहगतिसमावन्नए अविग्गहगतिसमावन्नए ?, गोयमा ! सिय विग्गहगइसमावन्नए सिय अविग्गहगतिसमावन्नगे, एव जाव वेमाणिए । जीवा ण भंते ! किं विग्गहगइसमावन्नया अविग्गहगइसमावन्नगा ?, गोयमा ! विग्गहगइसमावन्नगावि अविग्गहगइसमावन्नगावि । नेरइया ण भंते ! किं विग्गहगतिसमावन्नया अविग्गहगतिसमावन्नगा ?, गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा अविग्गहगतिसमावन्नगा १ । अहवा अविग्गहगतिसमावन्नगा य विग्गहगतिसमावन्ने य २ अहवा अविग्गहगतिसमावन्नगा य विग्गहगइसमावन्नगा य ३ ॥ एवं जीवेगिंदियवज्जो तियभगो ॥५९॥ देवे ण भंते ! महिड्ढिए महज्जुइए महब्बले महायसे महासुक्खे महाणुभावे अविउक्कंतिय चयमाणे किंचिविकाल हिरिवत्तिय दुगुछावत्तियं परिसहवत्तिय आहार नो आहारेइ, अहे ण आहारेइ, आहारेज्जमाणे आहारिए परिणामिज्जमाणे परिणामिए पहीणे य आउए भवइ जत्थ उववज्जइ तमाउय पडिसवेएइ, तंजहा–तिरिक्खजोणियाउयं वा मणुस्साउयं वा ?, हता गोयमा ! देवे ण महिड्ढिए

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंतबाले णं मणुस्से नेरइयाउयंपि पकरेइ तिरि०
मणु० देवाउयंपि पकरेइ णेरइयाउयंपि किच्चा णेरइएसु उव० तिरि० मणु० देवा-
उयं किच्चा तिरि० मणु० देवलोएसु उववज्जइ ॥ ६३ ॥ एगंतपंडिए णं भंते ! मणुस्से
किं नेर० पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उव० ?, गोयमा ! एगंतपंडिए
णं मणुस्से आउयं सिय पकरेइ सिय नो पकरेइ, जइ पकरेइ नो नेरइया० पकरेइ
नो तिरि० नो मणु० देवाउयं पकरेइ, नो नेरइयाउयं किच्चा नेर० उव० णो तिरि०
णो मणुस्स० देवाउयं किच्चा देवेसु उव० से केणट्ठेणं जाव देवा० किच्चा देवेसु
उववज्जइ ? गोयमा ! एगंतपंडियस्स णं मणुस्सस्स केवलमेव दो गईओ पन्नायंति
तंजहा–अंतकिरिया चेव कप्पोववत्तिया चेव से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं
किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ बालपंडिए णं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ जाव
देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा
देवेसु उववज्जइ, से केणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-
पंडिए णं मणुस्से तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं
धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म देसं उवरमइ देसं नो उवरमइ देसं पच्चक्खाइ देसं णो
पच्चक्खाइ, से तेणट्ठेणं देसोवरमदेसपच्चक्खाणेणं नो नेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं
किच्चा देवेसु उववज्जइ, से तेणट्ठेणं जाव देवेसु उववज्जइ ॥ ६४ ॥ पुरिसे णं भंते !
कच्छंसि वा १ दहंसि वा २ उदगंसि वा ३ दवियंसि वा ४ वलयंसि वा ५ णूमंसि
वा ६ गहणंसि वा ७ गहणविदुग्गंसि वा ८ पव्वयंसि ९ पव्वयविदुग्गंसि वा १०
वणंसि वा ११ वणविदुग्गंसि वा १२ मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मिय-
वहाए गंता एए मियत्तिकाउं अन्नयरस्स मियस्स वहाए कूडपासं उद्दाइ, तओ णं
भंते ! से पुरिसे कइकिरिए पन्नत्ते ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे कच्छंसि वा
१ (१२) जाव कूडपासं उद्दाइ तावं च णं से पुरिसे सिय तिकि० सिय चउ०
सिय पंच० से केणट्ठेणं सिय ति० सिय च० सिय पं० ? गोयमा ! जे भविए
उद्दवणयाए णो बंधणयाए णो मारणयाए तावं च णं से पुरिसे काइयाए अहिगर-
णियाए पाउसियाए तिहिं किरियाहिं पुट्ठे, जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि णो
मारणयाए तावं च णं से पुरिसे काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारियावणि-
याए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि मारणयाएवि
तावं च णं से पुरिसे काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए जाव पंचहिं पुट्ठे, से
तेणट्ठेणं जाव पंचकिरिए ॥ ६५ ॥ पुरिसे णं भंते ! कच्छंसि वा जाव वणविदुग्गंसि
वा तणाइं ऊसविय २ अगणिकायं निसिरइ तावं च णं से भंते ! से पुरिसे कइ-

निच्छुभइ नि० २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समो० २ चाउरंगिणिं सेणं विउव्वइ चाउरंगिणीसेणं विउव्वेत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएण सद्धिं संगामं संगामेइ, से णं जीवे अत्थकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए अत्थकंखिए रज्जकंखिए भोगकंखिए कामकंखिए अत्थपिवासिए रज्जपिवासिए भोगपिवासिए कामपिवासिए तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए एयंसि णं अंतरंसि कालं करेज्ज नेरइएसु उववज्जइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा। जीवे णं भंते! गब्भगए समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा?, गोयमा! अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा, से केणट्ठेणं?, गोयमा! से णं सन्नी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुरागरत्ते, से णं जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सग्गकामए मोक्खकामए धम्मकंखिए पुण्णकंखिए सग्गमोक्खकं० धम्मपिवासिए पुण्णसग्गमोक्खपिवासिए तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए एयंसि णं अंतरंसि कालं करे० देवलो० उव०, से तेणट्ठेण गोयमा!०। जीवे णं भंते! गब्भगए समाणे उत्ताणए वा पासिल्लए वा अंबखुज्जए वा अच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा माऊए सुयमाणीए सुवइ जागरमाणीए जागरइ सुहियाए सुहिए भवइ दुहियाए दुहिए भवइ?, हंता गोयमा! जीवे णं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ, अहे णं पसवणकालसमयंसि सीसेण वा पाएहिं वा आगच्छइ सममागच्छइ तिरियमागच्छइ विणिहायमागच्छइ॥ वण्णवज्झाणि य से कम्माइं बद्धाइं पुट्ठाइं निहत्ताइं कडाइं पट्ठवियाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमन्नागयाइं उदिन्नाइं नो उवसंताइं भवंति तओ भवइ दुरूवे दुव्वन्ने दुग्गंधे दुरसे दुप्फासे अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुन्ने अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकंतस्सरे अप्पियस्सरे असुभस्सरे अमणुन्नस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणे पच्चायाए यावि भवइ, वन्नवज्झाणि य से कम्माइं नो बद्धाइं पसत्थं नेयव्वं जाव आदेज्जवयण पच्चायाए यावि भवइ, सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥६२॥ **पढमसयस्स सत्तमो उद्देसो समत्तो॥**

रायगिहे समोसरणं जाव एवं वयासी-एगंतबाले णं भंते! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ तिरिक्ख० मणु० देवा० पक०?, नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उव० तिरियाउयं कि० तिरिएसु उवव० मणुस्साउयं किच्चा मणुस्से० उव० देवाउ० कि० देव-

नो अभिसमन्नागयाई नो उदिन्नाई उवसंताई भवंति से णं पराइणइ, जस्स णं वीरि-यवज्झाई कम्माई बद्धाई जाव उदिन्नाई नो उवसंताई भवंति से णं पुरिसे पराइ-णइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-सवीरिए पराइणइ अवीरिए पराइणइ ॥ ७ ॥ जीवा णं भंते ! किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा ! सवीरियावि अवीरियावि ? से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवा दुविहा पन्नत्ता तंजहा–संसारसमावन्नगा य असंसार-समावन्नगा य, तत्थ णं जे ते असंसारसमावन्नगा ते णं सिद्धा सिद्धा णं अवीरिया तत्थ णं जे ते संसारसमावन्नगा ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा सेलेसिपडिवन्नगा य असेलेसिपडिवन्नगा य, तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवन्नगा ते णं लद्धिवीरिएणं सवी-रिया करणवीरिएणं अवीरिया तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिवन्नगा ते णं लद्धिवीरि-एणं सवीरिया करणवीरिएणं सवीरियावि अवीरियावि से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–जीवा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–सवीरियावि अवीरियावि । नेरइया णं भंते ! किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा ! नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया करणवीरिएणं सवीरियावि अवीरियावि से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जेसि णं नेरइयाणं अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ते णं नेरइया लद्धिवीरिएणवि सवीरिया करण-वीरिएणवि सवीरिया जेसि णं नेरइयाणं नत्थि उट्ठाणे जाव परक्कमे ते णं नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया करणवीरिएणं अवीरिया से तेणट्ठेणं जहा नेरइया एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा जहा ओहिया जीवा नवरं सिद्धवज्जा भाणियव्वा वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा नेरइया सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ७१ ॥ पढमसए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

कहन्नं भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छन्ति ? गोयमा ! पाणाइवाएणं मुसा-वाएणं अदिन्ना मेहुण परि कोह माण माया लोभ पे दोस कलह अब्भक्खाण पेसुन्न रतिअरति परपरिवाय मायामोसमिच्छादंसणसल्लेणं एवं खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति । कहन्नं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्व-मागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छन्ति एवं संसारं आउलीकरेंति एवं परि-त्तीकरेंति दीहीकरेंति हस्सीकरेंति एवं अणुपरियट्टंति एवं वीइवयंति–पसत्था चत्तारि अप्पसत्था चत्तारि ॥ ७२ ॥ सत्तमे णं भंते ओवासंतरे किं गुरुए लहुए गुरुयलहुए अगुरुयलहुए ? गोयमा ! नो गुरुए नो लहुए नो गुरुयलहुए अगुरुयलहुए । सत्तमे णं भंते ! तणुवाए किं गुरुए लहुए गुरुयलहुए अगुरुयलहुए ? गोयमा ! नो गुरुए नो लहुए गुरुयलहुए नो अगुरुयलहुए । एवं सत्तमे घणवाए सत्तमे घणोदही सत्तमा

किरिए ?, गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकि० सिय पंच०, से केणट्टेण ?, गोयमा ! जे भविए उस्सवणयाए तिहिं, उस्सवणयाएवि निस्सिरणयाएवि नो दहणयाए चउहिं, जे भविए उस्सवणयाएवि निस्सिरणयाएवि दहणयाएवि ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, से तेण० गोयमा ! ॥ ६६ ॥ पुरिसे णं भंते ! कच्छसि वा जाव वणविदुग्गसि वा मियवित्तीए मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एए मिएत्तिकाउं अन्नयरस्स मियस्स वहाए उसु निसिरइ, ततो ण भंते ! से पुरिसे कइकिरिए ?, गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए, से केणट्ठेण ?, गोयमा ! जे भविए निस्सिरणयाए नो विद्धंसणयाएवि नो मारणयाए तिहिं, जे भविए निस्सिरणयाएवि विद्धसणयाएवि नो मारणयाए चउहिं, जे भविए निस्सिरणयाएवि वि० मा० ताव च ण से पुरिसे जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, से तेणट्ठेण गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए ॥ ६७ ॥ पुरिसे णं भंते ! कच्छसि वा जाव अन्नयरस्स मियस्स वहाए आययकन्नायय उसु आयामेत्ता चिट्ठिज्जा, अन्नयरे पुरिसे मग्गओ आगम्म सयपाणिणा असिणा सीसं छिंदेज्जा से य उसु ताए चेव पुव्वायामणयाए तं विंधेज्जा से ण भंते ! पुरिसे किं मियवेरेणं पुट्ठे पुरिसवेरेण पुट्ठे ?, गोयमा ! जे मियं मारेइ से मियवेरेण पुट्ठे, जे पुरिस मारेइ से पुरिसवेरेण पुट्ठे, से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ जाव से पुरिसवेरेणं पुट्ठे ?, से नूण गोयमा ! कज्जमाणे कडे सधिज्जमाणे सधिए निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए निसिरिज्जमाणे निसिट्ठेत्ति वत्तव्व सिया ?, हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसिट्ठेत्ति वत्तव्व सिया, से तेणट्ठेण गोयमा ! जे मिय मारेइ से मियवेरेण पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे ॥ अतो छण्ह मासाण मरइ काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, बाहिं छण्ह मासाण मरइ काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ६८ ॥ पुरिसे ण भंते ! पुरिस सत्तीए समभिधसेज्जा सयपाणिणा वा से असिणा सीस छिंदेज्जा तओ ण भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?, गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे त पुरिस सत्तीए अभिसंधेइ सयपाणिणा वा से असिणा सीसं छिंदइ ताव च ण से पुरिसे काइयाए अहिगरणि० जाव पाणाइवायकिरियाए पचहिं किरियाहिं पुट्ठे, आसन्नवहएण य अणवकखवत्तिएणं पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥ ६९ ॥ दो भंते ! पुरिसा सरिसया सरित्तया सरिव्वया सरिसभडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धिं सगाम सगामेन्ति, तत्थ ण एगे पुरिसे पराइणइ एगे पुरिसे पराइज्जइ, से कहमेयं भंते ! एव ?, गोयमा ! सवीरिए पराइणइ अवीरिए पराइज्जइ, से केणट्टेण जाव पराइज्जइ ?, गोयमा ! जस्स ण वीरियवज्झाई कम्माइ णो बद्धाइं णो पुट्ठाइं जाव

पकरेंति तं०—इहभवियाउयं च परभवियाउयं च से कहमेयं भंते! एवं? गोयमा! जन्नं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव परभवियाउयं च जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि-एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेति तं०—इहभवियाउयं वा परभवियाउयं वा जं समयं इहभवियाउयं पकरेति णो तं समयं परभवियाउयं पकरेति, जं समयं परभवियाउयं पकरेइ णो तं समयं इहभवियाउयं पकरेइ, इह भवियाउयस्स पकरणताए णो परभवियाउयं पकरेति परभवियाउयस्स पकरणताए णो इहभवियाउयं पकरेति एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेति, तं०—इहभवियाउयं वा परभवियाउयं वा सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे जाव विहरति ॥ ७५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णामं अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति २ त्ता थेरे भगवंते एवं वयासी-थेरा सामाइयं ण याणंति थेरा सामाइयस्स अट्ठं ण याणंति थेरा पच्चक्खाणं ण याणंति थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं ण याणंति थेरा संजमं ण याणंति थेरा संजमस्स अट्ठं ण याणंति थेरा संवरं ण याणंति थेरा संवरस्स अट्ठं ण याणंति थेरा विवेगं ण याणंति थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणंति थेरा विउस्सग्गं ण याणंति थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठं ण याणंति १। तए णं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी-जाणामो णं अज्जो! सामाइयं जाणामो णं अज्जो! सामाइयस्स अट्ठं जाव जाणामो णं अज्जो! विउस्सग्गस्स अट्ठं। तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते एवं वयासी—जति णं अज्जो! तुब्भे जाणह सामाइयं जाणह सामाइयस्स अट्ठं जाव जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठं किं भे अज्जो! सामाइए किं भे अज्जो! सामाइयस्स अट्ठे! जाव किं भे विउस्सग्गस्स अट्ठे ?, तए णं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी-आया णे अज्जो! सामाइए आया णे अज्जो! सामाइयस्स अट्ठे जाव विउस्सग्गस्स अट्ठे। तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते एवं वयासी-'जति भे अज्जो! आया सामाइए आया सामाइयस्स अट्ठे एवं जाव आया विउस्सग्गस्स अट्ठे अवहट्टु कोहमाणमायालोभे किमट्ठं अज्जो! गरहह ? कालास! संजमट्ठयाए, से भंते! किं गरहा संजमे अगरहा संजमे ? कालास! गरहा संजमे नो अगरहासंजमे, गरहावि य णं सव्वं दोसं पविणेति सव्वं बालियं परिन्नाए, एवं खु णे आया संजमे उवहिए भवति, एवं खु णे आया संजमे उवचिए भवति एवं खु णे आया संजमे उवट्ठिए भवति, एत्थ णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे संबुद्धे थेरे भगवंते वंदति णमंसति २ एवं

पुढवी, उवासतराइ सव्वाइ जहा सत्तमे ओवासतरे, (सेसा) जहा तणुवाए, एवं ओवासवायघणउदहि पुढवी दीवा य सागरा वासा । नेरइया ण भते ! किं गुरुया जाव अगुरुलहुया ?, गोयमा ! नो गुरुया नो लहुया गुरुयलहुयावि अगुरुलहुयावि, से केणट्ठेण ?, गोयमा ! वेउव्वियतेयाइ पडुच्च नो गुरुया नो लहुया गुरुयलहुआ नो अगुरुलहुया, जीव च कम्मण च पडुच्च नो गुरुया नो लहुया नो गुरुयलहुया अगुरुयलहुया, से तेणट्ठेणं जाव वेमाणिया, नवरं णाणत्त जाणियव्व सरीरेहिं । धम्मत्थिकाए जाव जीवत्थिकाए चउत्थपएणं । पोग्गलत्थिकाए ण भंते ! किं गुरुए लहुए गुरुयलहुए अगुरुयलहुए ?, गोयमा ! णो गुरुए नो लहुए गुरुयलहुएवि अगुरुयलहुएवि, से केणट्ठेणं ?, गोयमा ! गुरुयलहुयदव्वाइं पडुच्च नो गुरुए नो लहुए गुरुयलहुए नो अगुरुयलहुए, अगुरुयलहुयदव्वाइ पडुच नो गुरुए नो लहुए नो गुरुयलहुए अगुरुयलहुए, समया कम्माणि य चउत्थपदेणं । कण्हलेसा णं भते ! किं गुरुया जाव अगुरुयलहुया ?, गोयमा ! नो गुरुया नो लहुया गुरुयलहुयावि अगुरुयलहुयावि, से केणट्ठेण ?, गोयमा ! दव्वलेस पडुच्च ततियपदेण भावलेस पडुच्च चउत्थपदेण, एव जाव सुक्कलेसा, दिट्ठीदसणनाणअन्नाणसण्णा चउत्थपदेण णेयव्वाओ, हेट्ठिल्ला चत्तारि सरीरा नायव्वा ततियपदेण, कम्मं य चउत्थयपएण, मणजोगो वइजोगो चउत्थएण पदेण, कायजोगो ततिएण पदेण, सागारोवओगो अणागारोवओगो चउत्थपदेण, सव्वपदेसा सव्वदव्वा सव्वपज्जवा जहा पोग्गलत्थिकाओ, तीतद्धा अणागयद्धा सव्वद्धा चउत्थएणं पदेण ॥ ७३ ॥ से नूणं भते ! लाघवियं अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिवद्धया समणाण णिग्गथाण पसत्थं ?, हंता गोयमा ! लाघवियं जाव पसत्थं ॥ से नूण भते ! अकोहत्त अमाणत्त अमायत्तं अलोभत्तं समणाण निग्गंथाण पसत्थं ?, हता गोयमा ! अकोहत्त अमाणत्त जाव पसत्थ ॥ से नूण भते ! कखापदोसे खीणे समणे निग्गथे अतकरे भवति अतिमसारीरिए वा वहुमोहेवि य ण पुव्वि विहरित्ता अह पच्छा सवुडे काल करेति तओ पच्छा सिज्झति ३ जाव अत करेइ ?, हता गोयमा ! कखापदोसे खीणे जाव अत करेति ॥ ७४ ॥ अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति एवं भासेंति एव पण्णवेंति एव परूवेंति–एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पकरेति, तजहा– इहभवियाउय च परभवियाउय च, ज समयं इहभवियाउयं पकरेति त समयं परभवियाउय पकरेति, ज समयं परभवियाउय पकरेति त समय इहभवियाउयं पकरेति, इहभवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउयं पकरेइ, परभवियाउयस्स पकरणयाए इहभवियाउय पकरेति, एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइ

वयासी-एएसि णं भंते ! पयाणं पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अण-भिगमेणं अदिट्ठाणं अस्सुयाणं असुयाणं अविण्णायाणं अव्वोगडाणं अव्वोच्छिन्नाणं अणिज्जूढाणं अणुवधारियाणं एयमट्ठं णो सद्दहिए णो पत्तिइए णो रोइए इयाणिं भंते ! एतेसिं पयाणं जाणणयाए सवणयाए बोहीए अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाणं सुयाणं विण्णायाणं वोगडाणं वोच्छिन्नाणं णिज्जूढाणं उवधारियाणं एयमट्ठं सद्दहामि पत्ति-यामि रोएमि एवमेयं से जहेयं तुब्भे वदह, तए णं ते थेरा भगवंतो कालासवेसि-यपुत्तं अणगारं एवं वयासी-सद्दहाहि अज्जो ! पत्तियाहि अज्जो ! रोएहि अज्जो ! से जहेयं अम्हे वदामो । तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंतो वंदइ नमंसइ २ एवं वदासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं । तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ जस्सट्ठाए कीरइ थेरकप्पभावे जिणकप्पभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतधु-वणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेर-वासो परघरपवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहि-यासिज्जंति तमट्ठं आराहेइ २ चरिमेहिं उस्सासनीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ ७६ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमं-सति २ एवं वदासी-से नूणं भंते ! सेट्ठियस्स य तणुयस्स य किवणस्स य खत्ति-यस्स य समं चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?, हंता गोयमा ! सेट्ठियस्स य जाव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, से केणट्ठेणं भंते ! ?, गोयमा ! अविरतिं पडुच्च से तेण० गोयमा ! एवं वुच्चइ-सेट्ठियस्स य तणु० जाव कज्जइ ॥ ७७ ॥ आहाकम्मं भुंजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधइ किं पकरेइ किं चिणाइ किं उवचिणाइ ?, गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव अणुपरियट्टइ, से केणट्ठेणं जाव अणुपरियट्टइ ?, गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आयाए धम्मं अइक्कमइ आयाए धम्मं अइक्कम-माणे पुढविक्कायं णावकंखइ जाव तसकायं णावकंखइ, जेसिंपि य णं जीवाणं सरी-राइं आहारमाहारेइ तेवि जीवे नावकंखइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-आहा-कम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ जाव अणुपरियट्टइ ॥ फासुए-सणिज्जं भंते ! भुंजमाणे किं बंधइ जाव उवचिणाइ ?, गोयमा ! फासुएसणिज्जं णं

गाहा—ऊसासखंदए वि य १ समुग्घाय २ पुढवि ३ दिय ४ अन्नउत्थियभासा ५ य । देवा य ६ चमरचंचा ७ समय ८ खित्त ९ त्थिकाय १० बीयसए ॥१॥८३॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था वण्णओ सामी समोसढे परिसा निग्गया धम्मो कहिओ पडिगया परिसा । तेणं कालेणं २ जेट्ठे अंतेवासी जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जे इमे भंते ! बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया जीवा एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा नीसासं वा जाणामो पासामो जे इमे पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया एगिंदिया जीवा एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा ण याणामो ण पासामो एए णं भंते ! जीवा आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा ? हंता गोयमा ! एए वि य णं जीवा आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा ॥ ८४ ॥ किण्णं भंते ! जीवा आण पा ऊ नी ? गोयमा ! दव्वओ णं अणंतपएसियाइं दव्वाइं खेत्तओ णं असंखपएसोगाढाइं कालओ अन्नयरठिईयाइं भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा, जाइं भावओ वण्णमंताइं आण पाण ऊस नीस ताइं किं एगवण्णाइं आणमंति पाणमंति ऊस नीस ? आहारगमो नेयव्वो जाव तिचउपंचदिसिं । किण्णं भंते ! नेरइया आ पा ऊ नी ? तं चेव जाव नियमा छद्दिसिं आ पा ऊ नी जीवा एगिंदिया वाघाया य निव्वाघाया य भाणियव्वा, सेसा नियमा छद्दिसिं । वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? हंता गोयमा ! वाउयाए णं जाव नीससंति वा ॥ ८५ ॥ वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता २ तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाति ? हंता गोयमा ! जाव पच्चायाति । से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाति अपुट्ठे उद्दाति ? गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ नो अपुट्ठे उद्दाइ । से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ असरीरी निक्खमइ ? गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ सिय असरीरी निक्खमइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सिय ससरीरी निक्खमइ सिय असरीरी निक्खमइ ? गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पन्नत्ता तंजहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए, ओरालियवेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयकम्मएहिं निक्खमति से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी सिय असरीरी निक्खमइ ॥ ८६ ॥ मडाई णं भंते ! नियंठे नो निरुद्धभवे नो निरुद्धभवपवंचे नो पहीणसंसारे नो पहीणसंसारवेयणिज्जे नो वोच्छिन्नसंसारे नो वोच्छिन्नसंसारवेयणिज्जे नो निट्ठियट्ठे नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्तत्थं हव्वमागच्छति ? हंता गोयमा !

वेदेंति, वत्तव्व सिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा! एवमातिक्खामि, एव खलु चलमाणे चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, कम्हा? दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति?, दोण्ह परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ सा०, ते भिज्जमाणा दुहा कज्जंति, दुहा कज्जमाणे एगयओ प० पोग्गले एगयओ प० पोग्गले भवति, तिण्णि परमा० एगओ साह०, कम्हा? तिन्नि परमाणुपोग्गले एग० सा०?, तिण्ह परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, ते भिज्जमाणा दुहावि तिहावि कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे भवति, तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवति, एव जाव चत्तारिपंचपरमाणुपो० एगओ साहणित्ता २ खंधत्ताए कज्जंति, खंधेवि य ण से असासए सया समिय उवचिज्जइ य अवचिज्जइ य। पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा २ भासासमयवीतिक्कंतं च ण भासिया भासा अभासा जा सा पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा २ भासासमयवीतिक्कंतं च णं भासिया भासा अभासा सा किं भासओ भासा अभासओ भासा?, भासओ णं भासा नो खलु सा अभासओ भासा। पुव्विं किरिया अदुक्खा जहा भासा तहा भाणियव्वा, किरियावि जाव करणओ ण सा दुक्खा नो खलु सा अकरणओ दुक्खा, सेव वत्तव्व सिया-किच्च फुस दुक्ख कज्जमाणकड कट्टु २ पाणभूयजीवसत्ता वेदण वेदेंतीति वत्तव्व सिया ॥ ८० ॥ अण्णउत्थिया ण भंते! एवमाइक्खंति जाव-एव खलु एगे जीवे एगेण समएणं दो किरियाओ पकरेइ, तंजहा-इरियावहिय च संपराइय च, [ज समय इरियावहियं पकरेइ त समय संपराइय पकरेइ, ज समय संपराइय पकरेइ त समय इरियावहिय पकरेइ, इरियावहियाए पकरणताए संपराइय पकरेइ संपराइयपकरणयाए इरियावहिय पकरेइ, एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, तंजहा-इरियावहिय च संपराइय च। से कहमेय भंते एव?, गोयमा! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति त चेव जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि ४-एव खलु एगे जीवे एगसमए एक्क किरिय पकरेइ] परउत्थियवत्तव्व णेयव्व, ससमयवत्तव्वयाए नेयव्व जाव इरियावहिय संपराइयं वा ॥ ८१ ॥ निरयगई ण भंते! केवतिय काल विरहिया उववाएण प०?, गोयमा! जहन्नेण एक्क समयं उक्कोसेण बारस मुहुत्ता, एवं वक्कंतीपय भाणियव्व निरवसेस, सेव भंते! सेव भंते त्ति जाव विहरइ ॥ ८२ ॥ **दसमो उद्देसओ ॥ पढमं सयं समत्तं ॥**

मडाई णं नियंठे जाव पुणरवि इत्थत्त हव्वमागच्छइ ॥ ८७ ॥ से णं भंते ! किं वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! पाणेति वत्तव्व सिया भूतेति वत्तव्वं सिया जीवेत्ति वत्तव्वं० सत्तेत्ति वत्तव्वं० विन्नुत्ति वत्तव्व० वेदेति वत्तव्वं सिया पाणे भूए जीवे सत्ते विन्नू वेएति वत्तव्व सिया, से केणट्ठेणं भंते ! पाणेत्ति वत्तव्व सिया जाव वेदेति वत्तव्व सिया ?, गोयमा ! जम्हा आ० पा० उ० नी० तम्हा पाणेत्ति वत्तव्वं सिया, जम्हा भूते भवति भविस्सति य तम्हा भूएत्ति वत्तव्व सिया, जम्हा जीवे जीवइ जीवत्त आउयं च कम्म उवजीवइ तम्हा जीवेत्ति वत्तव्वं सिया, जम्हा सत्ते सुहासुहेहिं कम्मेहिं तम्हा सत्तेत्ति वत्तव्व सिया, जम्हा तित्तकडुयकसायअंबिलमहुरे रसे जाणइ तम्हा विन्नुत्ति वत्तव्व सिया, वेदेइ य सुहदुक्ख तम्हा वेदेति वत्तव्व सिया, से तेणट्ठेण जाव पाणेत्ति वत्तव्व सिया जाव वेदेति वत्तव्व सिया ॥ ८८ ॥ मडाई णं भंते ! नियंठे निरुद्धभवे निरुद्धभवपवंचे जाव निट्ठियट्ठकरणिज्जे णो पुणरवि इत्थत्तं हव्वमागच्छति ?, हंता गोयमा ! मडाई णं नियंठे जाव नो पुणरवि इत्थत्तं हव्वमागच्छति से ण भंते ! किंति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा ! सिद्धेत्ति वत्तव्वं सिया बुद्धेत्ति वत्तव्व सिया मुत्तेत्ति वत्तव्व० पारगएत्ति व० परंपरगएत्ति व० सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे अंतकडे सव्वदुक्खप्पहीणेत्ति वत्तव्व सिया, सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समण भगव महावीरं वंदइ नमसइ २ संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥ ८९ ॥ तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ, तेण कालेण तेण समएण कयंगलानाम नगरी होत्था वण्णओ, तीसे ण कयंगलाए नगरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए छत्तपलासए नाम उज्जाणे होत्था वण्णओ, तए णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे जाव समोसरणं परिसा निग्गच्छति, तीसे ण कयंगलाए नगरीए अदूरसामंते सावत्थी नामं नयरी होत्था वण्णओ, तत्थ ण सावत्थीए नयरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी खंदए नामं कच्चायणस्सगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ रिउव्वेदजजुव्वेदसामवेदअहव्वणवेदइतिहासपंचमाण निघंटुछट्ठाण चउण्ह वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साण सारए वारए धारए पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे अन्नेसु य बहूसु बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था, तत्थ ण सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए परिवसइ, तए ण से पिंगलए णाम णियंठे वेसालियसावए अण्णया कयाइं जेणेव

समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ जाव पज्जुवासइ। खंदयाइ समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी-से नूणं तुमं खंदया! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए मागहा! किं सअंते लोए अणंते लोए एवं तं चेव जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए, से नूणं खंदया! अयमट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि। जेवि य ते खंदया! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-किं सअंते लोए अणंते लोए? तस्सवि य णं अयमट्ठे-एवं खलु मए खंदया! चउव्विहे लोए पन्नत्ते, तंजहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं एगे लोए सअंते १ खेत्तओ णं लोए असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं प० अत्थि पुण सअंते २, कालओ णं लोए न कयावि न आसी न कयावि न भवति न कयावि न भविस्सति भविंसु य भवति य भविस्सइ य धुवे णितिए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे णत्थि पुण से अंते ३, भावओ णं लोए अणंता वण्णपज्जवा गंध रस फासपज्जवा अणंता संठाणपज्जवा अणंता गरुयलहुयपज्जवा अणंता अगरुयलहुयपज्जवा नत्थि पुण से अंते ४ सेत्तं खंदगा! दव्वओ लोए सअंते खेत्तओ लोए सअंते कालओ लोए अणंते भावओ लोए अणंते। जेवि य ते खंदया! जाव सअंते जीवे अणंते जीवे, तस्सवि य णं अयमट्ठे-एवं खलु जाव दव्वओ णं एगे जीवे सअंते खेत्तओ णं जीवे असंखेज्जपएसिए असंखेज्जपदेसोगाढे अत्थि पुण से अंते कालओ णं जीवे न कयावि न आसि जाव निच्चे नत्थि पुण से अंते भावओ णं जीवे अणंता णाणपज्जवा अणंता दंसणप० अणंता चरित्तप० अणंता अगुरुलहुयप० नत्थि पुण से अंते सेत्तं दव्वओ जीवे सअंते खेत्तओ जीवे सअंते कालओ जीवे अणंते भावओ जीवे अणंते। जेवि य ते खंदया पुच्छा [इमेयारूवे चिंतिए जाव सअंता सिद्धी अणंता सिद्धी तस्सवि य णं अयमट्ठे खंदया!-मए एवं खलु चउव्विहा सिद्धी प० तं०-दव्वओ ४ दव्वओ णं एगा सिद्धी सअंता खेत्तओ णं सिद्धी पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं एगा जोयणकोडी बायालीसं च जोयणसयसहस्साइं तीसं च जोयणसहस्साइं दोन्नि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं अत्थि पुण से अंते कालओ णं सिद्धी न कयावि न आसि भावओ य जहा लोयस्स तहा भाणियव्वा तत्थ दव्वओ सिद्धी सअंता खेत्तओ सिद्धी सअंता कालओ सिद्धी अणंता भावओ सिद्धी अणंता। जेवि य ते खंदया! जाव किं अणंते सिद्धे तं चेव जाव दव्वओ णं एगे सिद्धे सअंते खे० सिद्धे असं-

२ सावत्थीनाम नगरी होत्था वन्नओ, तत्थ ण सावत्थीए नगरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी खदए णाम कच्चायणस्सगोत्ते परिव्वायए परिवसइ तं चेव जाव जेणेव ममं अतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, से त अदूरागते बहुसपत्ते अद्धाणपडिवण्णे अतरापहे वट्टइ । अज्जेव ण दच्छिसि गोयमा !, भंतेत्ति भगव गोयमे समण भगवं वंदइ नमसइ २ एव वदासी-पहू ण भते ! खंदए कच्चायणस्सगोत्ते देवाणुप्पियाणं अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?, हता पभू, जावं च ण समणे भगव महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठ परिकहेइ ताव च णं से खदए कच्चायणस्सगोत्ते त देस हव्वमागते, तए ण भगवं गोयमे खंदय कच्चायणस्सगोत्तं अदूरआगय जाणित्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेति खिप्पामेव पच्चुवगच्छइ २ जेणेव खदए कच्चायणस्सगोत्ते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता खदय कच्चायणस्सगोत्त एव वयासी-हे खदया ! सागयं खदया ! सुसागय खदया ! अणुरागय खदया ! सागयमणुरागय खदया ! से नूण तुम खदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएण नियंठेणं वेसालियसावएण इणमक्खेव पुच्छिए—मागहा ! किं सअते लोगे अणते लोगे ? एव तं चेव जेणेव इह तेणेव हव्वमागए, से नूण खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?, हंता अत्थि, तए ण से खदए कच्चा० भगव गोयम एव वयासी-से केणट्ठेणं गोयमा ! तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा जेण तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए ? जओ णं तुमं जाणसि, तए ण से भगव गोयमे खदय कच्चायणस्सगोत्त एव वयासी-एवं खलु खदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे उप्पण्णणाणदसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वन्नू सव्वदरिसी जेण मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए जओ ण अह जाणामि खंदया ! तए ण से खदए कच्चायणस्सगोत्ते भगवं गोयम एव वयासी—गच्छामो ण गोयमा ! तव धम्मायरिय धम्मोवदेसय समण भगव महावीरं वदामो णमसामो जाव पज्जुवासामो, अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं, तए ण से भगव गोयमे खंदएणं कच्चायणस्सगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणयाए । तेण कालेणं २ समणे भगव महावीरे वियडभोई यावि होत्था, तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियडभोइस्स सरीर ओराल सिंगार कल्लाण सिव धण्ण मगल्ल सस्सिरीय अणलंकियविभूसिय लक्खणवजणगुणोववेय सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे चिट्ठइ । तए णं से खदए कच्चायणस्सगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियडभोइस्स सरीर ओराल जाव अतीव २ उवसोभेमाण पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए जेणेव

खेज्जपएसिए असंखेज्जपदेसोगाढे, अत्थि पुण से अंते, कालओ णं सिद्धे साइए अपज्जवसिए नत्थि पुण से अंते, भा० सिद्धे अणंता णाणपज्जवा अणंता दंसणपज्जवा जाव अणंता अगुरुलहुयप० नत्थि पुण से अंते, सेत्तं दव्वओ सिद्धे सअंते खेत्तओ सिद्धे सअंते का० सिद्धे अणंते भा० सिद्धे अणंते । जेवि य ते खंदया ! इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था-केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा हायति वा ?, तस्सवि य णं अयमट्ठे एवं खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते, तंजहा-बालमरणे य पंडियमरणे य, से किं तं बालमरणे ?, २ दुवालसविहे प०, तं०वलयमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे गिरिपडणे तरुपडणे जलप्पवेसे जलणप्प० विसभक्खणे सत्थोवाडणे वेहाणसे गिद्धपट्ठे । इच्चेतेणं खंदया ! दुवालसविहेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ तिरियमणुदेव० अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टइ, सेत्तं मरमाणे वड्ढइ २, सेत्तं बालमरणे । से किं तं पंडियमरणे ?, २ दुविहे प०, तं० पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य । से किं तं पाओवगमणे ?, २ दुविहे प०, तं०-नीहारिमे य अनीहारिमे य नियमा अप्पडिक्कमे, सेत्तं पाओवगमणे । से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ?, २ दुविहे प०, तं०-नीहारिमे य अनीहारिमे य, नियमा सपडिक्कमे, सेत्तं भत्तपच्चक्खाणे । इच्चेते खंदया ! दुविहेणं पंडियमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ जाव वीईवयति, सेत्तं मरमाणे हायइ, सेत्तं पंडियमरणे । इच्चेएणं खंदया ! दुविहेणं मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढइ वा हायति वा ॥ ९० ॥ एत्थ णं से खंदए कच्चायणस्स गोत्ते संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ एवं वदासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं । तए णं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायणस्सगोत्तस्स तीसे महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ, धम्मकहा भाणियव्वा । तए णं से खंदए कच्चायणस्सगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे जाव हियए उट्ठाए उट्ठेइ २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ एवं वदासी-सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पा०, एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदहत्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ उत्तर-

हिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदा-
रेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडिया-
भूए किसे धमणिसंतए जाते यावि होत्था जीवंजीवेण गच्छइ जीवंजीवेण चिट्ठइ
भासं भासित्तावि गिलाइ भासं भासमाणे गिलाइ भासं भासिस्सामीति गिलाति
से जहा नामए—कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा पत्ततिलभंडगसगडिया इ वा
एरंडकट्ठसगडिया इ वा इंगालसगडिया इ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी ससद्दं
गच्छइ ससद्दं चिट्ठइ एवामेव खंदएवि अणगारे ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठइ उवचिते
तवेणं अवचिए मंससोणिएणं हुयासणेविव भासरासिपडिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवते-
यसिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ ॥ ९२ ॥ तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे
जाव समोसरणं जाव परिसा पडिगया तए णं तस्स खंदयस्स अण० अन्नया
कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए
चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं जाव किसे
धमणिसंतए जाते जीवंजीवेणं गच्छामि जीवंजीवेणं चिट्ठामि जाव गिलामि जाव
एवामेव अहंपि ससद्दं गच्छामि ससद्दं चिट्ठामि तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले
वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे तं जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-
परक्कमे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी
विहरइ ताव ता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलि-
यंमि अहापंडुरे पभाए रत्तासोयप्पकासकिंसुयसुयमुहगुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंड-
बोहए उट्ठियंमि सूरे सहस्सरस्सिंमि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं
वंदित्ता जाव पज्जुवासित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे सयमेव
पंच महव्वयाणि आरोवेत्ता समणा य समणीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं
कडाईहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं २ दुरूहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवातं
पुढवीसिलावट्टयं पडिलेहित्ता दब्भसंथारयं संथरित्ता दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणा-
झूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स
विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते जेणेव
समणे भग० जाव पज्जुवासति खंदयाइ समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं
वयासी—से नूणं तव खंदया! पुव्वरत्तावरत्तकाल० जाव जागरमाणस्स इमेयारूवे
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं तवेणं ओरालेणं
विउलेणं तं चेव जाव कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेसि २
त्ता कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए, से नूणं खंदया!

भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समण भगवं महावीरं वंदइ नमसइ २ एवं वयासी-इच्छामि ण भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए, अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध । तए ण से खदए अणगारे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठे जाव नमसित्ता मासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता णं विहरइ, तए णं से खदए अणगारे मासिय-भिक्खुपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च अहासम्मं काएण फासेति पालेति सोभेति तीरेति पूरेति किट्टेति अणुपालेइ आणाए आराहेइ सम काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणं भगवं जाव नमसित्ता एव वयासी-इच्छामि ण भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासिय भिक्खुपडिमं उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध, त चेव, एव तेमासियं चाउम्मासिय पचछसत्तमा०, पढम सत्तराइदिय दोच्च सत्त-राइदिय तच्च सत्तराइंदिय अहोराइंदिय एगरा०, तए णं से खदए अणगारे एग-राइदिय भिक्खुपडिम अहासुत्त जाव आराहेत्ता जेणेव समणे० तेणेव उवागच्छति २ समण भगव म० जाव नमसित्ता एव वदासी-इच्छामि ण भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसंवच्छर तवोकम्म उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए, अहा-सुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध । तए ण से खदए अणगारे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे जाव नमसित्ता गुणरयणसवच्छरं तवोकम्म उवस-पज्जित्ता ण विहरति, त०-पढम मास चउत्थचउत्थेणं अनिक्खित्तेण तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउ-डेण य । एव दोच्च मास छट्ठछट्ठेण एव तच्च मास अट्ठमअट्ठमेण चउत्थ मासं दसमदसमेणं पचम मास बारसमबारसमेण छट्ठ मास चोद्दसमचोद्दसमेण सत्तम मास सोलसम २ अट्ठम मास अट्ठारसम २ नवमं मास वीसतिम २ दसमं मास बावीस २ एक्कारसम मास चउव्वीसतिम २ बारसम मासं छव्वीसतिमं २ तेरसम मास अट्ठावीसतिम २ चोद्दसमं मास तीसइम २ पन्नरसम मास बत्तीसतिम २ सोलसम मास चोत्तीसइमं २ अनिक्खित्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेण, तए ण से खंदए अणगारे गुणरयणसवच्छर तवोकम्म अहासुत्तं अहाकप्प जाव आराहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समण भगवं महावीर वंदइ नमंसइ २-बहूहिं चउ-त्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावे-माणे विहरति । तए ण से खदए अणगारे तेणं-ओरालेण विउलेणं पयत्तेण पग्ग-

अट्ठे समट्ठे ?, हंता अत्थि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥ ९३ ॥ तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हयहियए उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता समणं भगवं महा० तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ जाव नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ २ त्ता समणे य समणीओ य खामेइ २ त्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं २ दुरूहेइ मेहघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ २ उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ दब्भसंथारयं संथरइ २ त्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयल-परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोऽत्थु णं अरहं-ताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ म० जाव संपा-विउकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इहगते, पासउ मे भयवं तत्थगए इह-गयंति कट्टु वंदइ नमंसति २ एवं वयासी—पुव्विंपि मए समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए इयाणिंपि य णं समणस्स भ० म० अंतिए सव्वं पाणाइ-वायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि, एवं सव्वं असणं पाणं खा० सा० चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव फुसंतुत्तिकट्टु एयंपि णं चरिमेहिं उस्सासनीसासेहिं वोसिरा-मित्तिकट्टु संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंख-माणे विहरति । तए णं से खंदए अण० समणस्स भ० म० तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अण-सणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ॥ ९४ ॥ तए णं ते थेरा भगवंतो खंदयं अण० कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति २ पत्तचीवराणि गिण्हंति २ विपुलाओ पव्वयाओ सणियं २ पच्चोरुहंति २ जेणेव समणे भगवं म० तेणेव उवा० समणं भगवं म० वंदंति नमंसंति २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे पगइभद्दए पगति-विणीए पगतिउवसंते पगतिपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे भद्दए विणीए, से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरो-वित्ता समणे य समणीओ य खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं तं चेव निरव-सेसं जाव आणुपुव्वीए कालगए इमे य से आयारभंडए । भंते त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं म० वंदति नमंसति २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी

भवन्ति महिड्ढिएसु जाव महाणुभागेसु दूरगतीसु चिरट्ठितीएसु, से ण तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे जाव पडिरूवे । से ण तत्थ अन्ने देवे अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ १ अप्पणच्चियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ २ नो अप्पणामेव अप्पाण विउव्विय २ परियारेइ ३, एगेविय ण जीवे एगेण समएण एग वेद वेदेइ, तजहा–इत्थिवेद वा पुरिसवेद वा, ज समय इत्थिवेद वेदेइ णो त समय पुरुसवेय वेएइ ज समय पुरिसवेयं वेएइ नो तं समयं इत्थिवेय वेदेइ, इत्थिवेयस्स उदएणं नो पुरिसवेद वेएइ, पुरिसवेयस्स उदएणं नो इत्थिवेय वेएइ, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग वेद वेदेइ, तजहा–इत्थीवेय वा पुरिसवेय वा, इत्थी इत्थिवेएण उदिन्नेण पुरिस पत्थेइ, पुरिसो पुरिसवेएण उदिन्नेणं इत्थिं पत्थेइ, दोवि ते अन्नमन्नं पत्थेंति, तजहा–इत्थी वा पुरिस पुरिसे वा इत्थिं ॥९९॥ उदगगब्भे ण भते ! उदगगब्भेत्ति कालतो केवच्चिर होइ ?, गोयमा ! जहन्नेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासा ॥ तिरिक्खजोणियगब्भे ण भते ! तिरिक्खजोणियगब्भेत्ति कालओ केवच्चिरं होति ?, गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अट्ठ सवच्छराइ ॥ मणुस्सीगब्भे ण भते ! मणुस्सीगब्भेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?, गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणं वारस सवच्छराइ ॥ १०० ॥ कायभवत्थे ण भते ! कायभवत्थेत्ति कालओ केवच्चिर होइ ?, गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण चउव्वीस सवच्छराइ ॥ १०१ ॥ मणुस्सपचेंदियतिरिक्खजोणियवीए णं भंते ! जोणियब्भूए केवतिय काल संचिट्ठइ ?, गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वारस मुहुत्ता ॥ १०२ ॥ एगजीवे ण भंते ! जोणिए वीयब्भूए केवतियाण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ?, गोयमा ! जहन्नेण इक्कस्स वा दोण्ह वा तिण्ह वा, उक्कोसेण सयपुहुत्तस्स जीवाण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ॥ १०३ ॥ एगजीवस्स णं भते ! एगभवग्गहणेणं केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ? गोयमा ! जहन्नेण इक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ–जाव हव्वमागच्छइ ?, गोयमा ! इत्थीए य पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नाम सजोए समुप्पज्जइ, ते दुहओ सिणेहं सचिणति २ तत्थ णं जहन्नेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति, से तेणट्ठेण जाव हव्वमागच्छइ ॥ १०४ ॥ मेहुणे ण भते ! सेवमाणस्स केरिसिए असजमे कज्जइ ?, गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूयनालिय वा वूरनालिय वा तत्तेण कणएणं समभिधसेज्जा एरिसए ण गोयमा ! मेहुणं सेवमाणस्स असजमे कज्जइ, सेव भते ! सेव भते ! जाव विहरति ॥ १०५ ॥ तए ण

पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ तए णं ते थेरा भगवंतो अन्नया कयाई तुंगियाओ पुप्फवइयचेइयाओ पडिनिक्खमंति २ बहिया जणवयविहारं विहरंति ॥ १५ ॥ तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नगरे जाव परिसा पडिगया। तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूईनामं अणगारे जाव संखित्तविउलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे जाव विहरइ। तए णं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ बीयाए पोरिसीए झाणं झियायइ तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ २ भायणाइं वत्थाइं पडिलेहेइ २ भायणाइं पमज्जइ २ भायणाइं उग्गाहेइ २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए छट्ठक्खमणपारणगंसि रायगिहे नगरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं। तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे २ जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ २ रायगिहे नगरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ। तए णं से भगवं गोयमे रायगिहे न जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया-संजमे णं भंते ! किंफले ! तवे णं भंते ! किंफले !, तए णं ते थेरा भगवंतो ते समणोवासए एवं वयासी-संजमे णं अज्जो ! अणण्हयफले तवे वोदाणफले तं चेव जाव पुव्वतवेणं पुव्वसंजमेणं कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति सच्चे णं एसमट्ठे णो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ॥ से कहमेयं मन्ने एवं ! तए णं समणे गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जायसड्ढे जाव समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्तं समुदाणं गेण्हइ २ रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमइ २ अतुरियं जाव सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा सम म महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ एसणमणेसणं आलोएइ २ भत्तपाणं पडिदंसेइ २ समणं भ महावीरं जाव एवं वयासी-एवं खलु भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहे नगरे उच्चनीयमज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि(मि)

एव खलु देवा०तुगियाए नगरीए वहिया पुप्फवइए उज्जाणे पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइ एयारूवाइ वागरणाईं पुच्छिया—सजमे णं भते ! किंफले ? तवे किंफले ? त चेव जाव सच्चे ण एसमट्ठे णो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए, तं पभू ण भते ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइं वागरणाइ वागरित्तए उदाहु अप्पभू ?, समिया ण भते ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइं वागरित्तए उदाहु असमिया ? आउज्जिया ण भते ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरित्तए ? उदाहु अणाउज्जिया ? पलिउज्जिया ण भंते ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाईं एयारूवाइ वागरणाइ वागरित्तए उदाहु अपलिउज्जिया ?, पुव्वतवेण अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति पुव्वसजमेण कम्मियाए सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति, सच्चे ण एसमट्ठे णो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए, पभू ण गोयमा ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए, णो चेव ण अप्पभू, तह चेव नेयव्व अवसेसियं जाव पभू समिय आउज्जिया पलिउज्जिया जाव सच्चे णं एसमट्ठे णो चेव ण आयभाववत्तव्वयाएं, अहंपि ण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि पुव्वतवेण देवा देवलोएसु उववज्जंति पुव्वसजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जति कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जति सगियाए देवा देवलोएसु उववज्जति, पुव्वतवेण पुव्वसजमेण कम्मियाए सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति, सच्चे ण एसमट्ठे णो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए ॥११०॥ तहारूव भते ! समण वा माहण वा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा ?, गोयमा ! सवणफला, से णं भंते ! सवणे किंफले ?, णाणफले, से ण भते ! नाणे किंफले ?, विण्णाणफले, से ण भंते ! विन्नाणे किंफले ?, पच्चक्खाणफले, से ण भते ! पच्चक्खाणे किंफले ?, सजमफले, से णं भते ! सजमे किंफले ?, अणण्हयफले, एवं अणण्हए तवफले, तवे वोदाणफले, वोदाणे अकिरियाफले, से ण भते ! अकिरिया किं फला ?, सिद्धिपज्जवसाणफला पण्णत्ता गोयमा !, गाहा—सवणे णाणे य विण्णाणे पच्चक्खाणे य सजमे । अणण्हए तवे चेव वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥ १॥ १११ ॥ अण्णउत्थिया ण भते ! एवमातिक्खति भासति पण्णवेंति परूवेंति—एव खलु रायगिहस्स नगरस्स वहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे एत्थ णं महं एगे हरए अघे पन्नत्ते अणेगाइ जोयणाइ आयामविक्खमेणं नाणादुमसडमडितउद्देसे सस्सिरीए जाव पडिरूवे, तत्थ णं बहवे ओराला वलाहया ससेयति सम्मुच्छिति वासंति तव्वतिरित्ते य णं सया समिओ उसिणे २ आउकाए अभिनिस्सवइ । से कहमेय

भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवं परू-
वेंति मिच्छं ते एवमाइक्खंति जाव सव्वं नेयव्वं जाव अहं पुण गोयमा ! एवमाइ-
क्खामि भा. प. प. एवं खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारपव्वयस्स
अदूरसामंते एत्थ णं महातवोवतीरप्पभवे नामं पासवणे पन्नत्ते पंचधणुसयाणि
आयामविक्खंभेणं नाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे
पडिरूवे तत्थ णं बहवे उसिणजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति
विउक्कमंति चयंति उववज्जंति तव्वतिरित्तेवि य णं सया समियं उसिणे २ आउयाए
अभिनिस्सवइ, एस णं गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवे पासवणे एस णं गोयमा !
महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स अट्ठे पन्नत्ते सेवं भंते ! २ त्ति समणं गोयमे
समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ ॥ ११२ ॥ बीए सए पंचमो उद्देसो ॥

से णूणं भंते ! मण्णामीति ओहारिणी भासा एवं भासापदं भाणियव्वं ॥११३॥
बीए सए छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥

कतिविहा णं भंते ! देवा प० ? गोयमा ! चउव्विहा देवा प० तंजहा–भव-
णवइवाणमंतरजोतिसवेमाणिया । कहि णं भंते ! भवणवासीणं देवाणं ठाणा प० ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे देवाणं वत्तव्वया सा भाणि-
यव्वा नवरं भवणा प० उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे एवं सव्वं भाणियव्वं
जाव सिद्धगंडिया समत्ता–कप्पाण पइट्ठाणं बाहुल्लुच्चत्तमेव संठाणं । जीवाभिगमे जाव
वेमाणियउद्देसो भाणियव्वो सव्वो ॥ ११४ ॥ बीए सए सत्तमो उद्देसो ॥

कहि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सभा सुहम्मा प० ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे
वीईवइत्ता अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ अरुणोदयं समुद्दं बायाल-
सीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार-
रन्नो तिगिच्छिकूडे नामं उप्पायपव्वए पन्नत्ते सत्तरसएक्कवीसे जोयणसए उड्ढं
उच्चत्तेणं चत्तारि तीसे जोयणसए कोसं च उव्वेहेणं गोथूभस्स आवासपव्वयस्स
पमाणेणं नेयव्वं नवरं उवरिल्लं पमाणं मज्झे भाणियव्वं [मूले दसबावीसे जोयणसए
विक्खंभेणं मज्झे चत्तारि चउवीसे जोयणसए विक्खंभेणं उवरिं सत्ततेवीसे जोयण-
सए विक्खंभेणं मूले तिण्णि जोयणसहस्साइं दोण्णि य बत्तीसुत्तरे जोयणसए
किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं मज्झे एगं जोयणसहस्सं तिण्णि य इगयाले जोयणसए
किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं उवरिं दोण्णि य जोयणसहस्साइं दोण्णि य छलसीए
जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं] जाव मूले वित्थडे मज्झे संखित्ते उप्पिं

एव खलु देवा०तुंगियाए नगरीए वहिया पुप्फवईए उज्जाणे पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया—संजमे णं भंते ! किंफले ? तवे किंफले ? त चेव जाव सच्चे ण एसमट्ठे णो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए, त पभू ण भंते ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए उदाहु अप्पभू ?, समिया ण भंते ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवास-याण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए उदाहु असमिया ? आउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए ? उदाहु अणाउज्जिया ? पलिउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए उदाहु अपलिउज्जिया ?, पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति पुव्वसंजमेण कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देव-लोएसु उववज्जति, सच्चे ण एसमट्ठे णो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए, पभू ण गोयमा ! ते थेरा भगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए, णो चेव ण अप्पभू, तह चेव नेयव्वं अवसेसियं जाव पभू समियं आउज्जिया पलिउ-ज्जिया जाव सच्चे ण एसमट्ठे णो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए, अहंपि ण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि पुव्वतवेण देवा देवलोएसु उववज्जति पुव्वसजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जति कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जति संगि-याए देवा देवलोएसु उववज्जति, पुव्वतवेण पुव्वसजमेग कम्मियाए सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति, सच्चे ण एसमट्ठे णो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए ॥११०॥

तहारूवं भंते ! समण वा माहण वा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा ?, गोयमा ! सवणफला, से णं भंते ! सवणे किंफले ?, णाणफले, से ण भंते ! नाणे किंफले ?, विण्णाणफले, से णं भंते ! विन्नाणे किंफले ?, पच्चक्खाणफले, से ण भंते ! पच्चक्खाणे किंफले ?, सजमफले, से णं भंते ! सजमे किंफले ?, अणण्हयफले, एवं अणण्हए तवफले, तवे वोदाणफले, वोदाणे अकिरियाफले, से ण भंते ! अकिरिया किंफला ?, सिद्धिपज्जवसाणफला पण्णत्ता गोयमा !, गाहा—सवणे णाणे य विण्णाणे पच्चक्खाणे य सजमे । अणण्हए तवे चेव वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥ १ ॥ १११ ॥

अण्णउत्थिया ण भंते ! एवमातिक्खति भासति पण्णवेति परूवेति—एवं खलु राय-गिहस्स नगरस्स वहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे एत्थ ण महं एगे हरए अघे पन्नत्ते । अणेगाइं जोयणाइं आयामविक्खंभेणं नाणादुमसंडमंडितउद्देसे सस्सिरीए जाव पडिरूवे, तत्थ ण बहवे ओराला बलाहया संसेयंति सम्मुच्छिंति वासंति तव्वतिरित्ते य णं सया समिओ उसिणे २ आउकाए अभिनिस्सवइ । से कहमेय

विसाले मज्झे वरवइरविग्गहिए महामउंदसठाणसठिए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे, से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसडेण य सव्वओ समता संपरिक्खित्ते, पउमवरवेइयाए वणसंडस्स य वण्णओ, तस्स णं तिगिच्छिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, वण्णओ, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ ण महं एगे पासायवडिंसए पन्नत्ते, अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पणवीस जोयणसयाइ विक्खभेग, पासायवण्णओ उल्लोयभूमिवन्नओ अट्ठ जोयणाइ मणिपेढिया चमरस्स सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं, तस्स ण तिगिच्छिकूडस्स दाहिणेणं छक्कोडिसए पणपन्न च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइ पण्णासं च सहस्साइ अरुणोदे समुद्दे तिरिय वीइवइत्ता अहे रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता एत्थ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचा नाम रायहाणी प० एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण जबुद्दीवप्पमाण, पागारो दिवड्ढ जोयणसय उड्ढ उच्चत्तेण मूले पन्नास जोयणाइ विक्खभेण उवरिं अद्धतेरसजोयणा कविसीसगा अद्धजोयणआयाम कोसं विक्खंभेणं देसूणं अद्धजोयण उड्ढ उच्चत्तेण एगमेगाए बाहाए पंच २ दारसया अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ २५० उड्ढ उच्चत्तेणं १२५ अद्ध विक्खभेण उवरियलेण सोलसजोयणसहस्साइ आयामविक्खभेण पन्नास जोयणसहस्साइ पच य सत्ताणउयजोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण सव्वप्पमाणं वेमाणियप्पमाणस्स अद्ध नेयव्व, सभा सुहम्मा, तओ उववायसभा हरओ अभिसेय० अलकारो जहा विजयस्स अभिसेयविभूसणा य ववसाओ । चमरपरिवार इड्ढत्तं ॥ ११५ ॥ **बीयसए अट्ठमो उद्देसओ समत्तो ॥**

किमिद भंते ! समयखेत्तेत्ति पवुच्चति ?, गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा दो य समुद्दा एस ण एवइए समयखेत्तेति पवुच्चति, तत्थ ण अय जबुद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतरे एव जीवाभिगमवत्तव्वया (जोइसविहूण) नेयव्वा जाव अब्भितरं पुक्खरद्ध जोइसविहूण (इमा गाहा) ॥ ११६ ॥ **वितीयस्स नवमो उद्देसो ॥**

कति ण भते ! अत्थिकाया प० ?, गोयमा ! पंच अत्थिकाया प०, तंजहा-धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ॥ धम्मत्थिकाए ण भते ! कतिवन्ने कतिगंधे कतिरसे कतिफासे ?, गोयमा ! अवण्णे अगधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पचविहे पन्नत्ते, तजहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ, दव्वओ ण धम्मत्थिकाए एगे दव्वे, खेत्तओ णं लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ न कयावि न आसि न कयाइ

ताणं आभिणिवोहियनाणपज्जवाण एवं सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाण मणपज्ज-वनाणप० केवलनाणप० मइअन्नाणप० सुयअन्नाणप० विभंगणाणपज्जवाणं चक्खु-दंसणप० अचक्खुदंसणप० ओहिदंसणप० केवलदंसणप० उवओगं गच्छइ, उवओ-गलक्खणे ण जीवे, से तेणट्ठेण एवं वुच्चइ-गोयमा! जीवे ण सउट्ठाणे जाव वत्तव्वं सिया ॥ ११९ ॥ कतिविहे ण भंते! आगासे पण्णत्ते ?, गोयमा! दुविहे आगासे प०, तजहा-लोयागासे य अलोयागासे य ॥ लोयागासे णं भंते! किं जीवा जीव-देसा जीवपदेसा अजीवा अजीवदेसा अजीवपएसा ?, गोयमा! जीवावि जीवदे-सावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपदेसावि जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अणिंदिया, जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा, जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा, जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-रूवी य अरूवी य, जे रूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला, जे अरूवी ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा-धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकायस्स देसे धम्म-त्थिकायस्स पदेसा अधम्मत्थिकाए नो अधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा अद्धासमए ॥ १२० ॥ अलोगागासे ण भंते! किं जीवा ? पुच्छा तह चेव, गोयमा! नो जीवा जाव नो अजीवप्पएसा एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अण-तेहिं अगुरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ॥ १२१ ॥ धम्मत्थिकाए ण भंते! किं (के) महालए पण्णत्ते ?, गोयमा! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुवित्ता णं चिट्ठइ, एवं अहम्मत्थिकाए लोयागासे जीवत्थिकाए पोग्गल-त्थिकाए पचवि एक्काभिलावा ॥ १२२ ॥ अहेलोए ण भंते! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?, गोयमा! सातिरेगं अद्धं फुसति। तिरियलोए ण भंते! पुच्छा, गोयमा! असंखेज्जइभागं फुसइ। उड्ढलोए ण भंते! पुच्छा, गोयमा! देसूणं अद्धं फुसइ ॥ १२३ ॥ इमा णं भंते! रयणप्पभापुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइ भागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसइ ? संखिज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?, गोयमा! णो संखेज्जइभागं फुसति असंखेज्जइभागं फुसइ णो संखेज्जे णो असंखेज्जे नो सव्वं फुसति। इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरे घणोदही धम्मत्थिकायस्स पुच्छा, किं संखेज्जइभागं फुसति ? जहा रयणप्पभा तहा घणोदहिघणवायतणुवाया। इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जतिभागं फुसति असंखेज्जइभागं फुसइ जाव सव्वं फुसइ ?, गोयमा! संखेज्जइभागं फुसइ णो असंखेज्जइभागं फुसइ नो संखेज्जे०

सामाणिया देवा केमहिड्ढिया जाव केवतियं च ण पभू विउव्वित्तए ?, गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो मामाणिया देवा महिड्ढिया जाव महाणुभागा, ते ण तत्थ साण २ भवणाण साणं २ सामाणियाण साण २ अग्गमहिसीण जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरंति, एवमहिड्ढिया जाव एवइयं च णं पभू विउव्वित्तए, से जहानामए-जुवतिं जुवाणे हत्येण हत्थे गेण्हेज्जा चक्कस्स वा नाभी अरयाउत्ता सिया एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो एगमेगे सामाणिए देवे वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ २ जाव दोच्चपि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति २ पभू ण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो एगमेगे सामाणिए देवे केवलकप्प जबुद्दीव २ बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइन्न वितिकिन्न उवत्थड संथड फुड अवगाढावगाढ करेत्तए, अदुत्तरं च ण गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे सथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए, एस ण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो एगमेगस्स सामाणियदेवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए णो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा। जति ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो सामाणिया देवा एवमहिड्ढिया जाव एवतिय च ण पभू विउव्वित्तए चमरस्स ण भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो तायत्तीसिया देवा केमहिड्ढिया ?, तायत्तीसिया देवा जहा सामाणिया तहा नेयव्वा, लोयपाला तहेव, नवर सखेज्जा दीवसमुद्दा भाणियव्वा, बहूहिं असुरकुमारेहिं २ आइन्ने जाव विउव्विस्सति वा। जति ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो लोगपाला देवा एवमहिड्ढिया जाव एवतिय च ण पभू विउव्वित्तए चमरस्स ण भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो अग्गमहिसीओ देवीओ केमहिड्ढियाओ जाव केवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए ?, गोयमा ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररन्नो अग्गमहिसीओ महिड्ढियाओ जाव महाणुभागाओ, ताओ ण तत्थ साण २ भवणाणं साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ महत्तरियाण साण २ परिसाण जाव एमहिड्ढियाओ अन्न जहा लोगपालाण अपरिसेस। सेवं भंते ! २ त्ति ॥ १२६ ॥ भगवं दोच्चे गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमंसइ २ जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूतिअणगारे तेणेव उवागच्छति २ तच्च गोयम वायुभूतिं अणगारं एव वदासी-एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया एवमहिड्ढिए त चेव एव सव्वं अपुट्ठवागरण नेयव्व अपरिसेसिय जाव अग्गमहिसीण वत्तव्वया समत्ता। तए ण से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूइस्स अणगा-

देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभि-
समन्नागए तारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरन्ना दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्ना-
गया जारिसिया णं (सक्केणं देविंदेणं देवरन्ना दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्ना-
गया तारिसिया णं) देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया । से णं
भंते ! तीसए देवे केमहिड्ढिए जाव केवइयं च णं पभू विउव्वित्तए ? गोयमा !
महिड्ढिए जाव महाणुभागे से णं तत्थ सयस्स विमाणस्स चउण्हं सामाणियसाह-
स्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं
अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं वेमाणियाणं
देवाण य देवीण य जाव विहरइ एवंमहिड्ढिए जाव एवइयं च णं पभू विउव्वित्तए,
से जहानामए जुवइं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा जहेव सक्कस्स तहेव जाव एस णं
गोयमा ! तीसगस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए नो चेव णं संपत्तीए
विउव्विंसु वा २ । जइ णं भंते ! तीसए देवे महिड्ढिए जाव एवइयं च णं पभू विउ-
व्वित्तए सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरन्नो अवसेसा सामाणिया देवा केमहिड्ढिया
तहेव सव्वं जाव एस णं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो एगमेगस्स सामाणियस्स
देवस्स इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा विउव्वंति
वा विउव्विस्संति वा तायत्तीसा य लोगपालअग्गमहिसीणं जहेव चमरस्स नवरं दो
केवलकप्पे जंबुद्दीवे २ अन्नं तं चेव सेवं भंते २ त्ति दोच्चे गोयमे जाव विहरइ
॥ १२९ ॥ भंतेत्ति भगवं तच्चे गोयमे वाउभूई अणगारे समणं भगवं जाव एवं
वयासी–जइ णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया एवंमहिड्ढिए जाव एवइयं च णं पभू
विउव्वित्तए ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढिए ? एवं तहेव नवरं साहिए
दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे २ अवसेसं तहेव ॥ १३० ॥ जइ णं भंते ! ईसाणे देविंदे देव-
राया एवंमहिड्ढिए जाव एवइयं च णं पभू विउव्वित्तए ॥ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंते-
वासी कुरुदत्तपुत्ते नामं पगइभद्दए जाव विणीए अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं पारणए
आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आया-
वणभूमीए आयावेमाणे बहुपडिपुन्ने छम्मासे सामन्नपरियागं पाउणित्ता अद्धमासि-
याए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते
समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे सयंसि विमाणंसि जा चेव तीसए
वत्तव्वया सा सव्वेव अपरिसेसा कुरुदत्तपुत्ते वि नवरं साइरेगे दो केवलकप्पे
जंबुद्दीवे २ अवसेसं तं चेव एवं सामाणियतायत्तीसलोगपालअग्गमहिसीणं जाव
एस णं गोयमा ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो एवं एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए

-तिण्ह परिसाणं सत्तण्हं अणियाण सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउवीसाए आयरक्खदे-वसाहस्सीणं अन्नेसिं च जाव विहरइ, एवतिय च णं पभू विउव्वित्तए से जहाना-मए—जुवतिं जुवाणे जाव पभू केवलकप्प जंबुद्दीव २ जाव तिरियं सखेज्जे दीवसमुद्दे चहूहिं नागकुमारेहिं २ जाव विउव्विस्सति वा, सामाणिया तायत्तीसलोगपालगा मदि-सीओ य तहेव, जहा चमरस्स एव धरणे ण नागकुमारराया महिड्ढिए जाव एवतिय जहा चमरे तहा धरणेणवि, नवरं सखेज्जे दीवसमुद्दे भाणियव्व, एव जाव थणिय-कुमारा वाणमंतरा जोइसियावि, नवर दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूती पुच्छति, उत्तरिल्ले सव्वे वाउभूती पुच्छइ, भतेत्ति भगव दोच्चे गोयमे अग्गिभूती अणगारे समण भगव म० वदति नमसति २ एव वयासी—जति ण भते ! जोइसिंदे जोतिसराया एवंमहिड्ढिए जाव एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए सक्के ण भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढिए जाव केवतिय च ण पभू विउव्वित्तए ?, गोयमा ! सक्के ण देविंदे देव-राया महिड्ढिए जाव महाणुभागे, से ण तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण चउरासीए सामाणियसाहस्सीण जाव चउण्हं चउरासीण आयरक्ख (देव) साह-स्सीणं अन्नेसिं च जाव विहरइ, एवमहिड्ढिए जाव एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, एव जहेव चमरस्स तहेव भाणियव्वं, नवर दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे २ अवसेस त चेव, एस ण गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते ण वुइए नो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा विउव्वति वा विउव्विस्सति वा ॥ १२८ ॥ जइ ण भते ! सक्के देविंदे देवराया एमहिड्ढिए जाव एवतिय च ण पभू विकुव्वि त्तए ॥ एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी तीसए णामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ अट्ठ सवच्छराइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सयसि विमाणसि उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अगु-लस्स असखेज्जइभागमेत्ताए ओगाहणाए सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेव-त्ताए उववण्णे, तए ण तीसए देवे अहुणोववन्नमेत्ते समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तजहा—आहारपज्जत्तीए सरीर० इंदिय० आणुपाणुपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए, तए ण त तीसय देव पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गय समाण सामाणियपरिसोववन्नया देवा करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धाविंति २ एवं वदासी—अहो ण देवाणुप्पिए ! दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते, जारिसिया णं

होत्था अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था तए णं तस्स मोरिय-पुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुं-बजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरिक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणफल-वित्तिविसेसे जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि सुवण्णेणं वड्ढामि धणेणं वड्ढामि धण्णेणं वड्ढामि पुत्तेहिं वड्ढामि पसूहिं वड्ढामि विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तर-यणसंतसारसावएज्जेणं अतीव २ अभिवड्ढामि तं किण्णं अहं पुरा पोराणाणं सुचि-ण्णाणं जाव कडाणं कम्माणं एगंतसोक्खयं उवेहेमाणे विहरामि ? तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव अतीव २ अभिवड्ढामि जाव च णं मे मित्तणाइणियगसंबं-धिपरियणो आढाइ परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासइ ताव ता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते सयमेव दारु-मयं पडिग्गहियं करेत्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ-णियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेत्ता तं मित्तणाइणियगसंबंधिपरियणं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसंबंधिपरियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता तं मित्तणाइणियग-संबंधिपरियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहियं गहाय मुंडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए, पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि-कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्सवि य णं पारणयंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्ग-हयं गहाय तामलित्तीए णयरीए उच्चणीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खा-यरियाए अडित्ता सुद्धोयणं पडिग्गाहेत्ता तं तिसत्तक्खुत्तो उदएणं पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहारं आहारित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं करेइ २ त्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ २ तओ पच्छा ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणा-लंकियसरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तए णं मित्तणाइणियगस-यणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागएवि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त जाव परियणं विउलेणं असणपाण-४-पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेइ २ तस्सेव मित्तणाइ जाव परियणस्स पुरओ

अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए नो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा ३ ॥१३१॥ एवं सणकुमारेवि, नवरं चत्तारि केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे अदुत्तरं च णं तिरियम-सखेज्जे, एव सामाणियतायत्तीसलोगपालअग्गमहिसीणं असखेज्जे दीवसमुद्दे सव्वे विउव्वति, सणकुमाराओ आरद्धा उवरिल्ला लोगपाला सव्वेवि असखेज्जे दीवसमुद्दे विउव्विंति, एवं माहिंदेवि, नवरं सातिरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे २, एव बभ-लोएवि, नवरं अट्ठ केवलकप्पे, एव लतएवि, नवरं सातिरेगे अट्ठ केवलकप्पे, महा-सुक्के सोलस केवलकप्पे, सहस्सारे सातिरेगे सोलस, एव पाणएवि, नवरं बत्तीस केवल०, एव अच्चुएवि नवर सातिरेगे बत्तीस केवलकप्पे जंबुद्दीवे २ अन्नं त चेव, सेव भते २ त्ति तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसति जाव विहरति। तए ण समणे भगव महावीरे अन्नया कयाइ मोयाओ नगरीओ नंदणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ २ बहिया जणवयविहारं विहरइ॥ १३२॥ तेण कालेण तेण० रायगिहे नाम नगरे होत्था, वन्नओ, जाव परिसा पज्जुवा-सइ। तेणं कालेण २ ईसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलोगा-हिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अयरवरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचचलकुंडलविलिहिज्जमाणगडे जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभा-सेमाणे ईसाणे कप्पे ईसाणवडिंसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव दिव्व देविड्ढिं जाव जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। भतेत्ति भगव गोयमे समण भगव महावीरं वदति णमसति २ एव वदासी—अहो ण भते! ईसाणे देविंदे देव-राया महिड्ढिए ईसाणस्स ण भते! सा दिव्वा देविड्ढी कहिं गता कहिं अणुपविट्ठा ?, गोयमा! सरीरं गता २, से केणट्ठेण भते! एव वुच्चति सरीर गता ? २, गोयमा! से जहानामए—कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवाय-गभीरा तीसे णं कूडागारे जाव कूडागारसालादिट्ठतो भाणियव्वो। ईसाणेण भंते! देविंदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे किण्णा पत्ते किण्णा अभिसमन्नागए के वा एस आसि पुव्वभवे किण्णामए वा किंगोत्ते वा कयरंसि वा गामसि वा नगरंसि वा जाव सन्निवेससि वा किं वा सुच्चा किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा किच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आयरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म [जण्ण] ईसाणेण देविंदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया ?, एव खलु गोयमा! तेण कालेण २ इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे तामलित्ती नाम नगरी होत्था, वन्नओ, तत्थ ण तामलित्तीए नगरीए तामली नाम मोरियपुत्ते गाहावती

जेट्ठ पुत्त कुडुंबे ठावेइ २ त्ता तस्सेव त मित्तनाइणियगसयणसंबंधिपरिजण जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ २ मुडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए, पव्वइएवि य णं समाणे इमं एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ–कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव आहारित्तएत्तिकट्टु इम एयारूव अभिग्गहं अभिगिण्हइ २ त्ता जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ, छट्ठस्सवि य णं पारणयंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ २ सयमेव दारुमयं पडिग्गह गहाय तामलित्तीए नगरीए उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ २ सुद्धोयण पडिग्गाहेइ २ तिसत्तखुत्तो उदएण पक्खालेइ, तओ पच्छा आहारं आहारेइ। से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ–पाणामा पव्वज्जा २? गोयमा! पाणामाए णं पव्वज्जाए पव्वइए समाणे ज जत्थ पासइ इद वा खद वा रुद्द वा सिवं वा वेसमण वा अज्ज वा कोट्टकिरिय वा रायं वा जाव सत्थवाह वा काग वा साणं वा पाण वा उच्च पासइ उच्च पणाम करेइ नीय पासइ नीय पणाम करेइ, ज जहा पासति तस्स तहा पणाम करेइ, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—पाणामा जाव पव्वज्जा ॥ १२२ ॥ तए ण से तामली मोरियपुत्ते तेण ओरालेण विपुलेण पयत्तेण पग्गहिएण वालतवोकम्मेण सुक्के भुक्खे जाव धमणिसतए जाए यावि होत्था, तए ण तस्स तामलित्तस्स वालतवस्सिस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था–एव खलु अह इमेण ओरालेण विपुलेण जाव उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण महाणुभागेण तवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसतए जाए, त अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ताव ता मे सेयं कल्लं जाव जलते तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य पुव्वसगतिए य गिहत्थे य पच्छासंगतिए य परियायसगतिए य आपुच्छित्ता तामलित्तीए नगरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छित्ता पाडुग कुडियमादीय उवकरण दारुमय च पडिग्गहिय एगते [एडेइ] एडित्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए णियत्तणियमडल [आलिहइ] आलिहित्ता सलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ एव सपेहेत्ता कल्लं जाव जलते जाव आपुच्छइ २ तामलित्तीए [एगते एडेइ] जाव जलते जाव भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवन्ने। तेण कालेणं २ वलिचचारायहाणी अणिंदा अपुरोहिया यावि होत्था। तए ण ते वलिचचारायहाणिवत्थव्वया वहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं वालतवस्सिं ओहिणा आहोयंति २ अन्नमन्नं

रायहाणिं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएइ, तए णं सा बलिचंचारायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरन्ना अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोइया समाणी तेणं दिव्वप्पभावेणं इंगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियब्भूया तत्तकवेल्लकब्भूया तत्ता समजोइब्भूया जाया यावि होत्था, तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तं बलिचंचं रायहाणिं इंगालब्भूयं जाव समजोइब्भूयं पासंति २ भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावेंति परिधावेंति २ अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा २ चिट्ठंति, तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणा सव्वे सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धाविंति २ एवं वयासी-अहो णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी जाव लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया तं खामेमि णं देवाणुप्पिया! खमंतु णं देवाणुप्पिया! [खंतु] मरिहंति णं देवाणुप्पिया! णाइ भुज्जो २ एवंकरणयाएत्तिकट्टु एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेंति, तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वेहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामिए समाणे तं दिव्वं देविड्ढिं जाव तेयलेस्सं पडिसाहरइ, तप्पभिइं च णं गोयमा!, ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति जाव पज्जुवासंति ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठंति एवं खलु गोयमा! ईसाणेणं देविंदेणं देवरन्ना सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया। ईसाणस्स णं भंते! देविंदस्स देवरन्नो केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ईसाणे णं भंते! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गो०! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिइ॥ ११६॥ सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरन्नो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो विमाणा ईसिं उच्चयरा चेव ईसिं उन्नयतरा चेव ईसाणस्स वा देविंदस्स देवरन्नो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो विमाणा णीययरा चेव ईसिं निन्नयरा चेव? हंता! गोयमा! सक्कस्स तं चेव सव्वं नेयव्वं। से केणट्ठेणं? गोयमा! से जहानामए-करयले सिया देसे उच्चे देसे उन्नए देसे णीए देसे निन्ने, से तेणट्ठेणं

दिसिं पडिगया ॥ १२४ ॥ तेण कालेण २ ईसाणे कप्पे अणिंदे अपुरोहिए यावि होत्था, तते ण से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं सट्ठिं वाससहस्साइं परियाग पाउणित्ता दोमासियाए संलेहणाए अत्ताण झसित्ता सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे ईसाणवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्ताए ओगाहणाए ईसाणदेविंद-विरहकालसमयंसि ईसाणदेविंदत्ताए उववण्णे, तए ण से ईसाणे देविंदे देवराया अहुणोववन्ने पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छति, तंजहा-आहारप० जाव भासामणपज्जत्तीए, तए ण ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं कालगयं जाणित्ता ईसाणे य कप्पे देविंदत्ताए उववण्ण पासित्ता आसुरुत्ता कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा बलिचंचाराय० मज्झंमज्झेण निग्गच्छंति २ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती [ए] नयरी [ए] जेणेव तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति २ वामे पाए सुंबेण बंधति २ तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुहंति २ तामलित्तीए नगरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणा महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-केस ण भो से तामली बालतव० सयंगहियलिंगे पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए? केस ण भंते (भो)! ईसाणे कप्पे ईसाणे देविंदे देवरायाइतिकट्टु तामलिस्स बालतव० सरीरयं हीलंति निंदति खिंसति गरिहंति अवमन्नति तज्जति तालेंति परिवहेंति पव्वहेंति आकड्ढविकड्ढिं करेंति हीलेत्ता जाव आकड्ढविकड्ढिं करेत्ता एगंते एडेंति २ जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ १२५ ॥ तए ण ते ईसाणकप्पवासी बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरय हीलिज्जमाण निंदिज्जमाण जाव आकड्ढविकड्ढिं कीरमाण पासति २ आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति २ करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धावेंति २ एवं वदासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिए कालगए जाणित्ता ईसाणे कप्पे इंदत्ताए उववन्ने पासेत्ता आसुरुत्ता जाव एगंते एडेंति २ जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। तए ण से ईसाणे देविंदे देवराया तेसिं ईसाणकप्पवासीण बहूण वेमाणियाण देवाण य देवीण य अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचा०

तंसि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। से णं भंते! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति, सेवं भंते! सेवं भंते! २। गाहाओ-छट्ठमासो अद्धमासो वासाइं अट्ठ छम्मासा। तीसगकुरुदत्ताणं तवभत्तपरिन्नपरियाओ ॥ १ ॥ उच्चत्तविमाणाणं पाउब्भव पेच्छणा य संलावे। किंचि विवादुप्पत्ती सणंकुमारे य भवियत्तं (वं) ॥ २ ॥ १४ ॥ मोया समत्ता। तईयसए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ एवं वदासी-अत्थि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, जाव अहेसत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव अत्थि णं भंते! ईसिपब्भाराए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंति?, णो इणट्ठे समट्ठे। से कहिं खाइ णं भंते! असुरकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए, एवं असुरकुमारदेववत्तव्वया जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। अत्थि णं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए? हंता अत्थि। केवतियं च णं पभू! ते असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए पन्नत्ते? गोयमा! जाव अहेसत्तमाए पुढवीए तच्चं पुण पुढविं गया य गमिस्संति य। किं पत्तियन्नं भंते! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गया य गमिस्संति य? गोयमा! पुव्ववेरियस्स वा वेदणउदीरणयाए पुव्वसंगइयस्स वा वेदणउवसामणयाए, एवं खलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गया य गमिस्संति य। अत्थि णं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं तिरियं गतिविसए पन्नत्ते?, हंता अत्थि। केवतियं च णं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं तिरियं गतिविसए पन्नत्ते? गोयमा! जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा नंदिस्सरवरं पुण दीवं गया य गमिस्संति य। किं पत्तियन्नं भंते! असुरकुमारा देवा नंदीसरवरदीवं गया य गमिस्संति य? गोयमा! जे इमे अरिहंता भगवंतो एएसि णं जम्मणमहेसु वा निक्खमणमहेसु वा नाणुप्पायमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा एवं खलु असुरकुमारा देवा नंदीसरवरदीवं गया य गमिस्संति य। अत्थि णं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं उड्ढं गतिविसए? हंता! अत्थि। केवतियं च णं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं उड्ढं गतिविसए?, गोयमा! जावऽच्चुए

गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जाव इंगि निम्मनरा चेव ॥ १२७ ॥ पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?, हंता पभू, से णं भंते ! किं आढायमाणे पभू अणाढायमाणे पभू ?, गोयमा ! आढायमाणे पभू नो अणाढायमाणे पभू, पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?, हंता पभू, से भंते ! किं आढायमाणे पभू अणाढायमाणे पभू ?, गोयमा ! आढायमाणेवि पभू अणाढायमाणेवि पभू । पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंदं देवरायं सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएत्तए जहा पाउब्भवणा तहा दोवि आलावगा नेयव्वा । पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?, हंता ! पभू जहा पाउब्भवणा । अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं समुप्पज्जंति ?, हंता ! अत्थि, से कहमिदाणिं पकरेंति ?, गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति, ईसाणे णं देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरायस्स अंतियं पाउब्भवइ, इति भो ! सक्का देविंदा देवराया दाहिणड्ढलोगाहिवई, इति भो ! ईसाणा देविंदा देवराया उत्तरड्ढलोगाहिवई, इति भो ! इति भो त्ति ते अन्नमन्नस्स किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥ १२८ ॥ अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं विवादा समुप्पज्जंति ?, हंता ! अत्थि । से कहमिदाणिं पकरेंति ?, गोयमा ! ताहे चेव णं ते सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमारं देविंदं देवरायं मणसीकरेंति, तए णं से सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कीसाणेहिं देविंदेहिं देवराईहिं मणसीकए समाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं अंतियं पाउब्भवति, जं से वदइ तस्स आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठंति ॥ १२९ ॥ सणंकुमारे णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिए सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी परित्तसंसारए अणंतसंसारए सुलभबोहिए दुलभबोहिए आराहए विराहए चरिमे अचरिमे ?, गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया भवसिद्धिए नो अभवसिद्धिए, एवं सम्मद्दिट्ठी परित्तसंसारए सुलभबोहिए आराहए चरिमे पसत्थं नेयव्वं । से केणट्ठेणं भंते ! ?, गोयमा ! सणंकुमारे देविंदे देवराया बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेयसिए हियसुहनिस्सेसकामए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! सणंकुमारे णं भवसिद्धिए जाव नो अचरिमे । सणंकुमारस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ?, गोयमा !

तत्थ णं बेभेले संनिवेसे पूरणे नामं गाहावई परिवसति अड्ढे दित्ते जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेयव्वा नवरं चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं करेत्ता जाव विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं जाव सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं गहाय मुंडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए पव्वइएवि य णं समाणे तं चेव जाव आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ २ त्ता सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहियं गहाय बेभेले संनिवेसे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडेत्ता जं मे पढमे पुडए पडइ कप्पइ मे तं पंथि पहियाणं दलइत्तए जं मे दोच्चे पुडए पडइ कप्पइ मे तं कागसुणयाणं दलइत्तए जं मे तच्चे पुडए पडइ कप्पइ मे तं मच्छकच्छभाणं दलइत्तए जं मे चउत्थे पुडए पडइ कप्पइ मे तं अप्पणा आहारं आहारित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तं चेव निरवसेसं जाव जं मे (से) चउत्थे पुडए पडइ तं अप्पणा आहारं आहारेइ, तए णं से पूरणे बालतवस्सी तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं तं चेव जाव बेभेलस्स संनिवेसस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ पाउयं कुंडियमाईयं उवगरणं चउप्पुडयं च दारुमयं पडिग्गहियं एगंतमंते एडेइ २ बेभेलस्स संनिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणियमंडलं आलिहित्ता संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे। तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सुंसुमारपुरे नगरे जेणेव असोगवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छामि २ असोगवरपायवस्स हेट्ठा पुढविसिलापट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हामि दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी अणिमिसनयणे ईसिंपब्भारगएणं काएणं अहापणिहिएहिं गत्तेहिं सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरचंचारायहाणी अणिंदा अपुरोहिया यावि होत्था, तए णं से पूरणे बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इंदत्ताए उववन्ने, तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववन्ने पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तंजहा–आहारपज्जत्तीए जाव भासा-मणपज्जत्तीए, तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गए समाणे उड्ढं वीससाए ओहिणा आभोएइ जाव सोहम्मो कप्पो पासइ य तत्थ

कप्पे सोहम्म पुण कप्प गया य गमिस्सति य । कि पत्तियण्ण भते ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्प गया य गमिस्संति य ?, गोयमा ! तेसि ण देवाण भवपच्चइय-वेराणुवधे, ते ण देवा विकुव्वेमाणा परियारेमाणा वा आयरक्खे देवे वित्तासेंति अहालहुस्सगाइ रयणाइ गहाय आयाए एगतमत अवक्कमति । अत्थि ण भते ! तेसिं देवाणं अहालहुस्सगाइ रयणाइ ?, हंता अत्थि । से कहमियाणिं पकरेंति ?, तओ से पच्छा काय पव्वहति । पभू ण भंते ! ते असुरकुमारा देवा तत्थ गया चेव समाणा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणा विहरित्तए ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, ते ण तओ पडिनियत्तति २ त्ता इहमागच्छति २ जति ण ताओ अच्छराओ आढायति परियाणति । पभू णं ते असुरकुमारा देवा ताहि अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरित्तए अहन्न ताओ अच्छराओ नो आढायंति नो परियाणति णो णं पभू ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइ भुजमाणा विहरित्तए, एव खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्पं गया य गमिस्सति य ॥ १४१ ॥ केवइकालस्स ण भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्म कप्प गया य गमिस्सति य ?, गोयमा ! अणताहिं उस्सप्पिणीहिं अणताहिं अवसप्पिणीहिं समइक्कताहिं, अत्थि ण एस भावे लोयच्छेरयभूए समुप्पज्जइ जन्न असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो, किं निस्साए ण भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ?, गोयमा ! से जहानामए-इह सवरा इ वा वव्वरा इ वा टंकणा इ वा भुत्तुया इ वा पल्हया इ वा पुलिंदा इ वा एग मह गड्ड वा खड्ड वा दुग्ग वा दरिं वा विसम वा पव्वय वा णीसाए सुमहल्लमवि आसवल वा हत्थिवलं वा जोहवलं वा धणुवल वा आगलेंति, एवामेव असुरकुमारावि देवा, णण्णत्थ अरिहते वा अणगारे वा भावियप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो । सव्वेवि ण भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो ?, गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, महिड्ढिया ण असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो । एसवि णं भते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया उड्ढ उप्पइयपुव्वि जाव सोहम्मो कप्पो ?, हता गोयमा ! २ । अहो णं भते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमार-राया महिड्ढिए महज्जुईए जाव कहिं पविट्ठा ?, कूडागारसालादिट्ठंतो भाणियव्वो ॥ १४२ ॥ चमरेण भते ! असुरिंदेण असुररन्ना सा दिव्वा देविड्ढी त चेव जाव किन्ना लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएण इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे विंझगिरिपायमूले वेभेले नाम सनिवेसे होत्था, वन्नओ,

सक्कं देविंदं देवरायं मघवं पागसासणं सयक्कउं सहस्सक्खं वज्जपाणिं पुरंदरं जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सक्कंसि सीहासणंसि जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ २ इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-केस णं एस अपत्थियपत्थए दुरंत-पंतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए हीणपुन्नचाउद्दसे जन्नं मम इमाए एयारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए जाव दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए उप्पिं अप्पुस्सुए दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, एवं संपेहेइ २ सामाणियपरिसोववन्नए देवे सद्दावेइ २ एवं वयासी-केस णं एस देवाणुप्पिया अपत्थियपत्थए जाव भुंजमाणे विहरइ?, तए णं ते सामाणियपरिसोववन्नगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव हयहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति २ एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया! सक्के देविंदे देवराया जाव विहरइ, तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणि-यपरिसोववन्नगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडि-क्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणियपरिसोववन्नए देवे एवं वयासी-अन्ने खलु भो! (से) सक्के देविंदे देवराया अन्ने खलु भो! से चमरे असुरिंदे असुरराया, महिड्ढिए खलु भो! से सक्के देविंदे देवराया, अप्पड्ढिए खलु भो! से चमरे असुरिंदे असुरराया, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाएत्तएत्तिकट्टु उसिणे उसिणब्भूए जाए यावि होत्था, तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया ओहिं पउंजइ २ ममं ओहिणा आभोएइ २ इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे २ भारहे वासे सुंसमारपुरे नगरे असोगवणसंडे उज्जाणे असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि अट्ठमभत्तं पडिगिण्हित्ता एगराइयं महा-पडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाएत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता देवदूसं परिहेइ २ उववायसभाए पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं णिग्गच्छइ, जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता फलिहरयणं परामुसइ २ एगे अबीए फलिहरयणमायाए महया अमरिसं वहमाणे चमरचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ जेणेव तिगिच्छिकूडे उप्पायपव्वए तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ २ त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं जाव उत्तरवेउव्वियरूवं विउव्वइ २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव पुढविसिलापट्टए जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छति २ ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति जाव

अभूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ १४५ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति २ एवं वदासी-देवे णं भंते ! महिड्ढीए महज्जुईए जाव महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता णं गिण्हित्तए ? हंता पभू ॥ से केणट्ठेणं भंते ! जाव गिण्हित्तए ? गोयमा ! पोग्गले णं खित्ते समाणे पुव्वामेव सिग्घगती भवित्ता ततो पच्छा मंदगती भवति, देवे णं महिड्ढीए पुव्विंपि य पच्छावि सीहे सीहगती चेव तुरिए तुरियगती चेव से तेणट्ठेणं जाव पभू गेण्हित्तए । जति णं भंते ! देवे महिड्ढीए जाव अणुपरियट्टित्ता णं गेण्हित्तए कम्हा णं भंते ! सक्केणं देविंदेणं देवरन्ना (रण्णा) चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाइए साहत्थिं गेण्हित्तए ? गोयमा ! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए सीहे २ चेव तुरिए २ चेव उड्ढं गतिविसए अप्पे २ चेव मंदे मंदे चेव वेमाणियाणं देवाणं उड्ढं गतिविसए सीहे २ चेव तुरिए २ चेव अहे गतिविसए अप्पे २ चेव मंदे २ चेव जावतियं खेत्तं सक्के देविंदे देवराया उड्ढं उप्पयति एक्केणं समएणं तं वज्जे दोहिं, जं वज्जे दोहिं तं चमरे तिहिं, सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो उड्ढलोयकंडए अहेलोयकंडए संखेज्जगुणे जावतियं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया अहे ओवयति एक्केणं समएणं तं सक्के दोहिं जं सक्के दोहिं तं वज्जे तिहिं, सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो अहेलोयकंडए उड्ढलोयकंडए संखेज्जगुणे । एवं खलु गोयमा ! सक्केणं देविंदेणं देवरन्ना चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाइए साहत्थिं गेण्हित्तए ॥ सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरन्नो उड्ढं अहे तिरियं च गतिविसयस्स कतरे २ हिंतो अप्पे वा बहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं सक्के देविंदे देवराया अहे ओवयइ एक्केणं समएणं तिरियं संखेज्जे भागे गच्छइ उड्ढं संखेज्जे भागे गच्छइ । चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो उड्ढं अहे तिरियं च गतिविसयस्स कतरे २ हिंतो अप्पे वा बहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयति एक्केणं समएणं तिरियं संखेज्जे भागे गच्छइ अहे संखेज्जे भागे गच्छइ, वज्जं जहा सक्कस्स देविंदस्स तहेव नवरं विसेसाहियं कायव्वं ॥ सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरन्नो ओवयणकालस्स य उप्पयणकालस्स य कतरे २ हिंतो अप्पे वा बहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो उड्ढं उप्पयणकाले ओवयणकाले संखेज्जगुणे । चमरस्सवि जहा सक्कस्स णवरं सव्वत्थोवे ओवयणकाले उप्पयणकाले संखेज्जगुणे ॥ वज्जस्स पुच्छा, गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले ओवयणकाले विसेसाहिए ॥ एयस्स णं भंते ! वज्जस्स वज्जाहिवइस्स चमरस्स य

वज्ज निसिरइ। तते ण से चमरे असुरिंदे असुरराया तं जलंतं जाव भयकरं वज्ज-मभिमुह आवयमाणं पासइ पासइत्ता झियाति पिहाइ झियाइत्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्गमउडविडए साल्वहत्थाभरणे उड्ढपाए अहोसिरे कक्खागयसेयंपि च विणि-म्मुयमाणे २ ताए उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झमज्झेणं वीईवयमाणे २ जेणेव जंबुद्दीवे २ जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भीए भयगग्गरसरे भगवं सरणमिति बुयमाणे मम दोण्हवि पायाणं अंतरंसि झत्तिवेगेण समोवडिए ॥१४३॥ तए ण तस्स सक्कस्स देविंदस्स देव-रन्नो इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो णण्णत्थ अरिहंते वा अणगारे वा भावियप्पणो णीसाए उड्ढं उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो, तं महादुक्खं खलु तहारूवाण अरहंताणं भगवंताणं अणगाराण य अच्चासायणाए-त्तिकट्टु ओहिं पउजति २ मम ओहिणा आभोएति २ हा हा अहो हतोऽहमंसित्तिकट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देवगतीए वज्जस्स वीहिं अणुगच्छमाणे २ तिरियम-संखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झमज्झेणं जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ २ ममं चउरंगुलमसपत्तं वज्ज पडिसाहरइ ॥ १४४ ॥ अवियाइ मे गोयमा! मुट्ठिवाएण केसग्गे वीइत्था, तए ण से सक्के देविंदे देवराया वज्ज पडिसाहरित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ २ वदइ नमंसइ २ एव वयासी-एव खलु भंते! अहं तुब्भं नीसाए चमरेण असुरिंदेण असुररन्ना सयमेव अच्चासाइए, तए ण मए परिकुविएण समाणेण चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो वहाए वज्जे निसिट्ठे, तए ण मे इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया तहेव जाव ओहिं पउजामि देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि हा हा अहो हतोमीतिकट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि देवाणुप्पियाणं चउरंगुलमसपत्त वज्जं पडिसाहरामि वज्जपडिसाहर-णट्ठयाए ण इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ता ण विहरामि, तं खामेमि ण देवाणुप्पिया! खमंतु णं देवाणुप्पिया! [खमंतु] मरहंतु णं देवाणु-प्पिया! णाइभुज्जो एवं पकरणयाएत्तिकट्टु मम वंदइ नमंसइ २ उत्तरपुरच्छिमं दिसी-भागं अवक्कमइ २ वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमिं दलेइ २ चमरं असुरिंदं असुररायं एव वदासी-मुक्कोऽसि ण भो चमरा! असुरिंदा! असुरराया! समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेण नाहि ते दाणिं ममाओ भयमत्थीतिकट्टु जामेव दिसिं पाउ-

असुरिंदस्स असुररन्नो ओवयणकालस्स य उप्पयणकालस्स य कयरे २ हिंतो अप्पे वा ४? गोयमा! सक्कस्स य उप्पयणकाले चमरस्स य ओवयणकाले एए णं दोन्निवि तुल्ला सव्वत्थोवा, सक्कस्स य ओवयणकाले वज्जस्स य उप्पयणकाले एस णं दोण्हवि तुल्ले संखेज्जगुणे चमरस्स य उप्पयणकाले वज्जस्स य ओवयणकाले एस णं दोण्हवि तुल्ले विसेसाहिए ॥ १४६ ॥ तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जभय-विप्पमुक्के सक्केणं देविंदेण देवरन्ना महया अवमाणेण अवमाणिए समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि ओहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागर-संपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाति, तते णं तं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववन्नया देवा ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति २ करयल जाव एवं वयासी–किण्णं देवाणुप्पिया! ओहयमण-संकप्पा जाव झियायह? तए णं से चमरे असुरिंदे असुर० ते सामाणियपरिसोव-वन्नए देवे एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मए समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासादिए, तए णं तेणं परिकुविएणं समाणेणं मम वहाए वज्जे निसिट्ठे, तं भद्दण्णं भवतु देवाणुप्पिया! समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्स मम्हिमनुपभावेण अक्किट्ठे अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ता णं विहरामि, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो जाव पज्जुवासामोत्तिकट्टु चउसट्ठीए सामाणिय-साहस्सीहिं जाव सव्विड्ढीए, जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ २ ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वदासी–एवं खलु भंते! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासादिए जाव तं भद्दं णं भवतु देवाणुप्पियाणं मम्हिं जस्स अणुपभावेण अक्किट्ठे जाव विहरामि तं खामेमि णं देवाणुप्पिया! जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता जाव बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसेइ २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, एवं खलु गोयमा! चमरेणं असुरिंदेणं असुररन्ना सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता जाव अभिसमन्नागया, ठिती सागरोवमं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति ॥ १४७ ॥ किं पत्तिए णं भंते! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो? गोयमा! तेसि णं देवाणं अहुणोववन्नगाणं वा चरिमभवत्थाण वा इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ–अहो णं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता जाव अभिसमन्नागया जारिसिया णं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया तारि-सिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरन्ना दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया जारिसिया

मवि वेमाया सुहुमा इरियावहिया किरिया कज्जइ, सा पढमसमयबद्धपुट्ठा बितियसमयवेइया तइयसमयनिज्जरिया सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेइया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्मं वावि भवति से तेणट्ठेणं मंडियपुत्ता ! एवं वुच्चति-जावं च णं से जीवे सया समियं नो एयति जाव अंते अंतकिरिया भवति ॥ १५२ ॥ पमत्तसंजयस्स णं भंते ! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वावि य णं पमत्तद्धा कालओ केवच्चिरं होइ ? मंडियपुत्ता ! एगजीवं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी णाणा-जीवे पडुच्च सव्वद्धा ॥ अप्पमत्तसंजयस्स णं भंते ! अप्पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वावि य णं अप्पमत्तद्धा कालओ केवच्चिरं होइ ? मंडियपुत्ता ! एगजीवं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी देसूणा, णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं, सेवं भंते ! २ त्ति भगवं मंडियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १५३ ॥ भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी-कम्हा णं भंते ! लवणसमुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अतिरेगं वड्ढति वा हायति वा ? जहा जीवाभिगमे लवणसमुद्दवत्तव्वया नेयव्वा जाव लोयट्ठिती जण्णं लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं २ नो उप्पीलेति नो चेव णं एगोदगं करेइ (लोगट्ठिई) लोयाणुभावे। सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरति ॥ किरिया समत्ता ॥ १५४ ॥ तइयस्स सयस्स तइओ उद्देसो समत्तो ॥

अणगारे णं भंते ! भावियप्पा देवं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जाण-रूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं पासइ नो जाणं पासइ १ अत्थेगइए जाणं पासइ नो देवं पासइ २ अत्थेगइए देवंपि पासइ जाणंपि पासइ ३ अत्थेगइए नो देवं पासइ नो जाणं पासइ ४ ॥ अणगारे णं भंते ! भावियप्पा देविं वेउव्वियस-मुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! एवं चेव ॥ अण-गारे णं भंते ! भावियप्पा देवं सदेवीयं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं सदेवीयं पासइ नो जाणं पासइ, एएणं अभिलावेणं चत्तारि भंगा ॥ अणगारे णं भंते ! भावियप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ बाहिं पासइ ? चउभंगो। एवं किं मूलं पासइ कंदं पा ? चउभंगो मूलं पा खंधं पा ? चउभंगो एवं मूलेणं बीयं संजोएयव्वं एवं कंदेणवि समं संजोएयव्वं जाव बीयं एवं जाव पुप्फेण समं बीयं संजोएयव्वं ॥ अणगारे णं भंते ! भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पा बीयं पा ?, चउभंगो ॥ १५५ ॥ पभू णं भंते ! वाउकाए एगं महं इत्थिरूवं वा पुरिसरूवं वा हत्थिरूवं वा जाणरूवं वा एवं जुग्गगिल्लिथिल्लिसीयसंदमा-णियरूवं वा विउव्वित्तए ?, गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, वाउकाए णं विकुव्वमाणे एगं

से जीवे सया समित जाव अते अतकिरिया न भवति?, मडियपुत्ता! जाव च णं से जीवे सया समितं जाव परिणमति ताव च णं से जीवे आरभइ सारभइ समारंभइ आरंभे वट्टइ सारंभे वट्टइ समारंभे वट्टइ आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे आरंभे वट्टमाणे सारंभे वट्टमाणे समारंभे वट्टमाणे बहूणं पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खावणयाए सोयावणयाए जूरावणयाए तिप्पावणयाए पिट्टावणयाए परियावणयाए वट्टइ, से तेणट्ठेण मडियपुत्ता! एवं वुचइ–जाव च ण से जीवे सया समिय एयति जाव परिणमति तावं च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया न भवइ॥ जीवे ण भंते! सया समिय णो एयइ जाव नो त त भाव परिणमइ?, हता मडियपुत्ता! जीवे ण सया समिय जाव नो परिणमति। जाव च ण भंते! से जीवे नो एयति जाव नो त त भावं परिणमति ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया भवइ? हता! जाव भवति। से केणट्ठेग भंते! जाव भवति?, मडियपुत्ता! जाव च ण से जीवे सया समिय णो एयति जाव णो परिणमइ तावं च ण से जीवे नो आरंभइ नो सारभइ नो समारंभइ नो आरंभे वट्टइ णो सारंभे वट्टइ णो समारंभे वट्टइ अणारंभमाणे असारभमाणे असमारंभमाणे आरंभे अवट्टमाणे सारंभे अवट्टमाणे समारंभे अवट्टमाणे बहूण पाणाणं ४ अदुक्खावणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टइ। से जहानामए केइ पुरिसे सुक्क तणहत्थय जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूण मडियपुत्ता! से सुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जइ? हता! मसमसाविज्जइ, से जहानामए–केइ पुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदयबिंदू पक्खिवेज्जा, से नूण मडियपुत्ता! से उदयबिंदू तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ?, हता! विद्धसमागच्छइ, से जहानामए हरए सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठति?, हता! चिट्ठति, अहे ण केइ पुरिसे तसि हरयंसि एग मह णाव सतासवं सयच्छिद्दं ओगाहेज्जा से नूणं मंडियपुत्ता! सा नावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरेमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति? हता! चिट्ठति, अहे ण केइ पुरिसे तीसे नावाए सव्वतो समता आसवदाराइ पिहेइ २ नावाउस्सिंचणएण उदय उस्सिंचिज्जा से नूण मंडियपुत्ता! सा नावा तसि उदयसि उस्सिंचिज्जंसि समाणंसि खिप्पामेव उड्ढ उदाइ?, हता! उदाइज्जा, एवामेव मडियपुत्ता! अत्तत्तासवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स जाव गुत्तबभयारिस्स आउत्त गच्छमाणस्स चिट्ठमाणस्स निसीयमाणस्स तुयट्टमाणस्स आउत्तं वत्थपडिग्गहकबलपायपुछणं गेण्हमाणस्स णिक्खिवमाणस्स जाव चक्खुपम्हनिवाय-

मह पडागासठिय एवं विकुव्वइ । पभू ण भंते ! वाउकाए एग मह पडागासठियं रूव विउव्वित्ता अणेगाइ जोयणाइ गमित्तए ?, हता ! पभू । से भंते ! कि आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ?, गोयमा ! आयड्ढीए ग० णो परिड्ढीए ग० जहा आयड्ढीए एव चेव आयकम्मुणावि आयप्पओगेणवि भाणियव्व । से भंते ! किं ऊसिओदग गच्छइ पयोदगं ग० ?, गोयमा ! ऊसिओदयपि ग० पयोदयपि ग०, से भंते ! किं एगओपडाग गच्छइ दुहओपडाग गच्छइ ?, गोयमा ! एगओपडागं गच्छइ नो दुहओपडागं गच्छइ, से ण भंते ! किं वाउकाए पडागा ?, गोयमा ! वाउकाए ण से नो खलु सा पडागा ॥१५६॥ पभू णं भंते ! बलाहगे एग मह इत्थिरूव वा जाव सदमाणियरूव वा परिणामेत्तए ?, हंता ! पभू । पभू ण भंते ! बलाहए एग मह इत्थिरूव परिणामेत्ता अणेगाइ जोयणाई गमित्तए ?, हता ! पभू, से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ?, गोयमा ! नो आयड्ढीए गच्छति, परिड्ढीए ग० एव नो आयकम्मुणा परकम्मुणा नो आयपओगेण परप्पओगेणं ऊसितोदय वा गच्छइ,पयोदय वा गच्छइ, से भंते ! किं बलाहए इत्थी ?, गोयमा ! बलाहए णं से णो खलु सा इत्थी, एवं पुरिसे आसे हत्थी ॥ पभू णं भंते ! बलाहए एग मह जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइ जोयणाइ गमित्तए ? जहा इत्थिरूवं तहा भाणियव्व, णवरं एगओचक्कवालंपि दुहओचक्कवालपि गच्छइ (त्ति) भाणियव्व, जुग्गगिल्लिथिल्लिसीयासदमाणियाण तहेव ॥ १५७ ॥ जीवे ण भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से ण भंते ! किंलेसेसु उववज्जति ?, गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, त०—कण्हलेसेसु वा नीललेसेसु वा काउलेसेसु वा, एव जस्स जा लेस्सा सा तस्स भाणियव्वा जाव जीवे ण भंते ! जे भविए जोतिसिएसु उववज्जित्तए ? पुच्छा, गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता काल करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, त०—तेउलेस्सेसु । जीवे ण भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए से ण भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ ?, गोयमा ! जल्लेस्साइ दव्वाइ परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, त०—तेउलेस्सेसु वा पम्हलेसेसु वा सुक्कलेसेसु वा ॥ १५८ ॥ अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभार पव्वय उल्लंघेत्तए वा पलंघेत्तए वा ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभार पव्वयं उल्लंघेत्तए वा पलंघेत्तए वा ?, हता ! पभू । अणगारे ण भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता जावइयाइ रायगिहे नगरे रूवाइ एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वय अतो अणुप्पविसित्ता पभू सम वा विसम करेत्तए विसम वा सम करेत्तए ?, गोयमा !

जाव रायगिहे नगरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाई जाणइ पासइ ?
हंता ! जाणइ पासइ, से चेव जाव तस्स णं एवं होइ-एवं खलु अहं वाणारसीए नगरीए
समोहए रायगिहे नगरे रूवाई जाणामि पासामि से से दंसणे विवच्चासे भवति,
से तेणट्ठेणं जाव अन्नहाभावं जाणइ पासइ ॥ अणगारे णं भंते ! भावियप्पा माई
मिच्छद्दिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगणाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं रायगिहं
च नगरं अंतरा एगं महं जणवयवग्गं समोहए २ वाणारसिं नगरिं रायगिहं च नगरं
अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणति पासति ? हंता ! जाणइ पासइ, से भंते ! किं
तहाभावं जाणइ पासइ अन्नहाभावं जाणइ पा ? गोयमा ! णो तहाभावं जाणति
पासइ अन्नहाभावं जाणइ पासइ, से केणट्ठेणं जाव पासइ ? गोयमा ! तस्स खलु एवं
भवति एस खलु वाणारसी [ए] नगरी एस खलु रायगिहे नगरे एस खलु अंतरा
एगे महं जणवयवग्गे नो खलु एस महं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी विभंगनाणलद्धी
इड्ढी जुई जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, से से दंसणे
विवच्चासे भवति से तेणट्ठेणं जाव पासति ॥ अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अमाई
सम्मद्दिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए रायगिहे नगरे समोहए
२ वाणारसीए नगरीए रूवाई जाणइ पासइ ? हंता ! से भंते ! किं तहाभावं जाणइ
पासइ अन्नहाभावं जाणति पासति ? गोयमा ! तहाभावं जाणति पासति नो
अन्नहाभावं जाणति पासति से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! तस्स णं
एवं भवति-एवं खलु अहं रायगिहे नगरे समोहणित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाई
जाणामि पासामि से से दंसणे अविवच्चासे भवति से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति,
बीओ आलावगो एवं चेव नवरं वाणारसीए नगरीए समोहणा नेयव्वा रायगिहे
नगरे रूवाई जाणइ पासइ । अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अमाई सम्मद्दिट्ठी
वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए रायगिहं नगरं वाणारसिं नगरिं च
अंतरा एगं महं जणवयवग्गं समोहए २ रायगिहं नगरं वाणारसिं च नगरिं तं च
अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणइ पासइ ? हंता ! जा पा से भंते ! किं तहा-
भावं जाणइ पासइ अन्नहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहाभावं जाणइ पा
नो अन्नहाभावं जा पा से केणट्ठेणं ? गोयमा ! तस्स णं एवं भवति-नो खलु
एस रायगिहे नगरे नो खलु एस वाणारसी नगरी नो खलु एस अंतरा एगे जण-
वयवग्गे एस खलु ममं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी इड्ढी जुई जसे
बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए से से दंसणे अविवच्चासे
भवति से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति तहाभावं जाणति पासति नो अन्नहाभावं

याइ रुवाइं विउव्वित्तए ? एव चेव जाव विकुव्विसु वा ३ । एव दुहओपडागापि । से जहानामए-केइ पुरिसे एगओजण्णोवइय काउ गच्छेज्जा, एवामेव अण० भा० एगओजण्णोवइयकिच्चगएण अप्पाणेणं उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ? हता ! उप्पएज्जा, अणगारे ण भंते ! भावियप्पा केवतियाइ पभू एगओजण्णोवइयकिच्चगयाइ रुवाइ विकुव्वित्तए ? त चेव जाव विकुव्विसु वा ३, एवं दुहओजण्णोवइयपि । से जहानामए-केइ पुरिसे एगओपल्हत्थिय काउ चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारेवि भावियप्पा एव चेव जाव विकुव्विसु वा ३ एव दुहओपलियक पि । अणगारे ण भते ! भावियप्पा वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एग मह आसरुव वा हत्थिरुव वा सीहरुव वा वग्घवगदीवियअच्छतरच्छपरासररुव वा अभिजुजित्तए ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, अणगारे ण एव वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू । अणगारे ण भते ! भा० एग मह आसरुव वा अभिजुजित्ता अणेगाइ जोयणाइ गमित्तए ? हता ! पभू, से भते ! कि आयड्ढीए गच्छति परिड्ढीए गच्छति ?, गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ नो परिड्ढीए, एव आयकम्मुणा नो परकम्मुणा आयप्पओगेण नो परप्पओगेण उस्सिओदय वा गच्छइ पयोदग वा गच्छइ । से ण भते ! किं अणगारे आसे ?, गोयमा ! अणगारे ण से नो खलु से आसे, एव जाव परासररुव वा । से भते ! किं माई विकुव्वति अमाई विकुव्वति ?, गोयमा ! माई विकुव्वति नो अमाई विकुव्वति, माई ण भते ! तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते काल करेइ कहिं उववज्जति ?, गोयमा ! अन्नयरेसु आभियोगेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ, अमाई ण तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कते काल करेइ कहिं उववज्जति ?, गोयमा ! अन्नयरेसु अणाभिओगेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ, सेव भते २ त्ति, गाहा-इत्थीअसीपडागा जण्णोवइए य होइ वोद्धव्वे । पल्हत्थियपलियके अभिओगविकुव्वणा माई ॥ १ ॥ ॥ १६० ॥ **तइए सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥**

अणगारे ण भते ! भावियप्पा माई मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नगरे रुवाइ जाणति पासति ?, हता ! जाणइ पासइ । से भते ! किं तहाभाव जाणइ पासइ अन्नहाभाव जा० पा० ?, गोयमा ! णो तहाभाव जाणइ पा० अण्णहाभाव जा० पा० । से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ नो तहाभावं जा० पा० अन्नहाभाव जाणइ पा० ?, गोयमा ! तस्स ण एव भवति-एव खलु अह रायगिहे नगरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नगरीए रुवाइं जाणामि पासामि, से से दसणे विवच्चासे भवति, से तेणट्ठेणं जाव पासति । अणगारे ण भते ! भावियप्पा माई मिच्छदिट्ठी

जाणति पासति । अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव संनिवेसरूवं वा विउव्वित्तए ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, एवं बितिओवि आलावगो, णवरं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू । अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू गामरूवाइं विउव्वित्तए ?, गोयमा ! से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा तं चेव जाव विकुव्विंसु वा ३ एवं जाव सन्निवेसरूवं वा ॥ १६१ ॥ चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो कति आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, ते णं आयरक्खा वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे, एवं सव्वेसिं इंदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा भाणियव्वा । सेवं भंते २ त्ति ॥ १६२ ॥

तइयसए छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी–सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरन्नो कति लोगपाला पण्णत्ता ?, गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तंजहा–सोमे जमे वरुणे वेसमणे । एएसि णं भंते ! चउण्हं लोगपालाणं कति विमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा प०, तंजहा–संझप्पभे वरसिट्ठे सयजले वग्गू । कहिं णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारन्नो संझप्पभे णामं महाविमाणे पण्णत्ते ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं जाव पंच वडिंसया पण्णत्ता, तंजहा–असोयवडेंसए सत्तवन्नवडिंसए चंपयवडिंसए अंबवडिंसए मज्झे सोहम्मवडिंसए, तस्स णं सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जोयणाइं वीइवइत्ता एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो संझप्पभे नामं महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं उयालीसं जोयणसयसहस्साइं बावन्नं च सहस्साइं अट्ठ य अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं प० जा सूरियाभविमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अभिसेओ नवरं सोमे देवे ॥ संझप्पभस्स णं महाविमाणस्स अहे सपक्खिं सपडिदिसिं असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो सोमा नामं रायहाणी पण्णत्ता एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं जंबुद्दीवपमाणे (ण) वेमाणियाणं पमाणस्स अद्धं नेयव्वं जाव उवरियलेणं सोलस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पन्नासं जोयणसहस्साइं पंच य सत्ताणउए जोयणसते किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं पण्णत्ते, पासायाणं चत्तारि परि-

मोएजए दहिमुहे अयंपुले कायरिए । सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, अहावच्चाभिन्नायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता एवंमहिड्ढीए जाव वरुणे महाराया ३ ॥ १६६ ॥ कहि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो वग्गू णामं महाविमाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! तस्स णं सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरेणं जहा सोमस्स विमाणरायहाणिवत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव पासायवडिंसया । सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो इमे देवा आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठंति तंजहा-वेसमणकाइया इ वा वेसमणदेवकाइया इ वा सुवन्नकुमारा सुवन्नकुमारीओ दीवकुमारा दीवकुमारीओ दिसाकुमारा दिसाकुमारीओ वाणमंतरा वाणमंतरीओ जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति ॥ जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति तंजहा-अयागराइ वा तउयागराइ वा तंबयागराइ वा एवं सीसागराइ वा हिरण्ण सुवण्ण रयण वइरागराइ वा वसुहाराइ वा हिरण्णवासाइ वा सुवण्णवासाइ वा रयण वइर आभरण पत्त पुप्फ फल बीय मल्ल वन्न चुन्न गंध वत्थवासाइ वा हिरण्णवुट्ठीइ वा सु० र० व आ प पु फ बी व चुन्न गंधवुट्ठी वत्थवुट्ठीइ वा भायणवुट्ठीइ वा खीरवुट्ठीइ वा सुयालाइ वा दुक्कालाइ वा अप्पग्घाइ वा महग्घाइ वा सुभिक्खाइ वा दुब्भिक्खाइ वा कयविक्कयाइ वा सन्निहियाइ वा संनिचयाइ वा निहीइ वा निहाणाइ वा चिरपोराणाइं पहीणसामियाइ वा पहीणसेउयाइ वा [पहीणमग्गाणि वा] पहीणगोत्तागाराइ वा उच्छिन्नसामियाइ वा उच्छिन्नसेउयाइ वा उच्छिन्नगोत्तागाराइ वा सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु नगरनिद्धमणेसु वा सुसाणगिरिकंदरसंतिसेलोवट्ठाणभवणगिहेसु संनिक्खित्ताइं चिट्ठंति एयाइं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो न अन्नायाइं अदिट्ठाइं असुयाइं अविन्नायाइं तेसिं वा वेसमणकाइयाणं देवाणं सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो इमे देवा अहावच्चाभिन्नाया होत्था, तंजहा-पुन्नभद्दे माणिभद्दे सालिभद्दे सुमणभद्दे चक्के रक्खे पुन्नरक्खे सव्वाणे [पव्वाणे] सव्वजसे सव्वकामे समिद्धे अमोहे असंगे सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो दो पलिओवमाणि ठिई पन्नत्ता अहावच्चाभिन्नायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता एवंमहिड्ढीए जाव वेसमणे महाराया ४ सेवं भंते ! २ त्ति ॥ १६७ ॥ तइए सए सत्तमो उद्देसओ समत्तो ॥

रायगिहे नयरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं कइ देवा आहेवच्चं जाव विहरंति ? गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति,

पव्वयस्स दाहिणेण जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तंजहा-डिंवाइ वा डमराइ वा कलहाइ वा बोलाइ वा खाराइ वा महाजुद्धाइ वा महासंगामाइ वा महासत्थनिवडणाइ वा एवं पुरिसनिवडणाइ वा महारुधिरनिवडणाइ वा दुब्भूयाइ वा कुलरोगाइ वा गामरोगाइ वा मंडलरोगाइ वा नगररोगाइ वा सीसवेयणाइ वा अच्छिवेयणाइ वा कन्नहदंतवेयणाइ वा इंदगाहाइ वा खंदगाहाइ वा कुमारगाह जक्खगाहा० भूयगाहा० एगाहियाइ वा वेआहियाइ वा तेयाहियाइ वा चाउत्थहियाइ वा उव्वेयगाइ वा कासा० सासाइ वा सोसेइ वा जराइ वा दाहा० कच्छकोहाइ वा अजीरया पंडुरगा हरिसाइ वा भगंदराइ वा हिययसूलाइ वा मत्थयसू० जोणिसू० पाससू० कुच्छिसू० गाममारीइ वा नगर० खेड० कव्वड० दोणमुह० मडंव० पट्टण० आसम० संवाह० संनिवेसमारीइ वा पाणक्खया धणक्खया जणक्खया कुलक्खया वसणब्भूयमणारिया जे यावन्ने तहप्पगारा न ते सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो अण्णाया०५ तेसिं वा जमकाइयाण देवाणं ॥१६४॥ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारन्नो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तंजहा-अंबे १ अंबरिसे चेव २, सामे ३ सबलेत्ति यावरे ४। रुद्दो ५-वरुद्दे ६ काले ७ य, महाकालेत्ति यावरे ८ ॥ १ ॥ असिपत्ते ९ धणू १० कुंभे ११ (असी य असिपत्ते कुंभे) वालू १२ वेयरणीति य १३। खरस्सरे १४ महाघोसे १५, एए पन्नरसाहिया ॥ २ ॥ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो सत्तिभागं पलिओवमं ठिई प०, अहावच्चाभिण्णायाण देवाण एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, एवंमहिड्ढिए जाव जमे महाराया २ ॥१६५॥ कहि ण भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो सयजले नाम महाविमाणे पन्नत्ते?, गोयमा! तस्स ण सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जहा सोमस्स तहा विमाणरायहाणीओ भाणियव्वा जाव पासायवडिंसया नवरं नामणाणत्तं। सक्कस्स णं ३ वरुणस्स महारन्नो इमे देवा आणा० जाव चिट्ठंति, तं०-वरुणकाइयाइ वा वरुणदेवकाइयाइ वा नागकुमारा नागकुमारीओ उदहिकुमारा उदहिकुमारीओ थणियकुमारा थणियकुमारीओ जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति ॥ जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तंजहा-अइवासाइ वा मंदवासाइ वा सुवुट्ठीइ वा दुव्वुट्ठीइ वा उदब्भेयाइ वा उदप्पीलाइ वा उदवाहाइ वा पव्वाहाइ वा गामवाहाइ वा जाव सन्निवेसवाहाइ वा पाणक्खया जाव तेसिं वा वरुणकाइयाण देवाणं, सक्कस्स ण देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो जाव अहावच्चाभिन्नाया होत्था, तंजहा-कक्कोडए कद्दमए अंजणे संखवालए पुंडे पलासे

तंजहा–चमरे असुरिंदे असुररायो सोमे जमे वरुणे वेसमणे बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया सोमे जमे वरुणे वेसमणे। नागकुमाराणं भंते! पुच्छा, गोयमा! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तंजहा–धरणे नागकुमारिंदे नागकुमारराया कालवाले कोलवाले सेलवाले संखवाले भूयाणंदे नागकुमारिंदे णागकुमारराया कालवाले कोलवाले संखवाले सेलवाले, जहा नागकुमारिंदाणं एयाए वत्तव्वयाए णेयव्वं एवं इमाणं नेयव्वं, सुवण्णकुमाराणं वेणुदेवे वेणुदाली चित्ते विचित्ते चित्तपक्खे विचित्तपक्खे, विज्जुकुमाराणं हरिकंते हरिस्सहे पभे १ सुप्पभे २ पभकंते ३ सुप्पभकंते ४, अग्गिकुमाराणं अग्गिसीहे अग्गिमाणवे तेऊ तेउसीहे तेउकंते तेउप्पभे, दीवकुमाराणं पुण्णविसिट्ठरूयसुरूयरूयकंत(रूयस, रूयसीह)रूयप्पभा, उदहिकुमाराणं जलकंतजलप्पभजलजलरूयजलकंतजलप्पभा, दिसाकुमाराणं अमियगई अमियवाहणे तुरियगई खिप्पगई सीहगई सीहविक्कमगई, वाउकुमाराणं वेलंबपभंजणकालमहाकालअंजणरिट्ठा, थणियकुमाराणं घोसमहाघोसआवत्तवियावत्तनंदियावत्तमहानंदियावत्ता, एवं भाणियव्वं जहा असुरकुमाराणं। सो० १ का० २ चि० ३ प० ४ ते० ५ रु० ६ ज० ७ तु० ८ का० ९ आ० १० सोमे य महाकाले, चित्तप्पभ तेउ तह रुए चेव। जल तह तुरियगई य काले आउत्त पढमा उ। पिसायकुमाराणं पुच्छा, गोयमा! दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तंजहा–काले य महाकाले सुरूवपडिरूव पुन्नभद्दे य। अमरवइ माणिभद्दे भीमे य तहा महाभीमे ॥१॥ किंनरकिंपुरिसे खलु सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे। अइकाय महाकाए गीयरई चेव गीयजसे ॥२॥ एए वाणमंतराणं देवाणं। जोइसियाणं देवाणं दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तंजहा–चंदे य सूरे य। सोहम्मीसाणेसु णं भंते! कप्पेसु कइ देवा आहेवच्चं जाव विहरंति? गोयमा! दस देवा जाव विहरंति, तंजहा–सक्के देविंदे देवराया सोमे जमे वरुणे वेसमणे, ईसाणे देविंदे देवराया सोमे जमे वरुणे वेसमणे, एसा वत्तव्वया सव्वेसुवि कप्पेसु, एए चेव भाणियव्वा, जे य इंदा ते य भाणियव्वा सेवं भंते! २ त्ति ॥ १६८ ॥

तइए सए अट्ठमो उद्देसओ समत्तो ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी–कइविहे णं भंते! इंदियविसए पण्णत्ते?, गोयमा! पंचविहे इंदियविसए पण्णत्ते, तं०–सोतिंदियविसए० जीवाभिगमे जोइसियउद्देसो नेयव्वो अपरिसेसो, से०२त्ति॥१६९॥ **तइए सए नवमो उद्देसओ समत्तो ॥**

रायगिहे जाव एवं वयासी–चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररन्नो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ?, गोयमा! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तंजहा–समिया चंडा जाया, एवं जहाणुपुव्वीए जावऽच्चुओ कप्पो, सेवं भंते! २ त्ति ॥१७०॥ **तइयसए दसमो उद्देसो समत्तो, तइयं सयं समत्तं ॥**

दिवसे सोलसमुहुत्ता राई चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगा सोलसमुहुत्ता राई तेरसमुहुत्ते दिवसे सत्तरसमुहुत्ता राई तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगा सत्तरसमुहुत्ता राई। जया णं जंबु० दाहिणड्ढे जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि जया णं उत्तरड्ढे तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ? हंता गोयमा! एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव राई भवइ। जया णं भंते! जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं पच्चत्थिमेणवि तया णं जंबु० मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ? हंता गोयमा! जाव राई भवइ ॥ १७६ ॥ जया णं भंते! जंबु० दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ जया णं उत्तरड्ढेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं अणंतरपुरक्खडसमयंसि वासाणं प० स० प०? हंता गोयमा! जया णं जंबु० २ दाहिणड्ढे वासाणं प० स० पडिवज्जइ तह चेव जाव पडिवज्जइ। जया णं भंते! जंबु० मंदरस्स पुरत्थिमेणं वासाणं पढमे स० पडिवज्जइ तया णं पच्चत्थिमेणवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, जया णं पच्चत्थिमेणवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जाव मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकडसमयंसि वासाणं प० स० पडिवन्ने भवइ? हंता गोयमा! जया णं जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव पडिवन्ने भवइ ॥ एवं जहा समएणं अभिलावो भणिओ वासाणं तहा आवलियाएवि २ भाणियव्वो, आणापाणुणवि ३ थोवेणवि ४ लवेणवि ५ मुहुत्तेणवि ६ अहोरत्तेणवि ७ पक्खेणवि ८ मासेणवि ९ उउणावि १० एएसिं सव्वेसिं जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो। जया णं भंते! जंबु० दाहिणड्ढे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ जहेव वासाणं अभिलावो तहेव हेमंताणवि २ गिम्हाणवि ३ भाणियव्वो जाव उऊ, एवं एए तिन्निवि एएसिं तीसं आलावगा भाणियव्वा। जया णं भंते! जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समएणं अभिलावो तहेव अयणेणवि भाणियव्वो जाव अणंतरपच्छाकडसमयंसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ, जहा अयणेणं अभिलावो तहा संवच्छरेणवि भाणियव्वो जुएणवि वाससएणवि वाससहस्सेणवि वाससयसहस्सेणवि पुव्वंगेणवि पुव्वेणवि तुडियंगेणवि तुडिएणवि, एवं पुव्वे २ तुडिए २ अडडे २ अववे २ हूहुए २ उप्पले २ पउमे २ नलिणे २ अच्छणिउरे(अत्थिनिउरे) २ अउए २ नउए २ पउए २ चूलिया

दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छंति, पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिणपडीणमागच्छंति, दाहिणपडीणमुग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छंति पडीणउदीणं उग्गच्छ उदीचिपाईणमागच्छंति ?, हंता ! गोयमा ! जंबूदीवे णं दीवे सूरिया उदीचिपाईणमुग्गच्छ जाव उदीचिपाईणमागच्छंति ॥ १७५ ॥ जया ण भंते ! जंबूदीवे २ दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तदा ण उत्तरड्ढे दिवसे भवइ जदा णं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ तदा णं जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिम-पञ्चत्थिमेणं राई भवइ ?, हंता गोयमा ! जया णं जंबूदीवे २ दाहिणड्ढेवि दिवसे जाव राई भवइ । जदा ण भंते ! जंबु० मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं दिवसे भवइ तदा ण पञ्चत्थिमेणवि दिवसे भवइ जया णं पञ्चत्थिमेणं दिवसे भवइ तदा णं जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवइ ?, हंता गोयमा ! जदा ण जंबू० मंदरपुरच्छिमेण दिवसे जाव राई भवइ, जदा णं भंते ! जंबूदीवे २ दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तदा ण उत्तरड्ढेवि उक्कोसए अट्ठा-रसमुहुत्ते दिवसे भवइ जदा ण उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तदा ण जंबूदीवे २ मंदरस्स पुरच्छिमपञ्चत्थिमेण जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?, हंता गोयमा ! जदा णं जंबू० जाव दुवालसमुहुत्ता राई भवइ । जदा णं जंबू० मंदरस्स पुरच्छिमेणं उक्कोसए अट्ठारस जाव तदा ण जंबूदीवे २ पञ्चत्थिमेणवि उक्को० अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जया ण पञ्चत्थिमेण उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तदा णं भंते ! जंबुदीवे २ उत्तर० दुवालसमुहुत्ता जाव राई भवइ ?, हंता गोयमा ! जाव भवइ । जया णं भंते ! जंबू० दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तदा ण उत्तरे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ जदा ण उत्तरे अट्ठा-रसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तदा णं जंबू० मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपञ्चत्थिमेणं सातिरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?, हंता गोयमा ! जदा ण जंबू० जाव राई भवइ । जदा ण भंते ! जंबूदीवे २ पुरच्छिमेणं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तदा णं पञ्चत्थिमेण अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ जदा णं पञ्चत्थिमेणं अट्ठार-समुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तदा णं जंबू० २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं साइ-रेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?, हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥ एवं एएण कमेणं उच्चारेयव्वं सत्तरसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ता राई भवइ सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगा तेरसमुहुत्ता राई सोलसमुहुत्ते दिवसे चोद्दसमुहुत्ता राई सोलसमुहुत्ताणं-तरे दिवसे सातिरेगचोद्दसमुहुत्ता राई पन्नरसमुहुत्ते दिवसे पन्नरसमुहुत्ता राई भवइ पन्नरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगा पन्नरसमुहुत्ता राई चोद्दसमुहुत्ते

२ सीसपहेलिया २ पलिओवमेणवि सागरोवमेणवि भाणियव्वो। जया णं भंते! जंबूदीवे २ दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ तया णं उत्तरड्ढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जया णं उत्तरड्ढेवि पडिवज्जइ तदा णं जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणवि णेवत्थि ओसप्पिणी नेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पन्नत्ते? समणाउसो!, हंता गोयमा! तं चेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो!, जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उस्सप्पिणीएवि भाणियव्वो॥ १७७॥ लवणे णं भंते! समुद्दे सूरिया उदीचिपाईणमुग्गच्छ जच्चेव जंबूदीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्सवि भाणियव्वा, नवरं अभिलावो इमो णेयव्वो-जया णं भंते! लवणे समुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तं चेव जाव तदा णं लवणे समुद्दे पुरच्छिमपच्चत्थिमेण राई भवइ, एएणं अभिलावेणं नेयव्वं। जदा णं भंते! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ तदा णं उत्तरड्ढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जदा णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ तदा णं लवणसमुद्दे पुरच्छिमपच्चत्थिमेण नेवत्थि ओसप्पिणी २ समणाउसो!? , हंता गोयमा! जाव समणाउसो!॥ धायइसंडे णं भंते! दीवे सूरिया उदीचिपाईणमुग्गच्छ जहेव जंबूदीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव धायइसंडस्सवि भाणियव्वा, नवरं इमेणं अभिलावेण सव्वे आलावगा भाणियव्वा। जया णं भंते! धायइसंडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तदा णं उत्तरड्ढेवि जया णं उत्तरड्ढेवि तदा णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं राई भवइ?, हंता गोयमा! एवं चेव जाव राई भवइ। जदा णं भंते! धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिमेणं दिवसे भवइ तदा णं पच्चत्थिमेणवि, जदा णं पच्चत्थिमेणवि तदा णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं उत्तरेणं दाहिणेणं राई भवइ?, हंता गोयमा! जाव भवइ, एवं एएणं अभिलावेणं नेयव्वं जाव जया णं भंते! दाहिणड्ढे पढमा ओस० तया णं उत्तरड्ढे जया णं उत्तरड्ढे तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं नत्थि ओस० जाव समणाउसो!,? हंता गोयमा! जाव समणाउसो!, जहा लवणसमुद्दस्स वत्तव्वया तहा कालोदस्सवि भाणियव्वा, नवरं कालोदस्स नामं भाणियव्वं। अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं भंते! सूरिया उदीचिपाईणमुग्गच्छ जहेव धायइसंडस्स वत्तव्वया तहेव अब्भिंतरपुक्खरद्धस्सवि भाणियव्वा नवरं अभिलावो जाव जाणेयव्वो जाव तया णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं नेवत्थि ओस० नेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पन्नत्ते समणाउसो! सेवं भंते! २ त्ति॥ १७८॥ **पंचमसए पढमो उद्देसो समत्तो॥**

सीसए उवले- कसट्टिया, एए ण पुव्वभावपन्नवण पडुच्च पुढविजीवसरीरा तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीराति वत्तव्वं सिया। अहण्णं भंते! अट्ठी अट्ठिज्झामे चम्मे चम्मज्झामे रोमे २ सिंगे २ खुरे २ नखे २ एए ण किंसरीराति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा! अट्ठी चम्मे रोमे सिंगे खुरे नहे एए ण तसपाणजीवसरीरा अट्ठिज्झामे चम्मज्झामे रोमज्झामे सिंग० खुर० णहज्झामे एए ण पुव्वभावपण्णवण पडुच्च तसपाणजीवसरीरा तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीव० त्ति वत्तव्वं सिया। अह भंते! इंगाले छारिए भुसे गोमए एए णं किंसरीराइ वत्तव्व सिया ?, गोयमा! इगाले छारिए भुसे गोमए एए ण पुव्वभावपण्णवण पडुच्च एगिंदियजीवसरीरप्पओगपरिणामियावि जाव पंचिंदियजीवसरीरप्पओगपरिणामियावि तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीराति वत्तव्वं सिया ॥ १८० ॥ लवणे ण भंते! समुद्दे केवइय चक्कवालविक्खमेण पन्नत्ते ?, एव नेयव्व जाव लोगट्ठिई लोगाणुभावे, सेव भंते! २ त्ति भगव जाव विहरइ ॥ १८१ ॥

पंचमे सए वीओ उद्देसो समत्तो ॥

अण्णउत्थिया ण भंते! एवमाइक्खति भा० प० एव प० से जहानामए जालगठिया सिया आणुपुव्विगढिया अणतरगढिया परंपरगढिया अन्नमन्नगढिया अन्नमन्नगुरुयत्ताए अन्नमन्नभारियत्ताए अन्नमन्नगुरुयसभारियत्ताए अण्णमण्णघडत्ताए जाव चिट्ठति, एवामेव वहूण जीवाण वहूसु आजाइसयसहस्सेसु वहूइ आउयसहस्साइ आणुपुव्विगढियाइ जाव चिट्ठंति, एगेऽविय ण जीवे एगेग समएण दो आउयाइं पडिसवेदेइ, तजहा-इहभवियाउय च परभवियाउयं च, जं समय इहभवियाउयं पडिसवेदेइ त समय परभवियाउय पडिसवेदेइ जाव से कहमेय भंते! एवं ?, गोयमा! जन्न ते अन्नउत्थिया त चेव जाव परभवियाउय च, जे ते एवमाहसु त मिच्छा, अह पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स वहूहिं आजाइसहस्सेहिं वहूइ आउयसहस्साइं आणुपुव्विगढियाइ जाव चिट्ठति, एगेऽविय णं जीवे एगेण समएण एग आउयं पडिसवेदेइ, तंजहा-इहभवियाउयं वा परभवियाउय वा, ज समय इहभवियाउय पडिसवेदेइ नो त समय पर० पडिसवेदेइ ज समय प० नो त समयं इहभवियाउयं प०, इहभवियाउयस्स पडिसंवेयणाए नो परभवियाउयं पडिसवेदेइ परभवियाउयस्स पडिसवेयणाए नो इहभवियाउयं पडिसवेदेइ, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एगं आउय प० तंजहा-इहभ० वा परभ० वा ॥ १८२ ॥ जीवे ण भंते! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से ण भंते! किं साउए संकमइ निराउए सकमइ ?,

अइमुत्ते कुमारसमणे कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ?, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी-एवं खलु अज्जो! मम अंतेवासी अइमुत्ते णामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए से णं अइमुत्ते कुमारसमणे इमेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ, तं मा णं अज्जो! तुब्भे अइमुत्तं कुमारसमणं हीलेह निंदह खिंसह गरहह अवमन्नह, तुब्भे णं देवाणुप्पिया! अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हह अगिलाए उवगिण्हह अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं वेयावडियं करेह, अइमुत्ते णं कुमारसमणे अंतकरे चेव अंतिमसरीरिए चेव। तए णं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया म० एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावडियं करेंति ॥ १८० ॥ तेणं कालेणं २ महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ महाविमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया तए णं ते देवा समणं भगवं महावीरं मणसा चेव वंदंति णमंसंति मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं पुच्छंति-कइ णं भंते! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति? तए णं समणे भगवं महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे तेसिं देवाणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया! मम सत्त अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति तए णं ते देवा समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हयहियया समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति २ त्ता मणसा चेव सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा जाव पज्जुवासंति। तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव अदूरसामंते उड्ढंजाणू जाव विहरइ, तए णं तस्स भगवओ गोयमस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु दो देवा महिड्ढिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया तं नो खलु अहं ते देवे जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओ वा विमाणाओ वा कस्स वा अत्थस्स अट्ठाए इहं हव्वमागया! तं गच्छामि णं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि इमाइं च णं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामित्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ उट्ठाए उट्ठेइ २ जेणेव समणे भगवं महा० जाव पज्जुवासइ, गोयमाइ समणे भगवं म० भगवं गोयमं एवं वयासी-से णूणं तव गोयमा! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए से णूणं गोयमा! अत्थे समत्थे? हंता! अत्थि, तं गच्छाहि णं गोयमा! एए चेव देवा

नो णं तहा केवली हसेज्ज वा जाव उस्सुयाएज्ज वा ?, गोयमा ! जण्णं जीवा चरित्तमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं हसंति वा उस्सुयायंति वा से णं केवलिस्स नत्थि, से तेणट्ठेणं जाव नो णं तहा केवली हसेज्ज वा उस्सुयाएज्ज वा। जीवे णं भंते ! हसमाणे वा उस्सुयमाणे वा कइ कम्मपयडीओ बंधइ ?, गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा, णेरइएणं भंते ! हसमाणे वा उस्सुयमाणे वा कइ कम्मपगडीओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा, जीवा णं भंते ! हसमाणा वा उस्सुयायमाणा वा कइ कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा, णेरइयाणं पुच्छा, गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा अहवा सत्तविहबंधगावि अट्ठविहबंधगावि, अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य। एवं जाव वेमाणिए, पोहत्तिएहिं-जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ॥ छउमत्थे णं भंते ! मणूसे निद्दाएज्ज वा पयलाएज्ज वा ? हंता ! निद्दाएज्ज वा पयलाएज्ज वा, जहा हसेज्ज वा तहा नवरं दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायंति वा पयलायंति वा, से णं केवलिस्स नत्थि, अन्नं तं चेव। जीवे णं भंते ! निद्दायमाणे वा पयलायमाणे वा कइ कम्मपयडीओ बंधइ ?, गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा, एवं जाव वेमाणिए, पोहत्तिएसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ॥ १८५ ॥ हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी सक्कदूए इत्थीगब्भं संहरणमाणे किं गब्भाओ गब्भं साहरइ १ गब्भाओ जोणिं साहरइ २ जोणीओ गब्भं साहरइ ३ जोणीओ जोणिं साहरइ ४ ?, गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भं साहरइ नो गब्भाओ जोणिं साहरइ नो जोणीओ जोणिं साहरइ परामुसिय २ अव्वाबाहेणं अव्वाबाहं जोणीओ गब्भं साहरइ ॥ पभू णं भंते ! हरिणेगमेसी सक्कस्स णं दूए इत्थीगब्भं नहसिरंसि वा रोमकूवंसि वा साहरित्तए वा नीहरित्तए वा ?, हंता ! पभू, नो चेव णं तस्स गब्भस्स किंचिवि आबाहं वा विबाहं वा उप्पाएज्जा छविच्छेदं पुण करेज्जा, एसुहुमं च णं साहरिज्ज वा नीहरिज्ज वा ॥ १८६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्ते णामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए, तए णं से अइमुत्ते कुमारसमणे अण्णया कयाइ महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गहरयहरणमायाए बहिया संपट्ठिए विहाराए, तए णं से अइमुत्ते कुमारसमणे वाहयं वहमाणं पासइ २ मट्टियाए पालिं बंधइ २ णाविया मे २ नाविओविव णावमयं पडिग्गहगं उदगंसि कट्टु पव्वाहमाणे २ अभिरमइ, तं च थेरा अद्दक्खु, जेणेव समणे भगवं० तेणेव उवागच्छंति २ एवं वदासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी अइमुत्ते णामं कुमारसमणे से णं भंते !

अणुओगदारे तहा णेयव्वं पमाणं जाव तेण परं नो अत्तागमे नो अणंतरागमे परं-
परागमे ॥ १९२ ॥ केवली णं भंते ! चरिमकम्मं वा चरिमणिज्जरं वा जाणइ
पासइ ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ । जहा णं भंते ! केवली चरिमकम्मं वा
जहा णं अंतकरेणं आलावगो तहा चरिमकम्मेणवि अपरिसेसिओ णेयव्वो ॥१९३॥
केवली णं भंते ! पणीयं मणं वा वइं वा धारेज्जा ? हंता ! धारेज्जा, जहा णं भंते !
केवली पणीयं मणं वा वइं वा धारेज्जा तं णं वेमाणिया देवा जाणंति पासंति ?,
गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पा० अत्थेगइया न जाणंति न पा०, से केणट्ठेणं
जाव न जाणंति न पासंति ?, गोयमा ! वेमाणिया देवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-
माइमिच्छादिट्ठिउववन्नगा य अमाइसम्मदिट्ठिउववन्नगा य, तत्थ णं जे ते माइमि-
च्छादिट्ठिउववन्नगा ते न जाणंति न पासंति, तत्थ णं जे ते अमाइसम्मदिट्ठिउव-
वन्नगा ते णं जाणंति पासंति, से केणट्ठेणं एवं वु० अमाई सम्मदिट्ठी जाव पा० ?
गोयमा ! अमाई सम्मदिट्ठी दुविहा पन्नत्ता-अणंतरोववन्नगा य परंपरोववन्नगा य
तत्थ अणंतरोववन्नगा न जा० परंपरोववन्नगा जाणंति, से केणट्ठेणं भंते ! एवं
परंपरोववन्नगा जाव जाणंति ?, गोयमा ! परंपरोववन्नगा दुविहा पन्नत्ता-पज्जत्तगा
य अपज्जत्तगा य, पज्जत्ता जा० अपज्जत्ता न जा० एवं-अणंतरपरंपरपज्जत्तअप-
ज्जत्ता य उवउत्ता अणुवउत्ता, तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते जा० पा०, से तेणट्ठेणं
तं चेव ॥ १९४ ॥ पभू णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा
इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ? हंता ! पभू, से केणट्ठेणं
जाव पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ? गोयमा ! जण्णं अणुत्तरोववा-
इया देवा तत्थगया चेव समाणा अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं
वा पुच्छंति तण्णं इहगए केवली अट्ठं वा जाव वागरणं वा वागरेइ, से तेणट्ठेणं ।
जण्णं भंते ! इहगए चेव केवली अट्ठं वा जाव वागरेइ तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा
तत्थगया चेव समाणा जा० पा० ? हंता ! जाणंति पासंति, से केणट्ठेणं जाव
पासंति ? गोयमा ! तेसि णं देवाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ
अभिसमन्नागयाओ भवंति, से तेणट्ठेणं जण्णं इहगए केवली जाव पा० ॥ १९५ ॥
अणुत्तरोववाइया णं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा उवसंतमोहा खीणमोहा ? गोयमा !
नो उदिण्णमोहा उवसंतमोहा नो खीणमोहा ॥ १९६ ॥ केवली णं भंते ! आया-
णेहिं जा० पा० ? गोयमा ! नो तिणट्ठे स०, से केणट्ठेणं जाव केवली णं आया-
णेहिं न जाणइ न पासइ ? गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमेणं मियंपि जाणइ
अमियंपि जा० जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स से तेण० ॥ १९७ ॥ केवली णं

इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति, तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुन्नाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ जेणेव ते देवा तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं ते देवा भगवं गोयमं एज्जमाणं पासंति २ हट्ठा जाव हयहियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेंति २ खिप्पामेव पच्चुवागच्छंति २ जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता जाव णमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु भंते! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ महाविमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव पाउब्भूआ तए णं अम्हे समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो २ मणसा चेव इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो-कइ णं भंते! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति ?, तए णं समणे भगवं महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्हं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ-एवं खलु देवाणु० मम सत्त अंतेवासिसयाइं जाव अंतं करेहिंति, तए णं अम्हे समणेणं भगवया महावीरेण मणसा चेव पुट्ठेण मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा समणं भगवं महावीरं वंदामो नमसामो २ जाव पज्जुवासामोत्तिकट्टु भगवं गोयमं वंदंति नमंसंति २ जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं प० ॥ १८८ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवं वदासी-देवा णं भंते! संजयाति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा! णो तिणट्ठे समट्ठे, अब्भक्खाणमेयं, देवा णं भंते! असंजयाइ वत्तव्वं सिया ?, गोयमा! णो तिणट्ठे०, णिट्ठुरवयणमेयं, देवा णं भंते! संजया-संजयाति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा! णो तिणट्ठे समट्ठे, असब्भूयमेयं देवाणं, से किं खाइ णं भंते! देवाति वत्तव्वं सिया ?, गोयमा! देवा णं नोसंजयाति वत्तव्वं सिया ॥ १८९ ॥ देवा णं भंते! कयराए भासाए भासंति ?, कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ ?, गोयमा! देवा णं अद्धमागहाए भासाए भासंति, सावि य णं अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ ॥ १९० ॥ केवली णं भंते! अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणइ पासइ ?, हंता! गोयमा! जाणइ पासइ। जहा णं भंते! केवली अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणति पासति तहा णं छउमत्थेवि अंतकरं वा अंतिमसरीरियं वा जाणइ पासइ ?, गोयमा! णो तिणट्ठे समट्ठे, सोच्चा जाणइ पासइ, पमाणओ वा, से किं तं सोच्चा ?, सोच्चा णं केवलिस्स वा केवलिसावयस्स वा केवलिसावियाए वा केवलिउवासगस्स वा केवलिउवासियाए वा तप्पक्खियस्स वा तप्पक्खियसावगस्स वा तप्पक्खियसावियाए वा तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा से तं सोच्चा ॥ १९१ ॥ से किं तं पमाणे ?, पमाणे चउव्विहे प० तंजहा-पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, जहा

॥ २०१ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते! भारहे वासे इमीसे ओस० कइ कुलगरा होत्था? गोयमा! सत्त एवं तित्थयरा तित्थयरमायरो पियरो पढमा सिस्सिणीओ चक्कवट्टि-मायरो पियरो इत्थिरयणं बलदेवा वासुदेवा वासुदेवमायरो पियरो एएसिं पडिसत्तू जहा समवाए णामपरिवाडीए तहा णेयव्वा। सेवं भंते! २ त्ति जाव विहरइ ॥२०२॥ पंचमसए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥

कहण्णं भंते! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति? गोयमा! तिहिं ठाणेहिं, तंजहा—पाणे अइवाएत्ता मुसं वइत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणे-सणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥ कहण्णं भंते! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति?, गोयमा! तिहिं ठाणेहिं—नो पाणे अइवाइत्ता नो मुसं वइत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुए-सणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥ कहण्णं भंते! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति?, गोयमा! पाणे अइवाइत्ता मुसं वइत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलित्ता निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमन्नित्ता अन्नयरेणं अमणुन्नेणं अपीइकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥ कहण्णं भंते! जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति? गोयमा! नो पाणे अइवाइत्ता नो मुसं वइत्ता तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता अन्नयरेणं मणुन्नेणं पीइकारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा सुभ-दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥ २०३ ॥ गाहावइस्स णं भंते! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा तस्स णं भंते! तं भंडं अणुगवेसमाणस्स किं आरंभिया किरिया कज्जइ परिग्गहिया माया अप० मिच्छा०? गोयमा! आरंभिया किरिया कज्जइ परि० माया अपच० मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ सिय नो कज्जइ ॥ अह से भंडे अभिसमन्नागए भवइ, तओ से पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुईभवंति ॥ गाहावइस्स णं भंते! तं भंडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइ-ज्जेज्जा भंडे य से अणुवणीए सिया गाहावइस्स णं भंते! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ? कइयस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ?, गोयमा! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्चक्खाणिया मिच्छा-दंसणवत्तिया किरिया सिय कज्जइ सिय नो कज्जइ, कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति। गाहावइस्स णं भंते! भंडं विक्किणमाणस्स जाव भंडे से उवणीए

भते ! अस्सिं समयसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थ वा पाय वा बाहुं वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं चिट्ठइ पभू णं भंते ! केवली सेयकालसिवि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थ वा जाव ओगाहित्ता ण चिट्ठित्तए ?, गोयमा ! णो ति०, से केणट्ठेणं भते ! जाव केवली ण अस्सि समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव चिट्ठइ णो ण पभू केवली सेयकालसिवि तेसु चेव आगासपएसेसु हत्थं वा जाव चिट्ठित्तए ?, गो० ! केवलिस्स ण वीरियसजोगसद्दव्वयाए चलाइ उवगरणाइं भवति, चलोवगरणट्ठयाए य ण केवली अस्सिं समयसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थ वा जाव चिट्ठइ णो णं पभू केवली सेयकालसिवि तेसु चेव जाव चिट्ठित्तए, से तेणट्ठेण जाव वुच्चइ-केवली ण अस्सिं समयसि जाव चिट्ठित्तए ॥ १९८ ॥ पभू णं भंते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्स पडाओ पडसहस्स कडाओ २ रहाओ २ छत्ताओ छत्तसहस्स दंडाओ दडसहस्स अभिनिव्वट्टेत्ता उवदसेत्तए ?, हता ! पभू, से केणट्ठेणं पभू चोद्दसपुव्वी जाव उवदसेत्तए ? गोयमा ! चउद्दसपुव्विस्स ण अणताइं दव्वाइं उक्करियाभेएणं भिज्जमाणाइं लद्धाइं पत्ताइं अभिसमन्नागयाइं भवति, से तेणट्ठेण जाव उवदंसित्तए। सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥१९९॥ **पंचमे सए चउत्थो उद्देसो ॥**

छउमत्थे ण भते ! मणूसे तीयमणत सासय समयं केवलेण सजमेणं जहा पढमसए चउत्थुद्देसे आलावगा तहा नेयव्वा जाव अलमत्थुत्ति वत्तव्व सिया ॥२००॥ अन्नउत्थिया ण भंते ! एवमाइक्खति जाव परूवेंति सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एवभूयं वेदण वेदेंति से कहमेयं भते ! एव ?, गोयमा ! जण्ण ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खति जाव वेदेंति जे ते एवमाहसु मिच्छा ते एवमाहसु, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूयं वेदणं वेदेंति अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूय वेदण वेदेंति, से केणट्ठेण अत्थेगइया ? तं चेव उच्चारेयव्वं, गोयमा ! जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदण वेदेंति ते ण पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूय वेदण वेदेंति, जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेंति ते ण पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूय वेदणं वेदेंति, से तेणट्ठेण तहेव। नेरइया ण भते ! किं एवभूय वेदणं वेदेंति अणेवभूय वेदण वेदति ?, गोयमा ! नेरइया ण एवभूय वेदण वेदेंति अणेवभूयपि वेदण वेदति। से केणट्ठेणं तं चेव ? गोयमा ! जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा तहा वेयण वेदेंति ते ण नेरइया एवभूयं वेदण वेदेंति जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा णो तहा वेदण वेदेंति ते ण नेरइया अणेवभूयं वेदण वेदेंति, से तेणट्ठेण, एव जाव वेमाणिया संसारमंडलं नेयव्वं

चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया एवामेव जाव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहु-समाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अन्न-उत्थिया जाव मणुस्सेहिं जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइ-क्खामि जाव एवामेव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे निरयलोए नेरइएहिं ॥ १७ ॥ नेरइया णं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए पुहुत्तं पभू विउव्वित्तए ? जहा जीवाभिगमे आलावगो तहा नेयव्वो जाव दुरहियासे ॥ १८ ॥ आहाकम्मं अणवज्जेत्ति मणं पहारेत्ता भवइ, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा, एएणं गमेणं नेयव्वं-कीयगडं ठवियं रइयं कंतारभत्तं दुब्भिक्खभत्तं वद्दलियाभत्तं गिलाणभत्तं सेज्जायरपिंडं रायपिंडं । आहाकम्मं अण-वज्जेत्ति बहुजणमज्झे भासित्ता सयमेव परिभुंजित्ता भवइ से णं तस्स ठाणस्स जाव अत्थि तस्स आराहणा एयंपि तह चेव जाव रायपिंडं । आहाकम्मं अणव-ज्जेत्ति सयं अन्नमन्नस्स अणुप्पदावेत्ता भवइ, से णं तस्स एवं तह चेव जाव रायपिंडं । आहाकम्मं णं अणवज्जेत्ति बहुजणमज्झे पन्नवइत्ता भवइ से णं तस्स जाव अत्थि आराहणा जाव रायपिंडं ॥ १९ ॥ आयरियउवज्झाए णं भंते ! सविसयंसि गणं अगिलाए संगिण्हमाणे अगिलाए उवगिण्हमाणे कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतं करेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ तच्चं पुण भवग्गहणं णाइक्कमइ ॥ २१ ॥ जे णं भंते ! परं अलिएणं असब्भूएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ तस्स णं कहप्पगारा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! जे णं परं अलिएणं असंत(एणं)वयणेणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ तस्स णं तहप्पगारा चेव कम्मा कज्जंति जत्थेव णं अभिसमा-गच्छंति तत्थेव णं पडिसंवेदेति तओ से पच्छा वेदेति सेवं भंते ! २ त्ति ॥२११॥

पंचमसए छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥

परमाणुपोग्गले णं भंते ! एयइ वेयइ जाव तं तं भावं परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ वेयइ जाव परिणमइ सिय नो एयइ जाव नो परिणमइ । दुपएसिए णं भंते ! खंधे एयइ जाव परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ जाव परिणमइ सिय नो एयइ जाव नो परिणमइ, सिय देसे एयइ देसे नो एयइ । तिपएसिए णं भंते ! खंधे एयइ ? गोयमा ! सिय एयइ सिय नो एयइ, सिय देसे एयइ नो देसे एयइ सिय देसे एयइ नो देसा एयंति सिय देसा एयंति नो देसे एयइ । चउप्प-एसिए णं भंते ! खंधे एयइ ? गोयमा ! सिय एयइ सिय नो एयइ सिय देसे

सिया कइयस्स ण भंते! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ?, गाहावइस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ?, गोयमा! कइयस्स ताओ भंडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति मिच्छादंसणकिरिया भयणाए गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति। गाहावइस्स णं भंते! भंडं जाव धणे य से अणुवणीए सिया एवंपि जहा भंडे उवणीए तहा नेयव्वं चउत्थो आलावगो, धणे से उवणीए सिया जहा पढमो आलावगो भंडे य से अणुवणीए सिया तहा नेयव्वो पढमचउत्थाणं एक्को गमो बिइयतइयाणं एक्को गमो ॥ अगणिकाए णं भंते! अहुणोज्जलिए समाणे महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महावेयणतराए चेव भवइ, अहे णं समए २ वोक्कसिज्जमाणे २ चरिमकालसमयंसि इंगालभूए मुम्मुरभूए छारियभूए तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव अप्पवेयणतराए चेव भवइ?, हंता गोयमा! अगणिकाए णं अहुणोज्जलिए समाणे तं चेव ॥ २०४ ॥ पुरिसे णं भंते! धणुं परामुसइ धणुं परामुसित्ता उसुं परामुसइ २ ठाणं ठाइ ठाणं ठिच्चा आययकण्णाययं उसुं करेइ आययकण्णाययं उसुं करेत्ता उड्ढं वेहासं उसुं उव्विहइ २ तओ णं से उसुं उड्ढं वेहासं उव्विहिए समाणे जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणइ वत्तेइ लेस्सेइ संघाएइ संघट्टेइ परियावेइ किलामेइ ठाणाओ ठाणं संकामेइ जीवियाओ ववरोवेइ तए णं भंते! से पुरिसे कइकिरिए?, गोयमा! जावं च णं से पुरिसे धणुं परामुसइ २ जाव उव्विहइ तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपि य णं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए तेऽवि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे(ट्ठा) एवं धणुपुट्ठे पंचहिं किरियाहिं, जीवा पंचहिं, ण्हारू पंचहिं, उसू पंचहिं, सरे पत्तणे फले ण्हारू पंचहिं ॥ २०५ ॥ अहे णं से उसुं अप्पणो गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयसंभारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइं जाव जीवियाओ ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे कइकिरिए?, गोयमा! जावं च णं से उसुं अप्पणो गुरुयत्ताए जाव ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपि य णं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए तेवि जीवा चउहिं किरियाहिं, धणुपुट्ठे चउहिं, जीवा चउहिं, ण्हारू चउहिं, उसू पंचहिं, सरे पत्तणे फले ण्हारू पंचहिं, जेवि य से जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे चिट्ठंति तेवि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥ २०६ ॥ अण्णउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति से जहानामए-जुवइं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा

दुपएसिओ तिपएसियं फुसमाणो आइल्लएहिं य पच्छिल्लएहिं य तिहिं फुसइ, मज्झिल्लएहिं तिहिं विसंवादेयव्वं दुपएसिओ जहा तिपएसियं फुसाविओ एवं फुसावेयव्वो जाव अणंतपएसियं। तिपएसिए णं भंते! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे पुच्छा, तइयछट्ठणवमेहिं फुसइ, तिपएसिओ दुपएसियं फुसमाणो पढमएणं तइएणं चउत्थछट्ठसत्तमणवमेहिं फुसइ, तिपएसिओ तिपएसियं फुसमाणो सव्वेसुवि ठाणेसु फुसइ, जहा तिपएसिओ तिपएसियं फुसाविओ एवं तिपएसिओ जाव अणंतपएसि-एणं संजोएयव्वो जहा तिपएसिओ एवं जाव अणंतपएसिओ भाणियव्वो ॥ २१५ ॥ परमाणुपोग्गले णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं एवं जाव अणंतपएसिओ। एगपएसोगाढे णं भंते! पोग्गले सेए तम्मि वा ठाणे अन्नंमि वा ठाणे कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जह० एगं समयं उक्को० आवलियाए असंखेज्जइभागं, एवं जाव असंखेज्जपएसो-गाढे। एगपएसोगाढे णं भंते! पोग्गले निरेए कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे। एग-गुणकालए णं भंते! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जह० एगं समयं उ० असंखेज्जं कालं एवं जाव अणंतगुणकालए, एवं वण्णगंधरसफास० जाव अणंत-गुणलुक्खे एवं सुहुमपरिणए पोग्गले एवं बायरपरिणए पोग्गले। सद्दपरिणए णं भंते! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! ज० एगं समयं उ० आवलियाए असंखेज्जइभागं असद्दपरिणए जहा एगगुणकालए। परमाणुपोग्गलस्स णं भंते! अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। दुपएसियस्स णं भंते! खंधस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं एवं जाव अणंतपएसिओ। एगपएसो-गाढस्स णं भंते! पोग्गलस्स सेयस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे। एगं-पएसोगाढस्स णं भंते! पोग्गलस्स निरेयस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं एवं जाव असं-खेज्जपएसोगाढे। वण्णगंधरससुहुमपरिणयबायरपरिणयाणं एएसिं जं चेव संचि-ट्ठणा तं चेव अंतरंपि भाणियव्वं। सद्दपरिणयस्स णं भंते! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। असद्दपरिणयस्स णं भंते! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥ २१६ ॥ एयस्स णं

एयइ णो देसे एयइ सिय देसे एयइ णो देसा एयंति सिय देसा एयंति णो देसे एयइ सिय देसा एयंति नो देसा एयंति जहा चउप्पएसिओ तहा पंचपएसिओ तहा जाव अणंतपएसिओ ॥ २१२ ॥ परमाणुपोग्गले णं भंते ! असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?, हंता ! ओगाहेज्जा ! से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?, गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ, एवं जाव असंखेज्ज-पएसिओ । अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?, हंता ! ओगाहेज्जा, से ण तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?, गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा अत्थेगइए नो छिज्जेज्ज वा नो भिज्जेज्ज वा, एवं अगणि-कायस्स मज्झंमज्झेणं तहिं णवरं झियाएज्जा भाणियव्वं, एवं पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं तहिं उल्ले सिया, एवं गंगाए महाणईए पडिसोयं हव्वमा-गच्छेज्जा, तहिं विणिहायमावज्जेज्जा, उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा से णं तत्थ परियावज्जेज्जा ॥ २१३ ॥ परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सअड्ढे समज्झे सप-एसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपएसे ?, गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपएसे नो सअड्ढे नो समज्झे नो सपएसे ॥ दुपएसिए णं भंते ! खंधे किं सअड्ढे समज्झे सपएसे उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपदेसे ?, गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे सपदेसे णो अणड्ढे णो समज्झे णो अपदेसे । तिपदेसिए ण भंते ! खंधे पुच्छा, गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपदेसे नो सअड्ढे णो अमज्झे णो अपदेसे, जहा दुपदेसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा, जे विसमा ते जहा तिपएसिओ तहा भाणियव्वा । संखेज्जपदेसिए ण भंते ! खंधे किं सअड्ढे ६ ? पुच्छा, गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे सपदेसे सिय अणड्ढे समज्झे सप-देसे जहा संखेज्जपदेसिओ तहा असंखेज्जपदेसिओऽवि अणंतपदेसिओऽवि ॥ २१४ ॥ परमाणुपोग्गले ण भंते ! परमाणुपोग्गलं फुसमाणे किं देसेणं देसं फुसइ १ देसेणं देसे फुसइ २ देसेणं सव्वं फुसइ ३ देसेहिं देसं फुसइ ४ देसेहिं देसे फुसइ ५ देसेहिं सव्वं फुसइ ६ सव्वेणं देसं फुसइ ७ सव्वेणं देसे फुसइ ८ सव्वेणं सव्वं फुसइ ९ ?, गोयमा ! णो देसेण देसं फुसइ णो देसेण देसे फुसइ णो देसेणं सव्वं फुसइ णो देसेहिं देसं फुसइ नो देसेहिं देसे फुसइ नो देसेहिं सव्वं फुसइ णो सव्वेणं देसं फुसइ णो सव्वेण देसे फुसइ सव्वेण सव्वं फुसइ, एवं परमाणुपोग्गले दुपदेसियं फुसमाणे सत्तमणवमेहिं फुसइ, परमाणुपोग्गले तिपएसियं फुसमाणे णिप्पच्छिमएहिं तिहिं फु०, जहा परमाणुपोग्गले तिपएसियं फुसाविओ एवं फुसावे-यव्वो जाव अणंतपएसिओ ॥ दुपएसिए णं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे पुच्छा, तइयनवमेहिं फुसइ, दुपदेसियं फुसमाणो पढमतइयसत्तमणवमेहिं फुसइ,

भंते ! दव्वट्ठाणाउयस्स खेत्तट्ठाणाउयस्स ओगाहणट्ठाणाउयस्स भावट्ठाणाउयस्स कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए ओगाहणट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे दव्वट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे भावट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे- खेत्तोगाहणदव्वे भावट्ठाणाउय च अप्पवहुं । खेत्ते सव्वत्थोवे सेसा ठाणा असंखेज्जा ॥ १ ॥ २१७ ॥ नेरइया ण भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?, गोयमा ! नेरइया सारंभा सपरिग्गहा नो अणारंभा णो अपरिग्गहा । से केणट्ठेणं जाव अपरिग्गहा ?, गोयमा ! नेरइया णं पुढविकायं समारंभंति जाव तसकायं समारंभंति सरीरा परिग्गहिया भवंति कम्मा परिग्गहिया भवंति सचित्ताचित्तमीसयाई दव्वाइ परि० भ०, से तेणट्ठेणं तं चेव । असुरकुमारा ण भंते ! किं सारंभा ४ ? पुच्छा, गोयमा ! असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा नो अणारंभा अप० । से केणट्ठेण ?, गोयमा ! असुरकुमारा णं पुढविकायं समारंभंति जाव तसकाय समारंभंति सरीरा परिग्गहिया भवंति कम्मा परिग्गहिया भवंति भवणा परि० भवंति देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहियाओ भवंति आसणसयणभंडमत्तोवगरणा परिग्गहिया भवंति सचित्ताचित्तमीसयाई दव्वाइ परिग्गहियाइं भवंति से तेणट्ठेण तहेव एव जाव थणियकुमारा । एगिंदिया जहा नेरइया । वेइंदिया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा त चेव जाव सरीरा परिग्गहिया भवंति वाहिरिया भंडमत्तोवगरणा परि० भवंति सचित्ताचित्त० जाव भवंति एवं जाव चउरिंदिया । पचेंदियतिरिक्खजोणिया ण भंते ! त चेव जाव कम्मा परि० भवन्ति टंका कूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्गहिया भवंति जलथलबिलगुहालेणा परिग्गहिया भवंति उज्झरनिज्झरचिल्लपल्लवप्पिणा परिग्गहिया भवंति अगडतडागदहनईओ वाविपुक्खरिणीदीहिया गुंजालिया सरा सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ विलपंतियाओ परिग्गहियाओ भवंति आरामुज्जाणा काणणा वणाइ वणसंडाइ वणराईओ परिग्गहियाओ भवन्ति देवउलसभापवाथूभाखाइयपरिखाओ परिग्गहियाओ भवंति पागारट्टालगचरियदारगोपुरा परिग्गहिया भवंति पासायघरसरणलेणआवणा परिग्गहिया भवंति सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहा परिग्गहिया भवंति सगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवंति लोहीलोहकडाहकडुच्छुया परिग्गहिया भवंति भवणा परिग्गहिया भवंति देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिआ तिरिक्खजोणिणीओ आसणसयणखंभभंडमचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइ भवंति से तेणट्ठेण०, (जहा) तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सावि

ते एगसमयठिईएवि पोग्गले २ त चेव, जइ ण अज्जो! भावादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एव ते एगगुणकालएवि पोग्गले सअ० ३ त चेव, अह ते एव न भवइ तो जं वयसि दव्वादेसेणवि सव्वपोग्गला सअ० ३ नो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा एव खेत्तादेसेणवि काला० भावादेसेणवि तण्ण मिच्छा, तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्त अ० एव वयासी–नो खलु वयं देवा० एयमट्ठ जाणामो पासामो, जइ णं देवा० नो गिलायंति परिकहित्तए त इच्छामि णं देवा० अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जाणित्तए, तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगारं एव वयासी–दव्वादेसेणवि मे अज्जो सव्वे पोग्गला सपदेसावि अपदेसावि अणता खेत्तादेसेणवि एव चेव कालादेसेणवि भावादेसेणवि एव चेव ॥ जे दव्वओ अपदेसे से खेत्तओ नियमा अपदेसे कालओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे भावओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे । जे खेत्तओ अपदेसे से दव्वओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे कालओ भयणाए भावओ भयणाए । जहा खेत्तओ एव कालओ भावओ ॥ जे दव्वओ सपदेसे से खेत्तओ सिय सपदेसे सिय अपदेसे, एव कालओ भावओवि, जे खेत्तओ सपदेसे से दव्वओ नियमा सपदेसे कालओ भयणाए भावओ भयणाए जहा दव्वओ तहा कालओ भावओवि ॥ एएसि णं भते! पोग्गलाण दव्वादेसेणं खेत्तादेसेण कालादेसेण भावादेसेणं सपदेसाण य अपदेसाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ?, नारयपुत्ता! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेणं अपदेसा कालादेसेण अपदेसा असखेज्जगुणा दव्वादेसेणं अपदेसा असखेज्जगुणा खेत्तादेसेण अपदेसा असखेज्जगुणा खेत्तादेसेण चेव सपदेसा असखेज्जगुणा दव्वादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया कालादेसेणं सपदेसा विसेसाहिया भावादेसेण सपदेसा विसेसाहिया । तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्त अणगारं वंदइ नमंसइ नियंठिपुत्त अणगार वदित्ता णमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएणं भुज्जो २ खामेइ २ त्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥ २२० ॥ भन्तेत्ति भगवं गोयमे जाव एवं वयासी-जीवा ण भते! किं वड्ढति हायंति अवट्ठिया ?, गोयमा! जीवा णो वड्ढति नो हायति अवट्ठिया । नेरइया ण भते! किं वड्ढति हायति अवट्ठिया ?, गोयमा! नेरइया वड्ढतिवि हायतिवि अवट्ठियावि, जहा नेरइया एव जाव वेमाणिया । सिद्धा णं भंते! पुच्छा, गोयमा! सिद्धा वड्ढति नो हायंति अवट्ठियावि ॥ जीवा णं भंते! केवइय काल अवट्ठिया [वि] ?, सव्वद्ध । नेरइया णं भंते! केवइय काल वड्ढति ?, गोयमा! ज० एग समय उक्को० आवलियाए असंखेज्जइभाग, एव हायति, नेरइया ण भते! केवइय कालं अवट्ठिया ?,

इहं तेसिं णाणं इहं चेव तेसिं एवं पन्नायए, तंजहा-समयाइ वा जाव उस्सप्पिणीइ वा से तेण वाणमंतरजोइसवेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ २२४ ॥ तेणं कालेणं २ पासावच्चिज्जा [ते] थेरा भगवंतो जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी-से नूणं भंते! असंखेज्जे लोए अणंता राइंदिया उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा विगच्छिंसु वा विगच्छंति वा विगच्छिस्संति वा परित्ता राइंदिया उप्पज्जिंसु वा ३ विगच्छिंसु वा ३? हंता अज्जो! असंखेज्जे लोए अणंता राइंदिया तं चेव। से केणट्ठेणं जाव विगच्छिस्संति वा? से नूणं भंते! अज्जो! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिन्ने मज्झे संखित्ते उप्पिं विसाले अहे पलियंकसंठिए मज्झे वरवइरविग्गहिए उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए तेसिं च णं सासयंसि लोगंसि अणादियंसि अणवदग्गंसि परित्तंसि परिवुडंसि हेट्ठा विच्छिन्नंसि मज्झे संखित्तंसि उप्पिं विसालंसि अहे पलियंकसंठियंसि मज्झे वरवइरविग्गहियंसि उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि अणंता जीवघणा उप्पज्जित्ता २ निलीयंति परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता २ निलीयंति से नूणं भूए उप्पन्ने विगए परिणए अजीवेहिं लोक्कइ पलोक्कइ जे लोक्कइ से लोए? हंता भगवं! [से] से तेणट्ठेणं अज्जो! एवं वुच्चइ असंखेज्जे तं चेव। तप्पभिइं च णं ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चभिजाणंति सव्वन्नुं सव्वदरिसिं तए णं ते थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति २ एवं वयासी-इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह, तए णं ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जाव चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिद्धा जाव सव्वदुक्खप्पहीणा अत्थेगइया देवा देवलोएसु उववन्ना ॥ २२५ ॥ कइविहा णं भंते! देवलोगा पन्नत्ता? गोयमा! चउव्विहा देवलोगा पन्नत्ता, तंजहा-भवणवासिवाणमंतरजोइसियवेमाणियभेएण भवणवासी दसविहा वाणमंतरा अट्ठविहा जोइसिया पंचविहा वेमाणिया दुविहा। गाहा-किमियं रायगिहंति य उज्जोए अंधयार समए य। पासंतिवासि पुच्छा राइंदिय देवलोगा य ॥ १ ॥ सेवं भंते! २ त्ति ॥ २२६ ॥ पंचमे सए नवमो उद्देसो समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी जहा पढमिल्लो उद्देसओ तहा नेयव्वो एसोवि नवरं चंदिमा भाणियव्वा ॥ २२७ ॥ पंचमे सए दसमो उद्देसो समत्तो ॥ पंचमं सयं समत्तं ॥

एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं अवट्ठिएहिं सव्वनियकालो भाणियव्वो सिद्धा णं भंते ! केवइयं कालं सोवचया ?, गोयमा ! जह० एगं समयं उक्को० अट्ठ समया, केवइयं कालं निरुवचयनिरवचया ?, जह० एगं समयं उ० छम्मासा । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ २२१ ॥ पंचमसए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी–किमिदं भंते ! नगरं रायगिहंति पवुच्चइ ?, किं पुढवी नगरं रायगिहंति पवुच्चइ, आऊ नगरं रायगिहंति पवुच्चइ ? जाव वणस्सई ?, जहा एयणुद्देसए पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया तहा भाणियव्वं जाव सचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं नगरं रायगिहंति पवुच्चइ ?, गोयमा ! पुढवीवि नगरं रायगिहंति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्तमीसियाइं दव्वाइं नगरं रायगिहंति पवुच्चइ । से केणट्ठेणं ?, गोयमा ! पुढवी जीवाइय अजीवाइय नगरं रायगिहंति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्तमीसियाइं दव्वाइं जीवाइय अजीवाइय नगरं रायगिहंति पवुच्चइ से तेणट्ठेणं तं चेव ॥ २२२ ॥ से नूणं भंते ! दिया उज्जोए राइं अंधयारे ?, हंता गोयमा ! जाव अंधयारे । से केणट्ठेणं० ?, गोयमा ! दिया सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे राइं असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे से तेणट्ठेणं० । नेरइयाणं भंते ! किं उज्जोए अंधयारे ?, गोयमा ! नेरइयाणं नो उज्जोए अंधयारे, से केणट्ठेणं० ?, गोयमा ! नेरइयाणं असुहा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे से तेणट्ठेणं० । असुरकुमाराणं भंते ! किं उज्जोए अंधयारे ?, गोयमा ! असुरकुमाराणं उज्जोए नो अंधयारे । से केणट्ठेणं ?, गोयमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं एवं वुच्चइ, एवं जाव थणियकुमाराणं, पुढविकाइया जाव तेइंदिया जहा नेरइया । चउरिंदियाणं भंते ! किं उज्जोए अंधयारे ?, गोयमा ! उज्जोएवि अंधयारेवि, से केणट्ठेणं० ?, गोयमा ! चउरिंदियाणं सुभासुभा पोग्गला सुभासुभे पोग्गलपरिणामे, से तेणट्ठेणं एवं जाव मणुस्साणं । वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥ २२३ ॥ अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं तत्थगयाणं एवं पन्नायइ–समयाइ वा आवलियाइ वा जाव ओसप्पिणीइ वा उस्सप्पिणीइ वा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं जाव समयाइ वा आवलियाइ वा ओसप्पिणीइ वा उस्सप्पिणीइ वा ?, गोयमा ! इहं तेसिं माणं इहं तेसिं पमाणं इहं तेसिं पण्णायइ, तंजहा–समयाइ वा जाव उस्सप्पिणीइ वा, से तेणट्ठेणं जाव नो एवं पण्णायए, तंजहा–समयाइ वा जाव उस्सप्पिणीइ वा, एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, अत्थि णं भंते ! मणुस्साणं इहगयाणं एवं पन्नायइ, तंजहा– समयाइ वा जाव उस्सप्पिणीइ वा ?, हंता ! अत्थि । से केणट्ठेणं ?, गोयमा !

गाहा—वेयण १ आहार २ महस्सवे य ३ सपएस ४ तमुए य ५ भविए ।
६ साली ७ पुढवी ८ कम्म ९ अन्नउत्थि १० दस छट्ठगमि सए ॥ १ ॥ से नूणं
भंते ! जे महावेयणे से महानिज्जरे जे महानिज्जरे से महावेदणे, महावेदणस्स य
अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए ?, हंता गोयमा ! जे महावेदणे एवं
चेव । छट्ठसत्तमासु ण भंते ! पुढवीसु नेरइया महावेयणा ?, हंता ! महावेयणा, ते
ण भंते ! समणेहिंतो निग्गंथेहिंतो महानिज्जरतरा ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे,
से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जे महावेदणे जाव पसत्थनिज्जराए ?, गोयमा ! से
जहानामए–दुवे वत्था सिया, एगे वत्थे कद्दमरागरत्ते एगे वत्थे खंजणरागरत्ते एएसि
ण गोयमा ! दोण्ह वत्थाण कयरे वत्थे दुधोयतराए चेव दुवामतराए चेव दुपरिक-
म्मतराए चेव कयरे वा वत्थे सुधोयतराए चेव सुवामतराए चेव सुपरिकम्मतराए
चेव, जे वा से वत्थे कद्दमरागरत्ते जे वा से वत्थे खंजणरागरत्ते ?, भगवं ! तत्थ
ण जे से वत्थे कद्दमरागरत्ते से ण वत्थे दुधोयतराए चेव दुवामतराए चेव दुप्परि-
कम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइ गाढीकयाइं चिक्कणी-
कयाइ (अ) सिढिलीकयाइ खिलीभूयाइं भवंति संपगाढपि य ण ते वेयण वेदेमाणा
णो महानिज्जरा णो महापज्जवसाणा भवंति, से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरणि
आउडेमाणे महया २ सद्देण महया २ घोसेण महया २ परंपराघाएण णो संचाएइ
तीसे अहिगरणीए अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए एवामेव गोयमा ! नेरइ-
याण पावाइं कम्माइं गाढीकयाइ जाव नो महापज्जवसाणा भवंति, भगवं ! तत्थ
जे से वत्थे खंजणरागरत्ते से ण वत्थे सुधोयतराए चेव सुवामतराए चेव सुपरिक-
म्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गंथाण अहाबायराइ कम्माइं सिढि-
लीकयाइ निट्ठियाइ कडाइ विप्परिणामियाइ खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवंति, जावइय
तावइयपि ण ते वेयणं वेदेमाणा महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति, से जहाना-
मए–केइ पुरिसे सुक्कतणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा से नूणं गोयमा ! से सुक्के
तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जइ ?, हंता ! मसम-
साविज्जइ, एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइ कम्माइं जाव महा-
पज्जवसाणा भवंति, से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदगबिंदू जाव
हंता ! विद्धंसमागच्छइ, एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गंथाण जाव महापज्जवसाणा
भवंति, से तेणट्ठेण जे महावेदणे से महानिज्जरे जाव निज्जराए ॥ २२८ ॥ कइ-
विहे णं भंते ! करणे पन्नत्ते ?, गोयमा ! चउव्विहे करणे पन्नत्ते, तंजहा–मणकरणे
वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे । णेरइयाण भंते ! कइविहे करणे पन्नत्ते ?, गोयमा !

जवसिए नो भव णं जीवाणं कम्मोवचए साइए अप । से केण । गोयमा ! इरियावहियाबंधयस्स कम्मोवचए साइए सप० भवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणाइए सपज्जवसिए अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणाइए अपज्जवसिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ अत्थे० जीवाणं कम्मोवचए साइए नो चेव णं जीवाणं कम्मोवचए साइए अपज्जवसिए, वत्थे णं भंते ! किं साइए सपज्जवसिए चउ भंगो ! गोयमा ! वत्थे साइए सपज्जवसिए अवसेसा तिन्निवि पडिसेहेयव्वा । जहा णं भंते ! वत्थे साइए सपज्जवसिए नो साइए अपज्ज० नो अणाइए सप० नो अणाइए अपज्जवसिए तहा णं जीवाणं किं साइया सपज्जवसिया ! चउभंगो पुच्छा गोयमा ! अत्थेगइया साइया सपज्जवसिया चत्तारिवि भाणियव्वा । से केणट्ठेणं ?, गोयमा ! नेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा गइरागइं पडुच्च साइया सपज्जवसिया सिद्धि [illegible] गई पडुच्च साइया अपज्जवसिया भवसिद्धिया लद्धिं पडुच्च अणाइया सपज्जवसिया अभवसिद्धिया संसारं पडुच्च अणाइया अपज्जवसिया से तेणट्ठेणं ॥ ११४ ॥ कइ णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ प० तंजहा-णाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । णाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधठिई प० ? गोयमा ! जह० अंतोमुहुत्तं उक्को० तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तिन्नि य वाससहस्साइं अबाहा अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मनिसेओ एवं दरिसणावरणिज्जंपि वेदणिज्जं जह० दो समया उक्को० जहा णाणावरणिज्जं, मोहणिज्जं जह० अंतोमुहुत्तं उक्को० सत्तरि साग रोवमकोडाकोडीओ सत्त य वाससहस्साणि अबाहा अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मनिसेओ आउगं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को० तेत्तीसं सागरोवमाणि पुव्वकोडितिभाग- मब्भहियाणि (पुव्वकोडितिभागो अबाहा अबाहूणिया) कम्मट्ठिई कम्मनिसेओ, नामगोयाणं जह० अट्ठ मुहुत्ता उक्को० वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ दोण्णि य वास- सहस्साणि अबाहा अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मनिसेओ अंतराइयं जहा णाणा- वरणिज्जं ॥ ११५ ॥ णाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ पुरिसो बंधइ नपुंसओ बंधइ ? णोइत्थी णोपुरिसो णोनपुंसओ बंधइ ? गोयमा ! इत्थीवि बंधइ पुरिसोवि बंधइ नपुंसओवि बंधइ णोइत्थी णोपुरिसो णोनपुंसओ सिय बंधइ सिय नो बंधइ एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ ॥ आउगं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ पुरिसो बंधइ नपुंसओ बंधइ ? पुच्छा गोयमा ! इत्थी सिय बंधइ सिय नो बंधइ, एवं तिन्निवि भाणियव्वा णोइत्थी णोपुरिसो णोनपुंसओ न बंधइ ॥ णाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं संजए बंधइ असंजए एवं संजयासंजए बंधइ

समिय पोग्गला चिज्जंति सया समियं पोग्गला उवचिज्जंति सया समियं च णं तस्स आया दुरूवत्ताए दुवन्नत्ताए दुगंधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए अणिट्ठत्ताए अकंत० अप्पिय० असुभ० अमणुन्न० अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए अह-त्ताए नो उड्ढत्ताए दुक्खत्ताए नो सुहत्ताए भुज्जो २ परिणमंति ?, हंता गोयमा ! महाकम्मस्स त चेव । से केणट्ठेण० ?, गोयमा ! से जहानामए-वत्थस्स अहयस्स वा धोयस्स वा तंतुगयस्स वा आणुपुव्वीए परिभुज्जमाणस्स सव्वओ पोग्गला वज्झंति सव्वओ पोग्गला चिज्जंति जाव परिणमंति से तेणट्ठेणं० । से नूणं भंते ! अप्पासवस्स अप्पकम्मस्स अप्पकिरियस्स अप्पवेदणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जंति सव्वओ पोग्गला छिज्जंति सव्वओ पोग्गला विद्धंसंति सव्वओ पोग्गला परिविद्धंसंति सया समियं पोग्गला भिज्जंति सव्वओ पोग्गला छिज्जंति विद्धंसंति परिविद्धंसंति सया समियं च णं तस्स आया सुरूवत्ताए पसत्थं नेयव्वं जाव सुहत्ताए नो दुक्ख-त्ताए भुज्जो २ परिणमंति ?, हंता गोयमा ! जाव परिणमंति । से केणट्ठेणं० ?, गोयमा ! से जहानामए-वत्थस्स जल्लियस्स वा पंकियस्स वा मइल्लियस्स वा रइल्लि-यस्स वा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुद्धेणं वारिणा धोवेमाणस्स पोग्गला भिज्जंति जाव परिणमंति से तेणट्ठेण० ॥ २३२ ॥ वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं पयोगसा वीससा ?, गोयमा ! पओगसावि वीससावि । जहा णं भंते ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए पओगसावि वीससावि तहा णं जीवाणं कम्मोवचए किं पओगसा वीससा ?, गोयमा ! पओगसा नो वीससा, से केणट्ठेण० ?, गोयमा ! जीवाणं तिविहे पओगे पण्णत्ते, तंजहा-मणप्पओगे वइ० का०, इच्चेएणं तिविहेणं पओगेणं जीवाणं कम्मोवचए पओगसा नो वीससा, एवं सव्वेसिं पंचेंदियाणं तिविहे पओगे भाणियव्वे, पुढविकाइयाणं एगविहेणं पओगेणं एवं जाव वणस्सइकाइयाणं, विग-लिंदियाणं दुविहे पओगे पण्णत्ते, तंजहा-वइपओगे य कायप्पओगे य, इच्चेएणं दुविहेणं पओगेणं कम्मोवचए पओगसा नो वीससा, से एएणट्ठेणं जाव नो वीससा एवं जस्स जो पओगो जाव वेमाणियाणं ॥ २३३ ॥ वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलो-वचए किं साइए सपज्जवसिए १ साइए अपज्जवसिए २ अणाइए सपज्ज० ३ अणा० अप० ४ ?, गोयमा ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए साइए सपज्जवसिए नो साइए अप० नो अणा० स० नो अणा० अप० । जहा णं भंते ! वत्थस्स पोग्गलोवचए साइए सपज्ज० नो साइए अप० नो अणा० सप० नो अणा० अप० तहा णं जीवाणं कम्मोवचए पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइयाणं जीवाणं कम्मो-वचए साइए सपज्जवसिए अत्थे० अणाइए सपज्जवसिए अत्थे० अणाइए अप-

पज्जत्तओ वेयणिज्जं इंदिया बंधंति अजोगी न बंधइ ॥ णाणावरणिज्जं किं सागारो-वउत्ते बंधइ अणागारोवउत्ते बंधइ ? गोयमा ! अट्ठसुवि भयणाए ॥ णाणावरणिज्जं किं आहारए बंधइ अणाहारए बंधइ ? गोयमा ! दोवि भयणाए, एवं वेयणिज्जा-उयवज्जाणं छण्हं, वेयणिज्जं आहारए बंधइ अणाहारए भयणाए, आउए आहा-रए भयणाए, अणाहारए न बंधइ ॥ णाणावरणिज्जं किं सुहुमे बंधइ बायरे बंधइ नोसुहुमेनोबायरे बंधइ ? गोयमा ! सुहुमे बंधइ बायरे भयणाए नोसुहुमेनोबायरे न बंधइ, एवं आउयवज्जाओ सत्तवि, आउए सुहुमे बायरे भयणाए नोसुहुमेनोबायरे न बंधइ ॥ णाणावरणिज्जं किं चरिमे अचरिमे बं० ? गोयमा ! अट्ठवि भयणाए ॥ २१६ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं इत्थिवेयगाणं पुरिसवेयगाणं नपुंसगवेयगाणं अवेयगाण य कयरे २ अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेयगा इत्थिवेयगा संखेज्जगुणा अवेयगा अणंतगुणा नपुंसगवेयगा अणंतगुणा ॥ एएसिं सव्वेसिं पयाणं अप्पबहुगाइं उच्चारेयव्वाइं जाव सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा चरिमा अणंतगुणा ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ २१७ ॥ छट्ठसए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

जीवे णं भंते ! कालाएसेणं किं सपदेसे अपदेसे ? गोयमा ! नियमा सपदेसे । नेरइए णं भंते ! कालाएसेणं किं सपदेसे अपदेसे ? गोयमा ! सिय सपदेसे सिय अपदेसे एवं जाव सिद्धे । जीवा णं भंते ! कालाएसेणं किं सपदेसा अपदेसा ? गोयमा ! नियमा सपदेसा । नेरइया णं भंते ! कालाएसेणं किं सपदेसा अपदेसा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा सपदेसा १ अहवा सपदेसा य अपदेसे य २ अहवा सपदेसा य अपदेसा य ३, एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढविकाइया णं भंते ! किं सपदेसा अपदेसा ? गोयमा ! सपदेसावि अपदेसावि एवं जाव वणप्फइकाइया, सेसा जहा नेरइया तहा जाव सिद्धा ॥ आहारगाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, अणाहारगाणं जीवेगिंदियवज्जा छब्भंगा एवं भाणियव्वा–सपदेसा वा १ अपदेसा वा २ अहवा सपदेसे य अपदेसे य ३ अहवा सपदेसे य अपदेसा य ४ अहवा सपदेसा य अपदेसे य ५ अहवा सपदेसा य अपदेसा य ६, सिद्धेहिं तियभंगो, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया [भवसिद्धिया] जहा ओहिया, नोभवसिद्धियनोअभव-सिद्धिया जीवसिद्धेहिं तियभंगो, सण्णीहिं जीवादिओ तियभंगो, असण्णीहिं एगिं-दियवज्जो तियभंगो, नेरइयदेवमणुएहिं छब्भंगा, नोसन्निनोअसन्निजीवमणुयसिद्धेहिं तियभंगो, सलेसा जहा ओहिया, कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा जहा आहारओ नवरं जस्स अत्थि एयाओ, तेउलेस्साए जीवादिओ तियभंगो नवरं पुढविआउवण-स्सईसु छब्भंगा, पम्हलेस्सासुक्कलेस्साए जीवादिओ तियभंगो, अलेसीहिं

नोसंजएनोअसंजएनोसंजयासंजए बंधइ ?, गोयमा ! संजए सिय बंधइ सिय नो बंधइ असंजए बंधइ संजयासंजएवि बंधइ नोसंजएनोअसंजएनोसंजयासंजए न बंधइ, एवं आउगवज्जाओ सत्तवि, आउगे हेट्ठिल्ला तिन्नि भयणाए उवरिल्ले ण बंधइ ॥ णाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं सम्मदिट्ठी बंधइ मिच्छादिट्ठी बंधइ सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ ?, गोयमा ! सम्मदिट्ठी सिय बंधइ सिय नो बंधइ मिच्छदिट्ठी बंधइ सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ, एवं आउगवज्जाओ सत्तवि, आउए हेट्ठिल्ला दो भयणाए सम्मामिच्छदिट्ठी न बंधइ ॥ णाणावरणिज्जं किं सण्णी बंधइ असन्नी बंधइ नोसण्णीनोअसण्णी बंधइ ?, गोयमा ! सन्नी सिय बंधइ सिय नो बंधइ असन्नी बंधइ नोसन्नीनोअसन्नी न बंधइ, एवं वेदणिज्जाउगवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ, वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला दो बंधंति, उवरिल्ले भयणाए, आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ ॥ णाणावरणिज्जं कम्मं किं भवसिद्धिए बंधइ अभवसिद्धिए बंधइ नोभवसिद्धिएनोअभवसिद्धिए बंधइ ?, गोयमा ! भवसिद्धिए भयणाए अभवसिद्धिए बंधइ नोभवसिद्धिएनोअभवसिद्धिए न बंधइ, एवं आउगवज्जाओ सत्तवि, आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए उवरिल्ले न बंधइ ॥ णाणावरणिज्जं किं चक्खुदंसणी बंधइ अचक्खुदंस० ओहिदंस० केवलदं० ?, गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिन्नि भयणाए उवरिल्ले ण बंधइ, एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्तवि, वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला तिन्नि बंधंति केवलदंसणी भयणाए ॥ णाणावरणिज्जं कम्मं किं पज्जत्तओ बंधइ अपज्जत्तओ बंधइ नोपज्जत्तएनोअपज्जत्तए बंधइ ?, गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए बंधइ, नोपज्जत्तएनोअपज्जत्तए न बंधइ, एवं आउगवज्जाओ, आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए उवरिल्ले ण बंधइ ॥ नाणावरणिज्जं किं भासए बंधइ अभासए० ?, गोयमा ! दोवि भयणाए, एवं वेयणिज्जवज्जाओ सत्त, वेदणिज्जं भासए बंधइ अभासए भयणाए ॥ णाणावरणिज्जं किं परित्ते बंधइ अपरित्ते बंधइ नोपरित्तेनोअपरित्ते बंधइ ?, गोयमा ! परित्ते भयणाए अपरित्ते बंधइ नोपरित्तेनोअपरित्ते न बंधइ, एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ, आउए परित्तोवि अपरित्तोवि भयणाए, नोपरित्तोनोअपरित्तो न बंधइ ॥ णाणावरणिज्जं कम्मं किं आभिणिबोहियनाणी बंधइ सुयनाणी ओहिनाणी मणपज्जवनाणी केवलनाणी ब० ?, गोयमा ! हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए केवलनाणी न बंधइ, एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्तवि, वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला चत्तारि बंधंति केवलनाणी भयणाए । णाणावरणिज्जं किं मइअन्नाणी बंधइ सुय० विभंग० ?, गोयमा ! (सव्वेवि) आउगवज्जाओ सत्तवि बंधति, आउगं भयणाए ॥ णाणावरणिज्जं किं मणजोगी बंधइ वय० काय० अजोगी बंधइ ?, गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिन्नि भयणाए अजोगी न बंधइ, एवं वेदणिज्ज-

कुव्वंति ? जहा ओहिया तहा कुव्वणा ॥ जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणनिव्वत्ति-याउया अपच्चक्खाणनि॰ पच्चक्खाणापच्चक्खाणनि॰ ? गोयमा ! जीवा य वेमाणिया य पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया तिन्नि वि अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ॥ पच्च-क्खाणं १ जाणइ २ कुव्वंति ३ तिण्णि(तेणे)व आउनिव्वत्ती ४ । सपएसुद्देसम्मि य एमेए दंडगा चउरो ॥ १ ॥ २१९ ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ छट्ठ सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

किमियं भंते ! तमुक्काए त्ति पवुच्चइ किं पुढवी तमुक्काए त्ति पवुच्चइ आऊ तमुक्काए त्ति पवुच्चइ ? गोयमा ! नो पुढवी तमुक्काए त्ति पवुच्चइ आऊ तमुक्काए त्ति पवुच्चइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढविकाए णं अत्थेगइए सुभे देसं पकासेइ अत्थेगइए देसं नो पकासेइ, से तेणट्ठेणं । तमुक्काए णं भंते ! कहिं समुट्ठिए कहिं संनिट्ठिए ? गोयमा ! जंबुद्दीवस्स २ बहिया तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ अरुणोदयं समुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साणि ओगाहित्ता उवरिल्लाओ जलंताओ एगपएसियाए सेढीए एत्थ णं तमुक्काए समुट्ठिए, सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता तओ पच्छा तिरियं पवित्थरमाणे २ सोह-म्मीसाणसणंकुमारमाहिंदे चत्तारि वि कप्पे आवरित्ता णं उड्ढं पि य णं जाव बंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडं संपत्ते एत्थ णं तमुक्काए णं संनिट्ठिए ॥ तमुक्काए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! अहे मल्लगमूलसंठिए उप्पिं कुक्कुडपंजरगसंठिए पन्नत्ते ॥ तमुक्काए णं भंते ! केवइयं विक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडे य, तत्थ णं जे से संखेज्जवित्थडे से णं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयण-सहस्साइं परिक्खेवेणं प० तत्थ णं जे से असंखेज्जवित्थडे से णं असंखेज्जाइं जोय-णसहस्साइं विक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं प० । तमुक्काए णं भंते ! केमहालए प० ? गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं सव्व-ब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं पन्नत्ते ॥ देवे णं महिड्ढीए जाव महाणुभावे इणामेव २ त्तिकट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं २ तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छिज्जा से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव देवगईए वीईवयमाणे २ जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं छम्मासे वीईवएज्जा अत्थेगइए(यं) तमुक्कायं वीईवएज्जा अत्थेगइयं नो तमुक्कायं वीईवएज्जा एमहालए णं गोयमा ! तमुक्काए पन्नत्ते । अत्थि णं भंते ! तमुक्काए गेहाइ वा गेहावणाइ वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, अत्थि णं भंते ! तमुक्काए गामाइ वा जाव संनिवेसाइ वा ? णो तिणट्ठे

जीवसिद्धेहिं तियभगो मणुस्से(सु) छब्भगा, सम्मद्दिट्ठीहिं जीवाइ(य)तियभंगो, विग-लिंदिएसु छब्भगा, मिच्छद्दिट्ठीहिं एगिंदियवज्जो तियभगो,सम्मामिच्छद्दिट्ठीहिं छब्भंगा, सजएहिं जीवाइओ तियभगो, असजएहिं एगिंदियवज्जो तियभंगा, संजयासजएहिं तिय-भगो जीवादिओ,नोसजयनोअसजयनोसजयासजयजीवसिद्धेहिं तियभगो, सकसाईहिं जीवादिओ तियभगो, एगिंदिएसु अभगयं, कोहकसाईहिं जीवएगिंदियवज्जो तियभंगो, देवेहिं छब्भगा, माणकसाई मायाकसाई जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, नेरइयदेवेहिं छब्भगा, लोभकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, नेरइएसु छब्भगा, अकसाईजी-वमणुएहिं सिद्धेहिं तियभगो, ओहियनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे जीवादिओ तियभंगो, विगलिंदिएहिं छब्भगा, ओहिनाणे मण० केवलनाणे जीवादिओ तियभगो, ओहिए अन्नाणे मइअण्णाणे सुयअण्णाणे एगिंदियवज्जो तियभगो, विभगनाणे जीवादिओ तियभगो, सजोगी जहा ओहिओ, मणजोगी वयजोगी कायजोगी जीवा-दिओ तियभगो नवर कायजोगी एगिंदिया तेसु अभंगयं, अजोगी जहा अलेसा, सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते जीवएगिंदियवज्जो तियभंगो, सवेयगा य जहा सक-साई, इत्थिवेयगपुरिसवेयगनपुसगवेयगेसु जीवादिओ तियभंगो, नवरं नपुसगवेदे एगिंदिएसु अभगय, अवेयगा जहा अकसाई, ससरीरी जहा ओहिओ, ओरालियवे-उव्वियसरीराण जीवएगिंदियवज्जो तियभंगो, आहारगसरीरे जीवमणुएसु छब्भंगा, तेयगकम्मगाण जहा ओहिया, असरीरेहिं जीवसिद्धेहिं तियभगो, आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणापाणुपज्जत्तीए जीवएगिंदियवज्जो तियभगो, भासा-मणपज्जत्तीए जहा सण्णी, आहारअपज्जत्तीए जहा अणाहारगा, सरीरअपज्जत्तीए इंदियअपज्जत्तीए आणापाणअपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, नेरइयदेवमणुएहिं छब्भंगा, भासामणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभगो, णेरइयदेवमणुएहिं छब्भगा ॥ गाहा–सपदेसा आहारगभवियसण्णिलेस्सा दिट्ठी सजयकसाए। णाणे जोगुवओगे वेदे य सरीरपज्जत्ती ॥ १ ॥ २२८ ॥ जीवा ण भते ! किं पच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ?, गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणीवि अपच्चक्खाणीवि पच्चक्खा-णापच्चक्खाणीवि। सव्वजीवाण एव पुच्छा, गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव चउरिंदिया, सेसा दो पडिसेहेयव्वा, पचेंदियतिरिक्खजोणिया नो पच्चक्खाणी अप-च्चक्खाणीवि पच्चक्खाणापच्चक्खाणीवि, मणुस्सा तिन्निवि, सेसा जहा नेरइया ॥ जीवा ण भते ! किं पच्चक्खाण जाणंति अपच्चक्खाण जाणति पच्चक्खाणापच्चक्खाण जाणति ?, गोयमा ! जे पचेंदिया ते तिन्निवि जाणति अवसेसा पच्चक्खाण न जाणति ३॥ जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाण कुव्वति अपच्चक्खाण कुव्वंति पच्चक्खाणापच्चक्खाण

समट्ठे। अत्थि णं भंते! तमुक्काए ओराला वलाहया संसेयंति समुच्छंति वासं वासंति वा ?, हंता! अत्थि, तं भंते! किं देवो पकरेइ असुरो पकरेइ नागो पकरेइ ?, गोयमा! देवोवि पकरेइ असुरोवि पकरेइ णागोवि पकरेइ। अत्थि णं भंते! तमुक्काए बादरे थणियसद्दे बायरे विज्जुए ?, हंता! अत्थि, तं भंते! किं देवो पकरेइ ३?, तिन्निवि पकरेन्ति, अत्थि णं भंते! तमुक्काए बायरे पुढविकाए बादरे अगणिकाए ?, णो तिणट्ठे समट्ठे णण्णत्थ विग्गहगइसमावन्नएणं। अत्थि णं भंते! तमुक्काए चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, पलियस्सतो पुण अत्थि। अत्थि णं भंते! तमुक्काए चंदाभाइ वा सूराभाइ वा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, कादूसणिया पुण सा। तमुक्काए णं भंते! केरिसए वन्नेणं पण्णत्ते ?, गोयमा! काले कालावभासे गंभीरलोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणए परमकिण्हे वन्नेणं पण्णत्ते, देवेवि णं अत्थेगइए जे णं तप्पढमयाए पासित्ता णं खुभाएज्जा अहे णं अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा सीहं २ तुरियं २ खिप्पामेव वीईवएज्जा॥ तमुक्कायस्स णं भंते! कइ नामधेज्जा पण्णत्ता ?, गोयमा! तेरस नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—तमेइ वा तमुक्काएइ वा अंधकारेइ वा महंधकारेइ वा लोगंधकारेइ वा लोगतमिस्सेइ वा देवंधकारेइ वा देवतमिस्सेइ वा देवारन्नेइ वा देववूहेइ वा देवफलिहेइ वा देवपडिक्खोभेइ वा अरुणोदएइ वा समुद्दे॥ तमुक्काए णं भंते! किं पुढविपरिणामे आउपरिणामे जीवपरिणामे पोग्गलपरिणामे ?, गोयमा! नो पुढविपरिणामे आउपरिणामेवि जीवपरिणामेवि पोग्गलपरिणामेवि। तमुक्काए णं भंते! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववन्नपुव्वा ?, हंता गोयमा! असइं अदुवा अणंतखुत्तो णो चेव णं बादरपुढविकाइयत्ताए बादरअगणिकाइयत्ताए वा॥ २४०॥ कइ णं भंते! कण्हराईओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ। कहि णं भंते! एयाओ अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा! उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हिट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणे पत्थडे, एत्थ णं अक्खाडगसमचउरंससंठाणसंठियाओ अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ, तंजहा—पुरच्छिमेणं दो पच्चत्थिमेणं दो दाहिणेणं दो उत्तरेणं दो, पुरच्छिमब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा दाहिणब्भंतरा कण्हराई पच्चत्थिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा पच्चत्थिमब्भंतरा कण्हराई उत्तरबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा उत्तरमब्भंतरा कण्हराई पुरच्छिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, दो पुरच्छिमपच्चत्थिमाओ बाहिराओ कण्हराईओ छलंसाओ दो उत्तरदाहिणबाहिराओ कण्हराईओ तंसाओ दो पुरच्छिमपच्चत्थिमाओ अब्भितराओ कण्हराईओ चउरंसाओ दो उत्तरदाहिणाओ अब्भितराओ कण्हरा-

ढविकुमारत्ताए उववज्जित्तए जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव थणियकुमारा। जीवे णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए २ जे भविए असंखेज्जेसु पुढविक्कायावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि पुढविक्कायावासंसि पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं केवइयं गच्छेज्जा केवइयं पाउणेज्जा? गोयमा! लोयंतं गच्छेज्जा लोयंतं पाउणिज्जा। से णं भंते! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा? गोयमा! अत्थेगइए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा अत्थेगइए तओ पडिनियत्तइ २ त्ता इह हव्वमागच्छइ २ त्ता दोच्चंपि मारणंतियसमुग्घाएणं समोहणइ २ त्ता मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्तं वा संखेज्जइभागमेत्तं वा वालग्गं वा वालग्गपुहुत्तं वा एवं लिक्खं जूयं जवं अंगुलं जाव जोयणकोडिं वा जोयणकोडाकोडिं वा संखेज्जेसु वा असंखेज्जेसु वा जोयणसहस्सेसु लोगंते वा एगपएसियं सेढिं मोत्तूण असंखेज्जेसु पुढविक्कायावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि पुढविक्कायावासंसि पुढविक्काइयत्ताए उववज्जेत्ता तओ पच्छा आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा जहा पुरच्छिमेणं मंदरस्स पव्वयस्स आलावओ भणिओ एवं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं उड्ढे अहे, जहा पुढविक्काइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्केक्कस्स छ आलावया भाणियव्वा। जीवे णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए २ त्ता जे भविए असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि बेइंदियावासंसि बेइंदियत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! तत्थगए चेव जहा नेरइया एवं जाव अणुत्तरोववाइया। जीवे णं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए २ जे भविए एवं पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु अन्नयरंसि अणुत्तरविमाणंसि अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! तत्थगए चेव जाव आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा? । सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥२४७॥ पुढविउद्देसो समत्तो। छट्ठसए छट्ठो उद्देसो समत्तो॥

अह णं भंते! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं उल्लित्ताणं लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि संवच्छराइं तेण परं जोणी पमिलायइ तेण परं जोणी पविद्धंसइ तेण परं बीए अबीए भवइ तेण परं जोणीवोच्छेदे पन्नत्ते समणाउसो!। अह भंते! कलायमसूरतिलमुग्गमासनिप्फावकुलत्थआलिसंदगसईणपलिमंथगमाईणं एएसि णं धन्नाणं जहा सालीणं तहा एयाणवि नवरं पंच संवच्छराइं, सेसं तं चेव। अह

य गद्दतोया य। तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ १ ॥ कहि णं भंते ! सारस्सया देवा परिवसंति ?, गोयमा ! अच्चिविमाणे परिवसंति, कहि णं भंते ! आइच्चा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! अच्चिमालिविमाणे, एवं नेयव्वं जहाणुपुव्वीए जाव कहि णं भंते ! रिट्ठा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! रिट्ठविमाणे ॥ सारस्सयमाइच्चाणं भंते ! देवाणं कइ देवा कइ देवसया पण्णत्ता ?, गोयमा ! सत्त देवा सत्त देवसया परिवारो पण्णत्तो, वण्हीवरुणाणं देवाणं चउद्दस देवा चउद्दस देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो, गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्त देवा सत्त देवसहस्सा पण्णत्ता, अवसेसाणं नव देवा नव देवसया पण्णत्ता–'पढमजुगलम्मि सत्त उ सयाणि बीयंमि चोद्दसमहस्सा। तइए सत्तसहस्सा नव चेव सयाणि सेसेसु ॥ १ ॥' लोगंतियविमाणा णं भंते ! किंपइट्ठिया पण्णत्ता ?, गोयमा ! वाउपइट्ठिया तदुभयपइट्ठिया प०, एवं नेयव्वं–'विमाणाणं पइट्ठाणं बाहल्लुच्चत्तमेव संठाणं ।' बंभलोयवत्तव्वया नेयव्वा [जहा जीवाभिगमे देवुद्देसए] जाव हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो । नो चेव णं देवित्ताए। लोगंतियविमाणेसु णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । लोगंतियविमाणेहिंतो णं भंते ! केवइयं अबाहाए लोगंते पण्णत्ते ?, गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए लोगंते पण्णत्ते। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ २४२ ॥ **छट्ठसए पंचमो उद्देसओ समत्तो ॥**

कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–रयणप्पभा जाव तमतमा, रयणप्पभाईणं आवासा भाणियव्वा (जाव) अहेसत्तमाए, एवं जे जत्तिया आवासा ते भाणियव्वा जाव कइ णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?, गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, तंजहा–विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे ॥ २४३ ॥ जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा ?, गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा अत्थेगइए तओ पडिनियत्तइ, तओ पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ २ दोच्चंपि मारणंतियसमुग्घाएणं समोहणइ २ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, तओ पच्छा आहारेज्ज वा परिणामेज्ज वा सरीरं वा बंधेज्जा एवं जाव अहेसत्तमा पुढवी। जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए २ जे भविए चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि असुरकुमारावासंसि असु-

भंते ! अयसिकुसुंभगकोद्दवकंगुवरगरालगकोदूसगसणसरिसवमूलगबीयमाईणं एएसि णं धन्नाणं, एयाणिवि तहेव, नवरं सत्त संवच्छराइं, सेसं तं चेव ॥ २४५ ॥ एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्स केवइया ऊसासद्धा वियाहिया ?, गोयमा ! असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ, संखेज्जा आवलिया ऊसासो संखेज्जा आवलिया निस्सासो–हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स जंतुणो । एगे ऊसासनीसासे, एस पाणुत्ति वुच्चइ ॥ १ ॥ सत्त पाणूणि से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे । लवाणं सत्तहत्तरिए, एस मुहुत्ते वियाहिए ॥ २ ॥ तिन्नि सहस्सा सत्त य सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा । एस मुहुत्तो दिट्ठो सव्वेहिं अणंतनाणीहिं ॥ ३ ॥ एएणं मुहुत्तपमाणेणं तीसमुहुत्तो अहोरत्तो, पन्नरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासे, दो मासा उऊ, तिन्नि उउए अयणे, दो अयणे संवच्छरे, पंचसंवच्छरिए जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साइं वाससयसहस्सं, चउरासीइं वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीइं पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे, [एवं पुव्वे] २ तुडिए २ अडडे २ अववे २ हूहूए २ उप्पले २ पउमे २ नलिणे २ अच्छणिउरे २ अउए २ पउए य २ नउए य २ चूलिया २ सीसपहेलिया २ एताव ताव गणिए एताव ताव गणियस्स विसए, तेण परं ? ओवमिए । से किं तं ओवमिए ?, २ दुविहे पण्णत्ते तंजहा पलिओवमे य सागरोवमे य, से किं तं पलिओवमे ? से किं तं सागरोवमे ? ॥ सत्थेण सुतिक्खेणवि छेत्तुं भेत्तुं च जं न किर सक्का । तं परमाणु सिद्धा वयंति आइं पमाणाणं ॥ १ ॥ अणंताणं परमाणुपोग्गलाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा उस्सण्हसण्हियाइ वा सण्हसण्हियाइ वा उड्ढरेणूइ वा तसरेणूइ वा रहरेणूइ वा वालग्गेइ वा लिक्खाइ वा जूयाइ वा जवमज्झेइ वा अंगुलेइ वा, अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उड्ढरेणू, अट्ठ उड्ढरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरुउत्तरकुरुगाणं मणूसाणं वालग्गे, एवं हरिवासरम्मगहेमवएरन्नवयाणं पुव्वविदेहाणं मणूसाणं अट्ठ वालग्गा सा एगा लिक्खा, अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ठ जूयाओ से एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झाओ से एगे अंगुले, एएणं अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाणि पाओ, बारस अंगुलाइं विहत्थी, चउव्वीसं अंगुलाइं रयणी, अडयालीसं अंगुलाइं कुच्छी, छन्नउइं अंगुलाणि से एगे दंडेइ वा धणूइ वा जूएइ वा नालियाइ वा अक्खेइ वा मुसलेइ वा, एएणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं गाउयं, चत्तारि गाउयाइं जोयणं, एएणं जोयणप्पमाणेणं जे पल्ले जोयणं आयाम-

सिज्जंति ? गोयमा ! लवणे णं समुद्दे उस्सिओदए नो पत्थडोदए खुभियजले नो अखुभियजले एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से तेण गोयमा ! बाहिरया णं दीवसमुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति संठाणओ एगविहिविहाणा वित्थारओ अणेगविहिविहाणा दुगुणादुगुणप्पमाणओ जाव अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा सयंभुरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो ! । दीवसमुद्दा णं भंते ! केवइया नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइया लोए सुभा नामा सुभा रूवा सुभा गंधा सुभा रसा सुभा फासा एवइया णं दीवसमुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता एवं नेयव्वा सुभा नामा उद्धारो परिणामो सव्वजीवाणं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ २५० ॥ छट्ठसयस्स अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कइ कम्मपगडीओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा छव्विहबंधए वा बंधुद्देसो पण्णवणाए नेयव्वो ॥ २५१ ॥ देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे । देवे णं भंते ! बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू ? हंता ! पभू, से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ ? गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ, नो अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ एवं एएणं गमेणं जाव एगवण्णं एगरूवं १ एगवण्णं अणेगरूवं २ अणेगवण्णं एगरूवं ३ अणेगवण्णं अणेगरूवं ४ चउभंगो । देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए नीलगं पोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, परियाइत्ता पभू । से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले तं चेव नवरं परिणामेइत्ति भाणियव्वं एवं कालगपोग्गलं लोहियपोग्गलत्ताए, एवं कालएणं जाव सुक्किलं एवं णीलएणं जाव सुक्किलं एवं लोहियपोग्गलं जाव सुक्किलत्ताए, एवं हालिद्दएणं जाव सुक्किलं तं एवं एयाए परिवाडीए गंधरसफास कक्खडफासपोग्गलं मउयफासपोग्गलत्ताए २ एवं दो दो गरुयलहुय २ सीयउसिण २ णिद्धलुक्ख २ वण्णाइ सव्वत्थ परिणामेइ, आलावगा य दो दो पोग्गले अपरियाइत्ता परियाइत्ता ॥ २५२ ॥ अविसुद्धलेसे णं भंते ! देवे असमोहएणं अप्पाणएणं अविसुद्धलेसं देवं देविं अन्नयरं जाणइ पासइ ? १ ! णो इणट्ठे समट्ठे, एवं अविसुद्धलेसे देवे असमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं २, १ । अविसुद्धलेसे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं २, १ । अवि-

तिणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगइसमावन्नएण । अत्थि णं भंते ! इमीसे रयण० अहे चंदिम जाव ताराख्वा ?, नो तिणट्ठे समट्ठे । अत्थि ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए चंदाभाइ वा २ ?, णो इणट्ठे समट्ठे, एवं दोच्चाएवि पुढवीए भाणियव्वं, एवं तच्चाएवि भाणियव्वं, नवरं देवोवि पकरेइ असुरोवि पकरेइ णो णागो पकरेइ, चउत्थाएवि एवं नवरं देवो एक्को पकरेइ नो असुरो० नो नागो पकरेइ, एवं हेट्ठिल्लासु सव्वासु देवो एक्को पकरेइ । अत्थि णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं अहे गेहाइ वा २ ? नो इणट्ठे समट्ठे । अत्थि ण भंते ! उराला बलाहया ? हंता ! अत्थि, देवो पकरेइ असुरोवि पकरेइ नो नाओ पकरेइ, एवं थणियसद्देवि । अत्थि ण भंते ! बायरे पुढविकाए बादरे अगणिकाए ?, णो इणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगइसमावन्नएण । अत्थि ण भंते ! चंदिम० ?, णो तिणट्ठे समट्ठे । अत्थि ण भंते ! गामाइ वा० ?, णो तिणट्ठे स० । अत्थि ण भंते ! चंदाभाइ वा २ ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । एवं सणंकुमारमाहिंदेसु नवरं देवो एगो पकरेइ । एवं बंभलोएवि । एवं बंभलोगस्स उवरिं सव्वहिं देवो पकरेइ, पुच्छियव्वो य, बायरे आउकाए बायरे अगणिकाए बायरे वणस्सइकाए अन्नं तं चेव ॥ गाहा—तमुकाए कप्पपणए अगणी पुढवी य अगणि पुढवीसु । आऊतेउवणस्सइ कप्पुवरिमकण्हराईसु ॥ १ ॥ ॥ २४८ ॥ कइविहे ण भंते ! आउयबंधए पन्नत्ते ?, गोयमा ! छव्विहा आउयबंधा पन्नत्ता, तंजहा—जाइनामनिहत्ताउए १ गइनामनिहत्ताउए २ ठिइनामनिहत्ताउए ३ ओगाहणानामनिहत्ताउए ४ पएसनामनिहत्ताउए ५ अणुभागनामनिहत्ताउए ६ दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ जीवा ण भंते ! किं जाइनामनिहत्ता जाव अणुभागनामनिहत्ता ?, गोयमा ! जाइनामनिहत्तावि जाव अणुभागनामनिहत्तावि, दंडओ जाव वेमाणियाण । जीवा ण भंते ! किं जाइनामनिहत्ताउया जाव अणुभागनामनिहत्ताउया ?, गोयमा ! जाइनामनिहत्ताउयावि जाव अणुभागनामनिहत्ताउयावि, दंडओ जाव वेमाणियाण । एवं एए दुवालस दंडगा भाणियव्वा । जीवा ण भंते ! किं जाइनामनिहत्ता १ जाइनामनिहत्ताउया २ ?, १२ । जीवा ण भंते ! किं जाइनामनिउत्ता ३ जाइनामनिउत्ताउया ४ जाइगोयनिहत्ता ५ जाइगोयनिहत्ताउया ६ जाइगोयनिउत्ता ७ जाइगोयनिउत्ताउया ८ जाइणामगोयनिहत्ता ९ जाइणामगोयनिहत्ताउया १० जाइणामगोयनिउत्ता ११ ? जीवा ण भंते ! किं जाइनामगोयनिउत्ताउया १२ जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?, गोयमा ! जाइनामगोयनिउत्ताउयावि जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउयावि दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ २४९ ॥ लवणे ण भंते ! समुद्दे किं उस्सिओदए पत्थडोदए खुभियजले अखु-

सिय नेरइए सिय अनेरइए, नेरइएऽविय सिय भवसिद्धिए सिय अभवसिद्धिए, एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ २५५ ॥ अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति एवं खलु सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्खं वेयणं वेयंति से कह मेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्खं वेयणं वेयंति आहच्च सायं अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंत सायं वेयणं वेयंति आहच्च असायं अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता वेमायाए वेयणं वेयंति आहच्च सायमसायं। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरइया एगंतदुक्खं वेयणं वेयंति [आहच्च सायमसायं] आहच्च सायं भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिया एगंतसायं वेयणं वेयंति आहच्च असायं पुढविक्काइया जाव मणुस्सा वेमायाए वेयणं वेयंति आहच्च सायमसायं से तेणट्ठेणं ॥ २५६ ॥ नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ते किं आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? गोयमा ! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति नो अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति नो परंपरखेत्तोगाढे जहा नेरइया तहा जाव वेमाणियाणं दंडओ ॥ २५७ ॥ केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! केवली णं पुरच्छिमेणं मियंपि जाणइ अमियंपि जाणइ जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स से तेणट्ठेणं । गाहा—जीवाण सुहं दुक्खं जीवे जीवइ तहेव भविया य । एगंतदुक्खवेयण अत्तमाया य केवली ॥१॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥२५८॥ छट्ठं सयं समत्तं ॥

गाहा—आहार १ विरइ २ थावर ३ जीवा ४ पक्खी य ५ आउ ६ अणगारे ७ । छउमत्थ ८ असंवुड ९ अन्नउत्थि १० दस सत्तमंमि सए ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी-जीवे णं भंते ! कं समयमणाहारए भवइ ? गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए बिइए समए सिय आहारए सिय अणाहारए तइए समए सिय आहारए सिय अणाहारए चउत्थे समए नियमा आहारए, एवं दंडओ जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए सेसा तइए समए ॥ जीवे णं भंते ! कं समयं सव्वप्पाहारए भवइ ? गोयमा ! पढमसमओववन्नए वा चरमसमए भवत्थे वा एत्थ णं जीवे णं सव्वप्पाहारए भवइ, दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं ॥ २५९ ॥ किंसंठिए णं भंते ! लोए पन्नत्ते ? गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए लोए पन्नत्ते, हेट्ठा विच्छिन्ने जाव उप्पिं उड्ढमुइंगागारसंठिए, तंसि च णं

सुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस देव ३, ४। अविसुद्धलेसे समोहया॰ समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देव ३, ५। अविसुद्धलेसे समोहया॰ विसुद्धलेस देव ३, ६॥ विसुद्धलेसे असमो॰ अविसुद्धलेस देव ३, १। विसुद्धलेसे असमोहएण विसुद्धलेस देवं ३, २। विसुद्धलेसे ण भंते! देवे समोहएण अविसुद्धलेस देव ? जाणइ०?; हता! जाणइ०, एवं विसुद्ध॰ समो॰ विसुद्धलेस देव ३ जाणइ?, हता! जाणइ ४। विसुद्धलेसे समोहयासमोहएण अविसुद्धलेस देव ३, ५। विसुद्धलेसे समोहयासमोहएण विसुद्धलेस देवं ३, ६। एव हेट्ठिल्लएहिं अट्ठहिं न जाणइ न पासइ उवरिल्लएहिं चउहिं जाणइ पासइ। सेव भंते! सेव भंते! त्ति॥ २५३॥

छट्ठसए नवमो उद्देसो समत्तो॥

अन्नउत्थिया ण भंते! एवमाइक्खति जाव परूवेति जावइया रायगिहे नयरे जीवा एवइयाण जीवाण नो चक्किया केइ सुह वा दुह वा जाव कोलट्ठिगमायमवि निप्फावमायमवि कलममायमवि मासमायमवि मुग्गमायमवि जूयामायमवि लिक्खा-मायमवि अभिनिवट्टेत्ता उवदंसित्तए, से कहमेय भंते! एव?, गोयमा! जन्न ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खति जाव मिच्छ ते एवमाहसु, अह पुण गोयमा! एवमाइ-क्खामि जाव परूवेमि सव्वलोएवि य ण सव्वजीवाणं णो चक्किया कोई सुह वा त चेव जाव उवदंसित्तए। से केणट्ठेण?, गोयमा! अयन्न जबुद्दीवे २ जाव विसेसाहिए परिक्खेवेण पन्नत्ते, देवे ण महिड्ढिए जाव महाणुभागे एग मह सविलेवण गधसमुग्गग गहाय त अवद्दालेइ त अवद्दालेत्ता जाव इणामेव कट्टु केवलकप्प जबुद्दीव २ तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा, से नूण गोयमा! से केवलकप्पे जबुद्दीवे २ तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे?, हता! फुडे, चक्किया ण गोयमा! केइ तेसिं घाणपोग्गलाण कोलट्ठियामायमवि जाव उवदंसित्तए?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से तेणट्ठेण जाव उवदसेत्तए॥ २५४॥ जीवे ण भंते! जीवे २ जीवे?, गोयमा! जीवे ताव नियमा जीवे जीवेवि नियमा जीवे। जीवे ण भंते! नेरइए नेरइए जीवे?, गोयमा! नेरइए ताव नियमा जीवे जीवे पुण सिय नेरइए सिय अनेरइए, जीवे णं भंते! असुरकुमारे असुरकुमारे जीवे?, गोयमा! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे जीवे पुण सिय असुरकुमारे सिय णो असुरकुमारे, एव दडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाण। जीवइ भंते! जीवे जीवे जीवइ?, गोयमा! जीवइ ताव नियमा जीवे जीवे पुण सिय जीवइ सिय नो जीवइ, जीवइ भंते! नेरइए २ जीवइ?, गोयमा! नेरइए ताव नियमा जीवइ २ पुण सिय नेरइए सिय अनेरइए, एव दडओ नेयव्वो जाव वेमाणियाणं। भवसिद्धिए ण भंते! नेरइए २ भवसिद्धिए?, गोयमा! भवसिद्धिए

माए गइपरिणामेणं अकम्मस्स गई पन्नायइ । कहन्नं भंते ! बंधणछेयणयाए अकम्मस्स गई प ? गोयमा ! से जहानामए-कलसिंबलियाइ वा मुग्गसिंबलियाइ वा माससिंबलियाइ वा सिंबलिसिंबलियाइ वा एरंडमिंजियाइ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी फुडित्ता णं एगंतमंतं गच्छइ, एवं खलु गोयमा ! ३ । कहन्नं भंते ! निरिंधणयाए अकम्मस्स गई प ? गोयमा ! से जहानामए-धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं गई पवत्तइ, एवं खलु गोयमा ! ४ । कहन्नं भंते ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गई प ? गोयमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गई पवत्तइ, एवं खलु गोयमा ! नीसंगयाए निरंगणयाए जाव पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गई प ॥ २६४ ॥ दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी दुक्खेणं फुडे नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे । दुक्खी णं भंते ! नेरइए दुक्खेणं फुडे अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं एवं पंच दंडगा नेयव्वा-दुक्खी दुक्खेणं फुडे १ दुक्खी दुक्खं परियायइ २ दुक्खी दुक्खं उदीरेइ ३ दुक्खी दुक्खं वेएइ ४ दुक्खी दुक्खं निज्जरेइ ५ ॥ २६५ ॥ अणगारस्स णं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा चिट्ठमाणस्स वा निसीयमाणस्स (वा) तुयट्टमाणस्स वा अणाउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जस्स णं कोहमाणमायालोभा वोच्छिन्ना भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ नो संपराइया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ नो इरियावहिया, अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ, से णं उस्सुत्तमेव रीयइ से तेणट्ठेणं ॥ २६६ ॥ अह भंते ! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणादोसदुट्ठस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं असणपाण ४ पडिग्गाहित्ता मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारं आहारेइ एस णं गोयमा ! सइंगाले पाणभोयणे । जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं असणपाण ४ पडिग्गाहित्ता महया २ अप्पत्तियकोहकिलामं करेमाणे आहारमाहारेइ एस णं गोयमा ! सधूमे पाणभोयणे । जे णं निग्गंथे वा २ जाव पडिग्गाहेत्ता गुणुप्पायणहेउं अन्नदव्वेण सद्धिं संजोएत्ता आहारमाहारेइ एस णं गोयमा ! संजोयणा-

सासयसि लोगसि हेट्ठा विच्छिन्नंसि जाव उप्पिं उड्ढमुइंगागारसंठियंसि उप्पन्ननाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जीवेवि जाणइ पासइ अजीवेवि जाणइ पासइ तओ पच्छा सिज्झइ जाव अंत करेइ ॥ २६० ॥ समणोवासगस्स ण भंते ! सामाइय-कडस्स समणोवासए अच्छमाणस्स तस्स ण भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ ?, गोयमा ! समणोवासयस्स ण सामाइयकडस्स समणोवासए अच्छमाणस्स आया अहिगरणीभवइ आयाहिगरणवत्तियं च ण तस्स नो इरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ, से तेणट्ठेण जाव संपरा-इया० ॥ २६१ ॥ समणोवासगस्स ण भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ पुढविसमारंभे अपच्चक्खाए भवइ से य पुढविं खणमाणेऽण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा से णं भंते ! तं वयं अइचरइ ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टइ । समणोवासयस्स ण भंते ! पुव्वामेव वणस्सइसमारंभे पच्च-क्खाए से य पुढविं खणमाणे अन्नयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा से ण भंते ! तं वयं अइचरइ ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तस्स अइवायाए आउट्टइ ॥ २६२ ॥ समणोवासए ण भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएसणिज्जेणं असणपाण-खाइमसाइमेणं पडिलाभेमाणे किं लब्भइ ?, गोयमा ! समणोवासए ण तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएइ, समाहिकारएणं तमेव समाहिं पडिलभइ । समणोवासए ण भंते ! तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयइ ?, गोयमा ! जीवियं चयइ दुच्चयं चयइ दुक्करं करेइ दुल्लहं लहइ बोहिं बुज्झइ तओ पच्छा सिज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ २६३ ॥ अत्थि ण भंते ! अकम्मस्स गई पन्नायइ ?, हंता ! अत्थि ॥ कहन्नं भंते ! अक-म्मस्स गई पन्नायइ ?, गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए गइपरिणामेणं बंधण-छेयणयाए निरंधणयाए पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गई प० ॥ कहन्न भंते ! निस्संग-याए निरंगणयाए गइपरिणामेणं बंधणछेयणयाए निरंधणयाए पुव्वप्पओगेणं अक-म्मस्स गई पन्नायइ ?, से जहानामए-केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहयंति आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे २ दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ २ अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ २ उण्हे दलयइ भूइं २ सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं गुरुयत्ताए भारिय-त्ताए गुरुसंभारियत्ताए सलिलतलमइवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ ?, हंता ! भवइ, अहे णं से तुंबे अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं परिक्खएणं धरणितलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ?, हंता ! भवइ, एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए निरंगण-

अचवचवं अदुयमविलंबियं अपरिसाडिं अक्खोवंजणवणाणुलेवणभूयं संजमजायामा-
यावत्तियं संजमभारवहणट्ठयाए बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेइ एस
णं गोयमा! सत्थातीतस्स सत्थपरिणामियस्स जाव पाणभोयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।
सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥ २६९ ॥ सत्तमसए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

से नूणं भंते! सव्वपाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति
वयमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ दुपच्चक्खायं भवइ? गोयमा! सव्वपाणेहिं जाव
सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वयमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवइ सिय दुपच्चक्खायं
भवइ, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सव्वपाणेहिं जाव सिय दुपच्चक्खायं भवइ?,
गोयमा! जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वयमाणस्स णो
एवं अभिसमन्नागयं भवइ इमे जीवा इमे अजीवा इमे तसा इमे थावरा तस्स णं
सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वयमाणस्स णो सुपच्चक्खायं भवइ
दुपच्चक्खायं भवइ, एवं खलु से दुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच-
क्खायमिति वयमाणो नो सच्चं भासं भासइ मोसं भासं भासइ, एवं खलु से मुसा-
वाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं असंजयविरयपडिहयपच्चक्खा-
यपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले यावि भवइ, जस्स णं सव्वपा-
णेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वयमाणस्स एवं अभिसमन्नागयं भवइ-इमे
जीवा इमे अजीवा इमे तसा इमे थावरा तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं
पच्चक्खायमिति वयमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ नो दुपच्चक्खायं भवइ, एवं खलु
से सुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वयमाणे सच्चं भासं
भासइ नो मोसं भासं भासइ, एवं खलु से सच्चवाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं
तिविहं तिविहेणं संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंतपं-
डिए यावि भवइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जाव सिय दुपच्चक्खायं भवइ
॥ २७० ॥ कइविहे णं भंते! पच्चक्खाणे पन्नत्ते? गोयमा! दुविहे पच्चक्खाणे
पन्नत्ते, तंजहा-मूलगुणपच्चक्खाणे य उत्तरगुणपच्चक्खाणे य। मूलगुणपच्चक्खाणे णं
भंते! कइविहे पन्नत्ते?, गोयमा! दुविहे पन्नत्ते तंजहा-सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे य
देसमूलगुणपच्चक्खाणे य सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते! कइविहे पन्नत्ते?,
गोयमा! पंचविहे पन्नत्ते तंजहा-सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं जाव सव्वाओ
परिग्गहाओ वेरमणं। देसमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते! कइविहे पन्नत्ते? गोयमा!
पंचविहे पन्नत्ते तंजहा-थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं जाव थूलाओ परिग्गहाओ
वेरमणं। उत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते! कइविहे पन्नत्ते? गोयमा! दुविहे पन्नत्ते

दोसदुट्ठे पाणभोयणे, एस णं गोयमा ! सइंगालस्स सधूमस्स सजोयणादोसदुट्ठस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते। अह भंते ! वीतिंगालस्स वीयधूमस्स सजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, गोयमा ! जे ण णिग्गंथे वा जाव पडिगाहेत्ता अमुच्छिए जाव आहारेइ एस ण गोयमा ! वीतिंगाले पाणभोयणे, जे ण निग्गंथे वा निग्गंथी वा जाव पडिगाहेत्ता णो महया अप्पत्तियं जाव आहारेइ, एस ण गोयमा ! वीयधूमे पाणभोयणे, जे ण निग्गंथे वा निग्गंथी वा जाव पडिगाहेत्ता जहालद्धं तहा आहारमाहारेइ एस ण गोयमा ! सजोयणादोसविप्पमुक्के पाणभोयणे, एस ण गोयमा ! वीतिंगालस्स वीयधूमस्स संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते ॥ २६७ ॥ अह भंते ! खेत्ताइक्कतस्स कालाइक्कतस्स मग्गाइक्कतस्स पमाणाइक्कतस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, गो० जे ण निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं णं असणं ४ अणुग्गए सूरिए पडिगाहित्ता उग्गए सूरिए आहारमाहारेइ एस ण गोयमा ! खेत्ताइक्कते पाणभोयणे, जे ण निग्गंथो वा २ जाव साइमं पढमाए पोरिसीए पडिगाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवायणावेत्ता आहारं आहारेइ एस ण गोयमा ! कालाइक्कते पाणभोयणे, जे ण निग्गंथो वा २ जाव साइमं पडिगाहित्ता परं अद्धजोयणमेराए वीइक्कमावइत्ता आहारमाहारेइ एस ण गोयमा ! मग्गाइक्कते पाणभोयणे, जे ण निग्गंथो वा निग्गंथी वा फासुएसणिज्जं जाव साइमं पडिगाहित्ता परं वत्तीसाए पमाणमेत्ताणं कवलाणं आहारमाहारेइ एस ण गोयमा ! पमाणाइक्कते पाणभोयणे, अट्ठपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे दुवालसपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिया सोलसपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागपत्ते चउव्वीसं पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे ओमोयरिए वत्तीसं पमाणमेत्ते कवले (जत्तिओ जस्स पुरिसस्स आहारो तस्साहारस्स वत्तीसइमो भागो तप्पुरिसावेक्खाए कवले, इणमेव 'कवल' पमाणं ति,) आहारमाहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एक्केणवि गासेण ऊणगं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे नो पकामरसभोईति वत्तव्वं सिया, एस ण गोयमा ! खेत्ताइक्कतस्स कालाइक्कतस्स मग्गाइक्कंतस्स पमाणाइक्कतस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते ॥ २६८ ॥ अह भंते ! सत्थाईयस्स सत्थपरिणामियस्स एसियस्स वेसियस्स समुदाणियस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, गोयमा ! जे ण निग्गंथे वा निग्गंथी वा निक्खित्तसत्थमुसले ववगयमालावन्नगविलेवणे ववगयचुयचइयचत्तदेहं जीवविप्पजढं अकयमकारियमसंकप्पियमणाहूयमकीयकडमणुद्दिट्ठं नवकोडीपरिसुद्धं दसदोसविप्पमुक्कं उग्गमुप्पायणेसणासुपरिसुद्धं वीतिंगालं वीयधूमं सजोयणादोसविप्पमुक्कं असुरसुरं

असंखेज्जगुणा। जीवा णं भंते! किं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी? गोयमा! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीवि तिन्निवि पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एवं चेव सेसा अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया। एएसि णं भंते! जीवाणं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीणं अप्पाबहुगाणि तिन्निवि जहा पढमे दंडए जाव मणूसाणं॥ जीवा णं भंते! किं संजया असंजया संजयासंजया? गोयमा! जीवा संजयावि असंजयावि संजयासंजयावि एवं जहेव पन्नवणाए तहेव भाणियव्वं जाव वेमाणिया अप्पाबहुगं तहेव तिण्हवि भाणियव्वं॥ जीवा णं भंते! किं पच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खाणी? गोयमा! जीवा पच्चक्खाणीवि एवं तिन्निवि एवं मणुस्साणवि तिन्निवि पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आइल्लविरहिया सेसा सव्वे अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया। एएसि णं भंते! जीवाणं पच्चक्खाणीणं जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा अपच्चक्खाणी अणंतगुणा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खाणी संखेज्जगुणा अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा॥२७२॥ जीवा णं भंते! किं सासया असासया? गोयमा! जीवा सिय सासया सिय असासया। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-जीवा सिय सासया सिय असासया? गोयमा! दव्वट्ठयाए सासया भावट्ठयाए असासया से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-जाव सिय असासया। नेरइया णं भंते! किं सासया असासया? एवं जहा जीवा तहा नेरइयावि एवं जाव वेमाणिया जाव सिय सासया सिय असासया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥२७३॥ सत्तमस्स बिइओ उद्देसो समत्तो॥

वणस्सइकाइया णं भंते! किंकालं सव्वप्पाहारगा वा सव्वमहाहारगा वा भवंति? गोयमा! पाउसवरिसारत्तेसु णं एत्थ णं वणस्सइकाइया सव्वमहाहारगा भवंति तयाणंतरं च णं सरए, तयाणंतरं च णं हेमंते तयाणंतरं च णं वसंते तयाणंतरं च णं गिम्हे, गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति, जइ णं भंते! गिम्हासु वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति कम्हा णं भंते! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति? गोयमा! गिम्हासु णं बहवे उसिणजोणिया जीवा य पोग्गला य वणस्सइकाइयत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति एवं खलु गोयमा! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया पुप्फिया जाव चिट्ठंति॥२७४॥ से नूणं भंते! मूला मूलजीवफुडा कंदा कंदजीवफुडा जाव बीया बीय

तंजहा-सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे य देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे य, सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भंते ! कइविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! दसविहे पन्नत्ते, तंजहा-अणागयं १ मइक्कंतं २ कोडीसहियं ३ नियंटियं ४ चेव । सागार ५ मणागारं ६ परिमाणकडं ७ निरवसेसं ८ ॥ १ ॥ सा(स)केयं ९ चेव अद्धाए १० पच्चक्खाणं भवे दसहा । देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भंते ! कइविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा-दिसिव्वयं १ उवभोगपरिभोगपरिमाणं २ अणत्थदंडवेरमणं ३ सामाइयं ४ देसावगासियं ५ पोसहोववासो ६ अतिहिसंविभागो ७ अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाराहणया ॥ २७१ ॥ जीवा णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी उत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी ?, गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणीवि उत्तरगुणपच्चक्खाणीवि अपच्चक्खाणीवि । नेरइया णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी० पुच्छा, गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी, एवं जाव चउरिंदिया, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा, वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं उत्तरगुणपच्चक्खाणीणं अपच्चक्खाणीण य कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा अपच्चक्खाणी अणंतगुणा । एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं० पुच्छा, गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा । जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी देसमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी ?, गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीवि देसमूलगुणपच्चक्खाणीवि अपच्चक्खाणीवि । नेरइयाणं पुच्छा, गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी, एवं जाव चउरिंदिया । पंचिंदियतिरिक्ख० पुच्छा, गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्ख० नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी देसमूलगुणपच्चक्खाणीवि अपच्चक्खाणीवि, मणुस्सा जहा जीवा, वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा नेरइया । एएसि णं भंते ! जीवाणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं देसमूलगुणपच्चक्खाणीणं अपच्चक्खाणीण य कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी देसमूलगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा अपच्चक्खाणी अणंतगुणा । एवं अप्पाबहुगाणि तिन्निवि जहा पढमिल्लए दंडए, नवरं सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी

जं वेदेंसु तं निज्जरिंसु ? एवं नेरइयाण वि एवं जाव वेमाणिया । से नूणं भंते ! जं वेदेंति तं निज्जरेंति जं निज्जरेंति तं वेदेंति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो तं वेदेंति ? गोयमा ! कम्मं वेदेंति णोकम्मं निज्जरेंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंति एवं नेरइयाण वि जाव वेमाणिया । से नूणं भंते ! जं वेदिस्संति तं निज्जरिस्संति जं निज्जरिस्संति तं वेदिस्संति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं जाव णो तं वेदिस्संति ? गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति णोकम्मं निज्जरिस्संति से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरिस्संति, एवं नेरइयाण वि जाव वेमाणिया । से नूणं भंते ! जे वेयणासमए से निज्जरासमए जे निज्जरासमए से वेयणासमए ? णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जे वेयणासमए न से निज्जरासमए जे निज्जरासमए न से वेयणासमए ? गोयमा ! जं समयं वेदेंति णो तं समयं निज्जरेंति जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति अन्नम्मि समए वेदेंति अन्नम्मि समए निज्जरेंति अन्ने से वेयणासमए अन्ने से निज्जरासमए, से तेणट्ठेणं जाव न से वेयणासमए न से निज्जरासमए । नेरइयाणं भंते ! जे वेयणासमए से निज्जरासमए जे निज्जरासमए से वेयणासमए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयाणं जे वेयणासमए न से निज्जरासमए जे निज्जरासमए न से वेयणासमए ? गोयमा ! नेरइया णं जं समयं वेदेंति णो तं समयं निज्जरेंति जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति अन्नम्मि समए वेदेंति अन्नम्मि समए निज्जरेंति अन्ने से वेयणासमए अन्ने से निज्जरासमए, से तेणट्ठेणं जाव न से वेयणासमए न से निज्जरासमए, एवं जाव वेमाणिया ॥ २७८ ॥ नेरइया णं भंते ! किं सासया असासया ? गोयमा ! सिय सासया सिय असासया । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइया सिय सासया सिय असासया ? गोयमा ! अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए सासया वोच्छित्तिणयट्ठयाए असासया, से तेणट्ठेणं जाव सिय सासया सिय असासया, एवं जाव वेमाणिया जाव सिय असासया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ २७९ ॥

सत्तमे सए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी–कइविहा णं भंते ! संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता ? गोयमा ! छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तंजहा–पुढविकाइया एवं जहा जीवाभिगमे जाव सम्मत्तकिरियं वा मिच्छत्तकिरियं वा ॥ जीवा छव्विह पुढवी जीवाण ठिई भवट्ठिई काए । निल्लेवण अणगारे किरिया सम्मत्तमिच्छत्ता ॥ १ ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ २८० ॥ सत्तमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी–खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कइविहे

जीवफुडा ?, हंता गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा । जइ णं भंते ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा कम्हा णं भंते ! वणस्सइ-काइया आहारेंति कम्हा परिणामेंति ?, गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढविजीव-पडिबद्धा तम्हा आहारेंति तम्हा परिणामेंति, कंदा कंदजीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेन्ति तम्हा परिणामेन्ति, एवं जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेन्ति तम्हा परिणामेन्ति ॥ २७५ ॥ अह भंते ! आलुए मूलए सिंगबेरे हिरिली सिरिली सिस्सिरिली किट्ठिया छिरिया छीरविरालिया कण्हकंदे वज्जकंदे सूरणकंदे खेलूडे अद्दए भद्दमुत्था पिंडहलिद्दा लोही णीहू थीहू थिरूगा मुग्गकन्नी अस्सकन्नी सीहकण्णी मुसुंढी जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता ?, हंता गोयमा ! आलुए मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता ॥ २७६ ॥ सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?, हंता ! सिया, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए नीललेसे नेरइए महा-कम्मतराए ?, गोयमा ! ठिइं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए। सिय भंते ! नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ? हंता ! सिया, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?, गोयमा ! ठिइं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्म-तराए। एवं असुरकुमारेवि, नवरं तेउलेसा अब्भहिया एवं जाव वेमाणिया, जस्स जइ लेसाओ तस्स तत्तिया भाणियव्वाओ, जोइसियस्स न भन्नइ, जाव सिय भंते ! पम्हलेसे वेमाणिए अप्पकम्मतराए सुक्कलेसे वेमाणिए महाकम्मतराए ?, हंता ! सिया, से केणट्ठेणं० ? सेसं जहा नेरइयस्स जाव महाकम्मतराए ॥ २७७ ॥ से नूणं भंते ! जा वेयणा सा निज्जरा जा निज्जरा सा वेयणा ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जा वेयणा न सा निज्जरा जा निज्जरा न सा वेयणा ?, गोयमा ! कम्मं वेयणा णोकम्मं निज्जरा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेयणा । नेरइयाणं भंते ! जा वेयणा सा निज्जरा जा निज्जरा सा वेयणा ?, गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयाणं जा वेयणा न सा निज्जरा जा निज्जरा न सा वेयणा ?, गोयमा ! नेरइयाणं कम्मं वेयणा णोकम्मं निज्जरा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेयणा, एवं जाव वेमाणियाणं । से नूणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरिंसु जं निज्जरिंसु तं वेदेंसु ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जं वेदेंसु नो तं निज्जरेंसु जं निज्जरेंसु नो तं वेदेंसु ?, गोयमा ! कम्मं वेदेंसु नोकम्मं निज्जरिंसु, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंसु, नेरइया णं भंते !

कम्मा कज्जंति? हन्ता! अत्थि। कहण्णं भंते! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति? गोयमा! पाणाइवायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं कोहविवेगेणं जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगेणं एवं खलु गोयमा! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति। अत्थि णं भंते! णेरइयाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, एवं जाव वेमाणिया णवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं ॥ १८४ ॥ अत्थि णं भंते! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति? हंता! अत्थि। कहण्णं भंते! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति? गोयमा! पाणाणुकंपाए भूयाणुकंपाए जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए एवं खलु गोयमा! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति एवं णेरइयाणवि एवं जाव वेमाणियाणं। अत्थि णं भंते! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति? हंता! अत्थि। कहण्णं भंते! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति? गोयमा! परदुक्खणयाए परसोयणयाए परजूरणयाए परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए परपरियावणयाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए एवं खलु गोयमा! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति एवं णेरइयाणवि एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १८५ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए दुस्समदुस्समाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ? गोयमा! कालो भविस्सइ हाहाभूए भंभाभूए कोलाहलभूए समयाणुभावेण य णं खरफरुसधूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयंकरा वाया संवट्टगा य वाइंति इह अभिक्खं धूमाइंति य दिसा समंता रउस्सला रेणुकलुसतमपडलनिरालोगा समयलुक्खयाए य णं अहियं चंदा सीयं मोच्छंति अहियं सूरिया तवइस्संति अदुत्तरं च णं अभिक्खणं बहवे अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा अपिवणिज्जोदगा (अजवणिज्जोदगा) वाहिरोगवेदणोदीरणपरिणामसलिला अमणुण्णपाणियगा चंडानिलपहयतिक्खधारानिवायपउरं वासं वासिहिंति। जे णं भारहे वासे गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमगयं जणवयं चउप्पयगवेलए खहयरे य पक्खिसंघे गामारण्णपयारनिरए तसे य पाणे बहुप्पगारे रुक्खगुच्छगुम्मलयवल्लितणपव्वगहरितोसहिपवालंकुरमादीए य तणवणस्सइकाइए विद्धंसेहिंति पव्वयगिरिडोंगरउच्छल(त्थ)भट्टिमादीए य वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिंति सलिलबिलगड्डदुग्गविसमं निण्णुन्नयाइं च गंगासिंधुवज्जाइं समीकरेहिंति ॥ तीसे णं भंते! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ? गोयमा! भूमी भविस्सइ

ण जोणीसंगहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! तिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते, तजहा–अडया पोयया समुच्छिमा, एव जहा जीवाभिगमे जाव नो चेव ण ते विमाणे वीईव-एज्जा। एवंमहालयाण गोयमा! ते विमाणा पन्नत्ता॥ 'जोणीसगह लेसा दिट्ठी नाणे य जोग उवओगे। उववायठिइसमुग्घायचवणंजाईकुलविहीओ' ॥ १ ॥ सेव भंते! सेव भंते! त्ति ॥ २८१ ॥ **सत्तमे सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥**

रायगिहे जाव एवं वयासी–जीवे ण भंते! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से ण भते! किं इहगए नेरइयाउय पकरेइ उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ उववन्ने नेरइयाउय पकरेइ ?, गोयमा! इहगए नेरइयाउय पकरेइ नो उववज्जमाणे नेरइया-उय पकरेइ नो उववन्ने नेरइयाउय पकरेइ, एवं असुरकुमारेसुवि एवं जाव वेमाणि-एसु। जीवे णं भते! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से ण भंते! कि इहगए नेर-इयाउयं पडिसवेदेइ उववज्जमाणे नेरइयाउय पडिसवेदेइ उववन्ने नेरइयाउय पडिसंवेदेइ ?, गोयमा! णो इहगए नेरइयाउय पडिसवेदेइ उववज्जमाणे नेरइयाउय पडिसवेदेइ उववन्नेवि नेरइयाउय पडिसवेदेइ, एव जाव वेमाणिएसु। जीवे णं भते! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से ण भते! किं इहगए महावेयणे उववज्जमाणे महावेयणे उववन्ने महावेयणे ?, गोयमा! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे उववज्जमाणे सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगतदुक्खं वेयण वेयइ आहच्च साय। जीवे ण भते! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए पुच्छा, गोयमा! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे उववज्जमाणे सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगतसाय वेयण वेदेइ आहच्च असायं, एव जाव थणियकुमारेसु। जीवे णं भंते! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए पुच्छा, गोयमा! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, एवं उववज्जमाणेवि, अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा वेमायाए वेयणं वेयइ, एव जाव मणुस्सेसु, वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु॥ २८२॥ जीवा ण भते! कि आभोगनिव्वत्तियाउया अणाभोगनिव्वत्तियाउया ?, गोयमा! नो आभोगनिव्वत्तियाउया अणाभोगनिव्वत्तियाउया, एवं नेरइयावि, एवं जाव वेमाणिया॥ २८३ ॥ अत्थि ण भते! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?, [गोयमा!] हता! अत्थि, कहन्न भंते! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?, गोयमा! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा! जीवाण कक्कस-वेयणिज्जा कम्मा कज्जंति। अत्थि णं भ ते! नेरइयाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?, [एवं चेव] एव जाव वेमाणियाण। अत्थि ण भंते! जीवाण अकक्कसवेयणिज्जा

संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ नो संपराइया किरिया कज्जइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-संवुडस्स णं जाव संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्स णं कोहमाणमायालोभा वोच्छिन्ना भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, तहेव जाव उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ, से णं अहासुत्तमेव रीयइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥ २८८ ॥ रूवी भंते ! कामा अरूवी कामा ? गोयमा ! रूवी कामा समणाउसो ! नो अरूवी कामा । सचित्ता भंते ! कामा अचित्ता कामा ? गोयमा ! सचित्तावि कामा अचित्तावि कामा । जीवा भंते ! कामा अजीवा कामा ? गोयमा ! जीवावि कामा अजीवावि कामा । जीवाणं भंते ! कामा अजीवाणं कामा ? गोयमा ! जीवाणं कामा नो अजीवाणं कामा । कइविहा णं भंते ! कामा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा कामा पन्नत्ता, तंजहा-सद्दा य रूवा य । रूवी भंते ! भोगा अरूवी भोगा ? गोयमा ! रूवी भोगा नो अरूवी भोगा । सचित्ता भंते ! भोगा अचित्ता भोगा ? गोयमा ! सचित्तावि भोगा अचित्तावि भोगा । जीवा भंते ! भोगा अजीवा भोगा ? गोयमा ! जीवावि भोगा अजीवावि भोगा । जीवाणं भंते ! भोगा अजीवाणं भोगा ? गोयमा ! जीवाणं भोगा नो अजीवाणं भोगा । कइविहा णं भंते ! भोगा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा भोगा पन्नत्ता, तंजहा-गंधा रसा फासा । कइविहा णं भंते ! कामभोगा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कामभोगा पन्नत्ता, तंजहा-सद्दा रूवा गंधा रसा फासा । जीवा णं भंते ! किं कामी भोगी ? गोयमा ! जीवा कामीवि भोगीवि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवा कामीवि भोगीवि ? गोयमा ! सोइंदियचक्खिंदियाइं पडुच्च कामी घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च भोगी, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव भोगीवि । नेरइया णं भंते ! किं कामी भोगी ? एवं चेव जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी भोगी, से केणट्ठेणं जाव भोगी ? गोयमा ! फासिंदियं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव भोगी, एवं जाव वणस्सइकाइया । बेइंदिया एवं चेव, नवरं जिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च भोगी, तेइंदियावि एवं चेव, नवरं घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च भोगी, चउरिंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! चउरिंदिया कामीवि भोगीवि, से केणट्ठेणं जाव भोगीवि ? गोयमा ! चक्खिंदियं पडुच्च कामी घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च भोगी

इगालभूया मुम्मुरभूया छारियभूया तत्तकवेल्लयभूया तत्तसमजोइभूया धूलिबहुला रेणु-बहुला पंकबहुला पणगबहुला चलणिबहुला बहूण धरणिगोयराणं सत्ताण दुन्निक्कमा यावि भविस्सइ ॥ २८६ ॥ तीसे ण भंते ! समाए भारहे वासे मणुयाण केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ?, गोयमा ! मणुया भविस्संति दुरूवा दुवन्ना दुगंधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता जाव अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा अणादेज्जवयणपच्चायाया निल्लज्जा कूडकवडकलहवहबंधवेरनिरया मज्जायाइक्कमप्पहाणा अकज्जनिच्चुज्जया गुरुनियोयविणयरहिया य विकलरूवा परूढ नहकेसमंसुरोमा काला खरफरुसझामवन्ना फुट्टसिरा कविलपलियकेसा बहुण्हारु[णि]-संपिणद्धदुद्दंसणिज्जरूवा संकुडियवलितरंगपरिवेढियंगमंगा जरापरिणयव्व थेरगनरा पविरलपरिसडियदंतसेढी उब्भडघडमुहा विसमनयणा वंकनासा वंगवलिविगय-भेसणमुहा कच्छुकसराभिभूया खरतिक्खनहकंडूइयविक्खयतणू दद्दुकिडिभसिंझ-फुडियफरुसच्छवी चित्तलंगा टोलागइविसमसंधिबंधणउक्कुडुअट्ठिगविभत्तदुब्बलकु-संघयणकुप्पमाणकुसंठिया कुरूवा कुठाणासणकुसेज्जकुभोइणो असुइणो अणेगवाहि-परिपीलियंगमंगा खलंतविब्भलगई निरुच्छाहा सत्तपरिवज्जिया विगयचिट्ठा नट्ठतेया अभिक्खणं सीयउण्हखरफरुसवायविज्झडिया मलिणपंसुरयगुंडियंगमंगा बहुकोह-माणमाया बहुलोभा असुहदुक्खभोगी ओसन्नं धम्मसण्णसम्मत्तपरिब्भट्ठा उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता सोलसवीसइवासपरमाउसो पुत्तनत्तुपरियालपणयबहुला गंगा-सिंधूओ महानईओ वेयड्ढं च पव्वयं निस्साए बावत्तरिं निओदा बीयं बीयामेत्ता बिलवासिणो भविस्संति ॥ ते णं भंते ! मणुया किमाहारमाहारेहिंति ?, गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं गंगासिंधूओ महानईओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्प-माणमेत्तं जलं वोज्झिहिंति सेवि य णं जले बहुमच्छकच्छभाइन्ने णो चेव णं आउबहुले भविस्सइ, तए णं ते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तंसि य सूरत्थमणमुहुत्तंसि य बिलेहिंतो निद्धाहिंति निद्धाइत्ता मच्छकच्छभे थलाइं गाहेहिंति सीयायवतत्तएहिं मच्छकच्छ-एहिं एक्कवीसं वाससहस्साइं वित्तिं कप्पेमाणा विहरिस्संति ॥ ते णं भंते ! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा ओसण्णं मंसाहारा मच्छा-हारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जि-हिंति ?, गोयमा ! ओसन्नं नरगतिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति, ते णं भंते ! सीहा वग्घा वगा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा निस्सीला तहेव जाव कहिं उववज्जि-हिंति ?, गोयमा ! ओसन्नं नरगतिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति, ते णं भंते ! ढंका कंका विलका मद्दुगा सिही निस्सीला तहेव जाव ओसन्नं नरगतिरिक्खजोणिएसु उव-वज्जिहिंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥२८७॥ **सत्तमस्स छट्ठो उद्देसओ ॥**

छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्वं जाव अलमत्थु ॥११५२॥ से नूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ? हंता गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव खुड्डियं वा महालियं वा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव समे चेव जीवे ॥ ११५३ ॥ नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे जे य कज्जइ जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे जे निज्जिण्णे से सुहे ? हंता गोयमा ! नेरइयाणं पावे कम्मे जाव सुहे एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ११५४ ॥ कइ णं भंते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तंजहा-आहारसण्णा १ भयसण्णा २ मेहुणसण्णा ३ परिग्गहसण्णा ४ कोहसण्णा ५ माणसण्णा ६ मायासण्णा ७ लोभसण्णा ८ लोगसण्णा ९ ओहसण्णा १० एवं जाव वेमाणियाणं ॥ नेरइया दसविहं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तंजहा-सीयं उसिणं खुहं पिवासं कंडुं परज्झं जरं दाहं भयं सोगं ॥११५५॥ से नूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ? हंता गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य जाव कज्जइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव कज्जइ ? गोयमा ! अविरइं पडुच्च से तेणट्ठेणं जाव कज्जइ ॥ ११५६ ॥ आहाकम्मं णं भंते ! भुंजमाणे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं जहा पढमे सए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्वं जाव सासए पंडिए पंडियत्तं असासयं सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥११५७॥ सत्तमसयस्स अट्ठमो उद्देसो ॥

असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ? नो तिणट्ठे समट्ठे । असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं जाव हंता ! पभू । से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ ? गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ नो अन्नत्थगए पोग्गले जाव विउव्वइ, एवं एगवण्णं अणेगरूवं चउभंगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देसए तहा इहावि भाणियव्वं नवरं अणगारे इहगए चेव पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ, सेसं तं चेव जाव लुक्खपोग्गलं निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? हंता ! पभू, से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता जाव नो अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ ॥ ११ ॥ नायमेयं अरहया सुयमेयं अरहया विण्णायमेयं अरहया महासिलाकंटए संगामे ॥ महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जइत्था के पराजइत्था ? गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते जइत्था नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो पराजइत्था ॥

से तेणट्ठेण जाव भोगीवि, अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया। एएसि णं भंते! जीवाणं कामभोगीणं नोकामीणं नोभोगीणं भोगीण य कयरे २हिंतो जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा कामभोगी नोकामीनोभोगी अणंतगुणा भोगी अणंतगुणा ॥ २८९ ॥ छउमत्थे णं भंते! मणूसे जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूणं भंते! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कारपरक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, से नूणं भंते! एयमट्ठं एवं वयह ?, गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ ? गोयमा! पभू णं से उट्ठाणेणवि कम्मेणवि बलेणवि वीरिएणवि पुरिसक्कारपरक्कमेणवि अन्नयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ। आहोहिए णं भंते! मणुस्से जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु एवं चेव जहा छउमत्थे जाव महापज्जवसाणे भवइ। परमाहोहिए णं भंते! मणुस्से जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झित्तए जाव अंतं करेत्तए, से नूणं भंते! से खीणभोगी सेसं जहा छउमत्थस्स। केवली णं भंते! मणुस्से जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं एवं जहा परमाहोहिए जाव महापज्जवसाणे भवइ ॥ २९० ॥ जे इमे भंते! असन्निणो पाणा, तंजहा–पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा य एगइया तसा, एए णं अंधा मूढा तमपविट्ठा तमपडलमोहजालपडिच्छण्णा अकामनिकरणं वेयणं वेदंतीति वत्तव्वं सिया ?, हंता गोयमा! जे इमे असन्निणो पाणा पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा य जाव वेयणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ॥ अत्थि णं भंते! पभूवि अकामनिकरणं वेयणं वेएइ ?, हंता गोयमा! अत्थि, कहन्नं भंते! पभूवि अकामनिकरणं वेयणं वेदेइ ?, गोयमा! जे णं णो पभू विणा दीवेणं अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए जे णं नो पभू पुरओ रूवाइं अणिज्झाइत्ता णं पासित्तए जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयक्खित्ता णं पासित्तए [जे णं नो पभू पासओ रूवाइं अणुलोइत्ता णं पासित्तए जे णं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए जे णं नो पभू अहे रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए] एस णं गोयमा! पभूवि अकामनिकरणं वेयणं वेदेइ ॥ अत्थि णं भंते! पभूवि पकामनिकरणं वेयणं वेदेइ ?, हंता! अत्थि, कहन्नं भंते! पभूवि पकामनिकरणं वेयणं वेदेइ ?, गोयमा! जे णं नो पभू समुद्दस्स पारं गमित्तए जे णं नो पभू समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासित्तए जे णं नो पभू देवलोगं गमित्तए जे णं नो पभू देवलोगगयाइं रूवाइं पासित्तए एस णं गोयमा! पभूवि पकामनिकरणं वेयणं वेदेइ। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥ २९१ ॥ **सत्तमस्स सयस्स सत्तमो उद्देसओ समत्तो ॥**

तए ण से कोणिए राया महासिलाकटग सगाम उवट्ठियं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उदाइ हत्थिरायं पडिकप्पेह हयगयरहजोहकलिय चाउरगिणिं सेण सन्नाहेह २ त्ता मम एयमाणत्तिय खिप्पा-मेव पच्चप्पिणह । तए ण ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएण रन्ना एव वुत्ता समाणा हट्ठ-तुट्ठ जाव अजलिं कट्टु एव सामी ! तहत्ति आणाए विणएण वयणं पडिसुणंति २ खिप्पामेव छेयायरियोवएसमइकप्पणाविकप्पेहिं सुनिउणेहिं एव जहा उववाइए जाव भीम सगामिय अउज्झ उदाइ हत्थिरायं पडिकप्पेंति हयगय जाव सन्नाहेंति २ जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता करयल०कूणियस्स रन्नो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए ण से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवा-गच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ मज्जणघरं अणुपविसित्ता ण्हाए सव्वालकारविभूसिए सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगे-वेज्जे विमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरिंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमा-णेणं चउचामरवालवीइयगे मगलजयसद्दकयालोए एव जहा उववाइए जाव उवा-गच्छित्ता उदाइ हत्थिरायं दुरूढे, तए णं से कूणिए राया हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जहा उववाइए जाव सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं हयगयरहप-वरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडे महया भडचडगरविंदपरि-क्खित्ते जेणेव महासिलाकटए सगामे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता महासिलाकटय सगामं ओयाए, पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एग महं अभे-ज्जकवय वइरपडिरूवग विउव्वित्ता ण चिट्ठइ, एव खलु दो इंदा सगामं सगामेंति, तजहा–देविंदे य मणुइदे य, एगहत्थिणावि ण पभू कूणिए राया पराजिणित्तए, तए ण से कूणिए राया महासिलाकटय सगामं सगामेमाणे नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो हयमहियपवरवीरघाइयवियडियचिंधद्धयप-डागे किच्छपाणगए दिसो दिसिं पडिसेहित्था ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ महा-सिलाकटए संगामे ?, गोयमा ! महासिलाकटए णं सगामे वट्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा पत्तेण वा कट्ठेण वा सक्कराए वा अभि-हम्मइ सव्वे से जाणइ महासिलाए अह अभिहए म० २, से तेणट्ठेणं गोयमा ! महासिलाकटए सगामे । महासिलाकटए ण भते ! सगामे वट्टमाणे कइ जणसय-साहस्सीओ वहियाओ ?, गोयमा ! चउरासीइ जणसयसाहस्सीओ वहियाओ । ते ण भंते ! मणुया निस्सीला जाव निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया सम-रवहिया अणुवसता कालमासे काल किच्चा कहिं गया कहिं उववन्ना ?, गोयमा !

तुरए मोएत्ता तुरए विसज्जेइ २ त्ता दब्भसंथारगं संथरइ २ त्ता [पुरत्था-
भिमुहे दुरुहइ दब्भसं ५] पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयल जाव कट्टु
एवं वयासी-नमोत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थु णं समणस्स भगवओ
महावीरस्स आइगरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स
वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए पासउ मे से भगवं तत्थगए जाव वंदइ नमंसइ २
एवं वयासी-पुव्विंपि णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए
पच्चक्खाए जावज्जीवाए एवं जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणिंपि णं
अहं तस्सेव अरिहंतस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि
जावज्जीवाए एवं जहा खंदओ जाव एयंपि णं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामित्ति-
कट्टु सन्नाहपट्टं मुयइ सन्नाहपट्टं मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ सल्लुद्धरणं करेत्ता आलोइय-
पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए, तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स
एगे पियबालवयंसए रहमुसलं संगामं संगामेमाणे एगेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए
समाणे अत्थामे अबले जाव अधारणिज्जमितिकट्टु वरुणं नागनत्तुयं रहमुसलाओ
संगामाओ पडिनिक्खममाणं पासइ पासित्ता तुरए निगिण्हइ तुरए निगिण्हित्ता जहा
वरुणे जाव तुरए विसज्जेइ पडिसंथारगं दुरूहइ पडिसंथारगं दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहे
जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी-जाइं णं मम पियबालवयंसस्स वरुणस्स
नागनत्तुयस्स सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणपोसहोववासाइं ताइं णं
ममंपि भवंतुत्तिकट्टु सन्नाहपट्टं मुयइ २ सल्लुद्धरणं करेइ सल्लुद्धरणं करेत्ता आणुपु-
व्वीए कालगए, तए णं तं वरुणं नागनत्तुयं कालगयं जाणित्ता अहासंनिहिएहिं
वाणमंतरेहिं देवेहिं दिव्वे सुरभिगंधोदगवासे वुट्ठे दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए दिव्वे
य गीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था, तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तं
दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभागं सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो
अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया! बहवे मणुस्सा
जाव उववत्तारो भवंति ॥ ३२० ॥ वरुणे णं भंते! नागनत्तुए कालमासे कालं
किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने? गोयमा! सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए
उववन्ने, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, तत्थ
णं वरुणस्सवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। से णं भंते! वरुणे देवे
ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे
सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ। वरुणस्स णं भंते! नागनत्तुयस्स पियबालवयं-
सए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने? गोयमा! सुकुले पच्चायाए।

ओगेण रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्तं अणुवट्टे(ट्टे)इ अट्ठमभत्तं अणुवट्टेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेह हयगयरहपवर जाव सन्नाहेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव उवट्ठावेंति हयगयरह जाव सन्नाहेंति २ जेणेव वरुणे नागनत्तुए जाव पच्चप्पिणंति, तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ जहा कूणिओ सव्वालंकारविभूसिए सन्नद्धबद्धे सकोरेंटमल्लदामेणं जाव धरिज्जमाणेणं अणेगगणनायग जाव दूयसंधिवालसद्धिं संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ २ हयगयरह जाव संपरिवुडे महया भडचडगर० जाव परिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता रहमुसलं संगामं ओयाए, तए णं से वरुणे णागणत्तुए रहमुसलं संगामं ओयाए समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ–कप्पइ मे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुव्विं पहणइ से पडिहणित्तए अवसेसे नो कप्पइ त्ति, अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ अभिगेण्हित्ता रहमुसलं संगामं संगामेइ, तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए सरिसत्तए सरिसव्वए सरिसभंडमत्तोवगरणे रहेणं पडिरहं हव्वमागए, तए णं से पुरिसे वरुणं णागणत्तुयं एवं वयासी–पहण भो वरुणा! णागणत्तुया! प० २, तए णं से वरुणे णागणत्तुए तं पुरिसं एवं वयासी–नो खलु मे कप्पइ देवाणुप्पिया! पुव्विं अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव णं पुव्विं पहणाहि, तए णं से पुरिसे वरुणेणं णागणत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ २ उसुं परामुसइ उसुं परामुसित्ता ठाणं ठाइ ठाणं ठिच्चा आययकण्णाययं उसुं करेइ आययकण्णाययं उसुं करेत्ता वरुणं णागणत्तुयं गाढप्पहारी करेइ, तए णं से वरुणे णागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ धणुं परामुसित्ता उसुं परामुसइ उसुं परामुसित्ता आययकण्णाययं उसुं करेइ आययकण्णाययं० २ तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ, तए णं से वरुणे णागणत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमितिकट्टु तुरए निगिण्हइ तुरए निगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ रहं परावत्तित्ता रहमुसलाओ संगामाओ पडिनिक्खमइ २ एगंतमंतं अवक्कमइ एगंतमंतं अवक्कमित्ता तुरए निगिण्हइ २ रहं ठवेइ २ त्ता रहाओ पच्चोरुहइ रहाओ २ रहाओ तुरए मोएइ

अत्थिति वयामो अम्हे णं देवाणुप्पिया ! सव्वं अत्थिभावं अत्थिति वयामो सव्वं नत्थिभावं नत्थिति वयामो तं चेयसा खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खहत्तिकट्टु ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-एवं २ जेणेव गुणसिलए उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे एवं जहा नियंठुद्देसए जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ भत्त-पाणं पडिदंसित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवन्ने यावि होत्था कालोदाई य तं देसं हव्वमागए, कालोदाईत्ति समणे भगवं महावीरे कालोदाइं एवं वयासी-से नूणं कालोदाई ! अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निविट्ठाणं तहेव जाव से कहमेयं मन्ने एवं ? से नूणं कालोदाई ! अत्थे समट्ठे ? हंता ! अत्थि तं सच्चे णं एसमट्ठे कालोदाई ! अहं पंचत्थिकायं पन्नवेमि तंजहा-धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिकाए अजी-वत्थिकाए अजीवत्ताए पन्नवेमि तहेव जाव एगं च णं अहं पोग्गलत्थिकायं रूविकायं पन्नवेमि तए णं से कालोदाई समणं भगवं महावीरं एवं वयासी एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि अधम्मत्थिकायंसि आगासत्थिकायंसि अरूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा १ सइत्तए वा २ चिट्ठइत्तए वा ३ निसीइत्तए वा ४ तुयट्टित्तए वा ५ ? णो तिणट्ठे कालोदाई ! एगंसि णं पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा एयंसि णं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पाव-कम्मफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? णो इणट्ठे समट्ठे कालोदाई ! एयंसि णं जीवत्थि-कायंसि अरूविकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावकम्मफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? हंता ! कज्जंति एत्थ णं से कालोदाई संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतियं धम्मं निसामेत्तए एवं जहा खंदए तहेव पव्वइए तहेव एक्कारस अंगाइं जाव विहरइ ॥ ३ ४ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नयराओ गुणसिलयाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ २ बहिया जणवयविहारं विहरइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे गुणसिलए नामं उज्जाणे होत्था तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ जाव समोसढे परिसा पडिगया तए णं से कालोदाई अणगारे अन्नया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमं-सइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी अत्थि णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफल-विवागसंजुत्ता कज्जंति ? हंता ! अत्थि । कहन्नं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावक-

से ण भंते ! तओहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?, गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अत करेहिइ । सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥ ३०२ ॥ **सत्तमस्स सयस्स णवमो उद्देसो समत्तो ॥**

तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे नाम नगरे होत्था वण्णओ, गुणसिलए उज्जाणे वण्णओ, जाव पुढविसिलापट्टए वण्णओ, तस्स ण गुणसिलयस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते वहवे अन्नउत्थिया परिवसंति, तजहा-कालोदाई सेलोदाई सेवालोदाई उदए नामुदए नमुदए अन्नवालए सेलवालए सखवालए सुहत्थी गाहावई, तए ण तेसिं अन्नउत्थियाण अन्नया कयाइ एगयओ समुवागयाण सन्निविट्ठाण सन्नि-सन्नाण अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-एव खलु समणे नाय-पुत्ते पच अत्थिकाए पन्नवेइ, तजहा-धम्मत्थिकाय जाव आगासत्थिकाय, तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पन्नवेइ, तंजहा-धम्मत्थिकाय अध-म्मत्थिकाय आगासत्थिकाय पोग्गलत्थिकाय, एग च ण समणे णायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकाय जीवकाय पन्नवेइ, तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूवि-काए पन्नवेइ, तजहा-धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवत्थिकाय, एग च ण समणे णायपुत्ते पोग्गलत्थिकाय रूविकाय अजीवकायं पन्नवेइ, से कहमेय मन्ने एव ?, तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव गुणसिलए उज्जाणे समोसढे जाव परिसा पडिगया, तेणं कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महा-वीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई णाम अणगारे गोयमगोत्तेण एव जहा विइयसए नियठुद्देसए जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्त भत्तपाण पडिगाहित्ता राय-गिहाओ जाव अतुरियमचवलमसभंत जाव रियं सोहेमाणे सोहेमाणे तेसिं अन्नउ-त्थियाण अदूरसामतेण वीइवयइ, तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयम अदूर-सामतेणं वीइवयमाण पासति पासेत्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति अन्नमन्न सद्दावेत्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह इमा कहा अविप्पकडा अय च ण गोयमे अम्ह अदूरसामतेण वीइवयइ तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह गोयम एयमट्ठ पुच्छित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छित्ता ते भगवं गोयम एव वयासी-एव खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाए पन्नवेइ, तजहा-धम्मत्थिकाय जाव आगासत्थिकाय, त चेव जाव रूविकाय अजीवकाय पन्नवेइ से कहमेय भंते ! गोयमा ! एव ?, तए ण से भगव गोयमे ते अन्नउत्थिए एव वयासी-नो खलु वय देवाणुप्पिया ! अत्थिभाव नत्थित्ति वयामो नत्थिभाव

लविवागसंजुत्ता कज्जंति ?, कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं विससमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे परि० दुरूवत्ताए दुग्गंधत्ताए जहा महासवए जाव भुज्जो २ परिणमइ, एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले तस्स णं आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणे २ दुरूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमइ, एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति। अत्थि णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?, हंता ! अत्थि, कहन्नं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जंति ?, कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं ओसहमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे २ सुरूवत्ताए सुवन्नत्ताए जाव सुहत्ताए नो दुक्खत्ताए भुज्जो २ परिणमइ, एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे तस्स णं आवाए नो भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणे २ सुरूवत्ताए जाव नो दुक्खत्ताए भुज्जो २ परिणमइ, एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जंति ॥ ३०५ ॥ दो भंते ! पुरिसा सरिसया जाव सरिसभंडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धिं अगणिकायं समारंभंति तत्थ णं एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ एगे पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, एएसि णं भंते ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महावेयणतराए चेव कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव, जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ जे वा से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ ?, कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव, तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-तत्थ णं जे से पुरिसे जाव अप्पवेयणतराए चेव ?, कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविकायं समारंभइ बहुतरागं आउकायं समारंभइ अप्पतरायं तेउकायं समारंभइ बहुतरागं वाउकायं समारंभइ बहुतरायं वणस्सइकायं समारंभइ बहुतरागं तसकायं समारंभइ, तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ से णं पुरिसे अप्पतरायं पुढविकायं समारंभइ अप्पतरागं आउकायं समारंभइ बहुतरागं तेउकायं समारंभइ अप्पतरागं वाउकायं समारंभइ अप्पतरागं वणस्सइकायं समारंभइ अप्पतरागं तसकायं समारंभइ,

तंजहा–चउप्पयथलयर० परिसप्पथलयर०, चउप्पयथलयर० पुच्छा, गोयमा ! दुविहा प०, तंजहा–समुच्छिमचउप्पयथलयर० गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयर०, एवं एएणं अभिलावेणं परिसप्प० दुविहा प०, तंजहा–उरपरिसप्प० य भुयपरिसप्प० य, उरपरिसप्प० दुविहा प०, तंजहा–समुच्छिम० य गब्भवक्कंतिय० य, एवं भुयपरिसप्प० वि, एवं खहयर० वि। मणुस्सपचिंदियपओग० पुच्छा, गोयमा ! दुविहा प०, तंजहा–समुच्छिममणुस्स० गब्भवक्कंतियमणुस्स०। देवपचिंदियपओग० पुच्छा, गोयमा ! चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा–भवणवासिदेवपचिंदियपओग० एवं जाव वेमाणिय०। भवणवासिदेवपचिंदिय० पुच्छा, गोयमा ! दसविहा प०, तंजहा–असुरकुमार० जाव थणियकुमार०, एवं एएणं अभिलावेणं अट्ठविहा वाणमंतर० पिसाय० जाव गंधव्व०, जोइसिय० पंचविहा प०, तंजहा–चंदविमाणजोइसिय० जाव ताराविमाणजोइसियदेव०, वेमाणिय० दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–कप्पोववन्न० कप्पाईयगवेमाणिय०, कप्पोववन्नग० दुवालसविहा पण्णत्ता, तंजहा–सोहम्मकप्पोववण्णग० जाव अच्चुयकप्पोववण्णगवेमाणिय०। कप्पाईय० दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–गेवेज्जकप्पातीयवे० अणुत्तरोववाइयकप्पाईयवे०, गेवेज्जकप्पातीयग० नवविहा पण्णत्ता, तंजहा–हेट्ठिम २ गेवेज्जगकप्पातीयग० जाव उवरिम २ गेविज्जगकप्पाईय०। अणुत्तरोववाइयकप्पाईयगवेमाणियदेवपचिंदियपओगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा प० ?, गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा–विजयअणुत्तरोववाइय जाव परिणया जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय० देवपचिंदियपओगपरिणया ॥ सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, [केइ अपज्जत्तगं पढमं भणंति पच्छा पज्जत्तगं] पज्जत्तगसुहुमपुढविकाइय जाव परिणया य अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणया य, बायरपुढविकाइयएगिंदिय० वि एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइय०, एक्केक्का दुविहा पोग्गला–सुहुमा य बायरा य, पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य भाणियव्वा। बेंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा, गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पज्जत्तगबेंदियपओगपरिणया य अपज्जत्तग जाव परिणया य, एवं तेइंदिय० वि एवं चउरिंदिय० वि। रयणप्पभापुढविनेरइय० पुच्छा, गोयमा ! दुविहा प०, तंजहा–पज्जत्तगरयणप्पभापुढवि जाव परिणया य अपज्जत्तग जाव परिणया य, एवं जाव अहेसत्तम०। समुच्छिमजलयरतिरिक्ख० पुच्छा, गोयमा ! दुविहा प०, तंजहा–पज्जत्तग० अपज्जत्तग०, एवं गब्भवक्कंतिय० वि, समुच्छिमचउप्पयथलयर० वि एवं चेव, एवं गब्भवक्कंतिय० वि, एवं जाव समुच्छिमखहयर० गब्भवक्कंतिय० य, एक्केक्के पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य भाणियव्वा। संमुच्छिममणुस्सपचिंदिय० पुच्छा, गोयमा ! एगविहा प०,

यव्व। जे अपज्जत्ता रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपओगपरिणया ते सोइंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियपओगपरिणया, एव पज्जत्तगावि, एवं सव्वे भाणियव्वा, तिरिक्खजोणिय० मणुस्स० देव० जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते सोइंदियचक्खिंदिय जाव परिणया ४ ॥ जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया ते फासिंदियपओगपरिणया जे पज्जत्ता सुहु० एव चेव, अपज्जत्तवायर० एवं चेव, एव पज्जत्तगावि, एव एएणं अभिलावेणं जस्स जइ इंदियाणि सरीराणि य ताणि भाणियव्वाणि जाव जे य पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया ते सोइंदियचक्खिंदिय जाव फासिंदियपओगपरिणया ५ ॥ जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि नील० लोहिय० हालिद्द० सुक्किल०, गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भिगंधपरिणयावि, रसओ तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणयावि कसायरसप० अंबिलरसप० महुररसप०, फासओ कक्खडफासपरि० जाव लुक्खफासपरि०, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणयावि वट्ट० तंस० चउरंस० आययसंठाणपरिणयावि, जे पज्जत्ता सुहुमपुढवि० एव चेव, एव जहाणुपुव्वीए नेयव्व जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि जाव आययसंठाणपरिणयावि ६ ॥ जे अपज्जत्ता सुहुमपुढवि० एगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरि० जाव आययसंठाणपरि०, जे पज्जत्ता सुहुमपुढवि० एव चेव, एव जहाणुपुव्वीए नेयव्व जस्स जइ सरीराणि जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय० देवपंचिंदियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि जाव आययसंठाणपरिणयावि ७ ॥ जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदियफासिंदियपओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि जाव आययसंठाणपरिणयावि, जे पज्जत्ता सुहुमपुढवि० एवं चेव, एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जइ इंदियाणि तस्स तत्तियाणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो० देवपंचिंदियसोइंदिय जाव फासिंदियपओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि जाव आययसंठाणपरिणयावि ८ ॥ जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरफासिंदियपओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि जाव आययसंठाणप०, जे पज्जत्ता सुहुमपुढवि० एव चेव, एव जहाणुपुव्वीए जस्स जइ सरीराणि इंदियाणि य तस्स तइ भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरसोइंदिय जाव फासिंदियपओगपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० जाव आययसंठा-

ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए एवं जाव पंचिंदियओरालिय जाव परि० ?, गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए वा बेंदिय जाव परिणए वा जाव पंचिंदिय जाव परिणए वा, जइ एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं पुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए ?, गोयमा ! पुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा, जइ पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीर जाव परिणए किं सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए बायरपुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ?, गोयमा ! सुहुमपुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए वा बायरपुढविक्काइय जाव परिणए वा, जइ सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए किं पज्जत्तसुहुमपुढवि जाव परिणए अपज्जत्तसुहुमपुढवि जाव परिणए ?, गोयमा ! पज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा, एवं बायरावि, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेओ, बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं दुयओ भेओ पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । जइ पंचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ?, गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए वा, जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए, किं जलयरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए थलयरखहयर० ? एव चउक्कओ भेओ जाव खहयराणं । जइ मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए किं समुच्छिममणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ?, गोयमा ! दोसुवि, जइ गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए किं पज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए अपज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए ?, गोयमा ! पज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा अपज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा १ । जइ ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए बेइंदिय जाव परिणए जाव पंचेंदियओरालिय जाव परिणए ?, गोयमा ! एगिंदियओरालिय जाव परिणए एव जहा ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणएणं आलावगो भणिओ तहा ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणएवि आलावगो भाणियव्वो, नवरं बायरवाउक्काइयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं एएसि णं पज्जत्तापज्जत्तगाणं सेसाणं अपज्जत्तगाणं २ । जइ वेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए जाव पंचिंदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ?, गोयमा ! एगिंदिय जाव परिणए वा पंचिंदिय जाव परिणए वा, जइ एगिंदिय

रसपरिणए वा, जइ फासपरिणए किं कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ?, गोयमा! कक्खडफासपरिणए वा जाव लुक्खफासपरिणए वा, जइ संठाणपरिणए पुच्छा, गोयमा! परिमंडलसंठाणपरिणए वा जाव आययसंठाणपरिणए वा ॥३१७॥ दो भंते! दव्वा किं पओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया ?, गोयमा! पओगपरिणया वा १ मीसापरिणया वा २ वीससापरिणया वा ३ अहवा एगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए ४ अहवेगे पओगप० एगे वीससापरि० ५ अहवा एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए एवं ६। जइ पओगपरिणया किं मणप्पओगपरिणया वइप्पओग० कायप्पओगपरिणया ?, गोयमा! मणप्पओ० वइप्पओगप० कायप्पओगपरिणया वा अहवेगे मणप्पओगप० एगे वइप्पओगप०, अहवेगे मणप्पओगपरिणए एगे कायप०, अहवेगे वइप्पओगप० एगे कायप्पओगपरि०, जइ मणप्पओगप० किं सच्चमणप्पओगप०४ ?, गोयमा! सच्चमणप्पओगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणप्पओगप० वा,१ अहवा एगे सच्चमणप्पओगपरिणए एगे मोसमणप्पओगपरिणए १ अहवा एगे सच्चमणप्पओगप० एगे सच्चामोसमणप्पओगपरिणए २ अहवा एगे सच्चमणप्पओगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्पओगपरिणए ३ अहवा एगे मोसमणप्पओगप० एगे सच्चामोसमणप्पओगप० ४ अहवा एगे मोसमणप्पओगप० एगे असच्चामोसमणप्पओगप० ५ अहवा एगे सच्चामोसमणप्पओगप० एगे असच्चामोसमणप्पओगप० ६। जइ सच्चमणप्पओगप० किं आरंभसच्चमणप्पओगपरिणया जाव असमारंभसच्चमणप्पओगप० ?, गोयमा! आरंभसच्चमणप्पओगपरिणया वा जाव असमारंभसच्चमणप्पओगपरिणया वा, अहवा एगे आरंभसच्चमणप्पओगप० एगे अणारंभसच्चमणप्पओगप० एवं एएणं गमएणं दुयसंजोएणं नेयव्वं, सव्वे संजोगा जत्थ जत्तिया उट्ठेंति ते भाणियव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धगत्ति। जइ मीसाप० किं मणमीसापरि०? एवं मीसापरि० वि। जइ वीससापरिणया किं वन्नपरिणया गंधप० ? एवं वीससापरिणयावि जाव अहवा एगे चउरंससंठाणपरि० एगे आययसंठाणपरिणए वा ॥ तिन्नि भंते! दव्वा किं पओगपरिणया मीसाप० वीससाप० ?, गोयमा! पओगपरिणया वा मीसापरिणया वा वीससापरिणया वा। अहवा एगे पओगपरिणए दो मीसाप० १ अहवेगे पओगपरिणए दो वीससाप० २ अहवा दो पओगपरिणया एगे मीससापरिणए ३ अहवा दो पओगप० एगे वीससाप० ४ अहवा एगे मीसापरिणए दो वीससाप० ५ अहवा दो मीससाप० एगे वीससाप० ६ अहवा एगे पओगप० एगे मीसापरि० एगे वीससाप० ७। जइ पओगप० किं मणप्पओगपरिणया वइप्पओगप० कायप्पओगप० ?, गोयमा! मणप्पओगपरिणया वा एवं एक्कगसंजोगो दुयासंजोगो तियासंजोगो भाणि-

सपत्तीए करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा १, मडुक्कजाइआसीविसपुच्छा, गोयमा ! पभू ण मडुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं वोंदिं विसेणं विसपरिगयं सेस तं चेव जाव करेस्सति वा २, एवं उरगजाइआसीविसस्सवि नवरं जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं वोंदिं विसेणं विसपरिगय सेस त चेव जाव करेस्सति वा ३, मणुस्सजाइआसीविसस्सवि एव चेव नवरं समयखेत्तप्पमाणमेत्त वोंदिं विसेणं विसपरिगय सेस तं चेव जाव करेस्सति वा ४ । जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे मणुस्सकम्मआसीविसे देवकम्मासीविसे ?, गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे तिरिक्खजोणियकम्मासीविसेवि मणुस्सकम्मा० देवकम्मासी०, जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव पचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?, गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव नो चउरिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, पचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं समुच्छिमपचेंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?, एवं जहा वेउव्वियसरीरस्स भेओ जाव पज्जत्तासखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव कम्मासीविसे । जइ मणुस्सकम्मासीविसे किं संमुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे ?, गोयमा ! णो समुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे एवं जहा वेउव्वियसरीरं जाव पज्जत्तासखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणूसकम्मासीविसे नो अपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे । जइ देवकम्मासीविसे कि भवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव वेमाणियदेवकम्मासीविसे ?, गोयमा ! भवणवासिदेवकम्मासीविसेवि वाणमतर० जोइसिय० वेमाणियदेवकम्मासीविसेवि, जइ भवणवासिदेवकम्मासीविसे किं असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव थणियकुमार जाव कम्मासीविसे ?, गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसेवि जाव थणियकुमार० आसीविसेवि, जइ असुरकुमार जाव कम्मासीविसे किं पज्जत्तअसुरकुमार जाव कम्मासीविसे अपज्जत्तअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ? गोयमा ! नो पज्जत्तअसुरकुमार जाव कम्मासीविसे अपज्जत्तअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे, एव थणियकुमाराण, जइ वाणमंतरदेवकम्मासीविसे किं पिसायवाणमंतर० एव सव्वेसिंपि अपजत्तगाण, जोइसियाणं सव्वेसिं अपज्जत्तगाण, जइ वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोववण्णगवेमाणियदेवकम्मासीविसे कप्पाईयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ?, गोयमा ! कप्पोववण्णगवेमाणियदेवकम्मासीविसे नो कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे, जइ कप्पोववण्णगवे-

जाव वणस्सइकाइया नो नाणी अन्नाणी नियमा दुअन्नाणी तंजहा-मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य तसकाइया जहा सकाइया। अकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? जहा सिद्धा ३ ॥ सुहुमा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? जहा पुढविकाइया। बायरा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? जहा सकाइया। नोसुहुमानोबायरा णं भंते ! जीवा जहा सिद्धा ४ ॥ पज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी ? जहा सकाइया। पज्जत्ता णं भंते ! नेरइया किं नाणी ? तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा नियमा जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइया जहा एगिंदिया एवं जाव चउरिंदिया। पज्जत्ता णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नाणी अन्नाणी ? तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा भयणाए। मणुस्सा जहा सकाइया। वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया जहा नेरइया। अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी ? तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा भयणाए। अपज्जत्ता णं भंते ! नेरइया किं नाणी अन्नाणी ? तिन्नि नाणा नियमा तिन्नि अन्नाणा भयणाए, एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिंदिया। बेइंदियाणं पुच्छा दो नाणा दो अन्नाणा नियमा एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं। अपज्जत्तगा णं भंते ! मणुस्सा किं नाणी अन्नाणी ? तिन्नि नाणाइं भयणाए दो अन्नाणाइं नियमा वाणमंतरा जहा नेरइया, अपज्जत्तगा जोइसियवेमाणियाणं तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा नियमा। नोपज्जत्तगनोअपज्जत्तगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? जहा सिद्धा ५ ॥ निरयभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? जहा निरयगइया। तिरियभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा भयणाए। मणुस्सभवत्था णं जहा सकाइया। देवभवत्था णं भंते ! जहा निरयभवत्था। अभवत्था जहा सिद्धा ६ ॥ भवसिद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? जहा सकाइया, अभवसिद्धियाणं पुच्छा गोयमा ! नो नाणी अन्नाणी तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। नो भवसिद्धियानोअभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा जहा सिद्धा ७ ॥ सन्नीणं पुच्छा जहा सइंदिया असन्नी जहा बेइंदिया नोसन्नीनोअसन्नी जहा सिद्धा ८ ॥ ११८ ॥ कइविहा णं भंते ! लद्धी पन्नत्ता ? गोयमा ! दसविहा लद्धी प० तंजहा-नाणलद्धी १ दंसणलद्धी २ चरित्तलद्धी ३ चरित्ताचरित्तलद्धी ४ दाणलद्धी ५ लाभलद्धी ६ भोगलद्धी ७ उवभोगलद्धी ८ वीरियलद्धी ९ इंदियलद्धी १० । णाणलद्धी णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! पंचविहा प० तंजहा-आभिणिबोहियणाणलद्धी जाव केवलणाणलद्धी ॥ अन्नाणलद्धी णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प० तंजहा-मइअन्नाणलद्धी सुयअन्नाणलद्धी विभंगनाणलद्धी ॥ दंसणलद्धी णं भंते !

वोहियनाणी य सुयनाणी य, जे तिन्नाणी ते आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी अहवा आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी मणपज्जवनाणी, जे चउनाणी ते आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी मणपज्जवनाणी, जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी, जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी अत्थेगइया तिअन्नाणी, जे दुअन्नाणी ते मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य, जे तियअन्नाणी ते मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगनाणी । नेरइया णं भंते ! किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते नियमा तिन्नाणी, तंजहा-आभिणिवोहि० सुयनाणी ओहिनाणी, जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी अत्थेगइया तिअन्नाणी, एवं तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए । असुरकुमारा णं भंते ! किं नाणी अन्नाणी ?, जहेव नेरइया तहेव तिन्नि नाणाणि नियमा, तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविक्काइया णं भंते ! किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नो नाणी अन्नाणी, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी-मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य, एवं जाव वणस्सइकाइया । वेइंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते नियमा दुन्नाणी, तंजहा-आभिणिवोहियनाणी य सुयनाणी य, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी तं० आभिणिवोहियअन्नाणी सुयअन्नाणी, एवं तेइंदियचउरिंदियावि, पंचिंदियतिरिक्खजो० पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते अत्थे० दुन्नाणी अत्थे० तिन्नाणी एवं तिन्नि नाणाणि तिन्नि अन्नाणाणि य भयणाए । मणुस्सा जहा जीवा तहेव पंच नाणाणि तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए । वाणमंतरा जहा ने०, जोइसियवेमाणियाणं तिन्नि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं नियमा । सिद्धा णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! णाणी नो अन्नाणी, नियमा एगनाणी केवलनाणी ॥ ३१७ ॥ निरयगइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, तिन्नि नाणाइं नियमा तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । तिरियगइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! दो नाणाइं दो अन्नाणाइं नियमा । मणुस्सगइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! तिन्नि नाणाइं भयणाए दो अन्नाणाइं नियमा, देवगइया जहा निरयगइया । सिद्धगइया णं भंते ! जहा सिद्धा ॥ सइंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एगिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ?, जहा पुढविकाइया, वेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं दो नाणाइं दो अन्नाणाइं नियमा । पंचिंदिया जहा सइंदिया । अणिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ?, जहा सिद्धा ॥ सकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! पंच नाणाणि तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । पुढविकाइया

अन्नाणी पंच नाणाइं भयणाए जहा अन्नाणस्स लद्धिया अलद्धिया य भणिया एवं मइअन्नाणस्स सुयअन्नाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा । विभंगनाणलद्धियाणं तिन्नि अन्नाणाइं नियमा तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए दो अन्नाणाइं नियमा ॥ दंसणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! तस्स अलद्धिया नत्थि । सम्मद्दंसणलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, मिच्छादंसणलद्धिया णं भंते ! पुच्छा जो नाणी अन्नाणी तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए, सम्मामिच्छादंसणलद्धिया अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धिया अलद्धिया तहेव भाणियव्वा ॥ चरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नाणी नो अन्नाणी पंच नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए, सामाइयचरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नाणी केवलवज्जाइं चत्तारि नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए, एवं जहा सामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धिया य भणिया एवं जाव अहक्खायचरित्तलद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा, नवरं अहक्खायचरित्तलद्धियाणं पंच नाणाइं भ चरित्ताचरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणी नो अन्नाणी अत्थेगइया दुन्नाणी अत्थेगइया तिन्नाणी जे दुन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य जे तिन्नाणी ते आभि सुयनाणी ओहिनाणी तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ४ ॥ दाणलद्धियाणं पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, तस्स अ पुच्छा गोयमा ! नाणी नो अन्नाणी नियमा एगनाणी केवलनाणी । एवं जाव वीरियलद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा ॥ बालवीरियलद्धियाणं तिन्नि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए । पंडियवीरियलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं अन्नाणाणि तिन्नि य भयणाए । बालपंडियवीरियलद्धिया णं भंते ! जीवा तिन्नि नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ॥ इंदियलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! चत्तारि नाणाइं तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पुच्छा गोयमा ! नाणी नो अन्नाणी नियमा एगनाणी केवलनाणी सोइंदियलद्धियाणं जहा इंदियलद्धिया तस्स अलद्धियाणं पुच्छा गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि जे नाणी ते अत्थे-

कइविहा प० ?, गोयमा ! तिविहा प०, तंजहा–सम्मदंसणलद्धी मिच्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छादंसणलद्धी ॥ चरित्तलद्धी णं भंते ! कइविहा प०?, गोयमा ! पंचविहा प०, तंजहा–सामाइयचरित्तलद्धी छेदोवट्ठावणियलद्धी परिहारविसुद्धचरित्तलद्धी सुहुमसंपरायचरित्तलद्धी अहक्खायचरित्तलद्धी ॥ चरित्ताचरित्तलद्धी णं भंते ! कइविहा प०?, गोयमा ! एगागारा प०, एवं जाव उवभोगलद्धी एगागारा प० ॥ वीरियलद्धी णं भंते ! कइविहा प० ?, गोयमा ! तिविहा प०, तंजहा–बालवीरियलद्धी पंडियवीरियलद्धी बालपंडियवीरियलद्धी । इंदियलद्धी णं भंते ! कइविहा प० ?, गोयमा ! पंचविहा प०, तंजहा–सोइंदियलद्धी-जाव फासिंदियलद्धी ॥ नाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणी नो अन्नाणी, अत्थेगइया दुन्नाणी, एवं पंच नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नो नाणी अन्नाणी, अत्थेगइया दुअन्नाणी तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए । आभिणिबोहियणाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणी नो अन्नाणी, अत्थेगइया दुन्नाणी तिनाणी, चत्तारि नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते नियमा एगनाणी केवलनाणी, जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एवं सुयनाणलद्धियावि, तस्स अलद्धियावि जहा आभिणिबोहियनाणस्स लद्धिया । ओहिनाणलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! नाणी नो अन्नाणी, अत्थेगइया तिन्नाणी अत्थेगइया चउनाणी, जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी, जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुय० ओहि० मणपज्जवनाणी । तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी०?, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि । एवं ओहिनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । मणपज्जवनाणलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! णाणी णो अन्नाणी, अत्थेगइया तिन्नाणी अत्थेगइया चउनाणी, जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयणाणी मणपज्जवणाणी, जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी मणपज्जवनाणी, तस्स अलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि, मणपज्जवणाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । केवलनाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणी नो अन्नाणी, नियमा एगणाणी केवलनाणी, तस्स अलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, केवलनाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ॥ अन्नाणलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! नो नाणी अन्नाणी, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! नाणी नो

गइया दुन्नाणी अत्थेगइया एगणाणी जे दुन्नाणी ते आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी, जे एगनाणी ते केवलनाणी, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी, तजहा-मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य, चक्खिदियघाणिंदियलद्धियाणं अलद्धियाण य जहेव सोइंदियलद्धिया अलद्धिया य, जिब्भिदियलद्धियाण चत्तारि णाणाइ तिन्नि य अन्नाणाणि भयणाए, तस्स अलद्धियाण पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते नियमा एगनाणी केवलनाणी, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी, तजहा-मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य, फासिंदियलद्धियाण अलद्धियाण जहा इदियलद्धिया य अलद्धिया य ॥ ३१९ ॥ सागारोवउत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? पंच नाणाइ तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए ॥ आभिणिवोहियनाणसागारोवउत्ता णं भंते ! चत्तारि णाणाइ भयणाए। एवं सुयनाणसागारोवउत्तावि । ओहिनाणसागारोवउत्ता जहा ओहिनाणलद्धिया, मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणलद्धिया, केवलनाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया, मइअन्नाणसागारोवउत्ताण तिन्नि अन्नाणाई भयणाए, एवं सुयअन्नाणसागारोवउत्तावि, विभंगनाणसागारोवउत्ताण तिन्नि अन्नाणाई नियमा ॥ अणागारोवउत्ता ण भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? पंच नाणाई तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए । एव चक्खुदसणअचक्खुदसणअणागारोवउत्तावि, नवरं चत्तारि णाणाई तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए, ओहिदंसणअणागारोवउत्ताण पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते अत्थेगइया तिन्नाणी अत्थेगइया चउनाणी, जे तिन्नाणी ते आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी, जे चउणाणी ते आभिणिवोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी, जे अन्नाणी ते नियमा तिअन्नाणी, तजहा-मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभगनाणी, केवलदसणअणागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया ॥ सजोगी ण भंते ! जीवा किं नाणी० ? जहा सकाइया, एव मणजोगी वइजोगी कायजोगीवि, अजोगी जहा सिद्धा ॥ सलेस्सा ण भंते ! जीवा किं णाणी० ? जहा सकाइया, कण्हलेस्सा ण भंते ! जहा सकाइया सइंदिया, एवं जाव पम्हलेसा, सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा, अलेस्सा जहा सिद्धा ॥ सकसाई णं भंते ! जहा सइंदिया, एव जाव लोहकसाई, अकसाई णं भंते !०? पंच नाणाई भयणाए ॥ सवेयगा ण भंते ! जहा सइंदिया, एवं इत्थिवेयगावि, एव पुरिसवेयगावि, एव नपुसगवे०, अवेयगा जहा अकसाई ॥ आहारगा णं भंते ! जीवा०? जहा सकसाई, नवरं केवलनाणपि, अणाहारगा ण भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? मणपज्जवनाणवज्जाइ नाणाइ अन्नाणाणि य तिन्नि भयणाए ॥ ३२० ॥ आभिणिवोहियनाणस्स णं भंते ! केवइए विसए पन्नत्ते ? गोयमा ! से समासओ चउव्विहे प०, तंजहा-दव्वओ खेत्तओ

सुयनाणपज्जवा प० ? एवं चेव एव जाव केवलनाणस्स । एव- मइअन्नाणस्स सुय-अन्नाणस्स, केवइया ण भंते ! विभंगनाणपज्जवा प० ? गोयमा ! अणंता विभग-नाणपज्जवा प०, एएसि ण भंते ! आभिणिवोहियनाणपज्जवाणं सुयनाण० ओहि-नाण० मणपज्जवनाण० केवलनाणपज्जवाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा ओहिनाणपज्जवा अणतगुणा सुयनाणप-ज्जवा अणतगुणा आभिणिवोहियनाणपज्जवा अणंतगुणा केवलणाणपज्जवा अणत-गुणा ॥ एएसि ण भंते ! मइअन्नाणपज्जवाणं सुयअन्नाण० विभगनाणपज्जवाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा सुयअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा मइअन्नाणपज्जवा अणतगुणा ॥ एएसि णं भंते ! आभिणिवोहि-यणाणपज्जवाण जाव केवलनाणप० मइअन्नाणप० सुयअन्नाणप० विभंगनाणप० कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा विभग-नाणपज्जवा अणंतगुणा ओहिणाणपज्जवा अणंतगुणा सुयअन्नाणपज्जवा अणतगुणा सुयनाणपज्जवा विसेसाहिया मइअन्नाणपज्जवा अणतगुणा आभिणिवोहियनाणपज्जवा विसेसाहिया केवलणाणपजवा अणतगुणा । सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥ ३२२ ॥

अट्ठमस्स सयस्स विइओ उद्देसो समत्तो ॥

कइविहा ण भंते ! रुक्खा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा रुक्खा प०, तंजहा-सखेज्जजीविया असखेज्जजीविया अणंतजीविया । से किं त सखेज्जजीविया ? सखेज्ज० अणेगविहा प०, तजहा-ताले तमाले तक्कलि तेतलि जहा पन्नवणाए जाव नालि-एरी, जे यावन्ने तहप्पगारा, सेत्त सखेजजीविया । से किं त असखेज्जजीविया ? असखेज्जजीविया दुविहा प०, तंजहा-एगट्ठिया य वहुबीयगा य । से किं त एग-ट्ठिया ? २ अणेगविहा प०, तजहा-निंबवजंवू० एवं जहा पन्नवणापए जाव फला वहुबीयगा, सेत्तं वहुबीयगा, सेत्त असखेज्जजीविया । से किं त अणतजीविया ? अणतजीविया अणेगविहा प०, तजहा-आलुए मूलए सिंगवेरे, एव जहा सत्तमसए जाव सीउण्हे सिउढी मुसुढी, जे यावन्ने त०, सेत्तं अणतजीविया ॥ ३२३ ॥ अह भंते ! कुम्मे कुम्मावलिया गोहे गोहावलिया गोणे गोणावलिया मणुस्से मणुस्सा-वलिया महिसे महिसावलिया एएसि णं दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिन्नाणं जे अतरा तेवि ण तेहिं जीवपएसेहिं फुडा ? हता ! फुडा । पुरिसे णं भंते ! (ज अंतरं) ते अतरे हत्थेण वा पाएण वा अगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा कलिंचेण वा आमुसमाणे वा समुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा अन्नयरेण वा तिक्खेणं सत्थजाएण आच्छिंदमाणे वा विच्छिंदमाणे वा अगणिकाएणं वा समोड-

कायसा कायसा ४ एवमिते एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा ४१ अहवा न करेइ वयसा ४२ अहवा न करेइ कायसा ४३, अहवा न कारवेइ मणसा ४४ अहवा न कारवेइ वयसा ४५, अहवा न कारवेइ कायसा ४६, अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा ४७ अहवा करेंतं नाणुजाणइ वयसा ४८ अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा ४९। पडुप्पन्नं संवरेमाणे किं तिविहं तिविहेणं संवरेइ? एवं जहा पडिक्कममाणेणं एगूणपन्नं भंगा भणिया एवं संवरमाणेणवि एगूणपन्नं भंगा भाणियव्वा। अणागयं पच्चक्खमाणे किं तिविहं तिविहेणं पच्चक्खाइ? एवं ते चेव भंगा एगूणपन्नं भाणियव्वा जाव अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा ॥ समणोवासयस्स णं भंते! पुव्वामेव थूलए मुसावाए अपच्चक्खाए भवइ से णं भंते! पच्छा पच्चाइक्खमाणे एवं जहा पाणाइवायस्स सीयालं भंगसयं भणियं तहा मुसावायस्सवि भाणियव्वं। एवं अदिन्नादाणस्सवि एवं थूलगस्स मेहुणस्सवि थूलगस्स परिग्गहस्सवि जाव अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा ॥ एए खलु एरिसगा समणोवासगा भवंति नो खलु एरिसगा आजीवियोवासगा भवंति ॥ ३३८ ॥ आजीवियसमयस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते अक्खीणपडिभोइणो सव्वे सत्ता से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता विलुंपित्ता उद्दवइत्ता आहारमाहारेंति तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति तंजहा–ताले १ तालपलंबे २ उव्विहे, ३ संविहे, ४ अवविहे, ५ उदए, ६ नामुदए, ७ णमुदए, ८ अणुवालए, ९ संखवालए, १० अयंपुले ११ कायरिए, १२ इच्चेए दुवालस आजीवियोवासगा अरिहंतदेवयागा अम्मापिउसुस्सूसगा पंचफल-पडिक्कंता तंजहा उंबरेहिं, वडेहिं, बोरेहिं, सतरेहिं, पिलंखूहिं, पलंडुल्हस(ण)कंद-मूलविवज्जगा अणिल्लंछिएहिं अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाणविवज्जिएहिं चि(वि)त्तेहिं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति एएवि ताव एवं इच्छंति, किमंग पुण जे इमे समणोवासगा भवंति जेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं सयं करेत्तए वा कारवेत्तए वा करेंतं वा अन्नं समणुजाणेत्तए तंजहा–इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे जंतपीलणकम्मे निल्लंछणकम्मे दवग्गिदावणया सरदहतलायपरिसोसणया असई-पोसणया इच्चेए समणोवासगा सुक्का सुक्काभिजाइया भवित्ता भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥ ३३ ॥ कइविहा णं भंते! [देवा] देवलोगा पण्णत्ता? गोयमा! चउव्विहा देवलोगा प० तंजहा–भवणवासिवाणमंतरजोइसवेमाणिया सेवं भंते! २ त्ति ॥ ३३ ॥ अट्ठमसयस्स पंचमो उद्देसो समत्तो ॥

मइ पडुप्पन्न सवरेइ अणागय पच्चक्खाइ ॥ तीय पडिक्कममाणे किं तिविहं तिविहेणं पडिक्कमइ १ तिविहं दुविहेण पडिक्कमइ २ तिविहं एगविहेण पडिक्कमइ ३ दुविहं तिविहेण पडिक्कमइ ४ दुविहं दुविहेण पडिक्कमइ ५ दुविहं एगविहेणं पडिक्कमइ ६ एक्कविहं तिविहेणं पडिक्कमइ ७ एक्कविहं दुविहेणं पडिक्कमइ ८ एक्कविहं एगविहेणं पडिक्कमइ ९? गोयमा! तिविहं तिविहेण पडिक्कमइ तिविहं दुविहेण वा पडिक्कमइ त चेव जाव एक्कविहं वा एक्कविहेण पडिक्कमइ, तिविहं तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ न कारवेइ करेंतं णाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १, तिविहं दुविहेण पडि० न क० न का० करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा २, अहवा न करेइ न का० करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ३, अहवा न करेइ ३ वयसा कायसा ४, तिविहं एगविहेण पडि० न करेइ ३ मणसा ५, अहवा न करेइ ३ वयसा ६, अहवा न करेइ ३ कायसा ७, दुविहं ति० प० न करेइ न का० मणसा वयसा कायसा ८, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ९, अहवा न कारवेइ करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १०, दु० दु० प० न क० न का० म० व० ११, अहवा न क० न का० म० कायसा १२, अहवा न क० न का० वयसा कायसा १३, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १४, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १५, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा १६, अहवा न कारवेइ करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १७, अहवा न कारवेइ करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १८, अहवा न कारवेइ करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा १९, दुविहं एक्कविहेण पडिक्कममाणे न करेइ न कारवेइ मणसा २०, अहवा न करेइ न कारवेइ वयसा २१, अहवा न करेइ न कारवेइ कायसा २२, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणइ मणसा २३, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणइ वयसा २४, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणइ कायसा २५, अहवा न कारवेइ करेंतं नाणुजाणइ मणसा २६, अहवा न कारवेइ करेंतं नाणुजाणइ वयसा २७, अहवा न कारवेइ करेंतं नाणुजाणइ कायसा २८, एगविहं तिविहेण पडि० न करेइ मणसा वयसा कायसा २९, अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ३०, अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा ३।३१, एक्कविहं दुविहेण पडिक्कममाणे न करेइ मणसा वयसा ३२, अहवा न करेइ मणसा कायसा ३३, अहवा न करेइ वयसा कायसा ३४, अहवा न कारवेइ मणसा वयसा ३५, अहवा न कारवेइ मणसा कायसा ३६, अहवा न कारवेइ वयसा कायसा ३७, अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा ३८, अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ३९, अहवा करेंतं नाणुजाणइ

हए १। से य संपट्ठिए असंपत्ते अप्पणा य पुव्वामेव अमुहे सिया से णं भंते! किं आराहए विराहए? गोयमा! आराहए नो विराहए २ से य संपट्ठिए असंपत्ते थेरा य कालं करेज्जा से णं भंते! किं आराहए विराहए? गोयमा! आराहए नो विराहए ३, से य संपट्ठिए असंपत्ते अप्पणा य पुव्वामेव कालं करेज्जा से णं भंते! किं आराहए विराहए? गोयमा! आराहए नो विराहए ४ से य संपट्ठिए संपत्ते थेरा य अमुहा सिया से णं भंते! किं आराहए विराहए? गोयमा! आराहए नो विराहए, से य संपट्ठिए संपत्ते अप्पणा य एवं संपत्तेणवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहेव असंपत्तेणं। निग्गंथेण य बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंतेणं अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए तस्स णं एवं भवइ-इहेव ताव अहं एवं एत्थवि एए चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए। निग्गंथेण य गामाणुगामं दूइज्जमाणेणं अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए तस्स णं एवं भवइ इहेव ताव अहं एत्थवि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए॥ निग्गंथीए य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठाए अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए तीसे णं एवं भवइ इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्मं पडिवज्जामि तओ पच्छा पवत्तिणीए अंतियं आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि सा य संपट्ठिया असंपत्ता पवत्तिणी य अमुहा सिया सा णं भंते! किं आराहिया विराहिया? गोयमा! आराहिया नो विराहिया सा य संपट्ठिया जहा निग्गंथस्स तिण्णि गमा भणिया एवं निग्गंथीएवि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया नो विराहिया॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-आराहए नो विराहए? गोयमा! से जहा नामए-केइ पुरिसे एगं महं उण्णालोमं वा गयलोमं वा सणलोमं वा कप्पासलोमं वा तणसूयं वा दुहा वा तिहा वा संखेज्जहा वा छिंदित्ता अगणिकायंसि पक्खिवेज्जा से नूणं गोयमा! छिज्जमाणे छिन्ने पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते दज्झमाणे दड्ढेत्ति वत्तव्वं सिया? हंता भगवं! छिज्जमाणे छिन्ने जाव दड्ढेत्ति वत्तव्वं सिया से जहा वा केइ पुरिसे वत्थं अहयं वा धोयं वा तंतुग्गयं वा मंजिट्ठादोणीए पक्खिवेज्जा से नूणं गोयमा! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते रज्जमाणे रत्तेत्ति वत्तव्वं सिया? हंता भगवं! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते जाव रत्तेत्ति वत्तव्वं सिया से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-आराहए नो विराहए॥ १११॥ पईवस्स णं भंते! झियायमाणस्स किं पईवे झियाइ लट्ठी झियाइ वत्ती झियाइ तेल्ले झियाइ पईवचंपए झियाइ जोई झियाइ? गोयमा! नो पईवे झियाइ जाव नो पईवचंपए झियाइ, जोई झियाइ॥ अगारस्स णं भंते! झियाय

समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ? गोयमा ! एगंतसो निज्जरा कज्जइ नत्थि य से पावे कम्मे कज्जइ। समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाण जाव पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ? गोयमा ! बहुतरिया से निज्जरा कज्जइ अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ। समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं असंजयअविरयअपडिहयअपच्चक्खायपावकम्मं फासुएण वा अफासुएण वा एसणिज्जेण वा अणेसणिज्जेण वा असणपाण जाव किं कज्जइ ? गोयमा ! एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ नत्थि से काइ निज्जरा कज्जइ, [मोक्खत्थं जं दाणं, तं पइ एसो विही समक्खाओ। अणुकंपादाणं पुण, जिणेहिं न कयाइ पडिसिद्धं] ॥ ३३१ ॥ निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ दोहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा–एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि एगं थेराणं दलयाहि, से य तं पिण्डं पडिग्गाहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पणा भुंजेज्जा नो अन्नेसिं दावए एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता परिट्ठावेयव्वे सिया। निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ तिहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा–एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि दो थेराणं दलयाहि, से य तं पडिग्गाहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसेयव्वा सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वे सिया, एवं जाव दसहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा नवरं एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि नव थेराणं दलयाहि, सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वे सिया। निग्गंथं च णं गाहावइकुलं जाव केइ दोहिं पडिग्गहेहिं उवनिमंतेज्जा एगं आउसो ! अप्पणा पडिभुंजाहि एगं थेराणं दलयाहि, से य तं पडिग्गाहेज्जा, तहेव जाव तं नो अप्पणा पडिभुंजेज्जा नो अन्नेसिं दावए सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वे सिया, एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं, एवं जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया एवं गोच्छगरयहरणचोलपट्टगकंबललट्ठिसंथारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहिं संथारएहिं उवनिमंतेज्जा जाव परिट्ठावेयव्वे सिया ॥ ३३२ ॥ निग्गंथेण य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेणं अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवइ–इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि विउट्टामि विसोहेमि अकरणयाए अब्भुट्ठेमि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि, तओ पच्छा थेराणं अंतियं आलोएस्सामि जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि, से य संपट्ठिए असंपत्ते थेरा य पुव्वामेव अमुहा सिया से णं भंते ! किं आराहए विराहए ? गोयमा ! आराहए नो विरा-

समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। तए णं ते अन्नउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति २ त्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुब्भे णं अज्जो! तिविहं तिविहेणं असंजयअविरयअप्पडिहय जहा सत्तमसए बिइए उद्देसए जाव एगंतबाला यावि भवह। तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं असंजयअविरय जाव एगंतबाला यावि भवामो? तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुब्भे णं अज्जो! अदिन्नं गेण्हह अदिन्नं भुंजह अदिन्नं साइज्जह, तए णं ते तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा अदिन्नं भुंजमाणा अदिन्नं साइज्जमाणा तिविहं तिविहेणं असंजयअविरय जाव एगंतबाला यावि भवह, तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो अदिन्नं भुंजामो अदिन्नं साइज्जामो जएणं अम्हे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव अदिन्नं साइज्जमाणा तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंतबाला यावि भवामो? तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुम्हे णं अज्जो! दिज्जमाणे अदिन्ने पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गहिए निसिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे, तुब्भे णं अज्जो! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरिज्जा गाहावइस्स णं तं भंते! नो खलु तं तुब्भं, तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हह जाव अदिन्नं साइज्जह, तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतबाला यावि भवह, तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-नो खलु अज्जो! अम्हे अदिन्नं गिण्हामो अदिन्नं भुंजामो अदिन्नं साइज्जामो अम्हे णं अज्जो! दिन्नं गेण्हामो दिन्नं भुंजामो दिन्नं साइज्जामो तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हमाणा दिन्नं भुंजमाणा दिन्नं साइज्जमाणा तिविहं तिविहेणं संजयविरयपडिहय जहा सत्तमसए जाव एगंतपंडिया यावि भवामो, तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो! तुम्हे दिन्नं गेण्हह जाव दिन्नं साइज्जह, जएणं तुब्भे दिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतपंडिया यावि भवह? तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-अम्हे णं अज्जो! दिज्जमाणे दिन्ने पडिग्गाहेज्जमाणे पडिग्गहिए निसिरिज्जमाणे निसिट्ठे। अम्हे णं अज्जो! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरेज्जा अम्हाणं तं णो खलु तं गाहावइस्स जएणं अम्हे दिन्नं गेण्हामो दिन्नं भुंजामो दिन्नं साइज्जामो तएणं अम्हे दिन्नं गेण्हमाणा जाव दिन्नं साइज्जमाणा तिविहं तिविहेणं संजय जाव एगंतपंडिया यावि भवामो तुब्भे णं अज्जो! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंतबाला यावि भवह, तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे

माणस्स किं अगारे झियाइ कुड्डा झियाइ कडणा झि० धारणा झि० वलहरणे झि० वसा० मल्ला झि० वग्गा झियाइ छित्तरा झियाइ छाणे झियाइ जोई झियाइ ? गोयमा ! नो अगारे झियाइ नो कुड्डा झियाइ जाव नो छाणे झियाइ, जोई झियाइ ॥ ३३४ ॥ जीवे ण भंते ! ओरालियसरीराओ कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए सिय अकिरिए ॥ नेरइए ण भंते ! ओरालियसरीराओ कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए । असुरकुमारे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कइकिरिए ? एव चेव, एव जाव वेमाणिए, नवर मणुस्से जहा जीवे । जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए जाव सिय अकिरिए । नेरइए ण भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिए ? एव एसो जहा पढमो दंडओ तहा इमोवि अपरिसेसो भाणियव्वो जाव वेमाणिए, नवर मणुस्से जहा जीवे । जीवा णं भंते ! ओरालियसरीराओ कइकिरिया ? गोयमा ! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया, नेरइया ण भंते ! ओरालियसरीराओ कइकिरिया ? एव एसोवि जहा पढमो दंडओ तहा भाणियव्वो, जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्सा जहा जीवा । जीवा ण भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पचकिरियावि अकिरियावि, नेरइया ण भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पचकिरियावि एव जाव वेमाणिया, नवर मणुस्सा जहा जीवा ॥ जीवे ण भंते ! वेउव्वियसरीराओ कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय अकिरिए, नेरइए णं भंते ! वेउव्वियसरीराओ कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए एव जाव वेमाणिए, नवर मणुस्से जहा जीवे, एवं जहा ओरालियसरीरेण चत्तारि दंडगा तहा वेउव्वियसरीरेणवि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, नवरं पचमकिरिया न भन्नइ, सेस त चेव, एव जहा वेउव्वियं तहा आहारगपि तेयगपि कम्मगंपि भाणियव्वं, एक्केक्के चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव वेमाणिया णं भंते ! कम्मगसरीरेहिंतो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि । सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥ ३३५ ॥ **अट्ठमसयस्स छट्ठो उद्देसओ समत्तो ॥**

तेण कालेणं २ रायगिहे नगरे वन्नओ, गुणसिलए उज्जाणे वन्नओ, जाव पुढविसिलापट्टए, तस्स ण गुणसिलयस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति, तेण कालेण २ समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव समोसढे जाव परिसा पडिगया, तेण कालेण २ समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसपन्ना कुलसपन्ना जहा बिइयसए जाव जीवियासामरणभयविप्पमुक्का

णं ते थेरा भगवंतो अन्नउत्थिए एवं पडिहणेंति पडिहणित्ता गइप्पवायं नामं अज्झयणं पन्नवइंसु ॥ ११६ ॥ कइविहे णं भंते ! गइप्पवाए पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे गइप्पवाए पन्नत्ते तंजहा-पओगगई, ततगई, बंधणछेयणगई, उववायगई, विहायगई, एत्तो आरब्भ पयोगपयं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव सेत्तं विहायगई । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ११७ ॥ अट्ठमसयस्स सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे नयरे जाव एवं वयासी-गुरुं णं भंते ! पडुच्च कइ पडिणीया पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा-आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए ॥ गई णं भंते ! पडुच्च कइ पडिणीया पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा-इहलोगपडिणीए, परलोगपडिणीए, दुहओलोगपडिणीए ॥ समूहं णं भंते ! पडुच्च कइ पडिणीया पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा-कुलपडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए ॥ अणुकंपं भंते ! पडुच्च पुच्छा गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा-तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए ॥ सुयण्णं भंते ! पडुच्च पुच्छा गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा-सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए । भावं णं भंते ! पडुच्च पुच्छा गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा-नाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए ॥ ११८ ॥ कइविहे णं भंते ! ववहारे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे ववहारे पन्नत्ते तंजहा-आगमे सुए, आणा धारणा जीए, जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा णो य से तत्थ आगमे सिया जहा से तत्थ सुए सिया सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा णो य से तत्थ सुए सिया जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा णो य से तत्थ आणा सिया जहा से तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा णो य से तत्थ धारणा सिया जहा से तत्थ जीए सिया जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा तंजहा-आगमेणं सुएणं आणाए, धारणाए, जीएणं जहा २ से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा २ ववहारं पट्ठवेज्जा ॥ से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा निग्गंथा इच्चेयं पंचविहं ववहारं जया २ जहिं २ तहा २ तहिं २ अणिस्सिओवस्सियं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ ॥ ११९ ॥ कइविहे णं भंते ! बंधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे बंधे पन्नत्ते तंजहा-ईरियावहियाबंधे य संपराइयबंधे य । ईरियावहियण्णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ बंधइ तिरिक्खजोणिओ बंधइ तिरिक्खजोणिणी बंधइ मणुस्सो बंधइ मणुस्सी बंधइ देवो बंधइ देवी बंधइ ? गोयमा ! नो नेरइओ बंधइ नो तिरिक्खजोणिओ बंधइ नो तिरिक्खजोणिणी बंधइ नो देवो बंधइ नो देवी बंधइ,

भगवते एवं वयासी–केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं जाव एगतबाला यावि भवामो ?, तए ण ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एव वयासी–तुज्झे ण अज्जो ! अदिन्न गेण्हह ३, तए ण तु अज्जो ! तुब्भे अदिन्नं गे० जाव एगंत०, तए ण ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एव वयासी–केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिन्न गेण्हामो जाव एगतबा० ?, तए णं ते थेरा भगवतो ते अन्नउत्थिए एव वयासी–तुज्झे ण अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने त चेव जाव गाहावइस्स ण णो खलु त तुज्झे, तए ण तुज्झे अदिन्न गेण्हह, तं चेव जाव एगंतबाला यावि भवह, तए ण ते अन्नउत्थिया ते थेरे भ० एव व०–तुज्झे ण अज्जो ! तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगतबा० भवह, तए णं ते थेरा भ० ते अन्नउत्थिए एव वयासी–केण कारणेण अम्हे तिविह तिविहेण जाव एगंतबाला यावि भवामो ?, तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी–तुज्झे णं अज्जो ! रीय रीयमाणा पुढविं पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह सघाएह सघट्टेह परियावेह किलामेह उवद्दवेह तएण तुज्झे पुढविं पेच्चेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेग असजयअविरय जाव एगंतबाला यावि भवह, तए ण ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–नो खलु अज्जो ! अम्हे रीय रीयमाणा पुढविं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो अम्हे णं अज्जो ! रीय रीयमाणा काय वा जोग वा रीय वा पडुच्च देसं देसेणं वयामो पएस पएसेण वयामो तेण अम्हे देस देसेण वयमाणा पएस पएसेणं वयमाणा नो पुढविं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो, तएणं अम्हे पुढविं अपेच्चेमाणा अणभिहणेमाणा जाव अणुवद्दवेमाणा तिविह तिविहेणं सजय जाव एगतपडिया यावि भवामो, तुज्झे ण अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेण असजय जाव एगंत बाला यावि भवह, तए ण ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी–केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविह तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवामो ?, तए ण ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–तुज्झे ण अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह जाव उवद्दवेह, तए ण तुज्झे पुढविं पेच्चेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगतबाला यावि भवह, तए ण ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी–तुज्झे ण अज्जो ! गममाणे अगए वीइक्कमिज्जमाणे अवीइक्कते रायगिह नगरं संपाविउकामे असंपत्ते, तए णं ते थेरा भगवतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–नो खलु अज्जो ! अम्हे गममाणे अगए वीइक्कमिजमाणे अवीइक्कते रायगिहं नगरं जाव असपत्ते, अम्हे ण अज्जो ! गममाणे गए वीइक्कमिज्जमाणे वीइक्कंते रायगिह नगर सपाविउकामे सपत्ते, तुज्झे णं अप्पणा चेव गममाणे अगए वीइक्कमिजमाणे अवीइक्कते रायगिह नगरं जाव असपत्ते, तए

बंधइ अणाईयं सपज्जवसियं बंधइ अणाईयं अपज्जवसियं बंधइ? गोयमा! साईयं सपज्जवसियं बंधइ णो साईयं अपज्जवसियं बंधइ णो अणाईयं सपज्जवसियं बंधइ णो अणाईयं अपज्जवसियं बंधइ ॥ तं भंते! किं देसेणं देसं बंधइ देसेणं सव्वं बंधइ सव्वेणं देसं बंधइ सव्वेणं सव्वं बंधइ? गोयमा! णो देसेणं देसं बंधइ णो देसेणं सव्वं बंधइ णो सव्वेणं देसं बंधइ सव्वेणं सव्वं बंधइ ॥ १४ ॥ संपराइयण्णं भंते! कम्मं किं णेरइओ बंधइ तिरिक्खजोणिओ बंधइ जाव देवी बंधइ? गोयमा! णेरइओवि बंधइ तिरिक्खजोणिओवि बंधइ तिरिक्खजोणिणीवि बंधइ मणुस्सोवि बंधइ मणुस्सीवि बंधइ देवोवि बंधइ देवीवि बंधइ ॥ तं भंते! किं इत्थी बंधइ पुरिसो बंधइ तहेव जाव णोइत्थीणोपुरिसोणोणपुंसओ बंधइ? गोयमा! इत्थीवि बंधइ पुरिसोवि बंधइ जाव णपुंसगोवि बंधइ अहवेए य अवगयवेओ य बंधइ अहवेए य अवगयवेया य बंधंति। जइ भंते! अवगयवेओ य बंधइ अवगयवेया य बंधंति तं भंते! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ पुरिसपच्छाकडो बंधइ? एवं जहेव इरियावहियाबंधगस्स तहेव निरवसेसं जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य [बंधइ] णपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ॥ तं भंते! किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ १ बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २ बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३ बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४? गोयमा! अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ १ अत्थेगइए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २ अत्थेगइए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३ अत्थेगइए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ॥ तं भंते! किं साईयं सपज्जवसियं बंधइ? पुच्छा तहेव, गोयमा! साईयं वा सपज्जवसियं बंधइ अणाईयं वा सपज्जवसियं बंधइ अणाईयं वा अपज्जवसियं बंधइ णो चेव णं साईयं अपज्जवसियं बंधइ। तं भंते! किं देसेणं देसं बंधइ एवं जहेव इरियावहियाबंधगस्स जाव सव्वेणं सव्वं बंधइ ॥१४७॥ कइ णं भंते! कम्मपयडीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! अट्ठ कम्मपयडीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥ कइ णं भंते! परीसहा पण्णत्ता? गोयमा! बावीसं परीसहा प० तंजहा—दिगिंछापरीसहे, पिवासापरीसहे, जाव दंसणपरीसहे। एए णं भंते! बावीसं परीसहा कइसु कम्मपयडीसु समोयरंति? गोयमा! चउसु कम्मपयडीसु समोयरंति, तंजहा—णाणावरणिज्जे, वेयणिज्जे, मोहणिज्जे, अंतराइए। णाणावरणिज्जे णं भंते! कम्मे कइ परीसहा समोयरंति? गोयमा! दो परीसहा समोयरंति तं०—पण्णापरीसहे अण्णाणपरीसहे य। वेयणिज्जे णं भंते! कम्मे कइ परीसहा समोयरंति? गोयमा! एक्कारस परीसहा समोयरंति, तंजहा—पंचेव आणुपुव्वी चरिया सेज्जा वहे य रोगे य। तणफास जल्लमेव य एक्कारस वेयणिज्जंमि ॥ १ ॥ दंसणमोहणिज्जे णं

पुव्वपडिवन्नए पडुच मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति, पडिवज्जमाणए पडुच मणुस्सो वा बंधइ १ मणुस्सी वा बंधइ २ मणुस्सा वा बंधति ३ मणुस्सीओ वा बंधंति ४ अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बंधइ ५ अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बंधन्ति ६ अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य बंधइ ७ अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधति ॥ तं भंते ! किं इत्थी बंधइ पुरिसो बंधइ नपुंसगो बंधइ, इत्थीओ बंधन्ति पुरिसा बंधति नपुंसगा बंधन्ति, नोइत्थीनोपुरिसोनोनपुंसओ बंधइ ? गोयमा ! नो इत्थी बंधइ नो पुरिसो बंधइ जाव नो नपुंसगा बंधन्ति, पुव्वपडिवन्नए पडुच अवगयवेया बंधंति, पडिवज्जमाणए य पडुच अवगयवेओ वा बंधइ अवगयवेया वा बंधंति ॥ जइ भंते ! अवगयवेओ वा बंधइ अवगयवेया वा बंधंति तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ १ पुरिसपच्छाकडो बंधइ २ नपुंसगपच्छाकडो बंधइ ३ इत्थीपच्छाकडा बंधति ४ पुरिसपच्छाकडा बंधंति ५ नपुंसगपच्छाकडा बंधंति ६ उदाहु इत्थिपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ, उदाहु इत्थिपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य बंधति, उदाहु इत्थिपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ, उदाहु इत्थिपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य बंधंति, उदाहु इत्थीपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ४ उदाहु पुरिसपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ४ उदाहु इत्थिपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य(बंधइ)भाणियव्वं ८, एवं एए छव्वीसं भंगा २६ जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसप० नपुंसगप० बंधंति ? गोयमा ! इत्थिपच्छाकडोवि बंधइ १ पुरिसपच्छाकडोवि बंधइ २ नपुंसगपच्छाकडोवि बंधइ ३ इत्थीपच्छाकडावि बंधंति ४ पुरिसपच्छाकडावि बंधंति ५ नपुंसगपच्छाकडावि बंधंति ६ अहवा इत्थीपच्छाकडो पुरिसपच्छाकडो य बंधइ ७ एवं एए चेव छव्वीसं भंगा भाणियव्वा, जाव अहवा इत्थिपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ॥ तं भंते ! किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ १ बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २ बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३ बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४ न बंधी बंधइ बंधिस्सइ ५ न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ६ न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ७ न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ८ ? गोयमा ! भवागरिसं पडुच अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ अत्थेगइए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, एवं तं चेव सव्वं जाव अत्थेगइए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ, गहणागरिसं पडुच अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ एवं जाव अत्थेगइए न बंधी बंधइ बंधिस्सइ, णो चेव णं न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगइए न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ अत्थेगइए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ॥ तं भंते ! किं साइयं सपज्जवसियं बंधइ साइयं अपज्जवसियं

भंते ! कम्मे कइ परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ, चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कइ परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! सत्त परीसहा समोयरंति, तंजहा-अरई अचेल इत्थी निसीहिया जायणा य अक्कोसे । सक्कारपुरक्कारे चरित्तमोहंमि सत्तेए ॥ १ ॥ अंतराइए णं भंते ! कम्मे कइ परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ ॥ सत्तविहबंधगस्स णं भंते ! कइ परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, वीसं पुण वेदेइ, जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ णो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ णो तं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ जं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ णो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ । अट्ठविहबंधगस्स णं भंते ! कइ परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तंजहा-छुहापरीसहे, पिवासापरीसहे, सीयप०, दंसमसगप० जाव अलाभप०, एवं अट्ठविहबंधगस्सवि सत्तविहबंधगस्सवि । छव्विहबंधगस्स णं भंते ! सरागछउमत्थस्स कइ परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चोद्दस परीसहा पण्णत्ता बारस पुण वेदेइ, जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ णो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ णो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ । एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कइ परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एवं चेव जहेव छव्विहबंधगस्स । एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कइ परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेदेइ, सेसं जहा छव्विहबंधगस्स । अबंधगस्स णं भंते ! अजोगिभवत्थकेवलिस्स कइ परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेदेइ, जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ॥३४२॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य तं चेव जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, जंबूदीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि मज्झंतियमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं ? हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमण जाव उच्चत्तेणं । जइ णं

दुविहे पण्णत्ते, तजहा-साइयवीससाबधे य अणाइयवीससाबंधे य। अणाइयवीससा-बधे ण भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे पण्णत्ते, तजहा- धम्मत्थिकायअन्न-मन्नअणाइयवीससाबधे, अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे, आगासत्थि-कायअन्नमन्नअणाइयवीससाबधे। धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबधे ण भंते! किं देसबधे सव्वबंधे? गोयमा! देसबधे नो सव्वबधे, एवं अधम्मत्थिकायअन्न-मन्नअणाइयवीससाबधेवि, एवमागासत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेवि। धम्म-त्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबधे णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! सव्वद्धं, एवं अधम्मत्थिकाए, एवं आगासत्थिकाए। साइयवीससाबधे ण भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे पण्णत्ते, तजहा-बंधणपच्चइए, भायणपच्चइए, परि-णामपच्चइए। से किं त बंधणपच्चइए? २ जन्न परमाणुपोग्गला दुपएसिया तिपएसिया जाव दसपएसिया संखेज्जपएसिया असंखेज्जपएसिया, अणंतपएसियाण खंधाण वेमा-यनिद्धयाए वेमायलुक्खयाए वेमायनिद्धलुक्खयाए एवं बंधणपच्चइए ण बंधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेण असंखेज्जं कालं, सेत्तं बंधणपच्चइए। से किं त भायण-पच्चइए? भायणपच्चइए जन्न जुन्नसुराजुन्नगुलजुन्नतंदुलाणं भायणपच्चइएण बंधे समुप्पज्जइ जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण संखेज्जं कालं, सेत्तं भायणपच्चइए। से किं त परिणामपच्चइए? परिणामपच्चइए जन्नं अब्भाणं अब्भरुक्खाण जहा तइयसए जाव अमोहाण परिणामपच्चइए ण बंधे समुप्पज्जइ जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेण छम्मासा, सेत्तं परिणामपच्चइए, सेत्तं साइयवीससाबंधे, सेत्तं वीससाबंधे॥ ३४५॥ से किं त पओगबंधे? पओगबंधे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए, साइए वा अपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए, तत्थ ण जे से अणाइए अपज्जव-सिए से णं अट्ठण्हं जीवमज्झपएसाणं॥ तत्थवि ण तिण्हं २ अणाइए अपज्जवसिए सेसाणं साइए, तत्थ ण जे से साइए अपज्जवसिए से णं सिद्धाण, तत्थ णं जे से साइए सपज्जवसिए से ण चउव्विहे पन्नत्ते, तजहा-आलावणबंधे, अल्लियावणबंधे, सरीरबंधे, सरीरप्पओगबंधे॥ से किं त आलावणबंधे, आलावणबंधे, जण्ण तण-भाराण वा कट्ठभाराण वा पत्तभाराण वा पलालभाराण वा वेल्लभाराण वा वेत्तल-यावागवरत्तरज्जुवल्लिकुसदब्भमाइएहिं आलावणबंधे समुप्पज्जइ जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण संखेज्जं कालं, सेत्तं आलावणबंधे। से किं त अल्लियावणबंधे? अल्लिया-वणबंधे चउव्विहे पन्नत्ते, तजहा-लेसणाबंधे, उच्चयबंधे, समुच्चयबंधे, साहणणाबंधे, से किं त लेसणाबंधे? लेसणाबंधे जन्नं कुड्डा(ड्डा)णं कोट्टिमाण खंभाण पासायाण कट्ठाण चम्माण घडाण पडाणं कडाणं छुहाचिक्खिल्लसिलेसलक्खमहुसित्थमाइएहिं लेसणएहिं

गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहेव एगिंदियस्स तहेव भाणियव्वं, देसबंधंतरं जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं तिन्नि समया जहा पुढविक्काइयाणं एवं जाव चउरिंदियाणं वाउक्काइयवज्जाणं नवरं सव्वबंधंतरं उक्कोसेणं जा जस्स ठिई सा समयाहिया कायव्वा वाउक्काइयाणं सव्वबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं समयाहियाइं, देसबंधंतरं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं पुव्वकोडी समयाहिया देसबंधंतरं जहा एगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एवं मणुस्साणवि निरवसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ जीवस्स णं भंते ! एगिंदियत्ते णोएगिंदियत्ते पुणरवि एगिंदियत्ते एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं दो खुड्डागभवग्गहणाइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं, देसबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं, जीवस्स णं भंते ! पुढविक्काइयत्ते णोपुढविक्काइयत्ते पुणरवि पुढविक्काइयत्ते पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं दो खुड्डागभवग्गहणाइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अणंता लोगा असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो देसबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं समयाहियं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो जहा पुढविक्काइयाणं एवं वणस्सइकाइयवज्जाणं जाव मणुस्साणं वणस्सइकाइयाणं दोन्नि खुड्डाइं, एवं चेव उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ असंखेज्जा लोगा एवं देसबंधंतरंपि उक्कोसेणं पुढविकालो ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अबंधगा विसेसाहिया देसबंधगा असंखेज्जगुणा ॥ १४७ ॥ वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते तंजहा–एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे य पंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे य । जइ एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे किं वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे अवाउक्काइयएगिंदिय० एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरभेदो तहा भाणियव्वो जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे य अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव पओ-

लियसरीरप्पओगवधे य अपज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्स जाव वधे य ॥ ओरालिय-सरीरप्पओगवधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्व-याए पमादपच्चया कम्म च जोग च भव च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्प-ओगनामाए कम्मस्स उदएणं ओरालियसरीरप्पओगवधे ॥ एगिंदियओरालियसरीर-प्पओगवधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? एव चेव, पुढविक्काइयएगिंदियओरा-लियसरीरप्पओगवधेवि एव चेव, एवं जाव वणस्सइकाइया,एवं बेइंदिया,एवं तेइंदिया, एवं चउरिंदिया, तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगवधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? एव चेव, मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगवधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए पमादपच्चया जाव आउयं च पडुच्च मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएण ॥ ओरालियसरीरप्पओगवधे ण भंते ! किं देसवधे सव्ववंधे ? गोयमा ! देसवधेवि सव्ववधेवि, एगिंदियओरालियसरीरप्पओगवधे ण भंते ! किं देसवंधे सव्ववधे ? एव चेव, एवं पुढविकाइया, एव जाव मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगवधे ण भंते ! किं देसवधे सव्ववधे ? गोयमा ! देसवधेवि सव्ववधेवि ॥ ओरालियसरीर-प्पओगवधे ण भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सव्ववधे एक्कं समय, देसवधे जहन्नेण एक्कं समयं, उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइं समयऊणाइं, एगिंदिय-ओरालियसरीरप्पओगवधे ण भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सव्ववधे एक्कं समय,देसवंधे जहन्नेण एक्कं समय,उक्कोसेणं वावीसं वाससहस्साइं समयऊणाइं,पुढवि-काइयएगिंदियपुच्छा, गोयमा ! सव्ववंधे एक्कं समय,देसवधे जहन्नेण खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं, उक्कोसेणं वावीसं वाससहस्साइं समयऊणाइं, एव सव्वेसिं सव्ववधो एक्कं समय, देसवधो जेसिं नत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं जहन्नेण खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयऊणं, उक्कोसेणं जा जस्स उक्कोसिया ठिई सा समयऊणा कायव्वा, जेसिं पुण अत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं देसवंधो जहन्नेण एक्कं समय, उक्कोसेण जा जस्स ठिई सा समयऊणा कायव्वा जाव मणुस्साणं देसवंधे जहन्नेण एक्कं समयं,उक्कोसेण तिन्नि पलि-ओवमाइं समयऊणाइं ॥ ओरालियसरीरप्पओगवधतरे ण भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्ववधतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयऊणं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडिसमयाहियाइं, देसवधतरं जहन्नेण एक्कं समयं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं तिसमयाहियाइं, एगिंदियओरालियपुच्छा, गोयमा ! सव्ववधतरं जह-न्नेण खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयऊणं, उक्कोसेणं वावीसं वाससहस्साइं समयाहियाइं, देसवधतरं जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं, पुढविक्काइयएगिंदियपुच्छा

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं एवं देसबंधंतरंपि एवं मणुस्सस्सवि ॥ जीवस्स णं भंते ! वाउकाइयत्ते णोवाउकाइयत्ते पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो एवं देसबंधंतरंपि ॥ जीवस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते णोरयणप्पभापुढवि पुच्छा गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो देसबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो एवं जाव अहेसत्तमाए, णवरं जा जस्स ठिई जहन्निया सा सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा सेसं तं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्साण य जहा वाउकाइयाणं । असुरकुमारणागकुमार जाव सहस्सारदेवाणं एएसिं जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं णवरं सव्वबंधंतरं जस्स जा ठिई जहन्निया सा अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा सेसं तं चेव ॥ जीवस्स णं भंते ! आणयदेवत्ते णोआणयदेवत्तेपुच्छा गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो देसबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो एवं जाव अच्चुए णवरं जस्स जा ठिई सा सव्वबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहुत्तमब्भहिया कायव्वा सेसं तं चेव । गेवेज्जकप्पातीयपुच्छा गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो देसबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥ जीवस्स णं भंते ! अणुत्तरोववाइयपुच्छा गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं, देसबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं वेउव्वियसरीरस्स देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाण य कयरे२हिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा देसबंधगा असंखेज्जगुणा अबंधगा अणंतगुणा ॥ आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! एगागारे पन्नत्ते । जइ एगागारे पन्नत्ते किं मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे ? गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे णो अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे णो अणिड्ढिपत्तपमत्त जाव आहारगसरीरप्पओगबंधे । आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव लद्धिं वा

गवधे य। वेउव्वियसरीरप्पओगवधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउयं वा लद्धिं वा पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं वेउव्वियसरीरप्पओगवधे । वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओग० पुच्छा, गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए एव चेव जाव लद्धिं च पडुच्च जाव वाउक्काइयएगिंदियवेउव्विय जाव वंधे । रयणप्पभापुढविनेरइयपचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगवधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउय वा पडुच्च रयणप्पभापुढवि जाव वंधे, एव जाव अहेसत्तमाए। तिरिक्खजोणियपचिंदियवेउव्वियसरीरपुच्छा, गोयमा ! वीरिय० जाव जहा वाउक्काइयाणं, मणुस्सपचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओग० पुच्छा, एव चेव, असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्विय जाव वधे, जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाण एवं जाव थणियकुमारा, एवं वाणमतरा, एव जोइसिया, एव सोहम्मकप्पोवगया वेमाणिया एवं जाव अच्चुयगेवेज्जगकप्पाईयवेमाणिया णेयव्वा, अणुत्तरोववाइयकप्पाईयवेमाणिया एव चेव । वेउव्वियसरीरप्पओगवधे ण भते ! किं देसवधे सव्ववधे ? गोयमा ! देसवधेवि सव्ववधेवि, वाउक्काइयएगिंदिय० एव चेव, रयणप्पभापुढविनेरइया एवं चेव, एवं जाव अणुत्तरोववाइया ॥ वेउव्वियसरीरप्पओगवधे णं भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्ववधे जहन्नेण एक्क समय, उक्कोसेणं दो समया, देसवंधे जहन्नेण एक्कं समयं, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ समयऊणाइ ॥ वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा, गोयमा ! सव्ववधे एक्क समयं, देसवधे जहन्नेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं अतोमुहुत्त ॥ रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा, गोयमा ! सव्ववधे एक्कं समयं, देसवंधे जहन्नेणं दसवाससहस्साइ तिसमयऊणाइ, उक्कोसेणं सागरोवमं समयऊणं, एव जाव अहेसत्तमाए, नवरं देसवंधे जस्स जा जहन्निया ठिई सा तिसमयऊणा कायव्वा जाव उक्कोसा समयऊणा ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण, मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाण। असुरकुमारनागकुमार जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं नवरं जस्स जा ठिई सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयाण सव्ववंधे एक्कं समयं, देसवधे जहन्नेण एक्कतीसं सागरोवमाइ तिसमयऊणाइं, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ समयऊणाइ ॥ वेउव्वियसरीरप्पओगवधतरे ण भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्ववधतरं जहन्नेण एक्क समय, उक्कोसेणं अणतं कालं अणंताओ जाव आवलियाए असखेज्जइभागो, एवं देसवधंतरंपि ॥ वाउक्काइयवेउव्वियसरीरपुच्छा, गोयमा ! सव्ववंधंतरं जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग, एवं देसवंधंतरंपि ॥ तिरिक्खजोणियपचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगवंधतरं पुच्छा, गोयमा !, सव्ववंधतरं जहन्नेणं

म्मासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! दंसणपडिणीययाए एवं जहा णाणावरणिज्जं नवरं दंसणनाम घेत्तव्वं जाव दंसणविसंवायणाजोगेणं दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं जाव पओगबंधे । सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपयाए एवं जहा सत्तमसए दसमोद्देसए जाव अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्जकम्मा जाव बंधे । असायावेयणिज्जपुच्छा गोयमा ! परदुक्खणयाए परसोयणयाए जहा सत्तमसए दसमोद्देसए जाव परियावणयाए असायावेयणिज्जकम्मा जाव पओगबंधे । मोहणिज्जकम्मासरीरप्पओगपुच्छा गोयमा ! तिव्वकोहयाए, तिव्वमाणयाए, तिव्वमायाए, तिव्वलोहयाए, तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए, तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीरप्पओगे जाव पओगबंधे । नेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! पुच्छा गोयमा ! महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, कुणिमाहारेणं पंचिंदियवहेणं नेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं नेरइयाउयकम्मासरीर जाव पओगबंधे । तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीरप्पओगपुच्छा गोयमा ! माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं कूडतुलकूडमाणेणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर जाव पओगबंधे । मणुस्सआउयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरियाए, मणुस्साउयकम्मा जाव पओगबंधे । देवाउयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं बालतवोकम्मेणं अकामनिज्जराए, देवाउयकम्मासरीर जाव पओगबंधे । सुभनामकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! कायउज्जुययाए, भावुज्जुययाए, भासुज्जुययाए, अविसंवायणाजोगेणं सुभनामकम्मासरीर जाव पओगबंधे । असुभनामकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! कायअणुज्जुययाए, भावअणुज्जुययाए, भासअणुज्जुययाए, विसंवायणाजोगेणं असुभनामकम्मा जाव पओगबंधे । उच्चागोयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! जाइअमएणं कुलअमएणं बलअमएणं, रूवअमएणं तवअमएणं सुयअमएणं लाभअमएणं इस्सरियअमएणं उच्चागोयकम्मासरीर जाव पओगबंधे । नीयागोयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! जाइमएणं कुलमएणं बलमएणं जाव इस्सरियमएणं णीयागोयकम्मासरीर जाव पओगबंधे । अंतराइयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! दाणंतराएणं लाभंतराएणं भोगंतराएणं उवभोगंतराएणं वीरियंतराएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पओगबंधे । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधे णो सव्वबंधे एवं जाव

पडुच्च आहारगसरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पओगवंधे। आहारगसरीरप्पओगवंधे णं भंते! किं देसबंधे सव्वबंधे? गोयमा! देसबंधेवि सव्वबंधेवि। आहारगसरीरप्पओगवंधे णं भंते! कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं॥ आहारगसरीरप्पओगबंधतरे णं भंते! कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! सव्वबंधतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोया अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं, एवं देसबंधंतरंपि॥ एएसि णं भंते! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाण य कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा संखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ३॥३४८॥ तेयासरीरप्पओगबंधे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-एगिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे य बेइंदिय० तेइंदिय० जाव पंचिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे य। एगिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते? एवं एएणं अभिलावेणं भेओ जहा ओगाहणसंठाणे जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे य अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव बंधे य। तेयासरीरप्पओगबंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं? गोयमा! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउयं च पडुच्च तेयासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं तेयासरीरप्पओगबंधे। तेयासरीरप्पओगबंधे णं भंते! किं देसबंधे सव्वबंधे? गोयमा! देसबंधे नो सव्वबंधे॥ तेयासरीरप्पओगबंधे णं भंते! कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए॥ तेयासरीरप्पओगबंधतरे णं भंते! कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं॥ एएसि णं भंते! जीवाणं तेयासरीरस्स देसबंधगाणं अबंधगाण य कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबंधगा, देसबंधगा अणंतगुणा ४॥३४९॥ कम्मासरीरप्पओगबंधे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! अट्ठविहे पण्णत्ते, तंजहा-नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे जाव अंतराइयकम्मासरीरप्पओगबंधे। णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं? गोयमा! नाणपडिणीययाए, णाणणिण्हवणयाए, णाणंतराएणं, णाणप्पओसेणं, णाणच्चासायणाए, णाणविसंवायणाजोगेणं, णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे। दरिसणावरणिज्जक-

अबंधए? गोयमा! बंधए णो अबंधए, जइ बंधए किं देसबंधए सव्वबंधए? गोयमा! देसबंधए णो सव्वबंधए। तस्स णं भंते! कम्मगसरीरस्स देसबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्सवि भाणियव्वा जाव तेयासरीरस्स जाव देसबंधए णो सव्वबंधए ॥ १५१ ॥ एएसि णं भंते! सव्वजीवाणं ओरालियवेउव्वियआहारगतेयाकम्मासरीरगाणं देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा १ तस्स चेव देसबंधगा संखेज्जगुणा २ वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असंखेज्जगुणा ३ तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ४ तेयाकम्मगाणं दुण्हवि तुल्ला अबंधगा अणंतगुणा ५ ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अणंतगुणा ६ तस्स चेव अबंधगा विसेसाहिया ७ तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ८ तेयाकम्मगाणं देसबंधगा विसेसाहिया ९ वेउव्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया १० आहारगसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया ११। सेवं भंते! २ त्ति ॥ १५२ ॥ अट्ठमसयस्स नवमो उद्देसओ समत्तो ॥

रायगिहे नयरे जाव एवं वयासी–अन्नउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति जाव एवं परूवेंति–एवं खलु सीलं सेयं सुयं सेयं सुयं सेयं सीलं सेयं से कहमेयं भंते! एवं? गोयमा! जं णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु मए चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तंजहा–सीलसंपन्ने णामं एगे णो सुयसंपन्ने १ सुयसंपन्ने नामं एगे नो सीलसंपन्ने २ एगे सीलसंपन्नेवि सुयसंपन्नेवि ३ एगे णो सीलसंपन्ने णो सुयसंपन्ने ४ तत्थ णं जे से पढमे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं असुयवं उवरए अविन्नायधम्मे एस णं गोयमा! मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते तत्थ णं जे से दोच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं सुयवं, अणुवरए विन्नायधम्मे एस णं गोयमा! मए पुरिसे देसविराहए पन्नत्ते तत्थ णं जे से तच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं सुयवं उवरए विन्नायधम्मे एस णं गोयमा! मए पुरिसे सव्वाराहए पन्नत्ते तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं असुयवं, अणुवरए अविन्नायधम्मे एस णं गोयमा! मए पुरिसे सव्वविराहए पन्नत्ते ॥ १५३ ॥ कइविहा णं भंते! आराहणा पन्नत्ता? गोयमा! तिविहा आराहणा पन्नत्ता, तंजहा–नाणाराहणा दंसणाराहणा चरित्ताराहणा। णाणाराहणा णं भंते! कइविहा पन्नत्ता? गोयमा! तिविहा पन्नत्ता, तंजहा–उक्कोसिया मज्झिमा जहन्ना। दंसणाराहणा णं भंते! कइविहा प०? एवं चेव तिविहावि। एवं चरित्ताराहणावि। जस्स णं भंते!

अंतराइयकम्मा० । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! णाणा० दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-अणाइए सपज्जवसिए अणाइए अपज्जवसिए, एवं जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव एवं जाव अंतराइयकम्मस्स । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधंतरे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! अणाइयस्स एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव एवं जाव अंतराइयस्स । एएसि णं भंते ! जीवाणं नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं अबंधगाण य कयरे२ जाव अप्पाबहुगं जहा तेयगस्स, एवं आउयवज्जं जाव अंतराइयं ॥ आउयस्स पुच्छा, गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अबंधगा संखेज्जगुणा ५ ॥३५०॥ जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! नो बंधए अबंधए, आहारगसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! नो बंधए अबंधए, तेयासरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! बंधए नो अबंधए, जइ बंधए किं देसबंधए सव्वबंधए ? गोयमा ! देसबंधए नो सव्वबंधए, कम्मासरीरस्स किं बंधए अबंधए ? जहेव तेयगस्स जाव देसबंधए नो सव्वबंधए ॥ जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! वेउव्विय-सरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! नो बंधए अबंधए, एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेणवि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स । जस्स णं भंते ! वेउ-व्वियसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! नो बंधए अबंधए, आहारगसरीरस्स एवं चेव, तेयगस्स कम्मगस्स य जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं जाव देसबंधए नो सव्वबंधए । जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! नो बंधए अबंधए, एवं जहा सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेणवि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स । जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स सव्व-बंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! नो बंधए अबंधए, एवं वेउव्वियस्सवि, तेयाकम्माणं जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं । जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! ओरालिय-सरीरस्स एवं जहा आहारगसरीरस्स सव्वबंधेणं भणियं तहा देसबंधेणवि भाणि-यव्वं जाव कम्मगस्स । जस्स णं भंते ! तेयासरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! ओरा-लियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! बंधए वा अबंधए वा, जइ बंधए किं देसबंधए सव्वबंधए ? गोयमा ! देसबंधए वा सव्वबंधए वा, वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? एवं चेव, एवं आहारगसरीरस्सवि, कम्मगसरीरस्स किं बंधए

उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसिया वा अजहन्नउक्कोसिया वा, जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा जहन्ना वा अजहन्नमणुक्कोसा वा। जस्स णं भंते ! उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया णाणाराहणा ? जहा उक्कोसिया णाणाराहणा य दंसणाराहणा य भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणा य चरित्ताराहणा य भाणियव्वा ॥ जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा जहन्ना वा अजहन्नमणुक्कोसा वा जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमा उक्कोसा ॥ उक्कोसियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतं करेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झइ जाव अंतं करेइ अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ, अत्थेगइए कप्पोवएसु वा कप्पातीयएसु वा उववज्जइ, उक्कोसियं णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं० एवं चेव, उक्कोसियण्णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता० एवं चेव, नवरं अत्थेगइए कप्पातीयएसु उववज्जइ। मज्झिमियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतं करेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ, मज्झिमियं णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता० एवं चेव, एवं मज्झिमियं चरित्ताराहणंपि। जहन्नियन्नं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतं करेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ सत्तट्ठभवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ, एवं दंसणाराहणंपि, एवं चरित्ताराहणंपि ॥३५४॥ कइविहे णं भंते ! पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तंजहा-वन्नपरिणामे १ गंधप० २ रसप० ३ फासप० ४ संठाणप० ५, वन्नपरिणामे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-कालवन्नपरिणामे जाव सुक्किल्लवन्नपरिणामे, एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे, संठाणपरिणामे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव आययसंठाणपरिणामे ॥३५५॥ एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसे किं दव्वं १ दव्वदेसे २ दव्वाइं ३ दव्वदेसा ४ उदाहु दव्वं च दव्वदेसे य ५ उदाहु दव्वं च दव्वदेसा य ६ उदाहु दव्वाइं च

तहेव दंडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स, एवं जाव अतराइयस्स भाणियव्व, नवर वेयणिज्जस्स आउयस्स णामस्स गोयस्स एएसिं चउण्हवि कम्माणं मणूसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्वं सेस त चेव ॥ ३५८ ॥ जस्स णं भते ! नाणावरणिज्ज तस्स दरिसणावरणिज्जं जस्स दसणावरणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज? गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्ज तस्स दसणावरणिज्ज नियमा अत्थि, जस्स दरिसणावरणिज्जं तस्सवि नाणावरणिज्ज नियमा अत्थि । जस्स ण भते ! णाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्ज जस्स वेयणिज्ज तस्स णाणावरणिज्ज? गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्ज तस्स वेयणिज्ज नियमा अत्थि, जस्स पुण वेयणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं सिय अत्थि सिय नत्थि । जस्स णं भते ! णाणावरणिज्ज तस्स मोहणिज्ज जस्स मोहणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज? गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्ज तस्स मोहणिज्ज सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण मोहणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज नियमा अत्थि । जस्स ण भंते ! णाणावरणिज्ज तस्स आउय०? एवं जहा वेयणिज्जेण सम भणिय तहा आउएणवि समं भाणियव्वं, एव नामेणवि एव गोएणवि सम, अतराइएण सम जहा दरिसणावरणिज्जेण सम तहेव नियमा परोप्पर भाणियव्वाणि १ ॥ जस्स ण भंते ! दरिसणावरणिज्ज तस्स वेयणिज्ज जस्स वेयणिज्ज तस्स दरिसणावरणिज्ज? जहा नाणावरणिज्ज उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं सम भणिय तहा दरिसणावरणिज्जंपि उवरिमेहि छहिं कम्मेहिं समं भाणियव्व जाव अतराइएण २ । जस्स ण भते ! वेयणिज्ज तस्स मोहणिज्जं जस्स मोहणिज्ज तस्स वेयणिज्ज? गोयमा ! जस्स वेयणिज्ज तस्स मोहणिज्ज सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्ज नियमा अत्थि । जस्स ण भते ! वेयणिज्जं तस्स आउय०? एव एयाणि परोप्परं नियमा, जहा आउएण समं एव नामेणवि गोएणवि सम भाणियव्वं । जस्स ण भंते ! वेयणिज्जं तस्स अंतराइय०? पुच्छा, गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स अतराइय सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अतराइय तस्स वेयणिज्ज नियमा अत्थि ३ । जस्स ण भते ! मोहणिज्ज तस्स आउय जस्स आउयं तस्स मोहणिज? गोयमा ! जस्स मोहणिज्जं तस्स आउय नियमा अत्थि, जस्स पुण आउय तस्स मोहणिज्ज सिय अत्थि सिय नत्थि, एव नाम गोयं अतराइयं च भाणियव्व ४, जस्स णं भंते ! आउयं तस्स नाम०? पुच्छा, गोयमा ! दोवि परोप्पर नियमं, एवं गोत्तेणवि समं भाणियव्व, जस्स णं भंते ! आउय तस्स अतराइय०? पुच्छा, गोयमा ! जस्स आउय तस्स अतराइय सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अतराइयं तस्स आउय नियमा अत्थि ५ । जस्स णं भते ! नामं तस्स गोय जस्स गोय तस्स नामं?

रणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं
बोहिं बुज्झेज्जा, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ
से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा से तेणट्ठेणं जाव नो
बुज्झेज्जा ॥ असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं
मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स
वा जाव उवासियाए वा अत्थेगइए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वएज्जा अत्थेगइए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा से
केणट्ठेणं जाव नो पव्वएज्जा ? गोयमा ! जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओव-
समे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वएज्जा जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ
से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव मुंडे भवित्ता जाव नो पव्वएज्जा से तेणट्ठेणं
गोयमा ! जाव नो पव्वएज्जा । असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव उवासियाए
वा केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवा-
सियाए वा अत्थेगइए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा अत्थेगइए केवलं बंभचेरवासं
नो आवसेज्जा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो आवसेज्जा ? गोयमा ! जस्स
णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा
जाव केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओव-
समे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो आवसेज्जा से तेणट्ठेणं
जाव नो आवसेज्जा । असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव केवलेणं संजमेणं संज-
मेज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा जाव अत्थेगइए
केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा अत्थेगइए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा से केणट्ठेणं
जाव नो संजमेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे
भवइ से णं असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा जस्स णं
जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा
जाव नो संजमेज्जा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अत्थेगइए नो संजमेज्जा । असोच्चा
णं भंते ! केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा ? गोयमा !
असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगइए केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा अत्थेगइए केवलेणं
जाव नो संवरेज्जा से केणट्ठेणं जाव नो संवरेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं अज्झवसा-
णावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव
केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे

समुद्दे केवइया चदा पभासिंसु वा ३ ? एव सव्वेसु दीवसमुद्देसु जोइसियाण भाणियव्वं जाव सयभुरमणे जाव सोभ सोभिंसु वा सोभंति वा सोभिस्सति वा । सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥ ३६२ ॥ **नवमसए बीओ उद्देसो समत्तो ॥**

रायगिहे जाव एवं वयासी–कहि णं भते ! दाहिणिल्लाण एगो(गू)रुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे णामं दीवे पन्नत्ते ? गोयमा ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरच्छिमे ण तिन्नि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणिल्लाण एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नाम दीवे पण्णत्ते, त गोयमा ! तिन्नि जोयणसयाइ आयामविक्खभेणं णवएगूणवण्णे जोयणसए किंचिविसे(साहिए)सूणे परिक्खेवेण पन्नत्ते, से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण सव्वओ समंता सपरिक्खित्ते दोण्हवि पमाण वन्नओ य, एव एएण कमेण जहा जीवाभिगमे जाव सुद्धदंतदीवे जाव देवलोगपरिग्गहिया ण ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! । एव अट्ठावीसं अतरदीवा सएण २ आयामविक्खंभेण भाणियव्वा, नवर दीवे २ उद्देसओ, एवं सव्वेवि अट्ठावीस उद्देसगा भाणियव्वा । सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥ ३६३ ॥ **नवमस्स सयस्स तइयाइआ तीसंता उद्देसा समत्ता, तीसइमो उद्देसो समत्तो ॥**

रायगिहे जाव एवं वयासी–असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा केवलिसावगस्स वा केवलिसावियाए वा केवलिउवासगस्स वा केवलिउवासियाए वा तप्पक्खियस्स वा तप्पक्खियसावगस्स वा तप्पक्खियसावियाए वा तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगइए केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगइए केवलिपन्नत्तं धम्म नो लभेज्ज सवणयाए ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ–असोच्चा ण जाव नो लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ–त चेव जाव नो लभेज्ज सवणयाए ॥ असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगइए केवल बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगइए केवल बोहिं णो बुज्झेज्जा ॥ से केणट्ठेण भते ! जाव नो बुज्झेज्जा ? गोयमा ! जस्स ण दरिसणाव-

केवलनाणं नो उप्पाडेजा ? गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ १ जस्स णं दरिसणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ २ जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ३ एवं चरित्तावरणिजाणं ४ जयणावरणिजाणं ५ अज्झवसाणावरणिजाणं ६ आभिणिबोहियनाणावरणिजाणं ७ जाव मणपज्जवनाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ १० जस्स णं केवलनाणावरणिजाणं जाव खए नो कडे भवइ ११ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज सवणयाए केवलं बोहिं नो बुज्झेजा जाव केवलनाणं नो उप्पाडेजा जस्स णं नाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ जस्स णं दरिसणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ जस्स णं धम्मंतराइयाणं एवं जाव जस्स णं केवलनाणावरणिजाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज सवणयाए केवलं बोहिं बुज्झेजा जाव केवलनाणं उप्पाडेजा ॥ १९४ ॥ तस्स णं भंते ! छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए भद्दयाए विणीययाए अन्नया कयाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं २ तयावरणिजाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं जाणइ पासइ, से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जीवेवि जाणइ अजीवेवि जाणइ पासंडत्थे सारंभे सपरिग्गहे संकिलिस्समाणेवि जाणइ विसुज्झमाणेवि जाणइ से णं पुव्वामेव सम्मत्तं पडिवज्जइ सम्मत्तं पडिवज्जित्ता समणधम्मं रोएइ समणधम्मं रोएत्ता चरित्तं पडिवज्जइ चरित्तं पडिवज्जित्ता लिंगं पडिवज्जइ, तस्स णं तेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ सम्मदंसणपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ से विब्भंगे अन्नाणे सम्मत्तपरिग्गहिए खिप्पामेव ओही परावत्तइ ॥ १९५ ॥ से णं भंते ! कइसु लेस्सासु होजा ? गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होजा, तंजहा–तेउलेस्साए पम्हलेस्साए सुक्कलेस्साए । से णं भंते ! कइसु णाणेसु होजा ? गोयमा ! तिसु आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणेसु होजा । से णं भंते ! किं सजोगी होजा अजोगी होजा ? गोयमा ! सजोगी होजा नो अजोगी होजा जइ सजोगी होजा किं मणजोगी होजा वइजोगी होजा कायजोगी होजा ? गोयमा ! मणजोगी वा होजा वइजोगी वा होजा कायजोगी वा होजा । से णं भंते ! किं सागारोवउत्ते

णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो संवरेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव नो संवरेज्जा। असोच्चा ण भंते! केवलिस्स वा जाव केवलं आभिणिबोहियनाण उप्पाडेज्जा? गोयमा! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगइए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा, से केणट्ठेणं जाव नो उप्पाडेज्जा? गोयमा! जस्स ण आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवल आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स ण आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवल आभिणिबोहियनाण नो उप्पाडेज्जा, से तेणट्ठेण जाव नो उप्पाडेज्जा, असोच्चा ण भंते! केवलिस्स वा जाव केवल सुयनाणं उप्पाडेज्जा? एव जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्सवि भाणियव्वा, नवरं सुयनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे। एव चेव केवल ओहिनाणं भाणियव्वं, नवरं ओहिणाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे, एव केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, नवरं मणपज्जवणाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे, असोच्चा ण भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण उप्पाडेज्जा? एव चेव नवरं केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए भाणियव्वे, सेसं त चेव, से तेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चइ जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। असोच्चा ण भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए केवल बोहिं बुज्झेज्जा केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा केवल बंभचेरवास आवसेज्जा केवलेण संजमेण संजमेज्जा केवलेण संवरेण संवरेज्जा केवल आभिणिबोहियनाण उप्पाडेज्जा जाव केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा केवलनाण उप्पाडेज्जा? गोयमा! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगइए केवलिपन्नत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगइए केवलिपन्नत्त धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगइए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगइए केवल बोहिं णो बुज्झेज्जा, अत्थेगइए केवल मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगइए जाव नो पव्वएज्जा, अत्थेगइए केवल बंभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगइए केवल बंभचेरवास नो आवसेज्जा, अत्थेगइए केवलेणं संजमेण संजमेज्जा, अत्थेगइए केवलेणं संजमेण नो संजमेज्जा, एव संवरेणवि, अत्थेगइए केवलं आभिणिबोहियनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए जाव नो उप्पाडेज्जा, एव जाव मणपज्जवनाणं, अत्थेगइए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। से केणट्ठेणं भंते! एव वुच्चइ असोच्चा ण तं चेव जाव अत्थेगइए

होज्जा अणागारोवउत्ते होज्जा? गोयमा! सागारोवउत्ते वा होज्जा अणागारोवउत्ते वा होज्जा। से णं भंते! कयरंमि संघयणे होज्जा? गोयमा! वइरोसभनारायसंघयणे होज्जा। से णं भंते! कयरंमि संठाणे होज्जा? गोयमा! छण्हं संठाणाणं अन्नयरे संठाणे होज्जा। से णं भंते! कयरंमि उच्चत्ते होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं सत्त रयणी उक्कोसेणं पंचधणुसइए होज्जा। से णं भंते! कयरंमि आउए होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं साइरेगट्ठवासाउए उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा। से णं भंते! किं सवेदए होज्जा अवेदए होज्जा? गोयमा! सवेदए होज्जा नो अवेदए होज्जा, जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेयए होज्जा पुरिसवेदए होज्जा नपुंसगवेदए होज्जा पुरिस-नपुंसगवेदए होज्जा? गोयमा! नो इत्थिवेदए होज्जा पुरिसवेदए वा होज्जा नो नपुंसगवेदए होज्जा पुरिसनपुंसगवेदए वा होज्जा। से णं भंते! किं सकसाई होज्जा अकसाई होज्जा? गोयमा! सकसाई होज्जा नो अकसाई होज्जा, जइ सकसाई होज्जा से णं भंते! कइसु कसाएसु होज्जा? गोयमा! चउसु संजलणकोहमाणमाया-लोभेसु होज्जा। तस्स णं भंते! केवइया अज्झवसाणा प०? गोयमा! असंखेज्जा अज्झवसाणा प०, ते णं भंते! किं पसत्था अप्पसत्था? गोयमा! पसत्था नो अप्प-सत्था, से णं भंते! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइयभव-ग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ अणंतेहिं तिरिक्खजोणिय जाव विसंजोएइ अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, जाओवि य से इमाओ नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवगइनामाओ चत्तारि उत्तरपयडीओ तासिं च णं उवग्गहिए अणंताणुबंधी कोहमाणमायालोभे खवेइ अण० २ त्ता अपच्चक्खाणकसाए कोहमाणमायालोभे खवेइ अप० २ त्ता पच्चक्खाणावरणकोह-माणमायालोभे खवेइ पच्च० २ त्ता संजलणकोहमाणमायालोभे खवेइ संज० २ त्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दरिसणावरणिज्जं पंचविहमंतराइयं तालमत्थकडं च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरा-वरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जइ ॥३६६॥ से णं भंते! केवलि-पन्नत्तं धम्मं आघवेज्ज वा पन्नवेज्ज वा परूवेज्ज वा? नो तिणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ एग-णाएण वा एगवागरणेण वा, से णं भंते! पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा? णो तिणट्ठे समट्ठे, उवएसं पुण करेज्जा, से णं भंते! किं सिज्झइ जाव अंतं करेइ? हंता सिज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ ३६७ ॥ से णं भंते! किं उड्ढं होज्जा अहो होज्जा तिरियं होज्जा? गोयमा! उड्ढं वा होज्जा अहे वा होज्जा तिरियं वा होज्जा, उड्ढं होज्जमाणे सद्दावइ-वियडावइगंधावइमालवंतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा, साहरणं पडुच्च सोम-

असुरा बेइंदिया जाव वेमाणिया एए वाहा नेरइया ॥ १७ ॥ संतरं भंते ! ने
इया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति ? गंगेया ! संतरंपि नेरइया उववज्जंति नि
तरंपि नेरइया उववज्जंति एवं जाव थणियकुमारा संतरं भंते ! पुढविकाइया उव
ज्जंति ? पुच्छा गंगेया ! नो संतरं पुढविकाइया उववज्जंति निरंतरं पुढविकाइया उव
ज्जंति एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं निरंतरं उववज्जंति संतरं भंते ! बेइंदि
उववज्जंति निरंतरं बेइंदिया उववज्जंति ? गंगेया ! संतरंपि बेइंदिया उववज्जंति निरंत
बेइंदिया उववज्जंति एवं जाव वाणमंतरा संतरं भंते ! जोइसिया चयंति ? पुच्छा
गंगेया ! संतरंपि जोइसिया चयंति निरंतरंपि जोइसिया चयंति एवं जाव वेमाणि
॥ १७१ ॥ कइविहे णं भंते ! पवेसणए प० ? गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए प
तंजहा–नेरइयपवेसणए, तिरियजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए
नेरइयपवेसणए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गंगेया ! सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा–र
प्पभापुढविनेरइयपवेसणए जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए ॥ एगे णं भंते
नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा सक्करप्पभाए हो
एवं जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमा
वा होज्जा । दो भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए हो
जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए
होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभा
एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अह
एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए ए
अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा एवं जा
अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एवं एक्केक्का पुढवी छोडेय
जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ॥ तिन्नि भंते ! नेरइया नेरइय
पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? गंगेया
रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए ए
सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा ६ अह
दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहे
सत्तमाए होज्जा १२ अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा
एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा १७ अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुय
प्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २१ एवं अह
सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वा जाव अहवा दो

नो उवसंतकसाई होज्जा खीणकसाई होज्जा, जइ सकसाई होज्जा से ण भंते ! कइसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कमि वा होज्जा, चउसु होज्जमाणे चउसु संजलणकोहमाणमायालोभेसु होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु सजलणमाणमायालोभेसु होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु सजलणमायालोभेसु होज्जा, एगंमि होज्जमाणे एगमि संजलणे लोभे होज्जा । तस्स ण भंते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा, एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जइ, से ण भंते ! केवलिपन्नत्त धम्म आघवेज्ज वा पन्नवेज्ज वा परूवेज्ज वा ? हता गोयमा ! आघवेज्ज वा पनवेज्ज वा परूवेज्ज वा । से ण भंते ! पव्वावेज्ज वा मुडावेज्ज वा ? हता गोयमा ! पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा, तस्स णं भंते ! सिस्सावि पव्वावेज्ज वा मुडावेज्ज वा ? हता पव्वावेज्ज वा मुण्डावेज्ज वा, तस्स ण भंते ! पसिस्सावि पव्वावेज्ज वा मुडावेज्ज वा ? हता पव्वावेज्ज वा मुडावेज्ज वा । से ण भंते ! सिज्झइ बुज्झइ जाव अंत करेइ ? हता सिज्झइ जाव अतं करेइ, तस्स णं भंते ! सिस्सावि सिज्झति जाव अतं करेन्ति ? हता सिज्झति जाव अत करेन्ति, तस्स णं भंते ! पसिस्सावि सिज्झति जाव अंत करेन्ति ? एव चेव जाव अत करेन्ति । से ण भंते ! किं उड्ढ होज्जा जहेव असोच्चाए जाव तदेक्कदेसभाए होज्जा । ते ण भंते ! एगसमएण केवइया होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण अट्ठसयं १०८, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुचइ-सोच्चा ण केवलिस्स वा जाव केवलिउवासियाए वा जाव अत्थेगइए केवलनाणं उप्पाडेज्जा अत्थेगइए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ३६९ ॥

नवमसयस्स इगतीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

तेण कालेण तेण समएण वाणियगामे नगरे होत्था वन्नओ, दूइपलासे उज्जाणे सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएण पासावच्चिज्जे गंगेए नाम अणगारे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगव महावीरं एव वयासी-सतरं भंते ! नेरइया उववज्जति निरंतरं नेरइया उववज्जति ? गंगेया ! सतरपि नेरइया उववज्जंति निरतरंपि नेरइया उववज्जति, सतरं भंते ! असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जति ? गंगेया ! सतरपि असुरकुमारा उववज्जति निरंतरंपि असुरकुमारा उववज्जंति, एव जाव थणियकुमारा, संतरं भंते ! पुढविकाइया उववज्जंति निरंतरं पुढविकाइया उववज्जति ? गंगेया ! नो संतरं पुढविकाइया उववज्जंति निरंतर पुढविकाइया उववज्जंति, एवं जाव वणस्सइ-

तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, ४-४-३-३-२-२-१-१ (४२) अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा १ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा २ जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा ६ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा ७ एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ९, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा १० जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १२ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा १३ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १४ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १५ अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा १६ अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा १७ जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १९ अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २० जाव अहवा एगे सक्कर० एगे पंक० एगे अहेसत्तमाए होज्जा २२ अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा २३ अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २४ अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २५ अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २६ अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा २७ अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २८ अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा २९ अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३० अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३१ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ३२ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३३ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३४ अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३५॥ चत्तारि भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा० ? पुच्छा, गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७, अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि अहेसत्तमाए होज्जा ६ अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा १२,

भवइ तत्थ एगो संचारिज्जइ एवं दोन्नि सेसं तं चेव जाव अहवा तिन्नि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे वालुय दो पंकप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे वालुय दो अहेसत्तमाए होज्जा ४ अहवा एगे रयण एगे सक्कर दो वालुय० एगे पंकप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयण एगे सक्कर दो वालुय एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८ अहवा एगे रयण दो सक्करप्पभाए एगे वालुय एगे पंकप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयण दो सक्कर एगे वालुय एगे अहेसत्तमाए होज्जा १२ अहवा दो रयण एगे सक्कर० एगे वालुय एगे पंकप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयण एगे सक्कर एगे वालुय एगे अहेसत्तमाए होज्जा १६ अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे पंक दो धूमप्पभाए होज्जा एवं जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो भणिओ तहा पंचण्हवि चउक्कसंजोगो भाणियव्वो नवरं अब्भहियं एगो संचारेयव्वो एवं जाव अहवा दो पंक एगे धूम एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे वालुय एगे पंक एगे धूमप्पभाए होज्जा १ अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे वालुय एगे पंक एगे तमाए होज्जा २ अहवा एगे रयण जाव एगे पंक एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३ अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ४ अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे वालुय एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५ अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे वालुय एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६ अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे पंक एगे धूम एगे तमाए होज्जा ७ अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे पंक एगे धूम एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८ अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे पंक एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ९ अहवा एगे रयण एगे सक्कर एगे धूम एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १० अहवा एगे रयण एगे वालुय एगे पंक एगे धूम एगे तमाए होज्जा ११ अहवा एगे रयण एगे वालुय एगे पंक एगे धूम एगे अहेसत्तमाए होज्जा १२ अहवा एगे रयण एगे वालुय एगे पंक एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १३ अहवा एगे रयण एगे वालुय एगे धूम एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १४ अहवा एगे रयण एगे पंक जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा १५ अहवा एगे सक्कर एगे वालुय जाव एगे तमाए होज्जा १६ अहवा एगे सक्कर जाव एगे पंक एगे धूम एगे अहेसत्तमाए होज्जा १७ अहवा एगे सक्कर जाव एगे पंक एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १८ अहवा एगे सक्कर एगे वालुय एगे धूम

अहेसत्तमाए होज्जा १९ अहवा एगे रयण० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्त-माए होज्जा २० अहवा एगे सक्कर० एगे वालुय० एगे पंक० एगे धूमप्पभाए होज्जा २१ एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ संचारियाओ तहा सक्करप्पभाएवि उवरिमाओ चा(उचा)रियव्वाओ जाव अहवा एगे सक्कर० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३० अहवा एगे वालुय० एगे पंक० एगे धूम० एगे तमाए होज्जा ३१ अहवा एगे वालुय० एगे पंक० एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३२ अहवा एगे वालुय० एगे पंक० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३३ अहवा एगे वालुय० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३४ अहवा एगे पंक० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३५ ॥ पंच भंते ! नेरइया नेरइयप्पवे-सणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा० ? पुच्छा, गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा अहवा एगे रयण० चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयण० चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा अहवा दो रयण० तिन्नि सक्क-रप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिन्नि अहेसत्तमाए होज्जा अहवा तिन्नि रयण० दो सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दोण्णि अहेसत्तमाए होज्जा अहवा चत्तारि रयण० एगे सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा चत्तारि रयण० एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे सक्कर० चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढवीओ संचारियाओ तहा सक्करप्पभाएवि समं चा(उचा)रेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा एवं एक्केकाए समं चा(उचा)रेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० तिन्नि अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० दो सक्कर० दो वालुयप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयण० दो सक्कर० दो अहेसत्तमाए होज्जा अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० तिन्नि सक्कर० एगे वालुयप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयण० तिन्नि सक्कर० एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा दो रयण० दो सक्कर० एगे वालुयप्पभाए होज्जा एवं जाव दो रयण० दो सक्कर० एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा तिन्नि रयण० एगे सक्कर० एगे वालुयप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा तिन्नि रयण० एगे सक्कर० एगे अहेस-त्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० एगे वालुय० तिन्नि पंकप्पभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं जहा चउण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा पंचण्हवि तियासंजोगो भाणियव्वो

वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा अहवा एगे रयण० सत्त सक्करप्पभाए होज्जा एवं दुयासंजोगो जाव छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्हं भणि(यं)ओ तहा अट्ठण्हवि भाणियव्वं नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो सेसं तं चेव जाव छक्कसंजोगस्स अहवा तिण्णि सक्कर० एगे वालुय० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा एवं संचारेयव्वं जाव अहवा दो रयण० एगे सक्कर० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ॥ नव भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? पुच्छा गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा अहवा एगे रयण० अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा एवं दुयासंजोगो जाव सत्तगसंजोगो य जहा अट्ठण्हं भणियं तहा नवण्हंपि भाणियव्वं नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो सेसं तं चेव पच्छिमो आलावगो अहवा तिण्णि रयण० एगे सक्कर० एगे वालुय० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ॥ दस भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा पुच्छा गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७ अहवा एगे रयणप्पभाए नव सक्करप्पभाए होज्जा एवं दुयासंजोगो जाव सत्तसंजोगो य जहा नवण्हं नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो सेसं तं चेव पच्छिमो आलावगो अहवा चत्तारि रयण० एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ॥ संखेज्जा भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा पुच्छा गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७ अहवा एगे रयण० संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयण० संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा दो रयण० संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयण० संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा तिण्णि रयण० संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो जाव अहवा दस रयण० संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दस रयण० संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा संखेज्जा रयण० संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे सक्कर० संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा एवं जहा रयणप्पभा उवरिमपुढवी(ए)हिं समं चारिया एवं सक्करप्पभा(ए)वि उवरिमपुढवीहिं समं चारेयव्वा एवं एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवी(ए)हिं समं चारेयव्वा जाव अहवा संखेज्जा तमाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० दो सक्कर० संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा

एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १९ अहवा एगे सक्कर० एगे पंक० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा २० अहवा एगे वालुय० जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा २१ ॥ छब्भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा० ? पुच्छा, गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७ अहवा एगे रयण० पंच सक्करप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयण० पंच वालुयप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयण० पंच अहेसत्तमाए होज्जा अहवा दो रयण० चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयण० चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा अहवा तिन्नि रयण० तिन्नि सक्करप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण जहा पचण्ह दुयासजोगो तहा छण्हवि भाणियव्वो नवर एक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० दो सक्कर० तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण जहा पंचण्ह तियासजोगो भणिओ तहा छण्हवि भाणियव्वो णवरं एक्को अब्भहिओ उच्चारेयव्वो, सेस तं चेव ३४, चउक्कसंजोगोवि तहेव, पचगसजोगोवि तहेव, नवरं एक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो जाव पच्छिमो भंगो अहवा दो वालुय० एगे पंक० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० जाव एगे तमाए होज्जा १ अहवा एगे रयण० जाव एगे धूम० एगे अहेसत्तमाए होज्जा २ अहवा एगे रयण० जाव एगे पंक० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३ अहवा एगे रयण० जाव एगे वालुय० एगे धूम० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४ अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० एगे पंक० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५ अहवा एगे रयण० एगे वालुय० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६ अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ७ ॥ सत्त भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा० पुच्छा, गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहे सत्तमाए वा होज्जा ७, अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा एव एएण कमेण जहा छण्ह दुयासजोगो तहा सत्तण्हवि भाणियव्व नवरं एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ, सेसं त चेव, तियासजोगो चउक्कसजोगो पंचसंजोगो छक्कसजोगो य छण्ह जहा तहा सत्तण्हवि भाणियव्वं, नवरं एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो जाव छक्कगसंजोगो अहवा दो सक्कर० एगे वालुय० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ॥ अट्ठ भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा० पुच्छा, गंगेया ! रयणप्पभाए

होज्जा ४ अहवा रयण० य सक्कर० य पंक० य धूमप्पभाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयण० य धूम० य तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा अहवा रयण० य सक्कर० य वालुय० य पंक० य धूमप्पभाए य होज्जा १ अहवा रयणप्पभाए य जाव पंक० य तमाए य होज्जा २ अहवा रयण० य जाव पंकप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा ३ अहवा रयण० य सक्कर० य वालुय० य धूम० य तमाए य होज्जा ४ एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पंचगसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयण० य पंकप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा अहवा रयण० य सक्कर० य जाव धूमप्पभाए य तमाए य होज्जा १ अहवा रयण० य जाव धूम० य अहेसत्तमाए य होज्जा २ अहवा रयण० य सक्कर० य जाव पंक० य तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा ३ अहवा रयण० य सक्कर० य वालुय० य धूमप्पभाए य तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा ४ अहवा रयण० य सक्कर० य पंक० य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ५ अहवा रयण० य वालुय० य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ६ अहवा रयणप्पभाए य सक्कर० य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ७ ॥ एयस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभापुढवि० जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणगस्स य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तमापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे एवं पडिलोमगं जाव रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥ १०१ ॥ तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गंगेया ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा-एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए । एगे भंते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणएणं पविसमाणे किं एगिंदिएसु होज्जा जाव पंचिंदिएसु होज्जा ? गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा । दो भंते ! तिरिक्खजोणिया पुच्छा, गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा अहवा एगे एगिंदिएसु होज्जा एगे बेइंदिएसु होज्जा एवं जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असंखेज्जा । उक्कोसा भंते ! तिरिक्खजोणिया पुच्छा, गंगेया ! सव्वे वि ताव एगिंदिएसु होज्जा अहवा एगिंदिएसु य बेइंदिएसु य होज्जा एवं जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणियावि चारेयव्वा एगिंदिया अमुयंतेसु दुयासंजोगो तियासंजोगो चउक्कसंजोगो पंचगसंजोगो उव(उंजि)ऊण भाणियव्वो जाव अहवा एगिंदिएसु य बेइंदिएसु य जाव पंचिंदिएसु य होज्जा ॥ एयस्स णं भंते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ?

जाव अहवा एगे रयण० दो सक्कर० सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० तिन्नि सक्कर० सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो जाव अहवा एगे रयण० संखेज्जा सक्कर० सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयण० सखेज्जा सक्कर० संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा दो रयण० सखेज्जा सक्कर० सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयण० सखेज्जा सक्कर० सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा तिन्नि रयण० सखेज्जा सक्कर० संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएणं कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचारेयव्वो जाव अहवा सखेज्जा रयण० सखेज्जा सक्कर० संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयण० सखेज्जा सक्कर० सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० एगे वालुय० सखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयण० एगे वालुय० सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण० दो वालुय० सखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा, एवं एएण कमेणं तियासजोगो चउक्कसजोगो जाव सत्तगसंजोगो य जहा दसण्ह तहेव भाणियव्वो पच्छिमो आलावगो सत्तसजोगस्स अहवा संखेज्जा रयण० सखेज्जा सक्कर० जाव सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ॥ असंखेज्जा भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा, गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा, अहवा एगे रयण० असखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं दुयासंजोगो जाव सत्तगसजोगो य जहा सखेज्जाण भणिओ तहा असखेज्जाणवि भाणियव्वो, नवरं असखेज्जाओ अब्भहिओ भाणियव्वो, सेस त चेव जाव सत्तगसजोगस्स पच्छिमो आलावगो अहवा असखेज्जा रयण० असखेज्जा सक्कर० जाव असखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ॥ उक्कोसेण भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएण० पुच्छा, गंगेया! सव्वेवि ताव रयणप्पभाए होज्जा अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा एव जाव अहवा रयण० य सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा ५ अहवा रयण० य वालुय० य पंकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयण० य वालुय० य अहेसत्तमाए य होज्जा ४ अहवा रयण० य पंकप्पभाए य धूमाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्ह तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयण० य तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा १५ अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुय० य पंकप्पभाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुय० य धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुय० य अहेसत्तमाए य

गंगेया ! सव्वत्थोवे पचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, चउरिंदियतिरिक्खजोणिय० विसेसाहिए, तेइंदिय० विसेसाहिए, वेइंदिय० विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्ख० विसेसाहिए ॥ ३७३ ॥ मणुस्सपवेसणए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गंगेया ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–समुच्छिममणुस्सपवेसणए य गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए य । एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सपवेसणएणं पविसमाणे किं संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ? गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । दो भंते ! मणुस्सा० पुच्छा, गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं एएणं कमेणं जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणएवि भाणियव्वे एवं जाव दस ॥ संखेज्जा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा, गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा अहवा दो समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा एवं एक्केक्कं उस्सारिंते(रिए)सु जाव अहवा संखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ॥ असंखेज्जा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा, गंगेया ! सव्वेवि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु दो गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा एवं जाव असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ॥ उक्कोसा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा, गंगेया ! सव्वेवि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा अहवा समुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु य होज्जा । एयस्स णं भंते ! समुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए, समुच्छिममणुस्सपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥ ३७४ ॥ देवपवेसणए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गंगेया ! चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणियदेवपवेसणए । एगे भंते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवणवासीसु होज्जा वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु होज्जा ? गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु वा होज्जा । दो भंते ! देवा देवपवेसणएणं० पुच्छा, गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु वा होज्जा अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होज्जा एवं जहा तिरिक्खजोणियपवेसणए तहा देवपवेसणएवि भाणियव्वे जाव असंखेज्जत्ति । उक्कोसा भंते !० पुच्छा, गंगेया ! सव्वेवि ताव जोइसिएसु होज्जा अहवा जोइसियभ-

सओ असुरकुमारा उववट्टंति जाव सओ वेमाणिया चयंति असओ वेमाणिया चयंति ? गंगेया ! सओ नेरइया उववज्जंति नो असओ नेरइया उववज्जंति सओ असुरकुमारा उववज्जंति नो असओ असुरकुमारा उववज्जंति जाव सओ वेमाणिया उववज्जंति नो असओ वेमाणिया उववज्जंति, सओ नेरइया उववट्टंति नो असओ नेरइया उववट्टंति जाव सओ वेमाणिया चयंति नो असओ वेमाणिया चयंति, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सओ नेरइया उववज्जंति नो असओ नेरइया उववज्जंति जाव सओ वेमाणिया चयंति नो असओ वेमाणिया चयंति ? से नूणं भे ! गंगेया ! पासेणं अरहया पुरिसादाणिएणं सासए लोए वुइए अणाइए अणवयग्गे जहा पंचमसए जाव जे लोक्कइ से लोए, से तेणट्ठेण गंगेया ! एवं वुच्चइ जाव सओ वेमाणिया चयंति नो असओ वेमाणिया चयंति ॥ सयं भंते ! एए एवं जाणह उदाहु असयं, असोच्चा एए एवं जाणह उदाहु सोच्चा, सओ नेरइया उववज्जंति नो असओ नेरइया उववज्जंति जाव सओ वेमाणिया चयंति नो असओ वेमाणिया चयंति ? गंगेया ! सयं एए एवं जाणामि नो असयं, असोच्चा एए एवं जाणामि नो सोच्चा, सओ नेरइया उववज्जंति नो असओ नेरइया उववज्जंति जाव सओ वेमाणिया चयंति नो असओ वेमाणिया चयंति, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ तं चेव जाव नो असओ वेमाणिया चयंति ? गंगेया ! केवली णं पुरच्छिमेणं मियंपि जाणइ अमियंपि जाणइ दाहिणेणं एवं जहा स(इ)गड्डुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स, से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ तं चेव जाव नो असओ वेमाणिया चयंति ॥ सयं भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जन्ति असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ? गंगेया ! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाव उववज्जंति ? गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मगुरुयत्ताए कम्मभारियत्ताए कम्मगुरुयसंभारियत्ताए असुभाणं कम्माणं उदएणं असुभाणं कम्माणं विवागेणं असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं गंगेया ! जाव उववज्जंति ॥ सयं भंते ! असुरकुमारा० पुच्छा, गंगेया ! सयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति नो असयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति, से केणट्ठेणं तं चेव जाव उववज्जंति ? गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मोवसमेणं कम्मविगईए कम्मविसोहीए कम्मविसुद्धीए सुभाणं कम्माणं उदएणं सुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए जाव उववज्जंति नो असयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए जाव उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति, एवं जाव थणियकुमारा ॥ सयं भंते ! पुढविकाइया० पुच्छा, गंगेया ! सयं पुढविकाइया जाव

दव्वाणं विउसरणयाए एवं जहा बिइयसए जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासइ, तए णं सा देवाणंदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगवंदपरिक्खित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तंजहा-सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविमोयणयाए, विणओणयाए गायलट्ठीए, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं मणस्स एगत्तीभावकरणेणं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता उसभदत्तं माहणं पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिकडा जाव पज्जुवासइ ॥३८०॥ तए णं सा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया पप्फुयलोयणा संवरियवलयबाहा कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलंबपुप्फगंपिव स(मुस्ससिय)मूसवियरोमकूवा समणं भगवं महावीरं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी २ चिट्ठइ ॥ भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-किण्णं भंते ! एसा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया तं चेव जाव रोमकूवा देवाणुप्पिए अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी २ चिट्ठइ ! गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! देवाणंदा माहणी मम अम्मगा अहण्णं देवाणंदाए माहणीए अत्तए, तए णं सा देवाणंदा माहणी तेणं पुव्वपुत्तसिणेहाणुराएणं आगयपण्हया जाव समूसवियरोमकूवा ममं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी २ चिट्ठइ ॥ ३८१ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महइमहालियाए इसिपरिसाए जाव परिसा पडिगया। तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठाए उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी-एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! जहा खंदओ जाव से जहेयं तुब्भे वदह त्तिकट्टु उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइ २ त्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ सयमेव २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ सयमेव २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासी-आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य एवं एएणं कमेणं जहा खंदओ तहेव पव्वइओ जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ जाव बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसम जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेहणाए

उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, तए णं से उसभदत्ते माहणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्तजोइयसमखुरवालिहाणसमलिहियसिंगेहिं जंबूणयामयकलावजुत्तपरिविसिट्ठेहिं रययामयघंटासुत्तरज्जुयपवरकंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणि(मय)रयणघंटियाजालपरिगयं सुजायजुगजोत्तरज्जुयजुगपसत्थसुविरइयनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह २ त्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया करयल जाव एवं सामी! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ साओ गिहाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे। तए णं सा देवाणंदा माहणी अंतो अंतेउरंसि ण्हाया किंच वरपायपत्तनेउरमणिमेहलाहारविरइयउचियकडगखुड्डा(इ)यएगावलीकंठसुत्तउरत्थगेवेज्जसोणिसुत्तगनाणामणिरयणभूसणविराइयंगी चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया दुगुल्लसुकुमालउत्तरिज्जा सव्वोउयसुरभिकुसुमव(ध)रियसिरया वरचंदणवंदिया वरा(भूसण)भरणभूसियंगी कालागु(ग)रुधूवधूविया सिरिसमाणवेसा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणियाहिं वडहियाहिं बब्बरियाहिं पओसियाहिं ईसिगणियाहिं जोण्हियाहिं चारु(वास)गणियाहिं पल्हवियाहिं ल्हासियाहिं लउसियाहिं आरबीहिं दमिलाहिं सिंघलीहिं पुलिंदीहिं पुक्खली(पक्कणी)हिं बहलीहिं मुरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं नाणादेसीहिं विदेसपरिपिंडियाहिं इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं कुसलाहिं विणीयाहि य चेडियाचक्कवालवरिसधरथेरकंचुइज्जमहत्तरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ अंतेउराओ निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता जाव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा॥ तए णं से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे समाणे णियगपरियालसंपरिवुडे माहणकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छइत्ता जेणेव बहुसालए उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छइत्ता छत्ताइए तित्थयराइसए पासइ छ० २ त्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ २ त्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ ध० २ त्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभि(समा)गच्छइ, तंजहा—सच्चित्ताणं

अत्ताण झूसेइ मासि० २ त्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ सट्ठिं० २ त्ता जस्सट्ठाए कीरइ जिणकप्पभावे थेरकप्पभावे जाव तमट्ठं आराहेइ तमट्ठं आराहेत्ता तए णं सो जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । तए णं सा देवाणंदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासी-एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! एवं जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्ममाइ(क्खइ)क्खियं । तए णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेइ सय० २ त्ता सयमेव अज्जचंदणाए अज्जाए सीसिणित्ताए दलयइ ॥ तए णं सा अज्जचंदणा अज्जा देवाणंदं माहणिं सयमेव मुंडावेइ सयमेव सेहावेइ एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ तमाणाए तह गच्छइ जाव संजमेणं संजमेइ, तए णं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अतियं सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ सेसं तं चेव जाव सव्वदुक्खप्पहीणा ॥ ३८१ ॥ तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नामं नगरे होत्था वण्णओ, तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नामं खत्तियकुमारे परिवसइ अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धेहिं नाडएहिं णाणाविहवरतरुणीसंपउत्तेहिं उवनच्चिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ पाउसवासारत्तसरयहेमंतसिसिरवसंतगिम्हपज्जंते छप्पिउऊ जहा विभवेण माणमाणे २ कालं गालेमाणे इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ । तए णं खत्तियकुंडग्गामे नगरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चर जाव बहुजणसद्दे वा जहा उववाइए जाव एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव सव्वन्नू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं जहा उववाइए जाव एगाभिमुहे खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नगरे जेणेव बहुसालए उज्जाणे एवं जहा उववाइए जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-किन्नं अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नगरे इंदमहेइ वा खंदमहेइ वा मुगुंदमहेइ वा णागमहेइ वा जक्खमहेइ वा भूयमहेइ वा कूवमहेइ वा तडागमहेइ वा नइमहेइ वा दहमहेइ वा पव्वयमहेइ वा रुक्खमहेइ वा

वओ महावीरस्स अंतियं धम्म सोचा निसम्म हट्ठ जाव हियए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठाए उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि । तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥ ३८२ ॥ तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहेइ दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सकोरंट० जाव धरिज्जमाणेणं महया भडचडगर जाव परिक्खित्ते जेणेव खत्तियकुंडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ तुरए निगिण्हित्ता रहं ठवेइ रहं ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेत्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्मताओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, सेवि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-धन्नेसि णं तुमं जाया ! कयत्थेसि णं तुमं जाया ! कयपुन्नेसि णं तुमं जाया ! कयलक्खणेसि णं तुमं जाया ! जन्नं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते सेवि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोचंपि एवं वयासी-एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते जाव अभिरुइए, तए णं अहं अम्मताओ ! संसारभयउव्विग्गे भीए जम्मजरामरणेणं तं इच्छामि णं अम्म ! ताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुन्नं अमणामं असुयपुव्वं गिरं सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलंतविलीणगत्ता सोगभरपवेवियंगमंगी नित्तेया दीणविमणवयणा करयलमलियव्व कमलमाला तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलायन्नसुन्ननिच्छाया गयसिरीया पसिढिलभूसणप(डिय)डंतखुण्णियसंचु

य पि जाया । धम्मस्सयाय जाव पव्वइहिसि एवं खलु अम्मताओ । हिरण्णे य सुवण्णे
य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए मच्चुसाहिए दाइयसाहिए
अग्गिसामन्ने जाव दाइयसामन्ने अधुवे अणितिए असासए पुव्विं वा पच्छा वा
अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ तं चेव जाव पव्वइत्तए । तए
णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मताओ जाहे नो संचाएन्ति विसयाणुलोमाहिं बहूहिं
आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवेत्तए वा पन्नवेत्तए
वा सन्नवेत्तए वा विन्नवेत्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभयुव्वेयणकारीहिं
पन्नवणाहिं पन्नवेमाणा एवं वयासी—एवं खलु जाया । निग्गंथे पावयणे सच्चे अणु-
त्तरे केवले जहा आवस्सए जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति अहीव एगंतदिट्ठीए खुरो
इव एगंतधाराए लोहमया जवा चावेयव्वा वालुयाकवले इव निस्सा(दे)ए गंगा वा
महानदी पडिसोयगमणयाए महासमुद्दो वा भुयाहिं दुत्तरो तिक्खं कमियव्वं ग(रु)यं
लंबेयव्वं असिधारगं वयं चरियव्वं नो खलु कप्पइ जाया । समणाणं निग्गंथाणं
आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मिस्सजाए वा अज्झोयरए वा पूइए वा कीए
वा पामिच्चे वा अच्छेज्जे वा अणिसिट्ठे वा अभिहडे वा कंतारभत्ते वा दुब्भिक्ख-
भत्ते वा गिलाणभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा पाहुणगभत्ते वा सेज्जायरपिंडे वा
रायपिंडे वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरिय-
भोयणे वा भुत्तए वा पायए वा तुमं च णं जाया । सुहसमुचिए णो चेव णं दुह-
समुचिए नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहा नालं पिवासा नालं चोरा नालं वाला नालं
दंसा नालं मसया नालं वाइयपित्तियसेंभियसन्निवाइए विविहे रोगायंके परीसहोवसग्गे
उदिण्णे अहियासेत्तए, तं नो खलु जाया । अम्हे इच्छामो तुज्झं खणमवि विप्पओगं
तं अच्छाहि ताव जाया । जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं
जाव पव्वइहिसि । तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी-
तहावि णं तं अम्म । ताओ । जं णं तुब्भे ममं एवं वयह—एवं खलु जाया । निग्गंथे
पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले तं चेव जाव पव्वइहिसि एवं खलु अम्मताओ । निग्गंथे
पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगपरम्मुहाणं विसय-
तिसियाणं दुरणुचरे पागयजणस्स धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो खलु एत्थं
किंचिवि दुक्करं करणयाए, तं इच्छामि णं अम्म । ताओ । तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे
समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए । तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं
अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहिं
आघवणाहि य पन्नवणाहि य ४ आघवेत्तए वा जाव विन्नवेत्तए वा ताहे अकामए

वंदह-इम च ण ते जाया ! सरीरग तं चेव जाव पव्वइहिसि, एव खलु अम्म-
ताओ ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं विविहवाहिसयसनिकेयं अट्ठियकट्ठुट्ठिय छिरा-
ण्हारुजालओणद्धसपिणद्धं मट्टियभंड व दुब्बलं असुइसकिलिट्ठं अणिट्ठवियसव्व-
कालसठप्पयं जराकुणिमजज्जरघरं व सडणपडणविद्धसणधम्म पुव्विं वा पच्छा वा
अवस्सं विप्पजहियव्व भविस्सइ, से केस ण जाणइ, अम्मताओ ! के पुव्विं त चेव
जाव पव्वइत्तए । तए णं तं जमालिं खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—
इमाओ य ते जाया ! विउलकुलबालियाओ सरिसयाओ सरित्तयाओ सरिव्वयाओ
सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाओ सरिसएहिंतो अ कुलेहिंतो आणिएल्लियाओ
कलाकुसलसव्वकाललालियसुहोच्चियाओ मद्दवगुणजुत्तनिउणविणओवयारपडियविय-
क्खणाओ मंजुलमियमहुरभणियविहसियविप्पेक्खियगइविलासचिट्ठियविसारयाओ
अविकलकुलसीलसालिणीओ विसुद्धकुलवंसंसताणततुवद्धणप्पगब्भ(भु)ब्भव(य)प्प-भा-
विणीओ मणाणुकूलहियइच्छियाओ अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ उत्तमाओ निच्च भावाणु-
(रत्त)त्तरसव्वंगसुदरीओ भारियाओ, तं भुजाहि ताव जाव जाया ! एयाहिं सद्धिं विउले
माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसयविगयवोच्छिन्नकोउहल्ले अम्हेहिं
कालगएहिं जाव पव्वइहिसि । तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं
वयासी-तहावि ण त अम्म ! ताओ ! जन्न तुब्भे मम एव वयह इमाओ य ते जाया !
विउलकुल जाव पव्वइहिसि, एवं खलु अम्म ! ताओ ! माणुस्सया कामभोगा असुई
असासया वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा उच्चारपासवणखे-
लसिंघाणगवतपित्तपूयसुक्कसोणियसमुब्भवा अमणुन्नदुरूवमुत्तपूइयपुरीसपुन्ना मयगंधु-
स्सासअसुभनिस्सासउव्वेयणगा बीभच्छा अप्पकालिया लहुसगा कलमलाहिया सदु-
क्खबहुजणसाहारणा परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा अबुहजणणिसेविया सया साहुग-
रहणिज्जा अणतससारवद्धणा कडुयफलविवागा चु(डु)डलिव्व अमुच्चमाणदुक्खाणु-
बंधिणो सिद्धिगमणविग्घा, से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं गमणयाए के
पच्छा गमणयाए, तं इच्छामि ण अम्मताओ ! जाव पव्वइत्तए । तए णं तं जमालिं
खत्तियकुमारं अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया ! अज्जयपज्जयपिउपज्ज-
यागए बहु हिरन्ने य सुवन्ने य कंसे य दूसे य विउलधणकणग जाव सतसारसावएज्जे
अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउं पकाम भोत्तु पकाम परिभाएउ
तं अणुहोहि ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढिसक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुभूय-
कल्लाणे वड्ढियकुलवंसतंतु जाव पव्वइहिसि । तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-
पियरो एव वयासी—तहावि णं तं अम्मताओ ! जन्न तुज्झे मम एव वदह-इम

सुयमग्गे निक्खमणपओगे अग्गकेसे कप्पेइ। तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ अग्गकेसे पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अच्चेइ २ ता सुद्धवत्थेणं बंधेइ सुद्धवत्थेणं बंधित्ता रयणकरंडगंसि पक्खिवइ २ ता हारवारिधारसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं सुयवियोगदूसहाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी २ एवं वयासी-एस णं अम्हं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जन्नेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइत्तिकट्टु ओसीसगमूले ठवेइ, तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति २ ता दोच्चंपि जमालिं खत्तियकुमारं सीयापीयएहिं कलसेहिं ण्हाणेंति सीयापीयएहिं कलसेहिं ण्हावेत्ता पम्हसुकुमालाए सुरभिए गंधकासाइए गायाइं लूहेंति सुरभिए गंधकासाइए गायाइं लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति गायाइं अणुलिंपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवाइरेगं धवलं कणगखचियंतकम्मं महरिहं हंसलक्खणपडसाडगं परिहिंति २ ता हारं पिणद्धेंति २ ता अद्धहारं पिणद्धेंति २ ता एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं रयणसंकडुक्कडं मउडं पिणद्धेंति किं बहुणा गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगंपिव अलंकियविभूसियं करेंति। तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवन्नओ जाव मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं वत्थालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुन्नालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ सीहासणाओ अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरूहइ २ ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने। तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ण्हाया जाव सरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरूहइ सीयं दुरूहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि संनिसन्ना तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाई ण्हाया जाव सरीरा रयहरणं च पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरूहइ सीयं दुरूहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि संनिसन्ना। तए णं

च्चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमणं अणुमन्नित्था ॥ ३८३ ॥ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एव वयासी– खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुंडग्गाम नगरं सब्भितरबाहिरिय आसिय-सम्मज्जिओवलित्त जहा उववाइए जाव पच्चप्पिणति, तए ण से जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स पिया दोच्चपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावइत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थ महग्घ महरिहं विपुल निक्खमणा-भिसेय उवट्ठवेह, तए ण ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव पच्चप्पिणति, तए णं त जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुह निसीयावेंति निसीयावेत्ता अट्ठसएण सोवन्नियाण कलसाणं एव जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएण भोमेज्जाण कलसाणं सव्विड्ढीए जाव रवेण महया महया निक्खमणाभिसेगेण अभिसिंचन्ति निक्खमणाभिसेगेण अभिसिंचित्ता करयल जाव जएण विजएण वद्धावेन्ति, जएण विजएण वद्धावेत्ता एवं वयासी–भण जाया ! किं देमो किं पयच्छामो किणा वा ते अट्ठो ?, तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी–इच्छामि ण अम्म ! ताओ ! कुत्तियावणाओ रयहरण च पडिग्गह च आणिउं कासवग च सद्दा-विउ, तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरण च पडिग्गह च आणेह सयसहस्सेण कासवग च सद्दावेह, तए ण ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइ तहेव जाव कासवग सद्दावेंति । तए ण से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे तुट्ठे ण्हाए जाव सरीरे जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवा-गच्छित्ता करयल० जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियरं जएण विजएण वद्धावेइ जएणं विजएणं वद्धावित्ता एव वयासी–सदिसतु णं देवाणुप्पिया ! ज मए करणिज्ज, तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया त कासवग एव वयासी–तुम देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेण चउरंगुलवज्जे निक्खमणपओगे अग्गकेसे (रूप्पेह) पडिकप्पेहि, तए ण से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे करयल जाव एव सामी ! तहत्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेइ २ त्ता सुरभिणा गधोदएणं हत्थपाए पक्खालेइ सुरभिणा० २ त्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए पोत्तीए मुहं बधइ मुह बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चउ-

रस्स पिया ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-
माणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणे २ हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए
सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भडचडगर जाव परिक्खित्ते जमालिस्स खत्तियकुमा-
रस्स पिट्ठओ २ अणुगच्छइ। तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ महं
आसा आसवरा उभओ पासिं णागा णागवरा पिट्ठओ रहा रहसंगेल्ली। तए णं से
जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गयभिंगारे परिग्गहियतालियंटे ऊसवियसेयछत्ते
पवीइयसेयचामरवालवीयणीए सव्विड्ढीए जाव णाइयरवेणं। तयाणंतरं च णं बहवे
लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा जाव पुत्थयग्गाहा जाव वीणग्गाहा तयाणंतरं च णं अट्ठसयं
गयाणं अट्ठसयं तुरयाणं अट्ठसयं रहाणं तयाणंतरं च णं लउडअसिकोंतहत्थाणं बहूणं
पायत्ताणीणं पुरओ संपट्ठियं तयाणंतरं च णं बहवे राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभि-
इओ पुरओ संपट्ठिया जाव णाइयरवेणं खत्तियकुंडग्गामे नगरे मज्झंमज्झेणं जेणेव
माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव
पहारेत्थ गमणाए। तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुंडग्गामं नगरं
मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडगतियचउक्क जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिया जहा
उववाइए जाव अभिनंदंता य अभिथुणंता य एवं वयासी—जय जय णंदा धम्मेणं,
जय जय णंदा तवेणं जय जय णंदा! भद्दं ते अभग्गेहिं णाणदंसणचरित्तमुत्तमेहिं
अजियाइं जिणाहि इंदियाइं जियं च पालेहि समणधम्मं जियविग्घोऽवि य वसाहि तं
देव! सिद्धिमज्झे णिहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धिइधणियबद्धकच्छे मद्दाहि अट्ठ
कम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च धीर! तेलो-
क्करंगमज्झे पावय वितिमिरमणुत्तरं च केवलनाणं गच्छय मोक्खं परं पयं जिणवरो-
वदिट्ठेणं सिद्धिमग्गेणं अकुडिलेणं हंता परीसहचमूं अभिभविय गामकंटगोवसग्गाणं
धम्मे ते अविग्घमत्थुत्तिकट्टु अभिनंदंति य अभिथुणंति य। तए णं से जमाली खत्ति-
यकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पिच्छिज्जमाणे २ एवं जहा उववाइए कूणिओ जाव
णिग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव
उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता छत्तादिए तित्थगरातिसए पासइ पासित्ता पुरिससह-
स्सवाहिणिं सीयं ठवेइ २ त्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ, तए णं तं
जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव
उवागच्छंति तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं
वयासी—एवं खलु भंते! जमाली खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते जाव किमंग
पुण पासणयाए, से जहानामए उप्पलेइ वा पउमेइ वा जाव सहस्सपत्तेइ वा पंके

तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगयगय जाव रूवजोव्वणविलासकलिया सुंदरथण० हिमरययकुमुयकुंदेंदुप्पगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं उवरिं धारेमाणी २ चिट्ठइ, तए णं तस्स जमालिस्स उभओपासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारु जाव कलियाओ नाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ संखंक-कुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसंनिगासाओ धवलाओ चामराओ गहाय सलीलं वीयमाणीओ वीयमाणीओ चिट्ठंति, तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तर-पुरच्छिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागार जाव कलिया सेयरययामयं विमलसलिलपुण्ण-मत्तगयमहामुहाकिइसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ। तए णं तस्स जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स दाहिणपुरच्छिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागार जाव कलिया चित्तकणगदंडं तालवेंटं गहाय चिट्ठइ, तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ को० २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयं एगाभरणवसणगहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसयं सरित्तयं जाव सद्दावेंति, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ० ण्हाया एगाभरणवसणगहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवा-गच्छन्ति ते० २ त्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जं अम्हेहिं करणिज्जं, तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कोडुंबियवर-तरुणसहस्संपि एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ण्हाया जाव गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स जाव पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स सीयं परिवहंति। तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्स-वाहिणिं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणु-पुव्वीए संपट्ठिया, तं०-सोत्थिय सिरिवच्छ जाव दप्पण, तयाणंतरं च णं पुन्नकलस-भिंगार जहा उववाइए जाव गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, एवं जहा उववाइए तहेव भाणियव्वं जाव आलोयं वा करेमाणा जय २ सद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयाणंतरं च णं बहवे उग्गा भोगा जहा उववाइए जाव महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गओ य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमा-

जणवयविहारं विहरइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था वण्णओ, कोट्ठए चेइए वण्णओ जाव वणसंडस्स तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था वण्णओ पुण्णभद्दे चेइए वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टए। तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाइ पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपानगरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ अहा० २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं अरसेहि य विरसेहि य अंतेहि य पंतेहि य लूहेहि य तुच्छेहि य कालाइक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य सीयएहि य पाणभोयणेहिं अन्नया कयाइ सरीरगंसि विउले रोगायंके पाउब्भूए उज्जले विउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए यावि विहरइ। तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गंथे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सेज्जासंथारगं संथरेह, तए णं ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जासंथारगं संथरेंति, तए णं से जमाली अणगारे बलियतरं वेयणाए अभिभूए समाणे दोच्चंपि समणे निग्गंथे सद्दावेइ २ त्ता दोच्चंपि एवं वयासी-ममन्नं देवाणुप्पिया! सेज्जासंथारए किं कडे कज्जइ? (एवं वुत्ते समाणे समणा निग्गंथा बिंति-भो सामी! कीरइ) तए णं ते समणा निग्गंथा जमालिं अणगारं एवं वयासी-नो खलु देवाणुप्पियाणं सेज्जासंथारए कडे कज्जइ, तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जन्नं समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ जाव एवं परूवेइ-एवं खलु चलमाणे चलिए उदीरिज्जमाणे उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे तं णं मिच्छा इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथरिज्जमाणे असंथरिए जम्हा णं सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथरिज्जमाणे असंथरिए तम्हा चलमाणेवि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणेवि अणिज्जिण्णे एवं संपेहेइ एवं संपेहेत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेइ समणे निग्गंथे सद्दावेत्ता एवं वयासी-जन्नं देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ जाव परूवेइ-एवं खलु चलमाणे चलिए तं चेव सव्वं जाव निज्जरिज्जमाणे अणिज्जिण्णे। तए

जाए जले सबुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएण णोवलिप्पइ जलरएणं एवामेव जमालीवि खत्ति-यकुमारे कामेहिं जाए भोगेहिं सवुड्ढे णोवलिप्पइ कामरएण णोवलिप्पइ भोगरएण णोवलिप्पइ मित्तणाइनियगसयणसंबंधिपरिजणेण, एस ण देवाणुप्पिया ! ससारभयउ-व्विग्गे भीए जम्मजरामरणेणं इच्छइ देवाणुप्पियाण अतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, त एयण्ण देवाणुप्पियाणं अम्हे सीसभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु ण देवाणुप्पिया ! सीसभिक्ख, तए ण समणे० ३ त जमालिं खत्तियकुमार एव वयासी–अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवधं । तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमु-यइ, तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेण पडसाडएणं आभ-रणमल्लालंकार पडिच्छइ पडिच्छित्ता हारवारि जाव विणिम्मुयमाणी २ जमालिं खत्तियकुमार एव वयासी–घडियव्वं जाया ! जइयव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च ण अट्ठे णो पमायेयव्वंति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो समण भगव महावीर वदन्ति णमसन्ति वदित्ता णमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया । तए ण से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पचमुट्ठियं लोय करेइ २ त्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता एव जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवर पचहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव सव्वं सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ अहिज्जेत्ता वहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥ ३८४ ॥ तए ण से जमाली अणगारे अन्नया कयाइ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवा-गच्छइ तेणेव उवागच्छइत्ता समण भगव महावीरं वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी–इच्छामि ण भते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरित्तए, तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ । तए ण से जमाली अणगारे समणं भगव महावीरं दोच्चंपि तच्चपि एवं वयासी–इच्छामि ण भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं जाव विहरित्तए, तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चपि तच्चपि एयमट्ठं णो आढाइ जाव तुसिणीए सचिट्ठइ । तए ण से जमाली अणगारे समण भगव महावीरं वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ बहुसा-लाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं वहिया

ओसप्पिणी भविता उस्सप्पिणी भवइ उस्सप्पिणी भविता ओसप्पिणी भवइ, सासए जीवे जमाली! जं न कयाइ णासी जाव णिच्चे, असासए जीवे जमाली! जं णं णेरइए भविता तिरिक्खजोणिए भवइ तिरिक्खजोणिए भविता मणुस्से भवइ मणुस्से भविता देवे भवइ। तए णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं णो सद्दहइ णो पत्तियइ णो रोएइ एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्चंपि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमइ दोच्चंपि आयाए अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ २ त्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठिइएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ॥ ३८५ ॥ तए णं से भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उ० २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली णामं अणगारे से णं भंते! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने? गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी कुसिस्से जमाली णामं अणगारे से णं तया मम एवं आइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं णो सद्दहइ ३ एयमट्ठं असद्दहमाणे ३ दोच्चंपि ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमइ २ त्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं तं चेव जाव देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ॥ ३८६ ॥ कइविहा णं भंते! देवकिब्बिसिया प० ? गोयमा! तिविहा देवकिब्बिसिया प० तंजहा-तिपलिओवमट्ठिइया तिसागरोवमट्ठिइया तेरससागरोवमट्ठिइया। कहिं णं भंते! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति? गोयमा! उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति। कहिं णं भंते! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति? गोयमा! उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं हिट्ठिं सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति। कहिं णं भंते! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति? गोयमा! उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठिं लंतए कप्पे एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति। देवकिब्बिसिया णं भंते! केसु कम्मादाणेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति? गोयमा! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया उवज्झायपडिणीया कुलपडिणीया गणपडिणीया संघ-

णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एव आइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगइया समणा निग्गथा एयमट्ठ सद्दहंति पत्तियंति रोयति, अत्थेगइया समणा निग्गंथा एयमट्ठं णो सद्दहति ३, तत्थ ण जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहति ३ ते ण जमालिं चेव अणगार उवसपज्जित्ता णं विहरंति, तत्थ ण जे ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोयति ते ण जमालिस्स अणगारस्स अतियाओ कोट्ठयाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगाम दूइज्जमाणा जेणेव चपानयरी जेणेव पुन्नभद्दे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छन्ति २ त्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेंति २ त्ता वदति णमसति २ त्ता समणं भगव महावीर उवसपज्जित्ता ण विहरति ॥ ३८५ ॥ तए ण से जमाली अणगारे अन्नया कयाइ ताओ रोगायकाओ विप्पमुक्के हट्ठे तुट्ठे जाए अरोए बलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठयाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव चपानयरी जेणेव पुन्नभद्दे उज्जाणे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समण भगवं महावीर एवं वयासी-जहा णं देवाणुप्पियाण बहवे अतेवासी समणा निग्गथा छउमत्था भवेत्ता छउमत्थावक्कमणेण अवक्कता णो खलु अहं तहा चेव छउमत्थे भवित्ता छउमत्थावक्कमणेण अवक्कमिए, अहन्न उप्पन्नणाणदसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेण अवक्कमिए, तए ण भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी-णो खलु जमाली ! केवलिस्स णाणे वा दंसणे वा सेलसि वा थभसि वा थूभसि वा आवरिज्जइ वा णिवारिज्जइ वा, जइ ण तुमं जमाली ! उप्पन्नणाणदसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेण अवक्कते तो ण इमाइं दो वागरणाइ वागरेहि-सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ? सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ? तए ण से जमाली अणगारे भगवया गोयमेण एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए जाव कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था, णो सचाएइ भगवओ गोयमस्स किंचिवि पमोक्खमाइक्खित्तए तुसिणीए सचिट्ठइ, जमालीति समणे भगव महावीरे जमालिं अणगार एव वयासी-अत्थि ण जमाली ! मम बहवे अतेवासी समणा निग्गथा छउमत्था जे ण पभू एय वागरण वागरित्तए जहा ण अह, नो चेव ण एयप्पगारं भास भासित्तए जहा णं तुम, सासए लोए जमाली ! जन्न कयाइ णासि ण कयाइ ण भवइ ण कयाइ ण भविस्सइ भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णिइए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे, असासए लोए जमाली ! जओ

कम्मं। पुरिसे णं भंते ! अन्नयरं तसपाणं हणमाणे किं अन्नयरं तसपाणं हणइ णोअन्नयरे तसपाणे हणइ ? गोयमा ! अन्नयरंपि तसपाणं हणइ णोअन्नयरेवि तसे पाणे हणइ, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अन्नयरंपि तसं पाणं हणइ णोअन्नयरेवि तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ एवं खलु अहं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणामि से णं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! तं चेव एए सव्वेवि एक्कगमा। पुरिसे णं भंते ! इसिं हणमाणे किं इसिं हणइ णोइसिं हणइ ? गोयमा ! इसिंपि हणइ णोइसिंपि हणइ, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव णोइसिंपि हणइ ? गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ एवं खलु अहं एगं इसिं हणामि से णं एगं इसिं हणमाणे अणंते जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं निक्खेवओ। पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसवेरेणं पुट्ठे णोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ? गोयमा ! नियमा ताव पुरिसवेरेणं पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य णोपुरिसवेरेण य पुट्ठे अहवा पुरिसवेरेण य णोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे, एवं आसं एवं जाव चिल्ललगं जाव अहवा चिल्ललगवेरेण य णोचिल्ललगवेरेहि य पुट्ठे, पुरिसे णं भंते ! इसिं हणमाणे किं इसिवेरेणं पुट्ठे णोइसिवेरेणं पुट्ठे ? गोयमा ! नियमा इसिवेरेण य णोइसिवेरेहि य पुट्ठे ॥१९॥ पुढविक्काइया णं भंते ! पुढविक्कायं चेव आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? हंता गोयमा ! पुढविक्काइया पुढविक्कायं चेव आणमंति वा जाव नीससंति वा। पुढविक्काइया णं भंते ! आउक्कायं आणमंति वा जाव नीससंति वा ? हंता गोयमा ! पुढविक्काइया आउक्कायं आणमंति वा जाव नीससंति वा एवं तेउक्कायं वाउक्कायं एवं वणस्सइकायं। आउक्काइया णं भंते ! पुढविक्कायं आणमंति वा पाणमंति वा ? एवं चेव, आउक्काइया णं भंते ! आउक्कायं चेव आणमंति वा ? एवं चेव, एवं तेउवाउवणस्सइकायं। तेउक्काइया णं भंते ! पुढविक्कायं आणमंति वा ? एवं जाव वणस्सइकाइया णं भंते ! वणस्सइकायं चेव आणमंति वा ? तहेव। पुढविक्काइए णं भंते ! पुढविक्कायं चेव आणममाणे वा पाणममाणे वा ऊससमाणे वा नीससमाणे वा कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए, पुढविक्काइए णं भंते ! आउक्कायं आणममाणे वा ? एवं चेव एवं जाव वणस्सइकायं एवं आउक्काइएणवि सव्वेवि भाणियव्वा एवं तेउक्काइएणवि एवं वाउक्काइएणवि जाव वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकायं चेव आणममाणे वा ? पुच्छा, गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए ॥२०॥ वाउक्काइए णं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए। एवं कंदं एवं जाव मूलं बीयं पचालेमाणे वा ? पुच्छा, गोयमा ! सिय तिकिरिए

पडिणीया आयरियउवज्झायाण अयसकरा अवन्नकरा अकित्तिकरा वहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाण च ३ वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा वहूइं वासाइ सामन्नपरियाग पाउणति २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा अन्नयरेसु देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवति, तंजहा–तिपलिओवमट्ठिइएसु वा तिसागरोवमट्ठिइएसु वा तेरससागरोवमट्ठिइएसु वा। देवकिब्बिसिया ण भते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण अणंतर चयं चइत्ता कहिं गच्छति कहिं उववज्जति ? गोयमा ! जाव चत्तारि पच नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवभवग्गहणाइ ससार अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति जाव अत करेंति, अत्थेगइया अणाइय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरतससारकंतारं अणुपरियट्टति॥ जमाली ण भते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अताहारे पंताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी जाव तुच्छजीवी उवसतजीवी पसतजीवी विवित्तजीवी ? हता गोयमा ! जमाली ण अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी। जइ ण भते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी कम्हा ण भते ! जमाली अणगारे कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठिइएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ? गोयमा ! जमाली ण अणगारे आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाण अयसकारए जाव वुप्पाएमाणे वहूइ वासाइ सामन्नपरियाग पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ तीस० २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे कालं किच्चा लतए कप्पे जाव उववन्ने ॥ ३८८ ॥ जमाली ण भते ! देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! चत्तारि पच तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवभवग्गहणाइ ससारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिइ जाव अत काहिइ। सेव भते ! २ त्ति ॥३८९॥ **जमाली समत्तो ॥ नवमसए ३३ इमो उद्देसो समत्तो ॥**

तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे जाव एव वयासी–पुरिसे ण भते ! पुरिस हणमाणे किं पुरिस हणइ नोपुरिस हणइ ? गोयमा ! पुरिसपि हणइ नोपुरिसे(सेवि)सपि हणइ, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ पुरिसपि हणइ नोपुरिसपि हणइ ? गोयमा ! तस्स ण एव भवइ एवं खलु अह एग पुरिस हणामि से ण एग पुरिस हणमाणे अणेगजीवा हणइ, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ पुरिसपि हणइ नोपुरिसपि हणइ। पुरिसे ण भते ! आस हणमाणे किं आस हणइ नोआसे हणइ ? गोयमा ! आसपि हणइ नोआसेवि हणइ, से केणट्ठेण अट्ठो तहेव, एव हत्थिं सीह वग्घ जाव चिल्ल-

सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥ ३९२॥ **नवमसए चउत्तीसइमो उद्देसो समत्तो॥ नवमं सयं समत्तं॥**

गाहा—दिसि १ संवुडअणगारे २ आइड्डी ३ सामहत्थि ४ देवि ५ सभा ६। उत्तरअतरदीवा २८ दसमंमि सयंमि चोत्तीसा॥३४॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-किमियं भंते! पाईणत्ति पवुच्चइ? गोयमा! जीवा चेव अजीवा चेव, किमियं भंते! पडीणत्ति पवुच्चइ? गोयमा! एवं चेव, एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उड्ढा, एवं अहोवि। कइ णं भंते! दिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तंजहा-पुरच्छिमा १ पुरच्छिमदाहिणा २ दाहिणा ३ दाहिणपच्चत्थिमा ४ पच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमुत्तरा ६ उत्तरा ७ उत्तरपुरच्छिमा ८ उड्ढा ९ अहो १०। एयासि णं भंते! दसण्हं दिसाणं कइ णामधेज्जा पण्णत्ता? गोयमा! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा-इंदा १ अग्गेई २ जमा य ३ नेरई ४ वारुणी य ५ वायव्वा ६, सोमा ७ ईसाणी य ८ विमला य ९ तमा य १० बोद्धव्वा। इंदा णं भंते! दिसा किं जीवा जीवदेसा जीवपएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवपएसा? गोयमा! जीवावि ३ तं चेव जाव अजीवपएसावि, जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया, जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा, जे जीवपएसा ते नियमा एगिंदियपएसा बेइंदियपएसा जाव अणिंदियपएसा, जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-रूवी अजीवा य अरूवी अजीवा य, जे रूवी अजीवा ते चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा-खंधा १ खंधदेसा २ खंधपएसा ३ परमाणुपोग्गला ४, जे अरूवी अजीवा ते सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा-नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पएसा, नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पएसा, नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पएसा, अद्धासमए॥ अग्गेई णं भंते! दिसा किं जीवा जीवदेसा जीवपएसा०? पुच्छा, गोयमा! णोजीवा जीवदेसावि १ जीवपएसावि २ अजीवावि १ अजीवदेसावि २ अजीवपएसावि ३, जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे १ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसा २ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा ३ अहवा एगिंदियदेसा तेइंदियस्स देसे एवं चेव तियभंगो भाणियव्वो एवं जाव अणिंदियाणं तियभंगो, जे जीवपएसा ते नियमा एगिंदियपएसा अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियस्स पएसा अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियाण य पएसा एवं आइल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं, जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-रूवी अजीवा य अरूवी अजीवा य, जे रूवी अजीवा ते चउव्विहा

एवं चेव । अप्पिड्डिए णं भंते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे, समिड्डिए णं भंते ! देवे समिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं ; एवं तहेव देवेण य देवी(ण)ए य दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणि(या)ए । अप्पिड्ढिया णं भंते ! देवी महिड्डियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं एवं एसोवि तइओ दंडओ भाणियव्वो जाव महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्डियस्स वेमाणियस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? हंता वीइवएज्जा । अप्पिड्ढिया णं भंते ! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे, एवं समिड्ढिया देवी समिड्ढियाए देवीए तहेव महिड्ढियावि देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव, एवं एक्केक्के तिन्नि २ आलावगा भाणियव्वा जाव महिड्ढिया णं भंते ! वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? हंता वीइवएज्जा सा भंते ! किं विमोहित्ता पभू तहेव जाव पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा एए चत्तारि दंडगा ॥ ४ ॥ आसस्स णं भंते ! धावमाणस्स किं खुखुत्ति करेइ ? गोयमा ! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगयस्स य अंतरा एत्थ णं क(ब)ब्बडए णामं वाए संमुच्छइ जे णं आसस्स धावमाणस्स खुखुत्ति करेइ ॥ ४ १ ॥ अह भंते ! आसइस्सामो सइस्सामो चिट्ठिस्सामो निसीइस्सामो तुयट्टि-स्सामो आमंतणि आणवणी जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी । पच्चक्खाणी भासा भासा इच्छाणुलोमा य ॥१॥ अणभिग्गहिया भासा भासा य अभिग्गहंमि बोद्धव्वा । संसयकरणी भासा वोयडमव्वोयडा चेव ॥ २ ॥ पन्नवणी णं एसा भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! आसइस्सामो तं चेव जाव न एसा भासा मोसा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥४ २१ दसमे सए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे णामं नयरे होत्था वण्णओ दूइपलासए उज्जाणे सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समएणं सम-णस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी णामं अणगारे पगइभद्दए जहा रोहे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ, तए णं से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव उट्ठाए उट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा ? हंता अत्थि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा २ ? एवं खलु सामहत्थी ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे कायंदी णामं नयरी होत्था वण्णओ तत्थ णं कायंदीए नय-

निच्च वोसट्ठकाए चियत्तदेहे, एव मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा [जहा दसाहिं] जाव आराहिया भवइ ॥ ३९८ ॥ भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता से ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते काल करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा, भिक्खू य अन्नयर अकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स ण एव भवइ पच्छावि ण अह च(रि)रमकालसमयसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि, से ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते जाव नत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स अराहणा, भिक्खू य अन्नयर अकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स ण एव भवइ–जइ ताव समणोवासगावि कालमासे काल किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति किमग पुण अह अन्नपन्नियदेवत्तणपि नो लभिस्सामित्ति कट्टु से ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा। सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥ ३९९ ॥ **दसमसयस्स बीओ उद्देसो समत्तो ॥**

रायगिहे जाव एव वयासी–आइड्ढीए णं भंते ! देवे जाव चत्तारि पंच देवावासतराइ वीइक्कंते तेण परं परिड्ढीए ? हता गोयमा ! आइड्ढीए ण त चेव, एव असुरकुमारेवि, नवर असुरकुमारावासतराइ सेस त चेव, एव एएण कमेण जाव थणियकुमारे, एव वाणमतरजोइसियवेमाणिए जाव तेण परं परिड्ढीए। अप्पिड्ढिए णं भते ! देवे से महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। समिड्ढिए ण भते ! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे, पमत्त पुण वीइवएज्जा, से ण भते ! किं विमोहित्ता पभू अविमोहित्ता पभू ? गोयमा ! विमोहेत्ता पभू नो अविमोहेत्ता पभू । से भते ! किं पुव्विं विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा पुव्विं वीइवएत्ता पच्छा विमोहेज्जा ? गोयमा ! पुव्विं विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा णो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा । महिड्ढिए ण भते ! देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? हंता वीइवएज्जा, से ण भते ! किं विमोहित्ता पभू अविमोहेत्ता पभू ? गोयमा ! विमोहेत्तावि पभू अविमोहेत्तावि पभू, से भंते ! किं पुव्विं विमोहेत्ता पच्छा वीइवइज्जा पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ? गोयमा ! पुव्विं वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा पुव्विं वा वीइवएत्ता पच्छा विमोहेज्जा । अप्पिड्ढिए ण भते ! असुरकुमारे महिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे, एव असुरकुमारेणवि तिन्नि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएण देवेण भणिया, एवं जाव थणियकुमा(रा)रेणं, वाणमंतरजोइसियवेमाणिएण

एवं जाव महाघोसस्स । अत्थि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा ।
अत्थि, से केणट्ठेणं भंते ! जाव तायत्तीसगा देवा २ ? एवं खलु गोयमा ! तेणं का
तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पालासए(वालाए) नामं संनिवेसे हो
बज्झो तत्थ णं पालासए संनिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा प
चमरस्स जाव विहरंति तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा पुव्वि
पच्छावि उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगप
यागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेन्ति झूसित्ता सट्ठिं भत्ता
अणसणाए छेदेंति २ त्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा ज
उववण्णा जप्पभिइं च णं भंते ! पालासिगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवास
सेसं जहा चमरस्स जाव अन्ने उववज्जंति । अत्थि णं भंते ! ईसाणस्स ? एवं ज
सक्कस्स नवरं चंपाए नयरीए जाव उववण्णा जप्पभिइं च णं भंते ! चंपिज्जा ताय
त्तीसं सहाया सेसं तं चेव जाव अन्ने उववज्जंति । अत्थि णं भंते ! सणंकुमारस्स
देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा हंता अत्थि से केणट्ठेणं जहा धरणस्स तहेव एवं जा
पाणयस्स एवं अच्चुयस्स जाव अन्ने उववज्जंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४ ॥

दसमस्स सयस्स चउत्थो उद्देसओ समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे गुणसिलए चेइए जाव परिस
पडिगया तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवा
थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव विहरंति । तए णं ते
थेरा भगवंतो जायसड्ढा जाव संसया जहा गोयमसामी जाव पज्जुवासमाणा ए
वयासी-चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्ण
त्ताओ ? अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा-काली रायी रयणी विज्जू मेहा,
तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देविसहस्सा परिवारो पण्णत्तो पभू णं भंते ! ताओ
एगमेगा देवी अन्नाइं अट्ठट्ठदेवीसहस्साइं परि(या)वारं विउव्वित्तए ? एवामेव सपुव्वा-
वरेणं चत्तालीसं देवीसहस्सा से त्तं तुडिए, पभू णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमा-
रराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं
दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? नो इणट्ठे समट्ठे । पभू णं अज्जो ! चमरे
असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहास-
णंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए जाव अन्नेहिं य बहूहिं असुरकुमारेहिं
देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहय जाव भुंजमाणे विहरित्तए केवलं परि
यारिड्ढीए नो चेव णं मेहुणवत्तियं ॥ ४ ४ ॥ चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुर

रीए तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा परिवसन्ति अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव विहरन्ति, तए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा पुव्विं उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी भवित्ता तओ पच्छा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति २ त्ता अद्ध-मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेंति अत्ताणं झूसेत्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेंति २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तायत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, जप्पभिइं च ण भंते! कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो ताय-त्तीसगदेवत्ताए उववन्ना तप्पभिइं च ण भंते! एव वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स असु-रकुमाररन्नो तायत्तीसगा देवा २? (तत्थ)तए ण भगव गोयमे सामहत्थिणा अणगारेणं एव वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठाए उट्ठेत्ता सामह-त्थिणा अणगारेण सद्धिं जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगव महावीरं वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी– अत्थि ण भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तायत्तीसगा देवा २? हंता अत्थि, से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ? एवं त चेव सव्व भाणियव्व जाव तप्पभिइं च णं एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तायत्तीसगा देवा २? णो इणट्ठे समट्ठे, एव खलु गोयमा! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तायत्तीसगाणं देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते, ज न कयाइ नासी न कयाइ न भवइ ण कयाइ ण भविस्सइ जाव निच्चे अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति। अत्थि ण भंते! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो तायत्तीसगा देवा २? हंता अत्थि, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ बलिस्स वइरोयणिंदस्स जाव तायत्तीसगा देवा २? एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे बिभेले णाम सन्निवेसे होत्था वण्णओ, तत्थ णं बिभेले सन्निवेसे जहा चमरस्स जाव उव-वन्ना, जप्पभिइं च णं भंते! ते बिभेलगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवा-सगा बलिस्स वइरोयणिंदस्स सेसं त चेव जाव निच्चे अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति। अत्थि ण भंते! धरणस्स णागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो तायत्तीसगा देवा २? हंता अत्थि, से केणट्ठेण जाव तायत्तीसगा देवा २? गोयमा! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो तायत्तीसगाण देवाण सासए नामधेज्जे पन्नत्ते ज न कयाइ नासी जाव अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति, एव भूयाणंदस्सवि,

देवीए अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं एवं सेसाणं तिण्हवि लोगपालाणं जे दाहिणि-
ल्लिा इंदा तेसिं जहा धरणिंदस्स लोगपालाणंपि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाणं
उत्तरिल्लाणं इंदाणं जहा भूयाणंदस्स लोगपालाणवि तेसिं जहा भूयाणंदस्स लोगपा-
लाणं नवरं इंदाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि परियारो
जहा तइयसए पढमे उद्देसए, लोगपालाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरि-
सणामगाणि परियारो जहा चमरस्स लोगपालाणं। कालस्स णं भंते! पिसाइंदस्स
पिसायरन्नो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ? अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्न-
त्ताओ तंजहा–कमला कमलप्पभा उप्पला सुदंसणा तत्थ णं एगमेगाए देवीए एग-
मेगं देविसहस्सं सेसं जहा चमरलोगपालाणं, परियारो तहेव नवरं कालाए राय-
हाणीए कालंसि सीहासणंसि सेसं तं चेव एवं महाकालस्सवि। सुरूवस्स णं भंते!
भूइंदस्स भूयरन्नो पुच्छा अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा–
रूववई बहुरूवा सुरूवा सुभगा, तत्थ णं एगमेगा(ए) सेसं जहा कालस्स एवं पडि-
रूवस्सवि। पुन्नभद्दस्स णं भंते! जक्खिंदस्स पुच्छा अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ
पन्नत्ताओ तंजहा–पुन्ना बहुपुत्तिया उत्तमा तारया तत्थ णं एगमेगाए सेसं जहा
कालस्स एवं माणिभद्दस्सवि। भीमस्स णं भंते! रक्खसिंदस्स पुच्छा अज्जो!
चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा–पउमा पउमावई कणगा रयणप्पभा तत्थ
णं एगमेगा देवी सेसं जहा कालस्स। एवं महाभीमस्सवि। किन्नरस्स णं भंते! पुच्छा
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा–वडेंसा केतुमई रइसेणा रइप्पिया,
तत्थ णं सेसं तं चेव एवं किंपुरिसस्सवि। स(स)प्पुरिसस्स णं पुच्छा अज्जो! चत्तारि
अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा–रोहिणी नवमिया हिरी पुप्फवई, तत्थ णं एग-
मेगा देवी सेसं तं चेव एवं महापुरिसस्सवि। अइकायस्स णं पुच्छा अज्जो! चत्तारि
अग्गमहिसीओ प॰ तंजहा–भु(य)यगा भुयगवई महाकच्छा फुडा, तत्थ णं सेसं तं
चेव एवं महाकायस्सवि। गीयरइस्स णं भंते! पुच्छा अज्जो! चत्तारि अग्गमहि-
सीओ प॰ तंजहा–सुघोसा विमला सुस्सरा सरस्सई, तत्थ णं सेसं तं चेव, एवं
गीयजसस्सवि सव्वेसिं एएसिं जहा कालस्स नवरं सरिसणा(मगा)मियाओ राय-
हाणीओ सीहासणाणि य सेसं तं चेव। चंदस्स णं भंते! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो पुच्छा,
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ तंजहा–चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली
पभंकरा एवं जहा जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्सवि सूरप्पभा आ(यवा)-
भा अच्चिमाली पभंकरा, सेसं तं चेव, जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं। इंगालस्स
णं भंते! महग्गहस्स कइ अग्गमहिसीओ पुच्छा अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ

कुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-कणगा कणगलया चित्तगुत्ता वसुंधरा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देविसहस्सं परिवारो पन्नत्तो, पभू णं ताओ एगमेगा(ए) देवी(ए) अन्न एगमेग देविसहस्स परियारं विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देविसहस्सा, सेत्त तुडिए, पभू ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए सोमसि सीहासणसि तुडिएण अवसेस जहा चमरस्स, नवरं परियारो जहा सूरियाभस्स, सेस त चेव, जाव णो चेव णं मेहुणवत्तिय । चमरस्स ण भंते ! जाव रन्नो जमस्स महारन्नो कइ अग्गमहिसीओ ? एव चेव नवरं जमाए रायहाणीए सेस जहा सोमस्स, एव वरुणस्सवि, नवर वरुणाए रायहाणीए, एव वेसमणस्सवि नवरं वेसमणाए रायहाणीए सेस त चेव जाव मेहुणवत्तिय । बलिस्स ण भंते ! वइरोयणिंदस्स पुच्छा, अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तजहा-सुभा निसुभा रंभा निरंभा मयणा, तत्थ ण एगमेगाए देवीए अट्ठ सेस जहा चमरस्स, नवर बलिचचाए रायहाणीए परिया(वा)रो जहा मोउद्देसए, सेस त चेव जाव मेहुणवत्तिय । बलिस्स ण भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो सोमस्स महारन्नो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तजहा-मीणगा सुभद्दा वि(ज्जु)जया असणी, तत्थ णं एगमेगाए देवीए सेस जहा चमर(सोम)स्स, एव जाव वेसमणस्स ॥ धरणस्स ण भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तजहा-इ(अ)ला सु(स)क्का स(ते)दारा सोयामणी इंदा घणविज्जुया, तत्थ ण एगमेगाए देवीए छ छ देविसहस्सा परिवारो पन्नत्तो, पभू ण भंते ! ताओ एगमेगा(ए) देवी(ए) अन्नाइ छ छ देविसहस्साइ परियार विउव्वित्तए एवामेव सपुव्वावरेण छत्तीस देविसहस्साई, सेत्त तुडिए । पभू णं भंते ! धरणे सेस त चेव, नवर धरणाए रायहाणीए धरणसि सीहासणंसि सओ परिवारो सेस त चेव । धरणस्स ण भंते ! नागकुमारिंदस्स कालवालस्स लोगवालस्स महारन्नो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तजहा-असोगा विमला सुप्पभा सुदसणा, तत्थ ण एगमेगाए देवीए अवसेस जहा चमरस्स लोगपालाण, एव सेसाण तिण्हवि । भूयाणदस्स णं भंते ! पुच्छा, अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तजहा-रूया रूयसा सुरूया रु(रू)यगावई रूयकता रूयप्पभा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए अवसेस जहा धरणस्स, भूयाणदस्स ण भंते ! नागकुमारस्स वि(चि)त्तस्स पुच्छा, अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-सुणंदा सुभद्दा सुजाया सुमणा, तत्थ णं एगमेगाए

जाव विहरइ, एवं सव्वेसिंपि जाव महाघोसस्स सव्वे देविंदे देवराया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥४६॥ दसमसए छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥

कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे णामं दीवे पन्नत्ते ? एवं जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव सुद्धदंतदीवोत्ति एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥४७॥ दसमसए चउत्तीसइमो उद्देसो समत्तो ॥ दसमं सयं समत्तं ॥

उप्पल १ सालु २ पलासे ३ कुंभी ४ नाली य ५ पउम ६ कन्नी ७ य । नलिण ८ सिव ९ लेस १० काल ११ ऽऽलंभिय १२ दस दो य एक्कारे ॥१॥ उववाओ १ परिमाणं २ अवहार ३ उच्च ४ बंध ५ वेए ६ य । उदए ७ उदीरणाए ८ लेसा ९ दिट्ठी १० य नाणे ११ य ॥ जोगु १२ वओगे १३ वन्न १४ रसमाई १५ ऊसासगे १६ य आहारे १७ । विरई १८ किरिया १९ बंधे २० सन्न २१ कसायि २२ त्थि २३ बंधे २४ य ॥२॥ सन्नि २५ दिय २६ अणुबंधे २७ संवेहा २८ हार २९ ठिइ ३० समुग्घाए ३१ । चयणं ३२ मूलाईसु य उववाओ ३३ सव्वजीवाणं ॥३॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-उप्पले णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? गोयमा ! एगजीवे नो अणेगजीवे तेण परं जे अन्ने जीवा उववज्जंति ते णं नो एगजीवा अणेगजीवा । ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खमणुस्सदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतोवि उववज्जंति मणुस्सेहिंतोवि उववज्जंति देवेहिंतोवि उववज्जंति एवं उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कंतीए वणस्सइकाइयाणं जाव ईसाणेत्ति १ । ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति २ । ते णं भंते ! जीवा समए २ अवहीरमाणा २ केवइकालेणं अवहीरंति ? गोयमा ! ते णं असंखेज्जा समए २ अवहीरमाणा २ असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति नो चेव णं अवहिया सिया ३ । तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं ४ । ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा ? गोयमा ! नो अबंधगा बंधए वा बंधगा वा एवं जाव अंतराइयस्स नवरं आउयस्स पुच्छा गोयमा ! बंधए वा अबंधए वा बंधगा वा अबंधगा वा अहवा बंधए य अबंधए य अहवा बंधए य अबंधगा य अहवा बंधगा य अबंधए य अहवा बंधगा य अबंधगा य ८ एए अट्ठ

पन्नत्ताओ, तंजहा-विजया वेजयंती जयंती अपराजिया, तत्थ ण एगमेगाए देवीए सेस तं चेव जहा चंदस्स, नवरं इंगालवडेंसए विमाणे इंगालगंसि सीहासणसि सेस त चेव, एव वियालगस्सवि, एव अट्ठासी(ई)एवि महागहाण भाणियव्वं जाव भावकेउस्स, नवर वडेंसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेस तं चेव। सक्कस्स ण भंते! देविंदस्स देवरन्नो पुच्छा, अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तजहा-पउमा सिवा से(वा)या अजू अमला अच्छरा नवमिया रोहिणी, तत्थ ण एगमेगाए देवीए सोलस सोलस देविसहस्सा परिवारो पन्नत्तो, पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइ सोलस २ देविसहस्सपरियारं विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठावीसुत्तर देविसयसहस्स परियारं विउव्वित्तए, सेत्त तुडिए। पभू ण भंते! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कसि सीहासणसि तुडिएण सद्धिं सेस जहा चमरस्स नवर परिवारो जहा मोउद्देसए। सक्कस्स ण भते! देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो कइ अग्गमहिसीओ पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तजहा-रोहिणी मयणा चित्ता सोमा, तत्थ ण एगमेगा० सेस जहा चमरलोगपालाण, नवर सयपभे विमाणे सभाए सुहम्माए सोमसि सीहासणसि, सेस त चेव, एव जाव वेसमणस्स, नवरं विमाणाइ जहा तइयसए। ईसाणस्स ण भंते! पुच्छा, अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ प०, तजहा-कण्हा कण्हराई रामा रामरक्खिया वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुधरा, तत्थ ण एगमेगाए० सेस जहा सक्कस्स। ईसाणस्स ण भंते! देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ प०, तंजहा-पुढवी राई रयणी विज्जू, तत्थ णं०, सेस जहा सक्कस्स लोगपालाणं, एवं जाव वरुणस्स, नवरं विमाणा जहा चउत्थसए, सेस त चेव, जाव नो चेव ण मेहुणवत्तिय। सेवं भंते! सेवं भते! त्ति जाव विहरइ ॥४०५॥ **दसमसए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥**

कहि ण भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो सभा सुहम्मा पन्नत्ता? गोयमा! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पच वडेंसगा पन्नत्ता, तजहा-असोगवडेंसए जाव मज्झे सोहम्मवडेंसए, से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइ आयामविक्खमेणं,-एव जह सूरियाभे तहेव माण तहेव उववाओ। सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियाभस्स ॥ १ ॥ अलकारो तहेव जाव आयरक्खदेवत्ति, दो सागरोवमाइ ठिई। सक्के ण भंते! देविंदे देवराया केमहिड्ढिए जाव केम(हेस)हासोक्खे? गोयमा! महिड्ढिए जाव महासोक्खे, से ण तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण

भंगा ५। ते ण भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेयगा अवेयगा? गोयमा! नो अवेयगा वेदए वा वेयगा वा एवं जाव अंतराइयस्स, ते णं भंते! जीवा किं सायावेयगा असायावेयगा? गोयमा! सायावेयए वा असायावेयए वा अट्ठ भंगा ६। ते ण भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदई अणुदई? गोयमा! नो अणुदई उदई वा उदइणो वा, एवं जाव अंतराइयस्स ७॥ ते ण भंते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा०? गोयमा! नो अणुदीरगा उदीरए वा उदीरगा वा, एवं जाव अंतराइयस्स, नवरं वेयणिज्जाउएसु अट्ठ भंगा ८। ते ण भंते! जीवा किं कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा? गोयमा! कण्हलेसे वा जाव तेउलेसे वा कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेसा वा अहवा कण्हलेसे य नीललेस्से य एवं एए दुयासंजोगतियासंजोगचउक्कसंजोगेण असीइ भंगा भवंति ९॥ ते ण भंते! जीवा किं सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी? गोयमा! नो सम्मदिट्ठी नो सम्मामिच्छादिट्ठी मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा १०। ते ण भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी? गोयमा! नो नाणी अण्णाणी वा अन्नाणिणो वा ११। ते ण भंते! जीवा किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी? गोयमा! नो मणजोगी णो वइजोगी कायजोगी वा कायजोगिणो वा १२। ते ण भंते! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता? गोयमा! सागारोवउत्ते वा अणागारोवउत्ते वा अट्ठ भंगा १३। तेसि ण भंते! जीवाणं सरीरगा कइवन्ना कइगंधा कइरसा कइफासा प०? गोयमा! पंचवन्ना पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा प०, ते पुण अप्पणा अवन्ना अगंधा अरसा अफासा प० १४-१५॥ ते ण भंते! जीवा किं उस्सासा निस्सासा नो उस्सासनिस्सासा? गोयमा! उस्सासए वा १ निस्सासए वा २ नो उस्सासनिस्सासए वा ३ उस्सासगा वा ४ निस्सासगा वा ५ नो उस्सासनीसासगा वा ६, अहवा उस्सासए य निस्सासए य ४ अहवा उस्सासए य नो उस्सासनिस्सासए य ४ अहवा निस्सासए य नो उस्सासनीसासए य ४, अहवा ऊसासए य नीसासए य नो उस्सासनिस्सासए य अट्ठ भंगा, एए छव्वीसं भंगा भवंति॥१६॥ ते ण भंते! जीवा किं आहारगा अणाहारगा? गोयमा! नो अणाहारगा आहारए वा अणाहारए वा एवं अट्ठ भंगा १७। ते ण भंते! जीवा किं विरया अविरया विरयाविरया? गोयमा! नो विरया नो विरयाविरया अविरए वा अविरया वा १८। ते णं भंते! जीवा किं सकिरिया अकिरिया? गोयमा! नो अकिरिया सकिरिए वा सकिरिया वा १९। ते ण भंते! जीवा किं सत्तविहबंधगा अट्ठविहबंधगा? गोयमा! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा अट्ठ भंगा २०। ते

सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति नवरं निय(मं)मा छद्दिसिं सेसं तं चेव २९ । तेसि ण भंते ! जीवाण केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ३० । तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ समुग्घाया प० ? गोयमा ! तओ समुग्घाया प०, तंजहा–वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ३१ । ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएण किं समोहया मरंति असमोहया मरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति ३२ । ते ण भंते ! जीवा अणतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं । अह भंते ! सव्वपाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए उप्पलकंदत्ताए उप्पलनालत्ताए उप्पलपत्तत्ताए उप्पलकेसरत्ताए उप्पलकन्नियत्ताए उप्पलथिभुगत्ताए उववन्नपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ३३ ॥ ४०८ ॥ **एक्कारसमस्स सयस्स पढमो उप्पलुद्देसओ समत्तो ॥**

सालुए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? गोयमा ! एगजीवे, एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अणंतखुत्तो, नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण धणुपुहुत्तं, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥४०९॥११–२॥ पलासे ण भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेण गाउयपुहु(त्त)त्ता, देवा एएसु न उववज्जंति । लेसासु ते ण भंते ! जीवा किं कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा० ? गोयमा ! कण्हलेस्से वा नीललेस्से वा काउलेस्से वा छव्वीसं भंगा, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ४१० ॥ ११–३ ॥ कुंभिए णं भंते एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवरं ठिई जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४११ ॥ ११–४ ॥ नालिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४१२ ॥ ११–५ ॥ पउमे ण भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४१३ ॥ ११–६ ॥ कन्निए ण भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे० ? एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४१४ ॥ ११–७ ॥ नलिणे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? एवं चेव निरवसेसं जाव अणंतखुत्तो ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४१५ ॥ **एयारहमे सए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥**

४० सुत्ता०

आसिय जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए णं से सिवे राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं ३ विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति, तए णं से सिवे राया अणेगगणनायगदंडनायग जाव संधिवाल सद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दं कुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावे(न्ति)इ २ त्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कल-साणं जाव अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंच(न्ति)इ २ त्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभिए गंधकासाईए गायाइं लूहे(न्ति)इ पम्ह० २ त्ता सरसेणं गोसीसेणं एवं जहेव जमालिस्स अलंकारो तहेव जाव कप्परुक्ख-गंपिव अलंकियविभूसियं करेंति २ त्ता करयल जाव कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति जएणं विजएणं वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं एवं जहा उववाइए कोणियस्स जाव परमाउं पालयाहि इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नयरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागरनगर जाव विहराहित्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति, तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाए महया हिमवंत० वण्णओ जाव विहरइ, तए णं से सिवे राया अन्नया कयाइ सोहणंसि तिहिकरणदिवसमुहुत्तनक्खत्तंसि विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ उवक्खडावेत्ता मित्तणाइनियग जाव परिजणं रायाणो खत्तिए य आमं-तेइ आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव सरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासण-वरगए तेणं मित्तणाइनियगसयण जाव परिजणेणं राएहि य खत्तिएहि य सद्धिं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं एवं जहा तामली जाव सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्मा-णेत्ता तं मित्तणाइणियग जाव परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपु-च्छइ आपुच्छित्ता सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडगं गहाय जे इमे गंगा-कूलगा वाणपत्था तावसा भवंति तं चेव जाव तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खि-यतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइएऽविय णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ-कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं तं चेव जाव अभिग्गहं अभिगिण्हइ २ त्ता पढमं छट्ठक्ख-मणं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीए पच्चोरुहइ आयावणभूमीए पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयगं गिण्हइ गिण्हित्ता पुर-च्छिमं दिसिं पोक्खेइ पुरच्छिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिर-क्खउ सिवं रायरिसिं अभि० २, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउत्ति कट्टु पुरच्छिमं दिसं पसरइ पुर० २ त्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं

अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव घडत्ताए चिट्ठंति? हंता अत्थि। अत्थि णं भंते! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवन्नाइंपि एवं चेव एवं जाव सयंभूरमणसमुद्दे जाव हंता अत्थि। तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। तए णं हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-जन्नं देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अइसेसे नाणदंसणे जाव समुद्दा य तं नो इणट्ठे समट्ठे, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव भंडनिक्खेवं करेइ भंडनिक्खेवं करेत्ता हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडग जाव समुद्दा य, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव समुद्दा य तण्णं मिच्छा समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ०-एवं खलु जंबुद्दीवाईया दीवा लवणाईया समुद्दा तं चेव जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा पन्नत्ता समणाउसो!। तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स जाव कलुससमावन्नस्स से विभंगे नाणे खिप्पामेव परिवडिए, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव सव्वन्नू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स जहा उववाइए जाव गहणयाए, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि एयं णे इहभवे य परभवे य जाव भविस्सइत्तिकट्टु एवं संपेहेइ एवं संपेहित्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता तावसावसहं अणुप्पविसइ २ त्ता सुबहुं लोहीलोहकडाह जाव किढिणसंकाइयं च गेण्हइ गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ ताव २ त्ता परिवडियविब्भंगे हत्थिणागपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नाइदूरे जाव पंजलिउडे पज्जुवासइ, तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए जाव आणाए आराहए भवइ, तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स

वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, एवं संपेहेइ २ त्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ आ० २ त्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडग किढिणसंकाइयं च गेण्हइ २ त्ता जेणेव हत्थिणापुरे नयरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भंडनिक्खेवं करेइ २ त्ता हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडगतिग जाव पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! मम अइसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए जाव दीवा य समुद्दा य, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडगतिग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ–एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ जाव परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! मम अइसेसे नाणदंसणे समुप्पण्णे जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, से कहमेयं मन्ने एवं? । तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसा जाव पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जहा बिइयसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खइ जाव एवं परूवेइ–एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ जाव परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, से कहमेयं मन्ने एवं? तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे जहा नियंठुद्देसए जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, से कहमेयं भंते! एवं? गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–जन्नं गोयमा! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव भंडनिक्खेवं करेइ हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडग० तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्णं मिच्छा, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि–एवं खलु जंबुद्दीवाईया दीवा लवणाईया समुद्दा संठाणओ एगविहिविहाणा वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभूरमणसमुद्दपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पन्नत्ता समणाउसो! ॥ अत्थि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं सवन्नाइंपि अवन्नाइंपि सगंधाइंपि अगंधाइंपि सरसाइंपि अरसाइंपि सफासाइंपि अफासाइंपि अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव घडत्ताए चिट्ठंति? हंता, अत्थि। अत्थि णं भंते! लवणसमुद्दे दव्वाइं सवन्नाइंपि अवन्नाइंपि सगंधाइंपि अगंधाइंपि सरसाइंपि अरसाइंपि सफासाइंपि अफासाइंपि

भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता सुबहु लोहीलोहकडाहं जाव किढिणसंकाइगं च एगंते एडेइ एडित्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ सयमे० २ त्ता समणं भगवं महावीरं एवं जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ तहेव सव्वं जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ ४१७ ॥ भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति ? गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति; एवं जहेव उववाइए तहेव संघयणं संठाणं उच्चत्तं आउयं च परिवसणा, एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव अव्वाबाहं सोक्खं अणुहवं (हुंती) ति सास(य)या सिद्धा । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ॥ ४१८ ॥ **सिवो समत्तो ॥ एक्कारसमे सए नवमो उद्देसो समत्तो ॥**

रायगिहे जाव एवं वयासी-कइविहे णं भंते ! लोए पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे लोए पन्नत्ते, तंजहा-दव्वलोए, खेत्तलोए, काललोए, भावलोए । खेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तंजहा-अहोलोयखेत्तलोए १ तिरियलोयखेत्तलोए २ उड्ढलोयखेत्तलोए ३ । अहोलोयखेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा-रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए जाव अहेसत्तमापुढविअहोलोयखेत्तलोए । तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जविहे पन्नत्ते, तंजहा-जंबुद्दीवे २ तिरियलोयखेत्तलोए जाव सयंभूरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए । उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पन्नरसविहे पन्नत्ते, तंजहा-सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुयकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए ईसिंपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए । अहोलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! तप्पागारसंठिए पन्नत्ते । तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिए पन्नत्ते । उड्ढलोयखेत्तलोय० पुच्छा, गोयमा ! उड्ढमुइंगागारसंठिए पन्नत्ते । लोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए लोए पन्नत्ते, तंजहा-हेट्ठा विच्छिन्ने मज्झे संखित्ते जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव अंतं करेंति । अलोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! झुसिरगोलसंठिए पन्नत्ते ॥ अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा जीवदेसा जीवपएसा० ? एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए । तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा० ? एवं चेव, एवं उड्ढलोयखेत्तलोएवि, नवरं अरूवी छव्विहा अद्धासमओ नत्थि ॥ लोए णं भंते ! किं जीवा० ? जहा बिइयसए अत्थिउद्देसए लोगागासे, नवरं अरूवी सत्तविहा जाव अहम्मत्थिकायस्स पएसा नो आगासत्थिकाए

बहियाभिमुहे पक्खिवेज्जा, पभू णं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, ते णं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए एगे देवे पुरच्छाभिमुहे पयाए, एवं दाहिणाभिमुहे एवं पच्चत्थाभिमुहे एवं उत्तराभिमुहे एवं उड्ढाभिमुहे एगे देवे अहोभिमुहे पयाए, तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाए, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवइ णो चेव णं जाव संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमेवि कुलवंसे पहीणे भवइ णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स नामगोएवि पहीणे भवइ णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तेसि णं भंते! देवाणं किं गए बहुए अगए बहुए? गोयमा! गए बहुए नो अगए बहुए, गयाउ से अगए असंखेज्जइभागे अगयाउ से गए असंखेज्जगुणे, लोए णं गोयमा! एमहालए पन्नत्ते। अलोए णं भंते! केमहालए पन्नत्ते? गोयमा! अयन्नं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं जहा खंदए जाव परिक्खेवेणं, तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्ढिया तहेव जाव संपरिक्खित्ताणं संचिट्ठेज्जा, अट्ठ णं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसुवि दिसासु चउसुवि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा अट्ठ बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहीओ पक्खिवेज्जा, पभू णं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, ते णं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए लोगंते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरच्छाभिमुहे पयाए एगे देवे दाहिणपुरच्छाभिमुहे पयाए एवं जाव उत्तरपुरच्छाभिमुहे पयाए एगे देवे उड्ढाभिमुहे एगे देवे अहोभिमुहे पयाए, तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाए, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति, तं चेव जाव तेसि णं भंते! देवाणं किं गए बहुए अगए बहुए? गोयमा! नो गए बहुए अगए बहुए, गयाउ से अगए अणंतगुणे अगयाउ से गए अणंतभागे, अलोए णं गोयमा! एमहालए पन्नत्ते ॥४२०॥ लोगस्स णं भंते! एगंमि आगासपएसे जे एगिंदियपएसा जाव पंचिंदियपएसा अणिंदियपएसा अन्नमन्नबद्धा अन्नमन्नपुट्ठा जाव अन्नमन्नसमभरघडत्ताए चिट्ठंति, अत्थि णं भंते! अन्नमन्नस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायंति छविच्छेदं वा करेंति? णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ लोगस्स णं एगंमि आगासपएसे जे एगिंदियपएसा जाव चिट्ठंति णत्थि

पन्नत्ते, तंजहा-पमाणकाले १ अहाउनिव्वत्तिकाले २ मरणकाले ३ अद्धाकाले ४, से किं तं पमाणकाले? २ दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-दिवसप्पमाणकाले य १ राइप्पमाणकाले य २, चउपोरिसिए दिवसे चउपोरिसिया राई भवइ ॥ ८२३ ॥ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जया णं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तया णं कइभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तया णं कइभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी २ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ? सुदंसणा! जया णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तया णं बावीसुत्तरसयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जया णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तया णं बावीसुत्तरसयभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। कया णं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ कया वा जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ? सुदंसणा! जया णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ तया णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ जहन्निया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जया णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्तिया राई भवइ जहन्निए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ। कया णं भंते! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ कया वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ? सुदंसणा! आसाढपुण्णिमाए णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, पोसस्स पुण्णिमाए णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ अत्थि णं भंते! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति? हंता! अत्थि, कया णं भंते! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति? सुदंसणा! चित्तासोयपुण्णिमासु णं, एत्थ णं दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति, पन्नरसमुहुत्ते दिवसे पन्नरसमुहुत्ता राई भवइ चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, सेत्तं पमाणकाले ॥ ८२४ ॥ से किं तं अहाउनिव्वत्तिकाले? अहाउनिव्वत्तिकाले, जन्नं जेणं नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउय

जं सा पभावई देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ करयल जाव एवं वयासी-एवमेयं देवाणुप्पिया। तहमेयं देवाणुप्पिया। अवितहमेयं देवाणुप्पिया। असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया। इच्छियमेयं देवाणुप्पिया। पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया। इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया। से जहेयं तुब्भे वयह त्तिकट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ पडिच्छित्ता बलेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल जाव गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ निसीइत्ता एवं वयासी-मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुमिणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्सइत्तिकट्टु देवगुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजागरमाणी २ विहरइ। तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया। अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्तसुइयसंमज्जिओवलित्तं सुगंधवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं करेह य करावेह य करेत्ता करावेत्ता सीहासणं रएह सीहासणं रयावेत्ता ममेयं जाव पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से बले राया पच्चूसकालसमयंसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पायपीढाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अट्टणसालं अणुपविसइ जहा उववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव ससिव्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ निसीइत्ता अप्पणो उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थुयाइं सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते णाणामणिरयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घवरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टबहुभत्तिसयचित्तताणं ईहामियउसभ जाव भत्तिचित्तं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ अंछावेत्ता णाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्थरयमउयमसूरगोत्थयं सेयवत्थपच्चुत्थुयं अंगसुहफासयं सुमउयं पभावईए देवीए भद्दासणं रयावेइ रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया। अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविहसत्थकुसले सुमिणलक्खणपाढए सद्दावेह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति २ त्ता जेणेव तेसिं सुमिणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवाग-

ओवयमाणं निययवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा। तए णं सा पभावई देवी अयमेयारूवं ओरालं जाव सस्सिरीयं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूसवियरोमकूवा तं सुविणं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रन्नो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिउमहुरमंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी संलवमाणी पडिबोहेइ पडिबोहेत्ता बलेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि णिसीयइ णिसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणी २ एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण० तं चेव जाव नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ? तए णं से बले राया पभावईए देवीए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियए धाराहयनीवसुरभिकुसुमचंचुमालइयतणुयऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता ईहं पविसइ ईहं पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ तस्स० २ त्ता पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव मंगल्लाहिं मिउमहुरसस्सिरीयाहिं संलवमाणे २ एवं वयासी—ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव सस्सिरीए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणमंगलकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिए! भोगलाभो देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए! रज्जलाभो देवाणुप्पिए!, एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडेंसयं कुलतिलगं कुलकित्तिकरं कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिसि। सेऽवि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिन्नविउलबलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ, तं उराले णं तुमे देवी! सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठि जाव मंगलकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठेत्तिकट्टु पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं दोच्चंपि तच्चंपि अणुवूहइ। तए

च्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति । तए ण ते सुविण-लक्खणपाढगा वलस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्टतुट्ठा ण्हाया जाव सरीरा सिद्धत्थगहरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं २ गिहेहिंतो निग्गच्छंति स० २ त्ता हत्थिणापुरं नयरं मज्झमज्झेण जेणेव वलस्स रन्नो भवणवरवडेंसए तेणेव उवा-गच्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति एगओ मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव वले राया तेणेव उवागच्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता करयल० वल राय जएणं विजएणं वद्धावेंति । तए ण ते सुविणलक्खण-पाढगा वलेणं रन्ना वंदियपूइयसक्कारियसम्माणिया समाणा पत्तेय २ पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति, तए ण से वले राया पभावइं देविं जवणियंतरियं ठावेइ ठावेत्ता पुप्फफलपडिपुन्नहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावई देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? तए ण ते सुविणलक्खणपाढगा वलस्स रन्नो अंतियं एय-मट्ठं सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठ० तं सुविणं ओगिण्हन्ति २ त्ता ईहं अणुप्पविसन्ति अणुप्प-विसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेन्ति तस्स० २ त्ता अन्नमन्नेण सद्धिं संचालेंति २ त्ता तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा वलस्स रन्नो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थंसि वायालीसं सुविणा तीसं महासुविणा बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा, तत्थ णं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिवुज्झंति, तंजहा–गयवसहसीहअभिसेयदामससिदिणयरं झयं कुंभं । पउमसर-सागरविमाणभवणरयणुच्चयसिहिं च १४ ॥ १ ॥ वासुदेवमायरो वा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिवुज्झंति, वलदेवमायरो वा वलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिवुज्झंति, मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसि णं चउदसण्हं महासुविणाणं अन्नयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडियुज्झन्ति; इमे य णं देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठि जाव मंगलकारए णं देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोग० पुत्त० रज्जलाभो देवाणुप्पिया ! एवं खलु देवाणु-

तीसे पभावईए देवीए अगपडियारियाओ पभावइ देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता करयल जाव बलं रायं जएणं विजएण वद्धावेंति जएण विजएण वद्धावेत्ता एवं वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! पभावई देवी णवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं जाव दारग पयाया त एयण्ण देवाणुप्पियाण पियट्ठयाए पिय निवेदेमो पियं मे भवउ । तए णं से बले राया अगपडिया-रियाण अतिय एयमट्ठ सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जाव रोमकूवे तासिं अगपडियारियाण मउडवज्ज जहामालिय ओमोयं दलयइ २ त्ता सेय रययामय विमलसलिलपुन्न भिंगार च गिण्हइ गिण्हित्ता मत्थए धोवइ मत्थए धोवित्ता विउल जीवियारिह पीइदाणं दलयइ पीइदाण दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ स० २ त्ता पडिविसज्जेइ ॥ ४२७ ॥ तए ण से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहणं करेह चारग० २ त्ता माणुम्माण(प्पमाण)वड्ढण करेह मा० २ त्ता हत्थिणापुर नयरं सब्भिंतरबाहिरिय आसियसमज्जिओवलित्त जाव करेह य कारवेह य करेत्ता य कारवेत्ता य जूयसहस्स वा चक्कसहस्स वा पूयामहामहिमसक्कार वा उस्सवेह २ त्ता ममेयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तए ण ते कोडुंबियपुरिसा बलेणं रन्ना एव वुत्ता समाणा जाव पच्चप्पि-णति । तए ण से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवाग-च्छित्ता त चेव जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता उस्सुक्क उक्कर उक्किट्ठ अदिज्ज अमिज्ज अभडप्पवेस अदंडकोदडिम अधरिम गणियावरनाडइज्जक-लिय अणेगतालाचराणुचरिय अणुद्धुयमुइग अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलिय सपु-रजणजाणवय दसदिवसे ठिइवडियं करेइ, तए णं से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य लंभे पडिच्छमाणे य पडिच्छावेमाणे य एव विहरइ । तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडिय करेन्ति, तइए दिवसे चदसूरदसणिय करेन्ति, छट्ठे दिवसे जागरिय करेन्ति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे सपत्ते बारसाहदिवसे विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेंति २ त्ता जहा सिवो जाव खत्तिए य आमतेंति २ त्ता तओ पच्छा ण्हाया त चेव जाव सक्कारेंति सम्माणेंति स०२ त्ता तस्सेव मित्तणाइ जाव राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जयपज्जय-पिउपज्जयागय बहुपुरिसपरंपरप्परूढ कुलाणुरूवं कुलसरिस कुलसताणततुविवद्धणकरं अयमेयारूव गोण गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेंति–जम्हा णं अम्हं इमे दारए बलस्स

वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नयरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं हत्थिणापुरे नयरे सिंघाडगतिय जाव परिसा पज्जुवासइ। तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जणवूहं वा एवं जहा जमाली तहेव चिंता तहेव कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ, कंचुइज्जपुरिसोवि तहेव अक्खाइ, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव निग्गच्छइ, एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहओ पउप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे सेसं तं चेव जाव सोवि तहेव रहवरेणं निग्गच्छइ, धम्मकहा जहा केसिसामिस्स सोवि तहेव अम्मापियरो आपुच्छइ, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए तहेव वुत्तपडिवुत्तया नवरं इमाओ य ते जाया विउलरायकुलबालियाओ कला० सेसं तं चेव जाव ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी-तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए, तए णं से महब्बले कुमारे अम्मापियराण वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ। तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो जाव अभिसिंचइ २ त्ता करयलपरिग्गहियं महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति जएणं विजएणं वद्धावित्ता एवं वयासी-भण जाया! किं देमो किं पयच्छामो सेसं जहा जमालिस्स तहेव जाव तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ २ त्ता बहूहिं चउत्थ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ २ त्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरिय जहा अम्मडो जाव बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, तत्थ णं महब्बलस्सवि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, से णं तुमं सुदंसणा! बंभलोए कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता ताओ चेव देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियगामे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए ॥४४१॥ तए णं तुमे सुदंसणा! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णायपरिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपन्नत्ते धम्मे निसंते सेवि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा! इदाणिं पकरेसि। से तेणट्ठेणं सुदंसणा!

एवं सदमाणीओ एव गिल्लीओ थिल्लीओ अट्ठ वियडजाणाइ वियडजाणप्पवराइं अट्ठ रहे पारिजाणिए अट्ठ रहे संगामिए अट्ठ आसे आसप्पवरे अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएण गामेण अट्ठ दासे दासप्पवरे एव दासीओ एवं किंकरे एव कंचुइज्जे एव वरिसधरे एव महत्तरए अट्ठ सोवन्निए ओलंवणदीवे अट्ठ रुप्पमए ओलंवणदीवे अट्ठ सुवन्नरुप्पमए ओलंवणदीवे अट्ठ सोवन्निए उक्कंचण-दीवे एवं चेव तिन्निवि, अट्ठ सोवण्णिए पंजरदीवे एव चेव तिण्णिवि, अट्ठ सोवण्णिए थाले अट्ठ रुप्पमए थाले अट्ठ सुवन्नरुप्पमए थाले अट्ठ सोवन्नियाओ पत्तीओ ३ अट्ठ सोवन्नियाइ थासयाइ ३ अट्ठ सोवन्नियाइ मंगल्ला(मल्लगा)इ ३ अट्ठ सोवन्नियाओ तलि-याओ ३ अट्ठ सोवन्नियाओ कविंचियाओ ३ अट्ठ सोवन्निए अवएडए अट्ठ सोवन्नियाओ अवयक्काओ ३ अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए ३ अट्ठ सोवन्नियाओ भिसियाओ ३ अट्ठ सोवन्नियाओ करोडियाओ ३ अट्ठ सोवन्निए पल्लंके ३ अट्ठ सोवन्नियाओ पडिसेज्जाओ ३ अट्ठ हंसासणाइं अट्ठ कोंचासणाइं एवं गरुलासणाइं उन्नयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं अट्ठ पउमासणाइं अट्ठ दिसा-सोवत्थियासणाइं अट्ठ तेल्लसमुग्गे जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठ सरिसवसमुग्गे अट्ठ खुज्जाओ जहा उववाइए जाव अट्ठ पारिसीओ अट्ठ छत्ते अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ अट्ठ चामराओ अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ अट्ठ तालियंटे अट्ठ तालियंट-धारीओ चेडीओ अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ अट्ठ खीरधाईओ जाव अट्ठ अंक-धाईओ अट्ठ अंगमद्दियाओ अट्ठ उम्मद्दियाओ अट्ठ ण्हावियाओ अट्ठ पसाहियाओ अट्ठ वन्नग(चंदण)पेसीओ अट्ठ चुन्नगपेसीओ अट्ठ कोट्ठागारीओ अट्ठ दवकारीओ अट्ठ उवत्थाणियाओ अट्ठ नाडइज्जाओ अट्ठ कोडुंबिणीओ अट्ठ महाणसिणीओ अट्ठ भंडा-गारिणीओ अट्ठ अ(ब्भा)ज्झाधारिणीओ अट्ठ पुप्फधारिणीओ अट्ठ पाणिधारिणीओ अट्ठ बलिकारीओ अट्ठ सेज्जाकारीओ अट्ठ अब्भिंतरियाओ पडिहारीओ अट्ठ बाहि-रियाओ पडिहारीओ अट्ठ मालाकारीओ अट्ठ पेसणकारीओ अन्न च सुबहु हिरन्न वा सुवन्न वा कंस वा दूसं वा विउलधणकणग जाव संतसारसावएज्ज अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउ पकाम भोत्तुं पकाम परिभाएउं। तए ण से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेग हिरन्नकोडिं दलयइ एगमेग सुवन्नकोडिं दलयइ एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ एव तं चेव सव्वं जाव एगमेग पेसणकारिं दलयइ अन्न च सुबहु हिरन्नं वा सुवण्ण वा जाव परिभाएउं, तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली जाव विहरइ ॥ ४२९ ॥ तेण कालेण तेणं समएण विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपन्ने

एव वुच्चइ-अत्थि णं एएसिं पलिओवमसागरोवमाण खएइ वा अवचएइ वा, तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेण अज्झवसाणेग सुभेण परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सण्णीपुव्वजाईसरणे समुप्पन्ने एयमट्ठं सम्म अभिसमेइ, तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेण भगवया महावीरेणं सभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसङ्घसवेगे आणंदसुपुण्णनयणे समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आ० २ वंदइ नमसइ व० २ त्ता एवं वयासी-एवमेयं भंते ! जाव से जहेयं तुब्भे वदहत्तिकट्टु उत्तरपुरच्छिमं दिसीभाग अवक्कमइ सेस जहा उसभदत्तस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइ दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, सेस तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥४३१॥

महव्वलो समत्तो ॥ एगारसमे सए एगारसमो उद्देसो समत्तो ॥

तेण कालेण तेण समएण आलंभिया नाम नयरी होत्था वण्णओ, सखवणे उज्जाणे वण्णओ, तत्थ ण आलंभियाए नयरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासगा परिवसति, अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरति । तए ण तेसिं समणोवासयाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण सन्नि(समु)विट्ठाणं सन्निसन्नाण अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-देवलोगेसु ण अज्जो ! देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठिइगहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी-देवलोएसु ण अज्जो ! देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव दससमयाहिया सखेज्जसमयाहिया असंखेज्जसमयाहिया उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य । तए ण ते समणोवासगा इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहति नो पत्तियंति नो रोयति एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ ४३२ ॥ तेणं कालेण तेणं समएग समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ । तए ण ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठा एव जहा तुगियउद्देसए जाव पज्जुवासति । तए ण समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाण तीसे य महइ० धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ । तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेन्ति उ० २ त्ता समण भगवं महावीरं वदन्ति नमसन्ति वं० २ त्ता एव वयासी-एवं खलु भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए

च्चेयजजुव्वेय जाव नएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ जाव आयावेमाणे विहरइ। तए ण तस्स पोग्गलस्स छट्ठंछट्ठेण जाव आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जहा सिवस्स जाव विभगे नाम अन्नाणे समुप्पन्ने, से ण तेण विभगेण अण्णाणेण समुप्पन्नेण बभलोए कप्पे देवाग ठिइ जाणइ पासइ। तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अत्थि ण मम अइसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाण जहन्नेण दसवास सहस्साइं ठिई प०, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिई प०, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य, एव सपेहेइ २ त्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ आ० २ त्ता तिदडकुंडिया जाव धाउरत्ताओ य गेण्हइ २ त्ता जेणेव आलभिया णयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भडनिक्खेव करेइ भ० २ त्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-अत्थि ण देवाणुप्पिया! मम अइसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाण जहन्नेण दसवाससहस्साइं तहेव जाव वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। तए ण आलभियाए नयरीए एएण अभिलावेण जहा सिवस्स त चेव जाव से कहमेय मन्ने एव? सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया, भगव गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्द निसामेइ तहेव बहुजणसद्द निसामेत्ता तहेव सव्व भाणियव्व जाव अह पुण गोयमा! एव आइक्खामि एव भासामि जाव परूवेमि-देवलोएसु णं देवाण जहन्नेण दस वास-सहस्साइ ठिई पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया दुसमयाहिया जाव उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। अत्थि ण भंते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं सवन्नाइपि अवन्नाइंपि तहेव जाव हता अत्थि, एवं ईसाणेवि, एवं जाव अच्चुए, एव गेवेज्जविमाणेसु अणुत्तरविमाणेसुवि, ईसिपब्भाराएवि जाव हता अत्थि, तए णं सा महइमहालिया जाव पडिगया, तए ण आलभियाए नयरीए सिंघाडगतिय० अवसेस जहा सिवस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे नवरं तिदड-कुंडिय जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविभंगे आलभिय नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ जाव उत्तरपुरच्छिम दिसीभाग अवक्कमइ २ त्ता तिदंड कुडियं च जहा खंदओ जाव पव्वइओ सेसं जहा सिवस्स जाव अव्वाबाह सोक्ख अणुभवति सासय सिद्धा। सेव भंते! २ त्ति ॥ ४३५ ॥ **एक्कारसमे सए बारहमो उद्देसो समत्तो, एक्कारसमं सयं समत्तं ॥**

उवागच्छइ । तए णं ते समणोवासगा तं विउलं असणं ४ आसाएमाणा जाव
विहरंति । तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि
धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मे कल्लं
जाव जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता तओ
पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते
पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए
सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं
सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जाव पज्जुवासइ, अभिगमो नत्थि । तए णं ते समणो-
वासगा कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते ण्हाया जाव सरीरा सएहिं सएहिं गेहेहिंतो
पडिनिक्खमंति २ त्ता एगयओ मिलायंति २ त्ता सेसं जहा पढमं जाव पज्जुवासंति ।
तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य धम्मकहा जाव आणाए
आराहए भवइ । तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं
धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति
नमंसंति वं० २ त्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता संखं
समणोवासयं एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एवं वयासी—
तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं जाव विहरिस्सामो तए णं तुमं पोसहसालाए
जाव विहरिए, तं सुट्ठु णं तुमं देवाणुप्पिया ! अम्हं हीलसि । अज्जोत्ति समणे भगवं
महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी—मा णं अज्जो ! तुब्भे संखं समणोवासगं हील-
निंदह खिंसह गरहह अवमन्नह, संखे णं समणोवासए पियधम्मे चेव दढधम्मे चेव
सुदक्खुजागरियं जागरिए ॥४१७॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ
नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी—कइविहा णं भंते ! जागरिया प० ? गोयमा ! तिविहा
जागरिया प० तं०—बुद्धजागरिया अबुद्धजागरिया सुदक्खुजागरिया, से केणट्ठेणं
भंते ! एवं वुच्चइ तिविहा जागरिया प० तं०—बुद्धजागरिया १ अबुद्धजागरिया २
सुदक्खुजागरिया ३ ? गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पन्ननाणदंसणधरा जहा
खंदए जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी एए णं बुद्धा बुद्धजागरियं जागरंति जे इमे अणगारा
भगवंतो इरियासमिया भासासमिया जाव गुत्तबंभयारी एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं
जागरंति जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति एए णं सुदक्खु-
जागरियं जागरंति से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तिविहा जागरिया जाव सुदक्खु-
जागरिया ॥४१८॥ तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ
वं० २ त्ता एवं वयासी—कोहवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ किं पकरेइ किं चिणाइ

णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव साइं २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति २ त्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति अ० २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असणपाणखाइमसाइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संखं समणोवासगं सद्दावेत्तए । तए णं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी-अच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुया वीसत्था अहन्नं संखं समणोवासगं सद्दावेमित्तिकट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुपविट्ठे । तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासगं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता पोक्खलिं समणोवासगं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता आसणेणं उवनिमंतेइ आ० २ त्ता एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयणं ? तए णं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी-कहिन्नं देवाणुप्पिए ! संखे समणोवासए ? तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव विहरइ । तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ ग० २ त्ता संखं समणोवासगं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असणं जाव साइमे उवक्खडाविए तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरामो, तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी-णो खलु कप्पइ मे देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए, तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुब्भे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा जाव विहरह, तए णं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता ते समणोवासए एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव विहरइ, तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुब्भे विउलं असणपाणखाइमसाइमं जाव विहरह, संखे णं समणोवासए नो

कि उवचिणाइ? ' सखा ! कोहवसट्टे ण जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ एव जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ । माणवसट्टे ण भंते ! जीवे एव चेव । एव मायावसट्टेवि, एवं लोभवसट्टेवि जाव अणु-परियट्टइ । तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया ससारभउव्विग्गा समण भगव महावीरं वदंति नमं-सति व० २ त्ता जेणेव सखे समणोवासए तेणेव उवागच्छति २ त्ता सखं समणोवासग वदति नमसति वं० २ त्ता एयमट्ठं सम्म विणएण भुज्जो २ खामेंति । तए ण ते समणोवासगा सेस जहा आलभियाए जाव पडिगया, भंते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वंदइ नमसइ वं० २ त्ता एवं वयासी–पभू ण भंते ! सखे समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय सेस जहा इसिभद्दपुत्तस्स जाव अत काहिइ । सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ४३९ ॥ **बारहमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

तेण कालेण तेण समएण कोसबी नाम नयरी होत्था वण्णओ, चदो(त्तराय)वतरणे उज्जाणे वण्णओ, तत्थ ण कोसबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते चेडगस्स रण्णो नत्तुए मिगावईए देवीए अत्तए जयतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदायणे नामं राया होत्था वण्णओ, तत्थ ण कोसबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा सयाणीयस्स रण्णो भज्जा चेडगस्स रण्णो धूया उदायणस्स रण्णो माया जयतीए समणोवासियाए भाउज्जा मियावई नाम देवी होत्था वण्णओ सुकुमाल जाव सुरूवा समणोवासिया जाव विहरइ, तत्थ णं कोसबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया सयाणीयस्स रण्णो भगिणी उदायणस्स रण्णो पिउच्छा मिगावईए देवीए नणंदा वेसालीसावयाण अरहताण पुव्वसिज्जायरी जयती नाम समणोवासिया होत्था सुकु-माल जाव सुरूवा अभिगय जाव विहरइ ॥४४०॥ तेण कालेणं तेण समएण सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ । तए णं से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कोसबिं नयरिं सब्भितरबाहिरियं एव जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव पज्जुवासइ । तए ण सा जयती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव मिगावई देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मियावइ देविं एवं वयासी–एव जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ । तए ण सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए जहा देवाणदा जाव पडिसुणेइ । तए ण सा मियावई देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्तजोइय जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणति । तए ण सा मियावई देवी

सीयाभिमुहे पढमो नेरइयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पाबहु-गंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥४४०॥ बारसमसए तइओ उद्देसो समत्तो॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-दो भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति एग-यओ साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! दुपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ। तिन्नि भंते! परमा-णुपोग्गला एगयओ साहन्नंति २ ता किं भवइ? गोयमा! तिपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे तिन्नि परमाणुपोग्गला भवंति। चत्तारि भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति पुच्छा गोयमा! चउप्पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि चउहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु-पोग्गले एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा दो दुपएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, चउहा कज्ज-माणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति। पंच भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा गोयमा! पंचपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि चउहावि पंचहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमा-णुपोग्गले एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपो-ग्गला भवंति। छब्भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा गोयमा! छप्पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव छव्विहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ पर-माणुपोग्गले एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एग-यओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा दो तिपएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ पर-माणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुप-एसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति। सत्त भंते! पर-माणुपोग्गला पुच्छा गोयमा! सत्तपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव

भवति, एएसिं जीवाणं सुत्तत्त साहू, जयती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति एएसि ण जीवाणं जागरियत्त साहू, एए णं जीवा जागरा समाणा वहूण पाणाण जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति, ते ण जीवा जागरमाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा वहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं सजोएत्तारो भवति, एए णं जीवा जागरमाणा धम्मजागरियाए अप्पाग जागरइत्तारो भवति, एएसि ण जीवाग जागरियत्त साहू, से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ अत्थेगइयाण जीवाण सुत्तत्त साहू अत्थेगइयाण जीवाण जागरियत्त साहू ॥ वलियत्त भते ! साहू दुव्वलियत्त साहू ? जयंती ! अत्थेगइयाण जीवाण वलियत्त साहू अत्थेगइयाण जीवाण दुव्वलियत्त साहू, से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ जाव साहू ? जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरति एएसि ण जीवाण दुव्वलियत्त साहू, एए ण जीवा एव जहा सुत्तस्स तहा दुव्वलियस्स वत्तव्वया भाणियव्वा, वलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्व जाव सजोएत्तारो भवति, एएसि ण जीवाग वलियत्त साहू, से तेणट्ठेण जयंती ! एवं वुच्चइ त चेव जाव साहू ॥ दक्खत्त भंते ! साहू आलसियत्त साहू ? जयती ! अत्थेगइयाणं जीवाण दक्खत्त साहू अत्थेगइयाण जीवाण आलसियत्त साहू, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ त चेव जाव साहू ? जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति एएसि ण जीवाण आलसियत्त साहू, एए ण जीवा आलसा समाणा नो वहूण जहा सुत्ता तहा आलसा भाणियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा जाव सजोएत्तारो भवति, एए ण जीवा दक्खा समाणा वहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं उवज्झाय० थेर० तवस्सि० गिलाणवेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं कुलवेयावच्चेहिं गणवेयावच्चेहिं सघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताण सजोएत्तारो भवति, एएसि ण जीवाणं दक्खत्त साहू, से तेणट्ठेण त चेव जाव साहू ॥ सोइंदियवसट्टे ण भते ! जीवे किं वधइ ? एव जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ । एव चक्खिदियवसट्टेवि, एवं जाव फासिंदियवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ । तए ण सा जयती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेस जहा देवाणदाए तहेव पव्वइया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा । सेव भते ! २ त्ति ॥ ४४७ ॥

वारहमे सए वीओ उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे जाव एव वयासी-कइ ण भते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-पढमा दोच्चा जाव सत्तमा । पढमा ण भते ! पुढवी किंनामा किंगोत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! घम्मा नामेणं रयणप्पभा गोत्तेग, एव जहा

सिए खंधे भवइ अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवन्ति सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति ॥ नव भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा ! जाव नवविहा कज्जंति, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ,एवं एक्केक्कं संचा(रे)तेहिं जाव अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा तिन्नि तिपएसिया खंधा भवंति चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति, छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवंति ॥ दस भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा ! जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ

सत्तहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ,चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति। अट्ठ भंते! परमाणुपोग्गला० पुच्छा, गोयमा! अट्ठपएसिए खंधे भवइ जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुप्पएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दोन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपएसिया खंधा० एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति, छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ तिपए-

एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति अहवा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवंति। संखेज्जा णं भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति एगयओ साहन्नित्ता किं भवइ? गोयमा! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि संखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दसपएसिए एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा

नवपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ एवं एक्केक्कं संचारेयव्वंति जाव अहवा दो पंचपएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चउप्पएसिए० एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा० एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए० एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए० एगयओ तिपएसिए० एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा० एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ छपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु० एग० दो दुपएसिया खंधा एग० चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे० एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि दुपएसिया० एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवंति, छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए० एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपएसिया खंधा० एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति, सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए०

दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्जपएसिए एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दुपएसिए एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति अहवा तिण्णि अणंतपएसिया खंधा भवंति चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ एवं चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्जसंजोगो एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताणवि भाणियव्वा नवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ अहवा संखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति, असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ असंखेज्जा दुपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति ॥ ४४४ ॥ एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेयाणुवाएणं अणंताणं पोग्गलपरियट्टाणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया ? हंता गोयमा ! एएसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेएणं जाव मक्खाया ॥ कइविहे णं भंते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते तंजहा–ओरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्विय तेयाकम्मगपरियट्टे कम्मापोग्गलपरियट्टे मणपोग्गलपरियट्टे वइपोग्गलपरियट्टे आणापाणुपोग्गलपरियट्टे । णेरइयाणं भंते ! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते तंजहा–ओरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया ? गोयमा ! अणंता, केवइया पुरेक्खडा ?

चत्तारि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, एवं एएण कमेण पंचगसंजोगोवि भाणियव्वो जाव नवगसंजोगो, दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्ज-पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए० एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं एएणं कमेण एक्केक्को पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ नव संखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति। असंखेज्जा णं भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति एगयओ साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि संखेज्जहावि असंखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असं-खेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए० एगयओ असंखेज्जप-एसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमा-णुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एग-यओ दुपएसिए० एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमा-णुपोग्गले एगयओ दसपएसिए० एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एग-यओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए० एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दुपएसिए० एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति एवं जाव अहवा एग-यओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति अहवा तिन्नि असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं चउक्कगसंजोगो जाव दसगसंजोगो ए(व)ए जहेव संखेज्जपएसियस्स नवरं असंखेज्जय एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति, संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया खंधा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपए-सिया खंधा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्ज-पएसिया खंधा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ अहवा संखेज्जा असंखेज्जपए-सिया खंधा भवंति, असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति। अणंता णं भंते! परमाणुपोग्गला जाव किं भवंति? गोयमा! अणंतपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव दसहावि संखेज्जहा असंखेज्जहा अणंतहावि कज्जइ,

गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्सऽत्थि जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा० ? एवं चेव, एव जाव वेमाणियस्स। एगमेगस्स ण भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीया ? गोयमा ! अणंता, एव जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि भाणियव्वा, एव जाव वेमाणियस्स एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा, एए एगत्ति(इ)या सत्त दंडगा भवति। नेरइयाण भते ! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया ? गोयमा ! अणता, केवइया पुरक्खडा ? अणंता, एव जाव वेमाणियाण, एव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टावि जाव वेमाणियाणं, एव एए पोहत्तिया सत्तचउव्वीसइ दंडगा ॥ एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया ? गोयमा ! नत्थि एक्कोवि, केवइया पुरक्खडा ? नत्थि एक्कोवि, एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा० ? एव चेव, एव जाव थणियकुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते। एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविक्काइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया ? अणता, केवइया पुरक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्सत्थि तस्स जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा एवं जाव मणुस्सत्ते, वाणमतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते। एगमेगस्स ण भते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवइया अतीया ओरालियपोग्गलपरियट्टा एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया तहा असुरकुमारस्सवि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते, एव जाव थणियकुमारस्स, एव पुढविकाइयस्सवि, एव जाव वेमाणियस्स, सव्वेसिं एक्को गमो। एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीया ? अणता, केवइया पुरक्खडा ? एगुत्तरिया जाव अणंता, एवं जाव थणियकुमारत्ते, पुढविकाइयत्ते पुच्छा, नत्थि एक्कोवि, केवइया पुरक्खडा ? नत्थि एक्कोवि, एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरि(या)ओ जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविक्काइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। तेयापोग्गलपरियट्टा कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एगुत्तरिया भाणियव्वा, मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगुत्तरिया, विगलिंदिएसु नत्थि, वइपोग्गलपरियट्टा एव चेव, नवरं एगिंदिएसु नत्थि भाणियव्वा। आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एगुत्तरिया एवं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। नेरइयाणं भते ! नेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीया ? नत्थि एक्कोवि, केवइया पुरक्खडा ? नत्थि एक्कोवि, एव जाव थणि-

वन्ना वेरमणा धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए एए सव्वे अवन्ना जाव अफासा
णवरं पोग्गलत्थिकाए पंचवन्ने पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे पन्नत्ते - णाणावरणिज्जे जाव
अंतराइए एयाणि जाव चउफासाणि कण्हलेसा णं भंते ! कइवन्ना ४ पं० ? गोयमा !
दव्वलेसं पडुच पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पन्नत्ता भावलेसं पडुच अवन्ना ४ एवं
जाव सुक्कलेसा सम्मद्दिट्ठी ३ चक्खुदंसणे ४ आभिणिबोहियणाणे ५ जाव विभंगणाणे
आहारसन्ना जाव परिग्गहसन्ना एयाणि अवन्नाणि ४ ओरालियसरीरे जाव तेय-
सरीरे एयाणि अट्ठफासाणि कम्मगसरीरे चउफासे मणजोगे य वइजोगे य चउफासे
कायजोगे अट्ठफासे सागारोवओगे य अणागारोवओगे य अवन्ना । सव्वदव्वा
णं भंते ! कइवन्ना पुच्छा गोयमा ! अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवन्ना जाव अट्ठ-
फासा पन्नत्ता अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवन्ना जाव चउफासा पन्नत्ता अत्थेगइया
सव्वदव्वा एगवन्ना एगगंधा एगरसा दुफासा पन्नत्ता अत्थेगइया सव्वदव्वा
अवन्ना जाव अफासा पन्नत्ता एवं सव्वपएसावि सव्वपज्जवावि तीयद्धा अवन्ना
जाव अफासा पन्नत्ता एवं जाव अणागयद्धावि एवं सव्वद्धावि ॥ ४४७ ॥ जीवे णं
भंते ! गब्भं वक्कममाणे कइवन्नं कइगंधं कइरसं कइफासं परिणामं परिणमइ ?
गोयमा ! पंचवन्नं पंचरसं दुगंधं अट्ठफासं परिणामं परिणमइ ॥ ४४८ ॥ कम्मओ
णं भंते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ कम्मओ णं जए नो अकम्मओ
विभत्तिभावं परिणमइ ? हंता गोयमा ! कम्मओ णं तं चेव जाव परिणमइ णो
अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ, सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४४९ ॥ बारसमे
सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव
एवं परूवेइ-एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ एवं २ से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा !
जं णं से बहुजणे णं अन्नमन्नस्स जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा !
एवमाइक्खामि जाव एवं परूवेमि-एवं खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव महेसक्खे
वरवत्थधरे वरमल्लधरे वरगंधधरे वराभरणधारी राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा
प० तंजहा-सिंघाडए १ जडिलए २ खंभए [खत्तए] ३ खरए ४ ददुरे ५ मगरे
६ मच्छे ७ कच्छभे ८ कण्हसप्पे ९, राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवन्ना पन्नत्ता
तंजहा-किण्हा नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किला अत्थि कालए राहुविमाणे खंजण-
वन्नाभे पन्नत्ते अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवन्नाभे प० अत्थि लोहिए राहुवि-
माणे मंजिट्ठवन्नाभे प० अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवन्नाभे पन्नत्ते अत्थि सुक्किलए
राहुविमाणे भासरासिवन्नाभे पन्नत्ते ॥ जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे

पण्णत्ते? गोयमा! पंचवन्ने पंचरसे दुगंधे चउफासे पण्णत्ते॥ अह भंते! माणे मदे दप्पे थंभे गव्वे अ(णु)त्तुक्कोसे परपरिवाए उक्कासे अवक्कासे उन्नए उन्नामे दुन्नामे १२, एस णं कइवन्ने ४ प०? गोयमा! पंचवन्ने जहा कोहे तहेव। अह भंते! माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरूए जिम्हे किव्विसे १० आयरणया गूहणया वंचणया पलिउंचणया साइजोगे य १५, एस णं कइवन्ने ४ प०? गोयमा! पंचवन्ने जहेव कोहे॥ अह भंते! लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तण्हा भिज्झा अभिज्झा आसासणया पत्थणया १० लालप्पणया कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदिरागे १६, एस णं कइवन्ने ४ प०? गोयमा! जहेव कोहे। अह भंते! पेज्जे दोसे कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले एस णं कइवन्ने ४ प०? जहेव कोहे तहेव जाव चउफासे॥४४८॥ अह भंते! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे एस णं कइवन्ने जाव कइफासे पण्णत्ते? गोयमा! अवन्ने अगंधे अरसे अफासे पण्णत्ते॥ अह भंते! उप्पत्तिया वेणइया कम्मिया परिणामिया एस णं कइवन्ना ४ प०? तं चेव जाव अफासा पन्नत्ता॥ अह भंते! उग्गहे ईहा अवाए धारणा एस णं कइवन्ना ४ प०? एवं चेव जाव अफासा पन्नत्ता॥ अह भंते! उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे एस णं कइवन्ने ४ प०? तं चेव जाव अफासे पन्नत्ते। सत्तमे णं भंते! उवासंतरे कइवन्ने ४ प०? एवं चेव जाव अफासे पन्नत्ते। सत्तमे णं भंते! तणुवाए कइवन्ने ४ प०? जहा पाणाइवाए, नवरं अट्ठफासे पण्णत्ते, एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए घणोदही पुढवी, छट्ठे उवासंतरे अवन्ने, तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी एयाइं अट्ठ फासाइं, एवं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं, जंबुद्दीवे २ जाव सयंभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारा पुढवी, नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि। नेरइया णं भंते! कइवन्ना जाव कइफासा पन्नत्ता? गोयमा! वेउव्वियतेयाइं पडुच्च पंचवन्ना पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवन्ना पंचरसा दुगंधा चउफासा पण्णत्ता, जीवं पडुच्च अवन्ना जाव अफासा पण्णत्ता, एवं जाव थणियकुमारा, पुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा! ओरालियतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च जहा नेरइयाणं, जीवं पडुच्च तहेव, एवं जाव चउरिंदिया, नवरं वाउक्काइया ओरालियवेउव्वियतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, सेसं जहा नेरइयाणं, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया, मणुस्साणं पुच्छा, गोयमा! ओरालियवेउव्वियआहारगतेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइयाणं, वाणमंतरजोइसियवेमाणिया

भंते! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो कइ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ? जहा दसमसए जाव
णो चेव णं मेहुणवत्तियं। सूरस्सवि तहेव। चंदिमसूरिया णं भंते! जोइसिंदा जोइ-
सरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति? गोयमा! से जहानामए
केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धिं अचि-
रवत्तविवाहकज्जे अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवासिए से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे
अणहसम(ए)ग्गे पुणरवि नियगगिहं हव्वमागए ण्हाए सव्वालंकारविभूसिए मणुन्नं
थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि
वण्णओ महब्बले जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगा-
रागारचारुवेसाए जाव कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धिं इट्ठे सद्दे
फरिसे जाव पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा, से णं गोयमा!
पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ?
ओरालं समणाउसो! तस्स णं गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं
देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो
असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा
असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं
एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा असुरकुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो
गहगणनक्खत्ततारारूवाणं जोइसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव
कामभोगा गहगणनक्खत्त० जाव कामभोगेहिंतो चंदिमसूरियाणं जोइसियाणं जोइ-
सराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा चंदिमसूरिया णं गोयमा! जोइ-
सिंदा जोइसरायाणो एरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। सेवं भंते! सेवं
भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव विहरइ ॥ ४५५ ॥ बारहमे
सए छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी–केमहालए णं भंते! लोए पन्नत्ते?
गोयमा! महतिमहालए लोए पन्नत्ते पुरच्छिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ
दाहिणेणं असंखेज्जाओ एवं चेव, एवं पच्चत्थिमेणवि एवं उत्तरेणवि एवं उड्ढंपि अहे
असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं। एयंसि णं भंते! एमहालगंसि
लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा न
मए वावि? गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ एयंसि णं
एमहालगंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जत्थ णं अयं जीवे न
जाए वा न मए वावि? गोयमा! से जहानामए–केइ पुरिसे अयासयस्स एगं महं

वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्स पुरच्छिमेणं आवरेत्ता ण पच्चच्छिमेणं वीईवयइ, तया ण पुरच्छिमेण चदे उवदसेइ पच्चच्छिमेण राहू, जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्स पच्चच्छिमेणं आवरेत्ताण पुरच्छिमेण वीईवयइ, तया ण पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेइ पुरच्छिमेण राहू, एवं जहा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेण य दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेण उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा, एव उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चच्छिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा एवं चेव जाव तया ण उत्तरपच्चच्छिमेणं चदे उवदंसेइ दाहिणपुरच्छिमेण राहू, जया ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेमाणे २ चिट्ठइ, तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एव खलु राहू चंद गेण्हइ एवं०, जया ण राहू आगच्छमाणे वा ४ चदस्स लेस्स आवरेत्ताण पासेणं वीईवयइ तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एव खलु चदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना एव०, जया ण राहू आगच्छमाणे वा ४ चदस्स लेस आवरेत्ताण पच्चोसक्कइ तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु राहुणा चदे वंते एव०, जया ण राहू आगच्छमाणे वा जाव परियारेमाणे वा चदलेस्स अहे सपक्खि सपडिदिसिं आवरेत्ताण चिट्ठइ, तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एव खलु राहुणा चदे घत्थे एव० ॥ कइविहे ण भंते ! राहू पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे राहू पन्नत्ते, तजहा-धुवराहू य पव्वराहू य, तत्थ णं जे से धुवराहू से णं वहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसतिभागेणं पन्नरसभाग चदस्स लेस्सं आवरेमाणे २ चिट्ठइ, तजहा-पढमाए पढम भाग विइयाए विइयं भाग जाव पन्नरसेसु पन्नरसम भाग, चरिमसमए चंदे रत्ते भवइ अवसेसे समए चदे रत्ते वा विरत्ते वा भवइ, तमेव सुक्कपक्खस्स उवदसेमाणे २ चिट्ठइ तं० पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसम भाग, चरिमसमए चंदे विरत्ते भवइ अवसेसे समए चंदे रत्ते वा विरत्ते वा भवइ, तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहन्नेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं-बायालीसाए मासाण चदस्स, अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स ॥४५२॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ-चदे ससी २ ? गोयमा ! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो मियके विमाणे कता देवा कताओ देवीओ कंताइ आसणसयणखभमडमत्तोवगरणाई अप्पणोवि य ण चंदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कते सुभगे पियदसणे सुरूवे से तेणट्ठेण जाव ससी ॥ ४५३ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ-सूरे आइच्चे सूरे० २ ? गोयमा ! सूराइया ण समयाइ वा आवलियाइ वा जाव उस्सप्पिणीइ वा अवसप्पिणीइ वा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव आइच्चे० २ ॥४५४॥ चंदस्स णं

णाणि य णं एवं चेव एवं जाव मणुस्सेसु, नवरं तेइंदिएसु जाव वणस्सइकाइयत्ताए बेइंदियत्ताए चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए सेसं जहा बेइंदियाणं वाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणेसु य जहा असुरकुमाराणं । अयण्णं भंते ! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणियावासंसि पुढविकाइयत्ताए सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवित्ताए, एवं सव्वजीवावि, एवं जाव आणयपाणएसु, एवं आरणच्चुएसुवि । अयण्णं भंते ! जीवे तिसुवि अट्ठारसुत्तरेसु गेवेज्जविमाणावाससएसु एवं चेव । अयन्नं भंते ! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि तहेव जाव अणंतखुत्तो नो चेव णं देवत्ताए वा देवित्ताए वा एवं सव्वजीवावि । अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए पियत्ताए भाइत्ताए भगिणित्ताए भज्जत्ताए पुत्तत्ताए धूयत्ताए सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो सव्वजीवावि णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वा ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए वेरियत्ताए घायगत्ताए वहगत्ताए पडिणीयत्ताए पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो सव्वजीवावि णं भंते ! एवं चेव । अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! असइं जाव अणंतखुत्तो सव्वजीवाणं एवं चेव । अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए पेसत्ताए भयगत्ताए भाइल्लगत्ताए भोगपुरिसत्ताए सीसत्ताए वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो एवं सव्वजीवावि जाव अणंतखुत्तो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ४५७ ॥ बारसमे सए सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी–देवे णं भंते ! महिड्डिए जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ? हंता गोयमा ! उववज्जेज्जा, से णं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ? हंता सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा । देवे णं भंते ! महिड्डिए एवं चेव जाव बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा एवं चेव जहा नागाणं । देवे णं भंते ! महिड्डिए जाव बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ? हंता उववज्जेज्जा एवं चेव नवरं इमं नाणत्तं जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा सेसं तं चेव जाव अंतं करेज्जा ॥ ४५८ ॥ अह

अयावयं करेज्जा, से णं तत्थ जहन्नेणं एग वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण अयास-हस्स पक्खिवेज्जा, ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहन्नेण एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, अत्थि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा पास-वणेण वा खेलेण वा सिंघाणएण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहिं वा रोमेहिं वा सिंगेहिं वा खुरेहिं वा नहेहिं वा अणाकंतपुव्वे भवइ ? भगवं ! णो इणट्ठे समट्ठे, होज्जावि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जे ण तासिं अयाण उच्चारेण वा जाव णहेहिं वा अणक्कंतपुव्वे णो चेव ण एयंसि एमहालयंसि लोगंसि लोगस्स सासयं भावं ससारस्स य अणाइभाव जीवस्स य णिच्चभावं कम्मबहुत्त जम्मणमरणबाहुल्लं च पडुच्च नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जत्थ णं अय जीवे न जाए वा न मए वावि, से तेणट्ठेणं त चेव जाव न मए वावि ॥ ४५६ ॥ कइ ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ जहा पढमसए पचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव अणुत्तरविमाणेत्ति जाव अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । अयन्न भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए नरगत्ताए नेरइयत्ताए उव-वन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! असइ अदुवा अणंतखुत्तो, अयन्न भंते ! जीवे सक्करप्प-भाए पुढवीए पणवीसाए एव जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा, एव जाव धूमप्पभाए । अयन्न भंते ! जीवे तमाए पुढवीए पचूणे निरयावाससयस-हस्से एगमेगंसि सेस त चेव, अयन्न भंते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावाससि सेस जहा रयणप्प-भाए, अयन्न भंते ! जीवे चोसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुर-कुमारावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण सयणभंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणतखुत्तो, सव्वजीवावि ण भंते ! एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारेसु, नाणत्त आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया, अयन्न भंते ! जीवे असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइ-यावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणतखुत्तो, एव सव्वजीवावि, एव जाव वणस्सइकाइएसु, अयण्णं भंते ! जीवे असखे-ज्जेसु बेंदियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि बेंदियावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्स-इकाइयत्ताए बेइंदियत्ताए उववन्नपुव्वे ? हता गोयमा ! जाव अणतखुत्तो, सव्वजी-

वासि वा एवं चेव एवं जाव मणुस्सेसु, नवरं तेइंदिएसु जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेइंदियत्ताए चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए सेसं जहा बेंदियाणं वाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणेसु य जहा असुरकुमाराणं अयन्नं भंते ! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणियावासंसि पुढविकाइयत्ताए सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो नो चेव णं देवित्ताए, एवं सव्वजीवावि एवं जाव आणयपाणएसु, एवं आरणच्चुएसुवि अयन्नं भंते ! जीवे तिसुवि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससएसु एवं चेव अयन्नं भंते ! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि तहेव जाव अणंतखुत्तो नो चेव णं देवत्ताए वा देवित्ताए वा एवं सव्वजीवावि । अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए पियत्ताए भाइत्ताए भगिणित्ताए भज्जत्ताए पुत्तत्ताए धूयत्ताए सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो सव्वजीवावि णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वा ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए वेरियत्ताए घायगत्ताए वहगत्ताए पडिणीयत्ताए पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो सव्वजीवावि णं भंते ! एवं चेव अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! असइं जाव अणंतखुत्तो सव्वजीवाणं एवं चेव । अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए पेसत्ताए भयगत्ताए भाइल्लत्ताए भोगपुरिसत्ताए सीसत्ताए वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो एवं सव्वजीवावि जाव अणंतखुत्तो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ४५७ ॥ बारसमे सए सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी—देवे णं भंते ! महड्ढिए जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ? हंता गोयमा ! उववज्जेज्जा से णं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ? हंता सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा, देवे णं भंते ! महड्ढिए एवं चेव जाव बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा एवं चेव जहा नागाणं देवे णं भंते ! महड्ढिए जाव बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ? हंता उववज्जेज्जा एवं चेव, नवरं इमं नाणत्तं जाव संनिहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा सेसं तं चेव जाव अंतं करेज्जा ॥ ४५८ ॥ अह

भंते! गोलंगूलवसभे कुक्कुडवसभे मंडुक्कवसभे एए णं निस्सीला निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा? समणे भगवं महावीरे वागरेइ-उववज्जमाणे उववन्नेत्ति वत्तव्वं सिया। अह भंते! सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणीउद्देसए जाव परस्सरे एए णं निस्सीला एवं चेव जाव वत्तव्वं सिया, अह भंते! ढंके कंके विलए मग्गुए सिखीए, एए णं निस्सीला० सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं सिया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥ ४५९ ॥

बारहमे सए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

कइविहा णं भंते! देवा पण्णत्ता? गोयमा! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तंजहा-भवियदव्वदेवा १ नरदेवा २ धम्मदेवा ३ देवा(इ)हिदेवा ४ भावदेवा ५, से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ भवियदव्वदेवा भवियदव्वदेवा? गोयमा! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ भवियदव्वदेवा २, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ नरदेवा नरदेवा? गोयमा! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी उप्पन्नसमत्तचक्करयणप्पहाणा नवनिहिपइणो समिद्धकोसा बत्तीसं रायवरसहस्साणुजायमग्गा सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिंदा से तेणट्ठेण जाव नरदेवा २, से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ धम्मदेवा धम्मदेवा? गोयमा! जे इमे अणगारा भगवंतो इरियासमिया जाव गुत्तबंभयारी से तेणट्ठेण जाव धम्मदेवा २, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ देवाहिदेवा देवाहिदेवा? गोयमा! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पन्ननाणदंसणधरा जाव सव्वदरिसी से तेणट्ठेण जाव देवाहिदेवा २, से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ-भावदेवा भावदेवा? गोयमा! जे इमे भवणवइवाणमंतरजोइसियवेमाणिया देवा देवगइनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति से तेणट्ठेण जाव भावदेवा ॥ ४६० ॥ भवियदव्वदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख० मणुस्स० देवेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरि० मणु० देवेहिंतोवि उववज्जंति, भेओ जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, नवरं असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमियअंतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपराजियदेवेहिंतोवि उववज्जंति, णो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति। नरदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइए० पुच्छा, गोयमा! नेरइएहिंतो उववज्जंति नो तिरि० नो मणु० देवेहिंतोवि उववज्जंति, जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति?

भंते ! गोलंगूलवसभे कुक्कुडवसभे मडुक्कवसभे एए णं निस्सीला निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ? समणे भगवं महावीरे वागरेइ-उववज्जमाणे उववन्नेत्ति वत्तव्वं सिया । अह भंते ! सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणीउद्देसए जाव परस्सरे एए ण निस्सीला एवं चेव जाव वत्तव्वं सिया, अह भंते ! ढंके कंके विलए मग्गुए सिखीए, एए णं निस्सीला० सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं सिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ४५९ ॥

बारहमे सए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

कइविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तंजहा-भवियदव्वदेवा १ नरदेवा २ धम्मदेवा ३ देवा(दे)हिदेवा ४ भावदेवा ५, से केण-ट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ भवियदव्वदेवा भवियदव्वदेवा ? गोयमा ! जे भविए पंचिं-दियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ भवियदव्वदेवा २, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ नरदेवा नरदेवा ? गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी उप्पन्नसमत्तचक्करयणप्पहाणा नवनिहि-पइणो समिद्धकोसा बत्तीस रायवरसहस्साणुजायमग्गा सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिंदा से तेणट्ठेण जाव नरदेवा २, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ धम्मदेवा धम्मदेवा ? गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो इरियासमिया जाव गुत्तबंभ-यारी से तेणट्ठेण जाव धम्मदेवा २, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवाहिदेवा देवाहिदेवा ? गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पन्ननाणदंसणधरा जाव सव्वदरिसी से तेणट्ठेण जाव देवाहिदेवा २, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-भावदेवा भावदेवा ? गोयमा ! जे इमे भवणवइवाणमंतरजोइसियवेमाणिया देवा देवगइनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति से तेणट्ठेणं जाव भावदेवा ॥ ४६० ॥ भवियदव्वदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख० मणुस्स० देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरि० मणु० देवेहिंतोवि उववज्जंति, भेओ जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव अणु-त्तरोववाइयत्ति, नवरं असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमियअंतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपराजियदेवेहिंतोवि उववज्जंति, णो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति । नरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइए० पुच्छा, गोयमा ! नेरइएहिंतो उव-वज्जंति नो तिरि० नो मणु० देवेहिंतोवि उववज्जंति, जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ?

एसु उववज्जंति नो तिरि० नो मणु० णो देवेसु उववज्जंति, जइ नेरइएसु उववज्जंति० सत्तसुवि पुढवीसु उववज्जंति। धम्मदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा, गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जंति नो तिरि० नो मणु० देवेसु उववज्जंति, जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि० पुच्छा, गोयमा! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति नो वाणमंतर० नो जोइसिय० वेमाणियदेवेसु उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइएसु उववज्जंति, अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति। देवाहिदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति? गोयमा! सिज्झंति जाव अंतं करेंति। भावदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा, जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा॥ भवियदव्वदेवे णं भंते! भवियदव्वदेवेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, एवं जहेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणावि जाव भावदेवस्स, नवरं धम्मदेवस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी॥ भवियदव्वदेवस्स णं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो। नरदेवाणं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं साइरेगं सागरोवमं उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। धम्मदेवस्स णं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमपुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। देवाहिदेवाणं पुच्छा, गोयमा! नत्थि अंतरं। भावदेवस्स णं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो॥ एएसि णं भंते! भवियदव्वदेवाणं नरदेवाणं जाव भावदेवाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवाहिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा॥ ४६४॥ एएसि णं भंते! भावदेवाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं गेवेज्जगाणं अणुत्तरोववाइयाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे भावदेवा संखेज्जगुणा एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा। सेवं भंते! २ त्ति॥ ४६५॥ **बारहमस्स सयस्स नवमो उद्देसो समत्तो॥**

कइविहा णं भंते! आया पण्णत्ता? गोयमा! अट्ठविहा आया पण्णत्ता, तंजहा–दवियाया कसायाया जोगाया उवओगाया णाणाया दंसणाया चरित्ताया वीरियाया॥

जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स कसायाया जस्स कसायाया तस्स दवियाया ? गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि । जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स जोगाया ? एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगायावि भाणियव्वा । जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स उवओगाया एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियमं अत्थि जस्सवि उवओगाया तस्सवि दवियाया नियमं अत्थि जस्स दवियाया तस्स णाणाया भयणाए, जस्स पुण णाणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि जस्स दवियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि जस्सवि दंसणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियमं अत्थि एवं वीरियायाएवि समं । जस्स णं भंते ! कसायाया तस्स जोगाया पुच्छा गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियमं अत्थि जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि एवं उवओगायाएवि समं कसायाया नेयव्वा कसायाया य णाणाया य परोप्परं दोवि भइयव्वाओ जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दंसणाया य कसायाया य चरित्ताया य दोवि परोप्परं भइयव्वाओ जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ, एवं जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाएवि उवरिमाहिं समं भाणियव्वा । जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगायाएवि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा । जस्स णाणाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए, जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया नियमं अत्थि णाणाया वीरियाया दोवि परोप्परं भयणाए । जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दोवि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि । जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाया नियमं अत्थि जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि ॥ एयासि णं भंते ! दवियायाणं कसायायाणं जाव वीरियायाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ णाणायाओ अणंतगुणाओ कसायायाओ अणंतगुणाओ जोगायाओ विसेसाहियाओ वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उवओगदवियदंसणायाओ तिन्निवि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ ४६६ ॥ आया भंते ! नाणे अन्नाणे ? गोयमा ! आया सिय नाणे सिय अन्नाणे णाणे पुण नियमं आया ॥ आया भंते ! नेरइयाणं नाणे अन्ने नेरइयाणं नाणे ? गोयमा ! आया नेरइयाणं

एसु उववज्जंति नो तिरि० नो मणु० णो देवेसु उववज्जंति, जइ नेरइएसु उववज्जंति० सत्तसुवि पुढवीसु उववज्जंति। धम्मदेवा ण भंते! अणंतर उव्वट्टित्ता पुच्छा, गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जंति नो तिरि० नो मणु० देवेसु उववज्जंति, जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि० पुच्छा, गोयमा! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति नो वाणमंतर० नो जोइसिय० वेमाणियदेवेसु उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइएसु उववज्जंति, अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति। देवाहिदेवा ण भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति? गोयमा! सिज्झंति जाव अंतं करेंति। भावदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा, जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा॥ भवियदव्वदेवे ण भंते! भवियदव्वदेवेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, एवं जहेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणावि जाव भावदेवस्स, नवरं धम्मदेवस्स जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी॥ भवियदव्वदेवस्स णं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ? गोयमा! जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो। नरदेवाणं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं साइरेगं सागरोवमं उक्कोसेणं अणंतं कालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। धम्मदेवस्स णं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं पलिओवमपुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। देवाहिदेवाणं पुच्छा, गोयमा! नत्थि अंतरं। भावदेवस्स णं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो॥ एएसि णं भंते! भवियदव्वदेवाणं नरदेवाणं जाव भावदेवाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवाहिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा॥ ४६४॥ एएसि णं भंते! भावदेवाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं गेवेज्जगाणं अणुत्तरोववाइयाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे भावदेवा संखेज्जगुणा, एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा। सेवं भंते! २ त्ति॥ ४६५॥ **बारहमस्स सयस्स नवमो उद्देसो समत्तो॥**

कइविहा णं भंते! आया पण्णत्ता? गोयमा! अट्ठविहा आया पण्णत्ता, तंजहा–दवियाया कसायाया जोगाया उवओगाया णाणाया दंसणाया चरित्ताया वीरियाया॥

नो आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य ६ से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नो आयाइ य ॥ आया भंते ! तिपएसिए खंधे अन्ने तिपएसिए खंधे ? गोयमा ! तिपएसिए खंधे सिय आया १ सिय नो आया २ सिय अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य ३ सिय आया य नो आया य ४ सिय आया य नो आयाओ य ५ सिय आयाओ य नो आया य ६ सिय आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य ७ सिय आया य अवत्तव्वाइं आया(इ)ओ य नो आयाओ य ८ सिय आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य ९ सिय नो आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य १० सिय(नो) आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य ११ सिय नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य १२ सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य १३ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तिपएसिए खंधे सिय आया एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य ? गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया १ परस्स आइट्ठे नो आया २ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य ३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नो आया य ४ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य नो आयाओ य ५ देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य नो आया य ६ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य ७ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य ८ देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य ९ एए तिन्नि भंगा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य १० देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे नो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नो आयाओ य ११ देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य १२ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य १३, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तिपएसिए खंधे सिय आया तं चेव जाव नो आयाइ य ॥ आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे अन्ने० पुच्छा गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे सिय

सिय नाणे सिय अन्नाणे, नाणे पुण से नियमं आया, एवं जाव थणियकुमाराण, आया भंते ! पुढविकाइयाण अन्नाणे अन्ने पुढविकाइयाणं अन्नाणे ? गोयमा ! आया पुढविकाइयाण नियम अन्नाणे अन्नाणेवि नियमं आया, एव जाव वणस्सइ-काइयाण, वेइदियतेइदिय जाव वेमाणियाण जहा नेरइयाण । आया भंते ! दसणे अन्ने दसणे ? गोयमा ! आया नियम दसणे दसणेवि नियम आया । आया भंते ! नेरइयाण दसणे अण्णे नेरइयाणं दंसणे ? गोयमा ! आया नेरइयाणं नियम दसणे दसणेवि से नियम आया, एव जाव वेमाणियाण निरतर दडओ ॥४६७॥ आया भंते ! रयणप्पभापुढवी अन्ना रयणप्पभापुढवी ? गोयमा ! रयणप्पभापुढवी सिय आया सिय नो आया सिय अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य, से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ,रयणप्पभापुढवी सिय आया सिय नो आया सिय अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य ? गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व रयणप्पभापुढवी आयाइ य नो आयाइ य, से तेणट्ठेण त चेव जाव नो आयाइ य । आया भंते ! सक्करप्पभापुढवी जहा रयणप्पभापुढवी तहा सक्करप्प-भा(ए)वि एव जाव अहे सत्तमा(ए) । आया भंते ! सोहम्मकप्पे पुच्छा, गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय नो आया जाव नो आयाइ य, से केणट्ठेणं भंते ! जाव नो आयाइ य ? गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य, से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव जाव नो आयाइ य, एवं जाव अच्चुए कप्पे । आया भंते ! गेविज्जविमाणे अन्ने गेविज्जविमाणे ? एव जहा रयणप्पभापुढवी तहेव, एव अणुत्तरविमाणावि, एव ईसिपब्भारावि । आया भंते ! परमाणुपोग्गले अन्ने परमाणुपोग्गले ? एव जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणु-पोग्गलेवि भाणियव्वे ॥ आया भंते ! दुपएसिए खंधे अन्ने दुपएसिए खंधे ? गोयमा ! दुपएसिए खधे सिय आया १ सिय नो आया २ सिय अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ३ सिय आया य नो आया य ४ सिय आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ५ सिय नो आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ६, से केणट्ठेण भंते ! एव तं चेव जाव नो आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ? गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया १ परस्स आइट्ठे नो आया २ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व दुपएसिए खधे आयाइ य नो आयाइ य ३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खधे आया य नो आया य ४ देसे आइट्ठे सब्भाव-पज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खधे आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ५ देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे

णो आया य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य ६ । से तेणट्ठेणं तं चेव जाव णो आयाइ य ॥ आया भंते ! तिपएसिए खंधे अन्ने तिपएसिए खंधे ? गोयमा ! तिपएसिए खंधे सिय आया १ सिय णो आया २ सिय अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य ३ सिय आया य णो आया य ४ सिय आया य णो आयाओ य ५ सिय आयाओ य णो आया य ६ सिय आया य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य ७ सिय आया य अवत्तव्वाइं आया(इ)ओ य णो आयाओ य ८ सिय आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य ९ सिय णो आया य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य १० सिय(णो) आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य णो आयाओ य ११ सिय णो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य १२ सिय आया य णो आया य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य १३ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तिपएसिए खंधे सिय आया एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य णो आया य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य ? गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया १ परस्स आइट्ठे णो आया २ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य ३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य णो आया य ४ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य णो आयाओ य ५ देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य णो आया य ६ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य ७ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य णो आयाओ य ८ देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य ९ एए तिन्नि भंगा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे णो आया य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य १० देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे णो आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य णो आयाओ य ११ देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे णो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य १२ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य णो आया य अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइ य १३, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तिपएसिए खंधे सिय आया तं चेव जाव णो आयाइ य ॥ आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे अन्ने पुच्छा गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे सिय

आया १ सिय नो आया २ सिय अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ३ सिय आया य नो आया य ४ सिय आया य अवत्तव्व ४ सिय नो आया य अवत्तव्व ४ सिय आया य नो आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य १६ सिय आया य नो आया य अवत्तव्वाइ आयाओ य नो आयाओ य १७ सिय आया य नो आयाओ य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य १८ सिय आयाओ य नो आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य १९। से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ चउप्प-एसिए खधे सिय आया य नो आया य अवत्तव्व त चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्व, गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया १ परस्स आइट्ठे नो आया २ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे अस-ब्भावपज्जवे चउभगो, सब्भावपज्जवेण तदुभएण य चउभगो, असब्भावेग तदु-भएण य चउभगो, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खधे आया य नो आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खधे आया य नो आया य अवत्तव्वाइ आयाओ य नो आयाओ य १७ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खधे आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य नोआयाइ य १८ देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खधे आयाओ य नोआया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य १९, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ चउप्पएसिए खधे सिय आया सिय नो आया सिय अवत्तव्व निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव नो आयाइ य ॥ आया भते! पचपएसिए खधे अन्ने पचपएसिए खधे? गोयमा! पंचपएसिए खधे सिय आया १ सिय नो आया २ सिय अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ३ सिय आया य नो आया य ४ सिय अवत्तव्व (४) आया य नो आया य ४ (नोआया य अवत्तव्वेण य ४) तियगसजोगे एक्को ण पडइ, से केणट्ठेणं भते! त चेव पडिउच्चारेयव्व? गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया १ परस्स आइट्ठे नो आया २ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व ३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भाव-पज्जवे एव दुयगसजोगे सव्वे पडंति तियगसजोगे एक्को ण पडइ। छप्पएसियस्स सव्वे पडंति, जहा छप्पएसिए एवं जाव अणतपएसिए। सेव भते! सेव भते! त्ति जाव विहरइ ॥ ४६८ ॥ **दसमो उद्देसो समत्तो, बारसमं सयं समत्तं ॥**

पुढवी १ देव २ मणतर ३ पुढवी ४ आहारमेव ५ उववाए ६। भासा ७

आया १ सिय नो आया २ सिय अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ३ सिय आया य नो आया य ४ सिय आया य अवत्तव्व ४ सिय नो आया य अवत्तव्व ४ सिय आया य नो आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य १६ सिय आया य नो आया य अवत्तव्वाइ आयाओ य नो आयाओ य १७ सिय आया य नो आयाओ य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य १८ सिय आयाओ य नो आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य १९। से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ चउप्पएसिए खधे सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं त चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्व, गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया १ परस्स आइट्ठे नो आया २ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो, सब्भावपज्जवेण तदुभएण य चउभंगो असब्भावेण तदुभएण य चउभगो, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खधे आया य नो आया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे आया य नो आया य अवत्तव्वाइ आयाओ य नो आयाओ य १७ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खधे आया य नो आयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य नोआयाइ य १८ देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खधे आयाओ य नोआया य अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य १९,-से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ चउप्पएसिए खधे सिय आया सिय नो आया सिय अवत्तव्व निक्खेवे ते चेव भगा उच्चारेयव्वा जाव नो आयाइ य ॥ आया भते! पचपएसिए खधे अन्ने पचपएसिए खधे? गोयमा! पंचपएसिए खधे सिय आया १ सिय नो आया २ सिय अवत्तव्व आयाइ य नो आयाइ य ३ सिय आया य नो आया य ४ सिय अवत्तव्व (४) आया य नो आया य ४ (नोआया य अवत्तव्वेण य ४) तियगसजोगे एक्को ण पडइ, से केणट्ठेण भते! त चेव पडिउच्चारेयव्व? गोयमा! अप्पणो आइट्ठे आया १ परस्स आइट्ठे नो आया २ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व ३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे एव दुयगसजोगे सव्वे पडति तियगसजोगे एक्को ण पडइ। छप्पएसियस्स सव्वे पडति, जहा छप्पएसिए एव जाव अणतपएसिए। सेव भते! सेव भते! त्ति जाव विहरइ ॥ ४६८ ॥ **दसमो उद्देसो समत्तो, बारसम सयं समत्तं ॥**

पुढवी १ देव २ मणंतर ३ पुढवी ४ आहारमेव ५ उववाए ६। भासा ७

कम्म ८ अणगारे केयाघडिया ९ समुग्घाए १० ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-कइ णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ तंजहा-रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा । इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता । ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडावि असंखेज्जवित्थडावि । इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति १ ? केवइया काउलेस्सा उववज्जंति २ ? केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति ३ ? केवइया सुक्कपक्खिया उववज्जंति ४ ? केवइया सन्नी उववज्जंति ५ ? केवइया असन्नी उववज्जंति ६ ? केवइया भवसिद्धिया जीवा उववज्जंति ७ ? केवइया अभवसिद्धिया जीवा उववज्जंति ८ ? केवइया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति ९ ? केवइया सुयनाणी उववज्जंति १० ? केवइया ओहिनाणी उववज्जंति ११ ? केवइया मइअन्नाणी उववज्जंति १२ ? केवइया सुयअन्नाणी उववज्जंति १३ ? केवइया विभंगनाणी उववज्जंति १४ ? केवइया चक्खुदंसणी उववज्जंति १५ ? केवइया अचक्खुदंसणी उववज्जंति १६ ? केवइया ओहिदंसणी उववज्जंति १७ ? केवइया आहारसन्नोवउत्ता उववज्जंति १८ ? केवइया भयसन्नोवउत्ता उववज्जंति १९ ? केवइया मेहुणसन्नोवउत्ता उववज्जंति २० ? केवइया परिग्गहसन्नोवउत्ता उववज्जंति २१ ? केवइया इत्थिवेयगा उववज्जंति २२ ? केवइया पुरिसवेयगा उववज्जंति २३ ? केवइया नपुंसगवेयगा उववज्जंति २४ ? केवइया कोहकसाई उववज्जंति २५ जाव केवइया लोभकसाई उववज्जंति २८ ? केवइया सोइंदियउवउत्ता उववज्जंति २९ जाव केवइया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति ३३ ? केवइया नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति ३४ ? केवइया मणजोगी उववज्जंति ३५ ? केवइया वइजोगी उववज्जंति ३६ ? केवइया कायजोगी उववज्जंति ३७ ? केवइया सागारोवउत्ता उववज्जंति ३८ ? केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ३९ ? गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववज्जंति जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति एवं सुक्कपक्खियावि एवं सन्नीवि एवं असन्नीवि एवं भवसिद्धिया एवं अभवसिद्धिया आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगनाणी एवं चेव चक्खुदंसणी न उववज्जंति जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खु-

दसणी उववज्जति, एव ओहिदसणीवि, एवं आहारसन्नोवउत्तावि जाव परिग्गहसन्नोव-उत्तावि, इत्थीवेयगा न उववज्जति पुरिसवेयगावि न उववज्जंति, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा नपुंसगवेयगा उववज्जति, एव कोहकसाई जाव लोभकसाई, सोइदियउवउत्ता न उववज्जति एव जाव फासिंदिओवउत्ता न उववज्जंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा नोइदिओवउत्ता उववज्जति, मणजोगी ण उववज्जति, एव वइजोगीवि, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा कायजोगी उववज्जति, एवं सागारोवउत्तावि एव अणागारोवउत्तावि ॥ इमीसे णं भते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएण केवइया नेरइया उववट्टंति, केवइया काउलेस्सा उववट्टंति जाव केवइया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएण जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा नेरइया उववट्टंति, एव जाव सन्नी, असन्नी ण उव्वट्टंति, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति एव जाव सुयअन्नाणी विभगनाणी ण उववट्टंति, चक्खुदंसणी ण उव्वट्टंति, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा अचक्खुदसणी उव्वट्टंति, एव जाव लोभकसाई, सोइदियउवउत्ता ण उव्वट्टंति एव जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा नोइदियोवउत्ता उव्वट्टंति, मणजोगी न उव्वट्टंति एव वइजोगीवि, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति, एव सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ इमीसे णं भते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु केवइया नेरइया पन्नत्ता? केवइया काउलेस्सा प० जाव केवइया अणागारोवउत्ता पन्नत्ता? केवइया अणतरोववन्नगा पन्नत्ता १? केवइया परंपरोववन्नगा पन्नत्ता २? केवइया अणतरोगाढा पन्नत्ता ३? केवइया परंपरोगाढा प० ४? केवइया अणतराहारा प० ५? केवइया परंपराहारा प० ६? केवइया अणतरपज्जत्ता प० ७? केवइया परपरपज्जत्ता पन्नत्ता ८? केवइया चरिमा प० ९? केवइया अचरिमा प० १०? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया प०, सखेज्जा काउलेस्सा प०, एव जाव सखेज्जा सन्नी प०, असन्नी सिय अत्थि सिय नत्थि जइ अत्थि जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा प०, सखेज्जा भवसिद्धिया प०, एव जाव सखेज्जा परिग्गहसन्नोवउत्ता प०; इत्थिवेयगा नत्थि पुरिसवेयगा नत्थि, सखेज्जा नपुसगवेयगा प०; एव कोहकसा-

इंदि माणकसाई जहा असन्नी एवं जाव लोभकसाई, संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता प एवं जाव फासिंदियोवउत्ता नोइंदियोवउत्ता जहा असन्नी संखेज्जा मणजोगी प एवं जाव अणागारोवउत्ता अणंतरोववन्नगा सिय अत्थि सिय नत्थि जइ अत्थि जहा असन्नी संखेज्जा परंपरोववन्नगा प एवं जहा अणंतरोववन्नगा तहा अणंतरोगाढगा अणंतराहारगा अणंतरपज्जत्तगा चरिमा परंपरोगाढगा जाव अचरिमा जहा परंपरोववन्नगा ॥ इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उववज्जंति जाव केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ? गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उववज्जंति एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहा असंखेज्जवित्थडेसुवि तिन्नि गमगा नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा सेसं तं चेव जाव असंखेज्जा अचरिमा प नाणत्तं लेस्सासु लेस्साओ जहा पढमसए नवरं संखेज्जवित्थडेसुवि असंखेज्जवित्थडेसुवि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उव्वट्टावेयव्वा सेसं तं चेव ॥ सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए केवइया निरयावास पुच्छा गोयमा ! पणवीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा ? एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाएवि नवरं असन्नी तिसुवि गमएसु न भन्नइ, सेसं तं चेव । वालुयप्पभाए णं पुच्छा गोयमा ! पन्नरस निरयावाससयसहस्सा प सेसं जहा सक्करप्पभाए णाणत्तं लेसासु लेसाओ जहा पढमसए ॥ पंकप्पभाए णं पुच्छा गोयमा ! दस निरयावाससयसहस्सा प एवं जहा सक्करप्पभाए नवरं ओहिनाणी ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति सेसं तं चेव ॥ धूमप्पभाए णं पुच्छा गोयमा ! तिन्नि निरयावाससयसहस्सा एवं जहा पंकप्पभाए ॥ तमाए णं भंते ! पुढवीए केवइया निरयावास पुच्छा गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पन्नत्ते सेसं जहा पंकप्पभाए ॥ अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए कइ अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य । अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु जाव महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? एवं जहा पंकप्पभाए नवरं तिसु नाणेसु न उववज्जंति न उव्वट्टंति पन्नत्तएसु तहेव अत्थि एवं असंखेज्जवित्थडेसुवि नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा ॥४९५॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति मिच्छ-

दसणी उववज्जति, एव ओहिदसणीवि, एवं आहारसन्नोवउत्तावि, जाव परिग्गहसन्नोवउत्तावि, इत्थीवेयगा न उववज्जति पुरिसवेयगावि न उववज्जति, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा नपुंसगवेयगा उववज्जति, एव कोहकसाई जाव लोभकसाई, सोइदियउवउत्ता न उववज्जति एव जाव फासिंदिओवउत्ता न उववज्जति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा नोइदिओवउत्ता उववज्जंति, मणजोगी ण उववज्जति, एव वइजोगीवि, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा कायजोगी उववज्जति, एवं सागारोवउत्तावि एव अणागारोवउत्तावि ॥ इमीसे ण भते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएण केवइया नेरइया उववट्टंति, केवइया काउलेस्सा उववट्टति जाव केवइया अणागारोवउत्ता उव्वट्टति ? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएण जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं सखेज्जा नेरइया उववट्टंति, एव जाव सन्नी, असन्नी ण उव्वट्टति, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टति एव जाव सुयअन्नाणी विभगनाणी ण उववट्टंति, चक्खुदंसणी ण उव्वट्टति, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा अचक्खुदसणी उव्वट्टति, एव जाव लोभकसाई, सोइदियउवउत्ता ण उव्वट्टति एव जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टति, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा नोइदियोवउत्ता उव्वट्टंति, मणजोगी न उव्वट्टति एव वइजोगीवि, जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा कायजोगी उव्वट्टति, एव सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ इमीसे णं भते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु केवइया नेरइया पन्नत्ता ? केवइया काउलेस्सा प० जाव केवइया अणागारोवउत्ता पन्नत्ता ? केवइया अणतरोववन्नगा पन्नत्ता १ ? केवइया परंपरोववन्नगा पन्नत्ता २ ? केवइया अणतरोगाढा पन्नत्ता ३ ? केवइया परपरोगाढा प० ४ ? केवइया अणतराहारा प० ५ ? केवइया परंपराहारा प० ६ ? केवइया अणतरपज्जत्ता प० ७ ? केवइया परपरपज्जत्ता पन्नत्ता ८ ? केवइया चरिमा प० ९ ? केवइया अचरिमा प० १० ? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया प०, सखेज्जा काउलेस्सा प०, एव जाव सखेज्जा सन्नी प०, असन्नी सिय अत्थि सिय नत्थि जइ अत्थि जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा प०, सखेज्जा भवसिद्धिया प०, एव जाव सखेज्जा परिग्गहसन्नोवउत्ता प०, इत्थिवेयगा नत्थि पुरिसवेयगा नत्थि, सखेज्जा नपुसगवेयगा प०, एव कोहकसा-

दिट्ठी नेरइया उववज्जंति सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मदिट्ठीवि नेरइया उववज्जति, मिच्छादिट्ठीवि नेरइया उववज्जति, नो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति । इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टति ? एवं चेव । इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया मिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया सम्मामिच्छ दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीहिवि नेरइएहिं अविरहिया मिच्छादिट्ठीहिवि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया विरहिया वा, एव असंखेज्जवित्थडेसुवि तिन्नि गमगा भाणियव्वा, एव सक्करप्प- भाएवि, एव जाव तमाएवि । अहेसत्तमाए ण भंते ! पुढवीए पचसु अणुत्तरेसु जाव सखेज्जवित्थडे नरए कि सम्मद्दिट्ठी नेरइया पुच्छा, गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया न उववज्जति, एव उव्वट्टतिवि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए, एव असखेज्जवित्थडेसुवि तिन्नि गमगा ॥ ४७० ॥ से नूण भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ? हता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जति, से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ कण्हलेस्से जाव उववज्जति ? गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु सकिलिस्समाणेसु २ कण्हलेसं परिणमइ २ त्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेण जाव उववज्जति । से नूण भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेसे भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ? हता गोयमा ! जाव उववज्जति, से केणट्ठेण जाव उववज्जति ? गोयमा ! लेस्स- ट्ठाणेसु सकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु नीललेस्स परिणमइ २ त्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव उववज्जति, से नूण भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ? एव जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्सा(ए)वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेण जाव उववज्जति । सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥ ४७१ ॥ **तेरहमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

कइविहा ण भंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पन्नत्ता, तजहा- भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया । भवणवासी ण भंते ! देवा कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तजहा-असुरकुमारा एव भेओ जहा बिइयसए देवुद्देसए जाव अपराजिया सव्वट्ठसिद्धगा । केवइया ण भंते ! असुरकुमा- रावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता, ते ण भते ! किं संखेज्जवित्थडा असखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! सखेज्जवित्थडावि

असंखेज्जवित्थडावि। चोसट्ठीए णं भंते! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा तहेव वागरणं नवरं दोहिं वेएहिं उववज्जंति नपुंसगवेयगा न उववज्जंति सेसं तं चेव उव्वट्टंतगावि तहेव नवरं असन्नी उव्वट्टंति ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति सेसं तं चेव पन्नत्तएसु तहेव नवरं संखेज्जगा इत्थिवेयगा पन्नत्ता एवं पुरिसवेयगावि, नपुंसगवेयगा नत्थि कोहकसाई सिय अत्थि सिय नत्थि जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा पन्नत्ता एवं माण माया लोभकसाई पन्नत्ता, सेसं तं चेव तिसुवि गमएसु संखेज्जवित्थडेसु चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ एवं असंखेज्जवित्थडेसुवि नवरं तिसुवि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा जाव असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता। केवइया णं भंते! नागकुमारावास एवं जाव थणियकुमारावासा नवरं जत्थ जत्तिया भवणा ॥ केवइया णं भंते! वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता? गोयमा! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा? गोयमा! संखेज्जवित्थडा नो असंखेज्जवित्थडा। संखेज्जेसु णं भंते! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एगसमएणं केवइया वाणमंतरा उववज्जंति? एवं जहा असुरकुमाराणं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहेव भाणियव्वा वाणमंतराणवि तिन्नि गमगा। केवइया णं भंते! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता? गोयमा! असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा? एवं जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाणवि तिन्नि गमगा भाणियव्वा नवरं एगा तेउलेस्सा उववज्जंतेसु पन्नत्तेसु य असन्नी नत्थि सेसं तं चेव ॥ सोहम्मे णं भंते! कप्पे केवइया विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता? गोयमा! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता। ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा? गोयमा! संखेज्जवित्थडावि असंखेज्जवित्थडावि। सोहम्मे णं भंते! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएणं केवइया सोहम्मगा देवा उववज्जंति, केवइया तेउलेस्सा उववज्जंति? एवं जहा जोइसियाणं तिन्नि गमगा तहेव तिन्नि गमगा भाणियव्वा नवरं तिसुवि संखेज्जा भाणियव्वा ओहिनाणी ओहिदंसणी य चयावेयव्वा सेसं तं चेव। असंखेज्जवित्थडेसु एवं चेव तिन्नि गमगा नवरं तिसुवि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा, ओहिनाणी य ओहिदंसणी य संखेज्जा चयंति सेसं तं चेव एवं जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणेवि छ गमगा भाणियव्वा, सणंकुमारेवि एवं

दिट्ठी नेरइया उववज्जंति सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति ? गोयमा ! सम्मदिट्ठीवि नेरइया उववजति, मिच्छादिट्ठीवि नेरइया उववज्जति, नो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति । इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टति ? एव चेव । इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया मिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया सम्मामिच्छ दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीहिवि नेरइएहिं अविरहिया मिच्छादिट्ठीहिवि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया विरहिया वा, एव असखेजवित्थडेसुवि तिन्नि गमगा भाणियव्वा, एव सक्करप्पभाएवि, एव जाव तमाएवि । अहेसत्तमाए णं भते ! पुढवीए पचसु अणुत्तरेसु जाव सखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया पुच्छा, गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया न उववज्जति, एव उव्वट्टतिवि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए, एव असखेज्जवित्थडेसुवि तिन्नि गमगा ॥ ४७० ॥ से नूंण भते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जति, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ कण्हलेस्से जाव उववज्जति ? गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु सकिलिस्समाणेसु २ कण्हलेसं परिणमइ २ त्ता कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जति, से तेणट्ठेण जाव उववज्जति । से नूण भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेसे भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ? हता गोयमा ! जाव उववज्जति, से केणट्ठेण जाव उववज्जति ? गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु नीललेस्स परिणमइ २ त्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव उववज्जति, से नूण भते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ? एव जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्सा(ए)वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जति । सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥ ४७१ ॥ **तेरहमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

कइविहा ण भंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पन्नत्ता, तजहा–भवणवासी वाणमतरा जोइसिया वेमाणिया । भवणवासी ण भते ! देवा कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा–असुरकुमारा एव भेओ जहा बिइयसए देवुद्देसए जाव अपराजिया सव्वट्ठसिद्धगा । केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता, ते ण भते ! किं सखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडावि

चेव नवरं इत्थीवेयगा न उववज्जति पन्नत्तेसु य न भण्णति, असन्नी तिन्नुवि गमएसु न भण्णति, सेस त चेव, एव जाव सहस्सारे, नाणत्त विमाणेसु लेस्सासु य, सेस त चेव॥ आणयपाणएसु णं भते! कप्पेसु केवइया विमाणावाससया पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता, ते णं भते! कि सखेज्जवित्थडा असखेज्जवित्थडा? गोयमा! सखेज्जवित्थडावि असखेज्जवित्थडावि, एव सखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा जहा सहस्सारे असखेज्जवित्थडेसु उववज्जतेसु य चयतेसु य एवं चेव सखेज्जा भाणियव्वा पन्नत्तेसु असखेज्जा नवर नोइदियोवउत्ता अणतरोववन्नगा अणतरोगाढगा अणतराहारगा अणतरपज्जत्तगा य एएसिं जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा प०, सेसा असखेज्जा भाणियव्वा। आरणच्चुएसु एव चेव जहा आणयपाणएसु नाणत्त विमाणेसु, एव गेवेज्जगावि। कइ ण भते! अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता? गोयमा! पच अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता, ते ण भते! किं सखेज्जवित्थडा असखेज्जवित्थडा? गोयमा! सखेज्जवित्थडे य असखेज्जवित्थडा य, पचसु ण भंते! अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएण केवइया अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जति केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जति पुच्छा तहेव, गोयमा! पचसु ण अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जति, एव जहा गेवेज्जविमाणेसु सखेज्जवित्थडेसु नवरं किण्हपक्खिया अभवसिद्धिया तिसु अन्नाणेसु एए न उववज्जति न चयति नवि पन्नत्तएसु भाणियव्वा अचरिमावि खोडिज्जति जाव सखेज्जा चरिमा प०, सेस त चेव, असखेज्जवित्थडेसुवि एए न भन्नति नवरं अचरिमा अत्थि, सेस जहा गेवेज्जएसु असखेज्जवित्थडेसु जाव असखेज्जा अचरिमा प०। चोसट्ठीए ण भते! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति मिच्छादिट्ठी एवं जहा रयणप्पभाए तिन्नि आलावगा भणिया तहा भाणियव्वा, एव असखेज्जवित्थडेसुवि तिन्नि गमगा, एव जाव गेवेज्जविमाणेसु अणुत्तरविमाणेसु एव चेव, नवरं तिसुवि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भन्नति, सेस त चेव। से नूण भते! कण्हलेस्से नील जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जति? हता गोयमा! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्व, नीललेसाएवि जहेव नेरइयाण, जहा नीललेस्साए एवं जाव पम्हलेस्सेसु सुक्कलेस्सेसु एव चेव, नवरं लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु २ सुक्कलेस्सं परिणमइ २ त्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जति। सेवं भते! सेवं भते! त्ति॥ ४७२॥ **तेरहमे सए बीओ उद्देसो समत्तो॥**

नेरइया णं भंते ! अणंतरखाए तओ निम्मासणयाए एवं परियारणापयं निरव-सेसं भाणियव्वं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४७३ ॥ तेरसमे सए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा-रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंच अणुत्तरा महइमहालया जाव अपइट्ठाणे ते णं णरगा छट्ठीए तमाए पुढवीए नरएहिंतो महंततरा चेव १ महाविच्छिन्नतरा चेव २ महावासतरा चेव ३ महापइरिक्कतरा चेव ४ नो तहा महापवेसणतरा चेव १ नो आइण्णतरा चेव २ नो आउलतरा चेव ३ नो अणो(मा)यणतरा चेव ४ तेसु णं नरएसु नेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव १ महाकिरियतरा चेव २ महासवतरा चेव ३ महावेयणतरा चेव ४ नो तहा अप्पकम्मतरा चेव १ नो अप्पकिरियतरा चेव २ नो अप्पासवतरा चेव ३ नो अप्पवेयणतरा चेव ४ अप्पिड्ढियतरा चेव १ अप्प-ज्जुइयतरा चेव २ नो तहा महिड्ढियतरा चेव १ नो महज्जुइयतरा चेव २ । छट्ठीए णं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते ते णं नरगा अहेसत्त-माए पुढवीए नरएहिंतो नो तहा महत्तरा चेव महाविच्छिन्नतरा चेव ४ महप्पवेस-णतरा चेव आइण्णतरा चेव ४ तेसु णं नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेर-इएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव अप्पकिरियतरा चेव ४ नो तहा महाकम्मतरा चेव महाकिरियतरा चेव ४ महिड्ढियतरा चेव महज्जुइयतरा चेव नो तहा अप्पिड्ढियतरा चेव अप्पज्जुइयतरा चेव । छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढ-वीए नरएहिंतो महत्तरा चेव ४ नो तहा महप्पवेसणतरा चेव ४ तेसु णं नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव ४ नो तहा अप्पकम्मतरा चेव ४ अप्पिड्ढियतरा चेव २ नो तहा महिड्ढियतरा चेव २ पंच-माए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता एवं जहा छट्ठीए भणिया एवं सत्तवि पुढवीओ परोप्परं भण्णंति जाव रयणप्पभंति जाव नो तहा महिड्ढियतरा चेव अप्पज्जुइयतरा चेव ॥ ४७४ ॥ रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं एवं जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया एवं आउफासं एवं जाव वणस्सइफासं ॥ ४७५ ॥ इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु एवं जहा जीवाभिगमे बिइए नेरइयउद्देसए ॥ ४७६ ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु जे पुढविक्काइया एवं जहा नेरइ-

चेव नवरं इत्थीवेयगा न उववज्जंति पन्नत्तेसु य न भण्णति, असन्नी तिसुवि गमएसु न भण्णति, सेस त चेव, एव जाव सहस्सारे, नाणत्त विमाणेसु लेस्सासु य, सेस त चेव॥ आणयपाणएसु णं भते! कप्पेसु केवइया विमाणावाससया पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता, ते ण भते! कि सखेज्जवित्थडा असखेज्जवित्थडा? गोयमा! सखेज्जवित्थडावि असंखेज्जवित्थडावि, एव सखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा जहा सहस्सारे असखेज्जवित्थडेसु उववज्जतेसु य चयतेसु य एवं चेव सखेज्जा भाणियव्वा पन्नत्तेसु असखेज्जा नवर नोइंदियोवउत्ता अणतरोववन्नगा अणतरोगाढगा अणतराहारगा अणतरपज्जत्तगा य एएसिं जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा प०, सेसा असखेज्जा भाणियव्वा। आरणच्चुएसु एव चेव जहा आणयपाणएसु नाणत्त विमाणेसु, एव गेवेज्जगावि। कइ णं भते! अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता? गोयमा! पच अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता, ते ण भते! किं सखेज्जवित्थडा असखेज्जवित्थडा? गोयमा! सखेज्जवित्थडे य असखेज्जवित्थडा य, पचसु ण भते! अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएण केवइया अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जति केवइया सुक्कलेस्सा उववज्जति पुच्छा तहेव, गोयमा! पचसु ण अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जति, एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु सखेज्जवित्थडेसु नवर किण्हपक्खिया अभवसिद्धिया तिसु अन्नाणेसु एए न उववज्जति न चयति नवि पन्नत्तएसु भाणियव्वा अचरिमावि खोडिज्जति जाव सखेज्जा चरिमा प०, सेस त चेव, असखेज्जवित्थडेसुवि एए न भन्नति नवर अचरिमा अत्थि, सेस जहा गेवेज्जएसु असखेज्जवित्थडेसु जाव असखेज्जा अचरिमा प०। चोसट्ठीए ण भते! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति मिच्छादिट्ठी, एव जहा रयणप्पभाए तिन्नि आलावगा भणिया तहा भाणियव्वा, एवं असंखेज्जवित्थडेसुवि तिन्नि गमगा, एव जाव गेवेज्जविमाणेसु अणुत्तरविमाणेसु एव चेव, नवरं तिसुवि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भन्नति, सेस त चेव। से नूण भते! कण्हलेस्से नील जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जति? हता गोयमा! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं, नीललेसाएवि जहेव नेरइयाण, जहा नीललेस्साए एव जाव पम्हलेस्सेसु सुक्कलेस्सेसु एव चेव, नवरं लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु २ सुक्कलेस्स परिणमइ २त्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जति, से तेणट्ठेण जाव उववज्जति। सेव भते! सेवं भते! त्ति॥ ४७२॥ **तेरहमे सए बीओ उद्देसो समत्तो॥**

नेरइया णं भंते ! अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया एवं परियारणापयं निरवसेसं भाणियव्वं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४७३ ॥ तेरहमे सए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा–रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंच अणुत्तरा महइमहालया जाव अपइट्ठाणे ते णं णरगा छट्ठीए तमाए पुढवीए नरएहिंतो महंततरा चेव १ महाविच्छिन्नतरा चेव २ महावासतरा चेव ३ महापइरिक्कतरा चेव ४ नो तहा महापवेसणतरा चेव १ नो आइण्णतरा चेव २ नो आउलतरा चेव ३ नो अणो(मा)यणतरा चेव ४ तेसु णं नरएसु नेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव १ महाकिरियतरा चेव २ महासवतरा चेव ३ महावेयणतरा चेव ४ नो तहा अप्पकम्मतरा चेव १ नो अप्पकिरियतरा चेव २ नो अप्पासवतरा चेव ३ नो अप्पवेयणतरा चेव ४ अप्पिड्ढियतरा चेव १ अप्पज्जुइयतरा चेव २ नो तहा महिड्ढियतरा चेव १ नो महज्जुइयतरा चेव २ । छट्ठीए णं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते ते णं नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नरएहिंतो नो तहा महत्तरा चेव महाविच्छिन्नतरा चेव ४ महप्पवेसणतरा चेव आइण्णतरा चेव ४ तेसु णं नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव अप्पकिरियतरा चेव ४ नो तहा महाकम्मतरा चेव महाकिरियतरा चेव ४ महिड्ढियतरा चेव महज्जुइयतरा चेव नो तहा अप्पिड्ढियतरा चेव अप्पज्जुइयतरा चेव । छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा चेव ४ नो तहा महप्पवेसणतरा चेव ४ तेसु णं नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव ४ नो तहा अप्पकम्मतरा चेव ४ अप्पिड्ढियतरा चेव २ नो तहा महिड्ढियतरा चेव २ पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता एवं जहा छट्ठीए भणिया एवं सत्तवि पुढवीओ परोप्परं भण्णंति जाव रयणप्पभंति जाव नो तहा महिड्ढियतरा चेव अप्पज्जुइयतरा चेव ॥ ४७४ ॥ रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं एवं जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया एवं आउफासं एवं जाव वणस्सइफासं ॥ ४७५ ॥ इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु एवं जहा जीवाभिगमे बिइए नेरइयउद्देसए ॥ ४७६ ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु जे पुढविक्काइया एवं जहा नेरइ-

यउद्देसए जाव अहेसत्तमाए ॥४७७॥ कहि ण भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए उवासतरस्स असखेज्जइभाग ओगाहेत्ता एत्थ ण लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते । कहि ण भते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स साइरेग अद्ध ओगाहित्ता एत्थ ण अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते, कहि ण भंते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा ! उप्पिं सणकुमारमाहिंदाण कप्पाण हेट्ठिं बभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे एत्थ ण उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते । कहिणं भते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु एत्थ ण तिरियलोगस्स मज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ ण इमाओ दस दिसाओ पवहति, तंजहा–पुरच्छिमा पुरच्छिमदाहिणा एव जहा दसमसए नामधेज्जति ॥ ४७८ ॥ इंदा णं भते ! दिसा किमाइया किंपवहा कइपएसाइया कइपएसुत्तरा कइपएसिया किंपज्जवसिया किंसठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! इदा ण दिसा रुयगाइया रुयगप्पवहा दुपएसाइया दुपएसुत्तरा लोग पडुच्च असखेज्जपएसिया, अलोग पडुच्च अणतपएसिया, लोग पडुच्च साइया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च साइया अपज्जवसिया, लोग पडुच्च मुरजसठिया, अलोग पडुच्च सगडुद्धिसठिया पन्नत्ता । अग्गेई ण भते ! दिसा किमाइया किपवहा कइपएसाइया कइपएसविच्छिन्ना कइपएसिया किंपज्जवसिया किंसठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! अग्गेई ण दिसा रुयगाइया रुयगप्पवहा एगपएसाइया एगपएसविच्छिन्ना अणुत्तरा लोग पडुच्च असखेज्जपएसिया अलोग पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च साइया सपज्जवसिया अलोग पडुच्च साइया अपज्जवसिया, छिन्नमुत्तावलिसठिया पण्णत्ता । जमा जहा इदा, नेरई जहा अग्गेई, एव जहा इदा तहा दिसाओ चत्तारि, जहा अग्गेई तहा चत्तारिवि विदिसाओ । विमला ण भते ! दिसा किमाइया० पुच्छा जहा अग्गेईए, गोयमा ! विमला ण दिसा रुयगाइया रुयगप्पवहा चउप्पएसाइया दुपएसविच्छिन्ना अणुत्तरा लोगं पडुच्च सेस जहा अग्गेईए नवर रुयगसठिया पण्णत्ता, एव तमावि ॥ ४७९ ॥ किमिय भंते ! लोएत्ति पवुच्चइ ? गोयमा ! पचत्थिकाया, एस ण एवइए लोएत्ति पवुच्चइ, तजहा–धम्मत्थिकाए अहम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए । धम्मत्थिकाएण भंते ! जीवाण किं पवत्तइ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाएण जीवाण आगमणगमणभासुम्मेसमणजोगा वइजोगा कायजोगा जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तति, गइलक्खणे ण धम्मत्थिकाए । अहम्मत्थिकाएणं भते ! जीवाणं किं पवत्तइ ? गोयमा !

पएहेसए जाव अहेसत्तमाए ॥४७७॥ कहि णं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते? गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए उवासतरस्स असखेज्जइभाग ओगाहेत्ता एत्थ ण लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते । कहि ण भते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए उवासतरस्स साइरेग अद्ध ओगाहित्ता एत्थ ण अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते, कहि ण भंते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते? गोयमा ! उप्पिं सणकुमारमाहिंदाण कप्पाण हेट्ठिं वभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे एत्थ ण उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते । कहिन्नं भते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते? गोयमा ! जवूदीवे २ मदरस्स पव्वयस्स वहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु एत्थ ण तिरियलोगस्स मज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ ण इमाओ दस दिसाओ पवहति, तजहा–पुरच्छिमा पुरच्छिमदाहिणा एव जहा दसमसए नामधेज्जति ॥ ४७८ ॥ इंदा णं भंते ! दिसा किमाइया किंपवहा कइपएसाइया कइपएसुत्तरा कइपएसिया किंपज्जवसिया किंसठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! इदा ण दिसा रुयगाइया रुयगप्पवहा दुपएसाइया दुपएसुत्तरा लोग पडुच्च असखेज्जपएसिया, अलोग पडुच्च अणतपएसिया, लोग पडुच्च साइया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च साइया अपज्जवसिया, लोग पडुच्च मुरजसठिया, अलोग पडुच्च सगडुद्धिसठिया पन्नत्ता । अग्गेई ण भते ! दिसा किमाइया किंपवहा कइपएसाइया कइपएसविच्छिन्ना कइपएसिया किंपज्जवसिया किंसठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! अग्गेई ण दिसा रुयगाइया रुयगप्पवहा एगपएसाइया एगपएसविच्छिन्ना अणुत्तरा लोग पडुच्च असखेजपएसिया अलोग पडुच्च अणंतपएसिया, लोग पडुच्च साइया सपज्जवसिया अलोग पडुच्च साइया अपज्जवसिया, छिन्नमुत्तावलिसठिया पण्णत्ता । जमा जहा इदा, नेरई जहा अग्गेई, एव जहा इदा तहा दिसाओ चत्तारि, जहा अग्गेई तहा चत्तारिवि विदिसाओ । विमला ण भते ! दिसा किमाइया० पुच्छा जहा अग्गेईए, गोयमा ! विमला ण दिसा रुयगाइया रुयगप्पवहा चउप्पएसाइया दुपएसविच्छिन्ना अणुत्तरा लोगं पडुच्च सेस जहा अग्गेईए नवरं रुयगसठिया पण्णत्ता, एव तमावि ॥ ४७९ ॥ किमिय भते ! लोएत्ति पवुच्चइ? गोयमा ! पचत्थिकाया, एस ण एवइए लोएत्ति पवुच्चइ, तजहा–धम्मत्थिकाए अहम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए । धम्मत्थिकाएण भंते ! जीवाण किं पवत्तइ? गोयमा ! धम्मत्थिकाएण जीवाण आगमणगमणभासुम्मेसमणजोगा वइजोगा कायजोगा जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तति, गइलक्खणे ण धम्मत्थिकाए । अहम्मत्थिकाएण भते ! जीवाण किं पवत्तइ? गोयमा !

अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाणनिसीयणतुयट्टण मणस्स य एगत्तीभावकरणता जे यावन्ने
तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अहम्मत्थिकाए पवत्तंति ठाणलक्खणे णं अहम्म-
त्थिकाए ॥ आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं अजीवाण य किं पवत्तइ ? गोयमा !
आगासत्थिकाएणं जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य भायणभूए—एगेणवि से पुन्ने दोहिवि
पुन्ने सयंपि माएज्जा । कोडिसएणवि पुन्ने कोडिसहस्संपि माएज्जा ॥१॥ अवगाहणा-
लक्खणे णं आगासत्थिकाए ॥ जीवत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तइ ? गोयमा !
जीवत्थिकाएणं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं अणंताणं सुयनाणपज्ज-
वाणं एवं जहा बिइयसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओगं गच्छइ, उवओगलक्खणे
णं जीवे ॥ पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा गोयमा ! पोग्गलत्थिकाएणं जीवाणं ओरालि-
यवेउव्वियआहारगतेयाकम्मा सोइंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियमणजोग-
वइजोगकायजोगआणापाणूणं च गहणं पवत्तइ, गहणलक्खणे णं पोग्गलत्थि-
काए ॥ ४८० ॥ एगे भंते ! धम्मत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?
गोयमा ! जहन्नपए तिहिं उक्कोसपए छहिं । केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ?
गोयमा ! जहन्नपए चउहिं उक्कोसपए सत्तहिं । केवइएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं
पुट्ठे ? गोयमा ! सत्तहिं । केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! अणंतेहिं ।
केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! अणंतेहिं । केवइएहिं अद्धासम-
एहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं ॥ एगे भंते ! अहम्म-
त्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहन्नपए चउहिं उक्को-
सपए सत्तहिं । केवइएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहन्नपए तिहिं
उक्कोसपए छहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ एगे भंते ! आगासत्थिकायपएसे केव-
इएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहन्नपए
एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा चउहिं वा उक्कोसपए सत्तहिं, एवं अहम्मत्थिकायपए-
सेहिवि । केवइएहिं आगासत्थिकाय० ? गोयमा ! छहिं, केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं
पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं । एवं पोग्गलत्थिकायपएसेहिवि
अद्धासमएहिवि ॥ ४८१ ॥ एगे भंते ! जीवत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकाय०
पुच्छा जहन्नपए चउहिं उक्कोसपए सत्तहिं, एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिवि । केवइएहिं
आगासत्थिकाय० ? सत्तहिं । केवइएहिं जीवत्थि० ? सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥
एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसे केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं ? एवं जहेव जीव-
त्थिकायस्स ॥ दो भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ?
जहन्नपए छहिं उक्कोसपए बारसहिं, एवं अहम्मत्थिकायप्पएसेहिवि । केवइएहिं आगा-

सत्थिकाय०² बारसहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ तिन्नि भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय० ² जहन्नपए अट्ठहिं उक्कोसपए सत्तरसहिं । एवं अहम्मत्थिकायपएसेहिवि । केवइएहिं आगासत्थि० ² सत्तरसहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स । एवं एएणं गमेणं भाणियव्वं जाव दस, नवरं जहन्नपए दोन्नि पक्खिवियव्वा उक्कोसपए पंच । चत्तारि पोग्गलत्थिकायपएसे० जहन्नपए दसहिं उक्कोसपए बावीसाए, पंच पोग्गलत्थिकाय० जहण्णपए बारसहिं उक्कोसपए सत्तावीसाए, छ पोग्गल० जहण्णपए चोद्दसहिं उक्कोसेणं बत्तीसाए, सत्त पोग्गल० जहन्नेणं सोलसहिं उक्कोसपए सत्ततीसाए, अट्ठ पोग्गल० जहन्नपए अट्ठारसहिं उक्कोसेणं बायालीसाए, नव पोग्गल० जहन्नपए वीसाए उक्कोसपए सीयालीसाए, दस पोग्गल० जहण्णपए बावीसाए उक्कोसपए बावन्नाए । आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसगं भाणियव्वं ॥ संखेज्जा णं भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ² जहन्नपए तेणेव संखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं, केवइएहिं अधम्मत्थिकाएहिं ² एवं चेव, केवइएहिं आगासत्थिकाय० तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं, केवइएहिं जीवत्थिकाय० ² अणंतेहिं, केवइएहिं पोग्गलत्थिकाय० ² अणंतेहिं, केवइएहिं अद्धासमएहिं ² सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे जाव अणंतेहिं । असंखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय० ² जहन्नपए तेणेव असंखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव असंखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं, सेसं जहा संखेज्जाणं जाव नियमं अणंतेहिं ॥ अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय० एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंतावि निरवसेसं ॥ एगे भंते ! अद्धासमए केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ² सत्तहिं, केवइएहिं अहम्मत्थि० ² एवं चेव, एवं आगासत्थिकायपएसेहिंवि, केवइएहिं जीवत्थिकाय० ² अणंतेहिं, एवं जाव अद्धासमएहिं ॥ धम्मत्थिकाए णं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे ² नत्थि एक्केणवि, केवइएहिं अधम्मत्थिकायप्पएसेहिं ? असंखेज्जेहिं, केवइएहिं आगासत्थिकायप० ² असंखेज्जेहिं, केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं ² अणंतेहिं, केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं० ² अणंतेहिं, केवइएहिं अद्धासमएहिं ² सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणंतेहिं । अहम्मत्थिकाए णं भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकाय० ² असंखेज्जेहिं, केवइएहिं अहम्मत्थि० ² णत्थि एक्केणवि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स, एवं एएणं गमएणं सव्वेवि सट्ठाणए नत्थि एक्केणवि पुट्ठा, परट्ठाणए आइल्लएहिं तिहिं असंखेज्जेहिं भाणियव्वं, पच्छिल्लएसु तिसु अणंता भाणियव्वा जाव अद्धासमओत्ति जाव केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ² नत्थि

एक्केणवि ॥ जत्थ णं भंते ! एगे धम्मत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थि-
कायप्पएसा ओगाढा ? नत्थि एक्कोवि । केवइया अहम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा ?
एक्को केवइया आगासत्थिकाय ? एक्को केवइया जीवत्थिकाय ? अणंता केवइया
पोग्गलत्थिकाय ? अणंता केवइया अद्धासमया ? सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा
जइ ओगाढा अणंता । जत्थ णं भंते ! एगे अहम्मत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केव-
इया धम्मत्थिकाय ? एक्को केवइया अहम्मत्थि ? नत्थि एक्कोवि सेसं जहा धम्म-
त्थिकायस्स । जत्थ णं भंते ! एगे आगासत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवइया
धम्मत्थिकाय ? सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा जइ ओगाढा एक्को एवं अह-
म्मत्थिकायपएसावि केवइया आगासत्थिकाय ? नत्थि एक्कोवि केवइया जीवत्थि ?
सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा जइ ओगाढा अणंता एवं जाव अद्धासमया ।
जत्थ णं भंते ! एगे जीवत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय ?
एक्को एवं अहम्मत्थिकायपएसावि एवं आगासत्थिकायपएसावि केवइया जीव-
त्थिकाय ? अणंता सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स । जत्थ णं भंते ! एगे पोग्गलत्थि-
कायपएसे ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय ? एवं जहा जीवत्थिकायपएसे तहेव
निरवसेसं । जत्थ णं भंते ! दो पोग्गलत्थिकायपएसा ओगाढा तत्थ केवइया धम्म-
त्थिकाय ? सिय एक्को सिय दोन्नि एवं अहम्मत्थिकायस्सवि एवं आगासत्थि-
कायस्सवि सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स । जत्थ णं भंते ! तिन्नि पोग्गलत्थिकाय-
पएसा ओगाढा तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय ? सिय एक्को सिय दोन्नि सिय तिन्नि
एवं अहम्मत्थिकायस्सवि एवं आगासत्थिकायस्सवि सेसं जहेव दोण्हं, एवं एक्केक्को
वड्ढियव्वो पएसो आइल्लएहिं तिहिं अत्थिकाएहिं, सेसं जहेव दोण्हं जाव दसण्हं सिय
एक्को सिय दोन्नि सिय तिन्नि जाव सिय दस संखेज्जाणं सिय एक्को सिय दोन्नि जाव
सिय दस सिय संखेज्जा असंखेज्जाणं सिय एक्को जाव सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा
जहा असंखेज्जा एवं अणंतावि । जत्थ णं भंते ! एगे अद्धासमए ओगाढे तत्थ केव-
इया धम्मत्थिकाय ? एक्को केवइया अहम्मत्थिकाय ? एक्को केवइया आगास-
त्थिकाय ? एक्को केवइया जीवत्थि ? अणंता एवं जाव अद्धासमया । जत्थ णं
भंते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकायपएसा ओगाढा ? नत्थि
एक्कोवि केवइया अहम्मत्थिकाय ? असंखेज्जा केवइया आगासत्थि ? असंखेज्जा
केवइया जीवत्थिकाय ? अणंता एवं जाव अद्धासमया । जत्थ णं भंते ! अहम्म-
त्थिकाए ओगाढे तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय ? असंखेज्जा केवइया अहम्मत्थि-
काय ? नत्थि एक्कोवि सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स एवं सव्वे सट्ठाणे नत्थि एक्कोवि

सत्थिकाय०² वारसहिं, सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥ तिन्नि भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय०² जहन्नपए अट्ठहिं उक्कोसपए सत्तरसहिं। एव अहम्मत्थिकायपएसेहिंवि। केवइएहिं आगासत्थि०² सत्तरसहिं, सेस जहा धम्मत्थिकायस्स। एवं एएण गमेण भाणियव्वं जाव दस, नवरं जहन्नपए दोन्नि पक्खिवियव्वा उक्कोसपए पच। चत्तारि पोग्गलत्थिकायपएसे० जहन्नपए दसहिं उक्कोसपए वावीसाए, पच पोग्गलत्थिकाय० जहण्णपए वारसहिं उक्कोसपए सत्तावीसाए, छ पोग्गल० जहण्णपए चोद्दसहिं उक्कोसेणं वत्तीसाए, सत्त पोग्गल० जहन्नेण सोलसहिं उक्कोसपए सत्ततीसाए, अट्ठ पोग्गल० जहन्नपए अट्ठारसहिं उक्कोसेण वायालीसाए, नव पोग्गल० जहन्नपए वीसाए उक्कोसपए सीयालीसाए, दस पोग्गल० जहण्णपए वावीसाए उक्कोसपए वावन्नाए। आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसग भाणियव्व ॥ सखेज्जा ण भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा² जहन्नपए तेणेव सखेज्जएण दुगुणेणं दुरूवाहिएण, उक्कोसपए तेणेव सखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण, केवइएहिं अधम्मत्थिकाएहिं² एव चेव, केवइएहिं आगासत्थिकाय० तेणेव सखेज्जएणं पचगुणेण दुरूवाहिएण, केवइएहिं जीवत्थिकाय०² अणतेहिं, केवइएहिं पोग्गलत्थिकाय०² अणतेहिं, केवइएहिं अद्धासमएहिं² सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे जाव अणतेहिं। असखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय०² जहन्नपए तेणेव असखेज्जएण दुगुणेणं दुरूवाहिएण, उक्कोसपए तेणेव असखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण, सेस जहा सखेज्जाणं जाव नियमं अणतेहिं ॥ अणता भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवइएहिं धम्मत्थिकाय० एव जहा असखेज्जा तहा अणतावि निरवसेस ॥ एगे भंते ! अद्धासमए केवइएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे² सत्तहिं, केवइएहिं अहम्मत्थि०² एव चेव, एव आगासत्थिकायपएसेहिंवि, केवइएहिं जीवत्थिकाय०² अणतेहिं, एव जाव अद्धासमएहिं ॥ धम्मत्थिकाए ण भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे² नत्थि एक्केणवि, केवइएहिं अधम्मत्थिकायप्पएसेहिं² असखेज्जेहिं, केवइएहिं आगासत्थिकायप०² असखेज्जेहिं, केवइएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं² अणतेहिं, केवइएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं०² अणतेहिं, केवइएहिं अद्धासमएहिं² सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणतेहिं। अहम्मत्थिकाए ण भंते ! केवइएहिं धम्मत्थिकाय०² असखेज्जेहिं, केवइएहिं अहम्मत्थि०² णत्थि एक्केणवि, सेस जहा धम्मत्थिकायस्स, एव एएण गमएण सव्वेवि सट्ठाणए नत्थि एक्केणवि पुट्ठा, परट्ठाणए आइल्लएहिं तिहिं असखेज्जेहिं भाणियव्व, पच्छिल्लएसु तिन्नि अणता भाणियव्वा जाव अद्धासमओत्ति जाव केवइएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे² नत्थि

निरवसेसो भाणियव्वो ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ४८७ ॥ तेरसमे सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-संतरं भंते ! नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि नेरइया उववज्जंति निरंतरंपि नेरइया उववज्जंति एवं असुरकुमारावि एवं जहा गंगेए तहेव दो दंडगा जाव संतरंपि वेमाणिया चयंति निरंतरंपि वेमाणिया चयंति ॥ ४८८ ॥ कहि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो चमरचंचा नामं आवासे पन्नत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे एवं जहा बितियसए सभाउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव अपरिसेसा नेयव्वा नवरं इमं नाणत्तं जाव तिगिच्छिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स चमरचंचाए रायहाणीए चमरचंचस्स आवासपव्वयस्स अन्नेसिं च बहूणं सेसं तं चेव जाव तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेणं तीसे णं चमरचंचाए रायहाणीए दाहिणपच्चत्थिमेणं छक्कोडिसए पणपन्नं च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइं पन्नासं च सहस्साइं अरुणोदयसमुद्दं तिरियं वीईवइत्ता एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चमरचंचे नामं आवासे पन्नत्ते चउरासीइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं दो जोयणसयसहस्सा पन्नट्ठिं च सहस्साइं छच्च बत्तीसे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते से णं पागारे दिवड्ढं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं एवं चमरचंचाए रायहाणीए वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा जाव चत्तारि पासायपंतीओ। चमरे णं भंते ! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेइ ? नो इणट्ठे समट्ठे, से केणं खाइ णं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चमरचंचे आवासे २ ? गोयमा ! से जहानामए-इहं मणुस्सलोगंसि उवगारियलेणाइ वा उज्जाणियलेणाइ वा णिज्जाणियलेणाइ वा धारिवारियलेणाइ वा तत्थ णं बहवे मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयंति सयंति जहा रायप्पसेणइज्जे जाव कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति अन्नत्थ पुण वसहिं उवेंति एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चमरचंचे आवासे केवलं किड्डारतिपत्तियं अन्नत्थ पुण वसहिं उवेइ, से तेणट्ठेणं जाव आवासे सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ४८९ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ जाव विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी होत्था वण्णओ पुण्णभद्दे चेइए वण्णओ तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव विहरमाणे जेणेव चंपा नगरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता

भाणियव्वं, परट्ठाणे आइल्लगा तिन्नि असखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिन्नि अणता भाणियव्वा जाव अद्धासमओत्ति जाव केवइया अद्धासमया ओगाढा ? नत्थि एक्कोवि ॥४८२॥ जत्थ ण भते ! एगे पुढविकाइए ओगाढे तत्थ ण केवइया पुढविक्काइया ओगाढा ? असखेज्जा, केवइया आउक्काइया ओगाढा ? असखेज्जा, केवइया तेउक्काइया ओगाढा ? असखेज्जा, केवइया वाउकाइया ओगाढा ? असखेज्जा, केवइया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणता, जत्थ ण भते ! एगे आउकाइए ओगाढे तत्थ णं केवइया पुढवि० ? असखेज्जा, केवइया आउ० ? असखेज्जा, एव जहेव पुढविकाइयाण वत्तव्वया तहेव सव्वेर्सिं निरवसेस भाणियव्व जाव वणस्सइकाइयाण जाव केवइया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणता ॥४८३॥ एयसि ण भते ! धम्मत्थिकाय० अधम्मत्थिकाय० आगासत्थिकायसि चक्किया केइ आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा ? नो इणट्ठे समट्ठे, अणता पुण तत्थ जीवा ओगाढा, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ एयसि ण धम्मत्थि० जाव आगासत्थिकायसि णो चक्किया केइ आसइत्तए वा जाव ओगाढा ? गोयमा ! से जहा नामए-कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइ पिहेइ पि० २ त्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण पईवसहस्स पलीवेज्जा, से नूणं गोयमा ! ताओ पईवलेस्साओ अन्नमन्नसबद्धाओ अन्नमन्नपुट्ठाओ जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठति ? हता चिट्ठति, चक्किया ण गोयमा ! केइ तासु पईवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ? भगव ! णो इणट्ठे समट्ठे, अणता पुण तत्थ जीवा ओगाढा, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जाव ओगाढा ॥ ४८४ ॥ कहि ण भते ! लोए बहुसमे, कहि ण भते ! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु एत्थ ण लोए बहुसमे एत्थ ण लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते। कहि ण भते ! विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! विग्गहकडए एत्थ ण विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ॥ ४८५ ॥ किंसठिए ण भते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! सुपइट्ठियसठिए लोए पण्णत्ते, हेट्ठा विच्छिन्ने मज्झे सखित्ते जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अत करेइ ॥ एयस्स ण भते ! अहेलोगस्स तिरियलोगस्स उड्ढलोगस्स य कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए। सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥ ४८६ ॥ **तेरहमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥**

नेरइया ण भते ! कि सचित्ताहारा अचित्ताहारा मीसाहारा ? गोयमा ! नो सचित्ताहारा अचित्ताहारा नो मीसाहारा, एव असुरकुमारा पढमो नेरइयउद्देसओ

भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी-एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते !
जाव से जहेयं तुब्भे वदहत्तिकट्टु जं नवरं देवाणुप्पिया ! अभीयीकुमारं रज्जे ठावेमि,
तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामि अहासुहं देवाणु-
प्पिया ! मा पडिबंधं। तए णं से उदायणे राया समणेणं भगवया महावीरेणं एवं
वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता तमेव आभिसेक्कं
हत्थिं दुरूहइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जा-
णाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव वीइभए नगरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए
णं तस्स उदायणस्स रन्नो अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु
अभीयीकुमारे ममं एगे पुत्ते इट्ठे कंते जाव किमंग पुण पासणयाए, तं जइ णं अहं
अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता जाव
पव्वयामि तो णं अभीयीकुमारे रज्जे य रट्ठे य जाव जणवए य माणुस्सएसु य कामभो-
गेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अणाईयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसार-
कंतारं अणुपरियट्टिस्सइ, तं नो खलु मे सेयं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भग-
वओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए, सेयं खलु मे णियगं भाइणेज्जं केसिकुमारं रज्जे
ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए, एवं संपेहेइ २ त्ता जेणेव
वीइभए नगरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वीइभयं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे
जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता आभिसेक्कं हत्थिं ठवेइ
ठवित्ता २ त्ता आभिसेक्काओ हत्थीओ पच्चोरुहइ २ त्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवा-
गच्छइ २ त्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ
२ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीइभयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं
जाव पच्चप्पिणंति तए णं से उदायणे राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता
एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! केसिस्स कुमारस्स महत्थं ३ एवं रायाभि-
सेओ जहा सिवभद्दस्स कुमारस्स तहेव भाणियव्वो जाव परमाउं पालयाहि इट्ठजण-
संपरिवुडे सिंधुसोवीरपामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं वीइभयपामोक्खाणं तिण्हि
तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं महसेणपामोक्खाणं दसण्हं राईणं अन्नेसिं च बहूणं
राईसर जाव कारेमाणे पालेमाणे विहराहित्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति। तए णं से
केसीकुमारे राया जाए महया जाव विहरइ। तए णं से उदायणे राया केसिं रायाणं
आपुच्छइ, तए णं से केसीराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ एवं जहा जमालिस्स तहेव
सब्भिंतरबाहिरियं तहेव जाव निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेंति, तए णं से केसीराया
अणेगगणणायग जाव संपरिवुडे उदायणं रायं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसी-

जाव विहरइ, तेण कालेणं तेण समएणं सिंधुसोवीरेसु जणवएसु वीइभए नामं नयरे होत्था वन्नओ, तस्स ण वीइभयस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं मियवणे नाम उज्जाणे होत्था सव्वोउय० वन्नओ; तत्थ ण वीइभए नयरे उदायणे नाम राया होत्था महया वन्नओ, तस्स णं उदायणस्स रन्नो प(उमा)भावई नामं देवी होत्था सुकुमाल० वन्नओ, तस्स ण उदायणस्स रन्नो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए अभीइनाम कुमारे होत्था सुकुमाल जहा सिवभद्दे जाव पच्चुवेक्खमाणे विहरइ, तस्स ण उदायणस्स रन्नो नियए भायणेज्जे केसीनाम कुमारे होत्था सुकुमाल जाव सुरूवे, से ण उदायणे राया सिंधुसोवीरप्पामोक्खाण सोलसण्ह जणवयाण, वीइभयप्पामोक्खाणं तिण्ह तेसट्ठीण नगरागरसयाण, महसेणप्पामोक्खाण दसण्ह राईण बद्धमउडाण विइन्नछत्तचामरवालवीयणाण अन्नेसिं च बहूणं राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईण आहेवच्च पोरेवच्च जाव कारेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ। तए ण से उदायणे राया अन्नया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जहा संखे जाव विहरइ। तए ण तस्स उदायणस्स रन्नो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-धन्ना ण ते गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसन्निवेसा जत्थ ण समणे भगवं महावीरे विहरइ, धन्ना ण ते राईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिइओ जे ण समण भगव महावीरं वंदंति नमंसंति जाव पज्जुवासंति, जइ णं समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम जाव विहरमाणे इहमागच्छेज्जा इह समोसरेज्जा, इहेव वीइभयस्स नयरस्स बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा जाव विहरेज्जा, तो ण अहं समणं भगव महावीरं वंदेज्जा नमंसेज्जा जाव पज्जुवासेज्जा, तए ण समणे भगव महावीरे उदायणस्स रन्नो अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव समुप्पन्नं विजाणित्ता चंपाओ नयरीओ पुन्नभद्दाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम जाव विहरमाणे जेणेव सिंधुसोवीरे जणवए जेणेव वीइभए णयरे जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव विहरइ। तए ण वीइभए नयरे सिंघाडग जाव परिसा पज्जुवासइ। तए ण से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! वीइभयं नयरं सब्भितरबाहिरियं जहा कूणिओ उववाइए जाव पज्जुवासइ, पभावईपामोक्खाओ देवीओ तहेव जाव पज्जुवासंति, धम्मकहा। तए ण से उदायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता समणं

यावेइ २ त्ता अट्ठसएण सोवण्णियाण एवं जहा जमालिस्स जाव एवं वयासी–भण सामी ! किं देमो किं पयच्छामो किणा वा ते अट्ठो ? तए ण से उदायणे राया केसिं राय एवं वयासी–इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! कुत्तियावणाओ एव जहा जमालिस्स णवर पउमावई अग्गकेसे पडिच्छइ पियविप्पओगदूस(णा)हा, तए णं से केसी राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेइ दो० २ त्ता उदायण राय सेयापीयएहिं कलसेहिं सेस जहा जमालिस्स जाव सन्निसन्ने, तहेव अम्मधाई नवरं पउमावई हसलक्खण पडसाडग गहाय सेस तं चेव जाव सीयाओ पच्चोरुहइ २ त्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभाग अवक्कमइ २ त्ता सयमेव आभरणमल्लालकारं त चेव जाव पउमावई पडिच्छइ जाव घडियव्व सामी ! जाव नो पमाएयव्वतिकट्टु केसी राया पउमावई य समण भगव महावीर वदंति नमसति वं० २ त्ता जाव पडिगया। तए ण से उदायणे राया सयमेव पचमुट्ठियं लोयं सेस जहा उसभदत्तस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ ४९० ॥ तए ण तस्स अभीइकुमारस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुबजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एव खलु अह उदायणस्स पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए, तए ण से उदायणे राया मम अवहाय नियग-भायणिज्ज केसिकुमार रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइए, इमेण एयारूवेण महया अप्पत्तिएण मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे अतेउरपरियालसपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए वीइभयाओ नयराओ निग्गच्छइ २ त्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चपा नयरी जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कूणिय राय उवसपज्जित्ताण विहरइ, तत्थवि ण से विउलभोगसमिइसमन्नागए यावि होत्था, तए ण से अभीइकुमारे समणोवासए यावि होत्था, अभिगय जाव विहरइ, उदायणमि रायरिसिंमि समणुबद्धवेरे यावि होत्था, तेण कालेणं तेणं समएण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु चो(य)सट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता, तए ण से अभीइकुमारे बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणइ २ त्ता अद्धमासियाए सलेहणाए तीसं भत्ताइ अणसणाए छेदेइ २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयपरिसामतेसु चोयट्ठीए आयावा जाव सहस्सेसु अन्नयरसि आयावा असुरकुमारा(आया)वाससि असुरकुमारदेवत्ताए उववण्णे, तत्थ ण अत्थेगइयाण आयावगाणं असुरकुमाराण देवाण एग पलिओवम ठिई प०, तस्स णं अभीइस्सवि देवस्स एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता। से ण भंते ! अभीइदेवे

वीचियमरणे खेत्तावीचियमरणे कालावीचियमरणे भवावीचियमरणे भावावीचिय-मरणे, दव्वावीचियमरणे ण भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–नेरइयदव्वावीचियमरणे, तिरिक्खजोणियदव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वा-वीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयदव्वावीचिय-मरणे नेरइयदव्वावीचियमरणे ?, गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभि-निविट्ठाइं अभिसमन्नागयाइं भवंति ताइं दव्वाइं आवी(चिय)ची अणुसमयं निरंतरं मरंतित्तिकट्टु से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ नेरइयदव्वावीचियमरणे, एवं जाव देव-दव्वावीचियमरणे। खेत्तावीचियमरणे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–नेरइयखेत्तावीचियमरणे जाव देवखेत्तावीचियमरणे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयखेत्तावीचियमरणे २ ? गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइं दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए एवं जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचिय-मरणेवि, एवं जाव भावावीचियमरणे । ओहिमरणे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–दव्वोहिमरणे खेत्तोहिमरणे जाव भावोहिमरणे । दव्वोहिमरणे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–नेर-इयदव्वोहिमरणे जाव देवदव्वोहिमरणे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयदव्वोहि-मरणे २ ? गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति जण्णं नेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले पुणोवि मरिस्संति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव दव्वोहिमरणे, एवं तिरिक्खजोणिय० मणुस्स० देवदव्वोहिमरणेवि, एवं एएणं गमेणं खेत्तोहिमरणेवि कालोहिमरणेवि भवोहिमरणेवि भावोहिमरणेवि । आइंतिय-मरणे णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं०–दव्वाइंतियमरणे खेत्ताइंतिय-मरणे जाव भावाइंतियमरणे, दव्वाइंतियमरणे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! चउव्विहे प० तं०–नेरइयदव्वाइंतियमरणे जाव देवदव्वाइंतियमरणे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयदव्वाइंतियमरणे २ ? गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति जे णं नेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले नो पुणोवि मरिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव मरणे, एवं तिरिक्ख० मणुस्स० देवाइंतियमरणे, एवं खेत्ताइंतियमरणेवि, एवं जाव भावाइंतियमरणेवि । बालमरणे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दुवालसविहे प० तं०—वलयमरणे जहा खंदए जाव गिद्धपिट्ठे ॥ पंडियमरणे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–पाओव-गमणे य भत्तपच्चक्खाणे य । पाओवगमणे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दुविहे

गहाय गच्छेज्जा, एव चेव, से जहानामए-केइ पुरिसे भिस अवद्दालिय २ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारेवि भिसकिच्चगएण अप्पाणेणं त चेव, से जहानामए-मुणालिया सिया उदगंसि काय उम्मज्जिय २ चिट्ठिज्जा, एवामेव सेस जहा वग्गुलीए, से जहानामए-वण(खं)सडे सिया किण्हे किण्होभासे जाव निकुरुबभूए पासादीए ४, एवामेव अणगारेवि भावियप्पा वगसडकिच्चगएण अप्पाणेणं उड्ढ वेहास उप्पएज्जा, सेस त चेव, से जहानामए-पुक्खरिणी सिया चउक्कोणा समतीरा अणुपुव्वसुजाय जावसद्दुन्नइयमहुरसरणाइया पासाईया ४, एवामेव अणगारेवि भावियप्पा पोक्खरिणीकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ? हता उप्पएज्जा, अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवइयाइ पभू पोक्खरिणीकिच्चगयाइ रूवाइ विउव्वित्तए, सेस त चेव जाव विउव्विस्सति वा । से भते ! किं माई विउव्वइ अमाई विउव्वइ ? गोयमा ! माई विउव्वइ नो अमाई विउव्वइ, माई ण तस्स ठाणस्स अणालोइय० एव जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव अत्थि तस्स आराहणा । सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ४९७ ॥ **तेरहमे सए नवमो उद्देसो समत्तो ॥**

कइ ण भते ! छाउमत्थियसमुग्घाया पन्नत्ता ? गोयमा ! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता, तजहा-वेयणासमुग्घाए एव छाउमत्थियसमुग्घाया नेयव्वा जहा पन्नवणाए जाव आहारगसमुग्घाएत्ति । सेव भंते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ४९८ ॥ **तेरहमे सए दसमो उद्देसो समत्तो, तेरसमं सयं समत्तं ॥**

चर १ उम्माय २ सरीरे ३ पोग्गल ४ अगणी ५ तहा किमाहारे ६ । ससिट्ठ ७ मतरे खलु ८ अणगारे ९ केवली चेव १० ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एव वयासी-अणगारे ण भते ! भावियप्पा चरम देवावास वीइक्कते परम देवावासमसपत्ते एत्थ ण अतरा कालं करेज्जा, तस्स ण भते ! कहिं गई कहिं उववाए पन्नत्ते ? गोयमा ! जे से तत्थ परि(य)स्सओ तल्लेसा देवावासा तहिं तस्स गई तहिं तस्स उववाए पन्नत्ते, से य तत्थगए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव पडि(म)वडइ, से य तत्थ गए नो विराहेज्जा तामेव लेस्स उवसपज्जित्ताणं विहरइ ॥ अणगारे ण भंते ! भावियप्पा चरमं असुरकुमारावासं वीइक्कते परम असुरकुमारा० एव चेव, एवं जाव थणियकुमारावास जोइसियावास, एव वेमाणियावास जाव विहरइ ॥ ४९९ ॥ नेरइयाण भते ! कहं सीहा गई कहं सीहे गइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहानामए-केइ पुरिसे तरुणे बलव जुगव जाव निउणसिप्पोवगए आउंटिय बाह पसारेज्जा पसारिय वा बाह आउंटेज्जा, विक्खिण्ण वा मुट्ठि साहरेज्जा, साहरिय वा मुट्ठिं विक्खिरेज्जा, उम्मिसिय वा अच्छिं निम्मिसेज्जा निम्मिसियं वा अच्छि उम्मिसेज्जा, भवे एयारूवे ? णो इणट्ठे

कहमियाणिं पकरेइ ? गोयमा ! ताहे चेव णं से ईसाणे देविंदे देवराया अब्भिंत-
रपरिसए देवे सद्दावेइ, तए णं ते अब्भिंतरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा एवं
जहेव सक्कस्स जाव तए णं ते आभिओगिया देवा सद्दाविया समाणा तमुकाइए
देवे सद्दावेंति, तए णं ते तमुकाइया देवा सद्दाविया समाणा तमुकायं पकरेंति
एवं खलु गोयमा ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुकायं पकरेइ ॥ अत्थि णं भंते !
असुरकुमाराणवि देवा तमुकायं पकरेंति ? हंता अत्थि । किं पत्तियं णं भंते ! असुर-
कुमारा देवा तमुकायं पकरेंति ? गोयमा ! किड्डारतिपत्तियं वा पडिणीयविमोहणट्ठयाए
वा गुत्तीसंरक्खणहेउं वा अप्पणो वा सरीरपच्छायणट्ठयाए, एवं खलु गोयमा !
असुरकुमारावि देवा तमुकायं पकरेंति एवं जाव वेमाणिया । सेवं भंते ! २ त्ति
जाव विहरइ ॥ ५४ ॥ चोद्दसमसयस्स बीओ उद्देसो समत्तो ॥

देवे णं भंते ! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं
वीईवएज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए वीईवएज्जा अत्थेगइए नो वीईवएज्जा । से केणट्ठेणं
भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगइए वीईवएज्जा अत्थेगइए नो वीईवएज्जा ? गोयमा ! देवा
दुविहा पन्नत्ता तंजहा-मायीमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगा य,
तत्थ णं जे से मायीमिच्छादिट्ठीउववन्नए देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ २
त्ता नो वंदइ नो नमंसइ नो सक्कारेइ नो सम्माणेइ नो कल्लाणं मंगलं देवयं जाव पज्जु-
वासइ, से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा, तत्थ णं जे से अमायि-
सम्मदिट्ठीउववन्नए देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ पासित्ता वंदइ नमंसइ
जाव पज्जुवासइ, से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं नो वीईवएज्जा से
तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव नो वीईवएज्जा । असुरकुमारे णं भंते ! महाकाए
महासरीरे एवं चेव एवं देवदंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिए ॥ ५५ ॥ अत्थि
णं भंते ! नेरइयाणं सक्कारेइ वा सम्माणेइ वा किइकम्मेइ वा अब्भुट्ठाणेइ वा अंज-
लिपग्गहेइ वा आसणाभिग्गहेइ वा आसणाणुप्पदाणेइ वा इंतस्स पच्चुग्गच्छणया
ठियस्स पज्जुवासणया गच्छंतस्स पडिसंसाहणया ? नो इणट्ठे समट्ठे । अत्थि णं
भंते ! असुरकुमाराणं सक्कारेइ वा सम्माणेइ वा जाव पडिसंसाहणया ? हंता
अत्थि एवं जाव थणियकुमाराणं, पुढविकाइयाणं जाव चउरिंदियाणं एएसिं जहा
नेरइयाणं अत्थि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सक्कारेइ वा जाव पडिसं-
साहणया ? हंता अत्थि नो चेव णं आसणाभिग्गहेइ वा आसणाणुप्पयाणेइ वा
मणुस्साणं जाव वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ ५६ ॥ अप्पिड्डिए णं भंते !
देवे महिड्डियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ? नो इणट्ठे समट्ठे, समिड्डिए

कइविहे ण भंते ! उम्माए पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उम्माए पण्णत्ते, तजहा–जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएण, तत्थ णं जे से जक्खावेसे से ण सुहवेयणतराए चेव सुहविमोयणतराए चेव, तत्थ ण जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण से ण दुहवेयणतराए चेव दुहविमोयणतराए चेव ॥ नेरइयाणं भते ! कइविहे उम्माए पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उम्माए पण्णत्ते, तजहा–जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएण, से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ नेरइयाण दुविहे उम्माए पण्णत्ते, तजहा–जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण ? गोयमा ! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से ण तेसिं असुभाण पोग्गलाण पक्खिवणयाए जक्खावेस उम्माय पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदएण मोहणिज्ज उम्माय पाउणेज्जा, से तेणट्ठेण जाव उदएण । असुरकुमाराण भते ! कइविहे उम्माए पण्णत्ते ? एव जहेव नेरइयाण नवरं देवे वा से महिड्ढियतराए चेव असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाण पोग्गलाण पक्खिवणयाए जक्खा(ए)वेसं उम्मायं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा सेस त चेव, से तेणट्ठेण जाव उदएण, एव जाव थणियकुमाराण, पुढविकाइयाण जाव मणुस्साण एएसिं जहा नेरइयाण, वाणमंतरजोइसियवेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ॥ ५०२ ॥ अत्थि ण भते ! पज्जन्ने कालवासी वुट्ठिकाय पकरेइ ? हता अत्थि ॥ जाहे णं भते ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकाय काउकामे भवइ से कहमियाणि पकरेइ ? गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया अब्भितरपरि(सा)सए देवे सद्दावेइ, तए ण ते अब्भितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेंति, तए ण ते मज्झिमपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेंति, तए ण ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगा देवा सद्दावेंति, तए ण ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेंति, तए ण ते जाव सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाइए देवे सद्दावेंति, तए ण ते वुट्ठिकाइया देवा सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाय पकरेंति, एव खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकाय पकरेइ ॥ अत्थि ण भते ! असुरकुमारावि देवा वुट्ठिकाय पकरेंति ? हता अत्थि, किं पत्तियण्णं भते ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकाय पकरेंति ? गोयमा ! जे इमे अरहता भगवता एएसि ण जम्मणमहिमासु वा, निक्खमणमहिमासु वा, णाणुप्पायमहिमासु वा, परिनिव्वाणमहिमासु वा, एव खलु गोयमा ! असुरकुमारावि देवा वुट्ठिकायं पकरेंति, एव नागकुमारावि, एव जाव थणियकुमारा, वाणमतरजोइसियवेमाणिया एव चेव ॥ ५०३ ॥ जाहे णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्काय काउंकामे भवइ से

ण भंते ! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीईवएज्जा, से णं भंते ! किं सत्थेणं अक्कमित्ता पभू अणक्कमित्ता पभू ? गोयमा ! अक्कमित्ता पभू नो अणक्कमित्ता पभू, से णं भंते ! किं पुव्विं सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीईवएज्जा, पुव्विं वीईवएज्जा पच्छा सत्थेणं अक्कमेज्जा ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा दसमसए आइड्ढिउद्देसए तहेव निरवसेसं चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए ॥५०७॥ रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पोग्गलपरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं, एवं जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया, एवं वेयणापरिणामं, एवं जहा जीवाभिगमे बिइए नेरइयउद्देसए जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं परिग्गहसन्नापरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ५०८ ॥ **चोद्दसमसयस्स तइओ उद्देसो समत्तो** ॥

एस णं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं लुक्खी समयं अलुक्खी समयं लुक्खी वा अलुक्खी वा, पुव्विं च णं करणेणं अणेगवन्नं अणेगरूवं परिणामं परिणमइ, अह से परिणामे निज्जिण्णे भवइ तओ पच्छा एगवन्ने एगरूवे सिया ? हंता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतं तं चेव जाव एगरूवे सिया ॥ एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पन्नं सासयं समयं० ? एवं चेव, एवं अणागयमणंतंपि ॥ एस णं भंते ! खंधे तीतमणंतं० ? एवं चेव, खंधेवि जहा पोग्गले ॥ ५०९ ॥ एस णं भंते ! जीवे तीतमणंतं सासयं समयं दुक्खी समयं अदुक्खी समयं दुक्खी वा अदुक्खी वा, पुव्विं च णं करणेणं अणेगभावं अणेगभूयं परिणामं परिणमइ, अह से वेयणिज्जे निज्जिण्णे भवइ तओ पच्छा एगभावे एगभूए सिया ? हंता गोयमा ! एस णं जीवे जाव एगभूए सिया, एवं पडुप्पन्नं सासयं समयं, एवं अणागयमणंतं सासयं समयं ॥ ५१० ॥ परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सासए असासए ? गोयमा ! सिय सासए सिय असासए, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सिय सासए सिय असासए ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वन्नपज्जवेहिं जाव फासपज्जवेहिं असासए, से तेणट्ठेणं जाव सिय सासए सिय असासए ॥ ५११ ॥ परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! दव्वादेसेणं नो चरिमे अचरिमे, खेत्तादेसेणं सिय चरिमे सिय अचरिमे, कालादेसेणं सिय चरिमे सिय अचरिमे, भावादेसेणं सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ ५१२ ॥ कइविहे णं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते, तंजहा—जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य, एवं परिणामपयं निरवसेसं भाणियव्वं । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ५१३ ॥ **चोद्दसमसयस्स चउत्थो उद्देसो समत्तो** ॥

जाव मणीणं फासो तस्स णं णेमिपडिरूवगस्स बहुमज्झदेसभागे तत्थ णं महं एगं पासायवडिंसगं विउव्वइ पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियपहसिए जाव पडिरूवे तस्स णं पासायवडिंसगस्स उल्लोए पउमलयाभत्तिचित्ते जाव पडिरूवे तस्स णं पासायवडिंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभाए जाव मणीणं फासो मणिपेढिया अट्ठजोयणिया जहा वेमाणियाणं तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं महं एगे देवसयणिज्जे विउव्वइ सयणिज्जवण्णओ जाव पडिरूवे, तत्थ णं से सक्के देविंदे देवराया अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं दोहि य अणिएहिं तं -नट्टाणिएण य गंधव्वाणिएण य सद्धिं महयाहयनट्ट जाव दिव्वाइं भोग-भोगाइं भुंजमाणे विहरइ॥ जाहे णं ईसाणे देविंदे देवराया दिव्वाइं जहा सक्के तहा ईसाणेवि निरवसेसं एवं सणंकुमारेवि नवरं पासायवडिंसओ छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तिन्नि जोयणसयाइं विक्खंभेणं मणिपेढिया तहेव अट्ठजोयणिया तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ सपरिवारं भाणियव्वं तत्थ णं सणंकुमारे देविंदे देवराया बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव चउहिं बावत्तरीहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं य बहूहिं सणंकुमारकप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महया जाव विहरइ। एवं जहा सणंकुमारे तहा जाव पाणओ अच्चुओ नवरं जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो पासायउच्चत्तं जं सएसु २ कप्पेसु विमाणाणं उच्चत्तं अद्धद्धं वित्थारो जाव अच्चुयस्स नवजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धपंचमाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं तत्थ णं गोयमा! अच्चुए देविंदे देवराया दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव विहरइ, सेवं भंते! २ त्ति॥ ५११॥ चोद्दसमे सए छट्ठो उद्देसो समत्तो॥

रायगिहे जाव परिसा पडिगया, गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी-चिरसंसिट्ठोऽसि मे गोयमा! चिरसंथुओऽसि मे गोयमा! चिरपरिचिओऽसि मे गोयमा! चिरजुसिओऽसि मे गोयमा! चिराणुगओऽसि मे गोयमा! चिराणुवत्तीसि मे गोयमा! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे किं परं मरणा कायस्स भेदा इओ चुता दोवि तुल्ला एगट्ठा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो॥ ५१२॥ जहा णं भंते! वयं एयमट्ठं जाणामो पासामो तहा णं अणुत्तरोववाइया देवावि एयमट्ठं जाणंति पासंति? हंता गोयमा! जहा णं वयं एयमट्ठं जाणामो पासामो तहा अणुत्तरोववाइया देवावि एयमट्ठं जाणंति पासंति। से केणट्ठेणं जाव पासंति? गोयमा! अणुत्तरोववाइयाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमन्नागयाओ भवंति से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जाव

अणिट्ठा गधा अणिट्ठा रसा अणिट्ठा फासा अणिट्ठा गई अणिट्ठा ठिई अणिट्ठे लायन्ने अणिट्ठे जसोकित्ती अणिट्ठे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे । असुरकुमारा दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तजहा-इट्ठा सद्दा इट्ठा रूवा जाव इट्ठे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे, एव जाव थणियकुमारा ॥ पुढविकाइया छट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, त०-इट्ठाणिट्ठा फासा इट्ठाणिट्ठा गई एव जाव परक्कमे, एव जाव वणस्सइकाइया । बेइंदिया सत्तट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तजहा-इट्ठाणिट्ठा रसा सेस जहा एगिंदियाणं, तेइंदिया ण अट्ठट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, त०-इट्ठाणिट्ठा गधा सेस जहा बेइंदियाण, चउरिंदिया ण नवट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, त०-इट्ठाणिट्ठा रूवा सेस जहा तेइंदियाण, पचिंदियतिरिक्खजोणिया दस ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तजहा-इट्ठाणिट्ठा सद्दा जाव परक्कमे, एव मणुस्सावि, वाणमतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥ ५१५ ॥ देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू तिरियपव्वय वा तिरियभित्तिं वा उल्लघेत्तए वा पल्लघेत्तए वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । देवे ण भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू तिरिय जाव पल्लघेत्तए वा ? हता पभू । सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥ ५१६ ॥

चोद्दसमे सए पञ्चमो उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे जाव एव वयासी-नेरइया ण भते ! किमाहारा किंपरिणामा किंजोणिया किंठिईया पण्णत्ता ? गोयमा ! नेरइया ण पोग्गलाहारा पोग्गलपरिणामा पोग्गलजोणिया पोग्गलट्ठिईया कम्मोवगा कम्मनियाणा कम्मट्ठिईया कम्मुणा(चे)मेव विप्परियासमेंति, एव जाव वेमाणिया ॥५१७॥ नेरइया ण भते ! किं वीचिदव्वाइं आहारेंति अवीचिदव्वाइ आहारेंति ? गोयमा ! नेरइया वीचिदव्वाइपि आहारेंति अवीचिदव्वाइपि आहारेंति, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ नेरइया वीचि० तं चेव जाव आहारेंति ? गोयमा ! जे ण नेरइया एगपएसूणाइंपि दव्वाइ आहारेंति ते ण नेरइया वीचिदव्वाइ आहारेंति, जे णं नेरइया पडिपुन्नाई दव्वाइ आहारेंति ते णं नेरइया अवीचिदव्वाइ आहारेंति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जाव आहारेंति, एव जाव वेमाणिया आहारेंति ॥ ५१८ ॥ जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजिउकामे भवइ से कहमियाणिं पकरेइ ? गोयमा ! ताहे चेव ण से सक्के देविंदे देवराया एग मह नेमिपडिरूवग विउव्वइ, एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खंभेण तिन्नि जोयणसयसहस्साइ जाव अद्धगुलं च किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेणं, तस्स ण नेमिपडिरूवस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते

पासति ॥ ५२१ ॥ कइविहे ण भंते ! तुल्लए पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तंजहा-दव्वतुल्लए, खेत्ततुल्लए, कालतुल्लए, भवतुल्लए, भावतुल्लए, संठाणतुल्लए, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ दव्वतुल्लए २ ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वओ तुल्ले, परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवइरित्तस्स दव्वओ णो तुल्ले, दुपएसिए खधे दुपएसियस्स खधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपएसिए खधे दुपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ णो तुल्ले, एवं जाव दसपएसिए, तुल्लसखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, तुल्लसखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसखेज्जपएसियवइरित्तस्स खधस्स दव्वओ णो तुल्ले, एवं तुल्लअसखेज्जपएसिएवि, एवं तुल्लअणतपएसिएवि, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ दव्वतुल्लए । से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ खेत्ततुल्लए २ ? गोयमा ! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ णो तुल्ले, एव जाव दसपए-सोगाढे, तुल्लसखेज्जपएसोगाढेवि एव चेव, एव तुल्लअसंखेज्जपएसोगाढेवि, से तेणट्ठेण जाव खेत्ततुल्लए । से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ कालतुल्लए २ ? गोयमा ! एगसमयठि-ईए पोग्गले एगसमयठिईयस्स पोग्गलस्स कालओ तुल्ले, एगसमयठिईए पोग्गले एगसमयठिईयवइरित्तस्स पोग्गलस्स कालओ णो तुल्ले, एव जाव दससमयट्ठिईए, तुल्लसखेज्जसमयठिईए एव चेव, एव तुल्लअसखेज्जसमयट्ठिईएवि, से तेणट्ठेण जाव काल-तुल्लए। से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ भवतुल्लए २ ? गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स भवट्ठयाए तुल्ले, नेरइए नेरइयवइरित्तस्स भवट्ठयाए नो तुल्ले, तिरिक्खजोणिए एव चेव, एवं मणु-स्सेवि, एव देवेवि, से तेणट्ठेण जाव भवतुल्लए। से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ भावतुल्लए भावतुल्लए ? गोयमा ! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालयस्स पोग्गलस्स भावओ तुल्ले, एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगवइरित्तस्स पोग्गलस्स भावओ णो तुल्ले, एव जाव दसगुणकालए, एव तुल्लसखेज्जगुणकालए पोग्गले, एव तुल्लअसखेज्जगुणकालएवि, एव तुल्लअणतगुणकालएवि, जहा कालए एव नीलए लोहियए हालिद्दए सुक्किल्लए, एवं सुब्भिगधे, एवं दुब्भिगधे, एव तित्ते जाव महुरे, एवं कक्खडे जाव लुक्खे, उदइए भावे उदइयस्स भावस्स भावओ तुल्ले, उदइए भावे उदइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले, एवं उवसमिएवि, खइए० खओवसमिए० पारिणामिए० सनिवाइए भावे सनिवाइयस्स भावस्स, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ भावतुल्लए २ । से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ सठाणतुल्लए २ ? गोयमा ! परिमडले सठाणे परिमडलस्स सठाणस्स सठाणओ तुल्ले, परिमंडलसठाणे परिमंडलसठाणवइरित्तस्स सठाणस्स संठाणओ नो तुल्ले, एव वट्टे तसे चउरंसे आयए, समचउरंससंठाणे सम-

देविन्दे दिव्वं देवड्ढिं दिव्वं देवजुइ(ति)मं दिव्वं बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसेत्तए, णो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएइ छविच्छेयं वा करेइ, एसुहुमं च णं उवदंसेज्जा से तेणट्ठेणं जाव अव्वाबाहा देवा १ ॥५१०॥ पभू णं भंते! सक्के देविंदे देवराया पुरिसस्स सीसं सपाणिणा असिणा छिंदित्ता कमंडलुंमि पक्खिवित्तए? हंता पभू। से कहमिदाणिं पकरेइ? गोयमा! छिंदिया छिंदिया च णं पक्खिवेज्जा भिंदिया भिंदिया च णं पक्खिवेज्जा, कुट्टिया कुट्टिया च णं पक्खिवेज्जा चुण्णिया चुण्णिया च णं पक्खिवेज्जा तओ पच्छा खिप्पामेव पडिसंघाएज्जा णो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचिवि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएज्जा छविच्छेयं पुण करेइ, एसुहुमं च णं पक्खिवेज्जा ॥५११॥ अत्थि णं भंते! जंभया देवा? हंता अत्थि। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जंभया देवा? गोयमा! जंभगा णं देवा निच्चं पमुइयपक्कीलिया कंदप्परइमोहण-सीला जे णं ते देवे कुद्धे पासेज्जा से णं पुरिसे महंतं अयसं पाउणिज्जा जे णं ते देवे तुट्ठे पासेज्जा से णं महंतं जसं पाउणेज्जा से तेणट्ठेणं गोयमा! जंभगा देवा २। कइविहा णं भंते! जंभगा देवा पण्णत्ता? गोयमा! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा-अन्नजंभगा पाणजंभगा वत्थजंभगा लेणजंभगा सयणजंभगा पुप्फजंभगा फलजंभगा पुप्फफलजंभगा विज्जाजंभगा अवियत्तजंभगा। जंभगा णं भंते! देवा कहिं वसहिं उवेंति? गोयमा! सव्वेसु चेव दीहवेयड्ढेसु चित्तविचित्तजमगपव्वएसु कंचणपव्वएसु य एत्थ णं जंभगा देवा वसहिं उवेंति। जंभगाणं भंते! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥५१२॥ चोद्दसमे सए अट्ठमो उद्देसो समत्तो॥

अणगारे णं भंते! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं न जाणइ न पासइ तं पुण जीवं सरूविं सकम्मलेस्सं जाणइ पासइ? हंता गोयमा! अणगारे णं भावियप्पा अप्पणो जाव पासइ॥ अत्थि णं भंते! सरू(वी)वि सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति ४? हंता अत्थि॥ कयरे णं भंते! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति जाव पभासेंति? गोयमा! जाओ इमाओ चंदिमसूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेस्साओ बहिया अभिणिस्सडाओ ताओ ओभासेंति जाव पभासेंति एवं एएणं गोयमा! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति ४ ॥५१३॥ नेरइयाणं भंते! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता पोग्गला? गोयमा! नो अत्ता पोग्गला अणत्ता पोग्गला। असुरकुमाराणं भंते! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता पोग्गला? गोयमा! अत्ता पोग्गला नो अणत्ता पोग्गला एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा! अत्तावि पोग्गला

अतरे पण्णत्ते, सोहम्मीसाणाणं भंते ! सणकुमारमाहिंदाण य केवइय० ? एवं चेव, सणंकुमारमाहिंदाणं भंते ! वभलोगस्स य कप्पस्स केवइयं० ? एव चेव, वंभलोगस्स ण भंते ! लंतगस्स य कप्पस्स केवइय० ? एवं चेव, लंतगस्स णं भंते ! महासुक्कस्स य कप्पस्स केवइय० ? एव चेव, एवं महासुक्कस्स य कप्पस्स सहस्सारस्स य, एवं सहस्सारस्स आणयपाणयकप्पाण, एवं आणयपाणयाण य कप्पाण आरणच्चुयाण य कप्पाण, एव आरणच्चुयाण गेविज्जविमाणाण य, एवं गेविज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाण य । अणुत्तरविमाणाणं भंते ! ईसिप्पब्भाराए य पुढवीए केवइय० पुच्छा, गोयमा ! दुवालसजोयणे अबाहाए अतरे पण्णत्ते, ईसिप्पब्भाराए ण भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवइए अबाहाए० पुच्छा, गोयमा ! देसूणं जोयणं अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥५२६॥ एस ण भंते ! सालरुक्खे उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! इहेव रायगिहे नयरे सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिइ, से णं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ, से ण भंते ! तओहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंत काहिइ ॥ एस णं भंते ! साललट्ठिया उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे काल किच्चा जाव कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे विञ्झगिरिपायमूले महेस्सरीए नयरीए सामलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिइ, सा ण तत्थ अच्चियवंदियपूइय जाव लाउल्लोइयमहिया यावि भविस्सइ, से ण भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सेस जहा सालरुक्खस्स जाव अंत काहिइ । एस ण भंते ! उंबरलट्ठिया उण्हाभिहया ३ कालमासे काल किच्चा जाव कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे पाडलिपुत्ते नयरे पाडलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिइ, से णं तत्थ अच्चियवंदिय जाव भविस्सइ, से ण भंते ! अणतरं उव्वट्टित्ता सेस त चेव जाव अंत काहिइ ॥ ५२७ ॥ तेणं कालेण तेण समएण अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासीसया गिम्हकालसमयंसि एव जहा उववाइए जाव आराहगा ॥ ५२८ ॥ बहुजणे ण भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ एवं खलु अम्मडे परिव्वायगे कंपिल्लपुरे नयरे घरसए एव जहा उववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव दढप्पइण्णो अंत काहिइ ॥ ५२९ ॥ अत्थि णं भंते ! अव्वाबाहा देवा अव्वाबाहा देवा ? हंता अत्थि, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अव्वाबाहा देवा २ ? गोयमा ! पभू णं एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगंसि अच्छिपत्तंसि दिव्वं

वागरेज्ज वा ? हंता भासेज्ज वा वागरेज्ज वा । जहा णं भंते ! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा तहा णं सिद्धेवि भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, से केण-ट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा णो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ? गोयमा ! केवली णं सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे सिद्धे णं अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कारपरक्कमे से तेणट्ठेणं जाव वागरेज्ज वा । केवली णं भंते ! उम्मिसेज्ज वा निम्मिसेज्ज वा ? हंता गोयमा ! उम्मि-सेज्ज वा निम्मिसेज्ज वा एवं चेव एवं आउट्टेज्ज वा पसारेज्ज वा, एवं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएज्जा केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ पासइ ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ, जहा णं भंते ! केवली इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ पासइ तहा णं सिद्धेवि इमं रयणप्पभं पुढविं रय-णप्पभापुढवीति जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ, केवली णं भंते ! सक्करप्पभं पुढविं सक्करप्पभापुढवीति जाणइ पासइ ? एवं चेव एवं जाव अहेसत्तमं केवली णं भंते ! सोहम्मं कप्पं सोहम्मकप्पेति जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ, एवं ईसाणं एवं जाव अच्चुयं केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणे गेवेज्जविमाणेति जाणइ पासइ ? एवं चेव एवं अणुत्तरविमाणेवि केवली णं भंते ! ईसिपब्भारं पुढविं ईसिपब्भार-पुढवीति जाणइ पासइ ? एवं चेव केवली णं भंते ! परमाणुपोग्गलं परमाणुपोग्गलेत्ति जाणइ पासइ ? एवं चेव एवं दुपएसियं खंधं एवं जाव जहा णं भंते ! केवली अणंतपएसियं खंधं अणंतपएसिए खंधेत्ति जाणइ पासइ तहा णं सिद्धेवि अणंतपएसियं खंधं जाव पासइ ? हंता जाणइ पासइ । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ५१७ ॥

चोद्दसमे सए दसमो उद्देसो समत्तो ॥ चोद्दसमं सयं समत्तं ॥

णमो सुयदेवयाए भगवईए । तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था वण्णओ तीसे णं सावत्थीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तत्थ णं कोट्ठए नामं चेइए होत्था वण्णओ तत्थ णं सावत्थीए नयरीए हालाहला नामं कुंभकारी आजीवियोवासिया परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया आजीविय-समयंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता अय-माउसो ! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठेत्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं गोसाले मंखलिपुत्ते चउव्वीसवास-परियाए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजी-वियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णया कयाइ इमे छ दिसाचरा अंतियं पाउब्भवित्था तंजहा-साणे क(ं)लंदे

अणत्तावि पोग्गला, एव जाव मणुस्साणं, वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा असुर-कुमाराण, नेरइयाणं भते ! किं इट्ठा पोग्गला अणिट्ठा पोग्गला ? गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला अणिट्ठा पोग्गला, जहा अत्ता भणिया एवं इट्ठावि कतावि पियावि मणुन्नावि भाणियव्वा ए(व)ए पच दडगा ॥ देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे रूवसहस्स विउव्वित्ता पभू भासासहस्स भासित्तए ? हता पभू, सा ण भते ! किं एगा भासा भासासहस्स ? गोयमा ! एगा ण सा भासा णो खलु तं भासासहस्स ॥ ५३४ ॥ तेण कालेण तेणं समएण भगव गोयमे अचिरुग्गय बालसूरिय जासुमणाकुसुमपुजप्प-गास लोहितगं पासइ पासित्ता जायसड्ढे जाव समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव नमसित्ता एव वयासी–किमिदं भते ! सूरिए किमिद भंते ! सूरियस्स अट्ठे ? गोयमा ! सुभे सूरिए सुभे सूरियस्स अट्ठे । किमिद भंते ! सूरिए किमिदं भंते ! सूरियस्स पभा ? एव चेव, एव छाया, एवं लेस्सा ॥५३५॥ जे इमे भते ! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एए ण कस्स ते(उ)यलेस्सं वीई-वयति ? गोयमा ! मासपरियाए समणे निग्गथे वाणमतराण देवाण तेयलेस्स वीइवयइ, दुमासपरियाए समणे निग्गथे असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाण तेयलेस्स वीइ-वयइ, एव एएण अभिलावेण तिमासपरियाए समणे निग्गथे असुरकुमाराण देवाणं तेयलेस्स वीइवयइ, चउम्मासपरियाए समणे निग्गंथे गहगणनक्खत्ततारारूवाण जोइ-सियाण देवाण तेयलेस्स वीइवयइ, पचमासपरियाए समणे निग्गथे चदिमसूरियाणं जोइ-सिंदाण जोइसरायाण तेयलेस्स वीइवयइ, छम्मासपरियाए समणे निग्गंथे सोहम्मीसा-णाण देवाण ० सत्तमासपरियाए ० सणकुमारमाहिंदाणं देवाण ० अट्ठमासपरियाए समणे निग्गथे बभलोगलतगाण देवाणं तेयलेस्स वीइवयइ, नवमासपरियाए समणे निग्गथे महासुक्कसहस्साराण देवाण तेयलेस्स वीइवयइ, दसमासपरियाए समणे निग्गथे आणय-पाणयआरणच्चुयाणं देवाण ० एक्कारसमासपरियाए समणे निग्गथे गेवेज्जगाण देवाणं ० बारसमासपरियाए समणे निग्गथे अणुत्तरोववाइयाणं देवाण तेयलेस्स वीइवयइ, तेण परं सुक्के सुक्काभिजाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ जाव अत करेइ । सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ५३६ ॥ **चोद्दसमे सए नवमो उद्देसो समत्तो ॥**

केवली णं भते ! छउमत्थ जाणइ पासइ ? हता जाणइ पासइ, जहा ण भते ! केवली छउमत्थं जाणइ पासइ तहा णं सिद्धेवि छउमत्थ जाणइ पासइ ? हता जाणइ पासइ, केवली ण भंते ! आहोहियं जाणइ पासइ ? एव चेव, एव परमाहो-हियं, एव केवलिं एवं सिद्ध जाव जहा ण भंते ! केवली सिद्ध जाणइ पासइ तहा णं सिद्धेवि सिद्धं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । केवली णं भंते ! भासेज्ज वा

मासंमासेणं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सन्निवेसे जेणेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ भं० २ त्ता सरवणे सन्निवेसे उच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणे अन्नत्थ वसहिं अलभमाणे तस्सेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए, तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमाल जाव पडिरूवगं दारगं पयाया, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोण्णं गुण-निप्फन्नं नामधेज्जं करेंति-जम्हा णं अम्हं इमे दारए गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाए, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं गोसाले गोसालेत्ति, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति गोसालेत्ति, तए णं से गोसाले दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पाडियक्कं चित्तफलगं करेइ २ त्ता चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ५१५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापिईहिं देवत्तगएहिं एवं जहा भावणाए जाव एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तए णं अहं गोयमा! पढमं वासं अद्धमासं अद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामं निस्साए पढमं अंतरावासं वासावासं उवागए, दोच्चं वासं मासंमासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव नालिंदा बाहिरिया जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवा-गच्छामि ते० २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हामि अहा० २ त्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए, तए णं अहं गोयमा! पढमं मासखमणं उवसं-पज्जित्ताणं विहरामि। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव नालिंदा बाहिरिया जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ त० २ त्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ भं० २ त्ता रायगिहे नगरे उच्चनीय जाव अन्नत्थ कत्थवि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासा-वासं उवागए जत्थेव णं अहं गोयमा!। तए णं अहं गोयमा! पढममासक्खमण-पारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि तं० २ त्ता णालिंदाबाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि २ त्ता रायगिहे नगरे

कणियारे अच्छिद्दे अग्गिवेसायणे अज्जुणे गोमायुपुत्ते, तए णं ते छ दिसाचरा अट्ठविहं पुव्वगयं मग्गदसमं सएहिं २ मइदंसणेहिं निज्जूहंति स० २ त्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेण अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेण सव्वेसिं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेइ, तं०-लाभं अलाभं सुहं दुक्खं जीवियं मरणं तहा। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेण अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नयरीए अजिणे जिणप्पलावी अणरहा अरहप्पलावी अकेवली केवलिप्पलावी असव्वन्नू सव्वन्नुप्पलावी अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ ॥ ५३८ ॥ तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे विहरइ, से कहमेयं मन्ने एवं?, तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमगोत्तेणं जाव छट्ठंछट्ठेणं एवं जहा बिइयसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४-एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे विहरइ, से कहमेयं मन्ने एवं?, तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव जायसड्ढे जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-एवं खलु अहं भंते! छट्ठं तं चेव जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, से कहमेयं भंते! एवं? तं इच्छामि णं भंते! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स उट्ठाणपरियाणियं परिकहियं, गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-जण्णं गोयमा! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४-एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे विहरइ तण्णं मिच्छा, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि-एवं खलु एयस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखलिनामं मंखे पिया होत्था, तस्स णं मंखलिस्स मंखस्स भद्दा नामं भारिया होत्था सुकुमाल जाव पडिरूवा, तए णं सा भद्दा भारिया अन्नया कयाइ गुव्विणी यावि होत्था, तेणं कालेणं तेणं समएणं सरवणे नामं सन्निवेसे होत्था रिद्धत्थिमिय जाव सन्निभप्पगासे पासाईए ४, तत्थ णं सरवणे सन्निवेसे गोबहुले नामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था, तस्स णं गोबहुलस्स माहणस्स गोसाला यावि होत्था, तए णं से मंखलीमंखे नामं अन्नया कयाइ भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धिं चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं

उच्चनीय जाव अडमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे, तए णं से विजए गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठ० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ खि० २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता पाउयाओ ओमुयइ पा० २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ २ त्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता ममं वंदइ नमंसइ व० २ त्ता ममं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभिस्सामित्तिकट्टु तुट्ठे पडिलाभेमाणेवि तुट्ठे पडिलाभिएवि तुट्ठे, तए णं तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं [तवस्सिविसुद्धेण तिकरणसुद्धेण] पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे संसारे परित्तीकए गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तंजहा—वसुहारा वुट्ठा १ दसद्धवन्ने कुसुमे निवाइए २ चेलुक्खेवे कए ३ आहयाओ देवदुंदुभीओ ४ अंतरावि य णं आगासे अहो दाणे २ त्ति घुट्ठे ५, तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! विजए गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! विजए गाहावई, कयपुन्ने णं देवाणुप्पिया ! विजए गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! विजए गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स जस्स णं गिहंसि तहारूवे साहू साहुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तंजहा—वसुहारा वुट्ठा जाव अहो दाणे २ घुट्ठे, तं धन्नेणं० कयत्थे० कयपुन्ने० कयलक्खणे० कया णं लोया० सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स विजय० २ । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पासइ विजयस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं दसद्धवन्नं कुसुमं निवडियं ममं च णं विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठ० जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता ममं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! ममं धम्मायरिया अहन्नं तुब्भं धम्मंतेवासी, तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि नो परिजाणामि तुसिणीए संचिट्ठामि, तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमामि २ त्ता णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि २ त्ता दोच्चं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, तए णं अहं गोयमा ! दोच्च मासक्खमणपारणगंसि

तारिसिया णं अणगारस्स धम्म(वि)इ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुई जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, तो निस्संदिद्धं च णं एत्थ ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे भविस्सतीतिकट्टु कोल्लागसंनिवेसे सब्भिंतरबाहिरिए ममं सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, ममं गवेसमाणे जाव कोल्लागसंनिवेसस्स बहिया पणियभूमीए मए सद्धिं अभिसमन्नागए, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हट्ठतुट्ठे ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं भंते! ममं धम्मायरिया अहन्नं तुब्भं अंतेवासी, तए णं अहं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेमि, तए णं अहं गोयमा! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं पणियभूमीए छव्वासाइं लाभं अलाभं सुहं दुक्खं सक्कारमसक्कारं पच्चणुब्भवमाणे अणिच्चजागरियं विहरित्था ॥ ५४० ॥ तए णं अहं गोयमा! अन्नया कयाइ पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं सिद्धत्थगामाओ नयराओ कुम्मारगामं नयरं संपट्ठिए विहाराए, तस्स णं सिद्धत्थगामस्स नयरस्स कु(म्मा)म्मारगामस्स नयरस्स य अंतरा एत्थ णं महं एगे तिलथंभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तं तिलथंभगं पासइ २ त्ता ममं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-एस णं भंते! तिलथंभए किं निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सइ, एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ कहिं गच्छिहिंति कहिं उववज्जिहिंति?, तए णं अहं गोयमा! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-गोसाला! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ नो न निप्फज्जिस्सइ, एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसं(गु)गलियाए सत्त तिला पच्चायाइस्संति, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं आइक्खमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे ममं पणिहाय अयण्णं मिच्छावाई भवउत्तिकट्टु ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ २ त्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तं तिलथंभगं सलेट्ठुयायं चेव उप्पाडेइ २ त्ता एगंते एडेइ, तक्खणमेत्तं च णं गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए, तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणा(य)एइ २ त्ता खिप्पामेव पविज्जुयाइ २ त्ता खिप्पामेव नच्चोदगं णाइमट्टियं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासइ, जेणं से तिलथंभए आसत्थे वीसत्थे पच्चायाए तत्थेव बद्धमूले तत्थेव पइट्ठिए, ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ तस्सेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया ॥ ५४१ ॥ तए ण

सुणी सुणिए जाव जूयासेज्जायरए ?, तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तुमं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव पच्चोसक्कइ २ त्ता तव वहाए सरीरगं(त्तो) तेयलेस्सं निस्सिरइ, तए णं अहं गोसाला ! तव अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स सीयतेयलेस्सापडिसाहरणट्ठयाए एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निसिरामि जाव पडिहयं जाणित्ता तव य सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासित्ता सीओसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरइ सी० २ त्ता ममं एवं वयासी-से गयमेयं भगवं ! गयगयमेयं भगवं !, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं अंतियाओ एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीए जाव संजायभए ममं वंदइ नमंसइ ममं वं० २ त्ता एवं वयासी-कहण्णं भंते ! संखित्तविउलतेयलेस्से भवइ ?, तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-जे णं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मास-पिंडियाए एगेण य वियडासणएणं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ जाव विहरइ, से णं अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेस्से भवइ, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिसुणेइ ॥ ५४२ ॥ तए णं अहं गोयमा ! अन्नया कयाइ गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं कुम्मगामाओ नयराओ सिद्धत्थगामं नयरं संपट्ठिए विहाराए, जाहे य मो तं देसं हव्वमागया जत्थ णं से तिलथंभए, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी-तु(ज्झे)ब्भे णं भंते ! तया ममं एवं आइक्खह जाव एवं परूवेह-गोसाला ! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ नो नो निप्फज्जिस्सइ तं चेव जाव पच्चायाइस्संति तण्णं मिच्छा, इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ एस णं से तिलथंभए णो निप्फन्ने अनिप्फन्नमेव ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ नो एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलि-याए सत्त तिला पच्चायाया, तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-तुमं णं गोसाला ! तदा ममं एवं आइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहसि नो पत्तियसि नो रोयसि, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे ममं पणिहा(ए)य अयन्नं मिच्छावाई भवउत्तिकट्टु ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोस-क्कसि २ त्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छसि २ त्ता जाव एगंतमंते एडेसि, तक्खणमेत्त गोसाला ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए, तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव तं चेव जाव तस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया, तं एस णं गोसाला ! से तिलथंभए निप्फन्ने णो अनिप्फन्नमेव, ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया, एवं खलु गोसाला ! वणस्सइकाइया पउट्टपरिहारं परिहरंति,

गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव उच्चनीयमज्झिम जाव अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेण वीईवयइ, तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते आणदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेण वीईवयमाण पासइ २ त्ता एव वयासी-एहि ताव आणंदा! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि, तए ण से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एव वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणदं थेरं एवं वयासी-एवं खलु आणदा! इओ चिरा(ती)ईयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया अत्थत्थी अत्थलुद्धा अत्थगवेसी अत्थकंखिया अत्थपिवासिया अत्थगवेसणयाए णाणाविहविउलपणियभंडमायाय सगडीसागडेणं सुबहु भत्तपाणपत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं अणोहियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठा, तए णं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाए अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेण परि(भुज्ज)भुंजेमाणे २ खीणे, तए णं ते वणिया खीणोदगा समाणा तण्हाए परिब्भवमाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति अन्न० २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेण परिभुंजेमाणे २ खीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेत्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति अन्न० २ त्ता तीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेंति, उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा एगं महं वणसंडं आसादेंति, किण्हं किण्होभासं जाव निकुरं-(रुं)बभूयं पासाईयं जाव पडिरूवं, तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगं वम्मीयं आसादेंति, तस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पुओ अब्भुग्गयाओ अभिनिस(ड)डाओ तिरियं सुसंपग्गहियाओ अहे पन्नगद्धरूवाओ पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ पासाईयाओ जाव पडिरूवाओ, तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा अन्नमन्नं सद्दावेंति अ० २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणेहिं इमे वणसंडे आसादिए किण्हे किण्होभासे० इमस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए, इमस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पुओ अब्भुग्गयाओ जाव पडिरूवाओ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पिं भिन्दित्तए, अवि याइं ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो, तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता तस्स

मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी-एवं खलु आणंदा! इओ चिराईयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया एवं तं चेव सव्वं निरवसेसं भाणियव्वं जाव नियगं नयरं साहिए तं गच्छह णं तुमं आणंदा! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स जाव परिकहेहि ॥ ५३९ ॥ तं पभू णं भंते! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए, विसए णं भंते! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए, समत्थे णं भंते! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं जाव करेत्तए? पभू णं आणंदा! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं जाव करेत्तए, विसए णं आणंदा! गोसाले जाव करेत्तए, समत्थे णं आणंदा! गोसाले जाव करेत्तए, नो चेव णं अरिहंते भगवंते परियावणियं पुण करेज्जा, जावइए णं आणंदा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवतेए अणगाराणं भगवंताणं खंतिक्खमा पुण अणगारा भगवंतो जावइए णं आणंदा! अणगाराणं भगवंताणं तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवतेए थेराणं भगवंताणं खंतिक्खमा पुण थेरा भगवंतो जावइए णं आणंदा! थेराणं भगवंताणं तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवतेए अरिहंताणं भगवंताणं खंतिक्खमा पुण अरहंता भगवंतो तं पभू णं आणंदा! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं जाव करेत्तए, विसए णं आणंदा! जाव करेत्तए, समत्थे णं आणंदा! जाव करेत्तए, नो चेव णं अरिहंते भगवंते पारियावणियं पुण करेज्जा ॥ ५४० ॥ तं गच्छह णं तुमं आणंदा! गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि-मा णं अज्जो! तुब्भं केइ गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेउ गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने तए णं से आणंदे थेरे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता जेणेव गोयमाइसमणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गोयमाइसमणे निग्गंथे आमंतेइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु अज्जो! छट्ठक्खमणपारणगंसि समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नयरीए उच्चनीय तं चेव सव्वं जाव णायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि, तं मा णं अज्जो! तुब्भं केइ गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ जाव मिच्छं विप्पडिवन्ने ॥ ५४१ ॥ जावं च णं आणंदे थेरे गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेइ तावं च णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घं तुरियं जाव सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव समणे भगवं

चडविस घोरविस महाविसं अइकायमहाकायं मसिमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्ण-अंजणपुंजनिगरप्पगासं रत्तच्छं जमलजुयलचंचलचलंतजीहं धरणितलवेणिभूयं उक्कडफुडकुडिलजडुलकक्खडविकडफडाडोवकरणदच्छं लोहागरधम्ममाणधमधमेंतघोसं अणागलियचंडतिव्वरोसं समुहिं तुरियं चवलं धमंतं दिट्ठिविसं सप्पं संघट्टेंति, तए णं से दिट्ठिविसे सप्पे तेहिं वणिएहिं संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे सणियं २ उट्ठेइ २ त्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं दुरूहइ सि० २ त्ता आइच्चं णिज्झाइ आ० २ त्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएइ, तए णं ते वणिया तेणं दिट्ठिविसेणं सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासी कया यावि होत्था, तत्थ णं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए जाव हियसुहनिस्सेसकामए से णं अणुकं(प)पियाए देवयाए सभंडमत्तोवगरणमायाए नियगं नयरं साहिए, एवामेव आणंदा! तववि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं नायपुत्तेणं ओराले परियाए अस्सादिए, ओराला कित्तिवण्णसद्दसिलोगा सदेवमणुयासुरे लोए पुव्वंति गुवंति थुवंति इति खलु समणे भगवं महावीरे इति० २, तं जइ मे से अज्ज किंचिवि वदइ, तो णं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेमि जहा वा वालेणं ते वणिया, तुमं च णं आणंदा! सारक्खामि संगोवयामि जहा वा से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए जाव निस्सेसकामए अणुकंपियाए देवयाए सभंडमत्तोव० जाव साहिए, तं गच्छह णं तुमं आणंदा! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि। तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे भीए जाव संजायभए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सिग्घं तुरियं सावत्थिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव कोट्ठए उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते! छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे सावत्थीए नयरीए उच्चनीय जाव अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए जाव वीईवयामि, तए णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं हालाहलाए जाव पासित्ता एवं वयासी—एहि ताव आणंदा! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि, तए णं अहं गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छामि, तए णं से गोसाले

दिव्वाइं जाव चइत्ता तच्चे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाइ, से णं तओहिंतो जाव उव्व-
ट्टित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दिव्वाइं भोग जाव
चइत्ता चउत्थे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाइ, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता
मज्झिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दिव्वाइं भोग जाव चइत्ता
पंचमे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाइ, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हिट्ठिल्ले माणु-
सुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दिव्वाइं भोग जाव चइत्ता छट्ठे सन्निगब्भे
जीवे पच्चायाइ, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता बंभलोगे नामं से कप्पे पन्नत्ते,
पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा ठाणपए जाव पंच वडिंसगा प-
ण्णत्ता-असोगवडेंसए जाव पडिरूवा, से णं तत्थ देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दस
सागरोवमाइं दिव्वाइं भोग जाव चइत्ता सत्तमे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाइ, से णं
तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण जाव वीइक्कंताणं सुकुमालगभद्दलए
मिउकुंडलकुंचियकेसए मट्ठगंडतलकण्णपीढए देवकुमारस(म)प्पभए दारए पया(ए)-
यइ, से णं अहं कासवा! ते(तए)णं अहं आउसो! कासवा! कोमारियाए पव्वज्जाए
कोमारएणं बंभचेरवासेणं अविद्धकन्नए चेव संखाणं पडिलभामि पडि० २ त्ता इमे सत्त
पउट्टपरिहारे परिहरामि, तंजहा-एणेज्जगस्स मल्लरामस्स मंडियस्स रोहस्स भार-
द्दाइस्स अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स, गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स, तत्थ णं जे से पढमे
पउट्टपरिहारे से णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया मंडिकुच्छिंसि चेइयंसि उदा(यण)-
स्स कुंडियायणस्स सरीरं विप्पजहामि उदा० २ त्ता एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्प-
विसामि एणे० २ त्ता बावीसं वासाइं पढमं पउट्टपरिहारं परिहरामि, तत्थ णं जे
से दोच्चे पउट्टपरिहारे से णं उद्दंडपुरस्स नगरस्स बहिया चंदोयरणंसि चेइयंसि
एणेज्जगस्स सरीरगं विप्पजहामि २ त्ता मल्लरामस्स सरीरगं अणुप्पविसामि
मल्ल० २ त्ता एक्कवीसं वासाइं दोच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि, तत्थ णं जे से तच्चे
पउट्टपरिहारे से णं चंपाए नयरीए बहिया अंगमंदिरंसि चेइयंसि मल्लरामस्स
सरीरगं विप्पजहामि मल्ल० २ त्ता मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि मंडि० २ त्ता
वीसं वासाइं तच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि, तत्थ णं जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से
णं वाणारसीए नयरीए बहिया काममहावणंसि चेइयंसि मंडियस्स सरीरगं विप्प-
जहामि मंडि० २ त्ता रोहस्स सरीरगं अणुप्पविसामि रोह० २ त्ता एगूणवीसं
वासाइं चउत्थं पउट्टपरिहारं परिहरामि, तत्थ णं जे से पंचमे पउट्टपरिहारे से
णं आलभियाए नयरीए बहिया पत्तकालगंसि चेइयंसि रोहस्स सरीरगं विप्पज-
हामि रोह० २ त्ता भारद्दाइस्स सरीरगं अणुप्पविसामि भा० २ त्ता अट्ठारस

महावीरे तेणेव उवागच्छइ ते० २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-सुट्ठु णं आउसो ! कासवा ! ममं एवं वयासी साहु णं आउसो ! कासवा ! ममं एवं वयासी-गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी गोसाले० २, जे णं गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मंतेवासी से णं सुक्के सुक्काभिजाइए भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, अहण्णं उदाई नाम कुंडियायणीए अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि अ० २ त्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि गो० २ त्ता इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि, जेवि आ(या)इं आउसो ! कासवा ! अम्हं समयंसि केइ सिज्झिंसु वा सिज्झंति वा सिज्झिस्संति वा सव्वे ते चउरासीइं महाकप्पसयसहस्साइं सत्त दिव्वे सत्त संजूहे सत्त सण्णिगब्भे सत्त पउट्टपरिहारे पंच कम्मणि-सयसहस्साइं सट्ठिं च सहस्साइं छच्च सए तिन्नि य कम्मंसे अणुपुव्वेणं खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वाइंति सव्वदुक्खाणमंतं करिंसु वा करेंति वा करिस्संति वा, से जहा वा गंगा महानई जओ पवूढा जहिं वा पज्जुव-त्थिया एस णं अद्धपंचजोयणसयाइं आयामेणं अद्धजोयणं विक्खंभेणं पंच धणुसयाइं उव्वेहेणं एएणं गंगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा, सत्त महागंगाओ सा एगा साईणगंगा, सत्त साईणगंगाओ सा एगा मच्चुगंगा, सत्त मच्चुगंगाओ सा एगा लोहियगंगा, सत्त लोहियगंगाओ सा एगा आवईगंगा, सत्त आवईगंगाओ सा एगा परमावई, एवामेव सपुव्वावरेणं एगं गंगासयसहस्सं सत्तरस य सहस्सा छच्चगुणपन्न-गंगासया भवंतीति मक्खाया, तासिं दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, तंजहा-सुहुमबोंदिकलेवरे चेव बायरबोंदिकलेवरे चेव, तत्थ णं जे से सुहुमबोंदिकलेवरे से ठप्पे, तत्थ णं जे से बायरबोंदिकलेवरे तओ णं वाससए २ गए २ एगमेगं गंगावालुयं अवहाय जावइएणं कालेणं से कोट्ठे खीणे णी(र)रेए निल्लेवे निट्ठिए भवइ, सेत्तं सरे सरप्पमाणे, एएणं सरप्पमाणेणं तिन्नि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीइं महाकप्प-सयसहस्साइं से एगे महामाणसे, अणंताओ संजूहाओ जीवे चयं चइत्ता उवरिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता पढमे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाइ, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ जाव चइत्ता दोच्चे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाइ, से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ, से णं तत्थ

वंदइ नमंसइ जाव सरणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ, किमंग पुण तुमं गोसाला !
भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुंडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया
चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुईकए, भगवओ चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने तं
मा एवं गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया नो अन्ना। तए णं से
गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूइणामेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते
५ सव्वाणुभूइं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं जाव भासरासिं करेइ, तए
णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूइं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं जाव
भासरासिं करेत्ता दोच्चंपि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ
जाव सुहं नत्थि। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स
अंतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए धम्मायरि-
याणुरागेणं जहा सव्वाणुभूई तहेव जाव सच्चेव ते सा छाया नो अन्ना। तए णं से
गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ सुनक्खत्तं
अणगारं तवेणं तेएणं परितावेइ, तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं मंखलि-
पुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ
२ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ
नमंसइ वं० २ त्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरोवेइ स० २ त्ता समणा य समणीओ य
खामेइ सम० २ त्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए। तए णं से
गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेत्ता तच्चंपि समणं
भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ सव्वं तं चेव जाव सुहं नत्थि।
तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी–जेवि ताव गोसाला !
तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा तं चेव जाव पज्जुवासइ, किमंग पुण
गोसाला ! तुमं मए चेव पव्वाविए जाव मए चेव बहुस्सुईकए ममं चेव मिच्छं
विप्पडिवन्ने तं मा एवं गोसाला ! जाव नो अन्ना। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते
समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ तेयासमुग्घाएणं समोहन्नइ
तेया० २ त्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए
सरीरगंसि तेयं निसिरइ, से जहानामए वाउक्कलियाइ वा वायमंडलियाइ वा सेलंसि
वा कुड्डंसि वा थंभंसि वा थूभंसि वा आवारिज्जमा(णा)णी वा निवारिज्जमाणी वा
सा णं तत्थ णो कमइ नो पक्कमइ, एवामेव गोसालस्सवि मंखलिपुत्तस्स तवे तेए
समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि निसिट्ठे समाणे से णं तत्थ नो
कमइ नो पक्कमइ, अंचियंचिं करेइ अंचि० २ त्ता आयाहिणं पयाहिणं करेइ आ

वासाइं पंचमं पउट्टपरिहारं परिहरामि, तत्थ णं जे से छट्ठे पउट्टपरिहारे से णं वेसालीए नयरीए बहिया कों(क)डियायणंसि उज्जाणंसि भारद्दाइस्स सरीरगं विप्पजहामि भा० २ त्ता अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि अ० २ त्ता सत्तरस वासाइं छट्ठं पउट्टपरिहारं परिहरामि, तत्थ णं जे से सत्तमे पउट्टपरिहारे से णं इहेव सावत्थीए नयरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि अज्जुणगस्स० २ त्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं सीयसहं उण्हसहं खुहासहं विविहदंसमसगपरीसहोवसग्गसहं थिरसंघयणंतिकट्टु तं अणुप्पविसामि २ त्ता तं सोलस वासाइं इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि, एवामेव आउसो! कासवा! एगेणं तेत्तीसेणं वाससएणं सत्त पउट्टपरिहारा परिहरिया भवंतीति मक्खाया, तं सुट्ठु णं आउसो! कासवा! ममं एवं वयासी साहु णं आउसो! कासवा! ममं एवं वयासी-गोसाले मंखलिपुत्ते मम धम्मंतेवासित्ति गोसाले० २ ॥ ५४९ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-गोसाला! से जहानामए तेणए सिया गामेल्लएहिं परब्भ(व)माणे २ कत्थ(वि)इ ग(त्त)ड्डं वा दरिं वा दुग्गं वा निन्नं वा पव्वयं वा विसमं वा अणस्सादेमाणे एगेणं महं उण्णालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपम्हेण वा तणसूएण वा अत्ताणं आवरेत्ताणं चिट्ठेज्जा, से णं अणावरिए आवरियमिति अप्पाणं मन्नइ, अपच्छण्णे य पच्छण्णमिति अप्पाणं मन्नइ, अ(ण)णिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाणं मन्नइ, अपलायए पलायमिति अप्पाणं मन्नइ, एवामेव तुमंपि गोसाला! अणन्ने संते अन्नमिति अप्पाणं उपलभसि, तं मा एवं गोसाला! नारिहसि गोसाला! सच्चेव ते सा छाया नो अन्ना ॥ ५५० ॥ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ उच्चा० २ त्ता उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेइ उद्धंसेत्ता उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भंछेइ उ० २ त्ता उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेइ उ० २ त्ता एवं वयासी-नट्ठेसि कयाइ, विणट्ठेसि कयाइ, भट्ठेसि कयाइ, नट्ठविणट्ठभट्ठेसि कयाइ, अज्ज न भवसि नाहि ते ममाहिंतो सुहमत्थि ॥ ५५१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूई णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, धम्मायरियाणुरागेणं एयमट्ठं असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेइ उ० २ त्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-जेवि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आ(य)रियं धम्मियं सुवयणं निसामेइ सेवि ताव तं

मिसिमिसेमाणे णो संचाएइ समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए छविच्छेदं वा करेत्तए, तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणं धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारिज्जमाणं अट्ठेहि य हेऊहि य जाव कीरमाणं आसुरुत्तं जाव मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति २ त्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमंति आयाए अवक्कमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति ते २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदंति नमंसंति वं० २ त्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति अत्थेगइया आजीविया थेरा गोसालं चेव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठं असाहेमाणे रुंदाइं पलोएमाणे दीहुण्हाइं नी(स)ससमाणे दाढियाए लोमा(इं)ए लुंचमाणे अवडं कंडूयमाणे पुयलिं पप्फोडेमाणे हत्थे विणिद्धुणमाणे दोहिवि पाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे हाहा अहो! हओऽहमस्सीतिकट्टु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ ते २ त्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए मज्जपाणगं पियमाणे अभिक्खणं गायमाणे अभिक्खणं नच्चमाणे अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचणिउदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरइ ॥ ५५१ ॥ अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी-जावइएणं अज्जो! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेये निसट्ठे से णं अलाहि पज्जत्ते सोलसण्हं जणवयाणं तं०-अंगाणं वंगाणं मगहाणं मलयाणं मालवगाणं अ(च्छा)त्थाणं वत्ताणं कोत्थाणं पाढाणं लाढाणं वज्जीणं मोलीणं कासीणं कोसलगाणं अबाहाणं सुंभुत्तराणं घायाए वहाए उच्छादणट्ठयाए भासीकरणयाए, जंपि य अज्जो! गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए मज्जपाणगं पियमाणे अभिक्खणं जाव अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ, तस्सवि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं अट्ठ चरिमाइं पन्नवेइ, तंजहा-चरिमे पाणे चरिमे गेए, चरिमे नट्टे, चरिमे अंजलिकम्मे चरिमे पोक्खलसंवट्टए महामेहे, चरिमे सेयणए गंधहत्थी चरिमे महासिलाकंटए संगामे अहं च णं इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थकराणं चरिमे तित्थकरे सिज्झिस्सं जाव अंतं करेस्सं ति, जंपि य अज्जो!

२ त्ता उड्ढं वेहासं उप्पइए, से णं तओ पडिहए पडिनियत्ते समाणे त(स्से)मेव गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुडहमाणे २ अंतो २ अणुप्पविट्ठे, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सएणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-तुमं णं आउसो ! कासवा ! मम तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करिस्ससि, तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-नो खलु अहं गोसाला ! तव तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं जाव कालं करिस्सामि, अहन्नं अन्नाइं सोलसवासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तुमं णं गोसाला ! अप्पणा चेव सएणं तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे जाव छउमत्थे चेव कालं करिस्ससि, तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए उज्जाणे दुवे जिणा संलवंति, एगे एवं वदंति-तुमं पुव्विं कालं करिस्ससि एगे एवं वदंति तुमं पुव्विं कालं करिस्ससि, तत्थ णं के पुण सम्मावाई के पुण मिच्छावाई ? तत्थ णं जे से अहप्पहाणे जणे से वदइ-समणे भगवं महावीरे सम्मावाई गोसाले मंखलिपुत्ते मिच्छावाई, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी-अज्जो ! से जहानामए तणरासीइ वा कट्ठरासीइ वा पत्तरासीइ वा तयारासीइ वा तुसरासीइ वा भुसरासीइ वा गोमयरासीइ वा अवकररासीइ वा अगणिज्झामिए अगणिज्झूसिए अगणिपरिणामिए हयतेए गयतेए नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए विणट्ठतेए जाव एवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते मम वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरित्ता हयतेए गयतेए जाव विणट्ठतेए जाए, तं छंदेणं अज्जो ! तुब्भे गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएह धम्मि० २ त्ता धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह धम्मि० २ त्ता धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेह धम्मि० २ त्ता अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेह, तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएंति ध० २ त्ता धम्मियाए पडिसा(ह)रणाए पडिसारेंति ध० २ त्ता धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेंति ध० २ त्ता अट्ठेहि य हेऊहि य कारणेहि य जाव वागरणं क(वाग)रेंति । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणे जाव निप्पट्ठपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते जाव

गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचणिउदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरइ, तस्सवि यं णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं चत्तारि पाणगाइं चत्तारि अपाणगाइं पन्नवेइ, से किं तं पाणए ? पाणए चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा-गोपुट्ठए, हत्थमद्दियए, आयवतत्तए, सिलापब्भट्ठए, सेत्तं पाणए, से किं तं अपाणए ? अपाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-थालपाणए, तयापाणए, सिंबलिपाणए, सुद्धपाणए, से किं तं थालपाणए ? २ जण्णं (जेणं) दाथालगं वा दावारगं वा दाकुंभगं वा दाकलसं वा सीयलगं (वा) उल्लगं हत्थेहिं परामुसइ न य पाणियं पियइ, सेत्तं थालपाणए, से किं तं तयापाणए ? २ जण्णं अंबं वा अंबाडगं वा जहा पओगपए जाव बोरं वा तिंदुरुयं वा [तरुयं] वा तरुणगं वा आमगं वा आसगंसि आवीलेइ वा पवीलेइ वा न य पाणियं पियइ, सेत्तं तयापाणए, से किं तं सिंबलिपाणए ? २ जण्णं कलसंगलियं वा मुग्गसंगलियं वा माससंगलियं वा सिंबलिसंगलियं वा तरुणियं आमियं आसगंसि आवीलेइ वा पवीलेइ वा ण य पाणियं पियइ, सेत्तं सिंबलिपाणए, से किं तं सुद्धपाणए ? सुद्धपाणए जण्णं छम्मासे सुद्धखाइमं खाइ दो मासे पुढविसंथारोवगए दो मासे कट्ठसंथारोवगए दो मासे दब्भसंथारोवगए, तस्स णं बहुपडिपुन्नाणं छण्हं मासाणं अंतिमराइए इमे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा अंतियं पाउब्भवंति, तं०-पुन्नभद्दे य माणिभद्दे य, तए णं ते देवा सीयलएहिं उल्लएहिं हत्थेहिं गायाइं परामुसंति, जे णं ते देवे साइज्जइ से णं आसीविसत्ताए कम्मं पकरेइ, जे णं ते देवे नो साइज्जइ तस्स णं संसि सरीरगंसि अगणिकाए संभवइ, से णं सएणं तेएणं सरीरगं झामेइ सं० २ त्ता तओ पच्छा सिज्झइ जाव अंतं करेइ, सेत्तं सुद्धपाणए। तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अयंपुले णामं आजीवियोवासए परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए जहा हालाहला जाव आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीवियोवासगस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-किंसंठिया हल्ला पण्णत्ता ?, तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीवियोवासगस्स दोच्चंपि अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव सव्वन्नू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए नयरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे कल्लं जाव जलंते गोसालं मंखलिपुत्तं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्ता इमं एया(णु)रूवं वागरणं वागरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते ण्हाए जाव

अत्थि, तं नो खलु एस अवकूणए अवचोयए ण एसे, किंसठिया हला पण्णत्ता ? वंसीमूलसठिया हला पण्णत्ता; वीणं वाएहि रे वीरगा वी० २, तए ण से अयंपुले आजीवियोवासए गोसालेणं मंखलिपुत्तेण इम एयारूवं वागरणं वागरिए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए गोसालं मखलिपुत्तं वंदइ नमसइ व० २ त्ता पसिणाइ पुच्छइ २ त्ता अट्ठाई परियादियइ अ० २ त्ता उट्ठाए उट्ठेइ उ० २ त्ता गोसाल मखलिपुत्त वंदइ नमसइ वं० २ त्ता जाव पडिगए। तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते अप्पणो मरण आभोएइ २ त्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ आ० २ त्ता एवं वयासी-तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! ममं कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गधोदएण ण्हाणेह सु० २ त्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाइंए गायाइ लूहेह गा० २ त्ता सरसेण गोसीसचदणेण गायाइं अणुलिंपह स० २ त्ता महरिह हंसलक्खणं पाडसाडग नियंसेह मह० २ त्ता सव्वालंकार-विभूसियं करेह स० २ त्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीय दुरुहेह पुरि० २ त्ता सावत्थीए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु महया महया सद्देण उग्घोसेमाणा २ एवं वदह-एव खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्द पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थयराण चरिमे तित्थयरे सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, इड्ढीसक्कारसमुदएण मम सरीरगस्स णीहरणं करेह, तए ण ते आजीविया थेरा गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ विणएण पडिसुणेंति ॥ ५५३ ॥ तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सत्तरत्तसि परिणम-माणसि पडिलद्धसम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-णो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ, अह ण गोसाले चेव मखलिपुत्ते समणघायए समणमारए समणपडिणीए आयरियउवज्झायाण अयस-कारए अवन्नकारए अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभय वा वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएण तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्थे चेव काल करेस्सं, समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ, एव संपेहेइ एवं संपेहित्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ आ० २ त्ता उच्चावय-सवहसाविए करेइ उच्चा० २ त्ता एव वयासी-नो खलु अह जिणे जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे विहरइ, अहण्ण गोसाले मखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव काल करेस्स, समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्द पगा-सेमाणे विहरइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम कालगयं जाणित्ता वामे पाए सुंबेण बंधह बं० २ त्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभह ति० २ त्ता सावत्थीए नयरीए सिंघाडग

असंभंते अतुरियमचवलमसंभंतं मुहपोत्तियं पडिलेहेइ मु० २ त्ता जहा गोयमसामी जाव जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ सालकोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता अतुरिय जाव जेणेव मेंढियगामे नगरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव रेवईए गाहावइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता रेवईए गाहावइणीए गिहं अणुप्पविट्ठे, तए णं सा रेवई गाहावइणी सीहं अणगारं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठ खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता सीहं अणगारं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ स० २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयणं ! तए णं से सीहे अणगारे रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी–एवं खलु तुमे देवाणुप्पिए ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाए दुवे [कोहंडफला] उवक्खडिया तेहिं नो अट्ठो अत्थि ते अन्ने पारियासिए (मज्जए बीयऊरए) तमाहराहि तेणं अट्ठो तए णं सा रेवई गाहावइणी सीहं अणगारं एवं वयासी–केस णं सीहा ! से णाणी वा तवस्सी वा जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए जओ णं तुमं जाणासि ! एवं जहा खंदए जाव जओ णं अहं जाणामि तए णं सा रेवई गाहावइणी सीहस्स अणगारस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पत्तगं मोएइ पत्तगं मोएत्ता जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहस्स अणगारस्स पडिग्गहगंसि तं सव्वं सम्मं निसिरइ, तए णं तीए रेवईए गाहावइणीए तेणं दव्वसुद्धेणं जाव दाणेणं सीहे अणगारे पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे जहा विजयस्स जाव जम्मजीवियफले रेवईए गाहावइणीए रेवईए गाहावइणीए, तए णं से सीहे अणगारे रेवईए गाहावइणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जहा गोयमसामी जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स पाणिंसि तं सव्वं सम्मं निसिरइ, तए णं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहारं आहारियस्स समाणस्स से विउले रोगायंके खिप्पामेव उवसमं पत्ते हट्ठे जाए आरोग्गे बलियसरीरे तुट्ठा समणा तुट्ठाओ समणीओ तुट्ठा सावगा तुट्ठाओ सावियाओ तुट्ठा देवा तुट्ठाओ देवीओ सदेवमणुयासुरे लोए तुट्ठे हट्ठे जाए समणे भगवं महावीरे हट्ठे २ ॥ ५५९ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं

समणे भगवं महावीरे गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करिस्सइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सीहे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ जाव विहरइ, तए णं तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पाउब्भूए उज्जले जाव छउमत्थे चेव कालं करेस्सइ, वदिस्संति य णं अन्नउत्थिया छउमत्थे चेव कालगए, इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ आया० २ त्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मालुयाकच्छयं अंतो २ अणुप्पविसइ मालुया० २ त्ता महया २ सद्देणं कुहुकुहुस्स परुन्ने। अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेइ २ त्ता एवं वयासी-एवं खलु अज्जो! मम अंतेवासी सीहे नामं अणगारे पगइभद्दए तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव परुन्ने, तं गच्छह णं अज्जो! तुब्भे सीहं अणगारं सद्दह, तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति वं० २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ सालकोट्ठयाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति पा० २ त्ता जेणेव मालुयाकच्छए जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छन्ति २ त्ता सीहं अणगारं एवं वयासी-सीहा! तव धम्मायरिया सद्दावेंति, तए णं से सीहे अणगारे समणेहिं निग्गंथेहिं सद्धिं मालुयाकच्छयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव सालकोट्ठए उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं २ जाव पज्जुवासइ, सीहादि समणे भगवं महावीरे सीहं अणगारं एवं वयासी-से नूणं ते सीहा! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे जाव परुन्ने, से नूणं ते सीहा! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि, तं नो खलु अहं सीहा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं जाव कालं करेस्सं, अहन्नं अन्नाइं अद्धसोलसवासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तं गच्छह णं तुमं सीहा! मेंढियगामं नयरं रेवईए गाहावइणीए गिहे, तत्थ णं रेवईए गाहावइणीए मम अट्ठाए दुवे (कोहंडफला) उवक्खडिया तेहिं नो अट्ठो, अत्थि से अन्ने पारियासिए [फासुए बीयऊरए] तमाहराहि तेणं अट्ठो, तए णं से सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता

महावीरं वदइ नमसइ वं० २ त्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूई नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से ण भंते ! तया गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएणं भासरासीकए समाणे कहिं गए कहिं उववन्ने ? एवं खलु गोयमा ! ममं अतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूई नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से ण तया गोसालेणं मखलिपुत्तेणं तवेण तेएण भासारसीकए समाणे उड्ढं चदिमसूरिय जाव बभलंतगमहासुक्के कप्पे वीईवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अत्थेगइयाण देवाण अट्ठारस सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता, तत्थ णं सव्वाणुभूइस्सवि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता, से ण सव्वाणुभूई देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अत करेहिइ। एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से ण भते ! तया गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएणं परितावए समाणे कालमासे काल किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने ? एव खलु गोयमा ! मम अतेवासी सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से ण तया गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएणं परिताविए समाणे जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वदइ नमसइ वं० २ त्ता सयमेव पंच महव्वयाइ आरुहेइ सयमेव पंच महव्वयाई आरुहेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ २ त्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा उड्ढं चदिमसूरिय जाव आणयपाणयारणकप्पे वीईवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण बावीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ ण सुनक्खत्तस्सवि देवस्स बावीस सागरोवमाइं सेस जहा सव्वाणुभूइस्स जाव अंत काहिइ ॥ ५५७ ॥ एवं खलु देवाणुप्पियाण अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नाम मंखलिपुत्ते से ण भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे काल किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने ? एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नाम मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालमासे काल किच्चा उड्ढं चंदिमसूरिय जाव अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अत्थेगइयाण देवाण बावीस सागरोवमाइं ठिई प०, तत्थ णं गोसालस्सवि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई प०। से ण भंते ! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण ३ जाव कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे विंझगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे नयरे संमु(मुन)इस्स रन्नो भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ, से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कंताणं जाव सुरूवे दारए पयाहिइ, जं रयणिं च णं से

निव्विसए करेहि(न्ति)इ, तए ण संयदुवारे नयरे वहवे राईसर जाव वदिहिंति–एवं खलु देवाणुप्पिया। विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने, अप्पेगइए आउसइ जाव निव्विसए करेइ, त नो खलु देवाणुप्पिया! एयं अम्ह सेयं, नो खलु एय विमलवाहणस्स रण्णो सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा रट्ठस्स वा वलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेयं जण्ण विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने, तं सेय खलु देवाणुप्पिया! अम्हं विमलवाहणं रायं एयमट्ठं विन्नवित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति अ० २ त्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयलपरिग्गहियं विमलवाहण राय जएणं विजएण वद्धावेंति व० २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, अप्पेगइए आउस्संति जाव अप्पेगइए निव्विसए करेंति, त नो खलु एय देवाणुप्पियाण सेयं, नो खलु एयं अम्ह सेयं, नो खलु एय रज्जस्स वा जाव जणवयस्स वा सेय जं णं देवाणुप्पिया! समणेहिं निग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, त विरमतु ण देवाणुप्पिया! एयस्स अट्ठस्स अकरणयाए, तए णं से विमलवाहणे राया तेहिं वहूहिं राईसर जाव सत्यवाहप्पभिईहिं एयमट्ठ विन्नत्ते समाणे नो धम्मोत्ति नो तवोत्ति मिच्छाविणएण एयमट्ठ पडिसुणेहिइ, तस्स ण सयदुवारस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ ण सुभूमिभागे नाम उज्जाणे भविस्सइ सव्वोउय० वन्नओ। तेण कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पउप्पए सुमगले नाम अणगारे जाइसपन्ने जहा धम्मघोसस्स वन्नओ जाव सखित्तविउलतेयलेस्से तिन्नाणोवगए सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणे विहरिस्सइ। तए ण से विमलवाहणे राया अन्नया कयाइ रहचरियं काउ निज्जाहिइ, तए णं से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमगल अणगारं छट्ठंछट्ठेण जाव आयावेमाण पासिहिइ २ त्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे सुमंगल अणगारं रहसिरेण णोल्लावेहिइ, तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहसिरेण णोल्लाविए समाणे सणियं २ उट्ठेहिइ २ त्ता दोच्चंपि उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय २ जाव आयावेमाणे विहरिस्सइ, तए ण से विमलवाहणे राया सुमंगल अणगारं दोच्चंपि रहसिरेणं णोल्लावेहिइ, तए ण से सुमगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोच्चंपि रहसिरेण णोल्लाविए समाणे सणियं २ उट्ठेहिइ २ त्ता ओहिं पउंजेहिइ २ त्ता विमलवाहणस्स रण्णो तीतद्धं ओहिणा आभोएहिइ २ त्ता विमलवाहण राय एव वदिहिइ–नो खलु तुमं विमलवाहणे राया, नो खलु तुमं देवसेणे राया, नो खलु

सत्थवज्झे दाह° जाव दोच्चपि छट्ठीए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता दोच्चपि इत्थियासु उववज्जिहिइ, तत्थवि ण सत्थवज्झे जाव किच्चा पचमाए धूमप्प-भाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि जाव उव्वट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिइ, तत्थवि ण सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चपि पंचमाए जाव उव्वट्टित्ता दोच्चपि उरएसु उववज्जिहिइ जाव किच्चा चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि जाव उव्वट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिइ, तत्थवि णं सत्थवज्झे तहेव जाव काल किच्चा दोच्चपि चउत्थीए पक-प्पभाए जाव उव्वट्टित्ता दोच्चपि सीहेसु उववज्जिहिइ जाव किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिइ, तत्थवि ण सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चपि तच्चाए वालुय० जाव उव्वट्टित्ता दोच्चपि पक्खीसु उववज्जिहिइ जाव किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिइ, तत्थवि ण सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चपि दोच्चाए सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता दोच्चपि सिरीसवेसु उववज्जिहिइ जाव किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ जाव उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिइ, तत्थवि ण सत्थवज्झे जाव किच्चा असन्नीसु उववज्जिहिइ, तत्थवि ण सत्थवज्झे जाव किच्चा दोच्चपि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठिइयसि णरयसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ, से ण तओ जाव उव्वट्टित्ता जाइ इमाइ खहचरविहाणाइ भवति, त०—चम्मपक्खीणं, लोमपक्खीण, समुग्गपक्खीण, विययपक्खीण, तेसु अणेगसयसहस्स-खुत्तो उद्दाइत्ता २ तत्थेव २ भुज्जो २ पच्चायाहिइ, सव्वत्थवि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा जाइ इमाइ भुयपरिसप्पविहाणाइ भवति, तजहा—गोहाण नउलाण जहा पन्नवणापए जाव जाहगाण, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो सेस जहा खहचराण जाव किच्चा जाइ इमाइ उरपरिसप्पविहाणाइ भवति, त०—अहीणं अय-गराण आसालियाण महोरगाण, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो जाव किच्चा जाइ इमाइ चउप्पयविहाणाइ भवति, त०—एगखुराण दुखुराण गडीपयाणं सणहपयाण, तेसु अणेगसयसहस्स जाव किच्चा जाइ इमाइ जलचरविहाणाइ भवति, त०—मच्छाण कच्छभाण जाव सुसुमाराण, तेसु अणेगसयसहस्स जाव किच्चा जाइ इमाइ चउरिं-दियविहाणाइ भवति, त०—अधियाण पोत्तियाण जहा पन्नवणापए जाव गोमय-कीडाण, तेसु अणेगसयसहस्स जाव किच्चा जाइं इमाइ तेइदियविहाणाइ भवति, त०—उ(ओ)वचियाण जाव हत्थिसोंडाण, तेसु अणेग जाव किच्चा जाइ इमाइ बेइ-दियविहाणाइ भवति, त०—पुलाकिमियाण जाव समुद्दलिक्खाण, तेसु अणेगसय जाव किच्चा जाइ इमाइ वणस्सइविहाणाइ भवति, त०—रुक्खाण गुच्छाण जाव कुह(हु)णाण,

चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गह लभिहिइ, केवल बोहिं बुज्झिहिइ, तत्थवि ण अविराहियसामन्ने कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ, से णं तओ० चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिइ० तत्थवि ण अविराहियसामन्ने कालमासे काल किच्चा सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ, से ण तओहिंतो एव जहा सणकुमारे तहा बमलोए महासुक्के आणए आरणे, से णं तओ जाव अविराहियसामन्ने कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिइ, से णं तओहिंतो अणतर चय चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं इमाइ कुलाई भवंति—अड्ढाइ जाव अपरिभूयाइ, तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ, एव जहा उववाइए दढप्पइन्नवत्तव्वया सच्चेव वत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिहिइ, तए ण से दढप्पइन्ने केवली अप्पणो तीतद्ध आभोएहिइ अप्प० २ त्ता समणे निग्गंथे सद्दावेहिइ सम० २ त्ता एव वदिहिइ—एव खलु अह अज्जो ! इओ चिरातीयाए अद्धाए गोसाले नामं मखलिपुत्ते होत्था समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए, तम्मूलग च ण अह अज्जो ! अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरंतसंसारकतारं अणुपरियट्टिए, त मा णं अज्जो ! तुब्भपि केइ भवउ आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाण अयसकारए अवन्नकारए अकित्तिकारए, मा ण सेऽवि एवं चेव अणादीय अणवदग्ग जाव संसारकतार अणुपरियट्टिहिइ जहा णं अह । तए णं ते समणा निग्गथा दढप्पइन्नस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया ससारभयउव्विग्गा दढप्पइन्न केवलिं वंदिहिंति नमसिहिंति वं० २ त्ता तस्स ठाणस्स आलोइएहिंति निंदिहिंति जाव पडिवज्जिहिंति, तए ण से दढप्पइन्ने केवली बहूइं वासाइ केवलपरियाग पाउणिहिइ बहूइ० २ त्ता अप्पणो आउसेस जाणित्ता भत्त पच्चक्खाहिइ, एव जहा उववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंत काहिइ । सेवं भते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ५५९ ॥ **तेयनिसग्गो समत्तो (अद्धेणं) ॥ समत्तं च पन्नरसमं सयं एक्कसरयं ॥**

अहिगरणि जरा कम्मे जावइयं गगदत्त सुमिणे य । उवओग लोग वलि ओहि दीव उदही दिसा थणिया ॥१॥ चउद्दस० सोलसमे ॥ तेण कालेग तेण समएण रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी—अत्थि ण भते ! अहिगरणिंसि वाउयाए वक्कमइ ? हता अत्थि, से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाइ अपुट्ठे उद्दाइ ? गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ नो अपुट्ठे उद्दाइ, से भते ! किं ससरीरी निक्खमइ असरीरी निक्खमइ ? एव जहा खदए जाव से तेणट्ठेणं जाव नो असरीरी निक्खमइ ॥५६०॥ इगालकारियाए ण भते ! अगणिकाए केवइय काल सचिट्ठइ ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिन्नि राइंदियाइं

जाव नामगोयं साविता पज्जुवासइ, धम्मकहा जाव परिसा पडिगया। तए णं से सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-कइविहे णं भंते! उग्गहे पन्नत्ते? सक्का! पंचविहे उग्गहे पन्नत्ते, तंजहा-देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइउग्गहे, सागारियउग्गहे, साहम्मियउग्गहे॥ जे इमे भंते! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति, एएसि णं अहं उग्गहं अणुजाणामीतिकट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता तमेव दिव्वं जाणविमाणं दुरूहइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-जं णं भंते! सक्के देविंदे देवराया तुब्भे एवं वदइ सच्चे णं एसमट्ठे? हंता सच्चे॥ ५६६ ॥ सक्के णं भंते! देविंदे देवराया किं सम्मावाई मिच्छावाई? गोयमा! सम्मावाई नो मिच्छावाई॥ सक्के णं भंते! देविंदे देवराया किं सच्चं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ, सच्चामोसं भासं भासइ असच्चामोसं भासं भासइ? गोयमा! सच्चंपि भासं भासइ जाव असच्चामोसंपि भासं भासइ॥ सक्के णं भंते! देविंदे देवराया किं सावज्जं भासं भासइ अणवज्जं भासं भासइ? गोयमा! सावज्जंपि भासं भासइ अणवज्जंपि भासं भासइ, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-सावज्जंपि जाव अणवज्जंपि भासं भासइ? गोयमा! जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अणिज्जूहित्ताणं भासं भासइ ताहे णं सक्के देविंदे देवराया सावज्जं भासं भासइ, जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं निज्जूहित्ताणं भासं भासइ ताहे णं सक्के देविंदे देवराया अणवज्जं भासं भासइ, से तेणट्ठेणं जाव भासइ, सक्के णं भंते! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिए सम्मद्दिट्ठिए मिच्छद्दिट्ठिए एवं जहा मोउद्देसए सणंकुमारे जाव नो अचरिमे॥५६७॥ जीवाणं भंते! किं चेयकडा कम्मा कज्जंति अचेयकडा कम्मा कज्जंति? गोयमा! जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जंति नो अचेयकडा कम्मा कज्जंति, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जाव कज्जंति? गोयमा! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला बोंदिचिया पोग्गला कडे(लें)वरचिया पोग्गला तहा २ णं ते पोग्गला परिणमंति नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो! दुट्ठाणेसु दुसेज्जासु दुन्निसीहियासु तहा २ णं ते पोग्गला परिणमंति नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो! आयंके से वहाए होइ संकप्पे से वहाए होइ मरणंते से वहाए होइ तहा २ णं ते पोग्गला परिणमंति नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो! से तेणट्ठेणं जाव कम्मा कज्जंति एवं नेरइयाणवि एवं जाव वेमाणियाणं। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ॥ ५६८ ॥ सोलसमस्स सयस्स बीओ उद्देसो समत्तो॥

तंजहा-सोइंदिए जाव फासिंदिए, कइविहे ण भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तजहा-मणजोए वइजोए कायजोए ॥ जीवे ण भते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेमाणे किं अहिगरणी अहिगरण ? गोयमा ! अहिगरणीवि अहिगरणपि, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ अहिगरणीवि अहिगरणपि ? गोयमा ! अविरइ पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव अहिगरणपि, पुढविकाइए णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अहिगरणी अहिगरण ? एवं चेव, एव जाव मणुस्से । एव वेउव्वियसरीरंपि, नवरं जस्स अत्थि । जीवे णं भते ! आहारगसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अहिगरणी० पुच्छा, गोयमा ! अहिगरणीवि अहिगरणपि, से केणट्ठेण जाव अहिगरणपि ? गोयमा ! पमाय पडुच्च, से तेणट्ठेण जाव अहिगरणपि, एव मणुस्सेवि, तेयासरीरं जहा ओरालिय, नवर सव्वजीवाण भाणियव्व; एव कम्मगसरीरपि । जीवे ण भते ! सोइदिय निव्वत्तेमाणे किं अहिगरणी अहिगरण ? एव जहेव ओरालियसरीर तहेव सोइदियंपि भाणियव्व, नवरं जस्स अत्थि सोइदिय, एव चक्खिदिय-घाणिंदियजिब्भिदियफासिंदियाणवि, नवर जाणियव्व जस्स जं अत्थि । जीवे ण भते ! मणजोगं निव्वत्तेमाणे किं अहिगरणी अहिगरण ? एव जहेव सोइदियं तहेव निरवसेस, वइजोगो एव चेव, नवर एगिंदियवज्जाण, एव कायजोगोवि, नवर सव्वजीवाण जाव वेमाणिए । सेव भंते ! २ त्ति ॥ ५६४ ॥ **सोलसमस्स सयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

रायगिहे जाव एव वयासी-जीवाण भते ! किं जरा सोगे ? गोयमा ! जीवाण जरावि सोगेवि, से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ जाव सोगेवि ? गोयमा ! जे ण जीवा सारीरं वेयण वेदेंति तेसि णं जीवाण जरा, जे ण जीवा माणस वेयण वेदेंति तेसि ण जीवाणं सोगे, से तेणट्ठेण जाव सोगेवि, एव नेरइयाणवि, एव जाव थणियकुमाराण, पुढविकाइयाण भते ! किं जरा सोगे ? गोयमा ! पुढविकाइयाण जरा नो सोगे, से केणट्ठेणं जाव नो सोगे ? गोयमा ! पुढविकाइया ण सारीरं वेयण वेदेंति नो माणसं वेयण वेदेंति, से तेणट्ठेण जाव नो सोगे, एव जाव चउरिंदियाणं, सेसाणं जहा जीवाण जाव वेमाणियाण, सेव भते ! २ त्ति जाव पज्जुवासइ ॥ ५६५ ॥ तेण कालेण तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे जाव भुंजमाणे विहरइ, इम च ण केवलकप्प जवुद्दीव २ विउलेग ओहिणा आभोएमाणे २ पासइ समण भगव महावीरं जवुद्दीवे दीवे एव जहा ईसाणे तइयसए तहेव सक्कोवि नवर आभिओगे ण सद्दावेइ हरी पायत्ताणियाहिवई, सुघोसा घटा, पालओ विमाणकारी पालग विमाण, उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे, दाहिणपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए सेसं त चेव

इणट्ठे समट्ठे, जावइयं णं भंते! दसमभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेइ एवइयं कम्मं नरएसु नेरइया वासकोडीए वा वासकोडीहिं वा वासकोडाकोडीए वा खवयंति? णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जावइयं अन्न(इ)गिलायए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेइ एवइयं कम्मं नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएण वा (जाव) वास-(सय) सहस्सेण वा नो खवयंति जावइयं चउत्थभत्तिए एवं तं चेव पुव्वभणियं उच्चारेयव्वं जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयंति? गोयमा! से जहानामए-केइ पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे सिढिलतयावलितरंगसंपिणद्धगत्ते पविरलपरिसडियदंतसेढी उण्हाभिहए तण्हाभिहए आउरे झुंझिए पिवासिए दुब्बले किलंते एगं महं कोसंबगंडियं सुक्कं जडिलं गंठिल्लं चिक्कणं वाइद्धं अपत्तियं मुंडेण परसुणा अक्कमेज्जा तए णं से पुरिसे महंताइं २ सद्दाइं करेइ नो महंताइं २ दलाइं अवद्दालेइ, एवामेव गोयमा! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं चिक्कणीकयाइं एवं जहा छट्ठसए जाव नो महापज्जवसाणा भवंति से जहानामए-केइ पुरिसे अहिगरणिं आउडेमाणे महया जाव नो महापज्जवसाणा भवंति से जहानामए-केइ पुरिसे तरुणे बलवं जाव मेहावी निउणसिप्पोवगए एगं महं सामलिगंडियं उल्लं अजडिलं अगंठिल्लं अचिक्कणं अवाइद्धं सपत्तियं तिक्खेण परसुणा अक्कमेज्जा तए णं से पुरिसे नो महंताइं २ सद्दाइं करेइ, महंताइं २ दलाइं अवद्दालेइ, एवामेव गोयमा! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं निट्ठियाइं कयाइं जाव खिप्पामेव परिविद्धत्थाइं भवंति जावइयं तावइयं जाव महापज्जवसाणा भवंति से जहा वा केइ पुरिसे सुक्कतणहत्थगं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा एवं जहा छट्ठसए तहा अओकवल्लेवि जाव महापज्जवसाणा भवंति से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जावइयं अन्नगिलायए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेइ तं चेव जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयंति॥ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ॥५७१॥ सोलसमस्स सयस्स चउत्थो उद्देसो समत्तो॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नयरे होत्था वण्णओ एगजंबुए चेइए वण्णओ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी एवं जहेव बिइयउद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेणं आगओ जाव जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव नमंसित्ता एवं वयासी—देवे णं भंते! महिड्ढीए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू आगमित्तए? नो इणट्ठे समट्ठे, देवे णं भंते! महिड्ढीए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू आग-

रायगिहे जाव एव वयासी-कइ ण भते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-नाणावरणिज्ज जाव अतराइय, एवं जाव वेमाणियाण । जीवे ण भंते ! नाणावरणिज्ज कम्मं वेदमाणे कइ कम्मपगडीओ वेदेइ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ, एव जहा पन्नवणाए वेयावेउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो, वेदाबधोवि तहेव, बधावेदोवि तहेव, बधाबधोवि तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणियाणंति । सेव भते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ५६९ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नयराओ गुणसिलाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ, तेणं कालेण तेण समएग उल्लुयातीरे नाम नयरे होत्था वन्नओ, तस्स ण उल्लुयातीरस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं एगजबुए नामं उज्जाणे होत्था वन्नओ, तए ण समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव एगजबुए समोसढे जाव परिसा पडिगया, भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-अणगारस्स ण भंते ! भावियप्पणो छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेण जाव आयावेमाणस्स तस्स ण पुरच्छिमेण अवड्ढ दिवसं नो कप्पइ हत्थ वा पाय वा बाह वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा पसारेत्तए वा, पच्चच्छिमेण से अवड्ढ दिवस कप्पइ हत्थ वा पाय वा जाव ऊरु वा आउटावेत्तए वा पसारेत्तए वा, तस्स ण अंसियाओ लवति, त च वेज्जे अदक्खु इ(ई)सिं पाडेइ २ त्ता अंसियाओ छिंदेज्जा, से नूणं भते ! जे छिंदइ तस्स किरिया कज्जइ, जस्स छिज्जइ नो तस्स किरिया कज्जइ णण्णत्थेगेण धम्मतराइएण ? हता गोयमा ! जे छिंदइ जाव धम्मतराइएणं । सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥५७०॥ **सोलसमस्स सयस्स तइओ उद्देसो समत्तो** ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-जावइयन्नं भते ! अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेइ एवइय कम्म नरएसु नेरइयाणं वासेण वा वासेहिं वा वाससए(ण)हिं वा खवंति ? णो इणट्ठे समट्ठे, जावइयण्ण भते ! चउत्थभत्तिए समणे निग्गंथे कम्म निज्जरेइ एवइय कम्मं नरएसु नेरइया वाससएण वा वाससएहिं वा वाससहस्से(ण)हिं वा वाससयसहस्से(ण)हिं वा खवयति ? णो इणट्ठे समट्ठे, जावइयन्न भते ! छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेइ एवइय कम्मं नरएसु नेरइया वाससहस्सेण वा वाससहस्सेहिं वा वाससयसहस्से(हिं)ण वा खवयंति ? णो इणट्ठे समट्ठे, जावइयन्न भते ! अट्ठमभत्तिए समणे निग्गंथे कम्म निज्जरेइ एवइय कम्म नरएसु नेरइया वाससयसहस्सेणं वा वाससयसहस्सेहिं वा वासकोडीए वा खवयति ? नो

नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु भंते ! महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे एगे मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए देवे ममं एवं वयासी–परिणममाणा पोग्गला नो परिणया अपरिणया, परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया अपरिणया, तए णं अहं तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी–परिणममाणा पोग्गला परिणया नो अपरिणया, परिणमंतीति पोग्गला परिणया नो अपरिणया, से कहमेयं भंते ! एवं ? गंगदत्तादि समणे भगवं महावीरे गंगदत्तं देवं एवं वयासी–अहंपि णं गंगदत्ता ! एवमाइक्खामि ४–परिणममाणा पोग्गला जाव नो अपरिणया सच्चमेसे अट्ठे, तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ, तए णं समणे भगवं महावीरे गंगदत्तस्स देवस्स तीसे य जाव धम्मं परिकहेइ जाव आराहए भवइ, तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेइ उ० २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी–अहण्णं भंते ! गंगदत्ते देवे किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिए ? एवं जहा सूरियाभो जाव बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसेइ २ त्ता जाव तामेव दिसिं पडिगए ॥ ५७४ ॥ भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव एवं वयासी–गंगदत्तस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई जाव अणुप्पविट्ठा ? गोयमा ! सरीरं गया सरीरं अणुप्पविट्ठा कूडागारसालादिट्ठंतो जाव सरीरं अणुप्पविट्ठा । अहो णं भंते ! गंगदत्ते देवे महिड्ढिए जाव महेसक्खे गंगदत्तेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई किण्णा लद्धा जाव जं णं गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया ? गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नयरे होत्था वण्णओ सहसंबवणे उज्जाणे वण्णओ तत्थ णं हत्थिणापुरे नयरे गंगदत्ते नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए, तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आइगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव पकड्ढिज्जमाणेणं २ सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं जाव जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरइ, परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तए णं से गंगदत्ते गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ जाव सरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता पायविहारचारेणं हत्थिणागपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव मुणिसुव्वए अरहा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मुणिसुव्वयं अरहं तिक्खुत्तो

मित्तए? हता पभू, देवे णं भते! महिड्ढिए एव एएणं अभिलावेणं गमित्तए २, एव भासित्तए वा वा(विया)गरित्तए वा ३, उम्मिसावेत्तए वा निम्मिसावेत्तए वा ४, आउटावेत्तए वा पसारेत्तए वा ५, ठाण वा सेज्जं वा निसीहिय वा चेइत्तए वा ६, एवं विउव्वित्तए वा ७, एव परियारावेत्तए वा ८ जाव हता पभू, इमाइ अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ इमाइ० २ त्ता सभतियवदणएणं वदइ सभतिय० २ त्ता तमेव दिव्व जाणविमाण दुरूहइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥५७२॥ भते! त्ति भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ व०२ त्ता एवं वयासी–अन्नया ण भते! सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं वदइ नमसइ सक्कारेइ जाव पज्जुवासइ, किण्ण भते! अज्ज सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पिय अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइ पुच्छइ २ त्ता सभतियवदणएण वदइ णमसइ व० २ त्ता जाव पडिगए? गोयमादि समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी–एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववन्ना, त०–माइमिच्छद्दिट्ठिउववन्नए य अमाइसम्मद्दिट्ठिउववन्नए य, तए ण से माइमिच्छादिट्ठिउववन्नए देवे तं अमाइसम्मदिट्ठिउववन्नग देव एवं वयासी–परिणममाणा पोग्गला नो परिणया अपरिणया, परिणमतीति पोग्गला नो परिणया अपरिणया, तए णं से अमाइसम्मद्दिट्ठिउववन्नए देवे त माइमिच्छद्दिट्ठिउववन्नग देव एव वयासी–परिणममाणा पोग्गला परिणया नो अपरिणया, परिणमतीति पोग्गला परिणया नो अपरिणया, त माइमिच्छदिट्ठिउववन्नग देव एव पडिहणइ २ त्ता ओहिं पउजइ २ त्ता मम ओहिणा आभोएइ मम० २ त्ता अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–एव खलु समणे भगव महावीरे जबुद्दीवे २ जेणेव भारहे वासे जेणेव उल्लुयातीरे नयरे जेणेव एगजबुए उज्जाणे अहापडिरूव जाव विहरइ, त सेय खलु मे समण भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्ता इमं एयारूव वागरण पुच्छित्तएत्तिकट्टु एव सपेहेइ एव सपेहित्ता चउहिवि सामाणियसाहस्सीहिं परियारो जहा सूरियाभस्स जाव निग्घोसनाइयरवेण जेणेव जबुद्दीवे २ जेणेव भारहे वासे जेणेव उल्लुयातीरे नयरे जेणेव एगजबुए उज्जाणे जेणेव मम अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए ण से सक्के देविंदे देवराया तस्स देवस्स त दिव्वं देविड्ढिं दिव्व देवजुइ दिव्वं देवाणुभा(व)ग दिव्व तेयलेस्सं असहमाणे मम अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइ पुच्छइ २ त्ता संभंतिय जाव पडिगए ॥५७३॥ जावं च ण समणे भगव महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठ परिकहेइ ताव च णं से देवे त देस हव्वमागए, तए ण से देवे समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वदइ

नो जागरे सुविणं पासइ, सुत्तजागरे सुविणं पासइ ॥ जीवा णं भंते ! किं सुत्ता जागरा सुत्तजागरा ? गोयमा ! जीवा सुत्तावि जागरावि सुत्तजागरावि। नेरइया णं भंते ! किं सुत्ता पुच्छा, गोयमा ! नेरइया सुत्ता नो जागरा नो सुत्तजागरा एवं जाव चउरिंदिया। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! किं सुत्ता पुच्छा, गोयमा ! सुत्ता नो जागरा सुत्तजागरावि मणुस्सा जहा जीवा वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥ ५९१ ॥ संवुडे णं भंते ! सुविणं पासइ, असंवुडे सुविणं पासइ, संवुडासंवुडे सुविणं पासइ ? गोयमा ! संवुडेवि सुविणं पासइ, असंवुडेवि सुविणं पासइ, संवुडासंवुडेवि सुविणं पासइ, संवुडे सुविणं पासइ अहातच्चं पासइ असंवुडे सुविणं पासइ तहा वा तं होज्जा अन्नहा वा तं होज्जा संवुडासंवुडे सुविणं पासइ एवं चेव ॥ जीवा णं भंते ! किं संवुडा असंवुडा संवुडासंवुडा ? गोयमा ! जीवा संवुडावि असंवुडावि संवुडासंवुडावि एवं जहेव सुत्ताणं दंडओ तहेव भाणियव्वो ॥ कइ णं भंते ! सुविणा पन्नत्ता ? गोयमा ! बायालीसं सुविणा पन्नत्ता कइ णं भंते ! महासुविणा पन्नत्ता ? गोयमा ! तीसं महासुविणा पन्नत्ता कइ णं भंते ! सव्वसुविणा पन्नत्ता ? गोयमा ! बावत्तरिं सव्वसुविणा पन्नत्ता। तित्थयरमायरो णं भंते ! तित्थयरंसि गब्भं वक्कममाणंसि कइ महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ? गोयमा ! तित्थयरमायरो णं तित्थयरंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति तं०—गयवसहसीहअभिसेय जाव सिहिं च। चक्कवट्टिमायरो णं भंते ! चक्कवट्टिंसि गब्भं वक्कममाणंसि कइ महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ? गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिंसि जाव वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं एवं जहा तित्थयरमायरो जाव सिहिं च। वासुदेवमायरो णं पुच्छा, गोयमा ! वासुदेवमायरो जाव वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे सत्त महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति। बलदेवमायरो णं पुच्छा, गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति। मंडलियमायरो णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! मंडलियमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरं एगं महासुविणं जाव पडिबुज्झंति ॥ ५९२ ॥ समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, तं०—एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ताणं पडिबुद्धे १, एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे २, एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं पुंसकोइलं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ३, एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ताणं

पडिबुद्धे ४, एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ५, एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ६, एगं च णं महं सागरं उम्मीवीईसहस्सकलियं भुयाहिं तिन्नं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ७, एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ८, एगं च णं महं हरि-वेरुलियवन्नाभेणं नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढियं परिवेढियं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे ९, एगं च णं महं मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगयं अप्पाणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे १०। जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ताणं पडि-बुद्धे, तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलाओ उग्घाइए १, जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किल्ल जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ २, जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे विचित्तं ससमयपरसमइयं दुवालसंगं गणिपि-डगं आघवेइ पन्नवेइ परूवेइ दंसेइ निदंसेइ उवदंसेइ, तंजहा–आयारं सूयगडं जाव दिट्ठिवायं ३, जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पन्नवेइ, तं०–आगा-रधम्मं वा अणागारधम्मं वा ४, जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयगोवग्गं जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइन्ने समणसंघे प०, तं०–समणा समणीओ सावया सावियाओ ५, जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पन्नवेइ, तं०–भवणवासी वाणमंतरे जोइसिए वेमाणिए ६, जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं सागरं जाव पडिबुद्धे, तन्नं समणेणं भगवया महावीरेणं अणादीए अणवदग्गे जाव संसारकंतारे तिन्ने ७, जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणयरं जाव पडि-बुद्धे, तन्नं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ८, जण्णं समणे जाव वीरे एगं महं हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ओराला कित्तिवन्नसद्दसिलोया सदे-वमणुयासुरे लोगे परिभ(व)मंति–इति खलु समणे भगवं महावीरे इति खलु समणे भगवं महावीरे ९, जन्नं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवलीपन्नत्तं धम्मं आघ-वेइ जाव उवदंसेइ ॥५७८॥ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हयपंतिं वा गयपंतिं वा जाव उसभपंतिं वा पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नइ

तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं दामिणिं पाईणपडीणायतं दुहओ समुद्दे पुट्ठं पासमाणे पासइ, संवेल्लेमाणे संवेल्लेइ, संवेल्लियमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव भवग्गहणेणं जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं रज्जुं पाईणपडीणायतं दुहओ लोगंते पुट्ठं पासमाणे पासइ, छिंदमाणे छिंदइ, छिन्नमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा जाव सुक्किलसुत्तगं वा पासमाणे पासइ, उग्गोवेमाणे उग्गोवेइ, उग्गोवियमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं अयरासिं वा तंबरासिं वा तउयरासिं वा सीसगरासिं वा पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हिरण्णरासिं वा सुवण्णरासिं वा रयणरासिं वा वइररासिं वा पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं तणरासिं वा जहा तेयनिसग्गे जाव अवकररासिं वा पासमाणे पासइ, विक्किरमाणे विक्किरइ, विक्किण्णमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सरथंभं वा वीरणथंभं वा वंसीमूलथंभं वा वल्लीमूलथंभं वा पासमाणे पासइ, उम्मूलेमाणे उम्मूलेइ, उम्मूलियमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं खीरकुंभं वा दहिकुंभं वा घयकुंभं वा महुकुंभं वा पासमाणे पासइ, उप्पाडेमाणे उप्पाडेइ, उप्पाडियमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सुरावियडकुंभं वा सोवीरवियडकुंभं वा तेल्लकुंभं वा वसाकुंभं वा पासमाणे पासइ, भिंदमाणे भिंदइ, भिन्नमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, दोच्चेणं भवग्गहणेणं जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं पउमसरं कुसुमियं पासमाणे पासइ, ओगाहेमाणे ओगाहेइ, ओगाढमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतं करेइ। इत्थी वा जाव सुविणंते एगं महं सागरं उम्मीवीई जाव कलियं पासमाणे पासइ, तरमाणे तरइ, तिण्णमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतं करेइ। इत्थी वा जाव सुविणंते एगं महं भवणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासइ, [दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नइ,] अणुप्पविसमाणे अणुप्पविसइ, अणुप्पविट्ठमिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतं करेइ। इत्थी वा पुरिसे वा

सुविणंते एगं महं विमाणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासइ, दुरूहमाणे दुरूहइ, दुरूढ-मिति अप्पाणं मन्नइ, तक्खणामेव बुज्झइ, तेणेव जाव अंतं करेइ ॥ ५७९ ॥ अह भंते ! कोट्ठपुडाण वा जाव केयईपुडाण वा अणुवायंसि उब्भिज्जमाणाण वा जाव ठाणाओ वा ठाणं संकामिज्जमाणाण किं कोट्ठे वाइ जाव केयई वाइ ? गोयमा ! नो कोट्ठे वाइ जाव नो केयई वाइ, घाणसहगया पोग्गला वाइ । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ५८० ॥ **सोलसमस्स सयस्स छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥**

कइविहे णं भंते ! उवओगे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पन्नत्ते, एवं जहा उवओगपयं पन्नवणाए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं, पासणयापयं च निरवसेसं नेयव्वं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥५८१॥ **सोलसमस्स सयस्स सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥**

केमहालए णं भंते ! लोए पन्नत्ते ? गोयमा ! महइमहालए जहा बारसमसए तहेव जाव असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं, लोगस्स णं भंते ! पुर-च्छिमिल्ले चरिमंते किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीव-प्पएसा ? गोयमा ! नो जीवा जीवदेसावि जीवपएसावि अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपएसावि ॥ जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे एवं जहा दसमसए अग्गेइंदिसा तहेव, नवरं देसेसु अणिंदियाणं आइल्लविरहिओ । जे अरूवी अजीवा ते छव्विहा, अद्धासमओ नत्थि, सेसं तं चेव सव्वं निरवसेसं । लोगस्स णं भंते ! दाहिणिल्ले चरिमंते किं जीवा० ? एवं चेव, एवं पच्चच्छिमिल्लेवि, एवं उत्तरिल्लेवि, लोगस्स णं भंते ! उवरिल्ले चरिमंते किं जीवा० पुच्छा, गोयमा ! नो जीवा जीवदेसावि जीवप्पएसावि जाव अजीवप्पएसावि । जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा, एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं, जे जीवप्पएसा ते नियमं एगिंदियप्पएसा य अणिंदियप्पएसा य अहवा एगिंदियप्पएसा य अणिंदिय-प्पएसा य बेइंदियस्स पएसा य अहवा एगिंदियप्पएसा य अणिंदियप्पएसा य बेइं-दियाण य पएसा, एवं आइल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं, अजीवा जहा दसमसए तमाए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं ॥ लोगस्स णं भंते ! हेट्ठिल्ले चरिमंते किं जीवा० पुच्छा, गोयमा ! नो जीवा जीवदेसावि जीवप्पएसावि जाव अजीवप्पएसावि, जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे अहवा एगिंदियदेसा बेइंदियाण य देसा, एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं पएसा;

परिमाणं जहेव तिगिच्छिकूडस्स पासायवडिंसगस्सवि तं चेव पमाण सीहासणं सपरिवारं बलिस्स परि(वा)यारेण अट्ठो तहेव, नवरं रुयगिंदप्पभाइं ३ सेसं तं चेव जाव बलिचचाए रायहाणीए अन्नेसिं च जाव (णिच्चे) रुयगिंदस्स णं उप्पायपव्वयस्स उत्तरेण छक्कोडिसए तहेव जाव चत्तालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो बलिचंचा नामं रायहाणी प० एगं जोयणसयसहस्सं पमाणं तहेव उववाओ जाव आयरक्खा सव्वं तहेव निरवसेसं, नवरं साइरेगं सागरोवमं ठिई प०, सेसं तं चेव जाव बली वइरोयणिंदे बली० २॥ सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ॥५८६॥ **सोलसमस्स सयस्स नवमो उद्देसो समत्तो ॥**

कइविहे णं भंते ! ओही पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहा ओही प०, तं०-ओहीपयं निरवसेसं भाणियव्वं ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥५८७॥ **सोलसमस्स सयस्स दसमो उद्देसो समत्तो ॥**

दीवकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा सव्वे समुस्सासनिस्सासा ? णो इणट्ठे समट्ठे, एवं जहा पढमसए बिइयउद्देसए दीवकुमाराणं वत्तव्वया तहेव जाव समाउया समुस्सासनिस्सासा। एवं नागावि, दीवकुमाराणं भंते ! कइ लेस्साओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पन्नत्ताओ, तंजहा-कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा। एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा दीवकुमारा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया। एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा ? गोयमा ! कण्हलेस्साहिंतो नीललेस्सा महिड्ढिया जाव सव्वमहिड्ढिया तेउलेस्सा। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ १६ ॥ ११ ॥ उदहिकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० एवं चेव, सेवं भंते ! २ त्ति ॥ १६ ॥ १२ ॥ एवं दिसाकुमारावि सेवं भंते ! २ त्ति ॥ १६ ॥ १३ ॥ एवं थणियकुमारावि, सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥५८८॥ **सोलसमस्स सयस्स चउद्दसमो उद्देसो समत्तो ॥ सोलसमं सयं समत्तं ॥**

नमो सुयदेवयाए भगवईए॥ कुंजर १ संजय २ सेलेसि ३ किरिय ४ ईसाण ५ पुढवि ६-७ दग ८-९ वाऊ १०-११। एगिंदिय १२ नाग १३ सुवन्न १४ विज्जु १५ वाउ १६ ऽग्गि १७ सत्तरसे ॥ १॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-उदाई णं भंते ! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदाइहत्थिरायत्ताए उववन्ने ? गोयमा ! असुरकुमारेहिंतो देवेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदाइहत्थिरा-

वत्ताए उववन्ने उदाई णं भंते! हत्थिराया अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिइयंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ, से णं भंते! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिइ॥ भूयाणंदे णं भंते! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता भूयाणंदे हत्थिरायत्ताए एवं जहेव उदाई जाव अंतं काहिइ॥ ५८९॥ पुरिसे णं भंते! तालमारुहइ ता॰ त्ता तालाओ तालफलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कइकिरिए? गोयमा! जावं च णं से पुरिसे तालमारुहइ तालमारुहित्ता तालाओ तालफलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो ताले निव्वत्तिए तालफले निव्वत्तिए तेवि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा॥ अहे णं भंते! से तालफले अप्पणो गरुयत्ताए जाव पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइं जाव जीवियाओ ववरोवेइ तए णं भंते! से पुरिसे कइकिरिए? गोयमा! जावं च णं से पुरिसे तालफले अप्पणो ग(रु)यत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो ताले निव्वत्तिए तेवि य णं जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठा, जेसिंपि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो तालफले निव्वत्तिए तेवि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा, जेवि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति तेवि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा॥ पुरिसे णं भंते! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कइकिरिए? गोयमा! जावं च णं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए तेवि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा। अहे णं भंते! से मूले अप्पणो गरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ तओ णं भंते! से पुरिसे कइकिरिए? गोयमा! जावं च णं से मूले अप्पणो जाव ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए तेवि य णं जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठा, जेसिंपि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए तेवि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा, जेवि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति तेवि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा॥ पुरिसे णं भंते! रुक्खस्स

कद पचाले० ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपिय णं जीवाण सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए तेवि ण जीवा जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा, अहे णं भंते ! से कंदे अप्पणो जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपिय णं जीवाण सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए खंधे निव्वत्तिए जाव चउहिं पुट्ठा, जेसिंपिय णं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे निव्वत्तिए तेवि ण जीवा जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा, जेवि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स जाव पंचहिं पुट्ठा जहा (कंदे) खंधो एवं जाव बीय ॥५९०॥ कइ ण भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरगा पन्नत्ता, तंजहा-ओरालिए जाव कम्मए । कइ णं भंते ! इंदिया प० ? गोयमा ! पंच इंदिया प०, त०-सोइंदिए जाव फासिंदिए । कइविहे णं भंते ! जोए प० ? गोयमा ! तिविहे जोए प०, त०-मणजोए वइजोए कायजोए । जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए, एवं पुढविकाइएवि, एवं जाव मणुस्से । जीवा ण भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणा कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंचकिरियावि, एवं पुढविकाइयावि, एवं जाव मणुस्सा, एवं वेउव्वियसरीरेणवि दो दंडगा नवरं जस्स अत्थि वेउव्वियं, एवं जाव कम्मगसरीरं, एवं सोइंदियं जाव फासिंदियं, एवं मणजोगं वइजोगं कायजोगं जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं, एए एगत्तपुहुत्तेणं छव्वीसं दंडगा ॥ ५९१ ॥ कइविहे ण भंते ! भावे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे भावे प०, तं०-उदइए उवसमिए जाव सन्निवाइए, से किं तं उदइए भावे ? उदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-उदइए य उदयनिप्फन्ने य, एवं एएणं अभिलावेणं जहा अणुओगदारे छन्नामं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव से तं सन्निवाइए भावे ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥५९२॥ **सत्तरसमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

से नूणं भंते ! संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे धम्मे ठिए, असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अहम्मे ठिए, संजयासंजए धम्माधम्मे ठिए ? हंता गोयमा ! संजयविरय जाव धम्माधम्मे ठिए, एएसि णं भंते ! धम्मंसि वा अहम्मंसि वा धम्माधम्मंसि वा चक्किया केइ आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केण खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव धम्माधम्मे ठिए ? गोयमा ! संजयविरय जाव पावकम्मे धम्मे ठिए धम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, असंजय जाव पावकम्मे अहम्मे ठिए अहम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, संजयासंजए धम्माधम्मे ठिए धम्माधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव ठिए ॥ जीवा णं भंते ! किं धम्मे ठिया अहम्मे ठिया धम्माधम्मे ठिया ?

गोयमा ! जीवा धम्मेवि ठिया अहम्मेवि ठिया धम्माधम्मेवि ठिया । नेरइयाणं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! नेरइया णो धम्मे ठिया अहम्मे ठिया णो धम्माधम्मे ठिया, एवं जाव चउरिंदियाणं । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! पंचिंदियति-रिक्खजोणिया नो धम्मे ठिया अहम्मे ठिया धम्माधम्मेवि ठिया मणुस्सा जहा जीवा वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा णेरइया ॥ ५५३ ॥ अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति–एवं खलु समणा पंडिया समणोवासया बाल-पंडिया जस्स णं एगपाणाएवि दंडे अणिक्खित्ते से णं एगंतबालेत्ति वत्तव्वं सिया, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव वत्तव्वं सिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि–एवं खलु समणा पंडिया समणोवासया बालपंडिया, जस्स णं एग-पाणाएवि दंडे निक्खित्ते से णं नो एगंतबालेत्ति वत्तव्वं सिया ॥ जीवा णं भंते ! किं बाला पंडिया बालपंडिया ? गोयमा ! जीवा बालावि पंडियावि बालपंडियावि नेरइयाणं पुच्छा गोयमा ! नेरइया बाला नो पंडिया नो बालपंडिया एवं जाव चउरिंदियाणं । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिया बाला नो पंडिया बालपंडियावि मणुस्सा जहा जीवा, वाणमंतरजोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥ ५५४ ॥ अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति–एवं खलु पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अन्ने जीवे अन्ने जीवाया पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अन्ने जीवे अन्ने जीवाया उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए वट्टमाणस्स अन्ने जीवे अन्ने जीवाया उग्गहे ईहा अवाए धारणाए वट्टमाणस्स जाव जीवाया उट्ठाणे जाव परक्कमे वट्टमाणस्स जाव जीवाया, नेरइयत्ते तिरिक्खमणुस्सदेवत्ते वट्टमाणस्स जाव जीवाया णाणावरणिज्जे जाव अंत-राइए वट्टमाणस्स जाव जीवाया एवं कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मदिट्ठीए ३, एवं चक्खुदंसणे ४ आभिणिबोहियणाणे ५, मइअन्नाणे ३, आहारसन्नाए ४ एवं ओरालियसरीरे ५, एवं मणजोए ३, सागारोवओगे अणागारोवओगे वट्टमाणस्स अन्ने जीवे अन्ने जीवाया, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि–एवं खलु पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे सच्चेव जीवाया जाव अणागारोवओगे वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे सच्चेव जीवाया ॥ ५५५ ॥ देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूविं विउ-

कंदे पचाले० ? गोयमा ! जाव च णं से पुरिसे जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपिय णं जीवाण सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए तेवि णं जीवा जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा, अहे ण भंते ! से कंदे अप्पणो जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिंपिय णं जीवाण सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए खंधे निव्वत्तिए जाव चउहिं पुट्ठा, जेसिंपिय णं जीवाण सरीरेहिंतो कंदे निव्वत्तिए तेवि ण जीवा जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा, जेवि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स जाव पंचहिं पुट्ठा जहा (कंदे) खंधो एवं जाव बीय ॥५९०॥ कइ णं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरगा पन्नत्ता, तंजहा–ओरालिए जाव कम्मए। कइ णं भंते ! इंदिया प० ? गोयमा ! पंच इंदिया प०, त०–सोइंदिए जाव फासिंदिए। कइविहे णं भंते ! जोए प० ? गोयमा ! तिविहे जोए प०, त०–मणजोए वइजोए कायजोए। जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए, एव पुढविकाइएवि, एवं जाव मणुस्से। जीवा ण भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणा कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंचकिरियावि, एवं पुढविकाइयावि, एवं जाव मणुस्सा, एवं वेउव्वियसरीरेणवि दो दंडगा नवरं जस्स अत्थि वेउव्वियं, एवं जाव कम्मगसरीरं, एवं सोइंदियं जाव फासिंदियं, एवं मणजोगं वइजोगं कायजोगं जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं, एए एगत्तपुहुत्तेणं छव्वीसं दंडगा ॥ ५९१ ॥ कइविहे ण भंते ! भावे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे भावे प०, तं०–उदइए उवसमिए जाव सन्निवाइए, से किं तं उदइए भावे ? उदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–उदइए य उदयनिप्फन्ने य, एवं एएणं अभिलावेणं जहा अणुओगदारे छन्नाम तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव से तं सन्निवाइए भावे ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥५९२॥ **सत्तरसमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

से नूणं भंते ! संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे धम्मे ठिए, असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अहम्मे ठिए, संजयासंजए धम्माधम्मे ठिए ? हंता गोयमा ! संजयविरय जाव धम्माधम्मे ठिए, एएसि णं भंते ! धम्मंसि वा अहम्मंसि वा धम्माधम्मंसि वा चक्किया केइ आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केण खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव धम्माधम्मे ठिए ? गोयमा ! संजयविरय जाव पावकम्मे धम्मे ठिए धम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, असंजय जाव पावकम्मे अहम्मे ठिए अहम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, संजयासंजए धम्माधम्मे ठिए धम्माधम्मं उवसंपजिताणं विहरइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव ठिए ॥ जीवा णं भंते ! किं धम्मे ठिया अहम्मे ठिया धम्माधम्मे ठिया ?

सोइन्दियचलणा जाव फासिन्दियचलणा जोगचलणा णं भंते ! कइविहा प० ?
गोयमा ! तिविहा प० तं०—मणजोगचलणा वइजोगचलणा कायजोगचलणा,
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ओरालियसरीरचलणा २ ? गोयमा ! जं णं जीवा
ओरालियसरीरे वट्टमाणा ओरालियसरीरप्पाओग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए
परिणामेमाणा ओरालियसरीरचलणं चलिंसु वा चलंति वा चलिस्संति वा से तेणट्ठेणं
जाव ओरालियसरीरचलणा २, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ वेउव्वियसरीरचलणा २ ?
एवं चेव नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा एवं जाव कम्मगसरीरचलणा, से केणट्ठेणं
भंते ! एवं वुच्चइ सोइन्दियचलणा २ ? गोयमा ! जं णं जीवा सोइंदिए वट्टमाणा
सोइंदियप्पाओग्गाइं दव्वाइं सोइंदियत्ताए परिणामेमाणा सोइंदियचलणं चलिंसु वा
चलंति वा चलिस्संति वा से तेणट्ठेणं जाव सोइंदियचलणा २, एवं जाव फासिंदिय-
चलणा, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ मणजोगचलणा २ ? गोयमा ! जं णं जीवा
मणजोए वट्टमाणा मणजोगप्पाओग्गाइं दव्वाइं मणजोगत्ताए परिणामेमाणा मणजोग-
चलणं चलिंसु वा चलंति वा चलिस्संति वा से तेणट्ठेणं जाव मणजोगचलणा २,
एवं वइजोगचलणावि एवं कायजोगचलणावि ॥ ५९८ ॥ अह भंते ! संवेगे
निव्वेए गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया आलोयणया निंदणया गरहणया खमावणया
सुयसहायया विउसमणया भावे अप्पडिबद्धया विणिवट्टणया विवित्तसयणासणसेव-
णया सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे जोगपच्चक्खाणे सरीरपच्चक्खाणे कसाय-
पच्चक्खाणे संभोगपच्चक्खाणे उवहिपच्चक्खाणे भत्तपच्चक्खाणे खमा विरागया भाव-
सच्चे जोगसच्चे करणसच्चे मणसमन्नाहरणया वइसमन्नाहरणया कायसमन्नाहरणया
कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे णाणसंपन्नया दंसणसंपन्नया चरित्तसंपन्नया
वेयणअहियासणया मारणंतियअहियासणया एए णं भंते ! पया किंपज्जवसाणफला
पन्नत्ता ? समणाउसो ! गोयमा ! संवेगे निव्वेए जाव मारणंतियअहियासणया एए
णं सिद्धिपज्जवसाणफला प० समणाउसो ! । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ
॥ ५९९ ॥ सत्तरसमस्स सयस्स तइओ उद्देसो समत्तो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी—अत्थि णं भंते !
जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि । सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ
अपुट्ठा कज्जइ ? गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ नो अपुट्ठा कज्जइ, एवं जहा पढमसए
छट्ठुद्देसए जाव नो अणाणुपुव्विकडत्ति वत्तव्वं सिया एवं जाव वेमाणियाणं नवरं
जीवाणं एगिंदियाण य निव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय
चउदिसिं सिय पंचदिसिं सेसाणं नियमं छद्दिसिं । अत्थि णं भंते ! जीवाणं मुसा-

व्वित्ताणं चिट्ठित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवे णं जाव नो पभू अरूविं विउव्वित्ताण चिट्ठित्तए ? गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमन्नागच्छामि, मए एयं नायं, मए एयं दिट्ठं, मए एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमन्नागयं—जण्णं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स सवेयस्स समोहस्स सलेसस्स ससरीरस्स ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पन्नायइ, तंजहा—कालत्ते वा जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा दुब्भिगंधत्ते वा, तित्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव चिट्ठित्तए ॥ सच्चेव णं भंते ! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए ? गोयमा ! अहमेयं जाणामि जाव जन्नं तहागयस्स जीवस्स अरूविस्स अकम्मस्स अरागस्स अवेयस्स अमोहस्स अलेसस्स असरीरस्स ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स णो एवं पन्नायइ, तं०—कालत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा, से तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए वा ॥ सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ५९६ ॥ **सत्तरसमस्स सयस्स बीओ उद्देसो समत्तो ॥**

सेलेसिं पडिवन्नए णं भंते ! अणगारे सया समियं एयइ वेयइ जाव तं तं भावं परिणमइ ? णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थेगेणं परप्पओगेण ॥ कइविहा णं भंते ! एयणा प० ? गोयमा ! पंचविहा एयणा प०, तंजहा—दव्वेयणा खेत्तेयणा कालेयणा भवेयणा भावेयणा, दव्वेयणा णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! चउव्विहा प०, तंजहा—नेरइयदव्वेयणा, तिरिक्खदव्वेयणा, मणुस्सदव्वेयणा, देवदव्वेयणा, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वेयणा २ ? गोयमा ! जन्नं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टिंसु वा वट्टंति वा वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा नेरइयदव्वेयणं एइंसु वा एयंति वा एइस्संति वा, से तेणट्ठेणं जाव दव्वेयणा, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तिरिक्खजोणियदव्वेयणा २ ? एवं चेव, नवरं तिरिक्खजोणियदव्वे० भाणियव्वं, सेसं तं चेव, एवं जाव देवदव्वेयणा । खेत्तेयणा णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! चउव्विहा प०, तं०—नेरइयखेत्तेयणा जाव देवखेत्तेयणा, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयखेत्तेयणा २ ? एवं चेव, नवरं नेरइयखेत्तेयणा भाणियव्वा, एवं जाव देवखेत्तेयणा, एवं कालेयणावि, एवं भवेयणावि, एवं जाव देवभावेयणावि ॥ ५९७ ॥ कइविहा णं भंते ! चलणा प० ? गोयमा ! तिविहा चलणा प०, तं०—सरीरचलणा इंदियचलणा जोगचलणा, सरीरचलणा णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! पंचविहा प०, तं०—ओरालियसरीरचलणा जाव कम्मगसरीरचलणा, इंदियचलणा णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! पंचविहा प०, तंजहा—

वाएण किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि, सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ? जहा पाणाइवाएणं दंडओ एवं मुसावाएणवि, एवं अदिन्नादाणेणवि मेहुणेणवि परिग्गहेणवि, एवं एए पंच दंडगा ५। जंसमयन्नं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ? एवं तहेव जाव वत्तव्वं सिया जाव वेमाणियाणं, एवं जाव परिग्गहेणं, एवं एएवि पंच दंडगा १०। जंदेसेणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ एवं चेव जाव परिग्गहेणं, एवं एएवि पंच दंडगा १५। जंपएसन्नं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ एवं तहेव दण्डओ, एवं जाव परिग्गहेणं २०, एवं एए वीसं दंडगा ॥ ६०० ॥ जीवाणं भंते ! किं अत्तकडे दुक्खे, परकडे दुक्खे, तदुभयकडे दुक्खे ? गोयमा ! अत्तकडे दुक्खे, नो परकडे दुक्खे, नो तदुभयकडे दुक्खे, एवं जाव वेमाणियाणं, जीवा णं भंते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, परकडं दुक्खं वेदेंति, तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा ! अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, नो परकडं दुक्खं वेदेंति, नो तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति, एवं जाव वेमाणियाणं। जीवाणं भंते ! किं अत्तकडा वेयणा, परकडा वेयणा, तदुभयकडा वेयणा ? गोयमा ! अत्तकडा वेयणा, णो परकडा वेयणा, णो तदुभयकडा वेयणा, एवं जाव वेमाणियाणं, जीवा णं भंते ! किं अत्तकडं वेयणं वेदेंति, परकडं वेयणं वेदेंति, तदुभयकडं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! जीवा अत्तकडं वेयणं वेदेंति, नो परकडं वेयणं वेदेंति, नो तदुभयकडं वेयणं वेदेंति, एवं जाव वेमाणियाणं। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ६०१ ॥ **सत्तरसमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥**

कहि णं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरिय जहा ठाणपए जाव मज्झे ईसाणवडिंसए महाविमाणे से णं ईसाणवडिंसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं० एवं जहा दसमसए सक्कविमाणवत्तव्वया सा इहवि ईसाणस्स निरवसेसा भाणियव्वा जाव आयरक्खत्ति, ठिई साइरेगाइं दो सागरोवमाइं, सेसं तं चेव जाव ईसाणे देविंदे देवराया २, सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥६०२॥ **सत्तरसमे सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥**

पुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए २ त्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए से भंते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्विं वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुव्विं वा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्विं वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा, से केणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुढविक्काइयाणं तओ समुग्घाया प०, तं०–

पुच्छा गोयमा ! पढमावि अपढमावि, नेरइया जाव वेमाणिया णो पढमा अपढमा सिद्धा पढमा णो अपढमा एगेणं पुच्छा भाणियव्वा २ ॥ भवसिद्धिए एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, एवं अभवसिद्धिएवि णोभवसिद्धियणोअभवसिद्धिए णं भंते ! जीवे णोभव पुच्छा गोयमा ! पढमे णो अपढमे णोभवसिद्धियणोअभवसिद्धिए णं भंते ! सिद्धे णोभव अभव एवं चेव पुहुत्तेणवि दोण्हवि ॥ सण्णी णं भंते ! जीवे सण्णिभावेणं किं पढमे पुच्छा गोयमा ! णो पढमे अपढमे, एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिए, एवं पुहुत्तेणवि ३ ॥ असण्णी एवं चेव एगत्तपुहुत्तेणं णवरं जाव वाणमंतरा णोसण्णीणोअसण्णी जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे णो अपढमे, एवं पुहुत्तेणवि ४ ॥ सलेस्से णं भंते ! पुच्छा गोयमा ! जहा आहारए एवं पुहुत्तेणवि कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा एवं चेव णवरं जस्स जा लेस्सा अत्थि । अलेस्से णं जीवमणुस्ससिद्धे जहा णोसण्णीणोअसण्णी ५ ॥ सम्मद्दिट्ठिए णं भंते ! जीवे सम्मद्दिट्ठिभावेणं किं पढमे पुच्छा गोयमा ! सिय पढमे सिय अपढमे एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए, सिद्धे पढमे णो अपढमे पुहुत्तिया जीवा पढमावि अपढमावि एवं जाव वेमाणिया, सिद्धा पढमा णो अपढमा मिच्छादिट्ठिए एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारगा सम्मामिच्छादिट्ठिए एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी णवरं जस्स अत्थि सम्मामिच्छत्तं ६ ॥ संजए जीवे मणुस्से य एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी असंजए जहा आहारए, संजयासंजए जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सा एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी णोसंजएणोअसंजएणोसंजयासंजए जीवे सिद्धे य एगत्तपुहुत्तेणं पढमे णो अपढमे ७ ॥ सकसाई कोहकसाई जाव लोभकसाई एए एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, अकसाई जीवे सिय पढमे सिय अपढमे एवं मणुस्सेवि सिद्धे पढमे णो अपढमे पुहुत्तेणं जीवा मणुस्सा पढमावि अपढमावि सिद्धा पढमा णो अपढमा

॥ णाणी एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मद्दिट्ठी आभिणिबोहियणाणी जाव मणपज्जवणाणी एगत्तपुहुत्तेणं एवं चेव णवरं जस्स जं अत्थि केवलणाणी जीवे मणुस्से सिद्धे य एगत्तपुहुत्तेणं पढमा णो अपढमा । अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगणाणी एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए ९ ॥ सजोगी मणजोगी वइजोगी कायजोगी एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, णवरं जस्स जो जोगो अत्थि अजोगी जीवमणुस्ससिद्धा एगत्तपुहुत्तेणं पढमा णो अपढमा १ ॥ सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्तपुहुत्तेणं जहा अणाहारए ११ ॥ सवेयगो जाव णपुंसग[illegible] एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए णवरं जस्स जो वेदो अत्थि अवेयओ [illegible] पएसु जहा अकसाई १२ ॥ ससरीरी जहा आहारए, एवं [illegible]

भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए तणुवाए घणवायवलएसु तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते! सेस त चेव एवं जहा सोहम्मकप्पवाउकाइओ सत्तसुवि पुढवीसु उववाइओ एवं जाव ईसिप्पब्भाराए वाउक्काइओ अहे सत्तमाए जाव उववाएयव्वो, सेव भंते! २ त्ति (१७-११) ॥ ६०८ ॥ एगिंदिया णं भंते! सव्वे समाहारा सव्वे (समसरीरा) समुस्सासणीसासा एव जहा पढमसए बिइयउद्देसए पुढविकाइयाण वत्तव्वया भणिया सा चेव एगिंदियाणं इह भाणियव्वा जाव समाउया समोववन्नगा। एगिंदियाण भंते! कइ लेस्साओ प० ? गोयमा! चत्तारि लेस्साओ प०, तं०-कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा। एएसि णं भंते! एगिंदियाण कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा! सव्वत्थोवा एगिंदियाण तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणतगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया। एएसि ण भंते! एगिंदियाणं कण्हलेस्सा इड्ढी जहेव दीवकुमाराण, सेव भंते! २ त्ति (१७-१२) ॥ ६०९ ॥ नागकुमारा ण भंते! सव्वे समाहारा जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसए तहेव निरवसेस भाणियव्व जाव इड्ढीति, सेव भंते! २ त्ति जाव विहरइ (१७-१३) ॥ ६१० ॥ सुवन्नकुमारा ण भंते! सव्वे समाहारा० एव चेव, सेव भंते! २ त्ति (१७-१४) ॥ ६११ ॥ विज्जुकुमारा ण भंते! सव्वे समाहारा० एवं चेव, सेव भंते! २ त्ति (१७-१५) ॥ ६१२ ॥ वाउकुमारा ण भंते! सव्वे समाहारा० एव चेव, सेवं भंते! २ त्ति (१७-१६) ॥ ६१३ ॥ अग्गिकुमारा ण भंते! सव्वे समाहारा० एव चेव, सेव भंते! २ त्ति ॥६१४॥ **सत्तरसमस्स सयस्स सत्तरसमो उद्देसो समत्तो ॥ सत्तरसमं सयं समत्तं ॥**

पढमे १ विसाह २ मायदिए य ३ पाणाइवाय ४ असुरे य ५। गुल ६ केवलि ७ अणगारे ८ भविए ९ तह सोमिलऽट्ठारसे १० ॥ १ ॥ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव एव वयासी-जीवे ण भंते! जीवभावेण किं पढमे अपढमे ? गोयमा! नो पढमे अपढमे, एवं नेरइए जाव वेमाणिए । सिद्धे ण भंते! सिद्धभावेण किं पढमे अपढमे ? गोयमा! पढमे नो अपढमे, जीवा ण भंते! जीवभावेण किं पढमा अपढमा ? गोयमा! नो पढमा अपढमा, एव जाव वेमाणियाण १ ॥ सिद्धाण पुच्छा, गोयमा! पढमा नो अपढमा ॥ आहारए ण भंते! जीवे आहारभावेण किं पढमे अपढमे ? गोयमा! नो पढमे अपढमे, एव जाव वेमाणिए, पोहत्तिएवि एव चेव। अणाहारए ण भंते! जीवे अणाहारभावेणं पुच्छा, गोयमा! सिय पढमे सिय अपढमे । नेरइए ण भंते! एवं नेरइए जाव वेमाणिए नो पढमे अपढमे, सिद्धे पढमे नो अपढमे । अणाहारगा ण भंते! जीवा अणाहारभावेणं

सरीरं, नवरं आहारगसरीरी एगत्तपुहुत्तेण जहा सम्मद्दिट्ठी, असरीरी जीवो सिद्धो एगत्तपुहुत्तेणं पढमो नो अपढमो १३ ॥ पचहिं पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं एगत्तपुहुत्तेण जहा आहारए, नवरं जस्स जा अत्थि जाव वेमाणिया नो पढमा अपढमा १४ ॥ इमा लक्खणगाहा—जो जेण पत्तपुव्वो भावो सो तेण अपढमो होइ। सेसेसु होइ पढमो अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥ १ ॥ जीवे णं भंते! जीवभावेणं किं चरिमे अचरिमे? गोयमा! नो चरिमे अचरिमे । नेरइए णं भंते! नेरइयभावेण पुच्छा, गोयमा! सिय चरिमे सिय अचरिमे, एवं जाव वेमाणिए, सिद्धे जहा जीवे। जीवाण पुच्छा, गोयमा! जीवा नो चरिमा अचरिमा, नेरइया चरिमावि अचरिमावि, एवं जाव वेमाणिया, सिद्धा जहा जीवा १॥ आहारए सव्वत्थ एगत्तेणं सिय चरिमे सिय अचरिमे, पुहुत्तेणं चरिमावि अचरिमावि, अणाहारओ जीवो सिद्धो य एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि नो चरिमो अचरिमो, सेसट्ठाणेसु एगत्तपुहुत्तेण जहा आहारओ २॥ भवसिद्धीओ जीवपए एगत्तपुहुत्तेण चरिमे नो अचरिमे, सेसट्ठाणेसु जहा आहारओ । अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्तपुहुत्तेण नो चरिमे अचरिमे, नोभवसिद्धीयनोअभवसिद्धीय जीवा सिद्धा य एगत्तपुहुत्तेण जहा अभवसिद्धीओ ३ ॥ सन्नी जहा आहारओ, एवं असन्नीवि, नोसन्नीनोअसन्नी जीवपए सिद्धपए य अचरिमो, मणुस्सपए चरिमो एगत्तपुहुत्तेण ४॥ सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सो जहा आहारओ नवरं जस्स जा अत्थि, अलेस्सो जहा नोसन्नीनोअसन्नी ५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जहा अणाहारओ, मिच्छादिट्ठी जहा आहारओ, सम्मामिच्छादिट्ठी एगिंदियविगलिंदियवज्जं सिय चरिमे सिय अचरिमे, पुहुत्तेणं चरिमावि अचरिमावि ६ ॥ संजओ जीवो मणुस्सो य जहा आहारओ, असंजओवि तहेव, संजयासंजओवि तहेव, नवरं जस्स जं अत्थि, नोसंजयनोअसंजयनोसंजयासंजय जहा नोभवसिद्धीयनोअभवसिद्धीओ ७ ॥ सकसाई जाव लोभकसाई सव्वट्ठाणेसु जहा आहारओ, अकसाई जीवपए सिद्धपए य नो चरिमो अचरिमो, मणुस्सपए सिय चरिमो सिय अचरिमो ८॥ णाणी जहा सम्मद्दिट्ठी सव्वत्थ आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी जहा आहारओ नवरं जस्स जं अत्थि, केवलनाणी जहा नोसन्नीनोअसन्नी, अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा आहारओ ९ ॥ सजोगी जाव कायजोगी जहा आहारओ जस्स जो जोगो अत्थि, अजोगी जहा नोसन्नीनोअसन्नी १० ॥ सागारोवउत्तो अणागारोवउत्तो य जहा अणाहारओ ११ ॥ सवेदओ जाव नपुंसगवेदओ जहा आहारओ, अवेदओ जहा अकसाई १२ ॥ ससरीरी जाव कम्मगसरीरी जहा आहारओ नवरं जस्स जं अत्थि, असरीरी जहा नोभवसिद्धीयनोअभवसिद्धीय १३ ॥ पचहिं पज्जत्तीहिं पचहिं

म॰ २ त्ता छट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ स॰ २ त्ता आलोइयपडिक्कंते जाव कालं
किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव
सक्के देविंदत्ताए उववन्ने, तए णं से सक्के देविंदे देवराया अहुणोववन्ने सेसं जहा
गंगदत्तस्स जाव अंतं काहिइ, नवरं ठिई दो सागरोवमाइं प॰ सेसं तं चेव। सेवं
भंते! २ त्ति ॥ ६१६ ॥ अट्ठारसमस्स सयस्स बीओ उद्देसो समत्तो॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था वण्णओ गुणसिलए चेइए
वण्णओ जाव परिसा पडिगया तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महा-
वीरस्स जाव अंतेवासी मागंदियपुत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जहा मंडियपुत्ते
जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी–से नूणं भंते! काउलेस्से पुढविक्काइए काउलेस्से-
हिंतो पुढविक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभइ ल॰ २ त्ता केवलं
बोहिं बुज्झइ बु॰ २ त्ता तओ पच्छा सिज्झइ जाव अंतं करेइ? हंता मागंदिय-
पुत्ता! काउलेस्से पुढविक्काइए जाव अंतं करेइ। से नूणं भंते! काउलेस्से आउक्काइए
काउलेस्सेहिंतो आउक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभइ ल॰ २ त्ता
केवलं बोहिं बुज्झइ जाव अंतं करेइ? हंता मागंदियपुत्ता! जाव अंतं करेइ। से
नूणं भंते! काउलेस्से वणस्सइकाइए एवं चेव जाव अंतं करेइ, सेवं भंते! २ त्ति
मागंदियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं जाव नमंसित्ता जेणेव समणे निग्गंथे
तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणे निग्गंथे एवं वयासी–एवं खलु अज्जो! काउलेस्से
पुढविक्काइए तहेव जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो! काउलेस्से आउक्काइए जाव
अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो! काउलेस्से वणस्सइकाइए जाव अंतं करेइ, तए णं ते
समणा निग्गंथा मा(गं)दियपुत्तस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवे-
माणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति ३ एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव समणे भगवं महा-
वीरे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति वं॰ २ त्ता एवं
वयासी–एवं खलु भंते! मागंदियपुत्ते अणगारे अम्हं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ–
एवं खलु अज्जो! काउलेस्से पुढविक्काइए जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो! काउलेस्से
आउक्काइए जाव अंतं करेइ, एवं खलु वणस्सइकाइए वि जाव अंतं करेइ, से कह-
मेयं भंते! एवं? अज्जो! त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं
वयासी–जण्णं अज्जो! मागंदियपुत्ते अणगारे तुब्भे एवं आइक्खइ जाव परूवेइ–
एवं खलु अज्जो! काउलेस्से पुढविक्काइए जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो! काउ-
लेस्से आउक्काइए जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि
जाव अंतं करेइ, सच्चे णं एसमट्ठे, अहंपि णं अज्जो! एवमाइक्खामि ४–एवं खलु

तं णेगमट्ठसहस्सपि त कत्तिय सेट्ठिं एव वयासी–जइ ण देवाणुप्पिया ! ससारभय-उव्विग्गा भीया जाव पव्वइस्सति, अम्ह देवाणुप्पिया ! कि अन्ने आलवणे वा आहारे वा पडिबधे वा ? अम्हेवि ण देवाणुप्पिया ! ससारभयउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पिएहिं सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतिय मु(डे)डा भवित्ता अगाराओ जाव पव्वयामो, तए णं से कत्तिए सेट्ठी त नेगमट्ठसहस्स एव वयासी–जइ ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाण मए सद्धिं मुणिसुव्वय जाव पव्वयह त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु २ गिहेसु विउल असण जाव उवक्खडावेह मित्तणाइ जाव पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुबे ठावेह जेट्ठ० २ त्ता त मित्तणाइ जाव जेट्ठपुत्ते आपुच्छह २ त्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहह पु० २ त्ता मित्तनाइ जाव-परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव रवेण अकालपरिहीण चेव मम अतिय पाउब्भवह, तए ण ते नेगमट्ठसहस्सपि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एय-मट्ठं विणएण पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव साइ साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति २ त्ता विपुल असण जाव उवक्खडावेंति २ त्ता मित्तणाइ जाव तस्सेव मित्तणाइ जाव पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुवे ठावेंति जेट्ठपुत्ते० २ त्ता त मित्तणाइ जाव जेट्ठपुत्ते य आपुच्छति जेट्ठ० २ त्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहति २ त्ता मित्तणाइ जाव परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव रवेण अकाल-परिहीण चेव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अतिय पाउब्भवति, तए ण से कत्तिए सेट्ठी विपुल असणं ४ जहा गगदत्तो जाव मित्तणाइ जाव परिजणेण जेट्ठपुत्तेण णेगमट्ठसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव रवेण हत्थिणापुर नयरं मज्झमज्झेण जहा गंगदत्तो जाव आलित्ते णं भते ! लोए पलित्ते ण भते ! लोए आलित्तपलित्ते ण भंते ! लोए जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ, त इच्छामि ण भते ! णेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं सयमेव पव्वाविय सयमेव मुंडाविय जाव धम्ममाइक्खियं, तए ण मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं णेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममाइक्खइ, एव देवाणु-प्पिया ! गतव्वं एवं चिट्ठियव्व जाव सजमियव्वं, तए ण से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसह-स्सेणं सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इम एयारूव धम्मिय उवएसं सम्म सपडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छइ जाव सजमेइ, तए ण से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी, तए ण से कत्तिए अणगारे मुणि-सुव्वयस्स अरहओ तहारूवाण थेराण अतिय सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ सा० २ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुन्नाइं दुवालसवासाइं सामन्नपरियाग पाउणइ २ त्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झोसेइ

अज्जो ! कण्हलेस्से पुढविकाइए कण्हलेस्सेहिंतो पुढविकाइएहिंतो जाव अंत करेइ, एवं खलु अज्जो ! नीललेस्से पुढविकाइए जाव अंत करेइ, एव काउलेस्सेवि जहा पुढविकाइए जाव अंतं करेइ, एव आउकाइएवि, एव वणस्सइकाइएवि, सच्चे ण एसमट्ठे ॥ सेवं भंते ! २ त्ति समणा निग्गंथा समण भगवं महावीरं वंदति नमसति वं० २ त्ता जेणेव मागंदियपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति २ त्ता मागंदियपुत्त अणगारं वंदति नमंसति वं० २ त्ता एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो २ खामेंति ॥६१७॥ तए ण से मागंदियपुत्ते अणगारे उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ वं० २ त्ता समण भगव महावीरं वंदइ नमसइ व० २ त्ता एवं वयासी–अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेदेमाणस्स सव्व कम्म निज्जरेमाणस्स सव्व मारं मरमाणस्स सव्व सरीर विप्पजहमाणस्स चरिम कम्म वेदेमाणस्स चरिम कम्मं निज्जरेमाणस्स चरिम मारं मरमाणस्स चरिम सरीरं विप्पजहमाणस्स मारणतियं कम्म वेदेमाणस्स मारणतिय कम्म निज्जरेमाणस्स मारणतिय मार मरमाणस्स मारणतिय सरीरं विप्पजहमाणस्स जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला प०, समणाउसो ! सव्व लोगपिणं ते ओगाहित्ताण चिट्ठंति ? हता मागंदियपुत्ता ! अणगारस्स णं भावियप्पणो जाव ओगाहित्ताण चिट्ठति, छउमत्थे ण भंते ! मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाणं किंचि आणत्त वा णाणत्त वा एव जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते जाणति पासति आहारेंति, से तेणट्ठेण निक्खेवो भाणियव्वोत्ति न पासति आहारेंति, नेरइया णं भंते ! निज्जरापोग्गला न जाणति न पासति आहारेंति, एवं जाव पचिंदियतिरिक्खजोणियाण, मणुस्सा ण भंते ! निज्जरापोग्गले किं जाणति पासति आहारेंति उदाहु न जाणति न पासति न आहारेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया जाणति ३ अत्थेगइया न जाणंति न पासति आहारेंति, से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ अत्थेगइया जाणति पासति आहारेंति, अत्थेगइया न जाणति न पासति आहारेंति ? गोयमा ! मणुस्सा दुविहा प०, तजहा–सण्णिभूया य असण्णिभूया य, तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते न जाणति न पासंति आहारेंति, तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते दुविहा प०, तं०– उवउत्ता य अणुवउत्ता य, तत्थ ण जे ते अणुवउत्ता ते न जाणति न पासति आहारेंति, तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते जाणंति ३, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ अत्थेगइया न जाणंति २ आहारेंति, अत्थेगइया जाणति ३, वाणमंतरजोइसिया जहा नेरइया । वेमाणिया णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति ६ ? गोयमा ! जहा मणुस्सा नवरं वेमाणिया दुविहा प०, तं०–माइमिच्छद्दिट्ठिउववन्नगा य अमा-

सायं पुच्छा, गोयमा! जहण्णपए कडजुम्मा उक्कोसपए तेयोगा अजहण्णमणु-
क्कोसपए सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा एवं जाव चउरिंदिया सेसा एगिं-
दिया जहा बेइंदिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया सिद्धा
जहा वणस्सइकाइया। इत्थीओ णं भंते! किं कडजुम्माओ पुच्छा गोयमा!
जहण्णपए कडजुम्माओ उक्कोसपए कडजुम्माओ अजहण्णमणुक्कोसपए सिय कडजु-
म्माओ जाव सिय कलिओगाओ एवं असुरकुमारइत्थीओवि जाव थणियकुमार-
इत्थीओवि एवं तिरिक्खजोणियइत्थीओवि एवं मणुस्सइत्थीओवि एवं वाणमं-
तरजोइसियवेमाणियदेवइत्थीओवि ॥ ६१३ ॥ जावइया णं भंते! वरा अंधगवण्हिणो
जीवा तावइया परा अंधगवण्हिणो जीवा? हंता गोयमा! जावइया वरा अंधग-
वण्हिणो जीवा तावइया परा अंधगवण्हिणो जीवा। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ६१४ ॥

अट्ठारसमस्स सयस्स चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

दो भंते! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना
तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे एगे असुर-
कुमारे देवे से णं नो पासाईए नो दरिसणिज्जे नो अभिरूवे नो पडिरूवे, से कहमेयं
भंते! एवं? गोयमा! असुरकुमारा देवा दुविहा प० तं०—वेउव्वियसरीरा य अवे-
उव्वियसरीरा य, तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं पासाईए
जाव पडिरूवे तत्थ णं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं नो पासाईए
जाव नो पडिरूवे से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे तं
चेव जाव नो पडिरूवे? गोयमा! से जहानामए—इहं मणुयलोगंसि दुवे पुरिसा
भवंति एगे पुरिसे अलंकियविभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकियविभूसिए, एएसि णं
गोयमा! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासाईए जाव पडिरूवे कयरे पुरिसे नो
पासाईए जाव नो पडिरूवे जे वा से पुरिसे अलंकियविभूसिए जे वा से पुरिसे
अणलंकियविभूसिए? भगवं! तत्थ जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए से णं पुरिसे
पासाईए जाव पडिरूवे, तत्थ णं जे से पुरिसे अणलंकियविभूसिए से णं पुरिसे नो
पासाईए जाव नो पडिरूवे से तेणट्ठेणं जाव नो पडिरूवे। दो भंते! नागकुमारा
देवा एगंसि नागकुमारावासंसि एवं चेव एवं जाव थणियकुमारा वाणमंतरजोइसिय-
वेमाणिया एवं चेव ॥ ६१५ ॥ दो भंते! नेरइया एगंसि नेरइयावासंसि नेरइयत्ताए
उववन्ना तत्थ णं एगे नेरइए महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव एगे
नेरइए अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव, से कहमेयं भंते! एवं?
गोयमा! नेरइया दुविहा प० तं०—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा य अमायिसम्मदिट्ठि

मागंदिअपुत्ता ! असंखेज्जइभागं आहारेंति अणंतभागं निज्जरेंति, चक्किया णं भंते ! केइ तेसु निज्जरापोग्गलेसु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, अणाहरणमेयं वुइयं समणाउसो ! एवं जाव वेमाणियाणं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ६२१ ॥ **अट्ठारसमस्स सयस्स तइओ उद्देसो समत्तो ॥**

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव भगवं गोयमे एवं वयासी–अह भंते ! पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवायवेरमणे मुसावाय० जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणे, पुढविक्काइए जाव वणस्सइकाइए, धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवे असरीरपडिबद्धे परमाणुपोग्गले सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे सव्वे य बायरबोंदिधरा कलेवरा एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाए जाव एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, अत्थेगइया जीवाणं जाव नो हव्वमागच्छंति, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पुढविक्काइए जाव वणस्सइकाइए, सव्वे य बायरबोंदिधरा कलेवरा एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए जाव परमाणुपोग्गले सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए नो हव्वमागच्छन्ति, से तेणट्ठेणं जाव नो हव्वमागच्छंति ॥ ६२२ ॥ कइ णं भंते ! कसाया पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया प०, तं०–कसायपयं निरवसेसं भाणियव्वं जाव निज्जरिस्संति लोभेणं ॥ कइ णं भंते ! जुम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पन्नत्ता, तं०–कडजुम्मे तेओगे दावरजुम्मे कलिओगे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव कलिओगे ? गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं कडजुम्मे, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं तेओगे, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे (२) दुपज्जवसिए सेत्तं दावरजुम्मे, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं कलिओगे, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव कलिओगे ॥ नेरइया णं भंते ! किं कडजुम्मा तेओगा दावरजुम्मा कलिओगा ? गोयमा ! जहन्नपए कडजुम्मा, उक्कोसपए तेओगा, अजहण्णमणुक्कोसपए सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा, एवं जाव थणियकुमारा । वणस्सइकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नपए अपया उक्कोसपए य अपया अजहण्णमणुक्कोसपए सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा । बेइंदि-

उववन्नगा य, तत्थ णं जे से माइमिच्छादिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव, तत्थ ण जे से अमाइसम्मद्दिट्ठिउवन्नए नेरइए से ण अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव, दो भंते! असुरकुमारा एवं चेव, एव एगिंदियविगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिया ॥ ६२६ ॥ नेरइ(या)ए णं भंते! अणतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते! कयरं आउय पडिसवेदेइ? गोयमा! नेरइयाउय पडिसवेदेइ, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाउए से पुरओ कडे चिट्ठइ, एव मणुस्सेवि, नवर मणुस्साउए से पुरओ कडे चिट्ठइ। असुरकुमारा ण भंते! अणतर उव्वट्टित्ता जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए पुच्छा, गोयमा! असुरकुमाराउयं पडिसवेदेइ, पुढविकाइयाउए से पुरओ कडे चिट्ठइ, एव जो जहिं भविओ उववज्जित्तए तस्स तं पुरओ कडं चिट्ठइ, जत्थ ठिओ त पडिसवेदेइ जाव वेमाणिए, नवरं पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जइ पुढविकाइयाउयं पडिसवेदेइ, अन्ने य से पुढविकाइयाउए पुरओ कडे चिट्ठइ, एवं जाव मणुस्सो सट्ठाणे उववाएयव्वो परट्ठाणे तहेव ॥ ६२७ ॥ दो भंते! असुरकुमारा एगसि असुरकुमारावाससि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना, तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे उज्जुय विउव्विस्सामित्ति उज्जुय विउव्वइ, वंक विउव्विस्सामित्ति वक विउव्वइ, ज जहा इच्छइ त तहा विउव्वइ, एगे असुरकुमारे देवे उज्जुय विउव्विस्सामित्ति वक्क विउव्वइ, वकं विउव्विस्सामित्ति उज्जुय विउव्वइ, ज जहा इच्छइ णो त तहा विउव्वइ, से कहमेय भंते! एवं? गोयमा! असुरकुमारा देवा दुविहा प०, तं०–माइमिच्छद्दिट्ठिउववन्नगा य अमाइसम्मद्दिट्ठिउववन्नगा य, तत्थ ण जे से माइमिच्छादिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से ण उज्जुयं विउव्विस्सामित्ति वक्क विउव्वइ जाव णो त तहा विउव्वइ, तत्थ ण जे से अमाइसम्मद्दिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से ण उज्जुय विउव्विस्सामीति उज्जुय विउव्वइ जाव तं तहा विउव्वइ। दो भंते! नागकुमारा एव चेव, एव जाव थणियकुमारा, वाणमतरजोइसियवेमाणिया एव चेव ॥ सेव भंते! २ त्ति ॥ ६२८ ॥ **अट्ठारसमस्स सयस्स पंचमो उद्देसो समत्तो ॥**

फाणियगुले ण भंते! कइवन्ने कइगंधे कइरसे कइफासे पण्णत्ते? गोयमा! एत्थ णं दो नया भवति, त०–निच्छइयनए य वावहारियनए य, वावहारियनयस्स गोड्डे फाणियगुले, नेच्छइयनयस्स पंचवन्ने दुगंधे पचरसे अट्ठफासे प०। भमरे ण भंते! कइवन्ने० पुच्छा, गोयमा! एत्थ ण दो नया भवति, तं०–निच्छइयनए य वावहारियनए य, वावहारियनयस्स कालए भमरे, नेच्छइयनयस्स पंचवन्ने जाव अट्ठफासे प०। सुयपिच्छे ण भंते! कइवन्ने० प०? एव चेव, नवरं वावहारियनयस्स

एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव मद्दुए समणोवासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता मद्दुयं समणोवासगं एवं वयासी—एवं खलु मद्दु(मंडु)या! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाए पन्नवेइ जहा सत्तमे सए अन्नउत्थिउद्देसए जाव से कहमेयं मद्दुया! एवं? तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—जइ कज्जं कज्जइ जाणामो पासामो अह कज्जं न कज्जइ न जाणामो न पासामो। तए णं ते अन्नउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासी—केस णं तुमं मद्दुया! समणोवासगाणं भवसि जे णं तुमं एयमट्ठं न जाणसि न पाससि। तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—अत्थि णं आउसो! वाउयाए वाइ? हंता मद्दुया! वाइ। तु(ब्भे)म्हे णं आउसो! वाउयायस्स वायमाणस्स रूवं पासह? णो इणट्ठे समट्ठे, अत्थि णं आउसो! घाणसहगया पोग्गला? हंता अत्थि। तुब्भे णं आउसो! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह? णो इणट्ठे समट्ठे, अत्थि णं आउसो! अरणिसहगए अगणिकाए? हंता अत्थि। तुब्भे णं आउसो! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह? णो इणट्ठे समट्ठे, अत्थि णं आउसो! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं? हंता अत्थि। तुब्भे णं आउसो! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासह? णो इणट्ठे समट्ठे, अत्थि णं आउसो! देवलोगगयाइं रूवाइं? हंता अत्थि। तुब्भे णं आउसो! देवलोगगयाइं रूवाइं पासह? णो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव आउसो! अहं वा तुब्भे वा अन्नो वा छउमत्थो जइ जो जं न जाणइ न पासइ तं सव्वं न भवइ एवं भे सुबहुए लोए ण भविस्सतीतिकट्टु ते अन्नउत्थिए एवं पडिहणइ एवं पडिहणित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं जाव पज्जुवासइ। मद्दुयाइ! समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासी—सुट्ठु णं मद्दुया! तुमं ते अन्नउत्थिए एवं वयासी साहु णं मद्दुया! तुमं ते अन्नउत्थिए एवं वयासी जे णं मद्दुया! अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अन्नायं अदिट्ठं अस्सुयं अमयं अविण्णायं बहुजणमज्झे आघवेइ पन्नवेइ जाव उवदंसेइ, से णं अरिहंताणं आसायणाए वट्टइ, अरिहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ, केवलीणं आसायणाए वट्टइ, केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ, तं सुट्ठु णं तुमं मद्दुया! ते अन्नउत्थिए एवं वयासी साहु णं तुमं मद्दुया! जाव एवं वयासी, तए णं मद्दुए समणोवासए समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता णच्चासन्ने जाव पज्जुवासए, तए णं समणे भगवं महावीरे मद्दुयस्स समणोवासगस्स तीसे य जाव परिसा पडिगया, तए णं मद्दुए

दुविहे उवही प०, तजहा–कम्मोवही य सरीरोवही य, कइविहे णं भंते! उवही प० ? गोयमा! तिविहे उवही प०, तंजहा–सचित्ते, अचित्ते, मीसए, एवं नेरइयाणवि, एव निरवसे(सा)स जाव वेमाणियाणं। कइविहे णं भंते! परिग्गहे प० ? गोयमा! तिविहे परिग्गहे प०, त०–कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे, बाहिरभडमत्तोवगरण-परिग्गहे, नेरइयाणं भंते! एवं जहा उवहिणा दो दडगा भणिया तहेव परिग्गहेणवि दो दडगा भाणियव्वा, कइविहे ण भंते! पणिहाणे प० ? गोयमा! तिविहे पणिहाणे प०,त०–मणपणिहाणे, वइपणिहाणे, कायपणिहाणे, नेरइयाणं भते! कइविहे पणिहाणे प० ? एवं चेव, एव जाव थणियकुमाराणं, पुढविकाइयाण पुच्छा, गोयमा! एगे कायपणिहाणे प०, एव जाव वणस्सइकाइयाण, बेइदियाण पुच्छा, गोयमा! दुविहे पणिहाणे प०, त०–वइपणिहाणे य कायपणिहाणे य, एव जाव चउरिंदियाण, सेसाणं तिविहेवि जाव वेमाणियाण। कइविहे ण भते! दुप्पणिहाणे प० ? गोयमा! तिविहे दुप्पणिहाणे प०, त०–मणदुप्पणिहाणे, वइदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, जहेव पणिहाणेण दडगो भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेणवि भाणियव्वो। कइविहे ण भते! सुप्पणिहाणे प० ? गोयमा! तिविहे सुप्पणिहाणे प०, तजहा–मणसुप्प-णिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे, मणुस्साण भते! कइविहे सुप्पणिहाणे प० ? एव चेव जाव वेमाणियाण, सेव भते! २ त्ति जाव विहरइ॥ तए ण समणे भगव महावीरे जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ६३२ ॥ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे गुणसिलए उज्जाणे वन्नओ जाव पुढविसिला-पट्टओ, तस्स ण गुणसिलयस्स उज्जाणस्स अदूरसामते बहवे अन्नउत्थिया परिवसति, तं०–कालोदाई सेलोदाई एव जहा सत्तमसए अन्नउत्थिउद्देसए जाव से कहमेय मन्ने एव ? तत्थ ण रायगिहे नयरे मद्दुए नामं समणोवासए परिवसइ, अड्ढे जाव अपरि-भूए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ, तए ण समणे भगव महावीरे अन्नया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव समोसढे, परिसा जाव पज्जुवासइ, तए ण म(द्दु)-द्दुए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए ण्हाए जाव सरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ स० २ त्ता पायविहारचारेण रायगिहं नयरं जाव निग्गच्छइ २ त्ता तेसिं अन्नउत्थियाण अदूरसामतेण वीईवयइ, तए ण ते अन्नउत्थिया मद्दुय समणोवासय अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासति २ त्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया! अम्ह इमा कहा अविउप्पकडा इम च णं मद्दुए समणोवासए अम्ह अदूरसामतेण वीईवयइ, तं सेय खलु देवाणु-प्पिया! अम्ह मद्दुयं समणोवासग एयमट्ठ पुच्छित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अतियं

देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वास जाव खवयंति चंदिमसूरिया जोइसिंदा जोइस-
रायाणो अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससएहिं खवयंति, सोहम्मीसाणगा देवा अणंते
कम्मंसे एगेणं वाससहस्सेणं (जाव) खवयंति सणंकुमारमाहिंदगा देवा अणंते कम्मंसे
दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोगलंतगा देवा अणंते
कम्मंसे तिहिं वाससहस्सेहिं खवयंति महासुक्कसहस्सारगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं
वाससहस्सेहिं खवयंति आणयपाणयआरणअच्चुयगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वास-
सहस्सेहिं खवयंति हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं ख-
वयंति, मज्झिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति उवरि-
मगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, विजयवेजयंतजयं-
तअपराजियगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति, सव्वट्ठसिद्धगा
देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति एएणं गोयमा! ते देवा जे
अणंते कम्मंसे जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति
एएणं गोयमा! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति एएणट्ठेणं गोयमा! ते
देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥ ६१० ॥

अट्ठारसमस्स सयस्स सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी–अणगारस्स णं भंते! भावियप्पणो पुरओ दुहओ
जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कुडपोए वा वट्टापोए वा कुलिं-
गच्छाए वा परियावज्जेज्जा तस्स णं भंते! किं ईरियावहिया किरिया कज्जइ, संप-
राइया किरिया कज्जइ? गोयमा! अणगारस्स णं भावियप्पणो जाव तस्स णं ईरि-
यावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ, से केणट्ठेणं भंते! एवं
वुच्चइ? जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो निक्खित्तो। सेवं भंते! सेवं भंते!
त्ति जाव विहरइ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जाव विहरइ ॥ ६११ ॥
तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पुढवीसिलापट्टए, तस्स णं गुणसिलस्स
चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति, तए णं समणे भगवं महावीरे
जाव समोसढे जाव परिसा पडिगया तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ
महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव उड्ढं जाणू जाव विहरइ, तए
णं ते अन्नउत्थिया जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता भगवं
गोयमं एवं वयासी–तुब्भे णं अज्जो! तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंतबाला यावि
भवह, तए णं भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–से केणं कारणेणं अज्जो!
अम्हे तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंतबाला यावि भवामो? तए णं ते अन्न-

समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव निग्गम हट्ठतुट्ठे पसिणाइ (वागर-णाइ) पुच्छइ प० २ त्ता अट्ठाइ परियादियइ २ त्ता उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता समण भगव महावीर वंदइ नमंसइ व० २ त्ता जाव पडिगए। भंते! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ व० २ त्ता एव वयासी–पभू ण भंते! मद्दुए समणोवासए देवाणु-प्पियाण अतियं जाव पव्वइत्तए? णो इणट्ठे समट्ठे, एव जहेव सखे तहेव अरुणाभे जाव अत करे(का)हिइ ॥ ६३३ ॥ देवे ण भते! महिड्ढिए जाव महेसक्खे रूवसहस्स विउव्वित्ता पभू अन्नमन्नेण सद्धिं सगामं सगामेत्तए? हता पभू। ताओ ण भते! बोंदीओ किं एगजीवफुडाओ अणेगजीवफुडाओ? गोयमा! एगजीवफुडाओ णो अणेगजीवफुडाओ, तेसि ण भते! बोंदीण अतरा किं एगजीवफुडा अणेगजीव-फुडा? गोयमा! एगजीवफुडा नो अणेगजीवफुडा। पुरिसे ण भंते! अतरेण हत्थेण वा एव जहा अट्ठमसए तइए उद्देसए जाव नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ॥ ६३४ ॥ अत्थि ण भते! देवासुराण सगामे २? हता अत्थि, देवासुरेसु ण भंते! सगामेसु वट्टमाणेसु किन्न तेसिं देवाण पहरणरयणत्ताए परिणमइ? गोयमा! जन्न ते देवा तणं वा कट्ठ वा पत्त वा सक्करं वा परामुसति त (ण) त तेसिं देवाण पहरणरयणत्ताए परिणमइ, जहेव देवाणं तहेव असुरकुमाराण? णो इणट्ठे समट्ठे, असुरकुमाराण देवाण निच्च विउव्विया पहरणरयणा प० ॥ ६३५ ॥ देवे ण भते! महिड्ढिए जाव महेसक्खे पभू लवणसमुद्द अणुपरियट्टित्ताण हव्वमागच्छित्तए? हता पभू, देवे ण भते! महिड्ढिए एव धायइसड दीव जाव हता पभू, एव जाव रुयगवरं दीव जाव हता पभू, ते ण पर वीईवएज्जा नो चेव ण अणुपरियट्टेज्जा ॥ ६३६ ॥ अत्थि ण भते! देवा जे अणते कम्मसे जहन्नेण एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेणं पचहिं वाससएहिं खवयति? हता अत्थि, अत्थि ण भते! देवा जे अणते कम्मसे जहन्नेण एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेणं पंचहिं वास सहस्सेहिं खवयति? हता अत्थि, अत्थि ण भते! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहन्नेण एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेण पचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति? हता अत्थि, कयरे ण भंते! ते देवा जे अणंते कम्मसे जहन्नेण एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा जाव पचहिं वाससएहिं खवयति, कयरे ण भते! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयति, कयरे ण भते! ते देवा जाव पचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयति? गोयमा! वाणमतरा देवा अणते कम्मसे एगेण वाससएण खवयंति, असुरिंदव-ज्जिया ण भवणवासी देवा अणते कम्मंसे दोहिं वाससएहिं खवयति, असुरकुमारा णं देवा अणते कम्मसे ति(ती)हिं वाससएहिं खवयति, गहगणनक्खत्ततारारूवा जोइसिय

माणुपोग्गलं णं समयं जाणइ नो तं समयं पासइ, जं समयं पासइ नो तं समयं जाणइ ? गोयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दंसणे भवइ, से तेणट्ठेणं जाव नो तं समयं जाणइ, एवं जाव अणंतपएसियं । केवली णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं जहा परमाहोहिए तहा केवलीवि जाव अणंतपएसियं ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ५४ ॥ अट्ठारसमस्स सयस्स अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-अत्थि णं भंते ! भवियदव्वनेरइया २ ? हंता अत्थि, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ भवियदव्वनेरइया २ ? गोयमा ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा नेरइएसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं, एवं जाव थणियकुमारा । अत्थि णं भंते ! भवियदव्वपुढविक्काइया २ ? हंता अत्थि, से केणट्ठेणं भंते ! एवं ? गोयमा ! जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं, आउक्काइयवणस्सइकाइयाणं एवं चेव उववाओ, तेउवाउबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाण य जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जे भविए नेरइए वा तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिए(सु) वा उववज्जित्तए एवं मणुस्सावि, वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ॥ भवियदव्वनेरइयस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, भवियदव्वअसुरकुमारस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, एवं जाव थणियकुमारस्स । भवियदव्वपुढविकाइयस्स णं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं, एवं आउकाइयस्सवि, तेउवाऊ जहा नेरइयस्स, वणस्सइकाइयस्स जहा पुढविकाइयस्स, बेइंदियस्स तेइंदियस्स चउरिंदियस्स जहा नेरइयस्स, पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, एवं मणुस्सावि, वाणमंतरजोइसियवेमाणियस्स जहा असुरकुमारस्स ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ५४१ ॥ अट्ठारसमस्स सयस्स नवमो उद्देसो समत्तो ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-अणगारे णं भंते ! भावियप्पा असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ? हंता ओगाहेज्जा, से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ? नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ, एवं जहा पंचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया जाव अणगारे णं भंते ! भावियप्पा उदावत्तं वा जाव नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥ ५४२ ॥ परमाणुपोग्गले णं भंते ! वाउयाएणं फुडे वाउयाए वा परमाणुपोग्गलेणं फुडे ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले वाउयाएणं फुडे नो वाउयाए परमाणुपोग्गलेणं

उत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी-तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह अभिहणह जाव उ(व)द्दवेह, तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह, तए णं भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-नो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेमो जाव उद्दवेमो, अम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च पडुच्च दिस्सा २ पदिस्सा २ वयामो, तए णं अम्हे दिस्सा दिस्सा वयमाणा पदिस्सा पदिस्सा वयमाणा णो पाणे पेच्चेमो जाव णो उद्दवेमो, तए णं अम्हे पाणे अपेच्चेमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतपंडिया यावि भवामो, तुब्भे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह, तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव भवामो ?, तए णं भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-तु(ज्झे)ब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह जाव उद्दवेह, तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं जाव एगंतबाला यावि भवह, तए णं भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं पडिहणइ एवं पडिहणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ, गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, अत्थि णं गोयमा ! मम बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था जे णं नो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए जहा णं तुमं, तं सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अन्नउत्थिए एवं वयासी ॥ ६३९ ॥ तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं किं जाणइ पासइ उदाहु न जाणइ न पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए जाणइ पासइ, अत्थेगइए न जाणइ न पासइ, छउमत्थे णं भंते ! मणूसे दुपएसियं खंधं किं जाणइ पासइ ? एवं चेव, एवं जाव असंखेज्जपएसियं, छउमत्थे णं भंते ! मणूसे अणंतपएसियं खंधं किं पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइए जाणइ पासइ १, अत्थेगइए जाणइ न पासइ २, अत्थेगइए न जाणइ पासइ ३, अत्थेगइए न जाणइ न पासइ ४, आहोहिए णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं जहा छउमत्थे एवं आहोहिएवि जाव अणंतपएसियं, परमाहोहिए णं भंते ! मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ तं समयं पासइ, जं समयं पासइ तं समयं जाणइ ? णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ परमाहोहिए णं मणूसे पर-

माणुपोग्गलं जं समयं जाणइ नो तं समयं पासइ, जं समयं पासइ नो तं समयं जाणइ? गोयमा! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दंसणे भवइ, से तेणट्ठेणं जाव नो तं समयं जाणइ, एवं जाव अणंतपएसियं। केवली णं भंते! मणुस्से परमाणुपोग्गलं जहा परमाहोहिए तहा केवलीवि जाव अणंतपएसियं॥ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥ ६४०॥ अट्ठारसमस्स सयस्स अट्ठमो उद्देसो समत्तो॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-अत्थि णं भंते! भवियदव्वनेरइया २? हंता अत्थि। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ भवियदव्वनेरइया २? गोयमा! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा नेरइएसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं, एवं जाव थणियकुमारा। अत्थि णं भंते! भवियदव्वपुढविकाइया २? हंता अत्थि। से केणट्ठेणं भंते! एवं० ? गोयमा! जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं आउक्काइयवणस्सइकाइयाणं एवं चेव उववाओ। तेउवाउबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाण य जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जे भविए नेरइए वा तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिए(सु) उववज्जित्तए एवं मणुस्सावि, वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं॥ भवियदव्वनेरइयस्स णं भंते! केवइयं कालं ठिई प०? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी। भवियदव्वअसुरकुमारस्स णं भंते! केवइयं कालं ठिई प०? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, एवं जाव थणियकुमारस्स। भवियदव्वपुढविकाइयस्स णं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं, एवं आउक्काइयस्सवि, तेउवाउ जहा नेरइयस्स, वणस्सइकाइयस्स जहा पुढविकाइयस्स, बेइंदियस्स तेइंदियस्स चउरिंदियस्स जहा नेरइयस्स, पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, एवं मणुस्सावि, वाणमंतरजोइसियवेमाणियस्स जहा असुरकुमारस्स॥ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥ ६४१॥ अट्ठारसमस्स सयस्स नवमो उद्देसो समत्तो॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-अणगारे णं भंते! भावियप्पा असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा? हंता ओगाहेज्जा। से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा? णो इणट्ठे समट्ठे, णो खलु तत्थ सत्थं कमइ, एवं जहा पंचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया जाव अणगारे णं भंते! भावियप्पा उदावत्तं वा जाव नो खलु तत्थ सत्थं कमइ॥ ६४२॥ परमाणुपोग्गले णं भंते! वाउयाएणं फुडे वाउयाए वा परमाणुपोग्गलेणं फुडे? गोयमा! परमाणुपोग्गले वाउयाएणं फुडे नो वाउयाए परमाणुपोग्गलेणं

फुडे। दुपएसिए णं भंते! खंधे वाउयाएणं एवं चेव, एवं जाव असंखेज्जपएसिए॥ अणंतपएसिए णं भंते! खंधे वाउयाए० पुच्छा, गोयमा! अणंतपएसिए खंधे वाउयाएणं फुडे वाउयाए अणंतपएसिएणं खंधेणं सिय फुडे सिय नो फुडे॥ वत्थी णं भंते! वाउयाएणं फुडे वाउयाए वत्थिणा फुडे? गोयमा! वत्थी वाउयाएणं फुडे नो वाउयाए वत्थिणा फुडे॥६४३॥ अत्थि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइं वण्णओ कालनीललोहियहालिद्दसुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्तकडुयकसायअंबिलमहुराइं, फासओ कक्खडमउयगुरुयलहुयसीयउसिण-निद्धलुक्खाइं, अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति? हंता अत्थि, एवं जाव अहेसत्तमाए। अत्थि णं भंते! सोहम्मस्स कप्पस्स अहे० एवं चेव, एवं जाव ईसिप्पब्भाराए पुढवीए। सेवं भंते! २ त्ति जाव विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ॥६४४॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था वण्णओ, दूइपलासए उज्जाणे वण्णओ, तत्थ णं वाणियगामे नयरे सोमिले नामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिए पंचण्हं खंडियसयाणं सयस्स कुडुंबस्स आहेवच्चं जाव विहरइ, तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ, तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्प-ज्जित्था-एवं खलु समणे णायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं जाव इहमागए जाव दूइपलासए उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं पुच्छिस्सामि, तं जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागर-णाइं वागरेहिइ तओ णं वं(दी)दिहामि नमं(सी)सिहामि जाव पज्जुवासिहामि, अहमेयं से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं नो वागरेहिइ तो णं एएहिं चेव अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेस्सामित्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता ण्हाए जाव सरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता पायविहारचारेणं एगेणं खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव दूइपलासए उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-जत्ता ते भंते! जवणिज्जं ते भंते! अव्वाबाहं ते भंते! फासुयविहारं ते भंते! ? सोमिला! जत्तावि मे, जवणिज्जंपि मे, अव्वाबाहंपि मे, फासुयविहारंपि मे, किं ते भंते! जत्ता? सोमिला! जं मे तवनियमसंजमसज्झायज्झाणावस्सयमाइएसु जोगेसु जयणा सेत्तं जत्ता, किं ते

फुडे । दुपएसिए ण भंते ! खंधे वाउयाएणं एवं चेव, एवं जाव असंखेज्जपएसिए ॥ अणंतपएसिए ण भंते ! खंधे वाउयाए० पुच्छा, गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे वाउयाएणं फुडे वाउयाए अणंतपएसिएणं खंधेणं सिय फुडे सिय नो फुडे ॥ वत्थी ण भंते ! वाउयाएणं फुडे वाउयाए वत्थिणा फुडे? गोयमा ! वत्थी वाउयाएणं फुडे नो वाउयाए वत्थिणा फुडे ॥६४३॥ अत्थि ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइं वण्णओ कालनीललोहियहालिद्दसुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्तकडुयकसायअंबिलमहुराइं, फासओ कक्खडमउयगुरुयलहुयसीयउसिण-निद्धलुक्खाइं, अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति? हंता अत्थि, एवं जाव अहेसत्तमाए । अत्थि ण भंते ! सोहम्मस्स कप्पस्स अहे० एवं चेव, एवं जाव ईसिप्पब्भाराए पुढवीए । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ । तए णं समणे भगवं महावीरे जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥६४४॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था वण्णओ, दूइपलासए उज्जाणे वण्णओ, तत्थ णं वाणियगामे नयरे सोमिले नामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिए पंचण्हं खंडियसयाणं सयस्स कुडुंबस्स आहेवच्चं जाव विहरइ, तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ, तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु समणे णायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं जाव इहमागए जाव दूइपलासए उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं पुच्छिस्सामि, तं जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं वागरेहिइ तओ णं वं(दी)दिहामि नमं(सी)सिहामि जाव पज्जुवासिहामि, अहमेयं से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं नो वागरेहिइ तो णं एएहिं चेव अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेस्सामित्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता ण्हाए जाव सरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता पायविहारचारेणं एगेणं खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव दूइपलासए उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं ते भंते ! अव्वाबाहं ते भंते ! फासुयविहारं ते भंते ! ? सोमिला ! जत्तावि मे, जवणिज्जंपि मे, अव्वाबाहंपि मे, फासुयविहारंपि मे, किं ते भंते ! जत्ता? सोमिला ! जं मे तवनियमसंजमसज्झायज्झाणावस्सयमाइएसु जोगेसु जयणा सेत्तं जत्ता, किं ते

समट्ठे, पुढविक्काइयाणं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयं सरीरं बंधंति प० २ त्ता
तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति १ तेसि णं भंते !
जीवाणं कइ लेस्साओ प० ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ प० तं०—कण्हलेस्सा
नीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा २ ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी
सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! मिच्छादिट्ठी नो सम्मदिट्ठी नो सम्मामिच्छादिट्ठी ३
ते णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नो नाणी अन्नाणी नियमा
दुअन्नाणी तं०—मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य ४ ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी
वयजोगी कायजोगी ? गोयमा ! नो मणजोगी नो वयजोगी कायजोगी ५ ते णं
भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणा-
गारोवउत्तावि ६ ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ णं
अणंतपएसियाइं दव्वाइं एवं जहा पन्नवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव सव्वप्पणयाए
आहारमाहारेंति ७ ते णं भन्ते ! जीवा जमाहारेंति तं चिज्जंति, जं नो आहारेंति
तं नो चिज्जंति चिन्ने वा से उद्दाइ पलिसप्पइ वा ? हंता गोयमा ! ते णं जीवा
जमाहारेंति तं चिज्जंति जं नो जाव पलिसप्पइ वा ८ तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं
सन्नाइ वा पन्नाइ वा मणोइ वा वईइ वा अम्हे णं आहारमाहारेमो ? णो इणट्ठे
समट्ठे, आहारेंति पुण ते ९ तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सन्नाइ वा जाव वईइ वा
अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो ? णो इणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेदेंति पुण
ते १० ते णं भंते ! जीवा किं पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति मुसावाए अदिन्नादाणे
जाव मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति ? गोयमा ! पाणाइवाएवि उवक्खाइज्जंति जाव
मिच्छादंसणसल्लेवि उवक्खाइज्जंति जेसिंपि य णं जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जंति
तेसिंपि य णं जीवाणं णो वि(न्ना)णाए णाणत्ते ११ ॥ ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो
उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? एवं जहा वक्कंतीए पुढविक्काइयाणं उववाओ तहा
भाणियव्वो १२। तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जह०
अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं १३ ॥ तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ
समुग्घाया प० ? गोयमा ! तओ समुग्घाया प० तं०—वेयणासमुग्घाए, कसायसमु-
ग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए। ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया
मरंति असमोहया मरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति ॥ ते
णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ? एवं उव्वट्टणा
जहा वक्कंतीए १४। सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच आउक्काइया एगयओ साहा-
रणं सरीरं बंधंति २ त्ता तओ पच्छा आहारेंति एवं जो पुढविक्काइयाणं गमो

धन्नमासा ते दुविहा प०, तं०-सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य, एवं जहा धन्न-सरिसवा जाव से तेणट्ठेण जाव अभक्खेयावि। कुलत्था ते भंते! किं भक्खेया? अभक्खेया? सोमिला! कुलत्था मे भक्खेयावि अभक्खेयावि, से केणट्ठेण जाव अभक्खेयावि? से नूणं ते सोमिला! बंभन्नएसु नएसु दुविहा कुलत्था प०, तं०-इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य, तत्थ णं जे ते इत्थिकुलत्था ते तिविहा प०, तंजहा-*कुलकन्नयाइ वा कुलवहू(धू)याइ वा कुलमाउयाइ वा*, ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते धन्नकुलत्था एवं जहा धन्नसरिसवा, से तेणट्ठेण जाव अभक्खेयावि ॥ ६४५ ॥ एगे भवं दुवे भवं अक्खए भवं अव्वए भवं अवट्ठिए भवं अणेगभूयभावभविए भवं? सोमिला! एगेवि अहं जाव अणेगभूयभाव-भविएवि अहं, से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ जाव भविएवि अहं? सोमिला! दव्व-ट्ठयाए एगे अहं, नाणदंसणट्ठयाए दुविहे अहं, पएसट्ठयाए अक्खएवि अहं अव्वएवि अहं अवट्ठिएवि अहं, उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविएवि अहं, से तेणट्ठेण जाव भविएवि अहं, एत्थ णं से सोमिले माहणे संबुद्धे, तए णं से समणं भगवं महावीरं जहा खंदओ जाव से जहेयं तुब्भे वदह जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतियं बहवे राईसर एवं जहा रायप्पसेणइज्जे चित्तो जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता जाव पडिगए, तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए अभिगयजीवा जाव विहरइ। भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं० २ त्ता एवं वयासी-पभू णं भंते! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जहेव संखे तहेव निरवसेसं जाव अंतं काहिइ। सेवं भंते! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ६४६ ॥ **अट्ठारसमस्स सयस्स दसमो उद्देसो समत्तो ॥ अट्ठारसमं सयं समत्तं ॥**

लेस्सा य १ गब्भ २ पुढवी ३ महासवा ४ चरम ५ दीव ६ भवणा ७ य । निव्वत्ति ८ करण ९ वणचरसुरा य १० एगूणवीसइमे ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-कइ णं भंते! लेस्साओ पन्नत्ताओ? गोयमा! छल्लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-एवं जहा पन्नवणाए चउत्थो लेसुद्देसओ भाणियव्वो निरवसेसो। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ६४७ ॥ **एगूणवीसइमस्स सयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

कइ णं भंते! लेस्साओ प०? एवं जहा पन्नवणाए गब्भुद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति (१९-२) ॥ ६४८ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-सिय भंते! जाव चत्तारि पंच पुढविकाइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति एग० २ त्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति? नो इणट्ठे

हिया ४ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४५ पत्ते-
यसरीरबायरवणस्सइकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४६,
तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४७ तस्स चेव
पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४८ ॥ ६५ ॥ एयस्स णं भंते !
पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स वाउक्काइयस्स वणस्सइकाइयस्स
कयरे काए सव्वसुहुमे कयरे काए सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! वणस्सइकाइए
सव्वसुहुमे वणस्सइकाइए सव्वसुहुमतराए १ एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स
आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स कयरे काए सव्वसुहुमे कयरे काए
सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! वाउकाइए सव्वसुहुमे वाउकाइए सव्वसुहुमतराए
२ एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स कयरे काए
सव्वसुहुमे कयरे काए सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! तेउकाए सव्वसुहुमे तेउकाए
सव्वसुहुमतराए ३ एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स कयरे काए
सव्वसुहुमे कयरे काए सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! आउकाए सव्वसुहुमे आउकाए
सव्वसुहुमतराए ४ ॥ एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स
वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स कयरे काए सव्वबायरे कयरे काए सव्वबायरत-
राए ? गोयमा ! वणस्सइकाइए सव्वबायरे वणस्सइकाइए सव्वबायरतराए १ एयस्स
णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स कयरे काए
सव्वबायरे कयरे काए सव्वबायरतराए ? गोयमा ! पुढविकाए सव्वबायरे पुढविकाए
सव्वबायरतराए २ एयस्स णं भंते ! आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स
कयरे काए सव्वबायरे कयरे काए सव्वबायरतराए ? गोयमा ! आउकाए सव्वबायरे
आउकाए सव्वबायरतराए ३ एयस्स णं भंते ! तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स कयरे
काए सव्वबायरे कयरे काए सव्वबायरतराए ? गोयमा ! तेउकाए सव्वबायरे तेउकाए
सव्वबायरतराए ४ ॥ केमहालए णं भंते ! पुढविसरीरे पन्नत्ते ? गोयमा ! अणंताणं
सुहुमवणस्सइकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमवाउसरीरे असंखेज्जाणं सुहुम-
वाउसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमतेउकाइय-
सरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमआउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमआउकाइय-
सरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमपुढविसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमपुढविकाइय-
सरीराणं जावइया सरीरा से एगे बायरवाउसरीरे असंखेज्जाणं बायरवाउकाइयाणं
जावइया सरीरा से एगे बायरतेउसरीरे असंखेज्जाणं बायरतेउकाइयाणं जावइया
सरीरा से एगे बायरआउसरीरे असंखेज्जाणं बायरआउकाइयाणं जावइया सरीरा

सो चेव भाणियव्वो जाव उव्वट्टंति, नवरं ठिई सत्तवाससहस्साइ उक्कोसेण सेस तं चेव । सिय भते ! जाव चत्तारि पंच तेउक्काइया एव चेव नवर उववाओ ठिई उव्वट्टणा य जहा पन्नवणाए सेस त चेव । वाउक्काइयाण एवं चेव नाणत्त नवरं चत्तारि समुग्घाया । सिय भते ! जाव चत्तारि पच वणस्सइक्काइया पुच्छा, गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, अणता वणस्सइक्काइया एगयओ साहारणसरीर बधति एग० २ त्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सेस जहा तेउकाइयाण जाव उव्वट्टंति, नवर आहारो नियमं छद्दिसिं, ठिई जहन्नेणं अतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अतोमुहुत्तं, सेस तं चेव ॥ ६४९ ॥ एएसि ण भते ! पुढविकाइयाण आउतेउवाउवणस्सइकाइयाण सुहुमाण वायराण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाण जाव जहन्नुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोयस्स अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा १, सुहुमवाउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असखेज्जगुणा २, सुहुमतेउअपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ३, सुहुमआउअपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४, सुहुमपुढविअपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असखेज्जगुणा ५, वायरवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असखेज्जगुणा ६, वायरतेउअपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असखेज्जगुणा ७, वायरआउअपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असखेज्जगुणा ८, वायरपुढविकाइयअपज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असखेज्जगुणा ९, पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइयस्स वायरनिगोयस्स एएसि ण पज्जत्तगाण एएसि ण अपज्जत्तगाण जहन्निया ओगाहणा दोण्हवि तुल्ला असखेज्जगुणा १०-११, सुहुमनिओयस्स पज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असखेज्जगुणा १२, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १३, तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४, सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १५, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १६, तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७, एव सुहुमतेउक्काइयस्स विसे० १८।१९।२०। एव सहुमआउक्काइयस्सवि २१।२२।२३। एव सुहुमपुढविकाइयस्स विसेसाहिया २४।२५।२६। एव वायरवाउकाइयस्स विसेसाहिया २७।२८।२९। एव वायरतेउकाइयस्स विसेसाहिया ३०।३१।३२। एव वायरआउकाइयस्स विसेसाहिया ३३।३४।३५। एव वायरपुढविकाइयस्स विसेसाहिया ३६।३७।३८। सव्वेसिं तिविहेण गमेणं भाणियव्व, वायरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहन्निया ओगाहणा असखेज्जगुणा ३९, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसा-

अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे ८ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे ९ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे १० सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे ११ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे १२ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे १३, सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे १४ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे १५, सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे १६, एए सोलस भंगा। सिय भंते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे, एवं चउत्थो भंगो भाणियव्वो सेसा पन्नरस भंगा खोडेयव्वा एवं जाव थणियकुमारा। सिय भंते ! पुढविक्काइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? हंता सिया एवं जाव सिय भंते ! पुढविक्काइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ? हंता सिया एवं जाव मणुस्सा वाणमंतरजोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ५५२ ॥ एगूणवी-सइमसयस्स चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

अत्थि णं भंते ! चरिमावि नेरइया परमावि नेरइया ? हंता अत्थि से नूणं भंते ! चरिमेहिंतो नेरइएहिंतो परमा नेरइया महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महावेयणतराए चेव परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरइया अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव अप्पवेयणतराए चेव ? हंता गोयमा ! चरमेहिंतो नेरइएहिंतो परमा जाव महावेयणतराए चेव परमेहिंतो नेरइएहिंतो चरमा नेरइया जाव अप्पवेयणतराए चेव से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतराए चेव ? गोयमा ! ठिइं पडुच्च से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतराए चेव। अत्थि णं भंते ! चरमावि असुरकुमारा परमावि असुरकुमारा ? एवं चेव नवरं विवरीयं भाणियव्वं परमा अप्पकम्मा चरमा महाकम्मा सेसं तं चेव जाव थणियकुमारा ताव एमेव, पुढविक्काइया जाव मणुस्सा एए जहा नेरइया वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥५५३॥ कइविहा णं भंते ! वेयणा प० ? गोयमा ! दुविहा वेयणा प० तं०—निदा य अनिदा य। नेरइया णं भंते ! किं निदायं वेयणं वेदेंति अनिदायं वेयणं वेदेंति ? जहा पन्न-

से एगे बायरपुढविसरीरे, एमहालए णं गोयमा ! पुढविसरीरे पन्नत्ते ॥ ६५१ ॥ पुढविकाइयस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा ! से जहानामए रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वन्नगपेसिया तरुणी बलवं जुगवं जुवाणी अप्पायंका वन्नओ जाव निउणसिप्पोवगया नवरं चम्मेट्टदुहणमुट्ठियसमाहयणिचियगत्तकाया न भण्णइ सेसं तं चेव जाव निउणसिप्पोवगया तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेण वइरामएणं वट्टावरएणं एगं महं पुढविकाइयं जउगोलासमाणं गहाय पडिसाहरिय २ पडिसंखिविय २ जाव इणामेवत्तिकट्टु तिसत्तखुत्तो उप्पीसेज्जा, तत्थ णं गोयमा ! अत्थेगइया पुढविक्काइया आलिद्धा, अत्थेगइया पुढविक्काइया नो आलिद्धा, अत्थेगइया संघट्टि(ट्टि)या, अत्थेगइया नो संघट्टि(ट्टि)या, अत्थेगइया परियाविया, अत्थेगइया नो परियाविया, अत्थेगइया उद्दविया, अत्थेगइया नो उद्दविया, अत्थेगइया पिट्ठा, अत्थेगइया नो पिट्ठा, पुढविकाइयस्स णं गोयमा ! एमहालिया सरीरोगाहणा प० ॥ पुढविकाइए णं भंते ! अक्कंते समाणे केरिसियं वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? गोयमा ! से जहानामए-केइ पुरिसे तरुणे बलवं जाव निउणसिप्पोवगए एगं पुरिसं जुन्नं जराजज्जरियदेहं जाव दुब्बलं किलंतं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहणिज्जा, से णं गोयमा ! पुरिसे तेणं पुरिसेणं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहए समाणे केरिसियं वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? अणिट्ठं समणाउसो !, तस्स णं गोयमा ! पुरिसस्स वेयणाहिंतो पुढविकाइए अक्कंते समाणे एत्तो अणिट्ठतरियं चेव अकंततरियं चेव जाव अमणामतरियं चेव वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ । आउयाए णं भंते ! संघट्टिए समाणे केरिसियं वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? गोयमा ! जहा पुढविकाइए एवं आउकाएवि, एवं तेउकाएवि, एवं वाउकाएवि, एवं वणस्सइकाएवि जाव विहरइ, सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ६५२ ॥ **एगूणवीसइमे सए तइओ उद्देसो समत्तो ॥**

सिय भंते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे १, सिय भंते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ? हंता सिया २, सिय भंते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ३, सिय भंते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ४, सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ५, सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ६, सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ? नो इणट्ठे समट्ठे ७, सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया

वणाए जाव वेमाणियत्ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ६५५ ॥ **एगूणवीसइमस्स सयस्स पंचमो उद्देसो समत्तो ॥**

कहि णं भंते ! दीवसमुद्दा, केवइया णं भंते ! दीवसमुद्दा, किंसंठिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? एवं जहा जीवाभिगमे दीवसमुद्दुद्देसो सो चेव इहवि जोइसियमंडिउद्देसगवज्जो भाणियव्वो जाव परिणामो जीवउववाओ जाव अणंतखुत्तो, सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ६५६ ॥ **एगूणवीसइमस्स सयस्स छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥**

केवइया णं भंते ! असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा प० ? गोयमा ! चउसट्ठिं असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा प०, ते णं भंते ! किंमया प० ? गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा, तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, सासया णं ते भवणा दव्वट्ठयाए, वन्नपज्जवेहिं जाव फासपज्जवेहिं असासया, एवं जाव थणियकुमारावासा, केवइया णं भंते ! वाणमंतरभोमेज्जनयरावाससयसहस्सा प० ? गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरभोमेज्जनयरावाससयसहस्सा प०, ते णं भंते ! किंमया प० ? सेसं तं चेव, केवइया णं भंते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पुच्छा, गोयमा ! असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा प०, ते णं भंते ! किंमया प० ? गोयमा ! सव्वफालिहामया अच्छा सेसं तं चेव, सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावाससयसहस्सा प० ? गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा प०, ते णं भंते ! किंमया प० ? गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा सेसं तं चेव, एवं जाव अणुत्तरविमाणा, नवरं जाणियव्वा जत्थ जत्तिया भवणा विमाणा वा । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ६५७ ॥ **एगूणवीसइमस्स सयस्स सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥**

कइविहा णं भंते ! जीवनिव्वत्ती प० ? गोयमा ! पंचविहा जीवनिव्वत्ती प०, तं०–एगिंदियजीवनिव्वत्ती जाव पंचिंदियजीवनिव्वत्ती, एगिंदियजीवनिव्वत्ती णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! पंचविहा प०, तं०–पुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती जाव वणस्सइकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती, पुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तं०–सुहुमपुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती य बायरपुढवीकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती य, एवं एएणं अभिलावेणं भेओ जहा वड्डगबंधो तेयगसरीरस्स जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियजीवनिव्वत्ती णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तं०–पज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियजीवनिव्वत्ती य अपज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियजीवनिव्वत्ती य । कइविहा णं भंते ! कम्मनिव्वत्ती प० ? गोयमा !

रसकरणे फासकरणे संठाणकरणे वण्णकरणे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प० तंजहा-कालवण्णकरणे जाव सुक्किल्लवण्णकरणे एवं भेदो गंधकरणे दुविहे, रसकरणे पंचविहे, फासकरणे अट्ठविहे, संठाणकरणे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प० तंजहा-परिमंडलसंठाणकरणे जाव आययसंठाणकरणे सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ६५९ ॥ एगूणवीसइमस्स सयस्स नवमो उद्देसो समत्तो ॥

वाणमंतराणं भंते ! सव्वे समाहारा एवं जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसए जाव अप्पिड्ढियत्ति सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ६६० ॥ एगूणवीसइमे सए दसमो उद्देसो समत्तो ॥ एगूणवीसइमं सयं समत्तं ॥ १९ ॥

बेइंदिय १ मागासे २ पाणवहे ३ उवचए ४ य परमाणू ५ । अंतर ६ बंधे ७ भूमी ८ चारण ९ सोवक्कमा जीवा १० ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच बेइंदिया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति २ त्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ? णो इणट्ठे समट्ठे, बेइंदिया णं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयसरीरं बंधंति प० २ त्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ लेस्साओ प० ? गोयमा ! तओ लेस्साओ प० तं०-कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा एवं जहा एगूणवीसइमे सए तेउकाइयाणं जाव उव्वट्टंति नवरं सम्मद्दिट्ठीवि मिच्छद्दिट्ठीवि नो सम्मामिच्छद्दिट्ठी दो नाणा दो अन्नाणा नियमं णो मणजोगी वइजोगीवि कायजोगीवि आहारो नियमं छद्दिसिं, तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाइ वा पण्णाइ वा मणेइ वा वईइ वा अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे रसे इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो ? णो इणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेदेंति पुण ते ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं, सेसं तं चेव एवं तेइंदिया(ण)वि एवं चउरिंदियाणवि नाणत्तं इंदिएसु ठिईए य सेसं तं चेव ठिई जहा पन्नवणाए । सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पंचिंदिया एगयओ साहारणसरीरं एवं जहा बेइंदियाणं नवरं छल्लेस्साओ दिट्ठी तिविहावि चत्तारि नाणा तिन्नि अन्नाणा भयणाए, तिविहो जोगो तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाइ वा पण्णाइ वा जाव वईइ वा अम्हे णं आहारमाहारेमो ? गोयमा ! अत्थेगइयाणं एवं सण्णाइ वा पण्णाइ वा मणोइ वा वईइ वा अम्हे णं आहारमाहारेमो अत्थेगइयाणं नो एवं सण्णाइ वा जाव वईइ वा अम्हे णं आहारमाहारेमो आहारेंति पुण ते तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाइ वा जाव वईइ वा अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे, इट्ठाणिट्ठे रूवे, इट्ठाणिट्ठे गंधे इट्ठाणिट्ठे रसे इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसं-

प० ? गोयमा ! तिविहा दिट्ठिनिव्वत्ती प०,तजहा–सम्मादिट्ठिनिव्वत्ती,मिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती,सम्मामिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती,एव जाव वेमाणियाण जस्स जइविहा दिट्ठी। कइविहा ण भते ! णाणनिव्वत्ती पन्नत्ता ? गोयमा ! पचविहा णाणनिव्वत्ती प०, तं०–आभिणिबोहियणाणनिव्वत्ती जाव केवलनाणनिव्वत्ती, एव एगिंदियवज्ज जाव वेमाणियाण जस्स जइ णाणाइ। कइविहा ण भते ! अन्नाणनिव्वत्ती प० ? गोयमा ! तिविहा अन्नाणनिव्वत्ती प०,त०–मइअन्नाणनिव्वत्ती,सुयअण्णाणनिव्वत्ती, विभगनाणनिव्वत्ती, एव जस्स जइ अन्नाणा जाव वेमाणियाण। कइविहा ण भते ! जोगनिव्वत्ती प० ? गोयमा ! तिविहा जोगनिव्वत्ती प०,त०–मणजोगनिव्वत्ती, वइजोगनिव्वत्ती, कायजोगनिव्वत्ती, एव जाव वेमाणियाण जस्स जइविहो जोगो। कइविहा ण भते ! उवओगनिव्वत्ती प० ? गोयमा! दुविहा उवओगनिव्वत्ती प०, त०–सागारोवओगनिव्वत्ती अणागारोवओगनिव्वत्ती, एव जाव वेमाणियाण, सगहगाहा–जीवाण निव्वत्ती कम्मप्पगडी सरीरनिव्वत्ती। सव्विंदियनिव्वत्ती भासा य मणे कसाया य ॥ १ ॥ वन्ने गधे रसे फासे सठाणविही य होइ बोद्धव्वो। लेस्सा दिट्ठी णाणे उवओगे चेव जोगे य ॥ २ ॥ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥ ६५८॥ **एगूणवीसइमस्स सयस्स अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥**

कइविहे ण भते ! करणे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे करणे पन्नत्ते, तजहा–दव्वकरणे, खेत्तकरणे, कालकरणे, भवकरणे, भावकरणे, नेरइयाण भते ! कइविहे करणे प० ? गोयमा ! पचविहे करणे प०, त०–दव्वकरणे, जाव भावकरणे, एवं जाव वेमाणियाण, कइविहे ण भते ! सरीरकरणे प० ? गोयमा ! पंचविहे सरीरकरणे पन्नत्ते, तजहा–ओरालियसरीरकरणे जाव कम्मगसरीरकरणे, एवं जाव वेमाणियाण जस्स जइ सरीराणि। कइविहे ण भते ! इदियकरणे प० ? गोयमा ! पचविहे इदियकरणे प०, तजहा–सोइदियकरणे जाव फासिंदियकरणे, एवं जाव वेमाणियाण जस्स जइ इदियाइ, एव एएण कमेण भासाकरणे चउव्विहे, मणकरणे चउव्विहे, कसायकरणे चउव्विहे, समुग्घायकरणे सत्तविहे, सन्नाकरणे चउव्विहे, लेस्साकरणे छव्विहे, दिट्ठिकरणे तिविहे, वेयकरणे तिविहे पन्नत्ते, तजहा–इत्थिवेयकरणे, पुरिसवेयकरणे, नपुसगवेयकरणे, एए सव्वे नेरइयादिदडगा जाव वेमाणियाण जस्स ज अत्थि त तस्स सव्व भाणियव्व। कइविहे ण भते ! पाणाइवायकरणे प० ? गोयमा ! पचविहे पाणाइवायकरणे प०, त०–एगिंदियपाणाइवायकरणे जाव पचिंदियपाणाइवायकरणे, एव निरवसेस जाव वेमाणियाण। कइविहे णं भंते ! पोग्गलकरणे प० ? गोयमा ! पचविहे पोग्गलकरणे प०, त०–वन्नकरणे, गंधकरणे,

गोयमा! अणेगा अभिवयणा प० तं० -अहम्मेइ वा अहम्मत्थिकाएइ वा पाणाइ-वाएइ वा जाव मिच्छादंसणसल्लेइ वा इरियाअसमिईइ वा जाव उच्चारपासवण जाव पारिट्ठावणियाअसमिईइ वा मणअगुत्तीइ वा वइअगुत्तीइ वा कायअगुत्तीइ वा जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते अहम्मत्थिकायस्स अभिवयणा। आगासत्थिकायस्स णं पुच्छा, गोयमा! अणेगा अभिवयणा प० तं० -आगासेइ वा आगासत्थिकाएइ वा गगणेइ वा नभेइ वा समेइ वा विसमेइ वा खहेइ वा विहेइ वा वीईइ वा विवरेइ वा अंबरेइ वा अंबरसेइ वा छिड्डेइ वा झुसिरेइ वा मग्गेइ वा विमुहेइ वा अ(इ)देइ वा विय(इ)देइ वा आधारेइ वा वोमेइ वा भायणेइ वा अंतरिक्खेइ वा सामेइ वा ओवासंतरेइ वा अगमेइ वा फलिहेइ वा अणंतेइ वा जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभिवयणा प०। जीवत्थिकायस्स णं भंते! केवइया अभिवयणा प०? गोयमा! अणेगा अभिवयणा प० तं० -जीवेइ वा जीवत्थिकाएइ वा पाणेइ वा भूएइ वा सत्तेइ वा विन्नूइ वा चेयाइ वा जेयाइ वा आयाइ वा रंगणेइ वा हिंडुएइ वा पोग्गलेइ वा माणवेइ वा कत्ताइ वा विकत्ताइ वा जएइ वा जंतूइ वा जोणीइ वा सयंभूइ वा ससरीरीइ वा नायएइ वा अंतरप्पाइ वा जे यावन्ने तहप्प-गारा सव्वे ते जीवअभिवयणा प०। पोग्गलत्थिकायस्स णं भंते! पुच्छा, गोयमा! अणेगा अभिवयणा प० तं०-पोग्गलेइ वा पोग्गलत्थिकाएइ वा परमाणुपोग्गलेइ वा दुपएसिएइ वा तिपएसिएइ वा जाव असंखेज्जपएसिएइ वा अणंतपएसिएइ वा (वसि) जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते पोग्गलत्थिकायस्स अभिवयणा प०। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ६६३ ॥ वीसइमस्स सयस्स बीओ उद्देसो समत्तो ॥

अह भंते! पाणाइवाए मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणे उप्पत्तिया जाव पारिणामिया उग्गहे जाव धारणा, उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे नेरइयत्ते असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते नाणा-वरणिज्जे जाव अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा सम्मदिट्ठी ३, चक्खुदंसणे ४ आभिणिबोहियनाणे जाव विभंगनाणे आहारसन्ना ४ ओरालियसरीरे ५, मणजोगे ३ सागारोवओगे अणागारोवओगे जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते णन्नत्थ आयाए परिणमंति? हंता गोयमा! पाणाइवाए जाव सव्वे ते णन्नत्थ आयाए परिणमंति ॥ ६६४ ॥ जीवे णं भंते! गब्भं वक्कममाणे कइवन्नं कइगंधं एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसए जाव कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ। सेवं भंते! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ६६५ ॥ वीसइमे सए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

कइविहे णं भंते! इंदियउवचए पन्नत्ते? गोयमा! पंचविहे इंदियउवचए प

वेदेमो ? गोयमा ! अत्थेगइयाण एवं सन्नाइ वा जाव वईइ वा अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो, अत्थेगइयाण नो एव सन्नाइ वा पण्णाइ वा जाव वईइ वा अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो, पडिसंवेदति पुण ते, ते ण भते ! जीवा किं पाणाइवाए उवक्खाइज्जति० ? गोयमा ! अत्थेगइया पाणाइवाएवि उवक्खाइज्जति जाव मिच्छादसणसल्लेवि उवक्खाइज्जति, अत्थेगइया नो पाणाइवाए उवक्खाइज्जति नो मुसावाए उवक्खाइज्जति जाव नो मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जति, जेसिंपिय णं जीवाण ते जीवा एवमाहिज्जति तेसिंपि ण जीवाण अत्थेगइयाण विन्नाए नाणत्ते, अत्थेगइयाण नो विण्णाए नाणत्ते, उववाओ सव्वओ जाव सव्वट्ठसिद्धाओ, ठिई जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ, छस्समुग्घाया केवलिवज्जा, उव्वट्टणा सव्वत्थ गच्छति जाव सव्वट्ठसिद्धति, सेस जहा बेइंदियाण । एएसि ण भते ! बेइदियाण जाव पचिंदियाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइदिया विसेसाहिया, बेइदिया विसेसाहिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ६६१ ॥ **वीसइमस्स सयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

कइविहे ण भते ! आगासे प० ? गोयमा ! दुविहे आगासे प०, तं०—लोयागासे य अलोयागासे य, लोयागासे ण भते ! किं जीवा जीवदेसा० ? एवं जहा बिइयसए अत्थिउद्देसए तह चेव इहवि भाणियव्व, नवरं अभिलावो जाव धम्मत्थिकाए णं भते ! केमहालए प० ? गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोय चेव ओगाहित्ताण चिट्ठइ, एव जाव पोग्गलत्थिकाए । अहेलोए ण भते ! धम्मत्थिकायस्स केवइय ओगाढे ? गोयमा ! साइरेग अद्ध ओगाढे, एवं एएणं अभिलावेण जहा बिइयसए जाव ईसिप्पब्भारा ण भते ! पुढवी लोयागासस्स किं सखेज्जइभागं ओगाढा० पुच्छा, गोयमा ! नो संखेज्जइभाग ओगाढा, असंखेज्जइभागं ओगाढा, नो सखेज्जे भागे ओगाढा, नो असखेज्जे भागे ओगाढा, नो सव्वलोयं ओगाढा, सेस त चेव ॥ ६६२ ॥ धम्मत्थिकायस्स ण भते ! केवइया अभिवयणा प० ? गोयमा ! अणेगा अभिवयणा प०, तजहा—धम्मेइ वा धम्मत्थिकाएइ वा पाणाइवायवेरमणेइ वा मुसावायवेरमणेइ वा एव जाव परिग्गहवेरमणेइ वा कोहविवेगेइ वा जाव मिच्छादसणसल्लविवेगेइ वा इरियासमि(ए)ईइ वा भासासमिईइ वा एसणासमिईइ वा आयाणभडमत्तनिक्खेवणासमिईइ वा उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिईइ वा मणगुत्तीइ वा वइगुत्तीइ वा कायगुत्तीइ वा जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा, अहम्मत्थिकायस्स ण भते ! केवइया अभिवयणा प० ?

य हालिद्दए य सुक्किलए य ६ सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य ७ सिय नीलए य लोहियए य सुक्किलए य ८ सिय नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य ९ सिय लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य १० एवं एए दस तियासंजोगा। जइ एगगंधे सिय सुब्भिगंधे सिय दुब्भिगंधे जइ दुगंधे सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य भंगा ३। रसा जहा वन्ना। जइ दुफासे सिय सीए य निद्धे य एवं जहेव दुपएसियस्स तहेव चत्तारि भंगा जइ तिफासे सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा २ सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे ३, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एत्थवि भंगा तिन्नि ६, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिन्नि ९ सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिन्नि एवं १२ जइ चउफासे देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १ देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा २ देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे ३, देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४ देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा ५, देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे ६, देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ७ देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा ८ देसा सीया देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे ९ एवं एए तिपएसिए फासेसु पणवीसं भंगा॥ चउप्पएसिए णं भंते! खंधे कइवन्ने जहा अट्ठारसमसए जाव सिय चउफासे पन्नत्ते जइ एगवन्ने सिय कालए य जाव सुक्किलए य ५, जइ दुवन्ने सिय कालए य नीलए य १ सिय कालए य नीलगा य २ सिय कालगा य नीलए य ३ सिय कालगा य नीलगा य ४ सिय कालए य लोहियए य एत्थवि चत्तारि भंगा ४ सिय कालए य हालिद्दए य ४ सिय कालए य सुक्किलए य ४ सिय नीलए य लोहियए य ४ सिय नीलए य हालिद्दए य ४ सिय नीलए य सुक्किलए य ४ सिय लोहियए य हालिद्दए य ४ सिय लोहियए य सुक्किलए य ४ सिय हालिद्दए य सुक्किलए य ४ एवं एए दस दुयासंजोगा भंगा पुण चत्तालीसं ४ जइ तिवन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य १ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य २, सिय काल(ए)गा य नीलगा य लोहियए य ३ सिय कालगा य नीलए य लोहियए य एए णं चत्तारि भंगा एवं कालनीलहालिद्दएहिं भंगा ४ कालनील-सुक्किल ४ काललोहियहालिद्द ४ काललोहियसुक्किल ४ कालहालिद्दसुक्किल ४ नीललोहियहालिद्दगाणं भंगा ४ नीललोहियसुक्किल ४ नीलहालिद्दसुक्किल ४ लोहिय-हालिद्दसुक्किलगाणं भंगा ४ एवं एए दसतियासंजोगा एक्केक्के संजोए चत्तारि भंगा सव्वे ते चत्तालीसं भंगा ४ जइ चउवन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए

त०-सोइंदियउवचए एवं बिइओ इंदियउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो जहा पन्नवणाए। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे जाव विहरइ ॥ ६६६ ॥
वीसइमस्स सयस्स चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

परमाणुपोग्गले णं भंते! कइवन्ने कइगंधे कइरसे कइफासे पन्नत्ते? गोयमा! एगवन्ने एगगंधे एगरसे दुफासे पन्नत्ते, तंजहा-जइ एगवन्ने सिय कालए सिय नीलए सिय लोहिए सिय हालिद्दए सिय सुक्किल्लए, जइ एगगंधे सिय सुब्भिगंधे सिय दुब्भिगंधे, जइ एगरसे सिय तित्ते सिय कडुए सिय कसाए सिय अंबिले सिय महुरे, जइ दुफासे सिय सीए य निद्धे य १, सिय सीए य लुक्खे य २, सिय उसिणे य निद्धे य ३, सिय उसिणे य लुक्खे य ४ ॥ दुपएसिए णं भंते! खंधे कइवन्ने०? एवं जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव सिय चउफासे पन्नत्ते। जइ एगवन्ने सिय कालए जाव सिय सुक्किल्लए, जइ दुवन्ने सिय कालए य नीलए य १, सिय कालए य लोहिए य २, सिय कालए य हालिद्दए य ३, सिय कालए य सुक्किल्लए य ४, सिय नीलए य लोहियए य ५, सिय नीलए य हालिद्दए य ६, सिय नीलए य सुक्किल्लए य ७, सिय लोहियए य हालिद्दए य ८, सिय लोहियए य सुक्किलए य ९, सिय हालिद्दए य सुक्किल्लए य १०, एवं एए दुयासजोगे दस भंगा। जइ एगगंधे सिय सुब्भिगंधे सिय दुब्भिगंधे। जइ दुगंधे सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य, रसेसु जहा वन्नेसु, जइ दुफासे सिय सीए य निद्धे य एवं जहेव परमाणुपोग्गले ४, जइ तिफासे सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे २, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे ३, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४, जइ चउफासे देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, एए नव भंगा फासेसु ॥ तिपएसिए णं भंते! खंधे कइवन्ने० जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसे जाव चउफासे प०, जइ एगवन्ने सिय कालए जाव सुक्किल्लए ५, जइ दुवन्ने सिय कालए य सिय नीलए य १, सिय कालए य नीलगा य २, सिय कालगा य नीलए य ३, सिय कालए य लोहियए य १, सिय कालए य लोहियगा य २, सिय कालगा य लोहियए य ३, एवं हालिद्दएणवि समं भंगा ३, एवं सुक्किल्लएणवि समं ३, सिय नीलए य लोहियए य एत्थवि भंगा ३, एवं हालिद्दएणवि समं भंगा ३, एवं सुक्किल्लएणवि समं भंगा ३, सिय लोहियए य हालिद्दए य भंगा ३, एवं सुक्किल्लएणवि समं भंगा ३, सिय हालिद्दए य सुक्किल्लए य भंगा ३, एवं सव्वेते दस दुयासजोगा भंगा तीसं भवंति, जइ तिवन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य १, सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य २, सिय कालए य नीलए य सुक्किल्लए य ३, सिय कालए य लोहियए य हालिद्दए य ४, सिय कालए य लोहियए य सुक्किल्लए य ५, सिय कालए

हालिद्दसुक्किलएसुवि पंच भंगा, कालगलोहियहालिद्दसुक्किलएसुवि पंच भंगा ५, नीलग-
लोहियहालिद्दसुक्किलएसुवि पंच भंगा, एवमेए चउक्कगसंजोएणं पणवीसं भंगा, जइ पंच
वन्ने कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एवमेए एगगदुयगतिय-
चउक्कगपंचगसंजोएणं ईयालं भंगसयं भवइ। गंधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा
वन्ना। फासा जहा चउप्पएसियस्स ५। छप्पएसिए णं भंते! खंधे कइवन्ने? एवं
जहा पंचपएसिए जाव सिय चउफासे पन्नत्ते, जइ एगवन्ने एगवन्नदुवन्ना जहा
पंचपएसियस्स, जइ तिवन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य एवं जहेव
पंचपएसियस्स सत्त भंगा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य ७ सिय
कालगा य नीलगा य लोहियगा य ८ एए अट्ठ भंगा, एवमेए दस तियासंजोगा
एक्केक्कए संजोगे अट्ठ भंगा, एवं सव्वेवि तियगसंजोगे असीइं भंगा, जइ चउवन्ने
सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य १ सिय कालए य नीलए य
लोहियए य हालिद्दगा य २ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य ३
सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य ४ सिय कालए य नीलगा य
लोहियए य हालिद्दए य ५ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दगा य ६
सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य ७ सिय कालगा य नीलए य
लोहियए य हालिद्दए य ८ सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य ९
सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य १० सिय कालगा य नीलगा य
लोहियए य हालिद्दए य ११ एए एक्कारस भंगा, एवमेए पंचचउक्कगसंजोगा कायव्वा
एक्केक्कसंजोए एक्कारस भंगा, सव्वेते चउक्कगसंजोगेणं पणपन्नं भंगा, जइ पंचवन्ने
सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य १ सिय कालए य
नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य २ सिय कालए य नीलए य लोहियए
य हालिद्दगा य सुक्किलए य ३ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य
सुक्किलए य ४ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य ५
सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य ६ एवं एए छब्भंगा
भाणियव्वा, एवमेए सव्वेवि एक्कगदुयगतियगचउक्कगपंचगसंजोगेसु ईयालं भंगसयं
भवइ। गंधा जहा पंचपएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वन्ना। फासा जहा चउ-
प्पएसियस्स ६। सत्तपएसिए णं भंते! खंधे कइवन्ने? जहा पंचपएसिए जाव सिय
चउफासे प०, जइ एगवन्ने एवं एगवन्नदुवन्नतिवन्ना जहा छप्पएसियस्स, जइ चउ-
वन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य १ सिय कालए य नीलए
य लोहियए य हालिद्दगा य २ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य

य १, सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किल्लए य २, सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ३, सिय कालए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ४, सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ५, एवमेए चउक्कगसंजोए पच भंगा, एए सव्वे नउइभगा, जइ एगगधे सिय सुब्भिगधे सिय दुब्भिगधे, जइ दुगधे सुब्भिगधे य दुब्भिगधे य। रसा जहा वन्ना। जइ दुफासे जहेव परमाणुपोग्गले ४, जइ तिफासे सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा २, सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे ३, सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एव भगा ४, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४, एए तिफासे सोलस भगा, जइ चउफासे देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा २, देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे ३, देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा ४, देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ५, देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा ६, देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे ७, देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा ८, देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ९, एव एए चउफासे सोलस भंगा भाणियव्वा जाव देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे एए फासेसु छत्तीस भगा ॥ पचपएसिए ण भते ! खधे कइवन्ने० जहा अट्ठारसमसए जाव सिय चउफासे प०, जइ एगवन्ने एगवन्नदुवन्ना जहेव चउप्पएसिए, जइ तिवन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य १, सिय कालए य नीलए य लोहियगा य २, सिय कालए य नीलगा य लोहियए य ३, सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य ४, सिय काल(गा)ए य नीलए य लोहियए य ५, सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य ६, सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य ७, सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य एत्यवि सत्त भगा ७, एवं कालगनीलगसुक्किल्लएसु सत्त भगा ७, कालगलोहियहालिद्देसु ७, कालगलोहियसुक्किल्लेसु ७, कालगहालिद्दसुक्किल्लेसु ७, नीलगलोहियहालिद्देसु ७, नीलगलोहियसुक्किल्लेसु सत्त भगा ७, नीलगहालिद्दसुक्किल्लेसु ७, लोहियहालिद्दसुक्किल्लेसुवि सत्त भगा ७, एवमेए तियासंजोएण सत्तरि भगा, जइ चउवन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य १, सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य २, सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य ३, सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगे य ४, सिय कालगा य नीलए य लोहियगे य हालिद्दगे य ५, एए पंच भगा, सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किल्लए य एत्यवि पंच भंगा, एव कालगनीलग-

३, एवमेते चउक्कगसजोगेण पन्नरस भंगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य १५, एवमेए पंचचउक्कसजोगा नेयव्वा एक्केक्के सजोए पन्नरस भगा, सव्वमेए पचसत्तरिं भगा भवंति । जइ पंचवन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १, सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य २, सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य ३, सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किल्लगा य ४, सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ५, सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य ६, सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य ७, सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ८, सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य ९, सिय कालगे य नीलगा य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किल्लगे य १०, सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ११, सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १२, सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य १३, सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य १४, सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १५, सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १६, एए सोलस भगा, एवं सव्वमेए एक्कगदुयगतियगचउक्कगपंचगसजोगेण दो सोलस भंगसया भवंति, गंधा जहा चउप्पएसियस्स, रसा जहा एयस्स चेव वन्ना, फासा जहा चउप्पएसियस्स ॥ अट्ठपएसिए णं भंते ! खंधे० पुच्छा, गोयमा ! सिय एगवन्ने जहा सत्तपएसियस्स जाव सिय चउफासे प०, जइ एगवन्ने एवं एगवन्नदुवन्नतिवन्ना जहेव सत्तपएसिए, जइ चउवन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य १, सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य २, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगे य १५, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य १६, एए सोलस भंगा, एवमेए पंच चउक्कसंजोगा, एवमेए असीइ भंगा ८०, जइ पंचवन्ने सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १, सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य २, एवं एएणं कमेणं भंगा (उच्चा)रेयव्वा जाव सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य १५, एसो पन्नरसमो भंगो, सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १६, सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य

१९ एए चउसट्ठि भंगा सव्वे गुरुए सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे निद्धे देसे लुक्खे एवं जाव सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसा कक्खडा देसा निद्धा देसा मउया देसा लुक्खा एए चउसट्ठि भंगा सव्वे गुरुए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा एए चउसट्ठि भंगा सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गुरुया देसा लहुया एवमेए चउसट्ठि भंगा सव्वे ते छप्फासे तिन्निचउरासीया भंगसया भवंति ३८४। जइ सत्तफासे सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १ सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा ४ सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे दे(दे)सा लुक्खा ४ सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४ सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे सव्वेए सोलस भंगा भाणियव्वा सव्वे कक्खडे देसे गुरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एवं गुरुएणं एगत्तेणं लहुएणं पुहुत्तेणं एए वि सोलस भंगा सव्वे कक्खडे देसा गुरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एए वि सोलस भंगा भाणियव्वा सव्वे कक्खडे देसा गुरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एए वि सोलस भंगा भाणियव्वा, एवमेए चउसट्ठि भंगा कक्खडेण समं सव्वे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे । एवं मउएण वि समं चउसट्ठि भंगा भाणियव्वा सव्वे गुरुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एवं गुरुएण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा सव्वे लहुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एवं लहुएण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे एवं सीएण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा सव्वे उसिणे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे एवं उसिणेण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे एवं निद्धेण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा सव्वे लुक्खे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे एवं लुक्खेण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा जाव सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा

उसिणे सव्वे निद्धे ७, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे ८, सव्वे मउए सव्वे गुरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे ९, सव्वे मउए सव्वे गुरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे १०, सव्वे मउए सव्वे गुरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे ११, सव्वे मउए सव्वे गुरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे १२, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे १३, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे १४, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे १५, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे १६, एए सोलस भगा ॥ जइ पचफासे सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा २, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे सीए देसा निद्धा दे(सा)से लुक्खे ३, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे । ४ । एव एए कक्खडेण सोलस भगा । सव्वे मउए सव्वे गुरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे ८, एव मउएणवि सम सोलस भगा, एव वत्तीस भंगा । सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४, एए वत्तीस भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे गुरुए देसे लहुए ४, एत्थवि वत्तीस भगा, सव्वे गुरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए ४, एत्थवि बत्तीस भगा, एव सव्वेते पचफासे अट्ठावीस भंगसयं भवइ । जइ छप्फासे सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा २, एवं जाव सव्वे कक्खडे सव्वे गुरुए देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा १६, एए सोलस भंगा । सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एत्थवि सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे गुरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे एत्थवि सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एत्थवि सोलस भगा, एए चउसट्ठिं भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए देसे गुरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे एव जाव सव्वे मउए सव्वे उसिणे देसा गुरुया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा एत्थवि चउसट्ठि भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे निद्धे देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे मउए सव्वे लुक्खे देसा गुरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा

एवं जुयइ पुव्विं वा जाव उववज्जित्ता पच्छा संपाउणित्ता इमेणं आहारेइ मवर सेसं तं चेव। पुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं चेव एवं जाव ईसिप्पब्भाराए उववाएयव्वो। पुढविकाइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए वालुयप्पभाए पुढवीए अंतरा समोहए २ त्ता जे भविए सोहम्मे जाव ईसिप्पब्भाराए, एवं एएणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा समोहए २ त्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे जाव ईसिप्पब्भाराए उववाएयव्वो। पुढविकाइए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमारमाहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए २ त्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! पुव्विं उव-वज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा सेसं तं चेव जाव से तेणट्ठेणं जाव निक्खेवओ। पुढ-विकाइए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमारमाहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए २ त्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए एवं चेव, एवं जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो एवं सणंकुमारमाहिंदाणं बंभलोगस्स कप्पस्स अंतरा समोहए समोहणित्ता पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो एवं बंभलो-गस्स लंतगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं लंत-गस्स महासुक्कस्स कप्पस्स य अंतरा समोहए पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं महासुक्कस्स सहस्सारस्स य कप्पस्स अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं सह-स्सारस्स आणयपाणयकप्पाणं अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं आणयपाण-याणं आरणच्चुयाण य कप्पाणं अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं आरणच्चु-याणं गेवेज्जविमाणाण य अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाण य अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं अणुत्तरविमाणाणं ईसि-प्पब्भाराए य पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ॥ ६० ॥ आउकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए सेसं जहा पुढविकाइयस्स जाव से तेणट्ठेणं एवं पढमादोच्चाणं अंतरा समोहओ जाव ईसिप्पब्भाराए उववाए-यव्वो एवं एएणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा समोहए २ त्ता जाव ईसिप्पब्भाराए उववाएयव्वो आउकाइयत्ताए, आउकाइए णं भंते ! सोह-म्मीसाणाणं सणंकुमारमाहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहि(१)-वलएसु आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए सेसं तं चेव एवं एएहिं चेव अंतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदहिवलएसु

मउया देसा गुरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एव सत्तफासे पंचवार-सुत्तरा भगसया भवति । जइ अट्ठफासे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया दे(सा)से उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एए चत्तारि चउक्का सोलस भगा, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गुरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव एए गुरुएणं एगत्तएणं लहुएण पोहत्तएण सोलस भगा कायव्वा, देसे कक्खडे देसे मउए देसा गुरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एएवि सोलस भगा कायव्वा, देसे कक्खडे देसे मउए देसा गुरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे एएवि सोलस भगा कायव्वा, सव्वेऽवि ते चउसट्ठि भंगा कक्खडमउएहिं एगत्तएहिं, ताहे कक्खडेण एगत्तएण मउएण पुहत्तेण एए चेव चउसट्ठि भगा कायव्वा, ताहे कक्खडेणं पुहत्तएण मउएण एगत्तएण चउसट्ठि भगा कायव्वा, ताहे एएहिं चेव दोहिवि पुहुत्तेहिं चउसट्ठि भगा कायव्वा जाव देसा कक्खडा देसा मउया देसा गुरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा एसो अपच्छिमो भंगो, सव्वेते अट्ठफासे दो छप्पन्ना भगसया भवति। एव एए बायरपरिणए अणतपएसिए खधे सव्वेसु सजोएसु बारस छन्नउया भगसया भवति ॥ ६६८ ॥ कइविहे णं भते ! परमाणू प० ? गोयमा ! चउव्विहे परमाणू प०, त०–दव्वपरमाणू, खेत्तपरमाणू, कालपरमाणू, भावपरमाणू, दव्व-परमाणू ण भते ! कइविहे प० ? गोयमा ! चउव्विहे प०, त०–अच्छेज्जे, अभेज्जे, अडज्झे, अगेज्झे, खेत्तपरमाणू ण भते ! कइविहे प० ? गोयमा ! चउव्विहे प०, त०–अणड्ढे, अमज्झे, अपएसे, अविभाइमे, कालपरमाणू पुच्छा, गोयमा ! चउव्विहे प०, त०–अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे, भावपरमाणू ण भते ! कइविहे प० ? गोयमा ! चउव्विहे प०, त०–वन्नमते, गधमते, रसमते, फासमते । सेव भते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ६६९ ॥ **वीसइमस्स सयस्स पंचमो उद्देसो समत्तो ॥**

पुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अतरा समोहए समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए से ण भते ! किं पुव्वि उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा पुव्वि आहारित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुव्वि वा उववज्जित्ता एव जहा सत्तरसमसए छट्ठुद्देसए जाव से तेणट्ठेण गोयमा !

आउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो, एवं जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसिप्पब्भाराए पुढवीए अतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदहिवलएसु उववाएयव्वो ॥ ६७१ ॥ वाउक्काइए ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए पुढवीए अतरा समोहए समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए एव जहा सत्तरसमसए वाउक्काइयउद्देसए तहा इहवि, नवरं अतरेसु समोहणा नेयव्वा सेस त चेव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसिप्पब्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए समोहणित्ता जे भविए घणवायतणुवाए घणवायतणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए सेस त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव उववज्जेज्जा । सेव भंते ! २ त्ति ॥ ६७२ ॥

वीसइमस्स सयस्स छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥

कइविहे ण भंते ! वंधे प० ? गोयमा ! तिविहे वधे प०, त०–जीवप्पओगवंधे, अणतरवधे, परंपरवंधे । नेरइयाण भंते ! कइविहे वधे प० ? एव चेव, एव जाव वेमाणियाण । नाणावरणिज्जस्स ण भंते ! कम्मस्स कइविहे वधे प० ? गोयमा ! तिविहे वधे प०, त०–जीवप्पओगवधे, अणतरवधे, परपरवधे, नेरइयाण भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कइविहे वधे प० ? एवं चेव, एव जाव वेमाणियाण, एव जाव अतराइयस्स । णाणावरणिज्जोदयस्स ण भते ! कम्मस्स कइविहे वधे प० ? गोयमा ! तिविहे वधे प० एवं चेव, एव नेरइयाणवि एव जाव वेमाणियाण, एव जाव अतराइयउदयस्स, इत्थीवेयस्स ण भंते ! कइविहे वधे प० ? गोयमा ! तिविहे वंधे प० एव चेव, असुरकुमाराण भते ! इत्थीवेयस्स कइविहे वधे प० ? गोयमा ! तिविहे वधे प० एव चेव, एव जाव वेमाणियाण, नवरं जस्स इत्थिवेदो अत्थि, एव पुरिसवेयस्सवि, एव नपुंसगवेयस्सवि जाव वेमाणियाण, नवर जस्स जो अत्थि वेदो, दसणमोहणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स कइविहे वधे प० ? एवं चेव निरतर जाव वेमाणियाण, एव चरित्तमोहणिज्जस्सवि जाव वेमाणियाण, एव एएण कमेण ओरालियसरीरस्स जाव कम्मगसरीरस्स, आहारसन्नाए जाव परिग्गहसण्णाए, कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मदिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए सम्मामिच्छादिट्ठीए, आभिणिवोहियणाणस्स जाव केवलनाणस्स, मइअन्नाणस्स सुयअन्नाणस्स विभंगनाणस्स, एव आभिणिवोहियणाणविसयस्स ण भते ! कइविहे वधे प० जाव केवलनाणविसयस्स मइअन्नाणविसयस्स सुयअन्नाणविसयस्स विभगणाणविसयस्स एएसिं सव्वेसिं पयाण तिविहे वधे प०, सव्वेते चउव्वीस दंडगा भाणियव्वा, नवरं जाणियव्व जस्स जइ अत्थि जाव वेमाणियाण भंते ! विभंगणाणविसयस्स कइविहे वधे प० ? गोयमा ! तिविहे वधे प०, त०–जीवप्पओगवधे, अणतरवधे, परंपरवधे, सेव भते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ६७३ ॥ **वीसइमस्स सयस्स सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥**

विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवइए गइविसए पण्णत्ते से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥५८२० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जंघाचार(णे)णा २ ? गोयमा ! तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स जंघाचारणलद्धी णामं लद्धी समुप्पज्जइ से तेणट्ठेणं जाव जंघाचारणा २ जंघाचारणस्स णं भंते ! कहं सीहा गई कहं सीहे गइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे एवं जहेव विज्जाचारणस्स णवरं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा जंघाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गई तहा सीहे गइविसए पण्णत्ते सेसं तं चेव । जंघाचारणस्स णं भंते ! तिरियं केवइए गइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं रुयगवरे दीवे समोसरणं करेइ करेत्ता तओ पडिणियत्तमाणे बिइएणं उप्पाएणं णंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ करेत्ता इह(हव्व)मागच्छइ । जंघाचारणस्स णं गोयमा ! तिरियं एवइए गइविसए पण्णत्ते जंघाचारणस्स णं भंते ! उड्ढं केवइए गइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ करेत्ता तओ पडिणियत्तमाणे बिइएणं उप्पाएणं णंदणवणे समोसरणं करेइ २ त्ता इहमागच्छइ, जंघाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवइए गइविसए पण्णत्ते से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ णत्थि तस्स आराहणा से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ५८२१ ॥ वीसइमे सए णवमो उद्देसो समत्तो ॥

जीवा णं भंते ! किं सोवक्कमाउया णिरुवक्कमाउया ? गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउयावि णिरुवक्कमाउयावि णेरइयाणं पुच्छा गोयमा ! णेरइया णो सोवक्कमाउया णिरुवक्कमाउया एवं जाव थणियकुमारा पुढविक्काइया जहा जीवा एवं जाव मणुस्सा वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा णेरइया ॥५८२२ णेरइया णं भंते ! किं आओवक्कमेणं उववज्जंति परोवक्कमेणं उववज्जंति णिरुवक्कमेणं उववज्जंति ? गोयमा ! आओवक्कमेणवि उववज्जंति परोवक्कमेणवि उववज्जंति णिरुवक्कमेणवि उववज्जंति, एवं जाव वेमाणिया णं । णेरइया णं भंते ! किं आओवक्कमेणं उव्वट्टंति परोवक्कमेणं उव्वट्टंति णिरुवक्कमेणं उव्वट्टंति ? गोयमा ! णो आओवक्कमेणं उव्वट्टंति णो परोवक्कमेणं उव्वट्टंति णिरुवक्कमेणं उव्वट्टंति एवं जाव थणियकुमारा पुढविक्काइया जाव मणुस्सा तिसु उव्वट्टंति, सेसा जहा णेरइया णवरं जोइसियवेमाणिया चयंति ॥ णेरइया णं भंते ! किं आ(य)इड्ढीए उववज्जंति परिड्ढीए उववज्जंति ? गोयमा ! आइड्ढीए

तित्थे अणुसज्जिस्सइ ॥ ६७८ ॥ जहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाण एक्कवीस वाससहस्साइ तित्थे अणुतिज्जिस्सइ तहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साण चरिमतित्थगरस्स केवइय काल तित्थे अणुसज्जिस्सइ ? गोयमा ! जावइए ण उसभस्स अरहओ कोसलियस्स जिणपरियाए एवइयाइ सखेज्जाइ आगमेस्साण चरिमतित्थगरस्स तित्थे अणुसज्जिस्सइ ॥६७९॥ तित्थ भते ! ति(त्थे)त्थ तित्थगरे तित्थ ? गोयमा ! अरहा ताव नियम तित्थगरे, तित्थ पुण चाउवण्णाइण्णे समणसघे, त०—समणा समणीओ सावगा सावियाओ ॥६८०॥ पवयण भते ! पवयण पावयणी पवयण ? गोयमा ! अरहा ताव नियम पावयणी, पवयण पुण दुवालसगे गणिपिडगे, तं०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ ॥ जे इमे भंते ! उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा नाया कोरव्वा एए णं अस्सि धम्मे ओगाहति अस्सि० २ त्ता अट्ठविह कम्मरयमल पवाहेंति पवाहित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव अतं करेंति ? हंता गोयमा ! जे इमे उग्गा भोगा त चेव जाव अत करेंति, अत्थेगइया अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति । कइविहा ण भते ! देवलोया प० ? गोयमा ! चउव्विहा देवलोया प०, त०—भवणवासी, वाणमतरा, जोइसिया, वेमाणिया । सेव भते ! २ त्ति ॥ ६८१ ॥ **वीसइमे सए अट्ठमो उद्देसो समत्तो** ॥

कइविहा ण भते ! चारणा प० ? गोयमा ! दुविहा चारणा प०, तजहा—विज्जाचारणा य जघाचारणा य, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ विज्जाचारणा विज्जाचारणा ? गोयमा ! तस्स ण छट्ठछट्ठेण अनिक्खित्तेण तवोकम्मेण विज्जाए उत्तरगुणलद्धिं खममाणस्स विज्जाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जइ, से तेणट्ठेण जाव विज्जाचारणा २, विज्जाचारणस्स ण भते ! कहं सीहा गई कह सीहे गइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! अयन्नं जबुद्दीवे दीवे जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण देवे ण महिड्ढिए जाव महेसक्खे जाव इणामेवत्तिकट्टु केवलकप्प जबुद्दीव दीव तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ताण हव्वमागच्छेज्जा, विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! तहा सीहा गई तहा सीहे गइविसए पण्णत्ते । विज्जाचारणस्स णं भते ! तिरिय केवइए गइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! से णं इओ एगेण उप्पाएणं माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेइ करेत्ता बिइएण उप्पाएण नदीसरवरे दीवे समोसरण करेइ करेत्ता तओ पडिनियत्तइ २ त्ता इहमागच्छइ, विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! तिरिय एवइए गइविसए पण्णत्ते, विज्जाचारणस्स णं भते ! उड्ढ केवइए गइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण नदणवणे समोसरण करेइ करेत्ता बिइएण उप्पाएण पडगवणे समोसरण करेइ करेत्ता तओ पडिनियत्तइ २ त्ता इहमागच्छइ,

छक्केहिं समज्जियावि ४ छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियावि ५, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ नेरइया छक्कसमज्जियावि जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियावि? गोयमा! जे णं नेरइया छक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्कसमज्जिया १ जे णं नेरइया जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा ति(ती)हिं वा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोछक्कसमज्जिया २ जे णं नेरइया एगेणं छक्कएणं अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया ३ जे णं नेरइया णेगेहिं छक्केहिं पवेसणगं पविसंति ते णं नेरइया छक्केहिं समज्जिया ४ जे णं नेरइया णेगेहिं छक्केहिं अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया ५, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव समज्जियावि एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा! पुढविकाइया नो छक्कसमज्जिया १, नो नोछक्कसमज्जिया २, नो छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया ३, छक्केहिं समज्जियावि ४ छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियावि ५, से केणट्ठेणं भंते! जाव समज्जियावि? गोयमा! जे णं पुढविकाइया णेगेहिं छक्कएहिं पवेसणगं पविसंति ते णं पुढविकाइया छक्केहिं समज्जिया जे णं पुढविकाइया णेगेहिं छक्कएहिं अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं पुढविकाइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया से तेणट्ठेणं जाव समज्जियावि एवं जाव वणस्सइकाइया बेइंदिया जाव वेमाणिया सिद्धा जहा नेरइया। एएसि णं भंते! नेरइयाणं छक्कसमज्जियाणं नोछक्कसमज्जियाणं छक्केण य नोछक्केण य समज्जियाणं छक्केहि य समज्जियाणं छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा नेरइया छक्कसमज्जिया नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा छक्केहि य समज्जिया असंखेज्जगुणा छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा एवं जाव थणियकुमारा। एएसि णं भंते! पुढविकाइयाणं छक्केहिं समज्जियाणं छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाणं कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा पुढविकाइया छक्केहिं समज्जिया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा एवं जाव वणस्सइकाइयाणं बेइंदियाणं जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं। एएसि णं भंते! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं नोछक्कसमज्जियाणं जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा सिद्धा छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया छक्केहिं समज्जिया संखेज्जगुणा छक्केण य नोछक्केण य सम-

उववज्जति नो परिड्ढीए उववज्जंति, एवं जाव वेमाणिया ण । नेरइया णं भते ! किं आइड्ढीए उववट्टति परिड्ढीए उववट्टंति ? गोयमा ! आइड्ढीए उव्वट्टति नो-परिड्ढीए उववट्टति, एव जाव वेमाणिया, नवर जोइसियवेमाणिया चयतीति अभिलावो । नेरइया ण भते ! किं आयकम्मुणा उववज्जति परकम्मुणा उववज्जति ? गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जति नो परकम्मुणा उववज्जति, एव जाव वेमाणिया, एव उव्वट्टणादडओवि । नेरइया णं भते ! किं आयप्पओगेणं उववज्जति परप्पओगेण उववज्जति ? गोयमा ! आयप्पओगेणं उववज्जति नो परप्पओगेण उववज्जति, एवं जाव वेमाणिया, एव उव्वट्टणादडओवि ॥ ६८५ ॥ नेरइया णं भते ! किं कइसन्चिया अकइसन्चिया अव्वत्त(व)गसन्चिया ? गोयमा ! नेरइया कइसन्चियावि अकइसन्चियावि अव्वत्तगसन्चियावि, से केणट्ठेणं जाव अव्वत्तगसन्चियावि ? गोयमा ! जे ण नेरइया सखेज्जएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया कइसन्चिया, जे ण नेरइया असखेज्जएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया अकइसंन्चिया, जे ण नेरइया एक्कएग पवेसणएणं पविसति ते णं नेरइया अव्वत्तगसन्चिया, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव अव्वत्तगसन्चियावि, एव जाव थणियकुमारा, पुढविक्काइयाण पुच्छा, गोयमा ! पुढविकाइया नो कइसन्चिया अकइसन्चिया नो अव्वत्तगसन्चिया, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जाव नो अव्वत्तगसन्चिया ? गोयमा ! पुढविकाइया असखेज्जएण पवेसणएण पविसति से तेणट्ठेण जाव नो अव्वत्तगसन्चिया, एव जाव वणस्सइकाइया, बेइंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया, सिद्धाण पुच्छा, गोयमा ! सिद्धा कइसन्चिया नो अकइसन्चिया अव्वत्त(व्व)गसन्चियावि, से केणट्ठेण भंते ! जाव अव्वत्तगसन्चियावि ? गोयमा ! जे ण सिद्धा संखेज्जएण पवेसणएण पविसति ते ण सिद्धा कइसन्चिया, जे णं सिद्धा एक्कएण पवेसणएण पविसति ते ण सिद्धा अव्वत्तगसंन्चिया, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव अव्वत्तगसन्चियावि ॥ एएसि ण भते ! नेरइयाणं कइसन्चियाण अकइसन्चियाणं अव्वत्तगसन्चियाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया अव्वत्तगसन्चिया, कइसन्चिया सखेज्जगुणा, अकइसन्चिया असंखेज्जगुणा, एव एगिंदियवज्जाण जाव वेमाणियाणं अप्पावहुग, एगिंदियाण नत्थि अप्पावहुग । एएसि ण भते ! सिद्धाण कइसन्चियाण अव्वत्तगसन्चियाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा कइसन्चिया, अव्वत्तगसन्चिया सखेज्जगुणा ॥ नेरइया ण भंते ! किं छक्कसमज्जिया १, नोछक्कसमज्जिया २, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया ३, छक्केहि य समज्जिया ४, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया ५ ? गोयमा ! नेरइया छक्कसमज्जियावि १, नोछक्कसमज्जियावि २, छक्केग य नोछक्केण य समज्जियावि ३,

ज्जिया सखेज्जगुणा, छक्कसमज्जिया सखेज्जगुणा, नोछक्कसमज्जिया सखेज्जगुणा । नेरइया ण भंते ! किं वारससमज्जिया १, नोवारससमज्जिया २, वारसएण य नोवारसएण य समज्जिया ३, वारसएहिं समज्जिया ४, वारसएहि य नोवारसएण य समज्जिया ५? गोयमा ! नेरइया वारससमज्जियावि जाव वारसएहि य नोवारसएण य समज्जियावि, से केणट्ठेण भंते ! एवं जाव समज्जियावि? गोयमा ! जे णं नेरइया वारसएण पवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया वारससमज्जिया १, जे णं नेरइया जहन्नेण एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएणं पविसति ते ण नेरइया नोवारससमज्जिया २, जे ण नेरइया वारसएण पवेसणएण अन्नेण य जहन्नेण एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेणं एक्कारसएण पवेसणएणं पविसति ते ण नेरइया वारसएण य नोवारसएण य समज्जिया ३, जे ण नेरइया णेगेहिं वारसएहिं पवेसणग पविसति ते ण नेरइया वारसएहिं समज्जिया ४, जे ण नेरइया णेगेहिं वारसएहिं अन्नेण य जहन्नेण एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया वारसएहि य नोवारसएण य समज्जिया ५, से तेणट्ठेण जाव समज्जियावि, एव जाव थणियकुमारा, पुढविकाइयाण पुच्छा, गोयमा ! पुढविकाइया नो वारससमज्जिया १, नो नोवारससमज्जिया २, नो वारसएण य नोवारसएण य समज्जिया ३, वारसएहिं समज्जिया ४, वारसएहि य नो वारसएण य समज्जियावि ५, से केणट्ठेण भंते ! जाव समज्जियावि? गोयमा ! जे ण पुढविकाइया णेगेहिं वारसएहिं पवेसणग पविसति ते णं पुढविकाइया वारसएहिं समज्जिया, जे ण पुढविकाइया णेगेहिं वारसएहिं अन्नेण य जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएण पविसति ते ण पुढविकाइया वारसएहि य नोवारसएण य समज्जिया, से तेणट्ठेण जाव समज्जियावि, एवं जाव वणस्सइकाइया, बेइंदिया जाव सिद्धा जहा नेरइया । एएसि ण भंते ! नेरइयाण वारससमज्जियाणं० सव्वेसिं अप्पाबहुग जहा छक्कसमज्जियाण, नवरं वारसाभिलावो सेस त चेव । नेरइया ण भंते ! किं चुलसीइसमज्जिया १, नोचुलसीइसमज्जिया २, चुलसीईए य नोचुलसीईए य समज्जिया ३, चुलसीईहिं समज्जिया ४, चुलसीईहि य नोचुलसीईए य समज्जिया ५? गोयमा ! नेरइया चुलसीइसमज्जियावि जाव चुलसीईहि य नोचुलसीईए य समज्जियावि, से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ जाव समज्जियावि? गोयमा ! जे ण नेरइया चुलसी(ई)इएणं पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया चुलसीइसमज्जिया १, जे ण नेरइया जहन्नेण एक्केण वा दोहिं वा तिहिं वा उक्कोसेण तेसीइपवेसणएण पविसति ते ण नेरइया नोचुलसीइसमज्जिया २, जे ण नेरइया चुलसी-

सम्मं ॥ तइओ वग्गो समत्तो ॥ २१-३ ॥ अह भंते ! वंसवेणुकणककक्कावंसचारुवंस-उडाकुडाविमाकंडावेणुयाकल्लाणीणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं एत्थवि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीणं नवरं देवो सव्वत्थवि न उववज्जइ, तिन्नि लेसाओ सव्वत्थवि छव्वीसं भंगा सेसं तं चेव ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो ॥ २१-४ ॥ अह भंते ! उक्खुइक्खुवाडियावीरणाइक्कडभमाससुंठिसत्तवेत्ततिमिरसयपोरगनलाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं जहेव वंसवग्गो तहेव एत्थवि मूलादीया दस उद्देसगा नवरं खंधुद्देसे देवा उववज्जंति चत्तारि लेसाओ य सेसं तं चेव ॥ पंचमो वग्गो समत्तो ॥ २१-५ ॥ अह भंते ! सेडियभंडियदब्भकोंतियदब्भकुसदब्भपोइल-अज्जुणआसाढगरोहियंसमुतवखीरभुसएरिंडकुरुकुंदकरवरसुंठविभंगुमहुरयणथुरग-सिप्पियसुंकलितणाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं एत्थवि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंस(वग्गो)स्स ॥ छट्ठो वग्गो समत्तो ॥ २१-६ ॥ अह भंते ! अब्भरुहवोयाणहरितगतंदुलेज्जगतणवत्थुलपोरगमज्जारयाईचिल्लियापालक्कदगपिप्पलियदव्वि-सोत्थियसायमंडुक्किमूलगसरिसवअंबिलसागजियंतगाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं एत्थवि दस उद्देसगा जहेव वंसस्स ॥ सत्तमो वग्गो समत्तो ॥ २१-७ ॥ अह भंते ! तुलसीकण्हदलफणेज्जाअज्जाचूयणाचोराजीरादमणामरुयाइंदीवरसय-पुप्फाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एत्थवि दस उद्देसगा निरवसेसं जहा वंसाणं ॥ अट्ठमो वग्गो समत्तो ॥ २१-८ ॥ एवं एएसु अट्ठसु वग्गेसु असीतिं उद्देसगा भवंति ॥ ६८८ ॥ एगवीसइमं सयं समत्तं ॥

तालेगट्ठियबहुबीयगा य गुच्छा य गुम्म वल्ली य । छद्दस वग्गा एए सट्ठिं पुण होंति उद्देसा ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते ! तालतमालतक्कलितेतलिसालसरलासारगल्लाण जाव केयइकयलिकंदलिचम्मरुक्खगुंतरुक्खहिंगुरुक्खलवंगरुक्ख-पूयफलिखज्जूरिनालिएरीणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं एत्थवि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहेव सालीणं नवरं इमं णाणत्तं मूले कंदे खंधे तयाए साले य एएसु पंचसु उद्देसएसु देवो न उववज्जइ, तिन्नि लेसाओ ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं, उवरिल्लेसु पंचसु उद्देसएसु देवो उववज्जइ, चत्तारि लेसाओ ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वासपुहुत्तं ओगाहणा मूले कंदे धणुपुहुत्तं खंधे तयाए साले य गाउय-पुहुत्तं पवाले पत्ते धणुपुहुत्तं पुप्फे हत्थपुहुत्तं, फले बीए य अंगुलपुहुत्तं सव्वेसिं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं सेसं जहा सालीणं एवं एए दस उद्देसगा ॥ पढमो वग्गो समत्तो ॥ २२-१ ॥ अह भंते ! निंबंबजंबुकोसंबतालअंकोल्लपीलुसेलु-

रोगाहणा प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेण धणुहपुहुत्तं, ते ण भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बधगा अबधगा ? तहेव जहा उप्पलुद्देसए, एव वेदेवि उदएवि उदीरणाएवि। ते ण भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा नील-लेस्सा काउलेस्सा छव्वीस भगा, दिट्ठी जाव इदिया जहा उप्पलुद्देसए, ते ण भते ! साली वीही गोधूम जाव जवजवगमूलगजीवे कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जह-ण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्जं कालं ॥ से ण भते ! साली वीही गोधूम जाव जवजवगमूलगजीवे पुढवीजीवे पुणरवि साली वीही जाव जवजवगमूलगजीवेत्ति केवइय काल सेवेज्जा केवइय काल गइरागइ करेज्जा ? एव जहा उप्पलुद्देसए, एएण अभिलावेण जाव मणुस्सजीवे, आहारो जहा उप्पलुद्देसे ठिई जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वासपुहुत्तं, समुग्घायसमोहया उव्वट्टणा य जहा उप्पलुद्देसे। अह भते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता साली वीही जाव जवजवगमूलगजीवत्ताए उववन्नपुव्वा ? हता गोयमा ! असइ अदुवा अणतखुत्तो। सेव भते ! २ त्ति ॥ ६८७ ॥ **एगवी-सइमे सए पढमवग्गस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥२१-१-१ ॥**

अह भते ! साली वीही जाव जवजवाणं एएसि ण जे जीवा कदत्ताए वक्कमति ते ण भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति एवं कदाहिगारेण सो चेव मूलुद्देसो अपरि-सेसो भाणियव्वो जाव असई अदुवा अणतखुत्तो, सेव भते ! २ त्ति (२१-१-२) एव खधेवि उद्देसओ णेयव्वो (२१-१ ३) एव तयाएवि उद्देसो भाणियव्वो (२१-१-४) सालेवि उद्देसो भाणियव्वो (२१-१-५) पवालेवि उद्देसो भाणियव्वो (२१-१-६) पत्तेवि उद्देसो भाणियव्वो (२१-१-७) एए सत्तवि उद्देसगा अपरिसेस जहा मूले तहा णेयव्वा। एव पुप्फेवि उद्देसओ णवर देवो उववज्जइ जहा उप्प-लुद्देसे चत्तारि लेस्साओ असीइ भंगा ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेण अगुलपुहुत्त सेस त चेव, सेव भते ! २ त्ति (२१-१-८) जहा पुप्फे एव फलेवि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो (२१-१-९) एवं बीएवि उद्देसओ (२१-१-१०) एए दस उद्देसगा ॥ पढमो वग्गो समत्तो ॥ २१-१ ॥ अह भंते ! कलायमसूरतिलमुग्गमासनिप्फावकुलत्थआलिसदगसइणपलिमथगाणं एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते ण भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति ? एव मूलाईया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीण णिरवसेस तहेव ॥ बिइओ वग्गो समत्तो ॥ ॥ २१-२ ॥ अह भंते ! अयसिकुसुभकोद्दवकगुरालगतुवरीकोदूसासणसरिसवमूलग-बीयाण एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते ण भते ! जीवा कओहिंतो उवव-ज्जंति ? एव एत्थवि मूलाईया दस उद्देसगा जहेव सालीणं णिरवसेसं तहेव भाणि-

क्कगोयइमालुयचउलपलासकरंजपुत्तंजीवगरिट्ठवहेडगहरियगभल्लायउंबरियखीरणिधायइपियालपूइयणिवायगसेण्हयपासियसीसवअयसिपुण्णागनागरुक्खसीवण्णअसोगाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा निरवसेसं जहा तालवग्गो ॥ बिइओ वग्गो समत्तो ॥ २२-२ ॥ अह भंते ! अत्थियतिंदुयबोरकविट्ठअंबाडगमाउलिंगबिल्लआमलगफणसदाडिमआसत्थउंबरवडणग्गोहनंदिरुक्खपिप्पलिसतरपिलक्खुरुक्खकाउंबरियकुच्छुंभरियदेवदालितिलगलउयछत्तोहसिरीससत्तवण्णदहिवण्णलोद्धधवचंदणअज्जुणणीवकुडुगकलंवाण एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! एवं एत्थवि मूलादीया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा णेयव्वा जाव बीयं ॥ तइओ वग्गो समत्तो ॥ २२-३ ॥ अह भंते ! वाइंगणिअल्लइपोडइ एवं जहा पण्णवणाए गाहाणुसारेणं णेयव्वं जाव गंजपाडलावासिअंकोल्लाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं एत्थवि मूलादीया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा णेयव्वा जाव बीयंति निरवसेसं जहा वंसवग्गो ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो ॥ २२-४ ॥ अह भंते ! सिरियकणवनालियकोरंटगबंधुजीवगमणोज्जा जहा पण्णवणाए पढमपए गाहाणुसारेणं जाव नलणी य कुंदमहाजाईणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं एत्थवि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा सालीणं ॥ पंचमो वग्गो समत्तो ॥ ॥ २२-५ ॥ अह भंते ! पूसफलिकालिंगीतुंबीतउसीएलावालुंकी एवं पयाणि छिंदियव्वाणि पण्णवणागाहाणुसारेणं जहा तालवग्गे जाव दधिफोल्लइकाकलिसोक्कलिअक्कबोंदीणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहा तालवग्गो, णवरं फलउद्देसे ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुहपुहुत्तं, ठिई सव्वत्थ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वासपुहुत्तं सेसं तं चेव ॥ छट्ठो वग्गो समत्तो ॥ २२-६ ॥ एवं छसुवि वग्गेसु सट्ठिं उद्देसगा भवंति ॥ ६८९ ॥ **बावीसइमं सयं समत्तं ॥**

णमो सुयदेवयाए भगवईए । आलुयलोही अवया पाढी तह मासवण्णिवल्ली य । पंचेते दसवग्गा पण्णासं होंति उद्देसा ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी–अह भंते ! आलुयमूलगसिंगबेरहालिद्दरुक्खकंडरियजारुच्छीरबिरालिकिट्ठिकुंदुकण्हकडडसुमहुपयलइमहुसिंगिणिरुहासप्पसुगंधाछिण्णरुहावीयरुहाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा वंसवग्गसरिसा णवरं परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, अवहारो गोयमा ! ते णं अणंता समए २ अवहीरमाणा २ अणंताहिं ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं एवइयकालेणं अवहीरंति णो चेव णं अवहारिया सिया,

एहिंतोवि उववज्जंति, जइ सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलचरेहिंतो उववज्जंति थलचरेहिंतो उववज्जंति खहचरेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, थलचरेहिंतोवि उववज्जंति, खहचरेहिंतोवि उववज्जंति, जइ जलचरे० थलचरे० खहचरेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति णो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, पज्जत्तअसन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कइसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगाए रयणप्पभाए पुढवीए उववज्जेज्जा, पज्जत्तअसन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जेज्जा १, ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति २, तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणी पन्नत्ता ? गोयमा ! छेवट्ठसंघयणी प० ३, तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ४, तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! हुंडसंठाणसंठिया पन्नत्ता ५, तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ लेस्साओ प० ? गोयमा ! तिन्नि लेस्साओ प०, तं०–कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा ६, ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! णो सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी णो सम्मामिच्छादिट्ठी ७, ते णं भंते ! जीवा किं णाणी अन्नाणी ? गोयमा ! णो णाणी अन्नाणी नियमा दुअन्नाणी तं०–मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य ८–९, ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी ? गोयमा ! णो मणजोगी वइजोगीवि कायजोगीवि १०, ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ११, तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सन्नाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि सन्नाओ प०, तं०–आहारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना परिग्गहसन्ना १२, तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ कसाया प० ? गोयमा ! चत्तारि कसाया प०, तं०–कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए १३, तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ इंदिया प० ? गोयमा ! पंचिंदिया प०, तं०–सोइंदिए चक्खिंदिए जाव फासिंदिए १४, तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ समुग्घाया प० ? गोयमा ! तओ समुग्घाया प०, तं०–वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए १५,

ईएसु उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जेज्जा । ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं अवसेसं जहेव ओहियगमएणं तहेव अणुगंतव्वं णवरं (जाव) इमाइं दोण्णि णाणत्ताइं-ठिई जहन्नेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी एवं अणुबंधोवि अवसेसं तं चेव । से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्तअसण्णि जाव तिरिक्खजोणिए रयणप्पभा जाव गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं एवइयं जाव करेज्जा ७। उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्ततिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहन्नकालट्ठिईएसु रयणप्पभा जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ जाव उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणवि दसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा । ते णं भंते ! सेसं तं चेव जहा सत्तमगमए जाव से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठिई जाव तिरिक्खजोणिए जहन्नकालट्ठिईयरयणप्पभा जाव करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया उक्कोसेणवि पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया एवइयं जाव करेज्जा ८। उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्त जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठिईएसु रयणप्पभा जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइकाल जाव उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं सेसं जहा सत्तमगमए जाव से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्त जाव तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठिईयरयणप्पभा जाव करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं एवइयं कालं सेवेज्जा जाव गइरागइं करेज्जा ९। एवं एए ओहिया तिण्णि गमगा ३ जहन्नकालट्ठिईएसु तिण्णि गमगा ६, उक्कोसकालट्ठिईएसु तिण्णि गमगा ९ सव्वेते णव गमगा भवंति ॥ ६९१-२ ॥ जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्ख जाव उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति णो असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय जाव उववज्जंति । जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय जाव उववज्जंति किं जलयरेहिंतो उववज्जंति पुच्छा । गोयमा ! जलयरेहिंतो उववज्जंति जहा असण्णी जाव पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति णो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति,

एवइय कालं गइरागइ करेज्जा ३। जहन्नकालट्ठिईयपज्जत्तअसन्निपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिए णं भंते! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से ण भंते! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा! जहन्नेण दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते ण भंते! जीवा एगसमएण केवइया अवसेस त चेव णवर इमाइ तिन्नि णाणत्ताइं आउं अज्झवसाणा अणुबंधो य, जहन्नेण ठिई अंतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, तेसि ण भंते! जीवाण केवइया अज्झवसाणा प० ? गोयमा! असखेज्जा अज्झवसाणा प०, ते ण भंते! किं पसत्था अप्पसत्था ? गोयमा! णो पसत्था अप्पसत्था, अणुबंधो अंतोमुहुत्त सेस तं चेव। से ण भंते! जहन्नकालट्ठिईयपज्जत्तअसन्निपंचिंदिय० रयणप्पभा जाव करेज्जा ? गोयमा! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अंतोमुहुत्तमब्भहियं एवइय काल सेवेज्जा जाव गइरागइ करेज्जा ४। जहन्नकालट्ठिईयपज्जत्तअसन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भंते! जे भविए जहन्नकालट्ठिईएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से ण भंते! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणवि दसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते ण भंते! जीवा सेसं त चेव ताइ चेव तिन्नि णाणत्ताइ जाव से ण भंते! जहन्नकालट्ठिईयपज्जत्त जाव जोणिए जहन्नकालट्ठिईयरयणप्पभा पुणरवि जाव गोयमा! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहन्नेण दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेणवि दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ एवइय काल सेवेज्जा जाव करेज्जा ५। जहन्नकालट्ठिईयपज्जत्त जाव तिरिक्खजोणियाण भंते! जे भविए उक्कोसकालट्ठिईएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से ण भंते! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा! जहन्नेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठिईएसु उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठि(इ)ईएसु उववज्जेज्जा, ते ण भंते! जीवा अवसेस त चेव ताइ चेव तिन्नि णाणत्ताइ जाव से ण भंते! जहन्नकालट्ठिईयपज्जत्त जाव तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठिईयरयणप्पभा जाव करेज्जा ? गोयमा! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहन्नेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अंतोमुहुत्तमब्भहियं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अंतोमुहुत्तमब्भहियं एवइय काल जाव करेज्जा ६। उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्तअसन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भंते! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से ण भंते! केवइयकाल(ट्ठिई)स्स जाव उववज्जेज्जा ? गोयमा! जहन्नेण दसवाससहस्सट्ठि-

पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए णेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते! कइसु पुढवीसु उववज्जेज्जा? गोयमा! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तंजहा-रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए, पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिं-दियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए रयणप्पभापुढविणेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठिई-एसु उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केव-इया उववज्जंति? जहेव असण्णी, तेसि णं भंते! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणी प०? गोयमा! छव्विहसंघयणी प०, तं०-वइरोसभनारायसंघयणी उसभनाराय-संघयणी जाव छेवट्ठसंघयणी, सरीरोगाहणा जहेव असण्णीणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, तेसि णं भंते! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया प०? गोयमा! छव्विहसंठिया प०, तंजहा-समचउरंस० णग्गोह० जाव हुंड०, तेसि णं भंते! जीवाणं कइ लेस्साओ प०? गोयमा! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा-कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, दिट्ठी तिविहावि, तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, जोगो तिविहोवि सेसं जहा असण्णीणं जाव अणुबंधो, नवरं पंच समुग्घाया प० आइल्लगा, वेदो तिविहोवि, अवसेसं तं चेव जाव से णं भंते! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय जाव तिरिक्खजोणिए रयणप्पभा जाव करेज्जा? गोयमा! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहि-याइं एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा १। पज्जत्तसंखेज्जवासाउय जाव जे भविए जहन्नकालं जाव से णं भंते! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणवि दसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते णं भंते! जीवा एवं सो चेव पढमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ एवइयं कालं सेवेज्जा एवइयं कालं गइ-रागइं करेज्जा २, सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो जहन्नेणं सागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, अवसेसो परि(णामा)माणादीओ भवादेसप-ज्जवसाणो सो चेव पढमगमगो णेयव्वो जाव कालादेसेणं जहन्नेणं सागरोवमं अंतोमुहु-त्तमब्भहियं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा ३, जहन्नकालट्ठिईयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय-तिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए रयणप्पभापुढवि जाव उववज्जित्तए से णं भंते!

उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा ३ सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ सच्चेव रयणप्पभापुढविजहन्नकालट्ठिईयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव भवादेसोत्ति णवरं पढमसंघयणं णो इत्थिवेयगा भवादेसेणं जहन्नेणं तिण्णि भवग्गहणाइं उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा ४। सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एवं सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेत्ति ५। सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो सच्चेव लद्धी जाव अणुबंधोत्ति भवादेसेणं जहन्नेणं तिण्णि भवग्गहणाइं उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं जाव करेज्जा ६। सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ जहन्नेणं बावीससागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ते णं भंते! अवसेसा सच्चेव सत्तमपुढविपढमगमगवत्तव्वया भाणियव्वा जाव भवादेसोत्ति णवरं ठिई अणुबंधो य जहन्नेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी सेसं तं चेव कालादेसेणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा ७। सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो सच्चेव लद्धी संवेहोवि तहेव सत्तमगमगसरिसो ८। सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो सच्चेव लद्धी जाव अणुबंधोत्ति भवादेसेणं जहन्नेणं तिण्णि भवग्गहणाइं उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा ॥ ६६४ ॥ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ! गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति णो असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जन्ति किं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ! गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उ णो असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जन्ति जइ संखेज्जवासाउय जाव उववज्जन्ति किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति अपज्जत्त जाव उववज्जंति ! गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति णो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति, पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णि-

सागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते णं भंते ! जीवा सो चेव सत्तमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव भवादेसोत्ति, कालादेसेणं जहन्नेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा ९। एवं एए णव गमगा उक्खेवनिक्खेवओ नवसुवि जहेव असण्णीणं ॥ ६९३ ॥ पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जंत(गम)गस्स लद्धी सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा जाव भवादेसोत्ति, कालादेसेणं जहन्नेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं उक्कोसेणं बारससागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा १, एवं रयणप्पभापुढविगमगसरिसा णववि गमगा भाणियव्वा नवरं सव्वगमएसुवि नेरइयट्ठिई(य)संवेहेसु सागरोवमा भाणियव्वा एवं जाव छट्ठीपुढवित्ति, णवरं नेरइयठिई जा जत्थ पुढवीए जहन्नुक्कोसिया सा तेणं चेव कमेणं चउग्गुणा कायव्वा, वालुयप्पभाए पुढवीए अट्ठावीसं सागरोवमा चउगुणिया भवंति, पंकप्पभाए चत्तालीसं, धूमप्पभाए अट्ठसट्ठिं, तमाए अट्ठासीइं, संघयणाइं वालुयप्पभाए पंचविहसंघयणी तं०—वइरोसभनारायसंघयणी जाव कीलियासंघयणी, पंकप्पभाए चउव्विहसंघयणी, धूमप्पभाए तिविहसंघयणी, तमाए दुविहसंघयणी तं०—वइरोसभनारायसंघयणी य उसभनारायसंघयणी य, सेसं तं चेव ॥ पज्जत्तसंखेज्जवासाउय जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीससागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते णं भंते ! जीवा एवं जहेव रयणप्पभाए णव गमगा लद्धीवि सच्चेव णवरं वइरोसभणारायसंघयणी, इत्थिवेदगा न उववज्जंति सेसं तं चेव जाव अणुबंधोत्ति, संवेहो भवादेसेणं जहन्नेणं तिन्नि भवग्गहणाइं उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा १, सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववण्णो सच्चेव वत्तव्वया जाव भवादेसोत्ति, कालादेसेणं जहन्नेणं कालादेसोवि तहेव जाव चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा २, सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो सच्चेव लद्धी जाव अणुबंधोत्ति, भवादेसेणं जहन्नेणं तिन्नि भवग्गहणाइं

पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी एवं अणुबंधोवि भवादेसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं जाव करेज्जा ७ । सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एसेव सत्तमगमगवत्तव्वया नवरं भवादेसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ एवइयं कालं जाव करेज्जा ८ । सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो सा चेव सत्तमगमगवत्तव्वया नवरं भवादेसेणं जहन्नेणं एगं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं जाव करेज्जा ९ ॥ ६९५ ॥ पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकाल जाव उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते णं भंते ! एवं सो चेव रयणप्पभापुढविगमओ नेयव्वो नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं रयणिपुहुत्तं उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं ठिई जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं अणुबंधोवि सेसं तं चेव जाव भवादेसोत्ति कालादेसेणं जहन्नेणं सागरोवमं वासपुहुत्तमब्भहियं उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा १ एवं एसा ओहिएसु तिसु गमएसु मणूसस्स लद्धी नाणत्तं नेरइयट्ठिइं कालादेसेणं संवेहं च जाणेज्जा ३ । सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ तिसुवि गमएसु एस चेव लद्धी नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं रयणिपुहुत्तं उक्कोसेणवि रयणिपुहुत्तं ठिई जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणवि वासपुहुत्तं एवं अणुबंधोवि सेसं जहा ओहियाणं संवेहो सव्वो उव(जुंजि)ऊण भाणियव्वो ४-५-६ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ तस्सवि तिसुवि गमएसु इमं नाणत्तं-सरीरोगाहणा जहन्नेणं पंचधणुसयाइं उक्कोसेणवि पंचधणुसयाइं, ठिई जहन्नेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी एवं अणुबंधोवि सेसं जहा पढमगमए नवरं नेरइयट्ठि(ई)इं कायसंवेहं च जाणेज्जा ९ एवं जाव छट्ठपुढवी नवरं तच्चाए आढवेत्ता एक्केक्कं संघयणं परिहायइ जहेव तिरिक्खजोणियाणं कालादेसोवि तहेव नवरं मणुस्सट्ठिइं भाणियव्वा ॥ पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए अहेसत्तमापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीसं सागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ते णं भंते ! जीवा एगसम- एवं अवसेसो सो चेव सक्करप्पभापुढविगमओ नेयव्वो नवरं पढमं संघयणं इत्थिवेयगा न उववज्जंति सेसं तं चेव जाव अणुबंधोत्ति भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं

मणुस्से णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से ण भंते ! कइसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, त०–रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए, पज्जत्तसखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से ण भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए से ण भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेण सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ? गोयमा ! जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा (वा) उववज्जति, सघयणा छ, सरीरोगाहणा जहन्नेण अगुलपुहुत्तं उक्कोसेणं पंचधणुहसयाइ, एवं सेस जहा सन्निपचिदियतिरिक्खजोणियाण जाव भवादेसोत्ति, नवर चत्तारि णाणा तिन्नि अन्नाणा भयणाए, छ समुग्घाया केवलिवज्जा, ठिई अणुबधो य जहन्नेण मासपुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी सेस तं चेव, कालादेसेणं जहन्नेण दसवाससहस्साइ मासपुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइय जाव करेज्जा १, सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो सा चेव वत्तव्वया नवरं कालादेसेण जहन्नेण दसवाससहस्साइ मास पुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ एवइय जाव करेज्जा २, सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवरं कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम मासपुहुत्तमब्भहिय उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइ चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइय जाव करेज्जा ३, सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ एस चेव वत्तव्वया नवरं इमाइ पच नाणत्ताइं-सरीरोगाहणा जहन्नेगं अगुलपुहुत्त उक्कोसेणवि अगुलपुहुत्त, तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा भयणाए, पच समुग्घाया आइल्ला, ठिई अणुबधो य जहन्नेण मासपुहुत्त उक्कोसेणवि मासपुहुत्त सेस त चेव जाव भवादेसोत्ति, कालादेसेण जहन्नेग दसवाससहस्साइं मासपुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहिं मासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइय जाव करेज्जा ४। सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया चउत्थगमगसरिसा णेयव्वा नवरं कालादेसेणं जहन्नेण दसवाससहस्साइ मासपुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेण चत्तालीस वाससहस्साइं चउहिं मासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइय जाव करेज्जा ५। सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव गमगो नवरं कालादेसेण जहन्नेग सागरोवम मासपुहुत्तमब्भहिय उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं मासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइ एवइय जाव करेज्जा ६। सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सो चेव पढमगमओ णेयव्वो नवर सरीरोगाहणा जहन्नेणं पंचधणुहसयाइं उक्कोसेणवि पचधणुहसयाइं, ठिई जहन्नेण

कालादेसेण जहन्नेण बावीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं एवइयं जाव करेज्जा १, सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवरं नेरइयट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा २, सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवरं संवेहं च जाणेज्जा ३, सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ तस्सवि तिसुवि गमएसु एस चेव वत्तव्वया नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं रयणिपुहुत्तं उक्कोसेणवि रयणिपुहुत्तं, ठिई जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणवि वासपुहुत्तं एवं अणुबंधोवि, संवेहो उवउज्जिऊण भाणियव्वो ६। सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ तस्सवि तिसुवि गमएसु एस चेव वत्तव्वया नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं पंचधणुसयाइं उक्कोसेणवि पंचधणुसयाइं, ठिई जहन्नेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी एवं अणुबंधोवि णवसुवि एएसु गमएसु नेरइयट्ठि(ठि)इं संवेहं च जाणेज्जा, सव्वत्थ भवग्गहणाइं दोन्नि जाव णवमगमए कालादेसेण जहन्नेण तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं उक्कोसेणवि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं एवइयं कालं सेवेज्जा एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा ९। सेवं भंते! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ६९६ ॥ **चउवीसइमस्स सयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

रायगिहे जाव एवं वयासी—असुरकुमारा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख० मणुस्से० देवेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख० मणुस्सेहिंतो उववज्जंति नो देवेहिंतो उववज्जंति, एवं जहेव नेरइयउद्देसए जाव पज्जत्तअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते णं भंते! जीवा एवं रयणप्पभागमगसरिसा णववि गमा भाणियव्वा नवरं जाहे अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ भवइ ताहे अज्झवसाणा पसत्था णो अप्पसत्था तिसुवि गमएसु अवसेसं तं चेव ९॥ जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय जाव उववज्जंति असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति? गोयमा! संखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति, असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! जहन्नेण दसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते णं भंते! जीवा एगसमएणं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण संखेज्जा

जहण्णेणं तिपलिओव० उक्कोसेणवि तिपलिओव० एस चेव वत्तव्वया नवर कालादेसेण जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं उक्कोसेणवि छप्पलिओवमाइ एवइय० ९ ॥ जइ सखेज्जवासाउयसन्निपंचिंदिय जाव उववज्जति किं जलचर० एव जाव पज्जत्तसखेज्जवासाउयसन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से ण भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेण साइरेगसागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते ण भंते ! जीवा एगसमएण एव एएसिं रयणप्पभपुढविगमगसरिसा नव गमगा णेयव्वा, नवर जाहे अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ भवइ ताहे तिसुवि गमएसु इमं णाणत्तं चत्तारि लेस्साओ अज्झवसाणा पसत्था नो अप्पसत्था सेस तं चेव संवेहो साइरेगेण सागरोवमेण कायव्वो ९ ॥ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं सन्निमणुस्सेहिंतो उ० असन्निमणुस्सेहिंतो उ० ? गोयमा ! सन्निमणुस्सेहिंतो उ० नो असन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जति, जइ सन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जति किं सखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जति असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! सखेज्जवासाउय जाव उववज्जति असखेज्जवासाउय जाव उववज्जति, असखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से ण भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से ण भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, एव असखेज्जवासाउयतिरिक्खजोणियसरिसा आइल्ला तिन्नि गमगा नेयव्वा, नवरं सरीरोगाहणा पढमबिइएसु गमएसु जहन्नेण साइरेगाइ पचधणुहसयाइ उक्कोसेण तिन्नि गाउयाइं सेस त चेव, तइयगमे ओगाहणा जहन्नेण तिन्नि गाउयाइ उक्कोसेणवि तिन्नि गाउयाइ सेस जहेव तिरिक्खजोणियाण ३, सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ तस्सवि जहन्नकालट्ठिईयतिरिक्खजोणियसरिसा तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं सरीरोगाहणा तिसुवि गमएसु जहण्णेण साइरेगाइ पचधणुहसयाइ उक्कोसेणवि साइरेगाइ पचधणुहसयाइ सेसं तं चेव ६, सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ तस्सवि ते चेव पच्छिल्लगा तिन्नि गमगा भाणियव्वा नवरं सरीरोगाहणा तिसुवि गमएसु जहन्नेण तिन्नि गाउयाइ उक्कोसेणवि तिन्नि गाउयाइं अवसेस त चेव ९ ॥ जइ सखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सेहिंतो उववज्जति किं पज्जत्तसखेज्जवासाउय० अपज्जत्तसखेज्ज जाव उववज्जति ? गोयमा ! पज्जत्तसखेज्ज० णो अपज्जत्तसखेज्ज०, पज्जत्तसखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से ण भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से ण भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेण साइरेगसागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते णं भंते ! जीवा एव जहेव

साउयसन्निमणुस्से ण भंते ! जे भविए णागकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जइ ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेण देसूणदोपलिओवमट्ठिईएसु एव जहेव असखेज्जवासाउयाण तिरिक्खजोणियाण नागकुमारेसु आइल्ला तिन्नि गमगा तहेव इमस्सवि, नवरं पढमबिइएसु गमएसु सरीरोगाहणा जहन्नेण साइरेगाइ पचधणुहसयाइं उक्कोसेण तिन्नि गाउयाइ, तइयगमे ओगाहणा जहन्नेण देसूणाइ दो गाउयाइ उक्कोसेण तिन्नि गाउयाइ सेस त चेव ३, सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ तस्स तिसुवि गमएसु जहा तस्स चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव निरवसेस ६, सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ तस्स तिसुवि गमएसु जहा तस्स चेव उक्कोसकालट्ठिईयस्स असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स नवर णागकुमारट्ठिइं सवेह च जाणेज्जा, सेस त चेव ९ ॥ जइ सखेज्जवासाउयसन्निमणु० किं पज्जत्तसखेज्ज० अपज्जत्तसखेज्ज० ? गोयमा ! पज्जत्तसखेज्ज० णो अपज्जत्तसखेज्ज०, पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से ण भते ! जे भविए णागकुमारेसु उववज्जित्तए से ण भंते ! केवइ० ? गोयमा ! जहन्नेण दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेण देसूणदोपलिओवमट्ठिईएसु उ० एव जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स सच्चेव लद्धी निरवसेसा नवसु गमएसु णवर णागकुमारट्ठिइ सवेह च जाणेज्जा, सेव भते ! २ त्ति ॥ ६९८ ॥ **चउवीसइमस्स सयस्स तइओ उद्देसो समत्तो ॥**

अवसेसा सुवन्नकुमाराई जाव थणियकुमारा एएवि अट्ठ उद्देसगा जहेव नागकुमाराण तहेव निरवसेसा भाणियव्वा, सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥ ६९९ ॥

चउवीसइमस्स सयस्स एक्कारसमो उद्देसो समत्तो ॥

पुढविकाइया ण भते ! कओहिंतो उववज्जति किं नेरइएहिंतो उववज्जति तिरिक्ख० मणु० देवेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जति तिरिक्ख० मणु० देवेहिंतोवि उववज्जति, जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उ० किं एगिंदियतिरिक्खजोणिए० एवं जहा वक्कंतीए उववाओ जाव जइ बायरपुढविक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं पज्जत्तबादर जाव उववज्जति अपज्जत्तबादरपुढवि जाव उ० ? गोयमा ! पज्जत्तबादरपुढवि० अपज्जत्तबादरपुढवि जाव उववज्जंति, पुढविक्काइए णं भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए से ण भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते ण भते ! जीवा एगसमएण पुच्छा, गोयमा ! अणुसमय अविरहिया असखेज्जा उववज्जति, छेवट्ठसघयणी, सरीरोगाहणा जहन्नेण अगुलस्स असंखेज्जइभाग उक्कोसेणवि अगुलस्स असखेज्जइभाग, मसूरचदसंठिया, चत्तारि लेस्साओ, णो

चेव सत्तमगमगवत्तव्वया जाणियव्वा जाव भवादेसोत्ति, कालादेसेण जहण्णेण चोयालीस वाससहस्साइं उक्कोसेण छावत्तरिवाससहस्सुत्तर मयसहस्स एवइयं० ९ ॥ जइ आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं सुहुमआउ० वादर-आउ० एव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविक्काइयाण, आउक्काइयाण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए से ण भते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेण बावीस वाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, एव पुढविक्काइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा ९, नवरं थिवुगबिंदुसठिए, ठिई जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सत्त वाससहस्साइ, एव अणुबधोवि एव तिसुवि गमएसु, ठिई सवेहो तइयछट्ठसत्तमट्ठमणवमगमएसु भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्ग-हणाइ उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ, सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइ उक्कोसेणं असंखेज्जाइ भवग्गहणाइ, तइयगमए कालादेसेण जहन्नेण बावीस वासस-हस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण सोलसुत्तरं वाससयसहस्स एवइय०, छट्ठे गमए कालादेसेण जहन्नेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण अट्ठासीइ वाससहस्साइ चउहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ एवइय०, सत्तमे गमए कालादेसेण जहन्नेण सत्त वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेणं सोलसुत्त-रवाससयसहस्स एवइय०, अट्ठमे गमए कालादेसेणं जहन्नेण सत्त वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण अट्ठावीस वाससहस्साइ चउहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ एवइय०, णवमे गमए भवादेसेण जहन्नेण दो भवग्गहणाइ उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहन्नेण एगूणतीस वाससहस्साइ उक्कोसेण सोलसु-त्तर वाससयसहस्स एवइय०, एव णवसुवि गमएसु आउक्काइयठिई जाणियव्वा ९ ॥ जइ तेउक्काइएहिंतो उववज्जति तेउक्काइयाणवि एस चेव वत्तव्वया नवर नवसुवि गमएसु तिन्नि लेस्साओ तेउक्काइयाण सु(सू)ईकलावसठिया ठिई जाणियव्वा तइय-गमए कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण अट्ठासीइ वाससहस्साइ बारसहिं राइदिएहिं अब्भहियाइ एवइयं एव सवेहो उवजुजि-ऊण भाणियव्वो ९॥ जइ वाउक्काइएहिंतो उववज्जति वाउक्काइयाणवि एवं चेव णव गमगा जहेव तेउक्काइयाण णवर पडागासठिया प० सवेहो वाससहस्सेहिं कायव्वो तइयगमए कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेण एग वाससयसहस्सं एव सवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ॥ जइ वणस्सइ-काइएहिंतो उववज्जति वणस्सइकाइयाण आउकाइयगमगसरिसा णव गमगा भाणियव्वा नवरं णाणासठिया सरीरोगाहणा प० पढमएसु पच्छिल्लएसु

बारस संवच्छराई उक्कोसेणवि बारस संवच्छराई, एवं अणुबंधोवि, भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाई उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाई, कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्वं जाव णवमे गमए जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं बारसहिं संवच्छरेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहिं अब्भहियाइं एवइय० ९ ॥ जइ तेइंदिएहिंतो पुढविकाइएसु उववज्जन्ति एवं चेव नव गमगा भाणियव्वा नवरं आइल्लेसु तिसुवि गमएसु सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं, तिन्नि इंदियाइं, ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एगूणपन्न राइंदियाइं, तइयगमए कालादेसेणं जहन्नेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं छन्नउइं राइंदियसयमब्भहियाइं एवइय०, मज्झिमगा तिन्नि गमगा तहेव पच्छिमगावि तिन्नि गमगा तहेव नवरं ठिई जहन्नेणं एगूणपन्नं राइंदियाइं उक्कोसेणवि एगूणपन्नं राइंदियाइं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ९ ॥ जइ चउरिंदिएहिंतो उववज्जन्ति एवं चेव चउरिंदियाणवि नव गमगा भाणियव्वा नवरं एएसु चेव ठाणेसु नाणत्ता भाणियव्वा सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं, ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा एवं अणुबंधोवि, चत्तारि इंदियाइं सेसं तं चेव जाव नवमगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं छहिं मासेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउवीसाए मासेहिं अब्भहियाइं एवइय० ९ ॥ जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति असन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिए०? गोयमा ! सन्निपंचिंदिय०, असण्णिपंचिंदिय०, जइ असण्णिपंचिंदिय जाव उ० किं जलचरेहिंतो उववज्जंति जाव किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतोवि उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतोवि उववज्जंति, असन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ०? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं, ते णं भंते ! जीवा एवं जहेव बेइंदियस्स ओहियगमए लद्धी तहेव नवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, पंचिंदिया, ठिई अणुबंधो य जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी सेसं तं चेव, भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीईए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ एवइय० णवसुवि गमएसु कायसंवेहो भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्वं, नवरं मज्झिमएसु तिसु गमएसु जहेव बेइंदियस्स

सेण पुव्वकोडी एव अणुबंधोवि, सवेहो नवसु गमएसु जहेव सन्निपंचिंदियस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु लद्धी जहेव सन्निपंचिंदियस्स म० सेस तं चेव निरवसेस, पच्छिल्ला तिन्नि गमगा जहा एयस्स चेव ओहिया गमगा नवरं ओगाहणा जहण्णेणं पचधणुहसयाइं उक्कोसेणवि पंच धणुहसयाइ, ठिई अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी सेस तहेव नवर पच्छिल्लएसु गमएसु सखेज्जा उववज्जति नो असखेज्जा उववज्जंति ॥ जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति वाणमंतर० जोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतोवि उववज्जति जाव वेमाणियदेवेहिंतोवि उववज्जति, जइ भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उ० ? गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति, असुरकुमारे ण भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ? गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वावीस वाससहस्साइ ठिई, ते ण भंते ! जीवा पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति, तेसि ण भंते ! जीवाण सरीरगा किंसघयणी प० ? गोयमा ! छण्हं सघयणाण असघयणी जाव परिणमति, तेसि ण भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा ? गोयमा ! दुविहा प०, तं०-भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य, तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेण सत्त रयणीओ, तत्थ ण जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेणं जोयणसयसहस्स, तेसि ण भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसठिया प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तं०-भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य, तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते समचउरंससठाणसठिया प०, तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते णाणासठाणसठिया प०, लेस्साओ चत्तारि, दिट्ठी तिविहावि, तिन्नि णाणा नियम, तिन्नि अन्नाणा भयणाए, जोगो तिविहोवि, उवओगो दुविहोवि, चत्तारि सन्नाओ, चत्तारि कसाया, पच इंदिया, पंच समुग्घाया, वेयणा दुविहावि, इत्थिवेदगावि पुरिसवेदगावि णो णपुसगवेदगा, ठिई जहन्नेणं दसवाससहस्साइ उक्कोसेण साइरेग सागरोवमं, अज्झवसाणा असखेज्जा पसत्थावि अप्पसत्थावि, अणुबंधो जहा ठिई, भवादेसेण दो भवग्गहणाई, कालादेसेणं जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेण साइरेगं सागरोवमं वावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय एवइय०, एवं णववि गमा णेयव्वा नवरं मज्झिल्लएसु पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु असुरकुमाराण ठिइविसेसो जाणियव्वो सेसा ओहिया चेव

साइरेगं पलिओवम उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं सेस तं चेव । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ७०२ ॥ **चउवीसइमे सए बारहमो उद्देसो समत्तो ॥**

आउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? एव जहेव पुढविक्काइयउद्देसए जाव पुढविक्काइए ण भंते ! जे भविए आउक्काइएसु उववज्जित्तए से ण भंते ! केवइ० ? गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेणं सत्तवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, एवं पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो भाणियव्वो णवरं ठिइं सवेह च जाणेज्जा, सेस तहेव, सेव भते ! २ त्ति ॥ ७०३ ॥ **चउवीसइमे सए तेरहमो उद्देसो समत्तो ॥**

तेउक्काइया ण भंते ! कओहिंतो उववज्जति ? एव (णवर) पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो उद्देसो भाणियव्वो नवर ठिइं सवेह च जाणेज्जा, देवेहिंतो ण उववज्जति, सेस त चेव । सेवं भते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ७०४ ॥ **चउवीसइमस्स सयस्स चउद्दसमो उद्देसो समत्तो ॥**

वाउक्काइया ण भते ! कओहिंतो उववज्जंति ? एव जहेव तेउक्काइयउद्देसओ तहेव नवरं ठिइं सवेह च जाणेज्जा । सेव भंते ! २ त्ति ॥ ७०५ ॥ **चउवीसइमे सए पण्णरहमो उद्देसो समत्तो ॥**

वणस्सइकाइया ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? एवं पुढविक्काइयसरिसो उद्देसो नवर जाहे वणस्सइकाइया वणस्सइकाइएसु उववज्जन्ति ताहे पढमबिइयचउत्थपचमेसु गमएसु परिमाण अणुसमय अविरहियं अणता उववज्जति, भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ उक्कोसेण अणंताइ भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता उक्कोसेण अणत काल एवइय०, सेसा पंच गमा अट्ठभवग्गहणिया तहेव नवर ठिइं सवेह च जाणेज्जा । सेवं भंते ! २ त्ति ॥७०६॥ **चउवीसइमस्स सयस्स सोलहमो उद्देसो समत्तो ॥**

बेइंदिया ण भते ! कओहिंतो उववज्जंति जाव पुढविकाइए णं भते ! जे भविए बेइंदिएसु उववज्जित्तए से ण भते ! केवइ० सच्चेव पुढविकाइयस्स लद्धी जाव कालादेसेण जहन्नेण दो अतोमुहुत्ता उक्कोसेण संखेज्जाइ भवग्गहणाइं एवइयं०, एव तेसु चेव चउसु गमएसु सवेहो सेसेसु पंचसु गमएसु तहेव अट्ठ भवा । एव जाव चउरिंदिएण सम चउसु सखेज्जा भवा, पचसु अट्ठ भवा, पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु समं तहेव अट्ठ भवा, देवे चेव न उववज्जति, ठिइं सवेह च जाणेज्जा । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ७०७ ॥ २४-१७ ॥ तेइंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति ? एव तेइंदियाणं जहेव बेइंदियाण उद्देसो नवर ठिइं सवेह च जाणेज्जा, तेउक्काइएसु सम तइयगमो उक्कोसेणं अट्ठुत्तराइ बेराइंदियसयाइं बेइंदिएहिं समं तइयगमे

नवइ, सेस त चेव सव्वत्थ ठिइं सवेहं च जाणेज्जा ९ ॥ सक्करप्पभापुढविनेरइए णं भंते ! जे भविए एवं जहा रयणप्पभाए णव गमगा तहेव सक्करप्पभाएवि, नवरं सरीरोगाहणा जहा ओगाहणासठाणे, तिन्नि णाणा तिन्नि अन्नाणा नियमं, ठिई अणुवधो य पुव्वभणिया, एवं णववि गमगा उवजुजिऊग भाणियव्वा, एवं जाव छट्ठपुढवी, नवर ओगाहणा लेस्सा ठिई अणुवंधो सवेहो य जाणियव्वा, अहेसत्तमापुढवीनेरइए ण भते ! जे भविए एवं चेव णव गमगा, णवरं ओगाहणा लेस्सा ठिई अणुवधा जाणियव्वा, सवेहो भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ उक्कोसेण छब्भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेण बावीसं सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइ तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ एवइयं०, आइल्लएसु छसुवि गमएसु जहन्नेणं दो भवग्गहणाइ उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं, पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहन्नेण दो भवग्गहणाइ उक्कोसेण चत्तारि भवग्गहणाइं, लद्धी नवसुवि गमएसु जहा पढमगमए नवरं ठिईविसेसो कालादे(सेण)सो य बिइयगमए जहन्नेण बावीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ तिहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं एवइय काल०, तइयगमए जहन्नेग बावीस सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइ उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, चउत्थगमए जहन्नेण बावीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइ तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, पंचमगमए जहन्नेगं बावीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ तिहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ, छट्ठगमए जहन्नेगं बावीसं सागरोवमाइ पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, सत्तमगमए जहन्नेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं (अतोमुहुत्तेहिं) पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, अट्ठमगमए जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ दोहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, णवमगमए जहन्नेण तेत्तीस सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइ उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइय० ९ ॥ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उ० एव उववाओ जहा पुढविकाइयउद्देसए जाव पुढविकाइए ण भते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से ण भते ! केवइ० ? गोयमा ! जहन्नेग अतोमुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेण पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा, ते ण भते ! जीवा एव परिमाणाईया अणुवधपज्जवसाणा जच्चेव अप्पणो सट्ठाणे वत्तव्वया सच्चेव पचिंदियतिरिक्खजोणिएसुवि उववज्जमाणस्स

ठिई चउत्थगमो जहन्नेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी कालादेसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं ७ सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ८ सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो जहन्नेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि तिपलिओवमट्ठिईएसु अवसेसं तं चेव नवरं परिमाणं ओगाहणा य जहा एयस्सेव तइयगमए, भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं उक्कोसेणवि तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं एवइयं ९। जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सन्निमणु० असन्निमणु० ? गोयमा ! सन्निमणु० असन्निमणु०। असन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइकाल० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जंति, लद्धी से तिसुवि गमएसु जहा पुढविकाइयस्स उववज्जमाणस्स संवेहो जहा एत्थ चेव असन्निपंचिंदियस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहेव निरवसेसो भाणियव्वो जइ सन्निमणुस्स० किं संखेज्जवासाउयसन्निमणुस्स० असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्स० ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय० नो असंखेज्जवासाउय० जइ संखेज्ज० किं पज्जत्त० अपज्जत्त० ? गोयमा ! पज्जत्त० अप-ज्जत्तसंखेज्जवासाउय० सन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ते णं भंते ! लद्धी से जहा एयस्सेव सन्निमणुस्सस्स पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स पढमगमए जाव भवादेसोत्ति कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं १ सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २, सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो जहन्नेणं ति(पि)पलिओवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि तिपलिओवमट्ठिईएसु सच्चेव वत्तव्वया नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलपुहुत्तं उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं, ठिई जहन्नेणं मासपुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं अणुबंधोवि भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं मासपुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं एवइयं ३, सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ जहा सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु वत्तव्वया भणिया तहेव

अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया नवर ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी सेस तं चेव, कालादेसेणं जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहिय एवइय० ७, सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया जहा सत्तमगमए नवरं कालादेसेण जहन्नेण पुव्वकोडी अतोमुहुत्तमब्भहिया उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ एवइय० ८, सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो जहन्नेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग, एव जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असन्निस्स नवमगमए तहेव निरवसेस जाव कालादेसोत्ति, नवरं परिमाण जहा एयस्सेव तइयगमे सेस त चेव ९॥ जइ सन्निपचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं सखेज्जवासा० असंखेज्जवासा० ? गोयमा ! सखेज्ज० णो असखेज्ज०, जइ सखेज्जवासाउय जाव किं पज्जत्तसखेज्ज० अपज्जत्तसखेज्ज० ? दोसुवि, सखेज्जवासाउयसन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए पचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से ण भते ! केवइ० ? गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते ण भते ! अवसेस जहा एयस्स चेव सन्निस्स रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स पढमगमए, नवर ओगाहणा जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेण जोअणसहस्स सेस त चेव जाव भवादेसोत्ति, कालादेसेण जहन्नेण दो अतोमुहुत्ता उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाइ एवइयं० १, सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवर कालादेसेण जहन्नेण दो अतोमुहुत्ता उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २, सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया नवरं परिमाण जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं सखेज्जा उववज्जंति, ओगाहणा जहन्नेण अगुलस्स असंखेज्जइभाग उक्कोसेण जोयणसहस्स सेस त चेव जाव अणुबधोत्ति, भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइ ३, सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा, लद्धी से जहा एयस्स चेव सन्निपचिंदियस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु सच्चेव इहवि मज्झिमेसु तिसु गमएसु कायव्वा, सचेहो जहेव एत्थ चेव असन्निस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु, सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ जहा पढमगमए णवर

एयस्सवि मज्झिमेसु तिसु गमएसु निरवसेसा भाणियव्वा, नवरं परिमाणं उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति, सेसं तं चेव ६, सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया नवरं ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुहसयाइं उक्कोसेणवि पंच धणुहसयाइं, ठिई अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी, सेसं तहेव जाव भवादेसोत्ति, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं एवइय० ७, सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवरं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ८, सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो जहण्णेणं तिन्नि पलिओवमाइं उक्कोसेणवि तिन्नि पलिओवमाइं, एस चेव लद्धी जहेव सत्तमगमए, भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं उक्कोसेणवि तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं एवइयं० ९ ॥ जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति वाणमंतर० जोइसिय० वेमाणियदेवेहिंतो उ० ? गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो उ० जाव वेमाणियदेवेहिंतोवि उ०, जइ भवणवासि जाव उ० किं असुरकुमारभवण० जाव थणियकुमारभवण० ? गोयमा ! असुरकुमार० जाव थणियकुमारभवण०, असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइय० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा, असुरकुमाराणं लद्धी णवसुवि गमएसु जहा पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स एवं जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी भवादेसेणं सव्वत्थ अट्ठ भवग्गहणाइं उक्कोसेणं जहण्णेणं दोन्नि, भवट्ठिइं संवेहं च सव्वत्थ जाणेज्जा ९॥ नागकुमारा णं भंते ! जे भविए एस चेव वत्तव्वया नवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा, एवं जाव थणियकुमारे ९। जइ वाणमंतरेहिंतो उ० किं पिसाय० तहेव जाव वाणमंतरे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्ख० एवं चेव नवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ९, जइ जोइसिय० उववाओ तहेव जाव जोइसिए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्ख० एस चेव वत्तव्वया जहा पुढविक्काइयउद्देसए भवग्गहणाइं णवसुवि गमएसु अट्ठ जाव कालादेसेणं जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं चउहि य वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं एवइय०, एवं नवसुवि गमएसु नवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ९॥ जइ वेमाणियदेवे० किं कप्पोववन्नग० कप्पातीतवेमाणिय० ? गोयमा ! कप्पोववण्णगवेमाणिय० नो कप्पातीतवेमाणिय०, जइ कप्पोववण्णग० जाव सहस्सारकप्पोववण्णगवेमाणियदेवेहिंतोवि उववज्जंति, नो आणय जाव णो

यमाइं ॥ जइ कप्पातीतवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति किं गेवेज्जकप्पातीत अणुत्तरोववाइयकप्पातीत जाव उ० ? गोयमा ! गेवेज्ज० अणुत्तरोववाइय० जइ गेवेज्ज० किं हेट्ठिम २ गेविज्जकप्पातीत जाव उवरिम २ गेवेज्ज० ? गोयमा ! हेट्ठिम २ गेवेज्ज जाव उवरिम २ गेवेज्ज० गेवेज्जगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइय० ? गोयमा ! जहन्नेणं वासपुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उ० अवसेसं जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया नवरं ओगाहणा गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरए से जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं दो रयणीओ संठाणं गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरए से समचउरंससंठाणसंठिए प० पंच समुग्घाया प० तं० - वेयणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए णो चेव णं वेउव्वियतेयगसमुग्घाएहिंतो समोहणिंसु वा समोहणंति वा समोहणिस्संति वा ठिई अणुबंधो जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं, सेसं तं चेव कालादेसेणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं तेणउइं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं० एवं सेसेसुवि अट्ठगमएसु नवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ॥ जइ अणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणिय जाव उ० किं विजयअणुत्तरोववाइय वेजयंतअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्ध ? गोयमा ! विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय० विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइय० ? एवं जहेव गेवेज्जदेवाणं नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं एगा रयणी, सम्मद्दिट्ठी णो मिच्छादिट्ठी णो सम्मामिच्छादिट्ठी णाणी णो अन्नाणी नियमं तिनाणी तं० - आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी ठिई जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, सेसं तहेव भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं० एवं सेसावि अट्ठ गमगा भाणियव्वा नवरं ठिइं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा सेसं तं चेव ॥ सव्वट्ठसिद्धगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए सा चेव विजयादिदेववत्तव्वया भाणियव्वा नवरं ठिई अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं एवं अणुबंधोवि सेसं तं चेव भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं एवइयं ॥ सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं

जहन्नकालट्ठिईओ भवइ ताहे पढमगमए अज्झवसाणा पसत्थावि अप्पसत्थावि, विइयगमए अप्पसत्था, तइयगमए पसत्था भवंति सेसं तं चेव निरवसेसं ९ ॥ जइ आउक्काइए एवं आउक्काइयाणवि, एवं वणस्सइकाइयाणवि, एवं जाव चउरिंदियाणवि, असन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिया सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिया असन्निमणुस्सा सन्निमणुस्सा य एए सव्वेवि जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए तहेव भाणियव्वा, नवरं एयाणि चेव परिमाणअज्झवसाणणाणत्ताणि जाणिज्जा, पुढविकाइयस्स एत्थ चेव उद्देसए भणियाणि सेसं तहेव निरवसेसं ॥ जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति वाणमंतर० जोइसिय० वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! भवणवासि० जाव वेमाणिय जाव उ०, जइ भवण० किं असुर० जाव थणिय० ? गोयमा ! असुर० जाव थणिय०, असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ? गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा, एवं जच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव एत्थवि भाणियव्वा, नवरं जहा तहिं जहन्नगं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु तहा इह मासपुहुत्तट्ठिईएसु, परिमाणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति, सेसं तं चेव, एवं जाव ईसाणदेवोत्ति, एयाणि चेव णाणत्ताणि सणंकुमारादीया जाव सहस्सारोत्ति जहेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए, नवरं परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति, उववाओ जहन्नेणं वासपुहुत्तट्ठिईएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जंति, सेसं तं चेव संवेहं वा(मा)सपुहुत्तपुव्वकोडीसु करेज्जा ॥ सणंकुमारे ठिई चउगुणिया अट्ठावीसं सागरोवमा भवंति, माहिंदे ताणि चेव साइरेगाणि, बंभलोए चत्तालीसं, लंतए छप्पन्नं, महासुक्के अट्ठसट्ठिं, सहस्सारे बावत्तरिं सागरोवमाइं एसा उक्कोसा ठिई भाणियव्वा जहन्नट्ठिइंपि चउ गुणेज्जा ९ ॥ आणयदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ? गोयमा ! जहन्नेणं वासपुहुत्तट्ठिईएसु उववज्जेज्जा उक्कोसेणं पुव्वकोडिठिईएसु, ते णं भंते ! एवं जहेव सहस्सारदेवाणं वत्तव्वया नवरं ओगाहणा ठिई अणुबंधो य जाणेज्जा, सेसं तं चेव, भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं सत्तावन्नं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं०, एवं णववि गमगा, नवरं ठिइं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा, एवं जाव अच्चुयदेवो, नवरं ठिइं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा, पाणयदेवस्स ठिई तिगुणिया सट्ठिं सागरोवमाइं, आरणगस्स तेवट्ठिं सागरोवमाइं, अच्चुयदेवस्स छावट्ठिं सागरो-

तहेव नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं एवइयं १ सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु एस चेव वत्तव्वया नवरं कालादेसं जाणेज्जा २ सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवरं ठिई जहन्नेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, एवं अणुबंधोवि, कालादेसेणं जहन्नेणं दो पलिओवमाइं दोहिं वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं ३, सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा उक्कोसेणवि अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ते णं भंते ! जीवा एगसमए एस चेव वत्तव्वया नवरं ओगाहणा जहन्नेणं धणुपुहुत्तं उक्कोसेणं सातिरेगाइं अट्ठारसधणुसयाइं, ठिई जहन्नेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणवि अट्ठभागपलिओवमं एवं अणुबंधोवि सेसं तहेव कालादेसेणं जहन्नेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं उक्कोसेणवि दो अट्ठभागपलिओवमाइं एवइयं जहन्नकालट्ठिईयस्स एस चेव एक्को गमो ४ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सा चेव ओहिया वत्तव्वया नवरं ठिई जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं उक्कोसेणवि तिन्नि पलिओवमाइं एवं अणुबंधोवि सेसं तं चेव एवं पच्छिमा तिन्नि गमगा नेयव्वा नवरं ठिई संवेहं च जाणेज्जा एए सत्त गमगा। जइ संखेज्जवासाउयसन्निपंचिंदियति० संखेज्जवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नववि गमा भाणियव्वा नवरं जोइसियठिइं संवेहं च जाणेज्जा सेसं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति भेदो तहेव जाव असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! एवं जहा असंखेज्जवासाउयसन्निपंचिंदियस्स जोइसिएसु चेव उववज्जमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साणवि नवरं ओगाहणाविसेसो पढमेसु तिसु गमएसु ओगाहणा जहन्नेणं सातिरेगाइं नव धणुसयाइं उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं, मज्झिमगमए जहन्नेणं सातिरेगाइं नव धणुसयाइं उक्कोसेणवि सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, पच्छिमेसु तिसुवि गमएसु जहन्नेणं तिन्नि गाउयाइं उक्कोसेणवि तिन्नि गाउयाइं, सेसं तहेव निरवसेसं जाव संवेहोत्ति जइ संखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से० संखेज्जवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं जोइसियठिइं संवेहं च जाणेज्जा सेसं तं चेव निरवसेसं। सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ७१३ ॥

चउवीसइमे सए तेवीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

सोहम्मगदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? भेदो

उक्कोसेणवि तेत्तीस सागरोवमाइ वासपुहुत्तमब्भहियाइं एवइय० २। सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालादेसेण जहण्णेणं तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइं उक्कोसेणवि तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ एवइयं०३, एए चेव तिन्नि गमगा सेसा न भण्णंति। सेव भंते! २ त्ति ॥ ७११ ॥ **चउवीसइमे सए एक्कवीसइमो उद्देसो समत्तो ॥**

वाणमन्तरा ण भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख० एवं जहेव णागकुमारउद्देसए असन्नी तहेव निरवसेसं। जइ सन्निपर्चिदिय० जाव असखेज्जवासाउयसन्निपर्चिदिय० जे भविए वाणमतर० से ण भंते! केवइ०? गोयमा! जहन्नेण दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेण पलिओवमट्ठिईएसु सेस त चेव जहा नागकुमारउद्देसए जाव कालादेसेण जहण्णेण साइरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइं एवइय०, सो चेव जहन्न-कालट्ठिईएसु उववन्नो जहेव णागकुमाराणं बिइयगमे वत्तव्वया २, सो चेव उक्कोस-कालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि पलिओवमट्ठिईएसु एस चेव वत्तव्वया नवरं ठिई से जहण्णेण पलिओवमं उक्कोसेण तिन्नि पलिओव-माइ, संवेहो जहण्णेणं दो पलिओवमाइं उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइ एवइय० ३, मज्झिमगमगा तिन्निवि जहेव नागकुमारेसु पच्छिमेसु तिसु गमएसु त चेव जहा नाग-कुमारुद्देसए नवरं ठिइ संवेह च जाणेज्जा, सखेज्जवासाउय तहेव नवर ठिई अणुबंधो संवेह च उभओ ठिईएसु जाणेज्जा, जइ मणुस्स० असखेज्जवासाउयाण जहेव नाग-कुमाराण उद्देसए तहेव वत्तव्वया नवर तइयगमए ठिई जहन्नेणं पलिओवम उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ, ओगाहणा जहण्णेण गाउय उक्कोसेण तिन्नि गाउयाइ सेस त चेव, संवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असखेज्जवासाउयसन्निपर्चिदियाण, सखेज्जवा-साउयसन्निमणुस्से जहेव नागकुमारुद्देसए नवर वाणमतरे ठिई संवेह च जाणेज्जा ९. सेव भंते! २ त्ति ॥ ७१२ ॥ **चउवीसइमे सए बावीसइमो उद्देसो समत्तो ॥**

जोइसिया ण भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइए० भेदो जाव सन्निपर्चिदियति-रिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति नो असन्निपंचिंदियतिरिक्ख०, जइ सन्नि० किं सखेज्ज० असखेज्ज०? गोयमा! संखेज्जवासाउय० असखेज्जवासाउय जाव उ०, असखेज्ज-वासाउयसन्निपर्चिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवइ०? गोयमा! जहन्नेण अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु उक्कोसेण पलिओ-वमवाससयसहस्समब्भहियट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, अवसेस जहा असुरकुमारुद्देसए नवरं ठिई जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं एवं अणुबंधोवि सेस

जहा जोइसियउद्देसए, असखेज्जवासाउयसन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उववज्जित्तए से ण भंते ! केवइकाल० ? गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमट्ठिईएसु उ० उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, ते ण भंते ! अवसेसं जहा जोइसिएसु उववज्जमाणस्स नवरं सम्मद्दिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि णो सम्मामिच्छादिट्ठी, णाणीवि अन्नाणीवि दो णाणा दो अन्नाणा नियमं, ठिई जहण्णेण पलिओवम उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं एवं अणुबंधोवि सेस तहेव, कालादेसेण जहण्णेणं दो पलिओवमाइ उक्कोसेण छप्पलिओवमाइं एवइयं० १, सो चेव जहन्नकालट्ठिईएसु उववन्नो एस चेव वत्तव्वया नवर कालादेसेणं जहन्नेणं दो पलिओवमाइ उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइ एवइयं० २, सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववन्नो जहन्नेणं तिपलिओव० उक्कोसेणवि तिपलिओव० एस चेव वत्तव्वया नवरं ठिई जहन्नेण तिन्नि पलिओवमाइं उक्कोसेणवि तिन्नि पलिओवमाइ सेसं त चेव, कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं उक्कोसेणवि छप्पलिओवमाइं एवइयं० ३, सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ जहण्णेणं पलिओवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि पलिओवमट्ठिईएसु एस चेव वत्तव्वया नवर ओगाहणा जहण्णेणं धणुहपुहुत्त उक्कोसेणं दो गाउयाइ, ठिई जहन्नेणं पलिओवम उक्कोसेणवि पलिओवम सेस तहेव, कालादेसेण जहण्णेणं दो पलिओवमाइं उक्कोसेणंपि दो पलिओवमाइ एवइय० ६, सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ आइल्लगमगसरिसा तिन्नि गमगा णेयव्वा नवरं ठिइ कालादेसं च जाणेज्जा ९ ॥ जइ संखेज्जवासाउयसन्निपंचिंदिय० सखेज्जवासाउयस्स जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव नववि गमगा, नवरं ठिइ सवेह च जाणेज्जा, जाहे य अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ भवइ ताहे तिसुवि गमएसु सम्मद्दिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि णो सम्मामिच्छादिट्ठी, दो नाणा दो अन्नाणा नियम सेस त चेव ॥ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति भेदो जहेव जोइसिएसु उववज्जमाणस्स जाव असंखेज्जवासाउयसन्निमणुस्से ण भंते ! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जित्तए एव जहेव असंखेज्जवासाउयस्स सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स तहेव सत्त गमगा नवरं आइल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहन्नेणं गाउय उक्कोसेण तिन्नि गाउयाइ, तइयगमे जहन्नेण तिन्नि गाउयाइ उक्कोसेणवि तिन्नि गाउयाइ, चउत्थगमए जहन्नेण गाउय उक्कोसेणवि गाउयं, पच्छिमएसु तिसु गमएसु जहण्णेण तिन्नि गाउयाइ उक्कोसेणवि तिन्नि गाउयाइ सेस तहेव निरवसेस ९ ॥ जइ सखेज्जवासाउयसन्निमणुस्सेहिंतो० एवं सखेज्जवासाउयसन्निमणुस्साण जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव णव गमगा भाणियव्वा नवरं सोहम्मगदेवट्ठिइ सवेह च जाणेज्जा, सेसं त चेव ९ ॥ ईसाणदेवा ण भंते ! कओहिंतो

आणयाईसु। गेवेज्जगदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति० एस चेव वत्तव्वया नवरं दो संघयणा, ठिइं संवेहं च जाणेज्जा। विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति० एस चेव वत्तव्वया निरवसेसा जाव अणुबंधोत्ति, नवरं पढमं संघयणं, सेसं तहेव, भवादेसेणं जहन्नेणं तिन्नि भवग्गहणाइं उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं०, एवं सेसावि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा, मणूसे लद्धी णवसुवि गमएसु जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स नवरं पढमं संघयणं। सव्वट्ठसिद्धगदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति० उववाओ जहेव विजयाईणं जाव से णं भंते! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमट्ठिईएसु उक्कोसेणवि तेत्तीसं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, अवसेसा जहा विजयाईसु उववज्जंताणं नवरं भवादेसेणं तिन्नि भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणवि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं० १॥ सो चेव अप्पणा जहन्नकालट्ठिईओ जाओ एस चेव वत्तव्वया नवरं ओगाहणाठिईओ रयणिपुहुत्तवासपुहुत्ताणि सेसं तहेव संवेहं च जाणेज्जा २॥ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ एस चेव वत्तव्वया नवरं ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुहसयाइं उक्कोसेणवि पंच धणुहसयाइं, ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेणवि पुव्वकोडी, सेसं तहेव जाव भवादेसोत्ति, कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं उक्कोसेणवि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं एवइयं कालं सेवेज्जा एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा, एए तिन्नि गमगा सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं। सेवं भंते! २ त्ति भगवं गोयमे जाव विहरइ॥७१४॥ **चउवीसइमस्स सयस्स चउवीसइमो उद्देसो समत्तो॥ चउवीसइमं सयं समत्तं॥**

लेस्सा य १ दव्व २ संठाण ३ जुम्म ४ पज्जव ५ नियंठ ६ समणा य ७ ओहे ८ भविया ९ भविए १० सम्मा ११ मिच्छे य १२ उद्देसा॥१॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी-कइ णं भंते! लेस्साओ प०? गोयमा! छल्लेस्साओ प०, तं०-कण्हलेस्सा जहा पढमसए बिइए उद्देसए तहेव लेस्साविभागो अप्पाबहुगं च जाव चउव्विहाणं देवाणं चउव्विहाणं देवीणं मीसगं अप्पाबहुगंति॥७१५॥ कइविहा णं भंते! संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता? गोयमा! चउद्दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा प०, तं०-सुहुमअपज्जत्तगा १, सुहुमपज्जत्तगा २, बायरअपज्जत्तगा ३, बायरपज्जत्तगा ४, बेइंदिया अपज्जत्तगा ५, बेइंदिया पज्जत्तगा ६, एवं तेइं-

यमीसासरीरकायजोए वेउव्वियसरीरकायजोए वेउव्वियमीसासरीरकायजोए आहारगसरीरकायजोए आहारगमीसासरीरकायजोए कम्मासरीरकायजोए १५॥ एयस्स णं भंते ! पन्नरसविहस्स जहन्नुक्कोसगस्स कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगसरीरस्स जहन्नए जोए १, ओरालियमीसगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे २, वेउव्वियमीसगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ३, ओरालियसरीरस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ४, वेउव्वियसरीरस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ५, कम्मगसरीरस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ६, आहारगमीसगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ७, आहारगमीसगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ८, ओरालियमीसगस्स वेउव्वियमीसगस्स एएसि णं उक्कोसए जोए दोण्हवि तुल्ले असंखेज्जगुणे ९-१०, असच्चामोसमणजोगस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे ११, आहारगसरीरस्स जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे १२, तिविहस्स मणजोगस्स चउव्विहस्स वइजोगस्स एएसि ण सत्तण्हवि तुल्ले जहन्नए जोए असंखेज्जगुणे १९, आहारगसरीरस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २०, ओरालियसरीरस्स वेउव्वियसरीरस्स चउव्विहस्स य मणजोगस्स चउव्विहस्स य वइजोगस्स एएसि ण दसण्हवि तुल्ले उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ३०, सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ७१८ ॥ **पणवीसइमस्स सयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

कइविहा ण भंते ! दव्वा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा दव्वा प०, त०-जीवदव्वा य अजीवदव्वा य, अजीवदव्वा ण भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तंजहा-रूविअजीवदव्वा य अरूविअजीवदव्वा य, एवं एएणं अभिलावेण जहा अजीवपज्जवा जाव से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ ते ण नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता । जीवदव्वा ण भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जीवदव्वा णं नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! असंखेज्जा नेरइया जाव असंखेज्जा वाउक्काइया, वणस्सइकाइया अणंता, असंखेज्जा बेइंदिया एवं जाव वेमाणिया, अणंता सिद्धा, से तेणट्ठेण जाव अणंता ॥ ७१९ ॥ जीवदव्वाण भंते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति नो अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाव हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जीवदव्वा ण अजीवदव्वे परियादियंति अजीव० २ त्ता ओरालियं वेउव्विय आहारग तेयग कम्मग सोइंदियं जाव फासिंदिय मणजोग वइजोगं कायजोग आणापाणुत्तं च निव्व(त्त)त्तियंति, से तेणट्ठेण जाव हव्वमागच्छंति, नेरइयाणं भंते ! अजीवदव्वा परिभोग-

कइ णं भंते ! सठाणा प० ? गोयमा ! छ सठाणा प०, तं०–परिमंडले वट्टे तसे चउरसे आयए अणित्थंथे, परिमडला ण भंते ! सठाणा दव्वट्टयाए किं सखेज्जा असखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो सखेज्जा नो असखेज्जा अणता, वट्टा ण भते ! सठाणा० एव चेव, एव जाव अणित्थंथा, एवं पएसट्टयाएवि, एवं दव्वट्ठपएसट्ठयाएवि, एएसि णं भंते ! परिमंडलवट्टतसचउरंसआययअणित्थंथाण सठाणाण दव्वट्ठयाए पएसट्टयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा परिमडला सठाणा दव्वट्ठयाए, वट्टा सठाणा दव्वट्टयाए सखेज्जगुणा, चउरंसा सठाणा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, तसा सठाणा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, आययसठाणा दव्वट्टयाए सखेज्जगुणा, अणित्थंथा सठाणा दव्वट्टयाए असखेज्जगुणा, पएसट्टयाए–सव्वत्थोवा परिमडला सठाणा पएसट्टयाए, वट्टा सठाणा पएसट्टयाए सखेज्जगुणा, जहा दव्वट्टयाए तहा पएसट्टयाएवि जाव अणित्थंथा सठाणा पएसट्टयाए असखेज्जगुणा, दव्वट्ठपएसट्टयाए सव्वत्थोवा परिमंडला सठाणा दव्वट्टयाए सो चेव गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थया संठाणा दव्वट्टयाए असखेज्जगुणा, अणित्थंथेहिंतो सठाणेहिंतो दव्वट्टयाए (हिंतो) परिमडला सठाणा पएसट्टयाए असखेज्जगुणा, वट्टा सठाणा पएसट्टयाए सखेज्जगुणा, सो चेव पएसट्टयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थंथा सठाणा पएसट्टयाए असखेज्जगुणा ॥७२३॥ कइ ण भते ! सठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! पच सठाणा प०, त०–परिमडले जाव आयए। परिमडला ण भते ! संठाणा किं सखेज्जा असंखेज्जा अणता ? गोयमा ! नो संखेज्जा नो असखेज्जा अणता, वट्टा ण भते ! सठाणा किं सखेज्जा० ? एव चेव, एव जाव आयया। इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए परिमडला सठाणा किं सखेज्जा असखेज्जा अणता ? गोयमा ! नो सखेज्जा नो असखेज्जा अणंता, वट्टा णं भंते ! सठाणा किं सखेज्जा असखेज्जा०? एव चेव, एवं जाव आयया। सक्करप्पभाए ण भंते ! पुढवीए परिमडला सठाणा एव चेव, एवं जाव आयया, एवं जाव अहेसत्तमाए। सोहम्मे णं भते ! कप्पे परिमंडला संठाणा एवं चेव, एवं जाव अच्चुए, गेवेज्जगविमाणाण भते ! परिमडलसठाणा एवं चेव, एव अणुत्तरविमाणेसुवि, एव ईसिप्पब्भाराएवि ॥ जत्थ ण भंते ! एगे परिमंडले सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमडला सठाणा किं सखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो सखेज्जा नो असखेज्जा अणंता। वट्टा ण भंते ! सठाणा किं सखेज्जा असंखेज्जा अणता ? एव चेव, एव जाव आयया। जत्थ ण भते ! एगे वट्टे सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमंडला सठाणा एव चेव, वट्टा सठाणा एव चेव, एव जाव आयया, एव एक्केक्केण सठाणेण पंचवि चारेयव्वा, जत्थ ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे परिमडले सठाणे जवमज्झे तत्थ

भंते ! संठाणे किं कडजुम्मपएसोगाढे जाव कलिओगपएसोगाढे ? गोयमा ! कडजुम्मपएसोगाढे णो तेओयपएसोगाढे णो दावरजुम्मपएसोगाढे णो कलिओगपएसोगाढे ॥ वट्टे णं भंते ! संठाणे किं कडजुम्म पुच्छा गोयमा ! सिय कडजुम्मपएसोगाढे सिय तेओयपएसोगाढे णो दावरजुम्मपएसोगाढे सिय कलिओगपएसोगाढे ॥ तंसे णं भंते ! संठाणे पुच्छा गोयमा ! सिय कडजुम्मपएसोगाढे सिय तेओयपएसोगाढे सिय दावरजुम्मपएसोगाढे णो कलिओगपएसोगाढे । चउरंसे णं भंते ! संठाणे जहा वट्टे तहा चउरंसेवि । आयए णं भंते ! पुच्छा गोयमा ! सिय कडजुम्मपएसोगाढे जाव सिय कलिओगपएसोगाढे । परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपएसोगाढा तेओयपएसोगाढा पुच्छा गोयमा ! ओघादेसेणवि विहाणादेसेणवि कडजुम्मपएसोगाढा णो तेओयपएसोगाढा णो दावरजुम्मपएसोगाढा णो कलिओगपएसोगाढा । वट्टा णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपएसोगाढा पुच्छा गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा णो तेओग णो दावरजुम्म णो कलिओग विहाणादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढावि तेओगपएसोगाढावि णो दावरजुम्मपएसोगाढा कलिओगपएसोगाढावि । तंसा णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मा पुच्छा गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा णो तेओय णो दावरजुम्म णो कलिओगपएसोगाढा विहाणादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढावि तेओगपएसोगाढावि (णो) दावरजुम्मपएसोगाढा णो कलिओगपएसोगाढा । चउरंसा जहा वट्टा, आयया णं भंते ! संठाणा पुच्छा गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा णो तेओयपएसोगाढा णो दावरजुम्मपएसोगाढा णो कलिओगपएसोगाढा विहाणादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढावि जाव कलिओगपएसोगाढावि ॥ परिमंडले णं भंते ! संठाणे किं कडजुम्मसमयट्ठिईए तेओयसमयट्ठिईए दावरजुम्मसमयट्ठिईए कलिओगसमयट्ठिईए ? गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठिईए जाव सिय कलिओगसमयट्ठिईए, एवं जाव आयए । परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मसमयट्ठिईया पुच्छा गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयट्ठिईया जाव सिय कलिओगसमयट्ठिईया, विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयट्ठिईयावि जाव कलिओगसमयट्ठिईयावि एवं जाव आयया ॥ परिमंडले णं भंते ! संठाणे कालवण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे जाव कलिओगे ? गोयमा ! सिय कडजुम्मे एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ठिईए एवं नीलवण्णपज्जवेहिं, एवं पंचहिं वण्णेहिं, दोहिं गंधेहिं, पंचहिं रसेहिं, अट्ठहिं फासेहिं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं ॥ ७२६ ॥ सेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ असंखेज्जाओ अणंताओ ? गोयमा ! नो संखेज्जाओ नो असंखेज्जाओ अणंताओ पाईणपडीणाययाओ णं भंते !

य जुम्मपएसिए य, तत्थ णं जे से ओयपएसिए से जहन्नेणं सत्तावीसइपएसिए सत्तावीसइपएसोगाढे उक्कोसेण अणंतपएसिए तहेव, तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेणं अट्ठपएसिए अट्ठपएसोगाढे प०, उक्कोसेण अणतपएसिए तहेव ॥ आयए णं भंते ! सठाणे कइपएसिए कइपएसोगाढे प० ? गोयमा ! आयए ण संठाणे तिविहे प०, त०-सेढिआयए पयरायए घणायए, तत्थ णं जे से सेढिआयए से दुविहे प०, त०-ओयपएसिए य जुम्मपएसिए य, तत्थ ण जेसे ओयपएसिए से जहण्णेण तिपएसिए तिपएसोगाढे उक्कोसेण अणतपएसिए तं चेव, तत्थ णं जे से जुम्मपएसिए से जहण्णेणं दुपएसिए दुपएसोगाढे उक्कोसेणं अणतपएसिए त चेव, तत्थ णं जे से पयरायए से दुविहे प०, त०-ओयपएसिए य जुम्मपएसिए य, तत्थ ण जे से ओयपएसिए से जहन्नेण पन्नरसपएसिए पन्नरसपएसोगाढे उक्कोसेण अणत० तहेव, तत्थ ण जे से जुम्मपएसिए से जहन्नेण छप्पएसिए छप्पएसोगाढे उक्कोसेण अणंत० तहेव, तत्थ णं जे से घणायए से दुविहे प०, तं०-ओयपएसिए य जुम्मपएसिए य, तत्थ ण जे से ओयपएसिए से जहन्नेण पणयालीसपएसिए पणयालीसपएसोगाढे प०, उक्कोसेण अणंत० तहेव, तत्थ ण जे से जुम्मपएसिए से जहण्णेण बारसपएसिए बारसपएसोगाढे प०, उक्कोसेण अणत० तहेव ॥ परिमडले णं भंते ! सठाणे कइपएसिए० पुच्छा, गोयमा ! परिमडले ण सठाणे दुविहे प०, तं०-घणपरिमंडले य पयरपरिमडले य, तत्थ ण जे से पयरपरिमडले से जहन्नेण वीसइपएसिए वीसइपएसोगाढे उक्कोसेण अणतपएसिए तहेव, तत्थ ण जे से घणपरिमंडले से जहन्नेण चत्तालीसपएसिए चत्तालीसपएसोगाढे प०, उक्कोसेण अणतपएसिए असखेज्जपएसोगाढे पन्नत्ते ॥ ७२५ ॥ परिमडले ण भते ! सठाणे दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे तेओए दावरजुम्मे कलिओए ? गोयमा ! नो कडजुम्मे णो तेओए णो दावरजुम्मे कलिओए, वट्टे ण भते ! सठाणे दव्वट्ठयाए एवं चेव, एवं जाव आयए ॥ परिमंडला ण भंते ! सठाणा दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मा तेओगा दावरजुम्मा कलिओगा पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा सिय तेओगा सिय दावरजुम्मा सिय कलिओगा, विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा कलिओगा, एव जाव आयया ॥ परिमडले ण भते ! सठाणे पएसट्ठयाए किं कडजुम्मे० पुच्छा, गोयमा ! सिय कडजुम्मे सिय तेओगे सिय दावरजुम्मे सिय कलिओगे, एव जाव आयए, परिमडला ण भते ! सठाणा पएसट्ठयाए किं कडजुम्मा० पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा, विहाणादेसेणं कडजुम्माचि तेओगावि दावरजुम्मावि कलिओगावि, एव जाव आयया ॥ परिमडले णं

सेढीओ दव्वट्टयाए किं संखेज्जाओ ३ एवं चेव, एवं दाहिणुत्तराययाओवि, एवं उड्ढ-महाययाओवि। लोगागाससेढीओ णं भंते! दव्वट्टयाए किं संखेज्जाओ असंखेज्जाओ अणंताओ? गोयमा! नो संखेज्जाओ असंखेज्जाओ नो अणंताओ, पाईणपडीणाय-याओ णं भंते! लोगागाससेढीओ दव्वट्टयाए किं संखेज्जाओ० एवं चेव, एवं दाहिणुत्तराययाओवि, एवं उड्ढमहाययाओवि। अलोगागाससेढीओ णं भंते! दव्वट्टयाए किं संखेज्जाओ असंखेज्जाओ अणंताओ? गोयमा! नो संखेज्जाओ नो असंखेज्जाओ अणंताओ, एवं पाईणपडीणाययाओवि, एवं दाहिणुत्तराययाओवि, एवं उड्ढमहाययाओवि। सेढीओ णं भंते! पएसट्टयाए किं संखेज्जाओ० जहा दव्वट्टयाए तहा पएसट्टयाएवि जाव उड्ढमहाययाओवि सव्वाओ अणंताओ। लोगागाससेढीओ णं भंते! पएसट्टयाए किं संखेज्जाओ० पुच्छा, गोयमा! सिय संखेज्जाओ सिय असं-खेज्जाओ नो अणंताओ, एवं पाईणपडीणाययाओवि, एवं दाहिणुत्तराययाओवि, एवं चेव उड्ढमहाययाओवि नो संखेज्जाओ असंखेज्जाओ नो अणंताओ॥ अलोगागाससेढीओ णं भंते! पएसट्टयाए पुच्छा, गोयमा! सिय संखेज्जाओ सिय असंखेज्जाओ सिय अणंताओ, पाईणपडीणाययाओ णं भंते! अलोया० पुच्छा, गोयमा! नो संखे-ज्जाओ नो असंखेज्जाओ अणंताओ, एवं दाहिणुत्तराययाओवि, उड्ढमहाययाओ पुच्छा, गोयमा! सिय संखेज्जाओ सिय असंखेज्जाओ सिय अणंताओ॥ ७२७॥ सेढीओ णं भंते! किं साइयाओ सपज्जवसियाओ १, साइयाओ अपज्जवसियाओ २, अणाइयाओ सपज्जवसियाओ ३, अणाइयाओ अपज्जवसियाओ ४? गोयमा! नो साइयाओ सपज्जवसियाओ, नो साइयाओ अपज्जवसियाओ, णो अणाइयाओ सपज्ज-वसियाओ, अणाइयाओ अपज्जवसियाओ, एवं जाव उड्ढमहाययाओ, लोगागाससेढीओ णं भंते! किं साइयाओ सपज्जवसियाओ० पुच्छा, गोयमा! साइयाओ सपज्जव-सियाओ, नो साइयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणाइयाओ सपज्जवसियाओ, नो अणा-इयाओ अपज्जवसियाओ, एवं जाव उड्ढमहाययाओ। अलोगागाससेढीओ णं भंते! किं साइयाओ सपज्जवसियाओ० पुच्छा, गोयमा! सिय साइयाओ सपज्जवसियाओ १, सिय साइयाओ अपज्जवसियाओ २, सिय अणाइयाओ सपज्जवसियाओ ३, सिय अणाइयाओ अपज्जवसियाओ ४, पाईणपडीणाययाओ दाहिणुत्तराययाओ य एवं चेव, नवरं नो साइयाओ सपज्जवसियाओ सिय साइयाओ अपज्जवसियाओ सेसं तं चेव, उड्ढमहाययाओ जहा ओहियाओ तहेव चउभंगो। सेढीओ णं भंते! दव्वट्ट-याए किं कडजुम्माओ तेओयाओ० पुच्छा, गोयमा! कडजुम्माओ नो तेओगाओ नो दावरजुम्माओ नो कलिओगाओ, एवं जाव उड्ढमहाययाओ, लोगागाससेढीओ

पएसट्ठयाए पुच्छा, गोयमा! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा,
विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा कलिओगा एवं जाव
सिद्धा ॥ जीवे णं भंते! पएसट्ठयाए किं कडजुम्मे पुच्छा, गोयमा! जीवपएसे
पडुच्च कडजुम्मे नो तेओगे नो दावरजुम्मे नो कलिओगे सरीरपएसे पडुच्च सिय
कडजुम्मे जाव सिय कलिओगे एवं जाव वेमाणिए। सिद्धे णं भंते! पएसट्ठयाए
किं कडजुम्मे पुच्छा, गोयमा! कडजुम्मे नो तेओगे नो दावरजुम्मे नो कलिओगे।
जीवा णं भंते! पएसट्ठयाए किं कडजुम्मा पुच्छा, गोयमा! जीवपएसे पडुच्च
ओघादेसेणवि विहाणादेसेणवि कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा
नो कलिओगा, सरीरपएसे पडुच्च ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय
कलिओगा विहाणादेसेणं कडजुम्मावि जाव कलिओगावि एवं नेरइयावि
एवं जाव वेमाणिया। सिद्धा णं भंते! पुच्छा, गोयमा! ओघादेसेणवि
विहाणादेसेणवि कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा नो कलिओगा ॥ ७२४ ॥
जीवे णं भंते! किं कडजुम्मपएसोगाढे पुच्छा, गोयमा! सिय कडजुम्मपएसोगाढे
जाव सिय कलिओगपएसोगाढे एवं जाव सिद्धे। जीवा णं भंते! किं कडजुम्म-
पएसोगाढा पुच्छा, गोयमा! ओघादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढा नो तेओग नो
दावर नो कलिओगपएसोगाढा विहाणादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढावि जाव कलि-
ओगपएसोगाढावि नेरइया णं भंते! पुच्छा, गोयमा! ओघादेसेणं सिय कडजुम्म-
पएसोगाढा जाव सिय कलिओगपएसोगाढा विहाणादेसेणं कडजुम्मपएसोगाढावि
जाव कलिओगपएसोगाढावि एवं एगिंदियसिद्धवज्जा (जाव वेमाणिया) सव्वेवि
सिद्धा एगिंदिया य जहा जीवा। जीवे णं भंते! किं कडजुम्मसमयट्ठिईए पुच्छा,
गोयमा! कडजुम्मसमयट्ठिईए नो तेओग नो दावर नो कलिओगसमयट्ठिईए।
नेरइए णं भंते! पुच्छा, गोयमा! सिय कडजुम्मसमयट्ठिईए जाव सिय कलिओग-
समयट्ठिईए, एवं जाव वेमाणिए, सिद्धे जहा जीवे। जीवा णं भंते! पुच्छा,
गोयमा! ओघादेसेणवि विहाणादेसेणवि कडजुम्मसमयट्ठिईया नो तेओग नो
दावरजुम्म नो कलिओगसमयट्ठिईया नेरइयाणं पुच्छा, गोयमा! ओघादेसेणं
सिय कडजुम्मसमयट्ठिईया जाव सिय कलिओगसमयट्ठिईया विहाणादेसेणं कड-
जुम्मसमयट्ठिईयावि जाव कलिओगसमयट्ठिईयावि एवं जाव वेमाणिया, सिद्धा
जहा जीवा ॥ ७२५ ॥ जीवे णं भंते! कालवण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे पुच्छा,
गोयमा! जीवपएसे पडुच्च नो कडजुम्मे जाव नो कलिओगे सरीरपएसे पडुच्च सिय
कडजुम्मे जाव सिय कलिओगे, एवं जाव वेमाणिए, सिद्धो णेव न पुच्छिज्जइ।

ओगे, से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ चत्तारि जुम्मा प० कडजुम्मे जाव कलिओगे जहा अट्ठारसमसए चउत्थे उद्देसए तहेव जाव से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ। इयाण भंते ! कइ जुम्मा प० ? गोयमा ! चत्तारि जुम्मा प०, तंजहा-कडजुम्मे जाव लिओगे, से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ नेरइयाण चत्तारि जुम्मा प०, त०-कडजुम्मे ट्ठो तहेव, एव जाव वाउकाइयाण, वणस्सइकाइयाण पुच्छा, गोयमा ! वणस्स-काइया सिय कडजुम्मा सिय तेओया सिय दावरजुम्मा सिय कलिओया, से केणट्ठेणं ते ! एव- वुच्चइ वणस्सइकाइया जाव कलिओगा ? गोयमा ! उववायं पडुच्च, से णट्ठेणं त चेव, बेइंदियाण जहा नेरइयाण, एव जाव वेमाणियाण, सिद्धाणं जहा णस्सइकाइयाण ॥ कइविहा णं भंते ! सव्वदव्वा प० ? गोयमा ! छव्विहा सव्वदव्वा प०, तंजहा-धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए। धम्मत्थिकाए णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे जाव कलिओगे ? गोयमा ! नो कडजुम्मे नो तेओगे नो दावरजुम्मे कलिओगे, एव अहम्मत्थिकाएवि, एवं आगासत्थिकाएवि, जीवत्थिकाए णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! कडजुम्मे नो तेओए नो दावरजुम्मे नो कलिओए, पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलिओगे, अद्धासमए जहा जीवत्थिकाए ॥ धम्मत्थिकाए णं भंते ! पएसट्ठयाए किं कडजुम्मे० पुच्छा, गोयमा ! कडजुम्मे नो तेओए नो दावरजुम्मे नो कलिओए, एव जाव अद्धासमए ॥ एएसि णं भंते ! धम्मत्थिकायअहम्मत्थिकाय जाव अद्धासमयाण दव्वट्ठयाए० एएसि णं अप्पाबहुगं जहा बहुवत्तव्वयाए तहेव निरवसेसं ॥ धम्म-त्थिकाए णं भंते ! किं ओगाढे अणोगाढे ? गोयमा ! ओगाढे नो अणोगाढे, जइ ओगाढे किं संखेज्जपएसोगाढे असंखेज्जपएसोगाढे अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! नो संखेज्जपएसोगाढे असंखेज्जपएसोगाढे नो अणंतपएसोगाढे, जइ असंखेज्जपएसोगाढे किं कडजुम्मपएसोगाढे० पुच्छा, गोयमा ! कडजुम्मपएसोगाढे नो तेओग० नो दावरजुम्म० नो कलिओगपएसोगाढे, एवं अहम्मत्थिकाएवि, एव आगासत्थिकाएवि, जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए अद्धासमए एवं चेव ॥ इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी किं ओगाढा अणोगाढा जहेव धम्मत्थिकाए एव जाव अहेसत्तमा, सोहम्मे एव चेव, एव जाव ईसिप्पब्भारापुढवी ॥ ७३२ ॥ जीवे णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे० पुच्छा, गोयमा ! नो कडजुम्मे नो तेओगे नो दावरजुम्मे कलिओगे, एव नेरइएवि, एव जाव सिद्धे। जीवा णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मा० पुच्छा गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा नो कलिओगा, विहाणा देसेण नो कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा कलिओगा, नेरइया णं भंते

णाणि सव्वेयाणि ते तेणट्ठेणं जाव सव्वेयाणि? गोयमा! नेरइया दुविहा प
ण्णत्ता—विग्गहगइसमावन्नगा य अविग्गहगइसमावन्नगा य, तत्थ णं जे ते विग्ग
हगइसमावन्नगा ते णं सव्वेया, तत्थ णं जे ते अविग्गहगइसमावन्नगा ते णं देसेया,
से तेणट्ठेणं जाव सव्वेयाणि एवं जाव वेमाणिया ॥ ७१४ ॥ परमाणुपोग्गला णं
भंते! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता? गोयमा! नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता,
एवं जाव अणंतपएसिया खंधा। एगपएसोगाढा णं भंते! पोग्गला किं संखेज्जा
असंखेज्जा अणंता? एवं चेव एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढा। एगसमयट्ठिईया णं
भंते! पोग्गला किं संखेज्जा? एवं चेव, एवं जाव असंखेज्जसमयट्ठिईया। एगगुण
कालगा णं भंते! पोग्गला किं संखेज्जा? एवं चेव एवं जाव अणंतगुणकालगा,
एवं अवसेसावि वण्णगंधरसफासा णेयव्वा जाव अणंतगुणलुक्खत्ति। एएसि णं भंते!
परमाणुपोग्गलाणं दुपएसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा
तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! दुपएसिएहिंतो खंधेहिंतो परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए
बहुया एएसि णं भंते! दुपएसियाणं तिपएसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए कयरे २ हिंतो
बहुया? गोयमा! तिपएसिएहिंतो खंधेहिंतो दुपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया, एवं
एएणं गमएणं जाव दसपएसिएहिंतो खंधेहिंतो नवपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया।
एएसि णं भंते! दसपएसि पुच्छा गोयमा! दसपएसिएहिंतो खंधेहिंतो संखेज्जपए
सिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया एएसि णं भंते! संखेज्ज पुच्छा गोयमा! संखेज्ज
पएसिएहिंतो खंधेहिंतो असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया, एएसि णं भंते!
असंखेज्जपएसि पुच्छा गोयमा! अ(संखेज्ज)णंतपएसिएहिंतो खंधेहिंतो अ(णंत)
संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया एएसि णं भंते! परमाणुपोग्गलाणं दुपए
सियाण य खंधाणं पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो बहुया? गोयमा! परमाणुपोग्गलेहिंतो
दुपएसिया खंधा पएसट्ठयाए बहुया एवं एएणं गमएणं जाव नवपएसिएहिंतो खंधेहिंतो
दसपएसिया खंधा पएसट्ठयाए बहुया एवं सव्वत्थ पुच्छियव्वं, दसप
एसिएहिंतो खंधेहिंतो संखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए बहुया संखेज्जपएसिएहिंतो
खंधेहिंतो असंखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए बहुया एएसि णं भंते! असंखेज्ज
पएसियाणं पुच्छा गोयमा! अणंतपएसिएहिंतो खंधेहिंतो असंखेज्जपएसिया खंधा
पएसट्ठयाए बहुया॥ एएसि णं भंते! एगपएसोगाढाणं दुपएसोगाढाण य पोग्गलाणं
दव्वट्ठयाए कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! दुपएसोगाढेहिंतो पोग्गले
हिंतो एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया एवं एएणं गमएणं तिपएसो
गाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया जाव दसपए

जीवा ण भंते ! कालवन्नपज्जवेहिं० पुच्छा, गोयमा ! जीवपएसे पडुच्च ओघादेसेणवि विहाणादेसेणवि णो कडजुम्मा जाव णो कलिओगा, सरीरपएसे पडुच्च ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा, विहाणादेसेण कडजुम्मावि जाव कलिओगावि, एव जाव वेमाणिया, एव नीलवन्नपज्जवेहिं दडओ भाणियव्वो एगत्तपुहत्तेणं एवं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं ॥ जीवे णं भंते ! आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे० पुच्छा, गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलिओगे, एव एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए। जीवा ण भंते ! आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं० पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा, विहाणादेसेण कडजुम्मावि जाव कलिओगावि, एव एगिंदियवज्ज जाव वेमाणिया, एव सुयणाणपज्जवेहिवि, ओहिणाणपज्जवेहिवि एवं चेव, नवरं विगलिंदियाण नत्थि ओहिनाण, मणपज्जवनाणपि एव चेव, नवर जीवाण मणुस्साण य, सेसाण नत्थि, जीवे ण भंते ! केवलनाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे० पुच्छा, गोयमा ! कडजुम्मे णो तेओगे णो दावरजुम्मे णो कलिओगे, एव मणुस्सेवि, एव सिद्धेवि, जीवा ण भंते ! केवलनाण०पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेणवि विहाणादेसेणवि कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा णो कलिओगा, एव मणुस्सावि, एव सिद्धावि। जीवे ण भंते ! मइअन्नाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे० ? जहा आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं तहेव दो दडगा, एव सुयअन्नाणपज्जवेहिवि, एवं विभंगनाणपज्जवेहिवि। चक्खुदसणअचक्खुदसणओहिदसणपज्जवेहिवि एव चेव, नवर जस्स ज अत्थि तस्स त भाणियव्व, केवलदसणपज्जवेहिं जहा केवलनाणपज्जवेहिं ॥ ७३६ ॥ कइ ण भंते ! सरीरगा प० ? गोयमा ! पच्च सरीरगा प०, तं०–ओरालिए जाव कम्मए, एत्थ सरीरपदं निरवसेस भाणियव्व जहा पन्नवणाए ॥ ७३७ ॥ जीवा ण भंते ! किं सेया णिरेया ? गोयमा ! जीवा सेयावि निरेयावि, से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ जीवा सेयावि निरेयावि ? गोयमा ! जीवा दुविहा प०, तंजहा–संसारसमावन्नगा य असंसारसमावन्नगा य, तत्थ ण जे ते असंसारसमावन्नगा ते ण सिद्धा, सिद्धा ण दुविहा प०, तंजहा–अणतरसिद्धा य परपरसिद्धा य, तत्थ णं जे ते परंपरसिद्धा ते ण निरेया, तत्थ ण जे ते अणतरसिद्धा ते ण सेया, ते णं भंते ! किं देसेया सव्वेया ? गोयमा ! णो देसेया सव्वेया, तत्थ ण जे ते ससारसमावन्नगा ते दुविहा प०, तंजहा–सेलेसिपडिवन्नगा य असेलेसिपडिवन्नगा य, तत्थ णं जे ते सेलेसीपडिवन्नगा ते ण निरेया, तत्थ ण जे ते असेलेसीपडिवन्नगा ते णं सेया, ते ण भंते ! किं देसेया सव्वेया ? गोयमा ! देसेयावि सव्वेयावि, से तेणट्ठेण जाव निरेयावि। नेरइया णं भंते ! किं देसेया सव्वेया ? गोयमा ! देसे-

अणंतगुणा संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा ते चेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! एगपएसोगाढाणं संखेज्जपएसोगाढाणं असंखेज्जपएसोगाढाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला(अ)पसट्ठयाए, संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए(अ)संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा दव्वट्ठपएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए, संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा ते चेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! एगसमयट्ठिईयाणं संखेज्जसमयट्ठिईयाणं असंखेज्जसमयट्ठिईयाण य पोग्गलाणं जहा ओगाहणाए तहा ठिईएवि भाणियव्वं अप्पाबहुगं। एएसि णं भंते! एगगुणकालगाणं संखेज्जगुणकालगाणं असंखेज्जगुणकालगाणं अणंतगुणकालगाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए एएसि णं जहा परमाणुपोग्गलाणं अप्पाबहुगं तहा एएसिंपि अप्पाबहुगं एवं सेसाणवि वण्णगंधरसाणं। एएसि णं भंते! एगगुणकक्खडाणं संखेज्जगुणकक्खडाणं असंखेज्जगुणकक्खडाणं अणंतगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा पएसट्ठयाए एवं चेव नवरं संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा सेसं तं चेव, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए, संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा ते चेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ते चेव पएसट्ठयाए अ(संखेज्ज) णंतगुणा, एवं मउयगरुयलहुयाणवि अप्पाबहुगं सीयउसिणनिद्धलुक्खाणं जहा वण्णाणं तहेव॥ ७४ ॥

परमाणुपोग्गले णं भंते! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे तेओए दावरजुम्मे कलिओए? गोयमा! नो कडजुम्मे नो तेओए नो दावरजुम्मे कलिओए, एवं जाव अणंतपएसिए

सोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो नवपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया, एएसि णं भंते ! दसपए०पुच्छा, गोयमा ! दसपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया, संखेज्जपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया, पुच्छा सव्वत्थ भाणियव्वा । एएसि णं भंते ! एगपएसोगाढाणं दुपएसोगाढाण य पोग्गलाणं पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! एगपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए विसेसाहिया, एवं जाव नवपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दसपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए विसेसाहिया, दसपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए बहुया, संखेज्जपएसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए बहुया । एएसि णं भंते ! एगसमयट्ठिईयाणं दुसमयट्ठिईयाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए जहा ओगाहणाए वत्तव्वया एवं ठिईएवि । एएसि णं भंते ! एगगुणकालयाणं दुगुणकालयाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए एएसि णं जहा परमाणुपोग्गलाईणं तहेव वत्तव्वया निरवसेसा, एवं सव्वेसिं वण्णगंधरसाणं, एएसि णं भंते ! एगगुणकक्खडाणं दुगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! एगगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया, एवं जाव नवगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दसगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया, दसगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया, संखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया, असंखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया, एवं पएसट्ठयाए सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा, जहा कक्खडा एवं मउयगुरुयलहुयावि, सीयउसिणनिद्धलुक्खा जहा वण्णा ॥ ७३९ ॥ एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं संखेज्जपएसियाणं असंखेज्जपएसियाणं अणंतपएसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा पएसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला अपएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, दव्वट्ठपएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए

खंधे । परमाणुपोग्गला णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मा० पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा, विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा कलिओगा, एवं जाव अणंतपएसिया खंधा । परमाणुपोग्गले ण भंते ! पएसट्ठयाए किं कडजुम्मे० पुच्छा, गोयमा ! नो कडजुम्मे नो तेओए नो दावरजुम्मे कलिओए, दुपएसिए पुच्छा, गोयमा ! नो कडजुम्मे नो तेओए दावरजुम्मे नो कलिओए, तिपएसिए पुच्छा, गोयमा ! नो कडजुम्मे तेओए नो दावरजुम्मे नो कलिओए, चउप्पएसिए पुच्छा, गोयमा ! कडजुम्मे नो तेओए नो दावरजुम्मे नो कलिओए, पंचपएसिए जहा परमाणुपोग्गले, छप्पएसिए जहा दुपएसिए, सत्तपएसिए जहा तिपएसिए, अट्ठपएसिए जहा चउप्पएसिए, नवपएसिए जहा परमाणुपोग्गले, दसपएसिए जहा दुपएसिए, संखेज्जपएसिए णं भंते ! पोग्गले पुच्छा, गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलिओगे, एव असंखेज्जपएसिएवि, एव अणंतपएसिएवि । परमाणुपोग्गला ण भंते ! पएसट्ठयाए किं कडजुम्मा० पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा कलिओगा, दुपएसियाण पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा नो तेओगा सिय दावरजुम्मा नो कलिओगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा नो तेओगा दावरजुम्मा नो कलिओगा, तिपएसियाणं पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा तेओगा नो दावरजुम्मा नो कलिओगा, चउप्पएसियाण पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेणवि विहाणादेसेणवि कडजुम्मा नो तेओगा नो दावरजुम्मा नो कलिओगा, पचपएसिया जहा परमाणुपोग्गला, छप्पएसिया जहा दुपएसिया, सत्तपएसिया जहा तिपएसिया, अट्ठपएसिया जहा चउप्पएसिया, नवपएसिया जहा परमाणुपोग्गला, दसपएसिया जहा दुपएसिया, संखेज्जपएसियाण पुच्छा, गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा, विहाणादेसेण कडजुम्मावि जाव कलिओगावि, एव असंखेज्जपएसियावि अणंतपएसियावि ॥ परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं कडजुम्मपएसोगाढे० पुच्छा, गोयमा ! (णो)कडजुम्मपएसोगाढे नो तेओग० नो दावरजुम्म० कलिओगपएसोगाढे । दुपएसिए णं पुच्छा, गोयमा ! नो कडजुम्मपएसोगाढे णो तेओग० सिय दावरजुम्मपएसोगाढे सिय कलिओगपएसोगाढे । तिपएसिए ण पुच्छा, गोयमा ! णो कडजुम्मपएसोगाढे सिय तेओगपएसोगाढे सिय दावरजुम्मपएसोगाढे सिय कलिओगपएसोगाढे ३ । चउप्पएसिए ण पुच्छा, गोयमा ! सिय कडजुम्मपएसोगाढे जाव सिय कलिओगपएसोगाढे ४, एव जाव

दुयाए अणंतगुणा ३, संखेज्जपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ४ असंखेज्जपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ५, परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६, संखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा ७ असंखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८ पए-सट्ठयाए एवं चेव नवरं परमाणुपोग्गला अपएसट्ठयाए भाणियव्वा संखेज्जपएसिया खंधा निरेया पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा सेसं तं चेव दव्वट्ठपएसट्ठयाए–सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए १ ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा २, अणंतपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३ ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा ४ परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए अणंतगुणा ५, संखेज्जपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६, ते चेव पएसट्ठयाए (अ)संखेज्जगुणा ७ असंखेज्जपएसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८ ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९, परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १० संखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ११ ते चेव पएसट्ठयाए (अ)संखेज्जगुणा १२ असंखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १३, ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १४। परमाणुपोग्गले णं भंते! किं देसेए सव्वेए निरेए? गोयमा! नो देसेए सिय सव्वेए सिय निरेए, दुपएसिए णं भंते! खंधे पुच्छा गोयमा! सिय देसेए सिय सव्वेए सिय निरेए, एवं जाव अणंतपएसिए। परमाणुपोग्गला णं भंते! किं देसेया सव्वेया निरेया? गोयमा! नो देसेया सव्वेयावि निरेयावि, दुपएसिया णं भंते! खंधा पुच्छा गोयमा! देसेयावि सव्वेयावि निरेयावि एवं जाव अणंतपएसिया। परमाणुपोग्गले णं भंते! सव्वेए कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं निरेए कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। दुपएसिए णं भंते! खंधे देसेए कालओ केव(च्चि)चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं सव्वेए कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं निरेए कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं एवं जाव अणंतपएसिए। परमाणुपोग्गला णं भंते! सव्वेया कालओ केवच्चिरं होंति? गोयमा! सव्वद्धं, निरेया कालओ केवच्चिरं होइ(न्ति)? गोयमा! सव्वद्धं। दुपएसिया णं भंते! खंधा देसेया कालओ केवच्चिरं होंति? गोयमा! सव्वद्धं, सव्वेया कालओ केवच्चिरं होंति? सव्वद्धं, निरेया कालओ केवच्चिरं होंति? सव्वद्धं, एवं जाव अणंतपएसिया। परमाणुपोग्ग-

द्वयाए संखेज्जगुणा १ असंखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ११ पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा पएसट्ठयाए एवं पएसट्ठयाएवि नवरं परमाणुपोग्गला अपएसट्ठयाए भाणियव्वा संखेज्जपएसिया खंधा निरेया पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा सेसं तं चेव दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए १ ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा २ अणंतपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३, ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा ४ अणंतपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ५, ते चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा ६ असंखेज्जपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ७ ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८ संखेज्जपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९ ते चेव पएसट्ठयाए (अ)संखेज्जगुणा १ परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठअपएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ११ संखेज्जपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १२ ते चेव पएसट्ठयाए (अ)संखेज्जगुणा १३ असंखेज्जपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १४ ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १५, परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठअपएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १६, संखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा १७ ते चेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा १८ असंखेज्जपएसिया निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १९ ते चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा २ ॥ ७४१ ॥ कइ णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स मज्झपएसा प० ? गोयमा ! अट्ठ धम्मत्थिकायस्स मज्झपएसा प० । कइ णं भंते ! अहम्मत्थिकायस्स मज्झपएसा प० ? गोयमा ! एवं चेव कइ णं भंते ! आगासत्थिकायस्स मज्झपएसा प० ? एवं चेव । कइ णं भंते ! जीवत्थिकायस्स मज्झपएसा प० ? गोयमा ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपएसा प० एए णं भंते ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपएसा कइसु आगासपएसेसु ओगाहंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कंसि वा दोहिं वा तिहिं वा चउहिं वा पंचहिं वा छहिं वा उक्कोसेणं अट्ठसु, नो चेव णं सत्तसु । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ७४२ ॥ पणवीसइमस्स सयस्स चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

कइविहा णं भंते ! पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पज्जवा प० तं०-जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य पज्जवपयं निरवसेसं भाणियव्वं जहा पन्नवणाए ॥ ७४३ ॥ आवलिया णं भंते ! किं संखेज्जा समया असंखेज्जा समया अणंता समया ? गोयमा ! नो संखेज्जा समया असंखेज्जा समया नो अणंता समया आणापाणू णं भंते ! किं संखेज्जा ? एवं चेव, थोवे णं भंते ! किं संखेज्जा ? एवं चेव एवं लवेवि मुहुत्तेवि एवं अहोरत्तेवि, एवं पक्खे मासे उ(ऊ)ऊ अयणे संवच्छरे जुगे वाससए

त्तस्स ण भंते ! सव्वेयस्स केवइय कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जह-ण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेण असंखेज्जं कालं, परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं उक्को-सेण असंखेज्जं कालं। निरेयस्स केवइयं कालं अंतरं होइ ? सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभागं, परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेण असंखेज्जं कालं। दुपएसियस्स णं भंते ! खंधस्स देसेयस्स केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेण असंखेज्जं कालं, परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेण अणंतं कालं, सव्वेयस्स केवइयं कालं० ? एवं चेव जहा देसेयस्स, निरेयस्स केवइयं कालं० ? सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभागं, परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेण अणंतं कालं, एवं जाव अणंतपएसियस्स ॥ परमाणुपोग्गलाणं भंते ! सव्वेयाणं केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! नत्थि अंतरं, निरेयाणं केव-इयं० ? नत्थि अंतरं, दुपएसियाणं भंते ! खंधाणं देसेयाणं केवइयं कालं० ? नत्थि अंतरं, सव्वेयाणं केवइयं कालं० ? नत्थि अंतरं, निरेयाणं केवइयं कालं० ? नत्थि अंतरं, एवं जाव अणंतपएसियाणं। एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सव्वेयाणं निरेयाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सव्वेया, निरेया असंखेज्जगुणा। एएसि णं भंते ! दुपएसियाणं खंधाणं देसेयाणं सव्वेयाणं निरेयाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा दुपए-सिया खंधा सव्वेया, देसेया असंखेज्जगुणा, निरेया असंखेज्जगुणा, एवं जाव असं-खेज्जपएसियाणं खंधाणं। एएसि णं भंते ! अणंतपएसियाणं खंधाणं देसेयाणं सव्वे-याणं निरेयाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतप-एसिया खंधा सव्वेया, निरेया अणंतगुणा, देसेया अणंतगुणा। एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं संखेज्जपएसियाणं असंखेज्जपएसियाणं अणंतपएसियाण य खंधाणं देसेयाणं सव्वेयाणं निरेयाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए १, अणंतपएसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा २, अणंतपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३, असंखेज्जपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अ(णंत)संखेज्ज-गुणा ४, संखेज्जपएसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ५, परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६, संखेज्जपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असं-खेज्जगुणा ७, असंखेज्जपएसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८, परमाणु-पोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९, संखेज्जपएसिया खंधा निरेया दव्व-

वामसहस्से वासमयसहस्से पुव्वगे पुव्वे तुडियंगे तुडिए अडडगे अडडे अववगे अववे हुहुअगे हुहुए उप्पलंगे उपले पउमगे पउमे नलिणगे नलिणे अच्छिणि(उ)पूरगे अच्छिणि(उ)पूरे अउयगे अउए नउयंगे नउए पउयंगे पउए चूलियगे चूलि(या)ए सीसपहेलियगे सीसपहेलिया पलिओवमे सागरोवमे ओसप्पिणी एव उस्सप्पिणीवि, पोग्गलपरियट्टे ण भते ! कि सखेज्जा समया असखेज्जा समया अणता समया ? गोयमा ! नो सखेज्जा समया नो असखेज्जा समया अणता समया, एव तीयद्धा अणागयद्धा सव्वद्धा ॥ आवलियाओ ण भते ! किं सखेज्जा समया० पुच्छा, गोयमा ! नो सखेज्जा समया सिय असखेज्जा समया सिय अणता समया, आणापाणूण भते ! कि सखेज्जा समया० पुच्छा, एव चेव, थोवाणं भते ! किं सखेज्जा समया ३ ? एव चेव एवं जाव उस्सप्पिणीओत्ति, पोग्गलपरियट्टाण भंते ! कि सखेज्जा समया० पुच्छा, गोयमा ! णो सखेज्जा समया णो असखेज्जा समया अणता समया, आणापाणूण भते ! किं सखेज्जाओ आवलियाओ० पुच्छा, गोयमा ! सखेज्जाओ आवलियाओ णो असखेज्जाओ आवलियाओ नो अणताओ आवलियाओ, एव थोवेवि, एवं जाव सीसप्पहेलियत्ति । पलिओवमे णं भते ! किं सखेज्जा० पुच्छा, गोयमा ! णो सखेज्जाओ आवलियाओ असंखेज्जाओ आवलियाओ नो अणताओ आवलियाओ, एव सागरोवमेवि, एव ओसप्पिणीवि उस्सप्पिणीवि, पोग्गलपरियट्टे पुच्छा, गोयमा ! नो सखेज्जाओ आवलियाओ णो असखेज्जाओ आवलियाओ अणताओ आवलियाओ, एव जाव सव्वद्धा । आणापाणूणं भते ! किं सखेज्जाओ आवलियाओ० पुच्छा, गोयमा ! सिय सखेज्जाओ आवलियाओ सिय असखेज्जाओ सिय अणताओ, एव जाव सीसप्पहेलियाओ, पलिओवमाण पुच्छा, गोयमा ! णो सखेज्जाओ आवलियाओ सिय असखेज्जाओ आवलियाओ सिय अणताओ आवलियाओ, एव जाव उस्सप्पिणीओत्ति, पोग्गलपरियट्टाण पुच्छा, गोयमा ! णो सखेज्जाओ आवलियाओ णो असखेज्जाओ आवलियाओ अणताओ आवलियाओ । थोवे ण भते ! किं सखेज्जाओ आणापाणूओ असखेज्जाओ जहा आवलियाए वत्तव्वया एव आणापाणूओवि निरवसेसा, एव एएण गमएण जाव सीसप्पहेलिया भाणियव्वा । सागरोवमे ण भते ! किं सखेज्जा पलिओवमा० पुच्छा, गोयमा ! सखेज्जा पलिओवमा णो असंखेज्जा पलिओवमा णो अणता पलिओवमा, एव ओसप्पिणीएवि उस्सप्पिणीएवि, पोग्गलपरियट्टे ण भते ! पुच्छा, गोयमा ! णो सखेज्जा पलिओवमा णो असखेज्जा पलिओवमा अणता पलिओवमा, एव जाव सव्वद्धा । सागरोवमाणं भते ! किं सखेज्जा पलिओवमा० पुच्छा, गोयमा ! सिय सखेज्जा

पलिओवमा सिय असंखेज्जा पलिओवमा सिय अणंता पलिओवमा एवं जाव ओसप्पिणी(ओ)त्ति उस्सप्पिणीवि। पोग्गलपरियट्टाणं पुच्छा गोयमा! णो संखेज्जा पलिओवमा णो असंखेज्जा पलिओवमा अणंता पलिओवमा। ओसप्पिणी णं भंते! किं संखेज्जा सागरोवमा जहा पलिओवमस्स वत्तव्वया तहा सागरोवमस्सवि पोग्गलपरियट्टे णं भंते! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणीओ पुच्छा गोयमा! णो संखेज्जाओ ओसप्पिणीओ णो असंखेज्जाओ अणंताओ ओसप्पिणीओ पोग्गलपरियट्टाणं भंते! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणीओ पुच्छा गोयमा! णो संखेज्जाओ णो असंखेज्जाओ अणंताओ पोग्गलपरियट्टे णं भंते! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ पुच्छा गोयमा! णो संखेज्जाओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ णो असंखेज्जाओ अणंताओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ एवं जाव सव्वद्धा, पोग्गलपरियट्टाणं भंते! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ पुच्छा गोयमा! णो संखेज्जाओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ णो असंखेज्जाओ अणंताओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ। तीतद्धा णं भंते! किं संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा पुच्छा गोयमा! णो संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा णो असंखेज्जा अणंता पोग्गलपरियट्टा एवं अणागयद्धावि एवं सव्वद्धावि ॥ ७४६ ॥ अणागयद्धा णं भंते! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ असंखेज्जाओ अणंताओ? गोयमा! णो संखेज्जाओ तीतद्धाओ णो असंखेज्जाओ तीतद्धाओ णो अणंताओ तीतद्धाओ अणागयद्धा णं तीतद्धाओ समयाहिया तीतद्धा णं अणागयद्धाओ समयूणा। सव्वद्धा णं भंते! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ पुच्छा गोयमा! णो संखेज्जाओ तीतद्धाओ णो असंखेज्जाओ तीतद्धाओ णो अणंताओ तीतद्धाओ सव्वद्धा णं तीतद्धाओ सातिरेगदुगुणा तीतद्धा णं सव्वद्धाओ थोवूणए अद्धे सव्वद्धा णं भंते! किं संखेज्जाओ अणागयद्धाओ पुच्छा गोयमा! णो संखेज्जाओ अणागयद्धाओ णो असंखेज्जाओ अणागयद्धाओ णो अणंताओ अणागयद्धाओ सव्वद्धा णं अणागयद्धाओ थोवूणदुगुणा अणागयद्धा णं सव्वद्धाओ सातिरेगे अद्धे ॥ ७४७ ॥ कइविहा णं भंते! णिओदा प०? गोयमा! दुविहा णिओदा प० तं०-णिओ(य)गा य णिओदजीवा य णिओदा णं भंते! कइविहा प०? गोयमा! दुविहा प० तं०-सुहुमणिओदा य बायरणिओ(दा)गा य एवं णिओदा भाणियव्वा जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं ॥ ७४८ ॥ कइविहे णं भंते! णामे पन्नत्ते? गोयमा! छव्विहे णामे पन्नत्ते तंजहा-उदइए जाव सन्निवाइए। से किं तं उदइए णामे? उदइए णामे दुविहे प० तं०-उद(इ)ए य उदयनिप्फन्ने य एवं जहा सत्तरसमसए पढमे उद्देसए भावो तहेव इहवि नवरं इमं नाणत्तं सेसं तहेव जाव सन्निवाइए। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ७४९ ॥ पणवीसइमे सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥

पन्नवण १ वेय २ रागे ३ कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ णाणे ७ । तित्थे ८ लिंग ९ सरीरे १० खेत्ते ११ काले १२ गइ १३ संजम १४ निगासे १५ ॥ १ ॥ जोगु १६ वओग १७ कसाए १८ लेसा १९ परिणाम २० बंध २१ वेदे य २२ । कम्मोदीरण २३ उवसंपजहन्न २४ सन्ना य २५ आहारे २६ ॥ २ ॥ भव २७ आगरिसे २८ काल २९ तरे य ३० समुग्घाय ३१ खेत्त ३२ फुसणा य ३३ । भावे ३४ परि(माणे)णामे ३५ (खलु)विय अप्पाबहुय ३६ नियठाणं ३७ ॥ ३ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी–कइ णं भंते ! णियंठा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच णियंठा पन्नत्ता, तंजहा–पुलाए बउसे कुसीले णियंठे सिणाए ॥ पुलाए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे प०, तं०–नाणपुलाए दंसणपुलाए चरित्तपुलाए लिंगपुलाए अहासुहुमपुलाए णामं पंचमे । बउसे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प०, तं०–आभोगबउसे अणाभोगबउसे संवुडबउसे असंवुडबउसे अहासुहुमबउसे णामं पंचमे । कुसीले णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दुविहे प०, तं०–पडिसेवणाकुसीले य कसायकुसीले य, पडिसेवणाकुसीले णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे प०, तंजहा–नाणपडिसेवणाकुसीले दंसणपडिसेवणाकुसीले चरित्तपडिसेवणाकुसीले लिंगपडिसेवणाकुसीले अहासुहुमपडिसेवणाकुसीले णामं पंचमे, कसायकुसीले णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे प०, तं०–नाणकसायकुसीले दंसणकसायकुसीले चरित्तकसायकुसीले लिंगकसायकुसीले अहासुहुमकसायकुसीले णामं पंचमे । नियंठे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प०, तंजहा–पढमसमयनियंठे अपढमसमयनियंठे चरिमसमयनियंठे अचरिमसमयनियंठे अहासुहुमनियंठे णामं पंचमे । सिणाए णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प०, तं०–अच्छवी १, असबले २, अकम्मंसे ३, संसुद्धणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली ४, अपरिस्सावी ५ ॥ १ ॥ पुलाए णं भंते ! किं सवेयए होज्जा अवेयए होज्जा ? गोयमा ! सवेयए होज्जा णो अवेयए होज्जा, जइ सवेयए होज्जा किं इत्थिवेयए होज्जा पुरिसवेयए होज्जा पुरिसनपुंसगवेयए होज्जा ? गोयमा ! नो इत्थिवेयए होज्जा पुरिसवेयए होज्जा पुरिसनपुंसगवेयए वा होज्जा । बउसे णं भंते ! किं सवेयए होज्जा अवेयए होज्जा ? गोयमा ! सवेयए होज्जा णो अवेयए होज्जा, जइ सवेयए होज्जा किं इत्थिवेयए होज्जा पुरिसवेयए होज्जा पुरिसनपुंसगवेयए होज्जा ? गोयमा ! इत्थिवेयए वा होज्जा पुरिसवेयए वा होज्जा पुरिसनपुंसगवेयए वा होज्जा, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि, कसायकुसीले णं भंते ! किं सवेयए होज्जा० पुच्छा, गोयमा ! सवेयए वा होज्जा अवेयए वा होज्जा, जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेदए होज्जा

पन्नवण १ वेय २ रागे ३ कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ णाणे ७ । तित्थे ८ लिंग ९ सरीरे १० खेत्ते ११ काले १२ गइ १३ संजम १४ निगासे १५ ॥ १ ॥ जोगु १६ वओग १७ कसाए १८ लेसा १९ परिणाम २० बंध २१ वेदे य २२ । कम्मोदीरण २३ उवसपजहन्न २४ सन्ना य २५ आहारे २६ ॥ २ ॥ भव २७ आगरिसे २८ काल २९ तरे य ३० समुग्घाय ३१ खेत्त ३२ फुसणा य ३३ । भावे ३४ परि(माणे)णामे ३५ (खलु)विय अप्पाबहुय ३६ नियठाण ३७ ॥ ३ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-कइ णं भंते ! णियठा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच णियंठा पन्नत्ता, तंजहा-पुलाए बउसे कुसीले णियंठे सिणाए ॥ पुलाए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे प०, तं०-नाणपुलाए दंसणपुलाए चरित्तपुलाए लिंगपुलाए अहासुहुमपुलाए णाम पंचमे । बउसे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प०, तं०-आभोगबउसे अणाभोगबउसे संवुडबउसे असंवुडबउसे अहासुहुमबउसे णाम पंचमे । कुसीले णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दुविहे प०, तं०-पडिसेवणाकुसीले य कसायकुसीले य, पडिसेवणाकुसीले णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे प०, तंजहा-नाणपडिसेवणाकुसीले दंसणपडिसेवणाकुसीले चरित्तपडिसेवणाकुसीले लिंगपडिसेवणाकुसीले अहासुहुमपडिसेवणाकुसीले णाम पंचमे, कसायकुसीले णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे प०, तं०-नाणकसायकुसीले दंसणकसायकुसीले चरित्तकसायकुसीले लिंगकसायकुसीले अहासुहुमकसायकुसीले णाम पंचमे । नियंठे णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प०, तंजहा-पढमसमयनियंठे अपढमसमयनियंठे चरिमसमयनियंठे अचरिमसमयनियंठे अहासुहुमनियंठे णाम पंचमे । सिणाए णं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प०, तं०-अच्छवी १, असबले २, अकम्मंसे ३, संसुद्धणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली ४, अपरिस्सावी ५ ॥ १ ॥ पुलाए णं भंते ! किं सवेयए होज्जा अवेयए होज्जा ? गोयमा ! सवेयए होज्जा णो अवेयए होज्जा, जइ सवेयए होज्जा किं इत्थिवेयए होज्जा पुरिसवेयए होज्जा पुरिसनपुंसगवेयए होज्जा ? गोयमा ! नो इत्थिवेयए होज्जा पुरिसवेयए होज्जा पुरिसनपुंसगवेयए वा होज्जा । बउसे णं भंते ! किं सवेयए होज्जा अवेयए होज्जा ? गोयमा ! सवेयए होज्जा णो अवेयए होज्जा, जइ सवेयए होज्जा किं इत्थिवेयए होज्जा पुरिसवेयए होज्जा पुरिसनपुंसगवेयए होज्जा ? गोयमा ! इत्थिवेयए वा होज्जा पुरिसवेयए वा होज्जा पुरिसनपुंसगवेयए वा होज्जा, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि, कसायकुसीले णं भंते ! किं सवेयए होज्जा० पुच्छा, गोयमा ! सवेयए वा होज्जा अवेयए वा होज्जा, जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेदए होज्जा

अन्नयर पडिसेवेज्जा, उत्तरगुणपडिसेवमाणे दसविहस्स पच्चक्खाणस्स अन्नयरं पडिसेवेज्जा । वउसे ण पुच्छा, गोयमा ! पडिसेवए होज्जा णो अपडिसेवए होज्जा, जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ? गोयमा ! णो मूलगुणपडिसेवए होज्जा उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवमाणे दसविहस्स पच्चक्खाणस्स अन्नयर पडिसेवेज्जा, पडिसेवणाकुसीले जहा पुलाए । कसायकुसीले ण पुच्छा, गोयमा ! णो पडिसेवए होज्जा अपडिसेवए होज्जा, एव नियंठेवि, एव सिणाएवि ६ ॥ ७५४ ॥ पुलाए ण भंते ! कइसु नाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु आभिणिबोहियनाणे सुअनाणे होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे होज्जा, एव वउसेवि, एव पडिसेवणाकुसीलेवि, कसायकुसीले ण पुच्छा, गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणेसु होज्जा अहवा तिसु होज्जमाणे आभिणिबोहियनाणसुयनाणमणपज्जवनाणेसु होज्जा, चउसु होज्जमाणे चउसु आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणमणपज्जवनाणेसु होज्जा, एव नियंठेवि । सिणाए ण पुच्छा, गोयमा ! एगमि केवलनाणे होज्जा ॥ ७५५ ॥ पुलाए णं भंते ! केवइय सुय अहिज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेण नवमस्स पुव्वस्स तइय आयारवत्थु, उक्कोसेण नव पुव्वाइ अहिज्जेज्जा । वउसे णं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठ पवयणमायाओ उक्कोसेग दस पुव्वाइ अहिज्जेज्जा । एव पडिसेवणाकुसीलेवि । कसायकुसीले ण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण अट्ठ पवयणमायाओ उक्कोसेण चउद्दस पुव्वाइ अहिज्जेज्जा, एव नियंठेवि । सिणाए ण पुच्छा, गोयमा ! सुयवइरित्ते होज्जा ७॥७५६॥ पुलाए ण भंते ! किं तित्थे होज्जा अतित्थे होज्जा ? गोयमा ! तित्थे होज्जा णो अतित्थे होज्जा, एव वउसेवि, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि । कसायकुसीले पुच्छा, गोयमा ! तित्थे वा होज्जा अतित्थे वा होज्जा, जइ अतित्थे होज्जा किं तित्थयरे होज्जा पत्तेयबुद्धे होज्जा ? गोयमा ! तित्थगरे वा होज्जा पत्तेयबुद्धे वा होज्जा, एव नियंठेवि, एवं सिणाएवि ८॥७५७॥ पुलाए ण भंते ! किं सलिंगे होज्जा अन्नलिंगे होज्जा गिहिलिंगे होज्जा ? गोयमा ! दव्वलिंगं पडुच्च सलिंगे वा होज्जा अन्नलिंगे वा होज्जा गिहिलिंगे वा होज्जा, भावलिंग पडुच्च नियमा सलिंगे होज्जा, एव जाव सिणाए ९॥७५८॥ पुलाए णं भंते ! कइसु सरीरेसु होज्जा ? गोयमा ! तिसु ओरालियतेयाकम्मएसु होज्जा, वउसे ण भंते ! पुच्छा, गोयमा ! तिसु वा चउसु वा होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु ओरालियतेयाकम्मएसु होज्जा, चउसु होज्जमाणे चउसु ओरालिय-

केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमपुहुत्तं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं, बउसस्स णं पुच्छा गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमपुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं, एवं पडिसेवणाकुसीलस्सवि कसायकुसीलस्स पुच्छा गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमपुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, नियंठस्स पुच्छा गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ११ ॥ ७६२ ॥ पुलागस्स णं भंते ! केवइया संजमट्ठाणा प० ? गोयमा ! असंखेज्जा संजमट्ठाणा प० एवं जाव कसायकुसीलस्स। नियंठस्स णं भंते ! केवइया संजमट्ठाणा प० ? गोयमा ! एगे अजहन्नमणुक्कोसए संजमट्ठाणे प० एवं सिणायस्सवि एएसि णं भंते ! पुलागबउसपडिसेवणाकसायकुसीलनियंठसिणायाणं संजमट्ठाणाणं कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे नियंठस्स सिणायस्स य एगे अजहन्नमणुक्कोसए संजमट्ठाणे पुलागस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, बउसस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा पडिसेवणाकुसीलस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, कसायकुसीलस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा १२ ॥ ७६३ ॥ पुलागस्स णं भंते ! केवइया चरित्तपज्जवा प० ? गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा प० एवं जाव सिणायस्स । पुलाए णं भंते ! पुलागस्स सट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे तुल्ले अब्भहिए ? गोयमा ! सिय हीणे १ सिय तुल्ले २ सिय अब्भहिए ३ जइ हीणे अणंतभागहीणे वा असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा असंखेज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा ॥ पुलाए णं भंते ! बउसस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे तुल्ले अब्भहिए ? गोयमा ! हीणे णो तुल्ले णो अब्भहिए, अणंतगुणहीणे एवं पडिसेवणाकुसीलेणवि कसायकुसीलेण समं छट्ठाणवडिए जहेव सट्ठाणे नियंठस्स जहा बउसस्स एवं सिणायस्सवि ॥ बउसे णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे तुल्ले अब्भहिए ? गोयमा ! णो हीणे णो तुल्ले अब्भहिए अणंतगुणमब्भहिए । बउसे णं भंते ! बउसस्स सट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं पुच्छा गोयमा ! सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे छट्ठाणवडिए । बउसे णं भंते ! पडिसेवणाकुसीलस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? छट्ठाणवडिए, एवं कसायकुसीलस्सवि ॥ बउसे णं भंते ! नियंठस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं पुच्छा, गोयमा ! हीणे णो तुल्ले णो अब्भहिए, अणंतगुणहीणे एवं सिणायस्सवि पडिसेवणाकुसीलस्स एवं चेव बउसवत्तव्वया भाणियव्वा कसायकुसीलस्स सट्ठाणे एवं चेव

प्पिणिकाले वा होज्जा, जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा किं सुसमसुसमाकाले० पुच्छा, गोयमा ! जम्मणं संतिभावं च पडुच्च णो सुसमसुसमाकाले होज्जा णो सुसमाकाले होज्जा सुसमदूसमाकाले वा होज्जा दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा दूसमाकाले वा होज्जा णो दूसमदूसमाकाले होज्जा, साहरणं पडुच्च अन्नयरे समाकाले होज्जा । जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा किं दूसमदूसमाकाले होज्जा ६ पुच्छा, गोयमा ! जम्मणं पडुच्च णो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा जहेव पुलाए, संतिभावं पडुच्च णो दूसमदूसमाकाले होज्जा णो दूसमाकाले होज्जा एवं संतिभावेणवि जहा पुलाए जाव णो सुसमसुसमाकाले होज्जा, साहरणं पडुच्च अन्नयरे समाकाले होज्जा । जइ नोओसप्पिणिनोउस्सप्पिणिकाले होज्जा० पुच्छा, गोयमा ! जम्मणसंतिभावं पडुच्च णो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा जहेव पुलाए जाव दूसमसुसमापलिभागे होज्जा, साहरणं पडुच्च अन्नयरे पलिभागे होज्जा, जहा बउसे एवं पडिसेवणाकुसीलेवि, एवं कसायकुसीलेवि, नियंठो सिणाओ य जहा पुलाओ, नवरं एएसिं अब्भहियं साहरणं भाणियव्वं, सेसं तं चेव १२॥ ७६१ ॥ पुलाए णं भंते ! कालगए समाणे (किं)कं गइं गच्छइ ? गोयमा ! देवगइं गच्छइ, देवगइं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा वाणमंतरेसु उववज्जेज्जा जोइसियवेमाणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो भवणवासीसु उ० णो वाणमंतरेसु उ० णो जोइसिएसु उ० वेमाणिएसु उववज्जेज्जा, वेमाणिएसु उववज्जमाणे जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे उववज्जेज्जा, बउसे णं एवं चेव नवरं उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे, पडिसेवणाकुसीले जहा बउसे, कसायकुसीले जहा पुलाए, नवरं उक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा, णियंठे णं भंते ! एवं चेव, एवं जाव वेमाणिएसु उववज्जमाणे अजहन्नमणुक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा, सिणाए णं भंते ! कालगए समाणे कं गइं गच्छइ ? गोयमा ! सिद्धिगइं गच्छइ । पुलाए णं भंते ! देवेसु उववज्जमाणे किं इंदत्ताए उववज्जेज्जा सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा तायत्तीसगत्ताए उववज्जेज्जा लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए उववज्जेज्जा सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा लोगपालत्ताए वा उववज्जेज्जा तायत्तीसगत्ताए वा उववज्जेज्जा नो अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा, विराहणं पडुच्च अन्नयरेसु उववज्जेज्जा, एवं बउसेवि, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि, कसायकुसीले पुच्छा, गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए वा उववज्जेज्जा जाव अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा, विराहणं पडुच्च अन्नयरेसु उववज्जेज्जा, नियंठे पुच्छा, गोयमा अविराहणं पडुच्च णो इंदत्ताए उववज्जेज्जा जाव णो लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा, विराहणं पडुच्च अन्नयरेसु उववज्जेज्जा ॥ पुलागस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स

बउसवत्तव्वया नवरं पुलाएणवि समं छट्ठाणवडिए । णियंठे णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं० पुच्छा, गोयमा ! णो हीणे णो तुल्ले अब्भहिए अणंतगुणमब्भहिए, एवं जाव कसायकुसीलस्स । णियंठे णं भंते ! णियंठस्स सट्ठाणसन्निगासेणं पुच्छा, गोयमा ! नो हीणे तुल्ले णो अब्भहिए, एवं सिणायस्सवि । सिणाए णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं एवं जहा नियंठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्सवि भाणियव्वा जाव सिणाए णं भंते ! सिणायस्स सट्ठाणसन्निगासेणं पुच्छा, गोयमा ! णो हीणे तुल्ले णो अब्भहिए ॥ एएसि णं भंते ! पुलागबउसपडिसेवणाकुसीलकसायकुसीलनियंठसिणायाणं जहन्नुक्कोसगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! पुलागस्स कसायकुसीलस्स य एएसि णं जहन्नगा चरित्तपज्जवा दोण्हवि तुल्ला सव्वत्थोवा, पुलागस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, बउसस्स पडिसेवणाकुसीलस्स य एएसि णं जहन्नगा चरित्तपज्जवा दोण्हवि तुल्ला अणंतगुणा, बउसस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, पडिसेवणाकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, णियंठस्स सिणायस्स य एएसि णं अजहन्नमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्हवि तुल्ला अणंतगुणा १५ ॥ ७६४ ॥ पुलाए णं भंते ! किं सजोगी होज्जा अजोगी होज्जा ? गोयमा ! सजोगी होज्जा नो अजोगी होज्जा, जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा वइजोगी होज्जा कायजोगी होज्जा ? गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा वइजोगी वा होज्जा कायजोगी वा होज्जा, एवं जाव नियंठे । सिणाए णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! सजोगी वा होज्जा अजोगी वा होज्जा, जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा सेसं जहा पुलागस्स १६ ॥ ७६५ ॥ पुलाए णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा अणागारोवउत्ते होज्जा ? गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा अणागारोवउत्ते वा होज्जा, एवं जाव सिणाए १७ ॥ ७६६ ॥ पुलाए णं भंते ! किं सकसाई होज्जा अकसाई होज्जा ? गोयमा ! सकसाई होज्जा णो अकसाई होज्जा, जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कइसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु कोहमाणमायालोभेसु होज्जा, एवं बउसेवि, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि, कसायकुसीले णं पुच्छा, गोयमा ! सकसाई होज्जा णो अकसाई होज्जा, जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कइसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एगम्मि वा होज्जा, चउसु होज्जमाणे चउसु संजलणकोहमाणमायालोभेसु होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु संजलणमाणमायालोभेसु होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु संजलणमायालोभेसु होज्जा, एगम्मि होज्जमाणे एगम्मि संजलणलोभे होज्जा, नियंठे णं पुच्छा, गोयमा ! णो सकसाई

होज्जा अकसाई होज्जा? जइ अकसाई होज्जा किं उवसंतकसाई होज्जा खीणकसाई होज्जा? गोयमा! उवसंतकसाई वा होज्जा खीणकसाई वा होज्जा। सिणाए एवं चेव, नवरं नो उवसंतकसाई होज्जा खीणकसाई होज्जा १४ ॥७९७॥ पुलाए णं भंते! किं सलेस्से होज्जा अलेस्से होज्जा? गोयमा! सलेस्से होज्जा नो अलेस्से होज्जा। जइ सलेस्से होज्जा से णं भंते! कइसु लेस्सासु होज्जा? गोयमा! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, तं०-तेउलेस्साए पम्हलेस्साए सुक्कलेस्साए, एवं बउसस्सवि, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि। कसायकुसीले पुच्छा, गोयमा! सलेस्से होज्जा नो अलेस्से होज्जा। जइ सलेस्से होज्जा से णं भंते! कइसु लेस्सासु होज्जा? गोयमा! छसु लेस्सासु होज्जा, तं०-कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, नियंठे णं भंते! पुच्छा, गोयमा! सलेस्से होज्जा नो अलेस्से होज्जा। जइ सलेस्से होज्जा से णं भंते! कइसु लेस्सासु होज्जा? गोयमा! एगाए सुक्कलेस्साए होज्जा। सिणाए पुच्छा, गोयमा! सलेस्से वा होज्जा अलेस्से वा होज्जा। जइ सलेस्से होज्जा से णं भंते! कइसु लेस्सासु होज्जा? गोयमा! एगाए परमसुक्कलेस्साए होज्जा १५ ॥ ७९८ ॥ पुलाए णं भंते! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ही(य)माणपरिणामे होज्जा अवट्ठियपरिणामे होज्जा? गोयमा! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा हीयमाणपरिणामे वा होज्जा अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा। एवं जाव कसायकुसीले। नियंठे णं पुच्छा, गोयमा! वड्ढमाणपरिणामे होज्जा नो हीयमाणपरिणामे होज्जा अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा। एवं सिणाएवि ॥ पुलाए णं भंते! केवइयं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, केवइयं कालं हीयमाणपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, केवइयं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं सत्त समया, एवं जाव कसायकुसीले। नियंठे णं भंते! केवइयं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, केवइयं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। सिणाए णं भंते! केवइयं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, केवइयं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी २ ॥ ७९९ ॥ पुलाए णं भंते! कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ? गोयमा! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधइ। बउसे पुच्छा, गोयमा! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा, सत्त बंधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधइ, अट्ठ बंधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधइ, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि। कसायकुसीले णं पुच्छा, गोयमा!

बउसवत्तव्वया नवरं पुलाएणवि समं छट्ठाणवडिए। णियठे णं भंते! पुलागस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं० पुच्छा, गोयमा! णो हीणे णो तुल्ले अब्भहिए अणंतगुणमब्भहिए, एवं जाव कसायकुसीलस्स। णियठे ण भंते! णियंठस्स सट्ठाणसन्निगासेणं पुच्छा, गोयमा! नो हीणे तुल्ले णो अब्भहिए, एवं सिणायस्सवि। सिणाए णं भंते! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेण एवं जहा नियठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्सवि भाणियव्वा जाव सिणाए णं भंते! सिणायस्स सट्ठाणसन्निगासेणं पुच्छा, गोयमा! णो हीणे तुल्ले णो अब्भहिए॥ एएसि ण भंते! पुलागबउसपडिसेवणाकुसीलकसायकुसीलनियठसिणायाणं जहन्नुक्कोसगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! पुलागस्स कसायकुसीलस्स य एएसि णं जहन्नगा चरित्तपज्जवा दोण्हवि तुल्ला सव्वत्थोवा, पुलागस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, बउसस्स पडिसेवणाकुसीलस्स य एएसि णं जहन्नगा चरित्तपज्जवा दोण्हवि तुल्ला अणतगुणा, बउसस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, पडिसेवणाकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, णियंठस्स सिणायस्स य एएसि ण अजहन्नमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्हवि तुल्ला अणंतगुणा १५॥ ७६४॥ पुलाए ण भंते! किं सजोगी होज्जा अजोगी होज्जा? गोयमा! सजोगी होज्जा नो अजोगी होज्जा, जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा वइजोगी होज्जा कायजोगी होज्जा? गोयमा! मणजोगी वा होज्जा वइजोगी वा होज्जा कायजोगी वा होज्जा, एवं जाव नियंठे। सिणाए णं भंते! पुच्छा, गोयमा! सजोगी वा होज्जा अजोगी वा होज्जा, जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा सेस जहा पुलागस्स १६॥ ७६५॥ पुलाए ण भंते! किं सागारोवउत्ते होज्जा अणागारोवउत्ते होज्जा? गोयमा! सागारोवउत्ते वा होज्जा अणागारोवउत्ते वा होज्जा, एव जाव सिणाए १७॥ ७६६॥ पुलाए णं भंते! किं सकसाई होज्जा अकसाई होज्जा? गोयमा! सकसाई होज्जा णो अकसाई होज्जा, जइ सकसाई होज्जा से ण भंते! कइसु कसाएसु होज्जा? गोयमा! चउसु कोहमाणमायालोभेसु होज्जा, एव बउसेवि, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि, कसायकुसीले ण पुच्छा, गोयमा! सकसाई होज्जा णो अकसाई होज्जा, जइ सकसाई होज्जा से ण भंते! कइसु कसाएसु होज्जा? गोयमा! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एगम्मि वा होज्जा, चउसु होज्जमाणे चउसु संजलणकोहमाणमायालोभेसु होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु संजलणमाणमायालोभेसु होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु संजलणमायालोभेसु होज्जा, एगम्मि होज्जमाणे एगम्मि सजलणलोभे होज्जा, नियठे ण पुच्छा, गोयमा! णो सकसाई

कुसीले वा नियंठे वा असंजमं वा उवसंपज्जइ। सिणाए णं पुच्छा गोयमा! सिणा-
यत्तं चयइ सिद्धिगइं उवसंपज्जइ २४ ॥ ७७३ ॥ पुलाए णं भंते! किं सागारोवउत्ते
होज्जा अणागारोवउत्ते होज्जा? गोयमा! सागारोवउत्ते होज्जा अणागारोवउत्ते होज्जा।
बउसे णं भंते! पुच्छा गोयमा! सागारोवउत्ते वा होज्जा अणागारोवउत्ते वा होज्जा
एवं पडिसेवणाकुसीलेवि एवं कसायकुसीलेवि नियंठे सिणाए य जहा पुलाए
२५ ॥ ७७४ ॥ पुलाए णं भंते! किं आहारए होज्जा अणाहारए होज्जा? गोयमा!
आहारए होज्जा णो अणाहारए होज्जा एवं जाव नियंठे। सिणाए णं पुच्छा,
गोयमा! आहारए वा होज्जा अणाहारए वा होज्जा २६ ॥ ७७५ ॥ पुलाए णं
भंते! कइ भवग्गहणाइं होज्जा? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं उक्कोसेणं तिन्नि। बउसे णं
पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं एक्कं उक्कोसेणं अट्ठ, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि एवं कसा-
यकुसीलेवि नियंठे जहा पुलाए। सिणाए णं पुच्छा गोयमा! एक्कं २७ ॥ ७७६ ॥
पुलायस्स णं भंते! एगभवग्गहणिया केवइया आगरिसा प०? गोयमा! जहन्नेणं
एक्को उक्कोसेणं तिन्नि। बउसस्स णं पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं एक्को उक्कोसेणं सयग्गसो
एवं पडिसेवणाकुसीलेवि कसायकुसीले एवं चेव। नियंठस्स णं पुच्छा गोयमा!
जहन्नेणं एक्को उक्कोसेणं दोन्नि। सिणायस्स णं पुच्छा गोयमा! एक्को ॥ पुलायस्स
णं भंते! नाणाभवग्गहणिया केवइया आगरिसा प०? गोयमा! जहन्नेणं दोन्नि
उक्कोसेणं सत्त। बउसस्स णं पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं दोन्नि उक्कोसेणं सहस्सग्गसो
एवं जाव कसायकुसीलस्स। नियंठस्स णं पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं दोन्नि उक्कोसेणं
पंच। सिणायस्स णं पुच्छा गोयमा! नत्थि एक्कोवि २८ ॥ ७७७ ॥ पुलाए णं भंते!
कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। बउसे
णं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी एवं पडिसेवणा-
कुसीलेवि कसायकुसीलेवि एवं चेव। नियंठे णं पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं
उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। सिणाए णं पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा
पुव्वकोडी ॥ पुलाया णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं
उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। बउसा णं भंते! पुच्छा गोयमा! सव्वद्धं, एवं जाव कसाय-
कुसीला नियंठा जहा पुलागा सिणाया जहा बउसा २९ ॥ ७७८ ॥ पुलागस्स
णं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं
कालं अणंताओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं
देसूणं एवं जाव नियंठस्स। सिणायस्स णं पुच्छा गोयमा! नत्थि अंतरं ॥ पुलागाणं
भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखे-

सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा छव्विहबंधए वा, सत्त बंधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधइ, अट्ठ बंधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधइ, छ बंधमाणे आउयमोहणिज्जवज्जाओ छक्कम्मप्पगडीओ बंधइ । नियंठे णं पुच्छा, गोयमा ! एगं वेयणिज्जं कम्मं बंधइ । सिणाए णं पुच्छा, गोयमा ! एगविहबंधए वा अबंधए वा, एगं बंधमाणे एगं वेयणिज्जं कम्मं बंधइ २१ ॥ ७७० ॥ पुलाए णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ वेदेइ ? गोयमा ! नियमं अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेइ, एवं जाव कसायकुसीले, नियंठे णं पुच्छा, गोयमा ! मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेइ । सिणाए णं पुच्छा, गोयमा ! वेयणिज्जआउयनामगोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेइ २२ ॥ ७७१ ॥ पुलाए णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ ? गोयमा ! आउयवेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ । बउसे णं पुच्छा, गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा अट्ठविहउदीरए वा छव्विहउदीरए वा, सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, छ उदीरेमाणे आउयवेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, पडिसेवणाकुसीले एवं चेव, कसायकुसीले णं पुच्छा, गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा अट्ठविहउदीरए वा छव्विहउदीरए वा पंचविहउदीरए वा, सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, छ उदीरेमाणे आउयवेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, पंच उदीरेमाणे आउयवेयणिज्जमोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ । नियंठे णं पुच्छा, गोयमा ! पंचविहउदीरए वा दुविहउदीरए वा, पंच उदीरेमाणे आउयवेयणिज्जमोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, दो उदीरेमाणे णामं च गोयं च उदीरेइ । सिणाए णं पुच्छा, गोयमा ! दुविहउदीरए वा अणुदीरए वा, दो उदीरेमाणे णामं च गोयं च उदीरेइ २३ ॥ ७७२ ॥ पुलाए णं भंते ! पुलायत्तं जहमाणे किं जहइ किं उवसंपज्जइ ? गोयमा ! पुलायत्तं जहइ कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा उवसंपज्जइ, बउसे णं भंते ! बउसत्तं जहमाणे किं जहइ किं उवसंपज्जइ ? गोयमा ! बउसत्तं जहइ पडिसेवणाकुसीलं वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जइ, पडिसेवणाकुसीले णं भंते ! पडिसेवणाकुसीलत्त० पुच्छा, गोयमा ! पडिसेवणाकुसीलत्तं जहइ बउसं वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जइ, कसायकुसीले पुच्छा, गोयमा ! कसायकुसीलत्तं जहइ पुलायं वा बउसं वा पडिसेवणाकुसीलं वा णियंठं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जइ, णियंठे णं पुच्छा, गोयमा ! नियंठत्तं जहइ कसाय-

ज्जाइं वासाइं । वउसाणं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! नत्थि अतरं, एवं जाव कसाय-कुसीलाण । नियंठाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा, सिणायाणं जहा वउसाण ३० ॥ ७७९ ॥ पुलागस्स णं भंते ! कइ समुग्घाया प० ? गोयमा ! तिन्नि समुग्घाया प०, तं०–वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए, वउसस्स णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! पच समुग्घाया प०, तं०–वेयणासमुग्घाए जाव तेयासमुग्घाए, एवं पडिसेवणाकुसीलेवि, कसायकुसीलस्स पुच्छा, गोयमा ! छ समुग्घाया प०, तं०–वेयणासमुग्घाए जाव आहारगसमुग्घाए, नियठस्स ण पुच्छा, गोयमा ! नत्थि एक्कोवि, सिणायस्स णं पुच्छा, गोयमा ! एगे केवलिसमुग्घाए प० ३१ ॥ ७८० ॥ पुलाए ण भते ! लोगस्स किं सखेज्जइभागे होज्जा १, असखेज्जइभागे होज्जा २, सखेज्जेसु भागेसु होज्जा ३, असखेज्जेसु भागेसु होज्जा ४, सव्वलोए होज्जा ५ ? गोयमा ! णो सखेज्जइभागे होज्जा, असखेज्जइभागे होज्जा, णो सखेज्जेसु भागेसु होज्जा, (णो) असखेज्जेसु भागेसु होज्जा, णो सव्वलोए होज्जा, एव जाव नियठे । सिणाए णं पुच्छा, गोयमा ! णो सखेज्जइभागे होज्जा असखेज्जइभागे होज्जा णो सखेज्जेसु भागेसु होज्जा असखेज्जेसु भागेसु होज्जा सव्व-लोए वा होज्जा ३२ ॥ ७८१ ॥ पुलाए ण भते ! लोगस्स किं सखेज्जइभाग फुसइ असखेज्जइभागं फुसइ० ? एवं जहा ओगाहणा भणिया तहा फुसणावि भाणियव्वा जाव सिणाए ३३ ॥ ७८२ ॥ पुलाए णं भंते ! कयरम्मि भावे होज्जा ? गोयमा ! खओवसमिए भावे होज्जा, एव जाव कसायकुसीले । नियठे पुच्छा, गोयमा ! उवसमिए वा भावे होज्जा खइए वा भावे होज्जा । सिणाए पुच्छा, गोयमा ! खइए भावे होज्जा ३४ ॥ ७८३ ॥ पुलाया ण भते ! एगसमएण केवइया होज्जा ? गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि, जइ अत्थि जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सयपुहुत्त, पुव्वपडिवन्नए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि, जइ अत्थि जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सहस्सपुहुत्त । वउसा ण भते ! एगसमएणं० पुच्छा, गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि, जइ अत्थि जहन्नेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण सयपुहुत्त, पुव्वपडिवन्नए पडुच्च जहन्नेण कोडिसयपुहुत्त उक्कोसेणवि कोडिसयपुहुत्त, एव पडिसेवणा-कुसीलेवि । कसायकुसीलाण पुच्छा, गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि, जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण (कोडि)सहस्सपुहुत्तं, पुव्वपडिवन्नए पडुच्च जहन्नेण कोडिसहस्सपुहुत्तं उक्कोसेणवि कोडिसहस्सपुहुत्तं । नियठाणं पुच्छा, गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि, जइ

होज्जा णो लिंगातीते होज्जा, सेसा जहा सामाइयसंजए ९। सामाइयसंजए णं भंते ! कइसु सरीरेसु होज्जा ? गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा होज्जा जहा कसायकुसीले एवं छेओवट्ठावणिएवि, सेसा जहा पुलाए १०। सामाइयसंजए णं भंते ! किं कम्मभूमीए होज्जा अकम्मभूमीए होज्जा ? गोयमा ! जम्मणं संतिभावं च पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा णो अकम्मभूमीए जहा बउसे एवं छेओवट्ठावणिएवि, परिहारविसुद्धिए य जहा पुलाए, सेसा जहा सामाइयसंजए ११॥ ७८७॥ सामाइयसंजए णं भंते ! किं ओसप्पिणीकाले होज्जा उस्सप्पिणीकाले होज्जा णोओसप्पिणिणोउस्सप्पिणिकाले होज्जा ? गोयमा ! ओसप्पिणीकाले जहा बउसे एवं छेओवट्ठावणिएवि नवरं जम्मणं संतिभावं (च) पडुच्च चउसुवि पलिभागेसु नत्थि साहरणं पडुच्च अन्नयरे पलिभागे होज्जा, सेसं तं चेव। परिहारविसुद्धिए पुच्छा, गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा णोओसप्पिणिणोउस्सप्पिणिकाले णो होज्जा, जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा जहा पुलाओ, उस्सप्पिणिकालेवि जहा पुलाओ, सुहुमसंपरा(इ)ओ जहा णियंठो, एवं अहक्खाओवि १२॥ ७८८॥ सामाइयसंजए णं भंते ! कालगए समाणे किं गतिं गच्छइ ? गोयमा ! देवगतिं गच्छइ, देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा वाणमंतरेसु उववज्जेज्जा जोइसिएसु उववज्जेज्जा वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो भवणवासीसु उववज्जेज्जा जहा कसायकुसीले एवं छेओवट्ठावणिएवि, परिहारविसुद्धिए जहा पुलाए, सुहुमसंपराए जहा नियंठे। अहक्खाए पुच्छा, गोयमा ! एवं अहक्खायसंजएवि जाव अजहन्नमणुक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा, अत्थेगइ(या)ए सिज्झ(न्ति)इ जाव अंतं करे(न्ति)इ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणे किं इंदत्ताए उववज्जइ पुच्छा, गोयमा ! अविराहणं पडुच्च एवं जहा कसायकुसीले एवं छेओवट्ठावणिएवि परिहारविसुद्धिए जहा पुलाए, सेसा जहा णियंठे। सामाइयसंजयस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं दो पलिओवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, एवं छेओवट्ठावणिएवि परिहारविसुद्धियस्स पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं दो पलिओवमाइं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं, सेसाणं जहा नियंठस्स १३॥ ७८९॥ सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवइया संजमठाणा प० ? गोयमा ! असंखेज्जा संजमठाणा प० एवं जाव परिहारविसुद्धियस्स। सुहुमसंपरायसंजयस्स पुच्छा, गोयमा ! असंखेज्जा अंतोमुहुत्तिया संजमठाणा प० अहक्खायसंजयस्स पुच्छा, गोयमा ! एगे अजहन्नमणुक्कोसए संजमठाणे प०। एएसि णं भंते ! सामाइयछेओवट्ठावणियपरिहारविसुद्धियसुहुमसंपरायअहक्खायसंजयाणं संजमठाणाणं

ठियकप्पे होज्जा अट्ठियकप्पे होज्जा ? गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा अट्ठियकप्पे वा होज्जा, छेदोवट्ठावणियसजए पुच्छा, गोयमा ! ठियकप्पे होज्जा नो अट्ठियकप्पे होज्जा, एव परिहारविसुद्धियसंजएवि, सेसा जहा सामाइयसजए । सामाइयसजए णं भंते ! किं जिणकप्पे होज्जा थेरकप्पे होज्जा कप्पातीते होज्जा ? गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा जहा कसायकुसीले तहेव निरवसेसं, छेदोवट्ठावणिओ परिहारविसुद्धिओ य जहा बउसो, सेसा जहा नियंठे ४ ॥ ७८६ ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! किं पुलाए होज्जा बउसे जाव सिणाए होज्जा ? गोयमा ! पुलाए वा होज्जा बउसे जाव कसायकुसीले वा होज्जा, नो नियंठे होज्जा नो सिणाए होज्जा, एवं छेदोवट्ठावणिएवि, परिहारविसुद्धियसंजए णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! नो पुलाए नो बउसे नो पडिसेवणाकुसीले होज्जा, कसायकुसीले होज्जा, नो नियंठे होज्जा नो सिणाए होज्जा, एवं सुहुमसंपराएवि, अहक्खायसंजए पुच्छा, गोयमा ! नो पुलाए होज्जा जाव नो कसायकुसीले होज्जा, नियंठे वा होज्जा सिणाए वा होज्जा ५ ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! किं पडिसेवए होज्जा अपडिसेवए होज्जा ? गोयमा ! पडिसेवए वा होज्जा अपडिसेवए वा होज्जा, जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा० सेसं जहा पुलागस्स, जहा सामाइयसंजए एवं छेदोवट्ठावणिएवि, परिहारविसुद्धियसंजए पुच्छा, गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा अपडिसेवए होज्जा, एवं जाव अहक्खायसंजए ६ ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! कइसु नाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेसु होज्जा, एवं जहा कसायकुसीलस्स तहेव चत्तारि नाणाइं भयणाए, एवं जाव सुहुमसंपरा(इ)ए, अहक्खायसंजयस्स पंच नाणाइं भयणाए जहा नाणुद्देसए । सामाइयसंजए णं भंते ! केवइयं सुयं अहिज्जेज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठ पवयणमायाओ जहा कसायकुसीले, एवं छेदोवट्ठावणिएवि, परिहारविसुद्धियसंजए पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं नवमस्स पुव्वस्स तइयं आयारवत्थु उक्कोसेणं असंपुण्णाइं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा, सुहुमसंपरायसंजए जहा सामाइयसंजए, अहक्खायसंजए पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठ पवयणमायाओ उक्कोसेणं चउद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा सुयवइरित्ते वा होज्जा ७ । सामाइयसंजए णं भंते ! किं तित्थे होज्जा अतित्थे होज्जा ? गोयमा ! तित्थे वा होज्जा अतित्थे वा होज्जा जहा कसायकुसीले, छेदोवट्ठावणिए परिहारविसुद्धिए (सुहुमसंपराए) य जहा पुलाए, सेसा जहा सामाइयसंजए ८ । सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलिंगे होज्जा अन्नलिंगे होज्जा गिहिलिंगे होज्जा ? जहा पुलाए, एवं छेदोवट्ठावणिएवि, परिहारविसुद्धियसंजए-णं भंते ! किं० पुच्छा, गोयमा ! दव्वलिंगंपि भावलिंगंपि पडुच्च सलिंगे होज्जा नो अन्नलिंगे

होज्जा ? गोयमा ! सागारोवउत्ते जहा पुलाए, एवं जाव अहक्खाए, नवरं सुहुमसंपराए सागारोवउत्ते होज्जा नो अणागारोवउत्ते होज्जा १७ ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! किं सकसाई होज्जा अकसाई होज्जा ? गोयमा ! सकसाई होज्जा नो अकसाई होज्जा जहा कसायकुसीले एवं छेओवट्ठावणिएवि परिहारविसुद्धिएवि जहा पुलाए, सुहुमसंपराए पुच्छा गोयमा ! सकसाई होज्जा नो अकसाई होज्जा जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कइसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! एगम्मि संजलणलोभे होज्जा अहक्खायसंजए जहा नियंठे १८ ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलेस्से होज्जा अलेस्से होज्जा ? गोयमा ! सलेस्से होज्जा जहा कसायकुसीले, एवं छेओवट्ठावणिएवि परिहारविसुद्धिए जहा पुलाए, सुहुमसंपराए जहा नियंठे अहक्खाए जहा सिणाए, नवरं जइ सलेस्से होज्जा एगाए सुक्कलेस्साए होज्जा १९ ॥ ७९१ ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा हीयमाणपरिणामे होज्जा अवट्ठियपरिणामे होज्जा ? गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे होज्जा जहा पुलाए, एवं जाव परिहारविसुद्धिए, सुहुमसंपराए पुच्छा गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा हीयमाणपरिणामे वा होज्जा नो अवट्ठियपरिणामे होज्जा अहक्खाए जहा नियंठे। सामाइयसंजए णं भंते ! केवइयं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एवं समयं जहा पुलाए, एवं जाव परिहारविसुद्धिए, सुहुमसंपरायसंजए णं भंते ! केवइयं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एवं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं केवइयं कालं हीयमाणपरिणामे होज्जा एवं चेव अहक्खायसंजए णं भंते ! केवइयं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं केवइयं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एवं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी २० ॥ ७९२ ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा एवं जहा बउसे एवं जाव परिहारविसुद्धिए, सुहुमसंपरायसंजए पुच्छा गोयमा ! आउयमोहणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ बंधइ, अहक्खायसंजए जहा सिणाए २१ ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ वेदेइ ? गोयमा ! नियमं अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेइ, एवं जाव सुहुमसंपराए, अहक्खाए पुच्छा गोयमा ! सत्तविहवेदए वा चउव्विहवेदए वा सत्त वेदेमाणे मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेइ, चत्तारि वेदेमाणे वेयणिज्जाउयनामगोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेइ २२ ॥ सामाइयसंजए णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ ? गोयमा ! सत्तविह जहा बउसे एवं जाव परिहारविसुद्धिए, सुहुमसंपराए पुच्छा गोयमा ! छव्विहउदीरए वा पंचविहउदीरए वा छ उदीरेमाणे आउयवेयणिज्ज-

कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवे अहक्खायसजयस्स एगे अजहन्नमणुक्कोसए सजमट्ठाणे, सुहुमसंपरायसजयस्स अतोमुहुत्तिया सजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, परिहारविसुद्धियसजयस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, सामाइयसजयस्स छेदोवट्ठावणियसजयस्स य एएसि णं सजमट्ठाणा दोण्हवि तुल्ला असखेज्जगुणा १४ ॥ ७९० ॥ सामाइयसजयस्स ण भंते! केवइया चरित्तपज्जवा प०? गोयमा! अणंता चरित्तपज्जवा प०, एवं जाव अहक्खायसंजयस्स ॥ सामाइयसजए णं भते! सामाइयसजयस्स सट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे तुल्ले अब्भहिए? गोयमा! सिय हीणे छट्ठाणवडिए, सामाइयसजए णं भंते! छेदोवट्ठावणियसजयस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं० पुच्छा, गोयमा! सिय हीणे छट्ठाणवडिए, एवं परिहारविसुद्धियस्सवि, सामाइयसजए ण भंते! सुहुमसपरायसजयस्स परट्ठाण-सन्निगासेण चरित्तपज्जवे० पुच्छा, गोयमा! हीणे नो तुल्ले नो अब्भहिए, अणंतगुण-हीणे, एव अहक्खायसजयस्सवि, एव छेदोवट्ठावणिएवि, हेट्ठिल्लेसु तिसुवि समं छट्ठाणवडिए, उवरिल्लेसु दोसुवि तहेव हीणे, जहा छेदोवट्ठावणिए तहा परिहारविसुद्धि-एवि, सुहुमसंपरागसजए णं भंते! सामाइयसजयस्स परट्ठाण० पुच्छा, गोयमा! नो हीणे नो तुल्ले अब्भहिए अणतगुणमब्भहिए, एव छेदोवट्ठावणियपरिहारविसुद्धिएसुवि सम सट्ठाणे सिय हीणे नो (सिय)तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे अणतगुणहीणे, अह (जइ) अब्भहिए अणंतगुणमब्भहिए, सुहुमसपरायसजयस्स अहक्खायसजयस्स पर-ट्ठाण० पुच्छा, गोयमा! हीणे नो तुल्ले नो अब्भहिए, अणंतगुणहीणे, अहक्खाए हेट्ठि-ल्लाण चउण्हवि नो हीणे नो तुल्ले अब्भहिए अणतगुणमब्भहिए, सट्ठाणे नो हीणे तुल्ले नो अब्भहिए। एएसि ण भते! सामाइयछेदोवट्ठावणियपरिहारविसुद्धियसुहुमसपराय-अहक्खायसजयाणं जहन्नुक्कोसगाण चरित्तपज्जवाण कयरे २ जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सामाइयसंजयस्स छेदोवट्ठावणियसजयस्स य एएसि ण जहन्नगा चरित्तपज्जवा दोण्हवि तुल्ला सव्वत्थोवा, परिहारविसुद्धियसजयस्स जहन्नगा चरित्त-पज्जवा अणतगुणा तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, सामाइयसजयस्स छेदोवट्ठावणियसजयस्स य एएसि णं उक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्हवि तुल्ला अणत-गुणा, सुहुमसंपरायसंजयस्स जहन्नगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, अहक्खायसंजयस्स अजहन्नमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा १५ ॥ सामाइयसजए ण भते! किं सजोगी होज्जा अजोगी होज्जा? गोयमा! सजोगी जहा पुलाए, एव जाव सुहुमसपरायसजए, अहक्खाए जहा सिणाए १६ ॥ सामाइयसंजए णं भते! किं सागारोवउत्ते होज्जा अणागारोवउत्ते

परिहारविसुद्धिए जहन्नेणं एवं समयं उक्कोसेणं देसूणएहिं एगूणतीसाए वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी सुहुमसंपराए जहा नियंठे अहक्खाए जहा सामाइयसंजए। सामाइयसंजया णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! सव्व(द्धं)द्धा, छेओवट्ठावणिए पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं उक्कोसेणं पन्नासं सागरोवमकोडिसयसहस्साइं, परिहारविसुद्धिए पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं देसूणाइं दो वाससयाइं उक्कोसेणं देसूणाओ दो पुव्वकोडीओ सुहुमसंपरायसंजया णं भंते! पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, अहक्खायसंजया जहा सामाइयसंजया १९ ॥ सामाइयसंजयस्स णं भंते! केवइयं कालं अंतरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं जहा पुलागस्स एवं जाव अहक्खायसंजयस्स सामाइयसंजयाणं भंते! पुच्छा गोयमा! नत्थि अंतरं, छेओवट्ठावणिय पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं तेवट्ठिं वाससहस्साइं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ परिहारविसुद्धियस्स पुच्छा गोयमा! जहन्नेणं चउरासीइं वाससहस्साइं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ सुहुमसंपरायाणं जहा नियंठाणं अहक्खायाणं जहा सामाइयसंजयाणं २० ॥ सामाइयसंजयस्स णं भंते! कइ समुग्घाया पन्नत्ता? गोयमा! छ समुग्घाया पन्नत्ता जहा कसायकुसीलस्स एवं छेओवट्ठावणियस्सवि परिहारविसुद्धियस्स जहा पुलागस्स सुहुमसंपरायस्स जहा नियंठस्स अहक्खायस्स जहा सिणायस्स २१ ॥ सामाइयसंजए णं भंते! लोगस्स किं संखेज्जइभागे होज्जा असंखेज्जइभागे पुच्छा गोयमा! णो संखेज्जइ जहा पुलाए, एवं जाव सुहुमसंपराए। अहक्खायसंजए जहा सिणाए २२ ॥ सामाइयसंजए णं भंते! लोगस्स किं संखेज्जइभागं फुसइ जहेव होज्जा तहेव फुसइ २३ ॥ सामाइयसंजए णं भंते! कयरम्मि भावे होज्जा? गोयमा! ख(ओव)समिए भावे होज्जा एवं जाव सुहुमसंपराए, अहक्खायसंजए पुच्छा गोयमा! उवसमिए वा खइए वा भावे होज्जा २४। सामाइयसंजया णं भंते! एगसमएणं केवइया होज्जा? गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च जहा कसायकुसीले तहेव निरवसेसं छेओवट्ठावणिया पुच्छा गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं सयपुहुत्तं, पुव्वपडिवन्नए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि जइ अत्थि जहन्नेणं कोडिसयपुहुत्तं उक्कोसेणवि कोडिसयपुहुत्तं परिहारविसुद्धिया जहा पुलागा सुहुमसंपराया जहा नियंठा अहक्खायसंजयाणं पुच्छा गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं बावट्ठं सयं अट्ठुत्तरसयं खवगाणं चउप्पन्नं उवसामगाणं पुव्वपडिवन्नए पडुच्च जहन्नेणं कोडिपुहुत्तं

ग्गओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, पच उदीरेमाणे आउयवेयणिज्जमोहणिज्जवज्जाओ पच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, अहक्खायसजए पुच्छा, गोयमा ! पचविहउदीरए वा दुविहउदीरए वा अणुदीरए वा, पच उदीरेमाणे आउय० सेस जहा नियठस्स २३ ॥ ७९३ ॥ सामाइयसंजए ण भंते ! सामाइयसजयत्त जहमाणे किं जहइ किं उवसंपज्जइ ? गोयमा ! सामाइयसजयत्त जहइ छेदोवट्ठावणियसज(य)म वा सुहुमसंपरायसंज(य)मं वा असजम वा सजमासजम वा उवसंपज्जइ, छेदोवट्ठावणिय० पुच्छा, गोयमा ! छेदोवट्ठावणियसजयत्त जहइ सामाइयसजम वा परिहारविसुद्धियसंजमं वा सुहुमसंपरायसजम वा असजम वा सजमासजमं वा उवसपज्जइ, परिहारविसुद्धिए पुच्छा, गोयमा ! परिहारविसुद्धियसजयत्त जहइ छेदोवट्ठावणियसज(यं)म वा असजमं वा उवसपज्जइ, सुहुमसपराए पुच्छा, गोयमा ! सुहुमसपरायसजयत्त जहइ सामाइयसंज(यं)म वा छेदोवट्ठावणियसज(य)म वा अहक्खायसज(य)म वा असजम वा उवसपज्जइ, अहक्खायसजए ण पुच्छा, गोयमा ! अहक्खायसजयत्त जहइ सुहुमसंपरायसंज(यं)म वा असजम वा सिद्धिगइं वा उवसपज्जइ २४ ॥ ७९४ ॥ सामाइयसजए णं भते ! कि सन्नोवउत्ते होज्जा नोसन्नोवउत्ते होज्जा ? गोयमा ! सन्नोवउत्ते होज्जा जहा बउसे, एवं जाव परिहारविसुद्धिए, सुहुमसपराए अहक्खाए य जहा पुलाए २५ ॥ सामाइयसजए ण भते ! कि आहारए होज्जा अणाहारए होज्जा ? जहा पुलाए, एव जाव सुहुमसपराए, अहक्खायसजए जहा सिणाए २६॥ सामाइयसजए णं भते ! कइ भवग्गहणाइ होज्जा ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क (समय) उक्कोसेण अट्ठ, एव छेदोवट्ठावणिएवि, परिहारविसुद्धिए पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेण एक्क उक्कोसेण तिन्नि, एव जाव अहक्खाए २७ ॥ ७९५ ॥ सामाइयसजयस्स ण भते ! एगभवग्गहणिया केवइया आगरिसा प० ? गोयमा ! जहन्नेण जहा बउसस्स, छेदोवट्ठावणियस्स पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं उक्कोसेण वीसपुहुत्तं, परिहारविसुद्धियस्स पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण एक्क उक्कोसेणं तिन्नि, सुहुमसपरायस्स पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण ए(क्को)क्क उक्कोसेण चत्तारि, अहक्खायस्स पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण एक्क उक्कोसेण दोन्नि । सामाइयसजयस्स णं भंते ! नाणाभवग्गहणिया केवइया आगरिसा प० ? गोयमा ! जहा बउसे, छेदोवट्ठावणियस्स पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण दोन्नि उक्कोसेण उवरिं नवण्ह सयाणं अतो सहस्सस्स, परिहारविसुद्धियस्स जहन्नेण दोन्नि उक्कोसेण सत्त, सुहुमसपरायस्स जहन्नेणं दोन्नि उक्कोसेणं नव, अहक्खायस्स जहन्नेण दोन्नि उक्कोसेण पंच २८ ॥७९६॥ सामाइयसजए ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्क समयं उक्कोसेण देसूणएहिं नवहिं वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी, एव छेदोवट्ठावणिएवि,

उक्कोसेणवि कोडिपुहुत्तं ॥ एएसि णं भंते ! सामाइयछेदोवट्ठावणियपरिहारविसुद्धियसु-हुमसंपरायअहक्खायसंजयाणं कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमसंपरायसंजया, परिहारविसुद्धियसंजया संखेज्जगुणा, अहक्खायसंजया संखेज्ज-गुणा, छेदोवट्ठावणियसंजया संखेज्जगुणा, सामाइयसंजया संखेज्जगुणा ३६ ॥७९७॥ पडिसेवण दोसालोयणा य आलोयणारिहे चेव । तत्तो सामायारी पायच्छित्ते तवे चेव ॥१॥ कइविहा णं भंते ! पडिसेवणा प० ? गोयमा ! दसविहा पडिसेवणा प०, तं०— दप्प १ प्पमाद २ ऽणाभोगे ३, आउरे ४ आवती ५ ति य । संकिन्ने ६ सहसक्कारे, ७ भय ८ प्पओसा ९ य वीमंसा १० ॥ १ ॥ दस आलोयणादोसा प०, तंजहा— आकंपइत्ता १ अणुमाणइत्ता २ जं दिट्ठं ३ बायरं च ४ सुहुमं (च) वा ५ । छन्नं ६ सद्दा-उलयं ७ बहुजण ८ अव्वत्त ९ तस्सेवी १० ॥ २ ॥ दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ अत्तदोसं आलोइत्तए, तंजहा—जाइसंपन्ने १, कुलसंपन्ने २, विणयसंपन्ने ३, णाणसंपन्ने ४, दंसणसंपन्ने ५, चरित्तसंपन्ने ६, खंते ७, दंते ८, अमाई ९, अपच्छा-णुतावी १० । अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ आलोयणं पडिच्छित्तए, तंजहा— आयारवं १, आहारवं २, ववहारवं ३, उव्वीलए ४, पकुव्वए ५, अपरिस्सावी ६, निज्जवए ७, अवायदंसी ८ ॥ ७९८ ॥ दसविहा सामायारी प०, तं०—इच्छा १ मिच्छा २ तहक्कारे ३, आवस्सिया य ४ निसीहिया ५ । आपुच्छणा य ६ पडिपुच्छा ७, छंदणा य ८ निमंतणा ९ ॥ १ ॥ उवसंपया १० य काले, सामायारी भवे दसहा ॥ ७९९ ॥ दसविहे पायच्छित्ते प०, तं०—आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउसग्गारिहे तवारिहे छेदारिहे मूलारिहे अणवट्ठप्पारिहे पारंचियारिहे ॥ ८०० ॥ दुविहे तवे पन्नत्ते, तंजहा—बाहि(रि)रए य अब्भिंतरए य, से किं तं बाहि-रए तवे ? बाहिरए तवे छव्विहे प०, तं०—अणसण ऊणोयरिया भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ । कायकिलेसो पडिसंलीणया (बज्झो तवो होइ) ॥ १ ॥ से किं तं अणसणे ? अणसणे दुविहे प०, तं०—इत्तरिए य आवकहिए य, से किं तं इत्तरिए ? इत्तरिए अणेगविहे पन्नत्ते, तंजहा—चउत्थे भत्ते छट्ठे भत्ते अट्ठमे भत्ते दसमे भत्ते दुवालसमे भत्ते चउद्दसमे भत्ते अद्धमासिए भत्ते मासिए भत्ते दोमासिए भत्ते ते(ति)मासिए भत्ते जाव छम्मासिए भत्ते, सेत्तं इत्तरिए । से किं तं आवकहिए ? आवकहिए दुविहे प०, तं०—पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य, से किं तं पाओवगमणे ? पाओवगमणे दुविहे प०, तं०—नीहारिमे य अणीहारिमे य नियमा(मा)मं अपडिक्कमे, से तं पाओवगमणे, से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे प०, तं०—नीहारिमे य अनीहारिमे य नियमं सपडिक्कमे, सेत्तं भत्तपच्चक्खाणे, सेत्तं आवकहिए, सेत्तं

चा उज्जाणेसु वा जहा सोमिलुद्देसए जाव सेज्जासंथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, सेत्तं विवित्तसयणासणसेवणया, सेत्तं पडिसंलीणया, सेत्तं बाहिरए तवे १॥ से किं तं अब्भिंतरए तवे ? अब्भिंतरए तवे छव्विहे प०, तं०-पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ। झाणं विउसग्गो। से किं तं पायच्छित्ते ? पायच्छित्ते दसविहे प०, तं०-आलोयणारिहे जाव पारंचियारिहे, सेत्तं पायच्छित्ते। से किं तं विणए ? विणए सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा-नाणविणए दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वइविणए कायविणए लोगोवयारविणए, से किं तं नाणविणए ? नाणविणए पंचविहे प०, तं०-आभिणिबोहियनाणविणए जाव केवलनाणविणए, सेत्तं नाणविणए, से किं तं दंसणविणए ? दंसणविणए दुविहे प०, तं०-सुस्सूसणाविणए य अणच्चासायणाविणए य, से किं तं सुस्सूसणाविणए ? सुस्सूसणाविणए अणेगविहे प०, तं०-सक्कारेइ वा सम्माणेइ वा जहा चउद्दसमसए तइए उद्देसए जाव पडिसंसाह(र)णया, सेत्तं सुस्सूसणाविणए, से किं तं अणच्चासायणाविणए ? अणच्चासायणाविणए पणयालीसइविहे प०, तं०-अरिहंताणं अणच्चासायणया अरिहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अणच्चासायणया आयरियाणं अणच्चासायणया उवज्झायाणं अणच्चासायणया थेराणं अणच्चासायणया कुलस्स अणच्चासायणया गणस्स अणच्चासायणया संघस्स अणच्चासायणया किरियाए अणच्चासायणया संभोगस्स अणच्चासायणया आभिणिबोहियनाणस्स अणच्चासायणया जाव केवलनाणस्स अणच्चासायणया १५, एएसिं चेव भत्तिबहुमाणेणं एएसिं चेव वन्नसंजलणया, सेत्तं अणच्चासायणयाविणए, सेत्तं दंसणविणए, से किं तं चरित्तविणए ? चरित्तविणए पंचविहे प०, तं०-सामाइयचरित्तविणए जाव अहक्खायचरित्तविणए, सेत्तं चरित्तविणए, से किं तं मणविणए ? मणविणए दुविहे प०, तं०-पसत्थमणविणए य अपसत्थमणविणए य, से किं तं पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए सत्तविहे प०, तंजहा-अपावए असावज्जे अकिरिए निरुवक्केसे अणण्हयकरे अच्छविकरे अभूयाभिसंकणे, सेत्तं पसत्थमणविणए, से किं तं अपसत्थमणविणए ? अप्पसत्थमणविणए सत्तविहे प०, तं०-पावए सावज्जे सकिरिए सउवक्केसे अण्हयकरे छविकरे भूयाभिसंकणे, सेत्तं अप्पसत्थमणविणए, सेत्तं मणविणए, से किं तं वइविणए ? वइविणए दुविहे प०, तं०-पसत्थवइविणए य अप्पसत्थवइविणए य, से किं तं पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए सत्तविहे प०, तं०-अपावए जाव अभूयाभिसंकणे, सेत्तं पसत्थवइविणए, से किं तं अप्पसत्थवइविणए ? अप्पसत्थवइविणए सत्तविहे प०, तं०-पावए सावज्जे जाव भूयाभिसंकणे, सेत्तं अप्पसत्थवइविणए, से तं वइविणए, से किं तं कायविणए ? कायविणए दुविहे प०, तं०-पसत्थकायविणए य अप्पसत्थकायविणए

एगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया एगिंदिया णं (एवं) चेव नवरं चउसमइओ विग्गहो, सेसं तं चेव, सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८ ४ ॥ २५ । ८ ॥ भवसिद्धियनेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अवसेसं तं चेव जाव वेमाणिए, सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८ ५ ॥ २५ । ९ ॥ अभवसिद्धियनेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अवसेसं तं चेव एवं जाव वेमाणि(ए)या सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८ ६ ॥ २५।१० ॥ सम्मदिट्ठिनेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अवसेसं तं चेव एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणि(ए)या सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८ ७ ॥ २५।११ ॥ मिच्छादिट्ठिनेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ? गोयमा ! से जहानामए-पवए पवमाणे अवसेसं तं चेव एवं जाव वेमाणिए, सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८ ८ ॥ २५।१२ ॥ पणवीसइमस्स सयस्स बारसमो उद्देसो समत्तो ॥ पणवीसइमं सयं समत्तं ॥

नमो सुयदेवयाए भगवईए । जीवा १ य लेस्सा २ पक्खिय ३ दिट्ठी ४ अन्नाण ५ नाण ६ सन्नाओ ७ । वेय ८ कसा(य)ए ९ उवओ(गो)ग १० जोग ११ एक्कार(स)वि ठाणा ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी-जीवे णं भंते ! पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ १ बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २, बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३, बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४ ? गोयमा ! अत्थेगइए (जीवे) बंधी बंधइ बंधिस्सइ १ अत्थेगइए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २, अत्थेगइए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३ अत्थेगइए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४-१ ॥ सलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ, बंधी बंधइ न बंधिस्सइ पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगइए एवं चउभंगो । कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी पुच्छा गोयमा ! अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ अत्थेगइए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ एवं जाव पम्हलेस्से सव्वत्थ पढमबिइया भंगा सुक्कलेस्से जहा सलेस्से तहेव चउभंगो । अलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी पुच्छा गोयमा ! बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ २ ॥ कण्हपक्खिए णं भंते ! जीवे पावं कम्मं पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइए बंधी पढमबिइया भंगा । सुक्कपक्खिए णं भंते ! जीवे पुच्छा गोयमा ! चउभंगो भाणियव्वो ॥ ८ ९ ॥ सम्मदिट्ठीणं चत्तारि भंगा मिच्छादिट्ठीणं पढमबिइया भंगा, सम्मामिच्छादिट्ठीणं एवं चेव । नाणीणं चत्तारि भंगा आभिणिबोहियनाणीणं जाव मणपज्जवनाणीणं चत्तारि भंगा, केवलनाणीणं चरिमो भंगो जहा अलेस्साणं २, अन्नाणीणं पढमबिइया,

अणुप्पेहाओ प०, त०—अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अवायाणुप्पेहा ४, सेत्तं झाणे ॥ ८०२ ॥ से किं तं विउसग्गे ? विउसग्गे दुविहे प०, त०—दव्वविउसग्गे य भावविउसग्गे य, से किं तं दव्वविउसग्गे ? दव्व-विउसग्गे चउव्विहे प०, त०—गणविउसग्गे सरीरविउसग्गे उवहिविउसग्गे भत्तपाणविउसग्गे, सेत्तं दव्वविउसग्गे, से किं तं भावविउसग्गे ? भावविउसग्गे तिविहे प०, तं०—कसायविउसग्गे ससारविउसग्गे कम्मविउसग्गे, से किं तं कसायविउसग्गे ? कसायविउसग्गे चउव्विहे प०, तजहा-कोहविउसग्गे माणवि-उसग्गे मायाविउसग्गे लोभविउसग्गे, सेत्त कसायविउसग्गे, से किं तं ससारविउ-सग्गे ? ससारविउसग्गे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—नेरइयससारविउसग्गे जाव देवससारविउसग्गे, सेत्तं ससारविउसग्गे, से किं तं कम्मविउसग्गे ? कम्मविउसग्गे अट्ठविहे प०, तजहा—णाणावरणिज्जकम्मविउसग्गे जाव अतराइयकम्मविउसग्गे, सेत्त कम्मविउसग्गे, सेत्त भावविउसग्गे, सेत्तं अब्भित(र)रिए तवे । सेवं भते ! २ त्ति ॥ ८०३ ॥ **पणवीसइमस्स सयस्स सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥**

रायगिहे जाव एव वयासी-नेरइया ण भंते ! कह उववज्जति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएण करणोवाएणं सेयकाले त ठाणं विप्पजहित्ता पुरिमं ठाणं उवसपज्जित्ताण विहरइ एवामेव एए(ते)वि जीवा पवओविव पवमाणा अज्झवसाणनिव्वत्तिएण करणोवाएणं सेयकाले तं भव विप्पजहित्ता पुरिमं भव उवसपज्जित्ताण विहरन्ति । तेसि ण भते ! जीवाण कहं सीहा गई कहं सीहे गइविसए प० ? गोयमा ! से जहानामए-केइ पुरिसे तरुणे बलवं एवं जहा चउद्दसम-सए पढमुद्देसए जाव तिसमएण वा विग्गहेण उववज्जंति, तेसि ण जीवाणं तहा सीहा गई तहा सीहे गइविसए प० । ते ण भते ! जीवा कह परभवियाउय पक-रेंति ? गोयमा ! अज्झवसाण(जोग)निव्वत्तिएण करणोवाएणं एव खलु ते जीवा पर-भवियाउयं पकरेन्ति, तेसि ण भते ! जीवाण कह गई पवत्तइ ? गोयमा ! आउ-क्खएण भवक्खएण ठिइक्खएणं, एव खलु तेसिं जीवाण गई पवत्तइ, ते णं भते ! जीवा किं आइड्ढीए उववज्जंति परिड्ढीए उववज्जति ? गोयमा ! आइड्ढीए उववज्जंति नो परिड्ढीए उववज्जति । ते णं भते ! जीवा किं आयकम्मुणा उववज्जंति परकम्मुणा उववज्जति ? गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जति नो परकम्मुणा उववज्जति, ते ण भंते ! जीवा किं आयप्पओगेणं उववज्जंति परप्पओगेण उववज्जति ? गोयमा ! आयप्पओगेणं उववज्जति नो परप्पओगेण उववज्जति । असुरकुमारा णं भते ! कहं उववज्जति ? जहा नेरइया तहेव निरवसेस जाव नो परप्पओगेण उववज्जंति, एवं

भिन्न भंगा सुक्कलेस्से तइयविहूणा भंगा अलेस्से चरिमो भंगो कण्हपक्खिए पढमबिइया भंगा सुक्कपक्खिया तइयविहूणा एवं सम्मदिट्ठिस्सवि मिच्छादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स य पढमबिइया णा(ना)णिस्स तइयविहूणा आभिणिबोहियणाणी जाव मणपज्जवणाणी पढमबिइया केवलणाणी तइयविहूणा एवं णोसण्णोवउत्ते अवेदए अकसाई सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते एएसु तइयविहूणा अजोगिम्मि य चरिमो सेसेसु पढमबिइया । णेरइए णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ एवं नेरइयाइ(दीया) जाव वेमाणियत्ति जस्स जं अत्थि सव्वत्थवि पढमबिइया, णवरं मणुस्से(स) जहा जीवे, जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ जहेव पावं कम्मं तहेव मोहणिज्जंपि निरवसेसं जाव वेमाणिए ॥ ८१९ ॥ जीवे णं भंते ! आउयं कम्मं किं बंधी बंधइ पुच्छा गोयमा ! अत्थेगइए बंधी चउभंगो सलेस्से जाव सुक्कलेस्से चत्तारि भंगा अलेस्से चरिमो भंगो । कण्हपक्खिए णं पुच्छा गोयमा ! अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ अत्थेगइए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, सुक्कपक्खिए सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी चत्तारि भंगा सम्मामिच्छादिट्ठी पुच्छा गोयमा ! अत्थेगइए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ अत्थेगइए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ, णाणी जाव ओहिणाणी चत्तारि भंगा मणपज्जवणाणी पुच्छा गोयमा ! अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगइए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगइए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ, केवलणा(णी)से चरिमो भंगो एवं एएणं कमेणं णोसण्णोवउत्ते बिइयविहूणा जहेव मणपज्जवणाणे अवेदए अकसाई य तइयचउत्था जहेव सम्मामिच्छत्ते अजोगिम्मि चरिमो सेसेसु पदेसु चत्तारि भंगा जाव अणागारोवउत्ते ॥ नेरइए णं भंते ! आउयं कम्मं किं बंधी पुच्छा गोयमा ! अत्थेगइए चत्तारि भंगा एवं सव्वत्थवि नेरइयाणं चत्तारि भंगा णवरं कण्हलेस्से कण्हपक्खिए य पढमतइया भंगा सम्मामिच्छत्ते तइयचउत्था असुरकुमारे एवं चेव णवरं कण्हलेस्से(सं)मि चत्तारि भंगा भाणियव्वा सेसं जहा नेरइयाणं एवं जाव थणियकुमाराणं पुढविकाइयाणं सव्वत्थवि चत्तारि भंगा णवरं कण्हपक्खिए पढमतइया भंगा तेउलेस्से पुच्छा गोयमा ! बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, सेसेसु सव्वत्थ चत्तारि भंगा एवं आउक्काइयवणस्सइकाइयाणवि निरवसेसं तेउकाइयवाउकाइयाणं सव्वत्थवि पढमतइया भंगा बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणंपि सव्वत्थवि पढमतइया भंगा णवरं सम्मत्ते णाणे आभिणिबोहियणाणे सुयणाणे तइओ भंगो । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं कण्हपक्खिए पढमतइया भंगा सम्मामिच्छत्ते तइयचउत्था भंगा, सम्मत्ते णाणे आभिणिबोहियणाणी सुयणाणे ओहिणाणे एएसु पंचसुवि पएसु बिइयविहूणा भंगा सेसेसु चत्तारि भंगा मणुस्साणं

एव मइअन्नाणीणं सुयअन्नाणीणं विभंगणाणीणवि ६ । आहारसन्नोवउत्ताणं जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताणं पढमबिइया नोसन्नोवउत्ताण चत्तारि ७ । सवेदगाणं पढमबिइया, एवं इत्थिवेदगाणं पुरिसवेदगाण नपुंसगवेदगाणवि, अवेदगाण चत्तारि भंगा ॥ सकसाईण चत्तारि, कोहकसाईण पढमबिइया भंगा, एव माणकसा(य)इस्सवि मायाकसाइस्सवि लोभकसाइस्सवि चत्तारि भंगा, अकसाई णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३, अत्थेगइए बंधी ण बंधइ ण बंधिस्सइ ४ । सजोगिस्स चउभंगो, एव मणजो(ग)गिस्सवि वइजोगिस्सवि कायजोगिस्सवि, अजोगिस्स चरिमो, सागारोवउत्ते चत्तारि, अणागारोवउत्तेवि चत्तारि भंगा ११ ॥ ८१० ॥ नेरइए णं भंते ! पाव कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ० पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइए बंधी पढमबिइया १, सलेस्से णं भंते ! नेरइए पाव कम्मं० एव चेव, एवं कण्हलेस्सेवि नीललेस्सेवि काउलेस्सेवि, एव कण्हपक्खिए(वि) सुक्कपक्खिए(वि), सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, णाणी आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिणाणी अन्नाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगनाणी आहारसन्नोवउत्ते जाव परिग्गहसन्नोवउत्ते, सवेदए जाव नपुंसगवेदए, सकसाई जाव लोभकसाई, सजोगी मणजोगी वइजोगी कायजोगी, सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते, एएसु सव्वेसु पएसु पढमबिइया भंगा भाणियव्वा, एव असुरकुमारस्सवि वत्तव्वया भाणियव्वा नवरं तेउलेस्सा इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा य अब्भहिया नपुंसगवेदगा न भन्नति सेस त चेव सव्वत्थ पढमबिइया भंगा, एव जाव थणियकुमारस्स, एव पुढविकाइयस्सवि आउकाइयस्सवि जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्सवि सव्वत्थवि पढमबिइया भंगा नवरं जस्स जा लेस्सा दिट्ठी णाणं अन्नाण वेदो जोगो य जं जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्वं सेस तहेव, मणूसस्स जच्चेव जीवपदे वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा, वाणमंतरस्स जहा असुरकुमारस्स, जोइसियस्स वेमाणियस्स एव चेव नवरं लेस्साओ जाणियव्वाओ, सेस तहेव भाणियव्वं ॥ ८११ ॥ जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ एव जहेव पावकम्मस्स वत्तव्वया भणिया तहेव नाणावरणिज्जस्सवि वत्तव्वया भाणियव्वा नवरं जीवपदे मणुस्सपदे य सकसाई जाव लोभकसाइम्मि य पढमबिइया भंगा अवसेस तं चेव जाव वेमाणिए, एव दरिसणावरणिज्जेणवि दंडगो भाणियव्वो निरवसेसो ॥ जीवे णं भंते ! वेयणिज्ज कम्मं किं बंधी० पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ १, अत्थेगइए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २, अत्थेगइए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४, सलेस्सेवि एवं चेव तइयविहूणा भंगा, कण्हलेस्से जाव पम्हलेस्से पढम-

जहा जीवाणं, नवरं सम्मत्ते ओहिए नाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे एएसु बिइयविहूणा भंगा, सेसं तं चेव, वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा, नामं गोयं अंतरा(इ)यं च एयाणि जहा नाणावरणिज्जं। सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८१३ ॥ बंधिसयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥

अणंतरोववन्नए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा तहेव, गोयमा ! अत्थेगइए बंधी पढमबिइया भंगा। सलेस्से णं भंते ! अणंतरोववन्नए नेरइए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा, गोयमा ! पढमबिइया भंगा, एवं खलु सव्वत्थ पढमबिइया भंगा, नवरं सम्मामिच्छत्तं मणजोगो वइजोगो य न पुच्छिज्जइ, एवं जाव थणियकुमाराणं, बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं वइजोगो न भण्णइ, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणंपि सम्मामिच्छत्तं ओहिनाणं विभंगनाणं मणजोगो वइजोगो एयाणि पंच पयाणि ण भण्णंति। मणुस्साणं अलेस्ससम्मामिच्छत्तमणपज्जवनाणकेवलनाणविभंगनाणनोसण्णोवउत्तअवेदगअकसाइमणजो(गि)गवइजोगअजोगी एयाणि एक्कारस पयाणि ण भण्णंति, वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं तहेव ते तिन्नि न भण्णंति सव्वेसिं, जाणि सेसाणि ठाणाणि सव्वत्थ पढमबिइया भंगा, एगिंदियाणं सव्वत्थ पढमबिइया भंगा, जहा पावे एवं नाणावरणिज्जेणवि दंडओ, एवं आउयवज्जेसु जाव अंतराइए दंडओ ॥ अणंतरोववन्नए णं भंते ! नेरइए आउयं कम्मं किं बंधी० पुच्छा, गोयमा ! बंधी न बंधइ बंधिस्सइ। सलेस्से णं भंते ! अणंतरोववन्नए नेरइए आउयं कम्मं किं बंधी० ? एवं चेव तइओ भंगो, एवं जाव अणागारोवउत्ते, सव्वत्थवि तइओ भंगो, एवं मणुस्सवज्जं जाव वेमाणियाणं, मणुस्साणं सव्वत्थ तइयचउत्था भंगा, नवरं कण्हपक्खिएसु तइओ भंगो सव्वेसिं नाणत्ताइं ताइं चेव। सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८१४ ॥ बंधिसयस्स बिइओ उद्देसो समत्तो ॥

परंपरोववन्नए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइए पढमबिइया, एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएहिवि उद्देसओ भाणियव्वो नेरइयाइओ तहेव नवदंडगसंगहिओ, अट्ठण्हवि कम्मप्पगडीणं जा जस्स कम्मस्स वत्तव्वया सा तस्स अहीणमइरित्ता नेयव्वा जाव वेमाणिया अणागारोवउत्ता। सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८१५ ॥ बंधिसयस्स तइओ उद्देसो समत्तो ॥

अणंतरोगाढए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी० पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइए० एवं जहेव अणंतरोववन्नएहिं नवदंडगसंगहिओ उद्देसओ भणिओ तहेव अणंतरोगाढएहिवि अहीणमइरित्तो भाणियव्वो नेरइयाईए जाव वेमाणिए। सेवं भंते ! २ त्ति ॥ २६-४ ॥ परंपरोगाढए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी० जहेव

एवं एएसुवि अट्ठ भंगा एवं अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाईणं जस्स जं अत्थि लेसा-
दीयं अणागारोवओगपज्जवसाणं तं सव्वं एयाए भयणाए भाणियव्वं जाव वेमा-
णियाणं नवरं अणंतरेसु जे परिहरियव्वा ते जहा बंधिसए तहा इहंपि एवं
नाणावरणिज्जेणवि दंडओ एवं जाव अंतराइएणं निरवसेसं एसोवि नवदंडगसंग-
हिओ उद्देसओ भाणियव्वो। सेवं भंते! २ त्ति ॥ ८१९ ॥ २८।१ ॥ एवं एएणं
कमेणं जहेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी तहेव इहंपि अट्ठसु भंगेसु नेयव्वा नवरं
जाणियव्वं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं जाव (अ)चरिमुद्देसे। सव्वेवि एए
एक्कारस उद्देसगा। सेवं भंते! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८२० ॥ अट्ठावीसइमं
कम्मसमज्जणणसयं समत्तं ॥

जीवा णं भंते! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु १ समायं
पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु २, विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु ३, विसमायं
पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु ४? गोयमा! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु
जाव अत्थेगइया विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ
अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु? तं चेव, गोयमा! जीवा चउव्विहा
पन्नत्ता, तंजहा-अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा १ अत्थेगइया समाउया
विसमोववन्नगा २ अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा ३, अत्थेगइया विसमाउया
विसमोववन्नगा ४ तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं
पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु, तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं
समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु, तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं
पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु, तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमो-
ववन्नगा ते णं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु, से तेणट्ठेणं गोयमा!
तं चेव। सलेस्सा णं भंते! जीवा पावं कम्मं एवं चेव एवं सव्वट्ठाणेसुवि जाव
अणागारोवउत्ता एए सव्वेवि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा। नेरइया णं
भंते! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु पुच्छा, गोयमा! अत्थेगइया
समायं पट्ठविंसु एवं जहेव जीवाणं तहेव भाणियव्वं जाव अणागारोवउत्ता एवं जाव
वेमाणियाणं जस्स जं अत्थि तं एएणं चेव कमेणं भाणियव्वं जहा पावेणं कम्मेणं
दंडओ, एवं एएणं कमेणं अट्ठसुवि कम्मप्पगडीसु अट्ठ दंडगा भाणियव्वा जीवादीया
वेमाणियपज्जवसाणा एसो नवदंडगसंगहिओ पढमो उद्देसओ भाणियव्वो। सेवं भंते!
२ त्ति ॥ ८२१ ॥ एगूणतीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं

पढमतइया भंगा, बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाण एवं चेव नवरं सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे एएसु चउसुवि ठाणेसु तइओ भंगो, पंचिंदियतिरिक्ख-जोणियाण सम्मामिच्छत्ते तइओ भंगो, सेसेसु पदेसु सव्वत्थ पढमतइया भंगा, मणुस्साणं सम्मामिच्छत्ते अवेदए अकसाइम्मि य तइओ भंगो, अलेस्स केवलनाण अजोगी य न पुच्छिज्जति, सेसपदेसु सव्वत्थ पढमतइया भगा, वाणमंतरजोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया । नामं गोय अतराइयं च जहेव नाणावरणिज्ज तहेव निरवसेस । सेव भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८१६ ॥ छव्वीसइमे वंधिसए एयारहमो उद्देसो समत्तो ॥ छव्वीसइमं वंधिसयं समत्तं ॥

जीवा णं भंते ! पाव कम्मं किं करिंसु करेन्ति करिस्सति १, करिंसु करेंति न करिस्सति २, करिंसु न करेंति करिस्संति ३, करिंसु न करेंति न करिस्सति ४ ? गोयमा ! अत्थेगइए करिंसु करेंति करिस्सति १, अत्थेगइए करिंसु करेंति न करि-स्संति २, अत्थेगइए करिंसु न करेंति करिस्संति ३, अत्थेगइए करिंसु न करेंति न करिस्सति ४ । सलेस्से ण भंते ! जीवे पाव कम्म एव एएण अभिलावेण जच्चेव वधिसए वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा, तहेव नवदंडगसंगहिया एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥ ८१७ ॥ सत्तावीसइमं करिंसुगसयं समत्तं ॥

जीवा ण भंते ! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु ? गोयमा ! सव्वेवि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा १ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा २ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ३ अहवा तिरिक्खजोणि-एसु य देवेसु य होज्जा ४ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ५ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा ६ अहवा तिरिक्खजो-णिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ७ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ८ । सलेस्सा ण भंते ! जीवा पाव कम्म कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु ? एव चेव, एव कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा, कण्हपक्खिया सुक्कप-क्खिया एव जाव अणागारोवउत्ता । नेरइया ण भंते ! पावं कम्म कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु ? गोयमा ! सव्वेवि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जत्ति एव चेव अट्ठ भगा भाणियव्वा, एवं सव्वत्थ अट्ठ भंगा, एवं जाव अणागारोवउत्तावि, एव जाव वेमाणियाण, एव नाणावरणिज्जेणवि दंडओ, एव जाव अंतराइएण, एव एए जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दंडगा भवंति । सेव भंते ! २ त्ति जाव विह-रइ ॥ ८१८ ॥ २८।१ ॥ अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्म कहिं समज्जिणिंसु कहिं समायरिंसु ? गोयमा ! सव्वेवि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा,

जाव वेणइयवाईवि सलेस्सा णं भंते! नेरइया किं किरियावाई ? एवं चेव एवं जाव काउलेस्सा कण्हपक्खिया किरियाविवज्जिया एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाणवि वत्तव्वया जाव अणागारोवउत्ता नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं सेसं न भण्णइ, जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढविक्काइया णं भंते! किं किरियावाई पुच्छा गोयमा! नो किरियावाई अकिरियावाईवि अन्नाणियवाईवि नो वेणइयवाई, एवं पुढविक्काइयाणं जं अत्थि तत्थ सव्वत्थवि एयाइं दो मज्झिल्लाइं समोसरणाइं जाव अणागारोवउत्तावि एवं जाव चउरिंदियाणं सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं, सम्मत्तनाणेहिवि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा नवरं जं अत्थि तं भाणियव्वं मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं वाणमंतरजोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥ किरियावाई णं भंते! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेन्ति तिरिक्खजोणियाउयं पकरेन्ति मणुस्साउयं पकरेन्ति देवाउयं पकरेन्ति ? गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेन्ति नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेन्ति मणुस्साउयंपि पकरेन्ति देवा-उयंपि पकरेन्ति जइ देवाउयं पकरेन्ति किं भवणवासिदेवाउयं पकरेन्ति जाव वेमाणियदेवाउयं पकरेन्ति ? गोयमा! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेन्ति नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेन्ति नो जोइसियदेवाउयं पकरेन्ति वेमाणियदेवाउयं पकरेन्ति। अकिरियावाई णं भंते! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेन्ति तिरिक्ख० पुच्छा गोयमा! नेरइयाउयंपि पकरेन्ति जाव देवाउयंपि पकरेन्ति एवं अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि। सलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेन्ति पुच्छा गोयमा! नो नेरइयाउयं एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सावि चउहिवि समोसरणेहिं भाणियव्वा कण्हलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेन्ति पुच्छा, गोयमा! नो नेरइया-उयं पकरेन्ति नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेन्ति मणुस्साउयं पकरेन्ति नो देवाउयं पक-रेन्ति अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य चत्तारिवि आउयाइं पकरेन्ति एवं नीललेस्सावि काउलेस्सावि तेउलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं नेरइयाउयं पकरेन्ति पुच्छा गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेन्ति नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेन्ति मणुस्साउयंपि पकरेन्ति देवाउयंपि पकरेन्ति जइ देवाउयं पकरेन्ति तहेव, तेउलेस्सा णं भंते! जीवा अकिरियावाई किं नेरइयाउयं पुच्छा गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेन्ति तिरिक्खजोणियाउयंपि पकरेन्ति मणुस्साउयंपि पकरेन्ति देवाउयंपि पकरेन्ति एवं अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि जहा तेउलेस्सा एवं पम्हलेस्सावि सुक्कलेस्सावि नेयव्वा ॥ अलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावाई किं

निट्ठविंसु० पुच्छा, गोयमा ! अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगइया समायं पट्ठविंसु तं चेव, गोयमा ! अणंतरोववन्नगा नेरइया दुविहा प०, तं०—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा, तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु, तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु, से तेणट्ठेणं तं चेव । सलेस्सा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया पावं कम्मं एवं चेव, एवं जाव अणागारोवउत्ता, एवं असुरकुमारावि एवं जाव वेमाणिया नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं, एवं नाणावरणिज्जेणवि दंडओ, एवं निरवसेसं जाव अंतराइएणं । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ २५१२ ॥ एवं एएणं गमएणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगपरिवाडी सच्चेव इहवि भाणियव्वा जाव अचरिमोत्ति, अणंतरउद्देसगाणं चउण्हवि एगा वत्तव्वया सेसाणं सत्तण्हं एगा वत्तव्वया ॥ ८२२ ॥

एगूणतीसइमं कम्मपट्ठवणसयं समत्तं ॥

कइ णं भंते ! समोसरणा प० ? गोयमा ! चत्तारि (चउव्विहा) समोसरणा प०, तंजहा—किरियावाई अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई, जीवा णं भंते ! किं किरियावाई अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई ? गोयमा ! जीवा किरियावाईवि अकिरियावाईवि अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि, सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं किरियावाई० पुच्छा, गोयमा ! किरियावाईवि अकिरियावाईवि अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि, एवं जाव सुक्कलेस्सा, अलेस्सा णं भंते ! जीवा पुच्छा, गोयमा ! किरियावाई नो अकिरियावाई नो अन्नाणियवाई नो वेणइयवाई । कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा किं किरियावाई० पुच्छा, गोयमा ! नो किरियावाई अकिरियावाई अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि, सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा, सम्मद्दिट्ठी जहा अलेस्सा, मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया, सम्मामिच्छादिट्ठीणं पुच्छा, गोयमा ! नो किरियावाई नो अकिरियावाई अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि, णाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्सा, अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया, आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता जहा सलेस्सा, नोसन्नोवउत्ता जहा अलेस्सा, सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा, अवेदगा जहा अलेस्सा, सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा, अकसाई जहा अलेस्सा, सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा, अजोगी जहा अलेस्सा, सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा । नेरइया णं भंते ! किं किरियावाई० पुच्छा, गोयमा ! किरियावाईवि

एवं आउकाइयाणवि एवं वणस्सइकाइयाणवि तेउकाइया वाउकाइया सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पकरे(इ)न्ति तिरिक्खजोणियाउयं पकरेन्ति नो मणुस्साउयं पकरेंति नो देवाउयं पकरेन्ति बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं जहा पुढविकाइयाणं नवरं सम्मत्तनाणेसु न एक्कंपि आउयं पकरेन्ति ॥ किरियावाई णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं पकरेन्ति पुच्छा गोयमा ! जहा मणपज्जवनाणी, अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य चउव्विहंपि पकरेन्ति, जहा ओहिया तहा सलेस्सावि । कण्हलेस्सा णं भंते ! किरियावाई पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं पुच्छा गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेन्ति नो तिरिक्ख नो मणुस्साउयं पकरेंति नो देवाउयं पकरेन्ति अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई चउव्विहंपि पकरेन्ति जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सावि काउलेस्सावि तेउलेस्सा जहा सलेस्सा नवरं अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई य नो नेरइयाउयं पकरेन्ति तिरिक्खजोणियाउयंपि पकरेन्ति मणुस्साउयंपि पकरेन्ति देवाउयंपि पकरेंति एवं पम्हलेस्सावि एवं सुक्कलेस्सावि भाणियव्वा कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहंपि आउयं पकरेन्ति सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउयं पकरेन्ति मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया, सम्मामिच्छादिट्ठी ण य एक्कंपि आउयं पकरेन्ति जहेव नेरइया नाणी जाव ओहिनाणी जहा सम्मदिट्ठी अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया, सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहा चेव भाणियव्वा जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्साणवि वत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं मणपज्जवनाणी नोसन्नोवउत्ता य जहा सम्मदिट्ठी तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा, अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसाई अजोगी य एए एक्कंपि आउयं न पकरेन्ति जहा ओहिया जीवा सेसं तं चेव वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥ किरियावाई णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ? गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया । अकिरियावाई णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धिया पुच्छा, गोयमा ! भवसिद्धियावि अभवसिद्धियावि एवं अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि । सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा, गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया । सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा, गोयमा ! भवसिद्धियावि अभवसिद्धियावि एवं अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि जहा सलेस्सा, एवं जाव सुक्कलेस्सा अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावाई किं भवसिद्धिया पुच्छा, गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया, एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया

रइयाउयं पकरेंति० पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरिक्ख० नो
णुस्स० नो देवाउयं पकरेंति, कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा अकिरियावाई किं
रइयाउय० पुच्छा, गोयमा ! नेरइयाउयंपि पकरेन्ति एव चउव्विहंपि, एवं
ण्णाणियवाईवि वेणइयवाईवि, सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा, सम्मद्दिट्ठी ण भंते ! जीवा
करियावाई किं नेरइयाउय० पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेन्ति नो तिरि-
क्खजोणियाउयं पकरेन्ति मणुस्साउयंपि पकरेन्ति देवाउयपि पकरेन्ति, मिच्छादिट्ठी
जहा कण्हपक्खिया, सम्मामिच्छादिट्ठी ण भते ! जीवा अन्नाणियवाई किं नेरइयाउयं०
जहा अलेस्सा, एवं वेणइयवाईवि, णाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहि-
नाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी, मणपज्जवणाणी णं भंते ! किं० पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइया-
उयं पकरेन्ति नो तिरिक्ख० नो मणुस्साउयं पकरेंति देवाउय पकरेन्ति, जइ देवाउय
पकरेन्ति किं भवणवासि० पुच्छा, गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउय पकरेन्ति नो वाण-
मंतर० नो जोइसिय० वेमाणियदेवाउय पकरेन्ति, केवलनाणी जहा अलेस्सा, अन्नाणी
जाव विभगनाणी जहा कण्हपक्खिया, सन्नासु चउसुवि जहा सलेस्सा, नोसन्नोवउत्ता
जहा मणपज्जवनाणी, सवेदगा जाव नपुसगवेदगा जहा सलेस्सा, अवेदगा जहा
अलेस्सा, सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा, अकसाई जहा अलेस्सा, सजोगी
जाव कायजोगी जहा सलेस्सा, अजोगी जहा अलेस्सा, सागारोवउत्ता य अणागा-
रोवउत्ता य जहा सलेस्सा ॥ ८२३ ॥ किरियावाई णं भते ! नेरइया किं नेरइयाउय०
पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरे(इ)न्ति नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेंति मणु-
स्साउय पकरेन्ति नो देवाउय पकरेन्ति, अकिरियावाई ण भंते ! नेरइया पुच्छा,
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरे(इ)न्ति तिरिक्खजोणियाउयपि पकरेन्ति मणुस्साउयंपि
पकरेन्ति नो देवाउयं पकरेन्ति, एव अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि। सलेस्सा ण भते !
नेरइया किरियावाई किं नेरइयाउय० एव सव्वेवि नेरइया जे किरियावाई ते मणुस्सा-
उयं एग पकरेन्ति, जे अकिरियावाई अन्नाणियवाई वेणइयवाई ते सव्वट्ठाणेसुवि नो
नेरइयाउय पकरेन्ति तिरिक्खजोणियाउयपि पकरेन्ति मणुस्साउयंपि पकरेन्ति नो
देवाउय पकरेन्ति, नवरं सम्मामिच्छत्ते उवरिल्लेहिं दोहिवि समोसरणेहिं न किंचिवि
पकरेन्ति जहेव जीवपए, एव जाव थणियकुमारा जहेव नेरइया । अकिरियावाई णं
भंते ! पुढविक्काइया पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरे(इ)न्ति तिरिक्खजोणियाउयं
पकरेन्ति मणुस्साउय पकरेन्ति नो देवाउय पकरेन्ति, एव अन्नाणियवाईवि ।
सलेस्सा ण भंते ! एवं ज जं पदं अत्थि पुढविकाइयाणं तहिं २ मज्झिमेसु दोसु
समोसरणेसु एव चेव दुविह आउयं पकरेन्ति नवरं तेउलेस्साए न किंपि पकरेन्ति,

अभवसिद्धियाणि एवं अन्नाणियवाईणि वेणइयवाईणि । सलेस्सा णं भंते ! किरिया-
वाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ? गोयमा ! भव-
सिद्धिया नो अभवसिद्धिया एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए उद्देसए नेरइयाणं
वत्तव्वया भणिया तहेव इहवि भाणियव्वा जाव अणागारोवउत्तत्ति, एवं जाव
वेमाणियाणं नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं इमं से लक्खणं—जे
किरियावाई सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छादिट्ठिया एए सव्वे भवसिद्धिया नो अभव-
सिद्धिया सेसा सव्वे भवसिद्धियावि अभवसिद्धियावि । सेवं भंते ! २ त्ति ॥८१५॥
॥ ३० ॥ २ ॥ परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं किरियावाई एवं जहेव ओहिओ
उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसुवि नेरइयाईओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं तहेव
तियदंडगसंगहिओ । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८१६ ॥ ३ ॥ ३ ॥ एवं
एएणं कमेणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी सच्चेव इहंपि जाव अचरिमो
उद्देसओ नवरं अणंतरा चत्तारिवि एक्कगमगा परंपरा चत्तारिवि एक्कगमएणं एवं
चरिमावि अचरिमावि एवं चेव नवरं अलेस्सो केवली अजोगी न भण्णइ, सेसं
तहेव । सेवं भंते ! २ त्ति । एए एक्कारसवि उद्देसगा ॥ ८१७ ॥ तीसइमं समो-
सरणसयं समत्तं ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी—कइ णं भंते ! खुड्डा(ग) जुम्मा प० ? गोयमा !
चत्तारि खुड्डा(ग) जुम्मा प० तं०—कडजुम्मे १ तेओगे २, दावरजुम्मे ३, कलिओगे
४ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चत्तारि खुड्डा(ग) जुम्मा प० तं० —कडजुम्मे जाव
कलिओगे ? गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए
सेत्तं खुड्डागकडजुम्मे, जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं
खुड्डागतेओगे जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं खुड्डाग-
दावरजुम्मे जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं
खुड्डागकलिओगे से तेणट्ठेणं जाव कलिओगे । खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते !
कओ उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख० पुच्छा गोयमा ! नो नेरइए-
हिंतो उववज्जंति एवं नेरइयाणं उववाओ जहा वक्कंतीए तहा भाणियव्वो । ते णं
भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस
वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । ते णं भंते ! जीवा कहं
उववज्जंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाण० एवं जहा पंच-
वीसइमे सए अट्ठमुद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इहवि भाणियव्वा जाव आय-
प्पओगेणं उववज्जंति नो परप्पओगेणं उववज्जंति । रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्म-

तिसुवि समोसरणेसु भयणाए, सुक्कपक्खिया चउसुवि समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया, सम्मद्दिट्ठी जहा अलेस्सा, मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया, सम्मामिच्छादिट्ठी दोसुवि समोसरणेसु जहा अलेस्सा, नाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया, अन्नाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया, सन्नासु चउसुवि जहा सलेस्सा, नोसन्नोवउत्ता जहा सम्मद्दिट्ठी, सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा, अवेदगा जहा सम्मद्दिट्ठी, सकसाई जाव लोभकसाई जहा सलेस्सा, अकसाई जहा सम्मद्दिट्ठी, सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा, अजोगी जहा सम्मद्दिट्ठी, सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा, एवं नेरइयावि भाणियव्वा नवरं नायव्वं जं अत्थि, एवं असुरकुमारावि जाव थणियकुमारा, पुढविक्काइया सव्वट्ठाणेसुवि मज्झिल्लेसु दोसुवि समोसरणेसु भवसिद्धियावि अभवसिद्धियावि एवं जाव वणस्सइकाइया, बेइंदियतेइंदियचउरिंदिया एवं चेव नवरं सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे एएसु चेव दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया, सेसं तं चेव, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया नवरं नायव्वं जं अत्थि, मणुस्सा जहा ओहिया जीवा, वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८२४ ॥ **तीसइमस्स सयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥**

अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं किरियावाई० पुच्छा, गोयमा ! किरियावाईवि जाव वेणइयवाईवि, सलेस्सा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावाई० एवं चेव, एवं जहेव पढमुद्देसे नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इहवि भाणियव्वा, नवरं जं जस्स अत्थि अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाणं तं तस्स भाणियव्वं, एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं तहिं भाणियव्वं । किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेन्ति० पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति नो तिरि० नो मणु० नो देवाउयं पकरेन्ति, एवं अकिरियावाईवि अन्नाणियवाईवि वेणइयवाईवि । सलेस्सा णं भंते ! किरियावाई अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं० पुच्छा, गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेन्ति जाव नो देवाउयं पकरेन्ति, एवं जाव वेमाणिया, एवं सव्वट्ठाणेसुवि अणंतरोववन्नगा नेरइया न किंचिवि आउयं पकरेन्ति जाव अणागारोवउत्तत्ति, एवं जाव वेमाणिया नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं । किरियावाई णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ? गोयमा ! भवसिद्धिया नो अभवसिद्धिया । अकिरियावाईणं पुच्छा, गोयमा ! भवसिद्धियावि

नेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एवं जहा ओहियनेरइयाणं वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाएवि भाणियव्वा जाव नो परप्पओगेणं उववज्जति, एवं सक्करप्पभाएवि, एव जाव अहेसत्तमाए, एव उववाओ जहा वक्कतीए, असन्नी खलु पढम दोच्चं, व सरीसवा तइय पक्खी । गाहाए उववाएयव्वा, सेस तहेव । खुड्डागतेओग- नेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति किं नेरइएहिंतो० ? उववाओ जहा वक्कतीए, ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ? गोयमा ! तिन्नि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति, सेस जहा कडजुम्मस्स, एवं जाव अहेसत्तमाए । खुड्डागदावरजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति० ? एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे नवर परिमाण दो वा छ वा दस वा चउद्दस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा सेस त चेव, एवं जाव अहेसत्तमाए । खुड्डागकलिओग- नेरइया ण भते ! कओ उववज्जंति० ? एव जहेव खुड्डागकडजुम्मे नवरं परिमाणं एक्को वा पच वा नव वा तेरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति, सेस तं चेव, एव जाव अहेसत्तमाए । सेवं भते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८२८ ॥ ३१।१ ॥ कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव जहा ओहियगमो जाव नो परप्पओगेण उववज्जति, नवर उववाओ जहा वक्कतीए, धूमप्पभा- पुढविनेरइया ण सेस तहेव, धूमप्पभापुढविकण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव निरवसेस, एव तमाएवि एव अहेसत्तमाएवि, नवरं उववाओ सव्वत्थ जहा वक्कतीए । कण्हलेस्सखुड्डागतेओगनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? एव चेव नवरं तिन्नि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा सेस तहेव एव जाव अहेसत्तमाएवि । कण्हलेस्सखुड्डागदावरजुम्म- नेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव नवरं दो वा छ वा दस वा चउद्दस वा सेस त चेव, एव धूमप्पभाएवि जाव अहेसत्तमाएवि । कण्हलेस्सखुड्डागकलिओग- नेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव नवरं एक्को वा पच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा सेस त चेव, एव धूमप्पभाएवि तमाएवि अहेसत्त- माएवि । सेव भंते ! २ त्ति ॥ ८२९ ॥ ३१।२ ॥ नीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति० एव जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मा नवरं उववाओ जो वालुयप्पभाए सेस त चेव, वालुयप्पभापुढविनीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया एव चेव, एव पकप्पभाएवि, एव धूमप्पभाएवि, एव चउसुवि जुम्मेसु नवरं परिमाणं जाणियव्व, परिमाण जहा कण्हलेस्सउद्देसए । सेस तहेव । सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥ ८३० ॥ ३१।३ ॥ काउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ?

एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया नवरं उववाओ जो रयणप्पभाए सेसं तहेव । रयणप्पभपुढविकाउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं चेव एवं सक्करप्पभाएवि एवं वालुयप्पभाएवि एवं चउसुवि जुम्मेसु, नवरं परिमाणं जाणियव्वं, परिमाणं जहा कण्हलेस्सउद्देसए सेसं तं चेव सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८११ ॥ ११५४ ॥ भवसिद्धियखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति किं नेरइए ? एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेसं जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति । रयणप्पभापुढविभवसिद्धियखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! एवं चेव निरवसेसं एवं जाव अहेसत्तमाए, एवं भवसिद्धियखुड्डागतेओयनेरइयावि एवं जाव कलिओगत्ति, नवरं परिमाणं जाणियव्वं परिमाणं पुव्वभणियं जहा पढमुद्देसए । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८१२ ॥ ११५५ ॥ कण्हलेस्सभवसिद्धियखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं जहेव ओहिओ कण्हलेस्सउद्देसओ तहेव निरवसेसं चउसुवि जुम्मेसु भाणियव्वो जाव अहेसत्तमपुढविकण्हलेस्सभवसिद्धियखुड्डागकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? तहेव । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८१३ ॥ ११५६ ॥ नीललेस्सभवसिद्धिया चउसुवि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा जहा ओहिए नीललेस्सउद्देसए । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ८१४ ॥ ११५७ ॥ काउलेस्सभवसिद्धिया चउसुवि जुम्मेसु तहेव उववाएयव्वा जहेव ओहिए काउलेस्सउद्देसए । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥ ८१५ ॥ ॥ ११५८ ॥ जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि उद्देसगा भणिया एवं अभवसिद्धिएहिवि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव काउलेस्साउद्देसओत्ति । सेवं भंते ! २त्ति ॥ ८१६ ॥ ॥ ११५९ ॥ एवं सम्मदिट्ठीहिवि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा नवरं सम्मदिट्ठी पढमबिइएसु दोसुवि उद्देसएसु अहेसत्तमापुढवीए न उववाएयव्वो सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ८१७ ॥ ११६० ॥ मिच्छादिट्ठीहिवि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहा भवसिद्धियाणं । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८१८ ॥ ॥ ११६२ ॥ एवं कण्हपक्खिएहिवि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव भवसिद्धिएहिं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥ ८१९ ॥ ११६४ ॥ सुक्कपक्खिएहिं एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव वालुयप्पभापुढविकाउलेस्ससुक्कपक्खियखुड्डागकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? तहेव जाव नो परप्पओगेणं उववज्जंति । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८२० ॥ ११ ॥ ११६८ ॥ सव्वेवि एए अट्ठावीसं उद्देसगा ॥ एगतीसइमं उववायसयं समत्तं ॥

खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति

ज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति० उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए । ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उव्वट्टंति ? गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वट्टंति, ते णं भंते ! जीवा कहं उव्वट्टंति ? गोयमा ! से जहानामए पवए एवं तहेव, एवं सो चेव गमओ जाव आयप्पओगेणं उव्वट्टंति नो परप्पओगेणं उव्वट्टंति, रयणप्पभापुढवि-(नेरइए) खुड्डागकडजुम्म० एवं रयणप्पभाएवि एवं जाव अहेसत्तमाएवि, एवं खुड्डागतेओगखुड्डागदावरजुम्मखुड्डागकलिओगा नवरं परिमाणं जाणियव्वं, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! २ त्ति ॥ ८४१ ॥ ३२।१ ॥ कण्हलेस्सकडजुम्मनेरइया एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासएवि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा नवरं उव्वट्टंतित्ति अभिलावो भाणियव्वो, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! २ त्ति जाव विहरइ ॥८४२॥ **बत्तीसइमं उववट्टणासयं समत्तं ॥**

कइविहा णं भंते ! एगिंदिया प० ? गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया प०, तं०-पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया, पुढविकाइया णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तं०-सुहुमपुढविकाइया य बायरपुढविकाइया य, सुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! दुविहा प०, तंजहा-पज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य, बायरपुढविकाइया णं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! एवं चेव, एवं आउकाइयावि चउक्कएणं भेदेणं भाणियव्वा एवं जाव वणस्सइकाइया(णं) । अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ प०, तं०-नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं, पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ प०, तंजहा-नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । अपज्जत्तबायरपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? गोयमा ! एवं चेव ८, पज्जत्तबायरपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ प० ? एवं चेव ८, एवं एएणं कमेणं जाव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणंति । अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगावि अट्ठविहबंधगावि सत्त बंधमाणा आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधंति अट्ठ बंधमाणा पडिपुन्नाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधंति, पज्जत्तसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ बंधंति ? एवं चेव, एवं सव्वे जाव पज्जत्तबायरवणस्सइकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ बंधंति ? एवं चेव । अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? गोयमा ! चउद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तं०-नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं, सोइंदियवज्झं चक्खि-